सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३५ अंक २]   दयानन्दाब्द १७१   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६   फाल्गुन शु० ७   सं० २०५२ २५ फरवरी १९९६

पाकिस्तान इस्लामी साम्प्रदायिकता के नाम पर एक और विभाजन का मार्ग तैयार कर रहा है

–पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव

महर्षि दयानन्द सरस्वती का १७२वां जन्म दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया

दिल्ली १४ फरवरी, आर्य समाज के संस्थापक तथा धार्मिक राजनैतिक और समाज सुधारवादी महान् क्रान्तिकारी महर्षि दयानन्द सरस्वती का १७२वा जन्म दिवस समारोह पूर्वक दिल्ली के विभिन्न स्थानो पर मनाया गया।

मुख्य समारोह आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान मे महर्षि दयानन्द गो सवर्द्धन दुग्ध केन्द्र गाजीपुर मे मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने कहा कि आज जिस प्रकार से देश मे साम्प्रदायिकता को बढाया जा रहा है उसे नियन्त्रित करने का उपाय महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपदेश ही उपलब्ध करा सकते हैं। महर्षि दयानन्द चाहते थे कि सब मत, पथ और सम्प्रदाय अपने मूल धर्म की पहचान करें तो साम्प्रदायिकता समाप्त हो सकती है। श्री वन्देमातरम् जी ने कहा कि पाकिस्तान जैसा देश हमारे समाज मे इस्लामी साम्प्रदायिकता के नाम पर एक और विभाजन का मार्ग तैयार कर रहा है। हाल ही मे कुछ इस्लामी गुटो द्वारा भारत तथा भारतीयता के विरुद्ध जेहाद छेड़ने की खुली घोषणा उसी योजना का हिस्सा है। श्री वन्देमातरम् जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द के अनुयायी इस राष्ट्र की रक्षा के लिए किसी भी बलिदान को बड़ा नही समझते।

समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप मे बोलते हुए लोक सभा सदस्य श्री बैकुण्ठलाल शर्मा ने कहा कि जब तक धर्म और राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले नवयुवक समाज मे पैदा नही होते तब तक देश पर सकट छाया रहेगा और यह काम महर्षि दयानन्द के अनुयायी ही कर सकते है। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती के त्याग और तपस्या के प्रति अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज केवल मात्र एक सस्था नही है अपितु विश्व व्यापी आदोलन का रूप है जो कि गत १०० से भी अधिक वर्षो मे सारे ससार को सत्य का प्रकाश दे रहा है।

इस अवसर पर वैदिक विद्वान् श्री भिक्षु दिवस्य भारती को आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से सम्मानित किया गया। समारोह मे ब्र० आर्य नरेश, डा० रघुवीर गोस्वामी आदि वक्ताओ ने भी सम्बोधित किया। समारोह का सयोजन केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने किया।

आर्य समाज की नीति कभी समझौतावादी नहीं रही

–केदारनाथ साहनी

ऋषि बोधोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

दिल्ली १७ फरवरी, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान मे दिल्ली की समस्त आर्य समाजो की ओर से महर्षि दयानन्द सरस्वती का "ऋषि बोधोत्सव" लालकिला मैदान मे समारोह पूर्वक मनाया गया।

समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सांच को आंच कहां

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री से वार्ता का निष्कर्ष

—स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, प्रभाताश्रम मेरठ

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री तथा सार्वदेशिक सभा के विरुद्ध कुछ समाचार पत्रों मे अनर्गल आक्षेप पढ़े। मुझे आश्चर्य हुआ कि ऐसा क्यों ?

आक्षेप दो लगाये, प्रथम हैदराबाद सत्याग्रह मे गये नही थे। द्वितीय सन्यासियो का अपमान १-हैदराबाद सत्याग्रह की पेन्शन न लेकर वापस करो तथा सन्यासियो से क्षमा मांगो। श्री शास्त्री जी प्रभाताश्रम भोला झाल मेरठ उत्सव पर पधारे। मुझे अवसर मिला और उनसे परस्पर जो बातें हुई।

१ सन्यासियो के अपमान पर उन्होने सभी सन्यासी महानुभावो के प्रति श्रद्धा का भाव दिखाया और कहा कि मैंने किसी का भी अपमान नही किया। कोई सन्यासी स्वयं पतित हो तो उसका अपमान होगा ही।

२ पेन्शन के लिए शास्त्री जी ने बताया कि मेरे घर से ८-१० व्यक्ति १९२० से आजादी तक कांग्रेस मे तथा आर्य समाज के आन्दोलनों मे जेल गए हैं हैदराबाद मे पिताजी १०८ आदमियो का जत्था लेकर गए और गुरुकुल ज्वालापुर से मेरे भाई दयानन्द, देव शर्मा शास्त्री हैदराबाद गए और ब्र दयानन्द तो शहीद हो गए।

मैं सन् ३७ में अपर प्राइमरी से महाविद्यालय मे तीसरी कक्षा मे भर्ती हुआ ६-७ साल का था जब पढने बैठा और ६-७ साल अपर प्राइमरी मे लगे। ३७ मे गुरुकुल गया। ३८-३९ मे सत्याग्रह चला। वे बोले मैं क्रान्तिकारी परिवार का बच्चा था अतः उत्साह में आकर आचार्य नरदेव शास्त्री जी जो जेलो की जांच हेतु गए वे उनके साथ गया वहा जाने पर मेरा उपयोग गुप्त पत्र लाने ले जाने मे किया गया इस प्रकार अण्डरग्राउण्ड काम किया था। भारत सरकार की कमेटी ने भी गुप्त कार्य योजनान्तर्गत ही सेनानी माना है। इस प्रकार १५-१६ साल के हो जाते हैं भारत सरकार वहा से भी जांच करा सकता है। शास्त्री जी ने बताया १९४९ में स्नातक हुआ सन् ५० में उत्तर प्रदेश सभा मे उपदेशक बना। १९५५ मे विवाह और १९६० मे पत्नि का देहान्त। फिर सारा जीवन ऋषि की सेवा मे अर्पित कर दिया। उ प्र सभा मे उपमन्त्री—मन्त्री, उपप्रधान रहा और सार्व. सभा मे उपमन्त्री—मन्त्री चला आ रहा हू।

गांव की खेती स्कूल को दान कर दी, शहीद भाई के नाम पर कालिज चल रहा है सम्पूर्ण परिवार आर्य विचार धारा का है १०-१२ भाई गुरुकुल ज्वालापुर के स्नातक है शास्त्री आचार्य है। शास्त्री जी ने स्वयं शास्त्री विद्याभास्कर होकर आगरा, लखनऊ से एम०ए० फिर पी एच डी पास किया।

सारी बाते सुनने के बाद आश्चर्य मे पड गया कौन करेगा जीवन का समर्पण शास्त्री जी व उनका परिवार सुसभ्य सुसस्कृत परिवार है। ऐसे व्यक्ति को सार्वदेशिक सभा का मन्त्री बनाना आर्यसमाज के लिए गौरव की बात है।

ऐसे त्यागी तपस्वी विद्वान् चरित्रवान व्यक्ति राष्ट्र को मिल सके तो कुछ भला हो सकता है। कीचड उछालना हर व्यक्ति जानता है जरा घरबार नो री धन सम्पति छोडकर दिखाओ फिर किसी की आलोचना करो तो समझ मे आता है। वैसे मनुष्य कमजोरियो का पुतला है शास्त्री जी से भी न जाने कितनी भूलें हो रही होगी पर जीवन को नई दिशा देना है तो यह भी शास्त्री जी से सीखा जा सकता है। फिर सांच को आंच कहा ?

मुस्लिम युवक ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली

एक मुस्लिम युवक द्वारा वैदिक धर्म की शिक्षाओ से प्रभावित होकर वैदिक धर्म अपनाए जाने का समाचार मिला है। बताया जाता है कि जम्मू कश्मीर के मुहम्मद अयुब जो वर्तमान मे दिल्ली में रहते हैं ने वैदिक धर्म अपनाए जाने की इच्छा व्यक्त की जिनका शुद्धि सस्कार प० रामानन्द आचार्य के पौरोहित्य मे आर्य समाज मन्दिर (विनय नगर) सरोजिनी नगर मे दिनाक ११ फरवरी १९९६ को करा दिया गया। शुद्धि सस्कार के पश्चात उनका नाम विजय कुमार कर दिया गया।

'ओ३म्' के उच्चारण से कई रोगों का इलाज

बोस्टन, ८ दिसम्बर। हारवर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा० हरबर्ट बेन्सन ने अपने शोध कार्य के बाद कहा कि थोडी प्रार्थना (दुआ) और ओ३म् शब्द का उच्चारण जानलेवा बीमारी एड्स के लक्षणों में राहत उच्च रक्त चाप को कम करने तथा बांझपन के उपचार में दवा का काम करता है। प्रार्थना से उपचार के मूल्यांकन विषय पर यहा एक कान्फ्रेंस को सम्बोधित करते हुए प्रो० (डा०) बेन्सन ने प्रार्थना शब्दों अथवा ध्वनियों को दोहराने और अन्य विचारों को दिमाग से निकाल देने पर तमाम लोग विशेष शारीरिक परिवर्तन लाने में सक्षम बन सकते हैं।

प्रो० बेन्सन ने कहा उपचार के मामले को लेकर विज्ञान और अध्यात्म के बीच यह खाई हमेशा नहीं रही है। उन्होंने यहा तक कहा कि प्रार्थना और मन्त्रो का लगातार उच्चारण करने से स्वसन की दर और मस्तिष्क की तरंग गतिविधि कम हो सकती है, कभी कभी आप अपनी तकलीफ से निजात भी पा जाते हैं। और अपरिहार्य शल्य चिकित्सा और महगी दवाओ से बच सकते हैं। वह प्रमाण देते हुए कहते हैं कि ऐसा करने से स्वास्थ्य परिरक्षण सगठनो के सम्मुख जाने वाले लोगो की सख्या ३६ फीसदी गिर गयी है। वह यह भी कहते हैं कि लगभग ४० फीसदी युगल इस तकनीक को अपनाने को बाद छ माह में बांझपन या नपुंसकता से मुक्ति पा गए हैं। अब स्वास्थ्य परिरक्षण सगठनो से प्रति सप्ताह लगभग पांच या छ बुलावे आने लगे हैं कि वह उनके उपचार कार्यक्रमो मे आकर इस प्रक्रिया को देखो।

इस तकनीक पर १९७४ मे प्रकाशित एक पुस्तक के लेखक और बोस्टन के डेकाने अस्पताल मे मस्तिष्क शरीर मेडिकल सस्थान के सस्थापक डा० बेन्सन ने २४ साल पहले उस समय अपना शोध कार्य शुरू किया था लोग पारलौकिक ध्यान का अभ्यास कर रहे थे कि इसे अपने शारीरिक विज्ञान मे इस्तेमाल करें। उन्होने पारलौकिक ध्यान के इस स्वास्थ्य लाभ को वैज्ञानिक प्रमाण के तौर पर पाया और तदन्तर अध्ययन करना शुरू किया कि किस तरह तनाव से सम्बन्धित बीमारियो का इलाज किया जा सकता है। उन्होने पाया कि मस्तिष्क एक औषधि के रूप मे कार्य कर सकता है। खासकर उन लोगो के लिए जो ईश्वर अथवा उच्च शक्ति मे आस्था रखते हैं। प्रार्थना अथवा ध्वनि के उच्चारण के लिए ८० फीसदी लोग तैयार हो जाते हैं। डा० बेन्सन कहते हैं मैंने पाया कि मैं प्रार्थना की शिक्षा दे रहा था।

इस तरह के रहस्योद्घाटन के बाद डा० बेन्सन को उन पुजारियों, यहूदी धर्म गुरुओ, धर्मशास्त्रियो तथा आध्यात्मिक ढंग से उपचार करने वालो की टिप्पणियों से अपनी बात का मिलान करना पडा जिनमे से तमाम इस कान्फ्रेंस मे डा० बेन्सन के शोध कार्य के समर्थन मे बोले थे। एन्डोवर न्यूटन धर्मशास्त्र प्रशिक्षालय के धर्मशास्त्र के प्रोफेसर सेमुअल सोलिवान ने कहा हमारे पास अपने गुरु के स्वास्थ्य अनुरक्षण सगठन की उपचार व्यवस्था उपलब्ध है। यहा आपको स्वास्थ्य के लिए बीमा नहीं मिलता। यहा तो सिर्फ पवित्र आत्मा, ओ३म् ही एक केन्द्रीक संचालक है।

('आज' दैनिक अखबार से साभार दिनाक ९-१२-१९९५ शनिवार)

डा० ओ३म् प्रकाश डेम्बला, मन्त्री
१९५, जयपुर हाउस आगरा

सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान एवं सुप्रीमकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सोमनाथ मरवाह द्वारा दिया गया–

श्वेतपत्र का उत्तर (१४)

इसके आगे उन्होंने लिखा है–

'२७ मई ९५ को शाम आर्य समाज सुल्तान बाजार में प्रतिनिधियो की सभा हुई और हाल इस सीमा तक भर गया था कि तिल रखने की जगह नहीं थी बाहर तक प्रतिनिधि बैठे थे। लगभग ११ से अधिक आर्य प्रतिनिधि सभाओ के प्रधान एव मत्रियो ने पूज्यनीय स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को अपना नेता घोषित किया। एक आर्य सन्यासी ने तो यहा तक घोषणा कर दी कि यदि आर्य जगत पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को असवैधानिक ढग से चुना नेता मानेगा तो मैं आत्मदाह करने को भी तैयार हू।"

कैप्टन देवरत्न के इस बयान से साफ जाहिर होता है कि जो कहानी शेरसिंह, सुमेधानन्द आदि ने प्रचारित की है कि निर्वाचन कच्छी भवन मे हुआ था उसको कैप्टन देवरत्न ने झूठा करार दे दिया है। परन्तु देवरत्न को इस बात की शर्म झूठा बयान देते हुए नही आई कि उसका पिता आचार्य भद्रसेन कितना उच्चकोटि का आर्य समाजी था, जिसके कार्यो को आर्य समाज कभी भुला नहीं सकेगा। उनके लडके ने लिखा है कि २०० व्यक्ति भगवा झडे लिए बाहर खडे थे, इस झूठ बयान के लिए उन्हें क्षमा मागनी चाहिए। वह अपने आपको आर्य नेता कहता है। उसकी सभा के सिर्फ ३ सभासद ही थे उसमे से २ ही आये और कैप्टन देवरत्न को छोडकर शेष २ को सभा का अन्तरग सदस्य भी चुना गया। बम्बई मे आर्य समाज की स्थिति क्या है इससे आप स्वय ही अन्दाजा लगा सकते हैं कि वहां के केवल ३ सभासद ही सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि बन सके।

मैं उनसे यह भी पूछना चाहता हू कि जब कैप्टन देवरत्न ने सुमेधानन्द का श्वेत पत्र भी पढ़ा है जिसमे लिखा है कि निर्वाचन कच्छी भवन में हुआ, २९ मई को जो लिस्ट रजिस्ट्रार को दी गई उस पर भी उन्होने हस्ताक्षर किए हैं। और अपने लेख मे थोड़े चार महीने बाद उल्टा लिखा है कि निर्वाचन सुल्तान बाजार आर्य समाज मे हुआ, तो उनको क्या कहा जाए कि वह सच्चे आर्य समाजी हैं, और बाकी लोगो के बयान झूठे गलत हैं, और इसी तरह उन्होंने बयान दिए हैं'। फिर उन्होने लिखा है कि जो व्यक्ति सुल्तान बाजार आर्य समाज मे उपस्थित हुए उन्होने रजिस्टर पर हस्ताक्षर किए, तो उनसे पूछा जाय कि वह रजिस्टर कहा है? और जिन लोगो के हस्ताक्षर उक्त रजिस्टर पर हुए हैं वे सार्वदेशिक सभा के प्रधान द्वारा स्वीकृत सभासद थे या नही? इसके विषय मे कैप्टन देवरत्न क्या कहना चाहेंगे?

फिर उन्होने लिखा है कि १०-११ सभाओ के अधिकारियो ने विद्यानन्द को अपना नेता कहा, तो क्या कैप्टन साहब उन सभाओ और व्यक्तियों के नाम दे सकते हैं जिन्होंने उस बैठक में भाग लिया। और क्या आप यह सही मानते हैं कि एक सन्यासी अपनी स्त्री बच्चे के साथ अपने घर मे रह सकता है। यह हैरानगी की बात है कि एक उच्चकोटि के वैदिक स्कालर के सुपुत्र जो अपने नाम के पीछे आर्य लिखते हैं और जो सभा के उप-प्रधान भी रहे हैं उन्हें सभा के सविधान का बिल्कुल पता नही है। क्या वह बतला सकते हैं कि सभा के सविधान में कोई ऐसा नियम है कि चुनाव किसी और जगह हो सकते हैं अतिरिक्त उस जगह के जिस जगह की घोषणा सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी ने पहले ही की हुई हो, और वह मानते हैं कि अधिवेशन कच्छी भवन में २ बजे शुरू हुआ था और सिक्योरिटी का मुकम्मिल इन्तजाम था।

और क्या वह यह भी बतला सकेंगे कि सभा के नियमों मे सभा प्रधान के अतिरिक्त किसी सभा की अध्यक्षता और कोई करता है जबकि प्रधान उस सभा मे उपस्थित हो। सिवाय १९९१ के चुनाव मे एक खास कारण से स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपनी इच्छानुसार अधिवेशन की अध्यक्षता स्वय न करके दूसरे से कराई थी। वरना जितने वर्षों मे उन्होंने सभा मे सम्मिलित होकर कोई कार्य किया हो तो सिवाय प्रधान के किसी और ने चुनाव नही कराया, और सर्वसम्मति से अधिवेशन की अध्यक्षता करने का अधिकार उनको न दिया गया हो और सदैव यह भी अधिकार उन्हें दिया जाता रहा कि सभा के अन्य पदाधिकारियो एव अन्तरग सदस्यो का चयन स्वय वह कर लेवें।

आपने कभी अपनी उम्र में ऐसे व्यक्ति देखे हो जो सभा पर जबरन कब्जा करें और डाका डालने जैसा कार्य करे और फिर पुलिस उनको धक्का मारकर निकाले। फिर ऐसे व्यक्ति अपने आपको सन्यासी कहें। जिनमे सुमेधानन्द, विद्यानन्द, धर्मानन्द आदि सभी के नाम शामिल हैं। क्या सन्यासियो का यही काम रह गया है। जो झूठ बोलें, झूठा बयान हल्फी अदालतो मे दें, और वह अपने आपको आर्यसमाजी, सन्यासी कहें और क्या ऐसे व्यक्तियो की पूजा की जावे।

आर्य मित्र में प्रकाशित आपके बयानो से कोई सन्देह नही रहता कि आपका बयान हल्फी गलत दिया गया है, और जो २९ तारीख की लिस्ट पर जब आपने हस्ताक्षर किये, तो मैं आपसे पूछना चाहता हू कि जब २८ मई ९५ के पजाब केसरी मे सबसे पहली खबर छपी थी तो वह खबर २८ मई ९५ को कैसे छप सकती थी जब चुनाव २८ की शाम तक होता रहा; हमे तो ऐसा मालूम होता है कि शायद वह चुनाव से पूर्व ही सेक्रेटरी और प्रधान के नाम दे गये होगे। फिर भी २८ मई की न्यूज जो दैनिक पजाब केसरी दिल्ली में छपी है कि विद्यानन्द प्रधान और सुमेधानन्द सेक्रेटरी चुने गए हैं, उसमें और किसी का जिक्र नहीं है तो इससे साबित होता है कि चुनाव बगैर किसी गडबड के हुई है या यह साबित होता है कि किसी व्यक्ति को झूठा अधिकारी या अन्तरग सदस्य माना जावे।

यह भी पता नहीं चलता कि वह किसकी अध्यक्षता मे प्रेसीडेंट, सेक्रेटरी चुने गए, अकेले ही चुनाव में खडे हुए थे या ज्यादा। यह भी नहीं लिखा गया कि किस तरह चुने गए और कितने वोटो से चुने गए और यह भी पता नहीं चलता कि यह खबर अखबार में किसकी ओर से दी गई और किसने दी। बहरहाल इस खबर को अखबार ने गलत छापा।

दूसरी खबर १ जून ९५ को दी गई और इसी अखबार में दो जून को छपी। क्या आप बता सकेंगे कि हैदराबाद के किसी अखबार ने इनकी गलत न्यूज क्यो नही छापी जबकि अधिवेशन हैदराबाद मे ही हो रहा था। वहा के तो सभी अखबारो, रेडियो एव दूरदर्शन पर प० वन्देमातरम् रामचन्द्र-राव को ही सार्वदेशिक सभा का प्रधान चुना जाना दिखाया गया। अब आप ही कप्टन साहब बताये कि २८ मई के गलत समाचार प्रकाशित होने के विषय मे वह क्या प्रमाण देना चाहते हैं और इसका उनके पास क्या जवाब है।

आपने यह कैसे और किस आधार पर कहा कि २०० आदमी जिनके हाथ मे ओ३म् के झण्डे थे वह किराए पर लिए गये थे आप क्या ज्योतिषी थे। बल्कि आपको यह लिखना चाहिए था कि श्री वन्देमातरम् जी का हैदराबाद मे कितना प्रभाव था जो आर्य जनता को देखने से नजर आ रहा था। आपने सत्य को छिपाकर असत्य लिखना उचित समझा। क्या आप यह भी बतला सकते हैं कि यह जो लिस्ट २९ मई को आपके हस्ताक्षरो से दाखिल हुई आपने उस पर दस्तखत कहा पर किए। और आपको यह भी मालूम है कि आपके हस्ताक्षरो वाली वह लिस्ट रजिस्ट्रार ने मजूर नही की।

क्या आप २ जून ९५ की लिस्ट सही मानते हैं, क्योंकि उससे यह साबित होता है कि आपकी अध्यक्षता मे चुनाव नही हुआ और १९० सभासद मौजूद थे जिसमें से १४० सभासदो ने श्री वन्देमातरम् जी के हक में वोट दिए और प्रोसीडिंग पर दस्तखत किए जो अदालत मे दाखिल है।

(क्रमश)

विकासवाद का खोखलापन

—आचार्य शिवचन्द्र शर्मा

आज विकासवाद वैज्ञानिक व ऐतिहासिक दोनो ही क्षेत्रो मे अपना स्थान बना चुका है। विभिन्न जातियों की उत्पत्ति मे और मानवी बुद्धि के विकास मे विकासवाद ही को आधार समझा जाता है। विकासवाद प्राणियो की अन्तरीय रचना को महत्वपूर्ण मानता है और उसी के मिलान पर प्राणियो की श्रेणी का विभाजन स्वीकार करता है, लेकिन यह औचित्य पूर्ण प्रतीत नहीं होता, क्योकि शरीर तुलना शास्त्र मे बाह्य रूप के आधार पर ही श्रेणिया निश्चित की जाती हैं स्तनधारियों की श्रेणी स्तन देखकर तीक्ष्ण दांत वालो की श्रेणी दांत देखकर तेजगति (चाल) वालो की श्रेणी तेज चाल देखकर ही निश्चित की गई है, जो बाह्य रचना है अन्तर रचना नहीं। इस प्रकार अन्तर रचना पर वर्ग विभाग सम्भव नहीं। विकासवाद की मान्यता है कि मत्स्य, मण्डूक, पक्षी स्तनधारी, कीट अमीबा आदि के शरीर की बनावट एक ही जैसी है, लेकिन रचना साम्य का यह सिद्धांत भी त्रुटिपूर्ण ही दिखाई पड़ता है, क्योकि अस्थियुक्त प्राणियो का अस्थि रहित प्राणियों के साथ कुछ भी तो मेल नही है। ऐसी स्थिति में वे एक दूसरे का विकास कैसे हो सकते हैं ?

विकासवाद के समर्थकों का कथन है कि प्राणी के विकास व परिवर्तन मे उसकी इच्छा व आवश्यकता एवं परिस्थिति ही प्रमुख कारण होती है। वे कहते हैं कि मरु प्रदेशो मे पाया जाने वाला लम्बी गर्दन वाला जिराफ नामक पशु आज जिस रूप मे उपलब्ध है पहले ऐसा नहीं था। जब उसने नीचे के पत्ते खा लिये तो ऊपर के पत्ते खाने की इच्छा पैदा हुई और इसके लिए उसने गर्दन उठा उठाकर प्रयास किया, फलस्वरूप गर्दन लम्बी हो गयी। यदि उपर्युक्त सिद्धांत को ठीक समझा जाये तब तो बकरी की गर्दन भी लम्बी हो जानी चाहिए थी। वह भी तो वृक्ष के ऊपरी भाग के पत्ते खाने की इच्छा करती है और पैर रखकर उस तक पहुंचने का प्रयास भी करती है। मनुष्य मे शीत से बचने की इच्छा भी है और आवश्यकता भी, लेकिन उत्तरी ध्रुव और ग्रीनलैण्ड जैसे हिमप्रधान प्रदेशों मे रहने वाले मनुष्य के शरीर पर आज तक भी रीछ जैसे बाल पैदा नहीं हो पाये। राजस्थान की तपती भूमि मे रहने वाली और शीत प्रधान हिमालय प्रदेशमे रहने वाली भेड़ के लम्बे बाल एक जैसे होते हैं। इनमे अन्तर क्यो नही ? हमारे देश मे समान परिस्थिति मे रहने वाली गाय और भैंस मे अन्तर देखने को मिलता है। भैंस का चर्म पतला व चिकना होता है। शरीर पर छोटे छोटे रोम होते हैं।

इसके विपरीत गाय का चर्म कुछ कठोर होता है, रोम भी अधिक होते है। हिरन, चीतल नील गाय आदि जंगली पशुओ मे नर के तो सींग होत हैं, लेकिन मादा के नही। आत्मरक्षा के लिए सींगों की आवश्यकता तो दोनो को होती है। फिर यह अन्तर क्यो ? समान परिस्थिति में जन्म लेने वाले भाई बहिन मे अन्तर पाया जाता है। दाढ़ी मूछ केवल भाई के मुह पर होती है। समान परिस्थिति वाले हाथी हथिनी मे बाहर को निकले बड़े दांत केवल हाथी के मुह मे होते हैं। समान परिस्थिति वाले मोर मयूरी और मुर्गा मुर्गी मे केवल नर के ही सुन्दर पर और कलगी होते है। हम देखते है कि मनुष्य के बालो मे तो परिवर्तन हो जाता है, लेकिन मनुष्य के अतिरिक्त अन्य प्राणियो के बालो में परिवर्तन नही होता।

[illegible] जिस रंग की पैदा होती है आजीवन उसी रंग की रहती है। पशु पानी मे स्वभाव से ही तैरने लगते हैं। राजस्थान की भैंस [illegible] कभी तालाब नही देखा वह भी तैर जाती है, लेकिन मल्लाह का बेटा बिना सीखे तैर ही नही सकता। आत्मरक्षा की भावना प्रत्येक प्राणी मे स्वभाव से ही पाई जाती है। लेकिन पतंगा दीप शिखा के सम्पर्क मे [illegible] जल जाता है। वह बचने का तरीका क्यो नहीं सीख पाया।

विकासवाद की मान्यता है कि विकासक्रम मे मनुष्य सर्वश्रेष्ठ और अन्तिम प्राणी है। फिर भी मनुष्य की तुलना मे चीटी जैसे क्षुद्र प्राणी को वर्षा का ज्ञान कैसे हो जाता है ? कुत्ते जैसे निकृष्ट प्राणी को भूकम्प का पूर्वानुमान कैसे हो जाता है ? मनुष्य भी दीर्घजीवी होना चाहता है, लेकिन कछुआ, सांप आदि निम्न स्तर के प्राणी मनुष्य की अपेक्षा अधिक दीर्घजीवी क्यों होते हैं ? मनुष्य भी थोड़े समय मे अधिक मार्ग तय करना चाहता है, लेकिन फिर भी वह चीते जैसी तेज गति क्यो नही प्राप्त कर पाया ? कुत्ते जैसी घ्राण शक्ति और गृध्र जैसी दूरदृष्टि उसे क्यो नही मिल पाई ? एक छोटी सी बया नाम की चिड़िया जैसा सुन्दर घर आज बनाती है वैसा ही लाखो वर्ष पहले भी बनाती थी, लेकिन मनुष्य से एक पीढ़ी नीचे आते आते वाला बन्दर नही बना सकता। हम देखते हैं कि मकड़ी जाला बना लेती है और मधुमक्खी लाजवाब छत्ता बना लेती है, लेकिन इन्होने ये कलाए किसी से सिखी नही हैं। जिसे जो स्वभाव से आता है, उसी को करता चला आ रहा है। वास्तविकता तो यह है कि समस्त जातिया जिनकी जाति, आयु और भोग अलग अलग नियत हैं, वे सब ईश्वरकृत हैं। उनके शरीरों मे जो ह्रास-विकास दिखाई देता है, वह परिस्थिति आदि के कारण नहीं हुआ, अपितु उनके पूर्व कर्मानुसार ईश्वरीय व्यवस्था से सुख दुःख भोगने के लिए हुआ है।

"सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगा"

विकासवाद की यह मान्यता भी तर्कतुला पर खरी नहीं उतरती कि भिन्न भिन्न दो जातियो के मिश्रण से भी वश चलता है। बिल्कुल ही भिन्न भिन्न दो जातियो के मिश्रण से सन्तति नही होती, यदि कहीं होती भी है तो वश नहीं चलता। घोड़े गधे के मेल से खच्चर तो होता है, लेकिन आगे खच्चर का वंश नही चलता। सजातीय मिश्रण से ही सन्तति होती है और वंश चलता है। हमारी तो मान्यता ही है कि 'समान प्रसवात्मिका जाति" अर्थात जाति वही है जिसमे प्रसव समानता हो।

विकासवादियों का यह कथन तो सही है कि प्राणियों की उत्पत्ति, सादी रचना से क्लिष्ट रचना के क्रम से होती है लेकिन यह कथन मान्य नहीं कि सादी रचना वाले ही क्लिष्ट रचना वाले हो जाते हैं। कानखजूरे की सी क्लिष्ट रचना सांप की नही है और न तितली जैसी कारीगरी कौवे में ही पायी जाती है लेकिन विकासवाद कहता है कि तितली और कानखजूरा कौवे और सर्प से पहले ही उत्पन्न हो गये थे। ऐसी स्थिति में सादी और क्लिष्ट रचना का कुछ भी मूल्य नही रहता। वास्तव मे सृष्टि का नियम है कि पहले भोग्य और फिर भोक्ता उत्पन्न होता है। कर्मानुसार प्राणी ही भोग्य और भोक्ता होता है। सादी रचना वाले भोग्य और क्लिष्ट रचना वाले भोक्ता होते है। इस व्यवस्था के अनुसार सर्वप्रथम वनस्पति फिर पशु और अन्त मे मनुष्य पैदा हुए।

११ गांधी कालोनी, सहारनपुर (उ० प्र०)

आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी हो

श्री तनवंतसिंह कीर

विगत ११ तारीख को श्री महर्षि दयानन्द आर्य शिक्षा समिति के तत्वावधान मे केन्द्रीय समाज कल्याण सलाहकार बोर्ड, नई दिल्ली के स्वरोजगार योजना के अन्तर्गत २० सिलाई मशीनो के वितरण समारोह के मुख्य अतिथि म० प्र० के स्थानीय शासनमंत्री श्री तनवंतसिंह कीर ने कहा कि आज के इस महगाई के युग में महिलाओ को आर्थिक दृष्टिकोण से स्वावलम्बी बनना होगा। वर्तमान शासन महिलाओं को न केवल राजनीति वरन् सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रो में भागीदारी में शामिल कर रहा है।

प्रमुख वक्ता डा० सुनीष मिश्रा सामाजिक कार्यकर्ता, विशेष अतिथि अतिथि महापौर श्रीमती अणिमा उबेजा, नगर के अग्रणी उद्योगपति, सामाजिक कार्यकर्ता श्री प्रकाशचन्द्र बाहेती पार्षद श्रीमती हसमुखी जोशी एवं श्री मेहीराम सीतलानी ने भी सम्बोधित किया। पांचवीं की बोर्ड की परीक्षा मे प्रावीण्य सूची मे आने वाले छात्र दुर्गेश मुक्ता एव मधुबाला भवन को संस्था की ओर से रजत पदक और वार्ड पार्षद द्वय श्रीमती चन्द्रकांता खातीवाला एवं श्रीमती गोपीदेवी आर्य की ओर से हाथ घड़ी प्रदान की गई।

काशी के पण्डितों का खोखलापन

नन्दिता शास्त्री पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी-१०

विगत २८ जनवरी काशी के सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में महात्मा गांधी की १२५वीं जयन्ती के अन्तर्गत आयोजित एक समारोह मे सम्मिलित होने का अवसर मिला। विश्वविद्यालय के तथा अन्य सनातनी मूर्धन्य पण्डितों की उपस्थिति में यह सभा आयोजित थी। विश्वविद्यालय के वर्तमान कुलपति डा० मण्डन मिश्र जी स्वयं इसकी अध्यक्षता कर रहे थे। विषय था–"सनातन धर्म और महात्मा गांधी"। आमन्त्रित मुख्य वक्ता थे–श्री नारायण भाई देसाई जी। आपने अपने भाषण में महात्मा गांधी जी के जीवन को एक दर्शन की संज्ञा देते हुए जहां उनके बहु-आयामी जीवन की सोदाहरण सविस्तार चर्चा की वहीं उनकी अनेक भूलो पर लीपापोती करने का भी भरपूर प्रयास किया। साथ ही गांधी जी का सनातन धर्म के साथ गहरा सम्बन्ध था इसे सिद्ध करने के लिए उन्होंने गान्धी जी के "सर्वधर्म समभाव" का भी उल्लेख किया और कहा कि गांधी जी कहते थे–"सभी धर्मों का अध्ययन करो, उनको पहचानो किन्तु आलो चना की दृष्टि से नहीं अपितु जिज्ञासु भक्त की दृष्टि से'। उनकी इस बात को सुन काशी के दिग्गजी सनातनी विद्वान मन्त्रमुग्ध थे किन्तु वाह रे जिज्ञासु भक्त का दर्शन! कहा गया महर्षि यास्क का यह कथन! कि–

'मनुष्या वा ऋषिषु उत्क्रामत्सु देवानब्रुवन् को न ऋषि र्भविष्यति इति? तेभ्य एत तर्कमृषिम् प्रायच्छन्'

अर्थात्–ऋषियों के अभाव मे ऋषिवचनो के विस्मृत होने पर तर्क ही एकमात्र तुम मनुष्यों का ऋषि है। परस्पर तर्क पूर्वक समालोचना के द्वारा ही तुम जीवन के वास्तविक गन्तव्य पथ का निश्चय कर सकते हो। किन्तु सर्वधर्मसमभाव की दृष्टि को अपना कर किसी की आलोचना न करने का सिद्धान्त अपनाने वाले लोगो से मैं पूछना चाहती हू कि क्या तथाकथित विभिन्न धर्मों की विभिन्नता का मूल उनकी परस्पर आलोचना नहीं है? बिना एक दूसरे मे कमी देखे उन्हे काटे छांटे क्या दूसरे धर्म का अस्तित्व हो सकता है? कभी नहीं, परस्पर की आलोचना एक दूसरे की कमियां खामियां और विवाद की जडें ही तो उनकी भिन्नता के मूल कारण हैं। विभिन्नता मे एकात्मक दृष्टि अपनाने वाले जन बहुत बड़ी भूल मे है क्योंकि धर्म तो वस्तुत एक ही होता है। उन भिन्न-भिन्न सम्प्रदायो मे जो भी परस्पर एकता है, आस्तिकता या मनुष्यता की बातें हैं वही तो वस्तुत धर्म के मूलाधार हैं। धर्म का तो लक्षण ही यही है–'जिसका कोई विरोधी न हो जिससे प्राणिमात्र के अभ्युदय और निःश्रेयस की सिद्धि होती हो वही धर्म है।" इस प्रकार यदि विरोध समाप्त हो गया तो विभिन्न धर्म तो अपने आप ही समाप्त हो गए फिर सर्वधर्मसमभाव कैसा? पर फिर भी इनमे भिन्नता है इसे परस्पर सभी धर्माचार्य जानते हैं और स्वीकार करते है। और जिन अर्थो मे ये भिन्नतायें हैं उनकी तरफ से जान-बूझकर अपनी आखें मूद कर सबमे अभेद बुद्धि मानना या तो हमारी अत्यन्त मूढता ही कही जा सकती है। या फिर चापलूसी पूर्ण सबको सन्तुष्ट करने की गांधी जी की एक सोची समझी चाल। जिस पर अन्तत वे कायम भी न रह सके और वर्ग विशेष की तुष्टि मे ही सम्पूर्ण राष्ट्र को ले डूबे। पाकिस्तान बनाने के लिए ५५ करोड रुपए भारत सरकार से दिलवाने के बावजूद जो मुसलमान न चाहें वे यहां रहें' का आश्वासन देने वाले राष्ट्रपिता वस्तुत सम्बन्ध मे सर्वधर्मसमभाव की धज्जियां उडाते हुए पाकिस्तान और मुस्लिम सम्प्रदाय के ही पिता बन गए। जिसे आज का प्रत्येक प्रबुद्ध वर्ग निःसंकोच स्वीकार करता और समझता है।

गांधी जी की इस महती भूल को भी एक दर्शन का जामा पहनाते हुए जब श्री देसाई जी ने इसे गांधी जी के "प्रतिप्रेम" अर्थात् बदले की भावना से प्रेम नहीं करता यानी प्रेम के बदले मुझे कोई स्नेह या आदर देगा इस भावना को न रखना ही इसका मूल कारण है बताया तो काशी की विद्वन्मण्डली तो झूम उठी। श्री देसाई जी का यह स्पष्टीकरण चिरकाल से आज तक प्रसुप्त इन तथाकथित सनातन धर्मियो के लिए तो लुभावना हो सकता है किन्तु उन्हें पता होना चाहिए कि महात्मा गांधी जी किस राष्ट्र के पिता कहे जाते हैं? जो कभी "आर्यावर्त" कहा जाता था। जहां आर्य और दस्यु ये दो ही जातियां थी। जिनके लिए स्पष्ट वेद मे कहा है–

"विजानीहि आर्यान् ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान्"।
(ऋ० १।५१।८)

अर्थात् हे मनुष्यो! तुम गुणो से मनुष्य के श्रेष्ठता की आर्यत्व की पहिचान करो इनसे इतर अनार्यो को तुम दस्यु समझकर बर्हिष्मते अपनी उन्नति के लिए सद्गुणो की वृद्धि के लिए, अव्रतान् इन सकल्पहीन दुष्ट मनुष्य जाति के कलंक अनार्यों को शासत् नीतिपूर्वक अनुशासन करते हुए, रन्धय हिंसय उनकी दुष्टता के लिए उन्हें प्रताडित करो न कि उनके फलने फूलने के लिए उन्हे स्वतन्त्र स्थान और धन देकर सन्तुष्ट करो। किन्तु गांधी जी ने देश के अपने पुत्रो के साथ यही किया और लड़ाई के बीज अनन्त काल तक के लिए बो दिये।

अन्त मे संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति तथा वेद विभागाध्यक्ष प्रो० युगलकिशोर मिश्र जी का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए यह कथन तो सम्पूर्ण काशी विद्वन्मण्डली की अध्ययन-प्रियता विद्वत्ता और जागरूकता मे प्रश्नचिन्ह लगा गया कि गान्धी जी साक्षात्कृतधर्मा थे गांधी दर्शन वेद है, गान्धी को पढ़ना वेद को पढ़ना है। जिस प्रकार वेद की दो विशेषताएं हैं कि वेद स्वत प्रमाण तथा त्रिकालाबाधित हैं उसी प्रकार गान्धी दर्शन भी तीनो कालो से बाधित नहीं होता अर्थात त्रिकाल सत्य है।' काशी के इन सनातनी वेद विभागाध्यक्ष की वेद के प्रति ऐसी अनास्था! तिस पर भी काशी की विद्वन्मण्डली उन्हें दाद दे रही थी और जिन उपस्थित विभागा-अध्यक्षो या विद्वानो को ये बात खटकी भी वे यह कहते हुए चुप थे कि हमारा विषय तो वेद है नहीं हम कैसे कुछ कह सकते हैं। ये स्थिति है आज काशी के इन कूपमण्डूक सनातनी पण्डितो की। कितने खोखले और हलके हो चुके है इसके मन-मस्तिष्क इसका अनुमान आप लगा सकते हैं। और कहते हैं कि अब तो गान्धी को हमने सनातनी मान लिया है इसलिए सनातन धर्म पर पड़ने वाले आक्षेपो का उत्तर देने के लिए गान्धीवादियो को भी तत्पर होना पडेगा। छि! आज सनातनी अपनी निर्बलता के कारण सबसे दोस्ती तो कर सकता है लेकिन किसी का उत्तर नहीं दे सकता ये तय हो गया है।

वस्तुत जो जैसा है उसको वैसा ही जानना मानना और कहना तर्क है। सत्य की डुगडुगी पीटना आसान है पर वस्तुत सत्य की पहचान कोई बिरला ही करता है और कोई बिरला क्रान्तिकारी युगपुरुष ही बिना किसी की परवाह किए उसे सबके सामने प्रकट कर सकता है। क्योंकि इसके लिए शास्त्रीय अध्ययनपूर्ण विद्वता योग्यता के साथ-साथ ब्रह्मचर्यगत तप तेज और साहस की भी तो आवश्यकता है जिसका कि गांधी जी मे नितान्त अभाव था। ऐसा काम तो हमारा लंगोटी बन्द बाल ब्रह्मचारी दादा दयानन्द ही कर सकता है जिसे न आगे की परवाह थी न पीछे की। बरेली की वह घटना कोई भूल सकता है क्या? जब दयानन्द ने गरजते हुए अपने भाषण मे कहा था–

'लोग कहते हैं कि सत्य को प्रकट न करो क्योंकि कलक्टर क्रोधित होगा, कमिश्नर अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे! चाहे चक्रवर्ती राजा भी क्यो न अप्रसन्न हो हम तो सत्य ही कहेंगे।"

वस्तुत सबको सन्तुष्ट भी रखना और सत्यवादी भी बने रहना यह बहुत बड़ी धोखे की नीति है। पर दयानन्द के कोड़ो की मार खाने के बाद फिर से अपना मुंह ऊपर उठाने के लिए लोगो को एक ऐसे व्यक्तित्व की ही अपेक्षा थी जो उन्हें गांधी के रूप मे मिल गया। जिसका इस्तेमाल कोई भी कर सकता है मुसलमान कहेगा हमने गांधी को मुसलमान मान लिया है सनातनी कहेगा हमने गान्धी को सनातनी मान लिया है इसी प्रकार जैनी बौद्ध पादरी ईसाई सब यही कह कर गांधी को अपनी ढाल बनायेंगे। किन्तु हम दयानन्द के अनुयायियों को आज ऐसे गांधीवादी व राष्ट्रवादी लोगो से सतत सावधान रहने की आवश्यकता है अन्यथा कब को ये हमें भी ले डूबेंगे।

दमे से बच सकते हैं प्राणायाम करने से

भारतीय समाज का एक तबका ऐसा है, जिसकी आवश्यकताए उपयोगिता से नहीं, बल्कि शौक से निर्धारित होती हैं। इस तबके को 'फारेन ब्राड' के बिना चैन कहा ? बीकानेरी भुजिया से इसका हाजमा भले खराब हो जाता हो, यदि उसी भुजिया को पेप्सी बेचे तो इनके चेहरे पर रौनक आ जाती है। भारतीय ऋषियों द्वारा आविष्कृत 'योग' इन्हें नकारा लगता है, पर इस 'योग' के पाश्चात्य सहोदर 'योगा' पर ये रीझते नजर आते हैं। आखिर अपने देश में स्वीकृति पाने के लिए स्वामी विवेकानन्द का भी तो 'फारेन' से प्रामाणिकता का सर्टिफिकेट लाना पड़ा था। ऐसा ही कुछ वाक्या है, 'प्राणायाम' का। भारतीय योगशास्त्र में वर्णित 'प्राणायाम' भले ही उबाऊ लगता हो, पर 'डीप ब्रीदिंग' का 'क्रेज'-सा हो गया है।

प्राणायाम योग की एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति सास के सहारे वायुमडल मे व्याप्त प्राणशक्ति को खीचकर आधि-व्याधियो से मुक्ति लेकर आत्मसाक्षात्कार जैसे परिणाम भी हस्तगत कर सकता है। प्राच्यविदो की मान्यता है कि सजीव 'प्राण' की मौजूदगी के कारण ही 'प्राणी' कहलाते है। वायुमडल मे, विश्व-ब्रह्माड के कण-कण मे प्राण-तत्व मौजूद हैं। सजीव प्राणी इस ब्रह्माड व्यापी प्राण से तालमेल बैठाकर ही जीवित रह पाते हैं। यदि मनुष्य विशेष प्रयास से प्राण शक्ति को बढा ले तो वह चेतना की उच्चतर अवस्था को प्राप्त कर सकता है, आधि-व्याधियो स मुक्त हो सकता है।

प्राणायाम का ही पश्चिमी सहोदर है 'डीप ब्रीदिंग'। डीप ब्रीदिंग' का अर्थ है 'गहरी सास लेना। बाल्टीमोर स्थित जान हापकिन्स यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक एल्किस टोग्यास एव उनके सहयोगी इन दिनों डीप ब्रीदिंग' पर अनुसधानरत है। अपने शोध के दौरान एल्किस टोग्यास एव उनके सहयोगियो ने पाया कि दमा के रोगी एव स्वस्थ मनुष्य के फेफड़ का निर्माण करने वाले ऊतको की प्रकृति मे कोई खास अन्तर नही होता। फर्क होता है, तो केवल गहरी सास लेने की सक्षमता एव अक्षमता का।

दमा की बीमारी के दौरान फेफड़े की वात नलिकाओ के अन्दरूनी सतह पर खरोच जैसे प्रवर्ध उग आते हैं फलस्वरूप वात नलिकाए सकरी हो जाती हैं और सास लेन मे कठिनाई आती है। दमे का दौरा कुछ विशेष रसायनो, एलर्जिक अभिकारकों, धूम्र कणो आदि की वजह स प्रभावित होता है। वैज्ञानिको को उम्मीद थी कि स्वस्थ मनुष्य के फेफड़े पर दमा पैदा करने वाले रसायनो का प्रभाव दमा के रोगियो की अपेक्षा कम पड़ेगा। पर उनका अन्दाजा गलत निकला। तन्दुरुस्त एव स्वस्थ व्यक्तियो पर भी इन रसायनो का उतना ही प्रभाव पड़ा, जितना रोगियो पर।

एल्किस टोग्यास ने २० व्यक्तियो का एक दल लिया, जिसमे १० दमे के रोगी थ। एव शेष १० को किसी प्रकार की कोई बीमारी न थी। इन सबो को मिथैकोलिन नामक एक रसायन सु घाया गया। मिथैकोलिन एक ऐसा रसायन है, जिसे सू घने स वात नलिकाए सकुचित हो जाती हैं। मिथैकोलिन सू घन क बाद दमे के रोगियो क गल से साय-साय की आवाज आने लगी, जबकि स्वस्थ व्यक्तियो पर इस रसायन का शुरू मे कोई प्रभाव नही पड़ा। हा, जब मिथैकोलिन के प्रभाव से स्वस्थ व्यक्तियो के फेफड़े की वात नलिकाए भी सकुचित होने लगी तो इन पर ठीक वैसा ही असर दीख पडा जैसा दमे के रोगियो पर। वस्तुत दमे के साथ जुड़ी समस्त दैहिक परेशानियो की वजह है, गहरी सास लेने की क्षमता का अभाव। यदि आरम्भ मे ही डीप ब्रीदिंग' का अभ्यास डाला जाए तो दमे की बीमारी पास भी न फटके।

'डीप ब्रीदिंग एव प्राणायाम मे मौलिक फर्क है। पहली जहा विशुद्ध रूप से एक यात्रिक प्रक्रिया है, वही प्राणायाम 'डीप ब्रीदिंग' से युक्त होते हुए भी एक भावना प्रधान कृत्य है। जब 'डीप ब्रीदिंग' से दमे को चकमा दिया जा सकता है, तो प्राणायाम से उसका निवारण भला कैसे सम्भव नही।

–अवनीश कुमार मिश्र

सत्यार्थ प्रकाश मेला

नवलखा महल गुलाब बाग उदयपुर मे २७ एव २८ फरवरी को विशाल सत्यार्थ प्रकाश मेले का आयोजन किया गया है इस अवसर पर विशाल यज्ञ तथा उद्घाटन प्रदर्शनी के अतिरिक्त सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन, मनुस्मृति भ्राति निवारण सम्मेलन कवि सम्मेलन तथा तृतीयआर्य लेखक सम्मेलन सहित अनेको अन्य कार्यक्रम सम्पन्नहोगे समारोह मे स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती, भैरोसिह जी शेखावत, श्री ललित किशोर चतुर्वेदी, डा० भवानीलाल भारतीय, डा० सावित्री देवी आर्या सहित अनेको विद्वान नेता तथा कविगण पधार रहे है। अधिक से अधिक सख्या म पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाय।

सुकन्या . . . सुगृहिणी . . . सुमाता

—सन्तोष शैलजा

जैसे बूंद सागर मे वैसे ही उपरोक्त तीन शब्दों मे नारी जीवन की परिभाषा समाई है। अपने विशाल कार्यक्षेत्र के कारण वह पुरुष के बराबर ही नही अपितु उससे कही अधिक महत्त्वपूर्ण है। कन्या के रूप मे जब वह अपने माता-पिता एव भाई के साथ रहती है, तो परिवार मे भाई से उसका स्थान अधिक महत्व का होता है। बेशक, इसमे आप सन्देह भी कर सकते है। यह सन्देह आज विपरीत परिस्थितियों की उपज है। चू कि आज की विकृत मनोवृत्ति बेटी को बेटे से कम मानती है। इसके पीछे सदियों की दासता मे उत्पन्न अनेक कुरीतिया हैं। वरन् इतिहास व सस्कृति साक्षी है कि हमने कन्या को कभी तुच्छ या अभिशाप नही माना। जन्म से उन्हे 'लक्ष्मी' का नाम ही नही अपितु सम्मान भी दिया। वैदिक साहित्य मे अनेक ऐसी विदुषियो का उल्लेख है जिन्होने शास्त्रार्थो मे भाग लिया एव वेद-मन्त्रो की रचना मे भी योगदान दिया।

इससे सिद्ध होता है कि शिक्षा के क्षेत्र म लडकी को पूर्ण अधिकार प्राप्त थे। यहा तक कि परदे की प्रथा भी न थी और 'स्वयवर' द्वारा विवाह मे भी उसके मत का आदर था। दासता की प्रतीक कुप्रथाए जैसे बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, अनपढ, सती-प्रथा आदि सब मध्यकाल के बाद आयी जिसका कारण थे—विदेशी आक्रमणकारी! शक, हूण, तुर्क, मुसलमान और अग्रेज-इन विदेशियो से रक्षा के लिए लडकियो को घर की चारदीवारी म परदे की ओट मे रखना पडा और धीरे-धीरे इसी से अनेक बधन बढते गये।

किन्तु, आज जब कि स्वतन्त्रता-सूर्य ने चहु ओर प्रकाश बिखेरा है, तो नारी भी अपने वास्तविक स्वरूप को क्यो न पहचाने? सुकन्या के रूप मे वह अपने व्यक्तित्व का ऐसे विकास करती है कि परिवार की ममता का केन्द्र होते हुए प्रेरणा केन्द्र भी बन जाती है। कई बार वह भाई को गलत काम के लिए रोकती और पिता को भी टोक देती है। कहावत प्रसिद्ध है कि बेटे से बेटी मा-बाप की अधिक हितैषी होती है। क्यो? कारण यही है कि उसमे अपने से अधिक परिवार के भले-बुरे का विचार अधिक प्रबल रहता है। वह स्वय को मा के अनुसार ढालती और वैसे ही सबका ध्यान रखती है। 'सुगृहिणी' उसी कली का पूर्ण विकसित पुष्प है जिसे सुकन्या ने माता-पिता के आगन मे विकसित किया था। अब यह पुष्प एक नए परिवार मे खिलता है जो उसकी ससुराल' है। सुगहिणी के रूप मे वही सुकन्या अब नए परिवार की बागडोर सम्भाल लेती है। बेशक लगता है कि पुरुष ही परिवार का स्वामी व कर्ता-धर्ता है किन्तु सच्चाई इसके विपरीत होती है। पत्नी का अधिकार उसे बल से नही बुद्धि से, स्वार्थ से नही त्याग से प्राप्त होता है। इसीलिए उसे केवल गृहिणी नही सुगृहिणी बनना पडता है। तब उसकी शिक्षा की कसौटी वह परिवार होता है। वहा उसने केवल घर ही नही, घर के सदस्यो यानि पति व बच्चो—यदि सयुक्त परिवार हो तो उन्हे भी—ठीक दिशा मे चलाना होता है। वह नाटक की ऐसी सूत्रधार है जो पृष्ठभूमि मे सब सचालन करतीहै। आज की गृहिणी यदि सुगृहिणी बन जाए, तो समाज की अनेक विकृतिया दूर हो जाए। इसका एक जीता-जागता उदाहरण देती हूं। केरल राज्य मे एक छोटा सा स्थान है—'वाईपीन'। इन दिनो वहा एक प्रबल जन-आन्दोलन की चिंगारी प्रज्ज्वलित हो उठी है। इसकी प्रेरक है—वहा की सुगृहणिया। ये स्त्रिया कम पढी-लिखी भले है पर विवेक म कम नही। सकल्प-शक्ति मे भरपूर इन स्त्रियो ने देखा कि मदिरा-सेवन से उनके पति व परिवार नष्ट होते जा रहे है। बस, इस बुराई को जड से उखाड फेंकने की कमर कस ली। एक के बाद अनेक स्त्रिया इसमे जुड गई। इन्होने शराब की दुकान के सामने पिकेटिंग की, धरने दिए, अपने पुरुषो को भी शराबखाने जाने मे रोका—यहा तक कि दुकान को 'सीलबन्द' कर पहरे पर वे स्वय खडी हो गई। परिणाम यह हुआ कि अब उनके साथ उनके पुरुष सहयोगी भी मिल गए है। सबसे अच्छी बात यह हुई कि मलयालम की सुप्रसिद्ध कवयित्री एव समाजसेविका सुगन्ध कुमारी ने भी इनका समर्थन कर दिया है। 'नर्मदा-बचाओ' आन्दोलन की नेत्री मेधा पाटकर ने भी उनका साथ देना शुरू कर दिया है। यह सिद्ध करता है कि गृहिणी जब सुगृहिणी बनने का सकल्प कर ले तो पति व परिवार को कुमार्ग पर जाने से रोक सकती है।

'सुमाता' इसी पुष्प की सुगन्ध का प्रसार है। इस रूप मे केवल पति ही नहो, बल्कि बेटे व बेटी के विकास की बागडोर भी उसके हाथ मे होता है। 'झूला झुलाने वाले हाथ ही वस्तुत विश्व पर राज्य करते है'—यह उक्ति कोरी नही, सच्चाई है। स्त्री केवल माता बनकर जन्म ही नही देती अपितु 'सुमाता' बनकर अच्छी शिक्षा भी देती है। दुर्भाग्य से आधुनिक मा केवल जन्म देने का कर्तव्य पूरा कर शिक्षा का सारा जिम्मा स्कूलो को सौप निश्चित हो गई है। परिणाम सामने है—युवक-युवतियो मे उदण्डता, अनुशासनहीनता एव चरित्र की कमी। इसमे दोष मा का सबसे अधिक है। बच्चे को स्कूल मे पहले शिक्षक मिलते है माता-पिता! उन्हे देख-सुनकर बच्चा जीवन के पाठ पढता है। स्कूल तो किताबी-ज्ञान देते हैं जब कि जीवन की कला, चरित्र के गुण घर म प्राप्त होते हैं। बच्चे को सिखाने के लिए मा को स्वय आदर्श बनकर जीना होता है क्योकि बच्चा उपदेश मे नही बल्कि प्रत्यक्ष आचरण से सीखता है। जरा अपना हृदय टटोल कर पूछे क्या आधुनिक मा इस कर्त्तव्य को निभा रही है?

दहेज की बलि वेदी पर वेद प्रभा

हरदोई आर्यसमाज श्रद्धानन्दनगर के सस्थापक सत्यवीर प्रकाश आर्य एडवोकेट (भजनोपदेशक) की पुत्री वेदप्रभा का विवाह ३-६-९४ को ग्राम रबरी के प्रदीप कुमार के साथ सम्पन्न हुआ था। दहेज के लिए वेदप्रभा को ससुराल वाले उसे बराबर प्रताडित करते रहे और अन्तत १७ जनवरी को ससुराल वालो ने वेदप्रभा की निर्मम हत्या करके उसकी लाश को गायब कर दिया। अभी तक पुलिस की लापरवाही से अभियुक्तो की गिरफ्तारी नही हो पाई है। जनपद के वरिष्ठ पत्रकारो ने एक आपातकालीन बैठककर निर्णय लिया कि हत्यारो पर शीघ्र कार्यवाही करके न्याय न किया गया तो पत्रकार आदोलन की राह पर अग्रसर होने को बाध्य होगे। मृतका वेदप्रभा की आत्मा की शाति एव सद्गति तथा शोकाकुल परिवार के धैर्य हेतु जनपद के विभिन्न सामाजिक सगठनो ने शोक सभायें की और दोषी हत्यारों की शीघ्र गिरफ्तारी की माग की।

—श्रीमती किरन बाजपेयी हरदोई

दलित ईसाइयों के लिए आरक्षण की मांग अन्य वर्गों का शोषण

आय समाज शाहजहापुर के २५-१२-९५ एव ३१-१२-९५ को आयोजित साप्ताहिक अधिवेशन मे एक प्रस्ताव ईसाइयो की धम के नाम पर आरक्षण की माग पर श्री वीरेन्द्र वर्मा कोषाध्यक्ष द्वारा विरोध मे प्रस्तुत किया गया। डा० शिवचरण शर्मा उपप्रधान आयं समाज के द्वारा अनुमोदन किया गया और सर्वसम्मति से पारित किया गया। अधिवेशन का सचालन श्री राजेशकुमार आयं, मन्त्री आयंसमाज शाहजहापुर ने किया।

आर्यसमाज शाहजहापुर ईसाइयो की इस माग को पूर्णतया अनुचित बताता है और भारत सरकार से कठोर शब्दो मे माग करता है कि वह ईसाई धर्मानुयाइयो की उक्त अवैधानिक एव सर्वथा अनुचित माग को कभी भी किसी दशा मे स्वीकार न करे। सविधान मे धर्म के नाम पर आरक्षण का कोई स्थान नही है। यदि भारत सरकार उनकी इस अनुचित माग को स्वीकार करती है यह सभी अन्य वर्गों का शोषण होगा जिसको आयं समाज कभी भी सहन नही करेगा।

आर्य समाज रीवा का रजत जयन्ती समारोह सम्पन्न

रीवा। स्थानीय आयं समाज का रजत जयन्ती महोत्सव ९ से ११ दिसम्बर ९५ को निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। महोत्सव कार्यक्रम ८ दिसम्बर को अपराह्न विशाल शोभायात्रा नगर भ्रमण के साथ आरम्भ हुआ। ९ दिसम्बर को प्रात ६ बजे ओ३म् ध्वजारोहण समाज प्रधान डा० कृष्णलाल डग ने किया) प० सत्यदेव शास्त्री ने ध्वज को राष्ट्र का प्रतीक स्वीकार करते हुए प्राण न्योछावर करके भी रक्षा करने की प्रेरणा दी।

९ से ११ दिसम्बर तक प्रतिदिन प्रात यज्ञ, दोपहर मे युवा, महिला शिक्षा सम्मेलन सायकाल आध्यात्मिक अधिवेशन आयोजित किए गये।

मच सचालन आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व उपप्रधान श्री गणेश प्रसाद साहा आयं, स्वागत समाज मन्त्री श्री सुशीलकुमार आयं तथा आभार व्यक्त किया प्रधान डा० के०एल० डग ने।

समाज के सस्थापक प्रधान स्वर्गीय श्री गजानन्द आयं के कनिष्ठ सुपुत्र श्री सुरेन्द्र आयं ने यज्ञशाला-निर्माण कराने की घोषणा के साथ ही वैदिक रीत्यानुसार वेदमन्त्रो के साथ आधार शिला रखी। महोत्सव की एक अनुकरणीय उपलब्धी रही। सुरेन्द्र जी के ज्येष्ठ भ्राता स्व० महावीर आर्य ने दयानन्द भवन (हाल-परिसर) के निर्माण मे अनुकरणीय आर्थिक सहायता प्रदान किया था।

शिवरात्रि

—डा० कु० आभा भटनागर एम०ए०, एम०एड० (स्वर्णपदक)

भारतवर्ष में प्रचलित महान् पर्व उपाकर्म (रक्षाबन्धन) ब्राह्मणों का विजयदशमी क्षत्रियों का, दीपावली वैश्यो का, और होली श्रमिकों का माने जाते हैं। इस दृष्टि से शिवरात्रि न वैदिक पर्व है, न स्मार्त न किसी वर्ण विशेष का, न ऐतिहासिक बल्कि एक साम्प्रदायिक (शैव सम्प्रदाय का) ही प्रतीत होता है।

शिवरात्रि फाल्गुन कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को शिव मन्दिरो मे शिवलिंग की पूजा करके मनाया जाता है। जहा काशी इत्यादि के शिवमन्दिरो मे धूमधाम से पूजा होती है वहा इस अवसर पर नेपालमे पशुपतिनाथ मे शिव की पूजा के लिए एक भारी मेला लगता है। केवल 'शिवपुराण मे शिवपूजा का वर्णन मिलता है, किस मास की चतुर्दशी हो ऐसा कही नही लिखा। यह शिव का जन्म दिन है, ऐसा भी नही लिखा।

पुराणो मे समुद्रमथन से चौदह रत्न प्राप्ति की कथा है। उसमे अमृत को लेकर देवो और असुरो मे झगडा हुआ, किन्तु विष को कोई भी पीने को तैयार नही हुआ। लोक-कल्याण की भावना से शिव जी ने उसे पी लिया, किन्तु गले से नीचे नही जाने दिया। फलस्वरूप उनका गला नीला पड गया और वे नीलकठ प्रसिद्ध हो गए।

शिवजी के सवत्र उपलब्ध चित्रो पर कवियो ने कल्पनाय की हैं। उनके अनुसार शिव के गले का साप उनकी सवारी चूहे को खाना चाहता है। पार्वती का शेर गणेश के माथे को चीरना चाहता है। पार्वती जो वामागी बनकर नाचे बठी हैं और गगा शिव के सिर पर। अत पार्वती जो कुढ रही हे 'इस पारिवारिक कलह को देखकर शिव ने विषपान किया—ऐमे जीवन से मरना बेहतर? यह कहानी मिथ्या लगती है, किन्तु एक शिक्षा सभी गृहस्थियो के लिए देती है कि ससार मे होने वाले कलह-जन्य विष को गले से नीचे न उतरने दे, उसी मे सबका कल्याण है।

दूसरे कवि ने लिखा है—

पिनाक-फाणि-बालेन्दु-भस्म-मन्दाकिनी युता।
पवर्ग रचित मूर्ति अपवग प्रदास्तु न ॥

अर्थात् पवर्ग (प, फ, ब, भ, म) मे बनी शिव की मूर्ति-पिनाक (धनुष) फाणि (सर्प), बालेन्दु (चन्द्रमा) भस्म (राख, भभूत) मन्दाकिनी (गगा) हमे अपवग (स्वर्ग) प्रदान करे। यहा साहित्य के प्रतिपालकार की ओर कम बल्कि किसी दूसरी ओर गभीर सकेत है। यह मूर्ति किसी व्यक्ति की नहो, अपितु भारत की है। धनुर्विद्या भारत की देन है। पाश्चात्य जगत मे भारत सापो का देश प्रसिद्ध है। चन्द्रमा की चादनी जसी भारत मे खिलती है वसी अन्यत्र कल्पनातीत है, तभी तो पूर्णमासी को ताज को देखने विदेशी पर्यटक आते है। भस्म लगाने वाले साधु भी भारत मे ही मिलते हैं। गगा भारत का मा है। जहा से गगा निकलती है वही शिव (हिमालय-भारत का सिर) है। हिमालय की एक पर्वत श्रेणी ही शिवालक (शिव-अलक) शिव की जटाजूट जहा से गगा का उद्गम है। इस प्रकार शिव और भारत प... ची हुए।

शिवरात्रि बार-बार आती है और चली ... है। एक बार टकारा मे बालक मूलशकर को उनके पिता शिव की पूजा के लिए मन्दिर मे ले गये। सभी के सो जाने पर बालक मूलशकर आखो पर पानी लगा-लगा कर शिवदर्शन के लिए जागता रहा। तभी चूहो ने आकर प्रसाद खाया और मूर्ति को मलमूत्र से अपवित्र कर दिया। इस घटना को देखकर बालक के मन मे जिज्ञासा हुई यह कैसा शिव है जो दुष्टों को दण्डित नही करता। जो अपनी रक्षा नहीं कर सकता वह दूसरों की रक्षा कैसे करेगा। यह सच्चा शिव (ईश्वर) नही है। तत्पश्चात् उन्होने घर छोड दिया। वेद आदि शास्त्रो का गहन अध्ययन किया। उन्होने वेद के आधार पर बताया कि ईश्वर की प्रतिमा नही हो सकती, मूर्ति पूजा बुद्धि विरुद्ध है—इत्यादि-इत्यादि। वह रात्रि मूलशकर (आगे ऋषि दयानन्द बने) के लिए शुभ रात्रि सिद्ध हुई, क्योकि जीवन का मर्म उन्हे जीवन-प्रभात मे ही मिल गया। जिस शिवरात्रि को मूल जी को इस सत्य का बोध हुआ उसमे आर्यसमाज का शिव-रात्रि के साथ अटूट सम्बन्ध हो गया आर्यसमाज इसे बोधोत्सव के रूप मे मनाता है और इस दिन शारीरिक व बौद्धिक प्रतियोगितायें कराता है।

टकारा (गुजरात-ऋषि दयानन्द की जन्मभूमि) का शिव सारे भारत का पर्यायवाची था। उस समय भारत रूपी शिव के मस्तक पर विधर्मी और विदेशी चूहे अवाछनीय उछल कूद कर रहे थे। ये चूहे आज भी भारत के अग अग को कुतरने को उतारू हैं। ये विनाशकारी तत्व कुछ देर दिनो मे रहकर ... फिर उठने लगते है, क्योकि शिव हाथो मे त्रिशूल धारण करके भी शकरानन्द बना हुआ है। वह अपना जड मूर्ति पर चढे प्रसाद व नैवेद्य को उन्हे खाने ... है। ... भारत रूपी शिव की जडत्व शीघ्र टूट जाए।

यदि ऋषि दयानन्द के जीवन मे यह दिन न आता तो बालक मूलशकर ऋषि दयानन्द न बन पाता। हम भी इस अवसर को हाथ से न जाने दे। ईश्वर हमे प्रेरणा दे कि हम सभी, अन्तर्मुखी होकर आत्मबोध का सकल्प लें, जिसकी ओर फिराक गोरखपुरी का भी सकेत है—'अक्ल बारीक हुई जाती है रूह तारीक हुई जाती है।" हम मन के अन्धेरे को दूर करे पारस्परिक मनभेदो से ऊपर उठकर अपनी शक्ति और समाज का सदुपयोग कर शिवरात्रि को बोधरात्रि के रूप मे ग्रहण करे, क्योकि यह जाग्रति का प्रतीक है।

—हैल्थ होम, दयानन्द ब्लाक, शकरपुर दिल्ली-११००९२

अंग्रेजी स्कूलों को मान्यता देने के फैसले की निन्दा

वाराणसी, १० जनवरी। उत्तर प्रदेश मे अग्रजी माध्यम वाले गैर सरकारी प्राथमिक एव जूनियर हाई स्कूलो को मान्यता देने के राज्य सरकार के फैसले की आर्य समाज के सर्वोच्च सगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो ने चिन्ता प्रकट की है तथा इस फैसले को तुरन्त निरस्त करने की माग की है। उन्होंने अंग्रेजी माध्यम को शिक्षा के माध्यम के रूप मे ही मान्यता दिए जाने को कल यहा जारी बयान मे हिन्दी विरोधी बताया।

बयान मे इस फैसले को राष्ट्र भाषा हिन्दी का अपमान करने वाला और सविधान विरोधी भी बताया गया है जिससे हिन्दी के गढ समझे जाने वाले उत्तर प्रदेश मे हिन्दी भाषा की जडें सूख जायेंगी। साथ ही राज्य मे एक दोहरी शिक्षा व्यवस्था स्थापित हो जाएगी और गरीबो, पिछड वर्गो और दलितो के बच्चे शिक्षा की सुविधाओ, से वचित रह जायेंगे। प्रदेश मे सरकार के इस फैसले की साहित्यकारो शिक्षको और सामाजिक राजनैतिक कार्यकर्ताओ सहित अनेको प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने कडे शब्दो मे निन्दा की है।

उन्होने कहा कि इस फैसले से धन और प्रभाव पर आधारित एक ऐसी दौड शुरु हो जायेगी कि प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर हिन्दी माध्यम वाले विद्यालय बन्द होते जायेंगे।

लंदन के आर्य समाज में प्रखर हिन्दुत्व का घोष

लन्दन मे वन्देमातरम् भवन मे इग्लैड के आर्य समाज की लन्दन शाखा ने भाजपा अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी के लन्दन आगमन पर एक वृहद् समारोह का आयोजन किया । समारोह मे ऋषि दयानन्द के विचारो और सत्य, वेद, वैदिक सस्कृति तथा निर्भीक वैदिक दर्शन के उनके प्रतिपादनो का श्रद्धापूर्ण स्मरण किया गया और भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष से अपेक्षा व्यक्त की गई कि वे वैदिक आर्य सस्कृति की पुनर्प्रतिष्ठा के अभियान को आगे बढायेंगे । इस अवसर पर आर्य समाज, लन्दन के महासचिव श्री राजेन्द्र चोपडा ने श्री आडवाणी को 'सत्यार्थ प्रकाश' की एक प्रति सादर भेंट की ।

लन्दन मे हिन्दी दिवस पर भी आर्य समाज ने एक बडा कार्यक्रम किया । सुविधा की दृष्टि से यह १७ सितम्बर को रखा गया (१४ सितम्बर के स्थान पर) । समारोह मे भारत सरकार से यह माग की गई कि देश को अन्य भारतीय भाषाओ मे आवश्यक पारिभाषिक और तकनीकि शब्दो को समाविष्ट कर हिन्दी भाषा को समृद्धतर किया जाए तथा ससद की समस्त कारंवाई मुख्यत हिन्दी मे और अन्य देसी भाषाओ मे हो । भारत सरकार हिन्दी का प्रयोग अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे हिचक, ग्लानि और कुठा से मुक्त होकर करे । हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, किन्तु भारतीय मीडिया मे ही हिन्दी उपेक्षित है । तथाकथित हिन्दी फिल्मों की भाषा में अरबी-फारसी और अग्रजी के शब्दो की भरमार होती है, जो हिन्दी को विकसित न होने देने का प्रयास है । हिन्दी राष्ट्रीय स्वाभिमान और आत्मगौरव की भाषा है । उसका राजनीतिकरण करने के स्थान पर राजनीति का ही हिन्दीकरण और स्वदेशीकरण होना चाहिए ताकि भारतीय राजनीति राष्ट्रभाषा जैसे मुद्दो पर भी सकीर्ण दृष्टि रखना छोड दे । ऐसा हो तो अहिन्दी भाषी प्रदेशो को हिन्दी के प्रयोग के लिए सहर्ष तैयार कर पाना कुछ भी कठिन नही है ।

वक्ताओ मे आर्य समाज लन्दन के अध्यक्ष प्रो० सुरेन्द्रपाल भारद्वाज के साथ ही सर्वश्री सोहन राही, यशपाल गुप्त, पद्मेश गुप्त श्रीमती पुष्पा भार्गव, सुरेश गुप्त, जगदीश कौशल तथा डा० भोलानाथ भार्गव मुख्य थे । महासचिव चोपडा ने इस कार्यक्रम का सचालन किया । समारोह की सफलता के लिए सराहनीय योगदान देने के लिए ६ युवाओ-अमित कहेर, नीरज पाल, ऋतु कपिला, कुमुद शर्मा और रवि गुलाटी को अध्यक्ष ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए ।

प्राचीन योग विद्याओ का विशाल प्रदर्शन

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अन्य वर्ष की भाति इस वर्ष भी दिनाक ८-९-१० मार्च १९९६ को आर्य समाज वेदआश्रम बगहरा, सोनो के प्रागण मे बड उत्साह पूर्वक यज्ञ तथा उच्च कोटि के विद्वानो, सन्यासियो का प्रवचन एव प्राचीन योग विद्याओ का विशाल प्रदर्शन होने जा रहा है, इस विशाल महोत्सव मे आप सपरिवार सहित सादर आमन्त्रित है ।

अत अपने तनमन धन से इस पुनीत कार्यक्रम में सहयोग के साथ उपस्थित होकर महोत्सव की शोभा बढाएँ, तथा जीवन लाभ उठावें ।

शकर प्रसाद आर्य, मन्त्री

खन्डन-मंडन

(श्री मोहनलाल, अजमेर)

खडन तो बहुत जरूरी है, खडन बिन मंडन हो कैसे ?
खेत में जब कूडा-करकट हो, प्रभु का हो फिर वन्दन कैसे ?
मलयाचल मे जब विषधर हो तो पा सकते चन्दन कैसे ?
दम भरा विष सीने में, उसमे हो अभिनन्दन कैसे ?

कपडे का खडन करके ही, ये वस्त्र बनाये जाते हैं,
लोहखड को तोड फोड कर शस्त्र बनाये जाते हैं
छेनी से खडित कर मूरत प्रस्तर बनाये जाते हैं
कायरता को तोड वीर सशस्त्र बनाये जाते हैं

खर पतवार भरी धरती पर खेती कभी नही होती,
मथा में गर कीचड हो, वह तन का मैल नही धोती
चन्द्र सूर्य मेघो मे हो तो क्षीण क्षीण लगती ज्योति,
मेघ फटे तब हो उजियारा, दुनिया प्रकाशित होती,

खडन हो दाढी-मूछो का तो मुह का मडन होता है,
विषय वासना मिट जावे तो रूह का मडन होता है
पाप मिटे दुनिया भर से, तो भू का का मडन होता है,
'मैं' का भाव मिटे जब से, तो 'तू' का मडन होता है,

बिन खडन का मडन कैसा, बिना घिसे चन्दन कैसा
ऊबड-खाबड मधुबन कैसा, मल से लिपटा बर्तन कैसा,

सब भाव भाज के धो डालो वर शुद्ध नही होता कोई,
बिन तर्क-वितर्क किए जग मे, प्रबुद्ध नही होता कोई,
सत्य मिले तो मिथ्या से प्रतिबद्ध नहीं होता कोई,
शास्त्रार्थ करो निर्णय खातिर, यह युद्ध नहीं होता कोई,

खडित कर दो पाखडो को, गर विष मिलता है विष पी लो,
सूरज चमका दो ज्ञान भरा, मौसी बदूको को झेलो,
सत्यबात बेखौफ कहो, फासी के फदे पर झूलो
विष पी करके अमृत मिलता, इस सार तत्व को मत भूलो ।

असंवैधानिक कदम

दिल्ली, विधान सभा एक राजभाषा विधेयक पर विचार कर रही है, जिसमे गुरुमुखी लिपि म लिखी पजाबी को दूसरी भाषा घोषित करने का प्रस्ताव है । किसी भाषा को राज्य की दूसरी भाषा घोषित करने के पहिले उसकी मातृभाषा लिखाने वालों की सख्या मालूम करनी चाहिए । राज्य पुनर्गठन आयोग के अनुसार यदि वे ३० प्रतिशत से अधिक है तो ठाक नहा तो इससे अन्य भाषा-भाषियों को आन्दोलन का मौका मिलेगा कि उनकी भाषा तीसरी भाषा, चौथी भाषा घोषित को जाए जिसका कोई अन्त न होगा । इस समय पजाबी को मातृभाषा लिखाने वालो की सख्या केवल ६३ / है । अत दिल्ली सरकार का पजाबी को राज्य की दूसरी भाषा बनाने का यह प्रस्ताव राज्य पुनर्गठन आयोग द्वारा निर्धारित ३० प्रतिशत के मानदड का उल्लघन करता है ।

भाषा के साथ लिपि का बन्धन लगाना भी असवैधानिक हैं । सविधान मे हिन्दी के लिए नागरी लिपि निर्दिष्ट है,इसके अतिरिक्त किसी भाषा के लिए लिपि निर्दिष्ट नहीं है । दूरदर्शी सविधान-निर्माताओ ने राष्ट्र की भाषायी एकता की दृष्टि से यही व्यवस्था रखी थी कि कोई भी भाषा सुविधा के अनुसार किसी भी लिपि में लिखकर उसका क्षत्र और उसकी उन्नति के साधन बढाए जा सकते है । उदाहरण थ सिन्धी के लिए विद्वानों ने नागरी लिपि स्वीकार करके उसकी उपयोगिता और व्यापकता मे उल्लेखनीय वृद्धि की है ।

अंग्रेजी का अनावश्यक बोझ उतारने के बजाय छात्रो के बस्ते मे एक और बोझ बढाने के लिए सरकार को जनता कभी क्षमा नही करेगी ।

—डा० जितेन्द्र कुमार
—आर्य समाज मन्दिर सरस्वती विहार, दिल्ली-३४

विदेश समाचार

मारीशस में शोक सभा

आर्य सभा मोरिशस ने गत १० जनवरी सन् १९९६ को प्रातः काल में एक शोक सभा का आयोजन किया था।

डी० ए० वी० स्कूल डबवाली मण्डी सिरसा हरियाणा में हुई अग्नि दुर्घटना में जिन ६०० विद्यार्थियों और इन के माता-पिताओं तथा सगे सम्बन्धियों की मृत्यु हो गई थी, उसी हेतु यज्ञ के उपरान्त ईश्वर से उन की आत्माओं की सद्गति और दुखी परिवारों के मन की शांति के लिए प्रार्थना की गई।

इस आयोजन में मोरिशस के डी० ए० वी० कालेज के ५५० विद्यार्थियों और उन के अध्यापकों ने भी भाग लिया था।

मौके पर कालेज की अधिष्ठात्री श्रीमती रत्न पुचवा जी ने प्रधान डा० हरिदत्त भूरा जी ने, श्री मूलशंकर रामधनी जी ने और श्री मकरन्द मोहित जी ने दो तीन शब्द सुनाये। यज्ञ कर्त्ता प० देवव्रत सालिक जी थे। एक मिनट के लिए मौन धारण किया गया।

८ वर्ष पूर्व भारत से डी. ए. वी. कालेजों की ओर से ८-१० शिक्षा शास्त्री विद्वान जब पधारे थे और वहां की शिक्षा प्रणाली देख कर अपनी प्रसन्नता प्रगट की। लोगों ने यहां शिक्षा मन्त्री जी और शास्त्रियों से नवीन माध्यमिक शिक्षण पर बातें की थीं।

पं० धर्मवीर घूरा शास्त्री
उपप्रधान उपदेशक मण्डल, आर्य सभा मारीशस

आर्य समाज लंदन-अक्तूबर-९५

इस माह साप्ताहिक सत्संगों में श्रीमती रजना ओबराय श्रीमती सरोज एवं श्री सुरेश गुप्ता, श्रीमती सुदर्शना चोपड़ा तथा श्रीमती वेदवती शर्मा एवं आर्य परिवारों ने सत्संग में भाग लेकर सत्संग का लाभ उठाया। प्रो. सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज, प्रधान आर्य समाज लंदन, डा. ताराजी आचार्य; तथा श्रीमती सावित्री छाबड़ा ने सन्ध्या-यज्ञादि सम्पन्न कर यजमानों को आशीर्वाद दिया।

भक्ति संगीत के कार्यक्रम में श्री लेखराम शास्त्रमय वेदपाठ की महिलाएं श्रीमती शशीपाल, सुरक्षा वर्मा, रश्मि वर्मा, हीना पटेल एवं श्री खान (भारत) ने अपने मधुर स्वरों में भजन गाये।

वेद-सुधा के सत्र में प्रो. भारद्वाज, डा. ताराजी आचार्य एवं श्रीमती कैलाश धसीन ने वेदमन्त्रों की सरस व्याख्या की इसके अतिरिक्त विभिन्न अवसरों पर कुछ कार्यक्रम इस प्रकार हुए—

(१) डा. सुरेश शर्मा ने भारतीय सस्कृति की धरोहर वेदों की रक्षा हेतु अपने बच्चों को तैयार करने की प्रेरणा माता-पिता को दी।

(२) श्री प्रबोध मोमन ने राजकीय स्थितियों से सुपरिचित रहने के महत्त्व का प्रतिपादन किया।

(३) श्री ललित नामपाल जे पी ने अपने सारगर्भित व्याख्यान में कहा कि हमें अपने समाज की उन्नति के लिए अपनी-अपनी योग्यता अनुसार अपनी सेवाओं को अर्पण करना चाहिए।

(४) प्रो. सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज ने हिन्दू एकता की आवश्यकता पर बल दिया।

आरती, जयघोष, शान्तिपाठ और प्रीति भोजन के साथ सत्संग समाप्त हुए।

(आर. के. चोपड़ा) मन्त्री

वार्षिकोत्सव

—आचार्य कुल (कन्या महाविद्यालय) लोवां कलां का १९ वां वार्षिकोत्सव २४-२५ फरवरी को समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। उत्सव में आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें। इस अवसर पर विवाह यज्ञ के अतिरिक्त अनेकों अन्य कार्यक्रम सम्पन्न होंगे।

अखिल भारतीय आर्य युवक सभा का नवगठन

नई दिल्ली, राष्ट्र में व्याप्त आर्थिक विषमता, सामाजिक अन्याय धार्मिक अन्धविश्वास राजनैतिक भ्रष्टाचार तथा चारित्रिक पतन अपनी चरम सीमा को लांघ चुके हैं। जिसके विरुद्ध बेहद आक्रोश एवं असंतोष बढ़ता जा रहा है। परन्तु वर्तमान युवा पीढ़ी आज किंकर्तव्य विमूढ़ की स्थिति में है कि क्या करे। क्योंकि आज की युवा पीढ़ी जानवर की तरह स्वार्थ पूर्ण आत्मकेन्द्रीत और आदर्शहीन जीवन जीने के लिए मजबूर कर दी गई है। इसी कारण युवकों को अश्लील और नशीली संस्कृति ने जकड़ लिया है। परिणामस्वरूप निराशा छाई हुई है। उदासीनता पनप रही है।

अतः इस सारे दुखद घटना क्रम को दूर करने, युवकों में नया जीवन फूंकने तथा इनको भावी संघर्ष के लिए तैयार करने हेतु दिनांक १३-८-९५ को आर्यसमाज पालम कालोनी नई दिल्ली में एक सशक्त व क्रान्तिकारी संगठन "अखिल भारतीय आर्य युवक सभा" का नवगठन किया गया। जिसमें सर्व सम्मति से डा. जसबीर आर्य को (प्रधान) आचार्य शक्तिव्रत को (उपप्रधान) पं. कृष्ण विद्यावाचस्पति को (महासचिव) व श्री. रणजीत आर्य को (वित्त सचिव) चुना गया।

इसके उपरान्त सभा में ठोस निर्णय लिया गया कि वर्तमान सड़े गले समाज को बदलने के लिए देशभक्त चरित्रवान युवको को अधिकाधिक संख्या में संगठित कर आर्यसमाज में दीक्षित किया जाये।

पं० कृष्ण विद्यावाचस्पति
(सम्पादक व महासचिव)

ऋषिबोधोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

(पृष्ठ १ का शेष)

कार्यकर्त्ता प्रधान श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट ने करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के माध्यम से अछूतोद्धार, गोहत्याबन्दी और नारी शिक्षा का जो संदेश हमें दिया था वह हम सबके लिए आज भी प्रेरणास्रोत है और आज की युवा पीढ़ी को उनके इन सन्देशों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए दिल्ली प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष श्री केदारनाथ साहनी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जिस समय आर्य समाज की स्थापना की थी उस समय हमारा देश बहुत ही संकट पूर्ण स्थिति में फंसा हुआ था और यदि महर्षि दयानन्द अवतरित न होते तो हमारे देश की क्या दशा होती इसका अंदाजा लगाना कठिन है। उन्होंने कहा कि इस बात का इतिहास भी साक्षी है कि भारत को स्वतन्त्रता दिलाने में आर्यसमाज का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है और आज फिर देश गंभीर संकट से गुजर रहा है इसलिए आज की युवा पीढ़ी को महर्षि दयानन्द के बताये हुए मार्ग पर चलने की आवश्यकता है तभी देश को संकट से उबारा जा सकता है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज की नीति कभी भी समझौतावादी नहीं रही है, इसलिए हमें आशा है कि आर्य जन आज भी देश के लिए हर प्रकार की कुर्बानी देने के लिए तैयार रहेंगे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के सन्देशों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि देश की गम्भीर परिस्थितियों को सुधारने की पहल केवल आर्य समाज ही कर सकता है और इसके लिए हमारे भारतीय संविधान में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है, क्योंकि हमारे संविधान के कुछ अंश आर्यसमाज के राष्ट्रवादी सुधार कार्यक्रम में बाधक हैं। समारोह को प्रसिद्ध राष्ट्रवादी नेता प्रो० बलराज मधोक तथा प्रो० राजेन्द्रसिंह ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर डा. राकेश रानी एवं डा. उषा शास्त्री को केन्द्रीय सभा की ओर से सम्मानित किया गया। समारोह का संयोजन केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा. शिवकुमार शास्त्री ने किया।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एल० ११०७१/९६ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२५-२-९६) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी) ९३/९६
R N. 626/27 Licensed to post without prepayment licence No. U (C) 93/96 Post in N.D.P.S.O.on 22,23-2-1996

मनु का विरोध करने वालों को चुनौती

कोटा, १३ फरवरी; १९९६ आर्य सभा रामपुरा कोटा के प्रचार संयोजक रघुवीर सिंह कुशवाहा ने प्रेस बयान जारी करके बताया कि आर्य समाज रामपुरा का ६८वां वार्षिक उत्सव १०,११,१२,१३ फरवरी को सम्पन्न हुआ। इसमें अजमेर से पधारे परोपकारिणी सभा के संयुक्त मन्त्री डा. धर्मवीर ने मुख्य वक्ता के रूपमें अपने विचार प्रकट करतेहुए कहा कि मनु ने मानव मात्र के कल्याण का रास्ता सुझाया। हमारे वर्तमान कानून का मूल मनु है। मनु की सन्तान होने से ही मनुष्यों को मानव संज्ञा बनी है। जो लोग मनु को गाली देते हैं। वस्तुतः मनुस्मृति को उन्होंने पढ़ा ही नहीं है। कुछ मूर्खों के कहने में आकर मनु के विरुद्ध प्रचार करने में लगे हैं। मनु महाराज वर्ण व्यवस्था मानते हैं जो गुण कर्म पर आधारित है न कि जन्म की जात पांत पर।

इस सम्मेलन में श्री घनश्याम जी प्रेमी मुजफ्फर नगर तथा श्री नवराज सिंह जी प्रेमी मेरठ ने अपने भजनोपदेश से श्रोताओ को लाभान्वित किया इस अवसर पर महिला सम्मेलन आर्य सम्मेलन का आयोजन भी किया गया। समारोह में श्रीमती पुष्पा भूतियाम का उनकी सामाजिक सेवाओं के लिए समाज की ओर से सम्मान किया गया।

राजभाषा विधेयक की विसंगतियों को दूर करने की मांग

(हमारे कार्यालय संवाददाता द्वारा) नई दिल्ली, १४ फरवरी। राजधानी के बुद्धिजीवियों ने दिल्ली राजभाषा विधेयक १९९५ की विसंगतियो को दूर करने की मांग की है। यह मांग दिल्ली राजभाषा जागृति मंच की ओर से आयोजित एक विचार-गोष्ठी मे उभरी।

गोष्ठी में कहा गया कि दिल्ली विधान सभा में पेश किए गए राज भाषा विधेयक की धारा ३ और ६ शासन-प्रशासन के व्यवहार में हिन्दी के इस्तेमाल में रुकावट बन सकती है।

वक्ताओ के अनुसार, धारा-३ में सरकारी कामकाज में अधिकारियोंको छूट देने और धारा-६ में सरकार के सभी विधायी कार्य विधेयक, प्रस्ताव व अध्यादेश आदि मूलतः अंग्रेजी में पेश किए जाने का प्रावधान है। इस धारा में यह भी प्रावधान है कि अंग्रेजी पाठ को ही प्रामाणिक माना जाए।

गोष्ठी में वक्ताओं ने कहा कि इन प्रावधानो के कारण दिल्ली विधान सभा, दिल्ली सरकार और राजधानी की अदालतों में कामकाज पहले की तरह अंग्रेजी में ही होते रहने के आसार बढ़ गए हैं।

बुद्धिजीवियों ने मांग की कि विधेयक की धारा-३ व ६ में संशोधन करके विधान सभा व अदालतों में हिन्दी के प्रयोग सम्बन्धी प्रावधान विधेयक में शामिल किए जाएं। ऐसा करके ही हिन्दी को राजस्थान, उत्तर प्रदेश और हरियाणा की तरह राजभाषा का दर्जा दिया जा सकता है।

शोक समाचार

अत्यन्त दुख के साथ सूचित किया जा रहा है कि गोलागोकर्णनाथ खीरी निवासी श्री नरेन्द्र देव शास्त्री के इकलौते युवा सुपुत्र २३ वर्षीय तपन शर्मा का आकस्मिक निधन २७-१-९६ को हो गया है।

उनका शान्ति यज्ञ ८ फरवरी को सम्पन्न हो गया। इस दुखद अवसर पर सैकड़ो लोगो ने उपस्थित होकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। सार्वदेशिक परिवार उनके इस दारुण दुख में सहभागी है।

—नेपाल आर्य समाज काठमाण्डू के प्रधान श्री टेक बहादुर रायमाझी का आकस्मिक निधन २१ जनवरी को हो गया। वे ७५ वर्ष के थे। श्री टेक बहादुर जी आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न किया गया। उन्होंने काठमाण्डू में आर्य समाज के प्रचार तथा प्रसार मे महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया था। अपने पीछे वे भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं उनका शान्ति यज्ञ आर्य समाज काठमाण्डू में हजारो लोगो की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। जहां उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

निःशुल्क योग शिविर

ब्लड शुगर, मानसिक तनाव, हार्ट अटेक, गैस, कब्ज, ब्लड प्रेशर एवं एसीडिटि से १० दिन में आराम पाएं

आज के इस वैज्ञानिक युग में विभिन्न प्रदूषणों के द्वारा मनुष्य स्थूल एवं सूक्ष्म शरीर से निरन्तर रोग ग्रस्त होता चला जा रहा है। वहीं छोटी सी छोटी बिमारी के लिए दवाओं का प्रयोग कर अपने शरीर में जहर घोलकर अनेक नए असाध्य रोगों को जन्म देकर कष्टों को भोग रहा है। हमारे ऋषि महर्षियों द्वारा अनुभव कर प्रकाश में लाया गया एक आसान तरीका जिसे श्री आचार्य यशोवर्द्धन योगी जी ने वर्षों से प्रयोग कर अनेक कष्ट साध्य रोगियों को रोग मुक्त कराया है, उस प्रयोग का लाभ उठाकर अपनी बीमारियों से हमेशा के लिए छुटकारा पाएं।

२४ फरवरी से ४ मार्च तक प्रातः ६ बजे से ८ बजे तक आर्य समाज मन्दिर सत्यवती नगर दिल्ली-५२ साय ४ से ६ बजे तक पिकनिक हट नजदीक सत्यवती नगर दिल्ली-५२ मे सम्पन्न होगा।

—डा० धर्मवीर भारती, मन्त्री

शोक समाचार

माताचन्द्रवती जी वानप्रस्थी (आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर) का दिल्ली में २३ जनवरी, १९९६ को अकस्मात निधन हो गया। उनकी आयु लगभग ८२ वर्ष की थी।

माता जी श्री रोशनलाल गुप्ता महामन्त्री दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा व उप प्रधान आर्य समाज सरोजिनी नगर नई दिल्ली, की बड़ी बहन थी। वे १० वर्ष तक आर्य स्त्री समाज सरोजिनी नगर की कर्मठ कार्यकर्ता रहीं। अपने पति के निधन के पश्चात वह हरिद्वार चली गई। कई वर्ष वहां रहकर वेदों का पाठ सीखा और वेदों का अध्ययन किया। सन १९६५ में उन्होंने महात्मा रघु आश्रित जी महाराज से वानप्रस्थ की दीक्षा ली और वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) मे रहने लगीं और मृत्यु समय तक आश्रम की सेवा करती रहीं। वह आश्रम की अन्तरंग सदस्य थीं और आश्रम की ओर से दूर-दूर जाकर बड़े-बड़े यज्ञों में वेदपाठ और धर्मप्रचार करती रही। उन्होंने आर्य समाज के बहुत से बड़े-बड़े कार्यक्रमों, हिन्दी आन्दोलन, गोरक्षा आन्दोलन आदि में भाग लिया और जेल भी गई।

उनके आकस्मिक निधन से आर्यसमाज को विशेष रूप से आर्य वानप्रस्थ आश्रम हरिद्वार को बड़ी हानि हुई है।

२६ जनवरी, १९९६ को श्री रोशनलाल जी के घर में शान्ति सभा और श्रद्धांजलि सभा का आयोजन निर्माण विहार दिल्ली में किया गया जिसमें माता वीरावती जी ने आश्रम की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की और श्री सूर्यदेव जी सभा प्रधान, श्री वेदव्रत शर्मा महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, स्वामी स्वरूपानन्द जी, सहित आर्य समाज के वरिष्ठ सदस्यों ने भारी संख्या में उपस्थित होकर माता जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज पिलखुवा का वार्षिकोत्सव १६ से १९ फरवरी तक सम्पन्न हो गया। जिसमें आर्य जगत में उच्च कोटि के विद्वान तथा भजनोपदेशकों ने भाग प्रदान किया। इस अवसर पर विशाल शोभायात्रा वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन, आर्य राष्ट्र सम्मेलन सहित अनेकों अन्य कार्यक्रम सम्पन्न हुए।
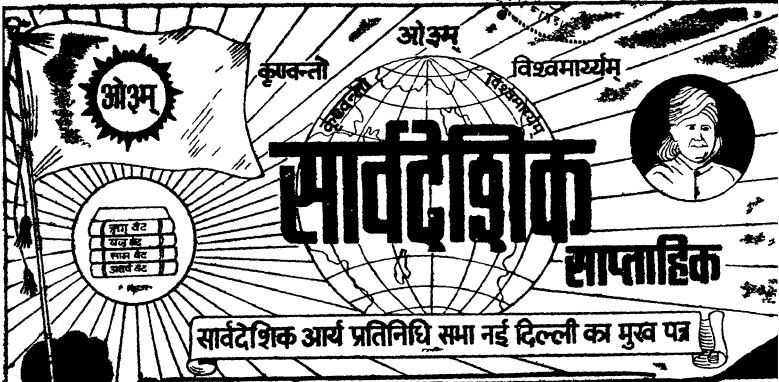
सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३५ अंक ३) दयानन्दाब्द १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६ फाल्गुन शु० १३ सं० २०५२ ३ मार्च १९९६

गो वंश की रक्षा हेतु सर्वस्व समर्पण का ऐतिहासिक संकल्प

सम्वत् २०५३ गोरक्षा वर्ष के रूप में मनाया जाये

सम्पूर्ण भारत के गोभक्त प्रतिनिधि यह अनुभव करते हैं कि गोवंश हमारे राष्ट्रीय जीवन मूल्यों एवं सांस्कृतिक वैभव का ही केवल प्रतीक नहीं वरन् देश के अर्थतन्त्र का भी आधार है। इसकी निर्मम और अबाध हत्या राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की हत्या है तथा महर्षि दयानन्द जी सरस्वती की भावनाओं पर कुठाराघात एवं सहस्त्रों गोभक्त साधु सन्तों द्वारा एतदर्थ किये गये बलिदानों का भी तिरस्कार है। राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, गुरुनानक की पुण्य भूमि भारत अनादिकाल से सम्पूर्ण भूमण्डल में अहिंसा और करुणा की संदेशवाहक रही है। इस देश की केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा मातृस्वरूपा गो व इसके वंश की निर्मम हत्या की अनदेखी ही नहीं करना वरन विदेशी मुद्रा के लालच में मांस निर्यात में निरन्तर वृद्धि करने हेतु नवीन यांत्रिक कत्लखाने खोलने के लाइसेन्स देना पैशाचिक कृत्य है। ऐसे कुशासन को अब देशभक्त व गोभक्त नागरिक और सहन नहीं कर सकते। गोवंश हत्या एवं हर प्रकार के मांस निर्यात को अविलम्ब बन्द करने की मांग के साथ साथ पूज्य धर्माचार्यों द्वारा सर्व सम्मति से निर्णय किया गया है कि विक्रम सम्वत् २०५३ गोरक्षा वर्ष के रूप में मनाया जावे तथा धर्म प्राण भारत की पावन धरती से सदा सर्वदा के लिए गोवंश हत्या के कलंक को मिटा दिया जावे।

हत्या के लिए जाने वाले गोवंश को वैधानिक परिपेक्ष्य में बल-पूर्वक रोकना रोके गये गोवंश को गोशालाओं व गोसदनों में रखना भारतीय किसान संघ एवं सम्पूर्ण ग्रामीण समाज द्वारा उनके लिये चारे का भण्डारण तथा इस कार्य में कानूनी सहायता के लिए अधिवक्ताओं का योगदान, २० मार्च से १० अप्रैल तक प्रखण्ड तहसील एवं जिला केन्द्रों पर पूज्य धर्माचार्यों के नेतृत्व में जन जागरण हेतु गोवंश (बैनर विथ सहित) की विशाल शोभायात्राओं तथा जनसभाओं का आयोजन उक्त संकल्प के मुख्य बिन्दु है।

उत्तर प्रदेशीय आर्य महासम्मेलन की जोरदार तैयारियां

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के निश्चयानुसार उत्तर प्रदेशीय आर्य महासम्मेलन मेरठ में सम्पन्न होने जा रहा है। सम्मेलन की सफलता के लिये जोरदार तैयारियां प्रारम्भ हो चुकी है। रसीद बुकें तथा टिकटें तैयार हो गयी है। आर्य महानुभावों से निवेदन है कि वे शीघ्र सम्पर्क कर रसीदें व टिकटें प्राप्त कर धन संग्रह प्रारम्भ कर देवें।

इस अवसर पर एक स्मारिका का भी प्रकाशन होगा विद्वगण गम्भीर सिद्धान्त युक्त लेख यथाशीघ्र भेजें। स्मारिका हेतु विज्ञापन की दर निम्न प्रकार होगी।

पूरा पृष्ठ	१००० रुपया
आधा पृष्ठ	५०० रुपया
चौथाई पृष्ठ	२०० रुपया मात्र

उक्त सम्मेलन को सफल बनाने हेतु तन मन धन से सहयोग प्रदान करे।

—सम्पादक

आर्यसमाज स्थापना दिवस

२० मार्च ९६, बुधवार, मध्याह्नोत्तर २ से ५ बजे तक सप्रू हाउस, नई दिल्ली में समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। आप सब सपरिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित सादर आमन्त्रित है।

निवेदक

महाशय धर्मपाल — प्रधान
डा० शिवकुमार शास्त्री — महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

नयी चेतना और नारी

इन्दुजा भारती

पिछले वर्ष अयोध्या में एक यज्ञ का आयोजन किया गया था उसमें प्रसिद्ध समाजसेवी महिला महारानी सिन्धिया को यज्ञ की वेदी पर भाग लेने हेतु बैठने नहीं दिया गया था।

उसी प्रकार उड़ीसा मे होने वाले पूजा पाठ में स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी को भाग लेने पर विद्वत समुदाय ने मना कर दिया था। कारण कुछ भी हो। पर नारी को किसी भी स्थिति में यज्ञों, अनुष्ठानो में क्यों मना किया जाता है।

पण्डित समुदाय मे क्या ज्ञान चक्षु नही है जिन्होंने विगत प्राचीन गृह्य सूत्रों और ब्राह्मण ग्रन्थों का अनुशीलन नही किया है जिसमे ब्रह्मवादिनी वेद पाठी महिलाओ ने वैदिक ऋचाओ का अर्थ सहित सांगोपांग विवेचन किया है।

पिछले वर्ष कलकत्ता के एक समारोह मे मान्य शंकराचार्य जी ने महिलाओ द्वारा वेद-मन्त्रो के पठन-पाठन पर आपत्ति प्रकट की थी। नारी जाति को वेद मन्त्र पाठ निषिद्ध है ऐसा सिद्धांत पक्ष है मनाने का।

परन्तु वेदो मे कई मन्त्रदृष्टा महिला ऋषिकायें हुई जैसे--सूर्या, सावित्री, घोषा, अपाला आदि ऋषिकाओ को कौन नही जानता है इन्हीं शंकराचार्य के प्रथम शंकर का शास्त्रार्थ जब मण्डन मिश्र के साथ हुआ। उसकी मध्यस्थता मण्डन की पत्नि भारती को शंकराचार्य के आग्रह पर नियत किया गया था शास्त्रार्थ में मण्डन पराजित हुए थे। तब भारती ने जो शंकर से प्रश्न किए गए थे उनका उत्तर न दे सकने के कारण शंकर ने हार मानी थी, तब आज के इन यति आचार्यों से कोई पूछे, क्या उस समय महिलायें वेद पाठ नहीं करती थी।

युग बदला और एक ऐसा महापुरुष धरा पर जन्मा, जिसका नाम था--स्वामी दयानन्द! उसने नर-नारी को यज्ञोपवीत धारण कराकर गायत्री मन्त्र का पाठ कराया था और अध्ययन के पश्चात एक आदेश दिया था--

"कन्या युवानं विन्दते पतिम्"

गृहस्थाश्रम में आने पर पति-पत्नि, इस मन्त्र पत्नि पठत् बतलाया था। फिर महर्षि के आदेश पर कन्या गुरुकुलो, महाविद्यालयों में कन्याओं को साधिकार वेद मन्त्रो को पढ़ने का अधिकार दिया। किन्तु युग परिवर्तन के समय भी ऐसे मतिमन्दों की कमी नहीं हैं जो अपने आगे नारी को हीन भावना से देखते है--

मैंने आर्य समाज के इस सही दृष्टिकोण को जाना व समझा है जिसमें बुद्धिजीवी इन्सान को वह सभी काम्यकर्म वैदिक ऋचाओं के पाठ के साथ करने का अधिकार प्राप्त है। हिन्दू रीति रिवाजों में सोलह संस्कार बिना पत्नि के अधूरे हैं अत. पति के साथ पत्नि भी सहभागिनी बनें।

यज्ञ चैव विवाहे च स्त्रियाः दक्षिणतो सदा" यज्ञों और विवाह में स्त्री दक्षिण भाग मे बैठकर अनुष्ठान करें। समय समय पर बुद्धि का दिवाला पीटने वाले पण्डितम्मन्यो से पूछें। यदि गृहस्थ की गाड़ी मे नारी विद्या से शून्य है ना आने वाली सन्तान विद्वान कैसे बनेगी।

गार्गी और याज्ञवल्क्य के शास्त्रार्थ की कथा को सुनकर हम अपने को गौरवान्वित क्यो मानते हैं।

१९४५-४६ ई० में भी एक कन्या को इसी प्रकार अपमानित होना पड़ा था कुमारी कल्याणी नामक एक कन्या को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के वेद विभाग में प्रवेश नहीं लेने दिया गया था और पण्डितों ने घोर आपत्ति वेद मन्त्र करने पर प्रकट की थी कन्या को वेद पढ़ने का अधिकार है भी या नहीं? इस प्रकरण पर काफी ऊहापोह मचा था। तत्कालीन आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान् पं० देवदत्त शर्मोपाध्याय तथा अन्य सुधीजनों ने शास्त्रार्थ कर वाराणसी की पण्डित मण्डली को मूक किया था। वेदाधिकार के समर्थन मे आर्यसमाज को प्रमुख पत्रिका सार्वदेशिक पत्र में कई लेख लिखे गये थे जो आज भी उस मासिक पत्र में देखें-पढ़े जा सकते हैं। उस समय "काशी के" सिद्धान्त पत्र में भी विरोध में लेख प्रकाशित हुए थे। तत्कालीन वैदिक विद्वानों का शिष्ट मण्डल महामना पं. मदनमोहन मालवीय जी से तथा विश्वविद्यालय के अधिकारियों से मिला था।

परिणामतः महामना मालवीय जी ने एक बैठक विद्वानों की शीघ्र आहूत की। और २२ अगस्त १९४६ को उस समिति ने अपने निश्चयानुसार नारी-कल्याणी को वेदाध्ययन का अधिकार दिया गया। तब कल्याणी को वेद-विभाग मे प्रवेश मिला।

भारत के मान्य शंकराचार्य के पीठाधीश्वर उस निर्णय के बाद भी नारी को वेदपाठ से दूर रखना ही मानते हैं।

युग बदला विश्व की नारी आकाश में राकेट में भ्रमणरत है विज्ञान की कसौटी पर, युद्ध के मोर्चों पर ज्ञान की सीमा में सर्वोच्च पद प्राप्त नारी सुरक्षा परिषद की अध्यक्षा बन सकी। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने राष्ट्र संघ मे ऋग्वेद के अन्तिम संगठन सूक्त के मन्त्रों का पाठ सुनाया था। वह मन्त्र यह थे।

१. समानो मंत्रः समितिः समानी,०'

२. संगच्छध्वं सम्वदध्वं सम्वोमनांसि जानताम्--जिनका पाठ कर वेदों को मान्यता सिद्ध की थी।

आज भी कन्या गुरुकुलों मे जाकर देखें वाराणसी में तो स्व० डा० प्रज्ञादेवी, डा. सावित्री देवी वेदाचार्या बरेली, श्रीमती दमयन्ती देवी आचार्या क. गु. कु. देहरादून इस प्रकार ब्रह्मवादिनी विदुषी महिलाएं वेदपाठ ही नहीं, पौरोहित्य पद पर बैठकर यज्ञ अनुष्ठान् भी विधिवत कराती है। इन्हें अनिष्ट की कोई भी आशंका नहीं है। कन्याओं में गुरुकुलों मे आत्म विश्वास के भाव भरे जाते हैं इसमें किसी का विरोध नहीं बल्कि ज्ञान की गरिमा को जन-जन तक पहुंचाने का प्राचीनता का श्रेय ही बटोर रहे हैं।

आश्चर्य तब होता है जब पुरुषों के बराबर नारी पौरोहित्य पद पर आसीन होकर प्राचीनता की अर्वाचीनता से पुष्टि कराकर वैदिक मर्यादाओं की श्रेष्ठता सिद्ध करती है।

आज की नारी ज्ञान एवं शक्ति का समन्वित प्रतिमूर्ति के रूप में दिव्य दृष्टा के रूप मे प्रकट हो रही है।

वर्तमान के परिपेक्ष्य में नारी के बढ़ते कदमों पर दृष्टिपात करें तो वह जहां ज्ञान-विज्ञान की ओर अग्रसर है वही गार्गी कात्यायनी की भांति घर से कन्या गुरुकुल तक यज्ञ वेदि से जनमानस तक मन्त्रों के उद्घोष कर जीवन मे चैतन्यता प्रदान कर रही हैं हिमालय की उपत्यका में कन्या गुरुकुल देहरादून ने नारी के नव जागरण का मन्त्र पाठ किया था।

आज का दिन भी सुरम्य है जब हरिद्वार में कन्या, गुरुकुल के साथ श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा स्थापित गायत्री परिवार यज्ञ को करने वाली महिलाओं द्वारा गायत्री मन्त्र का पाठ, मन आनन्द विभोर हो गया।

वाहरे महर्षि दयानन्द आपने पुरातन संस्कृति को वर्तमान में अश्वमेध यज्ञ कराकर नारी जाति को वैदिक ऋषिका के रूप में प्रस्तुत कर दिया।

परन्तु आज के धर्माचार्य नारी के सम्मान की बात करते हैं परन्तु यज्ञ कर्म जैसे पवित्र कार्य हेतु नारी का तिरस्कार कर वेदी पर बैठने भी नही देते। हम महिला वर्ष मनाते हैं किस लिए। नारी उत्थान हेतु, नवजागरण में अब नारी समस्या प्रदान नहीं है।

विचार कीजिये और नारी का हर प्रकार से शोषण बन्द कीजिये। नारी स्वयं आत्म चिन्तन करे--

सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान एवं सुप्रीमकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सोमनाथ मरवाह द्वारा दिया गया–

श्वेतपत्र का उत्तर (१५)

इन हालातों मे आप यह कैसे कह सकते हैं कि १०६ वोटर थे जिनमे से २० अस्वीकार किए गए, फिर किस आधार पर विद्यानन्द जीता। यद्यपि अब तो विद्यानन्द ने स्वय ही आर्य समाज की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया है जो कि नवभारत टाईम्स के २० जनवरी के अक मे प्रकाशित हुआ जो निम्न प्रकार है—

आर्यसमाज की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा

नई दिल्ली, १९ जनवरी। आर्य समाज क वयावृद्ध नता और वेद व्याख्याता स्वामी विद्यानन्द सरस्वती न आर्य समाज की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। छात्र जीवन से आर्य समाज से जुडें स्वामी जी ने लगभग साठ वर्ष आर्य समाज के लिए काम किया और विभिन्न पदो पर रहे।'

मैं आर्य जनता को यह भी बताना आवश्यक समझता हू कि अदालत ने विद्यानन्द से आगामी ६ अप्रैल ९६ को सदस्यता के सम्बन्ध मे प्रमाण प्रस्तुत करने को कहा है, और विद्यानन्द की सदस्यता ही ब्यावर आर्य समाज से फर्जी थी इसी डर से उन्होंन अपना त्याग पत्र दिया है।

कैप्टन देवरत्न और सुमेधानन्द का एक से एक बयान झूठा साबित होता है। २ जून ९५ वाले समाचार मे तो यह भी पता नही चलता कि चुनाव वन्देमातरम् जी या किसी और व्यक्ति की अध्यक्षता में हुआ। और क्या जो प्रेसीडेन्ट आपने चुना उसको बाकी अधिकारी चुनने का भी अधिकार दिया गया। यदि आपको मालूम नही था तो अपने साथियो से पूछकर लिखते कि २० सभासद, अवैधानिक किसने घोषित किए और उनके क्या नाम थे।

विद्यानन्द के अनुसार सभा प्रधान ही सभासदो की मजूरी और न मजूरी का अधिकार रखता है। और जो प्रोसीडिंग अदालत मे दाखिल की गई है उसके अनुसार १८० सभासद तथा ४ विशिष्ट कुल १८४ सभासद उपस्थित थे न कि १६०, यह भी गलत है कि तमिलनाडू के ९ सभासद थे, जबकि तमिलनाडू के १५ सभासद थे।

भोपाल के श्री स्वामी सत्यानन्द नहल्फी बयान भी दिया है कि विद्यानन्द वाला चुनाव बिल्कुल बोगस है और आपने फिर भी उन्हें उप प्रधान बताया है। जबकि वह सही सभा के उपप्रधान हैं।

आप अपने पिता के कार्य को आगे बढाने के बजाय खराब कर रहे, हैं, यह आपको शोभा नही देता। अब आप ही फैसला करें कि एक तरफ तो सुमेधानन्द मुकदमेबाजी कर रहा है और दूसरी तरफ आप उसको सन्यासी कहते हैं। मैं दावे से कह सकता हू कि आर्य समाज के सम्बन्ध मे उससे ज्यादा तो आपको जानकारी है वह आर्य समाज के विषय मे कुछ नही जानता जबकि नोकरी न मिलने पर उसने केवल काव इसलिए बदले कि इस वेश मे वह सभा तथा आर्य समाजो का रुपया एव उनकी जायदाद अच्छी तरह से हडप कर सकेगा और यही कारण है कि हवाई जहाज की यात्राओ पर हजारो रुपए तथा अपना फोटा छपवाने के लिए मधुर लोक अखबार को १०००/ रु० तथा जो दावा १५ रुपएमे हो सकता था उस पर ३३६०/- की कोर्ट फीस लगाई गई। तो क्या किसी ने आज तक सुमेधानन्द से यह पूछने का प्रयास किया कि यह पैसा कहा से आया ? और वह किसकी सलाह पर मुकदमें कर रहा है। उसने अपने एक दावे मे हल्फनामा बतौर प्रधान लगाया और जब मैंने उस पर आपत्ति की तो उसने उस पेज को निकालकर नया पेज लगवा दिया जिसमे अपने आपको उसने सेक्रेटरी लिखा। इसके लिए उसके तथा उसके वकील के खिलाफ फौजदारी का दावा कर दिया गया है, अब कहा नही जा सकता कि कब पुलिस इन व्यक्तियों के विरुद्ध एफ० आई० आर० दर्ज करके इन्हें गिरफ्तार कर लें।

कैप्टन साहब जैसी कि श्री भगवती प्रसाद गुप्त ने आपको सलाह दी थी वह बडी नेक और सही सलाह थी कि आप ऐसे व्यक्तियो का साथ छोड दे और अच्छे व्यक्तियो का साथ द।

बडे आश्चर्य की बात है कि जिन व्यक्तियो के नाम २९ मई ९५ को लिखकर रजिस्ट्रार को दिए गये थे उसम श्री विनोद बिहारी भटनागर सुपुत्र श्री रगीलाल का नाम लिखा गया है जो कि स्वामी दीक्षानन्द के रिश्तेदार है जिन लोगो ने १ जून ९५ को सभा कार्यालय पर कब्जा करने तथा डाका डालने जैसा कार्य किया उसमे श्री राजपाल शास्त्री के सुपुत्र श्री मधुर प्रकाश भी शामिल थे। श्री राजपाल जी मधुर लोक" नामक पत्रिका छापते है और आर्य समाज सीताराम बाजार मे उनकी किताबो की दुकान है।

परन्तु इन दोनो व्यक्तियो ने जानते हुए कि यह सब चुनाव वाली लिस्ट फर्जी है और श्री मधुरप्रकाश जो कि उस लिस्ट मे नही हैं, वह भी जुर्म करने मे शामिल हुए, तो इससे आप स्वय ही अन्दाजा लगा सकते है इनके सभासदा मे कितनी सच्चाई है। फिर भी आज का कोई सन्यासी या कोई और यह नही कह रहा कि यह चुनाव जिसके विषय मे कहा जा रहा है कि कैप्टन देवरत्न की अध्यक्षता मे हुआ यह सब फर्जी है।

मैने अपने लेख मे लिखा है कि मैं स्वामी ओमानन्द के खिलाफ जो पत्र मुझ मिले है वह मैं लिखने को तैयार नही हुआ परन्तु जो पत्र गुरुकुल झज्जर के परमहितैषियो ने लिखा है उसमे उन्होने स्वामी धर्मानन्द के विषय मेभी नीचे लिख शब्द लिखे हैं, उसका भी उत्तर उन्ही को देना चाहिए, वह शब्द इस प्रकार हैं–

"स्वामी धर्मानन्द (उडीसा) जिसे लगभग ३० वर्ष पूर्व चरित्रहीनता के आरोप मे गुरुकुल से निष्कासित किया गया था तथा जो कन्या गुरुकुल आम सेना उडीसा की एक अध्यापिका शारदा के साथ अवैध सम्बन्धो के लिए चर्चित रहा है को आचार्य पद पर नियुक्त करने का निर्णय लिया था, परन्तु जनता के दबाव के आगे यह निर्णय बदलने को स्वामी ओमानन्द को मजबूर होना पडा।'

परन्तु जो पत्र प० वीरेन्द्र कुमार पाडा मन्त्री उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा (उडीसा) वाले न ६-१२-९५ को श्री वन्देमातरम् जी प्रधान सार्वदेशिक सभा को लिखा है, उस पत्र को मैं अवश्य लिखना चाहता हू, और वह इस तरह है जिससे यह साबित होता है कि जैसे सुमेधानन्द ने फर्जी नाम सभासदो क भेजे थे इसी तरह धर्मानन्द ने भी फर्जी नाम सभासदो के भेजे हैं।

सेवा मे

माननीय श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली,

विषय उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा को मान्यता प्रदान करने के सम्बन्ध मे।

महोदय,

निवेदन है कि पिछले दिनों स्वामी धर्मानन्द ने उडीसा प्रान्त की आर्य समाजो को बिना सूचना दिए उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का बोगस चुनाव करके अपने को प्रधान घोषित करके बोगस प्रतिनिधि सार्वदेशिक सभा मे भेजे थे इस प्रकार स्वामी धर्मानन्द अवैधानिक रूप से उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का अपने को प्रधान कहते हैं।

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का वैधानिक रूप से निर्वाचन १७-७-९५ को सम्पन्न हुआ जिसमें प्रान्त की ५६ आर्य समाजों के प्रतिनिधियो ने भाग

(शेष पृष्ठ ४ पर)

चलो पढ़ायें कुछ कर दिखायें

श्रीमती सुदर्शन महाजन, प्रधानाचार्या

हम इक्कीसवीं शताब्दी की ओर बढ़ रहे है। अगर हमारा देश जिसकी आबादी ५० प्रतिशत के करीब निरक्षर है, तो हम अपने आपको ससार की उन्नति के साथ कैसे जोड पाएगे यह देश के लिए बडी चिन्ता का विषय है।

झुग्गी-झोपडी के उन बच्चो तथा प्रौढो के लिए सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत सरकार साक्षर बनाने का प्रयास कर रही हैं। और देश को निरक्षरता रूपी कलक से मुक्त करने का अभियान आन्दोलन के रूप मे चला रही है।

विद्यालय मे जो छात्र नवी, ग्यारहवी कक्षाओ मे अध्ययनरत है वे इन झुग्गी झोपडियो के परिक्षेत्रो मे जाकर एक घण्टा बच्चो को पढाते हैं तथा साथ प्रौढो के लिए कक्षायें लेते हैं इस अभियान मे छात्रो का सहयोग, जो देश एव समाज को उन्नत देखना चाहते हैं। और अपना सक्रिय सहयोग प्रदान कर इस अभियान को सफल बनाना चाहते हैं।

लेकिन प्रश्न यह उठता है कि वे बच्चे 'बाल मजदूर'' जो परिवार की रोजी रोटी कमाने का माध्यम है, उनके माता पिता न तो विद्यालय भेजना चाहते हैं। और न ही वह इस बात के लिए राजी हैं। कि उनके घर पर कोई उन्हें या उनके बच्चो को पढाने आये।

मेरे विचार में अगरहम शिक्षार्थियो को अभिप्रेरित कर,उनसे बार-बार सम्पर्क करें। साक्षरता का आवश्यकता पर बल दें। प्रौढो के सकोच को दूर करें, साक्षर होने के लाभ, साक्षरता रैली, नाटको का मञ्चन तथा अन्य गतिविधियो व समारोहो द्वारा प्रोत्साहन देकर स्वास्थ्य सफाई बच्चो का टीकाकरण, रहन-सहन, खान-पान के स्तर मे स्वच्छता के द्वारा सामाजिक प्रगति की तरफ उन्मुख करें। तो हम पूर्ण विश्वास के साथ कह सकते हैं कि वे बच्चे और प्रौढ साक्षरता मिशन की तरफ अवश्य अभिप्रेरित होगे।

इसके लिए केरल सरकार ने इस अभियान को अपने राज्य के एर्नाकुलम जिले मे निरक्षरता मिटाने का सर्वप्रथम उदाहरण प्रस्तुत किया है। और इसके लिए केरल राज्य ने सम्पूर्ण साक्षरता प्राप्त कर ली है अब इसके बाद केन्द्र सरकार ने भी सम्पूर्ण देश को साक्षर बनाने का अभियान चलाया है।

सरकारी सूत्रो के मुताबिक ७० लाख के करीब स्वयसेवक एव अनुदेशक देश मे साक्षरता के लिए निकले हुए हैं। जिनकी भावना है कि देश को साक्षर बनाकर सामाजिक बुराइयो को मिटाना और महिलाओ मे आत्म विश्वास की भावना को प्रबल बनाना हैं। गन्तव्य तक पहुचने के लिए बसो के नम्बरो की जानकारी बैंको मे लेन-देन, फार्मो को स्वय भरना धोखाधडी से बचना, और समाज मे सम्यक रूप से जीवन स्तर मे सुधार और सही ढग से हिसाब-किताब कर अपने आर्थिक जीवन मे वृद्धि कर सकें, और आपने बच्चो के एक बार के लिए पोष्टिक आहार जुटा पाने के लिए सक्षम होना ही इस अभियान का उद्देश्य है। ताकि समाज मे और देश मे एक नई चेतना जाग्रत हो सकें।

अब प्रश्न यह उठता है इन स्वय सेवको और अनुदेशको को भारत सरकार की ओर से कोई पुरस्कार मिलता है ? नही।

ये स्वयसेवक तो सिर्फ इस बात से प्रेरित है कि समाज से इन्हें बहुत कुछ मिला है। बदले मे समाज के प्रति इनका कुछ कर्तव्य भी बन जाता है। इनकी प्रेरणा का स्रोत इनके विचार सस्कार तथा समाज के प्रति कुछ करने की भावना हैं।

भावना है दीप से दीप जलाने की बल्कि एक दीप से सैकडो दीपो को प्रज्ज्वलित करना पूरे देश को शिक्षित करने की, एक नया सवेरा लाने की, उनकी उत्कण्ठा, निरक्षरता रूपी अज्ञान को मिटाकर नूतन उषा के प्रकाश मे नव चेतना जाग्रत करना है।

अब प्रश्न उठता है कि क्या सरकार पूरे देश को शिक्षित कर पाएगी।

हमे आशा ही नही पूर्ण विश्वास है कि सरकार अवश्य ही अपनी नीतियो मे साफल्यता को प्राप्त करेंगी। और हां यह काम समाज का है केवल सरकार अकेली अपनी नीतियों को सफल नहीं बना पायेगी। जब तक कि सामाजिक सस्थायें, आप और हम सब मिलकर सहयोग नहीं देवें। इसलिए आओ हम सब मिलकर देश को साक्षर बनाने का प्रण लें और "चलें पढाए कुछ कर दिखावें" की भावना लेकर सरकार के इस आन्दोलन मे कन्धे से कन्धा मिलाकर इस अभियान को सफल बनाए। हमारा देश अवश्य ही एक दिन साक्षर हो जायेगा।

के० एम० डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल
के० ब्लाक, पश्चिम विहार, नई दिल्ली

श्वेतपत्र का उत्तर

(पृष्ठ १ का शेष)

लिया और सर्वसम्मति से श्री आर्यकुमार ज्ञानेन्द्र को प्रधान,प० वीरेन्द्रकुमार पाण्डा को मन्त्री तथा श्री विनोद बिहारी दास को कोषाध्यक्ष चुना गया।

अतः आपसे प्रार्थना है कि उपरोक्त चुनाव मे सार्वदेशिक सभा के लिए निम्न दो सभासदो का चयन किया गया है। (१) श्री आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र, (२) श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती। कृपया आप सार्वदेशिक सभा के लिए इन दोनो सभासदो को स्वीकार करने की कृपा करे और साथ ही उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा तथा उसके उपरोक्त चुनाव को सार्वदेशिक सभा की ओर से वैधानिकता प्रदान करने की कृपा करे।

स्वामी धर्मानन्द ने जो सभासद सार्वदेशिक सभा मे भेजे थे वह अवैधानिक थे जिन्हे सार्वदेशिक सभा का सभासद नही माना जावे।

आशा है आप स्वीकृति प्रदान कर अनुगृहीत करेगे।

सधन्यवाद। भवदीय

प० वीरेन्द्र कुमार पाण्डा
मन्त्री

इस पत्र से पता चलता है कि किस प्रकार धर्मानन्द ने स्वामी आनन्दबोध जी को मीठी-मीठी झूठी बातें प्रचार के विषय मे करके लाखो रुपए सार्वदेशिक सभा से लिए हैं। मैंने सभा को आदेश दिया है कि जितने रुपए इस व्यक्ति ने सभा से लिए है उसका सारा हिसाब दिया जाये ताकि इससे पूछा जाए कि इतनी बडी राशि का हिसाब वह देवे नही तो उसके खिलाफ दफा ४०८ के जुर्म की रिपार्ट पुलिस को कर दूगा। इसमे कोई शक नहीं कि यह व्यक्ति गुरुकुल गोतम नगर के आचार्य का सहपाठी है पर बडे-बडे विद्वान भी चरित्रहीन हो जाते हैं।

मैंने एक छोटा सा मजमून सन्यास के ऊपर वैदिक लाईट मे लिखा था जो फरवरी ९५ के अक मे पृष्ठ ४ पर प्रकाशित हुआ था और सत्यार्थप्रकाश के ५ वें समुल्लास मे सन्यासी के क्या कर्तव्य होने चाहिए उस विषय मे लिखा गया है। परन्तु जो नया पत्र स्वामी ओमानन्द के विरुद्ध आया है उसमे इस विषय पर अच्छा लिखा है, इसलिए मैं समझता हू कि सन्यासियो के लिए उसका नीचे लिखा जाना आवश्यक है जो इस प्रकार है—

"हिन्दू (आर्य) धर्म के चार आश्रमो मे सन्यास आश्रम की महती गरिमा है। जब व्यक्ति ससार के सभी प्रकार के मोह पाशो से मुक्त होकर वैराग्य की तरफ प्रवृत्त होता है, तब स्वार्थ, अहकार, काम, क्रोध, लोभ तथा मोह आदि विषयो का त्याग करके सन्यास दीक्षा लेकर लोक हित के कार्यो एव परमात्मा की आराधना मे अपना शेष जीवन लगाता है। इन्हीं विशेषताओ के कारण सन्यास आश्रम सर्वाधिक आदरणीय माना गया है।"

स्वामी धर्मानन्द के विषय मे जो पत्र ऊपर लिखा गया है उसके अतिरिक्त चुनाव मे जो व्यक्ति सभा के अधिकारी और अन्तरग सदस्य चुने गये है, उन्होने पृथक लिखा है, परन्तु उसमे धर्मानन्द और उसके बोगस सभासद जो कि प्रधान जी ने गलती से मजूर कर लिए थे उनमे से कोई भी उसका कोई अधिकारी व अन्तरग सदस्य नही रहा और इस तरह स्वामी धर्मानन्द का कोई सम्बन्ध सार्वदेशिक सभा से नही रहा है और उनको तथा उनके साथियो को जो सभासद बनकर आए थे उन्हे सार्वदेशिक सभा से निकाल दिया गया है और वे सभा के सभासद भी नहीं रहे, और सार्वदेशिक सभा से उनका कोई ताल्लुक नही है। आर्य समाजो को चाहिए कि उनको किसी कार्यक्रम मे न बुलावें और उनके लिए आर्य समाज की स्टेज बन्द की जाय तथा उनका हर स्थान पर बहिष्कार किया जावे। यह ऐसा व्यक्ति है जो आर्य समाज को बदनाम कर रहा है। जैसा कि ऊपर लिखा है कि वह आचार्य जी के सहपाठी रहे हैं लेकिन सुमेधानन्द तो बिल्कुल अनपढ के बराबर है और वेदो के विषय में भी उसकी कोई जानकारी नहीं है। (क्रमश)

सर्वशक्तिमान् परमात्मा से शिकवा, प्रतिवाद, शिकायत

श्री सोमनाथ मरवाहा वरिष्ठ अधिवक्ता एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान

आर्य समाज के एक महारथी (फील्ड मार्शल) मेरे भाई श्री रामनाथ सहगल और उनकी पत्नी श्रीमती कमलेश सहगल अपने सारे जीवन भर और विशेष रूप से विवाह के पश्चात् आपके लक्ष्यों और उद्देश्यों का प्रचार करते रहे है, जो आर्य समाज के दस सिद्धान्तों और संगठन सूक्त मे वर्णित हैं और जो इस प्रकार हैं :

१—सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२—ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।

३—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहियें।

६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७—सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

श्री रामनाथ सहगल से मेरा परिचय सन् १९४८ में मेरे सबसे बड़े भाई श्री अमरनाथ ने कराया था। उनका पंजाब नेशनल बैंक में खाता था और श्री सहगल वहां काम करते थे। उनकी दशा बहुत कुछ उस व्यक्ति की सी है, जिसने अपने जीवन का सर्वस्व लगाकर एक झोंपड़ी बनाई हो और एक अंधेरी कड़ाके की ठंड भरी बरसाती रात मे वह झोपड़ी ही ढह जाये। परिणाम यह हुआ कि वह बिल्कुल असहाय रह गये और उसी रूप में उन्होंने उस यंत्रणा को भुगता। परमात्मा को ऐसा करना कहां तक उचित था, जिसके विषय मे आर्य समाज के उपरिलिखित १० नियमों में से संख्या २, ३, ६, ७, ९, और १० में बताया गया है, और यद्यपि ये दोनो ही पति-पत्नि न केवल इन नियमो और संगठन सूक्त के चार मन्त्रों का पाठ करते थे, अपितु उनके अनुसार आचरण भी करते थे, फिर भी इसके लिए उन्हें पुरस्कृत करने के बजाय उनकी स्थिति उस मनुष्य की सी बना दी गई, जिसका कि उदाहरण ऊपर शुरू में दिया गया है। श्री रामनाथ सहगल का जन्म १३-३-१९२६ को भेरा जिले के, जो अब पाकिस्तान में है, एक छोटे से गांव में हुआ था और उनकी स्वर्गीया पत्नी श्रीमती कमलेश का जन्म ३०-९-१९३० को झेलम जिले में डलवाल नामक स्थान पर हुआ था और इन दोनो का विवाह सन् १९५१ में १४ अप्रैल को दिल्ली में हुआ। उन दोनों में पारस्परिक सम्बन्ध वैसे ही थे, जैसे प्रभु राम और माता सीता के थे और वह राजा दशरथ की भांति पुत्र वत्सल पिता भी थे। पति-पत्नी दोनों ही एक दूसरे से कुछ भी छिपाते नहीं थे और वर तथा वधू दोनों ने विवाह के समय हवन के पश्चात यह सर्वविदित वैदिक विवाह प्रार्थना की, जिसका आशय इस प्रकार है :

"हे सर्वशक्तिमान प्रभु, हम आपकी सन्तान हैं। हमने ये आहुति असीम प्रेम और भक्ति से दी है। कृपा करके हमें सब सुख, समृद्धि, दीर्घ आयु और उत्तम स्वास्थ्य प्रदान कीजिए। इस संसार के सुख भोगते हुए हम कभी भी आपको भूलें नहीं। आपका कृपाशीष प्राप्त करने के लिए हम दोनो साथ मिलकर प्रार्थना करते रहें, जिससे हमें अपने गृहस्थ जीवन मे किन्हीं कठिनाइयों का सामना न करना पड़े और आपके कृपापूर्ण संरक्षण मे हम सदा सुखी प्रसन्न रहें।"

पुरोहित ने उन पर फूल बरसा कर आशीर्वाद दिया और प्रार्थना की "परमात्मा तुम्हें सब प्रकार की समृद्धि, सुख और शान्ति प्रदान करे। तुम दोनो को अपनी योजनाओं मे सदा पूर्ण श्रद्धा बनी रहे और तुममें दृढ़ आत्म विश्वास हो और पति-पत्नी दोनों में परस्पर पूर्ण विश्वास रहे। तुम दोनों मे परस्पर इतना प्रेम रहे कि कोई तीसरी शक्ति तुम्हारे पारिवारिक जीवन में अनुचित प्रवेश करके इस शाश्वत बन्धन को खण्डित करने की हिम्मत ही न कर सके। तुम दोनों एक दूसरे को ऐसे सच्चे मन से प्रेम करो कि तुम्हारे बीच कभी किसी गलतफहमी की कोई गुंजाइश ही न रहे। प्रतिदिन ईश्वर से प्रार्थना करो, उसके लिए कार्य करो, उसकी सेवा के लिए आत्मार्पण करो और धर्म पर आचरण करो। ईश्वर तुम से प्रेम करेगा और इस भवसागर को किसी भी कठिनाई के बिना पार करने में तुम्हारी सहायता करेगा।" और उन दोनो ने ही सारे जीवन भर पुरोहित की इस सलाह एवं शुभकामना पर निष्ठा पूर्वक आचरण किया।

पाकिस्तान में चले गये क्षेत्रों को छोड़कर भारत चले आने के बाद वे दोनो ही स्वामी दयानन्द द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तो के प्रचार में जुट गए, जो दस नियमों का मूल आधार है और जिनका और संगठन सूक्त के चार मन्त्रों का प्रत्येक समाज मे हर रविवार को पाठ किया जाता है।

इस प्रकार के दम्पति युगल में से, जो सारे जीवन भर अन्य सामाजिक कार्यों के अलावा शिक्षा के कार्य में लगे रहे और जिन्होंने अपने जीवन में लाखों छात्रो को शिक्षित किया और एक लाख से अधिक व्यक्तियों को रोजगार दिलाया, एक को दूसरे से इस प्रकार छीन लिया गया कि उसे अन्तिम समय अपने पति से मिलने का अवसर भी न मिला। वह कुछ ही मिनटों में अपने पति की अनुपस्थिति में परलोक पठा दी गई। निःसंदेह कोई भी पत्नी विधवा होकर नहीं मरना चाहेगी, परन्तु कोई भी हिन्दू स्त्री अपने पति की अनुपस्थिति मे मरती नहीं है। यहा मेरे लिए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की घटना का उल्लेख कर देना उचित होगा। सन्यासी होने के कारण ऐसा समझा जाता था कि वह अपने घर अपनी पत्नी से मिलने नहीं जायेंगे, जो उस समय मृत्यु शय्या पर पड़ी थी। वह मृत्यु देवता से जूझ रही थीं और मांग यह रही थी कि मृत्यु से पहले उनकी अपने पति से भेंट होनी ही चाहिए। स्वामीजी को मनाने के लिए कई दिन यत्न किया जाता रहा और अन्त मे हम उन्हें अपने घर जाकर अपनी पत्नी से भेंट करने के लिए ले जाने में सफल हो गए और जिस क्षण उन्होने घर के अन्दर प्रवेश किया और पति-पत्नी ने एक दूसरे को देखा बस वही पत्नी का अन्तिम श्वास था। इस सन्त स्वभाव वाली महिला को वैसा सुअवसर भी प्राप्त नही हो पाया और तब क्या समझा जाए कि आर्य समाज के नियम संख्या २ में जो कुछ कहा गया है, वह सही है या नहीं, जबकि उपरिलिखित ढंग का अन्याय हुआ है। आखिर उनकी आयु ही क्या थी। और इस पात को इस आयु में पत्नी के साहचर्य से वंचित क्यों कर दिया गया ? और वह पति की अनुपस्थिति में ३ दिसम्बर १९९५ को केवल ६५ वर्ष की आयु में ही उससे छीन ली गई, जब कि वेदों में यह विधान किया गया है कि मनुष्य को कम से कम सौ वर्ष जीना चाहिए और उससे पहले परलोकवासी नहीं होना चाहिए। मुझे तो इस घटना की सारी कहानी दूरदर्शन पर सप्ताह में एक बार दिखाये जा रहे धारावाहिक "संसार" से मिलती जुलती लगती है। वे दोनों ही शिक्षा प्रसार के जिस सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य में लगे थे, उससे ईश्वर के प्रति मेरी शिकायत स्पष्टतः उचित ठहरती है और इस विषय में संदेह उत्पन्न हो जाता है कि क्या वह प्रत्येक व्यक्ति के साथ न्याय करता है। उपरोक्त प्रश्न सन्दर्भ की सुविधा के लिए नीचे उद्धृत किया जा रहा है :

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सर्वशक्तिमान् परमात्मा से शिकवा

(पृष्ठ ५ का शेष)

"विजय जो प्राप्त की जाती हैं, शान्ति जो स्थापित की जाती है, प्रगति जो की जाती है और इतिहास जो रचा जाता है, वह उन क्षेत्रो मे नही, जहां देशभक्ति के नाम पर भयानक हत्याए की जाती हैं, और न उन परिषदो के भवनो मे जहां विचार-विमर्श के नाम पर लम्बे नीरस भाषण दिए जाते हैं, और न उन कारखानो मे ही, जहां जीवन का गला घोटने के लिए नये-नये उपकरण तैयार किए जाते हैं, अपितु यह सब होता है उन शिक्षण संस्थाओ मे, जो कि सस्कृति की प्रथम भूमिका हैं, जहा उन बच्चो को प्रशिक्षण दिया जाता है, जिनके हाथों मे भविष्य की भवितव्यता कम्पायमान रहती है। बडे होने पर उनमें से ही राजनेता और सैनिक, देशभक्त और दार्शनिक तैयार होंगे, जिनसे देश की प्रगति का निर्णय होगा।"

(अनुच्छेद १३ पृष्ठ ६६५, १९९३ (१) उच्चतम न्यायालय के वाद)

इससे मुझे एक मुकदमे की याद आती है, जो अबसे ३० से भी अधिक साल पहले हुआ था, जिसमें वह एक गवाह के रूप मे पेश हुए थे और मैं वादी की ओर से वकील था। दोनों ही पक्षो मे कुछ रिश्तेदारी सी थी क्योंकि श्री सहगल मेरे दामाद पक्ष की ओर से मेरे सम्बन्धी हैं। उन्होंने सत्र न्यायाधीश डा० कश्मीरसिंह के सामने, जो आजकल न्यायालय मे वकालत करते हैं, एक बयान देना शुरु किया, जिसमे लगभग दो पृष्ठो में यह बताया गया था कि विभिन्न सस्थाओ से उनके क्या सम्बन्ध हैं और उनमें वह किस पद पर काम कर रहे हैं, और यदि वह इस समय फिर उसी प्रकार विभिन्न सस्थाओ से अपने सम्बन्धों के बारे मे बयान देने लगें, तो वह शायद पाच पृष्ठो का हो जाये। अस्तु, उस न्यायाधीश ने उस वाद का निर्णय मेरे विरुद्ध कर दिया, जिससे मुझे क्षोभ हुआ। मैंने उस निर्णय की अपील कर दी और स्वर्गीय न्यायमूर्ति श्री शिवनारायण ने जो बाद मे उडीसा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश बने, जब श्री सहगल के वक्तव्य को पढा, तो आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा कि इतनी सारी सस्थाओ पदो को सभालते हुए वह न केवल दिल्ली म, अपितु सारे भारत भर मे आर्य समाज का कार्य कैसे कर पाते हैं, तब मैंने कहा था कि इस सबका कारण यह है कि उन्हें अपनी पत्नी का पूर्ण सहयोग प्राप्त है। यदि पति यह कहे कि २+२ तीन होते हैं तो उनकी पत्नी कभी इसका खडन नही करेगी और यही दशा पत्नी के बारे मे पति की है। उन्होंने मेरी अपील को मुख्य रूप से उपरोक्त आधार पर स्वीकार कर और यह मत व्यक्त किया कि भगवान इस प्रकार की हिन्दू महिलाए समाज को प्रदान करे जो समाज शिक्षा और धार्मिक कार्य म अपने पतियो के साथ सहयोग करें। अभी श्रीमती कमलेश जी की आयु अधिक नही थी और वह अपने पति के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर और भी अनेक वर्षो तक स्वामी दयानन्द की शिक्षाओ के प्रचार का कार्य करती रह सकती थी, और यह केवल एक वैयक्तिक क्षति नही है, उस व्यक्ति की सी, जैसा कि इस लेख के आरम्भ मे मैंने बताया है, जिसकी झोपडी उपरिलिखित परिस्थितियो म ढह गई थी, और जिसमे झोपडी बना पाने की क्षमता नहीं थी, अपितु यह तो आर्य समाज की एक महान क्षति है। वस्तुत उस न्यायाधीश ने यह भी कहा था कि यदि इस प्रकार के पति और पत्नी हो, तो हिन्दू विवाह अधिनियम की कोई आवश्यकता ही न रहे। हिन्दू विवाह अधिनियम अपनी स्वाभाविक मौत मर जायेगा, क्योंकि पति और पत्नी, दोनो म स कोई भी उक्त अधिनियम की शरण लेकर न्यायालय मे कभी जाएगा ही नही।

उनके देहावसान की, जो नितान्त आकस्मिक था, प्रथम सूचना मुझे स्वर्गीय श्री दरबारीलाल के दामाद श्री राकेश भारद्वाज से मिली और जब मैं सम्वेदना प्रकट करने के लिए उनके घर गया, तब मैंने देखा कि उनका पुत्र बाहर ही बैठा हुआ था। मैं कुछ देर उसके पास बैठा और यह जानने के बाद कि देहान्त किस प्रकार हुआ उसके बाद मैंने श्री रामप्रकाश सहगल से मिलने की इच्छा प्रकट की, जिससे उनके पास जाकर उन्हें सान्त्वना दे सकू। उसने मुझे बताया कि श्री सहगल कमरे मे है। मैं उस कमरे मे गया जहा शव रखा हुआ था। मुझे श्री सहगल उस कमरे मे कहीं दिखाई नहीं पडे। कमरे स बाहर निकल कर मैंने फिर पूछा कि श्री सहगल कहा हैं, वह मुझे कमरे मे दिखाई नही पड, परन्तु उनके पुत्र ने फिर जोर देकर कहा कि वह कमरे के अन्दर ही हैं। इससे मुझे इस बात का कुछ अन्दाजा हो सका कि किस प्रकार एक ऐस आदमी की, जो अपनी ऊचाई के कारण समूची भीड मे अलग ही दिखाई पड जाता था, अपनी पत्नी की मृत्यु के पश्चात ऊचाई एक घटे मे ही कम हो जा सकती है। कोई भी यह कल्पना कर सकता है किसी मोटर कार का या मोटर साइकिल का एक पहिया अलग हो जाए, और उस मामले मे दम्पति युगल में से एक का देहान्त हो जाए, तो जो व्यक्ति अकेला रह गया है, उसकी क्या दशा होगी। इस विषय मे मैंने 'आर्य जगत्' मे पाच सौ से अधिक उन लोगो की नामावली देखी है, सम्वेदना प्रकट की है, परन्तु श्री सहगल और उनके परिवार के सदस्यो ने जो वेदना भोगी है, उसमे कोई हिस्सा नहीं बटा सकता। सोच रहे ही यह कहें कि श्री सहगल वीर पुरुष हैं और वह इस भीषण क्षति को सहन कर लेंगे और पहले की भांति [illegible] कार्य करते रह जायेंगे परन्तु मेरे विचार से ऐसा सभव नही होगा। बाहर से वह भले ही [illegible] करते रहें कि वह यथेष्ट [illegible] हैं, परन्तु [illegible] कमरे में जायेंगे जहां उनकी पत्नी रहती थी और [illegible] आसू बहायेंगे।

([illegible])

मानवता की पहचान करें

—श्री विजय बहादुरसिंह 'अक्खड़'

यह तलवारों का नहीं कलम का युग है।
शोणित-स्याही से लिखो, भाग्य की रेखा ॥
आ जाये क्रान्ति सामाजिक जन-जीवन मे।
मुर्दे जीवित हो उठे परस्पर देखी-देखा ॥

क्या अध पतन की शेष अभी सीमा है?
मानव को कृमि-कीटो से भी बदतर जीना है।
झूमते कदम है मद-मस्ती मे महलो के।
झोपडियो को आखिर कब तक आसू पीना है?

इन सियासती सामन्तो के घडियाली आसू।
कब तक गरीब का आश्वासन से पेट भरेंगे?
कब तक अनसुनी रहेगी अबला की चीखें।
कितने अब भी मन्दिर-मस्जिद पर भेंट चढेंगे?

कब तक सोने-चादी के टुकडों की खातिर।
बेटिया हमारी खडी जलाई जायेंगी?
पर गूगी-बहरी, पगु न्याय की यह देवी।
अत्याचारी को दण्ड नही दे पायेंगी।

आतकवाद के साये म बोलो कब तक।
केवल बारूदी बोली-बोली जायेगी ॥
भाषा, मजहब, अलगाववाद क मुद्दो पर।
कब तक यह खूनी होली खेली जायेगी ॥

कब जाति-धर्म, आडम्बर से ऊपर-उठकर।
मानव-मानव को हसकर गले लगायेगा ॥
कब समता की ममता उपजेगी जन-जन मे।
सौन्दर्य-सिन्धु जन-मानस मे लहरायेगा ॥

आओ! मिलकर आगत का स्वागत-गान करें।
एक नई सोच, चेतना, सृजन से प्राण भरे ॥
युग का मानव खो जाय न भौतिक लिप्सा मे।
हम मानव है, मानवता की पहचान करें ॥

—प्राइमरी पाठशाला जगेसरगज,
प्रतापगढ (उ० प्र०)

हां, वेद का परमात्मा सर्वव्यापक है

डा० योगेन्द्रकुमार शास्त्री (जम्मू)

४ फरवरी १९९६ के सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र में श्री चन्द्रगुप्त योगमुनि जी का लेख छपा है जिसका शीर्षक है क्या वेद का परमात्मा सर्वव्यापी है।

इस लेख का उत्तर मैं सिद्धान्त रूप में यह दे रहा हूं कि वेद का परमात्मा सर्वव्यापक ही है।

पूर्व पक्ष

लेखक के लेख को पढ़कर तुरन्त समझ मे आया कि लेखक ब्रह्मा कुमारी मत को मानने वाला है। उसी मत में परमात्मा को आकाश में ऊपर अण्डाकार के रूप में प्रदर्शित किया गया है। उसे एक स्थान पर माना गया है। उसी मत मे यह माना गया है कि परमात्मा नर के शरीर मे आकर ब्रह्मा बनता है। इसी मत में श्री दादा लेखराजजो को ब्रह्मा माना जाता है। जो तमोगुणी आत्माओं को देवी देवता बनाने के लिये आये थे। अब उनकी मृत्यु हो चुकी है।

लेखक ने कुछ पंक्तियां इस प्रकार लिखी है—"परमपिता को सर्वव्यापक कहना एक भावना है, सिद्धान्त नही है।" जो स्वरूप आत्माओं का है वही स्वरूप तो आत्माओं के पिता परमात्मा का होना चाहिये।···परमात्मा तो परमधाम अर्थात् ब्रह्म लोक का रहने वाला है वह सदा पवित्र है किसी अपवित्र वस्तु मे कभी प्रवेश नहीं करता है।······परमात्मा की आत्मा भी मनुष्य की आत्मा के समान ही है। सूक्ष्म तत्त्व कैसे व्यापेगा ? इत्यादि।

उत्तर पक्ष

लेखक के विचारो से स्पष्ट पता चलता है लेखक ब्रह्मकुमारी मत को मानने वाला है अपने को छिपाकर अपने मत को वेद पर आरोपित किया है तथा वेद के अर्थ का अनर्थ किया है। साथ ही गीता का सहारा लेकर अवतारवाद का समर्थन भी किया है।

सर्वप्रथम हम वेद में परमात्मा की सर्वव्यापकता की चर्चा करेंगे। वेद में परमात्मा को सर्वव्यापक ही माना है। देखिये—

स ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु। यजु० ३ -८

इस मन्त्र का देवता भी परमात्मा ही है अतः उसी के विषय में यह वर्णन है। यहां स्पष्ट 'प्रजासु' शब्द बतला रहा है कि जो वस्तुएं जन्म लेती हैं उन सब मे वह ओत-प्रोत होकर विद्यमान है। यहां "विभूः" शब्द का अर्थ है विशेष रूप से जिसकी सब प्रजाओं में सत्ता है। लेखक शक्ति और शक्तिमान् को प्रथक् मानकर भ्रम में पड़ गया है। वस्तुतः गुण और गुणी एवम् शक्ति और शक्तिमान ये दोनों ही शब्द एक अर्थ के वाचक हैं। शक्ति भी शक्तिमान् का गुण ही होता है। और गुण गुणी का जैसे नित्य सम्बन्ध है वैसे ही शक्ति और शक्तिमान का भी नित्य सम्बन्ध है परमात्मा सर्व शक्तिमान है उसकी शक्तियों को तथाकथित पौराणिक ब्रह्मा, विष्णु, महेश के रूप में विभाजित नहीं किया जा सकता।

परमात्मा जीवात्माओं में भी व्यापक है वेद में कहा है—

न तं विदाथ य इमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरं बभूव।

ऋ० १०-८२-७॥

यहां पर कहा है—तुम उसे नहीं जानते जिसने यह सृष्टि पैदा की है। तुमसे वह पृथक् शक्ति है। परन्तु तुम्हारे भीतर भी वह व्याप्त है। यजुर्वेद (४०-५) में कहा है—

"तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः।"

वह परमात्मा इस सबके भीतर भी है और सबके बाहर भी है। यजुर्वेद में ही कहा है—

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

यजु० ४०-१॥

इस सृष्टि में जो कुछ है वह परमात्मा से आच्छादित है। अर्थात् इतनी बड़ी यह जड़ चेतनामयी सृष्टि उस परमात्मा के भीतर है।

"यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति यद्दा कहा है जो भूतकाल में था और जो भविष्य में होगा सब उसके भीतर हैं। सम्पूर्ण सृष्टि जब उसके भीतर है तब वह एकदेशी कैसे हो सकता है।

लेखक लिखता है कि परमात्मा के साथ विश धातु का प्रयोग होना चाहिये। लेखक कहना चाहता है कि जहां पर परमात्मा नहीं था उनमें वह प्रवेश करता है। विश प्रवेशने धातु का यही अर्थ है। परन्तु वेद में ऐसा कहीं नहीं कहा वहां तो परमात्मा को विष्णु कहा है जो कि विष्लृ व्याप्तौ धातु से बनता है।

"तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः।"

उस व्यापक परमात्मा के परम स्वरूप को ज्ञानी सदा देखते हैं।

यास्काचार्य भी निरुक्त (१२-१८) में विष्णु का अर्थ व्यापक करते हैं। इस प्रकार वेद में उसे "परिभूः" (यजु०-८) कहा है जिसका अर्थ है वीर समन्तात् सर्वत्र "भूः" जिसकी सत्ता है। किसी वस्तु में प्रविष्ट होकर अपनी सत्ता प्रमाणित नहीं करता। लेखक कहता है कि वह परमात्मा नर के शरीर में आकर ब्रह्मा बनता है। नर के शरीर में आने के लिये पहले उसे माता के गर्भ में आना पडेगा जब कि वेद यजु० ३१-१९) में कहा है—

"प्रजापतिश्चरति गर्भेऽन्तर जायमानो।"

अर्थात् प्रजापति परमात्मा गर्भ मे कभी नहीं आता। हां गर्भ में भी वह व्यापक है।

"स उ गर्भेऽअन्तः।" (यजु० ३२-४)

प्रजापतिः प्रजया संरराणः (यजु० ३२-५)

प्रजापति प्रजा के साथ रमा हुआ है।

"तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा" (यजु० ३१-१९)

उसी मे सम्पूर्ण लोक लोकान्तर स्थित हैं।

"तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः।" यजु. ३२-१

वही शुक्र है वही ब्रह्म है वही (आपः) व्यापक प्रजापति है।

ऐसा वेद मे कहीं नहीं लिखा है कि किसी मनुष्य के शरीर मे आकर वह प्रजापति ब्रह्मकुमारी मत वाले श्री दादा लेखराज को चित्रों में प्रजापति ब्रह्मा प्रदर्शित करते हैं।

वेद में तो "तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः" कहकर परमात्मा का एक स्वरूप वाची शब्द ब्रह्मा लिखा है। अर्थात् वह सबसे महान् है।

इन सब प्रमाणों से सिद्ध होता है कि वेद मे सिद्धान्त रूप में परमात्मा को सर्वव्यापक रूप मे ही माना गया है। भावना से आप कैसा भी काल्पनिक रूप परमात्मा का मानते रहिये वेद मे अपने विचारों को आरोपित न कीजिये।

दूसरी बात लेखक ने यह लिखी है। कि जो स्वरूप आत्माओं का हैं वही स्वरूप तो आत्माओं के पिता का होना चाहिये।

परन्तु सिद्धात रूप मे वेदोंमे ऐसा नहीं माना गया। वेद मे परमात्मा और जीवात्मा की स्वरूप से भिन्नता बतलाई गई है।

(क्रमशः)

सम्पूर्ण दुःख निवृत्ति व पूर्णानन्द प्राप्ति की विधि

मनुष्य अपने जीवन में दुःखों से पूर्ण निवृत्ति व पूर्णानन्द की प्राप्ति की इच्छा रखता है। इनके उत्पत्ति स्थल को ठीक प्रकार न जानने से अत्यन्त विशेष प्रयत्न समय व धन लगाकर भी इच्छित वस्तु की प्राप्ति नहीं कर पाता महर्षि पतंजली ने योग दर्शन में एक सफल चिकित्सक के अनुसार इसके चार विभाग करके दर्शाए हैं। रोग-राग का उत्पादक कारण आरोग्य व आरोग्य का उत्पादक कारण दर्शन की भाषा मे इसे हेय, हेयहेतु, हान, हानोपाय कहते हैं। हेय अर्थात् त्याज्य दुःख हेयं दुःखमनागतम् (यो.२/१६) भोगे हुए और भोग रहे दुःख के विषय में छुटकारा नहीं है। एक भोगा जा चुका है एक भोगा जा रहा है। अतः बुद्धिमान् व्यक्ति आने वाले दुःख के विषय में विचार करता है। और वह दुःख व्यापक रूप मे दूरदृष्टि होने पर सभी को दिखना संभव हैं। रोग जरावस्था व मृत्यु इनके आक्रमण से कोई भी नहीं बच पाता इसका उत्पादक कारण ऋषियों ने प्रकृति और जीव का संयोग दृष्ट दृश्ययोः संयोगो हेयहेतुः (यो. २/१७) अर्थात शरीर धारण करना बताया है।

जिस कारण से दुःख उत्पन्न हुआ है सुख की उत्पत्ति उस कारण के हटने पर संभव है। तदभावात् संयोगाभावो हानं तद्दृशेः कैवल्यम् (यो. २/२५) अर्थात उस प्रकृति और जीव के वियोग होने पर ही सुख संभव हैं। इस सुख का उत्पादक कारण विवेकख्याति है। विवेकख्यातिरविप्लवा हानोपायः (यो. २/२६) संभावना है। तत्वज्ञान होने पर क्रमशः सात प्रकार की प्रज्ञाओ का निर्माण होता है तस्य सप्तधा प्रान्तभूमिः प्रज्ञा (२/२७)।

पहली प्रज्ञा—दुःख के उत्पादक मूल कारणों का ज्ञान बनता है। इस का परिणाम यह होता है कि उन उत्पादक कारणो को फिर वह उत्पन्न नहीं करता इससे दुःख उत्पादक कारणो की नई श्रृंखला बनना बन्द हो जाती है। जब दूसरी प्रज्ञा संभव होती है तो दुःखो के मूल कारणो को क्षीण करना संभव होता है। जब दुःखो के उत्पादक समस्त कारण क्षीण प्रायः हो जाते हैं तो तीसरी प्रज्ञा में यहां अनुभूति होती है कि जो कुछ प्राप्त करने योग्य था वह मैंने प्राप्त कर लिया इसी को असम्प्रज्ञात समाधि का लाभ भी कहते हैं। चौथी प्रज्ञा जिस विवेकख्याति का तत्वज्ञान के पश्चात् असंप्रज्ञात समाधि का लाभ हुआ था उसके बार-बार अभ्यास से तत्वज्ञान दृढ़ हो जाता है। इसके परिणाम में यह घटता है कि वह यमनियमों में भंग करने मे असमर्थ हो जाता है। अब वह बुद्धि के स्तर को लांघ जाता है। अर्थात् बुद्धि की पहुंच से आगे हो जाता है दूसरे शब्दो में बुद्धि का कार्य समाप्त हो जाता है। उपनिषद् की भाषा में भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।

क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे।। (मुण्डको०) २/८ छठी प्रज्ञा के स्तर में सृष्टिक्रम का साक्षात् करता है। प्रलय उत्पत्ति और स्थिति इनका समष्टि और व्यष्टि रूप में अनुभव लेता है। अर्थात जो प्रकृति तीन गुणों का संघात है जिसका विकार ही शरीर व मनादि पदार्थ हैं उनको अपने कारणों में लीन होता हुआ सा देखता है। और प्रज्ञा के अन्तिम स्तर में अपने स्वरूप में स्थित हुआ ईश्वर में अपनी स्थिति को देखता है। यह अवस्था जीवनमुक्त योगी की होती है। अर्थात् यह उसका अन्तिम शरीर होता है। ईश्वर प्रणिधान के परिणामानुसार शय्यासनस्थोऽथ पथि व्रजन् वा, स्वस्थः परिक्षीणवितर्कजालः। संसारबीजक्षयमीक्षमाणः, स्यान्नित्य-मुक्तोऽमृतभोगभागी (यो. व्या. भा. २/३२)

अब यह तत्वज्ञान कैसे उत्पन्न किया जाए जिससे कि अन्तिम परिणाम का लाभ मिले यह एक बड़ा प्रश्न सम्मुख उपस्थित होता है। उसके लिए ऋषि आगे कहते हैं योगाङ्गानुष्ठानादशुद्धिक्षये ज्ञानदीप्तिराविवेकख्यातेः। (यो० २/२८) विधिवत् योग के अङ्गों का अनुष्ठान करने से अशुद्धि का क्षय होने के पश्चात ज्ञान का उदय होकर विवेकख्याति पर्यन्त बढ़ना होता है वह योग के अङ्ग कौन से हैं?

वे आठ अंग हैं यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यान समाधयोऽष्टावङ्गानि (यो. २/२९)। इसमें उपासना के बीज तैयार करने वाले पांच यम हैं अहिंसा सत्यास्तेयब्रह्मचर्या परिग्रहा यमाः। (यो. २/३०) इनको व्यवहारिक रूप में पालन करने की क्या प्रक्रिया है यह निम्न सूत्र दर्शाता है।

जाति देशकाल समयानवच्छिन्नाःसार्वभौमा महाव्रतम् (यो० २/३१) अर्थात जाति देश काल और समय के बंधन से रहित सार्वभौम सभी कोई के लिए परिपालनीय महाव्रत हैं। और पांच नियम हैं शौच सन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः। (यो० २/३२)

जब साधना काल में साधक इनको आचरित करने की चेष्टा विशेष करता है तो अन्य व्यक्तियों के द्वारा ज्ञानपूर्वक या अज्ञानपूर्वक विपरीत आचरण प्राप्त होने पर उसके पूर्व संस्कार जागरित होकर बदले की भावना के रूप में उपस्थिति हो जाती है ऐसे कठिन काल में साधक क्या उपाय करे तो ऋषि ने बताया वितर्कबाधने प्रतिपक्षभावनम्। (यो. २/३३)

अर्थात् वितर्कों के द्वारा बाधित होने पर उन वितर्कों से विरुद्ध भावना को उभारे। कि जिस दुःखसागर रूपी अग्नि से बचकर मैंने इस मार्ग का अनुसरण किया था क्या यम नियमों को भंग करके फिर उस भट्टी में प्रवेश करूं, अथवा जैसे स्वाद के लोभवश कुत्ता अधिक मात्रा में अन्नादि खा लेता है फिर उसी को वमन कर देता फिर लोभवशात् उसी को चाटता है यदि मैं उन वितर्कों को पुनः अपनाऊंगा तो उसी कुत्ते के समान बन जाऊंगा। यदि मैं यम नियमों को भग करूंगा तो दुःख का भागी बनूंगा और दुःखों के आने पर अज्ञान की अभिवृद्धि होगी अज्ञान की वृद्धि का परिणाम दुःखों की वृद्धि में होगा इस प्रकार यह श्रृंखला अनन्त काल तक चलती रहेगी।

इस यथार्थ भयावह दृश्य को उपस्थित करके यम-नियमों को भंग करने से बचे। यम-नियमों में मेरी प्रतिष्ठा हो गयी हैं इसका परिक्षण कैसे होवे? उनमें प्रतिष्ठा के उपरांत जो परिणाम घटेंगे यदि वे अनुभूति में आ जावे तब ही परिपक्वता माननी चाहिए। जिसका क्रम ऋषियो ने बताया है जैसे अहिंसा प्रतिष्ठायाम् वैरत्याग. आदि-आदि···

अपने मिथ्या ज्ञान भ्रम वा मूढ़ता को हटाने के लिए आत्म निरीक्षण पूर्वक परिणामों की कसौटी पर कसते हुए देखता जावें उपरोक्त प्रकार से विधी पूर्वक अभ्यास करने से ही दुःखों से निवृत्ति व इच्छित सुख की प्राप्ति संभव हो सकती है।

ले० आचार्य अमृतलाल शर्मा (विद्यावाचस्पति)
खण्डवा (म० प्र०)

नेपाल के मुसलमानों को खूब पैसा दे रहा है पाकिस्तान

—विवेक सक्सेना

नई दिल्ली, १२ फरवरी। भारत मे आतकवाद को बढावा देने के लिए पाकिस्तान ने नेपाल मे बसे मुसलमानो को भरपूर आर्थिक मदद देनी शुरू कर दी है। नेपाल स्थित हबीब बैंक के जरिए वहा पैसा भेजा जा रहा है। सरकारी एजेंसियो को शक है कि यह पैसा भारत लाने मे बरहनी (नेपाल) स्थित स्टेट बैंक आफ इण्डिया की शाखा का भी इस्तेमाल किया जा रहा है।

गृह मत्रालय के सूत्रो के मुताबिक नेपाल भारत के खिलाफ जारी पाकिस्तानी षड्यन्त्र का गढ बनता जा रहा है। वहा से आतकवादियो का भारत मे प्रवेश हो रहा है और नेपाल के रास्ते ही आतकवादी दूसरे देशो मे जा रहे हैं। खासतौर से पजाब, कश्मीर और बम्बई बम काड के आतकवादियो के लिए काठमाडौ मिलन स्थल बन गया है।

भारत में अस्थिरता पैदा करने की साजिश के तहत पाकिस्तान ने नेपाल के साढे छह लाख मुसलमानो के बीच अपने पैर जमाने शुरू कर दिए हैं। १९७५ मे हुए इस्लामी पुनरुत्थानवाद के बाद नेपाल के मुसलमान भी काफी सक्रिय हो गए हैं। वहा मस्जिदो मदरसो के निर्माण के लिए पाकिस्तान उनकी मदद कर रहा है। खासतौर से भारत-पाक सीमा पर बसे और काठमाडो मे सक्रिय मुसलमानो को मदद दी जा रही है। नेपाली मुस्लिम छात्रो को पाकिस्तान वजीफे दे रहा है। वहा दूसरे इस्लामी देशो से उलेमा आदि भेजे जा रहे है।

मदरसो की मदद की आड मे काठमाडो स्थित पाकिस्तानी उच्चायोग ने उनको आर्थिक मदद देनी शुरू कर दी है। पिछले साल नेपालगज स्थित मदरसा अरेबिया अहिया-उल-उलूम को उच्चायोग ने उर्दू भाषा व भेडी अचल के मदरसो के विकास के लिए १० लाख रुपए दिए। इनके अलावा इमदादी सोसायटी को १० लाख रुपए दिए गए। अक्तूबर १९९४ मे गणेशपुर जिला बाके नेपाल स्थित मदीना मस्जिद परिसर मे बैंक के रूप मे काम करने वाली इस सोसायटी को यह मदद दी गई।

यह बैंक मुस्लिम इत्तेहाद सगठन नेपाल ने शुरू किया है। यह सगठन तराई क्षेत्र मे इसकी पाच शाखाए और खोलने जा रहा है। यह बैंक स्थानीय मुसलमानो का ब्याज मुक्त कर्ज उपलब्ध करा रहा है। पाकिस्तानी प्रधानमत्री बेनजीर भुट्टो ने भी अपनी नेपाल यात्रा के दौरान स्थानीय मुस्लिम सगठनो को ५० लाख अमेरिकी डालर की मदद दी थी।

सूत्रों के मुताबिक सीमा पर रहने वाले इन मुसलमानो की निष्ठा बदलने के लिए कुछ दूसरे पश्चिम एशियाई देश कुवैत सऊदी अरब, ईरान आदि तथा बागलादेश भी वहा आर्थिक मदद पहुचा रहे हैं। इसके लिए पाकिस्तानी बैंकों का इस्तेमाल किया जा रहा है। दो साल पूर्व जनसत्ता ने आई एस आई द्वारा नेपाल मे अपनी जडें जमाने के लिए हबीब बैंक की शाखा खोले जाने की खबर दी थी। तब इसे लेकर जो आशकाए जताई गई थी वे अब सही साबित हो रही है।

पाकिस्तान स्थित हबीब बैंक की आड मे पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई एस आई अपनी गतिविधिया चलाती है। दो साल पूर्व यह बैंक नेपाल स्थित हिमालय बैंक का भागीदार बन गया है। ऐसा इसलिए किया गया जिससे भारत में आतकवादियो को पैसा उपलब्ध कराया जा सके। नेपाल मे हबीब बैंक की शाखाए खुलने के साथ ही भारतीय एजेंसियो ने वहा नजर रखनी शुरू कर दी।

इस जाच-पडताल मे पता चला कि नेपाल स्थित बरहनी की भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से बहुत बडी तादाद मे पैसो का लेन देन हो रहा है। सरकार को शक है कि नेपाल में विदेशी मुद्रा भारतीय रुपए में बदली जा रही है। वहां से यह पैसा गैर कानूनी तरीके से भारत लाया जा रहा है। मालूम हो कि हबीब बैंक ने विराट नगर व भारत नेपाल सीमा पर अपनी तमाम शाखाए खोली हैं।

सरकार अभी तक यह पता नहीं लगा पाई है कि वास्तव मे कितना पैसा वहा से भारत आया है। इसे पूरा शक है कि पाकिस्तानी एजेंसियों ने गोडा, सिद्धार्थनगर, गोरखपुर व पीलीभीत में हवाला या अन्य माध्यमो से काफी धन भिजवाया है।

नेपाल से भारत म बहुत आसानी से प्रवेश हो जाता है। उत्तर प्रदेश, बिहार व पश्चिम बगाल राज्य नेपाल की सीमा से लगते है। काठमाडो स्थित पाकिस्तानी दूतावास मे आई एस आई, पाकिस्तानी गुप्तचर ब्यूरो व मिलिट्री इ टेलीजेंस के लोगो की भरमार है।

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य उपप्रतिनिधि सभा देहरादून मे श्री चमनलाल रामपाल प्रधान, श्री गुरु नारायण दूबे मन्त्री, श्री देवेन्द्रकुमार बसल। कोषाध्यक्ष चुने गए।

—महिला आर्य समाज खोजवा मे श्रीमती सरोजसिंह प्रधान, श्रीमती लक्ष्मीरानी खन्ना मन्त्री, श्रीमती मीरा अरोडा कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज जावरा मे श्री देवप्रकाश सारस्वत प्रधान श्री प्रकाश कोठारी मन्त्री, श्री मागीलाल जेलवाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

—महिला आर्य समाज जावरा—श्रीमती मुन्नी वर्मा प्रधाना, सुश्री कुसुम शर्मा मन्त्रिणी, श्रीमती मीनाक्षी भाटी कोषाध्यक्ष चुनी गई।

—आर्य समाज अमारा।(आर्यनगर) मे श्री कचनप्रसाद आर्य प्रधान, श्री पोशनप्रसाद आर्य मन्त्री, श्री लालमन आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज बाकिपुर नया टोला पटना मे श्री भोलाप्रसाद प्रधान, श्री ज्ञानेश्वर शर्मा मन्त्री, श्री रामबाबू यादव कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर मे श्री रामजी आर्य प्रधान, श्री गगाराम आर्य मन्त्री, श्री सत्यनारायण प्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज बैजनाथ पारा रायपुर मे माता कौशल्या देवी प्रधाना, श्री दीनानाथ वर्मा मन्त्री श्री धर्मवीर वासुदेव कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आय समाज राधेपुरी दिल्ली मे श्री राजेन्द्र जी वर्मा प्रधान, प० जगन्नाथ प्रसाद जी मन्त्री, श्री वेदप्रकाश वर्मा कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आय समाज कोटली कालोनी जम्मू म श्री बन्सीलाल मेहता प्रधान, श्री प्रवीन खन्ना मन्त्री, श्री सनवीर गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गए।

—नगर आर्य समाज नागौर मे श्री शिवनारायण चौधरी प्रधान, श्री जौहरीलाल व्यास मन्त्री, श्री मोहनलाल पवार कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज जामनगर मे श्री कान्तिभाई नाटा प्रधान, श्री निर्भय भाई भट्ट मन्त्री श्री काति भाई मेहता कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज बालोनरा मे श्री बृजमनोहर जी पिथाणी प्रधान श्री लक्ष्मीनारायण आर्य मन्त्री श्री चनगाराम जी आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज हल्द्वानी मे श्री ठा० करनसिह जी प्रधान, श्री पृथ्वीराज खुल्लर मन्त्री, श्री नानकचन्द्र अग्रवाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज रामनगर नैनीताल मे श्री रामअवतार अग्रवाल-प्रधान, श्री दिनेशचन्द्र गोयल मन्त्री, श्री अवधेशकुमार अग्रवाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज सिसवा मे श्री बैजनाथ रस्तोगी प्रधान, श्री वीरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव मन्त्री, श्री अजीतकुमार कोषाध्यक्ष चुने गए।

कथित तांत्रिक सम्राट को आर्य समाज ने चुनौती दी

बिलासपुर, शहर मे पोस्टरो, पर्चों के माध्यम से तांत्रिक सम्राट घोषित करवे वाले एन अली वारसी को स्थानीय आर्यसमाज ने झूठा करार देते हुए, आर्य समाज मन्दिर मे, यदि उनके पास चमत्कार हो तो प्रदर्शन करने के लिए आमन्त्रित किया है तथा जन-सामान्य को ऐसे तत्वो से सावधान रहने की सलाह दी है उक्त आशय की जानकारी मन्त्री आर्य समाज हरिकुमार साहू ने विज्ञप्ति के माध्यम से दी।

छात्रों एवं शिक्षिकाओं द्वारा बसन्तोत्सव मनाया गया

आर्य समाज भिलाई नगर के परिसर म स्थित महर्षि दयानन्द पूर्व माध्यमिक विद्यालय की शिक्षिकाओ एव छात्रो ने २५ जनवरी को एक वृहद्-यज्ञ करके वैदिक रीति से बसन्तोत्सव का आयोजन किया। यज्ञ क पश्चात बसन्त पर कविता पाठ एवं समूहगान प्रस्तुत किए गए। इस आयोजन की एक विशेषता यह थी कि इसका सचालन विद्यालय की छात्रा आरती मेराबी ने स्वय किया।

इस अवसर पर प्रधानाचार्य श्री लाल ने शहीद बालक हकीकत राय के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होने आशा प्रगट की कि महर्षि दयानन्द विद्यालय के छात्र छात्राओ मे अपनी भारतीय सस्कृति के प्रति उसी तरह का अटूट प्रेम विकसित होगा।

इस आयोजन मे श्री विश्वनाथ शास्त्री मोहनलाल चड्ढा, जगजीत भूषण पुरम बी एम धीर, जयदेव शास्त्री आदि विशिष्ठ आर्य जन उपस्थित थे।

आर्य वीर दल हासी का द्वितीय वार्षिकोत्सव

आर्य वीर दल हासी द्वारा विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी वार्षिक उत्सव एव सीता जयन्ती समारोह बड़ी धूम-धाम एव हर्षोल्लास के साथ दिनाक १०-११।१२ फरवरी ९६ को मनाया गया इस शुभ अवसर पर स्वामी माधवानन्द जी सरस्वती, प०भरतलाल जी शास्त्री महात्मा हरिदेव जी वानप्रस्थी एव ब्र० आदित्य कुमार जी ने अपने-विचार रखे एव मा भगवती सीता जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए इस बात पर विशेष बल देते हुए उन्होने कहा आज सीता जसी आदर्श नारियो की आवश्यकता है।

आर० एस० शास्त्री प्रधान
सार्वदेशिक आर्य वी० दल हासी

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज भटोली जनपद (बदायू) का ३९वा वार्षिकोत्सव २, ३, ४ फरवरी को धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर राष्ट्र रक्षा, मद्य निषेद गौरक्षा, महिला, शाकाहार वेद सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया। अनेक विद्वानो द्वारा अपने-अपने विचार रक्खे गये।

श्री उदयराज किशनलाल बेधड़क अमर चेतन ने भजनो के द्वारा जनता को प्रभावित किया। श्री नरसिंह आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द का दर्शन अकाट्य है उस पर चलने पर ही हमारा तथा समाज का उद्धार हो सकता है।

—हरिशकर आर्य

पं० विनायकराव के सिद्धांतों पर चलना ही सच्ची श्रद्धांजलि : पाटिल

लोक-सभाध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल ने कहा कि देश, समाज तथा संस्कृति को बचाने हेतु संघर्ष एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसकी एक मिसाल पंडित विनायकराव विद्यालंकार जी थे। वे सच्चे स्थित-प्रज्ञ थे। ३ फरवरी किंग कोठ स्थित भारतीय विद्याभवन के गीता मन्दिर में हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित स्वर्गीय पं० विनायकराव जी विद्यालंकार जन्म शताब्दी के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए लोक-सभाध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि जब हम महान व्यक्तियों के विचारों को भूलते हैं तो हम पर संकट आते हैं। उन्होंने आगे कहा कि विनायकराव जी के व्यक्तित्व का प्रभाव उनके जीवन पर भी पड़ा क्योंकि विनायकराव जी भी पहले लातूर क्षेत्र में ही चुनाव लड़े थे। उस समय श्री पाटिल छात्रावस्था में उनके प्रवचन सुनने जाया करते थे। उन्होंने बताया कि उन्होंने भी अपने जीवन का प्रथम चुनाव लातूर से लड़ा था।

श्री शिवराज पाटिल ने कहा कि पंडितजी का पूरा जीवन देश के स्वतन्त्रता संग्राम के लिए समर्पित था। उन्होंने देश के लिए परिश्रम किया, मुसीबतों का सामना किया। हैदराबाद मुक्ति-संग्राम आन्दोलन के इतिहास को कोई नहीं भुला सकता। हैदराबाद का आन्दोलन देश की आजादी के आन्दोलन से जुड़ा था। उन्होंने बताया कि हैदराबाद मुक्ति का आन्दोलन आर्यसमाज से प्रेरित था।

उन्होंने आगे कहा कि अगर हम आज उनके सिद्धांतों पर चलते हुए उनका अनुसरण करें तो ही हमारी उनके प्रति सही श्रद्धांजलि होगी और हम भी समाज में उनके समान आदर पा सकेंगे।

राज्य-विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष श्री जी नारायण राव ने कहा कि पं० विनायक राव जी सच्चे देशभक्त और हिन्दी प्रेमी थे। उन्होंने राज्य सरकार से आग्रह करते हुए कहा कि राज्य में हिन्दी भाषा के विकास की ओर ज्यादा ध्यान दें।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पण्डित वन्दे-मातरम् रामचन्द्रराव, हिन्दी प्रचार सभा के अध्यक्ष श्री विद्याधर गुरुजी, श्री राजवीर आर्य डा० सीलम वकटेश्वर राव डा० पूनमचन्द सिसोदिया श्री अरविन्द कुमार कोरटकर आदि ने भी समारोह में उपस्थितियों को सम्बोधित किया। डा० सीलम जी ने प्रस्ताव रखा जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। जिसमें राज्य सरकार से मोजमजाही चौराहे पर विनायकराव जी की प्रतिमा स्थापित करने और उस जगह का "विनायक चौक" नामकरण करने की माग की गई है।

समापन समारोह

"दक्षिण केसरी" पं० विनायकराव विद्यालंकार के जीवन पर राष्ट्र-पिता बापू तथा महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की विचारधारा और उनकी सामाजिक कार्यों की संरचना का प्रभाव पड़ा था। इससे प्रेरित होकर उन्होंने अपना सारा जीवन जागृति तथा समाज सेवा के लिए समर्पित किया।"

यह बात पं० विनायकराव विद्यालंकार के जन्मशती वर्ष के समापन अवसर पर आयोजित समारोह में डा० अरविन्द कोरटकर ने कही। वे आर्य समाज शाह अलीबण्डा में विभिन्न संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में ४ फरवरी को आयोजित एक समारोह को अध्यक्ष रूप में सम्बोधित कर रहे थे।

इस शुभ अवसर पर हिन्दी महाविद्यालय के प्राचार्य श्री एन उपेन्द्र डा० वे ही कुलकर्णी तथा बापू अनन्त सिरवेलकर को उनकी सामाजिक सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। इसके अलावा पं० नरेन्द्रराव कुलकर्णी, सुखदेव आर्य, ठाकुर सत्यनारायण सिंह आदि ने विनायकराव के किए गए कार्यों पर प्रकाश डाला। समारोह में राज्य सरकार एवं नगरपालिकाओं ने मोज्जमजाही मार्केट के चौराहे पर स्व० विनायक राव विद्यालंकार की प्रतिमा स्थापित करने सम्बन्धी मांग का समर्थन किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री कालीदास कालिकर ने किया।

सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव

स्व० पं० विनायकराव विद्यालंकार हैदराबाद राज्य के अग्रणी आर्य नेता, राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक एवं समर्पित एक देशभक्त थे। वास्तव में हैदराबाद राज्य की स्वतन्त्रता के लिए उन्होंने जो त्याग किया, वह इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा। हैदराबाद राज्य की स्वतन्त्रता और लोकतन्त्र की स्थापना के लिए तत्कालीन निरंकुश प्रभुत्व एवं उसकी स्वेच्छाचारी शक्तियों के साथ उन्होंने निरन्तर संघर्ष किया, अनेक बार लाठियां खाईं, जेल गये आदि रोमांचित घटनाएं हैदराबाद राज्य के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय है।

सन १९३८-३९ में हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह को उन्होंने अपना नेतृत्व प्रदान किया और उसे देश व्यापी बनाकर सफल बनाया। सन १९४७-४८ में वकीलों द्वारा न्यायालयों के बहिष्कार-आन्दोलन का भी उन्होंने सफल नेतृत्व किया था। यह उल्लेखनीय है कि हैदराबाद राज्य के मुक्तिसंग्राम में और उसको भारतसंघ में विलय कराने में पं० विनायकराव जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। पुलिस कार्यवाही के पूर्व और बाद हैदराबाद राज्य की जनता की उन्होंने जो अमूल्य सेवा की है वह चिर-स्मरणीय रहेगी।

हैदराबाद-मुक्ति के बाद सबसे पहले, एम के. वेल्लोडी के नेतृत्व में स्थापित नागरिक प्रशासन और उसके बाद लोकप्रिय सरकार के तत्कालीन मुख्यमन्त्री बी रामकृष्णराव के मन्त्रिमण्डल में पं० विनायकराव जी ने हैदराबाद की जनता की महान सेवा की है।

"राव साहब' के नाम से विख्यात पं० विनायकराव जी अजात शत्रु थे। अनुपम गुणों के धनी, निष्काम समाज सेवी, त्यागशील, निष्कलंक चरित्रवान एवं महर्षि दयानन्द के परमशिष्य पं० विनायकराव जी का आदर्श जीवन युवापीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत है। अतएव आज का यह जन्मशती समारोह सभा राज्य सरकार से अनुरोध करती है कि 'रावसाहब' की पावन स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए मोज्जमजाही मार्किट-चौराहा जो कि 'विनायक चौक" के नाम से भी प्रसिद्ध है, जहां पं० विनायकराव जी का निवास तथा कार्यालय भी रहा है, वहां पर पं० विनायकराव विद्यालंकार की आदमकद की प्रतिमा स्थापित कर दी जाए और उस चौराहे का नामकरण "विनायकराव विद्यालंकार चौक" कर दिया जाए।

स्वाधीनता संग्राम में आर्यसमाज का योगदान

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज श्री निवासपुरी की ओर से १४ फरवरी के दिन महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर एक विराट सभा आयोजित की गई, जिसमें सर्वश्री महावीर वर्मा, पं० चन्द्रशेखर शास्त्री, लाजपत-राय बधवा आदि ने स्वामी जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला। श्री नरेन्द्र अवस्थी ने स्वामी जी के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए स्वाधीनता संग्राम में आर्यसमाज के योगदान की चर्चा की।

आचार्या की आवश्यकता

न्यू राजेन्द्रनगर कन्या गुरुकुल के लिये एक अनुभवी सुशिक्षित और गुरुकुल का कुशलता से संचालन करने वाली सुयोग्य आचार्या की आवश्यकता है। आवेदन करें व्यवस्थापिका कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्रनगर, आर ब्लाक, न्यू देहली।

—शकुन्तला दीक्षित महामन्त्री

पोस्टरजिस्ट्रेशन न० डी०एल० ११०२४/६६ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२-३-९६) ,बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी) ९३/९६
R N. 626/27 Licensed to post without prepayment licence No. U (C) 93/96 Post in N.D.P.S.O. 29,1-3-1996

आवश्यक सूचना

दिनांक १६ फरवरी १९९६

आदरणीय प्रधान जी/मन्त्री जी,

सादर नमस्ते !

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि इस वर्ष सृष्टि सम्वत्, विक्रमी सम्वत् तथा आर्य समाज स्थापना दिवस २० मार्च, १९९६, बुधवार को आ रहा है। गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी आप इस शुभ अवसर पर अपने-अपने क्षेत्र मे 'नव सम्वत्सर तथा आर्य समाज स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं' के पोस्टर बनवाकर दीवारों पर चिपकवाएं।

इस अवसर पर बधाई-पत्र अथवा शुभकामना पत्र अपने क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्तियो, प्रियजनों, इष्ट-मित्रों तथा व्यापारियों को भेजिए।

इस दिन खुले पार्कों मे यज्ञादि का अनुष्ठान करके आर्यसमाज के सिद्धान्तों, महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवनी तथा आर्य साहित्य द्वारा अधिकाधिक प्रचार करें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

महर्षि का सन्देश जन-जन तक पहुंचाएं

दुगड्डा (पौड़ी गढ़वाल) में सफल आर्य सम्मेलन

पौड़ी गढवाल। दिनाक २८ जनवरी रविवार को चन्द्रशेखर आजाद की दीक्षास्थली गढवाल के आर्य जनों एव स्वतन्त्रता सग्राम सेनानियों की कर्मस्थली दुगड्डा पौडी गढवाल मे आर्यसमाज कोटद्वार के अतिरिक्त आर्यसमाज दुगड्डा लैंसडौन, सतपुली, बेलूसेण, नौगावखाल तथा भावर क्षेत्र की आर्य समाजों ने भाग लिया।

सम्मेलन के प्रारम्भ मे भव्य शोभायात्रा बद्रीनाथ मार्ग, डाडामण्डी रोड, मोती बाजार, मुख्यबाजार होकर आजाद पार्क मे समाप्त हुई, शोभायात्रा के इस जलूस मे कण्वाश्रम का बैण्ड, लेजियम करते ब्रह्मचारी, मुख्य अतिथि प्रेरणास्रोत, सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान माननीय श्री सत्यानन्द जी मुन्जाल, कण्वाश्रम के सस्थापक एव कुलपति पूज्य विश्वपाल जयन्त, कनाडा से पधारी अलकेश रानी तथा गढवाल आर्योप सभा के पदाधिकारी व अन्य आर्य जनो महिलाओं एव बच्चों ने भाग लिया।

मुख्य अतिथि माननीय श्री मुन्जाल ने अपने सम्बोधन मे वेद प्रचार तथा महर्षि के सन्देश को घर,घर से जन-जन तक पहुचाने की प्रेरणा दी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा नया प्रकाशन

आर्य समाजों की लाइब्रेरी व स्कूल कालेजों के लिए

वैशेषिक दर्शनम्	(ले०—ब्रह्ममुनि जी)	२०)
वैशेषिक दर्शन	(ले०—स्वामी दर्शनानन्द जी)	११)
न्याय दर्शन	,, ,,	१५)
सांख्य दर्शन	,, ,,	१५)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली-२

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली मानव मात्र की रक्षक

—साहिबसिंह वर्मा

रविवार ११ फरवरी १९९६ को आर्य पाठविधि के सञ्चालक कन्या गुरुकुल नरेला का ३५वा वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। सात दिन से चल रहे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् दिल्ली सरकार के शिक्षा मन्त्री श्री साहबसिंह वर्मा ने अपने उद्बोधक भाषण में भावविह्वल होकर महर्षियों द्वारा प्रचलित शिक्षा प्रणाली की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि प्राचीन ऋषि-मुनियों द्वारा निर्दिष्ट गुरुकुल प्रणाली मानव मात्र की रक्षक है। उन्होंने कहा विश्व के सभी विद्वान इस बात को नि संकोच स्वीकार करते हैं कि प्राचीन काल में भारतवर्ष विश्व का गुरु था। देश धन-धान्य से चरित्र एव आत्मिक बल से परिपूर्ण था। इस उत्कर्ष का मूल कारण महर्षियों द्वारा प्रचलित शिक्षा प्रणाली थी। इसी शिक्षा पद्धति का नाम गुरुकुल है। कन्या गुरुकुल के प्रति शुभकामना व्यक्त करते हुए स्त्री जाति पर किए गए महर्षि दयानन्द के उपकार से हमारा हृदय गद्गद् एव जीवन कृत-कृत्य है।

श्री वर्मा ने कहा कि हम तन-मन धन से इस गुरुकुल की यथाशक्ति सहायता करना चाहते हैं। इस अवसर पर उन्होंने गुरुकुल की गोशाला के लिए सरकार की ओर से मार्च के अन्त तक २ लाख रुपये का चैक भिजवाने का संकल्प व्यक्त किया।

सायंकाल बालिकाओं ने व्यायाम और आसनों का प्रदर्शन किया। —गुरुदत्त वेदालंकार, व्यवस्थापक

तिहाड़ जेल में यज्ञ भजन समारोह

सीताष्टमी पर्व के उपलक्ष मे ग्रीनपार्क महिला आर्य समाज की ओर से निर्मल छाया परिसर के अन्तर्गत बालिका निरीक्षण गृह तिहाड जेल मे यज्ञ-भजन समारोह बड़े उल्लास से मनाया गया। प्रान्तीय महिला आर्य समाज की वरिष्ठ उपाध्यक्षा श्रीमती शकुन्तला आर्या के सन्निध्य मे आयोजित इस कार्यक्रम में निरीक्षणगृह की बालिकाओं ने अत्यन्त श्रद्धा, निष्ठा और भक्तिभाव से यज्ञ किया। भक्ति रस के गीतों द्वारा सभी ने कीर्तन का आनन्द प्राप्त किया। यज्ञ के समापन पर श्रीमती शकुन्तला आर्या ने माता सीता के आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का सकल्प दोहराते हुए पाश्चात्य संस्कृति की नकल पर गहरा प्रहार किया।

ग्रीनपार्क महिला आर्य समाज की मन्त्रिणी श्रीमती कृष्णा प्रभुचरणिता ने सीता के नारी धर्म की गहराई से मीमासा की। इस कार्यक्रम के आयोजन का मूल उद्देश्य निरीक्षणगृह की बालिकाओं को सन्मार्ग और सदचरित्र के पालन की ओर प्रेरित करना था। तिहाड़-निरीक्षण गृह के सभी कर्मचारी एव अधिकारी वर्ग बड़ी ही निष्ठा से इस यज्ञ समारोह मे सम्मलित हुए।

—श्रीमती शकुन्तला आर्या

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य३०) एक प्रति१) रुपया
वर्ष ३१ अंक ६]   दयानन्दाब्द १७२   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७   चैत्र शु० ५   सं० २०५३ २४ मार्च १९९६

दलित ईसाइयों के आरक्षण हेतु अध्यादेश लाना वोट की राजनीति का निर्लज्ज उदाहरण

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा अध्यादेश का विरोध

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री ने दलित ईसाइयों को आरक्षण की सुविधा देने हेतु अध्यादेश लाने को सरकार की उपेक्षा, संविधान की अवहेलना और इसे वोट प्राप्ति हेतु तुष्टिकरण की नीति का उदाहरण बताते हुए कहा कि सरकार ने ईसाइयो को आरक्षण देने का विधेयक पास किया तो आर्य समाज इसका घोर विरोध करेगा और देशव्यापी जन-आन्दोलन चलायेगा।

सरकार ने इस प्रकार का विधेयक लाने का प्रयास केवल अपनी वोट बैंक बनाने के लिए किया है। जिसमे मानवाधिकार का हनन होता है। इस तुष्टिकरण की नीति को आर्य समाज कभी सहन नही करेगा। उन्होंने अल्पसंख्यक आयोग की निन्दा करते हुए कहा कि जब कश्मीर से हिन्दुओ का पलायन हो रहा था तब यह आयोग, पल्ला झाड गया था।

देश तुष्टिकरण की नीति से खतरे के मुहाने पर बैठा है।

आजादी की प्राप्ति के बाद कभी सरकारों ने सोचा कि हवाला काण्ड की भांति पी०एल० ४८० का धन जो ईसाई मिशनरियो द्वारा हिन्दू समाज की गरीबी पर बहाया गया, उस धन का ब्योरा ईसाई जगत ने क्या दिया है।

पैट्रो डालर-मुस्लिम देशों द्वारा जो धन मुस्लिम समाज मे दिया गया। उसका हिसाब हमारी सरकारों ने क्या लिया है। सरकारी राजनीति के नये मोड ने जो रूप हवाला-काण्ड का अपनाया है उससे सोचना पड़ता है कि विदेशी धन के आने पर जो विजातीय तत्व देश के वातावरण को दूषित कर रहे हैं उस पर किसी ने अनुपात नहीं किया।

वातावरण का नया उफान ईसाइयों में दलित वर्ग के नाम से जो सुविधा दी जायेगी। उससे देश मे स्थिरता उत्पन्न न होकर वातावरण दूषित ही होगा।

अत धन के दुरुपयोग पर रोक लगा कर विधर्मी दलित ईसाई जगत पर दलितों को आरक्षण के नाम पर देश पर नया संकट पैदा न करो।

सार्वदेशिक सभा की ओर से नववर्ष की मंगल कामना

ओ३म् संवत्सरस्य प्रतिमा या त्वा रात्र्युपास्महे।
सा न आयुष्मतीं प्रजा रायस्पोषेण संसृज ॥
अथर्ववेद ३-१०-३ ॥

नववर्ष यानि सम्वत २०५३ का आगमन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा २० मार्च १९९६ को हुआ। इसी दिन ऋषि प्रवर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संसार को वेदो का ज्ञान देने और मानव मात्र की सेवा का संकल्प लेकर सर्वप्रथम आर्य समाज की स्थापना की थी।

सार्वदेशिक परिवार नववर्ष तथा आर्यसमाज स्थापना दिवस के पावन पर्व पर समस्त आर्य जनो एव पाठको के प्रति शुभकामना प्रकट करते हुये सुख समृद्धि तथा ऐश्वर्य की कामना करता है।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाज–परिचय

श्री श्रीमुनि वशिष्ठ आर्य, वानप्रस्थ

आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म ।
ओम हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।

परमात्मा ने अपनी वेदवाणी में स्पष्ट किया है कि यह भूमि मैंने आर्यों के लिए प्रदान की है– अहं भूमिं अददाम आर्याय । आर्य समाज स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रवर्तित एक धार्मिक संस्था है । यह सार्वभौम संगठन वेद निर्देशित शाश्वत सत्य पर आधारित है । सद्गुण, सदाचार, सच्चरित्र निर्माण याने आर्य श्रेष्ठ ईश्वरपुत्र बनना और बनाना इसका उद्देश्य है, जिससे संसार का उपकार हो ।

शनिवार दि० ७ अप्रैल १८७५ में चैत्र सुदी प्रतिपदा वि स १९३२ शके १७८७ मे सर्वप्रथम आर्य समाज मुंबई गिरगाव क्षेत्र के काकड़वाडी में स्वामी जी द्वारा स्थापित हुआ जिसमें पहला मुसलमान दानदाता सेठ रहमत अली थे । आर्य समाज कोई नया धर्म, पंथ या मत या सम्प्रदाय नहीं है । वेदप्रचार वेदानुकूल आचरण ही मनुष्य को मनुष्य, पितर, ऋषि, देवता बनाकर श्रेष्ठ बनाता है, यह इसकी धारणा है । वैदिक धर्म, वैदिक संस्कृति, यज्ञादि, पुण्यकर्म, आर्य ग्रन्थो का अध्ययन अध्यापन, राष्ट्रप्रेम, सत्यग्रहण और असत्य त्याग, नारी सम्मान, गौरक्षा, योगविद्या एवं शुद्धि करना आदिमौलिक सिद्धांत इसके हैं । आर्यसमाज गत १११ वर्षों से निरंतर कार्य कर रहा है, जिसका फल निम्न उपलब्धियो से अवगत होगा ।

विश्व मे ८ हजार आर्य समाजें है इसकी सदस्य संख्या ५ लक्ष एवं इस संगठन में आस्था रखने वालो की संख्या १० करोड़ है, प्रचारार्थ ५ उपदेशक विद्यालय हैं, गणतन्त्रात्मक पद्धति से इसमे ५० प्रतिनिधि सभाए और दो सौ जिला सभा कार्यरत हैं । इसके १५०० वैतनिक और २ हजार अवैतनिक उपदेशक हैं तथा २५० वैतनिक पुरोहित है । मासिक, साप्ताहिक पत्रिकाएं १२० प्रकाशित होती हैं । इसके ६५ गुरुकुलो में १० हजार विद्यार्थी विद्याग्रहण कर रहे हैं । इसके ५०० पोस्ट ग्रेज्यूएट कालेज जिसमे ५ लक्ष विद्यार्थी लाभान्वित हैं, इसी प्रकार इसके १२०० हाई स्कूल्स और १५०० प्राथमिक शालाएं हैं । संस्था के १० अनाथालय, २५ विधवाश्रम हैं । इस संगठन द्वारा प्रचारार्थ प्रतिवर्ष १५ करोड़ रु० खर्च होते हैं और भारत शासन से द्वितीय स्थान मे शिक्षा पर यही प्रथम संस्था है जो १५०० करोड़ रु० वार्षिक खर्च करती है । इसके २५ कन्या गुरुकुल, १०० कन्या महाविद्यालय है । चार विश्व विद्यालयो मे दयानन्द पीठ स्थापन हुए हैं । इस संगठन से सम्बन्धित विषयो पर अब तक ४५० संशोधन एवं प्रबन्ध कर्ताओ को डाक्टरेट पी एच डी से सम्मानित किया है । पाकिस्तान मे इस संस्था का ८८ करोड़ रु० की सम्पत्ति छोड़नी पड़ी है । स्वामी दयानन्द ने घोषणा दी कि वेदो की ओर लोटो । स्वामी जी ने आर्ष और अनार्ष ग्रन्थो का भेद कर आर्ष ग्रन्थो के स्वाध्याय पर ही महत्व दिया है स्वामी जी ने वेदो के यौगिक अर्थ कर सायणाचार्य, माधवाचार्यादि आचार्यो की पोल खोल दी । इस प्रकार वेदों से सम्बन्धी जो भ्रान्तियां जान बूझकर फैलायी गयी थी, उसे बुद्धि एवं तर्क के आधार पर जमीनदोस्त कर दिया । स्वामी जी समेत अन्यान्य आर्य महारथियो ने शास्त्रार्थ करके ईसाई पादरियो के, इस्लामी मोलवियो के, पौराणिक पंडितो के छक्के छुड़ा दिए ।

स्वराज्य शब्द का पहला प्रतिपादन सन १८७२ मे स्वामीजी ने सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रन्थ मे किया । दादाभाई नौरोजी ने, एनीबेसेंट ने तथा लोकमान्य तिलक जी ने उसी को दोहराया । स्वातन्त्र्य प्राप्ति में और धर्म की प्रतिष्ठा में आर्य समाज ने २४ लड़ाइयां लड़ी और ७२ बलिदान दिए । इसी प्रकार स्वदेशी का भी चक्र चलाया ।

पं० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द जैसी महान हस्तियों ने जीवन देकर आर्य (हिन्दू) जाति की रक्षा की । उत्तर प्रदेश में मलकाना गुजर क्षत्रिय जाति के १ लाख से भी अधिक क्षत्रियो को शुद्ध कर गले लगाया । मीनाक्षीपुरम का रहमतपुर नामाभिधान नामशेष कर दिया और हजारों इस्लामियो की शुद्धि कर वेदो का नारा गुंजाया । बर्बनो मौलवी भी शुद्ध हुए । म० गांधी का पुत्र हरीलाल जो अब्दुल्ला बन छह मास मुसलमान रहा उसे भी आर्य समाज ने शुद्ध कर फिर अपने में मिला लिया । सन १९३९ में हैदराबाद निजाम द्वारा हिन्दू जनता पर लगाए जुल्मी अत्याचारी, अन्यायी पाबन्दी के छुड़ाने, सत्याग्रह करके निजाम से सारी शर्तें बिना शर्त कबूल करा लिया । सन १९४३ मे सिंध प्रान्त के मुस्लिम शासकों ने सत्यार्थ-प्रकाश के १४ वें समुल्लास पर बंदी लगा दी थी, उसे भी बहादुर आर्य वीर एवं पदाधिकारियों ने हटवाया । सामाजिक सुधार, अवयस्का बाल विवाह, विधवा विवाह, अनमेल विवाह, अस्पृश्यता निवारण, गौरक्षा, नारी सम्मान, इत्यादि क्षेत्र में आर्य समाज ने पुरजोर प्रयत्न कर सभी कार्यो मे सफलता पायी है । पोप पाल द्वितीय के भारत आगमन पर १ लक्ष हिन्दुओ को ईसाई बनाने का षडयन्त्र इसी आर्य समाज ने मिटियामेट कर ६ हजार ईसाईयो को उसी दिन शुद्ध कर अपने में मिला लिया । भारत की राजधानी दिल्ली के राष्ट्रपति भवन मे बनने वाली मस्जिद का सपना इन्ही आर्यों ने चकनाचूर कर दिया । कश्मीर में तोडे गए सैंकडो हिन्दू मन्दिरो के जीर्णोद्धार के लिए राबर्ट गांधी (राजीव) से १० करोड़ रुपए प्राप्त कर मरम्मत इन्हीं आर्यो ने करवायी । कानपुर निवासी श्री रवीराम आर्य जो २६०० कन्याओं के पिता है, उन्होंने हिन्दू कन्याओ को मुसलमानो के पंजे से छुड़ा कर हिन्दू युवको से विवाह २६०० लगवाए और उन्होने कन्यादान का पुण्य प्राप्त किया । और भी बहुत कुछ लिख सकते हैं, यह तो नमूना मात्र है । ध्यान रहे मिस्टर गांधी को महात्मा गांधी आर्य समाज ने ही बनाया है ।

पंडित मदनमोहन मालवीय ने कहा है–AryaSamaj is a militant class of Hindu race अनन्तशयनम् अय्यगार (पू पु लोकसभा अध्यक्ष) ने कहा है यदि आर्य समाज न होता तो मैं अय्यगार न रहकर कोई अकबर अली होता ।

मित्रो ! आर्य समाज आर्य (हिन्दू) जाति का रक्षक है, इसे सम्प्रदायात्मक दृष्टि से न देख स्वामी दयानन्द को उदयपुर में प० मोहनलाल पंड्या ने पूछा था–भारत का पूर्ण हित कब होगा ? स्वामी जी ने कहा–जब एक धर्म, एक इष्ट, एक उपासना पद्धति, एक लक्ष्य, एक भाषा सारे हिन्दू जाति

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आर्य परिवार संघ आगरा की ओर से भव्य आयोजन

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री को आगरा में १,५०००० की वसीयत भेंट

आगरा । आर्य परिवार संघ आगरा की ओर से एक विशाल आयोजन नगर के प्रतिष्ठित आर्य समाजियो द्वारा किया गया । इस आयोजन में नगर की समस्त आर्य समाजो के अधिकारी तथा अनेकों प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे । समारोह मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल ने आर्य समाज की वर्तमान परिस्थितियों की चर्चा करते हुए उसकी गति और प्रगति पर विस्तार से प्रकाश डाला ।

इस अवसर पर सभा मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री को डेढ़ लाख रुपए की वसीयत सार्वदेशिक सभा के लिए भेंट की गई । यह सात्विक दान श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज ने वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए सभा को प्रदान किया है । सम्बन्धित कागजात सार्व० सभा को प्राप्त हो गए हैं । इससे पूर्व आर्य जनता ने डा० सच्चिदानन्द शास्त्री तथा डा० धर्मपाल का भव्य स्वागत किया । इन दोनों महानुभावो के आगरा आगमन से आर्य समाज के कार्यों को विशेष गति प्राप्त हुई है । विस्तृत समाचार अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा ।

सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान एवं सुप्रीमकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सोमनाथ मरवाह द्वारा दिया गया–

श्वेतपत्र का उत्तर (१८)

यही कारण है कि लोगों के ऊपर आर्य समाज के सन्यासियों, उपदेशकों का कोई प्रभाव नहीं होता क्योंकि वह बोलते कुछ और हैं। और करते कुछ और ?

जैसे कि रामलीला मे राम, लक्ष्मण अथवा अन्य पात्र बनाये जाते हैं क्या उनका चरित्र भी उसी तरह का होता है जैसा कि राम लक्ष्मण आदि का था। यही हाल सुमेधानन्द के साथियो लीडरो, और सन्यासियो का है। यह लोग आर्य समाज के नाम को बदनाम करते फिर रहे हैं। यही वजह है कि सुमेधानन्द ने भेंट मे गन फैक्ट्री के मालिक श्री विजयसिंह भाटी से बन्दूक मांगी।

कैप्टन साहब यह बात तो आपको मालूम ही है कि कच्ची भवन की दूसरी मंजिल पर हर सभासद के लिए टिकट जारी किये गये और उनके बैठने के लिए कुर्सियो की व्यवस्था के साथ साथ हर प्रांत के लिए बोर्ड भी लगाये गये जिससे हर प्रान्त के व्यक्ति व्यवस्थित होकर बैठ सकें।

स्टेज पर ओमानन्द, शेरसिंह भी थे किसी ने आज तक अपने बयान मे यह नहीं कहा कि कोई व्यक्ति वहां पर शराब पिये हुए था। और आपके सम्बन्ध में जब श्री आनन्द सुमन ने १० दिसम्बर ९५ के सार्वदेशिक अंक में "मिथ्या प्रलाप" शीर्षक से लेख लिखा तो आपको बहुत परेशानी हुई, जबकि उसके बयान को पढ़ने से बिल्कुल सच्चा बयान साबित होता है।

इसलिए आपसे मेरी प्रार्थना है कि झूठे व्यक्तियो के झूठ पान को छोड़कर श्री भगवती प्रसाद जी ने जैसी सलाह आपको दी थी उसके अनुसार आर्य समाज के संगठन के हित मे कार्य करें।

मैंने अपने पहले लेख मे लिखा था कि जिस व्यक्ति के ऊपर कैप्टन देवरत्न और उनके साथियो ने बहुत सा कीचड़ फेंका था वह १४ जनवरी १९९६ को उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के सर्व सम्मति से प्रधान चुने गये, और उस व्यक्ति का नाम डा० सच्चिदानन्द शास्त्री है। शास्त्री जी का पूर्ण बहुमत से उ० प्र० सभा का प्रधान चुना जाना उन पर कीचड़ उछालने वाले लोगो के मुंह पर चपत लगना है। और साथ ही शास्त्री जी की आर्य जगत मे प्रतिष्ठा का प्रमाण भी है। परन्तु दुख तो इस बात का है कि दूसरो को जो मेरा श्वेत पत्र पढ़ रहे हैं वह सुमेधानन्द और उसकी चुकड़ी के विषय मे बहुत कुछ लिखते रहते हैं, और उन व्यक्तियो के खिलाफ लिखा जाता है जिसे पढ़कर शर्म आती है। और यदि लिखा जाये तो आर्य समाजी उन नेताओ से घृणा करना शुरू कर देंगे। पर मैं ऐसे व्यक्तियो की शिकायतें जो उन्होने लिखी हैं वह लिखना नहीं चाहता। उन लोगो ने तो स्वामी ओमानन्द के विषय मे भी बहुत कुछ लिखा है और वह अपने आपको आर्य नेता बतलाते हैं।

मेरा इशारा राजधर्म के उस लेख की तरफ है जो कि ३१ अक्टूबर ९५ के अंक में छापा गया है, और यह राजधर्म अपने आपको आर्य समाज का सजग और निर्भय प्रहरी लिखता है, और सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद एवं भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र है, उसके पहले पृष्ठ पर लिखा जाता है। इस राजधर्म मे डा० सुरेन्द्र सिंह एम पी का लिखा हुआ एक लेख 'पहले दिल-दिमाग तो साफ कीजिये" शीर्षक से पृष्ठ २० पर छपा है। इसमे स्वामी ओमानन्द पर कीचड़ उछाला गया है और मैं नहीं कह सकता कि इस झूठे लेख के विषय मे स्वामी जी लेखक के विरुद्ध कोई कानूनी कार्यवाही करेंगे या नहीं परन्तु यह लेख लिखने मे उन्हें डा० सच्चिदानन्द शास्त्री पर कीचड़ उछालने का एक अवसर मिल गया है और उन्होंने जो लिखा है वह मानने योग्य भी नहीं है। उसमे इस प्रकार लिखा गया है–

"आज सच्चिदानन्द का नाम उछाला जा रहा है कल किसी और का उछाला जाएगा, इससे बदनामी तो संस्था की होगी। पेंशन लेना तो एक मामूली सा मामला है। इन धूर्तों ने तो बड़-बड़े स्कैंडल कर रखे हैं उन्हें लेकर कोई कुछ बोलना या कहना क्यो नहीं चाहता ? क्या इसलिए कि उनमे स्वामी ओमानन्द या शेरसिंह भी दोषी माने जाएंगे। स्वामी शक्ति वेश की हत्या किसने किन कारणों व उद्देश्यो से कराई इस रहस्य पर आखिर कब तक परदा पड़ा रहेगा। आप अपमान व पेंशन को लेकर रो रहे हैं और यहां एक सन्यासी की हत्या करा दी जाती है तो मुंह से उफ तक नहीं निकलती। आखिर क्यो ?

दयानन्द मठ रोहतक मे बैठकर किसने अपनी मित्र मण्डली के साथ मदिरापान किया, अण्डे खाए ? किसकी मिलीभगत से गुरुकुल कालवा की जमीन बिकी ? नैतिकता का कुछ स्तर है भी या नहीं ? सच्चिदानन्द शास्त्री का भण्डाफोड़ तो जब होगा तब माना जायेगा लेकिन फिलहाल सार्वदेशिक सभा मे बैठे धूर्त भारी खर्च करके उन सन्यासियो का जीवन भर का कच्चा चिट्ठा तैयार करा रहे हैं जो उनके विरुद्ध मुखर हैं ताकि उन्हें ब्लैक मेल करने व चुप रखने मे इन कच्चे चिट्ठो से सहायता ली जा सके। इन सन्यासियो मे जो नाम सबसे ऊपर है वह स्वामी ओमानन्द सरस्वती का ही है। जिन धूर्तों को वह दूध पिलाते रहें उनकी हर भली बुरी बात को सहते रहे, नजरन्दाज करते रहे वे ही धूर्त अब उनकी बखिया उधेड़ने को उद्यत हैं।

स्वामी इन्द्रवेश और स्वामी अग्निवेश ने जो कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था उसे अब सार्वदेशिक सभा के तीन तिलंगे प्रकाश देकर स्वामी जी को बांस पर चढ़ाने वाले हैं। अब इस बुढ़ापे मे वे दो सशक्त मोर्चों पर कैसे लड़ेंगे वे ही जानें। आर्य समाज का तो जितना बटवारा उन्होंने कराना था वे अपनी हठ व ईर्ष्या के वशीभूत होकर करा ही चुके हैं। जो नेता अपने सामने किसी दूसरे को उठने ही नहीं देने की नीति पर चलता है उसका अंतिम परिणाम यही निकलता है जिसे आज स्वामी ओमानन्द सरस्वती भुगत रहे हैं। और निकट भविष्य मे भुगतेंगे। निःसंदेह आर्य समाज न इस दुर्वासा मुनि का त्याग महान रहा है, फलश्रुतियां अपार रही हैं जिन्हें देखकर हर आर्य उनके प्रति श्रद्धानत है, उनका कृतज्ञ है, लेकिन अपने क्रोध, द्वेष और हठी स्वभाव तथा अपने ही चहेतों को उठाने व आगे बढ़ाने की लालसा ने उन्हें जीवन भर बांधकर रखा, यही उनके जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी रही है। इस सच्चाई को उनके विरोधी ही नहीं उनके समर्थक व शुभ चिन्तक भी स्वीकार करते हैं।'

(क्रमशः)

आर्यसमाज स्थापना दिवस

२० मार्च ९६, बुधवार, मध्याह्नोत्तर २ से ५ बजे तक सप्रू हाउस, नई दिल्ली मे समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। आप सब सपरिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :

महाशय धर्मपाल — प्रधान

डा० शिवकुमार शास्त्री — महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य

चैत्र प्रतिपदा पर विशेष

विक्रम संवत् की वरीयता

सूर्य का पूर्व दिशा में उगना और सूर्यास्त के बाद आगमन प्राकृतिक नियमों की तो रक्षा करता ही है, साथ ही, अखण्डकाल की गति की नित्यता के साथ दूसरे अखण्डकाल की सापेक्षता में जगत का दर्शन करता है। यद्यपि गणितीय प्रक्रियाओं एवं नियमों के आधार पर संवत् की अपनी कुछ विशेषताएं होती हैं, लेकिन इनके दो प्रमुख वर्ग सौर संवत् और चांद्र संवत् कालगणना में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। चन्द्रमा द्वारा पृथ्वी की एक पूर्ण परिक्रमा करने को एक 'चन्द्रमास' कहा जाता है। हमारे चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ आदि इसी प्रकार के चन्द्रमास हैं। चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा प्राय: साढ़े उन्तीस दिनों में पूरी कर लेता है। इसी से चन्द्रमास भी करीब-करीब साढ़े उन्तीस दिन का होता है और ऐसे बारह महीनों से बना 'चन्द्रवर्ष' प्राय: ३५४ दिन का होता है। हिजरी संवत् इसी प्रकार के बारह महीनों का संवत् है।

विक्रमी संवत् भी बारह चन्द्रमास का अर्थात् प्राय: ३५४ दिन का होता है। इसमें अधिक मास नहीं होता। ईसवी और शक संवत् सौरसंवत् है सौर अर्थात् सूर्य आधारित संवत् पृथ्वी द्वारा सूर्य की एक परिक्रमा पूर्ण करने की अवधि का होता है पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा प्राय: ३६५ दिन और करीब-करीब छ: घंटे में पूरा करती है। तदनुसार सौर संवत् तीन वर्ष तक ३६५ दिन के और चौथे वर्ष ३६६ दिन के होते हैं।

विक्रमी संवत् चैत्र शुक्लप्रतिपदा से प्रारम्भ होता है। इसकी यह विशेषता भी है कि सौर और चान्द्र, दोनों प्रकार के वर्षों का समन्वय है। इसमे यह सामंजस्य इतने वैज्ञानिक और शुद्ध गणितीय आधार पर किया गया है कि व्यवहार में अत्यधिक प्रामाणिक व प्रचलित संवत् ईसवी से इसका अन्तर सदैव एक सा बना रहता है। इसके श्रावण, भादों, आश्विन व कार्तिक आदि मास तो चन्द्रमास ही होते हैं। जिनसे निरन्तर दो वर्ष तक की अवधि ३५४ दिन की ही होती है, किन्तु तीसरे वर्ष एक चन्द्रमास की वृद्धि हो जाती है। यह वृद्धि तभी होती है, जबकि पृथ्वी की सौर परिक्रमा या सौर वर्ष में और चान्द्र वर्ष में एक पूरे चन्द्रमास का बत्तीस महीने, सोलह दिन और चार घड़ी के पश्चात् आता है।

ज्योतिष का यह सिद्धान्त इस तथ्य पर आधारित है कि सूर्य की परिक्रमा करती हुई पृथ्वी निवासियों को जब सूर्य जिस नक्षत्र राशि में प्रवेश करता प्रतीत होता है, उसी समय को उस राशि में सूर्य का संक्रात 'होना या संक्रान्ति' कहा जाता है। विक्रमी संवत् इन संक्रान्तियों वाले विशुद्ध गणितीय सौर वर्ष एवं चान्द्र वर्ष का अद्भुत सामजस्य करता है। इसीलिए भारत मे अपनी अनेक विशेषताओं और विभिन्नताओंकेबावजूद जितने भी पचाग प्रचलित हैं, सब विक्रमीसवत् से सम्बद्ध हैं।

अनेक वैज्ञानिक यह तो स्वीकार करते हैं कि समय-समय पर सूर्य तल पर कुछ काले धब्बे पड़ने लगते हैं, जिनके कारण जलवायु में परिवर्तन के परिणामस्वरूप कृषि आदि उत्पादनों पर प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त सूर्य की रचना, उसका व्यास, उसकी बनावट तथा उसमें से निकलने वाली भीषण गर्मी (ऊर्जा) आदि क्या तथा क्यों होती है? इन सारी बातों का उत्तर अभी वैज्ञानिक आदि खोज रहे हैं। क्या सूर्य के चारों ओर धूलीकरण का कोई घेरा है अथवा और कुछ यह भी अभी तक रहस्यमय बना हुआ है। सूर्य के प्रभामण्डल में समय-समय पर परिवर्तन का कारण भी खोजा जा रहा है। यद्यपि सूर्य-चन्द्र आदि से सम्बन्धित अनेक प्रश्न अभी तक अनुत्तरित हैं, फिर भी विराट पुरुष (परमात्मा) अपने इन दो नेत्रों सूर्य तथा चन्द्रमा इन दो नेत्रों से इस भूमंडल को देखते हुए चेतना प्रदान करता रहा है और कालान्तर में करता रहेगा। किन्तु यह ध्रुव सत्य है कि सूर्य का प्राचीनतम सनातन सत्य, निरन्तर प्रवाहमान तथा प्राकृतिक नियमों का अनुशासन सतत् चल रहा है। इससे भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की नहीं, बल्कि भारतीय काल गणना को भी जीवित रखे हुए हैं।

> ### आर्य समाज
>
> आर्य समाज ने भोग और त्याग, धर्म और बुद्धि, आदर्श और व्यवहार लोक-परलोक, विश्वास एवं तर्क, राष्ट्रीयता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता में समन्वय स्थापित करके व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन को भव्य दिशा प्रदान की है और मनुष्य को सच्चे अर्थ में मनुष्य बनाने का सत्प्रयत्न किया और सुधार की भाषा में सोचना और करना सिखाया है।

भारतीय काल गणना की वैज्ञानिकता तथा लोकप्रियता को दृष्टिगत रखकर आंग्ल-महा प्रभुओं ने इसे हतोत्साहित करने का प्रयास किया सतत् २५०-३०० वर्षों तक अपनी ब्रिटिश शासन प्रणाली के अनुसार अंग्रेजों ने विक्रम संवत्सर के स्थान पर ख्रिस्त संवत्सर को अधिक एवं प्रभावशाली ढंग से प्रचारित किया। इतिहास कारों ने अपने काल विभाजन में ईसा के जन्म के दिन को आधार मान कर ईसा से पूर्व अथवा ईसा से पश्चात् "लिखना और कहना प्रारम्भ कर दिया। चाहे कोई भी खोज हो, गवेषणा हो या कोई मत प्रस्थापना, इसका काल-निर्धारण ईसा के पूर्व या पश्चात् से ही हम भारतीय करने लगे हैं। मानों कालचक्र के निर्धारण के लिए हमारे इस महान और प्राचीन देश में कोई। प्रतिमान ही नहीं है। हमारी यह मानसिकता अपने आत्मगौरव तथा स्वाभिमान पर गहरी ठेस पहुंचाती है। इतना ही नहीं, हमारी केन्द्रीय सत्ता ने भी काल निर्धारण के लिए विक्रम संवत्सर के स्थान पर शक संवत् को अधिक मान्यता प्रदान कर स्वीकार किया। जहां तक शक संवत्सर की स्वीकृति एवं प्रसारण का सम्बन्ध है। यह मात्र उत्तर दक्षिण भारत को मिलाने का राजनैतिक प्रयास है। विक्रम सवत् और शक-संवत्सर का यदि तुलनात्मक विवेचन किया जाय तो विक्रम संवत् वैज्ञानिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है, जब कि शक संवत्सर के पीछे राजनैतिक दुराग्रह की भावना छिपी हुई है।

भारत कृषि प्रधान देश है, यहां का अर्थ तन्त्र इसी चैत्रमास की शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होता है. संभवत: आंग्ल शासकों ने भी इसी विक्रम सवत् की वैज्ञानिकता कोस्वीकार कर १ अप्रैल से अपना आयव्यय पत्रक या अनुमानित पत्रक (बजट) प्रारम्भ किया है। इसे वर्तमान स्वतन्त्र भारत में भी ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया गया है। इसका तात्पर्य यही हुआ कि अपना कान चाहे किसी भी हाथ से पकड़ो, नाक तो बीच में ही रहेगी। चाहे आंग्ल शासक स्वीकारकरते रहे हैं अथवा सम्प्रति भारतीय शासन १ अप्रैलको स्वीकार कराता हो प्रत्यक्ष रूपसे विक्रमसंवत् अथवा नवसंवत्सर को ही महत्व मिलता है।

आज इस पवित्र दिवस पर यह चिन्तन किया जाये कि भारतीय चिंतन धारा में काल निर्धारण ईसा के स्थान पर 'विक्रम' से पूर्व या पश्चात की अवधारणा को अपनाया जाए। इस स्वीकृति से जहां एक ओर हमारा राष्ट्रीय स्वाभिमान जागृत होगा, वहीं हमारी सांस्कृतिक धरोहर को वैज्ञानिकता का स्वरूप प्रदान करने का सुअवसर प्राप्त होगा। हां, कुछ समय तक विक्रम संवत् के साथ ही साथ ईसा संवत चलाया जा सकता है, किन्तु निकट भविष्य में ख्रिस्त संवत को सदा के लिए समाप्त कर केवल विक्रम संवत् को ही सर्वाधिक प्रधानता प्रदान की जावे।

—मधुदेव 'प्रणव'

स्थापना दिवस पर विशेष—

आर्य समाज की देन

—डा० महेश विद्यालंकार

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने १८७५ मे वैचारिक क्रान्ति के लिए आर्य समाज को स्थापित किया। इससे पूर्व देश धार्मिक, सांस्कृतिक राष्ट्रीय, सामाजिक आदि सभी क्षेत्रो मे अध पतन की ओर बढ रहा था। चारो ओर अविद्या और अन्धकार फैला हुआ था। ऐसे निराशा के समय म ऋषि दयानन्द का ससार मे आना निश्चय ही वरदान सिद्ध हुआ। चौदह वर्ष की अल्पायु मे सत्यबोध हुआ। वे दुनिया के सामने एक अनोखी और निराली पहिचान बनकर खडे हुए। उनके व्यक्तित्व मे भीष्मपितामह जैसा अखण्ड ब्रह्मचर्य, शकराचार्य जैसा अगाध पाण्डित्य, योगीराज श्रीकृष्ण जैसी खण्ड खण्ड भारत को अखण्ड देखने की भावना, मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम जैसा तप-त्याग तपस्या, गौतम जैसी करुणा, महावीर जैसी अहिसा, उनके व्यक्तित्व मे सभी महापुरुषो की विशेषताओ का समन्वय था। उनकी विचारधारा का उत्तराधिकारी आर्यसमाज है। आर्यसमाज ने ससार को प्रत्येक क्षत्र मे दृष्टि व चिन्तन दिया है। उसका सक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है—

वेद की देन

वेद मानव जाति का सबसे प्राचीन पवित्र और महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं उनमे सब सत्य विद्याओ तथा ज्ञान-विज्ञान का भण्डार है। यह सगठन वेदो की ओर चलो का नारा देता है। सृष्टि के आरम्भ मे परमेश्वर ने मानव के कल्याण उत्थान एव मगल के लिए वेद ज्ञान दिया। अत वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं, और स्वत प्रमाण है। इसलिए वेद सबके हैं, सबके लिए हैं तथा सबको स्त्री, शूद्र आदि को पढने का अधिकार है। वेद मानवता का चिन्तन देते हैं। वेद कहता है मनुर्भव, मनुष्य तू मानव बनकर स्वय सुख-शान्ति पूर्वक ससार यात्रा पूर्ण कर और दूसरो को भी जीने दे। आर्य समाज ने वेदो का पुनरुद्धार किया। वेदो के बारे मे हुई भ्रान्त धारणाओ को तर्क प्रमाण एव युक्ति से निरस्त किया वेदो का यथार्थ और सच्चा स्वरूप ससार के सामने रखा।

धार्मिक देन—

आर्य समाज ने धर्म के क्षत्र मे फैले हुए अन्धविश्वास, ढोग, पाखण्ड और रुढिवादिता को समाप्त कर धर्म का सच्चा स्वरूप जनता के सामने रखा। धर्म मे अकल का दखल देकर उसे व्यावहारिक तथा वैज्ञानिक रूप दिया। धर्म धारण करने की चीज है। धर्म का सम्बन्ध आत्मा से है। यह विचारधारा मूर्तिपूजा, अवतारवाद, जादू-टोना, जड देवी, देवताओ आदि मे विश्वास नही करती है। धर्म मन्दिरो, पुजारियों, तीर्थों, आदि तक ही सीमित नही है। वह तो मनुष्य के आचरण के साथ जुडा है। सभी को सब काम धर्मानुसार सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए। धर्म के नाम पर जो अधर्म और नाना पन्थ सम्प्रदाय फैल रहे थे। भोली-भाली जनता को धर्म का भय दिखाकर जो ठगा जा रहा है। उसे आर्य समाज ने हटाया और लोगो को बताया कि धर्म को पहिचानों, सम्प्रदायो को छोडो। सम्प्रदाय परस्पर झगडे कराते हैं। धर्म मिलकर शान्तिपूर्वक व प्रेम से जीना सिखाता है।

सामाजिक देन

आर्य समाज के उदय से पूर्व वैदिक धर्म, सस्कृति व सभ्यता प्राय समाप्त हो चली थी। लोग नाना प्रकार के पापकर्म तथा पाखंड मे लिप्त थे। स्त्री जाति की दशा बडी शोचनीय थी और उसे नरक का द्वार माना जाता था। लोग छुआछूत अन्धविश्वास भूत-प्रेत, मत-मतान्तरादि में लिप्त थे। [illegible] की स्थापना का बीडा इस सस्था ने उठाया। जन्मना वर्ण-व्यवस्था को तोडकर कर्मणा व्यवस्था पर बल दिया। सभी मनुष्य समान हैं। उत्तम पुरुषार्थ व लगन के आधार पर जो बनना चाहे, बन सकता है। सबको उन्नति करने का समान अधिकार है। समाज मे व्याप्त अनेक प्रकार की कुरीतियो अन्धविश्वासो तथा रुढिया हटाकर आर्य समाज ने दुनिया को एक नई रोशनी दी। शुद्धि आन्दोलन के द्वारा भूले-भटके व बिछुडे अपने ही भाइयों को पुन वैदिक धर्म मे दीक्षित होने का आन्दोलन चलाया। बाल-विवाह, अनमेल विवाह एव सती प्रथा जैसी कुरीतियो से देश जर्जरित हो रहा था, आर्य समाज ने खुलकर इसका विरोध किया। लोगो को तर्क प्रमाण और युक्ति से समझाया व जाग्रत किया। इसी से आज इन प्रथाओ का प्रचलन कम हुआ है। पैगम्बरों जड देवी देवताओं महन्त आदि के प्रति अन्ध श्रद्धा से समाज खोखला हो रहा था। उसका आर्य समाज ने खण्डन किया। जो सत्यमार्ग था, उसका दिग्दर्शन कराया।

नारी जाति को देन—

आर्य समाज ने स्त्रियो को यज्ञोपवीत धारण करने, वेद पढने यज्ञ करने और सामाजिक जीवनमे पुरुषवर्ग के समान सब अधिकार दिए और दिलाये है। नारी को भोग्या से मातृशक्ति के पद पर प्रतिष्ठित करने का श्रेय आर्य समाज को है। नारी जाति के साथ जो पशुता व बर्बरता पूर्ण व्यवहार होता था, उसका आर्यसमाज ने खुलकर विरोध किया। जनता मे जागृति पैदा कर कहा—यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता जहा नारी का सम्मान होताहै वहा सब प्रकार से शान्ति व प्रसन्नता रहती है। नारी नरक का द्वार है और ताडन की पात्र, ऐसे अव्यवहारिक व अवैदिक तथ्यों का आर्य समाज ने डटकर विरोध किया। प्रमाण तथा उदाहरणों से सिद्ध किया नारी ही स्वर्ग का आधार है। माता ही निर्माता है। आर्य समाज ने नारी शिक्षा के द्वार खोल दिए। नारी शिक्षा के क्षत्र मे आर्य समाज का अविस्मरणीय योगदान है। (शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यसमाज बनाया

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

धन्य-धन्य ऋषिराज दयानन्द सत्य मार्ग दरशाया।
चैत्र सुदी प्रतिपदा दिवस को आर्यसमाज बनाया॥
इस भव्य भूमि भारत मे अज्ञान तिमिर का डेरा था।
मत-मतान्तर पाखण्डों का छाया घोर अन्धेरा था॥
वातावरण अशान्त ऋषि ने वेद सूर्य चमकाया॥१॥
वेद ईश्वरीय ज्ञान मानवो के उर मे बिठलाया।
शुष्क मरु स्थल मे आकर सुख शान्त प्रसून खिलाया॥
कोटि-कोटि अज्ञान ग्रस्त मानव को ज्ञान कराया॥२॥
रच सत्यार्थप्रकाश काट दिये मत पन्थों के बाजू।
धर्म अधर्म तोल दिखलाया लेकर सत्य तराजू॥
ज्ञान कर्म ईश्वर चिन्तन का सारा महत्व बताया॥३॥
ऊच-नीच और भेद-भाव का सारा किया सफाया।
सामाजिक करके सुधार पिछडो को गले लगाया॥
वेद विमल वाणी कल्याणी का प्रचार कराया॥४॥
चैत्र सुदी प्रतिपदा ऋषि ने आर्यसमाज बनाया।

भ्रष्टाचार (२)

कारण-मीमांसा और इलाज

—बलराज मधोक—

तेल के धन पर अमीर बने अरब-इस्लामी देशों ने इस्लामीकरण को बढ़ावा देने के लिए भारत में तेल का पैसा भेजना शुरू किया। फलस्वरूप न केवल पाकिस्तानी एजेंट पनपने लगे अपितु सभी दलों में अमरीकी और रूसी लाबी की तरह अरब इस्लामी लाबियां बनने लगीं।

देश में व्याप्त भ्रष्टाचार इन सबका सामूहिक परिणाम है। इसलिए यह सोचना कि कुछ राजनेताओं के पकड़े जाने या उन्हें दंड देने से भ्रष्टाचार की स्थिति में सुधार होगा, खामख्याली है।

यदि समय रहते भ्रष्टाचार पर रोक नहीं लगाई गई तो न केवल लोकतन्त्र अपितु देश की एकता और सुरक्षा भी खतरे में पड़ जाएगी। इसलिए देश के मनीषियों और राष्ट्रहितैषियों को भ्रष्टाचार की जड़ में जाना चाहिए, उसके विभिन्न आयामों को समझना चाहिये और इसे खत्म करने के लिये दलगत भावना से ऊपर उठकर समन्वित पग उठाने के लिए जमीन तैयार करनी चाहिए।

सबसे पहली आवश्यकता राजनीति में भ्रष्ट लोगों का बोलबाला खत्म करने की है। जब तक देश का, प्रधानमन्त्री, मुख्यमन्त्री और राजनेता भ्रष्टाचार के घेरे में रहेंगे, कोई प्रयत्न सफल नहीं होगा। अब सभी लोग मानने लगे हैं कि यदि देश के पहले प्रधान मन्त्री सरदार पटेल होते तो स्थिति सर्वथा भिन्न होती, परन्तु जो बीत गया उस पर रोने से कुछ बनेगा नहीं। देश में आज भी अच्छे और भले व्यक्ति हैं परन्तु भ्रष्ट राजनेताओं ने उन्हें राजनीति से खदेड़ रखा है या हाशिये पर कर रखा है। फलस्वरूप अच्छे लोग राजनीति में आने से घबराने लगे हैं। यह स्थिति बदलनी होगी। अच्छे लोगों को आगे लाने का प्रयत्न होना चाहिये। राजनीति को कोसने से काम नहीं चलेगा। शासन तो राजनीति के द्वारा ही चलेगा। इसलिए राजनीति को शुद्ध करना होगा, इसमें अच्छे लोग आगे लाने होंगे।

कुछ महीनों में लोकसभा के चुनाव होने वाले हैं। यदि देश के मतदाता यह मन बना लें कि किसी भ्रष्टाचारी, अपराधी शराबी और व्यभिचारी को या किसी ऐसे व्यक्ति को जिस पर हत्या के मामले में सन्देह की उंगली उठती है जीतने नहीं दिया जाएगा और प्रत्याशियों के व्यक्तिगत जीवन की भी छानबीन की जाएगी तो चुनाव के बाद देश की राजनीति को कुछ हद तक शुद्ध करने का मार्ग प्रशस्त हो जाएगा। इसका प्रभाव दूर दूर तक पड़ेगा।

साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में नैतिक शिक्षा को महत्व देने, आर्थिक नीतियों को राष्ट्र की परम्पराओं, परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुरूप ढालने और जन जन के मानस के भारतीयकरण करने के लिए अभियान चलाने की आवश्यकता है।

हवाला काण्ड के कारण देश में एक हलचल तो मची है, भ्रष्टाचार पर बहस भी शुरू हुई है। यह अच्छा संकेत है। अगले चुनावों में सदाचार और सदाचारी लोगों को प्रमुखता देने की ओर भी ध्यान देना होगा। यह समाधान का विषय है कि इस दिशा में कुछ मनीषियों और सन्तों ने सोचना शुरू किया है। इस सोच को भ्रष्टाचार के विरुद्ध और सदाचार के पक्ष में जनजागरण अभियान का ठोस रूप दिया जाना चाहिये।

भू० पू० सांसद, के-३१४ जफर रोड
नई दिल्ली-६

वर की आवश्यकता

आर्यसमाज की देन

(पृष्ठ ५ का शेष)

राष्ट्रीयता की देन—

आर्यसमाज की विचारधारा में आदि से अन्त तक राष्ट्रीय चेतना और देश के प्रति कर्तव्य की भावना कूट-कूट कर भरी है। स्वतन्त्रता संग्राम के आन्दोलन में इस संस्था की भूमिका सदा स्मरणीय रहेगी आर्य समाज की राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर लोग आजादी के लिए निकल पड़े। शहीद हो गए। इतिहास साक्षी है कि आजादी की लड़ाई में सक्रिय भाग लेने वाले अधिकांश आर्यसमाजी थे। स्वाधीनता संग्राम में ऋषि दयानन्द की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वे स्वदेशी शासन के प्रबल पक्षधर थे। आर्य समाज की विचारधारा में स्वदेश स्वसंस्कृति, स्वसभ्यता और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया है। देश की आन-बान व शान सर्वोपरि है। जिस देश में जन्म लिया उसके प्रति हमें सदैव कृतज्ञ रहना चाहिए। आर्यसमाज ने देश की अखण्डता, एकता, संस्कृति, सभ्यता और आत्म गौरव की सुरक्षा के लिए सदा जागरूक पहरेदार की भूमिका निभाई है।

हिन्दी भाषा की देन

भाषा की दृष्टि से आर्यसमाज का राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भाषा देश की आत्मा होती है। बिना स्व० भाषा के देश गूंगा होता है। आर्यसमाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द स्वयं गुजराती होते हुए, संस्कृत के उद्भट विद्वान होने पर भी लेखन, प्रकाशन और शास्त्रार्थ हिन्दी में किए। हिन्दी का प्रचार व प्रसार इस संगठन का अंग रहा है। देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी होनी चाहिए। अनेक पत्र-पत्रिकाओं तथा ग्रन्थों के माध्यम से आर्य समाज ने हिन्दी भाषा को आगे बढ़ाया। स्कूलों, गुरुकुलों व अन्य संस्थाओं में हिन्दी माध्यम को ही वरीयता दी। हिन्दी भाषा के द्वारा देश के स्वाभिमान की रक्षा में आर्य समाज का उल्लेखनीय योगदान रहा है।

आर्य समाज ने देश धर्म जाति संस्कृति सभ्यता आदि के आदर्श गौरवपूर्ण स्वरूप की रक्षा और प्रचार-प्रसार हेतु अनुकरणीय भूमिका निभाई है। इसका स्वस्थ, वैज्ञानिक, आधुनिक उपयोगी व तर्कसंगत चिन्तन एवं दिशाबोध प्रत्येक क्षेत्र में रहा है। संक्षेप में ऊपर कुछ क्षेत्रों में देन का विवेचन रखा है। इसके अतिरिक्त राजनीति, आध्यात्म, शिक्षा, शुद्धि आदि के क्षेत्रों में भी मौलिक दृष्टि दी है। जैसा कि इसका छठा नियम है—संसार का उपकार करना, इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। इसी आधार पर इनकी विचारधारा में विशालता, उदारता व व्यापकता रही है।

आर्य समाज संसार को जीवन-जगत के प्रत्येक क्षेत्र में सीधा, सच्चा व सरल मार्ग प्रशस्त करता है। इसकी विचारधारा में तर्क और विज्ञान का समन्वय है। वर्तमान समस्याओं के निराकरण में यह भूमिका दे सकता है। बशर्ते यह संस्था संगठित होकर चले। आज इसमें भी बिखराव व भटकाव आने लगा है। मूल उद्देश्य से हटने लगी है। आज आर्यसमाज की जागरूकता और विज्ञान सम्मत बौद्धिकता की संसार को बड़ी आवश्यकता है। पुनः धर्म, संस्कृति भक्ति परमात्मा योग आदि के क्षेत्र में पाखण्ड, आडम्बर ढोंग व प्रदर्शन फैल रहे हैं। इसको यदि कोई सत्यस्वरूप व यथार्थ दृष्टि दे सकता है, तो मात्र आर्य समाज की विचारधारा ही दे सकती है। अतः स्थापना दिवस के उपलक्ष्य पर इसके कार्यकर्ताओं को इसके प्रचार-प्रसार के लिए गम्भीरता से [illegible] और [illegible] करना चाहिए।

केवल आर्यसमाज ही क्यों ?

—मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के ११वें समुल्लास में प्रार्थना-समाज ब्रह्मसमाज आदि की स्वस्थ समीक्षा करते हुए बिल्कुल ठीक एव सत्य ही कहा है—यदि देशोन्नति करना चाहें तो उसके लिए 'आर्य समाज' मे आओ। इसी के माध्यम से वांछित उन्नति सम्भावित है।" महर्षि दयानन्द के हृदय के यह उद्गार कितने गम्भीर एव मननीय चिन्तनीय हैं कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात विगत ५० वर्षों में आर्य समाज के सगठन और उसके प्रचार प्रसार की पहले की अपेक्षा अधिक प्रासगिक लगती है।

आज से दो दशक पूर्व आर्य समाज का ८ वा महासम्मेलन मारीशस के तत्कालीन प्रधानमन्त्री शिवसागर रामगुलाम (अब स्वर्गीय) ने अकबर आर्य सम्मेलन (भारत) के अवसर पर आहूत किया था। इन पक्तियो का लेखक भी अकबर जलयान के उन आर्य यात्रियो मे से एक था। बम्बई से जब हमारा जलयान हिन्द महासागर की लहरो की थपेडे खाते हुए चला जा रहा था, तब कुछ समय बाद ही सूर्यास्त हो गया। किन्तु हमने जहाज के डेक पर चढकर देखा कि उस ओर अन्धकारपूर्ण रात्रि में समुद्र के बीचो-बीच एक विशाल प्रकाश स्तम्भ जहाजों को आगे बढने के लिए दिशा बोध या मार्गदर्शन करा रहा है। इस प्रकाश स्तम्भ के दिशा निर्देश के अनुसार ही अकबर—जलयान तीव्रगति से आगे बढ़ता जा रहा था। यह दृश्य देख हृदय अत्यन्त ही पुलकित हो रहा था।

सम्प्रति, देश की सामाजिक तथा राजनैतिक स्थिति इतनी ग भीर होती जा रही है कि प्रत्येक सवेदनशील भारतीय, विशेषकर देशभक्त आर्य समाजी चिन्तित हो रहा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के ५० वर्ष के पश्चात हमारा नैतिक चरित्र का मानचित्र गिरकर शून्य को स्पर्श करने लगेगा, इसकी कल्पना कभी भी किसी ने स्वप्न मे भी नहीं की थी। यदि देश की दुर्दशा को शास्त्रीय शब्दों मे कहा जाए तो इन दिनो लोकैषणा, वित्तैषणा और पुत्रैषणा इन तीनों ऐषणाओ ने परिवार, समाज तथा राष्ट्र को अधोगति की ओर ढकेल दिया है। लोकैषणा पदलिप्सा, वित्तैषणा-धनलिप्सा (हवाला काण्ड) तथा पुत्रैषणा अर्थात् भोगवाद अथवा ब्लूफिल्म्स का प्रचार-प्रसार आदि अपनी सीमा लाघ गया है। दूसरे शब्दो मे भारत को पश्चिमी उपभोक्तावाद संस्कृति ले डूबी। इस उपभोक्तावादी संस्कृति की चपेट मे हम आर्य जन भी अछूते नहीं बचे हैं। मुद्रण माध्यम (प्रिन्ट मीडिया) तथा इलेक्ट्रिक मीडिया (विद्युत माध्यम) से यह भोगवादी संस्कृति (पुत्रैषणा) हमारे घरो में दूर-दर्शन के माध्यम से हमारी बैठक तथा शयन कक्ष तक पहुच गई है। कई बार तो दूर दर्शन के कारण सध्या यज्ञ करना बडा कठिन हो जाता है। परिवार में बडी कठिनाई से उसे बन्द कर अपने नैमित्तिक कर्म किए जाते हैं। यह भी एक बडी भारी विडम्बना है।

आज के परिवार, समाज तथा राष्ट्र की दयनीय स्थिति किसी से भी छिपी नहीं है। पारिवारिक अनुशासन प्राय समाप्त सा हो गया है। समाज में नित्य नए नए विचार, फैशन, वस्तुए आदि आते जाते रहे हैं। हमारा राष्ट्रीय चरित्र तो इतना अधिक गिर गया है कि उसकी चर्चा अब शब्दो में नहीं कर सकते। भ्रष्टाचार मानो अब शिष्टाचार सा बन गया। समाज में यह धारणा घर कर गई है कि बिना लिए दिए उचित काम भी पूरे नहीं कराए जा सकते। कहा जाता है कि स्वर्गीय आचार्य विनोबा भावे को भी एक बार महाराष्ट्र के एक जिले के तहसीलदार को अपना उचित काम कराने के लिए भी रिश्वत देनी पडी थी। इन्दौर में माननीय महामहिम राष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा के एक निकटतम सम्बन्धी के यहा पिछले दिनों अखिल नगर (इन्दौर) में चोरी हो गई। जब वे चोरी की घटना की रिपोर्ट अन्नपूर्णा पुलिस थाने पर करने गए, तब चोरी के सम्बन्ध में पूछ-ताछ करने वाले पुलिस कर्मी ने उनसे ५००) रु० ठग लिए। इन घटनाओं की चर्चा स्थानीय समाचार पत्रो में सुर्खियों के [illegible] [illegible] का उल्लेख करने का तात्पर्य [illegible] है कि [illegible] का [illegible]

शिव स्वरूप हो नवसंवत्सर

दुख दारिद्रय मिटे जन-जन का,
सुख समृद्धि का हो साम्राज्य।
मानवता के सबल सुतत्त्वो-
का हो जन-जन उर पर राज्य।

स्वार्थ वृत्ति का हम सारे जन,
करें रच अन्तर्मन से त्याग।
मिलें सभी को नियमितता से-
जिसका जैसा भी हो भाग।

सद्विवेक आए जगती पर,
उपजे मानव मन सद्बुद्धि।
भ्रष्ट पथो पर जो भटके हैं,
उनकी हो शुचिता से शुद्धि।

महिमण्डल पर घनीभूत जो
दानवता के काले घन।
मानवता की प्रखर रश्मियो-
से हो उनका पूर्ण हनन।

स्वर्णिम आभा फैले भू पर,
सत्य शिवम् सुन्दरता की।
फैले शुभ सुगन्धि धरा पर-
समता की, समरसता की।

सत्य धर्म के पुण्य पथो पर-
बढ़ें अभय हो सतत निरन्तर।
आनन्दित हो पूर्ण धरातल,
शिव स्वरूप हो नवसवत्सर॥

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ प्र)

कर्मचारी राष्ट्रपति के निकटतम सम्बन्धी को भी नहीं छोडता है। यह हमारे समाज का पारदर्शी चित्रण है।

वर्त्तमान समाज तथा राजनीति की चादर अब विदुर की धर्मपत्नि की साडी की तरह इतनी सड गई है कि जिधर से खीचो, वही से वह फट जाती है। समाज तथा राजनीति के जिस भाग को स्पर्श किया जाय, वही से वह बहुत ही जर्जर लगती है। केन्द्रीय सरकार की उदारवादी नीति के कारण अब प्रत्येक भारतीय शिशु ऋण मे जन्म ले रहा है, आजीवन ऋणग्रस्त रहेगा और ऋण की अवस्था मे ही मर जाएगा। महाभारतकार ने स्पष्ट कहा है—जिस राष्ट्र मे व्यभिचार भ्रष्टाचार तथा कदाचार आ जाता है, वह राष्ट्र अधोगति को प्राप्त हो जाता है। आज हमारे राष्ट्र की भी वैसी ही चिन्तनीय दशा बनी हुई है ? इसे देखकर शरीर मे रोमाच हो उठता है कि अब भारत का भविष्य क्या होगा ?

उपरोक्त लेख मे रात्रि के प्रकाश-स्तम्भ की चर्चा की है। इस भयानक तथा ग भीर स्थिति को सभालने तथा राष्ट्र की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए अब केवल 'आर्यसमाज' ही एक मात्र ऐसा महान तथा ऊ चा प्रकाश स्तम्भ है, जिसके आलोक या प्रकाश मे ही आगे बढ़ा जा सकता है। आज से डेढ सौ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द ने ठीक ही कहा था—यदि लौकिक एव पारलौकिक उन्नति करना चाहते हो तो 'आर्य समाज' मे आओ तभी हमारा कल्याण सम्भव है। आज भी समाज तथा राष्ट्र का 'आर्य समाज' से अनेक अपेक्षाये हैं। आज भी 'आर्य समाज' मे वह दृढ़ता है कि वह बडी से बडी [illegible] है।

इन पक्तियों के लेखक ने [illegible] निवृत्ति के पश्चात देश की प्राय ३००-

(शेष पृष्ठ ८ पर)

केवल आर्य समाज ही क्यों?

(पृष्ठ ७ का शेष)

३५० आर्य समाजो, कई गुरुकुलों तथा मठ-आश्रमो मे सेवा भाव से भ्रमण किया। किन्तु अत्यन्त ही दुःख के साथ कहना और लिखना पड़ रहा है कि जहा भी गया, वहां पद-लिप्सा के झगड़े, व्यक्तिगत ईर्ष्यापूर्ण बातें तथा भयकर फूट के दर्शन करने को मिले। एक बार तो मुझे एक आर्य समाज मे परिचय देने के उपरान्त भी समाज मन्दिर के बरामदे में रात्रि इसलिए गुजारनी पड़ी कि मन्त्री जी बाहर गाव गए थे और चौकीदार द्वारा उनकी अनुमति के बिना आर्य समाज के एक विनम्र उपदेशक लेखक तथा पत्रकार को परिचय देने के उपरान्त भी आर्य समाज मन्दिर मे प्रवेश नहीं दिया गया। प्रात काल मैंने सत्सग मे जब उपदेश दिया, तब माननीय प्रधान जी ने अपराध या भूल की क्षमा मागी। मैंने तो यह निर्णय निकाला कि 'अपना घर स्वयं घर'। जिस समाज मे जितनी अधिक चल-अचल सम्पत्ति है, वहा उतने ही अधिक मतभेद, सघर्ष तथा उठा पटक है। एक आर्य समाज मे मेरे जाने के एक माह पूर्व वार्षिक निर्वाचन के समय आर्य समाज मन्दिर मे अपने विरोधी प्रत्याशी की गोली मारकर हत्या कर दी थी। इसे केवल दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है।

आर्य समाज के ये दोनो रूप आर्यों के सम्मुख प्रस्तुत हैं। आर्य समाज की स्थापना तथा उसके महत्व को कोई भी विवेकशील व्यक्ति टाल नहीं सकता है। आर्य समाज रूपी काच पर प्रवाह के कारण थोड़ी सी धूल चढ़ गई है। उसे स्वच्छ कर पुन पूर्व गौरव प्रदान करना अभी हमारे वश मे है। आज भी आर्य समाज और महर्षि दयानन्द का सन्देश नित्य नूतन में विद्यमान है और भविष्य मे भी रहेगा।

पुस्तक समीक्षा

वैदिक सम्पदा

पृष्ठ स० ४८० मूल्य १७५ रुपये

लेखक—प० वीरसेन जी वेदश्रमी

प्रकाशक विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, नई दिल्ली-६

वैदिक सम्पदा अपने आप मे एक अनूठा एव सग्रहणीय ग्रन्थ है। इसमे मानवजीवन की प्रमुख सभी समस्याओ का विवेचन किया गया है। वेद हमारी अभूतपूर्व एव अतुलनीय सम्पदा है। इसके उपदेश सार्वभौम है। ससार के जितने मत-मतान्तर, मजहब एव पन्थहैं उनकी सभी विशेषताए पहले से ही,वेदों में विद्यमानहैं।

प० वीरसेन जी वेदश्रमी ने अपूर्व श्रम करके जहा वेदश्रमी शब्द को सार्थक किया है, वहा हमारे लिए वेदों को जानने का मार्ग भी प्रशस्त कर दिया है। स्वाध्याय प्रेमी श्रद्धालुओ को इस अमूल्य ग्रन्थ को अवश्यमेव पढना चाहिये।

—डा० शिवकुमार शास्त्री
धर्माधिकारी सार्वदेशिक धर्मार्य सभा

भारतीय गौरव का प्रतीक विक्रमी संवत्

इतिहास साक्ष्य—वर्ष प्रतिपदा उत्सव अर्थात नववर्ष हम सबके लिए बहुत महत्व रखता है।

हिन्दू समाज पर काले बादलों एवं अत्याचारों की आंधी के रूप में उमड़े शक-हूणों पर विजय प्राप्त करने वाले प्रजापालक, स्वर्णयुग निर्माता न्यायशील, परोपकारी सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की महान विजय के उपलक्ष में विक्रमी संवत का शुभारम्भ हुआ। जन-जन के हृदय में वास करने वाले मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का जन्म (नवमी) एवं राज-तिलक दिवस, सेवा मार्ग को प्राणपण से आजीवन निभाने वाले शक्ति के प्रतीक रामभक्त वीर हनुमान जी का जन्मदिवस, सत्य-दया और अहिंसा के अग्रदूत भगवान महावीर का जन्म दिवस, महान सिख गुरु परम्परा द्वितीय पातशाही श्री गुरु अंगद देव जी का जन्म दिवस, अत्याचारी मुगल-शासकों के आतंक एवं अत्याचारों से मुक्त करवाने हेतु हिंदू समाज को निर्भय बनाने एवं उसकी सुरक्षा के लिए हिन्दू के खड्ग हस्त स्वरूप खालसा के सृजनकर्ता श्री गुरुगोविन्द सिंह जी महाराज द्वारा खालसा पंथ की स्थापना नामधारी सतगुरु बाबा रामसिंह जी द्वारा स्वतन्त्रता के लिए जनजागरण के रूप में कूका आंदोलन का शुभारम्भ भारत की स्वतन्त्रता के लिए बलिदान होने वाले क्रांतिकारी वीर सेनानी तात्या टोपे एवं पुना अत्याचारी अंग्रेज को भारत से बाहर निकाल फेंकने का निश्चय लेकर सशस्त्र क्रांति करने वाले चाफेकर बन्धुओं का फांसी पर्व, अछूतों को गले लगाने वाले स्वतन्त्रता के उद्घोषक पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराने वाले वेदों के पुनरुद्धारक महर्षि स्वामी दयानन्द जी द्वारा आर्य समाज की स्थापना भारत को अद्वितीय संगठन शक्ति देने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डा० केशवराम बलिराम हेडगेवार जी का जन्म, स्वतन्त्रता संग्राम में जूझ रहे जलियांवाला बाग के असंख्य बलिदानी वीर जलियांवाला बाग कांड के सूत्रधार क्रूर डायर को ठिकाने लगाने वाले शहीद ऊधम सिंह की प्रेरक स्मृति नवरात्रों में पूजा योग्य मां दुर्गा; मां काली, मां अन्नपूर्णा देवी एवं ज्ञानदायिनी, वीणावादिनी मां सरस्वती की वन्दना यह सब इस कालखण्ड की उपलब्धियां एवं प्रेरणाएं हैं।

पाश्चात्य संस्कारों का प्रभाव क्यों? इन इक्कीस दिनों की छोटी-सी अवधि में घटित यह सारे पर्व सामने आने के बाद हम स्वतन्त्र भारतवासी यह अनुभव कर सकते हैं कि भारतीय नववर्ष के प्रथम तीन सप्ताह हमारे राष्ट्र जीवन में कितना महत्व लिए हुए हैं। हम भारतीयों ने पाश्चात्य सभ्यता में रंग कर ऐसा लगता है, जैसे हमने स्वतत्व ही खो दिया हो। विश्व में अपनी भी एक विशिष्ट पहचान है, अपना भी कोई विशिष्ट राष्ट्र है और राष्ट्र जीवन है, अपना भी कोई संवत है—वर्ष है। यह सब हम भूल गए से लगते हैं।

आज हमने ईसवी सन को अपने दैनंदिन आचरण में ही मान्यता दे डाली है, जबकि अपना विक्रमी संवत, जो कि ईसवी सन की अपेक्षा कहीं अधिक श्रेष्ठता, प्राचीनता एवं विशिष्टता लिए हुए हैं, जो कि शास्त्र सम्मत एवं वैज्ञानिक आधार पर आधारित हैं।

प्रेरणा—हर नया वर्ष हर प्राणी के जीवन मे और प्रत्येक समाज के जीवन में एक नई उमंग कल्पनाएं लेकर उतरता है लेकिन यदि उस पर्व के साथ अपना पन न हो तो प्रेरणा मृतप्राय हो जाती है।

ईसवी सन जब प्रथम जनवरी से शुरू होती है तो उसमें से हम भारतीयों के लिए उत्साह एवं प्रेरणा देने के लिए क्या है। हम भारतीयों का अपना एक संवत् है, जिसे हम विक्रमी संवत् कहते हैं और इस संवत् के साथ कितनी महान शानदार प्रेरक घटनाएं एवं महापुरुष जुड़े हुए हैं। उन प्रेरक घटनाओं एवं अनेक महापुरुषों, विशिष्ट पुरुषों के जन्म दिवस इस विक्रमी संवत् के साथ जुड़े होने के कारण इसका महात्म्य प्रकट होता है। उस पर हम सब भारतीय गौरव गर्व कर सकते है। विश्वभर में यह पता चलना चाहिए कि भारतीयों का भी कोई अपना संवत् है। और उस संवत का नाम विक्रमी संवत् है।

ज्योतिष विद्वानों के अनुसार-विक्रमी संवत २०५२ के सम्बन्ध में अस्थिरता बनने के लक्षण हैं, किन्तु धर्मकार्यों में प्रवृत्त जीवों को शक्ति मिलेगी। इस नववर्ष के प्रथम मास की विशेषता यह भी कही गई है कि शुक्र गृह प्रारम्भ में ही अस्त हो कर फिर से उदय होगा, जिससे विश्व में आश्चर्य-जनक घटनाएं घटित होने की संभावना है। साधारण प्रयोग की वस्तुओं के मूल्य आशा से अधिक होने की सम्भावना है। विभिन्न राष्ट्रों में आपसी वैमनस्य बढ़ेगा जिससे विकास सम्बन्धी योजनाओं में बाधाएं प्रकट होने के लक्षण हैं। नववर्ष में भारत के कुछ प्रदेशों में सूखा तथा कुछ में अतिवृष्टि संभावित है।

नववर्ष उत्सव कैसे मनाएं—चैत्र प्रतिपदा की प्रभात में सूर्योदय से एक घंटा पूर्व जागकर नित्यकर्म से निवृत्त हो अपने माता-पिता एवं गुरुजनो को प्रणाम कर आशीर्वाद ले। अपने इष्ट देवों की पूजा अर्चना कर वातावरण शुद्धि के लिए हवन-यज्ञ धूप दीप करके घट स्थापना करें और शक्ति अनुसार दान-पुण्य कर प्रसाद वितरण के साथ अधिकाधिक लोगों को नववर्ष की बधाई दें। अपने घरों दुकानों, कार्यालयों को महापुरुषों के चित्रों से सुसज्जित कर भारतीय संस्कृति के प्रतीक भगवा ध्वज फहराइए। संभव हो तो सामूहिक स्तर पर उत्सव आयोजित कर संगीत, भजन, कीर्तन अथवा वीरगाथाओं का स्मरण करें।

आर्य जगत के समाचार

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का वार्षिकोत्सव दिनांक १२ से १४ अप्रैल तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है इस अवसर पर आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वान नेता तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। समारोह में अनेको सम्मेलनो का आयोजन भी किया गया है। अधिक से अधिक संख्या मे पधार कर समारोह को सफल बनाए।

आर्य समाज बगारस्यूं में दयानन्द बोध पर्व धूमधाम से सम्पन्न

दिनाक १७-२-९६ को आर्य समाज बगार स्यूं डौडियाल स्यूं आदि तमाई बैजरों ने शिवरात्रि(स्वामी दयानन्द बोधरात्रि के रूप में मनाई गई। सुबह ९ बजे से ११ बजे तक यज्ञ हुआ बाद मे श्री विजयराम आर्य मन्त्री उक्त समाज ने ईश्वर वन्दना के साथ स्वामी दयानन्द जी की जीवनी पर प्रकाश डाला। तथा श्री पी. के. भारती वा श्री महेशानन्द जी लो० नि० वि० बैजरो श्री सोहन लाल जी अध्यापक तथा स्वास्थ्य विभाग के फार्मासिस्ट जी वी० एल० ए० के प्रवचन हुए। —विजय राम आर्य; मन्त्री
आर्य समाज बंगारस्यूं डौडियाल स्यूं
आदि गढ़वाल (उ. प्र.)

पर्यावरण शुद्धता हेतु यज्ञ की परम आवश्यकता हैं

आर्य समाज बीसल पुर, २२ फरवरी। पर्यावरण शुद्धता हेतु यज्ञ की परमावश्यकता है। यज्ञ मे वेदमन्त्र पाठ से वैचारिक प्रदूषण एव घृत सामग्री की अग्नि में आहुति देने से भौतिक पर्यावरण प्रदूषण समाप्त होता है। उक्त उदगार मुरादाबाद से पधारे दर्शनाचार्य श्री महावीर सिंह मुमुक्षु ने ऋषि बोधोत्सव पर स्थानीय आर्य समाज में व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि यज्ञ में जल के संयोग से ओजोन गैस बनती है जो कि रक्षाकवच के रूप में सूर्य से आने वाली घातक पराबैंगनी किरणों को रोकती है। यह रक्षा कवच ओजोन परत आजोन पर आज दुर्बल हो रही है अतः यज्ञ अत्यन्त उपयोगी है। बोधोत्सव १८ से २२ फरवरी तक मनाया गया। उत्सव में विभिन्न विषयो पर व्याख्यान हुए। श्री देवी सिंह आर्य मथुरा के भजनो ने जनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा० सत्येन्द्र कुमार प्रधान तथा संचालन भूपराम आर्य ने किया।—भूपराम आर्य, मन्त्री

नव सम्वत्सर की शुभ कामना

भारतीय नव सम्वत्सर पर भारतीयों को शुभ-सन्देश।
जागो-उठो और अपनाओ अपनी भाषा-अपना वेश॥
भारतीय सभ्यता संस्कृति, भारतीय ही हों संस्कार।
भारतीय ही रहन-सहन हो, भारतीय आचार-विचार॥
यथा नाम और तथा गुणों से मेरे देश की मिटे व्यथा।
'स्व' 'तन्त्र'पाकर 'स्व'मंत्र' खोया,बुद्धि को क्यों नहीं मथा॥
मक्खन फेंक छाछ पर झगड़े रख कर कथित धर्म उन्माद।
भौतिकता से जन्मे हैं, हत्या विस्फोट आतंकवाद॥
नव सम्वत् लाये सद्बुद्धि शुभ कर्मों में जगे रुचि।
'जननी जन्म भूमि' ग्रन्थों में 'स्वर्गादपि है गिरीयसी'॥
भारत जन सौहार्द भाव युत करें परस्पर प्रेम अपार।
मतान्धता, आतंक, द्वेष तजि कहीं करें नहीं नर संहार॥
शासक वैदिक राजनीति गहि, यथा योग्य वर्तें व्यवहार।
देश शान्त कर जीव मात्र हित,खोलें विश्व शांति के द्वार॥
विनय ओ३म् से मही व्योम का, आर्यावर्त करे कल्याण।
'गुण ग्राहक' नव सम्वत्सर की,शुभ-अभिलाषा करे प्रदान॥

लेखक—रामनिवास
गांव-सूरौता, पत्रा-अवार भरतपुर (राज०)

ऋणी हैं हम! ऋणी हैं हम!

अमर संजीवनी दे दी हमें ऋषिवर दयानन्द ने।
हमें मानव बना डाला महती कर कृपा जिसने॥
बढ़े हम जा रहे थे मृत्यु की ही ओर को आगे,
लजाकर आज अपने ही वतन में थे अवांछित जागे।
न कोई लक्ष्य, ना लक्षण न जीने की कोई आशा,
न था उत्थान और शान्ति न धड़कन थी न उत्कंठा।
मुंदी आखें थी बढ़ता पग चले थे गर्त में गिरने॥
हमें मानव बना डाला महती कर कृपा जिसने॥
अन्धेरा बढ़ रहा चहुं ओर दिखाई था न कुछ पड़ता,
थे कुंठित और विवश हम सब भरी थी बुद्धि में जड़ता।
घृणा और फूट पुष्पित था विकास विष वृक्ष का होता,
न उन्मूलन कुरीति का वपन अभ्युदय का होता।
अतुल सर्वज्ञ सर्वाधार लगा जा मूर्ति में पूजने,
हमें मानव बना डाला महती कर कृपा जिसने।
स्फुरण और अ कुरण मिलन वर्द्धन और संयोजन,
सदा होने सकल जग में तुम्हारी प्रेरणा सिंचन।
जगा युग तब बदल करवट सुखद अंगड़ाई को लेकर,
सभी सक्षम बने योद्धा समर्पित आहुति देकर।
करे कैसे 'भक्त' वर्णन जो पूरे हो रहे सपने,
हमें मानव बना डाला महती कर कृपा जिसने॥

—सत्यदेव प्रसाद आर्य 'भक्त'
प्रेम नगर, नेमदारगंज (नवादा-बिहार)-८०५१२१

आर्य रत्न मुरारीलाल जी की पुण्य स्मृति में
बागपत में विराट कवि सम्मेलन

यहां पर आर्य रत्न मुर रीलाल सिद्धांत शास्त्री की पुण्य स्मृति में दिनांक २५-२-९६ को वीरेन्द्र बंसल व मा० सत्यप्रकाश गौड के संयोजन में विराट कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें सर्व श्री ओमप्रकाश'आदित्य',हरिओम पंवार, ममता शर्मा(आगरा) महेन्द्र अजनबी व वेदप्रकाश (दिल्ली), सरदार रतनसिंह रतन 'सुमन' आदि ने काव्य पाठ किया।

मास्टर जी द्वारा लिखित आर्य दर्पण, सत्य दर्शन, दिव्य दयानन्द का नि.शुल्क वितरण किया गया।

—सत्यप्रकाश गौड, मन्त्री
आर्य समाज बागपत

मातृभूमि का त्राण

सजग हो शीघ्र आर्य सन्तान ! कीजिए मातृभूमि का त्राण ।
तुम्हारे बिना न सम्भव आज देश में सम्य स्थिति निर्माण ।।
बोल जिसने 'वन्देमातरम्' किया था जन जन का आह्वान ।
इसी से प्रेरित होकर किया वीर पुरुषों ने निज बलिदान
उन्हीं बलिदानों के फलरूप देश अपना है आज स्वतन्त्र ।
चलाते हैं अपने ही बन्धु देश अपने का शासन तन्त्र ।
तथापि हुआ न अब तक यहां विदेशी चिन्तन का निर्वाण ।। सजग०
पराभव का मिटता यदि चिन्ह चीखने लगते हैं कुछ लोग ।
राष्ट्र मे देखि दिव्य जागरण सताने लगता है कुछ को रोग ।
यहां सब खाते जिसका अन्न और पीते हैं पावन नीर ।
उसी फिर मातृभूमि की कहो वन्दना से क्यों होती पीर ।
बढ़ रहा है कृतघ्नता पाप बताता है प्रत्यक्ष प्रमाण ।। सजग०
जिन्हें नहीं मातृभूमि से प्रेम राष्ट्र का जिन्हें न भाता गीत ।
यहां की भाषा संस्कृति और सभ्यता से चलते विपरीत ।
विदेशों से जिनके सम्बन्ध कराते रहते जो उत्पात ।
उन्हीं के चरणों में स्वार्थान्धता कर रहे कुछ नेता प्रणिपात ।
करा दीजे अब इनकी शीघ्र देश की जनता को पहिचान ।। सजग०
बना दी काश्मीर में आज राष्ट्रभक्तों को कर दिया त्रस्त ।
[illegible]
बचाने यहां से भागे प्राण छोड़ आओ अपना घर द्वार ।
इन्हें इससे नहीं कोई कष्ट मात्र अपनी कुर्सी से प्यार ।
किया इस घोर रोग का कहो कभी भी इनसे घोर निदान ।। सजग०
देश के गौरव रक्षा हेतु बन्धु जो करते हैं बलिदान ।
उन्हीं का मन तन सर्वस्व कर रहे ये नेता अपमान ।
सुरक्षा बल के कर संघर्ष देश में बचा रहे जो आन ।
उन्हें शासन देता सहयोग उन्हीं से करता है अनुराग ।
अविद्या ग्रस्त जनता से नहीं देश का होता है कल्याण ।। सजग०

रचयिता—आचार्य रामकिशोर शर्मा आचार्य
श्री राधाकृष्ण संस्कृत महाविद्यालय, खुरजा (उ प्र)

आर्यसमाज परिचय

(पृष्ठ २ का शेष)

होगी तब ही पूर्ण हित होगा। सन १८७७ में दिल्ली मे स्वामी जी ने सब पंथियो को एकत्र कर यही प्रयत्न किया था।

समस्त मनुष्य मात्र को वेदों का अधिकार है यह डंके की चोट पर केवल आर्य ही कह सकता है। ऐसे वैज्ञानिक, शाश्वत, मौलिक, आत्मिक उन्नयन, ईश्वरानुभूति के इस संगठन की मात्र तीन पुस्तकों का अध्ययन करें और जीवन की अपूर्णता मिटावें।

स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखित—

१—सत्यार्थ प्रकाश (२० भाषाओं में उपलब्ध)

२—ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका वेदो सम्बन्धी संक्षिप्त ज्ञान विज्ञान प्रकाश

३—संस्कार विधि १६ संस्कार मनुष्यत्व के लिए

प्रत्येक आर्य समाज में प्रति आदित्यवार प्रातः यज्ञ होम हवनादि सत्संग में सहानुभूति देकर सबको पुण्य प्राप्त करना चाहिए। सम्पर्क से आर्यसमाज के नियम और उद्देश्य भी जाने जा सकते हैं। वैदिक ज्ञान प्राप्ति से जीवन की सभी समस्याये दूर हो जावेगी। आर्य यह प्रकृति क्रिया सात्त्विक पवने वायु से बना है, आर्य का जीवन गतिशील और क्रियाशील होता है। आर्य ईश्वर पुत्र। अर्यति सर्वत्र गच्छति इति आर्य—जो पीड़ित शरणागतों का रक्षक है। आरात् याति इति आर्य—जो दुख से दूर है वह आर्य है, जो जितेन्द्रिय है वह आर्य है।

सदा आसुर, आर्य प्रकाश से सबको शुभा मिलना है।
जो दोषि ओ बजन्। वैदिक धर्म की जय।।

> **आवश्यक सूचना**
>
> सार्वदेशिक साप्ताहिक के प्रिय पाठको को सूचित किया जाता है कि दिन प्रतिदिन की बढ़ती हुई महगाई, कागज तथा छपाई के बढ़ते हुए मूल्यो के कारण सार्वदेशिक साप्ताहिक का वार्षिक और आजीवन शुल्क, हमे न चाहते हुए भी बढ़ाने के लिए विवश होना पड रहा है। १ अप्रैल १९९६ से सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क ५०) रुपये तथा आजीवन सदस्यता शुल्क ५००) रुपये कर दिया गया है। पाठकगण पूर्व की भांति सहयोग बनाए रखें। प्रत्येक ग्राहक अपना पिछला शेष धन अवश्य भिजवाने की कृपा करें।
>
> —सम्पादक

नेपाल 'हिन्दी राष्ट्र' ज्यादा

यह विचित्र बात है कि काठमाडू के एक 'विदेशी' शहर होने का अहसास वहा देवनागरी लिपि के बहुतायत से होते प्रयोग को देखकर होता है। किसी भी कार ट्रक,बस,तिपहिए, नहीं दुपहिए पर नजर जाती है तो उस पर नम्बर देवनागरी मे लिखा दिखता है। दूसरी ओर भारत मे प्राय अग्रेजी लिपि और अक ही दिखाई देते हैं। इससे लगातार यह अहसास बना रहता है कि आप किसी भारतीय शहर मे नही है। और तो और जब नेपाल के उच्चतम न्यायालय के भवन पर बड़े-बड़े अक्षरों में 'सर्वोच्च अदालत' लिखा हुआ देखते हैं तो एक झटका लगता है। नेपाल 'हिन्दू-राष्ट्र' की बजाय 'हिन्दी राष्ट्र' अधिक लगता है। जो बात 'सर्वोच्च अदालत' के बारे मे सही है, वह किसी भी मन्त्रालय या सरकारी दफ्तर के बारे मे भी सही है। इसी तरह किसी भी दुकान पर लगा बोर्ड पढ़ने मे और समझने में किसी भारतीय को कठिनाई नही होती क्योकि देवनागरी मे लिखे जाने वाले के शब्द सबसे ज्यादा हिन्दी के करीब हैं।

अगर आप नेपाली अखबार 'गोरखापत्र' या "कातिपुर" को पढ़ने का दुस्साहस करें तो आप पायेंगे कि सचमुच यह उतना 'दुस्साहस' नही है। मराठी से ज्यादा नेपाली हिन्दी के करीब लगती है।

आपके रुपये की तरह आपकी भाषा भी नेपाल मे धड़ल्ले से चलती है। अधिकाश दुकानदार भी या तो भारतीय हैं या भारतीय मूल के हैं या आपकी भाषा को समझते बोलते है।

(दैनिक नवभारत टाइम्स के ३ फरवरी १९९६ के अक मे छपे समाचार का साराश)

ध्यानयोग शिविर

आपको यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी योगधाम मे श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे (३ अप्रल बुधवार पूर्णिमा से १२ अप्रैल ९६ तक) ध्यान योग शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसमे आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि अष्टाग-योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा यम, नियमादि का पालन भी कराया जायेगा। शिविरार्थी शारीरिक निर्बलता तथा मानसिक अशान्ति से छुटकारा पाने के लिए विविध यौगिक उपायों से लाभ प्राप्त करके आत्मदर्शन का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। शिविर में यथासमय अन्य विद्वानों के प्रवचन तथा भक्ति संगीत होंगे। ७ अप्रैल रविवार को साधिका सम्मेलन होगा। ८ अप्रैल सोमवार मध्याह्नोत्तर २-३० बजे से "प्रयत्न की प्राप्ति" विषय पर सगोष्ठी होगी। अतः योगाभिलाषी अपने इष्ट-मित्रो सहित सपरिवार पधार कर प्रशिक्षण प्राप्त करें।

रजिस्टर्ड सं० डी०एल० ११०२४/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२४-३-९६) [illegible]
R N 616/57 Licensed to post without prepayment licence No. U (C) 95/95 Post in N.D.P.S.O. on 21,22-3-1996

वैदिक यज्ञ का विकृत रूप ही होलिका दहन है

वाराणसी, ५ मार्च। पाणिनि कन्या महाविद्यालय की पूजनीया आचार्या स्व० डा० प्रज्ञादेवी जी का ५१वां जन्म दिवस ५ मार्च फाल्गुन पूर्णिमा के दिन २१ दिन से चल रहे 'ऋग्वेद पारायण' की पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ। प्रात ८ बजे से प्रारम्भ हुए कार्यक्रम मे भक्ति संगीत, बृहद् यज्ञ, उपनिषद् पाठ, ऋग्वेद के अवशिष्ट सूक्तों का ब्रह्मचारिणियों द्वारा सुस्वर पाठ, पूर्णाहुति तथा प्रवचन हुए।

इस अवसर पर वासन्ती नव=नये सस्य=अन्न की इष्टि=आहुति भी पर्व के सुनिश्चित मन्त्रों द्वारा दी गई। आचार्या मेधा देवी जी ने बताया कि "वैदिक यज्ञ का बिगड़ा हुआ रूप ही होलिका दहन है। वस्तुत अपनी कड़ी मेहनत से उपजाई पकी फसल के घर आने पर किसान हर्ष से फूला नहीं समाता वही सच्चा प्रह्लाद है। वह अन्न की प्रथम अग्नि मे आहुति देकर तब यज्ञशेष खाता है। 'होलक' आग में भून लिये गये अधपके अन्न का नाम है जिसे होला-हो रहा सामान्य जन कहते हैं वही बिगड़ कर होली-होरी आ गई ऐसा जाना जाने लगा।

हिरण्य अर्थात् भौतिक सुख साधन को सदा चाहने वाला ही हिरण्यकश्यप है जो सच्चे आत्मदर्शी प्रभुभक्त के सामने सदा पराजित होता है। 'परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्' नीति पर चलने वाले ही नरेषुसिंह=नृसिंह हैं वे दुष्टों का दमन तथा सज्जनों की रक्षा करने मे तत्पर रहते हैं अत यह कोई निश्चित व्यक्ति विशेष नहीं। एतादृश जनों से व्यवहार जगत् में सर्वदा होता ही है। इस पर्व मे नववर्ष का स्वागत, आह्लाद का प्रदर्शन टेसू गुलाब आदि के बने रंगों को छिड़कर गले मिलकर किया जाना ही सुसभ्यतापूर्ण रीति सदा से रही है।"

कार्यक्रम के पश्चात् यज्ञशेष मे अमृतरूप पायस का वितरण आगत अतिथियो मे छात्राओ मे किया गया। उत्तम वेदपाठी कन्याओ को ऋग्वेद देकर पुरस्कृत किया। इस प्रकार बडी भव्यता के साथ सारा कार्यक्रम मध्याह्न तक पूर्ण हुआ।

नव सम्वत्सर तथा आर्यसमाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में

पूर्वी दिल्ली में भव्य आयोजन

स्थान लक्ष्मीनगर व्यावसायिक परिसर, समीप काफी होम मैदान, विकास मार्ग, दिल्ली

विशाल शोभा-यात्रा

शनिवार, २३ मार्च १९९६, प्रातः १० से दोपहर १ बजे तक

यह विशाल शोभायात्रा काफी होम, लक्ष्मीनगर व्यावसायिक परिसर से प्रारम्भ होकर मेन बाजार लक्ष्मीनगर, विकास मार्ग मेन बाजार शकरपुर, निर्माण विहार, प्रीत विहार से होती हुई दोपहर १ बजे काफी होम मैदान स्वास्थ्य विहार मे समाप्त होगी। जिसमे अनेक साधु सन्यासी, आर्य विद्वान्, स्वतन्त्रता सेनानी तथा राष्ट्रीय नेता सम्मिलित हो रहे है।

सामूहिक बृहद् यज्ञ एवं आर्य महासम्मेलन

रविवार, २४ मार्च ९६, प्रातः ८ से दोपहर १-३० बजे तक

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, स्त्री आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण सस्थाओं से निवेदन है कि वे अपने-अपने बैनरों तथा ओ३म् ध्वजों से अपने-अपने वाहनों (बसों, टैम्पो, स्कूटरों) को सुसज्जित करके अधिकाधिक सख्या मे पधार कर इस कार्यक्रम को सफल बनाकर सगठन शक्ति का परिचय दें।

—सत्तराम त्यागी महामन्त्री

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का वार्षिकोत्सव १२ से १४ अप्रैल तक उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न होने जा रहा है। इस अवसर पर अनेको कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। समारोह में अनेकों विद्वान साधु महात्मा तथा नेता पधार रहे हैं उनसे शिक्षा लाभ प्राप्त करने हेतु अधिक से अधिक सख्या मे पधारें तथा कार्यक्रम को सफल बनाये।

डा० रामकृष्ण आर्य को प्रथम पुरस्कार

आर्य लेखक परिषद् के कोषाध्यक्ष एव कार्यालय प्रभारी और आर्य परिवार सस्था, कोटा के मन्त्री डा० रामकृष्ण आर्य ने श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाब बाग उदयपुर द्वारा सत्यार्थ प्रकाश मेला उपलक्ष्य मे आयोजित अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता म "सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास के आलोक मे ईश्वर का स्वरूप" विषय पर निबन्ध लिखकर २१००) (इक्कीस सौ रुपये) का प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है। पुरस्कार २८ फरवरी के सत्यार्थ प्रकाश मेला मे एक समारोह मे मुख्य अतिथि राजस्थान के शिक्षा मन्त्री श्री गुलाबचन्द कटारिया के कर कमलों से दिया गया।

इस अवसर पर पुरस्कार प्राप्त कर्ता डा० रामकृष्ण आर्य ने यह घोषणा की कि जो व्यक्ति महर्षि द्वारा रचित प्रसिद्ध पुस्तक गोकरुणानिधि पर पी एच डी करेगा, उसे यह १००० रुपये की राशि ब्याज सहित शोध प्रबन्ध प्रकाशित होने के बाद पुरस्कार के रूप मे भेंट कर देंगे। यदि चार वर्ष तक किसी ने भी इस विषय पर पी एच डी नहीं की तो वे अपने प्रकाशन के किसी भी कार्य में इस राशि को ले लेंगे। तब तक के लिये यह राशि बैंक मे फिक्स डिपाजिट कर दी गई।

—वेदभूषण आर्य

दिल्ली राजभाषा विधेयक विचार-गोष्ठी

दिल्ली विधान सभा मे विचाराधीन राजभाषा विधेयक की असंगतियों पर, धर्म भवन, नई दिल्ली मे आयोजित, एक विचार गोष्ठी मे परिचर्चा की गई। गोष्ठी का उद्घाटन पत्रकार डा० वेद प्रताप वैदिक ने किया। नवभारत टाइम्स के सम्पादक डा० सूर्यकान्त बाली ने प्रस्तावना वक्तव्य प्रस्तुत किया। श्री हरिबाबू कंसल, श्री रामेश्वरदास गुप्त डा० रामकृष्ण गोयल एव श्री कृष्ण कुमार [illegible] ने विचाराधीन विधेयक की धारा ३ और ६ मे संशोधन करने पर बल दिया। श्री आनन्द स्वरूप गर्ग ने मातृभाषा में शिक्षा देने को अनिवार्य बताया। पजाबी को दूसरी राजभाषा बनाए जाने के प्रावधान को अनावश्यक और असगत बताया गया। इससे एक अनुचित परम्परा आरम्भ होने की आशका प्रकट की गई। [illegible] केन्द्रीयसभा के महामन्त्री श्री शिवकुमारशास्त्री ने एक प्रस्ताव द्वारा मुख्यमन्त्री से मांग की कि विधेयक को पारित कराने से पहले इसमें उपरोक्त विचारों के सन्दर्भ में आवश्यक संशोधन किए जाएं।

—[illegible]

स सार्वदेशिक प्रे स प्रतिष्ठान नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् – विश्व को श्रेष्ठ (आर्य) बनाएं

सार्वदेशिक साप्ताहिक

साम वेद

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

अथर्व वेद

दूरभाष : 3274771, 3260985 वार्षिक शुल्क 50 रुपए, एक प्रति 1 रुपया

वर्ष 35 अंक 8 दयानन्दाब्द 172 सृष्टि सम्वत् 1972949097 वैशाख कृ. 4 सं. 2053 7 अप्रैल 1996

वैशाखी का पावन पर्व और गुरुकुलों के महोत्सव

एक चिन्तन

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व आर्य समाज का व्यक्ति परिवार इस बात की प्रतीक्षा करता था कि गुरुकुल कांगड़ी व गुरुकुल म. वि. ज्वालापुर के महोत्सव पर चलना है, इसकी तैयारी में विचार-विमर्श होता था तब निश्चय कर गुरुकुलो मे जाकर दो-चार दिन निवास करते थे और इतने दिनो मे अपने जीवनदर्शन का अवलोकन भी करते थे।

कैसा सुन्दर समय था चार दिवस आर्य समाज का मेला-सा जुड़ा रहता था एक उत्साहप्रद वातावरण था–तब निर्णय करना होता था कि देश जाति समाज का क्या बनना है। इस दशा पर विद्वान भी सोच समझकर अपने विद्वत्तापूर्ण वैदिक-वाड्मय को जनता के सामने रखते थे।

आज वह न युग रहा है न वह योजनावद्ध कार्यक्रम ही रहा।

गुरुकुल कागड़ी और म. वि. ज्वालापुर के उत्सव के पश्चात फिर उत्सवो का तारतम्य लग जाता था।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद पहले का उत्साह कहाँ चला गया।

अभिभावक भी निश्चिन्त होकर इधर से विमुख होकर घर के धन्धे में लग गये। स्नातक भी परांमुख हो गये। जिन्होंने 12-14 वर्ष गुरुकुलों में रहकर अन्न खाया है–उन्हें यह देखने का अवसर नहीं, कि तब के गुरुकुलों में और अब के गुरुकुल की क्या स्थिति है। उस समय धन-अन्न विद्यार्थियों के लिए खूब आता था अब अपने पेट से बचाकर दो दाने ही मातृ संस्था को अर्पित नहीं कर सकते हैं।

उस समय के क्रान्तिकारी राजनेता-गुरुकुलों में आकर प्रेरणा लेकर राष्ट्र का नव जागरण करते थे, आज के नेता–नैतिकता से दूर आर्य समाज की शक्ति का अहसास ही नहीं करते।

मैदान साफ है हमारी बौद्धिक-राजनैतिक, सामाजिक-धार्मिक, आर्थिक दृष्टिकोणों से किसी को कोई मतलब नहीं है।

तो फिर–

हम पुनः बीते युग की ओर चलें-और उन गुरुकुलों में जाकर आत्म-मन्थन करें जहाँ जाकर सभी प्रकार का चिन्तन राष्ट्र को प्रदान करते थे।

आर्यजन विचार करे कि चार-दिन गुरुकुलो की पावन भूमि मे पधार कर अपने भूतकाल से वर्तमान को देखें और भविष्य के निर्माण की चिन्ता करे। वैशाखी के पावन पर्व पर हरिद्वार चलकर प्रकृति के सौन्दर्य का आनन्द ले और अमर शहीद श्रद्धानन्द तथा शास्त्रार्थ वाग्मी स्वामी दर्शनानन्द के महावृक्ष के नीचे बैठकर जीवन में नयी प्रेरणा प्राप्त करे।

डा. सच्चिदानन्द शास्त्री अस्वस्थ

डा. सच्चिदानन्द शास्त्री अभी पतले दस्तो से बीमार थे दस्त ठीक हुए-तो-घुटने मे सूजन मे सारा पैर ही सूज गया। इस पर भी वह आगरा, हरिद्वार, मेरठ, लखनऊ के कार्यक्रम करते रहे। अब सूजन से वह चलने में असमर्थ हैं–कल डा. रविकान्त को दिखलाया गया। उपचार चल रहा है।

लाभ होने पर ही वह कार्यक्रमो मे भाग ले सकेंगे। ज्वर भी हो गया है।

कार्यालय सचिव

सार्वदेशिक साप्ताहिक के आजीवन सदस्य बन कर वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार में सहयोग करें

आर्य परिवार आगरा द्वारा "राष्ट्र रक्षा सम्मेलन" का भव्य आयोजन

सभा मंत्री डा. सच्चिदानन्द शास्त्री का अभूतपूर्व स्वागत

रविवार दिनाक 17 3 96 को राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में विशेष आमंत्रण पर डा. सच्चिदानन्द शास्त्री महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली एव डा धर्मपाल कुलपति विश्व विद्यालय गुरुकुल कागड़ी के आगरा आगमन पर आगरा छावनी रेल्वे स्टेशन पर आर्य परिवार के नाम पट के साथ

सम्पादक : डा. सच्चिदानन्द शास्त्री

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

श्री इन्द्रमोहन मेहता, प्रधान के दोनो ओर मन्त्री श्री ओम् प्रकाश डेम्बला तथा श्री शान्ति प्रकाश आर्य प्रचार मंत्री ओउम् ध्वज लिये श्री हरि गोपाल सिह चौहान श्री धर्मपाल विद्यार्थी, श्री रणजीत राय डग तथा भारी सख्या मे आर्य बन्धुओ ने वैदिक जयघोष एव ओउम् नाद के साथ माल्यापर्ण कर दोनों अतिथियो का भव्य स्वागत किया। ग्रैण्ड होटल तक कार-स्कूटरो की पंक्तिबद्ध शृंखला के साथ सम्मान रेलवे स्टेशन से ग्रैण्ड होटल के प्रवेश द्वार पर वैदिक मत्रोच्चारण के साथ गाड़ी से उतरकर विश्राम कक्ष की ओर पधारे। श्री रणजीत राय डग ने स्वल्पाहार की सुन्दर व्यवस्था के साथ अतिथियों को ससम्मान बैठाया।

ठीक 2 00 बजे "राष्ट्र रक्षा सम्मेलन" माथुर वैश्य भवन मे आयोजित किया गया दोनो अतिथि सभागार में जय घोष और करतल ध्वनि के साथ स्वागत स्वीकार करते हुए प्रविष्ट हुये। स्वामी स्वरूपानन्द जी तथा श्री अर्जुन देव स्नातक भी मंच पर अपना स्थान ले चुके थे।

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सच्चिदानन्द शास्त्री के कर कमलो द्वारा वेद ऋचाओ के मधुर पाठ से दीप प्रज्वलित कराया गया। अपने-अपने स्थान पर सभी मौन मुद्रा में खड़े हो गये जब श्रीमती बीणा कपूर सदस्य आर्य परिवार एव डा० श्रीमती आर० के वर्मा ने "बन्दे मातरम्" का गायन आरम्भ किया। मुख्य अतिथ के रूप मे डा० धमपाल कुलपति गुरुकुल कागड़ी शिवव विद्यालय मच पर विद्यमान थे।

सर्वप्रथम माल्यार्पण् कर दोनो महान विद्वानो का सम्मान आर्य परिवार के प्रधान श्री इन्द्रमोहन मेहता द्वारा किया गया। आर्य परिवार के भू० पू० प्रधान सर्व श्री हरि गोपाल सिह चौहान श्री धर्म पाल विद्यार्थी एव श्री रणजीत-रायडंग ने भी दोनो अतिथियों को माल्यार्पण् किया फिर श्री ओमप्रकाश डेम्वला, श्री शान्ति प्रकाश आर्य ने दोनो को माल्यार्पण कर स्वा० स्वरूपानन्द जी, श्री अर्जुन देव जी, श्री इन्द्रमोहन मेहता, प्रधान तथा श्री धर्मपाल विद्यार्थी, श्री रणजीत रायडग को क्रमशः माल्यार्पण किया गया।

श्रीमती जया श्रीवास्तव ने "ऐ मेरे वतन के लोगो" गान का मुक्त कंठ से वहुत ही प्रभावशाली पस्तुतिकरण किया। श्री इन्द्रमोहन मेहता, प्रधान ने राष्ट्रक्षा सम्मेलन की आवश्यकता, उद्देश्य और आर्य समाज के उत्तरदायित्व को प्रभावशाली अभिव्यक्ति प्रदान की। स्वामी स्वरूपानन्द जी ने राष्ट्र को चारित्रिक नैतिक और वैदिक सस्कारों के अनुरुप आदर्श नागरिकता पर बल दिया। श्री अर्जुन देव स्नातक ने राष्ट्र रक्षा का संवल आर्य समाज संहिता बताया। राष्ट्र में रहने वाला प्रथम भारतीय है मज़हब तो दूसरे नम्बर पर आता है। तुष्टिकरण की नीति राष्ट्र के लिये घातक सिद्ध हो रही है।

श्रीमती शान्ति नागर ने वैदिक रचना से राष्ट्र रक्षा में समर्पण की राष्ट्र भक्ति भावना के महत्व को दर्शाया। राष्ट्र का प्रहरी आर्य समाज रहा है और रहेगा।

इस अवसर पर स्वामी क्षमानन्द जी ने डेढ़ लाख रुपये की वसीयत सार्वदेशिक सभा के लिये सभा मत्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री को भेंट की। श्री इन्द्रमोहन मेहता प्रधान द्वारा स्वा० क्षमानन्द जी के त्याग, समर्पण और आर्य समाज की गरिमा को सर्वोपरि मानकर लिये गये निर्णय की इस प्रकार घोषणा की, "स्वा० क्षमानन्द जी लगभग पौने दो लाख रु० की स्थिर निधि के पूर्ण परिपत्र एवं अपनी पजीकृत विल सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री सच्चिदानन्द जी को सौंपने की घोषणा करते हुए यह राशि आर्य समाज के शुभ कार्यों में सदुपयोग हेतु दे रहे हैं।" डा० सच्चिदानन्द शास्त्री तथा श्री इन्द्रमोहन मेहता के साथ अन्य आर्य बन्धुओं ने स्वागत कर स्वामी क्षमानन्द को माल्यार्पण तो किया ही साथ मे भूरि भूरि प्रशसा भी की।

डा० धर्मपाल जी कुलपति ने मुख्य अतिथि के रूप में सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति पर बल दिया तथा कहा कि महर्षि द्वारा सत्यार्थ प्रकाश मे वर्णित राजधर्म ही राष्ट्र रक्षा में सक्षम सिद्ध हो सकेगा।

वर्त्तमान राष्ट्र नायकों की भ्रष्ट एवं तुष्टिकरण नीति ने राष्ट्र को शक्तिहीन बना दिया। युवा पीढ़ी को दोषपूर्ण नीति ने नैतिक, बौद्धिक और शारीरिक दृष्टि से खोखला कर दिया है। ब्रह्मचर्य और सद्चरित्रता राष्ट्र से कोसों दूर कर दी गई। राष्ट्रभाषा, वेशभूषा, राष्ट्रध्वज और राष्ट्र संहिता सर्वमान्य और समान रूप से परिपूर्ण हो। शिक्षा मे भारी परिवर्तन की आवश्यकता है। नैतिकता से राष्ट्र शून्य दिखता है। अतः राष्ट्र रक्षा में युवा वर्ग को आगे आकर राम-कृष्ण और दयानन्द के आदर्शों को जीवित रखना अत्यत आवश्यक है।

अध्यक्षीय पद से वोलते हुये सार्वदेशिक सभा के महामत्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने जैसे ही अपना भाषण आरम्भ करना चाहा सदन ने करतल ध्वनि और वैदिक जयघोष से सभा भवन को गुजा दिया। आपने स्वतत्रता पूर्व देश की स्थिति का अवलोकन कराया जव आर्य समाज का शत प्रतिशत योगदान आन्दोलनों सत्याग्रहो और जेल भरो मे रहा आरम्भ में कांग्रेस में सभी आर्य बन्धु ही थे तभी इसका चरित्र समर्पण त्याग की भावनाओं से भरा था। महर्षि दयानन्द ने ही स्वतत्रता प्राप्ति के उद्घोष को दिया। हिन्दी को सर्वप्रथम राष्ट्रभाषा के लिए पूर्ण सक्षम बताया कि हिन्दी द्वारा ही राष्ट्र को एकता मे बाधा जा सकता है। राष्ट्र रक्षा में भी आर्य समाज अग्रणी है और रहेगा। राष्ट्र का प्रहरी सदैव आर्य समाज रहा है। आर्य परिवार जो आर्य समाज का स्वरूप है राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन कर जन-जागृति दे रहा है यह शृखला चलती रहे और आर्य परिवार अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ऐसे दृढ़ सकल्प कर पूरा करता रहे।

धन्यवाद ज्ञापन श्री हरि गोपाल सिह चौहान ने किया। कुशल एवं सुव्यवस्थित संचालन श्री शान्ति प्रकाश आर्य प्रचार मन्त्री एव आर्य पुरोहित कर रहे थे। सम्मेलन में छाया-कार्य चन्द्रा स्टूडियों द्वारा सम्पन्न हुआ। शान्ति पाठ और जय घोषों से सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

–शान्तिप्रकाश आर्य

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक साप्ताहिक के प्रिय पाठकों को सूचित किया जाता है कि दिन प्रतिदिन की बढ़ती हुई महगाई, कागज तथा छपाई के बढ़ते हुए मूल्यों के कारण सार्वदेशिक साप्ताहिक का वार्षिक और आजीवन शुल्क, हमें न चाहते हुए भी बढ़ाने के लिए विवश होना पड़ रहा है। 1 अप्रैल 1996 से सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 50) रुपये तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 500) रुपये कर दिया गया है। पाठकगण पूर्व की भांति सहयोग बनाए रखें। प्रत्येक ग्राहक अपना पिछला शेष धन अवश्य भिजवाने की कृपा करें।

–सम्पादक
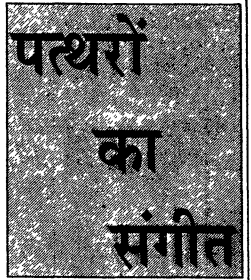
–विमल सखूजा

वेद का अर्थ है ज्ञान और यह ज्ञान मन्त्रों मे बधा हुआ है। मत्र का अर्थ है विचार। एक ही भाव के मंत्र मिलकर अच्छी बात का निर्माण करते हैं। अच्छी बात को सस्कृत में सूक्त कहते हैं। ऋग्वेद मे लगभग एक हजार सूक्त हैं।

वेद के प्रत्येक मत्र का एक देवता होता है। ऋग्वेद के दसवें मडल के 94 वें सूक्त का देवता है ग्रावाण:। सस्कृत के इस शब्द का अर्थ है पत्थर। पत्थर जड़ है। जो व्यक्ति जड़ बुद्धि हो उसे भी पत्थर कहते हैं। जिस व्यक्ति को आसानी से बात समझ न आए उसके बारे मे कहा जाता है, कि इसकी अक्ल पर तो पत्थर पड़ गया है। पर वेद कहता है जड़ पत्थर को जब सचेत इन्सान का हाथ लग जाय तो वह भी बोलने लग जाता है उसमे मे स्वर निकलता है। इस सूक्त का पहला मत्र यही कहता है–प्रैते वदन्तु अर्थात् यह पत्थर बोलते ही रहें, और प्र वय वदाम ग्रावाभ्यो वाच वदत्ता वद्भ्य: अर्थात् जव पत्थर बोले तब उनसे प्रेरित होकर हम भी बोले–

यह पत्थर क्या है ? वेद कुछ मसाला पीसने वाले पत्थर की बात कह रहा है। यह ग्रावाण एक प्रतीक है उस साधन का जो वनस्पति से सोम पैदा करता है। यही काम मनुष्य के मन में उसकी सूझबूझ करती है। जीवन के कई तत्वों को मसलना पड़ता है, जो ज्ञान प्राप्त हो उसका विश्लेषण करना पड़ता है, फोक को फेकना पड़ता है, रस को ग्रहण करने के लिए। उसके लिए मानव को कभी-कभी पत्थर दिल होना पड़ता है। यदि माता पिता बच्चो को अनुशासन मे नहीं रखेंगे तो बच्चे बिगड़ जाएगे। यदि राजा प्रजा पर नियत्रण नहीं रखेंगा तो समाज की व्यवस्था बिगड़ जाएगी। अतः उसे पत्थरों जैसा कठोर बनना पड़ता है। परन्तु उस कठोरता के पीछे भी एक गीत है, संगीत है, कठोर कर्म करते समय भी उसके साधनों से सगीत आना चाहिये। पत्थरों के इस रास्ते में सबसे बड़ी अड़चन है मोह। मोह मे रस नहीं, यह तो एक विवशता है। एक अवस्था आती है जब व्यक्ति वानप्रस्थ से सन्यास की ओर कदम रखता है उस समय उसे उन यज्ञों के प्रति भी मोह त्यागना पड़ता है इसीलिए यज्ञ करते समय यह मत्र पढ़ा जाता है–

ये ते शत वरुण ये सहस्र यज्ञिया: पाशा

देव दयानन्द ने सारी बातों का सार सक्षेप कर दिया–कह दिया :–

वेद में ग्रावाण का अर्थ है विद्वान–जो विद्वान नहीं वह कठोर नहीं हो सकता, मोह माया का त्याग नहीं कर सकता। स्वयं दयानन्द मोह ममता को छोड आए, माता का प्यार, पिता की छत्र छाया। वे पत्थर बन गए, ग्रावाण: बन गए। न बनते तो हम और आप को इस प्रकार के विचार न मिलते, न लिखते, न पढ़ते।

सम्पादकीय

साधना के स्थल-यह गुरुकुल

गुरु के कुल मे मुझे रहने का जो अनुभव है वह एक विचित्र स्थिति मे रहा है, क्या साधनास्थली थी और क्या भावनायें थीं कुछ बनकर करने की।

(१) आध्यात्मिक साधना, (२) वेद-ज्ञान की साधना, (३) देश सेवा की साधना, (४) कर्म-कला की साधना।

एक आदर्श था उन आर्यो का, जिनकी भावनाओं में पवित्र कामनायें थीं और अपने बालकों को घर से दूर गुरुकुलों में ज्ञानार्जन करने भेजते थे और आज भी भेजते है।

आज इस लघु लेख में गुरुकुल के सम्बन्ध में अपना एक केन्द्रीय विचार आर्य जनता की सेवा मे उपस्थित करना चाहता हूं उन मर्यादाओं की ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहता हू जिन भावनाओं से प्रेरित होकर इन तीर्थ स्थलों की स्थापना की गई थी।

वर्त्तमान अवस्था मे आर्य जन उससे सन्तुष्ट नहीं है आर्य जनता से कई अर्थो में असन्तोष की ध्वनि कानों तक आती रहती है। स्वयं गुरुकुलों के स्नातक भी कभी-कभी अपने उन दिनों को याद कर वर्त्तमान की स्थिति से असन्तोष प्रकट करते दिखाई पड़ते हैं।

मेरी समझ मे इस असन्तोष का बड़ा कारण गुरुकुल के विषय में ठीक जानकारी न होना ही है—कुछ वास्तविक बातें ऐसी हैं जिनके कारण हम असन्तुष्ट हैं। प्राचीन काल में जिस वातावरण में हम पल व फल रहे थे उसमें हमारी उत्कट आकांक्षायें योग्य बनकर कुछ करने की थी तब हम परीक्षा घर में हो पास करते थे बाजार-भाव नौकरी की उपाधियों में नहीं था केवल तपस्वी जीवन साधना साध्य योग्य बनने की थी।

आज गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय बन गया है, उपाधियों की मान्यता हैं विश्व के बाजार मे अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है।

दूसरी ओर गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार है। शास्त्री विद्याभास्कर पास करके जीवन चलाते है आज इनकी भी परीक्षायें मान्य हैं पर विचार कीजिये तब में और अब में क्या अन्तर है।

तब श्रद्धा-प्रेम आदर्शों की रक्षा का भाव था परन्तु आज न प्रेम है न श्रद्धा और न यह भाव है कि गुरुकुल मे निकलकर देश-विदेश में वैदिक नाद गुजावें की आकांक्षा।

वह आयजन आज भी पूज्य हैं जो अपने बालकों को गुरुकुल की परिधि मे रखकर कुछ बनाने की इच्छा रखकर भेज रहे हैं।

कुछ विचारणीय बातें है जिनके कारण यह प्रिय कुल सन्तोषजनक फल नही दे पा रहा है। गुरुकुलों मे पलकर पढकर हमने राष्ट्र समाज को क्या दिया है। इन बातों पर हमें अवश्य विचार करना चाहिए

जिन भावनाओं मे पलकर विद्यार्थी को भांति रहन-सहन का अनुभव मुझे बताता है वह भावनायें आज की परिवर्त्तित दशा में हम कहां खड़े है। गुरुकुल अपने गुरुकुलीय भाव मे चल रहे हैं या नहीं। परिस्थितियों ने उन्हें क्यों विचलित कर दिया है। कठिन स्थितियों मे गुरुकुल बने-चले और आगे बढ़ें। आज इनके प्रति न जनता में सद्भाव है और न राष्ट्रीय सरकार में ही उच्चादर्श के भाव है।

अपने अभिप्राय को एक वाक्य में यदि कहूं तो यह गुरुकुल, न वह गुरु ही रहे और न उनका वह पवित्र कुल ही रहा फिर साधना का गुरुकुल कैसे बन सकता है।

गुरुकुल जैसी उच्च आदर्श रखने वाली संस्था के लिये यह जरूरी है कि उसमे सब कर्मचारी चाहें गुरु हों या कर्मचारी हों। सभी एक साधना के लिये ही एकत्रित हों। कोई भी उदासीन रुचि से या किसी अन्य रुचि से गुरुकुल का वासी न हो।

इस प्रकार जमा हुए कुलवासी जिस साधना में लगे वह ऐसी वस्तु की साधना होनी चाहिये जो देश की वास्तविक जीवित मांग को पूर्ण करने वाली हो। एक समय था जब दुनियां तुम्हें देखती थी समझती थी पर वह आज आप से दूर हैं-और

एक ऐसा वर्ग जन्म ले रहा है-जो हंसामत, गायत्री परिवार निरंकारीमत, राधा स्वामी, जिनके पास देने को कुछ नहीं हैं परन्तु आज आकर्षण के केन्द्र बने हुए है। विचारें हम जनता से दूर क्यों है?

हम धर्म की बात तो करते हैं पर धर्म का ढकोसला मात्र ओढ़ कर आदर्शों का दिवाला निकाल रहे हैं। धर्म का अर्थ संकुचित अर्थो मे न कर केवल ससार को सच्चे क्रियात्मक धर्म का रास्ता दिखलाने की इस समय जरूरत है।

चार दिशायें हैं जिनसे मुझे यह धर्म की माग सुनाई देती आ रही है। उनकी आज्ञानुसार विविध साधनायें है जिनसे गुरुकुल दूर जा चुके हैं उनके समीप आने की आवश्यकता है।

यह साधनायें गुरुकुलों के द्वारा ही चल सकती हैं तब गुरुकुल ससार के लिये आशीर्वाद रूप सिद्ध होंगे। फिर किसी भी व्यक्ति को आज के वातावरण में चल रहे गुरुकुलों के विषय मे शिकायत नहीं होगी।

विद्यार्थी का जीवन क्या हों उसकी पूर्त्ति का साधन ही साधना है जो कि निम्न होनी चाहिये।

१—प्रथम आध्यात्मिक साधना गुरुकुलों में उत्कृष्ट ईश्वरभक्ति और योगाभ्यास की साधना—कराई जाय। गुरुकुलों का वैसा ही वातावरण भी बनाया जाय। जिसकी नकल आज फर्जी संस्थायें धर्म के नाम का ढोल पीटकर दुकानें चला रहे हैं।

२—द्वितीय वेद ज्ञान की साधना

गुरुकुलों में वेद वेदांग तथा आजकल के उत्कृष्ट सत्य ज्ञानों का सच्चा-सच्चा प्रयुक्त ज्ञान कराया जाय। गुरुकुल इस कार्य के लिये उपयुक्त स्थल सिद्ध हुए हैं।

३—तृतीय देशसेवा की साधना—गुरुकुलों में ऐसे सच्चे देश भक्त तैयार किये जायें जो देश जाति समाज के लिये कुछ कर सकें। उनमें अगाध देशभक्ति के भाव हो,जो देश के लिये जिये व मरे।

४-चतुर्थ कर्म कला की साधना—

गुरुकुलों मे अपने हाथ से काम करने का महत्व भी सिखाया जाय। मनुष्यों की स्वाभाविक आवश्यकताओं को पूरा करने वाली कृषि वाणिज्य व्यापार इतर श्रेष्ठ कलाओं का ज्ञान भी कराया जाय।

इस प्रकार गुरुकुल एकांगी न रहकर श्रेष्ठता से धार्मिक भाव से पवित्रता के साथ उन सब कार्यो को करना सीखें।

इन चार साधनाओं मे लगने के पीछे सच्चे गुरु शिष्य सेवक गुरुकुलों में एकत्रित होवें।

वैदिक ज्ञान की प्राप्ति आध्यात्मिक साधना के आधीन चलाये जायें। यह व्यवस्थायें प्राचीन और मर्यादित है नया कुछ नहीं—हां साधना शब्द हो कुछ विचित्र है क्योंकि मेरे सामने गुरुकुलों का वह आदर्श चित्र है जिसकी अब कल्पना मात्र ही है।

आइये आज हम गुरुकुल कांगडी तथा महाविद्यालय ज्वालापुर की पावन भूमि मे बैठकर विचार करे और अपने जीवन मे नवीनता का जामा पहनावें।

गुरुकुल के महोत्सव तो होते ही हैं होना वही ठीक है जिससे कुछ ज्ञान में वृद्धि की जा सके।

योगमुनि जी का हठवाद

सुश्री सूर्या कुमारी, व्याकरणाचार्या

सार्वदेशिक ४ फरवरी के अंक में 'सम्प्रयुक्त योगमुनि' जी का लेख 'क्या वेद का परमात्मा सर्वव्यापक है' पढ़ा। लेखक ने 'विचारणीय लेख' का जामा पहनाकर परमात्म-भक्तों एवं ऋषि भक्तों को दिग्भ्रान्त करने की चाल चली है। अविद्या कोटि के अपने थोथे ज्ञान से दूसरों को भी संयुक्त करने का इनका बहुत बड़ा दुराग्रह रहा है। सन १९९४ में 'वेद और परमात्मा' नामक अपनी लघुपुस्तिका में योगमुनि जी ने परमात्मा सर्वव्यापक नहीं है यह सिद्ध करने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगाकर जगद्गुरु महर्षि दयानन्द की त्रुटियों का अम्बार लगाया था, जिसका करारा उत्तर मैंने महर्षि दयानन्द से महान बनने की साध' लेख के माध्यम से दिया था। और वैदिक युक्ति प्रमाणों से परमात्मा के व्यापकत्व की सिद्धि की थी। अब पुनः दो ढाई वर्ष पश्चात उसी विषय को प्रकारान्तर से उपर्युक्त लेख के माध्यम से चर्चा का विषय आपने बनाया है। आश्चर्य है मान्य लेखक के पास अपनी नयी ऊहा तथा गवेषणा के रूप में कोरा अज्ञान ही है, जिस वशीभूत हो वेदादिशास्त्र प्रतिपादित सिद्धांतो तथा जगद्गुरु महर्षि दयानन्द के आप पीछे पड़े हैं।

लेखक के 'क्या वेद का परमात्मा सर्वव्यापक है' इस वञ्चनापूर्ण प्रश्न की विवेचना से पूर्व निम्नलिखित वेद प्रतिपादित सिद्धांतों की आवृत्ति कर लेना परमावश्यक है—

१. परमात्मा निराकार है वह अवतार नहीं लेता है तथा निराकार होने से सर्वशक्तिमान, सर्वशक्ति स्वरूप हैं।

२. परमात्मा तथा जीवात्मा भिन्न-२ दो चेतन सत्तायें हैं।

३. परमात्मा, जीवात्मा तथा प्रकृति पृथक-२ तीन अनादि सत्तायें हैं।

४. परमात्मा सर्वत्र व्यापक हैं।

५. परमात्मा विभु है जीवात्मा अणु है।

६. सूक्ष्म वस्तु ही व्यापक हो सकती है स्थूल वस्तु नहीं।

७. यह संसार जो परमात्मा के द्वारा देखा जा रहा है वह तथा हृदय एवं जीवात्मा द्वारा ब्रह्म का दर्शन अर्थात अनुभूति करने का नाम ही ब्रह्मलोक है।

८. स्थान विशेष ब्रह्मलोक नहीं है।

९. परमात्मा द्रष्टा है और जीवात्मा भोक्ता है।

लेखक का मानना है कि परमात्मा सर्वव्यापक नहीं है उसकी शक्ति व्यापक है तथा परमात्मा किसी अन्य लोक का वासी है। अपने इस मन्तव्य की सिद्धि के लिए दुराग्रह पूर्ण वाग्जाल का पिटारा आपने लेख मे प्रस्तुत किया है। लेखक के जीवन भर के संजोए गए इस शंका रूपी बखेड़ें के समाधान के लिए अथर्ववेद का यह छोटा सा मन्त्र पर्याप्त है जो इस प्रकार है— व्याप पूरुषः। (अथर्व० २०।१३१।१७)

अर्थात वह परम पुरुष सर्वत्र व्यापक है। परमेश्वर के सर्वव्यापकत्व को सिद्ध करने वाले इस छोटे से मन्त्र ने लेखक के शंका महल को धराशायी कर उन्हें बगलें झांकने के लिए विवश कर दिया है। स्वतः प्रमाण सिद्ध वेद के इस प्रबल प्रमाण के रहते परमात्मा के सर्वव्यापकत्व की सिद्धि के लिए किन्ही अन्य शास्त्रप्रमाणों की, युक्तियो की आवश्यकता नहीं है।

विचारणीय प्रश्न नहीं वाग्जाल

लेखक के वाग्जाल का भी दिग्दर्शन करें—

(१) परमपिता परमात्मा को सर्वव्यापक कहना एक भावना है सिद्धांत नही। (२) आप सर्वव्यापकता का निषेध करने पर चौंके नही···हमारा मन जिस अवस्था को मानता है उसे मानने दीजिए। (३)···इस प्रकार वेद का परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है। (४) व्याप धातु परमात्मा के साथ लगाना ठीक नही है उसकी शक्ति के साथ ही ठीक है। (५)··परमात्मा की आत्मा भी मनुष्य की आत्मा के समान ही है।

थोड़ा सोचें यह लेखक का वाग्जाल है या प्रश्न? मैं, बुद्धिमान लेखक से पूछना चाहती हू जब आपने वेदों का मन्थन किया तब किस साधना के वशीभूत हो निम्न लिखित मन्त्रों को अनदेखा कर दिया। मन्त्र भाव हैं—

(१) दिवं च लोकं च आप्नोति तथा सप्त ऋषयो विदुः। (अ० ४।११।९)

वह परमात्मा द्युलोक तथा लोकों में व्याप्त हो रहा है, जिसका चक्षुरादि सात ऋषि प्रत्यक्ष करते हैं।

(२) आ च त्वावान् त्मनाप्तः। (ऋ० १।३०।१४)

वह परमात्मा अपने आप (बिना सहायता के) व्याप्त है।

(३) स ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु। (यजु० ३२।८)

वह परमात्मा उत्पन्न होने वाले जीवात्मा तथा प्रकृति में व्यापक हो रहा है।

इन मन्त्रों में 'आप्लृ व्याप्तौ' धातु से निष्पन्न 'आप्नोति' तथा 'आप्तः' प्रयोग है, वे स्पष्ट घोष कर रहे हैं कि परमपिता परमात्मा सर्वव्यापक है। लेखक चाहकर भी इन पदों के व्यापक अर्थ को किसी प्रकार झुठला नहीं सकते। विभूः पद स्पष्ट ही है। इस प्रकार निःसन्देह वेद का परमात्मा सर्वव्यापक है।

लेखक ने व्याप धातु लिखी है। धातु शब्द कोष में व्याप् धातु नहीं है। व्याप् शब्द उपसर्गपूर्वक 'आप्लृ व्याप्तौ' धातु का संघात रूप है। दुर्जन सन्तोष न्याय से व्याप धातु मान भी लें, तो भी किस हेतु से मान लिया जाए कि परमात्मा के साथ व्याप धातु लगाना ठीक नहीं है? जबकि "व्याप पूरुषः" (अथर्व० २०।१३१।१७) इस मन्त्र में स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के साथ वि उपसर्ग पूर्वक "आप्लृ व्याप्तौ" धातु का प्रयोग किया गया है। लेखक के अनुसार यदि परमात्मा तथा मनुष्यात्मा समान है तो क्यो नहीं मनुष्यात्मा भी परमात्मा की तरह सृष्टि, उत्पत्ति, प्रलयादि जो बृहत्तम कार्य है उन्हें करता है? तथा परमात्मा आनन्दमय है तो मनुष्यात्मा क्यो दुःखी रहते हैं? मनुष्य को भी सदा परमेश्वर के सदृश आनन्द ही आनन्द होना चाहिए। जीवात्मा का सृष्ट्यादि का कार्य करने में असामर्थ्य होने से (द्रष्टव्य-जगत व्यापारवर्जं प्रकरणात् असन्निहितत्वाच्च, वेदान्त. ४।४।१७) तथा जीवात्मा को पूर्णानन्द की प्राप्ति न होने से स्पष्ट है कि परमात्मा तथा जीवात्मा एक नहीं है दोनो भिन्न-२ सत्तायें हैं। दोनो के सामर्थ्य में भेद होने से जीवात्मा तथा परमात्मा का सादृश्य नहीं दिखाया जा सकता अतः लेखक का यह कहना कि 'जीवात्मा के सदृश परमात्मा सर्वव्यापक नही हो सकता' मात्र वाग्जाल है।

लेखक की ऐन्द्रजालिकता

योगमुनि जी अपने लेख मे प्रतिपादित करते हैं कि (१) वास्तव में वह परमात्मा तो परमधाम अर्थात ब्रह्मलोक का रहने वाला है। (२) रक्षार्थ आवाहन करने से, पुकारा जाने से प्रतीत होता है कि वह कहीं अन्यत्र रहता है। इससे उन्होने यह सिद्ध किया है कि परमात्मा सर्वव्यापक नहीं है वह किसी एक देश विशेष ब्रह्मलोक मे रहता है। तथा अपने उस अपूर्व ब्रह्मलोक की कल्पना के लिए 'नाकस्य धर्मणि तस्थौ' (साम० ९१) 'तत्परमधाम प्रवोचेत' (अथर्व० २।१।२) 'परमेषु धामसु विराजति' (अथर्व० ६।३६।३) के मन्त्र उद्धृत किये हैं। यहां उद्धृत मन्त्रों में इन योगमुनि महाराज ने वेदमन्त्रो को तथा प्रकरण को मन माने ढंग से तोड़ मरोड़कर आधा रखकर आधा उड़ाकर असैद्धांतिक तथ्य को सिद्ध करने का धोखेबाजी से प्रयास किया है किन्तु प्रस्तुत मन्त्रों के पूर्वापर प्रकरण को देखने से लेखक की एकदेश विशेष सत्ता वाले ब्रह्मलोक की कल्पना खपुष्पवत असत्य हो जाती है। मन्त्र वस्तुतः इस प्रकार हैं— (क्रमशः)

पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी

ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों की प्रचारिका

डा० प्रज्ञादेवी विद्यावारिधि

डा० वसन्तकुमार शास्त्री, अमेठी

पाणिनीय-शास्त्र की प्रसिद्ध पण्डिता, महिलाओं को वेद-वेदांगों की पण्डिता बनाने के लिए काशी में पाणिनि कन्या महाविद्यालय की संस्थापिका, आर्य समाज में वैदिक वाङ्मय तथा ऋषि दयानन्द के समग्र साहित्य की अधिकारी-विदुषी डा० प्रज्ञादेवी व्याकरणाचार्या, विद्यावारिधि का असामयिक निधन ६ दिसम्बर की रात्रि में हो गया। इतनी जल्दी बहिन जी हम आर्यों से बिछुड़ जायेंगी यह किसी ने सोचा भी नहीं होगा। उन्हें याद कर आंखें गीली हो उठती हैं।

जन्म एवं शिक्षा

बहिन जी का जन्म ५ मार्च १९३७ ई० को कोलगवां, सतना (मध्य प्रदेश) में एक सच्चे आर्य, आर्ष पाठविधि में अनुरक्त, पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के भक्त श्री कमलाप्रसाद आर्य के घर हुआ। इनकी माता श्रीमती हरदेवी आर्या अत्यन्त ही कर्मठ, पतिपरायणा, साध्वी, धार्मिक महिला थीं। पिता से आर्यत्व एवं माता से कर्मठता का गुण बहिन प्रज्ञा जी को दाय में मिला। बहिन प्रज्ञा जी की ४ चार बहिनें और एक भाई डा० सुद्युम्नाचार्य (व्याकरण, दर्शन तथा भाषा-विज्ञान के तल स्पर्शी विद्वान्) हैं। तीन बहिनें गृहस्थ आश्रम में हैं। एक बहिन उनकी अनुजा मेधा देवी व्याकरणाचार्या जो उनके साथ-साथ पाणिनि कन्या विद्यालय का संचालन कर रही थी, देव दुर्विपाक से अब बड़ी बहिन जी नहीं रहीं तथा संस्था का समस्त भार छोटी बहिन मेधा जी के कन्धों पर आ गया है। प्रारम्भ में बहिन प्रज्ञा जी एफ०ए० तक की शिक्षा प्राप्त कर महिला कन्या हाईस्कूल सतना में अध्यापिका बन गयीं। पिता जी का देहान्त हो जाने पर आपकी माता जी अपनी सभी सन्तानों को लेकर काशी में पूज्य पण्डित पदवाक्य प्रमाणज्ञ ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी के चरणों में उपस्थित हुईं। पिता जी ने बचपन में अपनी प्रज्ञा बेटी को अष्टाध्यायी कंठस्थ करा दिया था। बहिन प्रज्ञा जी की दो बड़ी बहिनें कुन्ती और मैत्रेयी तथा एक छोटी बहिन यमी का विवाह हो गया और वे तीनों बहिनें गृहस्थाश्रम में चली गईं। प्रज्ञा जी ने अपने छोटे भाई सुद्युम्न एवं छोटी बहन मेधा जी के साथ तपोमूर्ति, ऋषि दयानन्द के दीवाने और पाणिनि के उत्तराधिकारी पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के अन्तेवासी बनकर अष्टाध्यायी भाष्य, प्रथमावृत्ति, द्वितीयावृत्ति (काशिका-न्यास पदमंजरी सहित) पातंजल महाभाष्य, यास्कीय निरुक्त, भर्तृहरि विरचित वाक्यपदीय, कात्यायन श्रौतसूत्र, मीमांसा, न्यायदर्शन-वात्स्यायन भाष्य आदि अनेक ग्रन्थों का अध्ययन कर विदुषी प्रज्ञा जी के रूप में १९६५ ई० में २७ वर्ष की अवस्था में आर्य जगत् के कार्य-क्षेत्र में पदार्पण किया।

आर्य समाज का प्रचार-प्रसार

विगत तीस वर्षों से आर्य समाज के उत्सवों में उनके प्रवचन-व्याख्यान, पौरोहित्य, पारायण यज्ञों में ब्रह्मा का ऋत्विक् कार्य, शोध गोष्ठियों में शोध पत्रों का वाचन और महिला सम्मेलनों में प्रमुख वक्त्री या अध्यक्षीय पद से दिये गये भाषणों से ऋग्वेदीय चर्चा—"अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी" (१०/१५९/२) की साकार-सजीव-प्रतिमा आंखों के सामने खड़ी हो जाती है। साधारण आर्य जनता तो बहिन प्रज्ञा जी के पाण्डित्य से बाद में परिचित हुई, किन्तु विद्वद्वर्ग में उनके वैदुष्य की धाक १९६४ से १९६८ ई० तक उनकी २७ से ३१ वर्ष की अवस्था में ही जम गई थी। क्योंकि महर्षि पाणिनि की विश्वविश्रुत रचना "अष्टाध्यायी" का डा० प्रज्ञा जी विरचित हिन्दी भाष्य (प्रथमावृत्ति-पदच्छेद, विभक्ति, समास, अर्थ, अनुवृत्ति, उदाहरण और सिद्धि) का प्रथम भाग १९६४ ई० में छपा, द्वितीय भाग १९६५ तथा तृतीय भाग १९६८ ई० में प्रकाशित हुआ। यद्यपि तृतीय भाग की लेखिका के रूप में उनका नाम छपा पर वास्तविकता यह थी कि प्रथम और द्वितीय भाग भी बहिन प्रज्ञा जी ने ही लिखा था, गुरुवर पदवाक्य प्रमाणज्ञ पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु का योगदान आज की भाषा में एक शोध-निर्देशक के रूप में था। बहिन प्रज्ञा जी ने पं० क्षेमकरण दास त्रिवेदी रचित अथर्ववेद भाष्य गोपथ ब्राह्मण भाष्य हवनमन्त्राः आदि ग्रन्थों का भी सम्पादन किया। "काशिकावृत्ति" पर १९९१ ई० में उन्होंने विद्यावारिधि (पी.एच.डी.) की ससम्मान उपाधि प्रख्यात वैयाकरण डा० रामशंकर भट्टाचार्य के निर्देशन में वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय से प्राप्त की। बहिन प्रज्ञा जी में बहुमुखी प्रतिभा थी। पुस्तकों का लेखन, सम्पादन अनेक शोध निबन्धों का वाचन अनुसन्धान कार्य आर्य पत्र-पत्रिकाओं में लेखों का प्रकाशन, प्रवचन-भाषण-व्याख्यान, गीत-संगीत, शास्त्रीय चर्चा, अध्ययन और अध्यापन तथा प्रबन्ध-व्यवस्था आदि अनेक क्षेत्रों में उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया। महर्षि पाणिनि के सूत्र "तदधीते तद्वेद" को महिलाओं में साकार करने के लिए अपने गुरुदेव स्वर्गीय पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु की स्मृति में "श्री जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय" की स्थापना १९७१ ई० में काशी में की। मेरी दृष्टि में बहिन प्रज्ञा जी का यह कार्य सर्वोत्तम है और आर्य जगत् में उन जैसा कार्य किसी भी विदुषी ने नहीं किया यह निर्विवाद है। आर्य समाज के १२० वर्षों के इतिहास में निश्चय ही डा० प्रज्ञादेवी व्याकरणाचार्या सबसे बड़ी विदुषी हुई और विद्या के सभी क्षेत्रों में उन्होंने अनुपम कार्य किया।

पाणिनि कन्या महाविद्यालय

डा० प्रज्ञादेवी जी द्वारा संस्थापित और संचालित पाणिनि कन्या विद्यालय वाराणसी का यह रजत जयन्ती वर्ष है। दुःख है कि बहिन जी अपनी प्रिय संस्था का रजत जयन्ती नहीं मना सकीं। मेरी जानकारी में महर्षि पाणिनि के नाम पर दो-तीन विद्यालय हैं, बहिन जी को यह प्रेरणा अपने गुरुवर से मिली थी। बालकों के लिए पाणिनि विद्यालय बहालगढ़ सोनीपत में आज भी है, जिसे अत्यन्त ही योग्यता से आचार्य विजयपाल जी चला रहे हैं। कन्याओं को वैयाकरण तथा वेद-विदुषी बनाने का संकल्प डा० प्रज्ञा जी ने लिया और अपने लक्ष्य में वे पूरी तरह सफल रहीं। आज देश के कोने-कोने में "पाणिनि कन्या विद्यालय" की स्नातिकाएं कार्य कर रही हैं। उनमें से कुछ का उल्लेख अप्रासंगिक न होगा। ज्योतिष्मती जी (जयपुर) ललिता जी (भिवानी), यशोलता जी), [श्री रतिराम शर्मा सिलीगुड़ी की पुत्री] दिल्ली, प्रतिभा जी (अम्बाला), वसुधा जी (हैदराबाद), मधु जी (गोरखपुर), मंजु जी (फैजाबाद), मुक्ता जी (हैदराबाद), सोमवती जी [पंडित बेगराज आर्य भजनोपदेशक की पुत्री] हरियाणा, ऋचा जी [पंडित ओमप्रकाश वर्मा आर्य भजनोपदेशक की पुत्री] सहारनपुर, अहिल्या (उड़ीसा, वारणा (एटा), ऋतम्भरा (नजीबाबाद), रमा (नैपाल), ऋतंवदा (मौरिशस) तथा मोहाना (नीदर लैण्ड) बहिन प्रज्ञा जी की प्रेरणा से अष्टाध्यायी, महाभाष्य एवं यास्कीय निरुक्त में प्रखर पाण्डित्य प्राप्त करने वाली ४ चार विदुषी स्नातिकाएं ऐसी भी हैं जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार तथा आर्ष पाठविधि के अध्यापन कार्य में खपा देने का व्रत लिया है। उनके नाम हैं—

(शेष पृष्ठ ७ पर)

बोध-कथा

अपनी ज्ञान-गरिमा से प्रतिष्ठा पाने वाले अष्टावक्र

वैदिक युग मे केवल एक ज्ञानी ऋषि थे। बचपन से ही उनके ८ अंग टेढ़े थे, इसलिए वह 'अष्टावक्र' कहलाते थे। उनके पिता मुनि कोहल वेदों के प्रकाण्ड पण्डित थे। उन दिनों मिथिला विद्या-ज्ञान की नगरी थी। राजा जनक वहां के राजा थे, राजा जनक के दरबार मे विद्वानों मे निरन्तर शास्त्रार्थ हुआ करते थे। राजा जनक का सभा-पण्डित बन्दीजन बड़ा विद्वान था, परन्तु स्वभाव से बड़ा क्रूर था। शास्त्रार्थ में जो कोई उससे पराजित हो जाता, उसे वह अपमानित अप्रतिष्ठित कर विद्वत मण्डली से बहिष्कृत कर देता था। 'अष्टावक्र के पिता मुनि कोहल भी बन्दीजन से शास्त्रार्थ मे हार गए और पण्डित मण्डली से बहिष्कृत कर दिए गये।

पिता के अपमान से दुखी होकर किशोर वय में ही अष्टावक्र ने बन्दी को परास्त करने का निश्चय किया और राजपण्डित बन्दीजन से शास्त्रचर्चा करने के लिए राजमार्ग पर चल पड़ा। वह अपनी धुन में मस्त मटकता जा रहा था कि दो अश्वारोही सैनिकों ने उसे रोका, कहा–'ए किशोर हट जाओ यहां से? किशोर अष्टावक्र ने ऊंची आवाज मे कहा–"क्या राज-मार्ग पर चलने का अधिकार पथिक को नहीं है?"–"राजाजनक का रथ आ रहा है, राजा के लिए मार्ग छोड़ दो।" तुम मूर्ख हो, तुम्हारा राजा नीति-वाला नही दीखता।' "कैसे?"–सैनिक ने पूछा। साथ ही रथ मे बैठे राजा जनक ने पूछा–"क्यो आयुष्मान?" –अष्टावक्र ने कहा–"नीति है वृद्ध, अपंग, ज्ञानी, बालक, रोगी, सब के लिए राजा को भी मार्ग छोड़ देना चाहिए।"

"तुम इनमे से कौन हो? आयुष्मान।" जनक ने पूछा। 'मैं अशक्त बालक परन्तु ज्ञानी हूं।' 'तुम्हारे लिए राज मार्ग छोड़ रहा हूं'–कह कर जनक ने राजमार्ग छोड़ दिया। पूछा–तुम कहां जा रहे?' 'बन्दीजन से शास्त्रार्थ करने' अष्टावक्र का उत्तर था।

अष्टावक्र यज्ञशाला के द्वार पर पहुंचा। द्वारपाल ने रोका, कहा–राजा केवल वृद्ध विद्वान ब्राह्मणों से मिलते हैं।' 'मैं ब्राह्मण हूं, बन्दीजन से शास्त्रार्थ करूंगा।' 'ज्ञानी होने के लिए बड़ी आयु की आवश्यकता नहीं होती। राजा से कह दो वही बालक आया है जो मार्ग में मिला था।' जनक ने बुलवा भेजा। 'कहा–पहले मेरे प्रश्नों के उत्तर दो।' 'पूछिए।' जन्म के समय कौन सी चीज हिलती-डुलती नही।' "अण्डा" अष्टावक्र का उत्तर था। मेरा दूसरा प्रश्न है–'सोते समय कौन सा जानवर आंखें बन्द नहीं करता।' अष्टावक्र का उत्तर था–'मछली।' राजा ने बन्दीजन से शास्त्रार्थ करने की अनुमति दे दी पर बन्दीजन की शर्त बता दी कि हारने पर अप-मानित कर बहिष्कृत कर दिए जाओगे।

बन्दीजन ने कहा–तुम किशोर हो, प्रश्न करो।' अष्टावक्र ने कहा–"हम सख्या पर शास्त्रार्थ करेंगे–एक ब्रह्म है। बन्दीजन ने कहा–ब्रह्म और आत्मा दो हैं।' अष्टावक्र! पृथ्वी, आकाश, पाताल तीन हैं, स्वप्न, जागृति, सुषुप्ति तीन हैं, सत्व, रजस तमस तीन है, जीव, जगत और ब्रह्म तीन हैं-बन्दीजन।'

'अष्टावक्र चार दिशाए हैं।' 'पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश पांच भूत है बन्दीजन।' 'छह शत्रु अहंकार, मोह, क्रोध, लोभ, काम और मत्सर हैं अष्टावक्र।'–'भू, भुव, स्व मह, तप, जन और सत सात लोक हैं बन्दीजन! पांच महाभूत मन, बुद्धि, अहंकार आठ प्रकृतियां हैं अष्टावक्र। 'तो बन्दीजन दो आंख, दो नासिका-छिद्र, दो कान, एक जीभ, दो बहिय–द्वार नौ इन्द्रियां हैं बन्दीजन।' 'अष्टावक्र, एक नाभि और दस इन्द्रियां हैं।' 'बन्दीजन एक मन और मिला तो ग्यारह इन्द्रियां हैं।' 'अष्टा-वक्र चैत्र से फाल्गुन तक द्वादश–बारह मास हैं।' 'बन्दीजन यह तो सूर्य का राशि चक्र हुआ। द्वादश आदित्यो से एक सम्बन्ध मास और उनके चरण त्रयोदश बोलो बन्दीजन।'

बन्दीजन के माथे पर पसीने की बूंदे आ गईं। अष्टावक्र ने कहा–त्रयोदश बोलो बन्दीजन या हार मानो। 'बन्दीजन निरुत्तर था, राजा जनक ने अष्टावक्र को विजयी घोषित किया। बन्दीजन पराजित हो बहिष्कृत कर दिये गये। परास्त पण्डितों और अष्टावक्र के पिता मुनि कोहल की पुनः प्रतिष्ठा हुई। अष्टावक्र ने अपनी ज्ञान गरिमा से सर्वत्र प्रतिष्ठा पाई।

—नरेन्द्र

वैदिक धर्म महान

ऋषियो ने है जिसे दिशा दी,
वेदो ने दी है वाणी।
जिसकी संस्कृति सारे जग की
रही सदा से कल्याणी।

बना हुआ जो आदि काल से
सत्यधर्म का ही प्रतिमान।
हमारा वैदिक धर्म महान॥

ब्रह्मा से लेकर जैमिनी तक,
ऋषियो ने गतिमान किया।
दयानन्द ने जिसके हित मे,
स्वयं गरल का पान किया।

विष पीकर अमृत बरसाया,
रहा सदा जिसका अनुदान।
हमारा वैदिक धर्म महान॥

प्रभा प्राप्त कर जिससे जनता,
समरस, सुचिता सहित समाज
जिसकी रक्षा मे हिमगिरि सा,
खड़ा हुआ है आर्य समाज।

नहीं लिया जिसने किंचित भी,
कहीं कभी भी कुछ प्रतिदान।
हमारा वैदिक धर्म महान॥

जहां निहित है इस जीवन की,
शक्ति अपरिमित अपराजेय।
बना हुआ है युगो युगो से-
सत्य सनातन धर्म अजेय।

जिसकी जड़ें जमीं वेदो में-
जहां सत्य है, न अनुमान।
हमारा वैदिक धर्म महान॥

प्रेम दया के, सद्विवेक के,
जहां बरसते हैं बादल।
धैर्य क्षमा के, त्याग तपों के,
निर्झर करते हैं कल कल।

राष्ट्र धर्म की बलिवेदी पर-
सिखलाता देना बलिदान।
हमारा वैदिक धर्म महान।

जिसकी गोदी मे पलते हैं,
अगणित दानी, बलिदानी।
जिसकी गोदी मे क्रीड़ा-रत
रहते मानी अभिमानी।

राम कृष्ण से, दयानन्द से,
ज्योति पुंज हैं ज्योतिर्वान
हमारा वैदिक धर्म महान॥

—[illegible]

विज्ञान की दृष्टि में वेद, बाइबिल और कुरान

—सूर्य देव चौधरी

वर्तमान विश्व मे मुख्य रूप से तीन धर्म प्रचलित हैं। वे हैं—वैदिक (हिन्दू) धर्म, इस्लाम धर्म एव ईसाई धर्म। अन्य सभी मत इन्ही तीन मे समाविष्ट हैं। वैदिक धर्म के आधार ग्रन्थ चार वेद हैं जो स्वत प्रमाण माने जाते हैं। उसी तरह ईसाई धर्म का आधार ग्रन्थ बाइबिल और इस्लाम का कुरान है। आर्य (हिन्दू) ईसाई और मुसलमान सभी अपने-अपने धर्म-ग्रन्थो को पवित्र ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं।

चू कि आज विज्ञान का युग है और प्रत्येक चीज की प्रमाणिकता विज्ञान से मापी जाती है क्योकि विज्ञान सत्य का अन्वेषक होता है। भारत में धर्म को भी तर्क से जानने की परम्परा रही है क्योकि मनुस्मृति१२/१०६ में लिखा है—

'य तर्केण अनुसधत्ते स धर्मम् वद नेतर'।

इसलिए इस लेख में तर्क एव विज्ञान की दृष्टि से तीनो धर्म ग्रन्थो को देखा जाएगा। पाठकगण स्वय देखेगे कि सत्य क्या है और असत्य क्या है?

मेरी दृष्टि मे किसी भी धर्म ग्रन्थ को ईश्वरीय ज्ञान होने के लिए दो कसौटियो पर खरा उतरना चाहिए, जिसमे पहली कसौटी रचना काल और दूसरी कसौटी विज्ञान है। रचना काल को कसौटी इसलिए माननी पड़ेगी क्योकि किसी वस्तु/यन्त्र की रचना के साथ ही उससे सम्बन्धित निर्माण, सचालन आदि के नियमो की भी रचना होती है। ऐसा कभी नहीं होता कि वस्तु या यन्त्र आज बनाए जाए और उसके निर्माण, सचालन आदि की विधि कुछ काल के पश्चात बनाए जाए। वस्तु या यन्त्र अभी और नियम आदि बाद में बनाने की गलती अल्पज्ञ मनुष्य भी नही करता है, फिर सर्वज्ञ परमात्मा ऐसी गलती कैसे कर सकता है? जिस तरह वस्तु/यन्त्र की रचना के साथ ही उसकी सचालक पुस्तिका की भी रचना होती है, उसी तरह सृष्टि की रचना के साथ ही उसके नियम आदि की भी रचना होनी चाहिए यदि कोई धर्म ग्रन्थ ईश्वरीय ज्ञान है तो उसका रचना काल सृष्टि का आदि होना चाहिए क्योकि ईश्वर ने सृष्टि रचना के साथ ही उससे सम्बद्ध नियम भी बनाया होगा। आज विज्ञान ने सृष्टि को करोडो वर्ष प्राचीन साबित कर दिया है। अत ईश्वरीय ज्ञान भी लगभग इतना ही प्राचीन होना चाहिए। चू कि बाइबिल और कुरान खोज से क्रमश लगभग दो हजार वर्ष एव १४०० वर्ष पहले की रचना है जो इनकी प्रचलित वर्ष॰ गणना से प्रमाणित हैं और सृष्टि करोडों वर्ष पुरानी है तो ये दोनो पुस्तकें ईश्वरीय ज्ञान कैसे हो सकती हैं? यदि ये दोनो पुस्तकें ईश्वरीय ज्ञान हैं तो सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर दो हजार वर्ष पूर्व इनकी रचना तक यह सृष्टि किन नियमो से चल रही थी? और ईश्वर ने सृष्टि की आदि मे यह ज्ञान क्यों नहीं दिया? आदि प्रश्नो का तर्क एव युक्ति सगत उत्तर नही मिलता इस रचनाकाल की कसौटी पर केवल वेद ही ईश्वरीय ज्ञान प्रमाणित होते है क्योकि इनकी रचना सृष्टि की आदि मे प्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान से हुई है जो प्रचलित वैदिक सृष्टि वर्ष १,९६,०८,५३,०९६ से प्रमाणित है। सृष्टि की आयु के सम्बन्ध में वैज्ञानिक खोज भी इसी सृष्टि सवत के समीप है।

ईश्वरीय ज्ञान की परख के लिए दूसरी कसौटी विज्ञान है। विज्ञान अर्थात सत्य, जो तर्क, बुद्धि एव प्राकृतिक नियमो के विरुद्ध न हो। इस विज्ञान की कसौटी पर सर्वप्रथम बाईबिल को परखते हैं।

यह सर्वविदित है कि गैलेलियों जैसे महान वैज्ञानिक को सिर्फ इसलिए फांसी की सजा दी गई क्योंकि उसके अनुसार पृथिवी सूर्य की परिक्रमा करती है, जबकि बाइबिल के अनुसार सूर्य ही पृथिवी के चारों ओर घूमता है। आज विज्ञान ने साबित कर दिया है कि पृथिवी सूर्य के चारो ओर घूमती है, सूर्य नही। यहा बाइबिल और विज्ञान एक दूसरे के विरोधी हो जाते हैं। यदि बाइबिल ईश्वरीय ज्ञान है तो उसे विज्ञान के अनुकूल होना चाहिए क्योंकि सत्य परमेश्वर का ज्ञान सत्य अर्थात विज्ञान के विरुद्ध नहीं हो सकता। अत बाइबिल ईश्वरीय ज्ञान होने की कसौटी पर खरी नहीं उतरती है।

कुछ और उदाहरण भी देखे जा सकते हैं जैसे—

(१) बडी बयार से हिलाए जाने पर गूलर के वृक्ष से उसके कच्चे गूलर झड़ते हैं वैसे आकाश के तारे पृथिवी पर गिर पडे और आकाश पत्र की नाई जो लपेटा जाता है अलग हो गया।

(योहन प्र॰ पत्र ६/आयत—१३, १४)

(२) और मैंने एक तारे को देखा जो स्वर्ग मे से पृथिवी पर गिरा हुआ था और । (यो॰ प्र॰ पत्र ९/१-२)

(३) और रस के कुण्ड मे से घोडो की लगाम तक लोहू एक सौ कोस तक बह निकला। (यो प्र. प १४ आ. १९-२०)

उपरोक्त उदाहरणो से यह स्पष्ट है कि आकाश से तारो का पृथिवी पर झडना, पत्र की तरह आकाश का लपेटा जाना, खून का कोसो दूरी तक बह निकलना आदि बातें विज्ञान के विरुद्ध हैं। विज्ञान और सत्य के विरुद्ध बातें सत्य सर्वज्ञ परमेश्वर का ज्ञान कैसे हो सकता है? और इस तरह की मिथ्या बाता वाली पुस्तक ईश्वरीय ज्ञान कैसे हो सकती हैं?

अब विज्ञान की कसौटी पर कुरान को देखें—कुरान के अनुसार नबी ने चाद के टुकडे किए। यह बात विज्ञान अर्थात सत्य के विरुद्ध है। कुछ और उदाहरण भी देखे जा सकते हैं—(१) और किए हमने बीच पृथिवी के पहाड ऐसा न हो कि हिल जाय।' (मजिल ४ सियारा १७ सूरत २१ आयत ३१) (२) 'और जिस दिन कि फट जावेगा आसमान साथ बदली के और उतारे जावेगे फरिश्ते।' (म ४ सि १९ सू २५ आ)। (३) 'इकट्ठा किया जावेगा सूर्य और चाद।' (म ७ सि २९ सू ७५ आ ९)। (४) 'जबकि सूर्य लपेटा जावे और जब तारे गदले हो जावे। और जबकि पहाड चलाए जावे। और जब आसमान की खाल उतारी जावे। (म ७, सि ३० सू. ८१ आ १, २, ३, ११)। (५) और जबकि आसमान फट जावे और जब तारे झड जावें।' (म॰ ७ सि॰ ३० सू॰ ८२ आ॰ १, २)।

कुरान के उपरोक्त उद्धरणो मे पृथिवी को हिलने से रोकने के लिए पहाड को बनाना, बादल के साथ आसमान का फटना, सूर्य और चाद को एकत्रित करना, सूर्य को लपेटना, आसमान की खाल उतारना, तारो का झडना आदि बातो का वर्णन है। ये सभी बातें विज्ञान अर्थात सत्य के विरुद्ध है। फिर ये असत्य बातें सत्य सर्वज्ञ ईश्वर के ज्ञान कैसे हो सकती है। अत विज्ञान की कसौटी पर कुरान भी सही नहीं उतरता है।

अब हम वेदो को विज्ञान की कसौटी पर कसते हैं। वेदो ने कहा गया है 'यो अन्तरिक्ष रजसो विमान (यजु॰ ३२।६) अर्थात ईश्वर ने निराधार आकाश मे लोको ग्रहो को विशेष मान के साथ गतिमान किया। भूर्जज्ञे उत्तानपद' (ऋ॰ १०।७२।४) अर्थात पृथिवी सूर्य से उत्पन्न होती है। 'दिवि सोमो अधिश्रित' (अथर्व॰ ४।१।१) अर्थात चन्द्रमा सूर्य से प्रकाशित होता है। आय गौ पृश्निरक्रमी । (यजु॰ ३।६) अर्थात पृथिवी जल सहित अपने पालक सूर्य लोक के सामने चलती है और चारो तरफ घूमती है।

'आकृष्णेन रजसो वर्त्तमानो ।' (यजु॰) अर्थात सूर्य आकर्षण शक्ति से लोको/ग्रहो को वर्तमान रखता है। एता उ त्या उषस केतुमक्रत पूर्वे अर्धे रजसो भानुमञ्जते' (ऋ॰ १/९२/१) अर्थात दृश्य और अदृश्य दोनो प्रकार के लोको/ग्रहों के पहले आधे भाग मे प्रात काल की वेला सूर्य की किरणो को फैलाते हुए दिन को प्रकट करती हैं। अग्निमिन्धानो मनसा धिय विवस्वभि।' (साम॰ पूर्व॰ १।२।९) अर्थात मनुष्य विज्ञान पूर्वक अग्नि का उपयोग करते हुए सूर्य की किरणो से अग्नि को प्राप्त करे।

चारों वेदो के उपरोक्त उद्धरणो मे कोई भी ऐसी बात नहीं है जो विज्ञान अर्थात सत्य के विपरीत हो। अर्थात उपरोक्त सभी बातें विज्ञान के अनुकूल है और इसलिए सत्य है। सत्य बातें ही सत्य, सर्वज्ञ ईश्वर का ज्ञान हो सकता है। ईश्वरीय ज्ञान तर्क, बुद्धि, विज्ञान और प्राकृतिक नियमो के प्रतिकूल नही हो सकता। वेदो की उपरोक्त सभी बात तर्क, विज्ञान और प्राकृतिक नियमो के विरुद्ध नहीं है। अत वेद ही ईश्वरीय ज्ञान की कसौटी

(शेष पृष्ठ ९ पर)

डा० प्रज्ञादेवी विद्यावारिधि

(पृष्ठ ५ का शेष)

१ प्रियवदा शाब्दिकी, २ नन्दिता शास्त्री, ३ माधुरी रानी, ४ सूर्या जी। इनमे से नन्दिता जी तथा सूर्या जी "पाणिनि कन्या विद्यालय" के सचालन मे विद्यालय की आचार्या मेधा देवी व्याकरणाचार्या (डा०प्रज्ञा देवी की अनुजा) का हाथ बटायेंगी। विदुषी डा० प्रज्ञा देवी जी के समान आर्य जगत् मे अपने पाणिनि कन्या विद्यालय का गौरव बनाये रखने का गुरुतर दायित्व सुश्री नन्दिता शास्त्री को वहन करना है। आर्य जगत् मे अपने प्रखर पाण्डित्य से ऋषि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने का उत्तरदायित्व सुश्री प्रियवदा शास्त्री व्याकरणाचार्या तथा सुश्री माधुरी रानी व्याकरणाचार्या का है। तभी ये चारों विदुषी ब्रह्मचारिणी स्नातिकाए अपने आचार्या डा० प्रज्ञादेवी विद्यावारिधि के ऋण से उऋण हो सकेंगी।

श्रद्धा-सुमन

स्वर्गीया पूज्या बहिन डा० प्रज्ञा देवी जी को मै विगत सत्ताइस वर्षों से जानता था। जब मेरी अवस्था १५ पन्द्रह वर्ष की थी, उन्होंने मेरा यज्ञोपवीत सस्कार १९६१ ई० मे गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर (तिलहर) शाहजहापुर [उ०प्र०]मे कराया था। इस गुरुकुल के प्राचार्य श्री पण्डित सुद्युम्न जी व्याकरणाचार्य थे और उन्हीं की बड़ी बहिन डा० प्रज्ञादेवी आचार्या थीं। मैं नही जानता कि इस समय किस परिवार मे तीन-चार भाई-बहिन (भगिनी) पुत्री आर्ष-व्याकरण शास्त्र के निष्णात आचार्य-आचार्या हैं। १९८३ ई० में मेरी पुत्री "प्रभा" का चूडाकर्म सस्कार भी बहिन प्रज्ञा जी ने कराया। मै उनके वात्सल्य स्नेह का विशेष पात्र था। अपने अध्ययन के सन्दर्भ मे लगभग ७ वर्षों तक मुझे वाराणसी में रहना पड़ा और उसके बाद पिछले १५ पन्द्रह वर्षों से अमेठी मे अध्यापन कर रहा हू वाराणसी मे अकसर बहिन जी से मिलना होता और घण्टो ऋषि दयानन्द, आर्य समाज तथा वैदिक सिद्धान्तों पर शास्त्रीय चर्चा चलती। उत्सवो में, शताब्दी समारोहों मे मिलने पर भी वही आर्य समाज के सैद्धान्तिक विषयों की चर्चाए ही बहिन जी से होती रहती अभी मृत्यु से एक माह पूर्व टाण्डा (फैजाबाद) मे आर्य समाज के उत्सव मे मिली थी। जून १९८५ मे वीरगज [नेपाल] के एक आर्य सामाजिक समारोह मे हम लोग साथ थे। सस्मरणो की शृ खलाए बहुत है। बहिन जी का शास्त्रीय पाण्डित्य उपनिषद-युगीन विदुषी वाचक्नवी गार्गी की याद दिलाता है। प्रवचन के समय गम्भीर मुख मण्डल, तेजोदीप्त ललाट और बृहस्पते प्रथम वाचो मत्र की हृत्तत्री को झकृत करने वाली ध्वनि अब देखने और सुनने को नहीं मिलेगी। "जातस्य ध्रुवो मृत्यु ध्रुव जन्म मृतस्य च", किन्तु उनके असामयिक निधन से आर्य जगत की महती क्षति अपूरणीय है। उनका "पाणिनि कन्या महाविद्यालय" आर्य जगत् मे अपनी कीर्ति पताका फहराता रहे तथा उनकी विदुषी स्नातिकाए ऋषि दयानन्द के स्वप्नों को पूरा करें, परमेश प्रभु से यही प्रार्थना है।

स्वास्थ्य-चर्चा–

दमे से बचना है तो ठीक से सांस लें

दमा एक ऐसा रोग है जिसमे रोगी का जीवन घुट-घुटकर व्यतीत होता है। यह रोग घातक है। तत्काल उचित इलाज न मिलने पर इसका दौरा बर्दाश्त करना हर एक के वश की बात नहीं होती है। प्राचीन भारतीय चिकित्सादिदों ने श्वास लेने के सही तरीके से अभ्यास की सलाह दी है। सास लेने का सही तरीका सिखाने के लिए योगाशास्त्र मे प्राणायाम को बड़ा महत्व दिया गया है। जिसके अभ्यास से दमा जैसी घातक बीमारी से बचाव किया जा सकता है। भारतीय चिकित्साविदों की सदियों पुरानी इस खोज को भले ही विशेष महत्व न दिया गया हो मगर पाश्चात्य वैज्ञानिकों द्वारा इसी तथ्य को वर्तमान चिकित्साशास्त्र के सिद्धांतों के आधार पर पुनः उद्घाटित किया है।

गलत श्वासन की आदत दमा का कारण बनती है। ऐसा बाल्टीमोर स्थित जान हॉपकिंस विश्वविद्यालय के चिकित्सकों का कहना है कि यदि किसी को भी अगर फेफड़ों मे घुटन महसूस हो तथा उसे लम्बी श्वास लेने से रोका जाए तब उस व्यक्ति को दमा के रोगी की तरह फेफड़ों मे खरखराहट महसूस होगी तथा उसे वैसी ही घुटन होगी जैसी एक दमा के रोगी को महसूस होती है।

आधुनिक प्रयोगों की मदद से दमा के कारण तथा निवारण का पता लगाने मे सफलता हासिल की गई है। जान हॉपकिंस विश्वविद्यालय के चिकित्साविदों का कहना है कि जब दमा का दौरा पड़ता है तब फेफड़ों की पेशिया इस कदर संकुचित हो जाती हैं कि दीर्घ श्वास लेने पर भी पेशियों द्वारा निर्मित सूक्ष्म नलिकाएं पूरी तरह खुल नहीं पाती हैं।

चिकित्साविदों का कहना है कि किसी रसायन से एलर्जी या धूल के कारण मनुष्य के फेफड़े रोगी या निरोगी दोनों ही स्थितियों में समान व्यवहार करते हैं। चाहे वह स्वस्थ व्यक्ति के हों अथवा दमा के रोगी के। बस दोनों मे फर्क इतना रहता है कि स्वस्थ मनुष्य उक्त परिस्थितियों मे दीर्घ श्वासन लेता है तथा फेफड़ों की नलिकाओं को पूरा खोलता है। वहीं दमा का रोगी लम्बी सासें लेने के बावजूद उन नालिकाओं को खोल नही पाता।

इसके लिए एक प्रयोग किया जिसमे एक ऐसा रसायन स्वस्थ तथा दमा के रोगी को दिया गया जिससे उनके फेफड़ों मे घुटन महसूस हो। पहली डोज देने के बाद दोनों को ही लम्बी सांस लेने को कहा गया। इसके बाद स्वस्थ व्यक्ति तो सामान्य हो गया, मगर दमा के रोगी की छाती मे अवरोध होने लगा।

जिन लोगों को पहले सास मे अवरोध पैदा करने वाला रसायन दिया गया था उन्ही को एक बार फिर इसी रसायन की डोज दी गई तथा उन्हें लम्बी सांस लेने के लिए कहा गया। इस बार दमा के रोगी की हालत बिगड़ गई और वहीं दूसरी ओर स्वस्थ व्यक्ति पर भी इस रसायन का दुष्प्रभाव कम नहीं हुआ। स्वस्थ व्यक्ति भी दमा के रोगी की तरह हांफने लगा तथा उसके फेफड़ों मे भी खरखराहट पैदा होने लगी।

दोनों ही व्यक्तियों की स्थिति बिगड़ने पर वैज्ञानिकों ने उनसे लम्बी सांसें लेने को कहा जिससे उक्त रसायन का प्रभाव समाप्त किया जा सके। उन दोनों ने लम्बी सासें लेना शुरु किया, परन्तु काफी देर कोशिश के बावजूद उनकी स्थिति सामान्य न हो सकी। अन्ततः दोनों को दवाई का सहारा लेना पड़ा तभी उनकी स्थिति सामान्य हो सकी।

जोन हॉपकिंस विश्वविद्यालय के चिकित्साविदों का कहना है कि वह अब सिटी स्कैन इमेजिंग के द्वारा अपने पूर्व प्रयोगों के निष्कर्ष की जांच-परख करना चाहते है।

लन्दन स्थित राष्ट्रीय हृदय तथा फेफड़ा शोध सस्थान के पोटर बार्नेस का कहना है कि दमा के रोग के समस्त लक्षणों की व्याख्या 'दीर्घ श्वास परिकल्पना' नहो कर सकती है। जैसे कि दमा के रोगी के फेफड़ों के उत्तकों मे तरल पदार्थ का बनना इत्यादि।

उन्होंने कहा कि दीर्घ श्वास लेने के गलत तरीके से श्वासवाही नलिकाओं के संकुचन की व्याख्या की जा सकती है। वैज्ञानिक अभी यह पता लगा पाने मे कामयाब नही हो सके है कि दमा के रोगियों को दीर्घ श्वास लेने में तकलीफ क्यों होती है? मगर इस खोज से यह पता लगाना आसान हो गया है कि किस व्यक्ति मे दमा का रोग अनुवंशिकी एलर्जी अथवा गलत दीर्घ श्वास की आदत के कारण बन रहा है।

कुल मिलाकर यह बात सामने आई कि प्रत्येक व्यक्ति को यदि दमा रोग से बचना है तो 'दीर्घश्वास प्रक्रिया' की सही जानकारी रखनी होगी तथा फेफड़ों की श्वासवाही नलिकाओं का निरन्तर व्यायाम भी करते रहना होगा।

–ज्ञानेश्वरी

सद् विचार

१. प्रतिष्ठा बनने मे कई वर्ष लग जाते हैं और कलंक एक पल में लग जाता है।

२. सुबह से शाम तक काम करके आदमी इतना नही थकता जितना क्रोध या चिन्ता से एक घण्टे में थक जाता है।

३ क्रोध करने से पहले उसके परिणाम पर विचार करो अन्यथा पछताना पड़ेगा।

४ सबसे बड़ा विद्वान वह हैं जो हर समय नई बातें सीखने के लिए तैयार रहता है।

५ सब बुरें कामों और दुर्गुणो का अगुवा "काम" है और अन्य तीन–क्रोध, लोभ, और मोह इनका अनुसरण करते हैं।

६. सज्जन लोगो को राग द्वेष, अन्याय, मिथ्या भाषणादि दोषो को छोड़ निर्वैर, प्रीति, परोपकार, सज्जनता आदि को धारण करना उत्तम आचार है। धर्मयुक्त कामो का आचरण सुशीलता, सत्पुरुषो का सग और सद् विद्या मे रुचि आदि आचार और इनके विपरीत अनाचार कहलाता है।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

विज्ञान की दृष्टि मे वेद

(पृष्ठ ६ का शेष)

पर सही उतरता है। इसीलिए यूरोपीय विद्वान 'ब्राउन' ने अपनी पुस्तक 'वैदिक धर्म की वरीयता' मे कहा है–'वैदिक धर्म पूर्णतया वैज्ञानिक धर्म है जहा धर्म और विज्ञान हाथ मे हाथ मिलाकर चलते हे।'

प्रस्तुत लेख मे वेद, बाइबिल और कुरान तीनो ग्रन्थों की बाते उदाहरण के साथ रखी गई है। पाठकगण पढें और विचार करें इस लेख में आए वेद-मन्त्रो के अर्थ महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य पर आधारित हैं जबकि बाइबिल और कुरान के उद्धरण महर्षि दयानन्द रचित 'सत्यार्थ प्रकाश' के तेरहवें और चौदहवें समुल्लास से लिए गए है। सत्यासत्य का ज्ञान तथा सत्य का ग्रहण एवं असत्य का त्याग ही इस लेख का उद्देश्य है, कोई द्वेष भावना नही।

मन्त्री, आर्य समाज पुर्वी, राची

व्यंग्य कथा :

लोकतन्त्र की मौत सच्चाई, को नेतृत्व सौंपा जाए

भारतीय न्याय व्यवस्था ने पिछले कुछ माह से भारतीय शासन व्यवस्था और विशेष रूप से राज नेताओं को दोनों हाथ ऊपर करके एक टांग पर खड़े होने की सजा दे रखी थी। आप बेशक एक मिनट के लिए अभ्यास करके देख। यह सजा क्रूर न दिखते हुए भी इतनी क्रूर है कि शायद ही कोई व्यक्ति लगातार एक या दो मिनट से अधिक इस प्रकार खड़ा रह सके। उसका गिरना स्वाभाविक है। गिरने पर चोट भी लगती है। गिरने के बाद पुन: उठकर उसी सजा में खड़े होना एक ऐसी मजबूरी है जिसका यदि निर्वाह न किया गया तो अदालत की अवमानना के रूप में शरीर पर कहीं एक और दण्ड (डंडा) न आ लगे।

बार-बार गिरने की इस प्रक्रिया में राजनेताओं और नौकरशाहों के गठबंधन लोकतन्त्र को इतनी चोटें लगी कि नाक और कान से खून बहने लगा, सिर भी फट गया, शूगर भी बढ़ गयी, हवालो और घोटालों की गर्मी से ब्लड प्रेशर की गति नियंत्रित नहीं हो पा रही थी।

इन सब बीमारियो के चलते एक अप्रैल १९९९ की प्रात: कालीन शांत वेला में लोकतन्त्र ने नई दिल्ली की सड़को पर दम तोड़ दिया। भारत के लोकतन्त्र के देहावसान का समाचार कुछ ही देर में सारे विश्व में फैल गया। समाचार पत्रों ने उसी दिन विशेष संस्करण प्रकाशित किये और भारत में लोकतन्त्र के देहावसान के कारणों और उसका स्थान लेने के लिए भविष्य की योजनाओं पर चर्चायें प्रकाशित की। विदेशों से भी राष्ट्राध्यक्षों के संवेदना सन्देश प्राप्त होने प्रारम्भ हो गये।

देश की प्रमुख धार्मिक सांस्कृतिक संस्थाओं ने अपने-अपने स्थानों पर शोक सभाओं का आयोजन किया जिसमें लोकतन्त्र की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई। आर्य समाज ने अपने समस्त मंदिरों में तत्काल यज्ञ प्रारम्भ कराने हेतु एक परिपत्र जारी किया। पौराणिक मंदिरों में भी मूर्तियों के सामने माथा पटक-पटक कर पुरुषों-महिलाओं और बच्चों ने भगवान से पूछा कि ऋषियों के इस देश से लोकतन्त्र की मौत करवाकर किस पाप का फल दे रहे हो। इस विशेष अवसर पर मूर्त्तियां भी बोल उठी की पाखण्ड और जड़ पूजा का ही यह परिणाम है कि भारत के राज-नेताओं ने सच्चे ईश्वर से कभी कोई प्रेरणा प्राप्त नहीं की और वे आजीवन हवालों और घोटालों में संलिप्त रहे। मूर्त्तियों ने कहा कि आम जनता में हम निवेदन करते हैं कि हमें ईश्वर समझकर अपने आपको धार्मिक साबित करने का पाखण्ड छोड़ और सच्चे ईश्वर अर्थात सच्चाई को लोकतन्त्र के स्थान पर पदासीन करवाएं, उल्लेखनीय है कि सच्चाई लोकतन्त्र की पत्नी के रूप में सदियों से रह रही थी।

उधर राष्ट्रपति भवन से जारी एक विशेष बुलेटिन के तहत सूचना दी गई कि लोकतन्त्र का अन्तिम संस्कार रामलीला मैदान में किया जायेगा। शव यात्रा पार्लियामेंट के केन्द्रीय कक्ष से अगले दिन प्रात: ११ बजे प्रारम्भ होगी। तब तक लोकतन्त्र का शव जिसे सुप्रीम कोर्ट ने अपने एक विशेष आदेश के द्वारा पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है, प्राप्त हो जायेगा। पोस्टमार्टम का आदेश मानवाधिकार आयोग की याचिका पर दिया गया है क्योंकि यह मौत सजा काटते हुए हिरासत में हुई है।

शव यात्रा संसद भवन से चलकर सर्व प्रथम अकबर रोड जायेगी जहां कांग्रेस के समस्त गुटों की तरफ से इस पर फूल मालायें तथा दिय चढ़ाये जायेंगे। वहां से शव यात्रा अशोक रोड पहुंचेगी जहां भा०ज०पा०, कम्युनिस्ट तथा जनता दल की तरफ से फूल मालायें अर्पित होगी।

अन्तिम संस्कार के लिए सांय ४ बजे समय निर्धारित किया गया है। लोकतन्त्र की पत्नी सच्चाई देवी लोकतन्त्र को मुखाग्नि देगी।

अन्तिम संस्कार के अवसर पर सारे देश के समस्त प्रतिष्ठान बन्द रहेंगे। इस आयोजन का सीधा प्रसारण रेडियो और टी० वी० पर प्रसारित किया जायेगा।

आर्य समाज ने राष्ट्रपति से मांग की है कि लोकतन्त्र के स्थान पर सच्चाई देवी को भारत का प्रमुख घोषित किया जाए। क्योंकि सच्चाई के मार्ग पर चलकर ही जनता में सुख समृद्धि तथा शान्ति का प्रचलन सुनिश्चित किया जा सकता है। आर्य समाज की इस मांग का सारी न्याय-पालिका सहित पत्रकारो तथा कानून का पालन करने वाले बुद्धिजीवी नागरिकों ने पूर्ण समर्थन किया है।

राधेश्याम[illegible] आर्य
(शाकार कानूनी पत्रिका)

सूर्य अनेक रोगों का चिकित्सक

—ओमप्रकाश भोला, शामपुर (उ०प्र०)

यज्ञ करने का समय प्रात: सुर्योदय के बाद और सायंकाल सुर्यास्त से पहले का है। यज्ञ में सूर्य का महत्व है। सूर्य हमारा जीवनाधार है। प्रात:काल उदित होने वाले सूर्य की लालिमा के सेवन से हृदय-रोगो का निवारण होता है। सूर्यप्रकाश मांस-पेशियों को सुदृढ़ बनाता है, शरीर की थकान दूर करता है, मोटापा कम करता है और नवीन खोजों से स्थापित हो चुका है कि सूर्यप्रकाश अनेक संक्रामक रोगों जैसे न्योमोनिया, गलसुआ, खांसी तथा रक्त-विषाक्तता, बच्चों के संक्रामक उच्च रक्तचाप और विशेष प्रकार के गंजेपन को ठीक करता है। सूर्य-स्नान से यौन-क्षमता में वृद्धि, शारीरिक सुन्दरता व सौष्ठव में वृद्धि होती है और स्त्रियों का मासिक धर्म नियमित होता है। सूर्य स्नान के समय पसीना आने से शरीर से विजातीय विष निकल जाते है (आजकल तो पसीना आने ही नही देते) सूर्य-किरण चिकित्सा पद्धति पीलिया और गठिया रोगों को ठीक करने में प्रभावकारी सिद्ध हुई है। सूर्य से विटामिन 'डी' प्राप्त होता है जिसके अभाव में शरीर की हड्डियां विकृत हो जाती हैं। इसी कारण बच्चों के सूखा रोग में सूर्यप्रकाश परम औषधि सिद्ध हुआ है। मधु-मेह रोग में सूर्यप्रकाश इंसुलिन का कार्य करता है। अत: पता चला कि प्रभात-वेला में उठकर व्यायाम करने वालों, घूमने वालों को कई रोगों से स्वत: छुट-कारा मिलता रहता है और जब यज्ञ द्वारा हम वातावरण शुद्ध बनाकर सूर्य किरणों से हवि को वातावरण में पहुंचायेंगे तो उन शुद्ध व पवित्र किरणों से हमें कितना लाभ होगा इसका पता लग जाता है। इसी कारण यज्ञ में इसका महत्व है।

वेद-रश्मि

—श्री लक्ष्मीनारायण शास्त्री

वैदिक धर्म की वेद रश्मियां, पावन धारायें फैल रही।
मत-मतान्तर की तमसा वह, देखो कैसे लुप्त हो रही॥

प्रभु वाणी की वेद रश्मियां, ऋषिमानस में उदित हुई।
वेद ज्ञान के सौरभ से है, ऋषि की वाणी भरी हुई॥

ऋषि-मुनियों के चरण बैठकर, प्रभु गीत कवि गाते हैं।
प्रभु भक्ति की सुधा धार को,कवि जन नित्य पिलाते है॥

प्रभु भक्ति से हीन जनों को, ऋषि-मुनि सुपथ दिखाते हैं।
ज्ञान कर्म का मर्म बताकर, वैदिक पथ दिखलाते हैं॥

वैदिक धर्म से च्युत जनों को, वैदिक धर्म में लाते हैं।
आर्य समाज के नियम सुपावन विश्व में आर्य फैलाते है॥

मनुष्य जीवन को सुखी बनाने का मूलमंत्र

जगदीश प्रसाद वैदिक इन्दौर

मनुष्य के जीवन म और व्यवहार मे समानता नहीं है मनुष्य जो शभ सोचता है वह बोलता नहीं ओर करता नहीं है मनष्य का जीवन सत्य का जीवन नहा रहा है मनष्य की वाणा ओर जावन मे विरोध है इसलिये मनुष्य दुखी है मनाना ढग का नहीं ढोग का जीवन जा रहा है आत्मदशन का नहीं बाहरी प्रदशन का जीवन जा रहा है

मनुष्य की वाणी शहद जैसी माठी है किन्तु कम विष के समान है वाणा पर परमात्मा का नाम है तो जीवन राक्षसो जैसा है वाणी और जीवन मे गहरा विरोध है गहरी खाइया हे जिनको पाटना अत्यन्त आवश्यक है जब तक वाणी ओर जीवन की दूरी समाप्त नहा होगी तब तक जावन सखी नहा हो सकता

मनुष्य का वाणा का आदर्श जीवन म भी दिखाई देना चाहिए मनुष्य स्वय बोलता हे तो उसका आवाज एक सीमा तक मनष्यो का सनाई देता ह थोड़े से समय के लिए किन्त जीवन के आचरण का आवाज चोबीसो घटे प्रत्येक व्यक्ति को सुनाई देता ह ओर दिखाई देती है यह जावन के शभ आचरण का आवाज ससार को सुनाई देता है जिस प्रकार राम कष्ण बद्ध महावीर विवेकानन्द दयानन्द को आवाज सनाई द रही है

मनुष्य का वाणी बोल रही है जावन का आचरण नही लेकिन सत महापरुष का जीवन बोलता है उसा से प्रभावित होकर अनेक मनष्यो का जीवन सखा हो जाता है

वाणी और जीवन के शभ आचरण का अतर मनष्य को सखा बनाने मे बाधक हे इस अतर को शीघ्र हा मिटाना चाहिये ओर शुभ कर्मो के अनुसार जीवन को चलाने का सकल्प करना चाहिये जब तक शभ कर्मो के अनसार जीवन को नहा चलाते ह तब तक जावन उस फल के समान है जो फल कागज से बनाया गया है लेकिन उसमे सगन्ध नहा होती है वास्तविक जावन तो आनन्द का समद्र है आज मनष्य का जीवन दुखी का महासागर बन गया है क्योकि मनष्य अत्यधिक भौतिक साधन जटाने के लिए असत्य का आचरण कर रहा है जिससे सख के स्थान पर दुख प्राप्त हो रहा हे परमात्मा की न्याय व्यवस्था के अनसार मनष्य को शभ कर्मो का फल सख ओर अशभ कर्मो का फल दुख अवश्य हा प्राप्त होता है विरले ही मनष्य होते ह जिनके जीवन म सादय के फल खिलते है और सत्य की सगन्ध फेलता हे

मनष्य के करने योग्य जो कम हे व सब कम मनष्य करता हे लेकिन वे कम भा करता है जो मनुष्य का नहा करना चाहिये ससार का प्रत्येक मनष्य जोवन भर सखी रहना चाहता हे कोई भी मनष्य यह नहीं चाहता हे कि उसको जावन मे दुख भोगना पडे कितु दुख आते है और उन दुखा के कारण तडफता रहता हे दुख के कारण है असत्य व्यवहार, छल कपट, द्वेष रिश्वत हिसा अर्थात् पशओ को मारकर खाना दूसरा को कष्ट देना जो मनुष्य इन बुरे कर्मो से अपने को बचाकर रखेगा उसको सख ही सख प्राप्त होगा

मनुष्य के पास धन हे भवन है वाहन है पति हे पत्नि है बेटा बहू, बेटी जवाइ पोता पोती ओर उच्च पद भी हे राष्ट्रपति प्रधानमत्री मख्यमत्री मत्री राज्यपाल सासद ओर विधायक लेकिन जीवन मे सत्य नहीं है अथात् वाणी मे तो सत्य हे लेकिन आचरण मे सत्य नहीं हे इसलिए मनष्य को सखी बनाने का मल मत्र सत्य का व्यवहार करना है

असम में नए आर्य समाज मंदिर का उद्घाटन

असम प्रान्त के नलवाडा जिलान्तर्गत निवसा मे नव निर्मित आय समाज मन्दिर का शभ उद्घाटन अपार जनसमदाय के बीच वैदिक यज्ञ के साथ असम आय प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष माननाय श्री नरायण दास जी की अध्यक्षता मे दि 1( )6 को सम्पन्न हुआ ह आय समाज मन्दिर गवहाटा ने उक्त मन्दिर निर्माण के लिए 000 पाच हजार रुपये का सहायता भी की निकाशी आय समाज मन्दिर अध्यक्ष श्री तफा आचाय ने भी मन्दिर निमाणाथ एक कट्ठा भूमि तथा 10 000 दस हजार रुपये दान के रूप मे प्रदान किया है तथा स्थानीय अन्य वेदाभिमानी सज्जनो ने भी काफी सहयोग दिया है जिसके फलस्वरूप इस भव्य यज्ञ मण्डप का निमाण सम्पन्न हो सका है

भवदाय
नारायण दास

विदेश समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा, नीदरलैण्ड के बढ़ते कदम

आर्य प्रतिनिधि सभा नीदरलैण्ड की स्थापना ( )(म हुई और सरकार मे रजिस्टर 19) को की गई

इस वर्ष नीदरलैण्ड के दो मल निवासी जो पहले ईसाई मत के थे आय प्रतिनिधि सभा नीदरलैण्ड के द्वारा शद्ध करके इन दोनो को आय समाज का परिवार बनाया गया तथा 3 माच 19)6 को एम्सटडम मे एक वेद यज्ञ रचा गया जिसका प्रचार रेडियो द्वारा भी किया गया था इस वेद यज्ञ के यज्ञ ब्रह्मा पडित Henk Linior (प हेन्क लीनोर थे तथा इन के बाद भजन भी गाया इसके बाद श्री रमेश अवतार व श्रीमती मोनवती ने भजन गाया पडित हेन्क लीनोर एम्सटडम मे हा रहत है अन्त मे दूसरे पण्डित जो कि पहले इसाई मत के थे तथा ये Wageningen वाखेनिंगन म रहते ये उनका नया नाम पण्डित देवेन्द्र शमा है इन्होने स्वस्ति वाचनम मत्र को हिन्दी व डच भाषा मे बताया ओर हालैण्ड पत्र पर भी भाषण डच भाषा म दिया इस प्रकार के नाम हिन्दी नहीं जानते है उन्हे आय समाज के महत्व व कार्य के बारे मे भी बताया गया

सभा का सचालन पडित सन्दर प्रसाद शभधन कर रहे थे सभा का हाल खचाखच भरा था विशेष बात यह था कि आय समाज के सदस्यो के अतिरिक्त अन्य लोग भी काफी सख्या म उपस्थित थे अब आय प्रतिनिधि सभा नीदरलैण्ड ने होलैण्ड की डच भाषा मे भी वेदिक धम प्रचार जोर शोर से प्रारम्भ करा दिया है

भवदाय
महेन्द्र स्वरूप

उदगीथ साधना स्थली हिमांचल में प्रभु शक्ति, देश भक्ति, संस्कारी व्यक्ति साधना शिविर

प आचार्य आय नरेश वैदिक का अध्यक्षता मे तथा प स्वामी दाक्षानद जी के सरक्षण मे मई 6 से 1 14 से 19 1 से 6 8 से जन 4 से 9 जन और 10 से 16 जन तक छ साधना शिविरो का आयोजन किया जा रहा है जिसमे शारीरिक आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति हेत ध्यान योग प्राणायाम योगासन याग दशन उपनिषद् मनस्मति संस्कृत शिक्षण व सत्यार्थ प्रकाश का पाठ होगा एक शिविर का शल्क 00 भोजन प्रात राश आदि सहित राष्ट्रीय सामाजिक व पारिवारिक समस्याओ पर गोष्ठियो तथा प्रवचनो का भी आयोजन होगा माताओ व बहिनो के लिए योगासना का पथक व्यवस्था होगी बच्चो की अलग कक्षा होगी

इस उपलक्ष्य मे अनुभवी वैदिक विद्वान व्यायाम शिक्षक व भजनोपदेशक आमत्रित है

शिविरो मे भाग लेने वाले युवा व प्रौढ साधक अपने आने के तिथि व कल व्यक्तियो की सख्या लौटती डाक से नीचे के पते पर सचित करे

कार्यालय अध्यक्ष
उदगाथ साधना स्थली
ग्राम डोहर, डाक शाया
तहसील रायगढ जिला सिरमौर
पिन 17310 फोन 01799 0)1

दयानन्द आर्य कन्या उच्च विद्यालय कर्णताल, करनाल के प्रागण में परीक्षाओं में नैतिक मूल्यो की आवश्यकता "विषय पर सफलता पूर्वक सम्पन्न विचार गोष्ठी की अध्यक्षता प्रसिद्ध शिक्षाविद् डा० श्रीमती एस० एन० आर्या ने की।

मुख्यवक्ता पद से बोलते हुए आर्य-विचारक प्रो० राजेन्द्र विद्यालंकार (कुरुक्षेत्र) ने नकल को सामाजिक कुरीति बताते हुए कहा कि इस कुरीति को किसी कानून वा सविधान से मूलत: नष्ट नहीं किया जा सकता। इसके लिये आवश्यक है नैतिक मूल्यों की जो आत्मविश्वास से ही अर्जित किये जा सकते हैं। प्रो० राजेन्द्र ने कहा कि नकल करने से मानव मे सघर्ष एव कर्त्तव्य निष्ठा की भावना लुप्त हो जाती है। और जो सभ्यता या जाति संघर्ष करना छोड़ देता है उसकी सस्कृति नष्ट हो जाती है।

इसलिए ऐसे अभिशाप को नष्ट करने में छात्रो एवं अध्यापको का आपसी तालमेल एवं सकल्प शक्ति दोनो ही आवश्यक है। नैतिक-मूल्यों एव उदात्त-जीवन की पराकाष्ठा मानसिक सन्तुलन पर निर्भर है।

दैनिक नवभारत टाइम्स के 4 मार्च 1996 के अक मे प्रकाशित एक समाचार के अनुसार इंदिरा गाधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय हिन्दी माध्यम से रेडियो और टी० वी० लेखन मे स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम शुरू करेगा।

विद्यार्थियो को रेडियो और टी० वी० के लिए स्क्रिप्ट लेखन का प्रशिक्षण दिया जाएगा। विद्यार्थी दूर शिक्षा पद्धति के माध्यम से स्क्रिप्ट लेखन मे दक्षता प्राप्त कर सकेगे। कार्यक्रम के तहत विद्यार्थियो के लिए कार्यशाला का भी आयोजन किया जाएगा जिसमें वे लिखने का का अभ्यास कर सकेगे और दिशा प्राप्त कर सकेगे। यह कार्यक्रम अपने आप में नूतन पाठ्यक्रम होगा।

2 अनुरोध है कि अधिक से अधिक विद्यार्थियो को उक्त पाठ्यक्रम की जानकारी दी जाए और जिन-जिन अन्य ऐसे ही पाठ्यक्रमों में हिन्दी के माध्यम की सुविधा नहीं दी गई है उनके लिए प्रयत्न जारी रखे जाए।

जगन्नाथ
संयोजक, राजभाषा कार्य,

आर्य समाज चाकन्द (गया) का 46 वां वार्षिकोत्सव आगामी 1, 2 एवं 3 अप्रैल 96 तक बड़े उल्लास के साथ मनाया गया।

इस शुभ अवसर पर आर्य जगत के वैदिक प्रवक्ता पं० सत्यदेव शास्त्री वाराणसी वेद एवं कुरान के ज्ञाता प० जय प्रकाश आर्य (मोतीहारी) भोजपुरी लोकगीत के भजनोपदेशक ठाकुर इन्द्रदेव सिह 'इन्द्र कवि' (सारण) एवं महिला विदुषी भजनोपदेशिका श्रीमती राजबाला आर्या (हरियाणा) ने पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

अंधविश्वास विरोधी सम्मेलन

आर्य समाज गोविन्दपुर जमशेदपुर का वार्षिकोत्सव अध विश्वास विरोधी सम्मेलन के रूप में दिनाक 6 अप्रैल से 8 अप्रैल तक मनाया जा रहा है। इस सम्मेलन का व्यापक प्रचार वनवासियों के बीच में किया जा रहा है क्योंकि उनके बीच अंध विश्वास बहुत ज्यादा है। अंध विश्वास के कारण हत्याए होती हैं। पिछले वर्ष पश्चिमी सिंहभूमि का मुख्यालय न्यायवासा में प्रशासन की ओर से यह सम्मेलन किया गया था। आर्य समाज इस क्षेत्र मे व्यापक कार्य कर रहा है।

इस अवसर पर विशाल यज्ञ प्रवचन तथा अनेकों सम्मेलनों का आयोजन किया गया है अधिक से अधिक [illegible] पधार कर कार्यक्रम को सफल ब[illegible]

विजय कुमार आर्य
मंत्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
नवीन प्रकाशन

1– वैदिक सम्पत्ति- लेखक · स्व० प० रघुनन्दन जी शर्मा द्वारा लिखित अद्भुत ग्रन्थ मूल्य - 150) रु०, कई बार छपकर पुन: सभा की ओर से प्रकाशित।
2– कुलियात आर्य मुसाफिर-लेखक · अमर शहीद प० लेखराम जी द्वारा रचित विलक्षण ग्रन्थ, पृष्ठ 900, मूल्य 200) रु०, साज सज्जा, कागज, अच्छा, सजिल्द अच्छी छपाई स्वाध्याय हेतु बेहतीन ग्रन्थ-
3– सत्यार्थ प्रकाश-वृहदाकार, महर्षि का अद्भुत शोध ग्रन्थ दुर्बल आंखों हेतु बड़े अक्षरों में बड़ा टाइप अच्छा कागज। मूल्य-125 रुपए।
4– दर्शन-(न्याय, वैशेषिक, सांख्य), पृथक-2 मूल्य-35) रु० है। भाष्यकार स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती, नि:शुल्क शिक्षा के व्रत, वाग्मी प्रवर शास्त्रार्थ महारथी साधारण बुद्धि वाला भी आसानी से पढ व समझ सकता है। छपाई-गेटप-कागज, पृष्ठ सुन्दर है।
5– संस्कार चन्द्रिका-लेखक : भीमसेन शर्मा द्वारा रचित संस्कार विधि महित व्याख्या भाग, उपदेशक प्रचारक गृहस्थी एवं स्वाध्याय शीलों के लिए उपादेय पुस्तक। मूल्य 25)
6– आर्य समाज का इतिहास-(भाग 1 व 2) ले० प० इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित इतिहास के दो भाग सभा द्वारा प्रकाशित किये जा चुके हैं। भाग 1 मूल्य 40) भाग 2 मूल्य 85)
7– आर्य समाज-लाला लाजपत राय द्वारा लिखित आर्यसमाज विषयक विद्यार्थियों के लिए उपयोगी इतिहास है। मूल्य 30 रुपए
8– विवाह पद्धति-संस्कार चन्द्रिका का का ही भाग छपा है। मूल्य 20)
9– दयानन्द दिव्य दर्शन-चित्रों में महर्षि का जीवन परिचय-चित्र दिलों में खिंच जाते हैं। ऐसे प्रतिभाशील जीवन की गाथा पारितोषिक देने में उपहारके योग्य। मूल्य 51) रुपए
10– सन् 1973 से वैदिक साहित्य को जन जन तक प्राप्त कराने में सभा पूर्णतया सक्षम है कम दाम, अच्छी छपाई लाखों का प्रकाशन और लाखों को छपाई व वितरण।

आप भी अपने क्षेत्र में स्वाध्यायको बढ़ायें और हमसे साहित्य लेकर घर-घर पहुंचाने मेंहमारा मार्ग दर्शन करें।

प्राप्ति स्थान :
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
3/5, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-2

सार्वदेशिक प्रैस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-2 से प्रकाशित।

ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् — विश्व को श्रेष्ठ (आर्य) बनाएं

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

साम वेद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र अथर्व वेद

दूरभाष 3274771 60985 आजीवन सदस्यता शुल्क 500 रुपये वार्षिक शुल्क 50 रुपए, एक प्रति रुपया

वर्ष ३ अंक ? दयानन्दाब्द 172 सृष्टि सम्वत 197294909 वैशाख कृ 11 सं 053 14 अप्रैल 996

दक्षिण भारत मे पुन

आर्य समाज का धर्म परिवर्तन के विरुद्ध सफल मोर्चा

श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव के प्रयास से सवर्णो और दलितों का मेल

नई दिल्ली 8 अप्रैल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प वन्देमातरम रामचन्द्रराव दक्षिण भारत का विस्तृत दौरा करने के बाद आज प्रात दिल्ली वापस पहुंचे मार्च माह मे श्री वन्देमातरम जी ने लगभग चार हजार किलो मीटर का प्रचार यात्रा मोटर द्वारा की श्री वन्देमातरम जी के साथ आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री क्रान्ति कुमार कारटकर तथा मन्त्री श्री ना कृष्णाराव के अतिरिक्त वैदिक क्रान्ति पत्रम के सम्पादक श्री टी मन नारायण जी साथ थे उल्लेखनीय है कि अक्तूबर 95 मे भी दक्षिण भारत के कई दलित गावो मे मुसलमान और ईसाई मिशनरियों के षडयन्त्र के कारण वहा की बहुत बडा दलित आबादी धर्म परिवर्तन के लिए तैयार हो गई थी इसे रोकने के लिए सार्वदेशिक सभा द्वारा दिल्ली ---- न्यायालय मे एक याचिका भी ---- ---- मे सफलता न मिलने पर सार्वदेशिक सभा प्रधान प वन्देमातरम रामचन्द्रराव जी ने अक्तूबर मास मे तमिलनाडु के उन प्रभावित

शेष पृष्ठ पर

धर्मान्तरित इसाइयो और मुसलमानो को वैदिक धर्म की दीक्षा देते हुए तमिलनाडु म आर्य समाज की गतिविधियो के सूत्रधार श्री स्वामी नारायण सरस्वती

वर्ष 1996 "मनु वर्ष" के रूप में मनाया जाये

सार्वदेशिक सभा द्वारा आर्य संस्थाओं से अपील

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प वन्देमातरम रामचन्द्र राव दक्षिण भारत के कई जिलो तथा गावो का विस्तृत दौरा करने के बाद आज दिल्ली पहुचे उन्होने बताया कि तमिलनाडु मे इसाई तथा मुसलमान समुदाय के लोग हिन्दुओ के दलित वर्ग को सवर्णो से लडाकर खूनी खेल रहे हैं तथा उनका धर्म परिवर्तन कर उन्हे हमसे अलग करने का षडयन्त्र रच रहे है कुछ असामाजिक तत्वो ने मनुस्मृति के गलत उद्धरण देकर समाज मे विशमता पैदा करने की कोशिश की है महर्षि दयानद ने महर्षि मनु के उद्धरण देकर समाज को विशमता तथा विद्वेश से बचाने का कठिनतम प्रयास किया है

प वन्देमातरम् जी ने फैले हुए इस विद्वेश को दूर करने के लिए समाज के बुद्धिजीवी वर्ग से प्रार्थना की है कि वे समाज मे मनु के सही स्वरूप को प्रस्तुत करें और मनुस्मति के सम्बन्ध मे गलत प्रमाणो का खण्डन कर सही वस्तु स्थिति का दिग्दर्शन करायें विघटनकारी तत्वो ने सदा ही गलत बयानी करके समाज को विखंडित करने का प्रयास किया है। आर्य समाज ने ऐसे तत्वो का सदैव घोर विरोध किया है और मानव मात्र का सही दिशा बोध कराकर भारी कल्याण किया है।

सार्वदेशिक सभा ने समस्त आर्य समितियो का आह्वान किया है कि व इस षडयन्त्र को रोकने का हर सम्भव प्रयास करे तथा इस वर्ष को सम्पूर्ण विश्व में 'मनु वर्ष' के रूप मे घोषित किया जाये तथा प्रत्येक जाति के सदस्यों को साथ लेकर विशेष आयोजन किए जाये जिससे जाति व्यवस्था मे उपजी बुराइया को जडमूल से समाप्त किया जा सके।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

पारिवारिक बिखराव का कारण पश्चिमी सभ्यता की घुसपैठ

श्री तुलसी

पश्चिमी सभ्यता की घुसपैठ ने परिवार मे बिखराव तो ला दिया है पर अकेलेपन की समस्या का समाधान नहीं किया स्वतंत्र परिवार मे कुछ सुविधाए भले ही हो पर उनकी तुलना मे कठिनाइया अधिक हैं। सबसे बडी कठिनाई है विरासत मे प्राप्त होने वाले सस्कारो की लडका ससुराल जाते ही सास ससुर आदि के साये से दूर रहने लगेगा तो उसे सस्कार कौन देगा ? पति के ऑफिस चले जाने पर सुबह से शाम तक अकेली स्त्री क्या करेगा बीमारी आदि का परिस्थिति मे सहयोग किसका मिलेगा ? ऐसे ही कुछ और सवाल हैं जो सयुक्त परिवार से मिलने वाली सुविधाओ को उजागर कर रहे हैं।

प्राचीन काल मे बूढी नानियो दादियो के पास सस्कारो का अटूट खजाना हुआ करता था। सूर्यास्त के बाद बच्चो का जमघट उन्हीं के पास रहता था। वे मीठी मीठी कहानिया सुनाती लोरिया गातीं बच्चो के साथ सवाद स्थापित करतीं और बातो ही बातो मे उन्हे सस्कारो की अमूल्य धरोहर सौंप जाती। जिन लोगो ने अपना बचपन नानियो दादियो के साये मे बिताये हैं वे आज भी उच्च सस्कारो से सम्पन्न हैं। जो व्यक्ति परिवार मे बढते हुए झगडो के कारण अलग रहने का निणय लेते हैं उन्हे स्थान के बदले स्वभाव बदलने का बात सोचनी चाहिए।

जिस प्रकार महिला अपनी बेटी की गलता को शाति से सह लेती है उसी प्रकार बहू को भी सहन करना चाहिए। अन्यथा उनके जीवन में दोहरे सस्कार और दोहरे मानदण्ड सक्रिय हो उठेगे। जहाँ एक सदस्य दूसरे के जीवन मे विघ्न बने बिना रहता है जहाँ सापेक्षता बहुत स्पष्ट होती हे वहीं सही अर्थ में परिवार बनता है।

आश्चर्य है कि रोटी कपडे के लिए मनुष्य जब इतने कष्ट सह सकता है तो सन्तान को सस्कारी बनाने की ओर उसका ध्यान क्यो नहीं जाता।

दहेज समाज को जर्जर बना देने वाला कैंसर

देहज वह कैंसर है जिसने समाज को जर्जर बना दिया है। इस कष्ट साध्य बीमारी का इलाज करने के लिये बहिनो को कुर्बानी के लिये तैयार रहना होगा। आप लोगो मे यह जागृत आए कि जहाँ दहेज की माग होगी ठहराव होगा वहा पर शादी नहीं करेगी आजीवन ब्रह्मचारिणी रहकर जीवन व्यतीत करेगी तभी वांछित परिणाम आ सकता है।

कहाँ तो कन्या गृहलक्ष्मी के रूप मे सर्वोच्च सम्मान और कहाँ विवाह और पवित्र सस्कार के नाम पर मोल तोल। यह कुविचार ही नहीं, कुकर्म भी है।

दहेज की खुली माग, ठहराव माग पूरी करने की बाध्यता, प्राप्त दहेज का प्रदर्शन और टीका टिप्पणी। इससे आगे बढकर देखा जाए तो नवोढा के मन को व्यग बाणो से छलनी बना देना उसके पितपक्ष पर फब्तियाँ कसना बात बात पर उसका अपमान करना आदि क्या किसी शिष्ट और सयत मानसिकता की उपज है ? दहेज की इस यात्रा का अंत इसी बिन्दु पर नहीं होता अनेक प्रकार की शारीरिक मानसिक यातनाएँ, मार पीट, घर से निकाल देना और जिन्दा जला देना क्या एक नारी की यही नियति है।

जहाँ कहीं जब कभी दहेज को लेकर कोई अवाछनीय घटना हो उस पर अगुली निर्देश हो उसकी सामूहिक भर्त्सना हो तथा अहिसात्मक तरीको से उसका प्रतिकार हो। ऐसे प्रसगो को परस्मैद की भाषा न देकर आत्मनेपद की भाषा मे पढा जाए तभी इस असाध्य बीमारी से छुटकारा पाने की सभावना की जा सकती है।

मै महिला को ममता, समता और क्षमता की त्रिवेणी मानता हूँ। इसके ममता भरे हाथो से नई पीढी का निर्माण होता है समता से परिवार में सतुलन रहता है और क्षमता से समाज और राष्ट्र को सरक्षण मिलता है।

आश्चर्य की बात है कि दहेज की समस्या को बढाने मे पुरुषो का जितना हाथ है महिलाओ का उससे भी अधिक है। दहेज के कारण अपनी बेटी की दुदशा को देखकर भी एक मा पुत्र की शादी के अवसर पर दहेज लेने का लोभ सवरण नहीं कर सकती। अपनी बेटी की व्यथा से व्यथित होकर भी वह बहू की व्यथा का अनुभव नहीं करती।

आर्य समाज की धर्म परिवर्तन ...

पृष्ठ एक का शेष

क्षेत्रो का दौरा किया था। दालत गाव मे व्यक्तिगत सम्पर्क तथा प्रभावशाली तरीके से वैदिक मान्यताओ को स्पष्ट किये जाने का परिणाम यह निकला कि दलितो ने धर्म परिवर्तन का विचार बदल दिया। इन परिस्थितियो मे यह आवश्यक था कि आर्य समाज की तरफ से ऐसे क्षेत्रो तथा उनके स्थानीय नेताओ मे लगातार सम्पर्क बनाय रखा जाय। इसी जिम्मेदारी का निर्वाह करते हुए श्री वन्देमातरम् जी ने पुन इस दौरे पर जाना स्वीकार किया।

83 वर्ष की अवस्था मे चिकित्सको के परामर्श का उल्लघन करते हुए मातृभूमि के ऋण को चुकाने के लिए श्री वन्देमातरम् जी ने इस बार कई जिलो और गावो का दौरा किया बेशक इस दौरे के बाद उनका स्वास्थ्य हैदराबाद मे खराब हो गया परन्तु उनमे इस दौरे के परिणाम को लेकर अपार उत्साह है। श्री वन्देमातरम् जी के द्वारा अक्तूबर 1995 मे प्रथम दौरे के पश्चात् वहा धर्मान्तरण की लहर को रोकने मे सफलता मिला थी परन्तु कुछ माह पव पुन ऐसी खबरे सार्वदेशिक सभा को प्राप्त हुई कि इसाइयो की तरफ से टेरेसा तथा मुसलमानो के विदेशी सम्पर्क इन क्षेत्रो मे पुन सक्रिय हो गये थे विधर्मियो की इन कोशिशो के परिणाम स्वरूप और टेरेसा के दौरे के बाद तमिलनाड के रामनाथपुरम तथा तिरुनलवेली जिले म लगभग 40 व्यक्तियो के कत्ल की घटनाये हुइ मरने वालो मे बहुसख्यक दलित वर्ग के लोग ही थे सारे भारत की सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप ही तमिलनाडु मे भी लघु और [illegible] उद्योगो म धन के निवेश कर्ता सवर्ण [illegible] जो [illegible] मजदूर श्रमिको के रूप मे दलित लोग काम करते हैं। इस प्रकार अर्थ व्यवस्था दोनों के कन्धे पर चलती है। विधर्मी प्रचारक मालिक मजदूर के बीच छोटी मोटी बातों से एक दूसरे को उकसाकर उसे सवर्ण और दलितों तथा जातीय सघर्ष का रूप दे देते हैं। इसी का परिणाम है 40 व्यक्तियो की मौत।

तमिलनाडु के ही कामराज जिले के अन्तर्गत मगापुरम् गाव से 1500 दलितो को गाव छोडकर भागना पडा क्योंकि इनके साथ आगजनी और लूटपाट की गई थी। वन्देमातरम् जी ने इस गाव का भी दौरा किया श्री वन्देमातरम् जी के प्रचार अभियान के तहत् ही एलथुराई गाव मे दोनों वर्गों की जनता को एक बहुत बडे सम्मेलन मे बुलाया गया तथा दोनो वर्गो के प्रतिनिधियो ने इस सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त करते हुए यह सकल्प लिया कि भविष्य में जाति वाद के पारम्परिक विचारो को त्याग कर आपसी भाई चारे पर आधारित नई सामाजिक व्यवस्था चलाने का प्रयत्न करेगे। 17 मार्च को आयोजित इस सम्मेलन की विशेषता यह थी कि इसे दलित बस्ती मे ही आयोजित किया गया था और सवर्ण जाति के लोग बहुत बडी सख्या मे इसमे शामिल हुए। इसी अवसर पर तमिलनाडु आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमत्री श्री अन्नैयादासन् ने नए विद्यालय की स्थापना हेतु इसी गाव मे अपना एक भूखण्ड दान मे दिया। इस विद्यालय के सचालनार्थ तीन स्थानीय लोगो का एक टस्ट बनाया गया जो कि तमिलनाडु सभा का देखरेख मे कार्य करेगा। इस अवसर पर एक पूर्व विधायक ने 15000 रुपये तथा एक अध्यापक ने 3500/ रुपये दान देने की घोषणा की श्री क्रान्ति कुमार कोरटकर ने भी आन्ध्र प्रदेश सभा की तरफ से 5000/ रुपये की घोषणा की। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् जी ने भी सभा द्वारा हर सम्भव सहायता का आश्वासन देते हुए तत्काल 10,000/ रुपये विद्यालय सचालन समिति को प्रदान किये। इस आयोजन मे दलितो व सवर्णों के लिए एक सहभोज का भी आयोजन किया गया जो कि अपने आप में एक विलक्षण तथा ऐतिहासिक घटना माना गया। इस अवसर पर दलित व सवर्ण दोनों वर्गों की जनता आर्य समाज के इस महान योगदान की सराहना करते हुए उत्साह से हर्षित हो रही थी तथा सारा गाव वैदिक धर्म महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज की जय जयकार से गूज रहा था।

श्री वन्देमातरम् जी ने इस सार्वजनिक सम्मेलन के दौरान ग्रामवासियों को बडी सामान्य भाषा मे वैदिक धर्म के सिद्धान्तों को स्पष्ट करते हुए कहा कि परमपिता परमात्मा ने कभी किसी समय भी नागरिको में भेद भाव की कोई योजना नहीं बनाई थी यह सारा भेदभाव समाज के स्वार्थीय तत्वो द्वारा समय समय पर अपने मन से गढा गया है।

अक्तूबर 1995 मे की गई प्रचार यात्रा के दौरान कोडियामकुलम् नामक एक गाव मे आर्य समाज के प्रयत्नो की सराहना करते हुए सरकार ने विद्यालय सचालन के लिए तामिलनाडु सभा को 3 5 एकड़ भूमि उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया था जिसके लिए स्थानीय अन्य नेता स्वामी नारायण सरस्वती प्रयत्नशील हैं।

श्री वन्देमातरम् जी ने अपनी इस यात्रा में बासियो स्थलो पर स्थानीय जनता को सबोधित किया तथा मदुरै मे एक विशाल जनसभा का भी आयोजन किया गया। टूरिकोरम् जिले में श्री इस प्रचार यात्रा का विशेष प्रभाव रहा।

महर्षि दयानन्द के जीवन की घटनायें

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री महामन्त्री, सार्वदेशिक सभा

स्व० आचार्य रामदेव जी ने अपने समय में कुछ खोजपूर्ण महर्षि के जीवन पर अप्रकाशित उल्लेखों की चर्चा की है वह एक समस्या की समस्या है कि महर्षि की स्मृति को चिरस्थायी रखने के लिए आर्य समाजियों ने एक शिक्षण संस्थान कालिज की स्थापना कैसे की ? किन्तु यह समस्या उनके सामने ही है। जो कि डी० ए० वी० कालिज के इतिहास से अनभिज्ञ हैं। जिन्हें आर्य समाज के इतिहास से परिचय है वे भली भांति जानते हैं कि जब इस कालिज की स्थापना हुई थी तो अपील में यह लिखा गया था कि इस विद्यालय में वेद और वेदांगो को ही प्रधानता दी जाएगी। इसके सिवाय पंजाब यूनीवर्सिटी से सम्बन्ध जोड़ते हुए भी इस पर विचार किया गया था और अन्तमें यह निश्चय हुआ था क्योंकि पंजाब बोर्डकी उस समय निश्चित पाठविधि न थी इसलिए यदि वेद वेदांगों का अध्ययन करते हुए विद्यार्थी अपने आप मैट्रिक परीक्षा दे दे, तो इसमे कोई हानि नहीं है।

इस हेत्वाभास का परिणाम हमारे सामने हैं और गुरुकुल के संचालकों को इससे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए क्योंकि गुरुकुल दल में भी कुछ लोग उपर्युक्त विचार के पोषक पाए जाते हैं वे लोग प्रवृत्तिमार्ग के खतरों को समझते नहीं और न समझना चाहते हैं। और डी० ए० वी० कालिज की वर्तमान दशा को देखकर आंख बन्द रखना चाहते हैं। अस्तु !

महर्षि किस प्रकार की शिक्षा का प्रचार क्रियात्मक रूप में करना चाहते थे यह बात उनके पत्रों से स्पष्ट हो जाती है उनकी शिक्षा प्रणाली तो सब आर्यजन सत्यार्थ प्रकाश में पढ़ सकते हैं उदाहरणार्थ—

(क) उदयपुर के महाराणा सज्जन सिंह को एक पत्र में महर्षि ने लिखा था—

जब कभी राजकार्य से अवकाश मिले तभी व्याकरणादि शास्त्र मनुस्मृति के तीसरे अध्याय का अभ्यास कीजियेगा और व्यर्थ समय एक क्षण भी मत गंवाइएगा। जैसा शतरंज ह्राम्य और विनोद आदि में मूर्ख लोग अपना अमूल्य समय खोते हैं, वैसा करना सर्वथा अनुचित है।

इस पर कुछ व्यक्ति कह सकते हैं यह तो एक राजा को उपदेश मात्र है, इसलिए एक उद्धरण और दिया जाता है—

महाराजाधिराज जोधपुर नरेश को पत्र लिखते हुए महर्षि लिखते हैं कि—महाराज कुमार के संस्कार सब वेदोक्त कराइयेगा। २५ वर्ष तक ब्रह्मचारी रहकर प्रथम देवनागरी भाषा फिर संस्कृत विद्या जो सनातन आर्ष ग्रन्थ है जिनको पढ़ने में परिश्रम थोड़ा समय कम होवे और महालाभ प्राप्त हो इन दोनों को पढ़ने के पश्चात यदि समय हो तो अंग्रेजी में भी जो ग्रामर और फिलोसफी के ग्रन्थ हैं पढ़ने चाहिए।

महर्षि के दिवंगत होने पर परोपकारिणी सभा के २८ दिसम्बर १८८३ के प्रथम अधिवेशन में महादेव गोविन्द रानाडे ने महर्षि दयानन्द की स्मृति को स्थिर रखने के लिए "दयानन्द आश्रम" के उद्घाटन का प्रस्ताव पेश किया उसको कार्य रूप में परिणत करने के लिए परोपकारिणी सभा के उपमन्त्री प० मोहनलाल विष्णुलाल पाण्ड्या ने अपील प्रकाशित की थी जिसमें दयानन्द आश्रम का एक उद्देश्य यह बताया गया था कि वेद और वेदांग पढ़ने पढ़ाने के लिए एक वैदिक पाठशाला नियत की जाय, वेद-वेदांग सुनने और सुनाने के लिए एक व्याख्यान भवन तैयार किया जाय, और वैदिक पाठशाला ऐसी होवे जिसमे वेद वेदांग आदि शास्त्र स्वामी जी की प्राचीन प्रणाली से पढ़ाये जावें।

उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि महर्षि के उत्तराधिकारियों के महर्षि की शिक्षा प्रणाली को क्रियात्मक रूप देने के क्या विचार और संकल्प थे।

(२) आर्यों के सामने एक समस्या और जो है वह यह कि यद्यपि महर्षि ने मठाधीशों और गुरुओं के युग में आर्य समाज के प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना की परन्तु स्वयं न मठाधीश बने और न किसी को अपना उत्तराधिकारी नियत किया तो भी आर्य समाज के संगठन में परोपकारिणी सभा एक ऐसी संस्था है जिसके सदस्यों का आर्य प्रजा से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है। वे चुने नहीं जाते किन्तु नियत किये जाते हैं और जब तक उनका देहावसान न हो जाय तब तक उनका स्थानापन्न कोई नहीं नियत किये जाते।

सत्यार्थ प्रकाश के ६ समुल्लास को पढ़ने वाले लोगों को इस बात से आश्चर्य होता है कि जिनका महर्षि के साथ इतना गहरा सम्बन्ध था उन्होंने भी उनके बाद ऐसे संगठन को कैसे जन्म दिया किन्तु यह भ्रम भी उनको होता है जो आर्य समाज के इतिहास से अपरिचित हैं महर्षि के पत्रों से भी यह बात स्पष्ट है कि वे वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्ध में मुख्य-मुख्य समाजों के हाथ को ही चाहते थे। किन्तु अपने जीवनकाल मे वे आर्य समाजों की शक्ति को केन्द्रित करने का काम न करें। परन्तु परोपकारिणी के प्रथम अधिवेशन में महर्षि के परमभक्त और अग्रणी शिष्य महादेव गोविन्द रानाडे ने एक निम्न प्रस्ताव प्रवेश किया जो सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

सर्व आर्य समाजों का परस्पर तथा परोपकारिणी सभा से भी व्यवहार बढ़ाने हेतु आर्य समाजो के प्रतिनिधियो की एक सभा निर्माण करनी चाहिये और जब तक यह सभा नहीं बनती तब तक आर्य समाजों के जो-जो प्रतिनिधि परोपकारिणी सभा में है वे ही आर्य समाजों के प्रतिनिधि माने जावेंगे।

जब प्रतिनिधि सभा स्थापित हो जावेगी तब परोपकारिणी सभा में जो-जो सभासद पद खाली होंगे वे इस प्रतिनिधि सभा के योग्य सभासदों से इस प्रकार पूर्ण किए जावेंगे। कि परोपकारिणी सभा को सभासदों में आधे प्रतिनिधि सभा के लोग होंगे।

इसके साथ ही एक और प्रस्ताव पास हुआ जिसे पं० श्याम जी कृष्ण वर्मा ने रखा। सभा के इस वृतान्त की एक-एक प्रति सब आर्य समाजो को भेजी जावे और उनसे प्रार्थना की जावे कि प्रतिनिधि सभा के लिए सभासद नियत करने से तथा और कोई नवीन कार्य हो उससे परोपकारिणी सभा को यथाशक्ति शीघ्र याद करावें।

इन उद्धरणों से आर्य समाजियों की उपर्युक्त समस्या का समाधान हो सकता है।

महर्षि दयानन्द को अब तक बहुत से लोग संकुचित अर्थों में एक धार्मिक सुधारक ही समझते हैं। बहुत थोड़े लोग जानते हैं कि वे भारत में राजनैतिक विप्लव भी उत्पन्न करना चाहते थे भारत में नमक कर यदि किसी महापुरुष को अखरा तो वह महर्षि दयानन्द ही थे। जंगलात के कर का प्रतिवाद भी सबसे पहले महर्षि ने ही किया था।

स्वराज्य शब्द तथा उसका विचार भी महर्षि के दिमाग की ही उपज थी सरकारी न्यायालयों का बहिष्कार करके पंचायती फैसला करने का आदेश तो आर्य समाज के उपनियमों मे भी है।

किन्तु आज यह बताना भी आवश्यक है कि महर्षि देशी रियासतों को संगठित करके भारत की खोई स्वतन्त्रता को वापस लाने का प्रयत्न कर रहे थे यह केवल आकस्मिक घटना ही नहीं थी।

महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश उदयपुर मे लिखा और परोपकारिणी का प्रधान उदयपुर के महाराणा को बनाया। जिसके वंश ने बड़े कष्ट पाकर भी स्वाधीन भारत के झण्डे को लहराये रखा। और राजपूताने के राजा महाराजाओं को महर्षि शिक्षा देते रहते थे। उस शिक्षा मे बहुत से उत्तम सिद्धान्त प्रतीत होते हैं।

प्रथम यह था कि हिन्दू रियासतो के महाराज कुमार देशभक्ति और भारतीय संस्कृति के वायु मण्डल मे पले ताकि वे भारतीय रहें। महर्षि मनो विज्ञान के सिद्धान्त को खूब समझते थे कि संसार पर व्यक्तियों का नहीं पर विचारों का शासन है विचार और भाव ही राष्ट्रीयता के मूल होते हैं भारतीय वही है जिसके भारतीय विचार हो, इस दृष्टि से वे मुसलमानों को भी विदेशी समझते थे जिस बात को आज भी भारत अनुभव कर रहा है।

महर्षि जोधपुर महाराज को एक पत्र में लिखते हैं—

आप महाराज कुमार की शिक्षा के लिए किसी मुसलमान व ईसाई को मत रखिये नहीं तो राजकुमार भी इनके दोष सीखेंगे और आपकी सनातन राजनीति को नहीं सीखेंगे न वेदोक्त धर्म की ओर उनकी निष्ठा होगी। क्योंकि बाल्यावस्था मे जैसा उपदेश होता है वही दृढ़ हो जाता है। उसका छूटना दुर्घट है।

सत्यार्थ प्रकाश मनुस्मृति और दण्डविधान

प्रो० चन्द्र प्रकाश आर्य

सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी साहित्य का गौरवपूर्ण ग्रन्थ है। यद्यपि दयानन्द गुजराती भाषी थे किन्तु उन्होने अपना यह महत्वपूर्ण ग्रन्थ हिन्दी में लिखकर आज से १००-१२० वर्ष पूर्व ही राष्ट्रभाषा हिन्दी का मार्ग प्रशस्त कर दिया था। सत्यार्थ प्रकाश में दयानन्द ने वेदादि शास्त्रों तथा संस्कृत के अन्य प्राचीन ग्रन्थो के आधार पर धर्म शिक्षा, समाज, विद्या, अविद्या तथा सृष्टि आदि विषयो पर अपने विचार प्रकट किए हैं।

दयानन्द समाज तथा राष्ट्र में शासन व्यवस्था को प्रजा के कल्याण का आधार मानते हैं। इसलिए उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में एक पूरा अध्याय, छठा समुल्लास राजधर्म के विषय में लिखा है। समाज में शासन दण्ड या कानून के आधार पर चलता है। आज भी देश में भारतीय दण्ड संहिता लागू है। विधायिका—लोकसभा एव विधानसभायें कानून व अधिनियम बनाती हैं तथा संस्कारें, कार्यपालिका एवं प्रशासन उनको लागू करता है। दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे अध्याय में मनुस्मृति (७/१७-१८) के आधार पर लिखा है कि दण्ड ही राजा है, दण्ड ही नेता है। वह सबका शासन कर्ता है—'स राजा पुरुषो दण्ड: स नेता शासिता च स:"। मनुस्मृति (७/२४) का उद्धरण देकर दयानन्द आगे लिखते हैं—'दण्ड के बिना सब वर्ण सब लोग दूषित हो जाते हैं और सब मर्यादा, छिन्न-भिन्न हो जाती है। दण्ड के यथावत् न होने से सब लोगो का प्रकोप हो जाए।' महर्षि दयानन्द शासन व्यवस्था के लिए दण्ड को अनिवार्य मानते हैं।

आज देश में दण्डविधान में शिथिलता आ गई है अथवा कानून ऐसे हैं कि सम्बद्ध अपराधी लोग बच निकलते हैं। आजादी के बाद सैकड़ों जांच आयोग बैठे है। उनमें मन्त्री से लेकर बड़े-बड़े शासनाधिकारी दोषी पाए गए हैं परन्तु उनमें से कितने लोगों को सजा मिली ? मध्य प्रदेश के चुरहट लाटरी कांड की जांच को चलते हुए ५-६ वर्ष हो गए हैं किन्तु कोई परिणाम नहीं निकला, सम्बद्ध व्यक्तियों पर कोई असर नहीं ? हरियाणा मे बहुचर्चित महम कांड को लेकर सैकिया जांच आयोग ने जो रिपोर्ट दी, उसके बाद उसमें दोषी पाए गए लोगो एवं अधिकारियों को आज तक दण्ड नहीं दिया गया ? उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर कांड में केन्द्रीय जांच ब्यूरो ने पुलिस तथा अर्द्धसैनिक बलों के कुछ जवानो को दोषी पाया। इस कांड मे नारी जाति का सम्मान प्रताड़ित किया गया। देश के समाचार पत्रो ने इसकी निन्दा की। राष्ट्रीय महिला आयोग ने स्वयं जाचकर इस जघन्य कांड की पुष्टि की। उत्तर प्रदेश सरकार स्वय मूक बनी रही और दोषी लोगो को कोई सजा नहीं हुई ? राजस्थान की प्रसिद्ध समाज सेविका, भवरी देवी के साथ घृणित व्यवहार करने वालों को अभी तक सजा नही मिल पाई है। वह लगातार न्यायालयों की शरण मे जा रही है किन्तु प्रशासन की ओर से कोई कठोर कार्यवाही नहीं की गई। इस तरह कितने ही जघन्य काड घटते हैं किन्तु उन पर कोई कार्यवाही नही होती या उनको न्याय मिलते मिलते कई वर्ष लग जाते हैं या उनकी रिपोर्ट समाचार पत्रों तक रह जाती है।

इस बारे मे मनुस्मृति (८/३३४) का प्रमाण देकर दयानन्द ने कठोर दण्ड विधान का उल्लेख किया है—'चोर या अपराधी जिस-जिस अग से मनुष्यों मे विरुद्ध चेष्टा करता है, उस-उस अग को सब मनुष्यों की शिक्षा के लिए राजा हरण या छेदन कर दे अर्थात् काट दे। क्या आज का दण्डविधान इसकी आज्ञा देगा ? मनुस्मृति (८/१२५) के अनुसार दण्ड या सजा गुप्तेन्द्रिय, उदर, जिह्वा, हाथ, पग, आख, नाक, कान, देह और धन दस स्थानों पर दी जा सकती है। मनु० (८/१२६) के अनुसार वध का दण्ड भी दिया जा सकता है। परन्तु इतना कड़ा दण्ड क्या उचित है क्योंकि मनुष्य किसी अग को बना नहीं सकता और न ही जिन्दा कर सकता है। इसका उत्तर देते हुए दयानन्द 'सत्यार्थ प्रकाश' छठे समुल्लास मे कहते है कि 'एक पुरुष को इस प्रकार दण्ड देने से सब लोग बुरे काम करने से अलग रहेंगे।' यदि देश में राजनीति का शुद्धिकरण करना है, अपराधो को गम्भीरता से रोकना है तो उस तरह का कठोर दण्ड विधान करना ही होगा। राजनीति में भ्रष्ट तथा अपराधी लोगों के आने से देश की जनता को उचित न्याय नहीं मिल पा रहा है।

देश में सात पंचवर्षीय योजनायें पूरी हो चुकी हैं। किन्तु जनता तक उनका पूरा लाभ नहीं पहुंचा क्योंकि उनके कार्यान्वयन में उनको लागू करने में भारी गड़बड़ हुई है। इसके लिए दोषी व्यक्तियों एवं भ्रष्ट अधिकारियों को कठोर सजा मिलनी चाहिए थी। आज देश में गरीबी, एवं असमानता बढ़ती जा रही है। इंडियन कौंसिल फार रिसर्च इंटरनेशनल इकनामिक रिलेशन्ज' के. एस. गी गुप्ता के एक अध्ययन के अनुसार आर्थिक दृष्टि से आबादी की सबसे निचली सीढ़ी पर आने वाले ग्रामीण आबादी के ३० प्रतिशत हिस्से का कुल उपभोग में हिस्सा ८९-९० के १६ प्रतिशत से घटकर १९९२ में १५.६ प्रतिशत रह गया है। जबकि दूसरी ओर इसी अवधि में सबसे ऊपर के वर्ग के तीस प्रतिशत हिस्से का कुल उपभोग ४९.५८ प्रतिशत से बढ़कर ५०.४८ प्रतिशत पहुंच गया है। शहरी क्षेत्र में भी १९९०-९१ के बाद से इसी प्रकार की स्थिति दिखाई दी है। गरीबी की रेखा से नीचे जीवन बिताने वालों की संख्या ८९-९० में २८.१८ करोड़ थी किन्तु १९९२-९३ में वह बढ़कर ३५.४८ करोड़ तक पहुंच गई। देश की सम्पत्ति कुछ लोगों के हाथों में सिमटती जा रही है। भ्रष्टाचार और कालाधन इस व्यवस्था के मूल में है। कानून और शासन मूक एवं पंगु हो गया है। इसके लिए कठोर दण्ड विधान करना होगा अन्यथा भ्रष्टाचार का यह दानव समाज को निगल जाएगा। दण्ड या सजा देने में किसी का पक्षपात नहीं होना चाहिए चाहे कोई व्यक्ति कितना ही बड़ा क्यो न हो ?

इस बारे में दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि जिसका जितना ज्ञान और जितनी प्रतिष्ठा अधिक हो, उसको अपराध में उतना ही अधिक दण्ड मिलना चाहिए।" इसी सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में मनुस्मृति (८/३३६) का हवाला देते हुए दयानन्द आगे लिखते हैं कि—साधारण मनुष्य से राजा (या राष्ट्राध्यक्ष) को सहस्रगुणा—हजारगुणा दण्ड होना चाहिए।" फिर मन्त्री को आठ सौ गुणा, उससे न्यून सात सौ गुणा और उससे भी न्यून को छ: सौ गुणा। इसी प्रकार उत्तर अर्थात् जो एक छोटे से छोटा भृत्य अर्थात् चपरासी है। उसको आठ गुणे दण्ड से कम न होना चाहिए।

क्या आज के शासक, मन्त्री, प्रधानमन्त्री या राष्ट्राध्यक्ष इतनी कठोर सजा स्वीकार करेंगे ? क्या आज का दण्डविधान या कानून इस बात की आज्ञा देगा ? सम्भवत: इसके बिना देश का सुधार नहीं हो सकता ? चीनी चीनी घोटाले मे बड़े बड़े केन्द्रीय मन्त्री और अधिकारी लिप्त थे, बैंक धोखाधड़ी में भी कई केन्द्रीय मंत्रियों एवं अधिकारियों को रामनिवास मिर्धा जांच समिति ने दोषी पाया। क्या उनको अधिक से अधिक सजा मिलेगी।

जब सरकार और प्रशासन ही भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे तो कानून लागू कौन करेगा ? सजा किसको मिलेगी ? उत्तर प्रदेश में हाई कोर्ट के परिसर मे कानून को तोड़ा गया ? हरियाणा में एक पिछली सरकार के राज मे आबकारी एव कराधान निरीक्षकों की नियुक्तियों मे बड़े पैमाने पर धांधली हुई, जिसको पजाब-हरियाणा उच्च न्यायालय ने पिछले वर्ष रद्द कर दिया था। हरियाणा लोक सेवा आयोग को भी पंजाब हरियाणा हाईकोर्ट ने भ्रष्टाचार का दोषी पाया था। जिसके परिणामस्वरूप आयोग के अध्यक्ष तथा अन्य कई सदस्यो को त्याग पत्र देना पड़ा था। इसी प्रकार प्रशासनिक एवं सरकारी भ्रष्टाचार की खबरें अन्य प्रान्तों से भी आती रहती हैं। महाराष्ट्र मे खरनार ने मुख्यमन्त्री के विरुद्ध भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन चला रखा है। दक्षिण भारत में मेडिकल/इन्जीनियरिंग कालेजों मे प्रवेश हेतु धांधलियों के लिए कर्नाटक और आन्ध्र सरकार दोषी पाई गई थीं। उनको रोकने के लिए उच्चतम न्यायालय ने समय-समय पर आदेश जारी किए हैं। इसलिए दण्ड व्यवस्था को बिना किसी भेदभाव के सख्ती से लागू करना होगा।

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्ष प्रज्ञा की ज्वलन्त प्रतिमा : डा० प्रज्ञा देवी

डा० भवानीलाल भारतीय, जोधपुर

वेद मन्त्रों की द्रष्ट्री ऋषिकाओं की चर्चा हमने सुनी है। घोषा, अपाला, लोपामुद्रा, शची, इन्द्राणी आदि के नामो का परिचय मिला, किन्तु हमने इन मन्त्र द्रष्ट्री ऋषिकाओ को अपने चर्म चक्षुओं मे कभी नहीं देखा। उपनिषद् काल की ब्रह्मवादिनी नारियों का वृत्तान्त हमने पढा। गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियों के शास्त्रज्ञान तथा ब्रह्मज्ञान का परिचय भी प्राप्त हुआ, परन्तु ये तो सहस्राब्दियों पुरानी कथाए हैं। सुलभा जैसी नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रतधारिणी की कथा महाभारत मे आई है किन्तु यह घटना भी पाच हजार वर्ष पुरानी हो गई। मण्डन मिश्र की पत्नी सरस्वती (भारती) ने शकराचार्य से शास्त्रार्थ किया, यह वृत्तान्त भी शकर दिग्विजय मे पढा था। उपर्युक्त पण्डिता नारियो को चाहे हमने प्रत्यक्ष नही देखा किन्तु साम्प्रतिक काल मे डा० प्रज्ञा जैसी विदुषी, वैदिक तथा आर्ष प्रज्ञा की प्रतिमा को साक्षात् देखकर हमे विश्वास हो गया कि निश्चय ही हमारे देश की नारियो ने धर्म, दर्शन, शास्त्राध्ययन तथा पठन-पाठन के क्षेत्रो मे सर्वोच्च उपलब्धियां प्राप्त की हैं।

काशी तो सदा से विद्या की नगरी रही है। किन्तु यहा शायद ही किसी नारी को वेदादि शास्त्रो के अध्ययन-अध्यापनका अधिकार पौराणिक पण्डितों ने दिया हो। नारियो की बात छोडिये। काशी में तो आर्यसमाज के पण्डितों को भी शास्त्राध्ययन मे जैसी कठिनाइयां उठानी पडी हैं उसका इतिहास प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प० युधिष्ठिर मीमासक, स्वामी वेदानन्द तीर्थ तथा स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक सदृश आर्य विद्वानों के सस्मरणों से जाना जाता है। ऐसी स्थिति मे यह तो कल्पना करना भी कठिन है कि किसी आर्य नारी को काशी मे शास्त्र पढने की सुविधा मिल सकती है। प्रो० महेशप्रसाद की सुपुत्री कल्याणी देवी का प्रसग तो पचास वर्ष पुराना हो गया, जब हिन्दू विश्वविद्यालय के पण्डितों ने एक अब्राह्मण नारी को वेद तथा वैदिक कर्मकाण्ड का प्रशिक्षण देने से इन्कार कर दिया था।

काशी में वेदाध्ययन की परम्परा तो शताब्दियों पूर्व ही लुप्त हो गई थी। ऋषि दयानन्द ने जब १८६९ में इस नगरी मे आकर वहा के पण्डित समुदाय को शास्त्रार्थ के लिये ललकारा तो उन्हें जानकर बडी हैरानी हुई थी कि इतनी बडी काशीपुरी में प० बाल शास्त्री तथा प० मणक श्रोत्रिय के अतिरिक्त वेद का जानने वाला कोई पण्डित नही है। यह महर्षि दयानन्द का ह पुण्य प्रताप था कि न केवल काशी, अपितु समस्त भारत मे वेद की चर्चा पुन प्रवर्तित हुई अन्यथा काशी मे नव्य व्याकरण नव्य न्याय नवीन वेदान्त तथा नव्य मीमासा के अतिरिक्त आर्ष शास्त्रो के अध्ययन-अध्यापन का सर्वथा लोप हो गया था।

आर्ष शास्त्रों के पठन पाठन का पुनरुद्धार मथुरा मे निवास करने वाले एक प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द ने किया नेत्र हीन पर भी स्वोपार्जित विद्या तथा निमर्ग प्राप्त विवेक बुद्धि से उन्होंने संस्कृत व्याकरण का अशेष वैभव महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी तथा उस पर लिखे गये महर्षि पतञ्जलि के महाभाष्य म ही प्रकट हुआ है। इन आर्ष ग्रन्थों से भिन्न कौमुदी, सारस्वत, शेखर आदि ग्रन्थों को उन्होंने अनार्ष घोषित किया था। स्वामी विरजानन्द के वे क्रान्तिकारी विचार १८६० की अवधि मे उनके प्रज्ञाशील शिष्य दयानन्द सरस्वती मे सक्रामित हुए और उन्होंने आर्ष ग्रन्थप्रामाण्यवाद के इस सिद्धान्त को केवल व्याकरण तक ही सीमित न रखकर शास्त्रों की सभी शाखाओं मे लागू किया। फलत उन्होंने यह स्पष्ट कहा कि विमल प्रज्ञा के धनी ऋषियों के ग्रन्थों [illegible] से वैसा ही लाभ प्राप्त होता है जैसा समुद्र में एक बार गोता लगाकर अनेक मूल्यवान रत्नों को पा लेना। जब कि अनार्ष ग्रन्थो मे श्रम, समय और शक्ति का वैसा ही व्यय होता है जैसा हम वर्षों तक पहाड खोदते रहे और हमे कुछ भी सार्थक वस्तु न मिले।

ऋषि दयानन्द ने अपनी प्रस्थानत्रयी (सत्यार्थप्रकाश सस्कार विधि तथा ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका) मे आर्ष पाठविधि की व्यवस्था की थी किन्तु आर्य समाज के अधिकांश गुरुकुलो मे उसे क्रियान्वित नही किया जा सका। इसके कारण कुछ भी क्यो न रहे हो, मोटे तौर पर यह मान लिया गया कि आर्य समाज मे ऐसे पण्डितों का अभाव ही है जो पाणिनीय शब्दशास्त्र का सहारा लेकर व्याकरण पढा सकें। तथापि कुछ पण्डित अवश्य थे जो आर्ष व्याकरण मे प्रकर्षता प्राप्त करने के अनन्तर पाणिनीय क्रम से ही व्याकरण पढाना श्रयस्कर समझते थे। इनमे अन्यतम थे प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जिन्होंने सर्वदानन्द साधु आश्रम (हरदुआगज अलीगढ) मे स्वामी पूर्णानन्द नामक एक विद्वान् से पाणिनीय शास्त्र का अध्ययन किया था। कालान्तर मे जिज्ञासु जी अमृतसर तथा लाहौर मे रहकर आर्ष व्याकरण का अध्ययन कराते रहे। देश विभाजन के पश्चात् उन्होंने काशी को अपना कार्यक्षेत्र बनाया और व्याकरणादि शास्त्रों के अध्ययन अध्यापन मे प्रवृत्त हुए। जिज्ञासु जी की सुविस्तृत शिष्य परम्परा रही है जिसमे प० युधिष्ठिर मीमासक आचार्य भद्रसेन, प० याज्ञवल्क्य प० धर्मदेव निरुक्ताचार्य, डा० विजयपाल, डा० वीरेन्द्र डा० मुनीश्वरदेव, डा० सुद्युम्नाचार्य जैसे सुधी विद्वानो के अतिरिक्त डा० प्रज्ञा तथा सुश्री मेधा जसी विदुषियो की गणना होती है।

डा० प्रज्ञा का जन्म ५ मार्च १९३७ को मध्यप्रदेश के सतना जिले के कोलगवा नामक ग्राम के एक सद्गृहस्थ श्री कमलाप्रसाद आर्य के यहा हुआ था। १९५४ मे श्री आर्य का स्वर्गवास हो गया तो उनकी पत्नी श्रीमती हरदेवी ने अपनी दो पुत्रियो प्रज्ञा तथा मेधा एव पुत्र सुद्युम्न को वाराणसी लाकर प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के सुपुर्द कर दिया। तब कौन जानता था कि ये बहनें काशी मे रहकर न केवल उच्चकोटि का ज्ञानार्जन करेंगी अपितु इसी पौराणिक नगरी मे पाणिनि कन्या महाविद्यालय की स्थापना कर भारत के नारी समाज को समुन्नत करने मे अपना सर्वस्व समर्पित कर देंगी। प्रज्ञा जी ने जिज्ञासु जी के सान्निध्य मे वेद, वेदाग दर्शन आदि का तलस्पर्शी अध्ययन किया तथा १९६१ मे सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से विद्यावारिधि की उपाधि भी प्राप्त की।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

विश्व समाज

आर्य समाज की स्थापना के पीछे एक सपना था एक तडफ थी विश्व समाज की पुनर्स्थापना की, वेद ज्ञान के पुन प्रचार की और एक समाज की सरचना की जहां सबकी उन्नति समझी जाए और सब आपस मे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करें।

यह एक दृष्टि थी युग पुरुष पूज्य महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज की और इसलिए एक सगठन खडा किया जिसके माध्यम से हर पीडित व शोषित को एक मच मिले, एक आवाज मिले।

हिन्दुओं के अस्तित्व को खतरा

चन्द्रसिंह आर्य "बन्धु"

सन् १९४७ में देश विभाजन के समय भारत में हिन्दू मुसलमानों से ६ ४८ गुणा थे और जून १९९१ तक केवल ६ ४७ गुणा रह गये हैं, अविभाजित भारत में जब हिन्दू तीन गुणा थे तब देश का विभाजन हो गया था। भारत के जनगणना आयुक्त की ताजा रिपोर्ट के अनुसार १९८१ ९१ के दौरान मुस्लिम जनसंख्या २ करोड़ ४० लाख बढ़ी और आगे भी अन्य समुदायों के मुकाबले तेजी से बढ़ रही है।

देश विभाजन के पश्चात् यदि मुसलमानों की आबादी हिन्दुओं जैसी ही बढ़ती तो मुसलमान जून १९९१ तक १ २४ करोड़ कम होते लेकिन १९९१ में मुसलमानों की आबादी का अनुपात १० ८८ प्रतिशत था जबकि अब वह बढ़कर ११ १७ प्रतिशत हो गया और हिन्दुओं की आबादी का अनुपात ८३ ०१ प्रतिशत से गिरकर ८२ ४१ प्रतिशत रह गया।

सन् १९८२ में छपा रोमन कैथोलिक ईसाइयों का वर्ल्ड क्रिश्चियन एनसाइक्लोपीडिया के अनुसार ईसाइयों के १,२०,४७९ से अधिक पूर्ण-कालिक मिशनरी भारत में हिन्दुओं को ईसाई बनाने में लगे हैं तथा १,७५,००० से अधिक हिन्दुओं को प्रतिवर्ष ईसाई बनाते हैं। अधिक प्रतिशत बढ़ोतरी के कारण मुसलमान हिन्दुओं के मुकाबले व ईसाई १५,००० से अधिक हिन्दू धर्म में दीक्षित नहीं हो पाते। मुसलमानों व ईसाइयों की संख्या बढ़ने के कारण देश में बूचड़खानों की संख्या भी बढ़ी है।

हिन्दुओं के सभी वर्गों से लगभग १,००,००० स्त्रियां व लड़कियां प्रतिवर्ष साउदी अरब देशों में मुसलमान शेखों के घरों में नौकरी करने के बहाने पहुंच जाती हैं जहां उनका हर प्रकार का शोषण होता है।

मुस्लिम और क्रिश्चियन देशों से लगभग १,४०० करोड़ रुपया प्रति-वर्ष हिन्दुओं का धर्मान्तरण करने एवं भारत को विखण्डित करने हेतु आता है।

जमायते इस्लामी के मदरसों मकतबों की भारत में इस्लामीकरण की शिक्षा पद्धति को देखते हुए अरब सरकारों के संरक्षण में गठित की गई रबाइत अल-आलम इस्लामी सैकड़ों करोड़ रुपया प्रति वर्ष भारत में खर्च कर रही है। सन् १९५० में भारत में ऐसे ८८ मदरसे थे जो आज बढ़ कर ३१,००० हो गये हैं जिनमें प्रतिवर्ष ६,२०,००० कट्टर हिन्दू विरोधी नवयुवक तैयार हो रहे हैं जिनको खुदाई फौज के इस्लामी योद्धा कहा जाता है। पाकिस्तानी खुफिया आतंकवादी एजेन्सी आई एस आई से ये खुद है जो भारत के विरुद्ध जेहाद (अघोषित युद्ध) चलाये हुए हैं।

यह जानते हुए भी कि इन हथियारों का प्रयोग भारत के विरुद्ध हुआ है और होगा अमरीका फिर विरोध के बावजूद पाकिस्तान को ३७ करोड़ डालर मूल्य के हथियारों की सप्लाई कर रहा है। इसके अतिरिक्त फ्रांस, चीन, उक्रेन और मुस्लिम देश भी पाकिस्तान को सैनिक साज-सामान व आर्थिक सहायता दे रहे हैं जिनका उपयोग स्पष्टतः भारत के विरुद्ध होगा।

कांग्रेस, जनता दल, समाजवादी और साम्यवादी दल के नेता अपने वोटों की खातिर हिन्दुओं व उनके नेताओं की सार्वजनिक आलोचना व निन्दा करते हैं और उन्हें साम्प्रदायिक कहकर बदनाम करने में लगे हैं।

आर्य समाज देश में और विशेषकर बहुसंख्यक हिन्दुओं के विरुद्ध होने वाली राजनीतिक व सामाजिक गतिविधियों को खामोशी से नहीं देख सकता क्योंकि आर्य समाज देश की राजनीति, धर्म व समाज से जुड़ा है और वह इनसे कदापि अलग नहीं रह सकता। आर्य समाज की शिरो-मणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से उक्त गति-विधियों के विरुद्ध आर्य समाज अपना विरोध सरकार को भेजता है और उस पर आगे निरन्तर नजर रखने हेतु सरकार से मांग करता है कि—

सरकार सब राजनीतिक दलों के विचार-विमर्श से सभी धर्मावलम्बियों पर परिवार-नियोजन एक समान रूप से लागू करवाये।

सरकार समान नागरिक संहिता (कामन सिविल कोड) बनाये जो सभी पर एक समान रूप से लागू हो।

सरकार मदरसों/मकतबों में संविधान विरोधी व राष्ट्र विरोधी शिक्षा पर प्रतिबन्ध लगाये और उनके लिए आने वाले विदेशी धन पर अंकुश लगाये।

मस्जिदों के इमामों को सरकारी खजाने से वेतन देने का नियम यदि कोई हो तो उसे रद्द करे क्योंकि मस्जिदों में राष्ट्र-विरोधी गतिविधियां व राजनीतिक गतिविधियां होती हैं। यदि यह नहीं हो सकता तो मन्दिरों के पुजारियों व पुरोहितों को भी सरकारी खजाने से वेतन दिलवाये।

सरकार मुसलमानों व ईसाइयों की अल्पसंख्यकों के नाम पर तुष्टी-करण की नीति को समाप्त करे।

सरकार देश में बूचड़खानों की संख्या न बढ़ाते हुए इसे सीमित करे तथा दुधारु पशु गाय व अन्य कृषिजन्य पशुओं का संरक्षण करे।

सरकार अमरीका से विरोध जताये कि वह पाकिस्तान को संहारक हथियारों से लैस न करे और अनेक क्षेत्रों में उसका बहिष्कार करे।

सरकार अपने मन्त्रियों, नेताओं को आगाह करे कि वे हिन्दुओं और उनके नेताओं के विरुद्ध विषवमन न करें और उन पर सार्वजनिक रूप से अनर्गल आरोप न लगायें और न ही कीचड़ उछालें।

देश में बढ़ती जनसंख्या पर रोक लगाने हेतु केवल हिन्दू ही परिवार नियोजन कर रहे हैं जबकि मुसलमानों को पांच-पांच बीवियां रखने तक की छूट है और वे परिवार नियोजन को नहीं अपनाते। वे कहते हैं कि यह उनके शरीयत के खिलाफ है। देश के कायदे कानून मुसलमानों पर भी समान रूप से लागू करवाये।

तिब्बत, बंगलादेश व पाकिस्तान से हजारों लाखों की संख्या में लोग भारत में आ बसे हैं जिससे भारत में हिन्दुओं के सभी समीकरण डगमगा गये हैं उन्हें वापस उनके देशों को भेजा जाए और काश्मीरी हिन्दुओं को ससम्मान उनके घरों को भेजा जाए तथा उनकी क्षतिपूर्ति करे।

भारत में और कश्मीर में जितने भी हिन्दू मन्दिर तोड़े गये हैं सरकार उनका पुनर्निर्माण करवाये और उनकी भी क्षतिपूर्ति करवाये।

एम० यू० ३३-ए पीतमपुरा, दिल्ली-३४

पायल में अमर शहीद पं० लेखराम जी का स्मारक लगभग तैयार

जैसा कि आर्य जनता को पता है ग्राम पायल जिला लुधियाना में एक पुरानी आर्य समाज थी जो अब बिलकुल गिर चुकी थी। सभा की अन्तरंग सभा ने निश्चय किया था कि क्योंकि पायल के साथ प० लेखराम जी अमर शहीद का विशेष सम्बन्ध है वहां के कुछ लोगों को मुसलमान होने से बचाने के लिए प० लेखराम जी ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए चलती गाड़ी से छलांग लगा दी थी क्योंकि वह गाड़ी उस स्टेशन पर नहीं रुकती थी और हिन्दुओं को मुसलमान होने से बचा दिया था। इसलिए इस आर्य समाज को उनके स्मारक के रूप में सभा की ओर से बनवा दिया जाए। श्री रणवीर जी भाटिया सभा उपप्रधान की देखरेख में यह भवन बन रहा है जिस पर दो लाख रुपए व्यय हो चुका है शायद इतना ही और हो जाए। लेंटर खुल गया है। प्लस्तर और लकड़ी का कार्य हो रहा है। चार दुकानें भी लगभग बनकर तैयार हो गई हैं। उनके शटर लगवाए जा रहे हैं। सारा कार्य पूर्ण होने पर इसका उद्घाटन समारोह किया जाएगा जिसकी सूचना आर्य जनता को पूर्व दे दी जाएगी।

—अश्विनीकुमार शर्मा एडवोकेट
सभा-महामन्त्री

योगमुनि जी का हठवाद (२)

सुश्री सूर्या कुमारी, व्याकरणाचार्या

अनु मातर पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य शर्मणि । (साम० ३१)

मन्त्र का देवता अर्थात प्रतिपाद्यविषय अग्नि है । मन्त्रार्थ है वह अग्नि-स्वरूप परमात्मा माता पृथिवी को, अनु-सदृश (अन्विति सादृश्यापरभावम्, निरु० १।३) अर्थात पूर्वकल्प के समान अथवा प्रत्येक प्रलय के पश्चात वि वावृते-वर्तन करता है अर्थात निर्माण करता है । नाकस्य-सुखविशेष (कमिति सुखनाम तत्प्रतिषिद्ध प्रतिषिध्येत, निरु० २।४--कम्, न कम् अकम्, न अकम्--नाक अर्थात दुख रहित) के, शर्मणि--आश्रय मे तस्थौ--स्थित है इस प्रकार मन्त्र का तात्पर्य यह हुआ कि परमात्मा इस जगत का निर्माण करता है तथा इसी जगत मे रहता है तथापि जगत के सुख दुख से लिप्त नहीं होता है । वह अपने ही पूर्णानन्द मे निमग्न रहता है । इस मन्त्र मे मे 'सर्प सूकर, कीड़ मकौड़े मे भी परमात्मा कैसे विद्यमान है वह सदा पवित्र है' लेखक की इस बहुत बड़ी शङ्का का भी उत्तर निहित है । मन्त्र में किसी लोक विशेष का निर्देश नही है ।

द्वितीय मन्त्र का प्रथम चरण इस प्रकार है--

२ 'प्र तद्वोचेदमृतस्य विद्वान गन्धर्वो धाम परम गुहायत्'

(अथर्व० २।१।२)

गन्धर्व अर्थात वाणी को धारण करने वाला विद्वान त अमृतस्य-उस अविनाशी अमरधर्मा परब्रह्म का परम धाम--परम धाम, यद् गुहा-जो हृदय है उसका उपदेश करे । मन्त्र मे परमधाम पद का गुहा पद विशेषण है । वह गुहा पद परमात्मा के निवास स्थान का सुस्पष्ट निर्देश कर रहा है जो हृदय का वाचक है क्योंकि 'इद गुहेव तद् हृदयम्' (शतपथ ब्राह्मण० ११।२।६।३) के इस वचन में गुहा सज्ञा हृदय की बतायी गई है । इस प्रकार सिद्ध हो गया उस परमात्मा का निवास स्थान हृदयाकाश है, कोई अपूर्व ब्रह्मलोक नहीं । लेखक ने यहा गुहा पद को छोड़कर अपूर्व ब्रह्मलोक की कल्पना की है ।

तृतीय मन्त्र इस प्रकार है--

३ 'अग्नि परेषु धामसु कामो भूतस्य भव्यस्य । सम्राडेको विराजति'

अथर्व० ३।३६।३

मन्त्र का देवता अग्नि है । एक काम अग्नि सम्राट्--वह अकेला कमनीय अग्नि सबका राजा परमात्मा भूतस्य भव्यस्य-बीते हुए तथा होने वाले 'परेषु धामसु' जो दूर-२ धाम स्थान है उनमे, विराजति-विविध प्रकार से दीप्त होता है अर्थात वह परमात्मा प्रत्येक सृष्टि में होने वाले अपनी-अपनी निश्चित सुदूर अवधि में स्थिति जो पृथिव्यादि लोक हैं उनमें प्रकाशित होता है । मन्त्र में पृथिव्यादि लोको को ही परमात्मा का धाम बताया गया है । लेखक ने इस मन्त्र के प्रकरण को छोड़कर अदृश्य ब्रह्मलोक की चर्चा की है परन्तु धाम का अर्थ यह है--

धामानि त्रयाणि भवन्ति स्थानानि नामानि जन्मानीति

(निरु० ९।२२)

ब्रह्मलोक का अर्थ :

ब्रह्मलोक--ब्रह्मदर्शन । ब्रह्मलोक शब्द ब्रह्मन तथा लोक शब्द के समस्त होने पर निष्पन्न होता है । लोक शब्द लोकृ दर्शने धातु से कर्मादि अर्थों में प्रत्यय होकर सिद्ध हुआ है । उपर्युक्त मन्त्रो के अनुसार--

१-- ब्रह्म परमेश्वर यत्र लोक्यते दृश्यते स ब्रह्मलोक

अर्थात जिस स्थान मे परमात्मा का दर्शन होता है वह ब्रह्मलोक है । अर्थात हृदय में परमात्मा का दर्शन होने से हृदय ब्रह्मलोक है ।

२--ब्रह्म-परमात्मा विदुषा लोक्यते दृश्यते इति ब्रह्मलोक ।

अर्थात परमात्मा ब्रह्मलोक है । विद्वान के द्वारा परमात्मा का दर्शन होता है ।

३ ब्रह्मणा परमेश्वरेण लोक्यते दृश्यते द्योत्यते वा य स ब्रह्मलोक ।

अर्थात यह सम्पूर्ण नामात्मक रूपात्मक जगत परमपिता परमेश्वर के द्वारा देखा जाता है, प्रकाशित किया जाता है, अत यह जगत ब्रह्मलोक है । इस प्रकार यह सिद्ध हुआ हुआ कि परमात्मा एव उभयात्मक जगत तथा हृदय ब्रह्मलोक है ।

यहा लेखक उपर्युक्त ब्रह्मलोक की व्याख्या माने न माने किन्तु अपने सायणाचार्य का तो मानेंगे ही यथा--

'स्तुतामया वरदा अथर्व० १९।७१।१ में आए ब्रह्मलोक शब्द का अर्थ सायणाचार्य ने ब्रह्मणो लोक सत्यलोक ब्रह्मैव वा लोक लोक्य मान विश्वम्, परतत्वम् । इन शब्दो मे किया है । सायणाचार्य ने सत्यता को तथा परब्रह्म को ही ब्रह्मलोक बताया है । किसी देश विशेष को ब्रह्मलोक नही कहा है ।

और जो लेखक को अग्न आयाहि० (साम० १) आदि मन्त्रो द्वारा प्रभु को पास बुलाना देखकर परमात्मा के कहीं अन्यत्र रहने की शङ्का हुई है वह सर्वथा हास्यास्पद है । भला बताइए जो हम सबका मन है और वह हमारे अन्दर है, वह अन्यत्र नही जा सकता है यह हम भली प्रकार जानते हैं पुनरपि 'यत्ते यम वैवस्वत मनो जगाम दूरकम् । तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे' आदि मन्त्रो के ऋग्० १०वें मण्डल के ५८व सम्पूर्ण सूक्त के द्वारा मन को लौटाया गया है । वस्तुत यहा मन का शरीर से निकल जाना या उसे लौटाए जाने का तात्पर्य नही है अपितु मन का अपेक्षित विचार मे न होना ही दूर जाना है तथा अपेक्षित विचारो मे सयुक्त करना ही लौटाना है । इसी प्रकार परमात्मा को भी जब हमारी चञ्चल वृत्तिया हमारे अन्दर रहने वाले परमात्मा को दूर कर देती हैं यही परमात्मा का दूर जाना है, तथा मन एव आत्मा के द्वारा अपने भीतर परमात्मा का अनुभव करना ही परमात्मा को समीप बुलाना है । इसी रहस्य को तद् दूरे तद्वन्तिके' (यजु० ४०।५) मन्त्र स्पष्ट शब्दो मे उद्घाटित कर रहा है ।

योगमुनि जी की मनगढ़न्त परमेश्वर शब्द की व्याख्या

लेखक का मानना है कि 'त्रैतवाद मे आत्मा परमात्मा और प्रकृति की इन तीनो शक्तियों को मिलाकर ही उसे परमेश्वर कहा जाता है । लेखक ने इन पक्तियो को लिखकर त्रैतवाद के मूलभूत सुस्पष्ट सिद्धान्त को अपनी अज्ञानता से ओझल कर दिया है । जब कि--

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समान वृक्ष परिषस्वजाते ।

(शेष पृष्ठ १० पर)

डा० प्रज्ञादेवी

(पृष्ठ ३ का शेष)

१२ जुलाई १९७१ को उन्होंने काशी मे जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय की स्थापना की। आज महाविद्यालय का स्थापित हुए पच्चीस वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस चौथाई सदी मे इस महा विद्यालय मे शिक्षा प्राप्त कर सैकड़ों कन्याओं ने भारतीय धर्म, सभ्यता संस्कृति कला तथा दर्शन का जो पाठ पढा है वही इस शिक्षण संस्था के गौरव का आख्यान करने के लिये पर्याप्त है। यह सब डा० प्रज्ञा जी के परिश्रम लगन अध्यवसाय त्याग तथा तप का फल है।

आश्चर्य होता है कि संस्था संचालन के गुरुतर भार को वहन करती हुई डा० प्रज्ञा किस प्रकार सामाजिक शैक्षिक तथा गतिविधियो मे स्वयं को निरन्तर संपृक्त रखती थी। समस्त भारत के आर्य समाजों मे वे प्रचारार्थ जातीं। व्याख्यान प्रवचन तथा कथाओं का निरन्तर क्रम जारी रहता। साथ ही वेद पारायण यज्ञोंकि ब्रह्मा के पद पर आसीन होकर बृहत् यज्ञ यागों का सम्पादन करना उनकी परिश्रम शीलता का प्रमाण प्रस्तुत करता है। महाविद्यालय मे शैक्षिक और सांस्कृतिक प्रवृत्तियो का जैसा विस्तार उन्होंने किया था इसका पूर्ण परिचय तो मुझ १९९४ मे तभी मिला जब मैं स्वयं उक्त संस्था के वार्षिकोत्सव मे गया और यह सब चर्म चक्षुओं से देख सका।

डा० प्रज्ञा की ऋषि दयानन्द तथा आर्य समाज के प्रति असीम श्रद्धा थी। इसका एक ज्वलन्त प्रमाण मुझ तब मिला जब कई वर्ष पूर्व मैंने उन्हें दयानन्द शोध पीठ पंजाब विश्वविद्यालय के अध्यक्ष पद पर रहते समय ऋषि दयानन्द की वेद व्याख्या पद्धति पर आयोजित एक अखिल भारतीय संगोष्ठी मे आमन्त्रित किया। एक विद्वान जो जन्म से आर्यसमाजी तो थे ही वेद विद्या में स्वयं को पारंगत भी समझते थे अकारण ही सायण की प्रशंसा करते करते ऋषि दयानन्द के प्रति कुछ आलोचनात्मक टिप्पणियां कर गये। गोष्ठी में आमंत्रित अन्य विद्वानो ने उसे अनुचित माना। इसने डा० प्रज्ञा जी से निवेदन किया कि वे अपने व्याख्यान में आक्षेपकर्ता की भ्रान्त धारणाओं का करारा उत्तर दें। उस सभा में उपस्थित सभी श्रोताओं को डा० प्रज्ञा का वह तेजस्वी उत्तर स्मरण होगा जो उन्होंने ऋषि दयानन्द की वेद व्याख्या शैली के समर्थन मे दिया था तथा सायणाचार्य की प्रशंसा करने वाले वे कथित विद्वान अपना सा मुंह लेकर रह गए थे।

मन्त्रमालिका देवसभा उच्चारा नारो स्वमन्तव्यप्रकाश व्याख्यानमाला मदरहो का सुधागमन आदि अनेक ग्रन्थो के लेखक व सम्पादक से डा० प्रज्ञा की असाधारण विद्वता का परिचय तो मिलता ही है, अष्टाध्यायी भाष्य लेखन तथा प० क्षेमकरणदास त्रिवेदी कृत अथर्ववेद भाष्य के सम्पादन से उनका गहन पाण्डित्य पदे पदे प्रमाणित होता है। प्रज्ञावान पुरुष दीर्घायु नही होते। यह बात प्रज्ञा जी के लिए भी सिद्ध हुई। किन्तु यहा आकर तो मनुष्य को दैवी विधान के समक्ष नतमस्तक होना ही पड़ता है।

वर की आवश्यकता

आर्य परिवार की कन्या के लिए वर की आवश्यकता है। कन्या की लम्बाई ५ फुट ४ इंच है शिक्षा बी ए गृह विज्ञान मे प्रशिक्षण प्राप्त है, रंग साफ है गोत्र शाण्डिल्य जाति बढ़ई आर्य परिवार है

आर्य परिवार बढ़ई को ही प्राथमिकता दी जाएगी। सम्पर्क करें।

—मन्त्री

बड़ी बाजार आर्य समाज, मुंगेर (बिहार)

कर्म एवं प्रारब्ध

दुःख का अनुभव करने वाले ज्ञानी धैर्यवान होते हैं।
साहस और सुखी मन से जो काम करते विरले होते हैं॥
दुःख की घड़ियां तो जीवन को अति चैतन्य बनाती हैं।
यदि बुद्धि पर अंकुश रखो तो हृदयमें सान्त्वना आती है॥
फूलो से भी प्यार करो और काटो से भी प्यार करो।
जो प्रभु तुम्हे समर्पित करता उसको भी स्वीकार करो॥
किसके कुल म दोष नही है दोष ने किसको नही सताया।
आपत्ति, कष्ट सभी पर आए जीवनभर सुख किसने पाया॥
कर्मानुसार दुःख और सुख मे सबको समय बिताना होगा।
यह प्रभु विधानकी कर्ता व्यवस्था इसको तो अपनाना होगा॥
जो कुछ हमे प्राप्त होता है प्रभु कृपा से ही मिलता है।
जो जमा राशि प्रभु खाते मे उतना ही हमको मिलता है॥
यदि शरीर स्वस्थ रखना चाहो तो पेट साफ रखना होगा।
मन को यदि वश मे कर लोगे तो दुःख नहो सहना होगा॥
नरक, स्वर्ग पृथ्वी पर ही है पर प्राणी ध्यान नही धरते हैं।
नरक मे कष्ट क्लेश होते वे यही दिखाई देते हैं॥
ज्ञान वृद्धि मन की निर्मलता से ही सम्भव होती है।
गुरु मत मार्ग चले जब प्राणी मिथ्या तृष्णा हट सकती है॥
यदि धैर्य और साहस रहे तो बुद्धि ठीक काम करती है।
प्रभु भी उसे सहारा देते जीवन मे गरिमा भरती है॥

हृदयनारायण महेन्द्र
हनुमान भवन गजापाइसा मथुरा

आर्य समाजों के निर्वाचन

—आर्य समाज नारी पचदेवपुरा, गाजीपुर मे श्री रामकृतसिंह प्रधान, श्री ज्ञान नारायण पाण्डेय मन्त्री, श्री सदानन्द आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज मुलुण्ड कालोनी मे श्री विनोदकुमार ओबेराय प्रधान, श्री शिवदत्तसिंह मन्त्री श्री हर्षवर्धन गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज बीसलपुर मे श्री डा० सत्येन्द्रकुमार प्रधान श्री भूपराम आर्य मन्त्री, श्री हरस्वरूप कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज सुल्तानपुर पट्टी म श्री दुर्गासिंह प्रधान, श्री वेदप्रकाश आर्य मन्त्री, श्री दर्शनसिंह कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज लका कालोनी वारा म श्री भेरूलाल जी राठौर प्रधान श्री श्री गणेशलाल यादव मन्त्री, चन्द्रप्रकाश पाचाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा पीलीभीत मे श्री कृष्णकुमार शास्त्री प्रधान, श्री मोहनलाल जी आर्य मन्त्री, श्री विश्रामसिंह कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज राऊ मे श्री मोहनलाल दुबे प्रधान, श्री कन्हैयालाल मुकाती मन्त्री, श्री रामनारायण मुनीम कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज सिंगरौली कोलियारी मे सेठ माताप्रसाद अग्रहरी प्रधान, श्री भूपेन्द्रनाथ उप्पल मन्त्री, डा० नन्दलाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश म श्री विद्याधर जी प्रधान, आचार्य रामानन्द जी मन्त्री, श्री हृदयेश आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आचार्य राजसिंह आर्य, डा० कुन्दनलाल पाल सरहन्दी गेट आर्य समाज पटियाला, जिन्होंने एड्ज का रोगी निरोग किया को आर्य समाज राजपुरा, टाऊन की ओर से प्रतीक चिह्न प्रदान करते हुये।

आर्यसमाज राजपुरा टाऊन (पंजाब) ने ऋषि बोध उत्सव धूमधाम से मनाया

आर्यसमाज राजपुरा टाउन (पजाब) ने १७ से २५-२-९६ तक ऋषिबोध उत्सव धूम-धाम से मनाया। पूज्यपाद आचार्य ब्रह्मचारी राजसिंह जी आर्य देहली वाले के ब्रह्मत्व मे अथर्ववेद का महापारायण यज्ञ हुआ। प्रात और साय उनके 'प्रभु मिलन की राह' पर हृदयग्राही प्रवचन हुए।

नगर के लोग इन प्रवचनो से बहुत प्रभावित थे।

२४-२-९६ को दोपहर २॥ बजे एक विशाल शोभायात्रा निकली इस यात्रा मे ९ ट्रेक्टर ट्राली पर ९ हवन कुण्डो पर हवन करते हुए आर्य जन सारे नगर से गुजरे। इसमे क्षत्र की आर्य समाजो का विशेष योगदान रहा।

इस कार्यक्रम मे आचार्य जी ने अपने हाथो से ज्ञानचन्द आर्य को यज्ञरत्न, श्री सतीश बिरमानी को सेवा रत्न और श्री नीरज कुमार को सेवावृत्ति प्रतीक चिह्न देकर अलकृत किया। आर्य समाज आनन्द नगर राजपुरा को ओर मे डा० कुन्दनलालपाल प्रधान जिला आर्य सभा को जिन्होने एड्ज के रोगी को निरोग किया, एक प्रतीक चिह्न प्रदान किया।

आर्य समाज का ११वा वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दुल्लहपुर (गाजीपुर) आर्य समाज दुल्लहपुर का ११वा वार्षिकोत्सव २८ फरवरी १९९६ को हर्षोल्लास के माहौल मे सम्पन्न हुआ। तीन दिन तक चले इस समारोह मे देश के दूर-दराज से आये हुए वैदिक धर्म प्रचारक विद्वान तथा मनीषियो ने अपनी ओजस्वी वाणी एव प्रभावशाली वक्तव्य से जन-मानस को भाव विह्वल कर दिया। इस बार के कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण रहे समस्तीपुर (दरभगा) बिहार के प० दयानन्द सत्यार्थी एव उनकी शिष्या सुश्री सविता सत्यार्थी के भजनोपदेश। आचार्य प० राजपति शास्त्री ने विशेष रूप से स्वामी दयानन्द सरस्वती के वैदिक सिद्धान्तो व उनकी समाज सुधार सम्बन्धी नीतियो तथा स्त्रियो के प्रति सम्मान-मर्यादा आदि जन भावनाओ एव कर्त्तव्यो की विस्तार से चर्चा की।

योगमुनि का हठवाद

(पृष्ठ ७ का शेष)

तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥

(ऋ० १ । १६४ । २०)

इस मन्त्र के अन्यः अन्य एव पिप्पलम् ये तीनों पद परमात्मा, आत्मा एवं प्रकृति की पृथक पृथक सत्ता का निर्देश दे रहे हैं।

शक्ति तथा शक्तिमान :

शक्ति शब्द 'शक्लृ शक्तौ' धातु से क्तिन् प्रत्यय करके निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है सामर्थ्य। भूम्नि-बहुत्व अर्थ में मतुप् होकर शक्तिमान शब्द बनता है। अर्थ है बहुत सामर्थ्य सम्पन्न। जो साकार पदार्थ हैं उनमें पृथकता से बोध करना असम्भव है। परमात्मा निराकार है साकार नहीं। किन्तु योगमुनि जी अपने लेख में यथारुचि यथा प्रयोजन ईश्वर को कहीं साकार कहीं निराकार मानकर परमात्मा में शक्ति तथा शक्तिमान का भेद करने की चेष्टा में लगे हैं, जबकि यजुर्वेद का यह मन्त्र परब्रह्म को निराकार ही कहता है–

'स पर्यगाच्छुक्रम कायम्' (यजु० ४० । ८) इस प्रकार निराकार परमात्मा में पृथक-पृथक शक्ति तथा शक्तिमान का बोध करना अल्पमतित्व का ही परिचायक कहा जाएगा। परमात्मा निराकार होने से शक्तिस्वरूप है। अतः परमात्मा को कहने में शक्ति तथा शक्तिमान ये दोनों शब्द पर्यायवाची ही हैं।

एक और चमत्कार

लेखक ने मोअरे... ब्रह्मणस्पतिः (ऋ० २ । १४ । ११) इसको भी उद्धृत करके मन्त्र में कहीं न दिखाई दे रहे कलियुग सतयुग शब्द को जबरन खींचकर ले आए हैं यहां वे :कलियुग के अन्त में'तथा'सतयुग में'यह लिखकर कलियुग तथा सतयुग के देवी देवताओं के नाम ग्राम दिखाने में तो सिद्धहस्त हो गए परन्तु परमात्मा की सर्वव्यापकता का बखान करने वाले मन्त्र में पठित विभु शब्द का सीधा अर्थ 'व्यापक' करने में चकरा गए। वेद में व्याख्यात दाता, विधाता, द्रष्टा आदि परमात्मा के गुणों को देखते हुए उसके सर्वव्यापकत्व को नकारना नितान्त असम्भव है। परमात्मा के सर्वव्यापक होने पर ही उसको विश्व कर्तृत्वादि सम्भव है। सर्वव्यापकता का बखान करने वाले वेदमन्त्रों की विपुल संख्या है। लेखक द्वारा प्रस्तुत मन्त्र भी परमात्मा की व्यापकता को ही उजागर कर रहे हैं।

वस्तुतः योगमुनि जी को मन्त्रार्थ द्रष्टा बनने की साध है पर लेखक मन्त्रार्थ की विधि 'त्रिविध-प्रक्रिया' से वे सर्वथा अछूते हैं तथा 'अपि श्रुतितोऽपि तर्कतः, न तु पृथक्त्वेन मन्त्राः निर्वक्तव्याः प्रकरणश एव तु निर्वक्तव्याः' (निरु० १३ । १०) इस यास्क महर्षि द्वारा निर्दिष्ट मन्त्र निर्वचन प्रक्रिया से भी वे अनभिज्ञ हैं अतः मन्त्रों का वे मनचाहा अर्थ करते जाते हैं, किन्तु इन्हें ध्यान रहे–

विभेत्यल्पश्रुतात् वेदो मामयं प्रहरिष्यति।

आर्यसमाज सौरिख (फर्रुखाबाद) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

सौरिख (फर्रुखाबाद) दिनांक १८, १९, २० फरवरी १९९६ को आर्य समाज सौरिख का वार्षिकोत्सव आर्य समाज मन्दिर के प्रांगण में सम्पन्न हुआ जिसमें प० आत्माराम पुरोहित, प० राजकुमार आर्य, श्री सूरजप्रसाद वानप्रस्थी, श्री सच्चिदानन्द वानप्रस्थी, पं० विद्यासागर आर्य, श्री राजाराम "भोला" और श्री ओमानन्द जी पधारे। सभी उपदेशकों एवं भजनोपदेशकों ने परिवर्तनोन्मुख परिस्थितियों में आर्य समाज एवं वेदों की महती भूमिका पर प्रकाश डाला।

दैनिक संस्कृत वार्ता-लेखन का अभिनव उपक्रम

सुरभारती स्वाध्याय केन्द्र, सीताराम नगर, लातूर (महाराष्ट्र) के संचालक श्री ज्ञानकुमार तात्याराव आर्य ने ६ जनवरी १९९६ से प्रतिदिन संस्कृत-वार्ता लेखन का एक अभिनव उपक्रम आरम्भ किया है।

दैनिक व्यवहार में संस्कृत का प्रयोग हो इस उद्देश से प्रेरित होकर उन्होंने सुरभारती स्वाध्याय केन्द्र के वार्ता-फलक पर प्रतिदिन नियमित रूप से संस्कृत सुभाषित, सुविचार, लोकोक्तियां इनके साथ-साथ संस्कृत में वार्ता लेखन का विशेषतापूर्ण उपक्रम का कार्य प्रारम्भ किया है। संस्कृत-प्रेमी जनों की ओर से तथा संस्कृत-समर्थकों द्वारा स्वागत किया जा रहा है।

सत्यार्थप्रकाश मनुस्मृति

(पृष्ठ ४ का शेष)

इसीलिए महर्षि दयानन्द साधारण जनता से मन्त्रियों एवं राजकर्मचारियों को तथा शासनाधिकारियों को अधिक दण्ड देना आवश्यक मानते हैं क्योंकि उनके अनुसार 'यदि प्रजापुरुषों से राजपुरुषों को अधिक दण्ड न होवे राजपुरुष प्रजापुरुषों का नाश कर देवें। जैसे सिंह अधिक और बकरी थोड़े दण्ड से ही वश में आ जाती हैं इसलिए राजा से लेकर छोटे से छोटे भृत्य पर्यन्त राजपुरुषों को अपराध में प्रजापुरुषों से अधिक दण्ड होना चाहिए।

आज इसी प्रकार के दण्ड विधान की आवश्यकता है, वर्तमान दण्डनियमों में परिवर्तन की आवश्यकता है। आज लोकपाल जैसे पद की नियुक्ति की आवश्यकता है और केन्द्र सरकार सम्भवतः संसद के बजट अधिवेशन में इस प्रकार का विधेयक प्रस्तुत कर दे ताकि दोषी पाए जाने पर राष्ट्रपति या प्रधानमन्त्री आदि भी जांच के दायरे में आ सकें। मनु (७/२२) के अनुसार दण्ड से परे कोई व्यक्ति या प्राणी नहीं है। सबको दण्ड दिया जा सकता है। दण्ड से ही उनको जीता जा सकता है। इसलिए शासन में दण्ड को मनु ने सबसे बड़ा धर्म कहा है–दण्ड धर्मं विदुर्बुधाः'। इसलिए आज यदि देश को आगे ले जाना है, जनता का कल्याण करना है, देश से गरीबी और भ्रष्टाचार को मिटाना है तो दण्ड को कठोरता से लागू करना होगा तभी जाकर मनु और दयानन्द का स्वप्न साकार हो सकता है। 卐

आर्यसमाज गांधीधाम (कच्छ) द्वारा कच्छ जिले में वेद प्रचार

आर्यसमाज गांधीधाम ने पिछले ५-६ वर्षों में अपनी प्रवृत्तियां सुदृढ़ कर अब अपने आस-पास के क्षेत्र में वैदिक धर्म प्रचार पर ध्यान दिया है। पिछले दो वर्षों से मस्कन के सेठ श्री कनकशी भाई द्वारा प्रदत्त प्रचार वाहन द्वारा कच्छ जिले में वैदिक धर्म प्रचारार्थ यात्राएं की जा रही हैं एवं नई-नई आर्य समाजों की स्थापना के लिए प्रयत्न किये जा रहे हैं। इसी उद्देश्य से ११ से २५ फरवरी १९९६ तक आचार्य ब्रह्मचारी आर्य नरेशजी ने हमारी यात्रा में ५-६ स्थानों पर प्रवचन देकर धुंआधार प्रचार किया और अनेकों के जीवन को नया मोड़ दे दिया। उन्हीं के हस्तों पं० श्यामजीकृष्ण वर्मा की जन्मस्थली मांडवी (कच्छ) में आर्यसमाज की स्थापना की गयी। संध्या, यज्ञ, व्यसनमुक्ति, गौरक्षा, उन्नत मानवजीवन, पर प्रभावशाली प्रवचन हुए। इस प्रकार यात्रा में नासिक की विदुषी माता अनिसादेवी जी, गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान श्री वेलजी भाई वेलाजी, गांधीधाम आर्यसमाज के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य व अन्य कार्यकर्ता साथ थे।

मनुष्य पाप से नहीं, पुण्य से जन्मा है

आजकल पूरे भारत में ईसाई मिशनरियों द्वारा एक पर्चा वितरित किया जा रहा है जिसका शीर्षक है 'क्या परमेश्वर आपको प्यार करता है ? उक्त पर्चे में बाइबल के कुछ अंशों को उद्धृत कर प्रश्नोत्तरी के माध्यम से यह समझाने का प्रयास किया गया है कि हर व्यक्ति जन्म से ही पापी है तथा परमेश्वर की धार्मिकता के स्तर के सामने एक सदाचारी व्यक्ति भी नरक में जाने योग्य है। पर्चे के अनुसार न्याय के दिन हर किसी को पुनर्जीवित किया जायेगा तथा न्याय करने के बाद दुष्टों को नरक मे भेज दिया जायेगा। नरक को वास्तविक करार देते हुए पर्चे में कहा गया है कि जगत के अन्त में स्वर्गदूत आकर दुष्टों को अलग करेंगे और उनहें 'आग के कुंड' में डालेंगे 'जहां रोना और दांत पीसना होगा'। पापी जन भूख से दुबले हो जायेंगे और अंगारों से और कठिन महारोगों से ग्रसित हो जायेंगे, प्रभु यीशु अपने समर्थ दूतों के साथ धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रकट होगा और जो उसके सुसमाचार को नहीं मानते, उनसे वह बदला लेगा। परिस्थिति उन लोगों की सचमुच बुरी है जो प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता नहीं मानते क्योंकि उनका नाम 'जीवन की पुस्तक' में दर्ज न होने के कारण, उन्हें 'आग की झील' में डाल दिया जाएगा।

पर्चे में आगे कहा गया है कि नरक से बचने का केवल एक ही उपाय है : यीशु में विश्वास तो पाते हैं कि हिंदू धर्म मनुष्य का ईश्वर के साथ सीधा सम्बंध होना मानता है, किसी माध्यम की आवश्यकता में विश्वास नहीं रखता तथा पैगम्बरवादी जाल-फरेब से मुक्त है। हिंदू धर्म, गुरु अर्थात् आचार्य में विश्वास करता है–मातृमान्, पितृमान्, आचार्यवान् पुरुषों वेद–अर्थात् माता, पिता, तथा आचर्य ही गुरु हैं। जहाँ पैगंबरवाद या मसीहावाद में ज्ञान के द्वार बंद हो जाते हैं, बुद्धिवाद में (जिस पर हिंदू दर्शन स्थित है) वह खुला रहता है। कर्म की प्रधानता के कारण हिदू दर्शन के अनुसार मनुष्य अपने अच्छे-बुरे कर्मों के लिए स्वयं ही उत्तरदायी होता है। अच्छे कर्मों का फल अच्छा बुरे कर्मों का फल बुरा होता है। इसलिए तो कहा है :

'यसमनसा शायति तद्वाचा वदति,
यद्वाचा वदति तत्कर्मणा करोति
यत्कर्मणा करोति तदमिसम्पद्यते।'

अर्थात् अपने पुरुषार्थ से ही प्रगति कर सकते हो, शुद्ध जीवन तुम्हारे अपने ही पुनीत कर्मों के फलस्वरूप है। कोई अन्य तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकता है तुम जैसा सोचते हो, वैसा ही मुंह से भी करते हो, जैसा मुंह से कहोगे, वैसा ही काम भी करोगे, और जैसा काम करोगे वैसा ही फल भी पाओगे। यहां फल के लिए न किसी पर निर्भरता है, न किसी की पराधीनता ही है।

मसीहावाद या पैगम्बरवाद, मसीहा या पैगम्बर पर अंधभक्ति का पाठ पढ़ाता है, किसी विशेष 'आसमान' पुस्तक पर ही ईमान लाने का उपदेश देता है, विश्वास के सिद्धांत को ही सर्वोपरि मानते है, स्वतंत्र विचार रखने के अधिकार से वंचित रखता है। केवल विश्वास से किसी मजहब का दामन पकड़ना मानसिक दासता का प्रतीक है, ज्ञान करना, उसे अपना उद्धारकर्त्ता मान लेना। अन्य धर्मों के अनुयायियों का क्या होगा ?' के उत्तर में कहा गया है कि वे तो अवश्य नरक में ही जायेंगे क्योंकि अन्य धर्मों में अनुयायियों के पापों के लिए किसी अन्य को पाप का दंड चुकाने के लिए नहीं भेजा गया है जिस प्रकार ईसाई 'धर्म में ईसा को ! अत: जो कोई भी 'प्रभु' का नाम लेगा वही उद्धार पायेगा, अर्थात् ईसाई सम्प्रदाय के सदस्य !

जी हां, यदि कोई मृत्यु के बाद स्वर्ग-सुख प्राप्त करना चाहता है तो उसे ईसाई संप्रदाय का सदस्य बनना होगा ? अन्यथा उसके भाग्य में नरक कुंड ही लिखा होगा ! परमेश्वर तक मनुष्य की पहुंच के लिए यीशु की सिफारिश आवश्यक है क्योंकि स्वर्ग के राज्य में प्रवेश का स्थायी ठेका उसी के पास है ?

पैगंबरवादी, मसीहावादी व अवतारवादी मजहबों की सबसे बड़ी त्रासदी यही है कि उनके अनुयायी अपने पैगम्बर, मसीहा व अवतार को ही सर्वेसर्वा मानने के लिये अभिशप्त होते हैं। उसी तक वे ज्ञान की इतिश्री मानते हैं। ईश्वर के सम्बध में आगे बढ़कर कोई अन्वेषण करने की स्थिति में नहीं रहते। जो भी सच्चा-झूठा किसी विशेष पुस्तक में लिखा होता है, उसी की रट लगाते-लगाते अपना सारा जीवन बिता देने के लिए लाचार होते हैं।

इसके विपरीत जब हम हिदू धर्म में झाकते हैं के द्वार को सदा के लिए बंद कर देते हैं, अपने आपको भेड़ सदृश करना है उनके पास आध्यात्मिक बल नहीं होता, हो ही नहीं सकता। इसके विपरीत हिन्दू दर्शन बुद्धिवाद पर बल देते हुए कहता है–बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निबुद्धेस्तु कुतो बलम् अर्थात जिसके पास बुद्धि है उसी के पास बल है, मूर्ख के पास बल कहां ! जीवन को अपने सुकर्मों से पवित्र बनाकर विवेकपूर्ण जीवन जीने में ही जीवन की सार्थकता निहित है। भाग्यवाद अशांति का जनक है, कर्मवाद स्थायी शांति प्रदान करने वाला है।

हिंदू दर्शन ईश्वर से साक्षात्कार का सीधा-सादा वैज्ञानिक ढंग बतलाता है, तो मसीहवाद मात्र, ईश्वर की प्रार्थना पर जोर देता है। 'परमेश्वर' को प्रसन्न करने में ही ये अपने उद्योग की इतिश्री माना करते हैं। ईश्वर उनके लिए एक मनुष्य सदृश जीव है जो किसी चौथे या सातवे आसमान पर विराजता है न कि वह सर्वव्यापी शक्ति जो कण-कण में निवास करता है। जिन्होंने ईश्वर को समझा ही नहीं, वे मात्र उसे प्रसन्न करने में लगे रहते हैं, शब्दाडबर रचने में मशगूल रहते हैं, उसे पहचानने की किसी भी विधि से अनजान होते हैं।

मनुष्य पाप से नहीं, पुण्य से जन्मा है। उसके लिए स्वर्ग है स्व+ग जहां वह स्वय गमन करता है, उसके लिए नरक, नर+क है, जिसका कत्ता भी वह स्वयं ही है। किसी को नरक कुंड मे डालना या स्वर्ग के राज्य में प्रवेश का बीजा देना किसी अन्य के अधिकार में नहीं। गालिब ने सत्य ही कहा है:

हमको मालूम है जन्नत की हकीकत, लेकिन
दिल बहलाने को गालिब ये खयाल अच्छा है।

–डा विनय कुमार सिन्हा,
पता-एच 59, हरमू हाउसिंग कालोनी
रांची-834012

पुस्तक-समीक्षा

सत्यार्थ प्रकाश दर्पण

पृ० सं० 174 मू० 13 रु०
ले० सम्पादक-पं० वेदप्रकाश शास्त्री एम० ए०
प्रकाशक–आर्य साहित्य प्रकाशन
कैलाशनगर फाजिल्का पंजाब

महर्षि दयानन्द के [illegible] ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, ग्रन्थ का यह लघु रूप है [illegible] स्थानों पर विभिन्न लेखकों द्वारा सत्यार्थ प्रकाश के बाल रूप व लघु संस्करण भी देखे व पढ़े हैं। यह ग्रन्थ उनसे नितान्त भिन्न है आपने उस ग्रन्थ के सभी समुल्लासों का विवेचन भी किया है। यह वैचारिक क्रान्ति का अग्रदूत कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। महर्षि के इस शोध प्रबन्ध ने नाना दिग्भ्रमित मानवों को सही दिशा दी है–

एक ईश्वर की मान्यता, सन्तानों के प्रति माँ-बाप के कर्त्तव्य-वर्णाश्रम धर्म पालन हमें क्या करना चाहिये और चार अध्याय हमें क्या नहीं करना चाहिये यह बतलाया है।

यदि बालक पढ़ेंगे तो मार्ग प्रशस्त होगा, तरुण पढ़ेंगे उनका भविष्य उज्जवल होगा वृद्धों के लिये उत्तम जीवन की शिक्षा मिलेगी।

विभिन्न मतावलम्बी अपने या परायों को मतिभ्रम से दूर कर सभी को ज्ञान वर्धन ही होगा। जितनी बार पढ़ोगे नवीनता ही हाथ लगेगी।

दुराग्रही भी ज्ञानपूर्वक पढ़ेगा तो मार्ग दर्शन ही होगा इसीलिये कहा है कि

सत्यार्थ प्रकाश का पढ़ना गर, जन-जन को प्यारा हो जाये।

पढ़कर अज्ञानी ज्ञानी होवें, वैदिक उजियारा हो जायें।

फूले फुलवाड़ी ऋषियों की हम वनें वगीची के माली

सत्यार्थ प्रकाश पढ़ अमल करे, स्वर्ग समान जग वन जायें।

पुनः पुनः प्रकाशन करके इसे जन जन तक अवश्य पहुंचायें।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाज ने देश में क्रान्ति पैदा की

कानपुर, आर्य समाज हाल गोविन्द नगर में आय समाज के 122वें स्थापना दिवस समारोह पर आयोजित समारोह में सभाध्यक्ष श्री देवीदास आर्य ने कहा कि आर्य समाज ने देश में धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक क्रान्ति पैदा की जो कार्य सर्वसाधारण लगते हैं वे 122 वर्ष पहले बहुत कठिन थे। अन्ध विश्वास, गुरूडम, मूर्तिपूजा, बेमेल विवाह, सती प्रथा, नशा खोरी, देश की गुलामी आदि बुराईयो का डटकर आर्य समाज ने विरोध किया और स्वतन्त्रता, शुद्धि, विधवा विवाह, हिन्दी भाषा, नारी शिक्षा, एक ईश्वर पूजा, वेद प्रचार आदि के लिये आन्दोलन किये।

समारोह मे आर्य समाज के कार्यों पर सवश्री कैप्टन राजेन्द्र रुद्रपुर, वाल गोविन्द आर्य, डा० जानि भूषण, प० जगन्नाथ शास्त्री श्रीमती कैलाश मेगा बेग चोपड़ दर्शना कपूर, मनोरमा देवी आदि ने प्रमुख रूप से विचार रखे एवम् गीत-सगीत प्रस्तुत किया।

वैदिक न्याय और दण्ड-व्यवस्था

वैदिक ग्रथो मे अपराधी को समुचित दण्ड देने का विधान है दण्ड देने का तात्पर्य है कि अपराधी पुन अपराध करने योग्य न रह जाए तथा अपराध के बदले दण्ड मिलता देखकर लाखो करोडो अन्य व्यक्ति भी दण्ड के डर से अपराध करने से बचे जिससे जन साधारण को अपराधो से होने वाला दुख न हो

वैदिक ग्रथो मे सरकारी व ज्ञानी आदमियो को साधारण मनुष्यो की अपेक्षा अपराध मे कई गुणा अधिक दण्ड देने का सिद्धान्त है जितना किसी का पद ऊचा हो उतना अपराध मे उतना ही अधिक दण्ड होना चाहिए महर्षि दयानन्द के शब्दो मे 'यदि प्रजापुरुषो से राजपुरुषो को अधिक दण्ड न होवे तो राजपुरुष प्रजापुरुषो का नाश कर देवे जैसे सिंह अधिक और बकरी थोडे दण्ड से ही वश मे आ जाता है इसी प्रकार जिसका मान और प्रतिष्ठा जितनी हो उसको अपराध मे उतना ही अधिक दण्ड होना चाहिए

अपराध के अनुसार दण्ड कडा होना चाहिए सुगम दण्ड को दुष्ट लोग क्या समझते है थोडे दण्ड से अपराध घटता नहीं बल्कि बढता है दण्ड ऐसा हो जिसे जान करके कोई भी व्यक्ति अपराध करने का साहस न कर सके महर्षि मनु ने 'मनस्मात मे बलात्कार के अपराध मे मृत्यु दण्ड बताया है जो गवाह पढ़ बोने वे भी यथायोग्य दण्डनीय हो

शास्त्रो ने तो न्यायपूर्वक दण्ड को ही राजा का धर्म कहा है अर्थात राजा को धर्म पर (न्याय पर आधारित दण्ड की ही सज्ञा दी है राजा वही है जो दण्डनीय को दण्ड देता है तथा अदण्डनीय को नहीं सताता धर्म भी वही है जो अपराधी को दण्ड देता है तथा निर्दोष की रक्षा करता है इसके विपरीत अधर्म है

किसी भी अच्छे काम के लिए यथोचित प्रोत्साहन तथा बुरे काम के लिए दण्ड ठीक प्रकार से लागू होना चाहिए यही व्यवस्था सदा बनी रहनी चाहिए

बलात्कार, चोरी व्यभिचार आदि अपराधो का निर्णय व न्याय करते हुए ध्यान रखे कि ये काम गुप्त होते हैं अत इनके लिए साक्षी मिलना कठिन है

स्त्रियो का न्याय विद्या और सुशिक्षा स्त्रिया ही करे पुरुष न करे क्योकि पुरुषो के पास स्त्रिया लज्जित और भयभीत सी होकर यथावत् नहीं बोल सकती और न पढ सकती हैं

पादरी व सिस्टर को कारावास

अम्बिकापुर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट श्री सी एल पटेल ने आदिवासी हिन्दू उराव जाति के लोगो को बहला फुसला कर धर्म परिवर्तन करने का दबाव डालने वाले पादरी एव सहयोगी सिस्टर पर लगाये गये आरोप सिद्ध होने के उपरान्त मध्य प्रदेश धर्म स्वतत्र अधिनियम 1968 के तहत छ माह का सश्रम कारावास की सजा के साथ पाच सौ रुपये अर्थदण्ड की सजा सुनाई है

श्री नागेन्द्र कुमार मिश्र आचार्य नियुक्त

श्री आचार्य नागेन्द्र कुमार मिश्र को सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से सम्बन्धित एव उत्तर प्रदेश शासन द्वारा प्रथम श्रेणी मे मान्यता प्राप्त। श्री निशुल्क गुरुकुल महा विद्यालय अयोध्या फैजाबाद के आचार्य पद पर नियुक्त किया गया है। श्री नागेन्द्र कुमार मिश्र की नियुक्ति पर आर्य जगत ने सन्तोष तथा हर्ष प्रकट किया है।

आचार्य शम्भु मित्र शास्त्री

जापानी स्कूलो मे वेदो की शिक्षा दी जा रही है वेदो के वैज्ञानिक चरित्र ने जापानी शिक्षाविदो को इतने गहरे तक प्रभावित किया है कि जापान का स्कूली शिक्षा मे वेदो के आमान अध्यायो को शामिल किया जा रहा है प्रायोगिक तौर पर शुरू होने वाली यह योजना अगर अच्छे नतीजे सामने लाई तो कालेज स्तर पर भी वेदो का अध्ययन शुरू किया जाएगा

याकोहामा यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर तामुआ नेता कहते हैं 'वेद तो जीवन का शिक्षा है जब तक जीवन है तब तक आप इन्हें अनदेखा नहीं कर सकते पता नहीं कैसे नासमझ इस अपार भण्डार का मूल इनका जनक भारतीय ही नहीं जान पा रहा है

क्या आप जानते हैं ?

कत्लखाना वह बदकिस्मत जगह है जहा स्वाद के लिए पिशाच बना मनुष्य पालतू शाकाहारी पशुओ का वध करता है सभी मस्कृतियो ने इस क्रूर और बर्बर कृत्य की निन्दा की है पर्यावरण विज्ञानियो का कथन है कि वधशालाए प्रकृति के सहज सतुलन को गड़बड़ाती हैं और मनुष्य को बर्बरता की ओर धकेलती है नैतिकता और मनोविज्ञान भी हिंसा के पक्ष मे नहीं हैं अहिंसा को एक मानवीय गुण और हिंसा को पाशविक वृत्ति निरूपित किया गया है
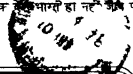
भारत मे आज 36031 वैध (लाइसेंसशुदा) कत्लखाने हैं जिनमे से चार महानगरो मे स्वचालित यान्त्रिक कत्लखाने है जीव जन्तु कल्याण बोर्ड (एनीमल वेलफेयर बोर्ड) के अध्यक्ष प्रो रामास्वामी (1989) ने कहा था कि देश के 4000 कत्लखानो के यन्त्रीकरण का आवश्यकता है अगर उनकी यह योजना अमल मे लाइ गइ या लाई जा रही है तो देश मे प्रतिदिन 4 करोड पशुओ के काटे जाने की आशका है जिन नगरो मे यान्त्रिक कत्लखाने खोलने की पहल जारी है वे हैं चेगलपट्टू, मगलगिरि, विशाखापटटन (आन्ध्रप्रदेश) जबलपुर (मध्यप्रदेश) जयपुर (राजस्थान) शाकम्भरी (उत्तर प्रदेश)।

वैध कारखानों के अलावा देश में हजारो अवैध कत्लखाने हैं जिनमे प्रतिदिन सूरज की पहली नरम किरण के साथ लाखो पशुओं को मौत के घाट उतार दिया जाता है

निर्वाचन सम्पन्न

पूर्व सूचना के आधार पर आज दि 31 मार्च 1996 को स्थानीय आर्य समाज मदिर जलाली मे दिन के 1 बजे आर्य समाज जलाली की साधारण सभा तथा वार्षिक अधिवेशन श्री जितेन्द्र कुमार एडवोकेट प्रधान आर्य समाज जलाली की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ जिसमे सर्व सम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारियो का वार्षिक चुनाव हुआ प्रधान श्री जितेन्द्र कुमार एडवोकेट, उप प्रधान श्री लोकमन दास आर्य श्री विजेन्द्र कुमार अग्रवाल मत्री श्री भगवान स्वरूप आर्य व्यायाम एव आर्यवीर दल अधिष्ठाता श्री राज कुमार आर्य उपमत्री श्री मा गेदा लाल आर्य श्री नन्नू सिंह जी कोषाध्यक्ष—श्री कृष्ण आर्य स कोषाध्यक्ष श्री भगवान स्वरूप वार्ष्णेय पुस्तकाध्यक्ष श्री शिवलाल आर्य निरीक्षक श्री राम विलास गुप्ता वरिष्ठ प्रबन्धक यू को बैंक फिरोजाबाद, पुरोहित श्री शिव कुमार शास्त्री श्री प कैलाशचन्द्र शास्त्री

सार्वदेशिक प्रैस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा॰ सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली 2 से प्रकाशित।

चैकं गणराज्य के भारत में राजदूत श्री ओदोलेन स्मेकल द्वारा गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार में दिया गया दीक्षान्त भाषण

अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की इस गौरवमयी नपस्थली मे आकर मैं स्वय को धन्य समझता हूँ। गुरुकुल कागडी के रूप मे राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का प्रवर्तन कर स्वामी जी ने महात्मा गाधी के स्वाधीनता आन्दोलन का वैचारिक पक्ष मजबूत किया था। गुरुकुल के प्राध्यापको ब्रह्मचारियो तथा कर्मचारियो ने स्वाधीनता चरित्र निर्माण तथा सस्कृति की रक्षा के लिए जितना उद्योग किया उतना शायद किसी अन्य विश्वविद्यालय ने ब्रिटिश गज के दौरान नहीं किया। ऐसी ऐतिहासिक सस्था के दीक्षान्त के लिए आपने मुझे आमन्त्रित किया मै आपका आभारी हूँ।

जेसा कि आप जानते है मै जिस देश का हूँ, वह भारत से दूर, अति दूर है। वह देश चेक धरती यूरोप के मध्य हृदय मे स्थित है। फिर भी यहा आकर दीक्षान्त भाषण मे हिन्दी मे दे रहा हूँ। वैसे तो मेरी मातृभाषा चेक भाषा है किन्तु हिन्दी को अपनी दूसरी मातृभाषा मानता हूँ।

भारत मुझको वालकपन से आकर्षित करता रहा है क्योकि यह अनेक सम्कृतिना का विशाल देश उपमहाद्वीप है। भाग्त न केवल साहित्यिक उत्कर्ष और प्रसिद्ध कलाकृतियो के लिए विश्वविख्यात देश हे पग्न्तु इस देश का सभ्यता न अनक ध्यानयोग्‍ दाशानक आध्यात्मिक ओग बाद्धिक धारणाओ मन्न मे सम्पूर्ण भर का सस्कृतिनो का भरपूर समृद्ध किया है।

हिन्दी भाषा को मैने इसलिए चुन लिना तथा सीख लिया ताकि भाग्त का सस्कृत और साहित्यिक परम्पराओ मे एक भारतीय भाषा क माध्यम से अग्रेजा के माध्यम से नहीं परिचित हो जाऊँ। मै हिन्दी को भाग्त की प्रतिनिधि वास्तविक गष्टभाषा समझता हूँ।

चेक धरती के एक प्रकाण्ड विद्वान शिक्षक और प्रतिभाशाली लेखक न कहा है कि भाषा का जानकारा विदेशी सस्कृति के द्वार खोल देती है। अन्य देश की आत्मिक तथा बोद्धिक निधि से परिचय प्राप्त करने के लिए भाषा सदा प्रमुख भूमिका निभाती है क्योंकि भाषा अपने देश ओर देशवासियो की अस्मिता का दर्पण है। वह न केवल देश की बोलती हुई आत्मा है परन्तु भाषा मे देश के सारे गुणागुण तथा रागानुराग निहित सम्मिलित है।

उस चेक विद्वान का नाम है **यान आमोस कोमेनियुस**, जो मध्य युग से आज तक 'मानवजाति के आचाय (गुरु) कहलाते आए है।

यान आमोस कोमेनियुस आधुनिक शैक्षणिक सिद्धातो क जनक माने जाते हे। कोमेनियुस ने कहा कि सब विषयो का शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से होना चाहिए और कि शिक्षणालय मानव जाति की कर्मशाला है समाज सुधारक के रूप मे कोमेनियुस ने अपाल का कि हिंसा ओर युद्ध का परित्याग किया जाए और कि विशुद्ध बन्धुत्व का सारा जीवन मानव गरिमा सामाजिक न्याय सहिष्णुता तथा प्रेम पर आधारित और निमित्त किया जाए।

यान आमोस कोमेनियुस की भाँति आधुनिक **चेक गणराज्य के राष्ट्रपति वात्सलाव हावेल** भी सच्चाई मे जीवन बिताने और सत्य को अपना जीवन समर्पित करने का सदेश देते है।

आज शिक्षा किताबी ज्ञान के अर्जन का माध्यम बन गई है। आधुनिक ज्ञान, विज्ञान तथा तकनीकी ज्ञान के लिए देश तथा देश से बाहर भारतीय छात्र अत्यधिक परिश्रम कर रहे है पर उनका सारा प्रयत्न प्रगति की होड मे अग्रणी बनने के लिए हो रहा है। भौतिक सुख साधनो की स्पृहा इतनी बढ गइ है कि वे देश की मिट्टी से सम्बन्ध तोड कर ऊँचे पद प्रतिष्ठा तथा धन कमाने के लिए विदेशो मे पलायन कर रहे है। देश का जो लाभ उनसे होना चाहिए था वह इस प्रवृत्ति के चलते नहीं हो पा रहा हे। मेरा इच्छा है कि हम विदेशो मे जाए ऊँची तकनीक प्राप्त करे ताकि लोट कर इस देश का जनता का सेवा कर जिससे देश का निरक्षता गरीबा बेरोजगारी तथा जडता समाप्त हो। देश सवाग समृद्ध बने वह पहले की तरह ज्ञान का उजाला ससार का दे तथा मानवीय मूल्यो की व्याख्या तथा स्थापना मे अपना भरपूर योगदान करे। कभी इस देश के विचारक पृथ्वी के प्राणियो को अपने चरित्र की कसोटी सामने रखकर अनुकरण की प्रेरणा देते थे। **'स्वस्वचरित्र शिक्षेरन्'** का उद्घोष इस देश के अलावा कहीं और नहीं हुआ। ऋषिमुनियो की यह उज्जवल परम्परा आप विद्यार्थियसो को आगे बढानी है

शिक्षा स्वाध्याय से संबंधित होनी ही चाहिए

मुझे यह देखकर दुःख होता है कि हमारे जीवन मे स्वाध्याय स्वावलम्बन श्रम परदुःखकातरता तथा समवेत होकर काय करने की प्रवृत्ति का ह्रास हुआ हे। व्यक्ति केन्द्रित हमारे विकास की यात्रा अधूरा और सामाजिक है। शिक्षा तो सामाजिक विकास और उन्नति का साधन है। वह व्यक्ति को समाज के साथ तथा स्व को पर के साथ जोडती हैं। विश्व जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण के विकसित हुए बिना आज हमारा रह सकना सम्भव नहीं। धार्मिक तथा आध्यात्मिक समन्वय के आधार पर ही शिक्षा का भवन टिकना चाहिए था पर आज आर्थिक ससाधनो के दोहन के नाम पर विश्वविद्यालयों मे धन कमाने की होड लगने लगी है व्यावहारिक पाठ्यक्रमो की बढती हुई प्रवृत्ति ने इस होड को अधा बना दिया है। मानव की बौद्धिक तथा आध्यात्मिक शक्तियो के विकास और जागरण के स्थान पर अधिकाधिक जीवनोपयोगी ससाधनो को जुटाने की मानसिकता बढने लगी है। शिक्षा के विश्व बन्धुत्ववादी दृष्टिकोण में यह एक बाधा है अत मैं अपेक्षा करता हू कि शिक्षा मे आत्मिक शक्ति के माधुर्य को विकसित करने का लक्ष्य होना चाहिए। शारीरिक, बौद्धिक नैतिक तथा आत्मिक विकास के अभाव मे सास्कृतिक व्यक्तित्व का निर्माण सभव नहीं है। सामाजिक न्याय, सुरक्षा तथा मानव जाति के उत्थान का सकल्प उसका आदर्श रहना चाहिए। अर्थकारी विधाओ के साथ जीवन मे सयम, सादगी और तप के लिए भी अभ्यास किया जाना चाहिए। छात्रावास मे अभ्यस्त तप द्वारा ही मनुष्य सार्वजनिक जीवन मे प्रवेश करते हुए सुख दुःख, लाभ हानि जय पराजय मान अपमान तथा भूख प्यास आदि द्वन्द्वो को सहने की सामर्थ्य रख सकेगा। आचार्य और विद्यार्थी दोनो को ही समस्त मानवीय गुणो के उपार्जन के लिए सलग्न रहना चाहिए।

गुरुकुल कांगड़ी का अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप

विश्वबन्धुत्व की दिशा मे गुरुकुल कागडा का विशेष योगदान रहा है गुरुकुल के अनेक स्नातको ने विदेशो मे जाकर शिक्षा धर्म राजनीति तथा व्यवसाय के क्षेत्र मे विशिष्ट मापदण्ड स्थापित किए हे। प० अमीचन्द्र विद्यालकार ने फीजी मे जाकर अनेक शिक्षण सस्थाओ की स्थापना की। वे वहा की ससद के सदस्य भी बने। प० सत्यव्रत सिद्धातालकार आचाय रामदेव प० बुद्धदेव विद्यालकार, प० मदन मोहन श्री विद्यासागर विद्यालकार, प० सत्यपाल सिद्धातालकार, प० ईश्वर दत्त विद्यालकार, श्री सत्यदेव भारद्वाज वेदालकार, श्री धर्मेन्द्रनाथ वेदालकार, श्री देवनाथ विद्यालकार, श्री रणधीर वेदालकार, श्री अमृतपाल वेदालकार, प० श्याम सुन्दर स्नातक ने बर्मा अफ्रीका कीनिया युगाण्डा टागानीका सिगापुर, मलाया यूरोप मे जाकर वैदिक सिद्धातो और हिन्दी भाषा का प्रचार प्रसार किया। मोजाम्बीक मे प० रविशकर सिद्धातालकार, प० सुमन्तराय विद्यालकार, प० मतिमान विद्यालकार ने ओर रोडेशिया मे प० हरिदेव वेदालकार ने अध्यापन कार्य किया। दक्षिण अफ्रीका में श्री सुधीर कुमार विद्यालकार, श्री अरुण कुमार विद्यालकार, श्री हरिशकर आयुर्वेदालकार, प० नरदेव वेदालकार ने सराहनीय कार्य किया। इस समय भी अनेक स्नातक अमेरिका और यूरोप के देशों मे गुरुकुल का नाम उज्जवल कर रहे हैं।

राष्ट्रवादी पवित्र संस्था

प्रिय स्नातको आप चाहे विज्ञान के छात्र रहे हों चाहे मानसिक के, अपने ज्ञान विज्ञान की अधुनातन शाखाओ मे दक्षता प्राप्त की हो, चाहे आप प्राचीन विषयों का अभ्यास करते रहे हों। मेरा मानना है कि आपको भारतीय संस्कृति तथा इतिहास का गहरा ज्ञान होना चाहिए। विश्व की सभ्यताओ

शेष पृष्ठ 11 पर

हंसराज दिवस पर विशेष :-

महात्मा हंसराज

—डा० धर्मपाल

देश धर्म की रक्षा के लिए भारत मा के अनेक सपूतो ने हसते-हसते अपने जीवन को राष्ट्र मा की बलिवेदी पर न्योछावर कर दिया। इसी प्रकार जातीय उत्थान धर्म प्रचार तथा सत्य विद्या के प्रसार हेतु महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त एव अनुयायी महात्मा हसराज ने अपना जीवन आर्यसमाज को अर्पण कर दिया था। वह समय था जब हम पराधीन थे, वेद ज्ञान का सूर्य अज्ञानान्धकार से आवृत्त था भारत मा की सन्तानें भटक कर धर्म परिवर्तन कर रही थी। भारतीय तथा राष्ट्रीय भावना की प्रेरणा देने वाली शिक्षा का भी अभाव था, उस समय ऋषिवर दयानन्द ने सत्यार्थ का आलोक फैलाया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के सन्देश और विचार धारा को दिग-दिगन्त तक फैलाने का व्रत लेने वाले आरम्भिक शिष्य थे—स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हसराज, प० लेखराम और प० गुरुदत्त विद्यार्थी। इन मा भारती के सपूतो ने अपने त्याग और तपस्या के बल पर वेद प्रचार, शुद्धि सगठन और शास्त्रार्थों के द्वारा जनता को सन्मार्ग दिखाया। इसके अतिरिक्त इन्होने एक और महान कार्य किया और वह था शिक्षा के माध्यम से देश भक्ति और धर्म के प्रति श्रद्धा आस्था और निष्ठा का सचार। अग्रेज शासको द्वारा दी जा रही शिक्षा हमारे नवयुवको को देश और धर्म तथा मानव मूल्यो से दूर ले जा रही थी। उस घृणित एव विषैली शिक्षा प्रणाली से छुटकारा दिलाने के लिए आर्य समाज के गौरव महात्मा हसराज ने किसी भी बडी नौकरी का प्रलोभन ठुकरा कर डी० ए० वी० आन्दोलन की नीव डाली। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धातो के अनुरूप देश और जाति को ऊचा उठाने वाली, धर्म मे आस्था उत्पन्न करने वाली शिक्षा का सूत्रपात किया। जब महात्मा जी ने अपना मन्तव्य व उद्देश्य देवता स्वरूप भाई मुल्कराज के सामने प्रकट किया तो वे भाई की ऐसी त्यागमयी पवित्र भावना को देखकर भावाविभूत हो गये। उन्होने सहर्ष कहा—वह अपने वेतन मे से आधी राशि उनके निर्वाह के लिए दे दिया करेंगे। धन्य हैं वह भाई जिसने भाई को ऐसा प्रोत्साहन दिया। धन्य है वह भाई जिसने त्याग और तपस्या का मार्ग चुना। धन्य हैं वे डी०ए०वी० के सचालक जिन्होने महात्मा जी के लक्ष्यपूर्ति में पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

महात्मा जी के साथी अध्यापको ने भी इसी प्रकार के निस्वार्थ तप और त्याग का परिचय दिया। वह छोटा सा पौधा आज विशाल वट वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। हमारी इन्हीं सस्थाओ ने शहीद भगतसिंह और रामप्रसाद बिस्मिल जैसे युवको का निर्माण किया।

महात्मा हसराज के सुपुत्र श्री बलराज को देश की स्वतन्त्रता हेतु गतिविधियो के कारण अग्रेज सरकार ने मृत्युदण्ड दिया था महात्मा हसराज एक बार गवर्नर को कहते तो सब माफ हो जाता पर वह सच्चरित्रता और स्वाभिमान का धनी उस दिन डी०ए०वी० कालेज भी न गया जब गवर्नर स्वय वहा पधारने वाले थे। उसने सोचा कि मेरे सहज स्वागत को अग्रेज अफसर कहीं अन्यथा न ले। धन्य थे सत्यव्रती महात्मा हसराज।

महात्मा हसराज ने शिक्षा जगत मे तो चमत्कार किया ही वे सामाजिक कार्यों में भी कभी पीछे नही रहे। आर्य समाज के वेद प्रचार के कार्यों में वे बढ चढकर स्वय भी भाग लेते थे तथा सहयोगियो को भी सदा प्रेरित किया करते थे। इस वर्ष प्रकृति का प्रकोप उत्तराखण्ड में हुआ और आर्य समाज ने बढ चढकर पीडितो की सहायता की। इसी प्रकार महात्मा हसराज के समय में बीकानेर मे भयकर अकाल पडा था उस समय महात्मा हसराज लाला लाजपतराय प० लखपतराय वकील तथा अन्य अनेक महानुभावों ने गाव-गाव जाकर धन तथा अन्न का वितरण किया। उस समय मध्य प्रदेश व बिहार के छोटा नागपुर क्षेत्र में भी भयकर अकाल पडा था, महात्मा जी तुरन्त वहा पहुचे। १८९९ का राजपूताना का अकाल १९०७-०८ का अवध का अकाल तथा १९१८ का गढवाल का अकाल महात्मा हसराज, लाला दीवानचन्द्र, प्रिंसिपल मेहरचन्द तथा प० रलियाराम और महात्मा जी के सुपुत्र लाला बलराज ने रात दिन इन पीडितो की सहायता की। अनाथ बच्चो को लाकर पजाब और दिल्ली मे सचालित अनाथालयो में रखा गया और उनकी ऐसी परवरिश की जैसी शायद उनके मा बाप भी न कर पाते।

> ### वह आग चाहिये
>
> चेतन मेरा आर्य समाज चाहिये।
> जलती रहे सदा दिलो मे वह आग चाहिये ॥
> सोये जमे रक्त मे उबाल चाहिये।
> मर मिटे जो आन पर वे जवान चाहिये ॥
> भुला चुका है जमाना कुर्बानियो को।
> फिर से सरफरोशी की तान चाहिये ॥
> खो गई ऐतिहासिक झासी की रानी।
> मा बहनो मे उसका अवतार चाहिये ॥
> मिटाने को आतुर है जो दयानन्द का नाम।
> उन्हें मिटावे श्रद्धानन्द की ललकार चाहिये ॥
> लाए है परिवर्तन सदा युवा ही।
> सिर पे उनके बुजुर्गों का हाथ चाहिये ॥
>
> —राजपालसिह पवार, जोधपुर

स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हसराज का शिक्षा जगत मे योगदान सदैव स्वर्णाक्षरो मे अकित रहेगा। आज भी सरकार के बाद शिक्षा मे सर्वाधिक बजट आर्य समाज द्वारा सचालित शिक्षा सस्थाओ का है। प्रिंसिपल साईदास, लाला दीवानचन्द, प्रिंसिपल मेहरचन्द, श्री मेहरचन्द महाजन, श्री जीवनलाल कपूर, श्री गोवर्धनलाल दत्ता, श्री सूरजभान आदि महानुभावो ने शैक्षिक सामाजिक प्रशासनिक जगत के विशिष्ट आयामो का सृजन किया।

महात्मा हसराज ने केरल के मालाबार क्षेत्र मे जाकर साम्प्रदायिक सद्भाव की स्थापना मे विशेष सहयोग दिया था। पजाब से इतनी दूर जाकर उस समय कार्य करना वास्तव में एक अद्भुत दृढव्रती होने का साक्षात प्रमाण है।

महात्मा हसराज की मृत्यु पर पजाब असेम्बली के स्पीकर सर शाहबुद्दीन ने कहा था—'आज पजाब मे शिक्षा की ज्योति जगाने वाला एक सन्त उठ गया।' लाला लाजपतराय ने अपनी पुस्तक 'आर्य समाज' मे लिखा है—महर्षि दयानन्द के बाद महात्मा हसराज और महात्मा मुन्शीराम के बिना आर्य समाज असम्भव था। डी. ए वी कालेज तो लाला हसराज के बिना सर्वथा असम्भव ही था।

महात्मा हसराज ने समाज सुधार का कटकाकीर्ण मार्ग, त्याग तपस्या और बलिदान का मार्ग अपने लिए चुना था। उनका रास्ता ऊबड-खाबड था, भयावना था और बलिदान मांगता था। महात्मा हसराज ने यह बलिदान दिया। यही कार्य उन्हें महात्मा के नाम से पुकारे जाने की सार्थकता को सिद्ध करता है। उनका कार्य युगो-युगो तक मानव के मार्ग को प्रशस्त व आलोकित करता रहेगा उनकी स्मृति में मेरी विनत श्रद्धाजलि।

कुलपति, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

' महात्मा हंसराज जी के कुछ संस्मरण

—महात्मा आनन्द स्वामी जी

एक बार महात्मा हंसराजजी और उनके भाई लाला मुल्कराज जी में मन मुटाव हो गया और महात्मा जी के लिए जो राशि आती थी, वह बन्द हो गई। केवल छः आने उनके पास रह गये। शहालामी दरवाजा से ६ आने के चने मंगवाये गये और सारे परिवार ने तीन दिन इन्हीं चनों से गुजारा किया। वह समाप्त हो गये तो कुछ घबराहट होने लगी। घबराहट में अपने छोटे से कमरे में टहल रहे थे। अचानक पुस्तकों वाली अलमारी खोली और एक पुस्तक निकाल कर उसका पन्ना उल्टा किया जिस पर गीता का आधा श्लोक लिखा था—

'कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्।'

महात्मा जी कहने लगे, इस श्लोक ने मेरी घबराहट को दूर कर दिया है और मैं यथावत शान्त हो गया।

×

कराची मे वेद प्रचार के लिये धन जमा करने के वास्ते महात्मा हंसराज जी के साथ पहुंचा हुआ था। एक दिन गुजरात के एक सज्जन करांची आये और मुझे कहने लगे कि अब आप निकट आये हो—चलो क्वेटा हो आयें। मैंने कहा—क्वेटा तो पहले भी देखा है परन्तु आपके साथ जाने में अधिक सवाद मिलेगा। सज्जन ने कहा—'आपकी सीट बुक करा देता हूं मैंने कहा ठीक है। सुशील भवन आकर मैंने महात्मा जी से कहा—'मैं दो दिन के लिए क्वेटा हो आऊं। तो वे कहने लगे—यह कैसे हो सकता है। वेद प्रचार के लिये धन जमा करने में तुम्हारी सहायता की जरूरत है। इसलिये सीट कैंसिल करा दो। मुझे बहुत बुरा लगा कि महात्मा जी ने मुझे दो दिन की भी छुट्टी नहीं दी। तब मैंने उस सज्जन को फोन कर दिया कि मैं नही जा सकूंगा। परन्तु मुझे सारी रात महात्मा जी का यह इन्कार दुःखी करता रहा। परन्तु अगले दिन जब यह समाचार मिला कि क्वेटा में भयंकर भूकम्प आया है और २५००० आदमी दबकर मर गये है और जिस सज्जन के साथ मैंने जाना था वे भी दबकर मर गये हैं। मैंने यह सुना तो महात्मा हंसराज जी का धन्यवाद किया कि आपने मुझे मौत के मुंह से बचा लिया।

× ×

सादगी के तो वह साक्षात नमूना थे। उनके पास एक टूटा हुआ जूता था। मैंने प्रार्थना की—महाराज यह जूता तो अब पहनने योग्य नहीं रहा। इसे फेंक दूं? तो महाराज जी कहने लगे, यह सामाजिक जूता है। मैं इसी को पहन कर साप्ताहिक सत्सग में जाता हूं और इसे कोई नहीं उठाता। इसीलिये इसका नाम मैंने सामाजिक जूता रखा है।

\+ \+

एक बार एक साप्ताहिक आर्य पत्र में आपके विरुद्ध बड़े लेख प्रकाशित हो रहे थे तो लाहौर के श्री कपूर जी महात्मा जी के पास पहुंचे और कहने लगे मुझे आज्ञा दीजिये मैं इसका मुंह तोड़ उत्तर दे दूं। महात्मा जी ने कहा यह लिखने वाला अन्त में पछतायेगा। तुमने भी पछताना है तो तुम्हारी इच्छा।

× ×

जालन्धर आर्य समाज के उत्सव पर महात्मा जी ने पहुंचना था। महात्मा जी उन दिनों दिल्ली में थे श्री बलराज जी के मुकद्दमे का अन्तिम फैसला सुनाया गया कि बलराज को मृत्यु दण्ड दिया जाये। यह निर्णय सुनकर जालन्धर उत्सव में सम्मिलित होने के लिये दिल्ली से चल पडे। जालन्धर स्टेशन पर लोगों ने उनका स्वागत किया परन्तु महात्मा जी इतने शांत थे कि किसी को सन्देह भी नहीं हुआ कि क्या घटना घट गई है। प्रातःकाल तो उत्सव में उनका उपदेश था। आत्मिक उन्नति पर बड़ा मार्मिक उपदेश हुआ। रात्रि को भी हुआ। लोगों को तब पता लगा जब समाचार पत्र मे यह खबर छपी। उनकी सहनशीलता और शान्त स्वभाव की बातें अनेक हैं। बेटे को फांसी की सजा की आज्ञा हो चुकी थी। पत्नी मृत्यु शैय्या पर पडी है। घर मे चोरी हो गई है। योगराजजी को निमोनिया हो गया है। आर्थिक अवस्था बिगड़ी हुई है और यह पूर्ववत शान्त और हसमुख हैं।

पुस्तक समीक्षा

आत्मसूत्र

ले०—शिवनारायण उपाध्याय

पृष्ठ संख्या ६१, मूल्य—अजिल्द ५०) रुपए
सजिल्द ६०) रुपए

प्रकाशक आर्य विद्यालय प्रकाशन समिति, कोटा, (राज०)

आत्मसूत्र पुस्तक का मुख पृष्ठ अत्यन्त आकर्षक है तथा उसके स्वरूप को देखकर ही जान लेंगे कि इसमें है क्या? पढ़िए

वेद सब सत्य विद्याओं का अक्षय भण्डार है उसे जानने के लिए "नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः, न प्रवचनेन न मेधया न श्रुतेन" उसके लिए "एष आत्मा" यह आत्म तत्व उद्घाटित कर देता है।

"आत्म-सूत्र" मे वैदिक मीमांसा को प्रसारित करने में उपनिषदों का सहारा लिया है दस विषय वस्तुओं का संक्षिप्त सेवन मानव कर लें तो हृदय मन्दिर की गांठ खुल जायेगी, संशय दूर हो जायेंगे।

सम्पूर्ण ज्ञान तो वेद का तत्व है यहां अपूर्णता ही मिलेगी।. वेद मानव मानव मन भी अल्पज्ञ तत्व ही हैं फिर भी प्रयास ऐसा किया है कि वेद की अनुज्ञा न होकर महर्षि का मान बढ़े और सिद्धांत पक्ष की रक्षा हो। पाठक गण इसका मनन करें और अपने ज्ञान से लेखक के प्रयास को परिवर्धित करे।

ऐसे लघु ग्रन्थ जनता मे आने चाहिए।

मूल्य में अभिवृद्धि न कर कंजूसी कर सके तो अतिउत्तम होगा।

—सम्पादक

सार्वदेशिक आर्य वीर दल राष्ट्रीय शिविर १९९६

स्थान—शिक्षा भारती पब्लिक स्कूल पालम कालौनी
पालम गांव नई दिल्ली-४५

दिनांक—१ जून से २३ जून तक

अध्यक्षता :

डा० देवव्रत आचार्य

(प्रधान संचालक, सार्वदेशिक आर्य वीर दल)

शिविर प्रवेश शुल्क ६०) रुपये प्रति आर्य वीर रहेगा

आवश्यक गणवेश : खाकी नेकर, सफेद बनियान मेन्डो, सफेद शर्ट ब्राऊन कपड़े का जूता, लाठी, बैल्ट, कापी, पेन, भोजन के पात्र, ऋतु अनुकूल बिस्तर व अन्य सामग्री साथ लायें.

नोट—कीमती वस्तु आभूषण आदि कोई भी आर्य वीर अपने साथ न लावें, बस रूट न०—दिल्ली बस अड्डे से ७२१ से पालम गांव उतरे तथा नई दिल्ली से तथा पुरानी दिल्ली से ७८१ से ५१ बड़ी मेड़ उतरकर, ७२१, ८०१ से शिविर स्थान पर पहुंचे.

—ब्र० राजसिंह आर्य, महामन्त्री

अमृत क्या, कैसा और कहां है ?

डा० रामावतार अग्रवाल, चौबे कालोनी, रायपुर

क्या अमृत प्राप्त करना रहस्यमय है ? अमृत वह सोमरस है, जो सर्व सुलभ एव सर्वव्याप्त है। अन्य तत्व गुप्त तथा छिपे हुए हो सकते हैं, किन्तु अमृत प्रकट है। वह कही भी छुपा हुआ नही है। अत उसे प्राप्त करना कठिन नही हैं। वेदो के अनुसार जो मृत नहीं है, वह अमृत है और वह पृथ्वी और सूर्य आदि लोको म व्याप्त है। (ऋग्वेद १०-८५-१)

आत्मा, परमात्मा तथ पचभूत प्रकृति तीनो अमृत हैं तीनो का सहवास साथ-साथ है। अत इनका सम्बन्ध विच्छेद नही हो सकता प्रत्युत इनका समन्वित रूप ही जीवन तथा जगत है। जीवन तथा जगत अमृत तत्वो का मिश्रण है, जो रूपान्तरित होता रहता है। अत जीवन का अर्थ रूपान्तरित होते रहना या चलते रहना है। फलत जीवन स्थिर नही हो सकता।

ईश्वर चेतन है और चेतन से ही विश्व म गति या क्रिया है। गति या क्रिया के कारण ही रूपान्तरण या स्थानान्तरण होता है। रूपान्तरण या स्थानतरण के कारण कोई भी वस्तु या तत्व किसी एक स्वरूप मे स्थित या स्थिर नही रह सकता। अत गतिशीलता के कारण जो जहा है, वह वही नही रह सकता। वह परिवर्तित या अपनी स्थिति से अवश्य च्युत होगा। अच्युत या ध्रुव रहने वाला तत्व केवल परमात्मा है। वह भी अच्युत या ध्रुव इसलिए है, क्योकि वह अनन्त है। जीव व प्रकृति इसलिए च्युत होते हैं, क्योकि वे समन्त या सीमित है।

अनन्त को कोई भी शक्ति गति या क्रिया, च्युत या स्थानान्तरित या रूपान्तरित नही कर सकती। ब्रह्म असीमित तथा प्रकृति सीमित है। अत सीमित सदैव रूपान्तरित स्थानान्तरित या परिवर्तित या सृष्ट-असृष्ट होता है और होता रहेगा। यह क्रम अनादिकाल से चला आ रहा है और अनन्त काल तक चलता रहेगा।

ब्रह्म की तुलना मे प्रकृति अल्प और आत्मा अत्यल्प है। अत्यल्प होने के कारण ही आत्मा मे भौतिकता तथा स्थूलता है और स्थूलता के कारण उसमे भार है। फलत भारशीलता के कारण आत्माओ का आवागमन या जन्ममरण होता रहता है।

जसे प्रकृति स्थूलता तथा भारशीलता के पश्चात् भी अमृत है, वैसे ही आत्माए भी। ईश्वर आत्मा तथा प्रकृति अमृत है। अत तीनो का सम्बन्ध भी अमृत है और तीनो के समन्वय से उत्पन्न होने वाला जीवन और जगत भी अमृत है, क्योकि अमृत से अमृत पैदा होता है।

ससार दृश्य है, जीवन दृश्य है। ये दानो दृश्य, अमृतरूपी अदृश्य या अव्यक्त तत्वो से व्यक्त होने के कारण अमृत है। इनमे जो रूपान्तरण, स्थानान्तरण होत है वहा मृतरूप है। मृत-अमृत का मिश्रण ही जीवन है। अत जीवन मे स मृत्यु को दूर हटाकर अमृत प्राप्त करना अमृत पथ है।

जो जीवन व्यक्त हो रहा है वह अमृत है। अमृत का अर्थ है जिनकी मृत्यु न हो या जो अनश्वर हो। इस प्रकार अमृत, मृत्यु का उल्टा और मृत-अमृत का उल्टा है। अत जीवन ही अमृत है और जीवन हीनता या प्राणहीनता ही मृत्यु है। यदि किसी मनुष्य को अमृतपान करना है तो उसे जीवन या आयु की वृद्धि करनी चाहिए क्योकि जब तक जीवन है तभी तक अमृत है और जब जीवन नही है, तब मृत्यु है।

वस्तुत. अमृत भोग के लिए जीवन का होना अनिवार्य है। मनुष्य ने अमृत भोग किया या नही, इसका कसौटी, स्वास्थ्य और दीर्घायु है। अन जो जीव रोगी हैं या जो अल्पायु हैं वे अमृत भोग नही कर सकते।

ब्राह्मणीय रचना मे, संसार और जीवन ही सुख और अमत है। अत जगत म स्वस्थ सुन्दर सुडौल एव बलिष्ठ शरीर और दीर्घायु से श्रेष्ठ धन दूसरा नही है। विश्व मे ईश्वर और प्रकृति, अपने मूल रूप मे इतने महत्वपूर्ण नही है, जितना उनसे अभिव्यक्त होने वाला जीवन है। ससार मे जीवन ही महत्वपूर्ण है और यही अमृतो का अमृत है।

परमात्मा तथा प्रकृति सदा साथ-साथ रहते हैं। अथवा उनका सम्बन्ध ही अटूट बन्धन है, जिसम आत्मा सम्बन्धित है। अत तीनों तत्व एक दूसरे से कभी मुक्त नही हो सकते। तीनों का सम्बन्ध शाश्वत है।

अत तीनो के शाश्वत सम्बन्धों के कारण जीवन भी शाश्वत है। जीवन अमृत है। अत प्रत्येक जीव को जीवन के द्वारा ही अमृत प्राप्त होता हैं।

जीवन या सुस्वास्थ्य अपने आप मे परम सुख है। अत सुख के लिए ही जीवन साधना या उपासना करनी चाहिए, क्योकि यदि आयु या जीवन ही नही है, अमृत भी किस काम का ? अत अमृत की पूर्ण सार्थकता, ऐसे कार्य या ऐसे उपाय करने मे है, जिनके द्वारा स्वस्थ जीवन या पूर्णायु प्राप्त हो। जिन कर्मों या कार्यो या भावों या विचारो से जीवन-आयु का ह्रास होता है, वे मृत्यु कारक होने से त्याज्य हैं। जीवन आयु का घटना जीवन हनन या आत्महत्या है। आत्महत्या या जीवन को नष्ट करना ही पाप और अपराध हैं। जीवन का विकास एव सवर्द्धन पुण्य और धर्म है।

अत जीवन अपना हो या अन्यो का उसे किसी भी स्थिति मे क्षति नही पहुचानी चाहिए,क्योकि जो जीवन हमे चाहिए वह दूसरों को भी चाहिए। ससार म जीवन सर्वोच्च है, इसलिए ऋषि अनन्त चेतन या जीवन स्वरूप परमात्मा से, शक्ति, तेज, बल ओज व वीर्य वृद्धि के लिए प्राथना करते है। वे चाहते हैं कि प्रत्येक मनुष्य १०० या इससे भी अधिक वर्षों तक जीवित रहे। वे कामना करते है कि प्रत्येक व्यक्ति १०० वष तक किसी के भी अधीन न हो और वह सदा उदित होते हुए सूर्य को देखते रहें।

विश्व मे क्या सत्य है और क्या असत्य? इस विवाद मे न उलझ कर यह सर्वसुलभ सत्य समझ लेना चाहिए कि जीवन से बड़ा सत्य अन्य नही है। अत जीवन को सत्य मानकर उसी की उपासना करनी चाहिए, क्योकि जीवन ही सत्य है और वही अमत है। अत ऋषियों के अनुभव से मृत्यु को दूर हटाकर अमृत पथ पर चलते हुए उन सत्यो को ग्रहण करना चाहिए जो जीवन रहस्य है

"असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतगमयेति।" शतपथ ब्राह्मण

जीवन पचतत्वो पर निर्भर है। अन्न जल, अग्नि वायु विद्युत प्रकाश व ताप आदि तत्वो मे जीवन व्याप्त है। पचभूतो मे व्याप्त जीवन तत्व ही सोमरस है। यही अमृत रस तो ब्रह्म रस है यही रस जीवों का प्राण व पियूष है। यदि पदार्थो मे यह रस व्याप्त न हो, तो जीव, जीवित नही रह सकते। जीव भोजन द्वारा जिस रस को ग्रहण करत है वही अमृत रस है। सभी प्राणी इस रस का पान करके प्राणन क्रिया म समर्थ होते है। अत अमृत-रस जिसे इन्द्ररस भी कहा जाता है बड़ा मधुर और स्वादिष्ट है. इसी ब्रह्म रस से मृत्यु दूर भागती है एव अमृत प्राप्त होता है। (क्रमश)

विदेश समाचार—

मारीशस में आर्य महिला दिवस

रविवार ता० ११ फरवरी सन् १९९६ को मोरिशस में महर्षि दयानन्द जयन्ती के शुभावसर पर आर्य महिला समाज द्वारा महात्मा गांधी संस्थान में महिला दिवस का आयोजन किया गया था। वह होल माता-बहिनों और भाइयों से भरा रहा। इस आयोजन मे आर्य सभा का बहुत बड़ा सहयोग रहा जो एकदम सराहनीय माना जाता है। मोरिशस टापू की सभी दिशाओं की माता-बहनें और भाई उपस्थित रहे। उसी अवसर पर सीता जन्माष्टमी पर भी बहनों ने अपना-अपना विचार व्यक्त किया।

इस शुभावसर पर महिला, परिवार कल्याण एवं बाल विकास मन्त्री माननीया श्रीमती इन्दिरा ठाकुर सिदाया जी ने भारतीय राजदूत जी की पत्नी श्रीमती अनिता सरल जी ने और अनेक बहनों ने भी कार्य-क्रम की शोभा अपनी-अपनी उपस्थिति से बढ़ाई थी। इस शुभ घड़ी पर आर्य सभा के प्रधान तथा आर्योदय पत्रिका के अंग्रेजी विभाग के प्रमुख सम्पादक ने कहा कि "महारानी सीता जी ने अपने घर वालों से कहा था कि मैं श्री रामचन्द्र जी को छोड़कर घर पर कभी नहीं रहना चाहूंगी, अपने पति जी के दुःख-सुख में जंगलों मे भी १४ वर्षों तक मैं उनके साथ रहूंगी।" यही है सीता जी का आदर्श है जो हर महिला को अपनाना चाहिए। महारानी सीता जी का जीवन एक आदर्शमय जीवन रहा। उन्होंने यह भी कहा था कि "श्री रामचन्द्र जी जंगलों में जहां-जहां जायेंगे मैं उनका रास्ता तो साफ कर सकूंगी।" श्री बसकरन मोहित जी ने यह भी सुनाया कि पुराने जमाने में डाइवोर्स याने कि तलाक की बातें आज-कल के समान नहीं रहीं। आज गृहस्थ मे जहां छोटी सी समस्या उठी कि पति-पत्नी एक दूसरे से दूर रहने की बात मन मे लाते हैं। इससे होता है यही कि दुख भोगते है। बच्चों की पढ़ाई और रहन-सहन में कठिनाई होने लगती है।

राजा जनक जी रामचन्द्र जी के समान सुयोग्य वर अपनी बेटी सीता के लिए चाह रहे थे सो उन्हें मिला। वैसे बलवान योद्धा दामाद वे हजारों लाखों मे एक रहे।

महर्षि दयानन्द जी के बारे मे आपने कहा कि "उन्होंने नारियों के रास्तों से सभी बाधाएं हटा दी हैं। अब तो दयानन्द जी की महति कृपा से उजाले का समय चला आया है। अब नारियों की प्रगति का रास्ता खुला है। महिला दिवस के शुभावसर पर सीता के जीवन से बहनो को शिक्षा लेनी चाहिए।"

महिला परिवार कल्याण मन्त्री माननीया श्रीमती इन्दिरा ठाकुर सिदाया जी ने मौके पर अपना भाषण हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं मे दिया और बताया कि "अति खुशी की बात है कि आप सभी बहनें आज यहां पर महिला दिवस मनाने के लिए इकट्ठा हुई है। साथ-साथ आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी की जयन्ती भी मनाने मे लगी हैं। महर्षि दयानन्द जी ने नारी जाति के उत्थान के लिए बहुत कार्य किया है, जो अधिकार महिलाओं को नही था उन्होंने संघर्ष करके दिलाया। उन्होंने अपने सामाजिक कार्यों से जगत् मे कमाल का कार्य किया है। केवल भारत मे ही नही सर्वत्र उनका कार्य चल रहा है। आज मैं भी उन महान देश भक्त सुधारक महर्षि दयानन्द जी के प्रति श्रद्धा से नत-मस्तक हूं। विज्ञान के बल से आज सारा जगत एक गांव सा बन गया है। इसमे नारी जाति का भी, बहुत हाथ है और आज भी आप लोगों को एकता से कार्य करना चाहिए। हमें मिल-जुलकर जागरण करना चाहिए। मैं अपनी मिनिस्ट्री की ओर से महिलाओं के उत्थान के लिए सब कुछ करूंगी। नारी जाति की प्रगति के लिए जितनी संस्थाएं कार्य कर रही हैं उन सबसे सम्पर्क जोड़ूंगी और हम मिल जुलकर कार्य करेंगी।"

आर्य महिला मण्डल की प्रधाना डाक्टर लक्ष्मी गोधन जी ने सुनाया कि "गौरव की बात है कि क्षेत्रों में कार्य करने वाली महिलाएं आज उच्च शिक्षा प्राप्त कर जज, डाक्टर, मीनिस्टर आदि बनकर सेवा में लगी है। सीता जन्माष्टमी और महर्षि दयानन्द जी की १९२ जयन्ती के शुभावसर पर मिल-जुलकर कार्य करने के लिए प्रण करना चाहिए। आर्य महिला समाज अनेक अवसरों पर सामाजिक कार्य करता है, अभी हाल मे हमने अस्पतालों में बीमारों के साथ कुछ समय बिताया, यज्ञ किया और उन्हें मिठाइयां बांटी। काम करके हमने अपनी भाषा और संस्कृति की भी इज्जत बढ़ाई। हमारी जो बहनें अन्य धर्मों मे चली गई हैं उन्हें समझाकर लौटाना भी तो हमारा काम है।" संगीत-कक्षाएं चलाने की बात की। आपने नारी उत्थान के उद्देश्य से और अनेक योजनाओं के बारे में समझाया आपने सब माता बहनों और भाइयों का स्वागत करते हुए धन्यवाद भी किया। नारी जाति के सुधार में आर्य समाज और महर्षि दयानन्द द्वारा किये गये कार्यों पर आपने बहुत कुछ विस्तार से समझाया।

आर्य सभा के मन्त्री श्री सत्यदेव प्रितम जी ओ. एस. के ने कहा कि "जब तक जगत् मे चांद और सितारे रहेंगे तब तक नारियों को प्रेरणा मिलती रहेगी। आज आप माता बहनों को यहां से कुछ नई बातें सीखकर जाना चाहिए। आपको भी आदर्श वादिता की शिक्षा लेनी होगी। हरेक घर-गृहस्थी मे बाल्मिकी रामायण रखनी चाहिए।

आज गौरव की बात है कि हम यहां पर महर्षि दयानन्द जी की १९२ जयन्ती भी मना रहे है, उन्होने मानव मात्र को सामाजिक हित के लिए जो कुछ कहा है उसे भूलना नही चाहिए। उन्होंने महिलाओं के जीवन मे नया प्रकाश लाने के लिए बहुत परिश्रम किया था। हमे कन्या पाठशालाएं सर्वत्र खोलनी चाहिए। हरेक परिवार मे बच्चों के साथ साथ शाम मे बैठकर प्रार्थना के बाद सामूहिक रूप मे भोजन करना चाहिए तभी आपसी प्रेम बढ़ेगा।"

श्रीमती उषा जीता जी ने कहा कि "आज का कार्यक्रम त्रिवेणी की भांति है। दयानन्द जयन्ती, सीता जन्माष्टमी और आर्य महिला दिवस हम लोग एक साथ मना रही हैं। सीता वह संज्ञा है वह शब्द है जो हमारी अपनी संस्कृति का पर्याय है, उनका चरित्र एक प्रकार से वेदों की व्याख्या भी मानी जा सकती है साथ ही उनके चरित्र का नैतिक मूल्य भी है, यह नही मालूम आज की लड़कियां यह सब जानती है या नहीं।

गत वर्ष चीन देश के 'बीजिंग' मे विश्व महिला उत्सव मनाया गया था, माता-बहनों के सम्मान और अधिकार की बातें भी वहां पर की गई थीं।

आज की महिलाओं को अपने-अपने बच्चों को सीता का चरित्र समझाना चाहिए साथ ही उनका भावी कर्तव्य भी माना जायेगा, महारानी सीता के गुणों से हमारी लड़कियों को अवगत रहने से बहुत लाभ होगा। सीता जी में सत्यता थी।"

आर्य उपदेशक मण्डल की आर्य सेविका पण्डिता दमयन्ती चिन्तामणि जी ने समझाया कि "सीता जी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी आदर्श रहेंगी इसी लिए आज हम महिला दिवस मना रही हैं। महिलाओं को गौरवपूर्ण जीवन जीना चाहिए। हमें अपनी बेटियों को लक्ष्मी समझना चाहिए।

नारियों की दुःख पूर्ण समस्याओं को समझाते हुए आपने बताया कि हमें नहीं भूलना चाहिए कि नारियों को जीवित जिला

(शेष पृष्ठ ७ पर)

ज्ञान की सार्थकता आचरण से है

—यशबाला गुप्ता

क्या आपको कभी पश्चाताप हुआ है ? क्या आपका मन कभी व्याकुल हुआ है ? क्या आपको बेबसी अनुभव नही होती उस समय जबकि आपके सामने आपका ही बच्चा आपकी अवज्ञा करता है ? टी०वी० के सामने बैठा १५ २० साल का बच्चा आपके ही सामने वो कुछ देख लेना चाहता है जिसको देखकर आप नजरें झुका लेते हैं। प्रात. काल उठने की प्रेरणा उसे बिल्कुल नहीं आती । यदि आप हवन करते है तो वह उसम सम्मिलित होना आवश्यक नहीं समझता। यदि आप उन्हे किसी ऐसी जगह ले जाना चाहते हैं जहा आप ले जाना उचित समझते हैं तो उन्हे वहा बोरियत अनुभव होती है। उपदेश सुनना उनके लिए बेमायने हैं। अपने आपको सभ्य परिवार का सदस्य मानने वाला गृहस्थ जहा कभी कभार धार्मिक अनुष्ठान हुआ करते है अपने बच्चो से आशा करता है कि वे भी उसी साचे मे ढले, जैसा वह स्वय है। बहुधा बच्चा माता-पिता की आज्ञाका पालन कर लेताहै—भले ही ऊपरी मनसे पर प्रश्न करता है कि "वहा जाने से क्या लाभ जहा "परहित उपदेश कुशल बहुतेरे"। क्या केवल मात्र हवन करने या मन्दिर जाने से आदमी चरित्रवान, धार्मिक होता है ? जिस आदर्श को वह दूसरो के सामने रखना चाहता है क्या स्वय उसका पालन करता है ? 'भूखा प्यासा पडा पडोसी, तूने रोटी खाई" तो क्या माता हुआ कभी उस पर आचरण करता है ? क्या धर्म के दस लक्षणो, धर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय, निग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध को जानकर उस पर चलता है ? यदि नही तो ऐसा उपदेश व्यर्थ है । ऐसे तर्क को क्या कहे तर्क या कुतर्क ? बच्चे की बात मे सच्चाई तो जरूर नजर आतीहै। आज नई पीढी को धार्मिक बनाने के लिए बुजुर्गों को अपनी कथनी करनी एक करनी होगी। बड-बडे धर्मोपदेशको को जब अनुचित आचरण करते सुना व देखा जाता है तो उन पर आस्था नही रहती, और बालक मन बहकने लगता है । पाश्चात्य सस्कृति की चकाचौध उसे अपनी ओर आकर्षित करती है, वहा करनी और कथनी का अन्तर दिखाई नही देता। कभी-कभी समाज के बिगडे तत्व मिल जाते हैं, जो अनाचार और लालच की मीठी गोली से नई पीढी को गुमराह कर देते है। जिसके परिणाम स्वरूप वह उल्टी राह पकड लेता है। उसे वह हर उपदेश जो उसको राह पर ला सकता है, एक खोखला भाषण लगता है । यह शायद इसलिए कि जो सस्कार उसे बचपन मे मिलने चाहिए थे उसे वे नही मिले या उसम कही कसर रही । उचित समय पर उचित सस्कारो का अभाव ही हर बुराई की जड है । कही वो आतकवाद के रूप मे पनपता है तो कही चोरी डकैती, लूट मार के रूप मे। उसका लक्ष्य खाओ, पीओ व ऐश करो तक ही सिमट जाता है।

ऐसी अवस्था व गन्दे वातावरण को देखकर मन दुखी हो जाता है और ढूढने लगता है ऐसा कोई समाधान जो नई पीढी को नई राह दिखा सके। उनके लक्ष्यकी ओर उन्हें मोडसके। मेरे ख्याल मे हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियो द्वारा सुझाई गई गुरुकुल व्यवस्था इसमे सहायक हो सकती है। जहा प्राचीन विद्या व सस्कृति के ज्ञान के साथ आधुनिक विज्ञान की भी शिक्षा हो । जहा गुरुकुल का छात्र केवल पोगा पण्डित या कर्मकाण्डी उपदेशक बनकर न निकले बल्कि हर क्षेत्र मे आगे रहे। आधुनिक भौतिक विकास को अपने प्रयोजन म नियोजित करने की सामर्थ्य उसमे आनी चाहिए न कि उसमे हतप्रभ होकर वह उसका अनुगामी बन जाए । यदि स्कूलो मे भी धर्म शिक्षा का आवश्यक विषय हो तो कुछ राहत मिल सकती है वरना मानवता को ताक पर रखकर नई पीढी का निर्माण नही किया जा सकता। कम से कम उस सन्दर्भ मे जिसमे हम आदर्श समाज को देखते समझते हैं। क्या हमारे शिक्षाविद् व सन्यासी वृन्द इस दिशा मे प्रयत्नशील हो सकेगे ?

याद रखिए ईट पत्थर की दीवारें समाज का निर्माण नही करती अपितु उसमे बसने वाले सुसस्कृत, सुशिक्षित व्यक्ति ही उसकी जान है।

सयोजिका, आर्य महिला समाज, सान्ताक्रुज

मारीशस में आर्य महिला दिवस

(पृष्ठ ६ का शेष)

पर सुलाकर जिंदा जला दिया जाता था, ऐसे अन्याय से महर्षि दयानन्द जी ने हमे बचाया। बाल-विवाह नारी जाति के प्रति आज भी एक अभिशाप है, इसीलिए नारी जाति को आज महिला दिवस मनाते समय अपना गौरव समझना चाहिए। धर्म ग्रन्थो मे नारी को ब्रह्मा का भी पद दिया गया है। नारी महान् है।"

श्रीमती सरिता बुधू जी जो एक उच्च कोटी की अंग्रेजी-फ्रेंच लेखिका हैं। आप हिन्दी, अंग्रेजी और फ्रेंच भाषाओ मे अच्छा अधिकार रखती हैं। आपने मौके पर कहा कि "महर्षि दयानन्द जी ने यह आवाज उठाई थी कि महिलाओं को सम्मान का अधिकार दिलाना चाहिए। आज जो कुछ आप लोग यहा पर अच्छा विचार सुन रही है उन्हे जीवन मे जरूर उतारें। सीता हमारे लिए एक प्रतीक है । उनसे सहनशीलता और आत्मविश्वास अपनावें। चुनौतियो का सामना करना सीखें, सभी बहनो को साथ-साथ चलने से लाभ होगा। आज हम अत्याधुनिक कम्प्यूटर के युग मे जी रहे हैं पर सस्कार माता-पिता ही मे सीखना चाहिए।"

वहाँ पर समय समय पर आर्य सभा द्वारा चालू सगीत कक्षा के छात्राओं द्वारा सगीत का आनन्द लेने का और महात्मा गाधी सस्थान के विद्यार्थियो द्वारा सगीत का रसास्वादन लेने का मौका मिलता रहा था।

अन्त मे आर्य सभा के भूतपूर्व मन्त्री श्री प्रहलाद रामशरण जी के आर्य महिला मण्डल की भूतपूर्व नेत्री श्रीमती लखावती हरगोविन्द जी के कार्य-कलापो पर प्रकाशित इन्द्रधनुष पत्रिका के विशेषाक का विमोचन भारतीय राजदूत जी की पत्नी श्रीमती शरण जी के कर कमलो द्वारा करवाया। कार्य का सचालन महिला मण्डल की मन्त्रिणी श्रीमती धनवन्ती सालिक जी ने सुन्दर ढग से किया। श्रीमती पण्डिता सत्यावती बेलाडवा जी ने महर्षि दयानन्द जी के कार्यों पर सुन्दर कविता और भजन पेश किये कुमारी क्षमा मुरगावा जी ने लडकियो के शिक्षण पर सुन्दर विचार दिया।

—प० धर्मवीर घूरा, शास्त्री अध्यक्ष
मोरिशस हिन्दी लेखक सघ

स्वास्थ्य चर्चा—

दही के गुण और दोष

दही के गुण दही अग्निदीपन करने वाला, चिकना कुछ कसैला भारी व खट्टा होता है। यह श्वास, पित्त रक्तविकार व सूजन पैदा करता है। मेद व कफ बढ़ाता है। मल को बांधता है।

दही के भेद। दही पांच प्रकार का होता है—मीठा, फीका, खट्टा, बहुत खट्टा, और खटमिट्ठा।

मीठा दही मीठा दही वात पित्त को जीतता है। वीर्य बढ़ाता है। शरीर भारी करता है। मेद, कफ, नाश कर रक्त शोधता है।

फीका दही। फीका दही दस्तावार, अधिक पेशाब लाने वाला और दाह कारक होता है। इसके खाने से त्रिदोष होते हैं।

खट्टा दही खट्टा दही रक्त-पित्त और कफ पैदा करता है लेकिन अग्निदीपन करता है।

बहुत खट्टा दही अत्यन्त खट्टा दही रक्त, पित्त रोग उत्पन्न करता है। गले में जलन व दांत खट्टे करता है।

खटमिट्ठा दही खटमिट्ठा दही मीठे दही की तरह गाढ़ा और संग गुणी होता है।

पकाए दूध का दही। दूध को औटाकर जो दही जमाया जाता है वह बहुत अच्छा रुचिकारक व चिकना होता है। तासीर में ठंडा हल्का, काबिज, भूख चैतन्य करने वाला परन्तु पित्त कारक होता है।

शक्कर मिला दही। बूरा मिला हुआ दही श्रेष्ठ होता है। यह श्वास पित्त, रक्तविकार का दाह का नाश करता है। गुड़ मिला दही वातनाशक वृष्य, पुष्टिकारक और पचने में भारी होता है। दही का पानी भी कसैला, खट्टा, पित्तकारक, रुचिकारक, ताकतवर और हल्का होता है। दस्त, कब्ज, पीलिया, दमा, तिल्ली, वायु, कफज और बवासीर में आराम करता है।

मलाई उतरा दही बिना मलाई का दही मल बांधने वाला, कसैला, वातकर्ता, हल्का और अग्निदीपक होता है। संग्रहणी रोग में मलाई रहित दही खाने से आराम मिलता है।

दही की मलाई दही की मलाई वीर्यवर्धक, वात पित्त अग्नि नाशक, पित्त कफ कारक होती है। बिना मलाई का दही दस्त को बांधता है किन्तु दही की मलाई दस्त लाती है।

गाय के दूध का दही गाय का दही विशेषत मीठा, खट्टा, पुष्टिकारक, अग्निदीपक और वातनाशक होता है। सब प्रकार के दहियों में गाय का दही सर्वश्रेष्ठ होता है।

भैंस दूध का दही भैंस दूध का दही बहुत चिकना कफकारक, वात-नाशक अग्निमन्दक वृष्य भारी व रक्तविकारी होता है।

दही खाने के नियम

१ रात में दही नहीं खानी चाहिए। खाना भी पड़े तो साथ घी बूरा, मूंग की दाल आंवला कुछ न कुछ लेना चाहिए। रक्त पित्त सबंधी कोई रोग हो तो दही रात में कतई न खाए।

२ अगहन, पूस माघ, फागुन में दही खाना उत्तम, सावन भादो में लाभकारी क्वार कार्तिक, जेठ, आषाढ़ बैशाख म हानिकारक होता है।

गाय के दही से रोग नाश

१ एक प्रकार का सिरदर्द ऐसा होता है कि सूर्योदय के साथ-साथ बढ़ता और सूर्यास्त के साथ साथ घटता जाता है। ऐसे सिर दर्द में सूर्योदय से पूर्व गाय का दही और भात का लगातार एक सप्ताह सेवन करें। लाभ अवश्य होगा।

२ आंव के दस्त, पेट की मरोड़ी, मे गाय का दही लेना चाहिए परन्तु यदि दस्तो के साथ साथ बुखार हो तो दही कतई न लें।

—रजनी गोयनिका

विचार मन्थन

(१) विषयों को भोगकर, इन्द्रियों की तृष्णा को समाप्त करने वाला तुम्हारा विचार ऐसा ही है जैसा कि आग को बुझाने के लिए उसमें घी डालना।

(२) यह मानना तुम्हारा सबसे बड़ा अज्ञान है कि मैं कभी मरूंगा नहीं, और यह शरीर बहुत पवित्र है' विषय भोगों में पूर्ण और स्थाई सुख है तथा 'मनुष्य देह ही आत्मा है।

(३) तुम्हारे मन में अच्छे या बुरे विचार अपने आप नहीं आते। इन विचारों को तुम अपनी इच्छा से ही उत्पन्न करते हो क्योंकि मन तो यन्त्र के समान जड़ वस्तु है, उसका चालक चेतन आत्मा है।

(४) किसी के अच्छे या बुरे कर्म का फल तत्काल प्राप्त होता न देख कर तुम यह मत विचारो कि इन कर्मों का फल आगे नहीं मिलेगा। कर्म फल से कोई भी बच नहीं सकता क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापक है सर्वज्ञ तथा न्यायकारी है।

(५) संसार (प्रकृति) संसार का भोगने वाला (जीवात्मा) तथा संसार को बनाने वाला (ईश्वर) परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को जान कर ही तुम्हारे समस्त दुःख एवं चिन्ताएं समाप्त हो सकती हैं और कोई अन्य उपाय नहीं है।

(६) मनुष्य जीवन ईश्वर प्राप्ति के लिये ही मिला है। इस मुख्य लक्ष्य को छोड़कर अन्य किसी भी काम को प्राथमिकता मत दो नहीं तो तुम्हारा जीवन चन्दन के वन का कोयला बनाकर नष्ट करने के समान ही है।

(७) तुम्हारे जीवन की सफलता तो काम क्रोध लोभ, मोह अहंकार आदि अविद्या के कुसंस्कारों को नष्ट करने में ही है। यही समस्त दुःखों से छूटने का श्रेष्ठतम उपाय है।

(८) तुम्हारे लोहे रूपी मन को विषय भोग रूपी चुम्बक सदा अपनी ओर खींचते रहते हैं। ज्ञानी मनुष्य विषय भोगों से होने वाली हानियों का अनुमान लगाकर इनमें आसक्त नहीं होते किन्तु अज्ञानी मनुष्य इनमें फंस-कर नष्ट हो जाते है।

(११) महान ज्ञान बल, आनन्द आदि गुणों का भण्डार ईश्वर एक चेतन वस्तु है, जो अनादिकाल से तुम्हारे साथ है न कभी वह अलग हुआ न कभी होगा। उसी संसार के बनाने पालन करने वाले सबके रक्षक निराकार ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना वेद मन्त्रों से ही तुम सब मनुष्यों को सदा प्रातः सायं करनी चाहिए।

'नाम्या पथा' (महर्षि दयानन्द सरस्वती वेद उपदेशामृत)
संकलनकर्ता—स्वामी केवलानन्द, साधक गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ जनपद, भोलाझाल

वैदिक धर्म प्रचार एवं राष्ट्र रक्षा सम्मेलन

आर्य समाज कृष्णनगर प्रयाग का ८६वां वार्षिकोत्सव २८, २९ व ३० अप्रैल ९९ ई० को मसुटिया देवी का मन्दिर कीडगंज प्रयाग मे नित्य प्रातः ६ बजे से १० बजे तक साय ६ से रात्रि ११.०० बजे तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के साथ मनाया जाएगा।

प० सत्यदेव शास्त्री वाराणसी ठा० कुमार महिपालसिंह बलिया, प० वीरेन्द्र आर्य गाजीपुर, सियाराम 'निर्भय' बिहार, प० पुन्नू लाल प्रयाग पधार रहे हैं। —सन्तोषकुमार शास्त्री

शोकसमाचार

बड़े दुःख के साथ सूचित करना पड रहा है कि आर्य समाज के महान् कार्यकर्ता,दानदाता, समाज सेवक घूरी क्षेत्र के आर्य समाजों मे धूम मचाने वाले महाशय ,कुन्दनलाल घूरी वालों का रुग्णता के कारण १२-३-९९ को शरीर पूरा हो गया है वे ८० वर्ष के थे। परमपिता से हम प्रार्थना करते है कि उनकी आत्मा को सद्गति एव शान्ति प्रदान करे एव परिवार वालो को इस महान् दुःख को सहन करने की शक्ति दे।

—महात्मा प्रेमप्रकाश जीवानप्रस्थी

दिल्ली भाषा विधेयक पर सम्मेलन

दिल्ली के राजभाषा विधेयक को प्रवर समिति को पुनर्विचार के लिए भेजे जाने के बाद की परिस्थिति पर प्रशांत विहार रोहिणी मे एक सम्मेलन मे विचार किया गया। सम्मेलन मे बादली, शालीमार बाग, शकूरबस्ती माडल टाउन, केशवपुरम तथा शक्तिनगर विधान सभा क्षेत्रो के बुद्धिजीवी कार्यकर्ता बडी संख्या मे सम्मिलित हुए बादली क्षेत्र के विधायक श्री जय. भगवान अग्रवाल मुख्य अतिथि थे।

सम्मेलन मे भाषा विधेयक को प्रवर समिति को सोपे जाने के लिए दिल्ली सरकार का धन्यवाद किया। विधायक श्री अग्रवाल से आग्रह किया गया कि मूलभाषा विधेयक के उद्देश्यो तथा धारा ३ और ६ मे हिन्दी के व्यवहार के बारे में जो रुकावटें हैं उन्हें हटाया जाए। यह भी मांग की गई कि जब तक विधेयक पास नही होता तब तक भी दिल्ली सरकार के कार्यालयो तथा अदालतो मे सारा काम हिन्दी मे कराया जाय। केन्द्र सरकार ने दिल्ली को 'क' प्रदेश (पूर्ण हिन्दी प्रदेश) माना है। केन्द्र सरकार की भाषा नीति के अनुसार 'क' प्रदेशों का शत प्रतिशत सरकारी कामकाज हिन्दी मे होना अनिवार्य है।

विधायक श्री जय भगवान अग्रवाल ने इन मांगो से सहमति प्रकट की। उन्होंने आश्वासन दिया कि वे विधेयक में आवश्यक संशोधन के लिए प्रवर समिति के अध्यक्ष और मुख्यमन्त्री के सामने सम्मेलन का पक्ष रखेंगे और इसे स्वीकार करने का आग्रह करेगे।

—सुखदेव शर्मा

हिन्दी राष्ट्र की व्यापकता से जुड़ी हुई भाषा

१३ मार्च १९९९ को हिन्दीतर भाषी हिन्दी लेखकों को सम्मानित करनेके लिए केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की ओरसे एक कार्यक्रम रखा गयाथा जिसमे राष्ट्रपति डा० शकरदयाल शर्मा ने लेखकों को सम्मानित करते हुए कहा कि हिन्दी राष्ट्रीय अस्मिता के साथ साथ राष्ट्र की व्यापकता से जुडी हुई भाषा होने के कारण ही राजभाषा के रूप मे प्रतिष्ठित हुई है। अतः यह जरूरी है। कि देश का प्रत्येक नागरिक हिन्दी के लिए अपना यथासम्भव योगदान करे जो उसे पूरे राष्ट्र से जोडती है। यह राष्ट्र की अनेक महान भाषाओं को जोडने वाला सेतु है।

इस अवसर पर केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक डा० गगाप्रसाद विमल ने कहा कि विश्व के एक हजार शिक्षण संस्थाओं म हिन्दी के शिक्षण प्रशिक्षण का कार्य होता है।

जगन्नाथ संयोजक राजभाषा कार्य

आर्य कन्या विद्यालय समिति अलवर के तत्वावधान में

हृदय रोग निदान शिविर

आज के युग मे मानसिक तनाव, प्रदूषण खाद्य पदार्थो मे मिलावट अनियमित भोजन तथा नशीले पदार्थों के सेवन के कारण काफी लोग हृदय रोग के शिकार हो रहे हैं। सीने मे दर्द थकावट होना पैरो मे सूजन,ज्यादा दिल धड़कना, रात्रि मे सास लेने मे घुटन, चलने मे सास फूलना आदि हृदय रोग के प्रारम्भिक लक्षण है। इसे ध्यान मे रखते हुए आर्य कन्या विद्यालय समिति ने हरीश हास्पिटल के सौजन्य से १ अप्रैल १९९९ रवि-वार को इस शिविर का आयोजन किया है। इस शिविर का पंजीयन शुल्क २५ रुपए है पजीयन के लिए रोगी को स्वय उपस्थित होना होगा।

शिविर मे खून, मूत्र, ई.सी.जी एक्सरे एव इकोकार्डियो ग्राफी आव-श्यकतानुसार निःशुल्क की जाएगी।

साय ५ बजे से ६ बजे तक शिविर का समापन समारोह एव हृदय रोग प्रश्नोत्तरी।

—छोटूसिंह आर्य
प्रधान

ईसाई नर्स ने हिन्दू धर्म अपनाया

कानपुर। आर्य समाज मन्दिर गोविन्दनगर मे केन्द्रीय आर्य सभा के अध्यक्ष श्री देवीदास आर्य ने एक २१ वर्षीय ईसाई नर्स शीवी इब्राहीम को अपनी इच्छानुसार वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) की दीक्षा दी उसका नाम शशी रखा गया।

श्री आर्य ने शुद्धि सस्कार के पश्चात शशी का विवाह श्री शिवप्रसाद के साथ सम्पन्न कराया।

श्री आर्य ने बताया कि शशी मूल रूप से केरल की रहने वाली है। कानपुर मे एक नर्सिग होम मे कार्यरत है उसका कहना है कि उसे हिन्दू विवाह मे पति पत्नी का आजीवन साथ मे रहने का सकल्प बहुत पसन्द आया।

—बालगोविन्द आर्य मन्त्री

यज्ञशाला एवं छात्रावास का शिलान्यास

गुरुकुल विज्ञान आश्रम पालीमारवाड राजस्थान मे चैत्र सुदी प्रतिपदा वि०स० २०५३ तदनुसार २० मार्च १९९६ को एक भव्य यज्ञशाला एव छात्रावास का शिलान्यास स्वामी विवेकानन्द जी प्रभात आश्रम एव स्वा० ऋतमानन्द जी अगिरा के कर कमलो द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यज्ञ, भजन, प्रवचन हुये तथा बाहर से आये हुये विद्वानों से निर्देशन मिला। दिल्ली निवासी श्री वीर सेन जी मुखी ने कुए के निर्माण का कार्य अपने हाथो मे लिया जिसमे लगभग एक लाख रुपये व्यय होगे। २५,२६,२७ अक्तूबर १९९६को मनाये जाने वाले स्वामी समर्पणानन्द जी के जन्म शताब्दी समारोह के प्रति जनता मे अति आकर्षण एव उल्लास था। सभी आर्य जनों ने शताब्दी समारोह को सफल बनाने का दृढ निश्चय किया तथा अपने-अपने कार्य मे लग गये। मच का सफल सचालन भारतीय सफाई कर्मचारी योजना आयोग के अध्यक्ष श्री मागेराल जी आर्य ने किया जो इसी आश्रम के पुराने छात्र रह चुके हैं।

—ब्र० कुलदीप अधिष्ठाता

चुनाव सूचना

दरियागज, आर्य समाज का चुनाव दिनाक ३१ मार्च १९९६ को सम्पन्न हुआ। जिसमे श्री बी०बी० सिगल सर्वसम्मति से प्रधान चुने गये और श्री सुरेशसिंह चौहान मन्त्री, श्री सुरेन्द्र गुप्ता कोषाध्यक्ष, श्री धर्मपाल गुप्ता उप-प्रधान, श्री वीरेन्द्र कुमार रस्तोगी उपप्रधान श्री वेदप्रकाश कतयाल उपमन्त्री, श्री विजेन्द्र मिश्रा उप-कोषाध्यक्ष निर्वाचित किये गये।

शोक समाचार

दिनाक ४ अप्रैल ९६ को रात्रि दो बजे वयोवृद्ध आर्य समाजी नेता श्री हरीसिंह यादव का स्वर्गवास हो गया। हम उनके दुख सन्तप्त परिवार को ईश्वर से धैर्य सद्बुद्धि के लिए तथा दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करते है।

आप हरियाणा प्रान्त के रेवाडा जिले के कोसली गाव के निवासी थे। आपने सन् १९४७ मे सेना की नौकरी छोडकर झासी नगर क्षेत्र मे बस गये। तथा आर्य धर्म मे दीक्षित हो गये। आप ८२ वर्ष के थे तथा जीवन भर आर्य समाज की सेवा की आपने दलितोद्धार करने के साथ आर्य समाज मे प्रधान, सरक्षक तथा जिला सभा मे महत्वपूर्ण स्थानो पर कार्य किया। आप विद्या प्रचारणी सभा के अन्तगत आपने शिक्षा सस्था मे महत्वपूर्ण कार्य किये तथा आपने कस्तूरबा इन्टर कालेज नामक विद्यालय चलाया व प्रबन्ध समिति के प्रेसीडेन्ट (चेयरमैन) रहे।

आपने पुत्र-पुत्रिया, पोते-प्रपोते व प्रपोतियो सहित भरा-पूरा सम्पन्न परिवार छोडा है।

—डा०आर०के० सिंह आर्य

बनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर

गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज मन्दिर, रानी बाग (नई दिल्ली) मे १५ मई से २ जून, १९९६ तक वैचारिक क्रान्ति शिविर लगाया जाएगा। यह शिविर विशेषतया बनवासी बालक-बालिकाओ के लिये आयोजित किया जाता है। अन्य इच्छुक शिविरार्थी भी इसमे भाग ले सकते हैं।

शिविर में निम्नलिखित नियमों का पालन अनिवार्य होगा-

१ प्रतिदिन प्रात पाच बजे उठना।
२ प्रात ५ ३० बजे यज्ञ मे अवश्य उपस्थित होना।
३ दिन-भर के सभी कार्यक्रमो में सदा उपस्थित रहना
४ शिविर मे भोजन का प्रबन्ध आर्य समाज रानी बाग के सदस्यो द्वारा होगा।
५ वापिस जाने का मार्ग व्यय प्रत्यक शिविरार्थी को दिया जाएगा।
६ आप केवल हल्का बिस्तर एव अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओ के अनुसार कम से कम सामान ही लाए।
७ इस वर्ष शिविर की समाप्ति पर दिल्ली-दर्शन के स्थान पर हरिद्वार-दर्शन का विशेष कार्यक्रम रहेगा।
८ अन्त मे बनवासी सम्मेलन का आयोजन भी किया जाएगा।

श्रीमती प्रेमलता खन्ना शास्त्री, मन्त्री

पृष्ठ 2 का शेष

हिन्दी को मैं...

का इतिहास जाने बिना आप अपने गौरवपूर्ण इतिहास की महत्ता नहीं समझ सकते! आज की शिक्षा में एक बड़ी कमी है, राष्ट्रीय दृष्टिकोण का अभाव। पुरातन भारतीय इतिहास के अन्वेषण तथा स्वाधीनता आन्दोलन की बुनियादी धारणा से अपरिचित होने के कारण ही हम सर्वधर्मसमभाव, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद तथा अनेकता में एकता के सिद्धांतों को नहीं समझ पा रहे हैं। देश के सामने धर्म, जाति, छुआछूत, गरीबी तथा अंधविश्वासों की चुनौतियां विकराल होकर खड़ी हैं। अत: आप इस तथ्य को अच्छी तरह समझ लें कि यह देश किसी एक धर्म, विचार उपासना प्रणाली अथवा जीवन शैली के लिए नहीं बना। यहां बहुत भेद हैं फिर उन सब में जो अभेद है उसी का दर्शन शिक्षा का लक्ष्य है। हम समाज के व्यापक हित को सामने रखें और अपने लक्ष्य को सुदृढ़ बना लें तो हमारा सारा क्रियाकलाप ठीक हो जाएगा। शुद्ध लक्ष्य (*Pure end*) के लिए अशुद्ध साधन (*Impure means*) से काम नहीं लिया जा सकता। महात्मा गांधी ने बार-बार इसी बात पर जोर दिया है कि शुद्ध लक्ष्य के लिए शुद्ध साधन से ही लेना होगा।

मैं गुरुकुल (*Residential school*) का प्रशासक रहा हूँ। स्वामी श्रद्धानन्द ने गांधी जी से पहले छुआछूत का कलंक मिटाने के लिए उद्योग किया था। कांग्रेस में इस आशय का प्रस्ताव भी स्वामी जी के कारण ही पारित हुआ। स्वामी जी सिद्धांत और व्यवहार में एक थे। उन्होंने पिछड़े, निर्धन, निरक्षर तथा दलित लोगों के जीवन के उत्थान के लिए कांग्रेस से भी अधिक कार्य किया। मैं आपका आह्वान करता हूँ, आप लोग आगे आए तथा छोटे बड़े, धनी-निर्धन, पवित्र अपवित्र एवं सवर्ण असवर्ण के कृत्रिम तथा अमानवीय भेदों को तोड़कर एक स्वस्थ भारतीय समाज की संरचना का अभियान चलाएं। शरीर भी तभी चलता है जब उसका हर अंग दूसरे अंग का सहयोग करे। सामाजिक शरीर के सभी अंग यदि एक दूसरे के पूरक होकर सहयोग करेंगे तो देश सुरक्षित रहेगा, अन्यथा वह बालू की भीत की तरह बिखर जाएगा। मानव मात्र की एकता का सिद्धांत वैदिक है जो विचारक इस भारतीय आदर्श को समाज के लिए कल्याणकारी समझते हों उनका कर्त्तव्य है कि इसको लोकनायकों के सामने रखें तथा सार्वजनिक चरित्र द्वारा इस आदर्श को ढालने का उद्योग करें।

स्वदेशी का प्रचार अत्यन्त आवश्यक

आचार्यगण, ज्ञान और स्वाध्याय के साथ-साथ स्वावलम्बी होना भी बहुत जरूरी है। बिना स्वावलम्बन के स्वदेशी की बात ठीक से हृदयंगम नहीं कर सकते। इस देश में आर्थिक संसाधनों की कमी है। हम पूर्ण विकसित, आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ देशों की तरह, शोध और उच्चतर अध्ययन के क्षेत्र में उच्च उपलब्धियां केवल स्वावलम्बन, श्रम और तप द्वारा ही पा सकते हैं। यहाँ छात्रों में प्रतिभा, रचनात्मकता तथा मौलिकता की अपार शक्ति है पर संसाधनों के अभाव में उन्हें संघर्ष करना पड़ता है। हमारे अनुभवों का एक नया संसार उन्हीं के सत्प्रयत्नों से उद्घाटित होना है। मेरा कहना है कि यहां भी हमें अपना लक्ष्य शुद्ध रखना चाहिए। प्रकृति के रहस्यों का नित्य नूतन ज्ञान मानव जाति में एकता पैदा करने के लिए होना चाहिए। धर्म तथा विज्ञान मिलजुल कर ही विश्व की रक्षा कर सकते हैं। रंग, सम्प्रदाय, वर्ण तथा भाषा भेद, शुद्ध चेतना पर कुहासे की पर्त चढ़ाते हैं, इस अंधेरे में हमें अपना लक्ष्य नहीं दिखाई देता। आज जब हम सीमित आर्थिक साधनों के रहते राष्ट्रीय उन्नति और सामाजिक विकास की बहुविध योजनाएं चला रहे हैं तब आपके सक्रिय सहयोग और निष्काम त्याग की महत्ता बढ़ जाती है। आपकी खोजों से शिवेतर क्षति अर्थात् अकल्याण की समाप्ति और जन कल्याण की उन्नति का लक्ष्य पूरा होना चाहिए। जब पूरे विश्व मे शक्ति की अनियन्त्रित होड़ बढ़ रही हो तथा छोटे विकासोन्मुख तथा अर्धविकसित देश अपनी आन्तरिक बाह्य समस्याओ में उलझे हों तब आपका दायित्व और भी बढ़ जाता है। यदि सत्य शिक्षा का प्रसार हो तो विश्व इस पागलपन और तनाव से मुक्त हो जाए। आज की शिक्षा और विशेषकर वैज्ञानिक शिक्षा का यह अत्यन्त दुर्बल पक्ष है।

एकता की किरण

मेरे प्यारे विद्यार्थियों, यदि तुम मानवमात्र को उसके सही परिप्रेक्ष्य में देखना चाहते हो, यदि समाज से शोषक और शोषित का भेद मिटाना चाहते हो, यदि देश को एकता के सूत्र में पिरोए रखना चाहते हो, यदि पृथ्वी पर सुख शान्ति, सर्वोदय और सामूहिक समृद्धि की कामना करते हो, यदि मनुष्य-मनुष्य तथा वर्ग-वर्ग में अनेकता हटा कर एकता लाना चाहते हो तथा पृथ्वी को स्वर्ग बनाना चाहते हो तो ऐसी व्यवस्था का निर्माण करो, जहां अभेद दर्शन का आधार हो। धर्म कर्त्तव्य के पालन में प्रत्येक व्यक्ति की दृष्टि उदार तथा तर्कसंगत हो। उसमें किसी ऐसी उपासना शैली तथा शिक्षा के लिए स्थान न हो जो मनुष्य को मनुष्य से लड़ाए, उनमें अलगाव पैदा करे तथा वर्ग संघर्ष के लिए प्रेरणा दे। दृढ़ तथा पवित्र चरित्र, स्वालम्बन और जनकल्याण ही उसका लक्ष्य हो।

इन शब्दों के साथ मैं आपके उज्जवल भविष्य के लिए मंगलकामना करता हूं तथा आशा करता हूं कि स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माताओं ने जो विचार दर्शन तथा जीवनशैली प्रदान की, उसका आप अनुपालन करें। भारतीय ऋषि-मुनियों की चिन्तन शैली को जीवन में उतारें तथा इस देश, समाज और अपने शिक्षणालय की महान परम्पराओ की रक्षा करें। आपको ऐसे संसार का निर्माण करना है, जहां सब मिलकर कार्य करने तथा जीवन यापन करने में हर्ष का अनुभव करें ताकि मनुष्य का मनुष्य द्वारा किए जाने वाला शोषण और अन्याय समाप्त हो जाए। आपने यह आशीर्वचन सुना होगा।

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चिद दु:ख भाग्भवेत्।

इस भावना को मन, वाणी तथा शरीर से सार्थक करें। आपको हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त हो, यही मेरी प्रार्थना है।
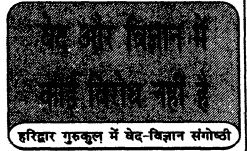
हरिद्वार 12 अप्रैल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव की अध्यक्षता में वेद विज्ञान संगोष्ठी सम्पन्न हुई। एक प्रमुख वनस्पति वैज्ञानिक श्री सुधांशु कुमार जैन ने कई वनस्पतियों फूल पौधों और फलों का महत्व वैदिक ज्ञान के आधार पर प्रमाणित किया। यजुर्वेद में सोम रस की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि इसका सम्बन्ध सोम नामक पौधे से है जिसे उन्होंने दक्षिण अमरीका के घने जंगलों में से खोजा है। इस संगोष्ठी में श्री जैन ने इस बात पर गहरी चिन्ता व्यक्त की कि इन वनस्पतियों और बहुत कम मात्रा में पाए जाने वाले पौधों की खेती करके उनकी संख्या बढ़ाने की तरफ हमारे वैज्ञानिकों तथा सरकारों का ध्यान नहीं है। मध्य रात्रि 11 बजे तक चली इस संगोष्ठी में श्री जैन ने स्लाइडो और चित्रों की सहायता से जनता को वनस्पति विज्ञान की साक्षात जानकारी उपलब्ध करायी जिसे जनता ने एकाग्र चित होकर देखा। अध्यक्षीय भाषण मे श्री वन्देमातरम् जी ने कहा कि वेद और विज्ञान में हमारे वैज्ञानिको द्वारा जितनी खोजें की गई हैं उन सबको सृष्टि के प्रारम्भ में ही परमात्मा ने वेदों में व्यक्त कर दिया था परन्तु यह ज्ञान सूत्र रूप में था। जिसे केवल पवित्र प्रवृत्ति के लोग ही समझ सकते हैं।
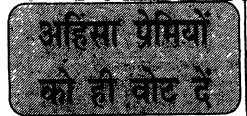
भारत की सांस्कृतिक सम्पदा का एक बहुत महत्वपूर्ण पहलू है साथ राजनैतिक जीवन महात्मा गांधी ने इसे व्यक्तिगत जीवन के साथ-साथ राजनैतिक जीवन में भी सफलता पूर्वक प्रयोग कर इसकी महता का विश्व के सामने अद्वितीय उदाहरण रखा था। लेकिन, दुर्भाग्य यह है कि कुछ व्यक्ति निरीह पशुओं तथा पक्षियों की निर्मम हत्या करने में नहीं चूकते और अपने आर्थिक स्वार्थ के खातिर यांत्रिक कत्लखानों में खुलवाने की बात करने हैं। यांत्रिक कत्लखाने जहां एक ओर असंख्य जानवरों की हत्या के लिए जिम्मेदारी हैं वहीं वे लाखों करोड़ों मांसाहारी व्यक्तियों में विभिन्न प्रकार की भयानक बीमारियों के लिए भी जिम्मेदार हैं। भारत की 90 प्रतिशत से अधिक जनता जिसमे हिन्दू, सिख तथा अन्य कई समुदाय सम्मिलित हैं "अहिंसा" में व्यापक विश्वास रखते हैं। भारतीय संविधान की धारा 51-ए (जी) के द्वारा भी प्रत्येक नागरिक का यह परम कर्त्तव्य निर्देशित किया गया है कि वह सभी जीवों के प्रति दया भाव रखे। इसलिए मैं अहिंसा-प्रेमियों तथा संस्थाओं की तरफ से हर अहिंसा-प्रेमी मतदाता से निवेदन करता हूं कि आगामी चुनावों में वे उन्हीं उम्मीदवारों को वोट दें जो अहिंसा में विश्वास रखते हों और "अहिंसा" के लिए कार्य करने का आश्वासन दें।

रामनिवास लखोटिया

पास्टल राजस्ट्रेशन न० डा०एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 21-4-96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) 93/96
R N 626/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No. U (C) 93/96 Post in NDPSO on 18, 19-4-1996

आर्य समाज लुधियाना रोड, फिरोजपुर छावनी श्री द्वारकानाथ वर्मा जी के 11.4.96 को हुए निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है। आप 92वें वर्ष मे चल रहे थे। आप अंत समय तक अपनी दिनचर्या में सामान्य रहे। आप स्टेट बैंक ऑफ इंडिया से फिरोजपुर में रिटायर हुए। आर्य समाज के लिए जो उन्होंने कार्य किया और मार्ग दर्शन दिया वह कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। प्रभु दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके वियोग में सतप्त परिवार एवं सगे सम्बन्धियों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति तथा सामर्थ्य दें।

श्रद्धानंद ग्रन्थ सग्रह-पृष्ठ 450 मूल्य 20 रुपये वैदिक गीता-अठारह अध्याय मयटीका पृष्ठ 168 मूल्य 8 रु० यजुर्वेद 20 अध्याय में हिन्दी में (भाषा स्वामी दयानन्द द्वारा) मूल्य 5 रु० यज्ञ युधिष्ठर संवाद-पृष्ठ 128 मूल्य 6 रु०

संत वचन संग्रह (स्वामी विवेकानन्द जी के उपदेश) पृष्ठ 128 मूल्य 6 रु० शिव पार्वती सवाद-मूल्य 5 रु०, महिला गीत मंजरी-मूल्य 3 रु० उपासना का मार्ग (स्वामी दयानन्द कृत) मूल्य 2 रु०

भगवान कृष्ण मूल्य 2 रु० बौद्ध जैन मत प्रकाश (स्वामी दयानन्द) मूल्य 4 रु० अनमोल फूलों का गुलदस्ता, भजन प्रभु भक्ति, ब्रह्म स्रोत, ओंकार स्रोत, सत्य धर्म किसे कहते हैं ? मैंने इस्लाम क्यों छोड़ा ? ईसा मसीह मटियम, काश गांधी ने कुरान पढ़ी होती-प्रत्येक पुस्तक 1 रु०।

वेद प्रचारक मण्डल

60/13 रामजस रोड़ दिल्ली-110005
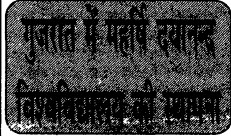
सार्वभौम आर्य शिक्षण संस्था परिषद के अवैतनिक मंत्री प्राचार्य दत्तात्रेय जी वाब्ले ने गुजरात सरकार के मुख्यमंत्री महोदय को आग्रह किया है कि गुजरात के किसी विश्वविद्यालय का नाम महर्षि दयानन्द रखने पर गम्भीरता से विचार किया जाय। वाब्ले जी ने मुख्यमंत्री तथा श्री अटलबिहारी वाजपेयी को भी इस संबंध में निवेदन करते हुए लिखा है कि गुजरात में महर्षि दयानन्द का जन्म हुआ था ऐसी स्थिति में वहां सरदार पटेल तथा महात्मा गांधी के समान किसी विश्वविद्यालय का नाम महर्षि दयानन्द के नाम पर होना सर्वथा उपयुक्त है। यह भी उल्लेखनीय है कि अजमेर जहां महर्षि दयानन्द का निधन हुआ था उसके विश्वविद्यालय का नाम वाब्ले ... प्रयत्न के बाद महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय कर दिया गया है और इस कार्य में श्री अटलबिहारी वाजपेयी जी के राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री भैरोसिंह जी शेखावत को प्रेरित किया था इसी प्रकार वाजपेयी जी को निवेदन किया गया गया कि गुजरात के मुख्यमंत्री को भी इसी प्रकार की प्रेरणा देने की कृपा करें।
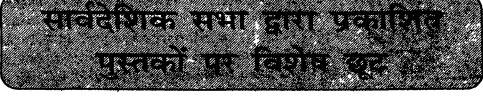
आचार्य गोविन्द सिंह
सं० मंत्री आर्य समाज अजमेर

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर विशेष छूट

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने निम्नलिखित समस्त पुस्तकें एक साथ लेने पर 40% की विशेष छूट देने की घोषणा की है। यह छूट श्रावणी पर्व तक लागू रहेगी। यथाशीघ्र आदेश भेजकर इस सुनहरे अवसर का लाभ उठायें। आदेश भेजते समय 25% धन अग्रिम भेजें।

1.	Maharana Partap	30 00
2.	Science in the verds	25.00
3	Dowan of Indian Histori	15 00
4.	गोहत्या राष्ट्र हत्या	6 00
5	Storm in Punjab	80.00
6.	Bankim Tilak Dayanand	4.00
7.	सत्यार्थ प्रकाश संस्कृत	50.00
8.	वेदार्थ	60.00
9.	दयानन्द दिव्य दर्शन	51.00
10.	आर्य विनिमय	20.00
11.	भारत भाग्य विधाता	12.00
12.	Nine Upnishad	20.00
13	आर्य समाज का इतिहास भाग 1-2	125.00
14.	बृहद्ध विमान शास्त्र	40.00
15.	मुगल सामाराज्य का क्षय भाग 1-2	35.00
16.	महाराणा प्रताप	16.00
17.	सामवेद मुनिभाष्य (ब्रह्ममुनि)	13.00
18.	वैदिक भजन	20.00
19	संगीत रत्न प्रकाश	25.00
20.	What is Arya Samaj	30.00
21.	आर्य समाज उपलब्धियां	5.00
22.	कौन कहता है द्रोपदी के पांच पती थे।	3.00
23.	बन्दावीर वैरागी	8.00
24.	निरुक्त का मूल वेद में	2.50
25.	सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाएं	10.00
26.	वैदिक कोष संग्रह	15.00
27.	सत्यार्थ प्रकाश के दो समुल्लास	1.50
28.	वेद निबन्ध स्मारिका	30.00

प्राप्ति स्थान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन 3/5 रामलीला मैदान दिल्ली - 110 002

दूरभाष : 3274771, 3260985

सार्वदेशिक प्रैस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-2 से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

दूरभाष 3274771 3260985 | आजीवन सदस्यता शुल्क 500 रुपये | वार्षिक शुल्क 50 रुपए एक प्रति 1 रुपया

वर्ष 35 अंक 11 | दयानन्दाब्द 172 | सृष्टि सम्वत 1972949097 | वैशाख शु 10 स 2053 | 28 अप्रैल 1996

आर्य वीर दल आर्य समाज में नई शक्ति का संचार कर सकता है

सार्वदेशिक सभा प्रधान द्वारा दिल्ली की शाखाओं का दो दिवसीय निरीक्षण

दिल्ली १६ अप्रैल। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम तथा न्याय सभा के सदस्य श्री विमल वधावन एडवोकेट ने सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक डॉ० देवव्रत आचार्य के साथ दिल्ली मे चल रही आर्यवीर दल की कई साध्य शाखाओ का गत दो दिनो मैं अकस्मात निरीक्षण किया।

इस दौरे मे सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रान्तीय सचालक श्री विनय आर्य भी उनके साथ थे। दिल्ली मे आर्यवीर दल द्वारा लगभग १५ आर्य समाज मन्दिरो तथा अन्य स्थलो पर यह शाखाये नियमित रूप से सायकाल अथवा प्रातःकाल के समय मे चलायी जाती है। प्रथम दिन के दौरे के समय सावदेशिक आर्यवीर दल मे उपप्रधान सचालक श्री आर्य नरेश भी साथ थे।

श्री वन्देमातरम जी ने स्थान-स्थान पर शाखाओ मे भाग लेने वाले बच्चा से मुख्यत यह पूछा कि वे आर्यवीर दल मे आकर क्या विशेष लाभ अर्जित करना चाहते है। बच्चो का अक्सर जवाब मिलता देशवासियो की सेवा और वैदिक सस्कृति की रक्षा के लिये। श्री वन्देमातरम जी ने बच्चो को सृष्टि के प्रारम्भ से वर्तमान समय तक मानव और मानवता के विषय की कहानी समझाते हुए कहा कि अपने पूर्व इतिहास से प्रेरणा लेते हुये हमे मुगल और ईसाई शासको द्वारा इस राष्ट्र की सस्कृति मे पैदा की गयी विकृतियो को दूर करने के लिये सदैव प्रयासरत रहना चाहिये।

श्री वन्देमातरम जी ने बच्चो को स्वतत्रता सेनानियो के कार्य कलापो और बलिदानो से प्रेरणा लेने और तदनुसार सस्कृति की रक्षा के लिये जुटे रहने को कहा।

न्याय सभा के सदस्य श्री विमल वधावन ने भी प्रत्येक शाखा मे बच्चो को सम्बोधित करते हुये देशभक्त ईमानदार और पवित्र बनने की प्रेरणा दी। एक शाखा मे सध्या करते हुये बच्चो को सध्या का महत्व समझाते हुये उन्होने कहा कि सध्या एक ऐसी पद्धति है और महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा इसके लिये चयन किये गये १६ मत्र एसे गहरे प्रभाव वाले है कि इन्हे समझते हुये यदि एक बार मन इनके प्रवाह मे बह जाये तो प्रतिदिन प्रात और साय ऐसा लगता है जैसे हम अपने दैनिक कार्यो के लिये परमात्मा से प्रत्यक्ष निर्देश प्राप्त हो रहा है।

सध्या करते समय इस थोडी सी अवधि मे प्राप्त निर्देशो के आधार पर जब दैनिक कार्यो का सम्पादन किया जाता है तो वास्तव मे साधक का व्यक्तित्व समाज मे अमिट प्रभाव छोडता है। परन्तु इसके लिये परम आवश्यक है यम और नियमो का पूर्ण पालन।

सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक आचार्य देवव्रत का बच्चो का सम्बोधित करने का अपना विशेष तरीका है। वे सारा सम्बोधन बच्चो से ही प्रश्न पूछ कर उनके उत्तरो को ही विस्तार पूर्वक समझाकर करते है। आचार्य जी ने प्रमुखत शराब मास चाय बीडी सिग्रेट इत्यादि व्यसनो को त्याग कर शुद्ध जीवन की प्रेरणा पर बल दिया। उन्होने बच्चो को आर्य समाज तथा वैदिक मन्तव्यो का सहज भाव से समझाया।

इस दो दिवसीय निरीक्षण दौरे पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सभा प्रधान श्री वन्देमातरम जी ने कहा कि समस्त राज्यो मे आर्यवीर दल की गतिविधियो को तेज किया जाना चाहिए तथा यह समस्त कार्य पूर्णत समन्वित ढग से हो तभी आर्य समाज मे भी नई शक्ति का सचार हो सकता है। उन्होने आर्य समाजियो से अपेक्षा की है कि प्रत्येक आर्य समाज के स्तर पर आर्यवीर दल की साध्य अथवा प्रातःकालीन शाखाओ का आयोजन करे इसके लिए आवश्यक है कि आर्य समाज अपने एक या दो युवक सदस्यो को आयवीर दल के राष्ट्रीय शिविर मे प्रशिक्षण हतु भेजे।

सार्वदेशिक आर्यवीर दल राष्ट्रीय शिविर १६६६

स्थान–शिक्षा भारती पब्लिक स्कूल पालम कालोनी पालम गाव नई दिल्ली ४५

दिनांक ६ जून से २३ जून तक

शिविर प्रवेश शुल्क ६० रुपये प्रति आर्यवीर रहेगा।

आवश्यक गणवेश खाकी नीकर सफेद बनियान सेन्डो सफेद शट ब्राऊन कपडे का जूता लाठी बेल्ट कापी पेन भोजन के पात्र ऋतु अनुकूल बिस्तर व अन्य सामग्री साथ लाये।

नोट– कीमती वस्तु आभूषण आदि कोइ भी आर्यवीर अपने साथ न लावे बस रूट न०–दिल्ली बस अडडे से ७२१ से पालम गाव उतरे तथा नई दिल्ली से तथा पुरानी दिल्ली से ७५३ स ५१ डावडी मोड उतरकर ७२१ ८०१ स शिविर स्थान तक पहुचे।

ब्र० राजसिह आर्य महामत्री

भारतीय संस्कृति एवं अखण्ड राष्ट्र के पक्षधरों को वोट दें

दिल्ली। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात देश का राष्ट्रीय चरित्र गिरा है जिसके कारण महिलाओ पर अत्याचार सामूहिक बलात्कार जैसी घटनाए दिन प्रतिदिन बढ रही है। महिलाओ को दूरदर्शन पर विज्ञापनो के माध्यम से नग्न व कामोत्तेजक प्रदर्शन द्वारा चौराहे पर लाकर खडा कर दिया है। राजनीतिज्ञो की भ्रष्टाचारी प्रवृत्तियो तथा अन्तर्राष्ट्रीमय माफिया गुटो से सबध के कारण देश की अखडता भी खतरे मे है। सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री सूर्यदेव जी ने देश के मतदाताओ को आह्वान किया है कि आगामी आम चुनावो मे जो उम्मीदवार निम्न सकल्प करे उसको ही समर्थन दे।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

२८ मई–जन्मदिवस पर विशेष

वीर सावरकर

लेखक–वन्देमातरम रामचन्द्रराव प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली–२

हो सकता है कि लका सोने की खान हो
परन्तु हे लक्ष्मण यह मुझे नहीं भाता
केवल माता तथा मातृभूमि ही मुझे
प्यारी है स्वर्ग से भी प्यारी

श्री लका को हराया जा चुका था रावण तथा उसक लगभग सभी साथी मारे जा चुके थे। राम का सम्बोधन करते हुए लक्ष्मण ने यह इच्छा व्यक्त की कि लका को भारत का अभिन्न अग बना लिया जाए।

आपने ऊपर पढा कि किस प्रकार श्री राम ने लक्ष्मण की प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया।

सावरकर जी भी इसी प्रकार के थे। उन्होने बुराई से अधिक महत्व सदगुणो को दिया चाहे वह बुराई दखने मे कितनी ही चमक–दमक वाली तथा मन लुभानी लगती हो।

इसका यह अर्थ कदापि नही है कि मै उन्हे श्री रामचन्द्र के समकक्ष रखना चाहता हू। सावरकर जी स्वय श्रीराम के परम भक्त थे। उनमे भी वही दृढ चरित्र था जिसके आधार पर वे भी श्री राम के पद चिन्हो पर चल सके।

श्री रामचन्द्र जी की धर्म के विषय मे अपनी ही अवधारणा थी। अधिकारिक रूप मे जो रावण की लका थी उसे लकावासियो को ही देना चाहिए यह उनकी भावना थी। श्रीरामचन्द्र जी रावण को केवल उसके कुकृत्यो का दण्ड देना चाहते थे उसकी भूमि को छीनना उनका लक्ष्य नही था।

सावरकर जी एक बुद्धिमान युवक थे। यदि वे सत्ता तथा धन चाहते तो आसानी से ऐसे स्थान पर पहुच सकते थे परन्तु उन्होने बुराई के मार्ग पर चलना कभी स्वीकार नही किया।

श्री राम की तरह सावरकर जी भी ब्रिटिश शासको को उनकी गलती महसूस करवाकर भारत छोडने के लिए विवश करना चाहते थे। स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर का जन्म २८ मई १८८३ को सोमवार के दिन हुआ था।

जिस वर्ष मे सावरकर जी का जन्म हुआ उसी वर्ष मे श्री वासुदेव बलवन्त फडके का देहावसान हुआ था। आज भारत के बहुत से लोगो ने तो फडके का नाम भी नहीं सुना होगा। कुछ लोगो का यह विचार था कि फडके की आत्मा ही सावरकर जी के शरीर मे प्रवेश कर गई है। हम पुनर्जन्म मे विश्वास रखते हैं अत हमारा यह विचार सम्भव है।

सावरकर जी के छात्र जीवन की गतिविधिया उनका देशभक्त स्वभाव भरपूर हिम्मत सोच–विचार का तरीका तथा जब भी परिस्थिति वश आवश्यकता पडी कार्य क्षेत्र मे कूद पडने की उनकी आदत के कारण ही लोकमान्य बाल गगाधर तिलक को उनके विषय मे निम्न टिप्पणी करनी पडी।

'ऐसा लगता है कि हमारे बीच शिवाजी पैदा हो चुका है।

हम कुछ ऐसी घटनाओ की तरफ पाठको का ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं जिनमे सावरकर जी ने एक युवक लडके की तरह भाग लिया।

जब सावरकर पूना के फरगूसन कालेज मे पढते थे रानी विक्टोरिया का देहान्त हुआ तो उस उपलक्ष्य मे विशाल स्तर पर एक आयोजन का प्रबन्ध किया जाने लगा। सावरकर जी ने इसका विरोध किया। परिणाम स्वरूप उन्हे कालेज से निष्कासित कर दिया गया अधिकारी चाहते थे कि सावरकर माफी मागे परन्तु सावरकर का उत्तर नकारात्मक था। उन्होने विदेशी शासको के सामने झुकना उचित नही समझा।

इसी प्रकार की एक और घटना हुई परन्तु वह ब्रिटेन मे हुई जहा सावरकर जी कानून की शिक्षा प्राप्त करने गये हुए थे। भारत को स्वतन्त्र कराने के उद्देश्य से वहा उन्होने क्रातिकारी लोगो का गुट बनाया और इन गतिविधियो के कारण परीक्षा उत्तीर्ण करने के बावजूद भी उन्हे वह डिग्री दिये जाने से मना कर दिया गया परन्तु सावरकर माफी मागने को तैयार नही थे।

भारत मे ब्रिटिश साम्राज्य की जडो पर प्रहार करने के उद्देश्य से उन्होने यह प्रबन्ध किया था कि उनके कुछ साथी रूस और अन्य देशो मे जाकर हथियार तथा बम्ब चलाने का प्रशिक्षण प्राप्त कर सके।

अपने छात्र जीवन मे जब सावरकर जी इग्लैण्ड मे थे वे लदन के घण्टाघर मे शिवाजी का बघनखा देखने गये। केवल एक नजर देखकर सावरकर ने यह महसूस किया कि यह शिवाजी की वाघनखा नही है जो उन्होने उस समय प्रयोग किया था जब अफजल खान ने उन्हे गुप्त चालाकी से मारने की योजना बनाई थी।

टीपू की तलवार पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सावरकर के शब्द थे—

जब मैंने टीपू की तलवार को देखा तो मैने महसूस किया कि यह अवश्य ही ब्रिटिश शासको के विरुद्ध एक ताकतवर प्रहार होगा।

श्री सावरकर दुखी थे इस बात पर कि उन्हे शिवाजी की असली तलवार नहीं दिखायी गयी।

उक्त दोनो घटनाये यह दिखाती हैं कि सावरकर साम्प्रदायिक नही थे परन्तु वह देश भक्तो के प्रशसक थे।

उनकी सस्था अभिनव भारत मे भारत के विभिन्न प्रान्तो तथा अलग–अलग मतो के लोग सदस्य थे। मिर्जा अब्बास उनमे से एक थे। मैडम कामा जिसने भारतीय स्वतन्त्रता का ध्वज फहराया था भी अन्तर्राष्ट्रीय क्रातिकारी सम्मेलन मे उपस्थित थी।

जाति व सम्प्रदाय का ख्याल न रखते हुए सावरकर एक देशभक्त होने के नाते अपने देशवासियो से बहुत प्यार करते थे।

मुसलमानो के सम्बन्ध मे ऐसा कहा जाता है सावरकर उनके दुश्मन थे। सावरकर जी के अण्डमान जेल से रिहा होने के बाद मे उनके साथ जुडा हू। अण्डमान और रत्नागिरि मे मुसलमानों द्वारा किये गये व्यवहार के कारण उन्होने यह महसूस किया कि यह लोग पहले मुसलमान है। तथा इस्लाम के साथ बधे हुए हैं।

मैं यहा सावरकर जी के उस अनुभव को बताना चाहता हूँ जब जेल मे हिन्दू कैदियो को भोजन दिया जाता था जो मुसलमान उसे जान–बूझकर उसे पहले छूते थे जिससे हिन्दू कैदी यह समझे कि उनका भोजन अपवित्र हो गया है। तथा यह खाने योग्य नहीं रहा। ऐसा जेल अधिकारियो की मिलीभगत से प्रतिदिन होता था। एक बार परिस्थिति हिन्दुओ के कई दिन भोजन न करने से उनके भूखो मरने तक आ पहुँची इसका कोई समाधान नजर नहीं आ रहा था। परिणाम स्वरूप कुछ हिन्दुओ ने इस्लाम को अपना लिया सावरकर जी इसके प्रत्यक्षदर्शी थे।

उन्होने एक योजना सोची सब हिन्दुओ को एक स्थान पर इकट्ठा किया गया और उनसे गायत्री मन्त्र का उच्चारण करवाया गया। सावरकर जी ने उन्हे समझाया कि स्वय को भूखा मारने और मुसलमान होने से बचाने का एक ही उपाय है।

ईसाई मिशनरियो ने भी इसी प्रकार के कार्य किये कई हिन्दू प्रलोभन वश ईसाई बनते गये। सावरकर जी ने यहा भी धर्मान्तरित ईसाईयो को एक सम्मेलन मे बुलाकर उन्हे अपने पूर्वजो के धर्म मे आने के लिए कहा।

इसके परिणाम स्वरूप जाधव नाम का एक व्यक्ति अपने मूल धर्म मे वापस आया यह सब कार्य जेल मे ही चलता रहा।

हिन्दुओ से ईसाई बनने की गतिविधियो का क्या परिणाम निकला यह सर सैयद की रिसाला असबावे बगावते हिन्द मे मिलता है।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन से ईसाई मिशनरियो की धर्मान्तरण गतिविधिया हमारे असन्तोष का प्रमुख कारण हैं।

सन् १८५७–५८ मे भारतवासियो ने एकता के साथ ईसाई मिशनरियो के द्वारा भारत को एक ईसाई देश बनाने की योजना को विफल किया ब्रिटिश शासक बहुत कुटिल हैं। वे हार को स्वीकार करते हैं परन्तु उस हार के कारणो पर गम्भीर चिन्तन एव अध्ययन करते हैं। उन्होने एक योजना बनाई। उन्होने मुसलमानो को अपने साथ मिलाने के लिए उन्हे फसाना शुरू किया। इसमे उन्हे बहुत सफलता मिली। सर सैयद इस विषय मे आगे लिखते हैं

'ब्रिटिश शासन को इस देश मे स्थापित करने की जिम्मेवारी हम स्वीकार करते हैं। इस सयुक्त कार्य मे हमारा और उनका सहयोग इतना समीप और अटूट है जैसे कैंची के दो ब्लेड ब्रिटिश शासन भारत मे लम्बी अवधि तक रहे ऐसी हम भगवान से प्रार्थना करते है।

उपरोक्त कथन से स्पष्ट है कि मुसलमान और ब्रिटिश शासक एक थे और हिन्दुआ से ईसाई बने लोग उनके उद्देश्य की पूर्ति मे एक अतिरिक्त ताकत बन गये।

अण्डमान और रत्नागिरि के अनुभवो ने सावरकर जी की इस समझ को पुष्ट कर दिया था।

स्वराज्य की लडाई के लिए गाधी जी और सावरकर जी के विचार भिन्न थे। गाधी की यह घोषणा थी कि हिन्दू मुस्लिम एकता आवश्यक है। वह मुसलमानों के प्रति विशेष प्रेमभाव रखते थे। वह खिलाफत आन्दोलन के अध्यक्ष भी बन गये जिसका उद्देश्य खिलाफत नामक मुस्लिम साम्राज्य की रक्षा करना था।

खिलाफत के प्रश्न पर मुहम्मद अली तथा शौकत अली ने स्वय को काबा का नौकर भी घोषित कर दिया सारा मुस्लिम समाज धधक उठा।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

महर्षि के जीवन की कुछ अप्रकाशित घटनायें (२)

१४ अप्रैल १९९९ के अक से आगे का भाग

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री की क़लम से

पिछले उद्धरणो से किसी का यह न समझना चाहिये कि ऋषि दयानन्द अपने शिष्य राजाओ को उपदेश देते थे कि वे मुसलमान प्रजा को धार्मिक स्वतन्त्रता या धार्मिक प्रचार का अधिकार न देवे जैसा कि आज भूपाल व वहावलपुर रियासत मे हिन्दुओ को अपना धर्म फैलाने का अधिकार नहीं है। हा वे यह जरूर चाहते थे कि हिन्दू रियासतो की प्रजा आर्य वनी रहे किन्तु यह कार्य उपदेश से ही करवाना चाहते थे। उनकी प्रजा का यदि कोई हिन्दू, मुसलमान व ईसाई बनने पर तुल ही जावे तो ऋषि की यह सम्मति न थी कि उस पर या मुसलमान प्रचारको पर कोई अत्याचार किया जाय। इस प्रसग मे महाराज उदयपुर को लिखा गया पत्र उद्धृत करना अनुचित न होगा जो निम्न है।

अपने या पराये राज्य मे जहा तक हो किसी मतवाले की बहकावट से विद्यायुक्ति विरुद्ध मत मे किसी को न फसने दे। यदि कोई समझने पर भी न माने तो जो कूप मे गिरना चाहे तो उसका अभाग्य समझना चाहिये। बुरे यदि बुराई न छोडे तो भले भलाई क्यो छोडे।

देशी राज्यो के सम्बन्ध मे ऋषि का दूसरा सिद्धान्त यह था कि रियासतो के राज्य की सीमाओ को ब्रिटिश सरकार न बदल सके इसके लिए एक तो उनका यह आग्रह था कि पोलिटिकल एजेन्ट के पास जो राज्य का प्रतिनिधि रहे वह पक्का राज्यभक्त हो।

महर्षि महाराज उदयपुर को एक पत्र मे लिखते हैं

सरदार या प० ब्रजनाथ वा अन्य कोई योग्य पुरुषो को सीमा प्रबन्ध करना चाहिये जितनी पृथ्वी स्वराज्य की दूसरे राज्य मे दवी है उसके लिये अपील शीघ्र अवश्य होनी चाहिये।

पाठको को उपर्युक्त वृत्तान्त पढकर क्या एक बार महाराजा दशरथ और महर्षि वशिष्ठ के चरित्रो का स्मरण हुए बिना रह सकता है? महर्षि दयानन्द सचमुच रियासतो के राजाओ को प्राचीन वशिष्ठ आदि ऋषियों की भति ही उपदेश दिया करते थे।

रियासतों के सगठन के विषय मे महर्षि का तीसरा सिद्धान्त यह था कि राजाओ के व्यक्तिगत चरित्र आचार व्यवहार अच्छे होने चाहिये।

जोधपुर नरेश को एक पत्र मे महर्षि लिखते हैं

जैसे हडके हुए कुत्तो के दात लगने से उसका दोष छूटना अति कठिन है वैसे वेश्या और खुशामदी लोगों का सग सघ मद्यपान चौपट और कनकव्वे आदि में व्यर्थ काल खोना राजाओ के लिये महाविघ्नकारक है तथा आयु कीर्त्ति और राज्य के नाश करने वाले होते है। मुझे बडा आश्चर्य है कि आप बडे बुद्धिमान और शौर्य गुण युक्त होकर इनसे पृथक नहीं होते?

आर्यकुल दिवाकर महाराजा उदयपुर को एक पत्र मे लिखते है—

कवि साहित्य की जो नायिका आदि भ्रष्ट रीति है उसका स्मरण श्रवण और वैसे मनुष्यो का सघ कभी मत कीजियेगा। और वैसे गणेशपुरी के मनुष्यों का सघ (सग) न कीजियेगा और न मद्यपान वेश्या का दर्शन नृत्यगान आदि प्रसग करना। जैसी दिनचर्या मै लिख आया हू उससे विपरीत आचरण कभी न करना किन्तु प्रात चार बजे उठना और दिन को साढे दस व ११ बजे भोजन करना और दिन मे निद्रा न लेना व रात्रि मे १० बजे शयन सदा कीजियेगा। सदा ६ घटे का समय राजकार्य मे लगाया कीजियेगा। प्रात समय योगाभ्यास की रीति से ध्यान करना और नाम लेना आदि पुरोहित के अधीन कीजियेगा। जिससे ध्यान करने और राज्य पालन मे समय यथोचित श्रीमानो को मिले और बुद्धिबल पराक्रम आयु और प्रताप बढता रहे।

महर्षि ने क्या मजेदार चुटकी ली है? केवल नामोच्चारण और वृथा जप के बारे मे उनकी धारणा क्या थी वह इस उपदेश से स्पष्ट है—

ऋषि की रियासतो के सगठन के विषय मे चतुर्थ सिद्धान्त यह था कि कुरीतियो को शक्ति से हटाकर उनके स्थान पर अच्छी प्रथाये चलानी चाहिये। महर्षि महाराजा सज्जन सिह को लिखते है कि

जब दशहरा निकट आये उसमे अनपराधी भैसे बकरे न कटे। उनके स्थान मे शीरीनी—मिठाई मोहन भोग—लापसी आदि प्रदान कीजिये और क्षत्रियो को जो शस्त्र चलाना जानते है उनके उत्साह शौर्य—धैर्य बल और पराक्रम की परीक्षा के लिये जगली सुअरो सिहो को प्रथम पकड रखे और उस दिन मैदान मे छोड शस्त्र प्रहार करने की आज्ञा दीजिये। इनको विदित तो होवे कि शस्त्र चलाना कैसा होता है।

आरोग्य और अधिक वर्षा होने के लिये वर्ष मे १० हजार रुपयो से घृत आदि जिस रीति से होम हुआ था उसी रीति से प्रतिवर्ष होम करिये।

महर्षि का पाचवा मुख्य सिद्धान्त यह था कि राजा दीनो की रक्षा करे। महर्षि का दिल भी अन्य परिव्राजक और महात्माओं के समान गरीबो के साथ था। महाराजा उदयपुर को वे एक पत्र मे लिखते हैं

सदा बलवान और राजपुरुषो से सताये हुओ की पुकार यदि भोजन पर भी बैठे हों तो भोजन को छोडकर उनकी बात सुननी और यथोचित उनका न्याय करना। ऐसा न हो कि निर्बल अनाथ लोग बलवान और राजपुरुषो से पीडित होकर रुदन करे और उनका अश्रुपात भूमि पर गिरे, और जिससे सर्वनाश हो जावे और उनकी रक्षा से सब प्रकार की उन्नति करते रहिये अर्थात शरीरारोग्य आयु वृद्धि धन वृद्धि राजवृद्धि और प्रतापवृद्धि सदा बढे।

ऋषि का छठा सिद्धान्त यह था कि राजपूतो मे वीरता की प्रथा मिटनी न चाहिये उदयपुर के महाराजा के सम्मुख महर्षि ने निम्न योजना रखी थी—

किसी भी महोत्सव मे निम्नलिखित कार्य अवश्य कीजियेगा।

१ वेदमन्त्रो से होम तथा २ सवा लाख रुपये से क्षात्रशाला।

३ २५ हजार रुपये स्वराज्य मे अनाथ वृद्ध—विधवा और रोगियो के पालन के लिये।

४ १० हजार मेवाड मे वैदिक धर्म प्रचार और प्राचीन आर्ष ग्रथो को लेकर क्षात्रशाला स्थापित कीजियेगा। इसमे ऐसा समझिये कि जो एक बार गर्वनर—जनरल साहब आ गये थे विज्ञ—पाठक इस उद्धरण मे

1 Old age pensions, 2 Employment insurance, 3 Widows Home, 4 Home for the sick, के सिद्धान्तो की झलक देख सकते है?

महर्षि का सातवा सिद्धान्त यह था कि भारतीय स्वराज्य को स्थिर रखने और उसके क्षेत्र को बढाने का उपाय एक और भी है—

कि भारतीय भारत की प्रजा मे जो सामाजिक कुरीतिया है वे राजशक्ति से हटा दी जाये। जहा ब्रिटिश भारत मे शारदा एक्ट पास होता है वहा महर्षि अपने शिष्य महाराज को निम्नलिखित आदेश देते है

अपने राज्य मे २५ वर्ष का पुरुष और १६ वर्ष की कन्या का विवाह करने के लिय दृढतापूर्वक आज्ञा दीजिये। कुमार और कुमारियो का यह समय सनानत आर्ष ग्रन्थस्थ विद्याओ के ग्रहण करने मे व्यतीत होवे। जिससे सब मनुष्य जाति की सत्य उन्नति होवे।

एक विवाह से अधिक दूसरा विवाह कोई न करने पावे यह विवाह भी दोनो की प्रसन्नतापूर्वक होवे जिससे अत्युत्तम सन्तान उत्पन्न होवे।

साथ ही साथ ऋषि यह भी समझते थे कि राज्य की आय का बहुत सा भाग कृषको से मिलता है अत कृषको की रक्षा करना राजा का विशेष कर्त्तव्य है महाराजा को एक पत्र मे लिखते है जैसे—

राजा और कृषिबल आदि प्रजा सुखी रहे वैसा कर प्रजा मे प्रबन्ध करे और उन्हीं कृषिबल आदि को सब राज्य के सुख का मूल कारण समझ उनसे पितावत बरते।

सब राजकीय आय मे से १/१० धर्म की आय के लिये नियत रखे जिससे विद्या धर्म—सुशिक्षा की वृद्धि के लिये अध्यापक व उपदेशक प्रचलित कर आपातकाल अनाथो की रक्षा भी उसी धन से करे और राज्य के आय के ६ अशो मे मे २ भाग स्थिर कोष दो अश राजकुल ३ अश सेना विभाग १ अश स्थान विशेष और एक अश शिल्प विद्या की उन्नति मे

(शेष पृष्ठ ११ पर)

भारत को दुनिया का मुख्य मांस निर्यातक देश बनाने की योजना

प्रतिवर्ष १० अरब रु० का मांस निर्यात होगा

परमानन्द मित्तल केन्द्रीय महामन्त्री भारतीय गोवश रक्षण सवर्धन परिषद

"ग्रीकल्चर एण्ड प्रोसेस्ड फूड प्रोडक्टस एक्सपार्ट डेवलपमेन्ट अथारिटी (ए०पी०ई०डी०ए०) की एक रिपोर्ट के अनुसार मास व मास-उत्पादो का निर्यात जो वर्तमान मे २३० करोड रुपया वार्षिक है आधुनिकीकृत कत्लखानो के माध्यम से इस शताब्दी के अन्त तक १००० करोड रुपए वार्षिक से अधिक का हो सकेगा। रिपोर्ट मे नए कत्लखाने तथा मास निर्यातपरक इकाइयो के स्थापित करने की भी सिफारिश की गई है। रिपोर्ट मे देश मे मौजूदा पशुधन के आधार पर अनुमान लगाया गया है कि ३५ लाख टन मास का उत्पादन किया जा सकता है जिसका मूल्य ८२५० करोड रुपए है। भारत को दुनिया का एक मुख्य मास-निर्यातक देश बनाने के लिए मात्र ६२५ करोड रुपए लागत की आवश्यकता होगी जिसे लगाने के लिए निजी क्षेत्र तथा विदेशी कम्पनियो की भागीदारी की भी सिफारिश की गई है।

यात्रिक कत्लखानों हेतु अनुदान

केन्द्र सरकार के कृषि मन्त्रालय के पशुपालन व डेयरी विभाग के हाल ही के परिपत्र स० ३-३४/६५ एफ०आई०एन० मे आठवी पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत हिन्डन गाजियाबाद ग्वालियर अम्बाला सिरसा बरेली जोधपुर तेजपुर आदमपुर पुणे तथा डनडिग स्थित सैन्य हवाई अड्डो के समीप यान्त्रिक कत्लखाने स्थापित किए जाने का प्रस्ताव है। इसके पीछे उद्दश्य गिद्ध आदि पक्षियो से सैन्य विमानो की रक्षा सैन्य हवाई अड्डो की पर्यावरण प्रदूषण स रक्षा जनता को बढिया व स्वच्छ मास उपलब्ध कराना तथा अनुपयोगी पशुओ का उपयोग करना आदि बताया गया है। सेन्ट्रल सेक्टर स्कीम के तहत स्थानीय निकायो सरकारी सस्थाओ स्वायत्तशासी व अर्द्ध-स्वायत्तशासी सस्थाओ को उपर्युक्त कत्लखाने स्थापित करने तथा चलाने के लिए १०० प्रतिशत अनुदान दिया जाएगा।

'हलाल' मास की कीमत दुगुनी

खाडी देशो मे साधारण मास का मूल्य १०० से १२५ रुपये कि०ग्रा० है जबकि हलाल पद्धति से तैयार किए गए भारतीय मास का मूल्य २०० से २५० रुपए कि०ग्रा० है। पशु की हत्या एक झटके मे करने से उसका मास झटके का मास कहलाता है। उसके ऊपर एक सफेद परत रहती है। किन्तु यदि पशु के गले पर धीरे-धीरे छुरी चलाकर उसे तडपा-तडपाकर मारा जाता है तो उसका हीमोग्लोबीन उसके मास म आ जाता है जिससे मास का रग लाल हो जाता है। पशु को मारने की इस क्रूर पद्धति का नाम हलाल है। यान्त्रिक कत्लखाने मे पशु के कत्ल करने से पहले कई दिन भूखा-प्यास रखा जाता है जब वह निढाल हो जाता है तो हन्टरिंग करके उसे खडा किया जाता है और कत्लखाने की स्लाटरिंग मशीन के पास लाकर उसे गिरा दिया जाता है। चेन-पुली उसकी जघा मे फसा दी जाती है जो उस खींचकर उल्टा लटका देती है। उसके ऊपर खौलता हुआ गर्म पानी डाला जाता है जिससे उसके बाल उसकी त्वचा से अलग हो जाते हैं। उसकी गलनाल काट दी जाती है जिससे उसका खून एक नाली मे बहता है।

इसके पश्चात उसकी त्वचा (खाल) उसके शरीर से उधेड ली जाती है। बैल अथवा भैसे से निर्धारित से अधिक वजन का परिवहन करना पशुओ के प्रति क्रूरता निवारण अधिनियम के अन्तर्गत अपराध है किन्तु क्रूरतापूर्वक उसकी हत्या करने मे भारत सरकार को कोई अपराध नहीं दिखाई देता।

हिन्दी प्रेमी डाक्टर

नई दिल्ली के प्रसिद्ध लेडी हार्डिंग मैडीकल कालेज के १३ मार्च १६६६ को हुए वार्षिक उत्सव मे रजिडेट डॉक्टर एसोसिएशन के अध्यक्ष डा० आनन्द शुक्ला ने अपना भाषण विशुद्ध हिन्दी मे देकर अन्य डाक्टरो के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तु किया है। जबकि कार्यक्रम का सचालन धारा-प्रवाह अग्रेजी भाषा मे हो रहा था।

डा० शुक्ला ने अपना हिन्दी प्रेम उस मैडीकल कालेज मे झलकाया जिसकी न केवल बुनियाद अग्रेजो ने रखी थी बल्कि आज भी उसका नाम एक वाइसराय की पत्नी के नाम पर लेडी हार्डिंग है। अपने भाषण मे उन्होने एक भी शब्द अग्रेजी का न बोलकर यह जता दिया कि उच्च शिक्षा मे हिन्दी का सम्मान आज भी बरकरार है। (दैनिक जागरण के १४ मार्च १६६६ के अक मे छपे एक समाचार का अश)

श्री वेद पथिक आर्य धर्मवीर झंडाधारी के अनुपम ग्रन्थ

श्री वेदपथिक आर्य धर्मवीर झडाधारी जी द्वारा लिखित आत्मबल सकल्पबल और मनोबल के धनी बनो सूत्र पुस्तिका अत्यन्त उपयोगी तथा शिक्षाप्रद है। आज हमारे देश मे सब कुछ है केवल आत्मबल सकल्पबल और मनोबल का अभाव है। इस प्रकार के सूत्र यदि छात्रो के स्वाध्याय मे आ सके तो देश का बडा उपकार होगा। भारत का अभ्युदय केवल इन्हीं बलो के आधार पर होता आया है अब इस पुस्तिका को जब लोग पढेगे अवश्य आत्मबल सकल्पबल मनोबल जागृत करने का प्रयास होगा। इन बलो से जब देश बलशाली बनेगा तभी भारत का स्वर्णिम भविष्य बनेगा। हमे व्रत लेना चाहिए कि २१ वीं शताब्दी मे पूर्व तक करोडो की सख्या मे यह पुस्तक घर-घर पहुचे ताकि इक्कीसवीं शताब्दी भारत के लिए बलवती प्रभावशालिनी सिद्ध हो।

मैं लेखक के प्रयास की प्रशस्ति करता हू।

आचार्य प्रभाकर मिश्र

वेद पथिक धर्मरत्न श्री पं० धर्मवीर झण्डाधारी के प्रति

एक जीवित याग हो तुम

देहधारी धर्म ही ज्यो कर्म पथ पर चल रहे हो।

विश्व को उजियार देने दीप के सम जल रहे हो।

दूर कर मालिन्य क्षिति का कर उसे उज्ज्वल रहे हो।

पाप को जो भस्म कर दे वह दहकती आग हो तुम।

अभ्युदय-अपवर्ग का जो मार्ग वैदिक है पुराना।

शान्ति से सदभाव से सौहार्द से जो है सुहाना।

चाहते हो तुम इसी को विश्व जनता को सिखाना।

आर्य सस्कृति के सुरभिमय पुष्प और पराग हो तुम।

ओम् का वसुयाम केतन अस पर अपने उठाये।

आस के विश्वास के उद्यान सपनो मे उगाये।

हो अडिग ऐसे कि मजिल आप चलकर पास आये।

आर्य के आर्यत्व के प्रति मूर्तिमय अनुराग हो तुम।

एक जीवित याग हो तुम।

लेखक धर्मवीर शास्त्री
एम० ए० बी० एड साहित्याचार्य
बी-१/५१ पश्चिम विहार नई दिल्ली-६३

अमृत क्या, कैसा और कहां है ? (२)

डा० रामावतार अग्रवाल, चौबे कालोनी, रायपुर

'एवा मृताह मये अवावा, समुको अथ विश्व पीयूष"।
(ऋग्वेद ९ । १०९ । ३)

"स्वादुष्किलाय मधुमा उताव तीव्र किलाय रसवा उतायम् उतोन्वस्य मिन्द्र न करचन सहत माहवेषु" ऋ० ६ । ४७ । ११ 'सोम एक द्रव्य या रस है जो ससार मे व्याप्त है तथा जिसे आत्मा पीना चाहता है "अश्वर्वोद्राप्या एवं सोममिन्द्र पिपासति" ऋ० ८ । ४ । ११ परन्तु वह रस भोजन द्वारा ही प्राप्त होता है। अत मनुष्य को शुद्ध पवित्र भोजन को प्राप्त करना चाहिए, क्योकि अपवित्र अन्न मे मृत्यु का वास होता है। अत मनुष्य सदा अमृत रस का पान करता रहे और मृत्यु रस का सरलता से परित्याग करता रहे। यही अमृत पथ की पहचान है। इसलिए वेदो के अनुसार वही भोजन, अमृत युक्त है जो ऊर्जा-शक्ति, चेतना और आरोग्य प्रदान करता है

"अन्नपतेऽन्नस्य नोदेहि अन अमीवस्य शुष्मिण"
यजु० ११ । ३८, ११ । ५०, ३६ । १४
ऋ० १० । ९ । १

भोजन से प्राप्त सोमरस शरीर में रचपच जाए इसलिए व्यक्ति को श्रम या आसन-प्राणायाम व व्यायाम आदि से शरीर की जठराग्नि सदैव प्रदीप्त रखनी चाहिए, क्योकि मन्द जठराग्नि के कारण अमृत भी विष मे बदलता है, और तीव्र अग्नि से विष अमृत बनता है।

अमृत या ब्रह्म भोग से, मानव वह यौवन प्राप्त करता है जिससे मृत्यु भयभीत होती है। अमृतमय यौवन मे ही वह शक्ति व्याप्त है, जिसके द्वारा मनुष्य ने मृत्यु पर विजय प्राप्त करके अपने बल, साहस व पराक्रम द्वारा धरती को स्वर्ग बनाया है। अमृत से मृत्यु को परास्त करके ही नील-आर्मस्ट्राग ने चन्द्रमा पर प्रथम चरण रखे थे। अत ससार मे जो व्यक्ति मृत्यु से डरता है, वह अमृत प्राप्त नही कर सकता।

'अमृत से मृत्यु दूर भागती है। अत अमृत साधना या अमृत पथ पर चलने से मनुष्य ऐसे ही भयमुक्त होता है, जैसे देव भयमुक्त रहते हैं।
अथर्व० २ । १५ । १, २, ३, ४, ५, ६
१६ । १५ । ५, ६१

विश्व मे अमृत व्याप्त है। अत जीव जब ससार से पलायन करता है, तब वह अमृत बीज छोडकर जाता है, अथवा वह अपने जीवन द्वारा अमृत प्रदान करके ही ससार से मुक्त होता है। जीवन दान का यही क्रम अनादि काल से चला आ रहा है, और अनन्त काल तक चलता रहेगा अत उसका क्रम टूटना नहीं चाहिए। सन्तति क्रम टूटे न, इसलिए सन्तति उत्पन्न करना धर्म और न करना अधर्म है।

अत जैसे मनुष्योत्तर जीव जीवित रहते हुए और मरन के बाद भी जीवो को पोषण प्रदान करते हैं, वैसे ही मनुष्य को भी अपने जीवन से ससार को पोषण प्रदान करना चाहिए। उसे ऐसे कर्म या कार्य करना चाहिए जिससे उसका तथा अन्यो का जीवन पुष्ट बलवान और सुगन्धित हो। जैसे खरबूजा पूर्णायु प्राप्त करके प्राणियो को बल पोषण और सुगन्ध प्रदान करता है, वैसे ही मनुष्य को भी पर पोषण के लिए मृत्यु से मुक्त होना चाहिए, अमृत से नहीं—

त्र्यम्बकं यजामहे, सुगन्धि पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारुकम इव बन्धनान्मृत्योर मुक्षीय मा मृतात्॥
ऋ० ७ । ५९ । १२, यजु० ३ । ६०

इस प्रकार जिस पथ से मनुष्य मृत्यु को भगाकर जगत मे अमृत या जीवन की स्थापना करता है वही अमृत पथ है। अमृत पथ ही प्रकाश, सत्य तथा जीवन पथ है, अत मनुष्यो का मुर्दों की भांति नहीं जीवितो की तरह जीना चाहिए—

'आयुर्वायु कृता जीवायुष्मान जीव मा मृथा -
प्राणोनात्मन्वता जीव मा मृत्योरुदगावशम॥'
अथर्ववेद १९ । २७ । ८

क्योंकि जिसे अमृत प्रिय है, उसके पास से मृत्यु बुढापा या कमजोरिया दूर भाग जाती हैं - अत जहा अमृत रहता है, वहा मृत्यु और मृत्यु के कारण नही रह सकते।

'विवस्वान नो अमृत्वे दधातु परैतु मृत्युर अमृत नऐतु।
इमान रक्षत पुरुषान आ जरिम्णो, मोष्व एषाम असवो यमु ग"
अथर्ववेद १८ । ३ । ६२

इस प्रकार ब्रह्मानन्द की प्राप्ति के लिए, मानव को उस पथ पर चलना चाहिए जिस पथ से उसे शारीरिक, मानसिक एव आत्मबल प्राप्त होते हैं क्योंकि आत्मबल या शक्ति ही ब्रह्म की छाया अथवा अमृत है और उसकी अछाया मृत्यु है। अत यदि अमृत प्राप्त करना है, तो उसे सोम या ब्रह्म-रस को प्राप्त करना चाहिए जो ब्रह्म की छाया है, और जो अन्न, औषधि, जल, वायु अग्नि आदि पदार्थो मे व्याप्त है।

"य आत्मदा बलदा यस्य विश्व, उपासते प्रशिषयस्य देवा।
यस्यछाया अमृत यस्य मृत्यु देवायहविषा॥" ऋ० १० । १२१
यजु० २५ । १३

अमृत रस या सोम रस इसलिए ब्रह्म रस की छाया है, क्योकि इसी की शक्ति से जीवन का पोषण तथा मृत्यु का विनाश होता है। अत ऐसे अमृत तत्व को छोडकर जिससे प्राणो का पोषण होता है, और मृत्यु दूर भागती है, उसे ग्रहण करना चाहिए, क्योकि जीवन ही सुख है, और वही अमृत है।

अर्थ संचय

—सुदेव साहित्याचार्य, महोपदेशक

'अन्योऽन्यमभिहयत्—यह सूक्ति एक वेद का छोटा सा टुकडा है। सूक्ति के शब्दों का अर्थ है—अन्य प्रथम (पहला), अन्य दूसरे को, अभि=साथ हयंत्=लेकर चले। सूक्ति भाव है—हम परस्पर एक दूसरे को साथ लेकर चलें।

ससार मे चलने की बडी ही महिमा है। उपनिषदो मे गाया गया है-चरन् वै मधु विन्दति—अर्थात् व्यक्ति चलते हुए ही अमृत को प्राप्त कर सकता है। जो चलेगा वह सब कुछ पायेगा और जो जम जाएगा, कुछ भी हाथ पर हिलाना डुलाना नही चाहेगा उसे ससार मे कुछ भी मिलने वाला नही है। कवि कहता है— मन चाहा फल उसने पाया जो आलसी बनके पड न रहा जो आलसी बनके पड गया सो तो बस पड ही गया। उसे कुछ भी मिलने वाला नही है।

बूढा बहादुरशाह लाहौर रावी के किनारे एक सैन्य अभियान मे शिविर डाले पडा है। बीमार हो गया और उसका अन्तिम समय पास आ गया। चार चार बेटे हैं। इनमे कुछ योग्य कुछ अयोग्य। कुछ राज्य सभालने के काबिल और कुछ नाकाबिल। पुनश्च कोई बहादुर को प्यारा और किसी मे कम प्यार। बहादुरशाह अन्त तक सोचता ही रह गया कि किसे उत्तराधिकार दू। बहादुरशाह मर गया लाश अभी यो ही पडी है। मृत्यु के समय बेटे भी पास हैं। अजीमुश्शान और रफीउश्शान जैसे बेटे। परन्तु लाश नही देख रहा कोई। हा, रफी ने अपने को बादशाह घोषित कर दिया है। न केवल इतना ही इसने इस लाश के चारो ओर अपनी नगी तलवार लेकर भाजते हुए घूमना प्रारम्भ कर दिया है। रफी बहादुर है। साहसी भी है। परन्तु सोचने और काम करने मे इतनी देर लगाता है कि तब तक तो समय ही चूक जाता है। अजीम कायर रफी साहसी। परन्तु रफी को प्रधान मन्त्री जुल्फिकार नही चाहता। इसने कुटिल चाल चली। अजीम को उकसाया। ये भाई-भाई परस्पर कुचक्र से भिडवाकर मरवा डाले। मुगल सल्तनत का भारत से सर्वथा मुह ही मुड गया। विशेष कारण था मुगलिया उत्तराधिकारियो का सोचते रहना, हाथ पर न हिलाना, हिलाना भी तो समय चूक जाने के बाद फिर पछताए क्या होत है जब चिडिया चुग गई खेत। साप निकल गया लकीर पीट रहे हैं इसका तो अर्थ है कि कुछ कर ही नही रहे।

और कुछ नही करने वाले को यहा कुछ नही मिलता कही भी कुछ नही मिलता।

लोग कहते हैं कर्म बन्धन का कारण है। ईशोपनिषद कहता है, ठीक है कर्म बन्धन का कारण है परन्तु कर्म के बन्धन को कर्म से ही खोला जा सकता है। कोई एक कर्म करने से बन्धन मे आ गया परतन्त्रता पाश मे जकड गया गुलामी के रस्सो मे बध गया तो क्या बधा ही बैठा रहे। कुछ करे नही। यही सोच ले कि कर्म करने से बधता हू इसलिए अब कुछ करूगा ही नही। एक आदमी ने अपराध किया और जेल चला गया। वह जेल की कोठरी मे ऐसे बैठा है जैसे मिट्टी का लौंदा या पत्थर का शिला। न बोलता है न हिलता-डुलता है न किसी से बात करता है। उसके हितैषी आते हैं, मिलने-जुलने वाले आते हैं परिवार वाले आते हैं मित्र और सम्बन्धी आते हैं, उसके वकील आते है। सब आते। उससे कुछ कहने को, कुछ करने को बोलते है। परन्तु यह है कि बस कुछ पूछो ही मत ! अब सोचें, कभी यह छूट सकेगा। इसे छुडाने वाला कोई भी नहीं है। इसलिए उपनिषद की बात पर विचार करें, किया तो बन्धन में आये फिर करें तो छूट सकते हैं। एक कहता है, एक किया था तो बन्धन मे आ गए दूसरा किया तो और जकड गए। विचारक कहता है—यत्ने कृते न सिध्यति कोऽत्र दोष —प्रयास किया सफलता नही मिली तो भी घबराओ मत। दो पल विचार करो कि हमारे प्रयत्न मे, हमारी कोशिश मे हमारे प्रयास मे तो कही कोई किसी प्रकार की कमी नही रह गई। सोचोगे तो अवश्य ही मार्ग पा जाओगे। परन्तु ध्यान दें समय कम है और लक्ष्य अधिक है। इसलिए थोड ही समय मे जितना आप कम कर सकते हैं बिल्कुल कम से कम समय मे—सोचकर फिर आगे चल पडिये। सोच मटीक टू द प्वाइट और कम से कम समय म।

आदमी का स्वभाव बडा निराला है। आदमी भोगना चाहता है। करना नही चाहता। परन्तु चिन्तन कहना है कि भोग कर्म का दूसरा पहलू पहला पहलू हो जब नही होगा तो दूसरे पहलू की तो कल्पना भी नही कर सकता। इसलिए कृष्ण अर्जुन से कहते हैं— स्वभाव नियत कर्म —कर्म स्वभाव है। स्वभाव के सन्दर्भ मे एक जगह लिखा है— स्वभावो मूर्ध्नि तिष्ठति'—स्वभाव सिर के ऊपर बैठता है। स्वभाव अर्थात् प्रकृति। स्वभाव अर्थात् आदत। आदत है ही ऐसी चीज। हम लाख छिपाना चाहे फिर भी आदत आदत है। कही न कही जात बता ही देता है। इसलिए कृष्ण महाराज ने भी यहा कहा कि कुछ करो और जो करो अपनी आदत के अनुसार करो जात के अनुसार करो। कई लोग जात का अर्थ हिन्दू सिख ईसाई वगैरह समझते हैं। इतने पर भी उन्हें सन्तोष नही होता तो वे जात को ब्राह्मण क्षत्रिय आदि समझने लगते है। इस पर भी सन्तोष नही होता तो ब्राह्मण को भी भागो मे बाट लेते है फिर भागो को भी भागो मे बाट लेते हैं और बाटते ही चल जाते हैं। परन्तु जात को जो उनके अर्थो मे अभिप्रेत अर्थ है वह स्वभाव ही है। एक प्रकार से देखें तो किसी मुसलमान के सिर पर सीग नही किसी ईसाई के खुर नही किसी सिख के पूछ नही और किसी हिन्दू के सुरखाव के पख नही कि वह अलग से दिखाई दे। सभी एक से है। परन्तु ये भिन्न कहा हैं। इनकी आदतें भिन्न है। स्वभाव भिन्न हैं। जिससे खाने पीने, पहनने ओढने और तीज त्यौहार मे थोडा थोडा अन्तर किए बैठे हैं। यह अन्तर भी कैसा कि जरा सी देर मे सामान्य हो जाता है।

हमने निवेदन किया—चरन् वै मधु विन्दति—व्यक्ति चलते हुए ही अमृत प्राप्त करता है। व्यक्ति कुछ करने मे ही अमृत को प्राप्त कर सकता है। जो चलेगा नही कुछ करेगा नही उसके लिए अमृत नही है। अमृत अर्थात् मुक्ति। अमृत अर्थात् गुलामी से आजादी। अमृत अर्थात् अपने ढग से जीने की स्थिति।

अभि—यह सूक्ति का दूसरा सन्देश है। अभि का अर्थ है—साथ। हम साथ करें। हम साथ चलें यात्रा बडी लम्बी है मानो सूक्ति कहती है आदमी तू अकेला न चल सकेगा। सूक्ति कहती है चले बिना तेरा गुजारा नही और अकेले तेरा चलना मुश्किल है। इसलिए चल और साथ चल।

सूक्ति कहता है प्रयास कर लो दिक्कत नहीं है परन्तु याद रखना अकेले चल न सकोगे इसलिये साथ लेकर चलो सूक्ति का शब्द अभिहर है न इसका अर्थ व्यवहार भी है। जिसका अर्थ है व्यक्ति अकेले व्यवहार नहीं चल सकता। व्यवहार तो ससाधनो और व्यक्तियो से चलता है। जिसमे कि व्यक्ति प्रमुख है। ससाधन भी प्रमुख है परन्तु व्यक्ति न हो तो ससाधनो का कोई अर्थ नही।

इसलिए यह सूक्ति सन्देश खोलती है कि हम परस्पर साथ मिलकर चलें ऐसा न हो कि अपने व्यक्ति की उपेक्षा कर जाए और आगे निकल भागने की आकाक्षा करे। यह आकाक्षा बहुत बुरी मुसीबत है। इसलिए मुझे चाहिए कि मैं चलू तो अपने व्यक्तियों के कधे से कधा मिलाकर चलू पैसे की दौड मे इतना अन्धा न बनू कि अपना आदमी ही दिखाई न दे राष्ट्र हित में भी मेरी पैसे के लिये दौड हो तो मैं अपने राष्ट्रवासियो के निकट एव सुन्दर भविष्य का पूर्ण रूप मे ध्यान रखू

आर्य समाज आनन्द विहार-६२

निष्पक्ष जांच के आश्वासन पर आर्य समाज ने धरना समेटा

जोधपुर २ अप्रैल आर्य समाज ने ९२ दिन पुराना धरना आज समेट लिया है। पुलिस उप महानिरीक्षक एस एन जैन ने धरनार्थी आर्य समाजियों को निष्पक्ष जांच करवाने का आश्वासन दिया।

गतांक आर्य समाज बचाओ संघर्ष समिति ने आर्य समाज में यज्ञ कर रहे आर्य समाजियों पर हमला करने वालों को गिरफ्तार करने इनके मददगार पुलिस अफसर को निलम्बित करने तथा कुर्क की गई यज्ञ शाला का ताला खोलने की मांग को लेकर आन्दोलन शुरू किया था।

आर्य समाजी ६९ दिन से क्रमिक अनशन पर बैठे थे। इनकी आवाज विधान सभा में भी गूंजी। विधायक राजेन्द्र चौधरी के सवाल का विधायक राजेन्द्र गहलोत का समर्थन के बाद गृहमन्त्री ने पुलिस उप महानिरीक्षक से जांच करवाने का आश्वासन दिया।

पुलिस उप महानिरीक्षक एस एन जैन तथा जिला पुलिस अधीक्षक सुधीर प्रतापसिंह ने आज सुबह सवा दस बजे धरना स्थल पर पहुंचकर आन्दोलनकारी आर्य समाजियों को निष्पक्ष जांच करवाने का आश्वासन दिया। उप महानिरीक्षक जैन के आश्वासन के बाद आर्य समाज ने धरना समाप्त करने की घोषणा की।

इस अवसर पर विधायक राजेन्द्र गहलोत ने आन्दोलनकारी आर्य समाजियों को सम्बोधित किया। इस अवसर पर कांग्रेस कमेटी के महामन्त्री राजेन्द्र सोलंकी भी उपस्थित थे। प्रारम्भ में आर्य वीर दल के प्रदेशाध्यक्ष रामसिंह आर्य ने निष्पक्ष जांच करवाने की मांग की। आर्य वीर दल के अनशनकारी रामस्वरूप आर्य तथा रामस्वरूप दोनों को जूस पिलाकर अनशन तुड़वाया।

अन्धविश्वास विरोधी सम्मेलन सम्पन्न

जीवित माता पिता एवं परिवार के बड़े बूढ़े लोगों की श्रद्धा पूर्वक सेवा करने का नाम ही श्राद्ध है। सेवा से उन्हें जो तृप्ति मिलती है उसे तर्पण कहते हैं। भूत प्रेत की कोई सत्ता नहीं होती। मृत शरीर को जलाने के पूर्व प्रेत कहा जाता है तथा जलाने के उपरान्त 'भूत' अर्थात जो पहले था अब नहीं है। श्राद्ध के नाम पर भोज देना, घटिया पलंग दान देना, तथा पिण्ड दान करना आदि अन्धविश्वास के परिणाम हैं।'

उपरोक्त बातें स्वामी अग्निव्रत ने आर्य समाज गोविन्दपुर द्वारा आयोजित अन्धविश्वास विरोधी सम्मेलन में कहीं। भूत प्रेत विषयक पत्रिकाओं को बच्चों को न पढ़ने की सलाह दी, क्योंकि इससे बच्चे मानसिक रोग के शिकार हो जाते हैं। सम्मेलन के प्रथम दिन आर्य विद्या मन्दिर के छात्रों द्वारा प्लेग का चूहा अन्ध विश्वास पर आधारित एकाकी का मंचन किया गया। दूसरे दिन प्रातःकाल गोविन्दपुर के विभिन्न विद्यालयों के छात्र छात्राओं के द्वारा विशाल शोभा यात्रा निकाली गयी जिसमें बड़ी संख्या में आर्य समाज के सदस्य एवं बाहर से आए विद्वान भी शामिल हुए। सायंकाल सम्मेलन के पूर्व मुख्य अतिथि श्री एच० एल० सुतरा (सचिव आर्य समाज ट्रस्ट) तथा विशिष्ठ अतिथि श्री यू० पी० पाण्डेय प्राचार्य डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल बिस्टुपुर द्वारा अन्धविश्वास विषय पर चर्चित बाईस (२२) विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। सम्मेलन के अन्तिम सत्र को सम्बोधित करते हुए ब्रह्मचारी ब्रह्मानन्द जी ने जन्मना जाति व्यवस्था, मूर्ति अवतारवाद आदि के समूल को नष्ट कर देने के लिए कहा, और पुराणों को न पढ़ने की सलाह दी। श्रीकृष्ण भगवान एवं गुरु गोविन्द सिंह जी को उन्होंने महान पुरुष कहा। अन्धविश्वास निवारण के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ने की आवश्यकता बतलाई। इस प्रकार विजय कुमार आर्य के धन्यवाद ज्ञापन और शांतिपाठ से सम्मेलन का अन्त हुआ।

—मन्त्री आर्य समाज गोविन्दपुर जमशेदपुर

त्रिपुरा में ईसाई मिशनरियों का षड्यन्त्र

अगरतल्ला त्रिपुरा सहित पूर्वोत्तर के दूसरे राज्यों मे ईसाई धर्म के व्यापक प्रचार एव ईसाई धर्म के प्रति आकर्षण वृद्धि के उद्देश्य से कैथालिकों ने व्यापक अभियान आरम्भ कर दिया है। विशेष तौर पर त्रिपुरा मे ईसाई मत प्रचारक (केथकिस्ट) तैयार करने के उद्देश्य से राजधानी अगरतल्ला से २५ कि०मी० की दूरी पर चम्पकनगर नामक वनवासियो के इलाके मे 'पेस्टोरल केन्द्र स्थापित किया गया है। जहा ईसाई मत प्रचारको को प्रशिक्षित किया जा रहा है। पीटर पोन्नाथन इस केन्द्र का सचालक है। इस केन्द्र से दो साल का प्रशिक्षण समाप्त कर १७ वनवासी केथकिस्ट बन चुके हैं। इस केन्द्र के कार्यक्षेत्र मे ६ प्रदेश है। ये धर्मप्रदेश हैं—शिलड गुवाहाटी इम्फाल बोरा डिब्रूगढ तेजपुर डिफू सिलचर कोहिमा। पूर्वोत्तर राज्यो का सदर कार्यालय शिलाग मे है।

व्यापक षडयन्त्र

सिलचर धर्म प्रदेश के अधीन ६ धर्मपल्लिया हैं। त्रिपुरा में ये धर्मपल्लिया निम्नलिखित जगहो पर हैं यतनबाडी तुईकरमा बोधजडनगर कुमारघाट डेपछडा मोहनपाडा विश्रामगज मरियमनगर। हर धर्मपल्ली के अधीन विशाल इलाका है। इन धर्मपल्लियो से आसपास के गावो मे लोगो को ईसाई बनाया जाता है। मिजोरम त्रिपुरा एव कछार 'सिलचर धर्म प्रदेश के अधीन हैं। पूर्वोत्तर राज्यो मे इस तरह की धर्मपल्लिया लगभग २०० है यानि ६ धर्म प्रदेशो के अधीन २०० धर्मपल्लिया चलाई जा रही है।

पूर्वोत्तर राज्यो मे लगभग ५०० पादरी है और लगभग १५०० ईसाई भिक्षुणिया कार्य कर रही हैं। अनुमान के अनुसार पूर्वोत्तर मे कैथालिको की सख्या ८ लाख हो गई है। पहले त्रिपुरा मे पेस्टोरल सेटर नहीं था। केवल इम्फाल मे ही पेस्टोरेल सेटर था। वहीं से कैथकिस्ट के लिए प्रशिक्षण लेना होता था। पोन्नाथन ने बताया कि 'राज्य मे पेस्टोरल सेटर स्थापित करने का मूल उद्देश्य है ईसाई मत का व्यापक प्रचार। राज्य मे भाषा की कठिनाई के बावजूद प्रचारको ने असीम उपलब्धि हासिल की है। यहा ज्यादातर लोग बगला भाषा जानने एव समझने वाले हैं। भाषा की असुविधा को दूर करने के लिए स्थानीय प्रचारक तैयार करना इस केन्द्र का मूल उद्देश्य है। इस बीच इस केन्द्र से २७ लोग कैथकिस्ट का प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं।

पिछले साल केन्द्र के सचालक फादर पोन्नाथन ने कैथकिस्टो की एक बैठक बुलाई जो ७ दिनो तक लगातार चलती रही। इसमे २७ कैथकिस्टो ने भाग लिया। पोन्नाथन ने बताया कि दो साल तक इस केन्द्र मे ईसाई मत के इतिहास एव विभिन्न ईसाई ग्रथो का अध्ययन कराया जाता है। और उन्हे ईसाई मत के प्रचार का प्रशिक्षण दिया जाता है। त्रिपुरा के विभिन्न सम्प्रदाय के लोगो ने कैथकिस्ट का प्रशिक्षण लिया है। धर्मपल्लियो से चुने हुए युवको को कैथकिस्ट–प्रशिक्षण के लिए भेजा जाता है। वे अगर विवाहित होते हैं तो भी कोई आपत्ति नहीं होती। प्रशिक्षण के दौरान हर महीने वृत्ति दी जाती है। चम्पक नगर का पेस्टोरेल सेटर असीम धन लगाकर तैयार किया गया है। सेटर मे ३० के रहने की व्यवस्था है। फादर पोन्नाथन ने बताया कि धर्मपल्लियो से प्रचुर धन भेजा जाता है। परन्तु भेजे गए रुपयो से निर्वाह करना सम्भव नहीं इसलिए और धन के लिए धर्मप्रदेशो को कहा जाता है। सारे इलाके मे यह पेस्टोरेल सेटर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

प्रलोभनो की आड मे मत प्रचार

पीटर पोन्नाथन ने ही बताया कि राज्य मे जो २५ फादर एव ब्रदर है वे सभी दक्षिण भारतीय हैं जो प्रभु ईसा के मत का प्रचार करने आए हे। जिनमे २० तो फादर हैं बाकी ५ ब्रदर है। पीटर पोन्नाथन क्षेत्रीय जनता मे फादर नाम से परिचित है। वे ७ भाषाओ के ज्ञाता है— तमिल हिन्दी ककबरक ईटालियन अग्रेजी एव फारसी पर उनका अधिकार है। उन्होने विदेशी राष्ट्रो का भी भ्रमण किया है। १६६० से लेकर १६६४ तक चार साल वे रोम मे कन्ग्रेगाजियोन द सान्ताक्रूज के लिए प्रशिक्षण पाते रहे। लौटकर वे १६६४ की २६ मई को पेस्टोरेल सेटर के सचालक नियुक्त हुए। तबसे पीटर पोन्नाथन अनवरत कार्यरत है। लगभग हर रविवार को किसी न किसी गाव मे जरूर जाते है और विभिन्न प्रार्थना सभाओ मे भाग लेते है। हर गाव मे एक–एक ग्राम नेता नियुक्त है।

जिस तरह क्षेत्र मे ईसाई प्रचारक सुव्यवस्थित रूप से मत प्रचार और धर्मान्तरण मे लगे हुए हैं उससे स्पष्ट होने लगा है कि निकट भविष्य मे ही यहा ईसाई मत के अनुयायी बेशुमार हो जाएगे। पेस्टोरल सेटर लोगो की हर प्रकार से सहायता करता है। क्षेत्र के वनवासी जन इन सुविधाओ को हाथ से जाने नहीं देते। प्रलोभनो को भोले वनवासी उनकी उदारता और सह्रदयता समझते हैं।

प्रकृति का निःशुल्क उपहार है : धूप–स्नान

डॉ० (श्रीमती) स्वराज गुप्ता नई दिल्ली

सर्दी के दिनो मे धूप किसे अच्छी नहीं लगती है? फिर भी कितने ऐसे लोग हैं जो प्रकृति से प्राप्त इस अनमोल धूप का लाभ उठाते है। सूर्य की धूप का प्रतिदिन सेवन करने से त्वचा पर पिगमेंट की परत पड जाती है। यह द्रव्य शरीर मे रोग निवारक क्षमता उत्पन्न करता है। धूप स्नान से हमे विटामिन (डी) प्राप्त होता है जो कैल्शियम व फास्फोरस प्राप्त कर शरीर को स्वस्थ दातो एव हृदय को दृढता प्रदान करता है।

प्राचीनकाल से स्वास्थ्य शक्ति और ताजगी के लिए सूर्य स्नान किया जाता रहा है। सूर्य के प्रकोश के बिना इस धरती पर किसी का अस्तित्व सम्भव नहीं है। निश्चित रूप से सूर्य स्रोत है हमारी ऊर्जा का तथा हमारे अस्तित्व का। सूर्य के प्रकाश मे अनेक रोगों को ठीक करने की क्षमता होती है सूर्य के प्रकाश मे पाया जाने वाला विटामिन 'डी' रिकेटस नामक रोग से हमें बचाता है।

अगर आपने ध्यान दिया होगा तो देखा जाता है कि जो महिलाए धूप के सम्पर्क में नहीं आती हैं। उनकी त्वचा पीली पड जाती है और कई बीमारियो को पाल लेती हैं। ऐसा उन पौधों के साथ भी होता है जो कि अधेरी जगहों मे रखे होते हैं। कोई फूल बिना धूप के नहीं खिल सकता और कोई फल बिना धूप के पक नहीं सकता।

धूप प्रत्यक्ष से त्वचा की अशुद्धियो को आदोलित करता है और अप्रत्यक्ष रूप से गुर्दे को प्रभावित करता है। सूर्य के इस प्रभाव को आप स्वय ही अपने मूत्र मे बदलते रग और पसीने की गध से अनुभव करते हैं। सूर्य के प्राकतिक प्रकाश का कोई विकल्प नहीं है।

त्वचा हमारे शरीर का सबसे बडा और महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसलिए इसका स्वस्थ रहना आवश्यक है। शरीर के अन्य कई हिस्सो मे भी विविधता पायी जाती है। शरीर के कार्यों को मुख्यरूप से इन भागों मे बाटा जा सकता है— जमाव निकास परिचालन और सुरक्षा। त्वचा ही शरीर का एकमात्र हिस्सा है जो चारो काम करती हैं। इसलिए यह अति आवश्यक है कि त्वचा स्वस्थ रहे और सही अवस्था मे रहे।

धूप स्वस्थ व सामान्य मनुष्य के लिए भी कितनी आवश्यक है यह उस समय पता चलता है जब आकाश बादलों से घिरा रहता है। ऐसे मौसम मे प्राय शरीर मे आलस्य भूख की कमी आदि विकार उत्पन्न हो जाते हैं। इसलिए जो मनुष्य धूप से वचित रहते हैं व मिल कारखानो से बाहर नहीं निकलते वे भी इसी प्रकार के रोगो का शिकार हो जाते हैं।

यदि आपने ध्यान से देखा होगा कि धूप (सूर्य की रोशनी) मे नगे बदन काम करने वाले मजदूरो की त्वचा उन लोगो की अपेक्षा जो कि घर की चार–दवारी और वातानुकूलित कमरो मे काम करते हैं बडी ही आकर्षक होती है। सूर्य मे ताप और प्रकाश दोनो होते हैं। प्रकाश से पोषण मिलता है।

धूप स्नान के अनेक उपाय हैं। पहला उपाय है आवश्यक वस्त्रो के अलावा नगे बदन सूर्य के प्रकाश मे बैठे। यदि ऐसा न हो तो बहुत ही पतला कपडा पहने।

धूप स्नान का दूसरा तरीका है प्रात काल धूप मे बैठना। इस विधि मे व्यक्ति को सफेद पतले वस्त्र पहनने चाहिए जिसमे कि त्वचा तक छनकर सूर्य की रोशनी पहुच सके।

धूप स्नान क्रमश पहले थोडी देर तक के लिए और धीरे–धीरे अभ्यास होने पर इसकी अवधि बढाई जानी चाहिए। सूर्य स्नान दिन मे किसी भी समय किया जा सकता है लेकिन मध्यान्ह मे जबकि सूरज सिर के ऊपर होता है ऐसा करने से बचना चाहिए। सवेरे और तीसरे प्रहर का समय इस स्नान के लिए उपयुक्त माना गया है।

सूर्य स्नान के पश्चात १५ २० मिनट तक खुली जगह छाया मे आराम करे और इसके बाद ठण्डे पानी से स्नान करे ऐसा करने से आप एक नयी शक्ति स्फूर्ति अनुभव करेगे।

सर्वनखेडा कानपुर देहात। वर्ष प्रतिपदा से रामनवमी सम्वत २०५३ तक सर्वन खेडा कानपुर देहात मे यजुर्वेद मारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ का आयोजन पातजल योग सस्थान लखनऊ द्वारा किया गया पूर्णाहुति के दिन रामनवमी के पावन पर्व पर सस्थान के अध्यक्ष डा० वीरेन्द्र बहादुर सिह के पिता श्री रघुनाथ सिह एव माता श्रीमती सरस्वती देवी ने वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा योगाचार्य स्वामी विश्व मित्रानन्द सरस्वती द्वारा ली। सस्कार धर्नुधर श्री नेम प्रकाश भजनोपदेशक ने सम्पन्न कराया। वेद पाठ आचार्य ओजोमित्र शास्त्री एव ब्र० भारत ने किया

इसी अवसर पर दस कन्याओ तथ आठ बालको का यज्ञोपवीत एव वेदारम्भ सस्कार भी सम्पन्न हुआ उल्लेखनीय है कि इन बालको म दो अनुसूचित जाति के बालक सम्मिलित थे जिन्होने उत्साह पूर्वक यज्ञोपवीत धारण किया। इसके अतिरिक्त एक बालिका का मुन्डन एव एक बालक का नामकरण सस्कार भी सम्पन्न हुआ।

ब्र० विद्यानन्द आर्य

ऐसा क्रोध जो सुधारवादी हो शोभनीय होता है जैसे माता-पिता द्वारा बच्चो पर किया गया क्रोध आचार्यो द्वारा अपने शिष्यो पर किया गया क्रोध दिशा निर्देशित करने वाला क्रोध ही मन्यु होता है। कुम्हार द्वारा घडे को पीटते समय का भाव क्रोध नही कहलाता। ऐसे व्यक्तियो द्वारा जिस प्रकार के क्रोध का उल्लेख किया गया वह क्रोध नहीं कहलाकर **मन्यु** कहा जाना ही श्रेयस्कर होगा। जब यही मन्यु अपनी सीमा का अतिक्रमण कर देता है तो उसका उग्र रूप उभर आता है और वह सुधार के बजाय सहार करना आरम्भ कर देता है। विवेकपूर्ण क्रोध से बहुतेरे कार्यो की सिद्धि भली प्रकार हो जाती है।

(पृष्ठ २ का शेष)

वीर सावरकर

सावरकर जी ने मुस्लिम मनोवृत्ति को समझ लिया था। वे उनकी नब्ज गाधी जी से अधिक अच्छी तरह से पहचानते थे। उनका नारा था–

'हमे स्वतन्त्रता की लडाई जारी रखनी है यदि वे मुस्लिम साथ आते है तो उनके साथ यदि वे नही आते तो उनके बिना और यदि वे विरोध करते हैं तो उनके विरोध के बावजूद।

श्री सावरकर जी कहा करते थे कि आज के मुसलमान बीते हुए कल के हिन्दू है। उनकी नसो मे भी राम और कृष्ण की नसो का खून बहता है।

ऐतिहासिक और सास्कृतिक रूप से सब एक है। अपने मत और पथ के दृष्टिकोण से वे अलग हो सकते हैं परन्तु राष्ट्र की दृष्टिकोण से सब एक राष्ट्र के निवासी हैं।

स्वतन्त्रता के लिए सावरकर क्राति मे विश्वास रखते थे। गाधी अहिसा मे विश्वास करते थे। जिसे वे अहिसा कहते थे उसका परीक्षण उन्होने स्वतन्त्रता के युद्ध मे किया। इसके परिणामस्वरूप देश का विभाजन हुआ सैंकडो और हजारो हिन्दुओ और मुसलमानो की मौत हुई।

श्री सावरकर ने यह सिद्ध करने मे सफलता प्राप्त की कि राक्षसो के साथ बर्ताव अहिहसा से करके सफलता नहीं मिल सकती। युद्ध मे बदलती परिस्थितियो की प्रकृति को समझने के लिये हमे राजनीतिक वीरता और पराक्रम का इतिहास अवश्य जानना चाहिये और सफलता के लिए हिसा अथवा अहिसा प्रत्येक हथियार का प्रयोग करना चाहिए।

हिन्दुओ ने प्रत्येक फ्रन्ट पर खोया ही है। भारत के टुकडे हो गये तथा वह हिस्सा जो आज पाकिस्तान कहलाता है मुसलमानो को उनके द्वारा ब्रिटिश शासको को दी गयी मदद के उपहार स्वरूप दे दिया गया।

हैदराबाद के सर्वाधिक अमीर शासक निजाम ने जब भारतीय सघ मे मिलने से इन्कार कर दिया तो आर्य समाज ने महात्मा नारायण स्वामी के नेतृत्व मे तथा वीर सावरकर जी ने उसमे मुख्य भूमिका निभायी।

इसका श्रेय श्री सरदार पटेल को भी जाता है। जिन्होने भारत सरकार के गृहमन्त्री होने के नाते उचित समय पर कार्यवाही की।

यदि गाधी जी की अहिसा सम्बन्धी नीति को निजाम की हैदराबाद के परिप्रेक्ष्य मे लागू किया जाता तो भारतीय सघ के अन्दर हैदराबाद रियासत का एक स्वतन्त्र इस्लामी गणराज्य के रूप मे उदय बिल्कुल वास्तविकता हो जाती।

परन्तु मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति आज भी यहा इस कदर विद्यमान है कि इसने हमारे वर्तमान सविधान मे भी स्थान प्राप्त कर लिया है।

आज हम भारतीय अपने राष्ट्र को अपनी मातृभूमि का तब ही विखण्डित होने से बचा सकते हैं यदि हम महर्षि दयानन्द तथा वीर सावरकर के पद चिन्हो का अनुसरण करे।

(पृष्ठ ३ का शेष)

महर्षि के जीवन . . .

लगावे। अपना व अपने कुटुम्बियो का नित्य–नैमित्तिक व्यय नियमपूर्वक करे। अधिक नहीं।

आज जो राजा लोग आधे से ज्यादा आमदनी आप हडप जाते हैं और जो ब्रिटिश सरकार आधे के लगभग ऊपर खर्च करती है वे ऋषि के इन वाक्यो की ओर ध्यान दे

नवम सिद्धान्त यह था कि स्वराज्य वृद्धि की ओर कदम उठाने से पूर्व देशी राजाओ के राज्यो मे स्वराज्य की स्थापना करनी चाहिये। अर्थात सच्चा स्वराज्य वह होता है जिसमे राजा की एक सत्ता न हो लेकिन प्रजा के परामर्श से ही सब कार्य व्यवहार चलता हो। इस सम्बन्ध मे महर्षि ने महाराजा को निम्न आदेश दिया है–

सब काम धार्मिक सभ्यों के बहुमतानुसार नियत करे और वह आज्ञा जो कि प्रजा के साथ सम्बन्ध रखती हो सब मे प्रजा की सम्मति से सिद्ध करके गुण–दोष समझे पश्चात गुणाढय नियमों को नियत और दोष युक्तो का त्याग करे।

राज कार्य एक पर निर्भर न रखे किन्तु राजपुरुष और प्रजा पुरुष की अनुमति के अनुकूल प्रचलित करे। अपने आत्मा व शरीर को राजा व अधिकारी न समझे किन्तु राजनीति को ही राजा और राज्याधिकारिणी माने। इसे निर्दोष चलाने के लिये एक राजसभा और दूसरी विद्या सभा और तीसरी धर्मसभा नियत करे इन समाजों मे राजपुरुष और प्रजा पुरुष नियत रहे।

राज पुरुष राजोन्नति और प्रजा पुरुष प्रजा की वृद्धि मे प्रयत्न किया करे और तीनो समाजो के विचारानुकूल नये नियम प्रचलित किये जाय। जो–जो आज्ञा इन सभाओ मे निश्चित होकर प्रचलित की जाये उनका उल्लघन कोई न करे। यदि करे तो वह सबका अमाननीय और दण्डनीय हो।

इस प्रकार ऋषि ने कई बाते क्रान्तिकारी लिखी है जिन्हे पढकर लेनिन भी एक बार हिल जाता। सब लोग यह चीख पुकार कर रहे है कि यदि किसी धर्म सस्था को कोई जागीर मिली हुई हो तो उसे खोस लेना धर्म मे हस्तक्षेप है और पैतृक सम्पत्ति पर सब सन्तानो को अधिकार है–

इस पर ऋषि लिखते हैं परन्तु धर्मार्थ आदि के लिये जो दिया हो उसके भोक्ता अन्याय से वर्त्तते हो तो भी उस अश को राज अश मे न मिलावे किन्तु कुकर्मी से छुडा योग्य धर्मात्मा को इसका अधिकारी करें।

यदि उनके सन्तान पितरों से अधिक योग्य हो तो उनको अयोग्य के अश मे से अधिक अश देवे और अधिक प्रतिष्ठा देवे।

इस प्रकार अन्य अनेक क्रातिकारी विचार महर्षि के पत्रो मे बिखरे पडे हैं उपर्युक्त विचारों को जानकर उनको क्रिया में लाने का प्रयत्न करे।

(पृष्ठ १ का शेष)

भारतीय संस्कृति ....

१ दूरदर्शन पर महिलाओ का नग्न प्रदर्शन रोका जाय।

२ पूर्ण नशाबदी लागू हो।

३ हिन्दी को तत्काल राजभाषा बनाया जाय एव प्रान्तीय भाषाओ की लिपि देवनागरी स्वीकार की जाय।

४ सस्कृत भाषा को उचित स्थान दिया जाय।

५ सरकारी नौकरियो मे आरक्षण का आधार केवल आर्थिक हो जातीय नहीं।

६ लोभ लालच व दबाव पर आधारित बलात् धर्मपरिवर्तन पर रोक लगायी जाय।

७ धर्मान्तिरित ईसाई एव मुसलमानो के लिए आरक्षण का समर्थन न हो।

८ काश्मीर तथा अन्य प्रान्तों मे आतकवाद समाप्ति के लिए कठोर कदम उठाये जाये।

९ गोवश को पूर्ण सरक्षण तथा गोवद्ध पर पूर्ण प्रतिबध लगाया जाय।

१० समान नागरिक सहिता लागू करवाई जाय तथा तुष्टीकरण की नीति समाप्त हो।

शोक समाचार

आर्य समाज नागौर के पूर्व कोषाध्यक्ष एव कर्मठ व निष्ठावान कार्यकर्ता श्री रामलाल स्वर्णकार का आकस्मिक निधन हो गया। उनकी अत्येष्टि वैदिक मत्रोच्चारण के साथ की गई। उनके निवास पर शाति यज्ञ किया गया दिवगत आत्मा की सदगति तथा शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना की गई। समस्त आर्य बन्धुओ ने उनके निधन पर शोक सभा की जिनमे दो मिनट का मौन रखा गया मत्री श्री जौहरी लाल व्यास ने इस क्षति को अपूर्णीय क्षति बताया।

मत्री
जौहरी लाल व्यास

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मनिहारी टोला डाकघर फुदकीपुर जनपद साहेबगज बिहार का वार्षिकोत्सव दिनाक २०.३.९६ से २८.३.९६ तक सोल्लास सम्पन्न हुआ। इसमे (१) स्वामी वेद व्रतानन्द सरस्वती (२) श्री सीताराम शास्त्री (३) श्रीमती वियावती आर्या (४) श्री रमेशचन्द्र आर्य (५) श्री जयपाल सिह एव (६) श्री सत्यप्रकाश आर्य के भजनोपदेश हुए। इसमे योगर्षि नरेन्द्र ब्रह्मचारी के ८ घण्टे की भूमि समाधि विश्वकल्याणार्थ थी।

निर्वाचन

आर्य समाज शाजापुर–प्रधान– श्री सुरेन्द्र सिह गुप्ता मत्री– श्री नन्द लाल जी चौधरी एव कोषाध्यक्ष– श्री बद्रीलाल जी वेदमित्र।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न डी एल 11049 96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 28 4 96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93 96
R N N 62 7 L censed to Post w thout Pre Payment L cence No U(C)93/96 Post n NDPSO on 25/26 4 1996

क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उपसभा पटपड गज द्वारा विशेष आयोज

विशाल शोभायात्रा तथा आर्य महासम्मेलन "एक दृष्टि"

आय समाज स्थापना दिवस के अवसर पर पूर्वी दिल्ली मे एक भव्य आयोजन किया गया यह आयोजन क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उपसभा पडपड ज क्षेत्र के भागीरथ प्रयास से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ इस उपसभा के महामत्री आर्य समा के कर्मठ कार्यकर्ता श्री पतराम त्यागी है जिन्होने इस क्षेत्र की समस्त आर्य समाजो के अधिकारियो के सहयोग से अथक परिश्रम करके पूर्वी दिल्ली क्षेत्र मे यह अभूतपूर्व आयोजन सफलता पूवक सम्पन्न कराया

इस आयोजन के अन्तर्गत केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी के नेतृत्व मे एक विशाल शोभ यात्रा निकाली गयी २३ मार्च १ ६६ का प्रात १० बजे प्रारम्भ हुई इस ५ किलोमीटर लम्बी शोभा यात्रा मे १५ विद्यालयो क लगभग १ ० बच्चे अपनी विशेष वेशभूषा म विभिन्न प्रकार के प्रदर्शन करते हुए चल रह थे इनके साथ ही आर्य युवक परिषद आर्यवीर दल तथा अन्य आर्य युवा सगठनो के स्वय सेवक विभिन्न प्रकार के व्यायाम लाठी जूडो कराट तलवार तथा अन्य आकर्षक करतब दिखाते हुए चल रहे थे इनक मनोहारी प्रदर्शन ने क्षेत्र की जनता का मनमोह लिया लोग इन आर्य युवा स्वय सेवको के अनुशासन तथा प्रदर्शन से अत्यन्त प्रभावित थे स्थानीय जनता ने स्थान स्थान पर तोरण द्वार तथा बैनर आदि लगाकर इस शोभा यात्रा का स्वागत किया जगह जगह पर फल मिठायी तथा अन्य खाद्य पदार्थो पुष्पो तथा पुष्प मालाओ से इस शोभा यात्रा का अभिनन्दन तथा उत्साहवर्धन किया

अत्यन्त व्यवस्थित ढग से चल रही इस शोभा यात्रा मे सबसे आगे दो युवक आय समाज की शोभा यात्रा का बनर लेकर चल रह थ उसके बाद एक टैम्पो शोभायात्रा का उद्देश्य तथा आर्य समाज स्थापना दिवस नव सम्वतसर के बारे मे तथा दयानन्द एव आय समाज के उदघाषा को करता हुआ चल रहा था उसके बाद आर्य सन्यासियो को लिय हुये दो हाथी तथा दो ऊंट तथा घोडे पर आर्यवीर दल के जवान ओ३म पताका लेकर चल रहे थे आर्य समाज का पुरोहित वर्ग सगठित रूप से सबसे आगे शोभायमान थ उसके ब द आर्य नेत अ तथ वरिष्ठ कार्यकर्ताओ का समूह चल रहा था और उसके बाद सैकडो टैम्पू अपनी अपनी समाज के बैनरो क साथ साथ चल रहे थ इनके अतिरिक्त कारो तथ स्कटरो पर ओम वज लगाकर सैकडो व्यक्ति चल रहे थे इस शोभा यात्रा म लगभग ५ हजार आर्य जनसमूह व्यवस्थित ढग से आर्य समाज त दयानन्द के जयघोषो से क्षेत्र को गुजाता हुआ चल रहा था यह विशाल शोभा यात्रा काफी हाम मैदान से चलकर इस्ट एण्ड एन्कलेव प्रियदर्शिनी विहार लक्ष्मी नगर शकरपुर के मुख्य बाजारो से होती हुयी निर्माण विहार के क्षेत्र से निकलकर आर्य समाज प्रीत विहार मे समाप्त हुई क्षेत्रीय जनता के लिये यह पहला अवसर था कि आर्य समाज की इतनी विशाल शोभायात्रा इस क्षेत्र मे निकली गयी

२४ ३ ६ को काफी होम के विशाल प्रागण मे ३ कुण्डीय महायज्ञ आचार्य राम किशोर शर्मा के ब्रह्मत्व तथा आचार्य विश्वमित्र मेधावी के स ल म सम्पन्न हुआ इस विशाल महायज्ञ का कार्यक्रम अत्यन्त मनोहारी था क्षत्रीय जनता मे यज्ञमान बनने की होड सी लगी हुयी थी इस अवसर पर स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने यज्ञमानो को आशीर्वाद प्रदान किया यज्ञ क उपरान्त आर्य महासम्मेलन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ इस अवसर पर गुरुकल कागडी विश्वविद्यालय के कलाधिपति श्री सूर्यदेव कलपति डा० धर्मपाल जी श्री सुरेन्द्र कमार रैली पूर्वी दिल्ली के सासद श्री वी० एल० शर्मा प्रेम डा शशिप्रभा श्री बनारसी सिह डा० महेश विद्यालकार डा० प्रमचन्द श्रीधर श्री राम किशोर शास्त्री आचार्य विश्वमित्र मेधावी आचाय जगदीश जी स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती तथ क्षेत्रीय सभा के प्रधान श्री दामोदर प्रसाद आय सहित अनको प्रतिष्ठित कायकता भी उपस्थित थे

सम्मेलन का प्रारम्भ करते हुये क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उपसभा के महामत्री श्री पतराम त्यागी ने विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुय कहा कि आर्य समाज ने स्वतन्त्रत समर मे अहम भूमिका निभायी थी तत्कालीन स्वतन्त्रता सेनानियो मे प्रतिशत आय समाजी थे उन्होने वर्तमान परिस्थितियो की समीक्षा करते हुये कहा कि इस समय की भयावह स्थिति को देखते हुये आर्य समाज को राजनीति मे सक्रिय रूप स भाग लेना चाहिय गुरुकल कागडी के कलपति डा धर्मपाल जी न इस भव्य आयोजन की सफलता की बधायी देते हुए कहा कि देश मे अग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त होनी चाहिये तथा समस्त कार्य देवनागरी लिपि मे ही सम्पन्न होने चाहिये उन्होने राष्ट्रपति डा शकर दयाल शमा तथा लाकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल को बधायी दी जिन्होन राजनीति से प्रेरित दलित इसाई आ रक्षण सम्बन्धी विधेयक को अध्यादेश के रूप मे स्वीकृति नही दी मुख्य अतिथि श्री बैकण्ठ लाल शर्मा ने आय समाज की विशेषताओ की समीक्षा करते हुये कहा कि आय समाज को अपनी वही पुरातन छवि को दुबारा बनाना होगा जिससे काई भी राजनीतिक दल अन्य समाज की उपेक्षा न कर पाये उन्हाने कहा कि शुद्ध वही ह जिसका आचरण पवित्र है समारोह के अध्यक्ष दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा गुरुकल कागडी विश्वविद्यालय क कलाधिपति श्री सूयदेव ने अपने ओजस्वी उदबोधन मे सगठन शक्ति की महत्ता को दर्शाते हुये कहा कि प्रत्येक आर्य समाजी को सायत निष्ठा ओर आर्य सिद्धान्तो का पालन करते हुये अपनी एकता को सुदृढ करना चाहिये इस अवसर पर उन्होने क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री दामोदर प्रसाद आर्य की ओर से एक विधवा को सिलाई की मशीन भट की उन्होने स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती द्वारा रचित महर्षि दयानन्द की कवित्वमय जीवनी 'दयानन्द बयालीसा' का भी विमाचन किया मच सचालन क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उप सभा के महामत्री श्री पतराम त्यागी न किया

आर्य समाज गाधी नगर की ओर से ऋषि लगर का आयोजन किया गया २३ ३ ६६ को शाभा यात्रा की समाप्ति पर आर्य समाज प्रीत विहार की तरफ से ऋषि लगर का आयोजन किया गया था

रवि वहल
मन्त्री आर्य समाज निर्माण विहार

वैराग्य किसी को भी हो सकता है परन्तु वह व्यक्ति जन साधारण को ज्ञान व लाभ पहुचाने मे सक्षम हो इसी तथ्य को ध्यान मे रखकर गत वर्ष की भाति इस वर्ष भी पूज्यपाद स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे एक माह का शिविर इस प्रकार लग रहा है

३ जून से १६ जून १९९६ वैदिक साधन आश्रम तपोवन (देहरादून)

१७ जून से १ जुलाई १९९६ पातजल योगधाम आर्य नगर हरिद्वार

इसके अन्तर्गत पातजल योग दर्शन पढाया जायेगा व्यायाम कला आयुर्वेद का ज्ञान योगासन ध्यान एव प्राणायाम के अतिरिक्त यज्ञ सूध्यादि का सही मन्त्रोच्चारण तथा अन्य कई आवश्यक तथ्य समझाये जायेगे जो विरक्त हो गये है या विरक्त होना चाहते हैं उनके लिये यह कार्यक्रम बहुत उपयोगी हाग

प्रशिक्षण के समय मे २ रु प्रतिदिन के हिसाब से प्रत्येक प्रशिक्षार्थी को शिविर व्यय देना होगा इच्छक ब्रह्मचारी वानप्रस्थी तथा सन्यासी या इस प्रकार की दीक्षा लेने के इच्छक व्यक्ति इसमे भाग ले सकते है

विस्तृत जानकारी हेतु निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करे

श्री भगवत मुनि वैदिक साधन आश्रम तपोवन (देहरादून) २४८००८ फोन ६५५४५३

कानपुर मे विशाल शोभा यात्रा

आर्य उप प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे नगर की समस्त आय समाजो की ओर से आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य मे विशाल व भव्य शोभायात्रा निकाली गयी जिसमें आर्य समाज लाजपत नगर स्वरूप नगर नवाबगज हरजेन्दर नगर वर्रा कषिविश्वविद्यालय स्त्री आय समाज आर्य नगर स्त्री आर्य समाज नवाब गज वेद मन्दिर लक्ष्मीपुर कली बाजार सदर बाजार किदवई नगर ब बू पुरव अ दि अर्य समाजो के पदाधिकारी तथा सदस्यगणो सहित लगभग १ ०० लोग थे

श्रम हितकारी केन्द्र मे हवन के पश्चात के के० पुरी डिफेन्स कालोनी शिशु मन्दिर के० डी० ए कालोनी थाना चकेरी लाल बगला होते हुए आर्य समाज मन्दिर हरजेन्दर नगर मे जनसभा मे शोभा यात्रा परिवर्तित हो गयी आर्य समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने अपने उद्बोधनो मे आर्य समाज तथा देश की परिस्थितियो पर विचार प्रकट किया तथा कहा कि आज राष्ट्र अनेक समस्याओ से ग्रसित है सबसे बडी समस्या राष्ट्र प्रेम व समर्पण की है कायक्रम का सयोजन डा० आशा रानी राय तथा अध्यक्षता डा० हरपाल सिह प्रधान ने की सर्वसम्मति से प्रस्ताव हुआ कि विक्रम सवत को राष्ट्रीय सवत घोषित किया जाये

डा० आशा रानी राय मत्री

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दूरभाष ३२ ४ १ ३६०१८५ आजीवन सदस्यता शुल्क रुपय वार्षिक शुल्क रुपए एक प्रति रुपया
वर्ष ७५ अंक १ दयानन्दाब्द २ सृष्टि सम्वत १९७२ ४९ ७ ज्येष्ठ क म० २ मई

चुनाव में कालेधन के वितरण को भी रोका जाये

सार्वदेशिक सभा द्वारा मुख्य चुनाव आयुक्त को पत्र

नई दिल्ली २० अप्रैल।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प वन्देमातरम रामचन्द्र राव कार्यकारी प्रधान श्री सोमनाथ मरवाह तथा उप प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने एक सयुक्त पत्र के द्वारा मुख्य चुनाव आयुक्त श्री टीएन शेषन का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा है कि चुनाव खर्च पर पूर्ण नियन्त्रण लागू करके जहा एक सराहनीय एव सफल शुरूआत की गयी है वही एक अन्य समस्या से निपटने क लिए अभी तक कोइ उपाय नही किया गया है राजनीतिक दलो के उम्मीदवार चुनाव प्रचार मे घर–घर सम्पर्क करते हुए मतदाताओं को रिझाने एव गैर कानूनी तरीके से उन्हे प्रलोभन देने के उद्देश्य से करोडो रुपये का कालाधन तथा शराब बाट रहे है।

श्री वन्देमातरम ने इस पत्र के द्वारा यह आशका व्यक्त की है कि इन गतिविधियो का पता लगाना भी एक दुश्कर कार्य है परन्तु उन्हाने श्री शेषन के चुनावी अनुभव पर विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के इस नये उपाय पर नियत्रण करने के लिए अवश्य ही कोइ समाधान निकाला जा सकता है यदि कालेधन के इस प्रकार प्रयोग पर अकुश लगाया जा सका तो यह वास्तव मे श्री शेषन की सफलता मे वृद्धि करेगा।

श्री वन्देमातरम जी ने कहा कि लोकतन्त्र मे चुनाव अत्यन्त आवश्यक है और इनसे बचा नही जा सकता। अत जब तक लोकतात्रिक व्यवस्था जारी रहती है तब तक चुनाव सुधार और विशष रूप स चुनावो मे काले धन के किसी भी रूप म प्रयोग पर अकुश के प्रयास भी जारी रखना चाहिए

श्रीमती शान्ति मलिक का देहावसान

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता स्वर्गीय श्री रामलाल मलिक की धर्मपत्नी समाजसेविका दानशीला प्रान्तीय आर्य महिला सभा की भूतपूर्व प्रधाना तथा स्त्री आर्यसमाज करोलबाग की प्रधाना श्रीमती शान्ति मलिक का देहावसान सोमवार दिनाक २६ अप्रैल १९९६ के दिन ७६ वर्ष की आयु मे प्रात काल ६ ४५ पर ५२/७८ रामजस राड करोलबाग स्थित निवास स्थान पर हो गया।

उनकी शवयात्रा दोपहर ३ ३० बजे उनके निवास स्थान से आरम्भ हुई। उनके पार्थिव शरीर को मार्ग मे आर्यसमाज करोलबाग मे अन्तिम दर्शनो के लिए रखा गया। शवयात्रा अन्तिम सस्कार के लिए सायकाल ४ बजे पचकुइया रोड श्मशान घाट पर ले जाई गई।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री डा सच्चिदानन्द शास्त्री गुरुकुल कागडी विश्व विद्यालय के कुलाधिपति एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव सहित अनेक आर्यसमाजो तथा स्त्री आर्यसमाजो के गणमान्य पदाधिकारी प्रतिष्ठित नागरिक उनके पारिवारिक जन सगे–सम्बन्धी तथा प्रशसक माताजी की शवयात्रा मे सम्मिलत हुए।

माताजी के परिवार मे तीन पुत्र एव पुत्रवधुए पोते–पोतियां हैं। माताजी के बडे सुपुत्र श्री धर्मवीर जी ने चिता में अग्नि दी।

१९९६-९७ मनुवर्ष के रूप में मनाया जाये।

आर्य प्रतिनिधि सभाओ को परिपत्र

हिन्दू समाज मे जाति को उस समूह के रूप मे परिभाषित किया जाता है जो हमे वशानुगत रूप मे प्राप्त हुआ हो तथा जहा हम सामाजिक रूप से समान तथा एकता के सूत्र मे हिन्दू होने के नाते बधे हुए हो । हिन्दुओ मे हमे बहुत सी जातिया देखने को मिलती है। यह एक प्रकार की स्तरा से विभाजित व्यवस्था है जिसमे निम्नतम स्तर से उच्चतम स्तर तक व्यक्तियो को उनके पेश अथवा उनके खान पान क आधार पर विभाजित किया गया है शूद्रो को अछूत समझा जाता था और ब्राह्मण वर्ग को उच्चतम। ब्राह्मण वग शेष समाज को अपने से निम्न कोटि का समझता था।

यह जाति व्यवस्था हमारे प्राचीन ऋषियो द्वारा वर्णाश्रम धम के रूप मे आदर्श सामाजिक व्यवस्था का ही विकृत रूप है। इस व्यवस्था मे समाज क किसी सदस्य को वशानुगत कारण से नही अपितु उसकी किसी विशेष रुचि योग्यता ओर क्षमता क आधार पर उस वर्ण मे रखा जाता था जिसके कर्त्तव्यो का वहन करने मे वह सक्षम हो। इस व्यवस्था म कही भी किसी ऐसे विभाजन का सकेत नहीं मिलता जो पूर्णत अपरिवर्तनीय हो। शूद्र परिवार के घर मे जन्म लेन वाला बालक अपना विकास एक ब्राह्मण क रूप मे कर सकता था।

विवाह का प्रबध भी वर और कन्या के गुण–कर्म और स्वभाव की समानता के आधार पर किया जाता था। यह व्यवस्था कभी भी वर्तमान जातिवादी कट्टरता के रूप मे नही थी। एक ब्राह्मण अपने कर्त्तव्यो का पालन न करने और पथ भ्रष्ट होन पर शूद्र मान जा सकता है।

बहुत दु ख है कि कई युगो तक चलने वाली यह व्यवस्था आज उस रूप मे पहुच चुकी है जहा हम एक राष्ट्र क नागरिको को केवल जन्म क कारण विभिन्न गुटो म बटा हुआ पाते ह आज इसी एक तथ्य का दुरुपयोग राष्ट्रीय एकता को छिन्न भिन्न करन के लिए किया जा रहा है।

उपरोक्त दृष्टिकोण से दक्षिण भारत क एक प्रान्त तमिलनाडु की स्थिति का विस्तृत रूप से समझने के लिए सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा क प्रधान श्री वदेमातरम रामचद्र राव ने राज्य का विस्तृत दौरा किया इस दौरे क बाद उनका सक्षिप्त आकलन इस प्रकार ह

१ तमिलनाडु के मुस्लिम तथा इसाई प्रत्येक साधन का उपयोग करक हिन्दुओ क दलित वर्ग को अपने अपने धर्म मे लाने के लिए प्रयासरत है।
२ जातिवादी व्यवस्था के वर्तमान रूप का लाभ उठाते हुए दलितो तथा सवर्णो मे रक्त रजित सघर्ष पैदा किया जा रहा है।

जब डा० भीमराव अम्बेडकर की मूर्ति को तोडने का प्रयत्न किया जाता है तो स्वाभाविक प्रतिक्रिया के रूप मे दलित वर्ग भडक उठता है।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

मनु की वर्ण व्यवस्था पर संगोष्ठी
कुछ उभरते प्रश्न

भारतीय नववर्ष व सृष्टि सवत्सर के अवसर पर गत वर्ष की भाति इस वर्ष भी आयसमाज श्रीगगानगर के सत्सग भवन मे एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी का विषय 'मनु की वर्ण वयवस्था वेदोक्त है सर्वकालिक है सवग्राहय एवम पूर्ण वैज्ञानिक है रखा गया। इस गोष्ठी मे आय समाजेतर विद्वानो व विचारको को बुलाने का विशेष लाभ यह रहा कि कई नए तथ्य व विचार सामने आये। जो मनु की वर्ण व्यवस्था के प्रचलन मे अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होगे।

साय ३ बजे से लगभग ६ बजे तक चली इस विचार गोष्ठी की अध्यक्षता श्री खैरायती राम जी ने की तथा इसका सयोजन व सचालन आर्यसमाज के पुरोहित श्री रामनिवास जी गुण–ग्राहक ने किया। गोष्ठी की पूर्व भूमिका के रूप मे राज० उच्च न्यायालय स मनु की प्रतिमा को हटाने के न्यायालय के आदेश तथा श्री धमपाल जी आर्य मन्त्री आय साहित्य आर्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली व उनक सहयोगी एवम मनुस्मृति के प्रमाणिक व्याख्याकार डा० सुरेन्द्र कुमार जी क सतप्रयासो स उक्त प्रतिमा की पुनप्रतिष्ठा का पूर्ण विवरण रखा गया। मनुमहाराज की वण वयवस्था के औचित्य पर ठोस विचार माननीय सचालक द्वारा दिये गये। प्रथम वक्ता के रूप मे श्री हष अधन शास्त्री जी ने कहा कि मनु की वर्ण व्यवस्था का आधार यजुर्वेद का मन्त्र ब्राह्मणोअस्यमुखमासीद् बाहु राजन्य कृत । उरू तदस्य यद्वैश्य पदभ्या शूद्रा अजायत है। इस प्रकार वर्ण व्यवस्था वेदोक्त है दूसर वर्ण शब्द वृभवरणे धातु से बना है जिसका अथ भी चुनना या वरण करना है। समाज मे ज्ञान का प्रतिनिधि होने से ब्राह्मण मुख बल पराक्रम के कारण क्षत्रिय को बाहु की उपमा मिली है। खाद्यान्न उगाकर पशु पालन व समाज का यथावत वितरण करन के कारण वैश्य को पेट कहा गया है तथा जा इनमे से किसी भी गुण को धारण नही कर पाता वह शूद्र कोटि अथात पैर८त कहा गया है। दूसरे वक्ता आर्यसमाज के नवागत पुरोहित प० देशराज सत्येच्छु ने कहा कि ईश्व न सृष्टि के आदि मे अपने अमृत पुत्र मानव क इस ससार मे रहने की तथा भोगापवग का पा की पूण प्रक्रिया वेद द्वारा दी। वेद इश्वरीय ज्ञान हाने से नित्य है तथा उसी वेद के अनुकूल होने से मनुस्मृति सवकालिक एवम सदग्राह्य है समाज के तीन प्रबल शत्रु होते है। अज्ञान अन्याय और अभाव जो वेदादि शास्त्रा का पढ़ पढाकर ज्ञान रुपी शत्रु से समाज की रक्षा करने मे जीवन लगा देता है वह ब्राह्मण और अपने शक्ति साहस व पौरुष के द्वारा समाज के शत्रु–अन्याय को दूर करने मे समर्पित होने वाला क्षत्रिय तथा कृषि कार्य पशुपालन कल कारखानो द्वारा अभाव को दूर करता है। वह वैश्य कहाता है। जो पढाने से भी ने पढे शारीरिक शक्ति व व्यवस्था कार्य से रहित तथा व्यापार के भी अयोग्य रह जाता है। वह शूद्र कोटि मे गिना जाता है। यहा प्रश्न योग्यता और सामथ्य व गुण स्वभाव का है जन्म का नही।

गोष्ठी को गभीरता की ओर ले जाते हुए डा० रवि कुमार भटनागर जी वरिष्ठ उप–जिला शिक्षा अधिकारी श्रीगगानगर ने कहा वण व्यवस्था ने जबसे जाति प्रथा का रूप ले लिया है तभी से यह समस्याए पैदा हुई है। उत्तमता का भी सदुपयोग अनिवाय है। वर्ण व्यवस्था के मन्वोक्त प्रचलन से ससार से साम्प्रदायिकता को मिटाया जा सकता है। इन गोष्ठियो की सार्थकता इसे व्यवहारिक बनाने म है। अन्यथा शब्दाडम्बर या वाग्विलास स अधिक कुछ भी नही है। महर्षि दयानन्द महाविद्यालय के प्रवक्ता श्री ओम जी अरोडा ने कहा कि मनुस्मृति समाज की सपूण व्यवस्था को माणित करन वाला ग्रन्थ है। इसके वतमान स्वरूप की आलोचना करने वाले भी अपने स्थान र गलत नही है। कारण कि हमन मनु के मिलावटी स्वरूप को ही व्यवहार मे अपनाकर यथार्थ को गौण कर दिया है अत उनके विरोध प्राप्त अनुभवो की अभिव्यक्ति ही है।

अन्त मे श्री वेदप्रकाशजी न भी अपन सक्षिप्त विचार रखे मनुस्मृति के सिंहावलोकन मात्र से यह निर्विवाद प्रकट है कि यदि मनु की वदोक्त वर्ण व्यवस्थाको जनता के सामने रखा जाये तो इसका विरोध आज का कथित ब्राह्मण उतनी ही शक्ति व सामथ्य के साथ करेगा जितना की आज का कथित शूद्र कर रहा है। सत्यशील निष्पक्ष चितक चाहे किसी वण का हो किसी देश का किसी सम्प्रदाय या मत मजहब का हो। मनुस्मृति का व उसकी वर्ण व्यवस्था का कदापि विरोध नही कर सकता। आर्य समाज को ऐसी सगोष्ठिया करके नये विचारो का सम्मान करना चाहिए। मनु वष की साथकता इसी मे है। परम पिता से हाद विनय है कि आर्यो को सतपुरुषार्थ की शक्ति व सामर्थ्य दे व मानव मात्र को सच्चाई को हृदयगम्य करने की प्रेरणा प्रदान करे।

राम निवास गुण ग्राहक
पुरोहित आर्य समाज श्री गगानगर

(पिछले पृष्ठ का शेष)

१६६६-६७ मनुवर्ष .....

३ मदर टेरेसा तथा कट्टरवादी मुसलमानो द्वारा इन क्षेत्रो का दौरा स्थिति ओर बिगाड रहा है।

४ प्रधानमत्री द्वारा इसाई बने दलितो को आरक्षण देने के उद्देश्य से एक अध्यादेश राष्ट्रपति के पास स्वीकृति के लिए भेजने से भी दलित ईसाईयो की इन हरकतो का उत्साह बढा है। बेशक राष्ट्रपति द्वारा इस अध्यादेश को फिलहाल नामजूर कर दिया गया है। इस बात पर विचार किया जाना चाहिए कि हमारे शासको के यह कदम हमे किस दिशा मे ले जाएगे।

५ सार्वदेशिक सभा के निर्देशानुसार तमिलनाडु राज्य की आर्य प्रतिनिधि सभा न श्री वदेमातरम जी के इसी दौरे के तहत तीन ऐसे सम्मेलन आयेजित किए जिनमे हिन्दुओ के समस्त वर्गो ने भाग लिया। इन सम्मेलनो का अच्छा प्रभाव भी पडा।

अब यह देखना है कि राष्ट्र को विभाजित करने मे लगी ताकते हमारे इन प्रयत्नो पर किस प्रकार प्रतिक्रिया व्यक्त करती है

यूरोपीय देशो मे धर्म के प्रति बढती घृणा को देखत हुए ईसाइयो को अपने धन और बल का मुह भारत की ओर मोडना पडा है जिससे भारत मे ईसाईयो का एक मजबूत वग विशेष पहचान के साथ खडा किया जा सके अत विदेशी ताकते एकाग्र होकर भारत मे धम–परिवतन की गतिविधया चला रही है वर्तमान पोप इसमे रूचि ले रह है। मुसलमानो की तरह ईसाइ मिशनरी भी स्वय को एक अलग–अलग पहचान क रूप मे प्रस्तुत करन का प्रयत्न कर रह है इसी उद्दश्य से सगठित भी हो रह है

इन परिस्थितियो मे आर्य समाजियो से हमारा यह निवदन है कि वे स्वय को इन इसाई तथ इस्लामी गतिविधियो का मुकाबला करने के लिए तैयार करे तथा देश और राष्ट्र का विभाजन होने से राके।

सार्वदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा चाहती है कि आर्य समाजे इस वष को सारे विश्व मे मनु–वर्ष के रूप मे घोषित करे तथा विशेष आयोजन करे।

मनु प्रथम कानून–दाता है महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपन विचारो की प्रामाणिकता मनुस्मृति के श्लोको से सिद्ध करन का प्रयत्न किया है कुछ दलितो ने अपने मन मे यह विचार बिठा लिया है कि जाति–व्यवस्था का वर्तमान रूप मनु द्वारा बनाया गया था इसीलिए वे मनु के प्रति घृणा करते है।

प्रत्येक जाति के सदस्यो को साथ लेकर इस वर्ष मनु–वर्ष के रूप मे मनाया जाए जिससे जाति–व्यवस्था म उपजी बुराइयो को स्थायी रूप से समाप्त किया जा सके।

इस वतमान जन्म –गत जाति व्यवस्था की बीमारी तेजी से फैल रही है और एक महा–विनाशकारी विषाक्त वातावरण को बानने की ओर अग्रसर है। तो आइए सब मिलकर भारत को इस महा–विनाशलीला की ओर ले जाने वाली ताकतो का डटकर मुकाबला करने के लिए सकल्प ले तथा लक्ष्यबद्ध रूप से कार्यक्रमो की घोषणा करे।

शुभ कामनाओ सहित

भवदीय
डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री
मत्री

सम्पादक - डा० सच्चिदानन्द शास्त्री की कलम से

उदयपुर से महर्षि जी १८८३ ई० फरवरी मास मे शाहपुरा गये। महाराणा प्रतिदिन स्वामी जी से मनुस्मृति योगदर्शन वैशेषिक इत्यादि पढते थे। राणा के महल मे यज्ञशाला बनवाई गई जहा राणा ने प्रतिदिन यज्ञ करने का सकल्प लिया।

१७ मई १८८२ को स्वामीजी ने जोधपुर के लिये प्रस्थान किया। शाहपुरा के महार णा नाहरसिहजी ने महाराज जी से प्रार्थना की कि आप जोधपुर जा तो रहे हे पर वहा वैश्या आदि का खण्डन न करना"

महर्षि ने निर्भयता से उत्तर दिया राजन

मै काटेदार बडेवृक्ष को नहरने से नही काटता उसके लिये तो बडे शस्त्र की आवश्यकता होती है

जाधपुर मे कनल सर प्रताप सिह, राव राजा तेजसिह आदि राजपरिवार के व्यक्ति ऋषि के शिष्य हो चुके थे और देर से निमन्त्रण भेज रहे थे। अजमेर के आर्य पुरूषो ने भी जोधपुर जाने से स्वामीजी को रोका और कहा –

वहा के लोग प्राय गॅवार–उद्दण्ड है उनका स्वभाव और वर्ताव भी अच्छा नही है इसलिये आप वहा मत जाये। ऋषि ने उत्तर दिया–

यदि वे लोग मेरी अगुलियो को बत्तिया बनाकर जलाये तब भी मुझे वहा जाने म कुछ भी शका नही होगी मै वहा जाऊगा और अवश्य वैदिक धर्म का-प्रचार करूगा।

एक अन्य सज्जन ने भी जब कुछ बल पूर्वक वहा न जाने के सम्बन्ध मे निवेदन किया तब ऋषि ने कहा –

मै पाप के बडे–२ वृक्षो को काटने के लिये तीक्ष्ण कुठारो से काम लेता हूं न कि उन्हे बढाने के लिये। कैचियो से उन्हे कलम करूगा।

स्वामी जी का जोधपुर मे भली प्रकार स्वागत हुआ। स्वामी जी सायकाल सर्वसाधारण को रियासत मे एक ओर मूर्ति पूजा चक्राकित सम्प्रदाय का जोर था तो दूसरी ओर राज्य के मुसाहिब आला मैया फजुल्ला खॉ के होने से यवनो का विशेष प्रभाव था।

स्वामीजी प्रतिदिन इन्ही का प्रबल खण्डन करते। इस्लाम के प्रबल खण्डन से एक दिन फजुल्ला खॉ चिढ गया और स्वामी जी को यहॉ तक कह दिया कि यदि इस समय मुसलमानो का राज्य होता तो आप ऐसे व्याख्यान न देते और यदि देते तो जीवित नही रह सकते थे।

ऋषि ने निर्भयता से कहा मै भी उस समय दो क्षत्रिय राजपूतो की पीठ ठोक देता तो वह उन लोगो को अच्छी तरह समझ लेते। इस प्रकार महर्षि के भाषण से एक मुस्लिम युवक तैश मे आ खडा हो अपनी तलवार की मूठ पर हाथ रख कर बोला।

आप मुह सम्भाल कर बोले इस्लाम पर कुछ न बोले। स्वामी जी ने इस युवक को प्यार से कहा भद्र ! अभी आपके दूध क दात है तुम अपने मजहब को क्या समझते हो ?

तलवार का भय दिखाते हो क्या म्यान से तलवार निकालना जानते हो या कवल मूठ पर हाथ रखना जानते हो–युवक घबराया ओर लज्जित हो बेठ गया।

परन्तु फैजुल्ला के दिल म कई विष पूर्ण बल पड गये और वह प्रतिकार का उपाय सोचने लगा

राव राजा तेजसिह ने पहल दिन ही स्वामीजी से कह था–भगवन महाराजा के रहन–सहन क विषय मे कुछ न कहियेगा।

ऋषि ने बलपूवक कहा – क्या आप मुझसे झूठ कहलवाना चाहते है। मै जो कुछ कहूगा सत्य ही कहूगा पर कथन कभी असन्य व असभ्यता सूचक नही होता और न ही किसी व्यक्ति विशेष का नाम निर्देश कर कटाक्ष किया करता हू राव राजा ने सिर झुका लिया।

इस प्रकार जिन राजपुत्रो का सद् शिक्षा सद् उपदेश देकर सही दिशा बोध देने का सदभाव भी वहा जोधपुर म स्वामीजी के शत्रुओ का अनायास ही प्रादुर्भाव हो गया। महर्षि के विरूद्ध गुप्तरूप से चल रहे षडयन्त्र का प्रमाण इस घटना से भी मिल गया कि उनका एक सेवक कल्लू छ–सातसौ रुपये और अन्य कुछ सामान चुराकर भाग गया। इस प्रकार बाहर से आये नौकर का भाग जाना और उसका मारवाड के दुर्गम जगलो मे से बचकर चले जाना एक महत्वपूर्ण नियोजित षडयन्त्र का सूचक था।

स्वामी जी के निवास पर नियुक्त पहरेदार अन्य मनस्क हो रहे थे। इसी समय एक दुर्घटना घट गई– जिसमे विरोधियो को और बल मिला।

महाराणा यशवत सिह का नन्हीं जान नामकी वैश्या से गहरा सम्बन्ध था। एकदिन स्वामीजी जब दरबार मे पहुचे उस समय नन्ही जान आई हुई थी। स्वामीजी को आता हुआ देखकर महाराजा घबरा गये और उसकी डोली को स्वय काधा देकर उठवा दिया। ऋषि ने यह सब कुछ दख लिया। उनका चित बडा ही क्षुब्ध हुआ –स्वामीजी ने कहा राजा सिह के समान है और वैश्याए कुतिया के समान–राजा का सम्बन्ध सिहनियो से उचित है कुतियो से नही !

राजा का सिर लज्जा से झुक गया। और उन्होन अपने सुधार का निश्चय किया । नन्ही जान को जब यह समाचार मिला तो वह तिरस्कार से जल उठी उसका क्रोध सीमा स पार हो गया।

ऋषि के प्राण हरण की साठ–गाठ होने लगी मुसलमान और चक्राकित भी इस षडयन्त्र म शामिल हो गये । अग्रेजो की वक्र दृष्टि तो स्वामी जी पर चिरकाल से ही थी उनका भी इस हत्या मे शामिल सन्देह रहित नही है।

रात मे सोते समय स्वामी जी दूध पीते थ २७ सितम्बर १८८३ की घटना हे। इन सबकी गुप्त मन्त्रणा ने रात को काल कूट विष दूध मे मिलाकर पिला दिया दूध पीने के बाद स्वामीजी के पेट म दद उठा और जी मिचलान लगा। रात म कइ बार वमन भी हुआ–किसी को न बताकर स्वम कुल्ला आदि करते रहे। उधरशूल वमन पेचिश का जोर बढने लगा। भक्त डा० सूरज मल जी का उपचार हुआ परन्तु राजदरबार की ओर से डा० अली मर्दान खा को भेजा गया शायद इसमे भी कोई रहस्य था। इस डाक्टर के उपचार से और हालत बिगडती ही गयी । इससे दुर्बलता वढी वदन मे भी छाले बढ गये। राजा का डाक्टर यही बताते रह कि स्वामी जी की दशा ठीक हो रही है। डाक्टरो की यही राय थी कि स्वामीजी को विष दिया गया।

विषदाता को भमाकर–यही कहा–तुम नही जानते कि लाकहित की कितनी भारी हानि हुई है अच्छा विधाता के विधान म ऐसा ही होना था

दयानन्द तू धन्य हो जो अपन प्राण घातक को भी क्षमा किया। राजपुत्रो को राजनीति का सही पाठ पढाना कितना महगा पडा। ऋषिवर आप महान थे–

विद्वानो मे शास्त्रार्थ द्वारा जहालन को हटाकर विवेकमय ससार को बनाने की योजना थी तो राजशक्ति सम्पन्न राजाओ को सत्य का उपदश कर–विदेशीय शासक को हटाकर अपना राज्य स्थापित करने की योजना ने प्रकाश के बजाय अज्ञानान्धकार को और अधिक विस्तार दिया

भयकर कष्ट मे भी प्रसन्न प्रभु का अनवरत ध्यान समाधिस्थ हो शरीर का त्याग–अन्तिम समय क्या कहा–

१ सब आर्य जनो को मेर पीछे खडा कर दो

२ चारो ओर क द्वारा खोल दो तिथिवार को पूछा–वेद मत्रो का सस्वर पाठ–ज्योति ओर प्रकाश के अजसस्रोत प्रभुचरणो मे मोक्ष का आनन्द लेने महाप्रयाण कर गये

स्वर्गं याता सपदि सहसा शब्दशास्त्रीय-प्रज्ञा

आविष्कर्तुं मसृण सरणि वेद–विद्या–विधानाम
यास्काचार्याऽमल–विधिदशा सम्मताना शुचीनाम।
७थ'ना वा त्रिमुनि–विहिता पद्धति सादधरित्री
स्वग याता सपदि सहसा शब्दशास्त्रीय प्रज्ञा ।।१।।

अज्ञानान्ध तमसि च घने रूढिरज्जूप्रबद्धा
मग्ना शिक्षा–विरहितमतीर्भारतीयाश्च नारी।
उदधत्तु य प्रयतनपरा शास्त्रबोधप्रवाने
हा साऽकाले त्रिदिवमयिता शब्दशास्त्रप्रवीणा ।।२।

स्त्रीशूद्रौ ना श्रुतिविधिमतौ वदमध्येतुमत्र
एव रूढि प्रथितिमकत प्राढधमध्वजाग्रया ।
नारी माया मृदुलहृदया सन्ततिप्राणमूला
तस्मात कालात श्रुनिपन्नना वञ्चिताऽभृत प्रकामम ।३ ।

उदङ्गना परमविदुषा मण्डित पण्डितेन्द
अन्याय वा अमनुत महर्षि श्रीदयानन्द एतत ।
स्त्रीजाति ता सकलजननी पूजितु श्रद्धयाऽ से
प्रास्तात वदाध्ययन विषये वदमन्त्रप्रमाणम ।४।।

अयवन्नोऽन्वसरदनिश वदसावेपाठनाय
स्वीया कन्या गुरुकुलधराधाम्नि प्राविशयच्च।
नतान्याभ्या विदितािदुषी जीवन स्व समस्तम
सस्थाप्येव गुरुकुलमिद चपयामास प्रज्ञा ५ ।

प्रज्ञादव्या सुबुधपितरौ स्वीयपुत्रान सुनिष्ठौ
आर्षग्रन्थान विविधविषयान पाठयामासतुर्वे
अम्नायज्ञा निगमविषयाऽबाध –प्रज्ञाप्रवीणा
हाऽकाले सा त्रिदिवमयित शब्दशास्त्रीयप्रज्ञा ।६।

धर्मधारा गुरुकुलधरा–धाम शाभा सुमधा
स्मार स्मार विलपति मुहु स्वाग्रजाया वियोग।
प्रद्युम्नोऽय निखिल निगम ज्ञानवानप्य धीरो
भ्राता स्मृत्व शुभगुणवती सोदरा दु खमग्न ।।७।।

ये चान्य वा व्यदधुरमिता वैदिके धम आस्थाम।
आर्या श्रद्धाऽवन्विनसुमनो राशिमप्यपयन्त्र ।
दु खाप्लावद्रवितहृदया आशु धैर्यं त्यजन्त
अर्ध्य नेत्रप्रसृतसलिलैरपयन ते विषण्णा ।८।।

जाताऽद्यैव प्रकनिविधुरा वैदिकी शारदा ऽपि
हा स्वर्याता सपवि वनिता–मण्डली मण्डयित्री।
अधाऽपुत्रीव विलपति हा । संस्कृति –भारतीया
यताया स्वस्त्वयि भवत कश्चाश्रया वाऽपप्यमीषाम। ।।६।।

पाणि–न्यादित्रिमुनिविहिता प्राच्यशाब्दप्रणाली
याना वाऽध्ययनविषये चालिताऽऽसीत त्वया या
पुराणस्था गुरुकुल धरा धाम्नि सा का श्रयेत
हाकान सनमतिरपहृता क्रूरकालेन प्रज्ञा ।।१०।।

सर्वे तावत मुनिवर महायागे–नश्चात्मविज्ञा
पदङ्ग वै महर्षिवर दयानन्दतुल्याच्यपादा ।
गार्गी घोषा प्रभृतिवनिता निर्मलघा श्रुतिज्ञा।
हा कालेनाऽप्यसमयहृतास्तत्कृतान्त धिगस्तु ।।११।।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

केवल अँगेजी में विवरण होने पर जुर्माना।

फास सरकार ने फ्रांसीसी भाषा के हितो की रक्षा के लिए अनेक कारगर कदम उठाए है। दैनिक हिन्दुस्तान २४१६६ मे प्रकाशित एक समाचार के अनुसार फ्रास मे अधिकारियो ने उत्पादो का नाम और अन्य विवरण फ्रच भाषा मे नही लिखने के कारण पहली बार ब्रिटेन की एक कम्पनी पर एक हजार फ्रक का जुर्माना किया ह। फ्रच भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए जुलाई–६४ मे लाए गए कानून के अनुसार सभी दशी–विदेशी उत्पादो के नाम आदि फ्रच मे लिखना अनिवाय हे तथा य सिर्फ विदेशी भाषा मे नही लिख जा सकत । पहली बार इस कानून को ब्रिटेन की सौदर्य प्रसाध न कपनी बाडी शाप पर लागू किया गया है अग्रेजी के आतक के विरुद्ध फास की यह कार्यवाही हमारे लिए एक सबक है

हमार यहा बहुराष्ट्रीय कपनिया या बडे ओद्योगिक प्रतिष्ठानो की बात तो छोडिये छोटे तौर पर छाटी माटी ईकाइया भी अपने उत्पादो पर अग्रेजी भाषा के लेबल लगाती है। देश की राष्ट्रभाषा की घोर अवहेलना हो रही है। संविधान के अनुच्छेद ३५१ के अनुसार हिंदी भाषा के प्रसार और विकास का दायित्व सरकार पर हे

दैर्भाग्य की बात है कि सामान्य प्रयोग मे आने वाली वस्तुऐ अर्थात पखे रेडियो घडी टेलीविजन स्कूटर फ्रिज आदि के खरीदने पर उनकी गारटी और प्रयोग सबधी जानकारी विवरणिका केवल अगेजी भाषा मे ही उपलब्ध कराइ जाती है। दवाइया पर भी हिदायते अग्रेजी मे ही लिखी होती है। आम आदमी उसे समझ पाता है या नहीं इसकी परवाह किसी को नही है

अत अनुरोध है कि सरकार पर दबाव डाला जाए कि जब तक हिदी तथा एक अन्य भारतीय भाषा मे भी उत्पादो पर पूरा विवरण न हो केवल अग्रजी मे विवरण देने वाले उनके निमाताओ को दण्डित किये जाने का कानून बनाया जाए। केवल अँग्रेजी के नामपटट लगाने वालो को भी इसी प्रकार दण्डित किया जाए

जगन्नाथ
सयोजक राजभाषा कार्य

संस्कृत भाषा का स्वरूप

डा० कृष्ण लाल, आचार्य संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

संस्कृत भारत की ही नहीं, विश्व की प्राचीनतम भाषा है। विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थों, वेदों की भाषा भी संस्कृत ही है। संस्कृत ने सभी भारतीय भाषाओं को अनुशासित किया है। सभी भारतीय भाषाओं ने न केवल संस्कृत का शब्द भण्डार लेकर अपने आपको समृद्ध किया है अपितु उनकी वाक्य रचना भी संस्कृत से ही प्रभावित है। संस्कृत भाषा के प्राचीन साहित्य ने भी सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य को प्रेरणा प्रदान की है। अपने इसी गुण के कारण संस्कृत भारतीय भाषाओं का सबसे महत्व-पूर्ण संयोजक सूत्र है। इसी कारण संस्कृत भारतीय एकता का भी प्रबल सूत्र है। सम्पूर्ण देश के मन्दिरों में संस्कृत के एक से मन्त्रों और एक सी स्तुतियों का उच्चारण किया जाता है। सर्वत्र यज्ञों और संस्कारों में एक से वैदिक मन्त्रों का उच्चारण किया जाता है।

अति प्राचीन काल से संस्कृत जिस देवनागरी लिपि में लिखी जाती है उसका मूल ब्राह्मी लिपि है। भारत की सभी भाषाओं की लिपियों का मूल यही लिपि है। यह देवनागरी लिपि अत्यन्त वैज्ञानिक है क्योंकि इसकी विशेषता यह है कि जैसा लिखा जाएगा ठीक वैसा ही उच्चारण होगा। संस्कृत में इस बात की कल्पना भी नहीं की जा सकती कि लिखा कुछ और जाए और बोला कुछ और जाए। अथवा एक ही प्रकार से लिखे गए शब्दों के दो उच्चारण हों। उदाहरण के लिए अंग्रेजी में सी एच का उच्चारण कहीं 'क' होता है और कहीं 'च' होता है। इसी प्रकार बी यू टी बट में यू का उच्चारण अ है परन्तु पी यू टी पुट में यू का उच्चारण उ है।

संस्कृत नाम से ही पता चलता है कि यह पूर्ण परिष्कृत शुद्ध भाषा है। इसका व्याकरण इतना सूक्ष्म और पूर्ण है कि वैज्ञानिकों ने इसे कम्प्यूटर के लिए सर्वोत्तम भाषा स्वीकार किया है। संस्कृत के धातुओं उपसर्गों और प्रत्ययों की यह अद्वितीय विलक्षणता है कि एक ही मूल धातु से विभिन्न उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर विविध अर्थों वाले कितने ही शब्द बनाए जा सकते हैं और उनके आधार पर सभी भारतीय भाषाओं को वैज्ञानिक, तक-नीकी, विधि सम्बन्धी तथा अन्य शास्त्र सम्बन्धी अपेक्षित पारिभाषिक शब्दा-वलियां बनाकर समृद्ध किया जा सकता है। संस्कृतनिष्ठ इन शब्दावलियों की एक विशेषता यह भी होगी कि सभी भाषाओं में इन्हें एक ही अर्थ में समान रूप से समझा जाएगा। इस प्रकार संस्कृत के माध्यम से भारत की सभी भाषाएं एक दूसरे के निकट आयेंगी। यहां यह कहना भी अनुचित न होगा कि संस्कृत सीख कर अन्य भारतीय भाषाओं को सरलता पूर्वक सीख लेना एक अनुभूत तथ्य है।

उदाहरणार्थ यदि एक कृ (करना) धातु को लिया जाए तो इसके साथ विभिन्न उपसर्ग लगाकर संस्कार, परिष्कार विकार, आकार, उपकार, अधिकार, प्रतिकार, विप्रकार, प्रकार, परिकर, उत्तर, अनुकरण, प्रसंस्करण प्रतिसंस्कार, प्रत्युपकार, प्रतिविकार इत्यादि अनेक भिन्नार्थक शब्द बनते हैं अलग-अलग प्रत्ययों के द्वारा भी बहुत से अलग २ अर्थों वाले शब्द बनते हैं, यथा क्रिया कृति, कार्य, कर्तव्य, कारण उपकरण निष्कर्ष, निष्कृति, संस्कृति, विकृति, अधिकारी, अनुकृति, अनुकरणीय, करणीय, दुष्कर इत्यादि। ये दो सूचियां केवल उदाहरणार्थ अत्यन्त संक्षिप्त हैं। इस प्रकार की पूर्ण सूचियां बनाई जायें तो एक धातु से सहस्रों शब्द विभिन्न अर्थों में बनते चले जायेंगे।

कुछ ऐसे प्रत्यय हैं जिनमें अभीष्ट भावों का संक्षेप में समेट कर व्यक्त करने की क्षमता है। सभी भारतीय भाषायें उनका प्रयोग करके उस विशे-षता से लाभान्वित हो सकती हैं। हिन्दी में 'करने की इच्छा वाला' यह भाव व्यक्त करने के लिए चार शब्दों का प्रयोग हुआ है। संस्कृत की समा-हार शक्ति से इस भाव को केवल एक शब्द 'चिकीर्षु' से अभिव्यक्त किया जा सकता है।

इसी प्रकार 'हिन्दी को जानने की इच्छा' इस भाव को संस्कृत के एक शब्द जिज्ञासा द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। संस्कृत के 'मीमांसा' शब्द को हिन्दी में 'मनन' 'चिन्तन' और 'विश्लेषण' की क्रिया द्वारा समझा जायेगा। इसी प्रकार कथाकार उपन्यासकार क्रमशः कथा को लिखने वाला और उपन्यास को लिखने वाला है। जब हम जंगम शब्द का प्रयोग करते हैं तो उसके मूल में यङ् प्रत्यय सहित गम् धातु का रूप विद्यमान होता है जिसका अर्थ है बार बार जाना अथवा निरन्तर जाना। इसी प्रकार का संस्कृत का शब्द है चंक्रमण अर्थात बार बार अतिक्रमण करना। संस्कृत का 'च्वि' प्रत्यय भी भावों को संक्षेप में प्रस्तुत करने की क्षमता प्रदान करता है। उदाहरणार्थ जब हम हिन्दी में शहरीकृत का प्रयोग करते हैं तो वहां इसी प्रत्यय के द्वारा अर्थ होता है 'जो शहर नहीं था उसे शहर बनाया गया' इसी प्रकार मानवीकृत का अर्थ है 'एक विशिष्ट मानव के स्तर तक लाया गया' व विद्युतीकरण में भी इसी प्रत्यय के द्वारा हम 'जहां बिजली नहीं थी वहां बिजली लगा दिये जाने' का भाव व्यक्त करते हैं। संस्कृत की यह समाहार शक्ति उसे उपसर्गों और विभिन्न प्रत्ययों से प्राप्त होती है। इस शक्ति को आवश्यकतानुसार आत्मसात करके भारतीय भाषाएं अद्वितीय क्षमता बढ़ा सकती हैं और संसार की समृद्ध भाषाओं में उसकी गणना हो सकती है।

इस विशेषता में समासों का भी बहुत योगदान है। उदाहरणार्थ हम निष्कंटक शब्द को लें जिसका पूर्ण भाव व्यक्त करने के लिए हिन्दी में 'कांटों से रहित अथवा बाधाओं से रहित' प्रयोग करना पड़ेगा। इसी प्रकार यथाशक्ति का अर्थ होगा 'शक्ति के अनुसार'। यथाकाल, यथासमय आदि समस्त शब्द भी इसी प्रकार हैं। जनता का आदेश कहने के स्थान पर जना-देश सगठित और संक्षिप्त शब्द है। अध्यादेश की भावना है 'सभी पूर्ववर्ती आदेशों से ऊपर आदेश।' उपचुनाव शब्द भी संस्कृत की समास शैली का अच्छा उदाहरण है, जिसका अर्थ है 'चुनाव के निकट अथवा पूर्ण चुनाव की तुलना में छोटा चुनाव'। मध्यावधि का अर्थ है 'चार पांच या छः वर्ष की अवधि के बीच में होने वाला'। हम देखते हैं कि इन उपर्युक्त और ऐसे ही अनेक शब्दों के लिए यदि संस्कृत की समास शैली का प्रयोग न किया जाए, तो उन भावों को अभिव्यक्त करने के लिए बहुत शब्दों का प्रयोग करना पड़ेगा, जिससे भाषा शिथिल हो जायेगी और उसकी वैज्ञा-निकता भी कम हो जायेगी।

जिन विषयों में 'अन्तरिक्ष में होने वाले या अंतरिक्ष में पाये जाने वाले अथवा जल या वायु में पाये जाने वाले' जैसे भावों को बार-बार अभिव्यक्त करना हो तो वहां अन्तरिक्षीय, जलीय वायव्य या वायवी शब्दों का प्रयोग सुगठित न होने के कारण शिथिलता उत्पन्न करता है ऐसी स्थिति में पाठक स्वयं सोचता है कि यदि इन शब्द समूहों के स्थान पर उनके अर्थों को प्रकट करने वाला कोई एक शब्द होता तो अधिक सुगमता होती और विषय को समझने में समय भी कम लगता।

संस्कृत भाषा की यह विशेषता है कि २६०० वर्ष पूर्व महर्षि पाणिनी ने संस्कृत के वैदिक और लौकिक दोनों प्रकार के प्रयोगों को नियमों में बांधकर समस्त भाषा को निश्चितता और वैज्ञानिकता प्रदान की। यही कारण है कि संस्कृत को सीखना सुविधाजनक है। जहां अंग्रेजी में हमारे बच्चे स्पैलिंग रटते रटते दुखी हो जाते हैं और अमरीकी, कैम्ब्रिज तथा आक्सफोर्ड के कम से कम तीन प्रकार के उच्चारण की दुविधा बनी रहती हैं, वहां संस्कृत का पाणिनीय व्याकरण पढ़कर उसमें धातुओं से सहस्रों शब्द बनाने और समझने की नहीं, अपितु उनके मूल में पहुंचकर भावों को मूल रूप में भावों को समझने की क्षमता उत्पन्न होती है। संस्कृत सीखना इसलिए भी कष्टकर नहीं है क्योंकि इसमें वाक्य में शब्दों की स्थिति अथवा क्रम से उनका अर्थ प्रभावित नहीं होता। कारण यह है कि प्रत्येक शब्द विभक्ति प्रत्यय के द्वारा अपने आप में पूर्ण होता है और अपना स्वतन्त्र अर्थ व्यक्त करता है। 'रामे भक्ति अस्ति' कहें अथवा 'भक्ति रामे अस्ति' कहें अथवा 'अस्ति भक्ति रामे' कहें—तीनों स्थितियों में अर्थ एक ही होगा, 'राम में भक्ति' है। छात्र को इससे बहुत सुविधा हो जाती है क्योंकि उसे वाक्य-विन्यास के नियम नहीं समझने पड़ते।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

भारत की छद्म धर्म निरपेक्षता (२)

—कैलाश भूषण विरल

१२ संविधान के अनुच्छेद ४४ का निर्देश है कि "राज्य नागरिकों के लिये एक सामान्य व्यवहार संहिता प्राप्त कराने का प्रयास करेगा।" इस अनुच्छेद की आड़ में जवाहर लाल ने एक वर्ष में हिन्दू विवाह अधिनियम १९५५, हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम, १९५६ हिन्दू अवयस्क संरक्षता अधिनियम, १९५६ और हिन्दू दत्तक ग्रहण और पोषण अधिनियम १९५६ पारित करके शास्त्र और स्मृति सम्मत हिन्दू धर्म को विकृत कर दिया। परन्तु शरीयत कानून को छूने का उन्हें कभी साहस नहीं हुआ। शरियत कानून की वजह से हिन्दू नारी का उत्पीडन हो रहा है। उसका पति उसे छोडकर, अपना धर्म परिवर्तन कर, झट दूसरा विवाह कर लेता है। मुसलमानों मे बहु-विवाह का प्रचलन है। जितेन्द्र ने अपनी पत्नी मीना को छोडकर, अपनी प्रेयसी सुनीता से दूसरा विवाह कर लिया। जितेन्द्र 'अब्दुल्ला' हो गए और सुनीता 'फातिमा'। सर्वोच्च न्यायालय ने मीना की पुकार सुनी और केवल दूसरा विवाह करने के लिए धर्म परिवर्तन की निंदा की। न्यायालय ने शासन को आदेश दिया कि जितेन्द्र का दण्ड संहिता की धारा ४९४ के अन्तर्गत चालान किया जाए। साथ में न्यायालय ने खेद प्रकट किया कि ४५ वर्ष से शासन 'राज्य के नीति के निदेशक तत्वों' की अवहेलना कर रहा है। आखिरकार "एक सामान्य व्यवहार संहिता" देश में कब लागू की जाएगी? देखना है कि सरकार सर्वोच्च न्यायालय की अवमानना करती है या संविधान के निर्देश का पालन करती है।

१३ पाकिस्तान के वैतनिक आतंकवादियों ने अपने धर्म-भाईयो की चरार ए-शरीफ मे स्थित दरगाह को फूंककर रख दिया। चरार ए-शरीफ के पुनर्निर्माण के लिए भारत सरकार ने १५ करोड रुपए व्यय किए हैं।

इन्ही पाकिस्तानी आतंकवादियो ने कश्मीर में सैंकड़ों हिन्दू-मन्दिर तोड तोडकर विध्वंस कर दिए। परन्तु उनके पुनर्निर्माण पर भारत सरकार एक पैसा भी खर्च करने को तैयार नहीं। १९९० से लेकर आज तक दो लाख ५० हजार हिन्दू कश्मीर की घाटी से पलायन कर जम्मू, दिल्ली व अन्य शहरों मे शरणार्थी बनने को विवश हुए हैं। कहा जाता है कि अब केवल ३०० या ४०० हिन्दू परिवार ही कश्मीर मे बचे हैं। भारत का नागरिक अपने ही देश मे शरणार्थी हो जाए, यह कैसी विडम्बना है। इन शरणार्थियों के पुनर्वास का उत्तरदायित्व भारत सरकार लेने को तैयार नही।

१४ मुसलमानों ने मुहम्मद गोरी से लेकर औरंगजेब तक ७०० वर्ष हिन्दुओ पर नशंस शासन किया। इन ७०० वर्षों मे मुस्लिम शासको ने ३००० हिन्दू मन्दिर तोड़े। इनमें से ३०० मन्दिर ऐसे हैं जिनके मलबे से उसी स्थान पर मस्जिदे बनवाई गई। इन तीन सौ मस्जिदो मे से, अयोध्या की बाबरी मस्जिद एक है। सन १५२८ ई० मे बाबर के सिपाहसालार मीरबाकी ने अयोध्या मे एक हिन्दू मन्दिर को विध्वंस करके, उसके मलबे से तथाकथित बाबरी-मस्जिद का निर्माण कराया। इस ढांचे मे मिम्बर का स्थान नही था, मिनार नहीं थी, वजू करने की भी कोई व्यवस्था नही थी। पिछले ६० साल से अधिक समय से वहा पर नमाज नही पढी गई थी। आश्चर्य की बात है फिर भी उस ढांचे को हमारे नेताओं ने 'मस्जिद' की संज्ञा दे रखी थी। इस ढांचे के कारण इन चार सौ वर्षो मे ७७ लड़ाईया हो चुकी हैं। और लाखो लोग शहीद हो चुके हैं। मुसलमानो को चाहिए था कि अपने पूर्वजों की करनी पर पश्चाताप करते और उदारतापूर्वक हिन्दुओ को खुशी से राम मन्दिर का परिसर लौटा देते जिस पर बाबर ने जबरदस्ती चार सौ वर्ष पूर्व कब्जा कर लिया था। इससे आपसी तनाव समाप्त हो जाता और पारस्परिक सौहार्द का वातावरण बनता। पर ऐसा नही हुआ। उल्टा सुन्नी वक्फ बोर्ड ने फैजाबाद जिला न्यायाधीश के कोर्ट मे सिविल सूट संख्या १२ सन १९६१ दायर कर दिया। इस ३० वर्ष से चले आ रहे विवाद पर निर्णय देने का किसी न्यायाधीश को साहस नहीं हुआ। मनुष्य के धैर्य की सीमा होती है।

६ दिसम्बर १९९२ को कारसेवकों का धैर्य टूट गया और उन्होंने विवादित ढांचे को ध्वस्त कर दिया। एक जीर्ण-शीर्ण ढांचे के ढह जाने से केन्द्रीय सरकार हिल गई। राष्ट्रीय संकट की घोषणा कर दी गई। उत्तर प्रदेश सरकार बरखास्त कर दी गई। साथ मे तीन और सरकार बरखास्त कर दी गई। इनका दोष केवल इतना ही था कि उनके मुख्य मन्त्री अपने को हिन्दू कहने मे गर्व का अनुभव करते थे।

वाह रे भारत का गणतन्त्र और वाह रे भारत की धर्म निरपेक्षता। राष्ट्र की अस्मिता के प्रतीक महापुरुष श्री रामचन्द्र जी के अनुयायियो को अपने इष्टदेव की जन्मस्थली पर एक भव्य मन्दिर बनाने का भी अधिकार नहीं। जन मानस की चेतना को सत्तारूढ़ पार्टी कब तक दबाएगी, यह समय ही बताएगा।

> जब किसी जाति का अहम् चोट खाता है
> पावक प्रचण्ड होकर बाहर आता है।
> यह वही चोट खाए स्वदेश का बल है,
> आहत भुजंग है, सुलगा हुआ अनल है।।

आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी द्वारा
रामनवमी हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी द्वारा रामनवमी का पावन पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ प्रातः ११ बजे से स्व० श्री शान्तिप्रकाश 'प्रेम' स्मृति भवन स्कू ली नगर मे सम्पन्न हुआ। प्रातः ११ बजे से यज्ञ कार्यक्रम शुरू हुआ तत्पश्चात यज्ञ प्रार्थना सद्बुद्धि की प्रार्थना संगठन सूक्त तथा आर्य समाज के दस नियमो का पाठ किया गया।

तत्पश्चात भजनोपदेशक श्री बच्चीराम जी द्वारा एक भजन यज्ञ हुआ कार्यक्रम के पश्चात समाज के प्रधान श्री दौलतरामजी निर्मल की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन किया गया। जिसमे निम्न वक्ताओ द्वारा पुरुषोत्तम भगवान रामचन्द्र के जीवन पर प्रकाश डाला गया—श्री चन्द्रभजी प्रधान भू०पू० आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी, श्री बालमसिंह जी कोषाध्यक्ष भू० पू० आ० स० सा० आदि पंचपुरी, श्री सुशीलचन्द अध्यापक, श्री प्रदीपकुमार अध्यापक एवं कोषाध्यक्ष आ० स० सा० आदि पंचपुरी, श्री योगेश प्रसाद अध्यापक, श्री ओमप्रकाश अध्यापक तथा श्री रमेशचन्द्र प्रेमी उपमन्त्री आ० स० सा० आदि पंचपुरी द्वारा भगवान पुरुषोत्तम राम के जीवन पर प्रकाश डालते हुए सबने यही कहा कि हमे भगवान राम के बताए मार्ग पर ही चलना चाहिए। तभी हमारा जीवन सार्थक है।

समाज के मन्त्री गंगाप्रसाद कोहली द्वारा सभा मंच का संचालन किया गया तथा वक्ताओं के प्रवचनो पर टिप्पणी करते हुए कहा कि भगवान पुरुषोत्तम राम सर्वहितकारी न्यायकारी तथा दीनो के नाथ थे प्रभु के प्रतिनिधि के रूप मे वे पृथ्वी पर आए और एक उत्कृष्ट उदाहरण मानव मात्र के सामने प्रस्तुत करके पुनः प्रभु मे विलीन हो गए। सभा मे सहयोग हेतु सबका धन्यवाद किया।

अन्त में समाज के प्रधान तथा सभाध्यक्ष श्री दौलतराम निर्मल द्वारा राम के बताए मार्ग पर चलने हेतु सब श्रोताओं से निवेदन किया गया। शान्तिपाठ के साथ सभा विसर्जन हुआ।

मन्त्री, आ० स० सावली

वैदिक आश्रम व्यवस्था का तात्विक चिन्तन

—मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

वैदिक मान्यताओ के अनुसार मनुष्य जीवन को कोई आकस्मिक घटना नहीं माना है। इसी मान्यता के आधार पर डार्विन का विकासवाद वैज्ञानिक सिद्ध हो गया है। इन विकास वादियो का अब डार्विन के प्रति मोह भग हो गया है। इसी प्रकार द्वन्द्वात्मक-संघर्ष की मान्यता भी अब कार्लमार्क्स का साथ छोड़ने लगी है। डार्विन का विकासवाद तथा कार्ल मार्क्स के द्वन्द्वात्मक संघर्षवाद की चर्चा यहा इस लिए की गई है कि वर्तमान वहत्तर यूरोप एव पश्चिमी जगत के वैज्ञानिक इन दोनों विचार धाराओ से प्रभावित रहे हैं। इतना ही नही उनकी अनेक मान्यताए इन्ही दो विचारधाराओ पर रही हैं।

इन दोनो भौतिकवादी विचारधाराओ के अतिरिक्त विश्व की यह प्राचीन एव आदि वैदिक धारा मानव जीवन' का उद्देश्य भौतिक और आध्यात्मिक दर्शन पर आधारित है। पश्चिमी जगत का यह दुर्भाग्य ही रहा है कि इतना विकास और बौद्धिक जागृति के पश्चात् भी इन भौतिक वादियो ने अभी तक 'आत्मा की सत्ता को स्वीकार नही किया। यही कारण है ये बुद्धिजीवी अभी भी मनुष्य को 'हैण्डस ही मानते रहे और हैड' की उपेक्षा करते रहे।

हमारे वैदिक ऋषियो ने आत्मा' को स्वीकार करते हुए मानव जीवन को सद्देश्य बनाया। ऋषियो की मान्यताओ के अनुसार अपने जीवन के पूर्व कर्मों का फल भोगने हेतु कर्म-फलानुसार मनुष्य को वर्तमान जीवन प्राप्त होता है। इसी वर्तमान जीवन मे वह निरन्तर कर्म करते हुए अपने नवगत नवीन) या पुनर्जन्म की भूमिका तैयार करता है। हमारी सम्मति मे हमारे मार्क्सवादी तथा डार्विन के अनुयायी इन गम्भीर दार्शनिक चिन्तन से कोसों दूर हैं। उनकी इस दयनीय स्थिति पर केवल 'दया' ही आती है। भगवान इन्हें सद्बुद्धि प्रदान करे।

इसी श्रेष्ठतम चिन्तन धारा में वर्णाश्रम सामाजिक व्यवस्था स्वीकार की गई है। वैदिक संस्कृति मे कोई जीवन ही सोद्देश्य जीवन प्रारम्भ करता है। इसके लिए आयु के क्रमिक विकास के अनुसार 'आश्रम' की सुन्दरतम व्यवस्था की गई है। ध्यान पूर्वक विचार करने पर स्पष्ट है कि मनुष्य के जीवन को सार्थक तथा सफल करने के लिए उसे आजीवन श्रम' रत ही रहना है। अजगर की भाति केवल भूमि पर भार रूप पड़े रहना आलसी जीवन को 'जीवन' नही कहा गया है। हमारे यहा तो जीव को गर्भ में बुलाने से पहिले से 'संस्कार' योजना है। गर्भाधान संस्कार इसी योजना की प्रथम एव अनिवार्य कड़ी है। यही कारण है कि युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने 'संस्कार-विधि' मे प्रथम संस्कार गर्भाधान संस्कार को स्थान दिया है। दयानन्द मनुष्य को केवल मांस का लोथड़ा नहीं मानते थे। किन्तु उस लोथड़े में 'आत्मा' की विद्यमानता को स्वीकार करते हुए उसे एक श्रेष्ठ 'जीवात्मा' बनाना चाहते थे। संस्कार वह एक ऐसी वैज्ञानिक प्रक्रिया प्रयोग है जो एक जीवित शरीर, मन, चित्त बुद्धि तथा आत्मा को सुसंस्कारित कर समाजोपयोगी बनाता है।

प्रत्येक विज्ञान की अपनी मौलिक शब्दावली होती है। आर्यसंस्कृति के इस सामाजिक विज्ञान मे जीवन के प्रथम चतुर्थांश (०-२५) को ब्रह्मचर्याश्रम अर्थात् ब्रह्म नाम ज्ञान, वीर्य एव शक्ति है। पूर्ण परिपक्वावस्था तक पहुचने की कालावधि इस ब्रह्मचर्याश्रम मे रहकर शारीरिक मानसिक एव बौद्धिक विकास ही सर्वतो मुखी है। जो लोग ब्रह्मचर्य का उपहास करते है, वे मानो अपने जीवन का स्वय ही उपहास कर रहे होते हैं। यद्यपि शारीरिक विकास एक प्राकृतिक क्रिया है, किन्तु शरीर मे विद्यमान मन चित्त, बुद्धि तथा आत्मा का विकास करना यह एक नैमेत्तिक प्रक्रिया है। इसकी उपेक्षा नही होती है।

शरीर के पूर्ण परिपक्व हो जाने के पश्चात व्यक्ति अपनी जीविका हेतु समाज मे प्रविष्ट होता है। इस जीविका वृत्ति के द्वारा वह अपना वैयक्तिक जीवन के साथ पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एव वैश्विक (ग्लोबल) दायित्वो को स्वीकार करता है। हमारी भाषा मे हम इस आश्रम का गृहस्थम' कहते हैं। चारों आश्रमो मे से यही वह आश्रम है जिसमे ब्रह्मचर्याश्रम, वानप्रस्थाश्रम तथा सन्यासाश्रम रूपी नदिया इसी आश्रम रूपी विशाल समुद्र मे विलीन होती है। कायर, हतोत्साहित, निराश बीमार तथा आजीविका रहित व्यक्ति को इस आश्रम मे प्रविष्ट होने का अधिकार ही नही है। अन्यथा ऐसे अकर्मण्य एव उद्देश्य रहित व्यक्ति समाज पर भार बनकर उसका विकास ही अवरुद्ध कर देंगे। गृहस्थाश्रम प्रकरण अत्यधिक विशाल है, उसकी महत्ता उपयोग आदि पर एक स्वतन्त्र लेख की अपेक्षा है। यहा केवल इतना ही लिखना अभिष्ठ कि सन्तानोत्पत्ति एक मनोरजन पूर्ण कार्य नही है, अपितु यह महान आत्माओ को आमन्त्रित कर स्वय के साथ विश्वकल्याण करने वाला एक महान पुत्रेष्टि यज्ञ है। इस महान कार्य मे पति-पत्नि का स्वस्थ सुसंस्कारी दायित्व तथा रक्षा जैसे महान कार्य सम्पन्न करने हैं। इसी गृहस्थाश्रम मे पचमहायज्ञों के द्वारा सामाजिक दायित्व के साथ पशु पक्षी पतगे एव ज्ञात-अज्ञात जीवो की रक्षा एव सेवा का उत्तर दायित्व है।

जीवन के उत्तरार्द्ध मे दो आश्रमों मे वानप्रस्थ एव सन्यास आश्रम और भी अधिक महत्वपूर्ण है। वानप्रस्थ का आधुनिक परिवेश मे सादा सा यही अर्थ है कि ५०-६० वर्ष की आयु प्राप्त कर पहिले अपने परिवार तत्पश्चात समाज को अपने पारिवारिक एव सामाजिक अनुभवो का वर्तमान समाज को लाभ पहुचाना। अब वह समय एव परिवेश नही है कि व्यक्ति वन मे प्रस्थित हो जाए। अब वन रहे कहा हैं? हा, वानप्रस्थ-अवस्था में अपनी इच्छाओ तीनों एषणाओ को त्याग कर अपनी शक्ति और अनुभवो को समाज राष्ट्र तथा विश्व मानवता के हित के लिए समर्पित कर देना ही वास्तविक वानप्रस्थ है। जीवन भर भोगो मे पड़े रहना न तो मनुष्य जीवन का उद्देश्य है और बुद्धिमान मनुष्य को ऐसा जीवन नही व्यतीत करना चाहिए। महर्षि दयानन्द के निर्देश के अनुसार जब तक हृदय से सच्चा वैराग्य उत्पन्न न हो जाए तब तक व्यक्ति वानप्रस्थ मे प्रवेश न करे। अन्यथा पहले ही निकम्मे साधुओ की भरमार है और फिर यदि घर से निराश्रित निष्कासित तथा उपेक्षित बूढे इनमे मिल जावेंगे, तो समाज व्यवस्था का कचूमर निकल जाएगा। हा, यदि एक बार वानप्रस्थ स्वीकार कर लिया है, तो फिर गृहस्थाश्रम मे पुन जाने का पाप कभी भी नहीं करना चाहिए। ऐसे लोगो को चाहे वे कितने ही धनाढ्य अथवा विद्वान हो, ऐसे चचल वृत्ति के लोगो को आश्रम-परिवर्तन करना ही नहीं चाहिए। पिछले दिनो इन पक्तियो का लेखक उत्तर भारत के पर्यटन पर था। हरिद्वार मे गुरुकुल कागड़ी में कुछ समय व्यतीत कर पुनः प्रस्थान

(शेष पृष्ठ ८ पर)

संस्कृत भाषा

(पृष्ठ ५ का शेष)

यह संस्कृत भाषा के स्वरूप का दिग्दर्शन मात्र है। संस्कृत भारत की अमूल्य धरोहर है। यदि हमारी प्रादेशिक भाषाए ज्ञान विज्ञान के किसी भी क्षेत्र में अपने आपको प्रतिष्ठापित करना चाहती हैं और संसार की किसी भाषा से प्रतिस्पर्धा में आगे निकलना चाहती है तो संस्कृत जैसी उदात्त पय पायिनी मां के रहते उन्हें चिन्ता की कोई आवश्यकता नहीं। संस्कृत मुक्तहस्त से अपने अक्षय भण्डार से उन्हें समृद्ध बनायेगी। संस्कृत की समान शब्दावली से सभी प्रादेशिक भाषायें एक दूसरे के निकट आवेंगी और भारतीय एकता सुदृढ़ होगी।

इसे दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि संस्कृत की रक्षा के लिये सर्वोच्च न्यायालय की शरण लेना पड़ा। उसके आदेश के पश्चात और केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा त्रिभाषा सूत्र में संस्कृत को सम्मिलित किये जाने के पश्चात भी राज्य सरकारें तथा नवयुग विद्यालय संस्कृत सहित त्रिभाषा सूत्र को लागू नहीं कर रहे है। वस्तुतः हमारी सम्पूर्ण शिक्षा-पद्धति में अंग्रेजी की अनिवार्यता सभी भारतीय भाषाओ के विकास के लिये बाधक बनी हुई है।

वैदिक आश्रम व्यवस्था

(पृष्ठ ७ का शेष)

करने की सोच रहा था। ग्रीष्म ऋतु का समय था। गुरुकुल के परिसर से बाहर निकलते ही एक पुलिया पर एक वृद्ध सज्जन बैठे थे। उनसे नमस्ते की और अभिवादन स्वीकार किया। उन वृद्ध महाशय की आंखो से सुबह-सुबह आंसु देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। बहुत अनुग्रह करने पर उन्होंने बताया वे एक निवृत्त अभियन्ता हैं। एक ही पुत्र है, किन्तु बहू ने उन्हें भगा दिया। वे एक वानप्रस्थाश्रम (नाम प्रकट उचित नही) में आ गये। पोते की याद आई तो पुन अपने घर दबकी चले गए। किन्तु बहूरानी ने इस बार चप्पलो से प्रताड़ित कर घर से निष्कासित कर दिया। पुत्र के विवाह के पूर्व ही पत्नी का स्वर्गवास हो गया था। वे पुन वहां से उसी 'आश्रम' में आ गये। आंसु बहने का कारण उन्हें अपने पोते की बड़ी याद आ रही थी। पर क्या करें—बहूरानी से भयभीत होने से अब घर जाना नही चाहते। यह है एक कच्चे वानप्रस्थ का कच्चा चिट्ठा। मध्य प्रदेश क्षेत्र मे एक कथित वानप्रस्थी है, वे अपने भक्तो के लड़के-लड़कियो के विवाह के लिए योग्य वर और वधु ढूंढते फिरते हैं। असफल होने पर भाग्य को दोष देते नही थकते।

हमने ऊपर दो कथित वानप्रस्थियो के चित्र प्रस्तुत किए। इसलिए गुरुवर दयानन्द ने ठीक ही कहा है कि जब तक हृदय से राग, द्वेष तथा सच्चा वैराग्य के भाव उत्पन्न न हो अपना घर मत छोड़ो। अन्यथा प्लेग के चूहे के समान अपना घर तथा वानप्रस्थ आश्रम को भी दुर्गन्धित कर दोगे। अच्छा है कि अपने ही घर मे पड़े रहो और कर्म फल भोगो। संस्कार विधि के वानप्रस्थ प्रकरण मे महर्षि दयानन्द ने 'वानप्रस्थ' की जो उच्चतम भूमिका बांधी है तथा उसके उच्च आदर्श का प्रतिपादन किया है, यदि उसके अनुरूप ढाल सको तो ही वानप्रस्थ मे प्रवेश करो। वानप्रस्थ जीवन के अन्तिम पड़ाव का वह दृढ़ पत्थर है। जिसके द्वारा मनुष्य का भूत और भविष्य जाना जा सकता है।

अन्त मे 'सन्यासाश्रम' की अन्तिम वेदी को सादर प्रणाम है। त्यागमय जीवन तथा जीवन को एक 'न्यासी' मानकर जो वीतराग भावना से इस अन्तिम एवं श्रेष्ठतम आश्रम मे प्रवेश करते है उनका जीवन धन्य है। यह ठीक है कि हर सन्यासी स्वामी स्वतन्त्रता नन्द और आनन्द स्वामी नही बन सकता, किन्तु उनके गुणों का अनुगमन तो कर सकता है। पांच दशक पूर्व हमारे गृहनगर मे एक युवा सन्यासी आर्य समाज में आकर ठहरे। नया नया जोश था सिर मुंडा कर गेरुए वस्त्र पहिन लिये। डील-डोल से सुन्दर, हृष्ट-पुष्ट एवं विद्वान सन्यासी का कौन व्यक्ति सम्मान नही करेगा? अल्प समय मे ही वे नगर मे बहुत लोकप्रिय हो गए। किन्तु उन्होने वही भूल की जिसकी ओर महर्षि दयानन्द ने संस्कार-विधि के सन्यास आश्रम की भूमिका मे संकेत किया है। हृदय से वीतराग एवं वैराग्य नही हुआ था, केवल शरीर से सन्यासी बने थे। यह लिखते हुए अत्यन्त दुःख भरा क्षोभ होता है कि युवक युवक सन्यासी एक आर्य परिवार की सुन्दर कन्या के मोह मे फंस कर भ्रष्ट हो गया और उसे उसी कन्या से विवाह कर गृहस्थ बसाने के लिए विवश कर दिया गया। यह है स्वामी दयानन्द के आदेशों को हृदयंगम न करने का कुपरिणाम थे

हम ऐसे सद्गृहस्थो का हृदय से अभिनन्दन करते है जो गृहस्थ होते हुए भी वानप्रस्थियो व सन्यासियो से श्रेष्ठ हैं, जो अपनी शक्ति और सामर्थ्य को लेकर तन-मन-धन से निःस्वार्थ भावनाओ से आर्य समाज की बढ़िया सेवा कर रहे है। ऐसे सद्गृहस्थ धन्य हैं, उन्हें बारम्बार प्रणाम।

इस प्रकार हमारे ऋषि-मुनियो के मानव जीवन का नक्शा (चार्ट) आश्रम वर्ण पर अन्योन्याश्रित भाव से रचा। जो इस मार्ग पर चला, उसका उद्धार हो गया और जिसने धोखा दिया उसका सर्वनाश हो गया। ऐसे छद्म वेशियो से भगवान आर्यसमाज की रक्षा करे।

पता . 'सुकिरण' ब-१३ सुदामा नगर
इन्दौर (म० प्र०)

(पृष्ठ ४ का शेष)

स्वर्ग यात्रा . . . .

पाणि न्यादित्रिमुनिविहिता प्राच्यशाब्दप्रणाली
कन्याना वा ध्ययनाविष्य चालिता सीत त्वया या।
वाराणस्या गुरुकुल धरा धाम्नि सा का श्रयेत
हाकाले सन्मतिरपहृता क्रूरकालेन प्रज्ञा ।।१०।।

सर्वे तावत मुनिवर महायोगि नश्चात्मविज्ञा
वेदज्ञा वै ऋषिवर दयानन्दतुल्याचार्यपादा।
गार्गी घोषा प्रभृतिवनिता निर्मलाघा श्रुतिज्ञा।
हा कालेना प्यसमयहृतास्तकृतान्त धिगस्तु ।।११।

आबाल वृद्ध कृश कोमल गात्रयष्टीन
वीराग्रगण्यमहनीय यश प्रशस्तीन।
दीनान जनाश्च सबलानबलाश्च नारी
त्व वै कृतान्त हरसे करुणा कुनस्ते ।।१२।।

श्रद्धाञ्जलि दधदिम खलु कामयेऽहम।
दधात प्रभू शुभगति स्वरितात्मने ते।
त्वद विप्रलम्भ–विकलास्तनया कुलस्य
धेय कथ प्रियजनास्तव सलभरेन ।।१३।।

श्री कमलाप्रसादाषप्रणाली चाल्नाय वै।
हरदेव्या त्वया मात्रा सहैव परिपूरितम ।।१४ ।

लक्ष्य विचक्षण दावे प्रज्ञे बाला–प्रशिक्षणे।
ह्वारमुपघाटित। श्रौतम ऋषयोनेन तर्पिता ।।१५।।

मन्य त्वमपि तृप्तैव प्रज्ञावद विलक्षण।
गत स्वर्गमकाले न महदुःखमेद परम ।

शोकसन्तप्तहृदय
आचाय विशुद्धानन्द मिश्र वेदमन्दिरम कूचापाडा बदायूँ

आर्यवीरो जागो

वेद की ज्योति जलती रहे

आचार्य आर्यनरश वैदिक प्रवक्ता उपप्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल– दिल्ली तथा सयाजक उदगीथ स्थली हिमाचल द्वारा माच तथा अप्रैल मास मे वैदिक सिद्धातो के अनुसार राष्ट्र तथा समाज के निर्माण हतु देश के कोने कोने मे लोगो के प्रवचनो साधना शिविरो व यज्ञ एव शकासमाधान के द्वारा प्रेरणा दी।

गत दिनो जम्मू–कश्मीर के अखनूर जम्मू कठुआ व रिहडी मे प्रचार किया।

पजाब के पठानकोट मुकेरिया अमृतसर लुधियाना आदि नगरो मे प्रेरणा दी

हिमाचल के १६ एव उत्तर प्रदेश के देहरादून रूडकी ऋषिकेश व्यास आश्रम मोहन आश्रम हरि की पौडी योगधाम व गुरुकल कागडी मे प्रवचन दिये। हरियाणा के पिज्जोर बल्लभगढ व दिल्ली के अनेक स्थानो पर प्रचार हुआ। गुजरात के आर्यवन विकास गाधी नगर आदि स्थानो मे प्रभु शक्ति व देश भक्ति पर प्रवचन हुए।

बदी का बीज बो कर, नेकी की आशा मत कर।

देशान्तर से समाचार

होलैंड में २ गोरे आर्य पंडित बने

सबको विदित हो कि होलैड मे आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत विभिन्न सस्थाये अनवरत रूप से वैदिकधर्म प्रचार मे सलग्न है इस वर्ष १६६६ मे आर्यसमाज के प्रचार क्षेत्र मे उत्साह जनक प्रगति हुई है। कुछ निष्ठावान ऋषि–भक्तो के सत्प्रयासो से अब आर्यसमाज स्थानीय गोरे लोगो मे फैलने लगा हैं पिछले दिनो उपर्युक्त सस्थाओ मे जो जो कार्यक्रम हुये उनका सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

अनाथ बच्चो का सहायक समाज

रोटरडम मे १६ फरवरी को श्री न. शुभधन की पत्नी श्रीमति सुमित्रादेवी शुभध का ६२वा जन्मदिवस मनाया गया जिसमे अमस्टरडम से उनके भ्राता प सुन्दरप्रसाद शुभधन एव डा महेन्द्रस्वरूप व प. महादेव आदि सम्मिलित हुये। यज्ञ–भजन–उपदेशो का परिवार के बच्चो तथा युवक–युवतियो पर अच्छा असर पडा। सबने माताजी को हार्दिक शुभकामनाये दीं व मिलकर भोजन किया। इस सस्था ने २ मार्च को होलिका–पर्व एव दयानद जन्मदिवस का भी आयोजन था जिसे मैने सम्पन्न कराया। आज प. शुभधन जी के भी जन्मदिवस था और इस अवसर पर उन्होने एक प्रभु–कीर्तन नामक लघु–पुस्तिका का भक्ति–भावना के प्रचारार्थ प्रकाशन व वितरण किया मैने उत्तिष्ठ बृहती भव उत्तिष्ठ ध्रुवा त्वम्। मित्रैता उरवा न परिददामि अभित्यै एष मा भेदि यह तथा अष्टाचक्रा नवद्वारा इन दो मत्रो का उपदश किया। महावामदेव्यगान के द्वारा कार्यक्रम सु–सम्पन्न हुआ। श्री प जी की आयु ६५ वर्ष की हुई। यज्ञ मे आय सब लोगो ने शुभ कामनाये दी। तदुपरान्त उन्होने बडी श्रद्धा से सवा पूर्वक सबका भोजन कराया।

सत्य सनातन वैदिकप्रकाश अमस्टरडम

सस्था द्वारा १८ फरवरी को बोधरात्रि का पर्व मनाया गया। प. देवनारायण शुभधनजी ने यज्ञ कराया तथा प्रवचन–भजनोपदश मेने (ओमप्रकाश सामवेदी ने) किया। समाज के प विद्यापति ने अत्यन्त मधुर कण्ठ से अय स्वामी दयानद तुने कर दिया कमाल गीत गाया। प्रेरणापूर्ण व ओजस्वी आवाज मे ऋषि–महिमा विषयक गीत– कव्वालियो–गजलो–छन्दो के गायन का लोगो पर अच्छा असर रहा।

दो गोरे आर्यसमाज के पडित बने मार्च १६६६ का सस्था मे एक अभूतपूर्व आयोजन था जिसमे एक होलेड के गोरे ने यज्ञ एव प्रवचन किया जिसका नाम श्री लेनियोर था। इसको मत्रो का प्रशिक्षण श्री शिव कुशल ने दिया। अपने प्रवचन मे इन महानुभाव ने अपना जीवन आर्यसमाज के प्रचारार्थ समर्पित कर देने की इच्छा व्यक्त की। इस अवसर पर अनेक आर्य प्रचारको के अतिरिक्त गोरे पादरी भी उपस्थित थे जिन्होने कार्यक्रम के अन्त मे अपने उदगार व्यक्त किये कि अभी तक मैने हिन्दू धर्म के बारे मे जो कुछ भी पढा व सुना था तथा हिन्दु धर्म के प्रति मेरी जो भावना थी उससे बिल्कुल ही भिन्न बाते आज प्रथम बार मै यहा सुन रहा हूँ जो कि मेरे लिये रुचि का विषय है अन्य विद्वानो मे श्री नन्दकिसुन मारहे तथा एक अन्य गोरे विद्वान जिन्होने आर्यसमाज की दीक्षा लेकर अपना नाम प. देवेन्द्र शर्मा रखा है इन्होने भी अपने विचार व्यक्त किये। श्री शिव कुशल श्री रमेश अवतार एव पडिता बबीता महावीर ने भी क्रमश एक–२ भजन सुनाया। कार्यक्रम का सचालन सस्था के प्रधान प सुन्दरप्रसाद जी शुभधन कर रहे थ। उपर्युक्त श्री लेनियोर का यज्ञोपवीत–सस्कार दिनाक १६ माच को मेरे (ओमप्रकाश सामवेदी) द्वारा किया गया इस मे अग्रज श्री विजयप्रकाश शास्त्री भी लेवडन नगर से आये थे। यह सस्कार विधिवत सम्पन्न हआ। रोटरडम से पधार प. वृजलाल वक्तावर ने एक गीत गाया। अन्त मे मैने अग्रेजी भाषा मे उनको शुभकामनाये तथा आशीर्वाद भेट की और सब पडितो ने पुष्पवर्षा व मन्त्रोच्चार कर नव पडित का सम्मान किया। मैने लिखित सदश भेट किया श्री लेनियोर का नाम बदलकर नया नाम प सत्यानन्द आय रखा। इन्होने २० वर्ष हिन्दू ग्रन्थो का स्वाध्याय किया अब ये हिन्दी–सस्कृत को सीख रहे है। सस्था वैदिकप्रकाश का यह विशेष कार्यक्रम था जो कि १६–१७ इन दो दिन तक चला। दूसरे दिवस प विजयप्रकाश शास्त्री योगाचार्य ने योगासनो की व्याख्या की तथा बताया कि किन–किन बीमारियो मे कौन–कोन से आसन किस–किस प्रकार से करना चाहिये। मैने भी भजनोपदेश द्वारा मानव जीवन की सफलता सम्बन्धी कुछ मन्त्र प्रस्तुत किये।

(शेष अगले पृष्ठ पर

(पिछले पृष्ठ का शेष)

होलैंड में दो गोरे ....

विकास आर्गनाईजेशन अमस्टरडम द्वारा दिनाक १७ मार्च को ही साय ४ बजे से ७ बजे तक एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इसमे निम्न ३ विषयो क्रमश १–वर्ण – व्यवस्था २ हिन्दू–नारी ३ कण्वन्तो विश्वमार्यम पर मेरे प्रवचन हुये। साथ तद्विषयक प्रश्नो व शकाओ का समाधान भी किया गया। इस कार्यक्रम मे विभिन्न स्थानो से आये लगभग ५० व्यक्तियो ने भाग लिया तथा अपनी–अपनी शकाये और प्रश्न रखे। यह इस प्रकार यह प्रथम आयोजन था। हमने इस अवसर के लिये 'सघठन हिन्दी पत्रिका की ओर से चार लघु–पुस्तिकाओ (लेखो) को वितरित किया जिनके क्रमश नाम इस तरह से है – १ वर्ण व्यवस्था का वैज्ञानिक स्वरूप (प. शिवकुमार शास्त्री) २ नारी की स्थिति मे स्वामीदयानद के वेदमूलक विचार (डा रामनाथ वेदालकार) ३ छुआछूत और जात–पात हिन्दू धर्म के विरुद्ध है (रामाधार वाजपेयी) ४ ससार को आर्य कैसे बनाये? (प. शिवकुमार शास्त्री) इत्यादि।। इनके अतिरिक्त स्वामीजी के चित्र भजनो के कैसेट आदि अन्य प्रचार सामग्री का एक स्टाल लगाया था। मेरे अग्रज श्री विजयप्रकाश शास्त्री ने सब व्यवस्था सम्भाली तथा श्री शिवकुशल ने कार्यक्रम का सचालन किया था। भविष्य मे ऐसे कार्यक्रमो को समय–समय पर करते रहने की आयोजको ने आशा व्यक्त की।।

गृहप्रवेश सस्कार सस्था गरीब बच्चो का सहायक समाज के सचालक प. शुभधनजी ने २४ मार्च को नये गृह मे प्रवेश किया। यह सस्कार मैंने सम्पन्न कराया। प जी के पुत्र–पुत्रियो आदि सब रिश्तेदारो ने इस गृह–प्रवेश पर गृहपति को शुभकामनाये दीं। महावामदेव्यगान से यज्ञ समाप्त किया। प. जी ने अपने हाथ से सब छोटे–बडो को प्रसाद दिया व भोजन कराया। विदित हो कि यह सस्था सन १९४० मे सूरीनाम देश में स्थापित हुई निरन्तर आज तक गरीब अनाथ बच्चो की सेवा भोजन–वस्त्र–द्रव्यादि द्वारा मदद करती रही है। और इसकी विशेषता यह है कि सरकार से कोई मदद नहीं ली जाती है जबकि अन्य सस्थाये ऐसा करती हैं। श्री प. शुभधन जी होलैड के एक निराले ही ऋषि के दीवाने हैं जो कि परोपकार मे तन–मन–धन से अहर्निश लगे हुये है। अस्तु अब सस्था अपना एक नया कार्यक्रम परिवारिक सत्सग शुरू कर रही है जिसमे कीर्तन भजन व सन्ध्या पाठादि उपदेश प्रवचन घरो–घरों में चलाये जायेंगे। साथ ही प्रतिवर्ष की भाँति इस बार भी भारत से आने वाले विद्वानो की श्रृंखला मे आर्य जगत के उच्चकोटि के विचारक लेखक व्याख्याता विद्वान डा. भवानीलाल भारतीय जी को आमन्त्रित किया गया है जो कि इसी मास मे पधारने वाले हैं उनके द्वारा देश भर मे प्रचार कराने की तैयारी की जा रही है। उनके प्रचार का विवरण आप सब तक पहुचाने का पूरा–पूरा प्रयास किया जायेगा।। इति।।

ओमप्रकाश सामवेदी,
शिक्षा शास्त्री पौरोहित्याचार्य
(उपमत्री आर्य प्रतिनिधिसभा नीदरलैंड)

जम्मू-काश्मीर में वेदप्रचार की धूम

वेदप्रचार मण्डल राजौरी के तत्वाधान मे सार्वदेशिक धर्मार्यसभा के धर्माधिकारी डा० शिवकुमार शास्त्री ने प० विद्याभानु शास्त्री एव प्रसिद्ध भजनो-पदेशक श्यामवीर राघव तथा देवेन्द्र आर्य के साथ जम्मू-काश्मीर के सीमावर्ती क्षेत्र मे वेदप्रचार की धूम मचा दी।

यह वेदप्रचार यात्रा ६ अप्रैल ९६ को लम्बेडी से प्रारम्भ होकर १८ अप्रैल ९६ तक ग्रामीण आचल मे वैदिक-नाद बजाते हुए पाकिस्तान सीमावर्ती क्षेत्र पुन्छ मे समाप्त हुई।

जहा ग्रामीण क्षेत्र मे आदर और सम्मान मिला वहा नौशेरा राजौरी एव पुन्छ के नागरिको ने भी सहयोग मे कोई कसर नही छोडी। सर्वत्र ऋषिलगर का आयोजन किया गया। इन क्षेत्रो मे उत्साह को देखते हुए हमे जो बल मिला उससे मन मे और अधिक कार्य करने की इच्छा बलवती हो गई।

चुन्नीलाल आर्य
सयोजक वेदप्रचारमण्डल
राजौरी (जम्मू-काश्मीर)

आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी में आर्य समाज स्थापना दिवस

(वीरोखाल पौडी गढवाल दिनाक २० ३ ९६)

आय समाज सावली आदि पचपुरी द्वारा आज नदसवत्सर २०५३ आर्य समाज स्थापना दिवस के रूप मे शान्ति प्रकाश प्रेम स्मारक भवन स्कूल मे बडी श्रृद्धा और उल्लास के साथ मे मनाया गया।

सर्व प्रथम प्रात १० बजे से यज्ञ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ इसके बाद यज्ञ प्रार्थना सद्बुद्धि की प्राथना सगठन सूक्त तथा आर्य समाज के १० नियमो का पढा गया।

इस कार्यक्रम के पश्चात समाज अध्यक्ष श्री दौलतराम निर्मल की अध्यक्षता म एक सभा का आयोजन किया गया सभा कायकम के प्रारम्भ मे भजनोपदेशक श्री बच्चीराम जी के द्वारा स्वामी दयानन्द सरस्वती से सम्बन्धित भजन गाया गया

तत्पश्चात वक्ताओ द्वारा प्रवचन हुए

सभा सचालन मत्री गगाप्रसाद कोहली द्वारा किया गया तथा वक्ताओ के प्रवचनो पर टिप्पणी करते हुए आय समाज की स्थापना को एक नये युग का प्रारम्भ कहा गया तथा गुरु स्वामी दयानन्द सरस्वती को सबका रक्षक मानकर उन्हे एक महान आत्मा जो पृथ्वी पर केवल दीन दुखियो का उद्धार करने हेतु आई और अपना कार्य पूर्ण करके पुन परमात्मा मे विलीन हो गई। सभा मे पधारे भाई-बहनो का धन्यवाद करते हुए आर्य समाज के प्रति अपने कतव्य को न भूले ऐसा प्रत्येक आर्य सदस्य को कहा तथा समाज के कार्य को तन्मयता से करने हेतु सबको आगाह किया।

अन्त मे अध्यक्षीय प्रवचन मे समाज के प्रधान श्री दौलतराम निर्मल ने सबका धन्यवाद किया तथा आर्य समाज को समाज के लिए एक प्रकाश स्तम्भ कहा शान्ति पाठ के साथ सभा का विसर्जन।

गगाप्रसाद कोहली मत्री

आर्य समाज सावली आदि पचपुरी पौडी गढवाल

स्वास्थ्य चर्चा

गुणकारी आंवला

कब्ज को दूर भगाने हेतु आवला एक गुणकारी एव वरदान रूपी दवा के समान है जो बिगड हुए आमाशय को ठीक रखता है। सेवन की अनेक विधिया निम्न प्रकार है जो पाचन -क्रिया क ठीक से कार्य न करने और अमाशय ठीक रखने के लिए भोजन के बाद एक चम्मल आवले का चूण ताजा जल के साथ लेने पर कुछ ही दिनो मे आप स्वय इसका फायदा महसूस करेग।

जिनका मल कडा व कम मात्रा मे निकलता हो व एक चम्मच आवले का चूर्ण ताजे पानी के साथ रात को सोने से आधा घटा पहले ले। इससे सुबह पेट पूरी तरह से साफ व हल्का हो जाता है।

इसके चूर्ण से कब्ज मे होने वाली व्याधिया जैसे गैस सिर-दर्द आखो व हाथ पैरो म जलन गुदा मे कष्ट व दाह आदि दूर हो जाता है।

- *आवले के चूर्ण को नियमानुसार भोजन के बाद सेवन करने से दिमाग तेज हाता है नेत्रो की ज्योति बढती है। श्वास के रोगो मे आराम मिलता है और रक्त शुद्ध होता है। रक्त सचार ठीक व प्रभावी ढग से होता है। इससे जिगर स्वस्थ रहता है और पाचन क्रिया ठीक होती है।*
- *अत्यधिक कमजोर व्यक्तियो के स्वास्थ्य के लिए आवले के चूर्ण का तिल के तल मे पूण रूप से मिलाकर एक चम्मच की मात्रा मे शहद के साथ मिलाकर खाने से एक माह मे इसका फायदा प्राप्त कर सकते है।*

  सूखा आवला हा या हरा हर प्रकार का आवला लाभदायक होता है। हरे आवले को भोजन के बाद या पहले लेने से भूख बढती है और पाचन क्रिया अच्छी होती है।
- *अजीर्ण हो जाने पर आवल का एक चम्मच चूर्ण शहद के साथ या घी के साथ मिलाकर खान से जठराग्नि जगाकर भाजन का पूर्ण स्वाद तथा आनन्द लिया जा सकता है।*
- *खुजली हो जाने पर आवले के चूण मे चमेली के तेल का मिलाकर मलने से खुजली मिट जाती है।*

  चाय पत्ती की जगह सूखे आवल के चूर्ण का उबालकर पीने से मुखडा सदर सलोना व शरीर मे स्फूर्ति रहती है।
- *रात मे आवले के चूर्ण को पनी मे भिगो दे प्रात इस पानी से बाल धोए तो बाल सुदर घने व काले होते है।*

  स्नान करते समय [illegible] की तरह [illegible] को सारे शरीर म लगाकर स्नान करने स त्वचा रोग रहित और कान्तिपूर्ण होती हे

  १२ग्राम सुख आवले रात को पानी मे भिगा ले सुबह उसमे ३ ग्राम सोठ १ ग्राम जीरा मिलाकर खूब बारीक पीस ले। इसे आधा गिलास दूध मे घोलकर पीने से कुछ ही दिनो मे अम्लपित्त ठीक हा जाता है।

  आवले के रस मे बराबर मात्रा मे सरसो का तल मिलाकर मसूढो पर मलने से पायरिया रोग ठीक हो जाता है।

बैसाखी पर्व सम्पन्न

ग्रीन पार्क आर्य समाज के मत्री श्री आदेश अग्रवाल जी के तत्वावधान मे तथा श्रीमति शाति देवी अग्निहोत्री की अध्यक्षता मे ग्रीनपार्क आर्य समाज की ओर से आर्य समाज के परिसर मे बैसाखी पर्व हर्ष एव उत्साह पूर्वक मनाया गया इस अवसर पर प० धर्मेन्द्र शास्त्री जी का उपदेश हुआ।

महिला आर्य समाज की मत्रिणी श्रीमति कष्णा प्रभु शरणिता न वैशाखी पर्व के शुभ अवसर पर राष्ट्र एव समाज की आवश्यकता को बताते हुए कहा हम सभी को अपने सकल्प पुन दोहराना चाहिए। उन्होने कहा कि श्रीमति शाति देवी अग्निहोत्री का आदर्शमय जीवन भारतीय सस्कृति की अमर देन है। उनका घर पृथ्वी पर स्वर्ग है। उन्होने ५०००रु० समाज को दान स्वरूप दिये। १० वर्ष तक के बालक एव बालिकाओ ने गायत्री मत्र उच्चारण किया। उनके उत्साह को बढाने के लिए समाज की ओर से उन्हे पारितोषिक दिये गए।

युसुफसराय डी० ए० वी० स्कूल के छात्रो न महर्षि दयानद तथा इश्वर भक्ति के भजनो का गायन किया। उनकी प्रशसा मे दर्शको ने १३०० रु० की धनराशि प्रदान की ।

इस प्रकार सभी कर्मठ-दानी सदस्यो तथा सदस्याओ ने योगदान देकर उत्सव को सफल बनाया सेवक तथा अन्य कर्मचारियो ने भी उत्साह से काम किया

डी.ए.वी नैतिक शिक्षा सस्थान

प्रवेश सूचना

डीएवी शिक्षण सस्थाओ के लिए धर्मशिक्षक तेयार करने के लिए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान मे चल रहे डीएवी नैतिक शिक्षा सस्थान मे प्रवेश हेतु प्रशिक्षणार्थिया से आवेदन पत्र आमन्त्रित है। प्रशिक्षणार्थियो को सस्कृत मे एमए या कम से कम शास्त्री होना अपेक्षित है। गुरुकुल मे अध्ययन करने वालो को प्राथमिकता दी जायेगी। एक वर्षीय इस प्रशिक्षण के पश्चात इन विद्वानो को डीएवी सस्थाओ मे धर्मशिक्षक पद पर नियुक्ति सुनिश्चित रूप म की जाती है। प्रशिक्षणार्थी अपना आवेदन पत्र ३१ मई तक भेज दे।

यशपाल वर्मा,
डीएवी नैतिक शिक्षा सस्थान आय समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली १

पोस्टल रं० ट्रेश डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 5 5 96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/96
R N N f 26/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 4 5-1996

कन्याएं साक्षात दुर्गा, लक्ष्मी व सरस्वती हैं

कानपुर कन्याए साक्षात दुर्गा है विवाह के बाद वही लक्ष्मी बन जाती है वृद्धा होकर सरस्वती बन जाती है। एक ही नारी मे तीनो रूप विद्यमान है। वास्तव मे नव दुर्गा मे जीवित नारियो का सम्मान ही सही पूजा है जिसको हमारा देश भूल गया है।

उपरोक्त विचार सुप्रसिद्ध महिला उद्धारक केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने यहा साकेत नगर मे आर्य समाज जूही के ५८ वे वार्षिकोत्सव के समारोह मे प्रकट किये

श्री देवी दास आर्य ने आगे कहा कि आज समाज मे नारी ही सबस अधिक दलित और शाषित है। भ्रूण परीक्षण करके जन्म से पूर्व ही उसकी हत्या कर दी जाती है। माता पिता आपनी कन्याओं की शिक्षा और उनके पौष्टिक आहार पर बालको के समान भी ध्यान नही देते। जबकि वैदिक धम के अनुसार जहा नारियो की पूजा होती है वहा देवता निवास करते हैं।

समारोह मे हमीरपुर से पधारे प्रो लक्ष्मी शकर द्विवेदी ने कहा कि दुर्गा की प्रतिमा प्रेर प्रदान करती है कि कैस हमारा राष्ट्र शक्तिशाली एव समृद्धशाली हो सकता है। उनकी आठ भुजाये हमे यह सन्देश देती हैं कि राष्ट्र को अजेय बनाने के लिये ब्राह्मण की दो क्षत्रीय की दो वैश्य की दो और दो भुजाए शूद्र की अर्थात चारो वरणो की आठा भुजाये सगठित होकर कार्य करे। जब चारो वण मिलकर सौहाद पूर्ण वातावरण मे कार्य करेगे तभी हमारा देश महान बन सकता है।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए जूही आय समाज के प्रधान श्री आनन्द स्वरूप अवस्थी ने बडे ही प्रेरणादायक ढग से सत्सग के महत्व पर प्रकाश डाला सचालन मत्री श्री परमात्मा लाल ने किया। समारोह मे मुख्य रूप से सर्वश्री जलेश्वर मुनि बानप्रस्थी लखनऊ स्वामी विश्व मित्रानन्द सुल्तानपुर रघुनाथ सिह एटा कै राजेन्द्र रूद्रपुर सन्तराम सिह लक्ष्मण कुमार शास्त्री ओम प्रकाश आय ने भी विचार प्रकट किए।

अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक महासम्मेलन का आयोजन

ग्रेटर अटलाण्टा वेदिक टेम्पल सोसायटी अमेरिका अपने दसवे वार्षिकात्सव एव महर्षि दयानन्द सरस्वती के महानिर्वाण की ११३वी [illegible] क अवसर पर ४-६ अक्टूबर १९९६ का (अटेलाण्टा ओलम्पिक महोत्सव के बाद) विजय-दशमी तथा दीपावली के पावन उपलक्ष्य मे एक अन्तराष्ट्रीय वेदिक महासम्मेलन का भव्य आयोजन करने जा रहा हे।

इस अवसर पर भारत नेपाल मारीशस सूरिनाम ट्रिनिडाड केन्या दक्षिण अफ्रीका अमरिका कनाडा हालैण्ड तथा ग्रेट ब्रिटेन सहित अनेक राष्ट्रो से मूर्धन्य विद्वान समाज सेवक इतिहासकार तथा त्यागी साधु-सन्त गण पधार रहे है।

सम्मेलन का मुख्य विषय होगा **गौरवमय प्राचीन भारत के सिन्धु सरस्वती युग का सिहावलोकन** ।

सम्मेलन के अवसर पर प्रस्तुत अनुसन्धानात्मक लेख पुस्तकाकार मे प्रकाशित कर विश्व के विभिन्न विश्वविद्यालयो अनुसन्धान केन्द्रो और पुस्तकालयो को प्रेषित किये जायेगे जिससे सम्मेलन के निष्कर्षो को चिरस्थायी तथा व्यापक बनाया जा सके।

कार्यक्रम के शुभारम्भ मे **स्मारिका (पश्चिम मे उषाकाल)** का विमोचन होगा।

सभी हिन्दू सस्थाओ से हमारा विनम्र अनुरोध है कि वे इस शुभ-अवसर को सफलतापूर्वक सुसम्पन्न करन के लिए अपने क्षत्र से सामर्थ्यानुसार सहयोग प्रदान करे। विस्तृत जानकारी के लिए सम्पक करे।

डा दीनबन्धु चन्दोरा,
सस्थापक सरक्षक
सम्मेलन सयोजक
डा वीरदेव बिस्ट
प्राचार्य डीएवी कालेज अटलाण्टा
अध्यक्ष वैदिक महासम्मेलन
स्वागत समिति

आर्यसमाज आनन्द विहार, दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज आनन्द विहार विकास मार्ग दिल्ली-९२ का आठवॉ वार्षिक उत्सव दिनाक २६ अप्रैल १९९६ से ५ मई तक समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। ४ मई १९९६ को मध्याहन ३ से ५ बजे तक विशेष स्त्री समाज का कार्यक्रम भी चलेगा। रात्रि के कार्यक्रम मे प्रतिदिन रात को ८ से १० बजे तक आचार्य प्रकाश चन्द शास्त्री जी (गुरुकुल खेडा खुर्द के उपदेश होगे) समारोह मे गुरुकुल कागडी हरिद्वार के कुलाधिपति श्री सूर्यदेव स्वामी स्वरूपानन्द जी, श्रीमती वेद कुमारी श्रीमती ईश्वर देवी धवन सहित आर्य जगत के अन्य प्रसिद्ध विद्वान तथा वदुषियॉ भाग ले रही है। ५ मई रविवार को प्रात ७३० बजे से २ बजे तक समापन समारोह चलेगा।

सभी धर्म प्रेमी भाई बहनो से निवेदन है कि इस कार्यक्रम मे सपरिवार तथा इष्ट मित्रो सहित पधार कर उपदेशामृत का पान कर अपना जीवन सफल बनाये।

रविन्द्र मेहता, उप-प्रधान

सार्वदेशिक आर्य वीर दल

राष्ट्रीय शिविर

९ जून से २३ जून तक

शिविर एक रचनात्मक आन्दोलन है राष्ट्रीय भावना अनुशासित जीवन चरित्र निर्माण-महर्षि की विचार धारा से ओतप्रोत करने शारीरिक व बौद्धिक रूप से सक्षम बनाने एव आत्मरक्षा सम्बन्धी शिक्षण के साथ वैदिक विद्वानो द्वारा सैद्धान्तिक आत्म मन्थन करने हेतु सफल शिविर का आयोजन हे। आप पालम गाव कालोनी मे भाग लीजिये

डा सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मत्री

डी. ए. वी. विद्यालयो में यज्ञशालायें बनाने हेतु नक्शे तैयार

आय प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी ए वी कालेज मेनेजिग कमेटी नई दिल्ली द्वारा निश्चय किया गया कि हर डीएवी विद्यालय मे यज्ञशाला का होना अनिवार्य है।

बहुत सारे डीएवी विद्यालयो मे यज्ञशाला का निमाण हो चुका हे लेकिन कुछ विद्यालयो मे यज्ञशाला का निर्माण अभी तक नही हुआ है। बहुत सारे डीएवी विद्यालयो से नक्शे बनवाने हेतु हमारे पास सुझाव आये थे अत हमने चार किस्म के नक्शे बना लिये है छोटा उससे थोडा बडा मध्यम एव बडे साईज। ये सारे नक्शे सभा कार्यालय मे उपलब्ध है। जिन डीएवी विद्यालयो मे अभी तक यज्ञशाला का निर्माण नही हुआ है वह सभा कार्यालय मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से डाक द्वारा अथवा अपने किसी व्यक्ति को भेजकर ये नक्शे मगवा सकते है।

नाम परिवर्तन

समस्त आर्यजनो को सूचित किया जाता है कि बैसाखी के १३ अप्रैल १९९६ को आर्य समाज मन्दिर नौएडा मे मेरे ४८वे जन्म दिवस के उपलक्ष्य मे एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया जिसमे आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान एव सन्यासीगण पधारे। इस अवसर पर मैंने अपने पूर्व नाम डाक्टर एबी आर्य मे सशोधन कर डाक्टर मुमुक्षु आर्य नया नाम रखा है।

सधन्यवाद

डा. मुमुक्षु आर्य अध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

दूरभाष ३२७४७७१ ३२६०९८५ | आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये | वार्षिक शुल्क ५० रुपए एक प्रति १ रुपया

वर्ष ३५ अंक २३ | दयानन्दाब्द १७२ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ | ज्येष्ठ कृ० १० सं० २०५३ | १२ मई १९९६

आर्य समाज को धार्मिक और समाज सुधार के कार्यक्रमों पर बल देना चाहिये : वन्देमातरम

पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा धर्म प्रचार हेतु एक लाख पांच हजार की राशि सार्वदेशिक सभा को भेंट।

जालन्धर ५ मई। पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आयोजित आर्य महासम्मेलन के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव ने मुख्य अतिथि के रूप मे आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज देश मे जो परिस्थितिया चल रही है उन्हे देखते हुए राजनेताओ से किसी प्रकार की उम्मीद नही की जा सकती। भारत के राजनेता और तदानुसार समस्त प्रशासन व्यवस्था अराजकता और अव्यवस्था के उस दौर मे पहुच चुकी है कि जहा से बल प्रयोग के बिना सुधारवादी उपाय असम्भव प्रतीत होते हैं। उन्होंने कहा कि हमे प्रसन्नता है कि यह कार्य देश की न्याय व्यवस्था ने सभाला हैं।

श्री वन्देमातरम ने कहा कि जो लोग आर्य समाज को राजनीति मे लाने की बात करते है वह ये भूल जाते है कि आज राजनीतिक दल चलाने के लिए लाखो–करोडो रुपये की आवश्यकता है और आर्य समाज धन की इस कमी को पूरा करने के लिए अन्य राजनीतिक दलो की तरह विदेशो से धन स्वीकार नहीं कर सकता क्योकि विदेशो से धन स्वीकार करने का अर्थ है उन देशो के भारत मे हितो के सरक्षण के लिये प्रयासरत रहना।

श्री वन्देमातरम जी ने कहा कि आर्य समाज को अपने सामाजिक और धार्मिक सुधार के कार्यक्रमों को भी आगे बढाने के लिए नई योजनाओं के साथ लक्ष्यबद्ध आन्दोलन प्रारम्भ करने चाहिए।

श्री वन्देमातरम जी ने भारत में सम्प्रदायवाद और जातिवाद के लिए भारतीय सविधान को ही दोषी साबित करते हुए कहा कि एक तरफ सविधान की उद्देशिका समस्त भारत के लोगो को सामाजिक समानता आदि दिलाने की घोषणा करती है तो दूसरी तरफ यही सविधान भारत के नागरिको को सम्प्रदायो और जातियो के आधार पर अलग–अलग आरक्षण और सुविधाये देता है जिससे सामाजिक समानता सैकडो सालो तक भी प्राप्त नहीं की जा सकती क्योकि यह प्रावधान अलग–अलग सम्प्रदायो और जातियो की पहचान बनाये रखने मे मददगार है।

सार्वदेशिक सभा के मत्री डा सच्चिदानन्द शास्त्री ने भी राजनैतिक दलो द्वारा देश और समाज के विघटनकारी कार्यक्रमो की निन्दा करते हुए आर्य समाज के पवित्र सुधारवादी कार्यक्रमो पर बल देने का आह्वान किया।

इस सम्मेलन मे सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री वन्देमातरम मत्री डा सच्चिदानन्द शास्त्री तथा न्याय सभा के सदस्य श्री विमल वधावन एडवोकेट का माल्यार्पण द्वारा तथा शाल उढाकर स्वागत किया गया। पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री हरबस लाल तथा मत्री श्री अश्वनी कुमार ने सार्वदेशिक सभा के पदाधिकारियो को धर्म प्रचार हेतु एक लाख पाच हजार रुपये की राशि भेट की।

सम्मेलन का सचालन पजाब सभा के मत्री श्री अश्वनी कुमार ने किया तथा पजाब के विभिन्न हिस्सो से आये आर्य नेताओ ने आर्य समाज की गतिविधियों को बल देने के लिये अपने विचार तथा सकल्प प्रकट किये।

इस सम्मेलन में पजाब सभा की तरफ से कई समाज सुधार के कार्यक्रमो विशेष रूप से नशाबन्दी आन्दोलन के समर्थन मे कई प्रस्ताव पारित किये।

प्रो० वेद व्यास का देहावसान

सुप्रसिद्ध आर्य नेता तथा डी ए वी प्रबन्ध समिति और प्रादेशिक सभा के पूर्व प्रधान प्रो० वेदव्यास का अकस्मात निधन हो गया। वे लगभग ८५ वर्ष के थे। प्रो० वेद व्यास की गिनती ख्याति प्राप्त वकीलो मे थी। गत लगभग ४–५ वर्षों से वे अस्वस्थ थे।

आज उनके निवास पर किया रस्म का आयोजन किया गया था जिसमे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द राव उप प्रधान श्री सूर्यदेव जी न्याय सभा के सदस्य श्री विमल वधावन एडवोकेट तथा दिल्ली सभा के मत्री श्री वेदव्रत शर्मा के अतिरिक्त डी० ए० वी० और प्रादेशिक सभा के कई नेता उपस्थित थे।

श्री वन्देमातरम जी ने प्रो० वेद व्यास को श्रद्धान्जलि व्यक्त करते हुये कहा कि वैदिक मान्यताओ के अनुसार शरीर आत्मा के वियोग के कारण भस्म तो कर दिया जाता है परन्तु यह नही कहा जा सकता कि वेद व्यास जी मर चुके हैं क्योकि वेद व्यास कुछ समय के लिये उस आत्मा का नाम रखा गया था जो एक विशेष शरीर लेकर समाज मे प्रकट हुयी। आर्य समाज और शिक्षा के क्षेत्र मे श्री वेद व्यास ने जितने प्रयास किये वह सब कार्य उन्हे सदैव अमर रखेगे और उनके द्वारा किये गये कार्य सस्कारो का समुच्चय बन कर सदैव उनकी आत्मा के साथ रहेगे। वह आत्मा पुनर्जन्म सिद्धान्त के आधार पर अवश्य ही किसी नये शरीर मे प्रवेश करेगी। पुनर्जन्म के सस्कार उनकी आत्मा को उसी प्रकार के कार्य करने के लिये सदैव प्रेरित करेगे।

[illegible]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत गत कई वर्षों से दयानन्द सेवाश्रम सघ एक अलग विभाग के रूप में कार्य कर रहा है। इस सघ की स्थापना पूर्व प्रधान मत्री स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की प्रेरणा पर की गई थी। स्थापना के बाद कई वर्षों तक सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान सघ की गतिविधियों मे उत्साह पूर्वक सहयोग एव समर्थन देते रहे। कई वर्ष तक सघ की गतिविधियो का सूत्र सार्वदेशिक सभा के उपमत्री तथा वैदिक विद्वान स्व श्री पृथ्वीराज शास्त्री जी के हाथ मे रहा। उनके देहावसान के

(शेष पृष्ठ १० पर)

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

नारी की पहचान

यशबाला गुप्ता

वेदो तथा आर्य शास्त्रो मे स्त्री के तीन स्वरूप दर्शाए है। वे है कन्या वधू तथा देवी या माता।

कन्या के रूप म वह आत्मसयमी सादगी पवित्रता त्याग व तपस्या का जीवनयापन करने वाली है। उसको स्वय जीवन साथी चुनने का भी अधिकार है परन्तु उसमे माता–पिता का परिपक्व व बुद्धिसगत अनुभव द्वारा मार्गदर्शन हो।

गृहस्थ के रूप मे उसकी भूमिका पुरुष की भूमिका से गुरुतर है। स्त्री के बिना पुरुष आधा होता है। वह अर्द्धांगिनी कहलाती है गृहस्वामिनी है क्योकि घर पर शासन करती है। वह घर का सम्पूर्ण वातावरण तैयार करती है। परिवार को एकता के सूत्र मे पिरोने तथा मिलाए रखने की उसमे प्रेरक शक्ति होती है। वह आनन्द प्रेम और शान्ति का स्रोत है तभी पूजनीय है।

मनु महाराज के शब्दो मे –

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता

माता के रूप मे जननी व जन्मभूमि को स्वर्ग से भी श्रेष्ठ बताया है।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

अर्थात माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ होती है यहा माता से तात्पर्य कवल जन्म देने वाली नही जन्म देने वाली [illegible] नारी कहलाती है जो कि उसका जैविक रूप है। माता तो निर्माण करने वाली है। वह [illegible] का निर्माण करके उसे श्रेष्ठ पुरुष बनाती है जो कि उसका मानवीय कार्य है।

मनु महाराज का कहना है कि मनुष्य जाति वम सस्कृति की वास्तविक निर्माता नारी है। विवाह सस्कार के पश्चात पुरुष अपनी पत्नी को 'साम्राज्ञी भव अर्थात मेरे परिवार की साम्राज्ञी बनो कह कर सम्बोधित करता है। प्राचीन काल मे समाज मे पत्नी का व्यक्तित्व इतना महत्त्वपूर्ण व अपरिहार्य था कि उसके बिना समारोह या अनुष्ठान की अनुमति नही दी जाती थी। उसे उच्चतम ग्रन्थो का –वेदो को पढने का अधिकार था। गार्गी मैत्रेयी सुलभा आदि महान विदुषी देवियो का वर्णन है।

कालान्तर मे उसे शिक्षा से वचित कर दिया गया। सम्भवत राजनैतिक या सामाजिक कारण थे जिसके कारण स्त्री जाति की हालत बदतर होती गई। अविद्या ने रूढियो व अन्ध विश्वासो ने स्त्री जाति को जकड लिया। परिणाम हुआ बाल विवाह सती प्रथा बहु स्त्री प्रथा। नारी को मनुष्य के लिए अभिशाप माना जाने लगा। उसको शैतान की बेटी कहा गया। देवता और पैगम्बरो को पैदा करने वाली मा तिरस्कृत हुई। जिसके लिए कहा गया

ढोल गवार शूद्र पशु नारी ये सब ताडन के अधिकारी।

बाल विवाह के रिवाज ने उस कली को खिलने से पहले ही मसल दिया और यौवन की दहलीज पर पहुचने से पहले ही उसे बुढापे ने दबोच लिया। वह विद्या और ज्ञान से अनभिज्ञ रही और पुरुष प्रधान समाज ने उसे पैरो की जूती के समान रखा और वह उफ न कर सकी।

सती प्रथा के नाम पर विधवाओ पर जो अत्याचार किये गए उस पर महर्षि जार–जार रोए। विधवा होने पर बाल मुडवाकर उसे रोने बिलखने के लिए घर से बेघर कर दिया जाता। धर्म के झूठे पाखण्डियो ने उसे नोचा खसोटा और अपनी वासना का शिकार बनाया या पति के साथ धधकती ज्वाला मे झौक दिया। अबोध विधवा उसी को अपना सौभाग्य समझ बैठी और अपने आपको जिन्दा ही अग्नि के समर्पित करती रही।

महर्षि ने स्त्री शिक्षा पर अत्यन्त बल दिया जिससे वह जागरुक बने ज्ञान प्राप्त करे व अन्याय के प्रति आवाज निकाल सके। समाज मे गुरुकुलो का भी प्रचलन किया जिससे वेद पढने का अधिकार उसे पुन मिला। महर्षि का कहना था कि यदि स्त्री शिक्षिता है तो वह शिक्षित व सभ्य समाज का निर्माण कर सकती [illegible] अपने हित व अहित का सोच सकती है क्योकि नारी कल्याण की भावनाओ को सबल बनाती है।

विधवाओ को समाज मे पुन आदर सम्मान मिले उसे अपना शेष जीवन लाछित कुण्ठित व एकाकी होकर न बिताना पडे इसलिए महर्षि ने विधवाओ का पुनर्विवाह करने पर बल दिया। वे क्रान्तिकारी थे समाज सुधारक थे उनके उपदेशो से प्रभावित होकर जनसामान्य के विचार बदले और समाज मे नई जागृति आई परिणाम स्वरूप मुरझाए जीवन फिर पल्लवित हो गए मुस्कुरा उठे। ऋषि ने भारत की स्त्रियो की शोचनीय दशा को सुधारने मे बडी उदारता निर्भीकता व साहस से काम लिया। दहेज प्रथा अछूतपन जातिभेद जैसी कोढ की बीमारी को निकालने के लिए भी निरन्तर प्रयत्न करते रहे।

ये सब महर्षि का ही प्रताप है कि आज हम खुली ठडी बयार मे श्वास ले रहे है व सुखी जीवन जी रहे है। अपने सामर्थ्य के अनुसार शिक्षा पाकर जागरूक बन पाए हैं यह उन्ही की तपस्या का फल है कि आज प्रताडित और कराहती हुई नारी अत्याचारो से काफी अशो मे मुक्ति पाकर अपनी पहचान बना सकी है। महर्षि के बाद अन्य अनेक समाज सुधारको व शिक्षा विदो ने स्त्री जाति के उत्थान विकास व शिक्षा के कार्य को आन्दोलन के रूप मे अपनाया।

निश्चय ही आर्य समाज ने इस आन्दोलन मे अग्रणी भूमिका निभाई है पर फिर बुराइया अपना मुँह खोल रही हैं। अनेक राज्यो मे बाल विवाह हो रहे है जिसमें भवरी बाई जैसी अग्रणी महिला विरोधो को सहन करते हुए भी दृढ हैं। बहु स्त्री प्रथा के शौक भी समाज मे हैं जिससे नारी पुरुष की छत्रछाया मे रहते हुए भी तिरस्कृत व अशक्त जीवन जीने को मजबूर हो रही है – अब फिर से जरूरत है महर्षि के उपदेशो व आदर्शों की जिससे बिगडता हुआ समाज का ढाचा सभल सके और नारी की पहचान धूमिल न हो।

'आओ ! वैदिक पथ अपनाएं'

गावो से लेकर दिल्ली तक
फैला अतुलित भ्रष्टाचार।
बिहस रही है वृत्ति—दानवी
कण—कण करता हाहाकार।

अनाचार—अत्याचारो से—
शक्ति कहाँ ? कैसे टकराए ?
आओ ! वैदिक पथ अपनाए।

भगत—सुभाष—शिवा—राणा
क [illegible]
परम्परा का हुआ हनन !
आ[illegible] नव युवको का
भरा [illegible] से अभिमन।

[illegible]—तपो के बलिदानो के—
भाव पुनीत कहा से लाए ?
आओ ! वैदिक पथ अपनाए।

समता के शुचि सदेशो से
सम्पूरित है सविधान।
सत्तालोलुप नेताओ ने
तान दिया है जाति वितान।

जाति विहीन समाज सनातन
कैसे समरस पुन बनाए ?
आओ ! वैदिक पथ अपनाए।

अव अभाव—अज्ञान— अनय का
फैल रहा है जाल निरन्तर।
धर्म—अधर्म व सत्य—असत्य का
सत्वर मिटा हुआ है अन्तर।

सत्य सनातन सस्कृति पावन—
वैदिक कैसे आज बचाए ?

समय जाते देर नहीं लगती कभी इस भूभाग की क्या स्थिति थी जब म नारायण स्वामी जी महाराज ने यहा अपने चरण रखे थे और जीवन को कठिन साधना मे तपाने का प्रयास किया था।

न जाने के साधन थे जगल घन-घोर जगल तक की यात्रा कर महात्मा नारायण स्वामी जी रामगढ तल्ला की तग स्थल नदी के तट पर अपनी छोटी सी कुटिया बना कर नारायण स्वामी आश्रम नाम देकर प्रसिद्ध किया। स्थान बना महाराज जी वहा ठहरे पर्वतीय अचल मे बसे परिवारो से परिचय किया गया।

समय बीतते देर नही लगी। स्वामी जी महाराज सारे क्षेत्र मे परिचय प्राप्त करके जनता जनार्दन की सेवा मे लग गये। कैसा समय कैसी परिस्थितिया उनके त्याग भाव विरक्त सन्यासी साधना करने पहुचे।

सामाजिक बुराइयो मे ग्रसित समाज धर्म-कर्म से दूषित वातावरण मे अपनी सूझ-बूझ से व्यक्तियो परिवारो मे नया सुधार कार्यक्रम किया। व्यक्ति बदले समाज बदला। महात्मा जी की जय-जयकार हो उठी।

पिछडे प्रदेश मे नई पीढी को नई दिशा कैसे मिले इस के लिए भूमि प्राप्त कर महात्मा नारायण स्वामी इन्टर कालिज की स्थापना की गई। अच्छा भवन अच्छा मैदान बनकर तैयार हो गया। क्षेत्र के बालक शिक्षा प्राप्त करने लगे।

आर्य समाज का भवन भी आश्रम व कालिज के मध्य नदी के तट पर बनाया गया। कौन-कौन व्यक्ति सम्पर्क मे आये पता नही? परन्तु एक व्यक्ति श्री दीवान सिंह नाम के प्रसिद्ध है उनका परिवार आज भी आश्रम की व्यवस्था देख रहा है।

समय-समय पर प्रान्तीय सभा, उत्तर प्रदेश के द्वारा भी अन्य साधु-सन्तो के द्वारा शिविरो के आयोजन होते रहते है।

हमारी दुर्बलताओ से विद्यामन्दिर महात्मा नारायण इन्टर कालिज आर्य समाज के हाथो से सरकार के हाथो मे चला गया। परन्तु नाम महात्मा नारायण स्वामी जी का ही चलता है।

स्वामी जी की साधना स्थली बने कितना समय हुआ। मध्य मे नये-नये कार्य हुए यह सब स्मृति पटल पर ही है। कुछ अच्छे व्यक्ति वहा पधारे। नवनिर्माण किया नई कुटिया बनी यज्ञ स्थान भी बना नदी का घाट भी बना मैदान भी साथ है नदी का तट दीवार बना कर घाट भी बना दिया। ७५ वर्ष ऐसे लगे जैसे कल की ही बात है। परन्तु न स्वामी जी है और न उनके समकालीन व्यक्ति ही ?

कभी-कभी अच्छे व्यक्तियो के पदार्पण से भी युग परिवर्तन होता है।

श्री कृष्ण कुमार भाटिया और श्री अग्निहोत्री परिवार ने सार्वदेशिक सभा को सूचना दी कि आश्रम की स्थापना को ७५ वर्ष हो गये है हमारी इच्छा है कि इस उपलक्ष्य मे हीरक जयन्ती समारोह का आयोजन किया जाए। उनके विचारो का प्रभाव इतना हुआ कि सार्वदेशिक सभा ने स्थानीय पत्राचार प्रारम्भ किया। साथ ही सभा मत्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री चौ लक्ष्मी चन्द सदस्य सभा दल-बल सहित नैनीताल जाकर श्री बाके लाल जी कसल जी से मिले जो कि वहा के एक अच्छे समाज-सेवी है तथा उस क्षेत्र मे उनका व्यापक प्रभाव है। उनका निजी विचार था कि महात्मा जी सार्वदेशिक सभा के व्यक्ति थे अत उनका उसी प्रकार उच्च स्तर पर ही आयोजन सार्वदेशिक द्वारा किया जाना चाहिए। वहा रामगढ तल्ला गये श्री विक्रम सिह कार्यवश कही गये थे उनके दर्शन न कर सके। एक सन्त जो मौन धारण कर साधना रत थे। दर्शन कर विशेष वार्त्ता की। उस समय ऐसा लगा कि समाज निर्जीव नही है। पहले सा उत्साह आज भी विद्यमान है। नए-नए भवनो का निर्माण नदी तट घाट यज्ञशाला का निर्माण साधना स्थली की शोभा स्थान विशेष र ही बनती है। वहा पर नई साधना स्थली बने भव्य यज्ञशाला अच्छा सत्सग भवन साधु-सन्तो की कुटिया बनाई जाए। अपनी-अपनी कुटी भी बना सकते है। साधु-सन्त स्थान विशेष देखकर बैठते है। सुविधा समयानुकूल बना करती है।

१८ स्थिति क्या थी युग बदला। पैदल न जाकर आश्रम तक बसे कारें जा सकती है।

यहा पुरुषो का चरित्र ही भावी पीढी को दिग्दर्शन कराता है। ऐसा व्यक्ति जिसने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश गुरुकुल वृन्दावन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का सफल नेतृत्व कर आर्य समाज की बुनियाद को सुदृढ किया था।

आज व्यक्ति नही है पर उसके विचार उनका साहित्य सृजन नेतृत्व सही साधना का मार्ग ही हमारा दिशा बोध करा सकता है।

बरेली मे प्रतिवर्ष डा सत्यस्वरूप जी महात्मा नारायण स्वामी जी की जयन्ती सदा ही मनाते है शोभायात्रा भाषण प्रवचन यज्ञादि का आयोजन किया करते है।

हम चाहते हैं कि महात्मा नारायण स्वामी जी ने साधना मे ही नही सघर्षो मे भी हमारा सफल नेतृत्व किया है। ऐसे व्यक्ति का हम स्मरण कर उन जैसा बनने की क्षमता प्राप्त करे।

भावी आयोजन उत्साह के साथ लगन प्रेरणा सहित मनाये ऐसी कामना है

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नही रहना चाहिए बल्कि सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए

पुस्तक समीक्षा

दयानन्द शतक

लेखक · डा. सत्यव्रत शर्मा 'अजेय'

प्रकाशक अनीता आर्ष प्रकाशन, वेद मन्दिर (गीता आश्रम), ज्वालापुर, हरिद्वार

पृष्ठ सख्या ४८ मूल्य ६ रुपये

दयानन्द शतक लघु पुस्तिका को सक्षिप्त छन्द बद्ध काव्य से सजोया है।

हिन्दी साहित्य मे धनाक्षरी राष्ट्रीय छन्द है जो प्रत्येक काल मे लिखा गया है। इसी छन्द मे आर्य विचारधारा के सशक्त कवि डा सत्यव्रत शर्मा अजेय पूर्व उपाचार्य गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित पर यह शतक लिखा है। इसमे महर्षि के सिद्धान्तो का सार भी समाविष्ट किया है जो मणि कान्चन सयोग है।

कवि की शैली ओजमयी है। भाषा प्रसाद नाद-सौन्दर्य अलकृता एव गुणगत रमणीयता लिए हुए है। कुछ छन्दो को पढ कर नाथूराम शर्मा शकर की स्मृति पुनरुज्जीवित हो जाती है।

पाश में बंधे थे पराधीनता-पिशाचिनी के,
फन्द में फंसे थे सब दु:ख और द्वन्द के।
तूर्ज तम-तोम की तमिस्रा ने किये थे अन्ध,
मन्द थे प्रकाश हुए सूरज के चन्द के।।
यूरोपिय अनुवाद पढ-पढ हम लोग,
भ्रमर कहाते रहे वैदिक मरन्द के।
सर्वथा स्वतन्त्र दिव्य नव्य भव्य भारत की,
कल्पना असम्भव थी बिना दयानन्द के।।

छपाई सुन्दर और शुद्ध है। काव्य पठनीय प्रशसनीय और सग्रहणीय है।

डा सच्चिदानन्द शास्त्री *सम्पादक*

वेदों में रहस्यमयी भौतिक विद्यायें

भारतीय आकाश मे चमकता हुआ वैदिक प्रकाश किसी समय विश्व को चमत्कृत करता था परन्तु प्रमादवश वेद के मूलाधार को त्याग कर केवल उसके आध्यात्म परक अर्थ तथा कर्मकाण्ड मे ही अपनी सम्पूर्ण शक्ति को लगाने मे ही यहा के विद्वान अपने कार्य की इति श्री समझने लगे मात्र उच्चारण ही वेदो का अभीष्ट उद्देश्य रह गया। विदेशी विद्वानो ने इसके रहस्य को समझा वे पूरे मनोयोग से वेद विद्याओ के रहस्यो की खोज करने मे लग गये। जर्मन रूस इग्लैड आदि देशो मे वेद के शोध के कारण वैज्ञानिक प्रगति हुई। इस मर्म को महर्षि दयानन्द ने समझा और एक आलोकमय भाष्य करके दिग्भ्रान्त भारत को झकझोर दिया। आज हमारे सामने सुस्पष्ट है कि ईश्वर कृत वाणी मे अनेको विद्याये सन्निहित है।

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि इस से केवल विद्याओ का एक भाग ही प्रकट होता है जब कि तीन भाग की विद्याए रहस्यमय ढग से सन्निहित हैं वे तो व्याकरण के दिग्गज विद्वानो से प्रकट होना ही सभावित है। विद्वानो का ध्यान वेद वाङमय की ओर आकर्षित होना ही अभीष्ट है। प्रत्येक वेद–मत्र के प्रतिपाद्य विषय की ओर सकेत करता है। छन्द से इसमे वर्ण विन्यास होता है एव विषयो का क्रम प्रकट [illegible] से अक्षर विशेष का ज्ञान तथा [illegible] गान्धार उदात के लक्षण के ऋषभ और धवत अनुदात के लक्षण से षडज–मध्यम और पचम तीनो स्वरित स्वर से गाये जाते हैं ये क्रम विद्याओ के उद्‌बोधक हैं। गौरव के साथ वेद मत्रो पर गवेषणात्मक अध्ययन करना अत्यावश्यक है।

उदाहरण के रूप मे मधु छन्दस ऋषि को ही लीजिए। इन्होने ऋग्वेद मे ११ सूक्तो के २१ वर्गो मे विभिन्न विद्याओ पर प्रकाश डाला है। पहले सूत्र मे प्रथम वर्ग के पाच मत्रो मे परमाणु को छेदना धारण तथा आकर्षण करने वाल अग्नि को गुणा सहित जो सफेद रग की टेडी होकर दोडती हुइ निकलती है को गुणो सहित खोजने के लिए निर्देश है जो विमान एव अस्त्र–शस्त्र निर्माण मे भी प्रयोग की जा सकती है व इसके द्वारा शल्य क्रिया के लिए धातु आदि पदार्थो की प्राप्ति हो सकती है। यह [illegible] सामवेद पूर्वाचिक के ६०५ सख्या वाले अग्नि मीडे वाले मत्र का इस वर्ग के पाचो मत्रो मे विस्तार लाता है तथा इसके लिए निरुक्त ७/१५.१६ मे भी कुछ निर्देश हैं तथा तैत्री सहिता ४/३/१३/३ तथा ३/१/११/१ तथा ४/३/१३/५ मे भी इसका सदर्भ लगता है। इस मत्र के अन्दर कितनी विद्याये [illegible] रूप मे निहित है यह मनन करने से ज्ञात होता है। मनुष्य का जीवन बिना शिल्प क्रिया के उन्नति प्राप्त नही कर सकता है। शिल्प क्रिया बिना धातु के सम्भव नही है। धातु मनुष्य को कहा से प्राप्त होगी इसके लिए निर्देश है कि परमाणु आदि पदार्थ जो सृष्टि के पूर्व से ही विद्यमान है उनका छेदन धारण तथा आकर्षण कर सके ऐसी अग्नि की गुणो सहित स्तुति या उपासना करनी है।

१३ वे वर्ग मे बजी और हि[illegible] नामक विद्युत विज्ञान है। इसमें साम पूर्वाचिक १९८ एव उत्तरर्चिक ७९६–९९ तथा पूर्वार्चिक १३० उत्तरार्चिक ५९७–९९ अर्थ २०/३८/४–६ २०/४७/४–६ अर्थ २०/७०/७–११ निरुक्त ७/२ तैत्री सहिता १/६/१२/२ तैत्री ब्राह्मण १/५/८/१–२ २/७/१३/१ इसमे अन्तरिक्ष विज्ञान की चर्चा है। १२ वे वर्ग मे वृषने नामक जल को वर्षाने वाला विद्युत विज्ञान है यह साम उत्तरार्चिक १६२०–२२ तथा अर्थ २०/७०/१०–१४ २०/३६/१ तथा निरुक्त ६/१६–१८ तैत्री सहिता १/६/१२/१ द्वारा निर्दिष्ट हैं। १५ वे वर्ग मे विद्युत शस्त्र विज्ञान है इसका विधान सामवेद पूर्वाचिक १२६, १६६, अर्थ २०/७०/१७ से ७१ तक तैत्री सहिता ३/४/११/३ तथा तेत्री ब्राह्मण ३/५/७/३ द्वारा निर्दिरूट है। १६ वे वर्ग सर्व पदार्थ विद्युत विज्ञान है जो अर्थ २०/७१/२२६ से ६ २०/६०/४–६ द्वारा निर्दिष्ट हैं। १७ वे वर्ग मे सूर्य विद्युत शिल्प क्रिया विज्ञान के लिए है यह साम पूर्वार्चिक १८० २०५, यजु ३३/२५ अर्थ २०/७१/७ से ११, निरुक्त १/१० द्वारा निर्दिष्ट है। यह अर्थ २०/११/१२–१६ द्वारा सबधित है। १६ वा वर्ग यूथेन वायु नामक विद्युत विज्ञान है यह साम पूर्वार्चिक ३४२ए ३५६ उत्तरार्चिक १३४४ से ४६ यजु ८/३४ निरुक्त ५/५ तैत्री सहिता १/६/१२/२ द्वारा निर्दिष्ट है। २० वा वर्ग विद्युत किरण विान है ग्रह यजु. ५/२६ निरुक्त ७/६ तैत्री सहिता १/३/१/२ द्वारा अकित है। २१ वा वर्ग विद्युत गण कर्म विज्ञान है इसमे साम पूर्वार्चिक ३४३, ३५६ और उत्तरार्चिक ८२७–२६ १२५०७७५२ यजु १२/५६, १५/६१ तैत्री सहिता ४/६/४/३ तैत्री ब्राह्मण २/७/१५/५ और १/४/१२७३ द्वारा निर्दिष्ट किया गया है।

इस प्रकार चारो ही वेद एक दूसरे से सबधित हैं और भौतिक ज्ञान को देने वाले प्रमाणित होते हैं। महाभाष्य के अनुसार इन वेद मत्रो के द्वारा विद्या का केवल एक चरण प्रकट होता है बकाया के तीन चरण इन्ही वेद मत्रो के अन्दर समाये हुए हैं। जो व्याकरण आदि की विभिन्न क्रियाओ द्वारा प्रकट हो सकते हैं। इसके लिए मुन्ड कोष उपनिषद उपति पाद प्रथम मुन्ड के प्रथम खण्ड ४ के ५ वे मत्र द्वारा सकेत दिया गया है कि यह ऋग्वेद, साम अर्थ शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त छन्द और ज्योतिष आदि ग्रन्थो के द्वारा प्राप्त करने पर भी यह विद्या अपराही रहेगी अर्थात इन विद्याओ मे सन्देह ही बना रहेगा।

इसका सदेह रहित यापरा बनाने के लिए मत्रो के अक्षरों से किसी विशेष क्रिया द्वारा जो अर्थ निकलेगे वह उपरोक्त अर्थों के साथ सयुक्त करने से यह सभी विद्याओ के तीनो चरण निकल सकते हैं। विद्वानो से प्रार्थना है कि इस विषय पर प्राप्त जानकारी को वेदो द्वारा प्रकट करके भारत को ससार मे गौरवान्वित करे।

छैलबिहारी लाल गोयल

पुस्तक समीक्षा

दयानन्द बयालीसा — ऋषिराज चालीसा

लेखक · स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती — लेखक . लोकनाथ तर्कवाचस्पति

प्रकाशक : सरस्वती साहित्य संस्था, २६५, जागृति एन्कलेव, दिल्ली - ९२

मूल्य ३.०० रुपये — मूल्य १.५० रुपये

जनता की रूचि अनुसार विभिन्न कवियो ने भिन्न–भिन्न छन्दो मे गीत–अगीत, गद्य–पद्यो मे रचनाए रची हैं और जनता ने उन्हे पसद किया है। हनुमान चालीसा जैसी रचना इसलिए रूचिकर लगी कि हनुमान भक्त इसे पढ कर मुक्ति पथगामी होगे। पर ऋषि दयानन्द बयालीसा पढकर मुक्ति पाएगे या नही। यह पढकर ही पता चलेगा। पर ऋषि के जीवन को सार रूप गेय रूप मे पढ कर आनन्द उठाऐगे। इसी भावना को सामने रखकर मूर्धन्य विद्वान पण्डित लोकनाथ तर्कवाचस्पति ने चालीसा रच दी। दण्डी की कुटिया – टकारा शिवालय – शिवराजाष्टक।

***बाल समय शिव के मन्दिर में शिव जी का प्रश्न धार पधारे,
कल्पित वह शिव छोड दिया घर त्याग दिया वन बीच पधारे।
श्रद्धा से पठन-पाठन हुआ तब दण्डी से सत्यार्थ के मर्म को पाया,
भौतिक प्रपंचों के सब जाल टूटे गुरुवर ने जब ज्ञान अनुभव कराया।***

हुनमान चालीसा की भाति ऋषि राज चालीसा को पाठक पढे और आनन्द ले। दयानन्द बयालीसा मे दोहा, चौपाई, मुक्तक, छन्दो मे सरल जीवन रच कर भारतीय मानक मूल्यो को फिर से इस धरा पर लाने तथा नारी, दीन, दुखी, असहायो के ऋषि सहाय बने। स्वामी स्वरूपानन्द जी का प्रयास सराहनीय है। इन बातो का बयालीस गेय गीतो मे चालीसा की भाति दयानन्द बयालीसा का निर्माण किया।

***अति निकट, विकट, संकट आंधी हो तुफान।
निर्भय आगे को बढ़े, रक्षक हैं भगवान।।***

इन दोनो बयालीसा व चालीसा को पढकर हनुमन चालीसा का आनन्द ले।

डा. सच्चिदानन्द शास्त्री

क्या आर्य संस्कृति के अनुसार वर्तमान सन्दर्भ में रामराज्य की कल्पना सम्भव है ?

—डा० रामावतार अग्रवाल

विचारणीय प्रश्न यह है कि गणतन्त्र दिवस सरकारी पर्व के रूप मे ही क्यो मनाया जाता है ? यह सामाजिक रूप मे लोकप्रिय क्यो नहीं हुआ।

स्वतन्त्रता सेनानियो ने जिस सत्य, अहिंसा एव सामाजिक न्याय के लिए स्वतन्त्रता प्राप्त की थी, भारत सरकार ने उसका तिरस्कार करके आम आदमी को अपमानित किया है। आम आदमी का सम्मान उस दिन होगा जिस दिन राज्य द्वारा सत्य की प्रतिष्ठा की जाएगी। सत्य से ही कर्म या कार्य लोकप्रिय होते हैं। हिन्दुस्तान ने सत्य का परित्याग किया है, इसलिए गणतन्त्र दिवस सामाजिक पर्व का स्वरूप धारण नही कर सका। अत यदि भारत की आजादी का सर्वप्रिय बनाना है तो वह सत्य के द्वारा ही सम्भव है।

वेदो के अनुसार जीवन को ऊर्जा प्रदान करने वाले तत्व, सत्य, श्रम, या तप, ज्ञान और यज्ञ या दान है। यही तत्व विश्व जीवन या पृथिवी को धारण करने वाले अमर तत्व है—

'सत्य बृहद् ऋतम् उग्र दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ पृथिवीं धारयन्ति"

—अथर्ववेद १२। १। १

विश्व इतिहास मे यह बात सिद्ध है कि जब जब श्रम व सत्य का ह्रास होता है, तब तब दु ख भूख और भय बढते हैं। राष्ट्रो का उत्थान, सत्य और श्रम आदि के द्वारा होता है और पतन असत्य अकर्मण्यता तथा अदानता के कारण होता है। वेदो के अनुसार-सत्य श्रम, ज्ञान और दान मे ही वह शक्ति है, जो विश्व समाज को एकात्म सूत्र मे बाधकर रख सकती है। अत आर्य सस्कृति मानव समाज को सम्प्रदायो, जातियो उपजातियों और वर्णों में विभाजित न करके सम्पूर्ण स सार में सत्य श्रम या आर्यत्व या श्रेष्ठत्व की स्थापना करना चाहती है। इसके अनुसार पूरा विश्व आर्य होना चाहिए—

इन्द्रवर्धन्तो अप्तुर कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम्
अपघ्नन्तो अराव्ण ॥ ऋग्वेद ९। ६३। ५

उपर्युक्त मन्त्र के अनुसार भारत, विश्व में आर्य या रामराज्य की स्थापना इसलिए करना चाहता है, क्योकि जब तक पूर्ण समाज को पूर्ण पोषण प्राप्त नहीं होता, तब तक आत्मीयता विकसित नही हो सकती और जब तक व विश्व प्रेम उत्पन्न नहीं होता, तब तक गरीब वर्ग को न्याय व सुख उपलब्ध नहीं हो सकता।

* ससार से भूख, भय मिटे तथा प्रत्येक व्यक्ति को मुफ्त तथा निष्पक्ष न्याय प्राप्त हो, इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए विश्व को आर्य या श्रेष्ठ बनाना अनिवार्य है। किन्तु स सार को आर्य, द ड से नही प्रेम-दान और उदारता से ही बनाया जा सकता है। सत्य श्रम ज्ञान एव दान आदि जो भूमि को धारण करने वाले तत्व हैं उन्ही में वह बल है जिससे गरीबी, गुलामी और अज्ञान मिटाकर सर्वहितकारी आर्य या रामराज्य का निर्माण किया जा सकता है।

किन्तु जैसे ही मानव जीवन मे श्रम सत्य ज्ञान तथा दान के स्थान पर अकर्मण्यता, असत्यता, अज्ञान और अदानता विकसित होती है वैसे ही वह, मानव से दानव बनता है, तथा सुशासन, दुशासन या कुशासन मे बदलता है। वर्तमान विश्व राज्य के स चालक तत्व असत्य अश्रम अज्ञान और अदानतायें होने से ही किसानों और मजदूरो को छोडकर लगभग सभी राजनेता, अभिनेता, विधायक, सासद, मन्त्री, मुख्यमन्त्री प्रधानमन्त्री सहित पूर्ण राजनीति अपवादो को छोडकर भ्रष्ट ब न गई है। मानव मानव का दुश्मन बना हुआ है। सरकारी कर्मचारी उद्योगपति, व्यापारी, सभी अनुत्पादक एव भोगी मनुष्यो की ऐसी फौज है जो उत्पादक समाज का शोषण करके जीवित हैं। अत जब तक सत्य, श्रम या ज्ञान के अनुसार विश्व समाज को सन्तुलित नहीं किया जाता तब तक कमजोर वर्ग को पोषण प्राप्त नही हो सकता।

उत्पादक और अनुत्पादक वर्गों में सन्तुलन निर्मित करने के लिए ही ऋषियो ने प्रत्येक मनुष्य को यह आदेश दिया है कि वह अधिक से अधिक दान करें क्योकि श्रम व दान से ही समाज मे समन्वय उत्पन्न हो सकता है—

शतहस्त ! सम आ हर, सहस्र हस्त ! स किर।
कृतस्य कार्यस्य चेह स्फाति समआवह ॥

(अथर्ववेद ३। २४। ५)

आर्य सस्कृति श्रम और दान पर इसलिए अत्यधिक बल देती है, क्योकि शोषण स्वार्थ स कुचिता तथा अति भोगवाद इन्ही तत्वो से नष्ट हो सकता है। श्रम शक्ति के विकास और भोगवाद के कम होने से ही स सार को स्वर्ग बना सकते हैं। स सार का स्वर्ग बनाने के लिए ही ऋषियो ने पग पग पर मनुष्य को भोगवाद से बचने का मार्ग बताया है। उनके अनुसार जो मनुष्य अपनी रोटी भाईयो मे बाटकर नही खाता वह चोर है अथवा जो व्यक्ति अकेला ही भोग करता है, वह पाप खाता है—

मोघमन्न विन्दते अप्रचेता सत्य ब्रवीमि वध इत्सतस्य
नार्यमण पुष्यति न सखाय केवलाघो भवति केवलादी ॥

(ऋग्वेद १०। ११७। ६)

सभी मनुष्य मिलजुलकर रहें और सभी मिल बैठकर धन प्राप्त करे कोई न तो किसी का शोषण करे और न कोई किसी से ईर्ष्या, द्वष और घृणा करे। यही वैदिक राज्य की आदर्श कल्पना है।

वर्तमान युग में जब सर्वत्र नौकरशाही व्याप्त हो जब मानव जीवन पूर्णत राज्य के अधीन हो गया हो, जब व्यक्ति का सामाजिक धार्मिक और आर्थिक जीवन भ्रष्ट, गन्दा तथा दुर्व्यसनमय हो गया हो, तब क्या राम राज्य की स्थापना सम्भव है ?

जब व्यक्ति दु खी पीडित तथा हिंसित होता है, तभी राम और राम राज्य की याद आती है। सुख मे राम का स्मरण कोई नही करता।

सुख के बाद दु ख और दु ख के बाद सुख प्राप्त होता है। सुख-दु ख चक्र रूप मे घूमते हैं। अत नियमानुसार वर्तमान दु खी पीडित स सार में रावण राज्य समाप्त होकर रामराज्य की स्थापना उन सत्पुरुषो या सत्पतियो के द्वारा अवश्य होगी, जो सत्य की रक्षा तथा परसेवा के लिए ही जीवन धारण करते हैं।

स घा राजा सत्पति शूशुवज्जनो, रातहव्य प्रति य शासमिन्वति।
उक्था वा यो अभि गृणाति राधसा, दानुर अस्मा उपरा पिन्वते दिव ।

(ऋग्वेद १। ५४। ७)

वेदो मे सत्पुरुषो या सत्पतियो और परसेवको को ही विप्र और ऋषि कहा गया है—

ऋषि स यो मनुर्हितो विप्रस्य यावयत्सख ।

(ऋग्वेद १०। २६। ५)

इस प्रकार आर्यो का आदर्श विप्र राज्य की स्थापना है। वेदो के अनुसार विप्रराज्य वह है जिसमे सत्पुरुष या ऋषि सहस्त्रो प्रकार से राष्ट्र को समृद्ध करते हैं। विप्र राज्य में सुकृत्यो द्वारा राष्ट्र शक्ति की सदा स्तुति की जाती है। जिस राज्य की गर्व गाथा गाई जाती है वही उसकी सच्ची महिमा है। जो राजा अपनी गाथा स्वय गाता है वही सच्ची महिमा नही होती

(ऋग्वेद ८। ३। ४)

१ यजु० ३३। ८३, अथर्ववेद २०/१५४/२

(क्रमश)

पौष्टिकता के लिए गुणकारी टमाटर

टमाटर की विशेषता है कि टमाटर के अन्दर पाचन तत्व को सुक्ष्म बनाने वाले पौष्टिक तत्व विद्यमान हैं। हमें टमाटर की पौष्टिकता का अनुभव नहीं, अत लोग इसकी उपेक्षा करते हैं, किन्तु हमें उसके गुणों को जान लेना जरूरी है। टमाटर का उपयोग हम फल और सब्जी दोनो प्रकार से करते हैं। कच्चे हरे तथा पके दोनों प्रकार के टमाटरो से सब्जी स्वादिष्ट बनती है। टमाटर की कई प्रकार की चीजें सलाद, सूप, चटनी आदि।

टमाटर की रासायनिक रचना के अनुसार प्रति १०० ग्राम टमाटर मे ०.९ ग्राम प्रोटीन, ०.४ ग्रामवसा, ३.० ग्राम कार्बोहाईड्रेट आदि पोषक तत्व विद्यमान हैं इसमे विटामिन ए, विटामिन सी, कैलशियम, लौह आदि खनिज लवण भी प्रचुर मात्रा में उपस्थित हैं। प्रति १. ग्राम टमाटर से २० कैलरी ऊर्जा शरीर प्राप्त करता है दूसरी सब्जियो की अपेक्षा चूना अधिक होता है और हड्डियो को मजबूत करता है। लौहतत्व गर्भवती महिलाओ की लौह की कमी को पूरा करता है। इसमे अण्डे से दुगुना लौह तत्व होता है।

टमाटर बलवर्धक फल है यह शरीर की पाचनशक्ति मे वृद्धि करता है। शरीर के लिए विटामिन की आपूर्ति करके रक्त निर्माण की क्रिया को सुचारु गति देता है। सामान्य कमजोरी में यह पौष्टिकता से भरपूर आहार है। इसके नियमित सेवन से विटामिन सी की कमी से होने वाले रोगो जैसे जुकाम, स्कर्वी, रक्तस्राव, दन्त रोग आदि भयानक बीमारियो से बचा जा सकता है।

इसकी दूसरी विशेषता यह है कि इसमें निहित विटामिन ए नेत्र रोगो जैसे रतौंधी, नेत्र पटल की खुश्की, आखों की कमजोरी आदि मे औषधि का काम करता है। मिट्टी खाने वाले बच्चो को अधिकाश पाडू नामक रोग हो जाता है। इस रोग के कारण यकृत की कार्यक्षमता कम हो जाती है और शरीर में रक्त का अभाव हो जाता है। ऐसी स्थिति मे बच्चो को टमाटर का रस काफी लाभ पहुँचाता है। मधुमेह के रोगी के लिए भी टमाटर का सेवन उपयोगी है। इसमे प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध कैलशियम दातों की बीमारियो को दूर करता है जिनके मसूड़े कमजोर हो गये हों उन्हें दिन मे बार-बार टमाटर का रस २५ ग्राम पीना चाहिए।

खाना खाने से पहले लाल टमाटर का सेवन पाचन-तन्त्र को ठीक रखता है। भोजन शीघ्र ही पच जाता है तथा खट्टी डकारे पेट व सीने मे जलन भारीपन की शिकायत दूर हो जाती है।

टमाटर का रक्त शुद्धि मे भी विशेष स्थान है। अत टमाटर का नियमित सेवन चर्मरोग को दूर करता है। शरीर त्वचा इसके सेवन से मुलायम और कांतिवान बनती है। एक चौडा टुकड़ा काटकर चेहरे के काले दागो पर रगड़ने से दाग दूर हो जाते हैं। टमाटर के रस का सवेरे के समय नियमित सेवन त्वचा की खुश्की को दूर करता है।

एक व्यक्ति को एक दिन में अधिक से अधिक २५० ग्राम टमाटर का सेवन लाभप्रद है। सेवन करने से पहले उन्हें अच्छी तरह पानी मे धो लेना चाहिए।

कैंसर अस्पताल, न्यूयार्क मे मरीजों को टमाटर खाने व उसका जूस पीने के लिए दिया जाता है। बच्चो के लिए टमाटर का रस संतरे के रस से भी अच्छा है।

कुछ चुने हुए रोगो मे इसका उपयोग नीचे बताये अनुसार करना चाहिए।

कब्ज नित्य ५० ग्राम टमाटर खाने से दूर होती है।

कृमि नाशक भूखे पेट लाल टमाटर, काली मिर्च, नमक मिलाकर खाने स कृमि मर जाते हैं।

छाले टमाटर खाने से छाले नहीं पडते हैं और टमाटर का रस पानी में मिलाकर कुल्ले से छाले मिट जाते हैं।

मोटापा मोटापा कम करने के लिए यह बहुत उपयोगी है। शरीर से फालतू चर्बी को बाहर निकालता है और आतो को साफ रखने के साथ-साथ अन्दर की गन्दगी निकाल देता है।

पीलिया टमाटर का रस एक गिलास नित्य पीने से पीलिया ठीक हो जाता है।

ज्वर ज्वर से रक्त मे हानिकारक पदार्थ बढ़ जाते हैं। टमाटर का सूप इन पदार्थों को निकाल देता है। इससे रोगी को आराम मिलता है। यह सामान्य ज्वर मे ही देना चाहिए।

चर्मरोग इसका रस दिन मे ३ ४ बार पीने से लाभ होता है। यह रक्त साफ करता है और कुछ सप्ताह नित्य टमाटर का रस पीने से चर्म रोग ठीक हो जाते हैं

खुजली टमाटर का रस एक चम्मच, नारियल का तेल दो चम्मच मिलाकर मालिश करे, फिर गर्म पानी से स्नान करें। खुजली मिट जाएगी।

गठियावात टमाटर इस रोग के लिये बहुत उपयोगी है।

मधुमेह इस रोग के मरीजो को टमाटर तथा खीरा सुबह सेवन करना बहुत उपयोगी है।

सूखारोग बच्चो का सूखा रोग कच्चे लाल टमाटर खाने से ठीक हो जाता है।

सावधानियां टमाटर खाने के बाद पानी नहीं पीना चाहिए, क्योंकि इसमे खट्टा तत्व होता है। वह पतला हो जाता है और पेट मे गड़बड़ हो सकती है।

तेज खासी वाले को कच्चा टमाटर नहीं लेना चाहिये और पथरी रोग वाले को टमाटर बिल्कुल नही लेना चाहिए। जो लोग गठिया वात, मांसपेशियो के दर्द अथवा सूजन से पीड़ित हैं, उन्हे टमाटर का इस्तेमाल वर्जित है।

महर्षि दयानन्द के विचारो की प्रासंगिकता

—मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

१९ वीं शताब्दी में हुए अनेक वैचारिक क्रान्तिकारियो तथा समाज सुधारकों में महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्थान विशिष्ट रूप से माना गया है। महर्षि दयानन्द ने जिन क्रान्तिकारी सूत्रों का भाष्य कर जन-साधारण के सम्मुख प्रस्तुत किया, वे आज भी पहले के समान प्रासंगिक है। इसका मुख्य कारण यह है कि महर्षि दयानन्द ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा द्वारा मानव जाति को 'मनुर्भव' का सन्देश दिया। आज से डेढ़ शतक पूर्व वे ही ऐसे महान चिन्तक थे, जिन्होंने विश्व की सम्पूर्ण मानव जाति को 'मनुर्भव' अर्थात सर्वप्रथम मनुष्य बनो। यदि मनुष्य का शरीर पाकर हम मनुष्य' नहीं बने, तो परमात्मा का यह सर्वोत्कृष्ट चमत्कार व्यर्थ ही जाएगा। महर्षि का कथन था—हमे राष्ट्र भेद से ऊपर उठकर सर्वप्रथम सम्पूर्ण विश्व को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की दृष्टि से देखना होगा। दार्शनिक दृष्टि से भी 'आत्मा' सदैव लिंग, रूप, रंग आदि से रहित होती है। आत्मा के ऊपर आच्छादित यह शरीर ही कुछ भिन्नता का द्योतक होता है। शरीर के आकार-प्रकार, रूप, रंग, भेद, नस्ल तथा देश की भिन्नता के कारण आत्मा के स्वरूप में कोई अन्तर नहीं होता। इसलिए हम सभी को अपने इस महान वैदिक सिद्धांत को स्वीकार करते हुए 'मानव एकता' के सिद्धांत मे सतत विश्वास करना चाहिए। तभी हम सच्चे मनुष्य कहलाने के अधिकारी होंगे।

आज मानवाधिकार की बहुत चर्चा है। संयुक्त राष्ट्र संघ मे तो अभी कुछ समय पहले मानवाधिकारों की रक्षा की चर्चा हुई है, किन्तु महर्षि दयानन्द ने १५० वर्ष पूर्व ही वेदो के आधार पर विश्व के सभी स्त्री-पुरुषो के सर्वांगीण विकास तथा प्रगति के मूल भूत सिद्धांतो का प्रतिपादन वेद के आधार पर स्थापित कर प्रचारित किया था। महर्षि दयानन्द का कथन था कि 'परमात्मा की इस बनाई हुई प्रकृति के सभी तत्त्वो पर सम्पूर्ण मानव जाति का पूरा पूरा अधिकार है। वेद का ज्ञान मानव मात्र के लिए परमात्मा की ओर से दिया गया है। जिस प्रकार पंच तत्त्वो के उपयोग का अधिकार मानव मात्र को है। ठीक वैसे ही वेदों का अध्ययन-अध्यापन मे स्त्री पुरुष का भेद भाव कर पक्षपात करते हैं, वे मानव जाति और ज्ञान के कट्टर शत्रु हैं। ऐसे मानवद्रोही को समाज मे स्थान नहीं मिलना चाहिए।

उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश मे स्वराज्य की घोषणा के साथ ही साथ 'सुराज्य' की स्थापना पर बल दिया था। राजनैतिक स्वराज्य चाहे सत्ता का बदलाव हो किन्तु 'सुराज्य' के अन्तर्गत स्वतन्त्र देश के नागरिकों को पूरी आत्म स्वतन्त्रता के साथ जीवित रहने का अधिकार है। स्वामी जी का कथन था कि विकारो से ग्रस्त व्यक्ति जब स्वयं वासनाओं से स्वतन्त्र नहीं है, तब उसे चाहे कितनी राजनैतिक स्वतन्त्रता प्रदान कर दी जावे। वह अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा कदापि नही कर सकता। मानसिक विकारो से स्वतन्त्र व्यक्ति ही किसी स्वतन्त्र देश का सच्चा नागरिक हो सकता है। आज देश में जिन आर्थिक, सामाजिक तथा चारित्रिक दुर्गुणो का वास दिखाई दे रहा है इसका मूल कारण ही यह है कि हमने इन विविध दुर्गुणो को जीवन से दूर करने का प्रयास ही नही किया। इसका परिणाम यह निकला कि आज देश अपने साध्य' को भूल कर साधनो' मे ही उलझ कर रह गया है। वह उपभोक्ता संस्कृति की कठपुतली बन गया है।

शिक्षा-प्रचार के आधार पर जिस कथित समाजवाद की चर्चा बहुत जोरों पर सुनाई पड रही है, उस शिक्षा के मूल्य मे मानवता' की रक्षा उन्नयन तथा रक्षा की झलक कहीं भी नही दिखाई देती है। यह देश का दुर्भाग्य है कि आज शिक्षा के नाम पर मात्र 'अक्षर ज्ञान' तथा उपाधि वितरण करना रह गया है। भारतीय दृष्टि से शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा मनुष्य को उसके अन्दर बैठा 'मनुष्यत्व' दिखाया जाता है। आज तो जो जितना अधिक शिक्षित कहलाता है, वह उतना ही अधिक ज्ञान-शून्य, स्वार्थी तथा असामाजिक बनता जा रहा है। महर्षि के विचारों के अनुसार विश्व के सभी बालक-बालिकाओ को शिक्षा प्राप्त करने का जन्मजात और मौलिक अधिकार है। तभी वे सफल नागरिक बन सकेंगे।

सामाजिक दृष्टि से महर्षि दयानन्द के विचार आज भी अति प्रासंगिक हैं। समाज ऊंच-नीच, छोटे-बड़े, छूत-अछूत तथा सम्पन्न विपन्न को लेकर बहुत ही असन्तोष है वस्तुतः इस प्रकार विचारो का आधार मानव-मूल्य को कभी नहीं हुआ। समाज मे समादर तथा समरसता के विचारो की स्थापना वैदिक कालीन रही है और यही सही समाज व्यवस्था है। यह देश का दुर्भाग्य है कि भारत के अर्वाचीन इतिहास को लेकर समाज में अनेक कुरीतियों, रूढियो तथा भ्रष्ट परम्पराओ का समर्थन किया जाता है। इस अर्वाचीन युग की मान्यताओ का छोड़कर यदि वैदिक कालीन समाज व्यवस्था पर गहराई से विचार करें, तो हमे भारतीय संस्कृति और सभ्यता का सही ज्ञान हो सकता। तभी हमे आगे प्रगति का सही मार्ग दिखलाई पड सकता है

इस प्रकार आज के इस कम्प्यूटरी युग मे भौतिकवाद की भयंकर अग्नि की लपटो से मानव जाति की रक्षा करना है। अन्यथा न यह मानव रहेगा और न इस मानव के रहने के लिए यह पृथ्वी मानवता के मूल्यो की रक्षा, संवर्धन तथा प्रगति के लिए महर्षि दयानन्द के विचारो की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम अपना दृष्टिकोण पूर्वाग्रह रहित तथा नये ज्ञान की प्राप्ति की ओर लेकर आगे बढें। तभी हम पृथ्वी के महान देश भारत की गौरवमयी प्राचीन संस्कृति वैदिक मूल्य एवं सभ्यता की रक्षा करने में समर्थ हो सकेंगे।

पता : 'मुकिरण'
अ-१३, सुदामा नगर, इन्दौर (म० प्र०)

रामनवमी पर्व मनाया गया

दिनाक २८ ३ ९६ को आर्य समाज मन्दिर खण्डवा मे रामनवमी पर्व उल्लासपूर्ण वातावरण मे मनाया गया। आचार्य अमृतलाल जी शर्मा के पौरोहित्य मे हवन सम्पन्न हुआ श्री वेदपाल जी आर्य ने भजन एव भगवान राम के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का सचालन मन्त्री लक्ष्मीनारायण भार्गव ने किया कायक्रम की अध्यक्षता डा० अक्षयकुमार वर्मा नै की मुख्य वक्ता के रूप मे। डा० श्रीकान्त जोशी ने अपने उद्बोधन मे कहा कि इन बिगडी हुई परिस्थितियो मे श्रीराम का चरित्र ही आदर्श रूप मे अपनाकर समाज को दिशाहीन होने से बचाया जा सकता है। पण्डित अमृत लाल जी शर्मा ने अपने वक्तव्य मे कहा कि ईश्वर की प्राप्ति आस्तिकता से होती है। मनुष्य को सत्यप्रिय होना चाहिये विद्वानो की वाणीको क्रियान्वित किया जानाचाहिये आय समाजियोको जोडने का काम करना चाहिये। श्री जगनवार सा० सयुक्त सचालक शिक्षा ने भी कहा कि समाज के किसी एक बच्चे को सहयोग देकर आगे बढाना ही समाज की सच्ची सेवा होगी। कायक्रम के सयोजक श्रीकृष्णराव भट्ट ने भी कायक्रम को सफल बनाने मे भरसक प्रयत्न किया, आभार श्री कृष्णलाल जी आय प्रधान ने व्यक्त किया शान्ति पाठ के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

गीत

नव जागृति हो आर्य जनों में
फिर से हम नव जीवन लाए।

दयानन्द जैसे ऋषिवर के हम सब हैं सेनानी।
तुमने लिखी सदा रक्त से सत्यधर्म की अमर कहानी।
लेखराम श्रद्धानन्द जैसे हुए महानतम बलिदानी।
बिस्मिल भगतसिंह वीरो ने दिया राष्ट्रहित पुण्य जवानी।

इन्ही शहीदो के बलि पथ पर,
हम फिर कदम बढ़ाए।
वेदो के प्रतिकूल बना हा यह सारा ससार।
बढ़ी तामसी वृत्ति धरा पर मचा हुआ है हाहाकार।
शोषित उत्पीडित हैं जन जन बढा हुआ अति अत्याचार।
नहीं दिखाई देता किंचित वसुन्धरा पर आर्य विचार॥
वेदो की शुचि रश्मि प्रखर सी
पुन धरा पर चलो उगाए॥
आभा से पावन वेदो की वसुधा हो आलोकित।
इस जगती का हर मानव हो हर्षित पुलकित व प्रमुदित।
दूर हटे यह अनय अबे । सत्य नहीं हो विचलित।
काम हमारे हो रजोए सारी मानवता का हित।
निरत वेद पथ पर हो सब जन वैदिक युग फिर भू पर लाए।
नव जागृति हो आर्य जनो मे फिर से हम नव जीवन लाए॥

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

जन्म दिन मनाने की विधि

परिवार के प्रत्येक सदस्य का जन्म दिन मनाने की प्रथा चिरकाल से चली आ रही है। इस शुभ अवसर पर प्रात काल स्नान के बाद नये वस्त्र पहना कर ईश्वर का धन्यवाद किया जाता है। इसके उपरान्त पात्र को आशीर्वाद देकर दीर्घ आयु की कामना के साथ उपहार दिये जाते हैं। किन्तु वर्तमान युग मे पाश्चात्य सभ्यता के उपासक पात्र की आयु की सख्या के अनुपात मे मोम बत्तिया जलाते हैं बाद मे सब मिलकर मोम बत्तिया बुझा कर खाने पीने और उपहार आदि का कार्यक्रम किया जाता ह बत्ती जलाकर स्वय बुझा देना सर्वमान्य ।िी है।

इस शुभ अवसर को परिवार के सब सदस्यो का मित्र मण्डली सहित मिलकर मनाया जाना राष्ट्रीय एकता मे सहायक होगा। आपसी भेदभाव को मिटा कर वास्तविक प्रेम का सृजन करेगा। इस समारोह मे हिन्दू, मुस्लिम कृश्चन पारसी यहूदी आदि सब सम्प्रदायो के लोग अथवा राजनीतिक दलों के सदस्य जिन–जिन का उस परिवार से सम्पर्क है प्रय आमत्रित किये जाते हैं अत यह एक सामाजिक समारोह हो जाता है।

सगठन की दृष्टि से अधिक खान–पान सजावट और आडम्बर से ईर्ष्या और द्वेष आदि बढते है निन्दा और स्तुति को स्थान मिलता है और महगाई के कारण कम से कम लोगो को आमत्रित किया जाता है। इस कटौती के कार्य मे कई घनिष्ठ मित्र और सबधी या तो छूट जाते है या भूल जाते है। परिणाम मे द्वेष बढने के अतिरिक्त आपस का मिलना जुलना बन्द होकर सामाजिक वृत छोटा हो जाता है और एक प्रकार के सम्प्रदायवाद और उपभोक्तावाद की सृष्टि होती है। अत अधिक खान–पान सजावट और उपहारो की प्रथा कम कर देना या धीरे–धीरे बन्द कर देना श्रेयस्कर होगा। ऐसे शुभ अवसर पर ईश्वर प्रार्थना आशीर्वाद मेल–जोल अथवा वेदो का धर्म पुस्तको के आधार पर आपस मे या किसी विद्वान का प्रवचन उत्तम प्रीति भोज और प्रसाद होगा। यदि आवश्यक हो तो हल्का सस्ता और कम मात्रा मे सब के प्रति बराबर मात्रा का प्रसाद वितरण किया जाये। इस वितरण मे पक्षपात न हो। यह प्रसाद ऐसा हो जो सामान्य आर्थिक स्थिति का व्यक्ति भी वितरण कर सके। यह एक यज्ञ है इस समारोह का मुख्य उद्देश्य इसे यज्ञीय बनाना हो।

जन्म दिन पर ईश्वर प्रार्थना

हे पिता ! आज हम सब मिलकर श्री .... के जन्म दिवस पर एकत्रित हुए हैं। हम सबकी इनक लिए हार्दिक शुभ कामनाए हैं। आप सर्वशक्तिमान है ज्ञान का भडार है हम सब की आप से विनीत प्रार्थना है कि आप इन्हे स्वस्थ दीर्घ जीवन प्रदान करे। इनके चक्षु १०० वर्ष तक स्वस्थ रहे यह अपने सहवासियो को स्वाध्याय से अर्जित ज्ञान द्वारा सन्मार्ग ० गचरण की प्रेरणा देते रहे। यह १०० वर्ष तक हर प्रकार से समर्थ रहकर सुनते रहे और बुराइयो स बचते रहे। इनकी वाणी मे मिठास हो औचित्य हो और प्रभाव हो। यह सत्य वद प्रियम् वद का आचरण करके ससार के प्राणियो का उपकार करते ३ इनका जीवन सात्विक हो। यह अपना खान–पान शुद्ध रखते हुए उचित मानसिक और शारीरिक व्यायाम द्वारा अधिक से अधिक काल तक स्वस्थ रहे अथवा जीवन के हर स्तर पर सबको शुचिता का पाठ पढाते रहे इनकी कथनी और करनी मे कोई अन्तर न हो यह सदा स्वावलम्बी रहे। अपने जीवन काल मे इन्हे कभी किसी दूसरे व्यक्ति पर निर्भर न रहना पडे इनके सब अग सदा क्रियाशील रहे यह सदा प्रसन्न चित्त रहे अपने शुभ कर्मो के प्रभाव से और ब्रह्मचर्य के नियमो के पालन द्वारा यह १०० वर्ष से अधिक जीवित रहे तो इनकी सहन शक्ति बनी रहे अथवा वृद्ध अवस्था मे भी यह अपने सदुपदेशो द्वारा जनता को प्रभावित करके सन्मार्ग दिखाते रहें।

ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति

> **हिन्दी पूरे राष्ट्र को जोड़ती है –**
>
> **महामहिम डॉ. शकरदयाल शर्मा**
>
> *१५ मार्च के दिन हिन्दी तर भाषी हिन्दी लेखकों को केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा सम्मानित करने वाले कार्यक्रम में राष्ट्रपति डॉ. शकरदयाल शर्मा ने कहा हिन्दी अनेक भाषाओं को जोड़ने वाला सेतु है। देश का प्रत्येक नागरिक हिन्दी अपनाए क्योंकि यह भाषा उसे पूरे राष्ट्र से जोड़ती है।*

आर्दश विवाह

दिनाक १४ अप्रैल १९९६ को सुप्रसिद्ध साहित्यकार एव वैदिक प्रवक्ता श्री भगवान देव चैतन्य जी के सुपुत्र अखिलेश भारती का शुभ विवाह कुमारी सुमन के साथ पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

विवाह सस्कार आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान वयोवृद्ध श्री पण्डित हरिशचन्द्र शास्त्री जी (जम्मू) ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर स्थानीय विधायक ठाकुर शेर सिंह नगर पालिका उपाध्यक्ष श्री हुसल लाल शर्मा के अतिरिक्त अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। वैदिक विद्वानो श्री कृष्ण लाल आर्य श्री इन्द्रजीत देव श्री केवल राम भ्राता श्री कृष्ण चन्द्र आर्य आदि ने वर–वधु को अपना आर्शीवाद दिया।

विवाह के अवसर पर किसी प्रकार के दहेज आदि का लेन–देन तथा अन्य लोगो से भेट आदि स्वीकार नहीं की गई। स्थानीय लोगो पर इस वैदिक विवाह सस्कार का बहुत अच्छा एव प्रेरणादायक प्रभाव पडा।

आर्य समाज परली (महाराष्ट्र) के तत्त्वावधान में स्वामी श्रृद्धानन्द गुरुकुल की स्थापना

आर्य समाज परली बैजनाथ जिला बीड महाराष्ट्र के अन्तर्गत स्वामी केवलानन्दजी सरस्वती (प्रभात आश्रम मेरठ) के कर कमलो से कुछ ही दिनो पूर्व सम्पन्न हुआ। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से सलग्न इस श्रृद्धानन्द गुरुकुल के आचार्यत्व का पदभार शिवमुनि वानप्रस्थी (भूतपूर्व मयाचारी गुरुजी) सम्भालेगे। श्री शिवमुनी जी ने सस्कृताध्यापन का कार्य किया है। गुरुकुल स्थापना समारोह मे ही स्वामी केवलानन्द जी से उन्हे वानप्रस्थ दीक्षा गयी। महाराष्ट्र प्रान्त मे यह श्रृद्धानन्द गुरुकुल सभी सुविधाओ एव व्यवस्था से परिपूर्ण रहेगा। उपरोक्त समारोह चैत्र प्रतिपदा दिनाक २० मार्च १९९६ को बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

प्रातः कालीन भ्रमण (सैर) श्रेष्ठ औषधि है।

स्वस्थ जीवन के लिए सतुलित आहार आवश्यक व्यायाम तथा उचित आराम तीनो ही जरूरी है। तीनो का मेल साधकर जो व्यक्ति अपना दैनिक कार्य करता है वही स्वस्थ रह सकता है।

आधुनिक युग मे हर तरफ विकास हो रहा है। चिकित्सा-विज्ञान ने काफी तरक्की की है पर रोगो मे कोई विशेष कमी नही हुई वे भी उतनी ही तेजी से बढ रहे हैं। हर व्यक्ति अपने स्वास्थ्य के लिए चिन्तित तो रहता ही है मगर कर कुछ नही पाता। इसका कारण है उसके पास समय का अभाव। वह बीमारियो से घिरा रहता है और वह दवाइयो का प्रयोग कर अपने को स्वस्थ रखने की कोशिश करता है।

क्या कभी आपने इस बात पर गौर किया कि बीमारियो से बचाव और उनकी चिकित्सा का एक अनूठा साधन है – व्यायाम। व्यायाम भी कइ तरह के होते है परन्तु उन सबमे सुलभ व्यायाम है घूमना। घूमने से हमारा तात्पर्य सिर्फ सैर करना ही नही बल्कि तेजी से चलना है। हफ्ते मे ५ दिन तेज गति से २० मिनट तक चलना चाहिए। २० मिनट के अन्दर तीन किलोमीटर तक चलना उचित है। व्यायाम से पहले शरीर को पाच मिनट तक गरम करने का अभ्यास भी आवश्यक है और व्यायाम के पश्चात ५ मिनट तक शरीर को पूण आराम भी मिलना चाहिए।

साईकल चलाना व तैराकी भी अच्छे व्यायाम परन्तु अचानक ही कोई व्यायाम जिसका अभ्यास न हो शुरू नही करना चाहिए। धीरे-धीरे ही अभ्यास कर व्यायाम का समय बढाना चाहिए। अत्यधिक बल लगाने वाले ऐसे व्यायाम जो आपका शरीर आसानी से नही कर पा रहा हो नही करने चाहिए। उससे रक्तचाप व नब्ज की गति तेज हो जाती है और दिल का दौरा पडने की सभावना भी बढती है। हृदय रोग से पीडित व्यक्ति के लिए भी तेजी से घूमने वाला व्यायाम लाभकारी होता है मगर इससे पहले उन्हे अपने विशेषज्ञ से राय लेकर टी मग टी आवश्यक करवा लेना चाहिए ताकि यह पता लग सके कि उनका हृदय व्यायाम के बोझ को सह सकता है कि नहीं।

व्यायाम करने पर हृदय जितनी बार सिकुडता है उतनी बार शरीर मे अधिक रक्त भेजता है।

विद्या विभूषिता वेद कुमारी जी का देहावसान

वेद कुमारी विद्या विभूषिता हाथरस कन्या गुरुकुल की स्नातिका जो श्री वेदव्रत जी अयोध्या गुरुकुल के स्नातक तथा त्यागानन्द के शिष्य थे और स्वतन्त्रता सेनानी भी थे के साथ १९५२ मे नवाब गज मे ब्याह कर आई थी। वेदव्रत जी तो १५ वर्ष पूर्व ही स्वर्गगत हो चुके थे परन्तु वेद कुमारी का देहावसान ३० मार्च १९९९ को नवाब गज मे ही हुआ ३१ मार्च को पूर्ण राष्ट्रीय सम्मान सहित उनकी अन्त्येष्टि की गई जिसमे गोण्डा के स्थानीय जिलाधीश आदि ने भी उनका माल्य आदि से अन्तिम विदाई दी। ये सुप्रसिद्ध दक्षिणात्य डा विश्वमित्र जी (श्री सचिदानन्द सरस्वती बेगलूर) की सुपुत्री तथा सुप्रसिद्ध विश्वविख्यात डा सत्यपाल शर्मा (अमेरिका) डा श्रुतिशील शर्मा श्री डा यज्ञमित्र शर्मा (लन्दन) तथा आर्य वेद विदुषी डा उषा शर्मा की बहन थी। इनकी कोइ सन्तान नही थी। उन्होने फरवरी मे ही आकर प्रान्तीय महिला सभा के तत्त्वावधान में चलने वाले आर्य कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर में अपनी छोटी बहन आर्य वेद विदुषी डा उषा शर्मा के साथ रहकर गुरुकुल की सेवा करनी स्वीकार की थी परन्तु ईश्वर को कुछ और स्वीकार था। उनको अन्त मे पीलिया हो गया था जिसके कारण उनकी मृत्यु हो गई। इससे गुरुकुल से सबधित सभी जनो को अत्यन्त मानसिक कष्ट हुआ तथा आर्य समाज को भी क्षति हुई। सभी आर्य समाजो की ओर से यह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा उनकी सद्गति के लिए प्रार्थना करती हुई ईश्वर स प्रार्थना करती है कि दिवगत आत्मा इससे भी श्रेष्ठ कुल मे पुन जन्म लेकर इस आर्य वैदिक सिद्धात के प्रचार प्रसार के कार्य को आगे बढा सके।

डा सच्चिदानन्द शास्त्री सभा मत्री

(पृष्ठ १ का शेष)

बनवासी वैचारिक ....

बाद उनकी धर्म पत्नि माता प्रेमलता जी ने इन गतिविधियो को शास्त्री जी की स्मृति मे जीवित रखने मे कोई कसर नहीं छोडी।

दयानन्द सेवाश्रम सघ का मुख्य कार्य पूर्वी भारत और मध्य भारत के उन आदिवासी क्षेत्रों में वैदिक विचार धारा का प्रचार करना है जहा वास्तव मे अभी भी औपचारिक शिक्षा नाम की चीज नहीं पहुच पाई है। पूर्णत निरक्षर और दुनिया से बेखबर आदिवासी जातियो की महिलाओ और बच्चो का हाथ पकड-पकड कर माता प्रेमलता जी उन्हे वैदिक विचारो से अवगत कराने तथा देश की मुख्य धारा से जोडने के लिए प्रयासरत है।

स्व श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री ने इन आदिवासियो के लिए दिल्ली मे भी शिविर लगाने का कार्यक्रम प्रारम्भ किया। जिसमे उन पर धन का किसी प्रकार से भी कोई बोझ नहीं डाला जाता। शिविर व्यय की जिम्मेवारी रानी बाग आर्य समाज की धार्मिक जनता सदैव अपने कधो पर लेती रही है।

पूर्व की भाति इस वर्ष भी माता प्रेमलता जी तथा दयानन्द सेवाश्रम सघ के श्री वेदव्रत मेहता जी के द्वारा जारी एक विज्ञप्ति मे इस वर्ष भी १५ मई से २ जून तक के वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर की घोषणा की गयी है। जिसमे गतिविधियो की रूप रेखा मुख्यत निम्न प्रकार से है।

१ प्रतिदिन प्रात पाच बजे उठना।
२ प्रात ५.३० बजे यज्ञ मे अवश्य उपस्थित होना।
३ दिन-भर के सभी कार्यक्रमों मे उपस्थित रहना।
४ शिविर मे भोजन का प्रबन्ध आर्य समाज रानी बाग के सदस्यो द्वारा होगा।
५ वापिस जाने का मार्ग व्यय प्रत्येक शिविरार्थी को दिया जाएगा।
६ आप केवल हल्का बिस्तर एव अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओ के अनुसार कम से कम सामान ही लाए।
७ इस वर्ष शिविर की समाप्ति पर दिल्ली-दर्शन के स्थान पर हरिद्वार दर्शन का विशेष कार्यक्रम रहेगा।
८ अन्त मे वनवासी सम्मेलन का आयोजन भी किया जाएगा।

डा सच्चिदानन्द शास्त्री सभा मत्री

टी.वी. देखना भी नशा

बच्चों में शारीरिक और मानसिक विकृतियां पैदा होने का खतरा

बहुत नजदीक से या लगातार देर तक टेलीविजन देखने से बच्चो को मिरगी और मोटापा जैसी शारीरिक और मानसिक विकृतिया पैदा हो सकती है। प्रसिद्ध मनोचिकित्सक डा नीना वोहरा डा मनारजन सहाय और डा नीलम कुमार वोहरा के अनुसार काफी निकट से और देर-देर तक टी वी देखने वाले बच्चे मिरगी चिडचिडापन अनिद्रा तनाव और अवसाद जेसी मानसिक बीमारियो के शिकार हो सकते है जबकि डा एम सी श्रीवास्तव और डा यतीश अग्रवाल का मानना है कि टी वी सस्कति के कारण बच्चो मे मोटापा जैसी शारीरिक विकृतिया पैदा हो रही है।

मनोवैज्ञानिक का कहना है कि टी वी पर दिखाए जाने वाले दृश्य बच्चो के अवचेतन मे गहराई से बैठ जाते हैं और इसका असर किसी भी समय हो सकता है। मनोवैज्ञानिको के अनुसार टी वी का सर्वाधिक दुष्प्रभाव बच्चो पर पडता है क्योकि वे तर्क-वितर्क किए बिना टी वी के सदेशो और दृश्यो को सही मान बैठते है और उनकी नकल करते हैं।

आस्ट्रेलिया के शोधकर्त्ता के अनुसार टी वी से निकलने वाली खास किस्म की किरणे दिमाग की कार्यप्रणाली बद कर देती है। बच्चो का दिमाग टी वी विकिरण सहन नहीं कर पाता और जब एक बार दिमाग सुन्न हो जाता है तो आखे टी वी पर्दे पर टिक जाती हैं। एक तरह से बच्चा टी वी देखते समय सम्मोहित हो सकता है। इसके बाद बच्चा टी वी देखता रहता है भले ही उस पर किसी भी तरह के कार्यक्रम क्यो न आ रहे हो।

टी वी पर रात-रात भर कार्यक्रम प्रसारित होते रहते हैं और बच्चे देर रात तक टी वी देखते रहते हैं। इस कारण वे ठीक से सो नहीं पाते जिसका प्रभाव उनके दैनिक जीवन प्रक्रिया पर पडता है। टी वी के चक्कर मे बच्चे पढाई तो क्या खाना तक भूल जाते है। इस कारण ऐसे कई बच्चे कब्ज और अनिद्रा के शिकार हो जाते है और उनका स्वास्थ्य गिरने लगता है।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज मनिहारी टोला

डाकघर फुदकीपुर जनपद साहेबगज बिहार का वार्षिकोत्सव दिनाक २०३९६ से २८३९६ तक सोल्लास सम्पन्न हुआ। इसमें स्वामी वेद व्रतानन्द श्री सीताराम शास्त्री श्रीमती विजयावती आर्या श्री रमेशचन्द्र आर्य जयपाल सिह एव श्री सत्यप्रकाश आर्य के भजनोपदेश हुए। इसमें योगार्षि नरेन्द्र ब्रह्मचारी के ८ घण्टे की भूमिसमाधि विश्वकल्याणार्थ थी।

आर्य समाज रिठौली बदायू का वार्षिकोत्सव २५ से २७ मई ९६ को बडे धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस यज्ञ का आयोजन श्री स्वामी क्राति वेष के सानिध्य मे सम्पन्न होगा।

दिनाक २७ मई को आर्य कुमार परिषद का गठन भी किया जायगा और समाप्त प्राय आर्य कुमार परीषद को पुर्नजीवित कर परिषद की परीक्षायें भी शुरू की जाएगी। श्री योगेश कुमार आर्य चन्दौसी का आयोजन सफल बनाने मे विशेष योगदान हैं। क्षेत्रीय-प्रान्तीय समाजे मे भाग ले।

आर्य समाज लैन्सडौन की हीरक जयन्ती का आयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा गढवाल के तत्वाधान मे विगत वर्षों की भॉति इस वर्ष १ से ३ जून ९६ तक नरेन्द्र क्लब लैन्स डौन म मनाया जाना निश्चित हुआ है। जिले की आर्य जनता से निवदन ह कि वह इस समारोह का तन-मन- धन देकर सफल बनाएँ।

आर्य समाज भदर्वोघुर, आर्य नगर (अमारा) का प्रथम वार्षिकोत्सव ८ से १० जून तक बडी ही धूम-धाम एव हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है जिसमे सर्व श्री स्वामी रामानन्द जी मौहर स्वामी वेदानन्द तीर्थ जालौन प आशाराम जी भजनोपदेशक एव धर्नुर्धर बिजनौर प लक्ष्मी शकर द्विवेदी हमीरपुर श्री रणधीर जी भजनोपदेशक बकरौली श्री रामसेवक सगीत मास्टर मौहर ब्र आदित्य कुमार व्यायाम शिक्षक हॉसी एव दूर-दूर से साधू सन्त व विद्वान महानुभाव पधार रहे हैं। अत आप सभी धर्म प्रेमी सज्जनो से विनम्र प्रार्थना है कि यज्ञ एव उत्सव मे पधार कर धर्म लाभ उठाये। तथा तन-मन-धन से सहयोग देकर पुण्य के भागी बने।

उत्सव से पूर्व ३६९६ से ७६९६ तक नित्य दोनो समय चतुर्वेद शतकम एव गायत्री महायज्ञ होगा। जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारी वेद पाठ करेगे।

७६९६ को सुबह (हवन) यज्ञ के बाद विशाल शोभा यात्रा एव नगर कीर्तन का आयोजन किया जाएगा। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम के सयोजक एव मच सचालक पुरोहित श्री रामसुफल शास्त्री सम्वाददाता स्वसी होगे।

आर्य समाज राजापुर बर्दिया (नेपाल) का १८ वॉं वार्षिकोत्सव १३ से १६ मार्च तक आर्य समाज मन्दिर के प्रांगण में उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस समारोह को सफल बनाने हेतु आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती (मथुरा) भजनोपदेशक प आशाराम आर्य (गाजियाबाद) तथा भजनोपदेशिका बहन धर्मशीला आर्या (मुजफरपुर बिहार) ने अपने-अपने उपदेशो के माध्यम से अन्धकार मे रह रही जनता को प्रकाश का मार्ग दर्शाया।

इस समारोह मे यज्ञ भजन प्रवचन के अतिरिक्त महिला सम्मेलन गौ रक्षा सम्मेलन वेद सम्मेलन का आयोजन हुआ। इसके अतिरिक्त बहन कुमारी आशा स्नातिका कन्या गुरुकुल सासनी हाथरस के भजन व व्याख्यान के साथ समारोह का समापन हुआ।

आर्य समाज मुम्बई (काकडवाडी) का १२२ वा वार्षिकोत्सव २० से २४ मार्च तक भव्य समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सामवेद पारायण महायज्ञ का भी आयोजन हुआ जिस मे असख्य श्रद्धालुओ ने भाग लिया।

वेद एव वैदिक सस्कृति के समाजोत्थान करने वाले सदेशो पर विशद विवेचन करते हुए डा वागीश आचार्य एव डा सोमदेव शास्त्री ने प्रेरणादायक प्रवचन दिये।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन १२२ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आयसमाज की स्थापना की थी इस सन्दभ म आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई तथा महर्षि द्वारा म प्रथम स्थापित आर्य समाज काकडवाडी के सयुक्त तत्वाधान मे २० मार्च को आर्य समाज का स्थापना दिवस भी आयोजित हुआ जिस मे श्री ओकारनाथ आय श्री मिठाईलाल सिह प रामदत्त शर्मा श्रीमती लज्जा रानी गोयल आदि आर्य नेताओ तथा विद्वानो ने आर्य समाज की विचार धारा के विस्तार के लिए उदबोधन दिया। इस अवसर पर श्री मेघराज गुप्ता ने वानप्रस्थ दीक्षा ली तथा सत्यभिक्षु नाम रखकर सत्यधर्म के प्रचार का व्रत लिया।

आर्य समाज के प्रधान श्री झाऊलाल शर्मा तथा श्री कर्सनदास राणा ने आये हुए विद्वानो सन्यासियो एव विशिष्ट अतिथियो का स्वागत किया तथा मत्री श्री राजेन्द्र नाथ पाण्डेय ने कार्यक्रम की सफलता के लिए समस्त जनसमूह कार्यकर्त्ताओं विद्वानो का धन्यवाद ज्ञापन किया।

आर्य समाज आरा का १०४ वा वार्षिकोत्सव दिनाक ६४९६ से ८४९६ तक लगातार ४ दिनो तक रामलीला मैदान मे मनाया गया। ध्वनि विस्तार यत्रो द्वारा सारा शहर वेदध्वनी से गुन्जायमान होता रहा। बाहर से आये विद्वान प ज्ञानेश्वर भारती जी ने मार्मिक ढग द्वारा तर्क से सिद्ध कर बताया कि एक वेद ही दुनिया का धर्म ग्रन्थ है। रामायण कुरान बाईबल इत्यादि जितने ग्रन्थ है वह सब एक इतिहास है। मजहबी धर्म ग्रन्थ मात्र एक वेद है।

इस अवसर पर शोभा यात्रा निकाली गई जिसमे आर्य युवक हाथी पर ओम ध्वज लेकर तथा हजारों व्यक्ति शहर में घूम-घूम कर वैदिक धर्म की जय-जय कार से शहर को गुन्जायमान कर रहे थे। यह सभी कार्यक्रम प्रधान कामता प्रसाद शर्मा आर्य के नेतृत्व मे सम्पन्न हुए।

वेद कथा का आयोजन

आर्य समाज कठुआ मे दिनाक २५३९६ से २८३९६ तक 'राम नवमी उत्सव के उपलक्ष्य मे वेद और रामायण कथा का आयोजन किया गया जो अन्यत सफल रहा। प विजय कुमार जी शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने कथा की तथा स्थानीय भजनीक श्री मदन लाल जी रैना मत्री आर्य समाज के भजन हुए। २८३९६ को दोपहर बाद सभी धार्मिक सस्थाओं की ओर से शोभा यात्रा निकाली गई जिसके सयोजक थे डा दुष्यत जी उब्बट श्री करम चन्द जी महाजन सरक्षक आर्य समाज कठुआ तथा श्री सुरेन्द्र जी गुप्ता पूर्व मत्री आर्य समाज कठुआ।

वेदों में आलंकारिक कथाएं
(पुस्तक का विमोचन)

पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने डा योगेन्द्र कुमार शास्त्री जी द्वारा लिखित पुस्तक **'वेदों में आलकारिक कथाएं'** का विमोचन आर्य समाज रिहाडी कालोनी जम्मू में किया गया। लेखक ने इसमे ३५ कथाओ का समालोचन किया है और यह सिद्ध किया है कि वेदो में मानवीय इतिहास नहीं है।

मत्री *आर्य समाज*
रिहाडी कालोनी जम्मू

वेदालंकार के छात्रों के लिए छात्रवृत्तियाँ

आर्य विद्या सभा गुरुकुल गुरुकुल कागडी हरिद्वार के २१ अगस्त १९९३ को हुए आर्य समाज हुनमान रोड नई दिल्ली मे सम्पन्न त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन मे यह निर्णय लिया गया है कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार मे वेदालकार कक्षा के प्रथम वर्ष मे प्रवेश लेने वाले छात्रो को रुपये ५००/- मासिक छात्रवृत्ति आर्य विद्या सभा की ओर से दी जायेगी। आर्य समाज के सिद्धातो मे निष्ठा रखने वाले तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार की भावना वाले तथा सस्कृत विषय लेकर इन्टरमीडिएट अथवा समकक्ष परिक्षा उच्च श्रेणी मे उत्तीर्ण छोत्रो को यह छात्रवृत्ति दी जायेगी। ऐसे सुयोग्य छात्रो को वेदालकार करने के पश्चात समुचित वेतनमान मे धर्माचार्य/धर्मशिक्षक अथवा उपदेशक आदि पदो पर नियुक्त किया जायेगा। छात्रो की सख्या अधिक होने पर एक एक इसी प्रकार की छात्रवृत्ति दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की ओर से भी दी जायेगी।

छात्रवृत्ति के लिए अर्हता प्राप्त छात्रो से निवेदन है कि वे अपने आवेदन पत्र आचार्य रामप्रसाद वेदालकार अध्यक्ष वेद विभाग एव उपकुलपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के नाम भेजे। उनकी सस्तुति पर ही ये छात्रवृत्ति दी जायेगी।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 12 5 96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/96
R N No 626/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 9/10-5-1996

धर्म जागृति सम्मेलन

शनिवार २५ मई, रविवार २६ तथा सोमवार २७ मई १९९६

स्थान ग्राम सिठौली इस्लामनगर चन्दौसी रोड जिला बदायू।

आप सभी को जानकर हर्ष होगा कि धार्मिक क्रान्ति का तृतीय महायज्ञ एव धर्म जागृति सम्मेलन का आयोजन बडी धूमधाम से किया जा रहा है।

आध्यात्मिकता धार्मिक एकता राष्ट्रीय अखण्डता एव ग्राम जागृति हेतु सम्पन्न होने वाले इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु सार्वदेशिक सभा के महामत्री डा सच्चिदानन्द शास्त्री तथा देश के प्रख्यात सत विद्वान भजनोपदेशक विदुषिया एव राजनेता पधार रहे हैं।

आप अपने सभी सम्बन्धियों इष्ट मित्रो और परिवार के साथ हजारो की सख्या मे सादर आमत्रित है।

उक्त कार्यक्रम की सफलता के लिए तन मन धन से सहयोग कीजिए एव यजमान बनने के इच्छुक सज्जन पहले से सम्पर्क करे।

स्वामी सत्यवेश

वैदिक संस्कार प्रशिक्षण शिविर

श्री ५ दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर क तत्वावधान मे दिनाक २३ जून से ३० जनू १९९६ तक उक्त प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। वैदिक सस्कारो व सस्कृत की सामान्य जानकारी रखने वाले अथवा गुरुकुल स्नातक या समकक्ष योग्यता वाले आवेदनकर्त्ता ही स्वीकार्य होगे। आवास व भोजन व्यवस्था नि शुल्क होगी। प्रवेश सीमित अतएव कृपया निम्न पते पर २० मई १९९६ से पूर्व पूर्ण विवरण सहित आवेदन करे।

अध्यक्ष
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
गुलाब बाग उदयपुर ३१३ ००१

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज बरेली श्री गजेन्द्र पाल सिह *प्रधान* श्री तुलसी राम आर्य *मत्री*, श्री राम भरोसे आर्य *कोषाध्यक्ष*।

आर्य समाज आँवला श्री राम प्रकाश मथुरिया *प्रधान* श्री अनिल कुमार शर्मा *मत्री* श्री रघुवीर सहाय गुप्ता *कोषाध्यक्ष*।

आर्य समाज बसेरिया कट्ठी सहारी नेपाल प राम सुन्दर आर्य *अध्यक्ष* श्री जय किशोर आर्य *महा सचिव* श्री डम्बर मेहता *कोषाध्यक्ष*।

आर्य समाज अडीग मथुरा श्री बृज किशोर आर्य *प्रधान* श्री महावीर प्रसाद आर्य *मत्री* श्री प्रेम बिहारी लाल *कोषाध्यक्ष*।

आर्य समाज जेवर बुलन्दशहर श्री रमेश चन्द्र बसल *प्रधान* श्री सत्यपाल गुप्त *मत्री* श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य *कोषाध्यक्ष*।

आर्य समाज गाजियाबाद श्री विजय पाल शास्त्री *प्रधान* श्री बृज मोहन *मत्री* श्री वीरपाल चौहान *कोषाध्यक्ष*।

आर्य समाज कठुआ ज क डा कुलदीप कुमार महोत्रा *प्रधान* श्री मदन लाल रैना *मत्री* श्री सुभाष उब्बट *कोषाध्यक्ष*

आर्य समाज चिरमीरीपोखर मुजफ्फरपुर श्री पन्नालाल आर्य *प्रधान* श्री चन्द्रदेव साह *मत्री* श्री जगदीश प्रसाद *कोषाध्यक्ष*।

आर्य समाज रीवा डा कृष्ण लाल जी डग *प्रधान* श्री सुशील कुमार वमा *मत्री* श्री सुदामा लाल सचदेव *कोषाध्यक्ष*।

आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर महात्मा आय भिक्षु जी *प्रधान* श्री मूल चन्द्र मित्तल *मत्री* श्री जयन्ती प्रसाद *कोषाध्यक्ष*

शोक समाचार

आर्य समाज नागौर के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष व कमठ निष्ठावान कार्यकर्त्ता श्री रामलाल स्वर्णकार का आकस्मिक निधन हो गया। उनकी अत्येष्टि वैदिक मत्रोच्चारण के साथ की गई। उनके निवास पर शाति शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना की गई। समस्त आर्य बन्धुओ ने उनके निधन पर शोक सभा की जिसमे दो मिनट का मौन रखा गया। मत्री श्री जौहरी लाल व्यास ने इस क्षति को अपूर्णीय क्षति बताया।

आर्य समाज फलावदा के प्रधान श्री बलदेव सिह आर्य का दिनाक २१ ४ ९६ रविवार को प्रात ७ बजे हृदय गति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। वे पिछले कुछ समय अस्वस्थ चल रहे थे।

श्री बलदेव सिह जी पिछले ३५ वर्षों से आर्यसमाज की निरन्तर निस्वार्थ सेवा करते रहे। पिछले अनेको वर्षों से वह आर्य समाज फलावदा के प्रधान पद पर रहे। उनके निधन से आर्य परिवार की अपूर्णीय क्षति हुई है।

दिनाक २८ ४ ९६ को साप्ताहिक यज्ञ के पश्चात श्री बलदेव सिह जी के शोक मे दो मिनट को मौन रखकर उन्हे श्रृद्धाजलि अर्पित की गई साथ ही ईश्वर से प्रार्थना की गई कि श्री आर्य के परिवार जनो को धैर्य धारण करने का साहस प्रदान करे। इस अवसर पर उनकी सेवाओ को याद किया गया।

राष्ट्र भाषा हिन्दी को प्रोत्साहन दें

सार्वदेशिक प्रकाशन प्रतिष्ठान नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् — विश्व को श्रेष्ठ (आर्य) बनाएँ

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

दूरभाष ३२७४७७१ ३२६०९८५ | आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये | वार्षिक शुल्क ५० रुपए एक प्रति १ रुपया

वर्ष ३५ अक १४ | दयानन्दाब्द १७२ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ | ज्येष्ठ शु २ सम्वत्—२०५३ | १९ मई १९९६

विश्व के अनेक देशों में हिन्दी सम्मेलन

मारीशस के बाद त्रिनीदाद में हिन्दी-भाषी-मेला

अगला हिन्दी सम्मेलन दक्षिण अफ्रीका में

विश्व के १३२ देशो के भारतीय अपनी टूटी फूटी हिन्दी भाषा को सुरक्षित किये है विश्व के १३६ विश्वविद्यालयो मे हिन्दी पढाई जाती है।

अब से ठीक १५० वर्ष पूर्व १८४६ मे भारतीय बधुआ मजदूरो से भरा हुआ पहला जहाज का जहाज त्रिनिदाद के समुद्र तट पर जाकर ठहरा था। उसके बाद एक के बाद एक अनेक यात्री जहाज किस्तो मे भारतीय मजदूर पेट के लिये रोटी की तलाश मे यहा लाये गये थे इन लोगो ने क्या क्या कष्ट नही उठाये। इन्होने सब कुछ खोकर भी अपनी सस्कृति अपनी भाषा तथा सस्कारो की प्रेरणा स्रोत्र रामायण एवं गीता अपने साथ सुरक्षित रखी है यदि मारीशस मे चिता जलाने की प्रेरणा सस्कार विधि ने दी तो अग्रेजो ने सविधान दिया मुर्दा गाड दो पानी मे डाल दो पर जला नहीं सकते। ऐसे समय मे स्वामी दयानन्द की प्रेरणा स्रोत्र सस्कार विधि ने जीवन दान दिया।

इसी प्रकार विदेशो मे जहा जहा भारतीय मूल के निवासी हैं उनमे भारत से सुदूर जाकर स्वामी विवेकानन्द की वैचारिक क्राति ने आत्म गौरव प्रदान किया था परन्तु स्वामी दयानन्द के सैनिक स्वामी भवानी दयाल सन्यासी और अनेको विद्वानो ने प्रवासी भारतीयो मे विद्यालय सगीत कला केन्द्र सिनार्ड आदि के अनेको केन्द्र खोलकर निज भाषा को प्रचार का स्थान बनाया विदेशो मे हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार मे आर्य समाज का विशेष योगदान रहा है। भारत सरकार जब भी कोई आयोजन करती है उस समय चन्द चाटुकारो को आगे लाकर हिन्दी प्रचार को दुनिया मे प्रस्तुत करते हैं परन्तु हिन्दी का माध्यम बहा की अपनी विशेषताएँ है जिन्हे समझना जरूरी है। उनको जानकर फिर उसमें प्रवेश किया जाये।

फीजी सूरीनाम, हालैण्ड दक्षिण अफ्रीका पूर्वी अफ्रीका अमेरिका तथा कनाडा मे आज भी भारतीय विद्यालयो के माध्यम से हिन्दी भाषा मे कार्य होते है किन किन कष्टो मे भारतीयो ने अपनी परम्पराओ को जिन्दा रखा है। भारत

सरकार को चाहिए कि के सम्मेलन के समय पर ही नही पूरे वर्ष वहा की सस्थाओ से सम्पर्क रखे और उन्हे भारतीयता के प्रति पूर्ण सहयोग करे। दक्षिण अफ्रीका मे जब सम्मेलन हो तो वहा के भारतीयो से पहले सम्पर्क कर योजनाबद्ध उपायो से सम्मेलन करे उस समय पता चलेगा कि भारतीयता का स्वरूप क्या है। अप्रवासी भारतीय अपनी पहचान के लिए दुनिया को पहचाने भारत से दूर जाकर अथाह धन व्यय करके हमने क्या पाया यह सोचना है

पाठकों से विनम्र निवेदन

सार्वदेशिक के पाठक आर्यावर्त की वर्तमान परिस्थिति भली भाति परिचित है धार्मिकता के नाम पर पाखण्ड गुरूडम का छलावा सामाजिकता के नाम पर कपट और राष्ट्रद्रोह बढता जा रहा है ऐसा लग रहा है कि ...ि राष्ट्र रूपी जगल मे चारा तरफ आग लगी है जिससे फल फल और वनस्पतियो रूपी ... धारा विनाश को प्राप्त होनी प्रारम्भ हो रही है स्वार्थी राजनीति इस आग म घी का काम कर रही है। प्रशासको और राजनेताओ की देखा देखी (यथा राजा तथा प्रजा के सिद्धान्त के अनुसार) सामान्य जनता भी भौतिकता वादी

(शेष अगले पृष्ठ पर)

हरियाणा में पूर्ण शराबबंदी

सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वागत

दिल्ली १२ मई सार्वदेशिक सभा ने मुख्यमत्री चोधरी बसी लाल के १ जुलाई से प्रदेश मे पूर्ण शराबबदी के फैसले का स्वागत किया है। सार्वदेशिक सभा के महामत्री डा सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि जो सरकार ५० वर्ष मे यह सब न कर सकी वह काम बसी लाल ने शपथ ग्रहण करने के तुरन्त बाद कर दिखया

श्री शास्त्री ने कहा कि भगवान श्री कृष्ण की इस धरती पर जहा दूध दही की नदिया बहती थीं पिछले ५० वर्षो से यहा शराब बह रही थी। उन्होन कहा कि बसी लाल ने प्रदेश मे पूर्ण शराबबदी लागू कर महर्षि दयानन्द महात्मा गाधी के सपनो को पूरा किया है। उन्होने कहा कि बसी लाल ने सविधान के नीति निर्देशक सिद्धातो के तहत ही यह सब किया है।

उन्होने आशा व्यक्त की कि हरियाणा मे पूर्ण शराबबदी के बाद खुशहाली आएगी क्योकि शराब से प्रदेश मे भ्रष्टाचार अपराधो को बढावा मिला व प्रदेश का युवा वर्ग पथभ्रष्ट हो गया उनका कहना था कि मुख्यमत्री के इस फैसले का पूरे देश मे स्वागत हुआ है खासकर ग्रामीण महिलाए इस फैसले से अधिक प्रसन्न है क्योकि गावो मे शराब का प्रचलन अधिक होने के कारण जो झगडे होते थे वह अब समाप्त होगे श्री शास्त्री ने कहाकि देश के सभी मुख्यमत्री को इसी प्रकार के आदेश अविलम्ब लागू करने चाहिएँ तभी इस भयकर बुराई ... पाया जा सकेगा

प्रचार विभाग

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

प्रज्ञा देव्या कीर्तिकौमुदी

डा॰ कपिलदेव द्विवेदी, निदेशक, विश्वभारती अनुसधान परिषद्, ज्ञानपुर (भदोही)

(१)

प्रधी प्रज्ञा देवी विदित श्रुति शास्त्रार्थ निवप्त
सदा सत्ये निष्ठा प्रखर धिषणा वाग्मि-प्रवरा।
गुणागारा धीरा सतत वटु चेतो धृतिकरी
तपोनिष्ठा प्रेरण विलसतु भवे ज्ञान निलया।।

डा प्रज्ञा देवी वेदो और शास्त्रो मे निपुण थी वे सदा सत्यनिष्ठ प्रखर बुद्धि और सुयोग्य वक्ता थी। वे गुणवती धीर और छात्राओ को सदा प्रेरणा देने वाली थी। वे तपस्वी प्रिय और ज्ञान सपन्न थी। उनकी कीर्ति सदा ससार मे फ ल

(२)

दयानन्द मत्वा गुरूवर मिह्रा ऽ ऽ दर्शपरम
गुरु ब्राह्म दत्त गुणगणचय प्राप्य सुधियम।
तदादेश लब्ध्वा वटुजन हितार्थ जन-हित।
सुशिक्षायै कन्या गुरूकुलमिह्रा ऽ स्थापयदसौ।।

प्रज्ञा जी महर्षि दयानन्द को अपना गुरु एव आ पुरुष मानती थी। उन्हे महा विद्वान श्री ... तेज्ञा रूपी गुरु मिले और उनकी आज्ञा ... छात्राओ के लिए हितकर लोकोपकार ... या महाविद्यालय की उच्च शिक्षा के लिए स्थापना की।

(३)

प्रकृत्या धीरेय विगत भय तृष्णा स्थिरमति
श्रुतीना सत्यार्थ प्रतिनगरमैषैत्रमाशियत्त।
ऋचा पाठे गाने विहित गुरू निष्ठा गुणवती
सुधी प्रज्ञा प्रज्ञा विभव जनिताऽऽलोक-मुदिता।।

प्रज्ञा जी स्वभाव से धीर थीं भय और लोभ से रहित थीं स्थिर बुद्धि थी। उन्होने वेदो के सच्चे अर्थ का प्रत्येक नगर मे प्रचार किया। वे गुणवती थी उन्होने वेद-पाठ और गान मे बहुत परिश्रम किया था। वे विदुषी थीं और अपने ज्ञान के आलोक से सदा प्रसन्न थी।

(४)

सुशिक्षा नारीणा सकल दुरितौघाऽत्यय करी
शुचेर्मूल नित्य नियम जय मन्त्रार्थ विधृति।
सुशक्तेर्मूल च परमपुरूषे सतत-रति
स्वशिष्या स्वेव या गुण गणमधाद् गौरवमयी।।

गौरवशालिनी प्रज्ञा जी ने अपनी शिष्याओ को इन गुणो की शिक्षा दी कि नारी-शिक्षा समस्त दुर्गुणों को नष्ट करती है नियमपालन जप और मन्त्रो के अनुसार जीवन चर्या सभी प्रकार की पवित्रता का मूल है और परमात्मा की निरन्तर भक्ति आत्मिक शक्ति का स्त्रोत है।

(५)

समाज त्वार्याणाम अगणयदिव जीवितसम
श्रुतीनामुद्घोषम अमनुत भवोद्धार करणम्।
सदोत्साह ह्रास निजमनसे धृतवाऽऽत्मिकबल
व्यधात कार्य कीर्त्या दिवमुदगता जीवति सदा।।

प्रज्ञा जी आर्यसमाज को अपने प्राणो के तुल्य मानती थीं। वे वेदो के पठन-पाठन को ससार की उन्नति का साधन मानती थीं। उन्होने सदा अपने मन मे उत्साह आत्मिक बल और प्रसन्नता को धारण करते हुए कार्य किया। वे दिवगत होकर भी अपनी कीर्ति से सदा जीवित रहेगी।

पुस्तक समीक्षा

ऋषियो के गौरव दयानन्द

ले. स्वामी मीरापति
प्रकाशक सरस्वती साहित्य सस्था
पृष्ठ ७८ मू.२रु.

मानवता के पुजारियो मे एक से एक विलक्षण व्यक्ति धरा पर आये और देश-जाति धर्म के लिये अद्भुत शौर्य दिखाकर चले गये। परन्तु अपने अपने समय के सब धनी थे महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव भयकर दुर्दशा मे हुआ। नाना पथ-नाना समस्याये लिये थे जिन से निप ना ... न कार्य था इससे ऋषि की गौरव गाथा महान
"देश-सोता जागा दयानन्द ने
इतिहास के महापुरूषों से तोलकर ऋषि की गौरव गाथा ... स्वामी मीरापति की कृति को पढे और चेतना प्राप्त करे।

डा. सच्चिदानन्द शास्त्री

पाठकों से........

माया जाल को अपने ऊपर ओढने मे ही अपना जीवन व्यतीत कर रही है।

सार्वदेशिक साप्ताहिक के माध्यम से वैदिक धर्म की पवित्रता को ... के लिए हम सदैव सकल्प बद्ध हैं अत पाठको से हमारा विनम्र निवेदन है कि धार्मिक और राष्ट्र वादी विचारो को अधिकाधिक जनता तक पहुँचाने के लिए सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहक बनाने की ओर ध्यान दे।

अपना वार्षिक शुल्क सदैव समय पर भिजवाए तथा आम जनता को भी इसके लिए प्रेरित करे।

इस साप्ताहिक पत्रिका का वार्षिक शुल्क केवल ५० रुपये रखा गया है जो कि लागत से भी कम है। आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये देकर बारबार वार्षिक शुल्क भेजने की दुविधा से बचा जा सकता है। आपके द्वारा भेजी गयी इस सहयोग राशि के प्रत्येक अश को वैदिक और राष्ट्र वादी भावनाओ के प्रचार में ही व्यय किया जायेगा।

सपादक

विशेष वार्ता

सत्य निष्ठा

वह पदार्थ सत्य नहीं कहाता जो सत्य क स्थान मे असत्य और असत्य के स्थान मे सत्य का प्रकाश किया जाय। किन्तु जैसा पदार्थ है उसको वैसा ही कहना उसको वैसा लिखना कहना, और मानना सत्य कहाता है।

अजमेर मे ग्रविन्सन ग्रे तथा शूलब्रेड पादरियो के साथ महर्षि का सात दिन तक शास्त्रार्थ होता रहा। आठवे दिन पादरियो ने किसी आक्षेप से चिढ कर कहा ऐसी बातो से आपको कारावास जाना पडगा यह सुनकर ऋषिराज ने उत्तर दिया। सत्य के लिये कारावास कोई लज्जा जनक बात नही धर्म पथ पर आरूढ होकर मैं ऐसी बातो से सवथा निर्भय हो गया हू प्रतिपक्षी लोग यदि अपने प्रभाव से ऐसा कष्ट दिलायेगे। तो जहा कष्ट सहते हुए मेरे चित्त मे शोक की कोई तरग भी न उत्पन्न होगी वहा मै अपने प्रतिपक्षियो की अकल्याण भावना भी कभी नही करूगा

पादरी जी ! मै लोगो के डराने से सत्य को नहीं छोड सकता। ईसा को भी लोगो ने फासी पर लटका ही दिया था द प्र

२ काशी मे प्रथम शास्त्रार्थ के समय वलदेव कुछ घबरा गये तभी महर्षि ने कहा –वलदेव ! कुछ भी चिन्ता न कीजिये। योगी जनों का यह दृढ विश्वास है कि–अविधा की तमो राशि को सत्य का सूर्य अकेला ही तुरन्त जीत लेता है। वलदेव ! जो मनुष्य पक्षपात का परित्याग करके केवल लोकहित के लिये इश्वर की आज्ञानुसार सत्योपदेश करता है उसे भय कहा है

सत्पुरूष किसी से भयभीत होकर सत्य को नहीं छिपाया करते। जीवन जाय तो जाय परन्तु वे अन्तरात्मा के आदेश सत्य को नही छोड सकते। वलदेव ! चिन्ता किस बात की है–एक मैं आत्मा हू एक परमात्मा है और एक ही धर्म है। दूसरा है कौन जिससे डरे। उन सव को आ जाने दो जो कुछ होगा उस समय देखा जायेगा। द प्र

३– जिस पुरूष ने जिसके सामने चोरी–जारी मिथ्या भाषण आदिकर्म किया उसकी प्रतिष्ठा उसके सामने मृत्यु पर्यन्त नहीं होती। जैसी हानि मिथ्या प्रतिज्ञा करने वाले की होती है वैसी अन्य किसी की नही। इससे जिसके साथा जैसी प्रतिज्ञा करनी उसके साथ वैसी ही पूरी करनी चाहिए।

अर्थात–जैसे किसी ने किसी से कहा–मैं तुमकोअमुक समय मे मिलूगा वा तुम मुझको मिलना अथवा–अमुक वस्तु अमुक समय मे तुमको मैं दूगा। इसको वैसा ही पूरा करे नहीं तो उसकी प्रतीति कोई भी न करेगा। इसलिये सदा सत्य भाषण और सत्य प्रतिज्ञा युक्त सबको होना चाहिये। स प्र

असत्य का कारण-

मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य को जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हठ–दराग्रह और अविद्यादि दोषो स सबको छोड अस य म झुक जाता है। स प्र भू

मनुष्य १ जैसे पशु वलवान होकर निवलो को दुख देने और मार भी डालत है जब मनुष्य शरीर पाके वैसा ही कार्य करत हे तो व मनुष्य स्वभाव युक्त नही किन्तु पशुवत ह और जो बलवान निर्बलो की रक्षा करता है वही मनुष्य कहाता हे और जो स्वार्थ वश होकर पर निमात्र करते है वह जानो पशुअ का भी बडा भाइ है र प्र भू

२ मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्व मवत अन्यो क [illegible] ओ हानि लाभ को समझे अन्यायकारो बलदान स भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे इतना ही नही किन्तु अपने सव सामर्थ्य र धर्मात्माओ की चाह व महा अनाथ निर्बल औ गुणरहित ही क्यो न हो उनकी रक्षा उन्नति प्रियाचरण और अधर्मी चाह चक्रवर्ती सनाथ महावलवान और गुणवान भी हो तथापि उसका नाशअवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे। इस काम म चाह उसको कितना ही दारूण दुख प्राप्त हो। चाहे प्राण भी भले चले जावे परन्तु इस मनुष्य पन रूप धम से कभी पृथक न होवे। स्व म प्र

ममता

एक दिन काशी मे महाराज जी ने बाबा जवाहर दास जी से कहा आप भी उपदेश करने लग जाइये। इसका उत्तर उन्होने इस प्रकार दिया। आपका तो कोई ठोर ठिकाना नही है इसलिये देश देशान्तर मे चक्कर लगाते फिरत हो। मै डेरे वाला हू मुझसे उपदश का काम नही हो सकता। यह सुन स्वामी जी न कहा यह स्थान ओर डेरा पहले भी आपके पास नही था और अन्त मे भी नही रहेगा।

बीच मे यो ही ममता बाध रहे हो। अत छोडो और लोक हित के कार्य म लग जाओ। द प्र

प्रचार-प्रकार-विचार

आर्य समाज प्रचारक सस्था है महर्षि ने स्वय प्रचार किया उन्होने विद्यालय खोले आर अपने जीवन काल मे बन्द भी कर दिय परन्तु प्रचार का कार्य जीवन पयन्त करत रहे। जिस समय महर्षि जोधपुर मे थे वहा उनको विष दिया गया। उस समय पर भी आप प्रचार कर रहे थे। और ऋषि ने अपनी वसीयत मे भी देशदेशान्तर द्वीप–द्वीपान्तर मे प्रचार करने की इच्छा प्रकट की है।

वैदिक सभ्यता मे प्रचार का कार्य सन्यासी और ब्राह्मण करते थे इनमे ब्राह्मण ([illegible]) एक स्थान पर ठहर [illegible] कला [illegible] मे रहकर जीवन निमाण किया करत और सन्यासी घूम घूम कर प्रचार करते थ सत्यार्थ प्रकाश के सन्यास प्रक म चार बात उस समय की प्रचलित प्रकृति से विपरीत लिखी गइ हे यथा

१ सन्यासी के शव को अग्नि मे जलाना (पहले समाधि दी जाती थी

२ सन्यासी वैदिक कर्म कर्त्तव्य समझ कर करना प्रच करना आदि (प्रथम विहित कर्मो का विधिवत् त्याग करना ही सन्यास शब्द का अर्थ किया जाता था

३ सन्यासी को परोपकार के लिय धन ग्रहण करना प्रथम (धातु स्पर्श मात्र निषिद्ध था)।

४ सन्यासी एक स्थान पर ठहर सकता हे तीन रात्रि से अधिक ठहरना वर्जित था

इसस सिद्ध है कि स्वामी दयानन्द के मतानुसार सन्यासी भ्रमण भी करे ओर समयानुकूल जब चाहे ठहर भी जाय

उपदेश तव ही सफल होता है जब श्रोताओ को वक्ता पर श्रद्धा हो ब्राह्मण एक स्थान पर रहकर अपने जीवन से पास के निवासियो पर प्रभाव डा ता हे ओर उनसे ही अपनी जीविका भी चलाता है परिवारो को सिद्धान्तो की शिक्षा और धार्मिक जीवन बनाने का आदेश भी देता ह

एक जगह ठहर कर सन्यासी भी यही कार्य [illegible] ता अब भी हा रह है पर [illegible] बिना श्रद्धा का अभाव है उपदेशक व श्रोताओ म जो सबध होना चाहिये वह नही ह

यह क्या है [illegible] उपदेशक [illegible] जीविका लेत है [illegible] श्रोता [illegible] होता है परन्तु इस पद्धति म वक्ता श्रोता का जो सबध होना चाहिये वह उत्पन्न नही होता [illegible] कि उनका विशेष सबध नही है इस अवस्था म वह अपने जीवन का प्रभाव उन पर किस प्रकार डाल सकता है।

महर्षि के जीवन का स्वर्गारोहण किया है इस अवसर पर आय जन विचार करे कि पुरातन पद्धति प्रचार करना है या कल्पित पद्धति का आश्रय लकर अश्रद्धा पेदा करने मे और वृद्धि करनी हे।

अत प्रचार उसके प्रकार और प्रक्रिया पर विचार करे तो आर्य समाज म [illegible] से प्रगति आ सकती है।

क्या आर्य संस्कृति के अनुसार वर्तमान सदंर्भ में

राम राज्य की कल्पना सम्भव है ?

गताक से आ।

वर्तमान विश्व मे विप्र और ऋषि परम्परा का अभाव है। इसके अभाव के कारण ससार की सभी राजनैतिक प्रणालिया मनुष्य को सुख देने मे विफल हो गई है। जगत मे सर्वत्र सघर्ष और हिंसा व्याप्त है। अत जगत को मृत्यु से बचाकर अमृत प्रदान करने के लिए उस वैदिक राज्य की परम आवश्यकता है जो विप्रो और ऋषियो से अनुशासित और अनुप्राणित हो। अत आर्य-राज्य की व्यवस्था ही वह व्यवस्था है जो व्यक्ति की भूख मिटाव   याय प्रदान करती है।

आर्य सस्कृति की सबसे बडी विशषता यह है कि वह किसी राजनीतिक तत्र पर जोर न दकर व्यक्ति के चारित्रिक निर्माण पर बल देती है मानव सभी कार्यो का कर्त्ता है अत उसका ही प्रधान होना आवश्यक है। यदि कर्त्ता शोषक नही पोषक है ता सर्वत्र सुख की वर्षा हो सकती है।

वेदो के अनुसार तन्त्र नही व्यक्ति महत्वपूर्ण है। व्यक्ति यदि सत्यशील व धर्मशील है तो विश्व म दु खो का प्रवेश नहीं हो सकता। यही कारण है कि वेदो ने राजतन्त्र प्रजातन्त्र समाजवाद साम्यवाद पूजीवाद इत्यादि को प्रमुखता प्रदान न कर व्यक्ति व उसके चरित्र को प्रधानता दी है।

वेद वैयक्तिक भेद भावो को नही मानते। उनके अनुसार सभी मनुष्य समान है। सभी का एक ही युवा पिता है। विश्व के समस्त व्यक्ति परस्पर भाइ भाइ है। अत सभी को एक दूसरे से प्यार करना चाहिए वेदो के अनुसार जो व्यक्ति सर्वप्रिय है या जिसे सभी प्यार करते है वह किसी भी रजनैतिक व्यवस्था से सर्वपोषण कर सकता है

प्रिय मा कृणु देवेषु प्रिय राजसु मा कृणु।
प्रिय सर्वस्य परयत उत शूद्र उतार्थे।।

अथर्व १४ ६२ १

सर्व-प्रिय और उच्च चरित्र सम्पन्न व्यक्ति य राजा के मार्ग मे नौकरशाही या राजशाही बाधक नही बन सकती वेदो के अनुसार राज्य सब कुछ नही है। वह सर्वोपरि भी नही है। वह समाज का एक अग है अत स्वस्थ तथा सुखी समाज के लिए मानव का धार्मिक आर्थिक और शैक्षणिक जीवन राज्य के हाथ मे कद   करना चाहिए।

राज्य भ्रष्ट न हो वह प्रजा के दु खो का कारण न बने इसलिए राज्य जनमत सग्रह के नियन्त्रण मे नहीं होना चाहिए। वेदो के अनुसार राजसत्ता जब ज्ञानसत्ता (ब्रह्मसत्ता) के अनुसार कार्य करती है तब ससार मे सुख धाराये बहती है।

यत्र ब्रह्म च क्षत्र च सम्यञ्चौ चरत सह।
ने लोक पुण्य प्रज्ञष यत्र दवा सहाग्निना।।

यजु॰ २०/२५

इस आतीरिक्त ... सतपुरुष विप्र व ऋषि ... होना चाहिए ... जनमत ग्रह ... क्रिया के व्यापक ... व्यवस्थाय चल रही है ... मनुष्य यदि सत पुरुष है तो नौकरशाही मे स्वच्छ लोकशाही मे बद ... व्यक्ति यदि ... है तो राज्य ... जनकल्याणकारी रहता है। राज्य का उद्देश्य जन कल्याण करना है।

वेदो की शिक्षा का सार यह है कि मानव को परपोषण के लिए जीवित रहना चाहिए। पुरुष पर पोषण के कारण ही देव कहलाते हैं। भारतीय सस्कृति भी परपोषण के कारण ही देव सस्कृति है। देव या आर्य सस्कृति मनुष्य को सर्वस्व दान की प्रेरणा प्रदान करके स्वामी सेवक उद्योगपति और मजदूर आदि म समन्वय स्थापित करती है। सर्वस्व दान के कारण ही श्रमिक अधिकतम उत्पादन करके राष्ट्र को समृद्ध करते हैं और पूजीपति मजदूरो को वे सभी सुविधाये प्रदान करते है जिन्हे वे स्वय चाहते हैं। इस प्रकार आर्य सस्कृति समता तथा समन्वय के द्वारा मानव समाज को ईर्ष्या द्वेष घृणा और शोषण से बचा कर एसी व्यवस्था की स्थापना करती है जिसके अन्तगत मानव उस स्वतन्त्रता का भोग कर सकता है जिसे आत्म स्वराज्य कहा जाता है। स्वराज्य का अर्थ वह राज्य है जिसे मनुष्य अपना राज्य कहता है।

इस प्रकार वेदो के अनुसार आर्य साम्राज्य वह है जिसम कोई भी वर्ग किसी के प्रति विद्रोह नही करता। सभी वर्ग चाहे वह उद्योगपति हो या व्यापारी कृषक हो या पशुपालक स्वामी हो या मजदूर और चाहे शिक्षक हो या शिक्षार्थी जब वे सवार्थ हित का चिन्तन करते है तब समाज सुखी   ता है।

(यजु २ १९/ऋग्वेद १/५४/६)

आर्य-साम्राज्य का उद्देश्य प्रजा के हितों का सम्वर्धन करना है। प्रजा का हित सम्पादन सत्य और धर्माचरण से ही होता है। प्राचीन भारत मे विश्वविद्यालयो मे दीक्षान्त समारोहो मे अन्तिम उपदेश के रूप मे कहा जाता था कि

सत्य वद धर्म चर स्वाध्यायान्मा प्रमद ।

आर्यो का विश्व शान्ति के लिए यही वह अमर सन्देश है जो आज भी सार्थक है।

तैतिरीयोपनिषद १/११-

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास मे राजधर्म के सबध मे लिखा है-(राज्य के) "सब सभासद और सभापति (मन्त्री और प्रधानमन्त्री) इन्द्रियो को जीत के अर्थात अपने वश म रखके सदा धर्म मे बरते और अधर्म से हटे हटाये रहे। इसलिए रात-दिन नियत समय मे योगाभ्यास भी करते रहे क्योकि जो जितेन्द्रिय की अपनी अपनी इन्द्रियो (जो मन प्राण और शरीर रूपी प्रजा है) इनका जीते बिना बाहर की प्रजा को अपने वश मे स्थापन करने को समर्थ कभी नहीं हो सकता।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के राज्य मे ब्रह्मज्ञानी योगाभ्यासी आत्मदर्शी अधिकारी राज्य प्रबध करते थे।

विस्तार के लिए महर्षि का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश अवश्य पढे।

डा.रामावतार अग्रवाल
चौबे कालोनी
रायपुर-म.प्रदेश

सत्य दर्पण

जब असत्य आचरण वाले लोग ही सत्य और सदाचार की बाते करने लगते हैं तो आश्चर्य होता है। सार्वदेशिक के सम्बन्ध मे जब न्यायालय ने यह निर्णय दिया है कि अगले निर्णय तक पहले वाली सार्वदेशिक की कार्य कारिणी ही कार्य करेगी तो न्यायालय की अवमानना कर अपनी अलग सार्वदेशिक क नाम से कार्य करना क्या यह भी छद्म सन्यासियो का उज्वल चरित्र है। स्वामी विद्यानन्द जी तो शायद अपने साथी सन्यासियो के छल कपट से ऊब से गये और उन्होने आर्य समाज की प्राथमिक सदस्यता म भी त्याग पत्र दे दिया। अब रह गये ३ सन्यासी श्री स्वामी ओमानन्द जी स्वामी धर्मानन्द जी और स्वामी सुमेधानन्द जी जो लोग इन सन्यासियो के अपमान की दहाइ दे कर इनको त्यागी तपस्वी सिद्ध कर रहे है वे गुरुकुल झज्जर के स्नातको द्वारा सप्रमाण प्रकाशित ओमानन्द का असली चेहरा विज्ञप्ति क्यो नही पढ लेते क्यो कि विज्ञप्ति के चार पृष्ठो मे स्वामी ओमानन्द व धर्मानन्द जी का वास्तविक स्वरूप प्रगट है जिस से उनके भाट भक्तो का भ्रम दूर हो जाय। और सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्त्ता प्रधान श्री सोमनाथ मरवाह एव मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री जी पर सन्यासियो को अपमानित करने वाला कह कर गाली देना बन्द हो जायगा अब रह गये स्वामी सुमेधानन्द जी तो जयपुर जाकर उनके ये भाट भक्त भरे न्यायालय सब के सामने न्यायाधीश ने सुमेधानन्द जी को यह कहा कि झूठे बयान बाजी करने से पहले आप यह वस्त्र क्यो नही उतार देते श्वेत कपड के लिये पैसा अपने घर स मैं दे दूगा किन्तु आप इन कपडो को तो कलकित न करे आदि कथनो की जाच तो करते। रही बात कैप्टन देव रत्न जी की शराब परोसने व पीने की जो श्री आनद सुमन जी ने लिखा है। श्री सुमन जी ने प्रत्यक्ष दर्शियो म ज्ञानी जैल सिह व श्री रामचन्द्र विकल का नाम लिखा है। ज्ञानी जी तो नही रहे किन्तु विकल जी तो अभी जीवित हैं उनसे भी यह वक्तव्य दिलवा देते कि यह बात असत्य है। या स्वयम देव रत्न जी श्री अडवानी की तरह त्याग पत्र दे देते और यह वक्तव्य देते कि मेरे ऊपर यह आरोप मिथ्या है। चलो विकल जी से पूछते है। किन्तु यह सब कुछ न कर के श्री गजानन्द श्री अश्वानन्द श्री मोहन लाल चड्ढा श्री खड्ढा से लेख क्यो लिखवा रहे हैं। स्वय सामने आकर अपनी सफाई क्यो नही प्रस्तुत कर रहे हैं। क्या डा. सच्चिदानन्द शास्त्री सभा मत्री के खिलाफ जब केप्टन साहब ने लेख लिखा तो क्या एक चरित्रवान समर्पित व्यक्ति पर देवरत्न जी ने हमला नहीं किया-आनद सुमन ने एक तथ्य प्रस्तुत किया तो परेशानी मे पड गये। श्वेत पत्र का श्याम सम्पादकीय लम्बा लेख लिखने वाले की लेखनी आखिर क्यो कुण्ठित हो गयी ? इससे प्रतीत होता है कि श्री सुमन जी ने सत्य लिखा है। जिसका उत्तर देने का साहस श्री कैप्टन देवरत्न जी मे नहीं है। क्या आर्य समाज म यही भ्रष्ट सन्यासी रह गये हे और कोइ सन्यासी नहीं है। बात असली यह है कि जो सर्वग भ्रष्ट हो उनके आदर्श सन्यासी भी क्यो न ऐसे हो

आर्य समाज को बचाने का एक मात्र उपाय है कि जो त्यागी तपस्वी लोग कार्य कर रहे हैं उन्हे पद लिप्सा को छोड कर सहयोग दे।

नान्य पथा विघते ऽ यनाय

लाल मोहन आर्य
ब्यावर राजस्थान

रूप ज्ञान स्वरूप है

पं.नेत्रपाल शास्त्री

आर्यसमाज दीवान हाल चाँदनी चौक दिल्ली ६

उपर्युक्त शीर्षक के अन्तर्गत जिन विचारो का अथवा दार्शनिक मान्यताओ का मैंने प्रतिपादन किया है वह अन्तिम नहीं है क्योकि भौतिक विज्ञान तथा आध्यात्मिक विज्ञान के सम्बध मे अन्तिम रेखा खींच देना किसी भी दृष्टि से युक्ति सगत नही है।

अन्तिम इसलिए नहीं है कि मनुष्य अल्पज्ञ है और परमात्मा का ज्ञान (वेद ज्ञान) तथा उसके द्वारा सृजित सृष्टि असीम है। योगी अथवा मुक्तात्मा भी सर्वज्ञ नही हो सकती।

आदि सृष्टि से मनुष्य अपने सम्बन्ध प्रभु तथा सृष्टि (प्रकृति) के तात्त्विक रहस्यो के प्रत्यक्षी करण मे सत प्रयत्नशील रहा है है और रहेगा। मेरा ही दार्शनिक चिन्तन अन्तिम है ऐसा किसी भी दार्शनिक तथा वैज्ञानिक ने नही कहा है।

आजकल आर्यसमाज के पत्रो मे एक सैद्धान्तिक चर्चा मन्थर गति से चल पडी है।

चर्चा का विषय है इच्छा द्वेष प्रयत्न सुख दु ख तथा ज्ञान ये आत्मा के लिड है। जिन्हाने इस चर्चा को उठाया है उनकी मान्यता है कि सुख दु ख आदि लक्षण जीवात्मा के गुण है और मुक्तावस्था मे भी ये जीवात्मा के साथ ही रहते है। प्रतिवादी अथवा प्रतिपक्षी की स्व स्थापना है कि मुक्तात्मा के साथ सुख दु ख आदि नही रहते। शुद्ध आत्मा ही मुक्ति म रहती हे।

उक्त सन्दर्भ मे मैने भी अपने दाशनिक विचार प्रस्तुत किये है जिन को मै ठीक मानता हू। स्वपक्ष भी सम्पुष्टि मे अनेक ग्रन्थो के प्रमाण प्रस्तुत किए है। यह बात भी स्पष्ट कर देना समीचीन समझता हू कि मै श्री स्वामी सत्यपति जी के पक्ष को शास्त्र सम्मत स्वीकार करता हू।

द्रष्टा शिमात्र शुध्दो ऽपि प्रत्ययानुपश्य

(यो.द.सा सू २०)

दृष्टा–दृष्टा दृशिमात्र देखने की शक्ति मात्र है शदृद – अपि निर्मल अर्थात निर्विकार होने पर भी प्रत्यय – अनुपश्य –चित्त की वृत्तियो के अनुसार देखने वाला है।

दृशि मात्र इस शब्द से यह तात्पर्य है कि देखने वाली शक्ति विशेषण रहित केवल ज्ञान मात्र है। यह देखने की शक्ति मात्र धर्मी है उस मे कोई परिणाम नही होता । यथा

यथादीप प्रकाशात्मा स्वल्पोवा यदि वा महान।
ज्ञानात्म न तथा विधादत्मान सर्व जन्तुषु ।।

जैसे दीपक चाहे छोटा हो चाहे बडा प्रकाश स्वरूप ही होता हे वैसे ही सब प्राणियो के भीतर आत्मा को भी ज्ञा रूप समझे।

ज्ञान नैवात्मनों धर्मो न गुणो वा कथचन।
ज्ञान स्वरूप एवात्मा नित्य सर्वगत शिव।।

ज्ञान न तो आत्मा का धम है और न किसी भान्ति गुण हीं है। आत्मा तो नित्य विभु और शिव ज्ञान स्वरूप ही है।

प्रत्ययानुपश्य – चित्त की वृत्तियो के अनुसार देखने वाला चित्तवृत्ति गुणमयी होने से परिणामिनी है। विषय मे उपराग होन से वह विषय उसके ज्ञात होता है। पर पुरुष तो चित्त का सदैव साक्षी बना रहता है वह चित्त पुरुष के ज्ञान रूपी प्रकाश से (प्रतिबिम्बित होकर) चेतन जैसा भासता है। इस कारण वह (चित्त) जिन जिन वृत्तियो के तदाकार होता है वह पुरुष स छिपी नही रहती। पुरुष मे चित्त जैसा परिणाम नहीं होता।

दृष्टा स्वरूप से शुद्ध परिणाम आदि से रहित सर्वदा एक रस रहता हुआ भी चित्त की वृत्तियो का ज्ञान रखने वाला है क्यो कि चित्त मे उसके ज्ञान का प्रकाश है अर्थात वह उसी के ज्ञान से प्रतिबिम्बित है। चित्त सुख–दु ख मोह आदि वृत्तियो के रूप मे परिणत होता रहता है। यह परिणाम आत्मा मे नही होता क्यो कि वह अपरिणामी ज्ञान स्वरूप है। चित्त का साक्षी होने के कारण उसमे ये वृत्तिया अज्ञान से अपनी प्रतीत होती हैं।

यह बात भली भान्ति समझ लेनी चाहिये कि आत्मा का (अपना साक्षात्कार) वास्तविक दर्शन विवेक ख्याति द्वारा चित्त को अपने से भिन्न देखना और असम्प्रज्ञात समाधि द्वारा स्वरूप स्थिति प्राप्त करना है। इसके अतिरिक्त चित्त की अन्य वृत्तियो को आसक्तिया के साथ देखना अदर्शन है क्योकि यह अविद्या से होती है और इससे यर्थाथ ज्ञान प्राप्त नही होता

व्यास भाष्य सूत्र २०(दृशिमात्र) सबधर्मो स रहित जो केवल चेतन मात्र अर्थात ज्ञान स्वरूप पुरुष है वह दृष्टा कहा जाता हे। यदि ज्ञान स्वरूप है तो ज्ञान का आश्रय कैसे हो सकता है अर्थात ज्ञान स्वरूप धर्म का आधार होने से दृशि मात्र कैसे हो सकता है ? इस शका का उत्तर देते है

शुध्दोऽपि प्रत्ययानुपश्य

यद्यपि वह स्वभाव से ज्ञान का आधार न होने से शुद्ध ही है तथापि प्रत्यय सज्ञक बुद्धि धम ज्ञान का अनुसरण करने से ज्ञान का आधार कहा जाता है अथात यद्यपि पुरुष ज्ञान स्वरूप ही है तथापि बुद्धि चित्त) रूपी दर्पण मे प्रतिबिम्बित होने से उस बुद्धि स धम भूत ज्ञान का आधार प्रतीत होता है इसलिए बुद्धि वृत्ति का अनुकारी अथात तदाकारी होने से पुरुष प्रत्ययानुपश्य कहा गया हे। यह पुरुष बुद्धि से विलक्षण है क्यो कि ज्ञात अज्ञात विषय होने से बुद्धि परिणामिनी है और सदा ज्ञात विषय होने से पुरुष अपरिणामि है।

ज्ञान आत्मा का धर्म नही है और न किसी भान्ति गुण ही है। आत्मा तो ज्ञान स्वरूप ही है नित्य है सर्वगत है और शिव (कल्याणकारी) है। इत्यादि स्मृति भी आत्मा ज्ञान स्वरूप द्रव्य ही सिद्ध होता है। अग्नि और उष्णता आदि मे भेद और अभेद होता हे क्योकि उष्णता ग्रहण न होन पर भी चक्षु से अग्नि का ग्रहण होता हे परन्तु पुरुष का ग्रहण ज्ञान के ग्रहण के बिना नही होता अत ज्ञान पुरुष का धर्म या गुण नही पुरुष का स्वरूप ही है

प्रथम तो यह आत्मा बुद्धि के स्वरूप मा नही है क्यो नही हे ? इसका उत्तर है दि परिणामिनी है बुद्धि के परिणामिनी होने मे हेतु ह कि वह बुद्धि ज्ञात ओ अ त विषय वाली है। उस बुद्धि के विषय गौ–आदि घटादि ज्ञात आर अज्ञात होते है अत वे बुद्धि की परिणामता को दर्शाते है

शब्द आदि निश्चय रूप परिणाम के बुद्धि मे सिध्द हो जाने से ही उन शब्दादि के परिणाम कार्य इच्छा कृति सुख दु ख अदृश्ट सस्कार आदि भी बुद्धि के धर्म हैं यह बात सिद्ध हो जाती है क्योकि कारण अपने कार्य को समान अधिकरण मे ही उत्पन्न किया करता है अत बुद्धि रूप अधिकरण मे जिन शब्द आदि विषयो का निश्चय हुआ है वह निश्चयात्मक ज्ञान अपने कार्य इच्छा कृति सुख दु ख आदि को भी उसी अधिकरण बुद्धि मे उत्पन्न करेगा। अत वे भी बुद्धि के ही धम या परिणाम है पुरुष के कदापि नही। बुद्धि सहत्यकारी होने से पराथ है अपने स भिन्न के भोग आदि के साधनार्थ है सहत्यकारी की अपेक्षा से व्यापार वाले शय्या आसन और शरीर आदि की भान्ति। पुरुष स्वार्थ है अपने भोग आदि क साधन हैं। उसमे उक्त हेतुआ सहत्यकारी आदि का अभाव है। जो सहकारी सापेक्ष व्यापार वाला नही होता वह परार्थ नही हुआ करता जैसे पुरुष।

बुद्धि पराथ के होने मे श्रुति प्रमाण है

"न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्ब प्रिय भवति आत्मनस्तु कामाय सर्वप्रिय भवति

सब की कामना के लिए सब प्यारे नही होते अपनी कामना के लिए सब प्यार हात है। यहा कोई स्वाथ इसका अर्थ करते है कि साध्य पराथ नही होता। यह नही हो सकता क्यो कि भृत्य चेतन को भी स्वामी चेतन के अर्थ देखा जाता है परार्थत्व पर मात्रार्थ है यदि यह कहो तो कह सकते हैं अचेतन त्वरूप अन्य वै धर्म्य को कहते है तथा सर्वार्थेति सुख दु ख मोहात्मक सर्वार्थ तीन गुणो का ग्रहण करती हुई बुद्धि भी तदाकार तथा त्रिगुणा सत्व आदि गुण त्रयमयी अनुमान से ज्ञात होती है। त्रिगुण होने से पृथ्वी आदि की भान्ति अचेतन है यह सिद्ध है गुणो का उपदृष्टा पुरुष तो दृश्या बुद्धि के सानिध्य से बुद्धि की वृत्ति प्रतिबिम्ब मात्र से गुण दृष्टा होता है गुणाकार परिणाम से गुणा का उपदृष्टा नही होता जेसे कि बुद्धि अत पुरुष त्रिगुण नही है इसी से चेतन है यह शेष है अत वैधर्म्य त्रय से पुरुष बुद्धि स्वरूप नही है।

मुक्ति का स्वरूप

दु ख के अत्यन्त अभाव का नाम मुक्ति है। अत्यन्त अभाव जिस वस्तु का होता है उसका अस्तित्व कभी नही हो सकता परन्तु एक जीव के मुक्त हो जाने से दु ख ससार म विद्यमान रहता हे। अपितु समस्त जीवो के मुक्त होन पर दु ख क अभाव नही हो सकता क्य कि वह जीव का धम नही है वह जिसका धम है उसम नित्य रहेगा क्योकि कोई धर्मी धम के बिना स्थित [illegible] सकता।

बाधना लक्षण दु खम

स्वा [illegible] का न
नाम ह [illegible] है। [illegible]
क ससर्ग ग [illegible] मे

जड वस्तुए सदैव स्वतन्त्रता से रहित होती हैं। जीवात्मा एक देशी तथा अल्पज्ञ होने के कारण सदैव स्वतत्र और बध्द होता है। अत जब वह बध्द होता है तब उसे दुख और बधन कहते हैं और जब वह दुख से रहित हो जाता है तब उसे मुक्त कहते है।

सुख दु खेच्छा द्वेष प्रयत्न
ज्ञानानि आत्मनो लिगम

यद्यपि दुख का नाश न होना जड का ही धर्म है उसका ज्ञान चेतन को ही हो सकता है। यथा अग्नि उष्ण है यह उष्णता किसको प्रतीत चेतन को ज्ञात होती है। ऐसे ही दुख का ज्ञान भी चेतन को ही होता है।

लक्षण दो प्रकार के होते हैं–एक स्वरूप लक्षण द्वितीय तटस्थ लक्षण। स्वरूप लक्षण उसे कहते जो लक्षण के साथ सदैव रहता है जैसे आग मे गर्मी। दूसरा तटस्थ लक्षण वह है जैसे किसी ने पूछा कि नेत्रपाल का घर कौन सा है ? दूसर ने बतलाया वह है जिस पर ओ३म का ध्वज लगा हुआ है और जिसके आगे गाये बधी है। ओ३म ध्वज और गाय का बधना घर के स्वरूप से सर्वथा भिन्न है और यह परिवर्तन शील है। विचारणीय बात यह है कि यदि जीव का स्वरूप लक्षण दुख को मान लिया जाए तो दुख किसी प्रकार से भी दूर नही हो सकता। दुख के नाश से जीवात्मा का नाश होगा। ऐसे ही सुख भी जीव का स्वभाविक धर्म नही है। वह भी सयोग से उत्पन्न होता है इसी प्रकार इच्छा द्वेष भी जीव का स्वभाविक गुण नहीं अपितु शरीर के सम्बन्ध से उत्पन्न होता है। जीवात्मा का स्वरूप लक्षण तो ज्ञान और प्रयत्न है।

छ गुणो का जीवात्मा का स्वरूप लक्षण स्वमानना युक्ति सगत नही है न प्रमाणिक।

दु ख जन्म प्रवृत्ति दोष
मिथ्याज्ञानानामुत्तरोत्तरापाये
तदनन्तरापायादपवर्ग

मिथ्या ज्ञान के नाश से तथा तदजन्य राग द्वेष का नाश हो जायेगा राग द्वेष के नाश से प्रवृत्ति उत्पन्न नही होगी और प्रवृत्ति के उत्पन्न न होने से कर्म और जन्म मरण नही होगा और जन्म मरण के न होने से दुख उत्पन्न नही होगा।

मुक्ति मे जीवात्मा केवल अपने ही स्वरूप चेतनत्व मे स्थित रहता है जैसा कि योग दर्शन कहता है –

तदादृष्टु स्वरूपेऽवस्थानम

तब दृष्टा जीवात्मा की अपने स्वरूप मे अवस्थिति होती है।

उपनिषद वचन भी है

परज्योति रूप सपद्यस्वेन रूपेण ऽ मि निष्पद्यते

पर ज्योति को प्राप्त करके अपने रूप चेतनता से युक्त रहता है

मुक्त प्रतिज्ञानात (४/२)

मुक्ति मे कोई शरीर आदि बन्धन नही रहते। उपनिषद का वचन है

अशरीर वाव सन्त न प्रिया प्रिये ऽस्पृशत

(छ ३०–८ १२/१) जीव शरीर रहित होता है अत उसे प्रिय अप्रिय नही छूते।

सत्यकाम सत्य सकल्प

(छ ८/६/६)

मुक्ति मे जीव सत्यकाम सत्य सकल्प होता है।

जीव केवल चेतन सत्ता मात्र ही मुक्ति मे रहता है। भौतिक साधनो की उसे आवश्यकता ही नही होती अत इन्द्रिया आदि नही रहती।

सकल्पादेव चतस्ते ८"

केवल सकल्प मात्र से उसकी सब कामनायें पूर्ण हो जाती हैं ऐसी श्रुति है।

पुरुष चित्त का स्वामी ज्ञान स्वरूप है पर अविवेक के कारण चित्त में आत्मा का अध्यारोप हो जाता है यही सर्व क्लेशो की मूल अविद्या है। सात्विक चित्त के प्रकाश मे सयम करने से पुरुष और चित्त मे भेद कराने वाला विवेक ज्ञान उत्पन्न होता है जिसको विवेक ख्याति कहते हैं। इस विवेकख्याति सिद्ध हो जाने पर पुरुष अपने को चित्त से प्रथक देखता हुआ गुणो के परिणामो का सम्पूर्णज्ञान प्राप्त कर लेता है और उन पर पूर्ण अधिकार रखते हुए उन का अधिष्ठाता होकर नियम रखता है। श्रुति भी ऐसा ही बतलाती है –

"आत्मनो वा अरे दर्शनेनेद सर्वाविदितम"

अर्थात पुरुष दर्शन होने पर सर्वज्ञातृत्व प्राप्त हो जाता है

जीवात्मा द्रव्य है या गुण ?

प्राय मनुष्यो को इस बात का भ्रम रहता है कि जीवात्मा द्रव्य है अथवा गुण ? यद्यपि सस्कृत दार्शिनिको तथा भौतिक विद्या के विद्वानो जीवात्मा को द्रव्य ही स्वीकारा है जैसा कि महात्मा कणाद मुनि के वैशेषिक दर्शन म नौ द्रव्यो मे एक आत्मा को भी द्रव्य माना है।

प्रथिव्याप स्तेजो वायुराकाश कालोदिगात्मा
मन इति द्रव्याणि

(वै.द.१/१/५)

पृथिवी जल तेज (अग्नि) वायु काल दिशा मन आत्मा ये नौ द्रव्य है। द्रव्य का लक्षण क्या है जिससे जीवात्मा को द्रव्य स्वीकार करे और गुण का क्या लक्षण है कि जिसके न होने से जीवात्मा को गुणो से भिन्न समझा जाये।

द्रव्य का लक्षण

क्रिया गुण वत्समवायि कारणमिति द्रव्य लक्षणम

(वै.१/१/१५)

जिसमे क्रिया (कर्म) का होना पाया जावे जिस में गुण हो और जो वस्तुओ का समवायि कारण हो उसे द्रव्य कहते है अथात यह द्रव्य के लक्षण हैं अब विचारणीय है कि आत्मा मे इन मे से कोई लक्षण पाया जाता है या नहीं ? उत्तर मिलता है कि आत्मा मे ज्ञान और प्रयत्न दो गुण विद्यमान है जिसमे गुण उपस्थित हो उसके द्रव्य होने मे आपत्ति ही क्या है ?

बहुधा मनुष्य यह कह सकते है कि ऋषि कणाद ने जिन चौबीस गुणो की परिगणना की है उनमे ज्ञान को गुण नही बतलाया। बस जब ज्ञान गुण ही नही तो ज्ञान की गणना न होने स जीवात्मा को द्रव्य नहीं कह सकते रही प्रयत्न की बात वह तो अग से मिलकर होता है इसलिए प्रयत्न भी जीवात्मा का स्वाभाविक गुण नहीं है। अत जीवात्मा को द्रव्य मानना किसी प्रकार ठीक नही हो सकता। इस का उत्तर यह है कि कणाद जी ने गुण मे बुद्धि की गणना की है। बुद्धि और ज्ञान पर्यायवाची है जैसा महात्मा गौतम ने न्याय दशन मे दिखलाया है –

बुद्धि रुपलब्धिर्ज्ञानमित्यनर्थान्तरम

(न्या.१/१/१५)

बुद्धि उपलब्धि और ज्ञान यह भिन्न–भिन्न पदार्थ नही है किन्तु एक ही के नाम है जब कि बुद्धि और ज्ञान पर्यायवाची हैं तो कणाद जी का बुद्धि की गुण मे सख्या करने से ज्ञान का गुण होना सिद्ध हो गया। जब ज्ञान गुण है तो ज्ञान वाला अवश्य ही द्रव्य है। ज्ञान बुद्धि का विषय है बुद्धि का पर्याय नहीं ऐसी शका हो सकती है। इसकी उत्पत्ति के लिए बुद्धि ज्ञान से भिन्न है मनुजी का ये श्लोक देखे –

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मन सत्येन शुध्यति।
विद्यातपोभ्या भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।।

बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है जब कि महर्षि मनु ज्ञान से बुद्धि का शुद्ध होना स्वीकार करते हैं तो बुद्धि और ज्ञान एक वस्तु नहीं वरन भिन्न भिन्न पदार्थ हैं। मनु ने ज्ञान से तात्पर्य "वेद" लिया है अर्थात वेद से बुद्धि की शुद्धि होती है। जिस प्रकार सूर्य और नेत्र का सबध है ऐसा ही बुद्धि और वेद का सबध है।

बुद्धि अर्थात ज्ञान के दो भेद हैं। एक विद्या दूसरे अविद्या। अत जीवात्मा मे अज्ञान के कारण दो प्रकार के ज्ञान रहते है एक अविद्या दूसरे विद्या तीसरे परमात्मा का ज्ञान है उसे सत्य विद्या कहते हैं। उपरोक्त प्रमाणो से सिद्ध होता है कि जीवात्मा द्रव्य है वस्तुत उसमे द्रव्य के लक्षण पाये जाते है गुण के लक्षण नहीं पाये जाते।

वैशषिकार ने आत्मा को गुणो मे नहीं गिना है।

गुण के लक्षण

द्रव्याश्रय्य गुणवान सयोग विभागेष्व कारण
मनपेक्ष इति गुण लक्षणम

(वै.१/१/१६)

जो द्रव्य के आश्रय पर अर्थात द्रव्य न रहे और उसमे दूसरा गुण न रहता हो सयोग और विभाग मे कारण न हो अर्थात उस की आवश्यकता न पडे यह गुण का लक्षण है।

जिनके विचार म जीवात्मा द्रव्य नही है उनको विचारना चाहिये कि जीवात्मा को द्रव्य न माना जाये तो उसके रहने के लिए किसी दूसरे द्रव्य की आवश्यकता होगी क्योकि जब जीवात्मा को गुण मानेगे तो प्रश्न उपस्थित होगा कि वह किस का गुण है। गुण भी दो प्रकार के होते है स्वाभाविक और नैमित्तक।

उपर्युक्त विश्लेषण के द्वारा हमने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि सुख दुख जीवात्मा का स्वामाविक गुण नही है मुक्ति की अवस्था मे आत्मा अपने शुद्ध स्वरूप मे ही रहता है।

लेखकों से निवेदन

सार्वदेशिक साप्ताहिक के लेखको से निवेदन है कि अपने लेख टाइप करवाकर या साफ साफ लिखाई मे भेजे।

सामयिक विषयों पर लेख वैदिक सिद्धान्तो तथा राष्ट्रीय विचारधारा के अनुकूल होने चाहिए।

वैदिक विद्वानों से निवेदन है कि गहरे एव गभीर विषयो पर लिखते समय जनसामान्य हेतु सरल भाषा का प्रयोग करे तथा लेख यथा सम्भव सक्षिप्त होने चाहिए।

रचनाओ का प्रकाशित करने या न करने का अधिकार सार्वदेशिक का है। अप्रकाशित रचनाये लौटाने की व्यवस्था नहीं है।

सम्पादक

राममनाथ वेदालकार

मै चाहता हू कि ससार का प्रत्येक मानव सत्य की साधना करने वाला हो और प्रत्येक सत्य साधक के ऊपर मधु बरसे मधु का झरना झरे। पवन अपनी शीतल मन्द लहरियो के साथ मधु बहाकर लाए। कल–कल करती सरिताए अपनी सलिल धाराओ के साथ मधु प्रवाहित करती हुई आए। रस भरी ओषधिया अपने अमृत रस से हमारे जीवनो मे मधु सचारित करे। इन सबसे मधु पाकर हम मधुमय हो जाए।

मधु वाता ऋतायते
मधु क्षरन्ति सिन्धव ।
माध्वीर्न सन्त्वोषधी ।।

–ऋ० १६०६

कभी अपने श्याम आचल से माताके समान सबको आच्छावि करती हुई और कभी अपनी शान्त मधुर चटकीली चन्द्रिका को छिटकाती हुई विश्रामदायिनी रात्रिया हमारे लिए मधुमती हो। नवस्फूर्ति देने वाली स्वर्णिम उषाए मधुमयी हो। समस्त पार्थिव लोक मधुमय हो। पितृतुल्य पालन कर्ता द्युलाक भी मधुमय हो।

मधु नक्तमुतोषसो
मधुमत पार्थिव रज ।
मधु द्यौरस्तु न पिता।।

–ऋ० १६०७

हरित पत्रो का दुकूल ओढे हुए वे वृक्ष –वनस्पति हमारे लिए मधुमय हो। रश्मियो से जगत को प्रकाशित करने वाला पावन सूर्य मधु मय हो। अपने स्तनो से अमृतोपम दूध को क्षरित करने वाली गौए मधुमयी हो।

मधुमान्नो वनस्पति
मधुमा अस्तु सूर्य ।
माध्वीर्गावो भवन्तु न ।।

–ऋ० १६०८

अहा यह सामने मधुमयी लता दिखाइ दे रही है। यह मधुयष्टि अपने अन्दर मधुरस को लेकर उत्पन्न हुई है। हे मधुलता मधु के लिए हम तुझे खनन करते है। तू मधुमय है हमे भी मधुमय कर हमे भी मधुमय कर।

इय वीरून्मधुजाता मधुना त्वा खनामसि।
मधोरधि प्रजातासि सा नो मधुमतस्कृधि।।

–अथर्व० १३४ १

मेरे जिवहाग्र पर मधु हो जिववामूल मे मधु हो । हे मधु तुम मेरे एक–एक ज्ञान मे एक–एक सकल्प मे एक–एक कर्म मे रम जाओ तुम मेरे चित्त मे बस जाओ।

जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम।
ममेदह ऋतावसो, मम चित्तमुपायसि।।

–अथर्व० १३४ २

मेरा घर से निकलना मधुमय हो निकलकर कर्म–क्षेत्र मे पग रखना मधुमय हो। मेरी वाणी मे मधु हो प्रत्येक गति–विधि मे मैं साक्षात मधु हो जाऊ।

मधुमन्मे निक्रमण, मधुमन्मे परायणम्।
वाचा वदामि मधुमद भूयास मधुसन्दृश ।।

–अथर्व० १३४ ३

अहा प्रकृति में सर्वत्र मधु रमा हुआ है। ये रम्य पर्वत मालाए सिर उठाए खडी है इनके अन्दर भी मधु है। इनके अन्दर हरियाली का मधु है इनके अन्दर स्रोतो और झरनो का मधु है इनके अन्दर वृक्ष लताओ और फल फूलो का मधु है इनके अन्दर वनो की शान्ति का मधु है। इनके अन्दर पाषाणो की कठोरता का मधु है वह मधु हमे भी प्राप्त हो। बादलो के अन्दर भी मधु है सरसता का मधु है पवित्रता का मधु है।

गायो के अन्दर भी मधु है गोरस का मधु है परोपकारिता का मधु है सौम्यता का मधु है अहिसा का मधु है मातृत्व का मधु है सरलता का मधु है। वह मधु हमे भी प्राप्त हो।

अश्वो के अन्दर भी मधु है बल का मधु है वेग का मधु है शक्ति का मधु है पुरूषत्व का मधु है। वह मधु हमे भी प्राप्त हो

द्राक्षासव प्रभृति आसवो के अन्दर भी मधु है बलोतेजकता का मधु है विकार शामकता का मधु है स्वास्थ्यवर्धकता का मधु है। वह मधु हमे भी प्राप्त हो।

यद गिरिषु पर्वतेषु गोष्वश्वेषु यन्मधु।
सुराया सिच्यमानाया यत तत्र मधु तन्मयि।।

अथर्व० ११९

हे अश्विदेव तुम भी हमारे जीवनो मे मधु भरो ऐसा मधु भरो जेसा सरधाओ (मधुमाक्षिकाओ) का मधु होता है जिसम मिठास ही मिठास होती है।

हे द्यावा पृथिवी तुम अश्वियुगल कहलाते हो तुम मधुरस से परिपूर्ण हो हमे भी मधुरस प्रदान करो हे सूय चन्द्र तुम भी अश्विद्वय नाम से प्रसिद्ध हो तुम्हारे अन्दर भी अनुपम मधु भरा है हमे भी उस मधु से सनाथ करो। हे अहोरात्रो तुम भी 'अश्विनो' हो तुम भी मधु से विकसति हो उस मधु का विकास हमारे अन्दर भी करो। हे प्राणापाना तुम्हारी भी अश्विसज्ञा है तुम भी मधुसिक्त हो हमे भी मधुसिक्त करो। हे शल्य चिकित्सक तथा ओषधि चिकित्सक वैद्यो तुम भी अश्वि युगल हो तुम्हारे पास भी मधु है जिस मधु से तुम दु खियो का दु ख रोगियो का रोग और आतुरो की आतुरता हरते हो। उस मधु मसे कुछ अश हमे भी प्रदान करो।

हे शुभ मधु के अधिपतिया हमे ऐसा मधुमय कर दो कि हमारे अग अग मे मधु का वास हो जाए। हमारे आत्मा मे मधु हो हमारे प्राण मे मधु हो हमारी इन्द्रियो मे मधु हो। तुम हमारी वाणी मेवर्चस्विता का मधु उत्पन्न कर दो जिससे हम परस्पर वर्चस्वती वाणी ही बोल।

अश्विना सारघेण मा मधुनगवत शुभस्पती।
यथा वर्चस्वती वाचमावदानि जना अनु ।।

–अथर्व० ६११६

अन्त मे मैं पुन प्रकृति की एक–एक कणिका से मधु की पुकार करता हू। मेरे ऊपर मधु–वर्षा हो मेरे राष्ट्र पर मधु–वर्षा हो भूमि के सब राष्ट्रो पर मधु–वर्षा हो मानव मात्र मधु स स्नात हो जाये।

(वैदिक मधुवृष्टि से साभार)

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता
धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये
धामन्नध्यैरयन्त।।२।।

–ऋग्वेदादिभाष्यभूमिक से

भाषार्थ (स होवाच ए) याज्ञवल्क्य कहते है हे गार्गी। जो परब्रह नाश स्थूल सूक्ष्म लघु लाल चिक्कन छाया अन्धकार वायु आकाश सग शब्द स्पर्श गन्ध रस नेत्र कर्ण मन तेज प्राण मुख नाम गोत्र वृद्धावस्था मरण भय आकार विकाश सकाच पूर्व अपर भीतर बाहय अर्थात बाहर इन सब दोष और गणो स रहित मोक्षस्वरूप हे वह साकार पदार्थ के समान किसी को प्राप्त नहीं होता और न काइ उसको मूर्त्त द्रव्य के समान प्राप्त होता हे प्राप्त हाने वाला कोइ नही हो सकता जेसे मूत्त द्रव्य को चक्षुरादि इन्द्रियो से साक्षात कर सकते ह क्याकि वह सब इन्द्रियो के विषया से अलग और सब इन्द्रियो का आत्मा है (१३)।

तथा (य ज्ञयन) अर्थात पूर्वोक्त ज्ञानरूप यज्ञ और आत्मादि द्रव्यो की परमेश्वर को दक्षिणा दने से वे मुक्त लाग मोक्ष सुख मे प्रसन्न रहते है। (इन्द्रस्य) जो परमेश्वर [illegible] त्य अ ात मित्रता स म [illegible] को प्राप्त हो गये ह उन्ही क लिए भद्र नाम सब सुख नियत किय गये (आगरस) अर्थात उनक जो प्राण है वे (समधस [illegible]) बुद्धि को अत्यन्त बढान वाले होते है। और उस मोक्षप्राप्त मनुष्य को पूर्वमुक्त लाग अपने समीप आनन्द मे रख लते है और फिर व परस्पर अपन ज्ञान से एक दूसरे को प्रीतिपूर्वक देखते और मिलते है। १।।

(स नो बन्धु) सब मनुष्यो को यह जानना चाहिए कि वही परमश्वर हमारा बन्धु अर्थात दु ख का नाश करन वाल (जनिता) सब सुखो का उत्पन्न ओर पालन [illegible] वही सब कामो का पूण करना और [illegible] लोका का जाननेवाला है कि जिसमे देव अर्थात विद्वान लोग मोक्ष को प्राप्त हाके सदा आनन्द मे रहते है। और व तीसरे धाम अथात शुद्ध सत्त्व र सहित हाके सर्वोत्तम सुख म सदा स्वच्छन्दता से रमण करते है ।२ ।

इस पकार सक्षप स मुक्ति विषय कुछ तो वणन कर दिया और कुछ आगे भी कही कही करेगे सो जान लेना जैसे वेदाहमेत इस मन्त्र मे भी मुक्ति का विषय कहा गया है।

मोक्ष सुख प्राप्त करन के लिए इश्वर को जाने ईश्वर को जानने के लिए महर्षिदयानन्द के ग्रन्थ [illegible] ाश एव ऋग्वेदादि मान्य भूमिका को पढे पढाये सुने [illegible] ाये

पुष्करलाल आय
१२१ काटन स्ट्रीट
क [illegible] ७

महेश विद्यालकार

आर्य समाज का उदय घोर अन्धकार अविद्या अन्धविश्वास ढोग पाखण्ड और विकत सस्कृति सभ्यता के वातावरण मे हुआ। इसके प्रवर्त्तक ऋषिवर देवदयानन्द अपने मे ऐसी पुण्यात्मा थे कि सम्पूण व्यक्तित्व और कृतित्व प्रेरक व शिक्षा प्रद रहा है। आर्यसमाज के प्रेरक गौरवमय व वलिदानी अतीत का जितना गुणगान किया जाय उतना थोडा हैं। उसी अतीत के तप त्याग तपस्या पर यह सस्था आज खडी है। वतमान स्थिति पर जितना प्रायाश्चित किया जाय आसू बहाये जाये चिन्ता दु ख प्रकट किया जाय उतना थोडा है ? भविष्य पर जितनी आशकाए व प्रश्न चिह लगाए जाये लग सकते है। क्योकि वर्तमान से ही भविष्य बनता है। सर्वत्र भटकाव विखराव और अकर्मण्यता फैल रही है। जो वर्तमान धार्मिक सामाजिक राजनैतिक तथा सगठनात्मक स्थिति है वह उत्साह जनक व प्रेरणाप्रद नही बन पा रही है। चारो ओर अराजकता अनुशासन हीनता स्वार्थ पदलिप्सा आगे बढ रहे है। एक दूसरे क न सम्मान करना न मानने की प्रवृत्ति जोर पकड रही है। इसी कारण ईर्ष्या द्वेष पार्टीवाजी मुकद्दमे विवाद व समस्याए बन रही है। ऋषि और मिशन की भवना क्षीण हो रही है। उद्दश्य बदल रहे हैं। जो शक्ति समय धन तथा सोच आर्य विचारधारा के प्रचार प्रसार मे और बढते हुए ढोग पाखण्ड ामाजिक कुरीतिया नास्तिकता अनैतिक आदि मिटान मे ाने चाहिए थी। वह विवादो झगडो उखाड पछाड म लग रही

आ मा त 1 सभा सगठन मदिर सस्थाए स्कूल कालेज आदि तो बना लिए। इनके कुशल सचालन के लिए तपस्वी त्यागी दयानन्दी भावना से ओतप्रोत तथा मिसनरी भ ना वाले व्यक्ति 1 बना सका। जिनकी सोच मे आर्यसमाज हो। इसी कारण आज आर्यसमाज लडखडा रहा है। सही व्यक्तियो का अभाव हो रहा है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि सभा सगठनो समाज मदिरो सस्थाओ आदि पर वे व्यक्ति हावी होने लगे हैं जो अवसरवादी सुविधावादी पद और अर्थ लिप्सु है। जो घर परिवार के स्वार्थ से जुडे हैं। पार्टीवाजी के कारण गलत व सिद्धान्तहीन व्यक्तियो को भी बढावा दिया जा रहा है। जिनके लिए आर्य समाज आगे बढने के लिए सीढी है ऐसे स्वार्थी यक्ति तेजी से आय समाज मे घुस गए है और घुस रहे हे ऐसे व्यक्तियो से इस सगठन को सावधान रहना ह गा। ऐसे व्यक्ति आर्य समाज के चरि। की गिरावट का नमूना है। जिनम आर्यसमाज के नियमो आदर्शो और सिद्धातो की कट्टरता न दृढता है एसे व्यक्ति वेचैन परेशान व चिन्तित होकर तटस्थ होने लगे है। उनकी पीडा इन श्ब्दो मे फूटती है

दिल के फफोले जल उठे सीने की आग से।
इस घर को आग लग गइ घर के चिराग से।

आय समज का प्रजातान्त्रिक ढाचा बुरी तरह चरमरा गया है। दश की अन्य राजनैतिक पर्टियो की राजनीति और आर्य समाज की चुनावी राजनीति मे कोइ अन्तर नजर नही आ रहा है। ज थकण्डे जोड तोड प्रान्तीयता जातीयता ना भतीजावाद वहा चलना है वैसा ही यहा भी हाने लगा है यह इस सस्था की उन्नति प्रगति की रूकावट मे अह कारण है। जब इसके रक्षक ही भक्षक बन जायेगे ? जब अधिकारी ही नियम व सिद्धान्त विरूद्ध कार्य करेगे। तो दूसरो को कैसे रोक सकेगे। इसी का प्रत्यक्ष है कि आर्य समाज अपने विद्वानो उपदेशको सन्यासियो आदि को उचित स्थान सम्मान और सुविधाए न देने के कारण प्राय सभी मे अपने अलग अलग सस्था आश्रम व सस्थान बनाने मे लग गए। हमसे आर्यसमाज का धनबल और जनबल दोनो बटे। सगठन की शक्ति कमजोर हुई। अनुयायी बिखर गए बट गए। दयानन्द और आर्य सम ज पीछे छूट गया। अपना प्रचार और अपनी पूजा की प्रवृत्ति बढने लगी। सभी अपने अपने आश्रमो सस्थाओ सस्थानो व सगठनो के रास्त बताने लगे। सभी ने अपने अपने कन्धो के झोलो मे एक एक सस्था डाल रखी है। उसी के लिए चन्दा दान सहयोग लिया जा रहा है। अब सुना है कमीशन के आधार पर चन्दा एकत्र होने लगा है। इतना तुम्हे कमीशन देगे चन्दा इक्ट्ठा करा दो। व्यक्तिगत सपत्ति और बैक बैलेन्स तेजी से बढ रहा है। पुजापे व चढावे के कारण अ यसमाज मे ढोग पाखण्ड व प्रदर्शन को बढावा दिया जा रहा है। यह प्रवृत्ति आर्य समाज के लिए घातक सिद्ध हा ही ह इस सस्था से जुडे विद्वान उपदेशको पुराहितो सन्यासियो आदि की अलग पहिचान व सा न ह उस गाडा छोड [illegible] नाम पेसा व यश के लिए।

एक और आर्य समाज के विद्वानो व उपदेशको मे रोग फैलने लगा कि जिसने कभी गुरूकुल मे पढा नही कोई आचार्य व शास्त्री की परीक्षा पास नही की जिनके पास कोई डिग्री नही है गुरू का सानिध्य प्राप्त नही किया जिसमे गुरुत्व नही वे आचार्य शास्त्री परमपूजनीय महाराज जैसे उच्च गरिमापूर्ण तपस्वी त्यागी चरित्र प्रेरक शब्दो को नाम के आगे लगाकर जनता को भ्रम मे डालकर ठग रहे हैं। मैं कई लोगों को जानता हू जो स्कूल से आठवीं पास हैं किसी ने उपदेशक विद्यालय से एक आध साल कुछ पढ लिया बस बन गए आचार्य शास्त्री और महाराज। जिनके आचार विचार चरित्र और सोच मे कुरूपता झलकती है। ऐसे उच्च आदर्श प्रेरक शब्दो की गरिमा बनाये रखने के लिऐ धमार्य सभा को कठोर कदम उठाने चाहिए। विद्वान उपदेशक की शोभा तो त्याग तपस्या मे है। चरित्र की पारदर्शिता मे है। वृद्धाओ और लडकियो से पैर छुवाये जाते हैं। उन्हे गुरू मन्त्र दिए जा रहे है। पौराणिक भी थाली आगे रखवाकर चढावा चढवा रहा है और आय समाजी विद्वान व उपदेशक भी फिर अन्तर क्या रहा। आजकल एक प्रथा और चल पडी है जैसे नामी गामी डाक्टर चेरेटेबल डिसपेन्सरी का कुछ सेवा के नाम पर समय देता है। वहा से वह मोटे पेसे वाले मरीजो को अपने नर्सिग होम मे लेजाकर आपरेशन करके मोटी रकत बसूलता है। ऐसे ही कुछ नामी गामी साइनबोर्ड धारी आर्य समाज के विद्वान उपदेशक भोगी विलासी यजमानो को अपन आश्रमो सस्थाओ व सस्थानो मे ले जाते है। उनकी भावना को उभारते हैं। उन्हे धर्मावतार घोषित करके रकम बसूलते है फिर उस घन से स्वय ऐशो आराम की जिन्दगी जीते है। ५६ लोगो का ऐसा व्यापार खूब फल फूल रहा है। ऐसी बातो से आर्य समाज के प्रचार व प्रसार को गहरा घक्का लग रहा है। आर्य समाज गौण हो रहा है। व्यक्ति पूजा की प्रवृत्ति सगठन को पीछ कर देती है। आर्य समाज को इस बारे मे जागरूक होना पडेगा। एस व्यक्तियो पर अकुश लगाना होगा। जो आर्य समाज के नाम पर अपना व्यापार चला रहे है। जिनमे अपने को गुरू महन्त महाराज और परमपूजनीय स्थापित करने का ढोग पाखण्ड भरा हुआ है। ऐसे लोगो से आर्य समाज का हित होने वाला नहीं।

आर्य समाज के ऊपर बहुत बडा खतरा यह भी आ रहा है कि इसकी करोडो रूपयो की सपत्ति

पर और सभा सगठन संस्थाओं मदिरो स्कूलो पर गैर आर्यसमाजियो की गिद्ध दृष्टि बडी तेजी से पडने लगी है। प्रच्छन्न रूप से कब्जे हो गए हैं और हो रहे हैं। हम बेखबर होकर सो रहे है। अगर यही स्थिति चलती रही तो वह दिन दूर नहीं है जब ऋषि दयानन्द के चित्र की जगह विवेकानद का चित्र होगा। आर्यसमाज मदिरो में मूर्ति पूजा होगी क्योकि योजना बद्ध तरीके से सतर्क और जागरूक होना होगा——— नहीं तो——भविष्य की कल्पना बडी भयावह है अधिकारियो सदस्यो और विद्वानो उपदेशको को यह दृढता व कट्टरता लानी होगी कि हम पहले दयानन्दी और आर्य समाजी हैं। इसके सिद्धान्तो आदर्शो व मूल्यो से कोई समझौता नही होगा। तब यह सगठन बचेगा।

आर्य समाज को तो चारो ओर से खतरे ही खतरे हैं। उससे तो अपने भी है नाखूश गैर भी खफा हैं। क्योकि दूसरी सत्य की लडाई तो आर–पार की होती है। यह सगठन आज तूफानो के दौर से गुजर रहा है। इसकी साख और पहिचान को दूसरी विचारधारा वाले समूल निगलना चाहते है। और अपने लोग इसे बर्बाद करने पर तुले हुए हैं। विवादो और झगडो के चक्रव्यूह म उलझाये जा रहे हैं। आर्य समाज की पीडा बडी गहरी और मर्मान्तक है। जरूरत है हम सबको इस पीडा को महसूस करने की मिल बैठकर सोचने की तथा कुछ जन–सकल्प लेकर आगे करने की। मै इसलिए आर्य समाज की पीडा को लिख रहा हू कि हम वस्तुस्थिति को जाने ? इस दर्द को बेचैनी से अनुभव करे। ऋषि और आर्य समाज को आगे रख [illegible] उसकी उन्नति प्रगति प्रचार एव प्रसार के लिए [illegible] स कछ करे सोच को बदले। मैं निराश [illegible] नहीं हू। चिंतित हू। दुनिया की सर्वोत्तम विचारधारा का धनी आर्यसमाज अपने मूल उद्देश्य और आदर्शो को भूलकर किधर [illegible] रहा है। आज के जीवन और जगत को इसके सत्य स्वरुप की महती आवश्यकता है। आर्यो! उठो! जागो! अपने को सभालो! कुछ करो! बाते बहुत हो चुकी। अब करने की बारी है।

> आर्य समाज लैन्सडौन का
> **हीरक जयन्ती समारोह**
> दिनाक १ जून व २ जून १६६६
> समारोह स्थल नरेन्द्र क्लब प्रागण लैन्सडौन

गढवाल आर्य उप प्रतिनिधि सभा के तत्वाव धान मे आर्य समाज लैन्सडौन की हीरक जयन्ती १ जून व २ जून १६६६ को भव्य एव समारोह पूर्वक मनाई जा रही है।

गढवाल आर्य उप प्रतिनिधि सभा अपने स्थापना काल जून १६६६ से पौडी चमोली टिहरी उत्तर काशी जनपदो मे निरन्तर आर्य समाज का प्रचार–प्रसार करती आ रही है और इस अवधि में पावा तथा टिहरी मे आर्य सम्मेलनो का सफल आयोजन कर चुकी है। उप सभा के प्रचारक व भजनोपदेशक वैदिक धर्म के प्रचार मे सलग्न है।

यह अवगत करते हुये प्रसन्नता होती है कि हीरक जयन्ती के अवसर पर आर्य जगत के उच्च कोटि के सन्यासियो विद्वानो उपदेशको भजनोपदेशको तथा आर्य शिरोमणि सभाओ के नेताओ को आमन्त्रित किया गया है। पूज्यपाद स्वामी योगानन्द सरस्वती जी श्री सत्यव्रत राजेश जी श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव प्रधान सार्वदेशिक सभा श्री सत्यानन्द मुन्जाल उपप्रधान सार्वदेशिक सभा श्री सच्चिदानद शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा श्री ज्ञानप्रकाश चोपडा प्रधान श्री रामनाथ सहगल मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के नाम उल्लेखनीय है।

इस अवसर पर उपसभा एक ज्ञानवर्द्धक सामग्री से परिपूर्ण स्मारिका का भी प्रकाशन कर रही है।

अत समस्त राष्ट्र संस्कृति एव धर्म प्रेमी सज्जनो से सानुरोध प्रार्थना है कि इस पुनीत कार्य मे तन मन धन से सहयोग प्रदान करे तथा अपने इष्ट–मित्रो सहित सपरिवार पधार कर समारोह की शोभा बढाते हुए धर्म लाभ प्राप्त करे।

"यह संसार ईश्वर का महाकाव्य है"

वैदिक साधन आश्रम तपोवन के ग्रीष्मोत्सव का समापन करते हुए वेदो के प्रकाण्ड विद्वान तथा गुरूकुल कागडी विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा. रामप्रसाद वेदालकार ने बताया कि जब–जब सृष्टि की उत्पत्ति होती है तब–तब ईश्वर अपनी सन्तानो के मार्ग दर्शन के लिए वेद–ज्ञान प्रदान करता है।

वैदिक भाषा के शब्दो के अ[illegible] धातु के आधार पर होते है लौकिक भाषा उन शब्दो के अर्थ रूढ हो जा[illegible] पर बनती है। इस प्रसग मे आपने अग्नि शब्द के अनेक अर्थो का वर्णन किया जो भौतिक तत्त्व ताप और प्रकाश देता है वह भी अग्नि है–और देवता है क्योकि वह उसके अन्दर डाली हुई वस्तुओ का वाहन बन जाता है और उन्हे परमाणुओ मे परिणत करते दूर दूर तक पहुचा देता है इसके दूसरे अर्थ मार्ग दर्शक अथवा अग्रणी है। परमेश्वर को भी ऋग्वेद के प्रथम मत्र मे अग्नि नाम से पुकारा गया है क्योकि वह सबसे बडा मार्ग–दर्शक और ज्ञान –प्रकाशक है।

ईश्वर की साधना के लिए उस आदि कवि के प्रत्यक्ष काव्य इस ससार को देखना आवश्यक है।

इसी अवसर पर आचार्य आर्य नरेश ने अपने ओजस्वी भाषण मे बताया कि ईश्वर–प्राप्ति के जो आठ अग योगदर्शन ने बताए हैं उनमे प्रथम है अहिसा। जिस देश मे सूर्योदय होने तक प्रतिदिन लाखो गायो का खून बहाया जाता हो वहा साधना कैसे हो सकती है। समाज के आस्तिक जनो की रक्षा चोरो डाकुओ और दुराचारियो से जब तक न की जा सके तब तक साधना और यज्ञ मे विघन होता ही रहता है इसलिए अहिंसा धर्म को नाश से बचाने के लिए प्रयत्न करना भी आवश्यक है।

अत आचार्य जी ने आह्वान किया कि युवक–युवतियो मे समाज की रक्षा के लिए क्षात्र बल भी पैदा करना चाहिए और राष्ट्र की बाग–डोर ऐसे हाथो मे सौपनी चाहिए जो अहिसा धर्म की रक्षा कर सके।

समशरण वर्मा पत्रकार

नवीन छात्रों का प्रवेश

सभी को सूचित किया जाता है कि सम्पूर्णानद सस्कृत विश्व विद्यालय वाराणसी से सबद्ध एव उत्तर प्रदेश शासन द्वारा प्रथम श्रेणी मे मान्यता प्राप्त श्री नि शुल्क गुरूकुल महाविद्यालय अयोध्या–फैजाबाद उ.प्र. मे कक्षा–१ से आचार्य एम. ए पर्यन्त तक के अध्ययन की व्यवस्था उपलब्ध है। विद्यार्थियो के लिए रहन–सहन (छात्रावास) आदि का प्रबध गुरूकुल मे ही है। इच्छुक अभिभावक अपने बच्चो का प्रवेश १ जुलाई से ३१ जुलाई तक करावे विशेष जानकारी के लिए कार्यलय से सम्पर्क करे।

निवेदक

प्राचार्य श्री नि शुल्क गुरूकुल महा विद्यालय अयोध्या फैजाबाद

गुरूकुल वैदिक सस्कृत महाविद्यालय सिराथू मे
प्रवेश प्रारम्भ

प्रयाग की पावन धरती पर सिराथू नगर मे स्थित गुरूकुल सिराथू का नवीन सत्र ८ जुलाई ६६ से प्रारभ हो रहा है। विद्यालय प्राकृतिक छटाओ से [illegible] योग्यतम आचार्यो के सरक्षण मे सर्वोत्तम शिक्षा व्यवस्था से युक्त भोजन आवास प्रकाश चहार दीवारी आदि सुविधाओ से परिपूर्ण है। अपने प्यारे बच्चो को सुयोग्य नागरिक मातृ पितृ तथा देश भक्त बनाने के लिए गुरूकुल सिराथू मे प्रवेश कराये। यह महाविद्यालय सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से सबध है। यहा प्रथमा (कक्षा ६ से आचार्य (एम ए तक की शिक्षा प्रदान की जाती है। इसके अतिरिक्त सध्या हवन धार्मिक शिक्षा नैतिक शिक्षा सदाचार योगासन सगीत धनुर्विद्या शारीरिक व्यायाम का नियमित अभ्यास कराया जाता है। छात्रो के समग्र विकास मे सतत प्रयत्नशील रहती है। अधिक जानकारी के लिए २१/रु भेजकर प्रवेश नियमावली मगाये

डा रामामित्र शास्त्री

आर्य समाज नवीन शाहदरा दिल्ली मे विशेष आयोजन

आर्य समाज नवीन शाहदरा दिल्ली की स्थापना फरवरी ६६ मे हुई थी इस आर्य समाज के निष्ठावान कार्यकर्ता वैदिक धर्म के प्रचार तथा प्रसार मे प्राण पण से लगे हुये है। इस नवीन आर्य समाज के साप्ताहिक अधिवेशनो मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानो का आवागमन लगा ही रहता है। अभी पिछले साप्ताहिक सतसग मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान स्वामी दीक्षानद जी सरस्वती का सारगर्भित उपदेश हुआ स्वामी जी ने समाज की उपस्थिति पर सन्तोष व्यक्त किया। लगभग ५० सदस्यो की उपस्थिति मे स्वामी दीक्षानद जी सरस्वती ने आर्य समाज की प्रगति हेतु प्रभावशाली वक्तव्य द्वारा सदस्यो का उत्साह वर्धन किया

अभिमन्यु चावला
मत्री

लेख प्रतियोगिता

महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवे समुल्लास पर एक निबध लिख कर अगस्त १६६६ तक निम्न पते पर भेजे। माध्यम हिन्दी अथवा अग्रेजी शब्द सख्या इच्छानुसार पुरस्कार

प्रथम ५००रु द्वितीय–३००रु तृतीय २००रु

[illegible] मुमुक्षु

अध्यक्ष आप [illegible]

कै.देवरत्न परेशान क्यों?

जब कै. देवरत्न जी ने एक लेख डा. सच्चिदानन्द शास्त्री के विरुद्ध लिखा तव किसी ने नही पूछा कि सभा मत्री श्री शास्त्री ने क्या अपराध किया था। हम समझते हैं कि यदि कैप्टन साहव साफ सुथरे भरे थे तो शास्त्री जी को तथा उन के परिवार को हम भी जानते हैं वह कैप्टन साहव से आचार व्यवहार योग्यता त्याग तप–स्वतन्त्रता आन्दोलन मे परिवार अग्रणी रहा है–कैप्टन साहव को शर्म नहीं आई कि एक आर्य समाज व ऋषि को अर्पित जीवन दानी पर आक्षेप लगाया है। अब जब देवरत्न जी पर आक्षेप लगा–अब–होश आया–भिन्न भिन्न लोगो से सफाई मे पत्र लिखवा रहे है।

अच्छा हो कैप्टन साहव सीधे श्री शास्त्री जी से ही बात करे और अपने लिखे लेख पर पश्चाताप प्रकट करे।

सम्पादक

"दयानन्द शोधपीठ के लिए अध्यक्ष की आवश्यकता"

दयानन्द स्नातकोत्तर कालेज अजमेर मे राज्य सरकार तथा विश्व विद्यालय द्वारा मान्यता प्रप्त वैदिक अनुसधान के लिए स्थापित दयानद शोपीठ के लिए प्रोफेसर ग्रेड मे एक सुयोग्य आर्य विद्वान की आवश्यकता है।

सस्कृत तथा हिन्दी मे कम से कम द्वितीय श्रेणी मे एम ए डी फि या पी एच डी की शैक्षिक योग्यता के अतिरिक्त दस वर्ष का स्नातक और सनातकोत्तर कक्षाओ को पढाने का अनुभव तथा अग्रेजी का ज्ञान आवश्यक। ऋषि दयानन्द के जीवन शिक्षा और योगदान का अध्ययन तथा शोध कार्य के अनुभव को वरीयता

वेतन श्रृखला ४५००–७३०० मे प्रारम्भिक वेतन रुपये १० ३८०/– देय

५०/रुपये के निर्धारित आवेदन पत्र पर ३० जून १६६६ तक विवरण सहित निम्न पते पर आवेदन करे।

मत्री आर्य समाज शिक्षा सभा
केसरगज अजमेर (राज.)

प्रधानाचार्या की

आर्य कन्या गुरुकुल महाविद्यालय नरेला (दिल्ली–४०) हेतु आचार्या की शीघ्र आवश्यकता है जो प्रौढ आयु, सात्विक–चरित्र गुरुकुलीय आश्रम जीवन म आस्था कार्य अनुभव गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से शिक्षित अथवा एम ए (सस्कृत) सुयोग्य हो। आश्रम मे निवास अनिवार्य है। वेतन शिक्षा एव कार्यानुभव के अनुसार दिया जायेगा। प्रत्याशी दिनाक ३१ मई को प्रात १०–० बजे स्वय कन्या गुरुकुल में साक्षात्कार के लिए उपस्थित हो।

व्यवस्थापक गुरुदत्त वेदालकार
कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली–४०)

भजनोपदेशकों की

आय उपदेशक एव भजनोपदेशको की मैजिक लालटेन वाले व्यक्ति को वरीयता वेतन योग्यतानुसार।

(गोविन्द सिह आर्य प्राचार्य
आर्य गुरुकुल महाविद्यालय
सिरसागज फिरोजाबाद (उ प्र.)

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज रामनगर गुड़गावाँ
श्री भक्त राजेन्द्र प्रसाद प्रधान श्री ओमप्रकाश चुटानी मत्री श्री तारा चन्द्र मनचन्दा कोषाध्यक्ष

आर्य समाज रक्सौल -
श्री व्यासजी आर्य प्रधान श्री देवनदन प्रसाद मत्री श्री नद किशोर कोषाध्यक्ष

आर्य समाज रेलवे कालोनी कोटा
महा.तेजपाल कृषक प्रधान
श्री करण सिह आर्य मत्री
श्री प्रेम सिह परिहार कोषाध्यक्ष

आर्य समाज चोपन
श्री सत्य नारायण आर्य प्रधान श्री शम्भू प्रसाद आर्य मत्री श्री दिलीपकुमार सिह कोषाध्यक्ष

आर्य समाज जनकपुरी बी ब्लाक दिल्ली
श्री वीरेन्द्र कुमार खट्टर प्रधान श्री केवल कृष्ण कपानिया मत्री श्री शोभराज टुटेजा कोषाध्यक्ष

गुरुकुल प्रभात आश्रम
वेद प्रचार शिविर का आयोजन

दि. २८ मई १६६६ मगलवार को गगा दशहरा के पवित्र पर्व पर गुरुकुल प्रभात आश्रम की ओर से विश्राम गृह भोला झाल पर एक वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया गया है। जो प्रात ६ बजे यज्ञ से प्रारम होगा। इस अवसर पर देश की प्रमुख समस्याओ पर विद्वानो के भाषण होगे।

अधिक से अधि सख्या मे पधारे।

भवदीय
इन्द्रराज मत्री

आर्ष गुरुकुल नोएडा प्रवेश प्रारम्भ

बच्चो को अच्छे सस्कार देने उन्हे सदाचारी आज्ञाकारी एव विद्वान बनाने हेतु आर्ष गुरुकुल नोएडा म प्रवेश करवाए। अष्टाध्यायी पद्धति से सस्कृत के अतिरिक्त गणित विज्ञान अग्रेजी वेद उपनिषद दर्शन रामायण महाभारत आदि विषय भी पढाने की उचित व्यवस्था। प्रात चार बजे से रात्रि नौ बजे तक सध्या हवन ध्यान योगासन अध्ययन खेलकूद आदि की सुन्दर व्यवस्था। प्रवेश शुल्क मात्र पाच सौ रुपये आवास व भोजन शुल्क मात्र दो सौ रुपये मासिक। अति निर्धन एव अनाथ बच्चो को पूर्णतया नि शुल्क।

सम्पर्क करे डा. मुमुक्षु आर्य अध्यक्ष
आर्ष गुरुकुल नोएडा
बी ६६ सैक्टर ३३ नोएडा–२०१३०१
दूरभाष ८५५३४६७ ८५७७२१८

प्रेरक-काव्य

सूरज बदले चन्दा बदले बदले जाय ध्रुव तारा।
पर भारत की आन न बदले यह सकल्प हमारा।।
उन्नतशील हिमालय जिसका वह डरना क्या जाने।
जोशकारी रिपु दमन विजेता वह झुकना क्या जाने।।
अब समले वह शत्रु नराधम जिसने है ललकारा।
पर भारत की आन न बदले यह सकल्प हमारा।।
देवासुर सग्राम जयी जो महावल जग माता।
रावण कस असुर सहारक सत्य धर्म निर्माता।।
इस स्वदेश के हम सपूत हैं साक्षी है जग सारा।
पर भारत की आन न बदले यह सकल्प हमारा।
मिली चुनौती जब ही हमको उसे सदा स्वीकारा
वही शक्ति अब भी अक्षय है बदलेगे युगधारा।।
इस उद्देश्य को पूर्ण करेगा सघ शक्ति बलधारा।
पर भारत की आन न बदले यह सकल्प हमारा।।
गो हत्या करते दुष्ट को शिवराज ने झटमारा।
अब समलो ऐ गो हत्यारो आर्यो ने ललकारा।।
गोकरुणनिधि लिखी ऋषि ने अब इसका हो विस्तार।
अब भारत की भू से मिटगा कलक का टीका सारा।।
गो पालक थे कष्ण मुरारी तुम हो भैस पुजारी।
केवल दूध है गोमाता का बुद्धि शक्ति बलधारी
भारत माता गोमाता व वेद धर्म प्रचारी।
रघु दिलीप अरु राम कष्ण ने जिसका लिया सहारा

सग्रहकर्ता
स्वामी केवलानन्द साधक
गुरुकुल प्रभात आश्रम
पो नोलाझाल जि मेरठ

बम्बमाला का पाँचवा वार्षिक उत्सव

२४ व २५ मई सन ६ दिन श ार व शनिवार को मनाने जा रहा है ि मे आर्य जगत के महान विद्वान सन्यासी स्वामी श्री कल्याणानद सरस्वती महाराज जी व स्वामी श्री यज्ञ मुनि जी महाराज भजन उपदेशक श्री लक्ष्मण सिह बेमोल (यमुना नगर) व उपेन्द्र कुमार आर्य आदि अन्य गणमान्य विद्वान पधार रहे हैं।

योग साधना शिविर

३० अप्रैल से ५ मई ६६ तक यज्ञ धाम (जगपुरा विस्तार नई दिल्ली) मे वैदिक सत्सग समिति व दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा के तत्वावधान मे आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती 'योग धाम हरिद्वार) ने की योग शिविर मे बहुत से भाई बहनो ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। शिविर म प्रात ४ वजे स रात्रि ६ ३० बजे तक आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि आदि का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया गया योग विद्या पर स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती के प्रवचन हुये शिविर क समापन समारोह रविवार ५ मई का हुआ जिसमे दक्षिण दिल्ली की आर्य समाजो के बहुत से सदस्य सम्मिलित हुये। आचार्य गोतम ब्रहमचारी आय नरेश डा शिव कुमार शास्त्री महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली और स्वामी दिव्यानन्द जी के प्रभावशाली प्रवचन हुये अन्त मे ऋषि लग र आयोजन हुआ इस शिविर का आयोजन श्रीमति कान्ता सिक्का जी प्रधान वैदिक स समिति व श्री कृष्ण लाल सिक्का प्रधान दक्षि दिल्ली प्रचार सभा की प्रेरणा से हुआ

लाल गुप्ता

कमर दर्द से मुक्ति का रास्ता

मधुबाला (योग प्रशिक्षिका)

हमारे शारीरिक तथा मानसिक सन्तुलन को बनाये रखने मे रीढ की हडडी का महत्वपूर्ण स्थान है। कमर दर्द अपने आप में इस बात का सकेत है कि रीढ की हडडी अनुचित प्रकार से प्रभावित हो रही है। सम्पूर्ण योगासनो मे रीढ की हड्डी की लचक स्थिरता और स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया गया है। कमर दर्द के लिए पीछे झुकने वाले आसन उपयोगी रहते हैं। प्रस्तुत हैं ऐसे ही कुछ आसन।

भुजगासन

जमीन पर पीठ के बल लेट जाइये। दोनो पेरो को मिलाकर रखिये। दोनो कोहनियो को कमर की दोनो साइडो मे लगा कर रखिये। हथेलियाँ कन्धे के नीचे इस प्रकार से रखिये कि उगलियाँ कन्धे से आग न निकले अब पैरों की उगलियों से लेकर नाभि तक के हिस्से को जमीन से स्थिरता पूर्वक लगाकर रखिये एव हाथो के बल कमर को धीरे-धीरे पीछे की तरफ मोडते हुए नाभि के ऊपर भाग को यथा साध्य ऊपर उठाये। गर्दन को अधिक से अधिक पीछे की तरफ ले

इस आसन से कमर दर्द में राहत मिलती है। गर्दन का दर्द दूर होता है। सर्वाइकिल के रोगी इस आसन से लाभ उठा सकते हैं। पेट के रोग कब्ज बदहजमी और गैस बनने की शिकायत को भी यह दूर कर देता है। यह पेट का मोटापा दूर कर कमर पतली और आकर्षक बनाता है रीढ की हडडी का कडापन दूर होकर लचीली बनती है यह आसन हार्निया के रोगियो के लिए वर्जित है।

सुप्तवज्रासन

जमीन पर दरी अथवा कम्बल बिछाकर घुटनो के बल लेट जाइये। पजो को खडा करके रखने की जगह लिटा दे तथा एडियो को नितम्बो के दोनो ओर लगा दे। पैरो के अगूठे एक दूसरे को स्पर्श करते हुए रहेगे। अब धीरे धीरे दोनों कोहनियो का सहारा लेते हुए लेट जाये दोनो हथेलियो को सिर के दोनो ओर इकटठाकर उन पर जोर देते हुए गर्दन को अन्दर की तरफ मोडकर सिर का चोटी वाला हिस्सा जमीन पर रखे अच्छा अभ्यास हो जाने पर माथा भी जमीन से लगाया जा सकता है। ध्यान रखिये सिर के बीच का भाग जहाँ काग होता है जमीन पर न लगाये।

यह आसन कमर दर्द के लिये बहुत उपयोगी है क्योकि कमर पर बहुत जोर पडता है रक्त सचार उस हिस्से मे तीव्र होता है जिससे मासपेशियो का कडापन दूर होकर उन्हे ताकत मिलती है। घुटने के दर्द और गले के दर्द के लिए भी लाभकारी है। गले के रोगो जैसे टान्सिल्स वगैरा मे हितकर है मोटी कमर और भारी नितम्बो को कम करता है जिन व्यक्तियो को दमे की बीमारी हो उन्हे इसका नियमित प्र चाहिए क्योकि श्वास से सम्बन्धित रोगो के लिये यह फायदेमन्द है इस आसन से भी ह से लेकर सिर पर्यन्त सम्पूर्ण शरीर म रक्त प्र को नियमित और तीव्र करके स मासपेशियो को मजबूत बना देता है।

इस स्तम्भ मे आप भी योग से स्वास्थय सुधार सबधी अपने अनुभव प्रकाशित करवा सकते है।

उष्ट्रासन

जमीन पर घुटनो के बल बैठिए पजो को खडी करके रखिये घुटनो के बल खडी पोजीशन मे आ जाइये तथा कमर एव गर्दन पीछे की तरफ मोडते हुये हाथो स एडियो पकड लीजिये। गर्दन को अधिक स अधिक पीछे की तरफ मोडकर रखिये। घुटने दो आपस मे मिलाकर रखिये

कमर दर्द दूर करने के लिए यह आसन अत्यन्त प्रभावकारी है। सुप्तवज्रासन क समान ही यह आसन भी घुटने और गर्दन के दर्द दूर करने मे मदद देता है

(क्रमश

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 19 5 96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/96
R N No 626/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 16/17 5-1996

।। ओ३म ।।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का

विशाल राष्ट्रीय शिविर

दिनाक ६ जून, १९९६ से २३ जून, १९९६ तक

स्थान शिक्षा भारती पब्लिक स्कूल, पालम गॉव, नई दिल्ली ४५

बन्धुवर

गत वर्षो की भाति इस वर्ष भी सार्वदेशिक आर्य वीर दल का विशाल राष्ट्रीय शिविर देश की राजधानी दिल्ली मे देश के जाने माने व्यायामाचार्य एव सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक सुप्रसिद्ध डा.देवव्रत आचार्य जी के निर्देशन मे अत्यधिक विशाल स्तर पर आयाजित किया जा रहा है एव इसकी विशालता को देखत हुए दिल्ली प्रान्तीय शिविर भी इसमे सम्मिलित कर दिया गया है एव इस शिविर मे लगभग १५ राज्यों से १००० आर्य वीरो के प्रशिक्षण प्राप्त करने की आशा है।

इस शिविर मे युवको को आसन प्राणायाम नियुद्धम(कराटे) आत्मरक्षण सन्ध्या यज्ञ सत्सग बौद्धिक ज्ञान चर्चा सयम देशभक्ति वन आदि देकर आर्यसमाज के माध्यम से सेवा कार्यो मे लगाया जाएगा।

वतमान मे आर्य समाज मे कार्यकर्ताओ की कमी को पूरा करने वाला आर्य वीर दल ही एकमात्र सगठन है। इतने बडे आयोजन पर हर वर्ष लाखो रूपया सांकेतिक व्यय होता है। जिसकी व्यवस्था आपके दान से होती है। शिविर की समस्त व्यवस्थ्या सार्वदेशिक आयवीर दल की ओर से की जाएगी।

शिविरार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

शिविरार्थियो को शिविर काल म पूण अनुशासन मे रहना होगा। न्यूनतम आयु १५ वर्ष पूण गणवेश (वेशभूषा) खाकी निकर सफेद कमीज सफेद बनियान काला कच्छा ब्राउन जूते (कपडे के) सफेद जुराब कान तक की लाठी कॉपी–पेन सन्ध्या व हवन की पुस्तक सफद कुर्त्ता पायजामा साधारण बिस्तर भोजन हेतु पात्र तथा करदीप (टार्च) शुल्क (मात्र ६०/–रु) प्रवेश के समय ही देना होगा।

विशेष आकर्षण

शिविरार्थियो द्वारा विशाल पथ सचलन (सैनिक परेड) एव व्यायाम प्रदर्शन

युवा मेला

हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी शिविर समापन के दिन आर्य वीरो का विशाल मेला देखने को मिलेगा। जिसे देखन से आप वचित न रह जाये। अत २३ जून १९९६ को अपनी–अपनी आर्य समाजो से शिविर समापन समारोह मे बैनर झण्डे लगाकर बसो–टैम्पो आदि के द्वारा अधिक से अधिक सख्या मे पहुच कर युवको का उत्साह वर्द्धन करे।

अपील

इस महान कार्य हेतु तन–मन–धन से सहयोग दे इसके लिए क्रास चैक ड्राफ्ट तथा नकद धन राशि 'सार्वदेशिक आय वीर दल' के नाम से दिए जा सकते है। इसके अलावा दानी सज्जन आटा दाल चावल और देशी घी के टीन आदि भी दे सकते हैं जो कि आर्य समाज दीवान हाल आर्य समाज बिरला लाईन आदि मे भिजवाने की कृपा करे।

निवेदक

ब्र आर्य २	आचार्य हरिदेव	ब्र राज सिह आर्य
(सह–सचालक)	(वरिष्ठ–उपसचालक)	(मत्री)
दूरभाष –५५०१४६८	६९६७२३४	२३८७३२

सार्वदेशिक आर्य वीर दल, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२

नोट शिविरार्थी ८ जून को पहुच शिविर स्थल के लिये अन्तराज्जीय बस अडडे से ७२१ न. बस एव रेलवे स्टेशन से ७८१ न बस जायेगी। रूट न १ ,१७० ०१ ७२७ की बसे भी पालम गाव जाती हैं।

"भव्य मेला प्रचार एवं वार्षिकोत्सव"

आर्य समाज महावीर गज लखनऊ २० का वार्षिकोत्सव आगामी ५ ६ ७ मई को आयोजित किया गया है। इसमे कई प्रख्यात उपदेशक व भजनोपदेशको ने भाग लिया। ७ मई बडे मगल को हनुमान जयती और धुआधार मेला प्रचार सम्पन्न हुआ। प्रचुर वैदिक साहित्य सामग्री का विक्रय वितरण भी किया गया।

ज्ञानकृष्णा
सयोजक

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज भजपुर खेडी (बिजनौर) उ.प्र. का वार्षिकोत्सव ३१ मई १ २ जून ९६ को मनाया जायेगा। उत्सव मे महिला सम्मेलन गौ रक्षा सम्मेलन राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का अयोजन होगा। आर्य जगत के अनेक विद्वान भजनोपदेशक आमन्त्रित किये जा रहे है।

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-2 से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

दूरभाष ३२७४७७१ ३२६०९८५ | आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये | वार्षिक शुल्क ५० रुपए एक प्रति १ रुपया

वर्ष ३५ अंक १५ | दयानन्दाब्द १७२ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ | ज्येष्ठ शु. ८ सम्वत्—२०५३ | २६ मई १९९६

नई दिल्ली २३ मई सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे महात्मा नारायण स्वामी का ७५ वा हीरक जयन्ती समारोह ३–४ जून को नारायण स्वामी आश्रम रामगढ नैनीताल मे मनाया जायेगा।

महात्मा नारायण स्वामी कई वर्षो तक सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे हैं और ऐतिहासिक हैदराबाद सत्याग्रह मे भी उनकी प्रमुख एव निर्णायक भूमिका रही है। महात्मा नारायण स्वामी जी प्रथम बलिदानी जत्थे के डिक्टेटर थे।

रामगढ आश्रम मे मनाये जाने वाले इस जयन्ती समारोह की अध्यक्षता सार्व. सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव जी करेगे। श्री वन्देमातरम् जी सभा मन्त्री डा. सच्चिदानन्द शास्त्री तथा न्याय सभा सदस्य श्री विमल वधावन के साथ उत्तराखण्ड के कुछ अन्य क्षेत्रो मे आर्य समाज के कार्यक्रमो मे भाग लेते हुए ३ जून को प्रात रामगढ पहुचेगे।

सभा मन्त्री डा. सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि इस दो दिवसीय समारोह में प्रात यज्ञ कार्यक्रम के बाद प्रवचन तथा दोपहर बाद सम्मेलन और रात्रि मे भजनोपदेश के द्वारा प्रचार कार्य किया जायेगा। इस महायज्ञ में अग्निहोत्री परिवार मुख्य यजमान होंगे।

श्री शास्त्री ने आर्य जनता से अधिक से अधिक संख्या में इस समारोह मे भाग लेने के लिए अपील की है। आगन्तुक महानुभावों के लिए आवास की यथासम्भव सुविधा का प्रबन्ध किया जायेगा परन्तु फिर भी रामगढ क्षेत्र के मौसम को देखते हुए आर्य जनता अपने साथ हल्का बिस्तर तथा अन्य अत्यन्त आवश्यक सामान अवश्य लेकर आवे।

इस जयन्ती समारोह के सयोजक महात्मा नारायण स्वामी आश्रम के प्रधान श्री विक्रम सिंह मन्त्री, श्री के. सी. शर्मा श्री वी. के. भाटिया तथा श्री वेद प्रकाश अग्निहोत्री होगे।

समारोह स्थल तक पहुचने के लिए दिल्ली से हल्द्वानी रेल द्वारा पहुचा जा सकता है। हल्द्वानी से नैनीताल होते हुए रामगढ आश्रम के लिए केवल मोटर मार्ग ही उपलब्ध है। रामगढ आश्रम नैनीताल से लगभग ३८ किलोमीटर के अन्तर पर है।
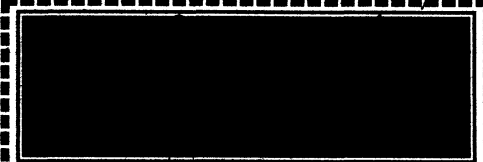
(१) आर्य जनो से मेरा निवेदन है कि वह जो भी शिकायती पत्र हमे लिखते है उसमे अपना पूरा नाम पता अकित नहीं करते। जिससे उन्हे उनके पत्रो का उत्तर मेरी तरफ से नहीं मिल पाता है। अत भविष्य मे आर्य जन जो भी पत्राचार हमे अथवा सार्वदेशिक सभा कार्यालय से करे उसमे अपना पूरा नाम पता अवश्य अकित करे।

(२) दूसरा निवेदन यह है कि जब मैंने सुमेधानन्द द्वारा लिखे गये श्वेत पत्र का उत्तर क्रमश आर्य पत्रो के माध्यम से देना प्रारम्भ किया था तो आर्य जनो ने पत्र लिखकर हमसे प्रार्थना की थी कि अब ज्यादा न लिखा जावे मैने उनकी भावनाओ का सम्मान किया और लिखना बन्द कर दिया किन्तु उनकी ओर से आर्य पत्रो मे लिखना अभी तक बन्द नहीं किया गया है और सर्वहितकारी कुलभूमि आदि पत्रो मे उसी प्रकार से लिखना जारी है। अत मेरा आर्य जनो से निवेदन है कि उन्होने जिस प्रकार से हमे लिखा था कि मैं लेखनी बन्द कर दू। उसी प्रकार से उन्हे भी कहें अन्यथा हमे पुन विस्तार से लिखने के लिए बाध्य होना पडेगा।

सोमनाथ मरवाह
सीनियर एडवोकेट एव कार्यकर्त्ता प्रधान
सार्वदेशिक सभा दिल्ली

सम्पादक- डा. सच्चिदानन्द शास्त्री

सारी उम्र हिन्दी के सम्मान हेतु मोर्चा लेता रहा

रजनीश उपाध्याय

देश का बटवारा हुआ तो वह शरणार्थी के रूप मे यहा आये और ग्यारहवीं लोकसभा के गठन के लिए कदमताल जारी है तो स्वर्ण सिह बग्गा फिर शरणार्थी बन कर विदेश जाने की तैयारी मे हैं २४ साल की उम्र मे जब वह पहली बार पटना आये तो आखो मे ढेर सारे सपने थे आज ७२ साल की बूढी आखो मे व्यवस्था के प्रति गुस्सा है हिंदी के प्रति अगाध प्रेम ने इसी जमीन पर बग्गा को सम्मान दिया अपमानित भी हुए देश-प्रेमी शगल के कारण उन पर चार बार जान लेवा हमला हुआ।

चितकोहरा मुहल्ले की रिफ्यूजी कालोनी मे रहनेवाले बग्गा ने इस अवस्था से अब अपने को पूरी तरह किनारा कर लिया है खुद सहित पूरे परिवार का नाम मतदाता सूची से उन्होने कटवा लिया वह प्रशस्ति पत्र और शाल भी सरकार को वापस कर दिया जो उनहे हिंदी-प्रेम के लिए बतौर सम्मान मे मिला था जन वितरण प्रणाली की दुकान का लाइसेस वह पहले ही सरकार को वापस कर चुके हैं क्योकि अधिकारियो ने रिश्वत मागी थी।

स्वर्ण सिह बग्गा को मलाल है कि उन्होने अपने लोगो का विरोध सह कर भी हिंदी को उचित सम्मान दिलाया पर उनकी मदद न तो सरकार ने की और न ही राजनीतिक दलो ने

यह बग्गा के प्रयासो का ही नतीजा है कि अब पटना उच्च न्यायालय मे कोई अपना आवेदन हिंदी मे दे सकता है हिंदी मे बहस भी कर सकता है। पटना उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति गोविद बल्लभ पटनायक और और नागेद्र राय की खडपीठ ने इस आशय का फैसला २१ जुलाई ९५ को सुनाया था लोकहित याचिका बग्गा ने हिंदी मे दायर की थी वहस भी उन्होने खुद की न्यायालय ने उन्हे एक प्रशसित पत्र भी दिया कि बग्गा बधाई के पात्र है।

सिख होकर भी हिदी के प्रति इतना लगाव क्यो है ? इसके जवाब मे बग्गा पुरानी समृतियो मे लौट जाते हैं हिदी हमारी राष्ट्रभाषा है इसका अपमान सहन नहीं होता राष्ट्र का अपमान हमारे गुरूओ ने भी सहन नहीं किया था वह बताते हैं कि १९८४ के दगो की वजह से रिफ्यूजी कालोनी के करीब ४० फीसदी सिख पारिवार वापस पजाव चले गये इसमे उनके परिवार के कुछ सदस्य भी शामिल थे बग्गा अपने परिवार के सदस्य से मिलने लुधियाना गये यह १९८७ की बात है वहा एच एस छावडा ने बग्गा से बातचीत के दौरान हिंदी के प्रति अपमानजनक टिप्पणी की।

इस टिप्पणी से बग्गा को इतना मानसिक आघात पहुचा कि उनहोने प्रथम श्रेणी दडा धिकारी के यहा श्री मल्होत्रा के खिलाफ देशद्रोह का मुकदमा दायर कर दिया। यही एक गुट ने गोलबद ह'कर उन पर हमला कर दिया किसी प्रकार जान बचा कर वह वापस पटना आये दूसरा हमला तब हुआ जव वह राजधानी के फ्रेजर रोड से गुजर रहे थे। घटना की प्राथमिकी कातवाली थाना मे दर्ज हुई। हमलावर पजाव से आये थे और उनकी गिरफ्तारी नहीं हुई बग्गा बताते हैं कि वह अजीब तरह की मुश्किल हैं अपने रिश्तेदारो से मिलने पजाब भी नहीं जा सकते उनका कुछ सामान भी वहा पडा है कुछ दिन पूर्व उच्च न्यायालय के आदेश पर बग्गा को सुरक्षा-व्यवस्था मुहैया करायी गयी थी जब राज्य के उस वरिष्ठ पुलिस पदाधिकारियो के खिलाफ उन्होंने आवाज उठायी तो सुरक्षा गार्ड हटा लिये गये।

स्वर्ण सिह बग्गा १९४८ मे शरणार्थी बन कर यहा आये ट्रेनों मे लेमनचूस बेच कर गुजारा किया शादी हुई फुलवारी शरीफ जेल (शरणार्थी कैंप) मे फिर पटना जक्शन के समीप उन्होने फुटपाथ पर कपडे की दुकान लगा ली फिलहाल उनके चार लडके है।

उन्होन जन वितरण प्रणाली की दुकान के आबटन के लिए आवेदन दिया था। लाइसेस बनकर तैयार हुआ तो रिश्वत मागी गयी बग्गा ने लाइसेस लेने से इकार कर दिया एक बार दो-तीन घटे तक सिर्फ इसलिए हवालात मे बद रहे क्योकि उन्होने पटना के अनुमाजन पदाधिकारी जगदीश मोनन को अग्रेजी मे काम करने से रोकने की कोशिश की थी।

बग्गा फिर से शरणार्थी बनने का फैसला ले चुके हैं इसलिए नहीं कि वह लडाई हार चुके हैं या इस देश से उनका मोहभग हो चुका है वे और उनका पूरा परिवार स्थानीय नेताओ से परेशान हो चुका है अधिकारी उन पर फब्तिया। कसते हैं मतदाता सूची से नाम कटवाने के पीछे वह तर्क देते है एक बार एक आला अफसर ने कहा कि इस देश मे आपके न रहने से क्या बिगडेगा। बस उन्होने मतदाता सूची से अपना नाम कटवा लिया बग्गा बताते हैं कि चितकोहरा बाजार की गैर-मजरूआ जमीन पर दबग लोगो ने कब्जा कर रखा है इसके खिलाफ उन्होने आवाज उठायी बदले में उन्हे जान से मारने की धमकी मिल रही है इसमे शामिल कुछ नेताओं के नाम भी गिनाते हैं।

बग्गा ने गत २५ मार्च को राज्य सरकार का पुरस्कार गाधी मैदान थाने मे जमा कर दिया वजह यह बतायी कि सरकार उनकी सुरक्षा का प्रबध नहीं कर रही है। यह पुरस्कार खुद मुख्यमत्री लालू प्रसाद ने हिंदी दिवस के अवसर पर उन्हें दिया था।

घुट-घुट कर जीने से क्या फायदा ? अपना जीवन तो बर्बाद हो गया बाल-बच्चो का नहीं होने दूगा दिल्ली जाकर किसी विदेशी दूतावास से सपर्क करूगा व उनसे शरण मागूगा। एक सुर मे कह गये बग्गा साहब लेकिन बहुत सहजता से नहीं गला रूध गया आखे नम थी पास खडा पौत्र बबलू लगातार शून्य में निहार रहा था उसकी आखो मे सवाल थे वह विदेश जाकर अपनी पढाई हिंदी मे कैसे कर पायेगा बग्गा कहते हैं जहा भी रहेंगे भारत का सिर ऊचा करेगे राष्ट्रभाषा के पक्ष मे काम करेगे।

बग्गा को थोडी बहुत कुछ उम्मीद बची है तो जनता से । जनता ने पहले भी लडाई मे उनका साथ दिया है। देश छोडने के पहले भी वह जनता से ही इजाजत लेगे वे डाक बगला चौराहा पर काला कपडा पहन देश छोडने का कारण बतायेगे। इसमे उनका पूरा परिवार भी शामिल होगा।

अपने समस्त कार्य हिन्दी मे करे।

सम्पादकीय

गढ़वाल (लैन्सडौन) और रामगढ़ तल्ला नैनीताल में सम्मेलन

आर्य समाज किसी समय गढवाल और कुमायूँ मे तेजी से फला फूला। डोला पालकी आन्दोलन अछूतोद्धार, पशुबलि प्रथा और अनाचार के विरूद्ध महान कार्य हुये थे।

अच्छे अच्छे प्रचारक–ब्र बालकराम चौ बिहारी लाल बलदेव सिह आर्य तोताराम ने इन क्षेत्रों में अच्छा काम किया। परिणामत गढवाल व कुमायू क्षेत्र से बहुत से छात्र गुरुकुलो के स्नातक भी बने परन्तु विगत इतिहास को देखते हुए पुन पिछड क्यो गये हैं। मास मदिरा कदाचार ने अपना स्थान विस्तृत किया है।

हमीं सो गये दास्तान कहते कहते।

समय बीता–आजादी मिली–नेता प्रचारक उपदेशक सभी उपराम होकर बैठ गये। अच्छाईयो की जगह बुराईयो ने पुन डेरा डाल लिया।

ऐसे समय मे पुन आर्य समाज ने नई करवट ली और गढवाल–कुमायू मे आर्य समाज का कार्य बढा। विगत वर्षो मे गढवाल क्षेत्रिय आर्य सम्मेलनो की धूम मच गई। पच पुरी पौडी कोटद्वार उत्तरकाशी स्थानो पर आर्यो ने प्रचार मे नई दिशा दी इससे लोगो मे नई चेतना जगी।

इस वर्ष दो आयोजन पर्वतीय अचलो मे होने जा रहे हैं

गढवाल अंचल

लैन्सडौन म १–२ जून को क्षेत्रीय आर्यसम्मलन होने जा रहा है। पचपुरी व गढवाल उपप्रति–निधिसभा युद्ध स्तर पर सम्मेलन को सफल बनाने मे लगें हुये हैं क्षेत्रीय जनता मे उत्साह जगे इसके लिये।

श्री सत्या नन्द जी मुजाल उपप्रधान सार्वदेशिक सभा प्रतिवर्ष वहा के प्रचारार्थ तन मन धन से सदा ही प्रयत्न शील रहते हैं और दो तीन दिन गढवाल मे उपस्थित भी रहते हैं। श्री शान्ति प्रकाश प्रेम के दिवगत होने के बाद श्री दीन दयालु जी जो लुधियाना में श्री सत्या नन्द जी मुजाल के पास रहते हैं गढ क्षेत्र की जन जागृति के लिये मे विशेष प्रयत्न शील है उनके भाई गुरूकुल ज्वाला पुन के स्नातक हैं। प्रचार कार्य मे दो भजनोपदेशको को लेकर ऋषि मिशन मे–भूखे प्यासे पैसा है या नहीं फिर भी युद्ध स्तर पर लगे हैं।

गढ प्रदेश जागा–नई चेतना ने जन्म लिया और एक दो जून को लैन्सडोन मे गढवाल क्षेत्र का आर्य सम्मेलन मनाया जायेगा क्षेत्रीय आर्य जन इस अवसर से लाभ उठाये और १–२ जून ९६ को लैन्सडोन मे पहुचे।

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम के ७५ वर्ष

गढवाल क्षेत्र से लगा हुआ कुमायू डिवीजन मे आर्य समाज ने स्थान तो बनाया पर उतना नही जितना गढ प्रदेश मे। अलमोडा रानी खेत रामगढ तल्ला मुवाली नैनीताल मे क्षेत्रीय कार्य हुआ। आज उस क्षेत्र मे म. नारायण स्वामी आश्रम रामगढ तल्ला के ७५ वर्ष पूर्ण होने पर स्वामी जी महाराज की स्मृति मे हीरक जयन्ती मना रहे हैं।

राम गढ तल्ला मे समय समय पर शिविरो के विशेष आयोजन होते रहते हैं। जब स्वामी जी महाराज ने स्थान बनाया तब से अब पुन नयी चेतना आई। आश्रम मे नयी कुटिया बनी यज्ञस्थल बना नदी तट पर दीवार बनाकर घाट बनाया। अच्छा मैदान बनाकर आश्रम को नया रूप देने का विचार है।

श्री दीवान सिह जी के स्वर्गवासी होने के पश्चात उनके सुपुत्र श्री विक्रमसिह जी आश्रम की देखभाल करते है।

सार्वदेशिक सभा मे श्री के.के. भाटिया व श्री वेदप्रकाश अग्निहोत्री जो आश्रम से विशेष प्रभावित हैं और वहा कुछ नवीनता लाने मे तत्पर हैं। सभा मे सम्पर्क कर जयन्ती समारोह को मनाने की प्रेरणा दी। तत्काल सभा मत्री ने सभा प्रधान प. वन्देमातरम जी से परामर्श कर पत्राचार श्री बाके लाल करूल–नैनीताल श्री यशपाल शाही हलद्वानी–विक्रम सिह जी राम गढ से किया फिर स्वय श्री शास्त्री जी नैनीताल–राम गढ गये और आयोजन की सफलता हेतु १५०० रु. भी श्री विक्रम सिह जी को दिये।

आज स्थिति यह है कि एक दानी महानुभाव ने एक बडी राशि प्रदान की है जिससे सडक से आश्रम तक एक पगडडी बनाई जा रही है। आश्रम मे नये कमरे भी बने हैं।

समारोह की सफलता हेतु २–३–४–जून को विशेष यज्ञ प्रवचनो का आयोजन किया है । यह आयोजन–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्वावधान श्री प. रामचन्द्र राव वन्देमातरम प्रधान सभा की अध्यक्षता मे सम्पन्न होगा। आयोजन की सफलता के लिये श्री के के. भाटिया तथा श्री वेद प्रकाश अग्निहोत्री और पूरा अग्निहोत्री परिवार सा. सभा के सहयोगी बन कर जयन्ती समारोह की सफलता के लिये युद्ध स्तर पर लगे हुए हैं।

इस आयोजन मे–गायत्री–महायज्ञ तथा वेद–पारायण यज्ञ भजन–प्रवचनो की व्यवस्था है। आगन्तुक महानुभाव छोटा–बिस्तर लोटा वस्त्र साथ मे लाये।

आवास की सुविधा टेन्टस–छोलदारी मे की जायेगी। भोजन की व्यवस्था रहेगी।महा पुरूषो का जीवन भावी पीढी को नयी प्रेरणा प्रदान करेगा। इसलिये यह आयोजन सफलता से मनाये जाये।

पर्वतीय अंचलों एव पिछडे क्षेत्रों मे आर्य समाज

सार्वदेशिक सभा द्वारा पर्वतीय क्षेत्रो मे सहायता कार्य २०–२५ वर्षो से निरन्तर जारी है।

१– दयानन्द से सेवाश्रम सघ द्वारा नागालैण्ड–मिजोरम–आसाम आर्थिक सहायता कार्य।
२–नागालैण्ड मे दो व्यक्तियो की हत्या होने पर परिवार को सहायता।
३–म. प्र. के ५० बालू बाडियो को सहायता जारी है।
४–नैपाल तथा विराट नगर गुरूकुल को–७२ हजार रुपये वार्षिक तथा ५० हजार रुपये वार्षिक।
५–गढवाल प्रचारार्थ ७० हजार रुपये वार्षिक।
६–सतपुली आ. स. को भवन निर्माण हेतु २० हजार रुपये।
७–शुद्धिकार्य दक्षिण भारत १ लाख रुपये।
८–दलितो द्वार सभा पर ३० हजार रुपये।
९–साहित्य प्रचार पर ५० हजार रुपये का।
१०–टिहरी आ. स. भवन निर्माणार्थ सरकार से बाते तथा भवन बनवाने हेतु स्थान व राशि दिलवाना।

इस प्रकार छात्र वृत्तियॉं तथा विद्वानो को आर्थिक सहायता भी दी जाया करती है। सार्व. सभा पिछडे वर्ग तथा उन क्षेत्रो मे जो भी सेवा कार्य करती है। उसमे वडा भाग जनता से धन प्राप्त कर ही दिया जाता है। आर्य समाज का सेवा कार्य –

' वैदिक साहित्य प्रकाशन–शुद्धिकार्य–मद्य निषेध–गो रक्षा–अन्तर्जातीय विवाह–धर्म प्रचार–के कार्यो मे निरन्तर–वृद्धि हो रही है।

पाठकों से विनम्र निवेदन

सार्व देशिक के पाठक आर्यावर्त की वर्तमान परिस्थितियो से भली भाति परिचित है। धार्मिकता के नाम पर पाखण्ड गुरूडम का छलावा सामाजिकता के नाम पर कपट और राष्ट्रद्रोह बढता जा रहा है। ऐसा लग रहा है कि वैदिक राष्ट्र रूपी जगल मे चारो तरफ आग लगी है जिससे फल फूल और वनस्पतियो रूपी विचार धारा विनाश को प्राप्त होनी प्रारम्भ हो रही है। स्वार्थी राजनीति इस आग मे घी का काम कर रही है। प्रशासको और राजनेताओ की देखा देखी (यथा राजा तथा प्रजा के सिद्धान्त के अनुसार) सामान्य जनता भी भौतिकता वादी माया जाल को अपने ऊपर ओढने मे ही अपना जीवन व्यतीत कर रही है।

सार्वदेशिक साप्ताहिक के माध्यम से वैदिक धर्म की पवित्रता को बचाने के लिए हम सदैव सकल्प बद्ध है अत पाठको से हमारा विनम्र निवेदन है कि धार्मिक और राष्ट्र वादी विचारो को अधिकाधिक जनता तक पहुँचाने के लिए सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहक बनाने की ओर ध्यान दे।

अपना वार्षिक शुल्क सदैव समय पर भिजवाए तथा आम जनता को भी इसके लिए प्रेरित करे।

इस साप्ताहिक पत्रिका का वार्षिक शुल्क केवल ५० रुपये रखा गया है जो कि लागत से भी कम है। आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये देकर बारबार वार्षिक शुल्क भेजने की दुविधा से बचा जा सकता है। आपके द्वारा भेजी गयी इस सहयोग राशि के प्रत्येक अश का वैदिक और राष्ट्र वादी भावनाओ के प्रचार मे ही व्यय किया जायेगा।

सपादक

डा. सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

वेदो में ऐसी क्या विशेषता है जिसका समर्थन प्राचीन–अर्वाचीन सभी ने तथ्यात्मक प्रमाणों से सम्पुष्ट कर वेदाध्ययन का महत्व दर्शाया है।

अत सर्वप्रथम प्राचीन ऋषियों, स्मृतिकारो आदि के प्रमाणों से सिद्ध करना है। कि वैदिक ज्ञान ही–आदिमूल परमैश्वर का ज्ञान है।

वैदिक ज्ञान का महत्त्व––

देवस्य काव्यं, पश्य न ममार नजीर्यति।।

अथर्व १०–८–३२

प्रभू का यह काव्य देखो जो कभी मरता नहीं कभी जीर्ण भी नहीं होता।

प्राचीनों की साक्षी-

वेद–ज्ञान के विषय मे प्राचीन और अर्वाचीन सम्मतियो को देखने से विज्ञजनो को पता लग जायेगा कि वैदिक ज्ञान का महत्व कितना है।

वेद सब सत्य विद्याओ का मूल है इसी से कहा कि इनका पढना–पढाना और सुनना–सुनाना, मानव का परम कर्त्तव्य है। महर्षि ने मनु. को सर्वत् प्रमाण कोटि में रखा है।

वेदमेवाभ्यसेन्नित्यं यथा काल मतन्द्रितः

४–१४७

योऽनधीत्य द्विजों वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्
स जीवन्ननेव शूद्रत्वमाशु गच्छतिसन्वयः

२–१६६–६७

सनातन वैदिक धर्म का मूलाधार ग्रन्थ अनादि पवित्र वेद हैं। इनको पढे बिना इस धर्म का ज्ञान सम्भव नही है। इसी से वेद सभी को अनादि काल से परम धर्म माना है। तदनुसार धर्मग्रन्थ पवित्र वेदों का यथा मति अध्ययन करके प्रभू के पवित्र ज्ञान को दूसरो तक पहुचाये और ज्ञान यज्ञ को स्थिर रखनें में कटिबद्ध रहना चाहिये।

भगवान कृष्ण ने गीता मे

अहं वेद्यं पवित्रं ओंकार ऋक् साम-यर्जुरेव च"

गीता–८–६६

वेदानां सामवेदो ऽस्मि.। गीता–१०–२२

जो कुछ जानने योग्य है वह पवित्र ओंकार ऋक् साम यजु– मैं ही हू वेदो में साम वेद मै (ईश्वर) ही हू। वेद ईश्वर की विभूति है। ऐसा यहा कहते हैं

श्रीमदभागवत–

एक एव पुरावेद प्रणवाः सर्व वाङ्.मयः।।

६–१४–४८

व्यद धातु-यज्ञ संतत्यै वेदमेकं चतुर्विधम्।१६
ऋक्-यजु सामथर्वाव्या वेदात्वार उद्धता।।

२।।

पहले एक ही वेद था वेद व्यास ने यज्ञ की समृद्धि के लिये चार वेद विभक्त किये और भारत का आख्यान –वेद का अर्थ प्रकाशित करने के लिये ही रचा है। इतिहास –पुराण वेद का महत्त्व दर्शाने हेतु रचे गये है। अब वेद ज्ञान का महत्त्व

ब्राह्मणेषु च वेदज्ञो ह्यर्थज्ञोऽयधिकस्ततः।।

भा. ३–२६–३१

ब्राह्मणो मे वेदज्ञ और वेद का अर्थजानने वाला वेदशास्त्र विदर्हति। भा.४–२२–४५ राज्य अधिपत्य का कार्य वेद शास्त्र का ज्ञाता ही कर सकता है।

यस्य वेदेषु विद्वेषः स वा आशु विनष्यति ।।

भा.७–४–२७

जिसका वेदों से विद्वेष होगा उसका सत्यानाश होगा। इसमें सन्देह नहीं है। महाभारत–

ब्रह्मन् वेद रहस्यं च यच्चान्यत स्थापितं मया"

सागो पनिषदा चैव वेदाना विसार क्रिया

वेदो का रहस्य–वेदों का चिन्तन सबका विलय उत्तमता से किया है।

विष्णु पुराण–

ऋग्यजुसाम सज्ञेयं त्रयी वर्णावृत्तिर्द्विजः।
एताभुज्झति यो मोहात् स महापात की द्विजः।।

वि.३२१

शिव पुराण–

सर्वान् वेदान् सुमहदिरंगै, योगाश्च सांख्य च बने निवासम्।
एतान् गुर्णो ने कपदे निषेक्ते, संग्रामधर्मात्म तनुं त्येजत् यः।।

धर्मसहिता शि.पु. ४१–४२

जो सुग्राम मे अपनी देह त्यागता है उसको सव वेद आदि का फल मिलता है सत्कार्य मे देहत्याग करने का पुण्य वेदाध्ययन के समान है।

देवीभागव मे–

सर्व श्री वेद एवासौ सर्वधर्म प्रमाणकः।।

दे. भा. स्क११–१–२६

सव धर्मो का प्रमाण मुख्यत वेदही है इसके विरुद्ध प्रमाण नही।

गरुड पुराण–

वेद एवं द्विजातीना निश्रेयस्कर पर।। ६४–२५

विद्वानो के लिये वेद ही कल्याण करने वाला है।

अग्नि पुराण–

मे भी वेद का जो धर्म है वही यहा भोग व मोक्ष देने वाला है।

ऋग्-यजु सामार्थर्व विधानं पुष्करोदितं। युक्ति मुक्ति प्रदम्"

२५६–१–६

इसी प्रकार सौर पुराण में भी अक्षर श्रेष्ठ है उसको जानना चाहिये। वेद का यही सार है। जो इसको नहीं जानता–उसको वेदों से क्या लाभ।

कूर्म पुराणः– भी वेद की वकालत करता है

स सम्मूढो न सम्भाष्यो वेद वाह्यो द्विजातिभिः।८६

न-वेद पाठ मात्रेण-सनेतुष्येदेव वै द्विजः।। ८७
मेऽधीत्य विधिवतेके वेदं वेदा र्थं विचारयेत्।।
स-सान्वयः शूद्रकल्पः पात्रोतांन प्रयंधते।।

२–१४–८६–८८

जो द्विज वेद न पढकर दूसरे कार्य में परिश्रम करता है वह मूर्ख है जो केवल वश सहित वेदपाठ करके वेद के अर्थ का मनन नहीं करता वह सगठित शूद्रवत हो जाता है। कल्की पुराण मे भी वेद को ईश्वर का रूप माना है वेदवक्ता ब्राह्मण भी ईश्वर का रूप है।

क.पु.अ४–१०–

ब्राह्मणा वेदवक्तारो वेदो मैं गर्त्रमः परा।।

ब्रह्मवैवर्त्त ने कहा, नास्तिक वेदात्पर शास्त्रम् "वेद के समान दूसरा कोई ग्रन्थ नहीं हैं। गण ४४–७३

मारकण्डेय पुराण – २५–१४

एक द्वौसकलान्यापि, वेदान् प्राप्य गुरोमुखान"

सव वेदो को गुरूमुख से प्राप्त करके आशीर्वाद प्राप्त करे।

सकन्द पुराण द्विजातीना श्रुतिद्वयेका हेतु निश्रयसकिय" ३६–४१ में अर्थात्–वेदो से ही सबका कल्याण होता है।

मनु ने मनुस्मृति मे ११–२६४–६५, तथा २ में से ७ मनु. ४–५–१६५–१६६ अ. ४–१४८ मनु –१२–६२–६४

वेद ही प्रमाण है फिर **एकोऽपिवेदविद्धर्मं मं व्यवस्येत् द्विजोत्तमः।**

वेदज्ञान हीन १० हजारश्लोक कुछ भी कहें, वहधर्म नहीं हो सकता है इतना वेद वक्ता का अधिकार है।

स्मृतियो में– बृहस्पतिस्मृति–७६ में कहा है कि

अधीत्य सर्व वेदान् वै सदयो दुःखान् प्रमुच्यते

"वेदो का अध्ययन करके दुःखों से मनुष्य मुक्त होता है।

याज्ञवल्क्य स्मृति भी " **वेद एव द्विजातीनां निश्रेयस करः परः** " १–४०

यज्ञ–तप आदि की अपेक्षा वेद ही द्विजों का कल्याण करने वाला है। इसी प्रकार कात्यायन स्मृति ने कहा है

"**वेदे तथात्म ज्ञाने च ब्राह्मणों यत्नवान् भवेत्**"

पाराशर स्मृति ने भी कहा–कि वेद का कोई कर्त्ता नहीं है जनार्दन वेद का ही स्मरण करता है। श्री मच्छंकराचार्य उपदेश पंचक में लिखा है कि "**वेदों नित्यमधीयताम्**" वेद का

ब्र० ओम देव पूरूषार्थी

ऐरवा कटरा (इटावा)

इस ससार को उत्पन्न करने वाले इसका पालन करने वाले परम पिता परमात्मा को लोग ईश्वर भगवान प्रभु राम शिव शकर गॉड अल्लाह अदि अनेक नामो से पुकारते है। यद्यपि अपनी-अपनी भाषा के अनुसार सब ठीक है पर इनमें भी सर्वोत्तम नाम ओ३म है। वेद ससार के सर्वाधिक प्राचीन लिखित ग्रन्थ है इनमे जो भाषा है वह सस्कृत है अत सस्कृत विश्व की सर्वाधिक प्राचीन भाषा है। इनमे जो धर्म है वह वैदिक धर्म है। अत वैदिक धर्म ससार का सर्वाधिक प्राचीन धर्म है। इसमे ईश्वर का सर्वोत्तम नाम ओ३म् है। अत ओ३म ही ईश्वर का सर्वाधिक प्राचीन एव सर्वोत्तम नाम है। ईश्वर के सभी नामो मे यह ओ३म सर्वोत्तम नाम है। ओ३म शब्द मे परमेश्वर के गुण बताने वाले सभी अर्थ आ जाते हैं ओ३म मे ही परमेश्वर के अनेक नाम आ जाते है। ओ३म् के तीन भाग है- अकार + उकार + मकार (अ+उ+म)

ईश्वर के तीन रूप है- सृष्टि का जनक सृष्टि का रक्षक और सृष्टि का सहारक

ईश्वर के तीन गुण- सत + चित + आनन्द = (सच्चिदानन्द)

ओ३म् (अ+उ+म) का अर्थ

अ = विराट अग्नि विश्वादि

इस सम्पूर्ण ससार मे समाया हुआ होने के कारण विराट है। वह अनेक प्रकार से ससार को प्रकाशित करता है इससे वह अग्नि है। सम्पूर्ण विश्व उसी का प्रकाशित रूप है इससे वह विश्व है। प्रत्येक शब्द मे अकार समाया रहता है इससे वह सर्वव्यापी है।

उ = हिरण्यगर्भ वायु, तेजसादि

प्रकाश स्वरूप या प्रकाशित करने वाला। सूर्य चन्द्र आदि को प्रकाशित करने वाला होने के कारण ईश्वर हिरण्यगर्भ है। सम्पूर्ण ससार को धारण करने वाला तथा अनन्त शक्ति शाली होने के कारण वह वायु है। चन्द्र सूर्य आदि मे उसी का रूप प्रकाशित है इससे वह तैजस है।

म = ईश्वर आदित्य प्राज्ञादि

जिसका सत्य विचार शील ज्ञान एव ऐश्वर्य है वह ईश्वर है। जिसका विनाश कभी न हो वह आदित्य है। जो निर्भ्रान्ति चराचर जगत के व्यवहार को यथावत जानता है वह प्राज्ञ है।

वेद उपनिषद् मनुस्मृति आदि सत्य शास्त्रो मे ऐसा स्पष्ट वर्णन है कि प्रकरणानुकूल वे सब नाम ईश्वर के ही हैं। ओ३म की सर्वोत्तमता के सम्बन्ध मे आवश्यक प्रमाण-

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितम मुखम्। पोऽसा वादित्ये पुरुष सोऽसावहम। ओ३म खं ब्रह्म।।

(यजुर्वेद अ. ४० म.-१६)

सब मनुष्यो के प्रति ईश्वर उपदेश करता है कि हे मनुष्यो ! जो मै यहा हूँ, वही अन्यत्र सूर्यादि लोको मे हूँ। सर्वत्र परिपूर्ण आकाश की भाति व्यापक मुझसे भिन्न कोई बडा नही। मैं ही सबसे बडा हूँ। मेरे सुलक्षणो से युक्त पुत्र के तुल्य प्राणो से प्यारा मेरा निज नाम ओ३म हैं जो प्रेम और सत्याचरण से मेरी शरण लेता है अन्तर्यामी रूप से मै इस अविद्या का विनाश कर उसके आत्मा का प्रकाश करके शुभ-गुण-कर्म-स्वभाव वाला करके सत्य स्वरूप का आवरण स्थिर कर योग से हुए विज्ञान को दे और सब दुखो से अलग करके मोक्ष सुख को प्राप्त कराता है।

उपर्युक्त मन्त्र मे सबका रक्षक होने से ईश्वर का नाम ओ३म् आकाश की भाति व्यापक होने से वह खम और सबसे बडा होने से ब्रह्म है। इस प्रकार ओ३म खम ब्रह्म सभी नाम सार्थक हैं। पर ईश्वर का प्यारा नाम ओ३म है। ऐसा उपर्युक्त मन्त्र मे स्पष्ट कहा गया है।

ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत।।

(छान्दोग्योपनिषद्-प्रपा.-ख. ४ म. १)

ओ३म जिसका नाम है और जो कभी नष्ट नहीं होता उसी की उपासना करनी चाहिए। अन्य किसी की नहीं।

ओमित्येतदक्षरमिदꣳ सर्व तस्योपव्याख्यानम।

(माण्डूक्योपनिषद् मन्त्र-१)

सव वेदादि शास्त्रो मे परमेश्वर का प्रधान और निज नाम ओ३म कहा गया है। अन्य सब गौणिक नाम है।

सर्ववेदायत्पदमामनन्ति तप ꣳसि सर्वाणि च पद वदन्ति।

यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यम चरन्ति तत्ते पदम सग्रहेण ब्रवीम्य त्येतत।।

(कठोपनिषद् अध्याय १ वल्ली-२ मन्त्र-१५)

सब वेद सव धर्मानुष्ठान तपश्चरण जिसका और मान्यता करते है तथा जिसकी प्राप्ति की इच्छा कर ब्रह्मचर्याश्रम ग्रहण करते हैं उसका नाम ओ३म है। अ+उ+म से बना ओ३म ही परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है। क्योकि-

ओ३म मे सर्व प्रथम वर्ण है- अ-

देवनागरी लिपि ससार की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है क्याकि अन्य भाषाओ मे वर्णमाला का ऐसा वैज्ञानिक क्रम नही है। देवनागरी लिपि की वर्णमाला का सर्वप्रथम वर्ण अ है।

मानव वाणी का पहला अक्षर भी अ ही है। इसीलिए परमेश्वर के सर्वोत्तम नाम ओ३म मे पहला अक्षर अ रखा गया है।

मानव वाणी का अर्थात सभी वर्णो का निर्माण अ वर्ण से होता है। इसी प्रकार इस सम्पूर्ण ससार का जन्म परमेश्वर द्वारा ही होता है। इसीलिए परमेश्वर के सर्वोत्तम नाम ओ३म का सर्वप्रथम अक्षर अ है।ओ३म का उच्चारण करते समय हमारे हृदय प्रदेश से सर्वप्रथम अ की ध्वनि उत्पन्न होती है। हृदय से उत्पन्न सर्वप्रथम ध्वनि का विशेष महत्व इसलिए भी है कि हमारे आत्मा का निवास स्थान भी हृदय प्रदेश ही है। अत आत्मा के पास से उत्पन्न ध्वनि अ ही सर्वोत्तम हुई।

हमारा आत्मा ही परमात्मा का साक्षात्कार करता है। अत आत्मा के पास से उत्पन्न हुई ध्वनि अ आत्मा की भाति पवित्र हुई। इसीलिए परमात्मा का सर्वोत्तम या सर्वाधिक पवित्र नाम का पहला अक्षर अ रखा गया है।

अ ध्वनि सभी स्वरा और व्यञ्जनों मे समायी हुई है। अ के बिना कोई भी अक्षर नही बन सकता। अत अ वर्णो मे सर्वोत्तम सर्वव्यापी और सभी वर्णो का उत्पादक है। इसी प्रकार परमेश्वर भी सर्वोत्तम सर्वव्यापी तथा सम्पूर्ण ससार का उत्पादक है। इसीलिए परमेश्वर के सर्वोत्तम नाम का पहला अक्षर अ माना गया है। अत अ परमेश्वर के जगदुत्पादक सर्वोत्तम सर्वव्यापी रूप को बताता है।

अ के बाद ३ वर्ण है।

हृदय प्रदेश से उठी अ की ध्वनि उ ध्वनि के साथ मिलकर व्यापक रूप या विस्तार धारण करती है। अन्य किसी भी ध्वनि के साथ मिलकर वह व्याप्ति को प्राप्त नहीं हो सकती। इस प्रकार सर्वप्रथम एव सर्वोत्तम ध्वनि अ को विस्तार एव व्याप्ति देने वाला उ ही है।

इस सम्पूर्ण ससार का विस्तार करने वाला तथा सर्वत्र व्याप्त होने वाला केवल परमेश्वर है दूसरा कोई नहीं। अत उसके विस्तारक रूप के लिए उसका सर्वोत्तम नाम वही हो सकता है। जिसकी प्रथम ध्वनि विस्तार एव व्याप्ति को प्राप्त होती है। ओ३म नाम की सर्वप्रथम ध्वनि अ केवल ३ के साथ मिलकर विस्तार एव व्याप्ति को प्राप्त होती है। इसलिए अ के बाद ३ को मिलाया गया है। अ और उ मिलकर ओ बनता है। जो सम्पूर्ण तन-मन मे एव वाहर व्याप्त हो जाता है।

यह वर्ण (उ) अ का पालक है। ईश्वर भी जगत का उत्पादक एव पालक है। अत ३ ईश्वर के पालक रूप को बताता है।

उ के बाद म् आता है:-

इस ससार मे प्रत्येक [illegible] की भाति प्रत्येक ध्वनि का भी अन्त है। म् के उच्चारण के समय दोनो होठ स्वत ही बन्द हो जाते हैं। तथा हृदय देश से उत्पन्न अ की ध्वनि उ के साथ व्याप्त हो कर म ध्वनि करती हुई वाहर निकल आती है। अर्थात समाप्त हो जाती है। अत म ध्वनि अ उ ओ ध्वनि का अन्त करने वाली है। इसी प्रकार परमेश्वर के उत्पादक और पालक रूप के बाद तीसरा रूप सहारक या प्रलयकर्ता का है। 'म् की ध्वनि करने के बाद दोनो होठ खोले बिना पुन किसी दूसरी ध्वनि का उच्चारण नहीं किया जा सकता। ठीक इसी प्रकार परमेश्वर द्वारा समाप्त की गई सृष्टि का जन्म परमेश्वर के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं कर सकता। अत म परमेश्वर के सहारक या प्रलयकर्ता रूप को बताता है। इसीलिए परमेश्वर के सर्वोत्तम नाम मे अन्तिम अक्षर म को रखा गया है।

अन्य मतावलम्बियो द्वारा स्वीकृत नाम सर्वोत्तम क्यो नहीं इस पर भी विचार करते हैं।

गॉड (God) यह अग्रेजी भाषा का शब्द है। गॉड का अर्थ है-सर्वोच्च (Supreme) अत इस ससार की सर्वोच्च शक्ति को ही गॉड कहते है।

खुदा-यह फारसी भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ है स्वयम्भू अर्थात् स्वय उत्पन्न होने वाला।

अल्लाह-अरवी भाषा का अल्ला या अल्लाह शब्द का भी अर्थ है-स्वयम्भू अथात स्वय उत्पन्न होने वाला परन्तु सस्कृत भाषा मे अल्ला का अर्थ माता या परा शक्ति है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि गाड खुदा अल्लाह नाम परमेश्वर की एक एक विशेषता बताते है

ओ३म शब्द परमेश्वर की–सृष्टि का जनक पालक सहारक सच्चिदानन्द सर्वव्यापक नित्य पवित्र अनुपम सर्वाधार सर्वरक्षक आदि अनेक विशेषताओ को बताता है।

ओ३म शब्द की उत्पत्ति परमेश्वर के अन्य नामो की तुलना मे सरल और स्वाभाविक है।

ओ३म शब्द आत्मा के निवास–स्थान हृदय प्रदेश से उत्पन्न होता है। मन–मस्तिष्क मे व्याप्त होता है। तथा मुख बन्द होने की स्वाभाविक एव सरल प्रकृया द्वारा पूर्ण होता है। जब कि अन्य कोई नाम ये विशेषताए नहीं रखता।

ओ३म शब्द की ध्वनि मनुष्य द्वारा सास लेने रा़क र्ने व छोडने की प्राकृतिक गति व ध्वनि से मिलती अन्य नामो की ध्वनि सास की गति से मेल नही खाती। इस प्रकार ओ३म ही परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है।

ओ३म ही ईश्वर का सर्वोत्तम नाम है इसके कुछ अन्य प्रमाण–

अथर्ववेद मे मनुष्य को उपदेश दिया गया है।–

ओ३मी । उपाश्रय (अथर्ववेद काण्ड–१५ सूक्त २ मन्त्र–८)

(अच्छी प्रकार गाने योग्य ओ३म शब्द ही सहारा है)

यजुर्वेद मे कहा गया है–

ओ३म क्रतो स्मर (यजुर्वेद अ. ४० मन्त्र–१५)

(हे कर्मशील मनुष्य ! तू शरीर छूटते समय ओ३म का स्मरण कर क्योकि यह ओ३म ही सबका सहारा है)

यजुर्वेद मे ही ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि–

ओ३म प्रतिष्ठ (यजुर्वेद अ. २० मन्त्र–१३)

(हे ओ३म (जगदीश्वर) ! कृपाकर ससार मे और विद्वानो के हृदय म यज्ञ और वेदविद्यादि की स्थापना कीजिए)

महर्षि पतञ्जलि अपने ग्रन्थ योग दर्शन मे परमात्मा का नाम बतलाते हुए कहते है।

तस्य वाचक प्रणव (समाधिपाद २६)

(उस ईश्वर का वाचक प्रणव (ओ३म) है)

तज्जपस्तदर्थ भावनम (समाधिपाद–२८)

(उस प्रणव (ओ३म) का जप और इसके अर्थ का बार–बार चिन्तन करना चाहिए)

ओ३म की महिमा बताता हुआ तैत्तिरीयोपनिषद् कहता है–ओमिति ब्रह्म। ओमितीद ंसर्वम। ओमित्येतदनुकृतिर्ह स्म वा अप्योश्रावयेत्या श्रावयन्ति। ओमिति सामानि गायन्ति। ओ ं शोमिति। शस्त्राणि शसन्ति। ओमित्यध्वर्यु प्रतिगर प्रति गृणति। ओमिति ब्रह्मोप्रसौति श ं सन्ति ओमित्यग्नि होत्रमनु जानाति। ओमिति ब्राह्मण प्रवक्ष्यन्नाह ब्रह्मपरनवानीति। ब्रह्मैवोपाप्नोति।

(तैत्तिरीयोपनिषद् वल्ली–१ अनुवाक ८)

अर्थ–यह ओ३म ब्रह्म है। यह प्रत्यक्ष दिखाई देने वाला समस्त जगत ओ३म है। यह अक्षर (ओ३म) ही अनुकृति है अर्थात श्रेष्ठ जन किसी बात के अनुमोदन के लिए ओ३म कहकर ही समथन या स्वीकृति किया करते है यह वात प्रसिद्ध है इसके अतिरिक्त शिष्य श्रोता गुरू या उपदेशक से उपदश सुनाने की प्रार्थना करता है तो गुरू या उपदेशक से ओ३म इस प्रकार कहकर ही उपदेश सुनाना प्रारम्भ करते हैं सामवेद का गान करने वाले ओ३म इस प्रकार प गाकर उसके वाद सामवेद का गान करते है। यज्ञ कर्म मे शस्त्र शसन (रूप–वर्णन) कर्म करने वाले गुरू (शिक्षक) ऋत्विक ओ३म कहकर ही मन्त्रो का पाठ करते हैं। यज्ञ कर्म करने वाला अध्वर्यु (यजुर्वेदज्ञ) नामक ऋत्विक (यज्ञ करने वाले) भी ओ३म का उच्चारण करके ही यजुर्वेद मन्त्र का उच्चारण करता है। ब्रह्म (चौथा ऋत्विक) भी ओ३म का उच्चारण करके यज्ञ कर्म करने के लिए अनुमति देता है तथा ओ३म यो कहकर ही अग्निहोत्र करने की आज्ञा देता है अध्ययन करने के लिए उद्यत ब्रह्मचारी भी पहले ओ३म का उच्चारण करके कहता है कि मै ब्रह्म को (वैदिक ज्ञान को) प्राप्त कर लूँ–ऐसी बुद्धि दीजिए। इसके फलस्वरूप वह ब्रह्म को निस्सन्देह प्राप्त कर लेता है।

इस प्रकार ईश्वर का सर्वोत्तम नाम ओ३म है। जो लोग ईश्वर या अन्य देवी–देवताओ की मूर्तिया बनाकर पूजा करते हैं। वे भी उन मूर्तियो के आस–पास ओ३म (ॐ) अवश्य लिखते हैं। इसी प्रकार इन देवी–देवताओ से सम्बद्ध कपोल–कल्पित अवैदिक मन्त्रो से पूर्व भी ओ३म लिखा व उच्चारित किया जाता है। यह भी द्रष्टय है कि तन्त्र–मन्त्र भी ओ३म् से आरम्भ किए जाते है।

आजकल महावीर स्वामी के मतानुयायी स्वय को हिन्दुओ से अलग मानने लगे है। तथा जैन मत को अलग मत कहने लगे हैं। पर महावीर स्वामी ओ३म का ही जप करते थे। आज कल भी महावीर जैन की मूर्तियो के आस–पास तथा जैन मन्दिरो पर ओ३म ही लिखा रहता है।

सिक्ख पन्थ के सभी धर्म गुरूओ ने ओ३म का उपेदश दिया है। गुरू नानक तो ओ३म् का ही जाप किया करते थे। तथा उपदेश दिया करते थे कि –

ओकार शब्द जप रे। ओकार गुरू मुख तेरे।।

यह ओ३म ही इस वात को सिद्ध कर देता है कि मूर्तिपूजको तान्त्रिको जैनियों आदि सभी के धर्म–कर्म से पूर्व ओ३म का स्मरण किया जाता है। इस प्रकार यह सिद्ध किया जाता है कि ईश्वर का सर्वोत्तम नाम ओ३म् है। इसम दो मत नही है।

देव दयानन्द जी ने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे परमात्मा के अनेक नामो का वर्णन किया है। उन नामो मे मुख्य नाम ओ३म को ही वताया गया है। शेष सारे नाम परमात्मा के गुण वाचक (गौणिक) नाम बताए गए हैं। जैसे–

जो अखिल ऐश्वर्य युक्त है इससे उस परमात्मा का नाम इन्द्र है।

चर और अचर रूप मे व्यापक होने से परमात्मा का नाम विष्णु है।

जो ईश्वरो अर्थात समर्थो मे समर्थ जिसके तुल्य कोई भी नहीं हो उसका नाम परमेश्वर है।

जो दुष्ट कर्म करने हारो को रूलाता है उससे उस परमेश्वर का नाम रूद्र है।

जो आनन्द स्वरूप और सबको आनन्द देने वाला है इसलिए ईश्वर का नाम चन्द्र है।

जो पिताओ का भी पिता है उससे उस परमेश्वर का नाम पितामह है।

जो सम्पूर्ण जगत् को रचकर बढाता है इसलिए परमेश्वर का नाम ब्रह्म है।

सबसे श्रेष्ठ होने से परमेश्वर का नाम सत्य है

जो निश्चल अविनाशी हे इससे ईश्वर का नाम नित्य है

जो ससार का अधिष्ठाता है इससे उस परमेश्वर का नाम विश्वेश्वर है।

जो शब्द स्पर्श रूपादि गुणो से रहित है इससे परमेश्वर का नाम निर्गुण है।

जो सब जगत के बनाने मे समर्थ है इसलिए उस परमेश्वर का नाम शक्ति है।

जो सब विस्तृत जगत का विस्तार करने वाला है इसलिए ईश्वर का नाम पृथ्वी है

जो जानने वाला है इससे परमेश्वर का नाम ज्ञाता है।

जो सदा सबको जानने हारा है इससे ईश्वर का नाम बुद्ध है।

जो कल्याण स्वरूप और कल्याण करने हारा है इसलिए ईश्वर का नाम शिव है।

जो कल्याण अर्थात सुख का करने हारा है इससे परमेश्वर का नाम शकर है।

जो समग्र ऐश्वर्य से युक्त वा भजने योग्य है इससे ईश्वर का नाम भगवान है।

जो आनन्द स्वरूप जिसमे सब मुक्त जीव आनन्द को प्राप्त होते हैं और सब धर्मात्मा जीवो को आनन्द युक्त करता है इससे ईश्वर का नाम आनन्द है।

जो सब जगत मे पूर्ण हो रहा है इसलिए उस परमेश्वर का नाम पुरूष है।

जो महान देवो का देव अर्थात विद्वानो का भी विद्वान सूर्यादि प्रकाशको का प्रकाशक है। इसलिए उस परमेश्वर का नाम महादेव है।

उपरोक्त सभी नाम गौणिक हैं क्योकि ये सारे नाम गुणो पर आधारित हैं। परन्तु इससे भिन्न परमात्मा के असख्य नाम है। क्योकि जैसे परमेश्वर के अनन्त गुण कर्म स्वभाव हैं वैसे उनके अनेक नाम भी हैं।

बहुधा लोक मे देखा जाता है कि विना मुख्य नाम के काम नही चल सकता है। जैसे

किसी व्यक्ति का नाम राम लाल ह अब भला विचार कीजिए राम लाल की बहिन राम लाल को क्या कहकर पुकारेगी। वह तो भाई कहकर पुकारेगी। यदि राम लाल का लडका या लडकी हो तो वह क्या कहेगा ? वे तो पिता जी कहकर पुकारेगे। और राम लाल की पत्नी राम लाल को पति देव कहकर पुकारेगी। राम लाल का साला राम लाल को जीजा कहकर पुकारेगा। राम लाल के माँ–बाप राम लाल को बेटा कहकर पुकारेगे। रामलाल का चाचा राम लाल को भतीजा कहकर पुकारेगा राम लाल का मामा राम लाल को भाजा कहकर पुकारेगा। राम लाल का नाना राम लाल को नाती कहकर पुकारेगा। ये भाई जी पिता जी बेटा जी साला जी पति देव जी जीजा जी इत्यादि राम लाल के गौणिक नाम हुए। अन्तर स्पष्ट होगा कि ये गौणिक नाम हैं अब आप सोचिए–

राम लाल का किसी बैंक मे खाता हैं वहा पर राम लाल अपना नाम लिखने की जगह भाई जी पति देव जी बेटा जी आदि ये गौणिक नाम लिख दे तो उसके पैसो का भुगतान नहीं होगा। जब तक वह अपना मुख्य नाम राम लाल नहीं लिखता तब तक पैसे का भुगतान होना असम्भव है। जो लोक मे मुख्य नाम के बिना कोई कार्य नहीं हो सकता तो क्या परमात्मा देव की प्राप्ति उसके गौणिक नाम से हो सकती है अर्थात कदापि नही।

उपरोक्त समस्त प्रमाणों तथा युक्तियों से यह भली भाति सिद्ध हो चुका है कि ससार की सर्वोच्च शक्ति को ईश्वर कहते हैं। जो कि ससार के कण–कण मे रमा हुआ है।

अत उस परम पिता परमात्मा का मुख्य नाम ओ३म ही है। हम उस ओ३म स्वरूप प्रभु की उपासना करे। क्यो कि वही हमारा उपास्य इष्टदेव है।
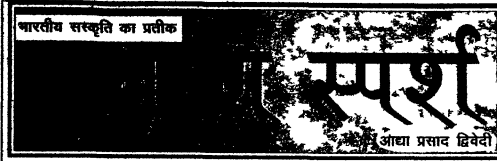
(चरण स्पर्श करने की प्रथा हमारी संस्कृति में पुराने जमाने से प्रचलित है। चरण स्पर्श करना व्यक्ति की नम्रता और आदर भावना को प्रकट करता है। सामने वाले बुजुर्ग का आशीर्वाद भी तो लाभदायक और महत्वपूर्ण होता है लेकिन १५० वर्ष के पारतन्त्र्यकाल मे अंग्रेज राजकर्ताओं के प्रभाव से अपनी पुरानी संस्कृतियो को हम भूलकर संस्कृति के प्रतीक रूप चरणस्पर्शादि जैसे शिष्टाचार को भी भूल रहे है। लेकिन चरण स्पर्श के भी कई फायदे है जो चरण स्पर्श करने वाले को प्राप्त होते है।)

आज के सम्भ्रान्त व तथाकथित सुसस्कृत परिवारो मे अभिवादन के रूप मे हाथ जोड कर नमस्कार कर लेने अथवा थोडा झुक कर आगन्तुक (यदि वह कुलगुरू अथवा परिवार या रिश्ते मे वरिष्ठतम सदस्य हुआ तो) उसके घुटने का स्पर्श कर के एक पुरातन भारतीय परम्परा का निर्वाह कर लिया जाता है। लेकिन इस परम्परा निर्वाह के पीछे क्या तथ्य हैं और क्यो ऐसा किया जाता हैं इसकी प्राय लोगो को न तो जानकारी है और न वे इसे जानने का प्रयास ही करते हैं। पाश्चात्य जीवन शैली की अधी दौड मे वे इतना निर्वाह कर लेना ही अपने पिछडेपन का प्रतीक मानते हैं किन्तु परिवार के वरिष्ठो के डर या लज्जावश हिचकते सकुचाते येन केन प्रकारेण इतना दबाव महसूस करते हुए प्रणाम या बहुत तो घुटना स्पर्श कर लेते हैं चरण स्पर्श के नाम पर।

चरण स्पर्श की परम्परा अभिवादन के रूप मे कब से शुरू हुई इसका स्पष्ट उल्लेख तो नही मिलता किन्तु आदि बाङमय वेद मे इसका उल्लेख प्राप्त होने से यह तो निश्चित है यह परम्परा वैदिक युग के पहले से ही प्रचलित है। अथर्ववेद मे मानव जीवन की आचार संहिता को [illegible] है वेद [illegible] देवो भव आचार्य देवो भव अतिथि देवो भव' आदि सूत्रो से क्रमश सब को दण्डवत प्रणाम एवं चरण स्पर्श कर वरिष्ठजनो से आशीर्वाद के साथ ऊर्जा तथा दैव बल की प्राप्ति की ओर इंगित करते हैं। वेदो मे चरण स्पर्श को प्रणाम का विधान माना गया है। आज के वैज्ञानिक भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि मानव शरीर मे हाथ (हथेलिया तथा उगलिया) तथा पाव (पैर के तलवे एव पैर की उगलिया) अत्यधिक सवेदनशील अग है। हम किसी भी वस्तु के कोमल कठोर शीतल या गर्म आदि गुणयुक्त होने का अनुभव हाथो या पैरो से स्पर्श करके प्राप्त कर लते है इसी तरह जब हम किसी वरिष्ठ का चरण स्पर्श करते हैं तो उसके आशीर्वचनो के साथ उत्साहित मन से उसके शरीर से निकली ऊर्जा उसके हाथ और पैरों की उगलियो के स्रोत से हमारे शरीर मे भी प्रविष्ट होती है और उस शक्ति द्वारा हम अपने को स्फूर्त महसूस करने लगते है। साथ ही चरण स्पर्श करते हुए कइ तरह के व्यायाम की क्रिया भी हो जाती है। नियमानुसार चरण स्पर्श के लिए हमे वज्रासन भुजगासन तथा सूर्यनमस्कार आसन की विभिन्न मुद्राओं की स्थिति मे होते हुए चरण स्पर्श करना चाहिए। इन क्रियाओं का शरीर और स्वास्थ्य पर स्फूर्ति एव शक्तिदायी प्रभाव पडता है।

चरण स्पर्श एक परम्परा निर्वाह नहीं है। वरन आस्था व श्रद्धा भावना से प्रसन्नचित होकर पूजा या भक्ति का प्रथम और अन्तिम सोपान हैं सतयुग और त्रेता मे बालको को उनकी प्राथमिक पाठशाला (परिवार) मे उनकी दिनचर्या की शुरूआत इसी से कराई जाती थी जिससे वे कुशाग्रबुद्धि बलिष्ठ और पौरुषवान और पराक्रमी हुआ करते थे। उन्हे इस क्रम का अनुसरण करने मे इसलिए लज्जा नहीं आती थी कि परिवार के सभी सदस्यो को यह नियम पालन करते हुए देखते थे। चूकि बच्चो मे अनुकरण तथा स्पर्धा की भावना प्रबल होती है अत वे अतिशीघ्र इसके अभ्यस्त भी हो जाते थे और आजीवन निर्वाह करत थे। आज भी कुछ परिवारो मे अभिभावको द्वारा इस तरह की सीख दी जाने पर वे ग्रहण तो कर लेते है पर पाश्चात्य शिक्षा शैली के आडम्बर युक्त वातावरण मे पहुचते ही इसका निर्वाह करने मे लज्जा अनुभव करने लगते है इसका कारण एक तो ऐसे सुसस्कृत छात्रो की सख्या कम होती है दूसरे अभिभावको से दूर जान पर विद्यालयीन वातावरण म अध्यापको द्वारा इस तरह के सस्कारो की ओर रूचि न लेना भी है अत छात्र धीरे धीरे अपनी संस्कृति के प्रति उदासीन होता आ पश्चिमी सक्रमित सस्कृति का अनुकरण करने लगते है और यही से विकृति शुरू हो जाती है

चरण स्पर्श के प्रमाण त्रेतायुग मे भी मिलते हैं। दण्डवत चरण स्पर्श का वर्णन रामचरितमानस मे केवट प्रसग मे इस प्रकार वर्णित है

केवट उतरि दण्डवत कीन्हा। प्रभु सकुचे एहि कछु नहीं दीन्हा।।

नारद मोह प्रसग मे देखिए

तब मुनि अति सभीत हरि चरना। गहे पाहि प्रणतारति हरना।।

यहा तक कि सीता ने भी चरण स्पर्श किया प्रथमत स्वयवर से पूर्व गिरिजा पूजन के लिए जाती है और भवानी का चरण स्पर्श करती है

कारण कौन बतावो तेही।
अस कहि चरण गही बैदेही।।
अनुसूया के पदगहि सीता
सीन सनेह धरम सुपुनीता।।

शेषावतार लक्ष्मण ने भी भगवान के चरणो मे शीश नवाया

भगति जोगु सुनि अति सुखुपावा।
लछिमन प्रभु चरणनि सिर नावा।

आदिकाल से शुरू चरण स्पर्श की परम्परा सतयुग त्रेता युग के बाद द्वापर मे भी यथावत अनुसरणीय बनी रही। महाभारत (वन पर्व) मे एक कथा मिलती है कि एक बार एक यक्ष ने धर्मराज (युधिष्ठिर) से प्रश्न किया व्यक्ति महान व सर्वशक्तिमान कैसे बन सकता है ? धर्मराज ने उत्तर दिया माता पिता गुरू एव वृद्धजनो का श्रद्धा भक्ति पूर्वक चरण स्पर्श कर तथा उनको [illegible] उनके द्वारा प्रसन्नचित से दिए हुए आशीर्वाद की शक्ति प्राप्त करके यक्ष ने फिर [illegible] जनो से आपका तात्पर्य ?

धर्मराज ने तब वृद्धजनों के छह प्रकार बताते हुए उत्तर दिया– वरिष्ठ आर्चाय व वृद्ध गुणो के अनुसार छह प्रकार के हैं वयोवृद्ध आश्रमवृद्ध ज्ञानवृद्ध बल(पौरूष) वृद्ध धनवृद्ध एव ऐश्वर्य वृद्ध। चरण स्पर्श के साथ निश्छलता अतिविनम्रता और प्रेम भाव की अनिवार्यता आवश्यक है।

महाभारत के ही एक अन्य प्रसग मे जब अर्जुन ने यह देखा कि अपने पितामह भीष्म को वे युद्ध मे पराजित नही कर सकते अत उन्हे विजय प्राप्त नहीं हो सकेगी। इस पर भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को एक युक्ति बताई कि पितामह जब ब्राह्म मुहूर्त मे ध्यान मे रहें तभी तुम युद्ध मे विजय प्राप्ति की कामना सहित पूर्ण आस्था एव विश्वास व विनम्रता से जाकर पितामह के समक्ष दण्डवत कर चरण स्पर्श करो और उनसे आशीर्वाद प्राप्त कर लो तब तुम्हे युद्ध मे कोई भी पराजित नही कर सकेगा। अर्जुन ने वैसा ही किया और ध्यानावस्थित पितामह के चरणो मे जाकर दण्डवत पड गए यानमुद्रा मे अर्जुन की स्थिति देखकर भीष्म पितामह न कहा वत्स विजयी भव ध्यान टूटने पर उन्होने अर्जुन को एक अन्य युक्ति भी बताई युद्ध भूमि मे यदि मेरे समक्ष शिखडी आ जाएगा तब मै अस्त्र रख दूगा और तू युद्ध जारी रखना पितामह यह जानते हुए कि मेरे रहते हुए मेरे समक्ष अर्जुन युद्ध मे विजय नही प्राप्त कर सकेगा युद्धनीति की शिक्षा दी और अर्जुन उस आशीर्वचन और पितामह के चरणो से प्राप्त ऊर्जा से एक नइ स्फूर्ति और पौरुष भ उत्साह से उस दिन युद्ध भूमि मे प्रविष्ट हुए

ज्ञातव्य है कि वरिष्ठजन अपने जीवन की परवाह न करते हुए शिष्यो की कामना की पूर्ति करते हिचकते नही थ इससे पहले महर्षि दधीचि ने राक्षसो के सहार के लिए देवताओं की आराधना से प्रसन्न हो कर अपनी अस्थि [illegible] दानकर अपने प्राण त्याग दिये थे

मनुस्मृति मे चरण स्पर्श की विधि के विषय मे स्पष्ट करते हुए यह भी बताया गया है कि चरण स्पर्श करते हुए दाहिने हाथ की उगलियो (पजो) दाहिने पैर की उगलियो पजे तथा बाए हाथ की उगलिया (पजो) का स्पर्श किया जाना चाहिए वरिष्ठजन को भी दोनो हाथ बढाकर चरण स्पर्श करने वाले के सिर पर रखते हुए प्रसन्नचित्त आशीर्वचन देना चाहिए

चरण स्पर्श हमारी सस्कृति के अनुसार एक औपचारिक अभिवादन एव आतरिक स्नेह सदभावनाओ का माध्यम मात्र ही नही है वरन चरण स्पर्श के शारीरिक क्रियाए अग सचालन तथा चित्त की प्रसन्नता की स्थिति की प्रधानता होने से व्यक्ति को मानसिक मलिनता तनाव तथा आलस्य से मुक्ति मिलती है व्यक्ति स्फूर्ति उत्साह और चैतन्यता का अनुभव करता है चरण स्पर्श विधि अपने आप मे एक लघु व्यायाम अथवा एक सयुक्त योग क्रिया भी है यदि लज्जा त्याग कर हम इसे अभ्यास मे प्रवृत्त हो जाए तो हमे स्वास्थ्य के साथ व्यावहारिक क्षेत्र मे भी किसी के समक्ष वार्तालाप आदि मे किसी प्रकार की हिचक झिझक और शर्म की स्थिति से उत्पन्न कष्ट से भी मुक्ति मिल सकती है

अन्तत हम आपका ध्यान एक नीति श्लोक की ओर आकृष्ट कर रहे है जिसमे मानव जीवन के समग्र विकास का स्रोत अभिवादन और वृद्धोपसेवन को बताया गया है

अभिवादनशीलस्य नित्य वृद्धोपसेविन
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्या [illegible]
अर्थात [illegible] श्रद्धाभ [illegible]
वृद्धजन (वरिष्ठ [illegible]
व्यक्ति की आयु विद्या यश [illegible] निरन्तर
वृद्धि होती है

प्रबलतम शत्रु क्रोध

ओमप्रकाश गुप्त

क्रोध उन तामसिक मनोविकारो मे से एक है जो मनुष्य के लिये घोर अमगल सूचक और दुखदायी है। क्रोध और विवेक का तो विरोध प्रसिद्ध ही है–एक ओर हृदय मे क्रोध का स्फुरण हाता है तो दूसरी ओर मन 'विवेक शून्य हो जाता है। क्रोध की अग्नि के प्रज्वलित होते ही मनुष्य सत और असत प्रिय और अप्रिय ऊच और नीच सुन्दर और असुन्दर का भेदभाव भूल जाता है और कभी–कभी तो ऐसा अमर्थ कर बैठता है कि उसको जीवन भर पछताना पडता है। मेरे पडोस मे चौधरी बालकराम का मकान है। एक दिन चौधरी साहिब को अपने लडके पर इतना क्रोध आया कि उन्होने लकडी की नाकदार गुल्ली उसकी ओर तीर की तरह चला दी। गुल्ली की नोक आख पर जोर से लगी रक्त बहा और सदा के लिये उसकी अ ख चली गई। भला इस प्रकार के क्रोध से क्या लाभ ?

हारिस ने ठीक ही कहा है कि क्रोध क्षणिक पागल–पन है इसलिये अपने आवेश को वश मे करो अन्यथा यह तुम्हे वश मे कर लेगा। एक प्रसिद्ध चीनी कथन है कि क्रोध की अवस्था मे पत्र नही लिखना चाहिये। हिन्दी के माहन निबन्धकार स्व. रामचन्द्र शुक्ल ने भी अपने क्रोध नामक निबन्ध मे लखा है – क्रोध शाति भग करने वाला मनोविकार है।

कई लोगो का क्रोध इतना आवेगपूर्ण और अन्धा होता है कि वे जड पदार्थो से भी जूझ पडते है और उन्हे ही बुरा भला कहने लगते हैं शुक्ल जी ने इस अपरिष्कृत क्रोध के उदाहरण दिये हैं। चाणक्य ब्राह्मण अपना विवाह करने जा रहा था। मार्ग मे कुश उसे पैर मे चुभे। वह चट मठठा और कुदारी लेकर पहुचा और कुशो को उखाड–उखाडकर उनकी जडो मे मटठा देने लगा। एक बार मैंने देखा कि एक ब्राह्मण देवता चूल्हा फूकत–फूकते थक गयें। जब आग न जली तब उन्होने चूल्हे मे क्रोध से पानी डाला किनारे हो गये।

क्रोधी मनुष्य का पहले तो मित्र ही नहीं होता यदि कोई उसके समीप आ भी गया तो वह बहुत दिनो तक टिक नहीं सकता। क्रोधी व्यक्ति तो परम मित्र के हृदय मे भी क्षण भर मे विकार उत्पन्न कर देता है। अग्रेजी मे एक कहावत है कि छोटा बर्तना ही शीघ्र गर्म होता है तात्पर्य यह है कि छोटे लोग ही जल्दी नाराज होते हैं। ऐसे अल्पज्ञ धैर्यशून्य लोगो का तो हृदय उनके अधरो पर ही रहता है। वास्तव मे एक बडा आदमी योगी सन्यासी का यह शुद्ध लक्षण है कि क्रोधी उससे दूर रहता है। उसके मन की वृत्ति सुख और दु ख मे एक समान ही रहती है।

क्रोध और भय का अविच्छिन्न सम्बन्ध है। जो मन हीन ग की ग्रन्थियो से शिथिल–प्रपीडित हो जाता है वह आसानी से कुपित हो उठता है। जहा भय की आशका न हो वहा क्रोध की सम्भावना नहीं हो सकती। रामचरित मानस मे जब लक्ष्मण को यह आशका हुई कि भरत अयोध्या वासियो सहित राम को परास्त करने के लिए आ रहे है तब उनके तन–मन मे आग लग गयी और उनका उचित–अनुचित विवेक जाता रहा। जब हमे ऐसा प्रतीत होता है कि हमारी आत्मसम्मान की भावना का तिरस्कार किया जा रहा है या उस पर गहरी चोट लगायी जा रही है, तो हम तडप उठते हैं और क्रोधाधीन हो जाते हैं। हममें से कोई भी नहीं चाहता कि उसके अहम का निरादर किया जाये इसलिए हमें चाहिए कि हम सभी के व्यक्तित्व को उचित मान प्रदान करे। हमारे शास्त्रो में ठीक ही कहा गया है– क्रुद्ध के भी प्रति जो व्यक्ति क्रोध नहीं करता वह अपनी और उसकी दोनों की बडे भय से रक्षा करता है। इसलिए वह दोनो का चिकित्सक है। छोटे–छोटे कोमल सम्मित बालकों पर कुपित होना तो मूर्खता और बर्बरता की प्रथम निशानी है। यदि बालक से कुछ टूट गया या बिगड गया या न बन पडा तो इसमे इतनी आपत्ति की क्या बात है ? उसको तो चाहे जो कुछ भी हो स्नेह दुलार सहानुभूति और ममत्व ही देना चाहिये नहीं तो उसका व्यक्तित्व पूर्णतया विकसित नहीं हो पायेगा। जो माता–पिता अपने बच्चो से खूब नाराज हुआ करते हैं वे कुछ ही वर्षो बाद खूब पछताया करते हैं जबकि उनकी सन्तान का विकास विकृत हो जाता है या रुक जाता है।

क्रुद्ध व्यक्ति प्रत्येक प्रकार का पाप कर सकता है।

क्रुद्ध पाप नर कुर्यात क्रुद्धा हन्याद् गुरूनपि।
क्रुद्ध परूषया वाचा श्रेयसोऽप्यवमन्यते।।

अर्थात क्रुद्ध व्यक्ति क्या पाप नहीं कर सकता ? वह गुरूओं को भी मार सकता है तथा अपनी परूषवाणी से महा पुरुषो का भी अपमान कर सकता है।

साराश यह कि क्रोध मनुष्य की भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति मे बाधक है। आत्मोन्नति के अभिलाषी जनो को इस महान शत्रु से सावधान रहना चाहिये। *

पृष्ठ ५ का शेष

वेदों की प्रमाणिकता......

नित्य अध्ययन करो। इसी प्रकार श्री वल्लभाचार्य ने कहा कि

अलौकिकों हि वेदार्थोनयुक्त्या प्रतिपद्यते"

तपसा वेद युक्तया तु प्रसादात् परमात्मन ।।

अणु भाष्य १-१-१

ब्राह्मण ग्रन्थो मे वेद के विषय मे शतपथ ने

तत-यत्तत सत्य त्रयी सा विद्या" वेद ही सत्य विद्या है सत्य की ही यह विद्या है

महाभारतकार ने भी वेद आदि सृष्टि मे वेद–अनादि नित्य वेदवाणी प्रवृत्त हुई

अनादि निधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वय भुवा।

आदौवेदमयी दिव्या यत सर्वा प्रवृत्तम ।।

म भा १२ २३३ ३४

तैत्तरीय आरण्यको ने भी मन्त्रकत मन्त्र प्रतिसज्ञक ४–१ मे अर्थात यह मुझे दूरन करे।

कल्पादौ ईश्वरानुग्रहेण मन्त्राणा लब्धारो इत्युच्यन्ते"(सायण भाष्य)

कल्प के आदि म ईश्वरानुग्रह से जिन्हे मन्त्रो की प्राप्ति होती है। वे मन्त्र कत ऋषि होते है इसी प्रकार कठो उपनिषत भी वेदा की गवाही देते हैं।

सर्वे वेदा यत पद मामनन्ति मुण्डक

२–१ ४ ६

वाग्विवृताश्च वेदा तस्मादृच साम यजुसि दीक्षा

उसी प्रभू से ऋक सामादि हुऐ है। प्रश्ननोपनिषद् ५–७

अग्निरेत यजुर्भिरन्तरिक्ष स सामभिर्यत तत्कवयों वदन्ति"

५ ७

"नास्ति वेदात्पर शास्त्रम्" अत्रि ३–८ ने श्रुति–स्मृति मे द्विजो की आख है ये दोनो न होने से अन्धा अज्ञानी है।

वेदाभ्यासो यथाशक्त्या महायज्ञ क्रियाक्षमा।

लघु अत्रि ६ ३–१ वेद का ज्ञान सब दोषो को जला देता है।

सम्वर्त स्मृति भी ऋक–यजु साम का रहस्यो समेत जो अध्ययन करता है वह सब पापो से मुक्त होता है। सामानि स रहस्यानि सर्व पापै प्रमुच्यते।।

पाराशर सहिता मे कहा है

धर्मशास्त्र रथा रूढा वेद खडग धरा द्विजा वेद रूपी खडग जो धारण किये है वे जो बोलेगे वही परमधर्म होगा।

वदाभ्यासात्तयो ज्ञान इन्द्रियाण्म च सयम वृहसपति स्मृति वदो का अभ्यास ही तप सयम से सिद्ध होते हे।

वशिष्ठ स्मृति २ ४ चत्वारोअपि त्रयो वाऽपि य व्रूयुर्वेद पाएगा वेद जानने वाल ३ ४ ही जो कहेगे वह धर्म समझने योग्य है। वृद्ध गौतमका प्रमाण है

ऋग यजु साम मन्त्राणा लोकहितार्थ चिन्तनात वेदो के चिन्तन से सत्य ज्ञान प्राप्त होता है। इसी प्रकार नारद स्मृति १ ५

बोधायन ने कहा कि उपदिष्टो धर्म प्रतिवेदम प्रतिवेद मे धर्म का उपदेश कहा है लघुहारीत मे

वेद चैवाभ्यस नित्य वदाध्ययन पवित्रस्थान मे बैठकर करे

वेदम्चक्षु सनातनम्" उशना ३ मे वेद ही सबका चक्षु है।

शख १३ ७ मे ऋग यजु पारगो यश्च साम्रा यश्चापि पारगा जो चारो वेदो मे पारगत है। वेदाना चैव पालनम लिखित स्मृति ने वदा का पालन करना चाहिये।

दक्ष स्मृति वेदभ्यासो हि विप्राणा परँ तप वेदाभ्यासी कहा है

मृगु ने –प्रवृति निवृत्ति च द्विविध कर्म वैदिकम' दो प्रकार के कर्म प्रवृत्ति व निवृत्ति हैं वेद के यह द्विविध धर्म है।

नीतिकारो ने भी वेदो को माना है शुक्रनीतिकार वेद कृत्स्नोऽधिगम्नव्य सरहस्यो द्विजन्मना वेद का अध्ययन द्विजो को करना चाहिये।

वेदाध्ययन युक्तस्तु परे ब्रह्मणि लीयते वेदाध्ययन करने वाला पर ब्रह्म मे लीन होता है

उपयुक्त उद्धृत सम्मतिया प्राचीन विद्वानो और ग्रन्थो की हैं। ये सप्रमाण एक मत से स्पष्ट उल्लेखकरते हैं कि वेद सत्य विद्या का ज्ञान ग्रन्थ है वेदाध्ययन से ही मानवो का कल्याण होगा। इस प्रकार प्राचीन वैदिक वाङमय से सिद्ध है कि वेद ही सत्य सनातन ईश्वरीय ज्ञान है इसे ही जानना मानना व समझना चाहिये। इस पुरातन पद्धति के प्रमाणो के पश्चात आगामी लेख होगा।

अर्वाचीन भी विद्वानो की वेदो के प्रति धारणा क्या है उनकी सम्मतियो मे सप्रमाण लेख पढने को मिलेगा।

दिनाक ८ जून से १६ जून १९९९ तक

स्थान डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पालमपुर (जिला कागडा) हिमाचल प्रदेश

सानिध्य आर्य नेता श्री रामनाथ सहगल

अध्यक्षता मान० श्री ज्ञानप्रकाश चोपडा

(प्रधान, आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा)

शिविर सरक्षक स्वामी सुमेधानन्द जी (दयानन्द मठ चम्बा)

शिविर अध्यक्ष आचार्य अखिलेश्वर जी (जम्मुवाले)

(१) कक्षा ८ से १२ वीं तक के युवक भाग ले सकते हैं

(२) १०० रुपये शिविर शुल्क सहित स्थान सुरक्षित कराये।

अपील

आर्य युवा निर्माण मे तन मन धन से सहयोग प्रदान करे

सम्पर्क सूत्र

अनिल आर्य

राष्ट्रीय अध्यक्ष

आर्य समाज कबीर बस्ती

पुरानी सब्जी मण्डी दिल्ली–११०००

फोन–७२१५५३६

पेजर न ९६२८००८४०१

छेरत अलीगढ मे बन रहे विशाल बूचड खाने का विरोध

अलीगढ (छेरत) के निकट सी डी एफ की ५ एकड भूमि पर हिन्द एग्रो इण्डस्ट्रीज नाम से बन रहे विशाल बूचडखाने का विरोध आर्यवीरदल तथा आर्य समाज द्वारा किया जा रहा है। इस सम्बन्ध मे सरकार को कई ज्ञापन भी दिये गये है। कई माह तक क्रमिक अनशन भी किया गया और अनेक सभाओ का आयोजन किया गया तथा प्रदर्शन किए गए दिनाक ३१ १२ ९५ की विशाल सभा पर कटटीघर निर्माताओ द्वारा गोली चलाई गई तथा प्रशासन द्वारा निर्दोष जनता पर लाठी चार्ज किया गया जिससे अनेको लोग घायल हुए। लगभग ४० लोगो को अनायास ही जेल मे ठूस दिया गया। इसके पश्चात आन्दोलन ने और अधिक गति पकडी है। दिनाक २६ मई ९९ को छेरत पर एक विशाल सभा का आयोजन किया जा रहा है जिस मे सभी स्थानीय सासद विधायक एव नागा बाबा माट श्री पाद जी महाराज वृन्दावन वामदेव जी तथा आर्य जगत के अनेक नेता पहुच रहे हैं

छेरत कटटीघर विरोध सघर्ष समिति का एक प्रतिनिधि मण्डल आज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री डा सच्चिदानन्द जी शास्त्री से मिला जिन्होने सभा की ओर से पूर्ण सहयोग तथा सरक्षण देने का वचन दिया।

अत इस घोर अत्याचार के विरुद्ध सघर्ष करना हम सभी का आवश्यक एव पुण्य कार्य है। इस कट्टीघर के निर्माण को निरस्त करने हेतु छेरत कट्टीघर विरोधी सघर्ष समिति ने आन्दोलन चला रखा है। आपसे अपील है कि इस सघर्ष मे तन मन धन से सहयोग कर आन्दोलन को सफल बनाये समिति के निर्णय अनुसार २६ मई ९९ को इस कट्टीघर के गेट पर विशाल जन सभा का आयोजन किया गया है आप सभी इसमे भारी सख्या मे पहुचे।

निवेदक

स्वामी श्रद्धानन्द

अध्यक्ष

छेरत कटटीघर विरोध सघर्ष समिति

अलीगढ

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की गतिविधियां

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान म कायरत अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ का प्रादुर्भाव लगभग २८ वर्ष पूर्व हुआ यह सस्था मध्य प्रदेश आसाम व नागालैण्ड के पिछडे बनवासी क्षेत्रो मे विद्यालयो तथा आश्रमो के माध्यम से जन जागरण का कार्य यथा शक्ति कर रही है इसके सर्व प्रथम महामत्री स्व श्री ओम प्रकाश जी त्यागी उनके पश्चात स्व श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री ने इस पद को सुशोभित करते हुए तन मन व धन से अविस्मरणीय कार्य किया वर्तमान मे स्व श्री पृथ्वीराज शास्त्री की धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमलता खन्ना सघ के मत्री के रूप मे काय करते हुए इन विद्यालयो तथा आश्रमो का सचालन सुचारू रूप से कर रही हैं।

श्रीमती प्रेमलता जी खन्ना व मै (ईश्वर रानी उपमत्री) 25-4 96 से 1 5 96 तक थादला आश्रम के अन्तर्गत चल रहे कुछ आश्रमो व विद्यालयो का निरीक्षण करने गई। जिन आश्रमो व विद्यालयो का निरीक्षण किया गया वे सब सुचारू रूप से अपना कार्य कर रहे हैं निम्नलिखित आश्रमो की समितियो का गठन भी किया गया जो निम्न प्रकार से है

१ भामल आश्रम जिलाझाबुआ

सरक्षक	श्री डाक्टर गणेशलाल जी कुशवाहा
अध्यक्ष	श्री कालूसिह जी पान्वरा
उपाध्यक्ष	श्री प्रतापसिह राठौर
	श्री भेरूलाल जी चौबे
सचिव	श्री राम राव जी राजपूत
सह सचिव	श्री कैलाश जी खेर
	श्री जवानसिह
कोषाध्यक्ष	श्री रामाराव जी राजपूत

अन्तरग सदस्य

१—श्री मानसिह रूपा
२ श्री बाहदुरसिह पावरा
३—श्री बाबूसिह नकुम
४ श्री केशरसिह जी फवका
५ श्री रघुनाथ मानसिह
६ श्री कोदरसिह चावडा

२ कुण्डा वा सरवन जिला रतलाम

अध्यक्ष	श्री ठाकुर यादवेन्द्र सिह ग्राम सरवन
उपाध्यक्ष	श्री कमल सिह कुराडा
मन्त्री	श्री प्रेम शकर शर्मा सरवन
उपमन्त्री	श्री जगदीश च द जी पोरथाम सरवन
कोषाध्यक्ष	श्री दीनदयाल सिह सरवन
निरीक्षण व सूचना मत्री	ठकुरानी भारती देवी
सहायक मन्त्री	श्री नारायण सिह चारेल

अन्तरग सदस्य

१ परमानद जी सोलकी
२—श्री विजय सिह राठौर
३ श्री जीववर्धन शास्त्री
४ श्री पवन कमार आर्य
५ श्री राम चन्द जी
६ श्री कानाजी लोकेन्द्र सिह भगवानदास जी श्यामलाल अग्रवाल आदि

सरवन व कुण्डा आश्रमो के अध्यक्ष श्री ठा यादवेन्द्र सिह जी सरवन जिला रतलाम मे सपरिवार रहते हैं और पिछली तीन पीढियो से आर्य विचारधारा से ओत प्रोत है। आपके परिवार मे बिना सन्ध्या व यज्ञ के ५ वर्ष का बालक भी नाश्ता नहीं करता इस परिवार से प्रथम वार भेट हुई और उनके स्नेहमय व्यवहार से हम दानो प्रभावित होकर हृदय से उनका आभार व्यक्त करती हू। यह परिवार पिछली ४ पीढियो से स्वतत्रता आन्दोलन मे योगदान देता रहा है।

यह विवरण पाठको की सूचनार्थ दिया जा रहा है और सघ सर्व साधारण से सहयोग (विशेषकर आर्थिक सहयोग) की अपेक्षा करता है।

ईश्वर रानी — उपमत्री
वेदव्रत मेहता — महामत्री
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ
नई दिल्ली

पाप से धृणा करो पापी से नहीं।

आर्य समाज गाधी धाम कच्छ मे डा. प्रज्ञा देवी कम्प्यूटर कक्ष का प्रारम्भ

आर्य समाज के कार्यो मे अभी कम्प्यूटर का प्रचलन नहीं हुआ है

आर्य समाज गाधीधाम ने इस ओर पहल करते हुए अपनी समाज मे कम्प्यूटर कक्ष बनाया है। आर्य समाज सचालित स्कूलो म कम्प्यूटर हो सकता है परन्तु नितान्त आर्य समाज के कार्यो के लिए कम्प्यूटर लगाया गया हो यह शायद आर्य जगत की प्रथम घटना होगी

इस कम्प्यूटर कक्ष का नाम पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी की दिवगत आचार्या के नाम "डा प्रज्ञा देवी कम्प्यूटर कक्ष रखा गया है जिसका उद्घाटन दि १२०५ १९९६ को पातजल योगधाम—ज्वालापुर के अध्यक्ष पू स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती ने किया। प्रासगिक प्रवचन मे पू स्वामी दिव्यानन्द जी ने कहा कि आर्य समाज को अपने प्रचार प्रसार के लिये रूढिवादिता को छोडकर आधुनिक साधनो को उपयोग करना चाहिये और इस दिशा मे आर्य समाज गाधीधाम द्वारा की गई पहल की प्रशसा की । आर्य जगत की मूर्धन्य विदुषी महिला डॉ प्रज्ञादेवी के नाम पर इस कक्ष का नामकरण किये जाने पर आर्य समाज को भूरिश साधुवाद देते हुए स्वामी दिव्यानन्द जी ने कहा कि डा प्रज्ञादेवी के निधन से आर्य जगत को अपूरणीय क्षति हुई है उनके नाम को अमर कर श्रद्धान्जलि देने का यह अच्छा प्रकार है

इस अवसर पर पू स्वामी धर्मानन्द योगतीर्थ व आर्य समाज गाधीधाम के पदाधिकारी सदस्य अग्रणी नगरजन उपस्थित रहे

भारत के नेताओं जागो

भारत के नेताओ जागो हित–अनहित को पहचानो।
जगत गुरू ऋषि दयानन्द की पावन शिक्षाए मानो।।
उग्रवाद आतकवाद ने प्यारा भारत घेरा है।
देश द्रोही गद्दारो ने डाला आकर डेरा है।।
पापिन फूट बढी है भारी लगा रही चककेरा है।
वेद भास्कर के बिन छाया चारो ओर अधेरा है।
अगर सुखी रहना चाहो तो मर्म वेद का तुम जानो।
जगत गुरू ऋषि दयानन्द की पावन शिक्षाए मानो।।
तुष्टिकरण की नीति तुम्हारी ने सब खेल बिगाडा है।
इसी लिए तो नाच रहा दानव दल आज उघाडा है।।
देशभक्त विद्वान दुखी हैं मौज विधर्मी मार रहे।
रात–दिवस अलगाव वाद का कर घातक प्रचार रहे।।
आजादी है खतरे मे अब होश करो अय नादानो।
जगत् गुरू ऋषिदयानन्द की पावन शिक्षाए मानो।।
भारतवासी सभी बराबर है निर्भय ऐलान करो।
कुर्सी का लालच त्यागो दुष्टो से मत तनिक डरो।।
एक समान नियम भारत मे लागू फौरन करवादो।
चन्द्रगुप्त चाणक्य बना तुम ध्वजा ओ३म का फहरादो।।
नाम अमर कर दो दुनिया मे धर्म निभाओ बलवानो।
जगत् गुरू ऋषिदयानन्द की पावन शिक्षाए मानो।।
जो राजी से नहीं मानते उनको सबक सिखादो तुम।
देश आर्यो का है भारत ये जग को दिखलादो तुम।
देश द्रोही गद्दारोका वीरो वश मिटा दो तुम।
भारत वासी जाग चुके है ये जयघोष लगादो तुम।।
चमक उठोगे दुनिया भर मे राम कृष्ण की सन्तानो।
जगत गुरू ऋषिदयानन्द की पावन शिक्षाए मानो।।

प. नन्दलाल निर्भय
वेद सदन ब्रहीन
फरीदाबाद (हरियाणा)

वेद प्रचार मेला

प्रति बर्ष की भाति इस बर्ष भी वेद प्रचार मेला का आयोजन आर्य समाज फतुलाहा द्वारा १४ मार्च से १६ मार्च तक किया गया। इस अबसर पर प. सत्यव्रत वानप्रस्थ प. व्यास नन्दन शास्त्री भजनोपदेशक उमाकान्त आर्य एव प्रकाश चन्द्र आर्य ने अपने अपने प्रवयन एव भजनोपदेश से जनता को लाभान्वित किया। बडे उत्साह से तीन दिन हवन प्रवचन मे ग्राम वासियो ने तन मन धन से सहयोग दिया

लाल बाबू ललन
मत्री आर्य स. फतुलाहा

वार्षिकोत्सव

आर्य–समाज सावितगज पो. करनपुर वाया दातागज जिला बदायू का द्वितीय वार्षिक उत्सव दिनाक ८–६–९६ से १०–६–९६ तक मनाया जायेगा जिसमे आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान सगीत कार तथा उपदेशक गण पधार रहे हैं।

विनीत
चिरौजीलाल आर्य अध्यापक
ग्राम सावितगज पा. करनपुर वाया
दातागज जिला (बदायू)

आर्य समाज राम कृष्णा पुरम, सेक्टर ६ दिल्ली का निर्वाचन।

श्री सुरेश चन्द्र पाठक प्रधान
श्री रणवीर सिह मत्री
श्री प्रताप सिह कोषाध्यक्ष

प्रवेश सूचना

"आर्ष पाठविधि एव परम्परा का एक मात्र गुरूकुल"

गुरूकुल प्रभात आश्रम मे नये प्रवेशार्थी ब्रह्मचारी (आयु ६ से १० वर्ष के मध्य ५ वी श्रेणी उत्तीर्ण) आषाढ वदी १५ से आषढ सुदी १५ वि सं. २०५३ तदनुसार १५ जून से ३० जून १९९६ तक प्रवेश परीक्षा मे बैठ कर स्थान सुनिश्चित करलें। स्थान सीमित है। अहिन्दी भाषी प्रान्त के बालको के प्रति सहानुभूति पूर्वक विचार किया जायेगा। भोजन आवास अध्ययन नि शुल्क है।

व्यवस्थापक
गुरूकुल प्रभात आश्रम (टीकरी)
भोला झाल –मेरठ –उ. प्र.

आर्यसमाज मुजफ्फरपुर का निर्वाचन

डा. सतपाल ठाकुर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुये निर्वाचन में सर्वसम्मति से श्री पन्ना लाल आर्य प्रधान श्री इन्द्रदेव साह मत्री एव श्री जगदीश प्रसाद कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

आर्य समाज सागर म.प्र. का वार्षिक निर्वाचन ९६-९७

प्रधान श्री कृष्ण देव जी कोहली
मत्री श्री बद्री प्रसाद मुशी
कोषाध्यक्ष श्री बद्री नारायण नेमा

कानपुर– आर्य समाज के तत्वावधान मे आर्य समाज गोविन्द नगर हाल मे आयोजित केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। इसमे सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर आर्य समाज द्वारा कई वर्षों से हरियाणा राज्य मे शराब बन्दी के चलाये जा रहे राज्य व्यापी आन्दोलन से प्रभावित होकर मुख्यमन्त्री श्री बशीलाल को अपने राज्य मे पूर्ण मद्यनिषेध की घोषणा करने पर हार्दिक प्रशसा की गयी तथा उनको तथा उनके सहयोगी दल भाजपा को भी बधाइ दी गयी प्रस्ताव मे अन्य प्रदेशो के मुख्यमत्रियो को भी अपने राज्यो मे पूर्ण मद्यनिषेध तथा लाटरी पर प्रतिबन्ध लगाने का आग्रह किया गया कि ये दानो बुराईया समाज को जहा खोखला कर रही है वहा अपराध भी बढा रही है। सभा मे सर्वश्री स्वामी प्रज्ञानन्द जाति भूषण जगन्नाथ शास्त्री श्रीमती कैलाश मोगा दर्शना कपूर आदि ने प्रस्ताव का समर्थन कर अपने विचार प्रकट किये सभा की अध्यक्षता श्री देवीदास आर्य तथा सचालन श्री बाल गोविन्द आर्य ने किया।

बाल गोविन्द आय
मन्त्री

आर्य समाज दयानन्द मार्ग निरपुडा (मेरठ)

के वार्षिक अधिवेशन मे वर्ष १९९६ ९७ के लिए कार्य कारिणी का गठन निम्न प्रकार क्रिया गया है।

प्रधान श्री जय पाल सिह
मत्री श्री सतीश कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष श्री प्रेम चन्द कोरी

ऋषि दयानन्द पर टी.वी. सीरियल

आर्य जगत को जानकर हर्ष होगा कि श्री एन. जावेद साहब तथा श्री धन कुमार आर्य शास्त्री के सत्य प्रणाम से ऋषि दयानन्द पर टी. वी. सीरियल की योजना है।

छात्रवृति सूचना

निर्धन अनाथ योग्य छात्र छात्रवृति हेतु अपने दिनयपम अपने स्कूल कालिज गुरूकुल के आयार्य अथवा किसी आर्य समाज के प्रधान से तसहीक करवाकर दिनाक ३१–५–९६ से पहले निम्न पते पर भेजे।

प्रधान
ऑल इडिया दयानन्द सार्वदेशन
मिशन ऊना रोड होशियारपुर
(पजाब)

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 26 5-96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/96
R N No 626/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 23/24-5-1996

'ओ३म्'

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में महात्मा नारायण स्वामी आश्रम का

आर्य समाज के मूर्धन्य सन्यासी म नारायण स्वामी जी महाराज ने नैनीताल के निकट रामगढ मे आश्रम की स्थापना करके पर्वतीय अचल मे सुधारवार का जो आन्दोलन प्रारम्भ किया था उसके ७५ वर्ष पूर्ण करने पर उक्त कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

कार्यक्रम

२ जून से ४ जून १९९६

स्थल महात्मा नारायण आश्रम, रामगढ

(नैनीताल से बस द्वारा लगभग ३५ कि मी)

अध्यक्षता: प० वन्देमातरम् राम चन्द्र राव

प्रधान सार्वदेशिक सभा दिल्ली

आर्य जनता के लिए भोजन एव आवास का समुचित प्रबन्ध होगा

निवेदक

विक्रम सिह वेदप्रकाश अग्निहोत्री कृष्ण कुमार भाटिया

सयोजक म.नारायण स्वामी आश्रम रामगढ

10150—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय-गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय
जि० हरिद्वार (उ० प्र०)

शोक समाचार

स्वतन्त्रता सैनानी श्री बुलाक चन्द राय का ११ मई को रात्रि साढे ६ बजे निधन हो गया। वे ६१ वर्ष के थे। १२ मई ९६ को विष्णु पद श्मशान घाट गया मे पूर्ण वैदिक रीति से उनका अतिम सस्कार सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज सेवा सदन का वार्षिक चुनाव

दिनाक ३१–३–९६ को आर्य समाज सेवा सदन बल्लवनगर की साधारण बैठक हुई जिसमे अत्यन्त शान्ति पूर्ण तथा सौहार्द मय वातावरण मे निम्नलिखित सदस्य बहुमत से चुने गये।

प्रधान श्री राम अवतार जी आर्य
मत्री श्री चन्द्र भान जी भुटानी
कोषाध्यक्ष श्री धर्म वीर

दिनाक २८–४–९६ को वैदिक साधन आश्रम तपोवन का ग्रीष्म महोत्सव पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ।

विशेषता यह रही कि यद्यपि पजाब हरियाणा हिमाचल दिल्ली आदि राज्यो मे लोक सभा–चुनाव का मतदान २७–४–९६ को होने के कारण इस बार वे लोग नहीं आ पाये जो सात–आठ विशेष बसो मे इक्टठे होकर आया करते हैं तथापि उपस्थित मे कोई कमी नहीं रही।

ऋग्वेदीय यज्ञ आश्रम के सरक्षक स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती महाराज के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। तपोवन के यज्ञ मे विशेषता यह रहती है कि बीच–बीच मे वेद–मत्रो की व्याख्या भी की जाती है।

प्रवचन–कर्त्ताओं मे श्री यशपाल आर्य आचार्य आर्य नरेश आचार्य रामप्रसाद जी भूतपूर्व उप कुलपति गुरूकुल कागडी विश्वविद्यालय तथा स्वामी सत्यानन्द जी के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

योग–साधना–शिविर स्वामी दिव्यानन्द जी के निर्देशन मे चला। आपके शिष्य स्वामी धर्मानन्द योग–तीर्थ जी ने भी इस कार्य मे सहयोग दिया। यह सभी कार्यवाई श्री देवदत्त बाली के सुनिर्देशन व सचालन मे सम्पन्न हुई। ज्ञात हुआ कि श्री देवदत्त बाली गत लगभग ३० वर्षों से इस आश्रम की देखरेख व सुप्रबन्ध करते चले आ रहे हैं।

रामशरण वर्मा पत्रकार

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-2 से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

दूरभाष ३२७४७७१, ३२६०९८५ | आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये | वार्षिक शुल्क ५० रुपए एक प्रति १ रुपया

वर्ष ३५ अक १६ | दयानन्दाब्द १७२ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ | आषाढ कृ.-२ सम्वत्-२०५३ | २ जून १९९६

हिन्दू मानसिकता का अपमान

राष्ट्रपति अभिभाषण मे गोवध पर रोक के उल्लेख पर लोकसभा मे शोर–शराबा

नई दिल्ली २४ मई राष्ट्रपति के अभिभाषण मे गोवध पर प्रतिबध लगाए जाने के उल्लेख को लेकर लोकसभा मे आज थोडी देर शोर–शराबा हुआ। राष्ट्रपति के अभिभाषण की प्रति सदन पटल पर रखे जाने के तुरत बाद काग्रेस के प्रियरजन दासमुशी ने यह मामला उठाया उन्होने कहा कि अभिभाषण मे गोवध पर प्रतिबध लगाने का उल्लेख है जो कि सविधान की प्रस्तावना की भावना का खुला उल्लघन है।

उन्होने कहा कि राष्ट्रपति के अभिभाषण से देश मे गलत सदेश गया है। उन्होंने माग की कि गृहमत्री मुरली मनोहर जोशी इस सबध में सरकार की स्थिति स्पष्ट करे। काग्रेस की सुश्री ममता बनर्जी तथा कई अन्य सदस्यो ने उनकी बात का समर्थन किया। सुश्री बनर्जी ने तो इसी मामले पर दोनो सदनो के सयुक्त अधिवेशन मे राष्ट्रपति के अभिभाषण के बीच बहिर्गमन किया था।

श्री मुशी की बातो का भाजपा के कई सदस्यो ने विरोध किया जिससे सदन मे शोर–शराबा शुरू हो गया। शोर–शराबे के बीच वित्तमत्री जसवत सिह कुछ कहने के लिए खडे हुए पर अध्यक्ष पी ए सगमा ने उन्हे बैठने को कहा।

श्री सगमा ने कहा कि अभिभाषण की प्रति ₹ न पटल पर अभी–अभी रखी गई है। उन्होंने ५ कि अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा के ।रान इस मसले पर चर्चा की जा सकती है।

अध्यक्ष की व्यवस्था के बावजूद सुश्री बनर्जी तथा कुछ अन्य सदस्यों ने विरोध करना जारी रखा। भाजपा के कई सदस्य भी अपने स्थान पर खड़े होकर उनका प्रतिकार करते रहे।

इसी शोर–शराबे के बीच ससदीय कार्यमत्री प्रमोद महाजन के कागजात सदन पटल पर रखने का काम पूरा करते ही श्री सगमा ने कार्रवाई कल तक के लिए स्थगित कर दी। कार्रवाई स्थगित होने के बाद भाजपा सदस्यों ने सदन मे भारत माता की जय और वदे मातरम के नारे लगाए।

इससे पहले पूर्व केन्द्रीय मत्री सुश्री ममता बनर्जी आज राष्ट्रपति अभिभाषण के दौरान उस समय विरोध मे केन्द्रीय कक्ष से बाहर चली गई जब अभिभाषण मे गौरक्षा की बात कही गई।

उपराष्ट्रपति के आर नारायणन जब राष्ट्रपति अभिभाषण का अग्रेजी अनुवाद पढ रहे थे और उसमे गौरक्षा की बात आई तो सुश्री बनर्जी को यह कहते सुना गया यह तो हद हो गई मैं विरोध मे वाक आउट कर रही हू। वह और क्या कह रही थी यह स्पष्ट सुनाई नहीं दिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने पूर्व केन्द्रीय मत्री सुश्री ममता बनर्जी व श्री प्रियरजन दास मुन्शी द्वारा गौवध पर रोक–का विरोध करने पर कडी आपत्ति प्रगट की है। उन्होने इसे हिन्दू आर्य जनता की भावना का अपमान बतलाया है। इसमे अल्पसख्यक या बहुसख्यक की बात नहीं है। गाय समस्त मनुष्यो की माता है। और इस की रक्षा करना हम सब का पुनीत कर्तव्य है। स्वतन्त्रता के बाद गौ रक्षा के लिए अनेको बार आन्दोलन किये गये तथा बलिदान भी दिये गये। अत गौ वध पर रोक–का विरोध कर हिन्दू मानसिकता का अपमान किया गया है।

गोहत्या पर प्रतिबन्ध के विरोधी देश छोडें।

नव निर्वाचित ब्राह्मण सासदो के अभिनदन समारोह मे श्री बी. एल. शर्मा प्रेम ने कहा कि जो लोग हिन्दुत्व का सम्मान नहीं करते गोहत्या पर पर्ण प्रतिबन्ध नही चाहते वे इस देश से बाहर चले जाये।

श्री गिरिजा व्याज ने भी हिन्दुत्व की गरिमापर बल दिया उन्होने कहा कि हिन्दू सम्प्रदाय नहीं है हमारी अस्मिता है। इसलिए हिन्दुत्व की गरिमा बनाए रखने और उसे सही माइने मे समझने की जरूरत है।

राज्य सभा में संस्कृत की गूंज

नई दिल्ली २४ मई राज्य सभा मे आज भाजपा के कई सदस्यो ने देवभाषा सस्कृत मे शपथ लकर समूचे सदन और अच्छी सख्या मे आये दर्शको मे एक अलग ही तरह का माहौल पैदा कर दिया।

श्री बगारू लक्ष्मण ने जब शुद्ध सस्कृत मे शपथ पढनी शुरू की तो सदन मे सन्नाटा छा गया क्यो कि अब तक हिन्दी या अग्रेजी मे सुनने सुनाने का क्रम चल रहा था। बगारू के तुरन्त बाद नम्बर आ गया गुजरात के ही श्री अनन्त देवशकर दवे का। उन्होने भी सस्कृत मे अपना शपथ–ववाचन समाप्त ही किया था कि सदन के मुख्य सदस्य एस. एस. अहलू वालिया ने चिल्ला कर कहा–आयुष्मान भव। इस पर प्रधान मत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी भी अपनी हसी न रोक सके। उनके सामने पहली कतार मे बैठे श्री प्रणव मुखर्जी करूणाकरण और डा. मनमोहन सिह सहित सभी सदस्य चहक उठे।

भाजपा के ही श्री गोपालसिह सोलकी और महेश शर्मा ने भी सस्कृत मे अपना वचन पूरा किया। काग्रेस के सुरेश पचौरी ने भी अपनी शपथ सस्कृत मे ली। उनके उठते ही जोरदार तालिया बजी और भाजपा की ओर से जवावी वरदान मे कहा गया कल्याण भव।

सम्पादक-डा. सच्चिदानन्द शास्त्री

पं॰ राजगुरु शर्मा वैदिक छात्रावास के तत्वावधान में

वेद प्रचार यात्रा

वेदोऽखिलो धर्म मूलम्
(वेद ही धर्म का मूल है)

धर्म प्रेमी सज्जनो माताओ बहनो

अत्यन्त हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि परमात्मा के पवित्र ज्ञान वेद का सन्देश फैलाने के लिए वेद प्रचार यात्रा का आयोजन किया जा रहा है।

वेद धर्म के आधार हैं सनातन सस्कृति के उद्‌गम हैं। जब तक ससार के व्यक्ति वेद ज्ञान के सम्पर्क मे रहे तब तक समाज मे सगठन–खुशहाली–परोपकार–सेवा की भावना और व्यक्तियो मे आत्मशान्ती बनी रही। वेद ज्ञान को भूल कर आज समाज सम्पूर्ण सुख शान्ती भोगो में खोज रहा है जीवन का आधार आर्थिक मापदण्ड हो गया है भौतिकता की चका चौंध मे आत्म शान्ती के स्त्रोत से मानव दूर होता जा रहा है। वेद ज्ञान के अभाव मे ही साम्प्रदायिकता व पाखड समाज मे बढता जा रहा है।

साम्प्रदायिकता व भौतिकवाद की धारणा समाज में अराजकता ईर्ष्या द्वेष आत्मिक अशान्ति व घोर दु खो का कारण हो गई है। ससार के कल्याण के लिए सच्चे मानवीय धर्म का पालन आवश्यक है इनकी उपेक्षा ही सामाजिक दु खो व विघटन का कारण बनी हुई है।

आइए हम पुन उस ज्ञान की ओर चले जिसे हमारे पूर्वजो ने समझकर मानवता को अभिशाप नहीं एक सर्वोत्तम कृति सिद्ध किया है। वेद का ज्ञान परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान है।

मर्यादा पुरूषोत्तम राम योगीराज भगवान कृष्ण चाणक्य मनु कपिल कणाद गौतम शकराचार्य दयानन्द तुलसी नानक आदि महापुरुषो विद्वानो सन्तो ने इसे सर्वोत्तम सनातन व कल्याणी मार्ग माना है।

वेद के अनुसार मनुष्य का सबसे उत्तम सन्देश है "मर्नुभव जन्या दैव्यम जनम्" हे मनुष्य तू मनुष्य बन और औरो को भी मनुष्य बना। सर्वे भवन्तु सुखिन का दिव्य सन्देश वेद वाणी मे दिया है। कृण्वन्तो विश्वमार्यम सारे ससार को श्रेष्ठ बनाने का सदेश वेद ने दिया है। इसी पवित्र भावना से समाज मे सगठन व भाईचारे की भावना फैलाने मनुष्य को वास्तविक धर्म से जोडने के लिए गॉव–गॉव मे वेद प्रचार की योजना बनाई है।

जिसमे पडित राजगुरु शर्मा वैदिक छात्रावास के विद्यार्थी व इसके अतिरिक्त कई नर–नारी साधु–सन्यासी यात्रा के साथ रहेगे। सुसज्जित एक वेद–रथ तथा साहित्य विक्रय हेतु व निशुल्क वितरण व्यवस्था भी यात्रा मे रहेगी।

यात्रा दिनाक १७–५–९९ को अपरान्ह ३ बजे आर्य समाज मन्दिर महू से प्रारम्भ होगी। यात्रा का प्रारभ यज्ञ व सभा के पश्चात होगा। इसी अवसर पर स्वामी दयानन्द सरस्वती चेरिटेबल ट्रष्ट की प्रेरणा से बगडी परिवार द्वारा विकलाग विद्यार्थियो को आर्थिक भेट प्रदान की जावेगी।

यात्रा १७ मई से प्रारभ होकर उसका समापन २ जून ९९ को महू मे होगा।

डॉ॰ तिलकराज गुप्ता का परिचय

हसराज माडल स्कूल पजाबी बाग से कार्यमुक्त होकर डॉ. तिलकराज गुप्ता प्रिन्सिपल एव डाइरेक्टर वर्तमान सेक्रेटरी–डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल के नियुक्त हैं। आप के कार्यकाल मे हसराज माडल स्कूल पजाबी बाग मे–भवन निर्माण एव शिक्षा की दृष्टि से जो उन्नति की है वह अपने में अनुपम हैं।

आज आप डी. ए. वी. माडल स्कूल के सेक्रेटरी एव डाइरेक्टर हैं आपके गरिमा मय पद पर रहने कि शिक्षा क्षेत्र में अत्यत उन्नति होगी।

आप मिलनसार व्यवहार कुशल सफल प्रशासक माने जाते हैं।

आजकल आपने स्थान परिवर्तन कर लिया है।

पता–घर–**डा. तिलकराज गुप्ता**
प्रिन्सिपल एव डाइरेक्टर वर्तमान सेक्रेटरी
डी. ए. वी. माडल स्कूल
मकान नं. बी.२/८० सफदरजग इन्क्लेव
नई दिल्ली
फोन निवास ६१७६६७७ ६१७६६४४

"पिछले लेख मे मैंने–वेद से लेकर मनु व स्मृति–पुराण आदि ग्रन्थो मे जो वेदो के प्रति आस्था तथा मान्यताये प्रमाणित की है उनका सप्रमाण देकर स्वामी दयानन्द की मान्यता पर सिद्ध कोटि मे सप्रमाण देकर मान्यताये प्रस्तुत की हैं–

अब इस वैदिक मान्यता को इस धारणा मे कि वेदो मे विज्ञान के सत्य तत्व और धर्म के सच्चे सिद्धात पाये जाते हैं कोई विचित्रता नहीं है। प्रत्युत–आज के भिन्न भिन्न विद्वानो की क्या मान्यता है। अत सर्वप्रथम योगीराज अरविन्द जी का क्या मन्तव्य है प्रस्तुत है– कि वेद मे विज्ञान के वे दूसरे तत्व विद्यमान हैं जिनके विषय मे आधुनिक ससार कुछ भी जानकारी नही रखता है। वेदो मे दिखाई देने वाली बुद्धिमानी की गहराई तथा विस्तार के सम्बन्ध मे बहुत कुछ कहना शेष है।

मनुष्य जाति के मन मे जो धर्म सम्बन्धी जो प्राथमिक कल्पनाये पाई जाती हैं उन्हीं तक वैदिक धर्म का क्रियात्मक विभाग सीमित नहीं था जनता द्वारा पूजित प्रमुख देवताओ को वैदिक ऋषियो ने आत्मिक क्षेत्र मे पर्याप्त स्थान दे दिया है। वे देवताओ द्वारा रक्षित उच्च कोटि के "सत्य और ऋतु" नियम के बारे मे कहते थे। लोगो को नैतिक विकास उन्हे अन्तर्मुख बनाया गया। वे समझ चुके थे कि इन्द्रियो द्वारा प्रतीयमान इस पार्थिव जीवन से बढकर श्रेष्ठ उत्कृष्ट आत्मिक जीवन है। जिन्हे प्राप्त करना ही मानवी इच्छाओ की परम सीमा है। जो वेद के अन्तर्गत आन्तरिक अर्थ को भली भाति हृदयगम करने की क्षमता बढा चुके हैं। क्यो कि स्वय ऋषियो के कथनानुसार वेदो मे ऐसे शब्दो की भरमार है जिनका वास्तविक अर्थ केवल दृष्टा ही जान सकता है। आगे चलकर वैदिक सूक्तो की इस विशेषता को लोग भूल गये।

आधुनिक विद्वानो ने भी वैदिक सकेतमय शब्दो का रहस्योद्घाटन करने के अथक प्रयत्नो मे इस विशेषता की सम्पूर्ण उपेक्षा की है। सर्व साधारण लोग भी भारत मे आगे चलकर द्विज ही वेदाध्ययन के योग्य समझे जाते थे। आध्यात्मिक तत्वो के भण्डार होने से इन सूक्तो को–वेद–ज्ञान की पुस्तक का नाम मिला था।

भारत में सैकडो परिवर्तनो के होते हुए भी ऋषियों की डाली परम्परा को हमारी सम्पूर्ण सभ्यता की अट्टालिका खडी है।

भारतीय जीवन की प्रमुख विशेषता अनेकता मे एकता विद्यमान होना एक सद् विप्रा बहुधा वदन्ति। कल्पना के द्वारा हुई थी। अत मानव जाति के उत्कृष्ट ये वेद निरर्थक से जान पडने लगे। उधर योरोपीय विद्वान् भी ऐतिहासिक दृष्टिकोण से प्रभावित हों–वेदो का और अधिक विकृत अर्थ करने लगे। जिसके फलस्वरूप वेद की बहुत सारी आध्यात्मिक एव काव्यमय महत्ता तथा सुन्दरता विनष्ट हुई। परन्तु वैदिक विद्वान ऋषि वेद को अत्यन्त विभिन्न दृष्टि कोण से देखते थे। उनकी दृष्टि में वेद सत्य के आविष्कारक एव जीवन के गूढ रहस्यो को अलकारिक–सकेत प्रधान भाषा मे व्यक्त करने वाले साधन थे। वेद दिव्य आविष्कारक समझे जाते थे।

यज्ञ के छोटे छोटे विभाग जो सूक्तो सम्बन्ध है एक गहन मनोगम्य अर्थ को स्पष्ट करने के लिये बनाये गये थे।

वेद कालीन महान दृष्टाओ के जैसे अनेक उद्धार अति उच्च कोटि के काव्य जैसे जान पडते हैं।

जिस समय प्राचीन भारत के विद्वानो ने अपने सभी दर्शनो–धर्म और सभ्यता के अनिवार्य आवश्यक अगो का आदि श्रोत इन दृष्टा एव कवियो के उद्धारो मे पाया जाता है। प्रतिपादन किया था उन्होने कोई भूल नहीं की थी क्यो कि भारतीय जनमानस का सम्पूर्ण आध्यात्मिक जीवन वेद मे या प्रथम वार व्यक्त किये स्वरूप मे विद्यमान था।

वेद प्रथमत ससार का आदिम और अभी तक विद्यमान धर्मग्रन्थ है। यह वेद ग्रन्थ मानवो की वन्यअवस्था मे कदापि नहीं बनाया जा सकता था। वैदिक ऋषियो की अत्युत्कष्ट रचनाशैली पर पूर्ण अधिकार था। अत प्रत्येक मत्र स्वय पूर्ण व प्रभावी जान पडते हैं। और सूक्त मे पूर्ण ठीक स्थान पर बैठ जाता है।

श्री थोरो का मत–अमेरिका विख्यात विद्वान थोरो–वेदो के विषय मे जो विचार व्यक्त करते हैं। उनका कथन है–

मै जब कभी वेद के अवतरण पढता हूँ–तो मुझे ऐसा प्रतीत होता है तो मुझ पर आकाश के अत्युच्च विभाग मे मार्ग क्रमण करने वाले एक पवित्र ग्रह से प्रकाश रेखा आकर गिर रही हो। वह ग्रह पवित्रतम वायुमण्डल मे जहों पर विभिन्नताओ के स्थान पर सार्वन्निकता पाई जाती हो–ऐसे वेदो मे परमात्मा के द्वारा बुद्धि पूर्वक ज्ञान विद्यमान है।

प्रो॰ विन्टर निटज ने भी अपनी पुस्तक भारतीय साहित्य का इतिहास मे वेद विषयक विचार इस प्रकार व्यक्त करते हैं।

ससार के साहित्य क्षेत्र मे–न केवल प्राचीनतम भारतीय अपितु प्राचीनतम योरोपीय साहित्यक स्मरण चिन्ह के रूप मे वेदो का प्रमुख स्थान मिलना चाहिए। वैदिक साहित्य मे प्रवेश पाये विना कोई भी भारतीय सभ्यता तथा भारतीय आध्यात्मिक जीवन को नहीं समझ सकता है।

भारतीय आर्यों के प्राचीनतम धार्मिक विश्वास के निदर्शक के स्वरूप मे इन वैदिक गीतो का बडा भारी मूल्य है। साथ ही काव्य कला की दृष्टि से विश्व साहित्य में वेदो का प्रमुख स्थान मिलना आवश्यक है।

श्रीमती एनीबेसेन्ट का मत

ससार के पवित्र साहित्य मे वेदो का स्थान अपूर्व है ऊँचे शिखर पर रखे हुए दीप स्तम्भ के समान वे वस्तुत अद्वितीय हैं ओर उससे हम जान सकते हैं कि मानव किस ऊँचाई तक चढ सकता है आत्मा का प्रकाश इस पार्थिव देह से किस अश तक प्रकट हो सकता है और परमात्मा की वाणी मानव से कहा तक व्यक्त हो सकती है।

मेकरविंक ने भी गवेषणा सम्बन्धी विचार अतीत के गूढ रहस्यो पर यदि कोई दिव्य दृष्टि वाला पुरुष अपनी तीव्र दृष्टि डाल दे तो वेदो मे छिपे पडे अद्वितीय ज्ञान का आविष्कार हो सकता है।

भारतीय विद्वान रमेश चन्द्र दत्त–कामत करणी कथन है कि मानव जाति के साहित्य मे विरला ही ऐसा ग्रन्थ हो जो इतना मनोरजक और शिक्षा प्रदान करने मे अद्वितीय हो।

ऋग्वेद मे इससे अधिक दर्शाया है कि मानवी मन प्रकृति से परमात्मा तक आकर्षित है इसके अध्यय न से सभी प्राकृतिक दृष्य – सूर्य–आकाश–तूफान–विद्युत उसी एक महान् अज्ञान शक्ति के कार्य स्वरूप मात्र है। यदि ऋग्वेद की महत्ता मानव जाति के इतिहास की दृष्टि मे ऐसे हैं जिसकी महानता कई गुणा है। आर्य ससार मे यह प्राचीनतम ग्रन्थ है ससार के किसी भी समस्त आर्य जाति के धर्म एव कथानको मे कुछ अज्ञान तथा गूढ प्रतीत होने वाली बातो पर यह प्रकाश रेखा डालता है।

प्रोमिलर लिखते है वैदिक धर्म ऊपर से वहु देवता वादी प्रतीत होता है। किन्तु वास्तव मे देवताओ की इस कल्पना के अन्तस्तल मे एक ब्रह्म की भावना बडे प्रबल वेग से बह रही है। फौचर–ने कटाक्ष करते कहा है कि यूनानी मूर्ति पूजा प्रचार के लिये सब से अधिक दोषी है।

मीमान्सा–पुस्तक के कर्त्ता विद्वद्वर प पाण्डुरग बालकृष्ण ने लिखा है कि यह बात निर्विवाद है कि वेदो मे महाभारत तक कही मूर्ति पूजा का वर्णन नहीं है। महाभारत मीमान्सा पृ॰ ४४८ किसी देवता की धातु मयी या पाषाणमयी मूर्त्ति के पूजने का विधान नही है।

इन ऐतिहासिक तथ्यो की उपस्थिति मे निराकार ब्रह्म के अतिरिक्त मूर्ति पूजा के लिये वेदो और शास्त्रो मे प्रमाण देना केवल हठ और दुराग्रह के बजाय क्या हो सकता है।

पाठकों से विनम्र निवेदन

सार्वदेशिक के पाठक आर्यावर्त की वर्तमान परिस्थितियो से भली भाति परिचित है। धार्मिकता के नाम पर पाखण्ड गुरूडम का छलावा सामाजिकता के नाम पर कपट और राष्ट्रद्रोह बढता जा रहा है। ऐसा लग रहा है कि वैदिक राष्ट्र रूपी जगल मे चारो तरफ आग लगी है जिससे फल फूल और वनस्पतियो रूपी विचार धारा विनाश को प्राप्त होनी प्रारम्भ हो रही है। स्वार्थी राजनीति इस आग मे घी का काम कर रही है।

सार्वदेशिक साप्ताहिक के माध्यम से वैदिक धर्म की पवित्रता को बचाने के लिए हम सदैव सकल्प बद्ध हैं अत पाठको से हमारा विनम्र निवेदन है कि धार्मिक और राष्ट्र वादी विचारो को अधिकाधिक जनता तक पहुँचाने के लिए सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहक बनाने की ओर ध्यान दे।

अपना वार्षिक शुल्क सदैव समय पर भिजवाए तथा आम जनता को भी इसके लिए प्रेरित करे।

इस साप्ताहिक पत्रिका का वार्षिक शुल्क केवल ५० रुपये रखा गया है जो कि लागत से भी कम है। आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये है।

२६ मई १९९९ सार्वदेशिक साप्ताहिक ८

मानव जीवन की उत्कृष्टता

डॉ. श्रीगोपाल बाहेती विद्यावाचस्पति अजमेर

मानव जीवन परमात्मा की सर्वोत्तम कृति है। इस योनि मे जीव कर्म करने को स्वतत्र होता है। मनुष्य जीवन जब सर्वोत्तम कृति है तो अवश्य ही इस का हेतु भी विशेष होगा जिसके लिये वह इस धरा पर आया है। अगर मनुष्य जीवन पाकर भी हम पशुवत व्यवहार करे तो यह उस परमपिता परमात्मा की आज्ञा की अवहेलना है। जिसने हमे यह जीवन दिया है। लिखा है—

धर्मोऽहि तेषाम आधिकोविशेषो।
धर्मेणहीना पशुभिर्समाना।।

मनुष्य और पशु मे अन्तर बताया है कि मनुष्य धर्म ही विशेष रूप से अधिक है अन्यथा पशु और मनुष्य मे कोई अन्तर नहीं है। आहार निद्रा भय और मैथुन यह तो सामान्यत प्रशु और मनुष्य मे पाये जाते है भूख मनुष्य को भी लगती है और पशु को भी निद्रादेवी मनुष्य और पशु को समान रूप से अपनी गोदी मे विश्राम देती है और इसी प्रकार यह मैथुन है जो पशु और मनुष्य को समान रूप से सताता है। यहाँ पर विचारणीय है कि इन चार बातो मे (आहार निद्रा भय व मैथुन) पशु योनि मनुष्य को सर्वोत्तम कृति बताया है क्यों ? क्योकि धर्मोहि तेषाम अधिको विशेषो धर्माचरण केवल मनुष्य योनि में समव है और इसी के बल पर हम सामाजिक व धार्मिक जीवन जी पाते हैं।

धार्मिक आचरण यदि प्रत्येक मनुष्य का हो तो आप निश्चित मानिए समाज व राष्ट्र कई सकटो से उबर जाय तथा मानव मानव के खून का प्यास न रहे। धर्म आचरण की वस्तु है न कि पठन पाठन भाषण अथवा लेखन की । अगर हमारा आचरण सात्विक हो विचार सात्विक हो तो कोई कारण नहीं समाज मे कटुता का कोई कारण नहीं व्यक्ति के जीवन मे निराशा का।

प्रश्न उठता है धर्माचरण क्या है ? धर्म क्या है ? क्या मन्दिर मस्जिद गुरूद्वारे मे जाना धर्म है ? या धर्म और कोई चीज है ? महाराज मनु ने स्पष्ट जवाब दिया है—

धृति, क्षमा, दमोस्तेयम्, शौचमिन्द्रिय निग्रह।
धीर्विद्या सत्यम् अक्रोधो दशकम् धर्मलक्षण।।

उक्त श्लोक के अनुसार धर्म के दश लक्षण बताये गये हैं तथा इस श्लोक से स्पष्ट हो जाता है कि धर्म क्या है। मन्दिर मस्जिद गुरूद्वारे या आर्यसमाज भवन इबादत के स्थान हो सकते है धार्मिक शिक्षा के स्थान हो सकते है पर वहा जाना धर्म नहीं है। यदि आपके जीवन मे धैर्य है दया है क्षमा है अस्तेय पवित्रता है इन्द्रिय निग्रह है बुद्धि है सत्य है और अक्रोध है तो मानो आपका जीवन धार्मिक है और आपका जन्म लेना उपयोगी एव सफल है।

अब आप स्वय कल्पना कीजिए जब आपका जीवन क्षमा है तो झगडा किससे होगा और क्यो होगा ? आपके जीवन मे क्षमा भाव है तो क्रोध स्वत शात हो जायेगा और त्याग की प्रवृत्ति स्वत जाग जायेगी। जिस जीवन मे क्षमा होगी त्याग होगा अक्रोध होगा धैर्य अपने आप पैदा होगा और धैर्यवान मनुष्य अपने जीवन को किसी भी सकट से उबारने मे सक्षम होता है उसका जीवन शात होता है सुखमय होता है।

जब जीवन मे धैर्य है दया है क्षमा है अक्रोध है तो क्या कहने उस जीवन के। सत्य तो उस जीवन का आवश्यक अग हो जाता है और सत्याचरण के बाद जीवन धर्ममय हो जाता है। महाभारत और रामायण ये दो इस प्रकार के ग्रन्थ है जो सामान्य जनता के लिए सदा सदा प्ररणा के स्रोत रहेगे तथा दोनो ग्रन्थो मे अन्ततोगत्वा यही बताया है कि सत्य की ही जीत है सत्य ही विजयी है। इस प्रकार मनुष्य अगर धर्म की सही परिभाषा समझ कर अपने जीवन् को ढाल ले तो आप देखिये कि यह समाज कैसा निष्ठाप्रद समाज बनता है। फिर कहाँ स्थान रहेगा मदिर मस्जिद के नाम पर लडने का ? फिर तो हर व्यक्ति का हृदय ही उस परमात्मा का मदिर होगा और पूरा देश एकता के सूत्र मे बधकर विश्व शाति का सदेश देगा। यह तभी सम्भव है जब हम वेद द्वारा बताये मार्ग पर पुन चले और वेदानुकूल आचरण करे अन्यथा हम इसी प्रकार धर्म भाषा प्रान्त व जाति के नाम पर लडते रहेगे और इस भारत माँ को लहू लुहान करते रहेगे।

आर्यो ! आओ हम सकल्प ले कि हम वेदानुकूल समाज का निर्माण करेगे तथा मानव जीवन की श्रेष्ठता को सार्थक करेगे।

जीविते यस्य जीवन्ति
विप्रा मित्राणि बाधव।
सफलम् जीवितम तस्य
आत्मऽर्थे कोन जीवति ?

*0*0*0*0*0*

शिवाजी चौक स्कूल का ५ वीं का परीक्षाफल सत् प्रतिशत

श्री महर्षि दयानद आर्य शिक्षण समिति के प्रधान *श्री रामचन्द्रजी आर्य* एव सचिव *श्री कैलाशचद पालीवाल* ने बताया कि ५ वीं (पूर्व प्राथमिक) का परीक्षाफल सत प्रतिशत रहा। शिवाजी चौक मे ६१ बच्चे (छात्र–छात्राएँ) परीक्षा मे सम्मिलित हुए जिसमे ६८% प्रथम श्रेणी मे व १६ द्वितीय श्रेणी मे उत्तीर्ण हुए इस शाला मे *कुमारी ऋतु जाट* पिता श्री यादवेन्द्रसिह जाट को ८३% एव *कुमारी प्रिया अखिलेश लाड* ८२% प्राप्त हुए। इस सतोषजनक परीक्षाफल के लिए व्यवस्थापिका *श्रीमती नलीनी ताव* बधाई की पात्र हैं।

इसी प्रकार रमा कॉलोनी स्कूल मे ३५ छात्र/छात्राऐं परीक्षा मे सम्मिलित हुए। उसमे से २६ प्रथम श्रेणी मे व ५ द्वितीय श्रेणी मे। तृतीय श्रेणी मे २ को पूरक। इसी प्रकार गणेशगज स्कूल मे ५१ छात्र/छात्राऐं परीक्षा मे सम्मिलित हुए जिसमे ३५ प्रथम श्रेणी मे १२ द्वितीय श्रेणी में ३ पूरक एव १ अनुत्तीर्ण रहा। छात्र ज्ञान *बहादुर कृष्णकात सिह* ने ६० प्रतिशत प्राप्त किये। व्यवस्थापिका *श्रीमती प्रेमलता त्रिपाठी* बधाई की पात्र हैं।

इतिहास बदल रहा है।

अन्धकार ढल रहा है युग चक्र चल रहा है।
अब तो बदल ले मानव इतिहास बदल रहा है।।

अनुभव थे विश्व गुरू के परतन्त्रता भगाई।
आधी शती निकलते जो स्वतन्त्रता न आई।।
उसका सुखद प्रकाश अब आने को मचल रहा है
अब तो बदल ले मानव इतिहास बदल रहा है।।

सत लड रहा असत् तू किसके सग खडा है ?
सत्धर्म के प्रवर्तक तू निष्ठुर भी बडा है।
कैसी ये तब विवशता असत्–सत् को निगल रहा है।
अब तो बदल ले मानव इतिहास बदल रहा है।।

मुरझाकर गिर पडे थे वो फूल खिल रहे है।
जो बिछुड गये थे हमसे वे बन्धु मिल रहे है।।
मिलने मे जो था बाधक मत बन्धन जल रहा है।
अब तो बदल ले मानव इतिहास बदल रहा है।।

येरिक्तम आँधियाँ सी नव सोच दे रही है।
जगने की भावनाएँ अँगडाई ले रही है।।
वसुधैव–कुटुम्बकम् का ये नियम अटल रहा है।
अब तो बदल ले मानव इतिहास बदल रहा है।।

कि कर्त्तव्य क्यो खडा तू, तेरे पास क्या नहीं है ?
अगणित ऋषि–मुनियो का शुभ वेद पथ यहीं है।।
कल्याणकारी पथ पर तू क्यो नहीं चल रहा है।
अब तो बदल ले मानव इतिहास बदल रहा है।।

गुण-ग्राहक उठ खडा हो निर्णय की ये घडी।
तेरे अन्तरचक्षु मे क्या कोई किर–किरी पडी है।।
तेरे इस भ्रम के कारण जग तुझको छल रहा है।
अब तो बदल ले मानव इतिहास बदल रहा है।।

रामनिवास 'गुण ग्राहक'
पुरो. आर्य समाज श्री गगानगर (राज.)

स्वामी श्रद्धानन्द और दिल्ली की जामा मसजिद

डा. भवानीलाल भारतीय

आर्य जगत के १७ मार्च १६४६ के अक मे श्री कृष्णमोहन हिन्दू का एक लेख स्वामी दयानन्द आर्य समाज और गाधी जी शीर्षक से छपा है। इसमे आर्यमित्र के दयानन्द जन्म शताब्दी विशेषाक *(फाल्गुन १६८२ वि)* मे प्रकाशित आचार्य चतुरसेन शास्त्री के एक लेख दयानन्द और हम *(पृ ५५–५८)* की कुछ पक्तिया उद्धित की गई हैं जब मैंने यह लेख पढा तो पहले तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि आचार्य चतुरसेन जैसा व्यक्ति स्वामी श्रद्धानन्द के बारे मे कोई गलत बयानी कर सकता है किन्तु जब अपने पुस्तकालय मे विद्यमान आज से ६६ वर्ष पुर्व के उस विशेषाक के प्रासगिक स्थल को देखा तो पता लगा कि वस्तुत चतुरसेन जी ने वही कुछ लिखा है जिसे श्री कृष्णमोहन ने उत्कृत किया है। यह तो एक प्रसिद्ध बात है कि असहयोग के दिनो मे स्वामी श्रद्धानन्द दिल्ली के बेताज बादशाह थे और इस नगर के हिन्दू मुसलमान उन्हे अपना नेता मानते थे। स्वामीजी को दिल्ली के मुसलमानो ने जामा मसजिद मे आमत्रित किया। यह घरना ४ मार्च १६१६ की है। स्वामी श्रद्धानन्द के प्रामाणिक जीवनी लेखक प. सत्यदेव विद्यालकार ने अपनी पुस्तक स्वामी श्रद्धानन्द के पृष्ठ ४२१ पर ३३ का प्रथम सस्करण पर स्वामीजी के जामा मसजिद मे जाने का इस प्रकार वर्णन किया है–

ता. ४ मार्च को देहली मे एक और सुनहरी तथा मुख्य दृश्य उपस्थित हुआ। शाही जामा मसजिद के मिनार पर से एक आर्य हिन्दू सन्यासी ने

"त्व हि न पिता वसो त्व माता शतक्रतो बभूविथ। अधाते सुम्नमीमहे।"

के वेदमत्र द्वारा ईश्वर के माता और पिता के रूप का वर्णन किया और ओ३म शान्ति शान्ति के साथ अपना भाषण समाप्त किया। लगभग ऐसा ही वर्णन स्वामीजी के अन्य जीवन चत्रितो मे भी मिलता है।

स्वामी जी के प्रामाणिक अग्रेजी जीवनी लेखक डा. जे टी एफ जार्डन्स आस्ट्रेलिया की नेशनल यूनीवर्सिटी में ऐशियन अध्ययन के प्रोफेसर ने इस घटना का वर्णन इस प्रकार किया है किन्तु उन्होने तारीख ४ अप्रैल बताई है। वे लिखते हैं–*"On 4th Apr1l, prayers were to be offered at the Jama masjid for the victims Muslim dignitaries went to fetch the Swami brought him to the mosque and requested him to preach to the congregation from the pulpit It was an unbelievable and never to be repeated Scene A Hindu Sanyasi in his ochre robes preaching from the very pulpit of the greatest mosque in India " p 109* (आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस का १६८१ का सस्करण अर्थात् दिल्ली मे विदेशी दमन के शिकार मुसलमानो की सद्‌गति के लिये ४ अप्रैल को जामा मसजिद मे प्रार्थना का आयोजन किया गया। मुसलमानों के प्रतिष्ठित नेता स्वामीजी को आमत्रित करने के लिये गये और उन्हे मसजिद मे ले आये। उन्हें मसजिद की मुख्य वेदी (मिम्बर) से उपस्थित लोगो के समक्ष उपदेश देने के लिये कहा। यह एक अविश्वसनीय तथा भविष्य मे कभी न दोहराया जाने वाला दृश्य था। भारत की सबसे बडी मसजिद की प्रधान वेदी से भगवा वस्त्रधारी एक हिन्दु सन्यासी का उपदेश।

अब आचार्य चुतरसेन ने इस प्रसग को अपने लेख मे जिस रूप मे प्रस्तुत किया है उसे देखे–" सन्यासी ने जिस दिन दिल्ली की मसजिद मे खडे होकर हकीम साहेब (१) से वजू करने को पानी मागा था उसी दिन मेरी आखो मे खून उतर आया था। हकीम साहब को उचित था कि वे चुल्लू भर पानी (डूब मरने को) सन्यासी को दे देते। यह बात मेरे मने मे तब आई जब सन्यासी ने इमाम के नजदीक खडे होकर आधा कलमा पढा और अपनी हिन्दू जिह्वा को उन्ही की भाषा मे बदल कर कहा कि मै न हिन्दू हूँ न मुसलमान।" निश्चय ही चतुरसेन शास्त्री ने जामा मसजिद मे स्वामी जी के आगमन के प्रसग को नितान्त मनमाने पन से पेश किया है। हो सकता है कि स्वामीजी ने मसजिद की वेदी पर चढने के पहले हाथ मुह धोये हो। इसे चतुरसेन जी स्वामीजी का वजू करना कहते हैं। किसी भी धर्म स्थल मे प्रवेश करते समय शारीरिक शुद्धि को अच्छा माना गया है क्या हम आर्य गण यज्ञ की वेदी पर बैठते समय हाथ पाव नही धोते गुरूद्वारो मे प्रवेश करते समय तो पाद प्रक्षालन अनिवार्य ही है। स्वामीजी ने वेदी पर खडे होकर आधा कलमा पढा हो यह बात भी अकल्पनीय है। उन्होने वेद मत्र (एव हि न पिता) का उच्चारण तो किया ही था। आधे कल्मे मे परमात्मा के एक होने का उल्लेख है (ला इलाह इल्लिल्लाह) और यह तो आर्य समाज का भी अभीष्ट मत है। सन्यासी तो न हिन्दू होता है और न मुसलमान। वह मनुष्य होता है यदि यह बात भी प्रकारान्तर से स्वामीजी ने कही हो तो इसमे कुछ आपत्ति की बात कहा है। वस्तुत अपने पूर्वाग्रह से आचार्य चतुरसेन ने सारे प्रसग को ही एक आपत्तिजनक रग दे दिया है।

अब इस प्रसग का एक नया पहलू यह भी देखे। मेरे पास भाण्वा (भिवानी हरियाणा) निवासी श्री धर्मपाल शास्त्री का पत्र आया है। इसमे उन्होने दिल्ली की स्कूलो की ७ वी श्रेणी मे पढाई जाने वाली एक पुस्तक गाधी नैतिक शिक्षा *(लेखक व सग्रहकर्त्ता श्री जी_ राम प्रकाशक अशोक प्रकाशन A–२३ राधेपुरी न्यू कृष्ण नगर दिल्ली ५१)* के पृष्ठ पर छपी निम्न पक्ति की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट किया है–"स्वामी श्रद्धानन्द ने जामा मसजिद मे वहा के इमाम के अनुरोध पर जुमे शुक्रवार की नमाज तक पढ डाली थी।" यही पक्ति नवीं कक्षा की पुस्तक के पृष्ठ ४ पर है। आचार्य चतुरसेन ने जो ऊटपटाग लिखा उसे कितना विकृत बना कर इस गाधी नैतिक शिक्षा पुस्तक मे पेश किया गया है। क्या आर्य समाज ऐसे आपत्तिजनक प्रसगो पर अपना आक्रोश व्यक्त करेगा ?

लखोटिया पुरस्कार, १६६६ हेतु राजस्थानी साहित्यकार के नामांकन आमंत्रित

राजस्थानी साहित्य मे श्रेष्ठ योगदान हेतु २५,०००/रुपये के नकद लखोटिया पुरस्कार १६६६ की घोषणा जारी करते हुए "रामनिवास आशारानी लखोटिया ट्रष्ट" के अध्यक्ष श्री राम निवास लखोटिया ने प्रेस–विज्ञप्ति मे बताया है कि इस पुरस्कार हेतु कोई भी व्यक्ति या सस्था ट्रष्ट के कार्यालय (एस–२८८ ग्रेटर कैलाश–२ नई दिल्ली–११००४८) मे ३१ ७ ६६ तक आवेदन कर सकते हैं। नकद पुरस्कार तथा शॉल प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिन्ह पुरस्कार प्राप्तकर्ता फिक्की सभागार नई दिल्ली मे २८ ६ ६६ को आयोजित एक विशेष समारोह मे प्रदान किये जाएगे। केन्द्रीय सरकार ने इस पुरस्कार को आयकर अधिनियम १६६१ की धारा १०(१७–ए) के तहत पूर्णतया कर मुक्त घोषित किया है।

इस योजना के बारे मे विस्तृत जानकारी देते हुए श्री लखोटिया ने बताया कि यह पुरस्कार प्रति वर्ष राजस्थानी साहित्य अथवा कला मे सर्वश्रेष्ठ योगदान करने वाले लखोटिया (पुरूष अथवा महिला) को प्रदान किया जाता है। ऐसे व्यक्ति के बारे मे निर्णय करते समय उसके पिछले लगभग १० वर्षों के ऐसे योगदान विशेषकर धार्मिक आध्यात्मिक बेहतर जीवन चरित्र निर्माण एव राजस्थानी गौरव सबधी साहित्य या कला की सेवा आदि को ध्यान मे रखा जाता है। एक व्यक्ति को उसके जीवन मे एक से अधिक बार यह पुरस्कार नहीं दिया जाता। यह पुरस्कार कुछ विशेष परिस्थितियो मे मरणोपरात भी प्रदान किया जा सकेगा। वर्ष १६६४ का लखोटिया पुरस्कार" बीकानेर के वरिष्ठ साहित्य मनिषी डॉ. मनोहर शर्मा को तथा वर्ष १६६५ का यह पुरस्कार जोधपुर के प्रो. जहूर खॉ मेहर को प्रदान किया गया था।

आशा है इस अभिनव योजना से राजस्थानी साहित्यकारो को अपनी कृतियो को समाज के सामने रखने की प्रेरणा मिलेगी।

राम निवास आशारानी
लखोटिया ट्रष्ट
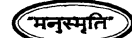
मृत्यु और आत्मघात

श्री पूर्णचन्द उपाध्याय

सम्प्रति समाचार पत्रो के पढने से पता चलता है कि जरा जरा से कारणो पर मनुष्य खुदकुशी करने के लिए अथवा अपनी जान देने के लिए तैयार हो जाते है प्रेम मे निराशा होने पर कारोबार म घाटा होने पर और परीक्षा म फेल होने पर अनेक नवयुवक मरने के लिए उद्यत हो जाते है। साधारणतया यह देखा जाता है कि जान सबसे प्यारी है परन्तु जब जान दु खमय हो जाती है तो मोत जिससे सदैव डर लगता है जान से भी प्यारी हो जाती है। आत्मघात की प्रवृत्ति मनोविज्ञान की दृष्टि से एक पहेली है। इसके अन्दर एक बडा भ्रम काम करता पाया जाता है यदि मनुष्य को यह निश्चित ज्ञान हो कि वह अपने कर्मो के फल से बच नहीं सकता उनको वे फल अवश्य भोगने होगे इस जन्म मे भोगे चाहे अगले जन्म म तो वह कभी आत्मघात करने की भूल नही कर सकता। जिन जातियो और देशो मे आवागमन के सिद्धान्त पर विश्वास है जो जीव को अमर समझते है और इस शरीर को जीवात्मा के लिए केवल कर्म करने का साधन मानते है वे कभी खुदकुशी करने का विचार भी नही कर सकते। पश्चिमी देशो मे भारतवष की अपेक्षा आत्मघात की प्रथा बहुत प्रचलित है उन देशो मे मनुष्य बहुत कुछ पढ-लिखे होने पर भी न आत्मा के स्वभाव को समझते है और न मृत्यु के रहस्य को इसीलिए वे अपने आपको मार डालने को अति शीघ्र उतावले हो जाते है इसी प्रकार की मनोवृत्ति का परिणाम पशुओ को अत्यन्त रोगी या व्यथित होने की दशा मे मार डालने की प्रथा है। अग्रेजो मे यह बहुधा देखा गया है कि यदि उनका प्यारा घोडा या कुत्ता रोग से बेचैन या व्याकुल हो तो वे उस पर दया करके उसको जहर देकर उसका जीवन समाप्त कर देते है वे उसको अपनी दृष्टि मे कष्ट से छुडा देते है। बाह्य दृष्टि से वह ठीक ही प्रतीत होता है परन्तु इसकी तह मे भी वही भूल है जो आत्मघात की वृत्ति मे है। मेरी एक समय एक यूरोपीयन अफसर से जो इण्डियन सिविल सर्विस मे थे और कुछ समय के लिए जेल के बडे अफसर भी रहे बातचीत हुई। वह अपनी जाति की दया की और पशुओ से प्रेम की प्रशसा करते हुए बोले कि भयकर रोग की दशा म पशु को पडपने से बचाने के लिए मार देना ही अच्छा है मैने उनसे बडी सरलता से प्रश्न किया कि यदि कोई मनुष्य सरसाम की दशा मे हो या रोग से अति बेचैन हो और उस पर दया करके कोई उसे मार दे तो क्या आप उसको अपराधी नहीं ठहरायेगे ? वह इस प्रश्न को सुनकर चुप हो गये।

मनुष्य दूसरे मनुष्य को अपना समझता है इसीलिए उसे नही मारता मनुष्यो मे और पशुओ मे श्रृखला व पूवजन्म का सम्बन्ध न मानने से मनुष्य पशुओ को आत्मवत नही दखते और इसलिए उसके साथ मनमाना व्यवहार करने को तैयार हो जाते है यदि आज ससार म मृत्यु की उपयोगिता का और मृत्यु के सच्चे स्वरूप का ज्ञान हो जाए तो न आत्मघात की प्रथा प्रचलित रहे और न पशुओ पर झूठी दया दिखाने की

जीवात्मा और शरीर का सम्बन्ध

हम इस सम्बन्ध का पीछे कई प्रकरणो के सिलसिले मे वणनकर चुके है। यहा केवल यह लिखना पर्याप्त है कि शरीर जीवात्मा के लिए रहने को मकान के समान है प्राकृतिक होने से यह जीण-शीण होता रहता है और एक नियत अवधि पर आकर जीवात्मा के लिए त्याज्य हो जाता है। इसे पुराने घर की तरह जीवात्मा खाली कर देता है पुराने कपडे की तरह उतारकर फेक देता है। प्राकृतिक होने से शरीर मारा जा सकता है गलाया और जलाया जा सकता है परन्तु आत्मा अनादि अविनाशी और अमर है। यदि मनुष्य को अपना और शरीर का सम्बन्ध ठीक-ठीक ज्ञात हो तो वह बहुत बडे दु ख से बच सकता है और जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त हो सकता है। उसको शरीर छोडने से इतनी भी तकलीफ नही होगी जितनी कि साप को केचुली उतार देने मे या पके फल के पेड से गिर जाने मे सम्भव है।

मृत्यु और क्रियात्मक जीवन

मृत्यु का स्वरूप समझ लेने से और इस विश्वास से कि मरने के पश्चात जीवात्मा को पुन-पुन कर्म करने का अवसर मिलेगा मनुष्य के सदाचार और क्रियात्मक जीवन पर बडा प्रभाव पडता है

(१)मृत्यु का स्वरूप समझ लेने से मोत का डर जाता रहता है और जिनकोयह विश्वास है कि जीव अमर है और यह शरीर पुराने मकान या कपडे की भाति छोड देने योग्य है वे मरने से न डरते हुए बडे से बडे बहादुरी के काम करने के लिए तैयार रहते है। कायरता उनके पास तक नही आती। प्राचीन इतिहास इस बात का साक्षी है कि जो जातिया जीवात्मा के अमर होने मे और आमागमन के सिद्धान्त मे विश्वास रखती थी यह बहुत वीर थी। *Seasor says about Gaul They were brave because they were not afraid of death* ' सीजर ने गौल जाति के विषय मे लिखा है कि वह जाति इस कारण से वीर थी क्योकि वह मौत से नही डरती थी।

(२) हमे मृत्यु के स्वरूप का ज्ञान आशावादी बनाता है।

(३) हमे कर्म करने मे सचेत और सदाचार मे तत्पर बनाता है क्योकि कर्मफल भोगने का विचार हमारे सामने रहता है।

(४) हमे मृत्यु का स्वरूप सच्चे साम्यवाद की शिक्षा दता है। मरने मे राजा रक गरीब अमीर सब बराबर है।

(५) मृत्यु से हमारा प्रणिमात्र से सम्बन्ध निश्चित हो जाता है। यह धारणा दृढ हो जाती है कि हमारी-सी ही आत्मा सारे प्राणी-जगत के शरीरो मे निवास करती है। इस प्रकार सार्वजनिक प्रेम का विस्तार इससे होता है। आत्मवत सवभूतेषु वाली बात चरिताथ होती है।

(६) मृत्यु का स्वरूप समझ लेने से हमे इस ससार के बडे स बडे दु ख भी भयभीत नही कर सकते।

(७) मृत्यु का स्वरूप जान लेने से हमारे अन्दर से हिसा के भाव निकल जाते है

(८) मृत्यु की पहेली सुलझ जाने से आत्मघात की पृथा जाती रहती है।

गर्मी और लू से बचने के उपाय

गर्म लू जान ले सकती है विशेषतया वृद्ध अवस्था मे। लू व गर्म मौसम आपके दिल पर बोझ डाल सकते है हीट स्ट्रोक हो सकती है

निम्न बातो पर विशेष ध्यान दे -

१ जिस को दिल का दोरा पडता हो व हाई ब्लड-प्रेशर हो और दिल कमजोर व डायबिटिज व मोटापापन हो उसे लू व गर्मी से बचना चाहिए। शराब या बियर पीना बहुत ही हानिकारक है शराब लीवर को खराब करती है। यह मिथ्या है कि बियर गर्मी के मौसम मे लाभ देती है।

२ यदि आप हाई ब्लड-परेशर व कोई डाक्टर की दवा खाते हैं-तो गर्म लू घातक बन सकती है। उस दवाइ के विशेष कर साईड एवेन्ट व परिणाम-डाक्टर से पूछे।

३ यदि लू तग करे तो उसी समय उससे बचो।

४ यदि आप मे कम शक्ति हो व भूख न लगे-लू के कारण। इसका मतलब है कि गर्मी से बचो।

५ डाक्टर को कब बुलाओ-जब यह चिन्ह लगे
- -सिर मे चक्कर ।
- -बहुत कमजोरी।
- -चमडी पर पसीना न आये।
- -तेज दिल धडकन।
- -सास लेने मे दुविधा।
- -उल्टी व दस्त आने लगे।
- -जोर से सिर दद
- -छाती मे दर्द
- -पेट मे दर्द व पेचस

ऊपरी बातो पर ध्यान रखो-विशषतया वृद्धो व बच्चो को लू स बचाओ

उपाय
- -ठडे पानी से कई बार स्नान करो।
- -गर्मी से सिर व आखो को धूप से बचाओ।
- -खुले २ कपडे पहनो
- -कम से कम ८ व १० गिलास पानी पीओ

शान्त मय व बुद्धिमत्ता से गर्म मौसम से बचो।

साराश यह कि काली चाय व काफी का उपयोग कम करो। फलो का रस व पानी का उपयोग करो। स्वस्थ रहो।

(डा तिलक जी खन्ना-अमेरिका)

भूदेव साहित्याचार्य, महोपदेशक

आर्यसमाज आनन्द विहार दिल्ली–९२

'इह सहस्र दक्षिणोऽपि पूषा नवोदतु

यहा हजारो दक्षिणा पर भी पूषा बिराजमान हो। पूषा अथात पुरोहित अन्न उत्पन्न करनेवाला किसान विद्वान कवि प्रेरक। यहा पुरोहित ! यह सूक्ति वेदमत्र का एक भाग है। पूरे मत्र को ऋषि दयाननद जी महाराज ने सस्कार–विधि मे विवाह प्रकरण मे प्रयोग किया है। दूल्हा–दुल्हन अर्थात यजमान वदी पर उपस्थित है और यह मत्र बोल रहे है। कह रहे है हमारे इस यज्ञ मे पुरोहित चिन्ता न करे वे जो चाहे हम उसके लिये तैयार है परन्तु हमारा यह यज्ञ ठीक से सम्पन्न होना चाहिये। कही एसा न हो कि उनके मन मे यह भाव पैदा हो जाय कि यजमान से दक्षिणा तो क्या मजदूरी तक मिलना भी मुश्किल हो जायेगा। क्यो कि इस भाव के उदय हाते ही उनके मने मे यह जो या हम करने जा रहे है हमारे तमाम सम्बन्धियो रिश्तदारो मित्रो आदि के होते हुए भी पूर्ण न हो सकेगा हमारे भरपूर घी–सामग्री प्रसाद भोजन और अन्य चीजे जुटाने पर भी अधूरा ही रहा जायेगा। हमारा तो टैन्ट–शामियाना बैण्ड–बाजा आदि बेकार चला जायेगा। क्यो कि ऐसा होने ही विधिहीनता हो जायेगी। उस समय तो मेरी या मेर द्वारा जुटाये गये अन्य विद्वानो की योग्यता कुछ न कर सकेगी यज्ञ की यह स्थिति तो ठीक नही

विधिहीनस्य यज्ञस्य सद्य कर्ता विनश्यति।
तद्यथा पूर्व मे कुतुरेष समात्यते।।

नही नही इस स्थिति मे तो मरी कुशलता नही है। मरा तो यह यज्ञ ऐसे ही पारायण होना चाहिये जैसे कि हमारे परिवार मे इसस पहले के यज्ञ सम्पन्न होते रहे है।

यजमान का यह भय गलत नही है यह कल्पना भी मिथ्या नही है उसने यज्ञ के पूव प्रकरणो मे देखा है। उसने सुना है नचिकेता के पिता अपने पुरोहितो को बूढी–टढी गाये दे रहे थे। उन्ही बूढी–टेढी गायो ने नचिकेता मे उद्वेलना पैदा की थी और उसने पिता से कहा कस्मै मा दास्यतीति। पिता उत्तेजित भी हुए क्रोधित भी हुए मगर उसने चिन्ता नही की थी। पिता ने कह दिया यम को। तो चले गये यम के पास। तीन दिन तक यम के द्वार भूखे रहे। यम ने पहली बार पूछा भी क्या वरदान मागते हो तो उसने कहा अपने लिये बाद मे पहले तो मेरे पिता ने बूढी गाये दान दे डाली है। यह उनके महानाश का काम हा गया है। अत उनका उद्धार करो। उन्हे समझाओ कि तुम्हारी बूढी गायो से तुम्हारे पुरोहित तृप्त न हो सकेगे। वे काम तुम्हारा करते है। चौबीस घटो को अपना पूरा समय तुम्हारे काम मे लगाते है फिर व खाने कहा जायेगे ? वे ब्राह्मण है। भूखे मर जायेगे काम वैस ही करते रहेगे। उफ तक न करेगे। परन्तु भूख से उनकी ओर उनके बच्चो की आत्मा जब विलविलायेगी और उसमे जो आह या वाह कुछ भी निकलगी वह बहुत ही भयानक होगी। इसलिये यम यदि आप मुझ पर प्रसन्न है तो सबसे पहले मेरा यह काम करो यम ने कहा नचिकेता ! एवमस्तु। तू ठीक कहता है। मै तेरे पिता को समझाता हू। उनका यह काम असद् है। यही तो अश्रद्धा है।

ओह! अश्रद्धा या हुत दत्त तपस्तप्त कृत यत।
असदित्युच्यते पार्थ ! न तत्प्रेत्य नो इह।।

अश्रद्धा स तो जो भी काम किया जाता है चाहे यज्ञ हो चाहे दान हो चाहे तप हो और चाहे किसी भी प्रकार का काम कैसा भी क्यो न हो असद् होता है और असद् का फल किसी भी काम का नही होता न इस लोक के लिये और न उस ही लोक के लिये। वह तो उल्टा हानि कारक होता है।

असद अर्थात झूठ अवज्ञा लीला। यजमान सोचता है अवज्ञया न दाव्य कस्यचिल्लीलयापि वा। अवज्ञा कृत हन्यात दातार नात्र सशय।। किसी को कभी अवज्ञा स कुछ नही दना चाहिये अवज्ञा अर्थात अवहेलना दूसरे को तुच्छ समझना अपमान करने की पूर्वस्थिति। इसी प्रकार किसी को लीला–पूर्वक भी नही देना चाहिये लीला अर्थात मजाक ठिठोली मागने पर कई बार मे बीच–बीच कर थोडा–थाडा देना जो इस प्रकार देता है वह ठीक नही होता है ऐसा करके जा देता है उसके यहा शर्मदार और अच्छा आदमी आगे फिर कभी कदम नही रखता है यह स्थिति तो देनेवाले के लिये विनाशकारिणी है। इसलिये यजमान पहले से कहता है कि मरे पुरोहित मेरा काम विधिवत सम्पन्न कराय मै यज्ञ को अपनी उन्नति के लिये कर रहा हू न कि किसी शोर बाजी और दिखावे के लिये मुझे इस यज्ञ की पवित्र अग्नि से अपने पावन जीवन–दीप को जलाना है और मै जानता हू जीवन–दीप सिफ किसी जीवन–दीप से ही प्रज्वलित हो सकता है। इस यज्ञ मे यो तो बहुत लोग है परन्तु यज्ञ के मुखिया तो सिर्फ आप ही है। इसलिये मैं केवल आपके जीवन–दीप से अपना जीवन–दीप जलाकर अपना मार्ग प्रशस्त कर सकता हू। मुझे ज्ञात है कि मै किसी ऐसे दीप से अपनादीप जलाने मे असमर्थ रहुगा जिसमे पहले ही तेल और बाती चुक चुके है। इसलिये मै घोषणा करता हू कि मै सहस्रो दक्षिणा पर भी तैयार हू मेरे पुरोहित मेरे यहा विराजमान हो। मै सच कहता हू कि कम देने से अश्रद्धा उत्पन्न होगी और अश्रद्धा असद् उत्पन्न करेगी असद् स ता मै पहले ही आक्रात हू मुझे तो उससे बचना है। जिस दीप से मेरा दीप जले पहले मै अपने उस पूज्य पुरोहित के जीवन दीप को जला लू।

'तानीन्द्रि याण्यविकलानि तदेव नाम,
सा बुद्धिरप्रतिहता वचन तदेव।
अर्थोष्मणा विरहित पुरुष स एव,
त्वन्यक्षणेन भवतीति विचित्रमेतत्।।

इन्द्रिया वही हो अविफल अप्रतिहत बुद्धि भी हो उसी प्रकार से पूर्ववत बातो (मैटर) मे कोई कमी न हो। इसके बावजूद भी यदि धन की ऊष्मा बुझी तो समझ लीजिये कि आदमी पलक झपकते ही कुछ का कुछ हा जाता है। लोग अभी साहब जी बावूजी बाबूसाहिब मालिक सर कह रहे है और अभी पता लगा कि जेब मे कुछ नही रहा तो अगले ही क्षण यही लोग तू तडाक पर उतर आये।

यस्यस्ति वित्त स नर
कुलीन स पण्डित सच माननीय
स एव वक्ता स च तत्वदर्शी
सर्वेगुणा काचनना श्रयन्ति

जिसके पास धन है वही कुलीन पडित माननीय वक्ता तत्वदर्शी सबकुछ होता है ससार के चक्र का रूप ही एसा है कि सारे गुण धन मे निवास करते है। पट इच पाइया रोटिया सारिया गल्ला खोटिया।

जब यह जीवन दीप जल जायेगा तो मेरा यह यज्ञ भी सफल होकर मेरे जीवन का दीप भी जल जायगा।

नारी

१ पति के लिए चरित्र सतान के लिए ममता समाज के लिए शील विश्व के लिए दया और जीव मात्र के लिए करूणा सजोने वाली महाकृति का नाम ही नारी है

२ कच्चे रास्ते से उडकर भी इतनी धूल अपने कपडो पर नही पडती जितने इल्जाम औरत की जिन्दगी पर लगते है धूल तो पानी से धाइ जा सकती है पर ये इल्जाम किसी भी पानी से नही धोए जा सकते

३ औरत जगत की एक पवित्र स्वर्गीय ज्योति है त्याग उसका स्वभाव दान उसका धर्म सहनशीलता उसका व्रत और प्रेम ही उसका जीवन है।

४ औरत तो एक इट के समान होती है जिस एक बार जिस दीवार पर लगा दिया जाता है तो जिन्दगी भर वह उसी दीवार मे लगी रहती है।

५ नारी एक तिहाइ जिन्दगी अपने लिए जीती है शष दूसरो के लिए। पुरूष सपूण जिन्दगी अपने स्वार्थ के लिए व्यतीत करता हे फिर भी दोष औरत को देता है।

६ दुनिया नारी की किताब है। जो भी ज्ञान वह प्राप्त करती है पढकर उतना नही करती जितना देख कर करती है।

७ खूबसूरती – नारी को घमडी बनाती है नेकी – अति प्रशसा करवाती है नम्रता – भगवान दर्शाती है।

८ नारी क दिल मे प्यार का ऐसा गहरा स्रोत है जो कभी भी खत्म नही होता

९ औरत त्याग की मूर्ति है शर्म ही इसका आभूषण है।

१० नारी मा है बेटी है बहन है।"

पुंसवन संस्कार का लक्ष्य

श्रद्धा चोहान एम ए पी एच डी

हिन्दुओ के षोडश सस्कारो मे एक पुसवन सस्कार भी है सर्वसाधारण की यह धारणा है कि गर्भाधान के पश्चात गर्भस्थ भ्रूण को पुत्र रूप मे उत्पन्न करने के उद्देश्य से यह सस्कार किया जाता है परन्तु यह मिथ्या धारणा है। पुसवन का अर्थ (पु+सवन) पुरूष का प्रसव तो अवश्य है लेकिन पुरूष का अभिप्राय यहा सम्पूर्ण मानव व्यक्तित्व से है न कि केवल नर देह से। इसी तरह जब व्याकरण मे प्रथम मध्यम तथा उत्तम पुरूष की बात करते है तो पुरूष शब्द केवल नर का ही नहीं अपितु स्त्री का भी बोधक होता है। चाहे नारी देह हो वह नर देह वेद की भाषा म उस पुर कहा गया है। इस पुर मे निवास करने के कारण आत्मा को पुरूष कहा जाता है। वह नर और नारी के लिंग भेद से परे है अतः वेद का पुरूष सामान्यत मानव–मात्र के व्यक्तित्व का बोधक है। जब इस पुरूष (आत्मा) की अभिव्यक्ति हमारे आचरण मे होती है। यही यज्ञ रूपी पुरूष है। इस यज्ञपुरूष के विकास के लिए ही पुसवन सस्कार किया जाता है।

इस पुरूष का निर्माण तथा उसकी अभिव्यक्ति यज्ञ रूप कैसे होती है ? इस प्रश्न के सामाधान के लिए यह जान लेना आवश्यक है कि मानव–व्यक्तित्व दो प्रकार के तत्त्वो से निर्मित है। एक तत्त्व हमारी आन्तरिक वृत्तियो का रूप ग्रहण करता है और दूसरा हमारे बाह्य कर्म (आचरण) का। इन्ही दोनो के सयोग से मानव की अनेक इच्छाओ विचारो और क्रियाओ का जन्म होता है। जन्म लेने के कारण ये सब जा (जन्मी हुई) कहलाती है तथा इनके आधार बने हुए मानव–व्यक्तित्व को जन (जन्मा हुआ) कहा जाता है। परन्तु श्रेष्ठतम होने पर जा प्रजा (प्रकष्ट सन्ताने) कहलाती है और उसका पालक होने से जीवात्मा का प्रजापति कहा जाता है। इन प्रजाओ के आधार पर बना आचरण श्रेष्ठतम कर्म अथवा यज्ञ कहलाता है। यही यज्ञपुरूष अथवा पुमान है जिसका सवन (प्रसव) पुसवन है। इस प्रकार पुसवन सस्कार जिस पुमान (पुरूष) को विकसित करने के लिए होता है वह यही यज्ञपुरूष अथवा श्रेष्ठतम आचरण है जो कि नर और नारी दोनो तरह के भ्रूण (गर्भ) के लिए समान रूप से अभिप्रेत है। यही आर्यत्व है जिसकी चिन्ता हमारे पूर्वजो को गर्भाधान के समय से हो जाती थी और अन्त्येष्टि तक रहती थी।

पुसवन नाम से इसका उल्लेख सर्वप्रथम अथर्ववेद के एक सूक्त (६ ११ मे हुआ है। इस सूक्त मे तीन मन्त्र है जिन्हे पुसवन सस्कार के समय भी पढा जाता है। इस सूक्त का ऋषि प्रजापति है। वह श्रेष्ठ आचरण रूपी यज्ञपुरूष की उत्पत्ति के लिए उपयुक्त बीज अथवा रेतस की खोज करता है। यही रेतस इस सूक्त की देवता है अथात चर्चा का विषय है। जब इस रेतस का आन्तरिक वृत्तिया रूपी स्त्रिया मे सिंचन किया जाता है। तो वे सभी माताए बनकर उस बीज को अकुरित पल्लवित तथा पुष्पित करती है। तभी श्रेष्ठ आचरण रूपी यज्ञपुरूष का जन्म होता है।

चूकि यह बीज तो एक तरह के पुत्र का उत्पन्न अर्थात ज्ञान है। यह ज्ञान वस्तुत आत्म–बोध है यह बतलाता है कि मैं देह नही हू, शरीर ही आत्मा हू। इस प्रकार अपने अज्ञान आत्म ज्ञान ही वह बोध या वेदन है जिसे बीज कहा गया है अज्ञात से ज्ञात होना अजन्मा के जन्म लेने के समान है। अत इस बोध को पुत्र ज्ञान या पुत्रस्य वदनम कहा गया है।

आत्मज्ञान रूपी बीज के मिलने के पश्चात उसे मानव की बुद्धि रूपी स्त्री म रखना होगा क्योकि इसी का रूपान्तर मानव की वे आन्तरिक वृत्तिया है जो इस देह मे उक्त यज्ञ रूपी पुरूष को जन्म देती हैं अत बुद्धि म आत्मज्ञान की बीजोरोपण होने से वह उन सभी वृत्तियो मे प्रवेश करेगा और तब ही हमारी वृत्तियो श्रेष्ठ आचरण रूपी पुरूष के प्रसव मे लग जायेगी।

लेकिन आश्चर्य इस बात का है कि श्रेष्ठ आचरण रूपी यज्ञपुरूष का यहा (इह) अर्थात मानव मे स्थूल शरीर के कार्य–कलापो मे धारण किया जाता है किन्तु गर्भधारण से लेकर प्रसव करने वाली स्त्रिया (वृत्तिया) अन्यत्र रहती हैं। अर्थवेद मे इसी को इस प्रकार कहा गया हे कि स्त्रैषूयम (स्त्रिया द्वारा प्रसव) को तो अन्यत्र और पुमान (यज्ञपुरूष) को यहा धारण किया जाता है।

यह सारा खेल उक्त प्रजापति का है। इसमे उसे सहयोग मिलता है उसकी दो पत्नियो से । एक का नाम अनुमति है और दूसरी का सिनीवाली। सिनीवाली मानव के कर्तृत्व का प्रतीक है। इसलिए उसे सुन्दर हाथो वाली और सुन्दर अगुलियो वाली कहा गया है। अनुमति उसकी आत्मानुकूल भावना की प्रतीक है जो कि कल्याणकारी तथा शान्ति देने वाली। पहली सक्रियता की मूर्ति है तो दूसरी शान्ति की। इन्ही दोनो के समन्वित प्रयास से आचरण रूपी पुरूष का प्रादुर्भाव सम्भव है।

अनुमति और सिनीवाली क्रमश शान्ति और क्रिया के दो वितान खडे करती हे। इनमे से प्रथम को वेद मे शमी वृक्ष और दूसरे को अश्वत्थ वृक्ष कहा गया है। पहले शान्ति की भावना है और दूसरे मे सर्वत्र भटकने वाले मन रूपी अश्व की क्रियाशीलता। यह मन रूपी अश्वत्थ वृक्ष जब शमी वृक्ष पर आरूढ होता है तब इन दोनो के समन्वय से पुसुवन अर्थात श्रेष्ठ आचरण रूपी यज्ञपुरूष का जन्म होता है। यही पुसवन सस्कार का लक्ष्य है। इसी के द्वारा नर और नारी दोनो म श्रेष्ठ आचरण रूपी या का सम्पादन सम्भव है जो आज मानवता की सबसे बडी माग है इसके लिए शमी पर अश्वत्थ का आरोहण आवश्यक है। ये दोनो ही वे पुण्यजन्मा तत्त्व है जो मनुष्य के आचरण को श्रेष्ठतम कर्म मे बदलने के कारण यज्ञवचर कहे जाते है। पुसवन सस्कार दम्पति (पति–पत्नी) को निर्दिष्ट करता है कि गर्भ मे स्थित बालक या बालिका को श्रेष्ठतम आचरण से युक्त आय बनाने के लिए अभी से प्रयत्न करना है। वे दोनो जब अपने अश्वत्थ (क्रियाकलाप) को शमी (चित्तवृत्तियो की शान्ति) पर आरूढ रक्खेगे तभी शिशु मे आर्यत्व के बीज पडेगे अन्यथा नही।

कुर्बानी कुरान में कहीं नहीं

प० महेन्द्र पाल आर्य
शम्भु दयाल सन्यास आश्रम
दयानन्द नगर गाजियाबाद

भारत प्रारम्भ से ही विश्व का धर्म गुरू रहा है यानी एक मात्र धर्म प्रधान देश। इस देश मे भारतीयो को छोड विभिन्न देश वासी भी रहते है। यहा तक कि भारत धर्म प्रधान होने पर भी विद्यार्थीयो को भी अपनी गोद मे जगह दिया।

सृष्टि के आदि से भारत का धर्म—सत्य सनातन वेदिक धर्म का प्रचार प्रसार रहा किन्तु महाभारत काल के बाद भारत का पतन हुआ—समाज के जिम्मेदार लोग अपने कर्तव्यो को छोडा लोभ के वशीभूत या आलस्य व प्रमादी होते गये।

विधर्मी के हाथो बिकने लगे जैसा—अल्लोपनिषद—वेद व पुराण मे हजरत मुहम्मद आदि—आदि ग्रन्था को वदिक धर्माबलम्वीआ ने लिखा।

जब विधर्मों को अवम्सर मिला तो पूरे भारत पर अपना आधिपत्य कायम कर लिया साथ ही अपनी ताकत से वैदिक धर्मिओ को अपनो मे मिलाया इतिहास साक्षी है। सोमनाथ का मन्दिर तोडना—काशी विश्वनाथ का मन्दिर तोडना — राममन्दिर को बाबरी मस्जिद बनाना—और यहा के लोग वैदिक धर्म न छाडने पर—मौत के घाट उतार देना।

गजनी न सोमनाथ के पुजारिओ को बीर हकीकत राय—बन्दा वैरागी—फतहसिंह—जोरावर सिंह आदि को दिवारा मे चुनवा दिया। स्वामी श्रद्धानन्द व पण्डित लेखराम आदि की छुरि से हत्या कर दी पूरे भारत को अपने अधीन कर अपनी रीति रीवाजो को चलाया। उनके देखा देखी मे भारतीओ पर भी प्रभाव पडा क्यो कि यह नकल करन मे सब स आगे है।

मुसलमानो ने शबबरात—मनाया—तो इन्होने दीवाली मनाई—पटाखा छाडा। उन्होने ईद मनाया तो यह लोग दुर्गा पूजा या गणेश पूजा मनाथा। मुसलमानो न कुर्बानी दिया तो इन्होने बलि चढाया—मुसलमानो ने कब्र पुजा तो यहा मूर्ती पूजे।

मुसलमानो ने चॉद का टुकडा करना माना तो यहा समुचा—सूर्य को निगल जाना माना। मुसलमानो ने साप का नाखुन बारा कास का माना तो यहा कुम्भकरण को पूरे चौबीस कोस का माना मुसलमानो ने बडा पहलवान को हजरत अलि कहा तो यहा पर बजरग बली कहा। किसी ने हजरत ईसा को बिना बाप का माना तो यहा पर भी कुन्ती को बिना पुरूषो से मिले गर्भवती माना।

मुस्लमानो ने बडे पीर साहब को मॉ के पेट स १८ सिपारा कुरान का कपासत माना तो यहा अभिमन्यु चक्रव्युह मॉ के पेट से तोडना सिखा माना।

मुसलमानो ने हज करते हुये अपन को पाप से मुक्त माना तो यहा गगा स्नान कर पाप को धोया।

बडी बिडम्बना है किस से क्या कहा जाये ? पर सत्य क्या है उस विचारे।

अन्तिम मे लिखा हजकर पाप से मुक्त होने की बात तो अभी अवसर मिला है। हज यात्रीओ को जो दुनिया की हर कोने से लोग जा रहे हैं मक्का और मदीना म अगले अप्रैल २८ को हज का दिन है। ६६ मे।

हज इसलाम का पाचवा सीढी है अथात इसलाम की बुनियाद (भित्त) सख्या पाच है। हज करने जो लोग जाते है वहा पर बहुत सारा काम करना पडता है जैसा मुण्डन करना वस्त्र बदलना सभी सफेद वस्त्र हो एकवाटी मे दूसरा ओढने के लिये । हमारे यहा ब्रह्मचारी लाग पहनते है। शैतान को सामने समझ कर ककर मारना सफा व मरवा पहाडो मे सात बार दौड लगाकर जम जम के पानी उठाना पीना रवज (मुकेमजार) का परिक्रमा करना। सडो अवसद (पत्थर) का चूमना तथा कुर्वानी देना दुम्बेका आदि।

यह घटना उस समय की है हजरात इब्राहीम नाम से एक पैगम्बर हुये ईसाईआ ने अब्रहम कहा। उनकी दो पत्नी थी। एक सारा दूसरी हाजरा सारा बडी होने हेतु ईर्ष्या करती थी। छाटी से बडी क पास एक पुत्र था इसहाक छोटी के यहा एक पुत्र हुआ जिसका नाम इसर्माइल बडी पत्नी के कहने पर इब्राहीम ने छोटी पत्नी हाजराव पुत्र इसर्माइल को जगल मे भेज दिया। थोडा बहुत खाने का समान तो था पर पीन को पानी नही। बीबी हाजरा मरिचिका को पानी समझ पहाडो मे दोडने लगी सफा व मरवा पर छोटा बच्चा इसमाईल के पाव पटकने पर कुआ खुद गया जिस से पानी निकालने लगा। आवे जम जम मॉ बेटा अब पानी पीकर गुजारने लगे।

इधर इब्राहीम ने स्वप्न देखा अल्लाह ने कहा जो तुम्हारा सब से प्यारा वस्तु है उसे मेरे रास्ते मे कुर्बान करो। तो लगातार तीन दिन यह ख्वाब देखने पर उन्होने रोजाना सौ—सौ ऊटो की कुवानी दिया। पर अल्लाह को यह पसन्द नही आया।

फिर ख्वाब देखा कि तुम्हारा जो सब से प्यारा वस्तु है उसे ही कुर्वानी करो। तो इब्राहीम ने सोचा कि मेरा नैन का टुकडा अपने मॉ के साथ जगल मे है इसमाईल तो उसे ही कुर्वानी दिया जाय।

चल पडे जगल मे लडके को साथ लिया कुर्वानी देने को मॉ से अलग कर दूर मे पर वह मॉ के दिल मे उस समय क्या गुजर रहा था ?

लडके को सुलाकर बाप छुरी चलाने लगे तो अल्लाह ने छुरी से कह दिया तू काटना मत इसमाईल ने बाप से कहा मुझे पट्ट कर ले किन्तु गर्दन से भी नही कटा। ता बेटे ने कहा आप प्यार के चलते मुझे काट नही पा रहे है। अपनी ऑखो मे पट्टी बाध ले एक कपडे को सात तह कर।

पिता ने ऐसा ही किया तो अल्लाह को मात्र इब्राहीम की परीक्षा लेना था तो उसमे पास हो गये। और अल्लाह ने इसमाईल को हटा कर जन्नत (स्वर्ग) से एक दुम्बा लिटा दिया तो इब्राहीम ने अपने पुत्र की जगह पर उस दुम्बे को काटा पाया।

यह है सक्षेप मे कुर्वानी की कहानी।

पर विचारणीय बात है कि अल्लाह अलिमुल गैब (अन्तरर्यामी) है तो क्या इब्राहीम परीक्षा मे पास हो जायेगे नही जानते थे ?

तो क्या अल्लाह छुरी को कहने पर वह अपना काटने का काम छोड दिया। क्या वह छुरी था या लोहे का दुकडा ? जिस जन्नत (स्वग) मे दुम्बा रहता होगा क्या वह जगह पाक होगा ? वह बाप ही कैसा जो अपने बेटे को वली चढाता हो ? अध विश्वास की भरमार है। अल्लाह न अक्ल किस काम को दिया ? क्या यह अमानवता की पराकाष्ठा नही ?

दरअसल हुक्म था पुत्र का कुवानी करना किन्तु लोग अपने जीभ के स्वाद के लिये पशुओ को मार कर खाने लगे आज भी उसी मक्का और मदीना मे पशुओ की कुबानी जाने वाले हज यात्रीओ को करना पडता है।

एक आश्चय की बात कि हज यात्रीयो को तो करना पडता है पर उस काबे मे जो कबूतर रहते हे उसे कोई ककर तक नही मार सकता सख्त मना हे किन्तु कबूतरो से बडे बडे जानवरो को काटने का विधान हे। साथ ही नियम है कि कुवानी का गोश्त (मास) सिफ अपन खाने के लिये न रखे। बल्कि उमे तीन भाग किया जाय—एक अपने घर खाने को—दूसरा अपन रिश्तेदारो मे बाटने के लिये—तीसरा पडोसी व बाहर बाटने क लिये

विचारणीय बात कि हजरत इब्राहीम जब कुर्वानी किया लडके के बदल दुम्बा को तो उस समय उन गोश्त का कितन हिस्सो मे बाटा गया था ?

अगर बाटे थे तो उस विया बान जगल मे इब्राहीम तथा पुत्र ईस्माईल को छोड तीसरा दुम्बा ही था तो कहा और किसको बाटा गया ?

अगर वह नही वाटे थे तो आज हर मुसलमान कुर्वानी करने वाला क्या बाटता हे ? पर पूरी कुरान मे पशुओ को काट कर खाने का विधान कहीं भी नहीं है सिर्फ सुराबकर प्रयम सिपार मे एक बछडे को काटना आया है किस्सा के रूप मे जैसा पारा—१ रूकु—७ मे कहा गया हजरत मूसा के जमाने मे एक आदमी ने अपने बेटे को वसियत किया कि तुम छोटे हो मेरे मरने के बाद तुम्हारा खर्च चलने हेतु मैने जगल मे एक बछडा छोड दिया उसे जो खरीदे उसकी कीमत उसे जबह कर उसके खाल मे जितना कस्तूरी आ सकता है उतनी ही कीमत द।

इधर उसी समय यहुदी व नसारा दो कौम के लोग रहते थे आपस मे काफी विरोध रखते थे। एक बार अपने आदमी की हत्या कर दूसरे को बदनाम करना चाहते थे लाश को दूसरे क घर डाल दिया किन्तु उन्होने तो कत्ल किया नही था।

वह लोग भागे भागे हजरत मूसा के पास आये कि हमने तो कत्ल किया नही यह लाश हमारे यहा कैसे आ गइ ?

जब हजरत मूसा ने अल्लाह से पूछा तो उस जमाने मे भी लोग गाय पूजते थे अल्लाह को रास नही आया तो उसी समय फरिश्ता जिब्राईल के माध्यम स कुरान का आयात उतार दिया कि एक बछडा जगल मे चरता हुआ मिलेगा जो न खूब बूढा होगा—न—बच्चा ओर उस से कोई हल नही जोता हो—न—कुआ से पानी ही उठाया होगा

(शेष पृष्ठ १० पर)

कुर्बानी कुरान मे कहीं नहीं

जिसका रग पीला होगा उसकी कीमत उसे जबह करा खाल भर कस्तूरी दो और उसके गोश्त का एक टुकडा लेकर उस मरे के शरीर मे लगावो वह जिन्दा हो जायेगा और कहेगा कि उसे किसने मारा ? सिर्फ यही किस्सा है बछडा काटने का।

किन्तु कुरान मे काटकर खाने का विधान नही है और न गोश्त खाने की बात अल्लाह ने कही बल्कि कुरान मे आया है कि दुनिया मे जो है तुम्हारे लिये हलाल है। पर दुनिया मे क्या नही है ? ना सब कुछ खाना चाहिये ?

कुरान के दो स्थानो मे चार (४) चीज अल्लाह ने हराम करार दिया है जैसा पारा दो – सुरसबकर आयत १७३–सुरा मायदा–आयत ६० पर

अथ हराम किया गया तुम्हारे लिये मरा हुआ पशु जमाखुन–सूअर का गोश्त–अल्लाह को छोड दूसरे के नाम से जबह किया जानवरो का गोश्त।

गौर तलब बात यह है कि पहला ही मना किया मरा पशु का गोश्त तो मै सभी पढे लिखे लोगो से पूछता हू कि मरे की परिभाषा क्या है ? शायद जवाब मे आप कहेगे मरा कि यानी जिसमे प्राण न हो । रूह न हो सोल न हो तो किसी ने मुर्गे का पेट मे छुरा भोक कर मारा–प्राण निकल गया तो मरा–गाडी से रोध कर प्राण निकला–तो मरा पानी मे डूब कर प्राण निकला तो मरा गर्दन पर किसी ने तलवार चलाया प्राण निकला –तो मरा और किसी ने गला को आहिस्ता छुरी चलाकर काटा–तो भी प्राण निकला फिर मरा नही तो और क्या है ?

जिन्दा खाया नही जाता मुर्दा खाना हराम है तो हमारे मित्रो ने खाया कब ? आखिर काट कर ही तो खाया जाता है तो कुरान मे ही अल्लाह ने हराम कहा है–फिर आप की दृष्टि मे यह हलाल कैसी ?

एक तो मानव मासाहारी जीव ही नही शाकाहारी–और मासाहारीओ की बनावट मे भी अल्लाह ने परिवर्तन रख दिया जैसा मासाहारीओ के दात नुकीले पसीना नही आता जीभ से राल टपकते है आदि।

दूसरी बात स्वास्थ्य को अगर निरोग रखना हो तो शाकाहारी बने। जीते जागता प्रमाण आप किसी भी हासपीटल के गेट पर जाय आऊट डोर मे देखेगे ६० प्रतिशत मुसलमान मर्द औरतो की भीड लगी रहती है कारण मासाहार। इधर वेद की शिक्षा आत्मवत सर्व भूतेषु समस्त आत्माओ को अपनी आत्मा के समान जानना।

एक बार एक कम्युनिष्ट ने मेरे से पूछा आप के इश्वर पर बहुत बडा दोष है जो वह छोडे बच्चे को बोलना नही सिखाया अगर बच्चा मा के पेट से बोलना सीख जाये तो आदमी की आधी परेशानी दूर हो सकती है और बच्चे को पालने मे भी परेशानी न भुगतनी पडे–माता पिता को।

जवाब मे मैने उनसे कहा मित्र यह परमात्मा का दोष नही है अपितु परमात्मा हमे ज्ञान दे रहे है फिर उसने कहा क्या ज्ञान है ? मैने कहा भाई परमात्मा बतला रहे है कि तुम्हारी गोद मे जो बच्चा है बोलना नही जानता और उस पर तुम कितनी दया करते हो ठीक इसी प्रकार धरती पर अनेको जीव है जो बोल नही पाते तुम उन पर भी दया करो तो आइये इसी पर अमल कर हम मानव बने।

संकल्पशील बनते जाएं

मोहन लाल शर्मा 'रश्मि'

६०७/डी साइट, फ्रीलैण्डगज, दाहोद ३८९ १६० (पचमहाल)

पर–निन्दा हम सुने नही बस भद्र बात सुनते जाए।
कर सत्सग सदा ही हम सकल्पशील बनते जाएँ।

कपोल–कल्पित बातो को न हमको सुनना–पढना।
हो पैदा दुर्भाव हृदय मे ऐसे पथ पर क्या चढना।

हो न व्यवहार अशिष्ट हमारा कुसस्कार न जन्मे।
अभद्र दर्शन अश्लील बाते कभी न आए मन मे।

रहे दूर दुर्गुणो से हम सदा यज्ञ–भाव भरते जाय।
कर सकल्प सदा ही हम सकल्पशील बनते जाए।

हो जीवन मे सदा हमारे सचार दिव्यता का भाई।
भद्र श्रवण दर्शन से ही तो मन मे खुशिया आई।

दीर्घायुष्य की करे कामना हम ईश्वर से हर दम।
जीवन मे हम भोगो को बस करते रहे सदा कम।

दिव्य ईश्वरीय कार्यो का सम्पन्न रश्मि करते जाए।
कर सत्सग सदा ही हम सकल्पशील बनते जाए।

नेपाल में भी योग व आर्यत्व का प्रचार।

धन सिंह आर्य योगाचार्य

ऋषि मुनियो की वेद प्रमाणित योग एव वैदिक विद्या का प्रचार प्रसार करने भारत से बुलाए गये सुयोग्य कुशल योगगाचार्य श्री धनसिंह ने विराट नगर स्थित महर्षि दयानन्द गुरूकुल D A V स्कूल गौतम बुद्ध मैमोरियल स्कूल तथा अन्य शिक्षण सस्थाओ म विद्यार्थियो को नियमित दिनाक१० फरवरी स १७ मार्च तक वैदिक सध्या खेलकूद योगासन प्राणायाम षटक्रिया सूक्ष्म तथा स्थूल व्यायामो का प्रशिक्षण दिया और बताया कि मनुष्य शरीर रचना क अनुसार धूम्रपान मासाहार आदि शरीर के लिए विशष घातक है गुरूकुल के प्राचार्य श्री पीताम्बर शर्मा तथा प्रधान श्री सीताराम अग्रवाल न बताया कि नपाल के चाथे आर्य राष्ट्रीय महासम्मेलन १६ फरवरी का आचार्य द्वारा प्रशिक्षित विद्यार्थियो ने योगासन जिम्नास्टिक षटक्रिया का आकषक प्रदर्शन किया तथा पी टी आइ॰ जी न भी विशेष शक्ति प्रदशन किये। सम्मेलन मे उपस्थिन पूव सासद श्री बाबूलाल नकर्मी तथा सभी ने आचार्य की भूरी भूरी प्रशसा की और भारत क देश ऋषि मुनियो स्वामी दयानन्द जी आदि की जीवनी पर प्रकाश डाला पूव प्रधान मत्री श्री मातृका प्रसाद कोइराला न भी अपने विराट नगर स्थित शादी महल म योगाचाय को बुलाया तथा नेपाल देश म सेवा के लिए धन्यवाद किया।

आर्य पुरोहित सभा का निर्वाचन

आर्य पुरोहित सभा दिल्ली प्रदेश का निर्वाचन दिनाक १२ ५–९९ को स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती अधिष्ठता वद प्रचार विभाग दिल्ली आर्य प्रति निधि सभा की अध्यक्षता मे ३ य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली के सभागार मे सम्पन्न हुआ जिसमे निम्न पदाधिकारी सव सम्मति से निर्वाचित किए गये।

सरक्षक	श्री प्रेमफल शास्त्री
प्रधान	आचार्य प्रकाशचन्द शास्त्री
मत्री	डा॰ कर्णदेव शास्त्री
कोषाध्यक्ष	आचाय चन्द्रशेखर शमा

अटल जी आर्य समाज की देन आर्य समाज ने बधाई दी

कानपुर–केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास ने आर्य समाज की ओर से श्री अटल बिहारी बाजपेयी को भारत के नये प्रधान मत्री के पद की शपथ ग्रहण करने पर हार्दिक बधाई दी है।

श्री आर्य ने इस बात पर भी प्रसन्ता प्रकट की है कि अटलजी आर्य समाज की देन है। उन्होने बचपन मे ही आर्य कुमार सभा के मत्री पद पर रहकर आर्य समाज के सिद्धान्तो व प्रखर राष्ट्रीयता की शिक्षा प्राप्त कर सार्वजनक जीवन को प्रारम्भ किया था। आर्य समाज को भी अटलजी पर गर्व है।

आर्य वीर दल मुम्बई के प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह

आर्य वीर दल मुम्वइ (महाराष्ट्र) का शारीरिक वैदिक एव चरित्र निमाण प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह दल के सचालक के द्वारा दि १२ मइ १९९९ का खडावली (प॰) दत्त मन्दिर जिला थाना मे हुआ। मइ से चलने वाले शिविर मे ब्र॰ सुरेन्द्र सिह आजाद और आचाय जयदेव अग्निहोत्री द्वारा युदको को शारीरिक–वौदिक शिक्षण के अन्तगत योगसन प्राणायाम सैनिक शिक्षा जुडो–कराटे और मलखम्ब का प्रशिक्षण दिया गया। इसके साथ साथ सादगी के साथ ब्रह्मचर्य पूवक जीने की प्रेरणा दी गइ। ताकि युवक देशभक्त योग्य–नागरिक बन सके। प्रशिक्षार्थियो को सार्वदशिक स्तर के प्रमाण पत्र दिये गये

समारोह के मुख्य अतिथी श्री भगवती प्रसाद गुप्त ने युवको को आर्शीवाद दिया श्री ज्ञानेश्वर तललकर न व्यवस्था की देखरेख की मत्री ओमप्रकाश आर्य ने सयाजन का कार्य सभालते हुय समाराह मे सभी आगन्तुको का आभार व्यक्त किय

आर्य समाज उदयपुर का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

आज दिनाक ५ ५ ९९ को आर्य समाज उदयपुर क वार्षिक निर्वाचन चुनाव अधिकारी श्री लक्ष्मीस्वरूप जोशी के निर्देशन मे सदसम्मति स सम्पन्न हुऐ निर्वाचन कार्यकारिणी निम्न है

श्री हनुमान प्रसाद चोधरी	प्रधान
श्री भवर लाल गर्ग	मत्री
श्री नारायण लाल मित्तल	कोषाध्यक्ष

यदि मानव में उच्चगुणों का विकास न हो तो वह शिक्षा व्यर्थ ही है

गत १३ तारीख को श्री महर्षि दया शिक्षण समिति की ओर स छटवे वैदिक शिक्षा प्रशिक्षण शिविर का शुभारभ करत हुए म प्र॰ विदर्भ प्रातीय आर्य समाज के उप प्रधान पडित यज्ञेन्द्र जी आर्य ने कहा कि जिससे विद्या सभ्यता सदाचार धर्मात्मा आदि सदगुणो की वृद्धि तथा अज्ञान दुराचार आदि दुर्गुण दूर हो उसे वैदिक शिक्षा कहते है। महर्षि दयानद के उक्त कथन मे शिक्षा का रहस्य दिया हुआ है। यदि मानव मे गुणो का विकास न हो ता वह शिक्षा अभिशाप ही है। शिक्षा का उद्देश्य मानव मे मानवता का विकास कर उसमे सच्चारित्रता एवं सदज्ञान की वृद्धि करना है।

प्राचीनकाल मे भारत के महर्षियो मुनियो ने इसी शिक्षा पद्वति के आधार पर शिक्षण दिया जिसमे वेदो उपनिषदो के ज्ञान व विज्ञान से युक्त कर बालको को उत्तम बनाया गया तभी भारत प्राचीन समय मे विश्व गुरू कहलाया। आज भी यदि इसका प्रचार प्रसार हो जावे ता भारत पुन विश्वगुरू हो सकता है।

इस अवसर पर पडित रामचन्द्र जी आर्य कैलाशचद पालीवाल कृष्णलाल जी आर्य श्री हीरालाल जी आर्य सोहन काबरा रामस्वरूप बाहती डा दिलीप हिन्दूजा एव श्री सुधीर राजोरा ने भी वैदिक शिक्षा क उपर अपने विचार प्रस्तुत किये अतिथिगण का स्वागत श्री वीरेन्द्र सोहनी व श्री घनश्याम खतानी ने किया आभार प्रदशन श्री लक्ष्मीनारायण जी चौरे ने किया।

आर्य वीर दल मंच व्यायाम प्रशिक्षण शिविर

२९ मई से ७ जून १९९९

राष्ट्र प्रेमी धम प्रेमी

आय वीरो आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी आर्य वीर दल पश्चिमी उत्तर प्रदश म आपकी जानी मानी प्रिय सस्था पूर्व नाम वाणावत (लाक्षागृह) गुरूकुल बरनावा (मेरठ) मे आर्य वीर दल व्यायाम प्रशिक्षण शिविर लगाया जा रहा है आप अधिक से अधिक सख्या म गणवेश सहित शिविर म पहुचकर शारीरिक आत्मिक उन्नति की वृद्धि करे।

धर्मवीर सिंह आर्य

प्रवेश सूचना

आर्ष गुरूकुल ऐरवा कटरा (इटावा)

महर्षि दयानन्द निर्दिष्ट आर्ष पाठविधि पर आधारित इस विद्यालय म बालको का प्रवेश २० जून के बाद प्रारम्भ हो रहा हे इस विद्यालय मे कक्षा ५ उत्तीण छात्रो का प्रवेश होता ह महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक की प्रथमा से आचार्य पयन्त परीक्षाए दिलाई जाती हैं बालको के नैतिक उत्थान पर विशष बल दिया जाता ह अनुभवी आचार्य गण उत्तम अनुशासन आवासीय उत्तम व्यवस्था आदर्श दिनचर्या आदि इस गुरूकुल की विशषता ह इच्छुक अभ्यर्थी शीघ्रता करे विशेष जानकारी के लिए नियमावली मगाए

प्राचार्य

आर्ष गुरूकुल ऐरवा कटरा इटावा

वैदिक विवाह सम्पन्न

सुकुमारी दुर्गादेवी सुपुत्री प नन्द लाल निर्भय भजनोपदेशक निवासी बहीन जिला फरीदाबाद का पाणि ग्रहण सस्कार दिनाक ६ मई १९९९ को आर्य वीर कन्हैया लाल सुपुत्र श्री प बुद्धि राम गौड निवासी ग्राम चादपुर फरीदाबाद के साथ धूमधाम से सम्पन्न हुआ विवाह सस्कार श्री दव शर्मा शास्त्री होडल ने वैदिक रीति स कराया

इस अवसर पर धर्म सहित कान्हा गोशाला बहीन फरीदाबाद तथा वैदिक सेवा समिति मेवात को दोनो पक्षा की ओर से दान दिया गया

ब्रह्म देव आर्य

आर्योत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बल्लभगढ मेन बाजार के तत्वाधान मे दिनाक १३ मइ से १८ मइ तक देवयज्ञ वेद कथा का आयोजन किया गया जिसमे प नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक तथा विश्व दव शास्त्री गुरूकुल एटा के व्याख्यानो से स्थानीय जनता न लाभ उठाया।

१९ मई ९९ को राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसम श्रीमति विमला आर्य प दयानन्द वशिष्ट महाशय फतेह सिह आर्य प नन्द लाल निर्भय प विश्व देव शास्त्री के भजन व्याख्यान द्वारा शान्ति पाठ से सम्पन्न किया गया।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 2 6 96 बिना टिकट भेजने का लाइसेस न० U(C) 93/96
R N No 626/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 30/31 5 1996

'ओ३म्'

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में महात्मा नारायण स्वामी आश्रम का

आर्य समाज के मूर्धन्य सन्यासी म नारायण स्वामी जी महाराज ने नैनीताल के निकट रामगढ मे आश्रम की स्थापना करके पर्वतीय अचल मे सुधारवार का जो आन्दालन प्रारम्भ किया था उसके ७५ वर्ष पूर्ण करने पर उक्त कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

कार्यक्रम

२ जून से ४ जून १६६६

स्थल महात्मा नारायण आश्रम रामगढ

(नैनीताल से बस द्वारा लगभग ३५ कि मी)

अध्यक्षता: प॰ वन्देमातरम् राम चन्द्र राव

प्रधान सार्वदेशिक सभा दिल्ली

आर्य जनता के लिए भोजन एव आवास का समुचित प्रबन्ध होगा

निवेदक

विक्रम सिह — वेदप्रकाश अग्निहोत्री — कृष्ण कुमार भाटिया

सयोजक म॰नारायण स्वामी आश्रम रामगढ

यदि आप में परोपकार और राष्ट्रसेवा की भूख है तो आप कभी भूखे नहीं रहेगें

वीर सावरकर

वैष्णव जन तो उनको कहिए जो दर्द पराया जाने

मोहन दास गाधी

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का

विशाल राष्ट्रीय शिविर

दिनाक :- ६ जून, १६६६ से २३ जून, १६६६ तक

स्थान· शिक्षा भारती पब्लिक स्कूल, पालम गॉव, नई दिल्ली-४५

शिविरार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

शिविरार्थियो को शिविर काल मे पूर्ण अनुशासन मे रहना होगा। न्यूनतम आयु १५ वर्ष पूर्ण गणवेश (वेशभूषा) खाकी निकर सफेद कमीज सफेद बनियान काला कच्छा ब्राउन जूते (कपडे के) सफेद जुराब कान तक की लाठी कापी–पेन सन्ध्या व हवन की पुस्तक सफेद कुर्ता पायजामा साधारण बिस्तर भोजन हेतु पात्र तथा करदीप (टार्च) शुल्क (मात्र ६०/–रु) प्रवेश के समय ही देना होगा।

शिविरार्थियो द्वारा विशाल पथ सचलन (सैनिक परेड) एव व्यायाम प्रर्दशन

हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी शिविर समापन के दिन आर्य वीरो का विशाल मेला देखने को मिलेगा। जिसे देखने से आप वचित न रह जाये। अत २३ जून १६६६ को अपनी–अपनी आर्य समाजो से•शिविर समापन समारोह मे बैनर झण्डे लगाकर बसो–टैम्पो आदि के द्वारा अधिक से अधिक सख्या मे पहुँच कर युवको का उत्साह वर्द्धन करे।

इस महान कार्य हेतु तन मन–धन से सहयोग दे इसके लिए क्रास चैक ड्राफ्ट तथा नकद धन राशि "सार्वदेशिक आर्य वीर दल" के नाम से दिए जा सकत है। इसके अलावा दानी सज्जन आटा दाल चावल और देशी घी के टीन आदि भी द सकते है जो कि आर्य समाज दीवान हाल आर्य समाज बिरला लाईन आदि मे भिजवाने की कृपा करे।

निवेदक

ब्र राज सिह आर्य

सार्वदेशिक आर्य वीर दल, रामलीला मैदान,

नई दिल्ली-११०००२

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुदित तथा डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-2 से प्रकाशित।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन

श्री बृज भूषण गक्खड प्रधान तथा श्री रामनाथ सहगल मंत्री निर्वाचित

रविवार दिनाक २ ५ १६६६ को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग नई दिल्ली के भवन में सम्पन्न हुआ जिसमे श्री बृज भूषण गक्खड को सभा का प्रधान निर्वाचित किया गया और श्री राम नाथ सहगल को एक बार फिर सभा का मन्त्री निर्वाचित किया गया

नवनिर्वाचित सभा प्रधान श्री बृज भूषण गक्खड डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के सगठन सचिव है एव हरियाणा शिक्षा बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष है हरियाणा मे शिक्षा बोर्ड की ओर से नैतिक शिक्षा को अनिवार्य करने मे इनका विशेष योगदान रहा है जिसे भारत वर्ष ने सहर्ष स्वीकार किया है आप आर्य समाज चण्डीगढ से पिछले कई वर्षो से जुडे है आप उत्तर प्रदेश मे आर्य समाज सस्थाओ के सस्थापक के सुपुत्र है और आप बाल्यकाल से ही आर्य समाज एव वैदिक मान्यताओ से जुड़े है आर्य समाज मे युवको के अग्रणी श्री बृज भूषण गक्खड का युवको के प्रति एक विशेष लगाव है अपने उदारपूर्ण व्यक्तित्व एव जीवन्त कार्यो के लिये डी ए वी आन्दोलन मे पब्लिक स्कूलो के प्रचार प्रसार मे आपका विशेष योगदान है

अंग्रेजी को बढावा देने वाले पादरियों की गद्दारी की सजा मौत:

मसीहा हिन्दी प्रचार परिषद की मॉग

यह हम भारतीय ईसाइयो का दुर्भाग्य है कि आज हम भारतीय ईसाइयो की बागडोर हमारे ऐसे फादर्स मदर्स के हाथो मे है जिनकी नजरो मे अग्रेजी ईसाइयो की धर्मभाषा है जबकि अग्रेजी का ईसाई धर्म से कुछ भी लेना देना नही है

अग्रेजी एक मात्र अग्रेजो की ही भाषा है। अग्रेजी जब यीशु की भाषा नही है फिर हम भारतीय ईसाइयो का अग्रेजी से क्या लना देना है आज साम्राज्य वाद फैला रहे हमारे कुछ विदेशी फादरियो ने यह भ्रम पैदा कर दिया है कि अग्रेजी हम भारतीय ईसाइयो की धार्मिक भाषा है ईसा मसीह ने अरमैक भाषा मे धर्म प्रचार किया था वह भाषा आज मर चुकी है पर वह भाषा हिन्दुस्तानी से अधिक नजदीक थी और वैज्ञानिको ने यह सिद्ध कर दिया है कि अरमैक लिपि ब्राह्मी लिपि के द्वारा हिन्दी और बगला लिपि (असमिया) के निकट थी

फिर हमारे इन तथाकथित पादर मदर का नागालैड मिजोरम आदि की लिपि को रोमन बनाने का क्या मतलब है क्या हमारे विदेशी फादर मदर ईसाई धर्म के प्रचार के नाम पर हम भारतीय ईसाइयो पर अग्रेजी थोपकर अमरीका और इग्लैड के इशारे पर नाच रहे है ईसा की भाषा अरमैक असमिया के निकट थी नागालैंड असम के निकट है और कभी असम का एक हिस्सा रह चुका है फिर क्यो इन ईसाइयो द्वारा नागालैड की भाषा और लिपि अग्रेजी के साम्राज्य की ओर बनाई गई ?

आज भारतीय पादरियो की बागडोर भी कुछ विदेशी पादरियो के हाथो है और ये विदेशी पादरी अपना पादरी धर्म भूलकर विदेशी ताकतो के धन के बल पर हमारी भाषा और सस्कृति को नष्ट करने पर तुले है देशी विदेशी पादरियो के चक्रव्यूह मे फसे हम भारतीय ईसाइयो का धर्म क्या है ? हमारा धर्म वही है जो भारत सरकार का धर्म है हिन्दी का विकास करना और सविधान के अनुच्छेद ३५१ के अनुसार अग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को प्रतिष्ठापित करना अग्रेजी को बढवा दे रहे हमारे पादरियो के कारण आज हमारा पूरा ईसाई समाज अपनी भारत मा के प्रति गद्दार बन गया है

हमारा पोप जानपाल और मदर टेरेसा से भी निवेदन है कि वे हम भारतीय ईसाइयो की राष्ट्रभाषा हिन्दी की रक्षा करेगे और अग्रेजी के प्रचार प्रसार को ईसाइयो मे जोडकर न चले इसी के साथ सभी ईसाई स्कलो मे हिन्दी बोलने पर लगे प्रतिबन्ध और जुर्माने को मदर टेरेसा तुरन्त खत्म करने के आदेश दे और सभी ईसाई स्कूलो का न केवल माध्यम हिन्दी बनाये वरन वहा की वेषभूषा भी कोट पैंट टाई के स्थान पर हमारी राष्ट्रीय वेशभूषा धोती कुरता और सलवार कुर्त्ता करने के आदेश दे वैसे भी जवान लडकियो द्वारा स्कर्ट पहनकर टागे दिखाना भारत वर्ष मे अश्लीलता ही है हम अनुरोध करते है यदि इसके बाद हमारे पादरी हिन्दुस्तान मे अग्रेजी का प्रचार या प्रसार करके हमारे ईसाई समाज के गद्दारो को मौत के घाट उतारने की भारत सरकार से माग करनी होगी क्योकि ये पादरी ईसाइ मत और भारत सरकार की राष्ट्रभाषा हिन्दी विरुद्ध गद्दारी कर रहे है।

प्रेरणा स्रोत

आर्क बिशप टूटू (दक्षिण अफ्रिका) जार्ज फर्नांडीस अध्यक्ष समता पार्टी

मलूक मैथ्यू (सयोजक मसीहा हिन्दी प्रचार परिषद दत्ता पाडा रोड बोरीवली (पूर्व) बम्बई

उत्तराचंल में सार्वदेशिक सभा ....

पृष्ठ १ का शेष

नगर मे भी बढ रहा है

कोटद्वार से तीनो आर्य नेता दोपहर बाद उत्तर चल के लैन्सडान क्षेत्र मे पहुचे सायकाल जनपद आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एक भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया जिसमे सरकारी तथा पब्लिक कई विद्यालयो के बच्चो ने महर्षि दयानन्द स्वामी विरजा नन्द तथा आर्य समाज की मान्यताओ का प्रदर्शन करते हुए झाकियो का प्रदर्शन किया इन झाकियो मे सामाजिक बुराइयो से भरे अण्डे मास आदि के सेवन के विरुद्ध एव बाल विवाह जाति पाति आदि कुरीतियो का सजीव प्रदर्शन विशेष आकर्षण का केन्द्र बना

गढवाल आर्यप्रतिनिधि सभा के ७५ वर्ष पूरे होने पर हीरक जयन्ती समारोह मनाया गया था इस समारोह मे सभा के तीनो आर्य नेताओ के अतिरिक्त सभा के उप प्रधान श्री सत्यानन्द मुन्जाल अपनी धर्म पत्नी श्रीमती पुष्पा मुन्जाल सहित पधारे

इस अवसर पर श्रीमती एव श्री मुन्जाल [illegible] उपरान्त अपने उदबोधन मे [illegible] गढवाल वासियो से अधिक से अधिक [illegible] मे आर्य समाज द्वारा [illegible] वैदिक सिद्धान्तो [illegible] प्रचार पर बल देने का आहवान किया

सम्मेलन के अवसर पर दिये [illegible] मे श्री वन्देमातरम ने आर्य जनता [illegible] शुभ कामनाये व्यक्त करते [illegible] जैसे पवित्र क्षेत्रो मे गढवाल वेद मत पर [illegible] के लिए अथक प्रचार की आवश्यकता है श्री वन्देमातरम ने कहा कि सार्वदेशिक सभा हजारो रुपय की मासिक सहायता इन क्षेत्र मे पूर्ववत उपलब्ध कराती रहेगी

सभा मन्त्री डा सच्चिदानन्द शास्त्री ने इस सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज के नेताओ का जीवन सदैव सघर्ष शील रहा है आज सास्कृतिक प्रदूषण को रोकने के लिए भी आर्य समाजियो को ही आगे आना पडेगा

न्याय सभा सदस्य श्री विमल वधावन एडवाकेट ने महर्षि मनु को सबसे बडा कानून का दाता बताते हुए कहा कि कुछ लोग अज्ञानता वश मनु के विषय मे गलत अवधारणाओ का प्रचार कर रहे है मनु द्वारा बनायी गई न्याय एव सामाजिक व्यवस्था समाज की समृद्धि एव सुख शान्ति के लिए आज भी सर्वोत्तम साबित हो सकती है। सामाजिक बुराइयो विशेष रूप से शराब मास आदि के विरुद्ध उग्र आन्दोलन चलाने के लिए उन्होने महिलाओ से आह्वान किया कि वे अपनी शक्ति को पहचान कर इस आन्दोलन को अपने हाथ मे ले

पुणे से पधारे स्वामी योगानन्द सरस्वती ने भी सामाजिक और सास्कृतिक प्रदूषण के विरुद्ध सजग रहने के लिए गढवाल वासियो का आह्वान किया। सम्मेलन को कई स्थानीय नेताओ ने भी सम्बोधित किया इस अवसर पर कई उद्भट कमठ आर्य नेताओ को शाल उडाकर सम्मानित भी किया गया। शोभा यात्रा मे भाग लेने वाली सर्वोत्तम झाकियो को भी पुरस्कृत किया गया सव श्री चडी प्रसाद डी एल प्रेमी तथा गणेश लाल विद्यावचिस्पति द्वारा सम्पादित गढवाल आर्योप प्रतिनिधि सभा के मुख्य पत्र वैदिक ज्ञान ज्योति मासिक पत्रिका का विमोचन भी सभा प्रधान प वन्देमातरम जी ने किया

महर्षि दयानन्द की वैदिक मान्यता

(भाग ३)

मैने पिछले दो लेखो मे यह स्पष्ट किया है कि वदो के विषय मे शास्त्रीय प्रमाण क्या है ओर दूसरे मे विद्वानो की क्या सम्मति है। वदो की प्रामाणिकता मे अन्य मत वालो के समक्ष जा मान्यताये हे उन का दिग्दर्शन कराया है इस लेख मे यह स्पष्ट करने का प्रयास है कि जब सभी की मान्यता मे वेद ही प्रमाण है तो फिर कुरान बाइबिल पर दुनिया क्या विश्वास करती है। आधुनिक वेदिक मान्यता मे महर्षि दयानन्द सरस्वती की विचार धारा भी अपना महत्व रखती है कि वेद ही स्वत प्रमाण क्यो है ?

महर्षि दयानन्द सरस्वती का मत

वद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है। वेद का पढना–पढाना ओर सुनना–सुनाना सब आर्यो का परम धम है। ३।।

श्रीमन शकराचार्य जी ने भी वेद को नित्य मान कर व्याख्यान किया है।

इस शास्त्र योनित्वात सूत्र के अर्थ से जो प्रतीति हे ऋग्वेदादि जो चारो वेद है व अनेक विद्याओ से युक्त है सूर्य के समान सब सत्य अर्थो के प्रकाश करने वाले है।

उनका बनाने वाला सर्वज्ञादि गुणो से युक्त परब्रह्म हे क्योकि सर्वज्ञ ब्रह्म से भिन्न कोइ जीव सवज्ञ गुण युक्त इन वेदो को बना सक ऐसा सम्भव कभी नही हो सकता क्योकि वेदाथ अथ म है जिनक पढने से यथापि विद्या का ज्ञान होता हे। जिनका अथ–यथाथ सत्यासत्य का विचार हे वेद निराकार ब्रह्म की उत्पत्ति हे।

वदो का नाम छन्द इसलिये रखा हे कि ५ स्वतन्त्र प्रमाण सत्य विद्याओ स युक्त है मत्र सहिताओ का नाम वेद इसलिये है इश्वर रचित सब सत्य विद्याओ का मूल है

(ऋग्वदादि द ग्र द्वि भा पृ ३५७)

स्वज्ञ क बिना किसी का समथ्य नही कि इस प्रकार सव ज्ञान युक्त शास्त्र (वेद) बना सके। वेद को पढने के पश्चात व्याकरण निरुक्त और छद आदि ग्रथ ऋषि मुनियो ने विद्याओ के प्रकाश के लिए किये है। इन्ही (वेदो) के अनुसार सब लोगो को चलना चाहिए। जो कोइ किसी स पूछे कि तुम्हारा क्या मत हे तो यही उत्तर दना कि हमारा मत वद अथात जो कछ वेदो म कहा हे हम उसको मानते है

इश्वर की कही हुइ जो चारो मत्रसहिता है वे ही स्वत प्रमाण हान योग्य है अन्य नही परन्तु उनस भिन्न भी जो जीवो के रच हुए ग्रथ है वे भी वेदा के अनुकूल होने से परत प्रमाण होने के योग्य है क्याकि ईश्वर क रच हुए है और सवज्ञ सवविद्यायुक्त तथा सव शक्तिवाला है इस कारण उसका कथन ही निर्भ्रम और प्रमाण के योग्य है जा जो ग्रन्थ वेदो से विरुद्ध है वे प्रमाण वेदाधीन है

(स प्र ३ य समु द ग्र प्र भा पृ ०

इन ग्रन्थो का (जो कि ऊपर गिनाए गए हे तो पूर्वोक्त प्रकार से स्वत परत प्रमाण करना सुनना ओर पढना सबको उचित ह इनसे भिन्न का नही क्योकि जितने ग्रन्थ पक्षपाती क्षुद्रबुद्धि कम विद्या वाल अधमात्मा असत्यवादियो क रच वदाथ स विरुद्ध और युक्ति प्रमाण रहित ह उनका स्वीकार करना याग्य नही

(ऋग्विदादि द भ द्व भा पृ ५

वदादि सत्यशास्त्रो क स्वीकार म सत्य स का ग्रहण हो जाता हे असत्य स युक्त ग्रन्थरूप अन्य को। वेद अथात जो जो वेद मे करने और छाडने की शिक्षा की है उस उस क हम यथावत करना छोडना मानते हे वेद हमको मान्य हे इसलिए हमारा मत वद हे ... ही मानकर सब मनुष्यो को विशेष आर्यो का एकमत होकर रहना चाहिए

(स प्र ३ य समु द ग्र प्र भ पृ ६१ ०६२

जब सर्व सत्य वेदो स प्राप्त हाता ह जिसमे असत्य कुछ भी नही तो उनको ग्रहण करने मे शका करनी अपनी और पराइ हानि मात्र क लेनी है भला वेदादि सत्य शास्त्रो का मान ... तुम अपने वचनो की सत्यता और ... परीक्षा और आर्यावत की उन्नति भी ... म

... वानप्रस्थाश्रम किन्तु ब्रह्मचयाश्रम का पूण कर के सन्यासश्रम को ग्रहण कर लवे।

जैसे शरीर मे सिर की आवश्यकता है वैसे ही आश्रमो मे सन्यासाश्रम की आवश्यकता है। क्यो कि इसक बिना विद्या धम कभी नही बढ सकता और दूसरे आश्रमो को विद्या ग्रहण गृह कृत्य और तपश्चयादि का सम्बन्ध हाने से अवकाश बहुत कम मिलता है पक्षपात छोडकर बर्तना दूसर आश्रमो को दुष्कर है। जैसा सन्यासी सर्वतामुक्त होकर जगत का उपकार करता है वैसा अन्य आश्रमी नही कर सकता। क्यो कि सन्यासी को सत्य विद्या से पदार्थो के विज्ञान की उन्नति का जितना अवकाश मिलता है उतना अन्य आश्रमी को नही मिल सकता। जा ब्रह्मचय से सन्यासी होकर जगत को सत्य शिक्षा करके जितनी उन्नति कर सकता है उतनी गृहस्थ या वानप्रस्थ आश्रम को करके सन्यासश्रमी नही कर सकता

सन्यासी का कर्त्तव्याऽकर्त्तव्य

(मनुस्मृति के श्लोको क आधार पर)

(१) सन्यासी अपना घर न बधे और अन्न वस्त्रादि के लिये ग्राम का आश्रय लेवे बुरे मनुष्य की उपेक्षा करे और स्थिर बुद्धि मननशील होकर परमेश्वर मे अपनी भावना का सम्मान करता हुआ विचरे।

(२) सन्यासी न तो अपने जीवन मे आनन्द और न अपनी मृत्यु मे दुख माने।

(३) चलते समय आगे–आगे देख के पग धरे सदा वस्त्र से छानकर जल पीवे सबसे सत्य वाणी बोले अथात सत्योपदेश ही किया करे जो कुछ व्यवहार करे वह सब मन की पवित्रता से आचरण करे।

(६) इस पवित्र आश्रम को सफल करने के लिए सन्यासी पुरुष विधिवत योगशास्त्र की रीति से सात व्याहृतियो के पूव सात प्रणव लगा के उसको मन स जपता हुआ तीन प्राणायाम भी करे तो समझो अत्युत्कृष्ट तप करना है क्योकि जैसे अग्नि म तपाने से धातुआ के मल छूट जाते ह वैस ही प्राण के निग्रह से इन्द्रियो क दोष नष्ट हो जाते है।

(१०) सन्यासी लोग प्राणायामो से दोषो को धारणाआ से अन्तःकरण के मेल को प्रत्याहार के द्वारा सग से हुए दोषो और ध्यान से अविद्या पक्षपात आदि अनीश्वरता के दोषो को छुडा के पक्षपात रहित आदि इश्वर क गुणो को धारण कर सब दोषो को भस्म कर देवे।

(११) जो सन्यासी यथाथ ज्ञान वा षडदर्शना से युक्त है वह दुष्ट कर्मों से बद्ध नही होता और जो ज्ञान विद्या योगासन सत्सग धमानुष्ठान वा षडदशनो से रहित विज्ञान हीन होकर सन्यास लेता है वह सन्यास पदवी ओर मोक्ष को प्राप्त न होकर जन्म मरण रूप ससार को प्राप्त होता हे और एसे मूख अधर्मी के सन्यास का लेना व्यथ और धिक्कार देने योग्य ह

(१२) जो सन्यासी निर्वैर इन्द्रियो के विषयो के बन्धन से पृथक वैदिक कमचारणो और प्राणायाम सत्यानुभाषणा उत्तम कर्मों स युक्त हाते है व इसी जन्म वतमान समय मे परमेश्वर की प्राप्ति पद को प्राप्त होने ह उनका सन्यास लेना सफल और धन्य है ... ५ है

नाता हे ओर जो विद्वान लाग उस ब्रह्म को जानते है वे ही उस परमात्मा म अच्छे प्रकार समाधियोग से स्थिर होते है। अत सन्यासी का ब्रह्म ज्ञानी होना आवश्यक है

(७) सन्यासी जगत के सम्मान से विष तुल्य डरता रहे और अमृत के समान अपमान की चाहना करता रहे क्योकि जो अपमान स डरता ओर मान की इच्छा करना हे वह प्रशसक होकर मिथ्यावादी और पतित हो जाता है। इसलिय चाहे निन्दा हो चाह प्रशसा चाहे मान हो चाहे अपमान चाहे जीना हाया मृत्यु चाहे हानि हो चाह लाभ चाहे कोइ प्रीति करे चाहे बैर बाधे चाहे अन्न दान वस्त्र उत्तम स्थान न मिले या मिल चाहे शीत उष्ण कितना ही क्यो न हो इत्यादि सबका सहन करे और अधम का खण्डन तथा धम का मण्डन सदा करता रहे इसस परे उत्तम धम दूसरे किसी को न माने

(८) परमेश्वर से भिन्न किसी की उपासना न करे न वेद विरुद्ध कुछ माने परमेश्वर के स्थान मे सूक्ष्म वा स्थूल तथा जड और जीव को भी कभी न माने आप सदा परमेश्वर को अपना स्वामी माने ओर आप सेवक बना रहे वैसा ही उपदेश अन्य को भी किया करे जिस कर्म से गृहस्थो की उन्नति हो या माता पिता ... स्त्री पति बन्धु बहिन मित्र पडोसी नौकर बडे ओ छोटो म विरोध छूटकर प्रेम बढे उस उसका उपदेश करे

(जो वेद विरुद्ध मतमतान्तर के ग्रन्थ बाइबिल कुरान पुराण मिथ्याप्रलाप तथा काव्यादि क कि जिनके पढने सुनने से मनुष्य विषयी और

शेष पृष्ठ ६ पर

आर्य संन्यासियों का कर्त्तव्य एवं सर्वोच्च संगठन

हीरा लाल आर्य ,शाहपुरा

ऋषि–मुनियो ने जीवन को चार भागो मे बाटा है। प्रथम ब्रह्मचर्याश्रम द्वितीय गृहस्थाश्रम तृतीय वानप्रस्थाश्रम और चतुर्थ सन्यासाश्रम। मनुष्य की आयु का सामान्य रूप से १०० वर्ष माना गया था जीवन की सर्वांगीण उन्नति के लिये इन चारो आश्रमो का महत्व स्वत सिद्ध है किन्तु जीवन की मुक्ति (पारलोकिसुख) एव ससार के उपकार हेतु सन्यासाश्रम का विशेष महत्व है।

सन्यासाश्रम से हमारा अभिप्राय यह है कि जो मोहादि आवरण पक्षपात छोड के विरक्त होकर सब पृथ्वी मे परोपकारार्थ विचरे।

(१) ब्रह्मचर्य पूरा करके गृहस्थ और गृहस्थ होके वानप्रस्थ वानप्रस्थ होके सन्यासी होवे। यह क्रम सन्यास कहलाता है।

(२) जिस दिन दृढ वैराग्य प्राप्त होवे उसी दिन चाहे वानप्रस्थ का समय पूरा भी न हुआ हो गृहाश्रम से ही सन्यास ग्रहण करे क्योकि सन्यास मे दृढ वैराग्य और यथार्थ ज्ञान का होना ही मुख्य कारण है।

(३ यदि पूर्ण अखण्डित ब्रह्मचर्य सच्चा वैराग्य और पूर्ण ज्ञान–विज्ञान को प्राप्त होकर विषया सक्ति की इच्छा आत्मा से यथावत उठ जावे पक्षपात रहित होकर सब के उपकार करने की इच्छा होवे और जिसको दृढ निश्चय हो जावे कि मै मरण पर्यन्त यथावत सन्यास धर्म का निर्वाह कर सकूगा वह न गृहाश्रम का

(४) सन्यासी आत्म निष्ठा मे स्थित सर्वथा अपेक्षारहित मास–मद्यादि का त्यागी आत्मा के सहाय से सुखार्थी होकर विचरे करे और सबको सत्योपदेश करता रहे।

(५) सन्यासी सब सिर के बाल डाढी मूछ और नखो को समय समय पर छेदन कराता रहे। पात्री दण्डी और कुसुम्भ के रगे हुए वस्त्रो को धारण किया करे।

(६) सन्यासी बुरे कामो से इन्द्रियो के निरोध राग–द्वेषादि दोषो के क्षय और निर्वैरता से सब प्राणियो का कल्याण करता है वह मोक्ष को प्राप्त होता है।

(७) यदि सन्यासी को मूर्ख ससारी लोग निन्दा आदि से दूषित वा अपमान भी करे तथापि धर्म का ही आचरण करे सब प्राणियो मे पक्षपात रहित होकर सम बुद्धि रखे इत्यादि उत्तम काम करने ही के लिये सन्यासाश्रम की विधि है।

(८) यद्यपि निर्मली वृक्ष का फल जल को शुद्ध करने वाला है तथापि उसके नाम ग्रहण मात्र से जल शुद्ध नही होता किन्तु उसको ले पीस जल मे डालने ही से जल शुद्ध होता है वैसे ही नाम मात्र आश्रम से कुछ भी नही होता किन्तु अपने अपने आश्रम के धर्मयुक्त कर्म करने ही से आश्रम धारण सफल होता है अन्यथा नही

(१३) जब सन्यासी सब पदार्थो मे अपने भाव से निःस्पृह होता है तभी इस लोक इस जन्म और मरण पाकर परलोक और मुक्ति मे परमात्मा को प्राप्त होके निरन्तर सुख को प्राप्त होता है।

वेदो के मन्त्रो के आधार पर

(१) सन्यासी सदैव एक दूसरे मनुष्य के साथ मित्रभाव से बर्ते।

(२) सन्यासी सदेव धर्माचरण का मार्ग ही अपनावे।

(३) सन्यासी परमेश्वर को सर्वव्यापक सर्वान्तर्यामी सव साक्षी जान के अपने आत्मा के तुल्य सब प्राणीमात्र को हानि–लाभ सुख–दुःख दिकवस्था मे देखे वही उत्तम सन्यास धर्म को प्राप्त होता है।

(४) सन्यासी मोह–शोकादि दोषो से रहित होकर सदा सबका उपकार करता है।

(५) सन्यासी परमात्मा की स्तुति प्रार्थना और धर्म मे दृढ निष्ठा करके उस पूर्ण सर्वव्यापक परमात्मा को स्वात्मा के समीप स्थिर होकर उसमे प्रतिदिन समाधियोग मे प्रवेश किया करे

(६) विद्या के बिना परमेश्वर का ज्ञान कभी नही होता और विद्या पढके भी जो परमेश्वर को नही जानता और न उसकी आज्ञा मे चलता है वह मनुष्य शरीर धारण करके निष्फल चला

विस्तार के लिये किसी जीव विशेष पुरुष से अन्य शास्त्र बनाने का सम्भव होता है जैसे पाणिनि आदि मुनियो ने व्याकरणादि शास्त्रो को बनाया है उनमे विद्या के एक–एक देश का प्रकाश किया है वह भी वेदो के आश्रय से बना सके है। और जो सब सत्य विद्याओ से युक्त वेद है उनको कोई सिवाय परमेश्वर के नही बना सकता क्योकि परमेश्वर से भिन्न सब विद्याओ मे पूर्ण कोई भी नही है किन्तु ईश्वर के बताये वेदो के पढने विचारने और उसी के अनुग्रह से मनुष्यो को यथा शक्ति विद्या का बोध होता है अन्यथा नही। वे अपने ही प्रमाण से ही नित्य सिद्ध होते है जैसे सूर्य के प्रकाश मे सूर्य का ही प्रमाण है अन्य का नहीं। सूर्य प्रकाश स्वरूप है पर्वत से लेकर त्रसरेणु पर्यन्त पदार्थो का प्रकाश करता है वैसे वेद भी स्वय प्रकाश है और सव सत्य विद्याओ का भी प्रकाश कर रहे है

(ऋग्वेदादि द भा द्वि–भा ३०१–३०२)

जिस पुस्तक मे ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव के अनुकूल कथन हो वह ईश्वर कृत है अन्य नही और जिसमे सृष्टि क्रम–प्रत्यक्षादि प्रमाणो आप्तो के व परमात्मा के व्यवहार से विरूद्ध कथन न हो वह ईश्वरोक्त है। जैसा ईश्वर का निर्भय ज्ञान का प्रतिपादन हो वह ईश्वरोक्त है

स प्र ७ म समु. दया. ग्र. द्वि. भा ३१६

अत यह निश्चय है कि जहा जहा सत्य दीखता है वहा वहा वेदो से ही फैला है। वेद सत्य विद्याओ से युक्त है वही.— ईश्वर सत्य विद्याओ से युक्त जिसमे मनुष्यो को सत्यासत्य का ज्ञान हो उन्हे वेद कहते है आर्योद्देश्य ६०१

विद धातु ज्ञानार्थक है दूसरा – सत्यार्थ है तीसरा लाभार्थ है चतुर्थ विचारार्थ हे तथा श्रवण

कभी प्रमाण व स्वीकार करने योग्य नही होते और वेदो का अन्य ग्रन्थो के साथ विरोध भी हो तब भी अप्रमाण के योग्य नही ठहर सकते क्योकि वेद तो स्वय ही अपने प्रमाण से प्रमाण युक्त है। इसी प्रकार ऐतरय शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ जो वेदो के अर्थ और इतिहासादि से युक्त बनाये गये है वे भी परत प्रमाण अर्थात वेदो के अनुकूल ही होने से प्रमाण और विरूद्ध होने से अप्रमाण हो सकते है।

(ऋग्वेदादि द. भा द्वि भा प्र. ६८३)

चारो वेदो (विद्या धर्म युक्त ईश्वर प्रणीत सहिता भाग को निर्भ्रान्त स्वत प्रमाण मानता हू कि जिनके प्रमाण होने मे किसी अन्य ग्रन्थ की अपेक्षा नही जैसे सूर्य व प्रदीप अपने स्वरूप के स्वत प्रकाशक और पृथिव्यादि के भी प्रकाशक होते है वैसे चारो वेद और चारो वेदो ब्राह्मण छ अग छ उपाग चार उप वेद और ११२७ वेदो की शाखा जो कि वेदो के व्याख्यान रूप ब्रहमादि महर्षियो के बनाये ग्रन्थ है उनको परत प्रमाण अर्थात वेदो के अनुकूल होने के प्रमाण और इनमे जो वेद विरूद्ध वचन है उनको अप्रमाण मानता हू।

(स्वमन्तव्या प्र. भा द. ग्र. पृ. स.–२)

जो वेदो से विरूद्ध है उसका अप्रमाण होता है और अनुकूल का अप्रमाण नही हो सकता वेद मे तो केवल मनुष्यो को विद्या का उपदेश दिया है।

(स. प्र.।। श समु. ६ पृ. २६६)

इनमे जो वेद विरूद्ध प्रतीत हो उसका छोड देना क्यो वेद ईश्वरकृत होने से निर्भ्रान्त स्वत प्रमाण अर्थात वेद का प्रमाण वेद से ही होता है। ब्राह्मणादि सब ग्रन्थ परत प्रमाण अर्थात इनका

सकते हो ? अब भी समझ कर वेदादि के भाष्य से देशोन्नति करने लगो तो भी अच्छा है जो तुम यह कहते हो कि सब सत्य परमेश्वर से प्रकाशित होता है पुन ऋषियो के आत्माओ मे ईश्वर से प्रकाशित हुए सत्यार्थ वेदो को क्यो नही मानते।

(।श समु द ग्र प्र भा. पृ ५ ६)

जो अविद्यादि दोषो से छूटना चाहते हो तो वेदादि सत्य शास्त्रो का आश्रय लो सब मनुष्य वेदो का पढ–पढा और सुन सुनाकर विज्ञान को बढाके अच्छी बातो का ग्रहण और बुरी बातो का त्याग करके दुःखो से छूट कर आनन्द को प्राप्त हो।

स. प्र. ३ य समु द ग्र प्र. भा. पृ १६५)

योग क्या है ?

रामेश्वर दास गुप्त

मोटे तौर पर योग का सीधा सादा अर्थ "जोड" है गणित की किसी भी एक सख्या को दूसरी सख्या से मिलान को जोड अथवा योग कहते हैं। जब हम अपने को किसी के साथ जोडते है तो वह भी योग कहलाता है उदाहरण के लिए जब हम अपने आप को मा के साथ जोडते है तो मा बेटा बेटी पिता के साथ जोडने पर तो बाप बेटा/बेटी बहन या भाई के साथ जोडते हैं तो बहन भाइ पति या पत्नी के साथ जोडते हैं तो पति पत्नि ममा के साथ जोडते है तो मामा भानजा भाजी आदि आदि इस प्रकार दो के स्थान पर एक अथवा अनेक के स्थान पर एक बन जाते है

जब [illegible] से अपने आप को जोडेगें तो गुरू शिष्य शिष्या बन जाएगे अब और थोडा आगे बढिये साधना कीजिए अन्दर की ओर झाकिये अपने अन्तर मे बैठे परमात्मा से अपने आप का जोडने का प्रयास कीजिए इस प्रकार जीवात्मा और परमात्मा का जो मिलन होगा उस मिलन को योग कहते हैं

जब हम अपने मन मे कुछ न लेकर अर्थात खाली मन होते है तो थोड समय बाद सुषुप्त अवस्था अथात गाढ निद्रा म पहुच जाते है सुषुप्त अवस्था मे कारण शरीर के माध्यम से जीवात्मा और परमात्मा का क्षणिक मिलन होता है आत्मा और परमात्मा का जो मिलन होता उस मिलन को योग कहते है

[illegible] कारण शरीर के माध्यम से आत्मा और परमात्मा का मिलन तभी होता जब [illegible] इस स्थूल शरीर [illegible] म शरीर के माध्यम से प्रयाण करते हुए [illegible] [illegible] स्थाई मिलन [illegible]

[illegible] शरीर के माध्यम से आत्मा का परमात्मा [illegible] हो जाता है और परमानन्द की प्राप्ति [illegible] इसलिए मौत के विषय का समझाने हुए [illegible] कहा है कि हर नींद छोटी मौत है [illegible] साधना द्वारा यह [illegible] नींद [illegible] पर परमानन्द मे [illegible] [illegible] परमानन्द की प्राप्ति [illegible]

[illegible] समय समय पर सन्यासियो [illegible] महात्माओ और योगियो ने [illegible] उठाया महर्षि पतजलि द्वारा [illegible] एक प्रामाणिक और महत्वपूर्ण [illegible] निरोध [illegible]

[illegible] के अनेक प्रकार कहे जाते है कर्मयोग [illegible] अष्टागयोग राजयोग हठयोग [illegible] न जाने कितने प्रकार के [illegible]

[illegible] करना किसी एक [illegible] का करना आत्मा और परमात्मा [illegible] प्रण और अपान को मिलाना शिव शक्ति पुरुष और प्रकृति का मिलन तथा सूर्य चन्द्र [illegible] मिलन करना भी [illegible] है समाधि लगाना समाधिस्थ होना भी योग है [illegible] के साधन है यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान और समाधि इसी को अष्टाग योग कहते है इनमे यम नियम आसन और प्राणायाम को सामान्य योग तथा प्रत्याहार धारणा ध्यान और समाधि को राजयोग की सज्ञा दी गई है

योग आत्म साक्षात करने आत्मदेव के दर्शन करने आत्मा को परमात्मा मे लय करने तथा परमानन्द प्राप्त करने का साधन है

प्रारम्भिक अवस्था मे जनजीवन मे भोजन करना व्यापार उद्योग चलाना सत्सग-कीर्तन करना सध्या पूजा करना तथा स्वाध्याय करना भी योग की परिधि मे आते है भोजन करते समय हमारा ध्यान ग्रास को चबाने और उसे निगलने मे रहने से योग बन जाता है यह योग हमे स्वस्थ रखने मे अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। व्यापार उद्योग चलाते समय हमारा ध्यान और हमारी दृष्टि केवल अपने व्यापार और उद्योग मे रहती है तो यह योग बन जाना है और उस योग के आधार पर ही व्यापारी अथवा उद्योगपति अपने व्यापार और उद्योग के सम्बन्ध मे भविष्यवक्ता भी बन जाता है।

अच्छे-अच्छे ग्रन्थो का अध्ययन करने का स्वाध्याय कहते हैं। स्वाध्याय करने से हमे ज्ञान की प्राप्ति होती है भगवान कृष्ण ने गीता मे कहा है कि ज्ञान के बिना कर्म अधूरा है और कर्म के बिना ज्ञान बेकार है। कर्म करने मे ज्ञान अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है ज्ञान और कर्म एक दूसरे के पूरक है ज्ञान द्वारा ब्रह्म की प्राप्ति होती है इस प्रकार स्वाध्याय द्वारा ज्ञान और ज्ञान द्वारा ब्रह्म की प्राप्ति को "ज्ञान योग" कहते है कुछ लोग योग को चिकित्सा मानते है मेरे विचार से योग को चिकित्सा रोग निवारण केन्द्र या अस्पताल या डाक्टर अथवा औषधि दवाई मान लिया तो हम जो भी लाभ मिलेगा वह अस्थाई होगा स्थाई नही होगा यदि हम योग को रोग के इलाज तक सीमित रखेगे तो जब हम रोगी बनगे तभी योग की शरण मे उसी प्रकार जायेगे जिस प्रकार हम रोगी होने पर डाक्टर के पास जाते है अथवा अस्पताल मे भर्ती हो जाते

डाक्टर के पास कौन जाना चाहता है अस्पताल म कौन भर्ती होना चाहता है ? यदि रोगी [illegible] विशेषज्ञ डाक्टर के पास जाना भी पडता है तो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] डाक्टर के [illegible] यदि योग को भी चिकित्सा डाक्टर अस्पताल या औषधि समझेगे और अपने रोग के निवारण के लिए ही योग की शरण मे जायेगे तो हमारा रोग ठीक हो गया अच्छा होने के बाद आराम हो जाने के बाद जिस प्रकार हम डाक्टर के पास जाना अथवा रहना बन्द कर देते है उसी प्रकार योग से भी मुह मोड लेगे और यदि रोग का निवारण नहीं हुआ तो योग को गालिया देते हुए ऐसे चले जायेगे जैसे गधे के सिर से सींग चला गया। फिर आप मुड कर कभी भी योग की तरफ नही देखेगे इसलिए मेरे मित्रो योग क्या है इसे समझो।

मनुष्य के जीवन मे योग का क्या महत्व है ? योग हमे क्या दे सकता है ? मेरे विचार से योग के विषय मे आप केवल इतना ही मान ले कि योग एक जीवन पद्धति है। जिस प्रकार आप खाना पीना सोना टट्टी जाना पेशाब करना कमाना तथा मनोरजन करना आदि जीवन के लिए आवश्यक मानते है उसी प्रकार योग को भी अपने जीवन के लिए आवश्यक मान ले। योग मे आप को निरोग स्वस्थ और सक्रिय बनाने तथा बनाए रखने की क्षमता तो है ही साथ ही इस मे आप के अन्दर खुशियां प्रसन्नता भर देने की सामर्थ्य भी है योग आप को सदा आनन्द विभोर रख सकता है इसलिए हे मेरे प्यारे मित्रो साधको और साधिकाओ योग को चिकित्सा के रूप म नहीं अपितु एक जीवन पद्धति के रूप मे अपनाओ

योग को जिस दिन जिस समय भी आप ने अपने जीवन मे अपना लिया उसी दिन से उसी समय से आप अपने अन्दर जो कमियां महसूस करते है उन मे ब्रेक लग जायेगी वे कमियां आगे नही बढ पायेगी वे कमियां फिर धीरे धीरे पीछे हटगी और दूर होनी आरम्भ हो जायगी [illegible] कमियां रफचक्कर हो जायेगी [illegible] शरीर कुन्दन के समान शुद्ध और [illegible] पवित्र हो जायेगा। [illegible] मन [illegible] तनाव से रहित हो कर शान्तिमय हो जायगा [illegible] आनन्दित [illegible]

[illegible] योग को [illegible] निरोग [illegible] वस्तुत [illegible] योग म प्रसन्नता [illegible] हमे आनन्दित रखा [illegible]

शास्त्रार्थ ललकार

पृष्ठ ५ का शेष

[illegible] शास्त्री [illegible] क्यों कि [illegible] घर [illegible] बडी [illegible] मन्दिर [illegible] अंधकार के प्रयत्न [illegible] रहे है ? [illegible] बडी [illegible] बार इनका [illegible] चुनाव [illegible] से दस सहस्र रुपये मागे [illegible] था उस ने धमकी भी दी थी कि मेरे पास दूसरा पक्ष आ रहा है यदि आप लोग रुपये नहीं दोगे तो कैलाशनाथ स समाज भग कराके दूसरे पक्ष के हाथ मे दिला दूगा

लेखक श्री ब्रजमोहन जी गुप्त पी एच डी डी लिट को पता होना चाहिये कि मेरा कैलाशनाथ का कभी आमना सामना नही हुआ मै कभी प्रतिनिधि सभा के निवाचन म नहीं गया यद्यपि मुझ पर प्रदेश के प्रतिष्ठित आर्य बन्धुओ ने अत्यन्त आग्रह पूर्वक दबाब बारम्बार डाला स्वर्गीय स्वामी ध्रुवानन्द जी मुझे सार्वदेशिक में चाहते थे। १३-४ ६६ का उन्होने आसू बहाकर कहा "तेरी सार्वदेशिक को आवश्यकता है मेरे ऊपर प्रभु कृपा है कि मेरे मन म पद लोलुपताके प्रति घृणा इतनी गहरी है कि किसी मूल्य पर भी मुझे यह प्रवृत्ति स्वीकार नहीं।

श्री ब्रजमोहन जी से कहना चाहता हू कि वह कैलाशनाथ जी की वकालत न करे अपितु उनसे कह कि वह स्वय लिखे। आर्य मित्र साप्ताहिक उनके हाथ मे है आर्य समाजो और प्रतिनिधि सभा की सम्पत्ति उनके पास है। मैं तो भिखारी हू और पत्र मेरा मासिक है किन्तु यदि इसी प्रकार की वकालत उन्होने अन्यो करायी तो अभी और भी पृष्ठ [illegible] के उन [illegible] चाहता हू कि [illegible] लेश भी [illegible] है [illegible] आर्य समाज [illegible] कैलाशनाथ जी [illegible] सच्चिदानन्द जी गुप्त [illegible] मे सन्यासियो [illegible] बुलाकर [illegible] की बात पूछे [illegible] तक न [illegible] दिन [illegible] उत्सव पर जब यह लखनऊ [illegible] आर्य समाज के मत्री थे [illegible] पर [illegible] आया हू [illegible] क्षेत्र जी भजनापदेशक थे उनके लिये बिस्तर भी था भोजन और तेल-साबुन के साथ-साथ दूध और फल मिठाइ आदि भी थे मेरे लिये कुछ नही था लगातार सूखे शरीर वाला मे बूढा सन्यासी लकडी के उस फट्ट पर चार दिन काटकर और बाजार मे दूध चाय बिस्कुट तथा सेव आदि फल अपने पास के पैसो से खाकर निरन्तर दोनो समय प्रवचन करता रहा हू, उत्सव का कार्यक्रम नही बिगडने दिया और मच पर एतद्विषयक इगित भी नहीं किया जब मुझे पता चला कि गुप्त जी प्रदेश के शिक्षा मत्री भी रहे चुके हैं तो उस समय केवल इतना ही कहा कि इस देश का ईश्वर ही रक्षक है जिसमे इतने निकृष्ट कोटि के मत्री और वह भी शिक्षा मत्री रहते है। आर्यो ! कल्पना करो कि यदि महर्षि दयानन्द का आत्मा इस सारे खेल को देखता हो तोइस प्रकार के लोगो का साथ देने पर तुम्हार बारे मे क्या सोचेगा। अतएव आर्य बन्धुओ ! आर्यत्व आर्य समाज और ऋषि दयानन्द के नाम पर आप लोगों की चेतना को झकझोर रहा हूँ आप अपने आपको ऐसे आर्य समाज के विनाशको के सहयोग रूप पापकर्म से और आर्य समाज को विनाश के गर्त मे जाने से बचाओ

सुख दुःख किसके गुण

पृष्ठ ७ का शेष

उतनी ही आवश्यक समझी गई है।

इससे इतना और स्पष्ट होगया है कि अपवर्ग की प्राप्ति के लिए उसका प्रयत्न स्वाभाविक है। सामान्यत हमे यह बात उस चेतन के आत्मा इस अन्वर्थ नाम से भी ज्ञात होती है सातत्यगमनअर्थवाली अत धातु ये सकेत दे रही है कि प्रयत्न जीवात्मा का स्वाभाविक गुण है कपिल मुनि और पतजलि के विचार से सुख और दुख कर्मफल ही हैं ससार मे रहकर जीवात्मा इन्हे भोगता है यही ससार की विचित्रता है। इसे थोडासा विचार करने से यह और भी स्पष्ट हो जाता है कि इन्द्रिया विषयो को ग्रहण कर अन्त करण को पहुचा देती है और सुखदुखादि रूप मे परिणत हुई बुद्धि चेतन आत्मा मे उपस्थित होकर आत्मा की सुख दुखादि विषयक अनुभूति का साधन बनती है और यह अनुभूति चेतन के अस्तित्व की साधक है बाधक नहीं। इसमे इतनी बात और जान लेनी आवश्यक है कि सुख की प्राप्ति अथवा सुख–दुख का भाग भोगाधिष्ठान (देह) अथवा भोगायतन (शरीर) मे ही सम्भव है अन्यत्र नहीं। इस कथन से जो बाते स्पष्ट हुई वे इस प्रकार है –

१ कपिल मुनि सुख–दुख को प्रकृति के गुण नहीं मानते

२ सुख और दुख पुण्य और पाप कर्मों के फल हैं।

३ कर्मों की विचित्रता से फलो मे विचित्रता होती है।

४ सृष्टि की विचित्रता मे कर्मों की विचित्रता ही कारण है।

५ प्रयत्न अथवा कर्तृत्व जीवात्मा मे स्वभाव से है। आत्मा चेतन और ज्ञाता है।

७ सुख दुख रूप मे कर्मफल की प्राप्ति भोगाधिष्ठान (शरीर) मे ही होती है।

अब न्याय और वैशेषिक पर थोडा गहराई से विचार अपेक्षित है। न्याय आत्मा में ६ और वैशेषिक १४ गुण मानता है। इसमे यह बात अधिक ध्यान देनेकी है कि लक्षण लक्ष्य तक पहुचाता ही है यह चिह्न ही पहचानमात्र है। महर्षि गौतम ६ लक्षणो से जीवात्मा की पहचान निश्चित करते हैं और महर्षि कणाद १४ लक्षणो स उसे पाहचानना स्वीकार करते हैं। निश्चित है कि दर्शनकार दो प्रकार के लक्षणो को स्वीकार करते है। एक वे लक्षण हैं जो लक्ष्य तक पहुचाते हैं। वे लक्षण "तटस्थ लक्षण कहे जा सकते है। दूसरे वे लक्षण जो लक्ष्य के स्वरुप का निर्धारण करते हैं ये दूसरे प्रकार के लक्षण "स्वरुप लक्षण कहे जाते हैं।

इस प्रकार यह जान लेना चाहिए कि गौतम और कणाद जिन लक्षणो से जीवात्मा का पहचानना मानते है वे तटस्थ लक्षण ही है स्वरुप लक्षण नहीं। स्वरुप लक्षण इससे भिन्न हैं। (न्याय और वैशेषिक)।

ज्ञानाधिकरणमात्मा।

अर्थात ज्ञान का आधार आत्मा है आत्मा के सुख दुखादि स्वाभाविक गुण नहीं हैं।

महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश मे यच्चेतनवत्त्वम तज्जीवत्वम ऐसा लिखते है। इससे स्पष्ट है तटस्थ लक्षण जीवात्मा का स्वरूप लक्षण नही है। यदि सुख दुख को आत्मा का स्वरूप मान लिया जायेगा तो स्वभाविक गुण का छूटना कैसे सम्भव हो सकेगा। महर्षि कपिल ने यही बात साख्य मे कही है –

न नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभावस्य
तद्योगस्तद् योगात ऋते।

(साख्य १। १९)

अर्थात नित्य शुद्ध (विविक्त) बुद्ध (बोधस्वरूप) मुक्त पृथक्भिन्न) जीवात्मा का शरीर मे बन्धन प्रकृति के बिना नहीं होता। प्रकृति मे बन्धन भी अविवेक से अथात मिथ्या ज्ञान से ही सम्भव है।

तद्योगोऽपि अविवेकान्न समानत्वम।

(साख्य० १। २०)

इस प्रकार यह बात सहज ही मे समझ मे आ जाती है कि आत्मा म ज्ञान स्वाभाविक है किन्तु प्रकृति मे फसकर वह अपने स्वरुप को भूल जाता है यही उसका मिथ्याज्ञान है। इससे सिद्ध है कि आत्मा मे ज्ञान और प्रयत्न दोनो स्वभाव से है। जीवात्मा अल्प परिछिन्न तथा अल्पज्ञ है उसे सभी वस्तुए प्राप्त नहीं है उसमे अप्राप्त को प्राप्त करने की इच्छा रहती है। इसके विपरीत परमात्मा आप्तकाम है उसका ज्ञान भी अनन्त है उसकी शक्ति भी असीम है। जीवात्मा का ज्ञान भी अल्प और उसकी शक्ति भी अल्प ही है। इस इतने लेख से यह बात समझ मे आती है कि जीवात्मा के स्वाभाविक गुण कौन से हैं ? सुख–दुख का स्वाभाविक गुणो मे समावेश सम्भव नहीं है तब फिर ये नैमित्तिक सिद्ध हुए । पुण्य और पाप के निमित्त से सुख और दुख रूप फल को जीवात्मा ससार मे आकर भोगायतन शरीर मे प्राप्त करता है यह इस पूर्वोक्त कथन का निष्कष समझना चाहिए।

यही मान्यता सभी दर्शनकारों की है वैदिक मान्यता भी यही है। महर्षि दयानन्द की मान्यता भी यही जाननी चाहिए। साथ ही यह बात विशेषरूप से जान लेनी चाहिए कि महर्षि दयानन्द ने सभी दर्शनकारो के विचारो का समन्वय किया है। उस समन्वय को गम्भीरता से समझने की आवश्यकता है। साख्य क प्रसग मे न्याय को वैशेषिक के प्रसग मे वेदान्त को नहीं समझा जाना चाहिए। यदि ऐसा समझा जायेगा तो सारा मामला गडबड हो जायेगा ओर कुछ भी समन्वय नहीं हो सकेगा।

विवादरत दोनो विद्वानो का अभिमत भी यही है किन्तु शाब्दिक हेरफेर मात्र है जो विवाद का कारण है। यदि श्रद्धेय स्वामी सत्यपति जी प्रकृति के गुण न कहकर सृष्टि मे जीवात्मा को शरीर मे प्राप्त होनेवाले कर्मफल हैं ऐसा कहे तो कोइ अन्तर नहीं पडता। जबकि प्रतिपक्षी विद्वान श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय सुख–दुख को जीवात्मा की अनुभूतिया स्वीकार करते हैं। स्वाभाविक हैं या नैमित्तिक इसमे उनका कोई मतभेद नहीं है। यदि श्रोत्रिय जी की छोटी सी पुस्तक मे जो कि दार्शनिक भी नहीं है उसे इतना तूल न देते तो भी ठीक था।

वास्तव मे दशनशास्त्र की गुत्थियों को जिज्ञासापूर्वक परस्पर सौहार्दभाव से सुलझाया जाना ही श्रेयस्कर है चैलेज देना कोई समाधान प्रस्तुत नहीं करता। ये विचार सद्भावना से लिखे हैं कोई त्रुटि हो तो क्षमाप्रार्थी हू।

आर्य संन्यासियों का कर्तव्य

पृष्ठ ४ का शेष

पतित हो जाते हैं उन सबका निषेध करता रहे। विद्वानो और परमेश्वर से भिन्न न किसी को देव तथा विद्या योगाभ्यास सत्सग और सत्यभाषणादि से भिन्न किसी को तीर्थ और विद्वानो की मूर्तियो से भिन्न पाषाणादि मूर्तियो को न माने न मनवावे। वैदिक मत की उन्नति और वेद विरूद्ध पाखण्ड मतो के खण्डन करने मे सदा तत्पर रहे।

(१०)वेदादि शास्त्रो मे श्रद्धा और विरोधी ग्रन्थो व मतो मे अश्रद्धा किया कराया करे। खण्डनीय कर्मों का खण्डन करना कभी न छोडे। कर्म करता हुआ स्वय आनन्द मे रहकर सबको आनन्द मे रखे।

(११) सर्वदा निर्वैरता सत्य बोलना सत्य मानना सत्य करना मन कर्म वचन से अन्याय करके परपदार्थ का ग्रहण न करना चाहिये न किसी को करने का उपदेश करे। सदा जितेन्द्रिय होकर अष्ट विध मैथुन का त्याग रख के वीय की रक्षा और उन्नति करके चिरञ्जीवी होकर सबका उपकार करता रहे। अभिमानादि दोश रहित किसी ससार के धनादि पदार्थों मे मोहित होकर कभी न फस।

(१२)बाहर–भीतर से पवित्र रहना पुरूषार्थ करते जाना और हानि–लाभ मे प्रसन्न और अप्रसन्न न होना सदा पक्षपात रहित न्याय रूप धर्म का सेवन प्राणायामादि यागाभ्यास करना सदा प्रणव का जप अथात मन म चिन्तन आर उसके अथ इश्वर का विचार करत रहना अथात अपन आत्मा का ददोक्त परमेश्वर की आज्ञा मे समर्पित करक परमानन्द परमेश्वर के सुख को जीता हुआ भोगकर शरीर छोड के सवानन्द युक्त मोक्ष का प्राप्त होना सन्यासिया का मुख्य कर्म है।

अनुपम आदर्श सन्यासी

आर्य समाज के महान सस्थापक पूज्य महर्षि दयानन्द सरस्वनी ने ससार मे अनुपम आदर्श सन्यासी के रूप म अपने कत्तव्य–कम का जीवन पयन्त निवहन किया है इसम कोई अतिशयोक्ति नही है। उन्हाने सन्यास–धर्म का अक्षरश पालन किया है। परम योगी होत हुए भी जीवन की मुक्ति को गोण समझकर ससार क उपकार को सर्वोच्च महत्व दिया है। पद–लोलुपता मान–सम्मान धनादि प्राप्ति आदि सासारिक माह उन्हे अपने पवित्र कत्तव्य माग से तिल मात्र भी विमुख न कर सके। उनक जीवन चरित्र मे कई उदाहरण है जो इस बात के साक्षी है–

(१) बम्बई मे आर्य समाज की स्थापना के पश्चात कतिपय सभासदो ने स्वामी जी को आर्य समाज का अधिनायक या सभापति बनाने का प्रस्ताव किया परन्तु स्वामी जी ने उसे अस्वीकार किया। सदस्यो के विशेष अनुरोध करने पर उन्होने कहा कि यदि आप की ऐसी ही इच्छा है ता आप मुझे अन्य सभासदो की भाति एक सदस्य बना सकते हैं। तदनुसार स्वामी जी का नाम भी सभासदो के रजिस्टर मे अकित किया गया और वह अन्य सभासदो की भाति चन्दा दते रहे।

(२) एक समय वे लाहौर के समाज मन्दिर मे व्याख्यान दे रहे थे। समाज के कई श्रद्धालु पुरूषों ने स्वामी जी से यह प्रार्थना की कि आप समाज के गुरू या आचार्य की पदवी धारण करे। स्वामी जी ने कहा कि इस प्रस्ताव मे गुरूपन की गध आती है। क्या आप यह चाहते है कि मै भी गुरू बन कर एक नया पन्थ चलाऊँ ? मेरा उद्देश्य तो गुरूपन की जड काटना है इसके विरूद्ध आप मुझ से ही उसके स्वीकार करने की प्रार्थना करते है जिसके नाम से मुझे द्वेष वा नफरत है। यह सुनकर सब चुप हो गए परन्तु एक महाशय ने भक्ति के वेग मे आकर स्वामी जी से कहा कि अच्छा और नही तो हम आप को समाज का परम सहायक कहेगे। इस पर स्वामी जी ने पूछा कि यदि मुझे समाज का परम सहायक कहोगे तो परमेश्वर को क्या कहोगे ? इसका क्या उत्तर हो सकता था ? विद्वान स्वामी जी ने समाजिक पुरूषो को बिल्कुल निराश न करने के लिये यह आज्ञा दे दी कि यदि आपका यही आग्रह है तो मेरा नाम समाज के सहायको मे लिख लीजिए।

(३) एक बार आर्य समाज लाहौर की अनतरग सभा मे समाज के उपनियमो पर विचार हो रहा था। सयोग से उस समय स्वामी जी भी वही विराज रहे थे। उस अवसर पर उनसे प्रार्थना की गई कि इस विषय मे आप भी सम्मति दे। उन्होने स्पष्ट उत्तर दे दिया कि मै आपकी अन्तरग सभा का सभासद नही हू इसलिये मुझे सम्मति देने का अधिकार नही है।

(४) हरिश्चन्द्र चिन्तामणि ने स्वामी जी का फोटू लेना चाहा तो उन्हाने उसमे यह आपत्ति की कि भविष्य मे यह सम्भावना हो सकती है कि लोग और विशेष कर आर्य समाजी उन की प्रति कृति की पूजा करने लग जाय। हरिश्चन्द्र न उनका फोटू तो ले लिया परन्तु उन्हाने विशेष रूप स यह आदश कर दिया कि आय समाज मदिर म उनका फोटो न रक्खा जाय तदनुकूल आय समाज मन्दिर मे उनका आदश प्रतिपालित होता रहा

(५) एक बार स्वामी जी लाहौर म ठहरे हुए थे। तब काश्मीर पति महाराज रणवीर सिह ने प मनफूल द्वारा स्वामी जी स अनुराध किया था कि आप जा कुछ आर काय कर रहे हे किए जाय परन्तु मूत्ति पूजा के विराध मे कुछ न कहे। यदि आप ऐसा करे तो मै अपना धनागार आपक समर्पण कर दूगा। परन्तु दयानन्द ने इसका क्या उत्तर दिया ? उन्होने पण्डित मनफूल से कहा कि मै वेद प्रतिपादित ब्रह्म का सन्तुष्ट करूगा न कि काश्मीर–पति को। आप ऐसी बात फिर मेरे सामने न कहिये।

(६) एक दिन उदयपुर के महाराज ने एकान्त मे अत्यन्त विनम्र भाव से स्वामी जी स निवेदन किया कि राजनीति के सिद्धान्त के अनुसार आपको मूर्ति पूजा का खण्डन न करना चाहिये। यह तो आप जानत है कि यह राज्य एक लिग महादेव के अधीन है। आप एकलिग के मदिर मे महन्त बन जावे। कई लाख रूपये पर आपका अधिकार हो जावेगा और एक अर्थ मे यह राज्य भी आपके अधीन रहेगा। महाराज बडे शान्त प्रकृति के थे और उन्हे क्रोध बहुत कम आता था। परन्तु महाराज के इस प्रस्ताव को सुनकर उन्हे आवेश आ गया और कडक कर बोले कि आप लोभ देकर मुझ से सर्व शक्तिमान परमेश्वर की आज्ञा भग कराना चाहते है मुझे कभी भी वेद और ईश्वर की आज्ञा भग करने पर उतारू नही कर सकते। मै कदापि सत्य को छोड या छिपा नही सकता। आगे से आप विचार कर बात कहा करे। महाराज के वचनो को सुनकर एकदम स्तम्भित हो गये उन्हे कदापि ऐसे वचनो की आशा न थी। अन्त को महाराज को यही कहते बना कि मैने यह सब देखने के लिये कहा था कि आप इसके खण्डन पर कितने दृढ हैं। मुझे ज्ञात न था कि आप अपने विचारो पर इतने दृढ हैं। अब मुझे आपके दृढ विश्वास का पूव की अपेक्षा अधिक निश्चय हो गया।

आज भारत देश मे ही नही अपितु समस्त ससार मे अशान्ति का वातावरण व्याप्त है। क्या धार्मिक क्या राजनैतिक क्या आर्थिक और क्या सामाजिक सभी दृष्टि से विषमतर स्थिति बनी हुई है। आध्यामित्क गुरु कहलाने वाले देश मे धर्म का सच्चा स्वरूप ही नष्ट प्राय हो रहा है। आज विभिन्न प्रार के मत–मतान्तर व धार्मिक आडम्बर समाज मे साम्प्रदायिक विद्वेष धृणा वा नफरत की आग सुलगा रहे है। पारस्परिक प्रेम भाईचारा सहयोग सहानुभूति सत्य अहिसा समानता व न्याय क स्थान पर समाज मे स्वार्थ कटुता बेईमानी भ्रष्टाचार अनैतिकता शाषण अन्याय व हिसा आदि बुराईया चरम सीमा पर पहुच चुकी है। मनुष्य भौतिक सुखो के पीछे मद–मस्त हो रहा है। उसे आध्यात्मिक सुख या मुक्ति की कोइ कामना नही है सच्चा सुख तो धर्माचरण मे ही है। धम का सच्चा माग ये मत–मतान्तर नही दिलवा सकते। क्योकि उन मे धार्मिक सकीणता व कट्टरता होती है

वेदा द्वारा प्रतिपादित आर ऋषियो द्वारा निर्देशित धम के सच्चे स्वरूप का कवल आय सन्यासी ही भली प्रकार समझा सकते है। अत आय समाज व आय सन्यासियो के ऊपर गुरुतर भार आ पडा है अत हे पूज्य सन्यासिया आप अपने सन्यास धम को हृदयगम कर आर ससार क कल्याण के लिय सत्य सनातन वैदिक धम का शखनाद पुन विश्व म गूजा द यह प्रसन्नता की बात है कि देश म वैदिक यति मण्डल का गठन हो चुका है। अत वदिक धर्म के प्रचार प्रसार हेतु वार्षिक योजना या कार्यक्रम तैयार करके विद्वान सन्यासियो व भजनोपदेशको की टोली या दल बनाकर पहल देश म आर फिर विदश म भ्रमणाथ प्रस्थान करे। किसी एक स्थान म स्थिर न रहे सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा आय प्रादेशिक सभा प्रान्तीय आय प्रतिनिधि सभाए आय समाज की सस्थाए और गृहस्थ आर्य सभासद सभी इन पूज्य सन्यासियो व समादरणीय उपदेशको के प्रति सच्ची श्रद्धा व सम्मान रखते हुए उनक खाने पीने वस्त्र निवास भ्रमण व भट आदि की सम्पूर्ण व्यवस्था तन मन व धन से अपन अपने सामथ्य के अनुसार कर क्योकि इन्होने घर परिवार एव निजी व्यवसाय को तिलाजलि दी है। दश काल व परिस्थिति के अनुसार विद्वान सन्यासियो का भिक्षावृत्ति पर आश्रित रहना भी समीचीन प्रतीत नही होता। विशेष रूप से सन्यासिया उपदशको वृद्धावस्था व रोगावस्था मे उत्तम सवा हेतु सावदशिक सभा व प्रान्तीय आय प्रतिनिधि सभाए अपने उत्तरदायित्व के निर्वहन म पूण सजगता बर्ते। उनके अन्तिम दाह कम सस्कार की भी पूर्ण व्यवस्था करावे।

यति मण्डल और सार्वदशिक सभा को मिलकर कार्यक्रम तैयार करना चाहिये। एक दूसरे के प्रति पूर्ण श्रद्धा व सम्मान का भाव रखते हुए एक दूसरे को पूण सहयोग देना अपना कत्तव्य समझना चाहिये। सार्वदेशिक सभा और प्रान्तीय समाजो को चाहिये कि समय समय पर आय समाज का दिशा–निर्देश प्रदान करे। जिसस सन्यासियो की सम्पूर्ण व्यवस्था उत्तम प्रकार से हो सके।

"आज हम भारतीय संस्कृति को भूल गये"

श्री महर्षि दयानद शिक्षण समिति के द्वारा वैदिक शिक्षा प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह मे गत तारीख १७ ०५-९६ को पडित यज्ञेन्द्र जी आर्य होशगाबाद ने सम्बोधित करते हुए कहा कि वैदिक शिक्षा मूल का आधार वेद है जिनके द्वारा ज्ञान प्रदान करने की विशेष पद्धति है जिससे बालक मे सदज्ञान सदाचार सभ्यता एव सास्कृतिक गुण उत्पन्न होते हैं अत मानवता के गुणो को जागृत कर श्रेष्ठ मानव बनाये जिससे बच्चो मे भारतीय सस्कति के विचार व आचरण आवे। आज सर्वत्र पाश्चात्य सभ्यता का बोलबाला है। भारत के बच्चे इस सस्कृति मे पलकर भारतीय सस्कृति को भूल गये हैं। अत वैदिक शिक्षा का यह प्रयोग इस दिशा मे एक प्रशसनीय प्रयास है जो आर्य समाज रमा कालोनी मे भव्य सस्कृति का प्रचार किया ये शिक्षिकाए जिन्होने प्रशिक्षण कार्य किया उनके द्वारा शिक्षित बालक-बालिकाए अपनी सस्कति एवम सभ्यता को पहचाने ये जो भावी निर्माण मे प्रयुक्त होगा।

इस अवसर पर श्री बसत देशपाडे सहायक महाप्रबधक राष्ट्रीय एव ग्रामीण विकास बैंक मुख्य अतिथि साहित्यकार श्री राजेन्द्र गायकवाड जिला जेल अध्यक्ष श्री राजेन्द्र परिहार अध्यक्ष माणिक वाचनालय पार्षद श्रीमति हसमुख जोशी श्रीमती चन्द्रकाता पालीवाल श्रीमती गोपीदेवी गिदवानी पडित रामचन्द्र जी आर्य श्री कैलाशचन्द्र पालीवाल हीरालाल जी आर्य ने भी वैदिक शिक्षा पर अपने विचार प्रकट किये। आभार प्रदर्शन श्री लक्ष्मीनारायण चौरे ने किया। अतिथि का स्वागत श्री छगनलाल जी चौधरी श्री वीरेन्द्र सोहनी ने किया।

पुस्तक समीक्षा

सत्यार्थ प्रकाश दिग्दर्शन

लेखक यशपाल आर्य बन्धु

प्रकाशक-सरस्वती साहित्य सस्था
२६५-जाग्रति इन्क्लेव दिल्ली ३५
पृ. ४२ मू. ५ रू.

महर्षि का शोध ग्रन्थ है सत्यार्थ प्रकाश। इसमे अविद्या तम को हरने के लिये ज्ञान का प्रकाश विश्व को दिया है। इस लघु विवेचन मे लेखक यह स्पष्ट करते है कि ग्रन्थ रचना की पृष्ठ भूमि उसके लेखन का प्रेरक और रचना का उद्देश्य क्या है।

ऋषि विद्या की वृद्धि तो चाहते हैं पर अविद्या के नाशक भी है। ध्यान रहे कि विचार स्वातन्त्र्य कोई बात नही है युग निमाण की कला है ऋषि दोनो हाथो से दुहरा वार करते है एक से मण्डनात्मक विचार और द्वितीय से खण्डतात्मक अत दोनो शैली व्यक्ति के हाथ है।

जागते मानव को मण्डन की चाह है और सोये हुए को जगाने की लालसा। इसीलिये शैली कभी विषय प्रधान और कभी व्यक्ति प्रधान रहती है।

तर्क प्रधान शैली के साथा महत्व भी है प विहारी लाल शास्त्री के शब्दो मे

दयानन्दस्य सिद्धान्तः शुद्धास्तर्क समन्विता।
नच खण्डयितु शक्या मायावाद विमोहितै।।

अगद ऋण पृ. ११

इस लघु पुस्तिका के प्रकाशक धन्य है जो गागर मे सागर भरकर मय पान कराते हैं पाठक वृन्द लाभान्वित हो।

डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री

प्रार्थना विज्ञान

लेखक-यशपाल आर्य बन्धु
प्रकाशक-सरस्वती साहित्य सस्था

२६५-जाग्रति इन्क्लेव दिल्ली ३५
पृ. ५२ मू. ४-५०

प्रार्थना विज्ञान है। किससे प्रार्थना कौन करे प्रार्थना म नारायण स्वामी जी ने प्रार्थना को विज्ञान ही माना है। प्रार्थना करने वाला कमजोर होता है जिससे प्रार्थना की जाय वह सामर्थ्यवान हो। प्राथनाये हर जगह होती ही रहती हैं इस लघु पुस्तिक का विवेचन है।

प्रार्थना का रूप भी सत्य का स्वरूप होना चाहिये। पुरूषाथ पूर्ण प्रार्थना ही फल दायक है। प्रार्थना तर्क का नही अनुभव का विषय है।

महर्षि ने आर्योद्देश्य रत्नमाला मे प्रार्थना से पूर्व जिससे कुछ चाह है उसकी स्तुति करो तव स्तुति फिर प्रार्थना इन दोनों का रहस्य है उपासना प्रार्थना मे अदभुत शक्ति है गलत प्रार्थना भी स्वीकार्य नही हैं।

आत्मोन्नति का अमोध साधन प्रार्थना कब करे कैसे करे इसका विवेचन इस पुस्तिका मे लेखक ने किया है

प्रकाशक भी धन्य है जो खेत के दानो से बुद्धि के दौर्वल्य को दूर करते है।

डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री

दिल्ली की समस्त आर्य समाजो को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान

पं॰ वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी की

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय शिविर ६ जून से २३ जून ६६ तक शिक्षा भारती पब्लिक स्कूल पालम गाँव नई दिल्ली–४५ मे होगा। जिसमे देश भर के लगभग १००० (एक हजार) आर्य वीर भाग लेगे।

२३ जून को शिविर समापन समारोह मे अभूत पूर्व व्यायाम प्रदर्शन सैनिक परेड होगी जिसे देखने वाले उसे भुला नहीं पायेगे।

इस अवसर पर समस्त आर्य समाजो से अपील है कि अपनी–अपनी आर्य समाजो से कम से कम एक बस भरकर झण्डे–बैनर आदि लगाकर शिविर स्थल पर २३ जून प्रात ६ बजे तक अवश्य पहुचकर आर्य वीरो का मनोबल बढावे।

शिविर स्थल पर दोपहर १ बजे से ऋषि लगर की भी समुचित व्यवस्था है। निश्चित समय पर अवश्य पहुचे।

शिविर स्थान शिक्षा भारती पब्लिक स्कूल पालम गाव नई दिल्ली–४५

विरक्त प्रशिक्षण शिविर

समय–३ जून सोमवार सायकाल से १ जुलाइ १६६६ सोमवार तक।

स्थान–

(१) ३ जून से १६ जून अमावास्या तक–
वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून पिन २४८००६ (फोन ६८७२०६)

(२) १७ जून सोमवार से १ जुलाई सोमवार पूणिमा तक–
पातञ्जल योगधाम आर्य नगर ज्वालापुर हरिद्वार पिन २४६४०७
फोन (०१३३) ४२४६६१

अध्यक्ष

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

प्रशिक्षण के विषय

(१) ध्यान योग
(२) आयुर्वेदिक चिकित्सा
(३) प्रवचन कला एव गायन विद्या

प्रशिक्षणार्थियो की योग्यता

(१) कम से कम कक्षा ८ पास या तत्सम हिन्दी पढने का अभ्यास हो।
(२) दीक्षा ले चुके हो या दीक्षा लेने के इच्छुक हो।

आवश्यक सामान–योग दशन चिकित्सा के ग्रन्थ कापी पेन ऋतु अनुकूल बिस्तर पात्र टाच आदि साथ लावे।

प्रातराश भोजनादि का व्यय २०/ रु. प्रति दिन के हिसाब से ६००/ रु देना होगा।

पूरा व्यय देने मे असमर्थ शिविरार्थी व्यवस्थापको को सूचित करे।

जीनत ने वैदिक धर्म स्वीकार किया

आर्य समाज वसन्त विहार नई दिल्ली मे कु॰ जीनत ने इस्लाम मत को त्याग कर पवित्र वैदिक धर्म स्वीकार किया। कु जीनत का नाम भाग्य लक्ष्मी रखा गया। बाद मे इस युवती श्री राजेश कुमार के साथ रचा गया। विवाह सस्कार मे वधु की मा तथा भाइ उपस्थित थे। वर का पूरा परिवार अति प्रसन्न था। भुद्धि तथा विवाह सस्कार आर्य पुरोहित प गणेश रात शर्मा ने सम्पन्न किया।

वधु चाहिए

प्रजापति जिलेन्द्रा गोत्र उम्र २५ वष कद ५७ ग्रेजुएट बी पी एड दिल्ली मे स्टेशनरी टाइप फोटोस्टेट S T d F4X etc का व्यवसाय स्वस्थ एव सुन्दर युवक के लिए योग्य शिक्षित गृह कार्य मे दक्ष सुशील सजातीय कन्या की आवश्यकता है। दिल्ली हरियाणा राजस्थान के निवासियो को प्रमुखता ।

सम्पर्क करे।
श्यामलाल वर्मा एवन स्टेशनर्स MS 87
हरिनगर (C T) न दिल्ली ११००६४

आदर्श विवाह

दिनाक ३–५–६६ को मध्य भारतीय आय प्रतिनिधि सभा क रतलाम सम्भाग के उप प्रधान खुशालचद आर्य एव उनके भाई पराशर आय की सुपुत्रीया कुमारी वषा आर्य एव हेमलता का शुभ विवाह कचरूलाल एव द्वारकीलाल क साथ पूण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

विवाह सस्कार अ भा आर्य प्रतिनिधि सभा के मत्री श्री राम अवतारजी शर्मा (मदसपैर) म प्र के द्वारा सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर नगर के गणमान्य नागरिको एव आर्य समाज गरोठ के प्रधान ओमप्रकाश आय एव उप प्रधान भागोलालजी पतरावाला ने वर वधूओ को आशिवाद दिया एव सेकडो ग्रामीणो ने वैदिक विवाह को सराहा।

विवाह के अवसर पर किसी प्रकार के दहेज आदि का लेन देन नही हुआ। ग्रामिणो एव स्थानीय लोगो पर इस वैदिक विवाह का बहुत अच्छा प्रेरणा दापक प्रभाव पडा।

निःशुल्क ध्यानयोग-वैदिक दम्पती निर्माण संस्कार प्रशिक्षण शिविर

(दिनाक २३ जून रविवार से ३० जून रविवार १६६६ तक)

शिविर की विशेषताए

१ शिविरमध्य अष्टाग–योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा जिससे आप शारीरिक सुख–स्वास्थ्य मानसिक शान्ति और आत्मिक आनन्द प्राप्त कर सकेगे।

२ पच महायज्ञो और सस्कारा का क्रिया त्मिक प्रशिक्षण प्राप्त कर माता–पिताओ पुत्र–पुत्रियो ओर पुत्र–वधुओ को कर्त्तव्य पालन का बोध होगा और वास्तविक जीवन पद्धति का ज्ञान प्राप्तकर मनुष्य जन्म सफल बना सकेगे।

३ गृहस्थाश्रम प्रवेश से वानप्रस्थाश्रम तक की सभी समस्याओ और शकाओ का समाधान पाकर आप सन्तानो का निर्माण करने के साथ आश्रम मर्यादाओ का पालन करते हुए भावी जीवन को निर्माण–गृहस्थाश्रम प्रवेश विधि का विशेष ज्ञान प्राप्त करेगे। जिससे आपको शान्त और सुखी रहने की कला हाथ लगेगी।

शिवराध्यक्ष–पूज्य स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक।

योग साधना निर्देशक–पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी दुखाहारी मुख्याधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम।

यज्ञ ब्रह्म–श्री प॰ विद्याव्रत जी शास्त्री सम्पादक यज्ञ–योग ज्योति।

प्रमुख वक्ता–श्री आचार्य विश्वबन्धु जी तर्क शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी बुडीना (उ॰ प्र॰)

योग द्वारा कायाकल्प–समस्त रोगो का उपचार–श्री प्रेमजी भाटिया योग विशेषज्ञ एव उपचारक दिल्ली

इस शुभावसर पर अनेक उच्चकोटि के वक्ताओ सन्यासी–महात्माओ को आमन्त्रित किया गया है मनोहर भजनो–सगीत का कार्य–क्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहेगा।

आवश्यक निवेदन–योगदर्शन सत्यार्थ प्रकाश सस्कार विधि लेखनाथ कापी पैन ऋतु अनुसार बिस्तर साथ लेकर आये। भोजन तथा निवास का प्रबन्ध आश्रम की ओर से निशुल्क होगा। इच्छुक दम्पति परिवार १५ जून तक अपना नाम प्रेषित कर देवे।

आत्मशुद्धि आश्रम (प॰ न्यास)
बहादुरगढ–१२४५०७ (हर॰)

अब भारत भी भीषण बीमारी की चपेट मे

आज से लगभग सोलह वष पूव दुनिया मे पहली बार एच आइ वी विषाणुओ का पता चला था इन बीते सालो मे यह घातक रोग बन गया है। इसमे विषाणुओ ने भौगोलिक सीमाओ सामाजिक आर्थिक सास्कृतिक या धार्मिक क्षेत्र सभी सीमाओ को लाघकर दुनिया भर मे अपने पाव पसार लिए है।

विश्व स्वास्थ्य सगठन के अनुसार सन २००० तक दुनिया मे २ करोड लोग एच आई वी स ग्रस्त होगे। हालाकि इस बीमारी से प्रभावित अधिकाश लाग उप सहारा–अफ्रीका और अमेरिका के है। लेकिन अब भारत भी इससे अछूता नहीं रह गया है। १६८६ मे जबकि भारत मे पहली बार एच आई वी पाजिटिव और एडस् के पहले मामले का पता चला था तब से इन दस वर्षो के भीतर यह लाइलाज रोग देश के सभी राज्यो और केन्द्रशासित प्रदेशो मे पहुच गया है एडस महाराष्ट्र तमिलनाडु और मणिपुर जैसे राज्यो मे बहुत तजी से फैला है जबकि अन्य राज्यो पर यह अपने शुरूआती दौर मे है।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 9 6 96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/96
R N N 026/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 6/7-6-1996

आर्य समाजों के निर्वाचन

श्री कृष्ण गौशाला बूढी बावल	
प्रधान	चौ लाल सिह जी
मत्री	श्री दिलीप मुनि
कोषाध्यक्ष	श्री बहल सिह

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग बीकानेर	
प्रधान	डा मनमोहन भाटिया
मत्री	श्री बलवीर सिह आर्य
कोषाध्यक्ष	श्री भवर लाल आर्य

आर्य समाज राजा का ताजपुर	
प्रधान	श्री धर्म वीर दत्त
मत्री	श्री प्रेम राज सिह
कोषाध्यक्ष	श्री मूल चन्द्र जी

आर्य समाज पुजला नयापुरा जोधपुर	
प्रधान	श्री जगदीश सिह आर्य
मत्री	श्री महेन्द्र सिह टाक
कोषाध्यक्ष	श्री नेमी चन्द्र जी भाटी

आर्य समाज अशोक नगर दिल्ली	
प्रधान	श्री भीम सेन अरोरा
मत्री	श्री प्रकाश चन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष	श्री मिठन लाल आर्य

आर्य समाज केराकत जौनपुर	
प्रधान	श्री विश्वनाथ आर्य
मत्री	श्री मिश्री लाल आर्य
कोषाध्यक्ष	श्री लाल जी

आर्य समाज नवीन शाहदरा	
प्रधान	श्री जय पाल भण्डारी
मत्री	श्री अभिमन्यु चावला
कोषाध्यक्ष	श्री ओम प्रकाश अरोडा

आर्य समाज मुगेर	
प्रधान	श्री यदुनन्दन प्रसाद
मत्री	श्री डा अरविन्द कुमार शर्मा
कोषाध्यक्ष	श्री सतोष पोद्दार

आर्य समाज (डी ए वी) विकास पुरी	
प्रधान	श्रीमती चित्रा नाकरा
मत्री	श्रीमती रजनी वासुदेवा
कोषाध्यक्ष	विजय आर्य एव सुरजीत आर्य

आर्य उप प्रति निधि सभा मुरादाबाद	
प्रधान	श्री राम गोपाल आर्य
मत्री	श्री अमीरश कुमार वर्मा
कोषाध्यक्ष	श्री अम्बरीष कुमार त्यागी

महर्षि दयानन्द सरस्वती उपदेशक महाविद्यालय
टकारा जिला राजकोट
गुजरात ३६३६५०

उपदेशक महाविद्यालय मे प्रवेश हेतु मेधावी छात्रो के लिए स्थान रिक्त है दसवी (सस्कृत हिन्दी अग्रेजी) उत्तीर्ण छात्र गुरुकुल ज्वालापुर से सम्बन्धित पाच वर्ष विद्याभास्कर अथवा सिद्धान्ताचार्य चार वर्ष के पाठयक्रम मे १६ से २५ वर्ष तक की आयु एव अविवाहित प्रवेश लेना चाहे तो वे अपने प्रार्थना पत्र एव प्रमाण पत्रो सहित स्वय सम्पर्क कर प्रविष्ट छात्रो को भोजन आवास पुस्तक बिजली बिस्तर एव अन्य दैनिक प्रयोग की वस्तुये नि शुल्क प्रदान की जाती है

प्राचार्य विद्यादेव

आर्य समाज भीमगंज मंडी कोटा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनाक ३ मई से ५ मई तक आर्य समाज भीमगजमडी कोटा मे धूमधाम के साथ वार्षिकोत्सव मनाया गया सह सयोजक योगेन्द्र आर्य के अनुसार इस वार्षिकोत्सव मे प्रतिदिन प्रात व सायकाल कोटा नगर के भिन्न भिन्न मतान्तर के लोगो ने व आर्यजन समुदाय ने भारी सख्या मे उपस्थित होकर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय एव डा ज्वलन्त कुमार शास्त्री के वचनामृत से लाभ लिया दोनो विद्वानो ने ईश्वर के स्वरूप सृष्टि की रचना ईश्वर ही सृष्टि नियता है राम व कृष्ण आर्य समाज की दृष्टि मे इत्यादि विषयो पर तथा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन के प्रेरणा दायक प्रसगो आर्य समाज के सिद्धान्त विचार धारा के विषय मे भी बहुत ही सहजता से सारगर्भित व्याख्यान देकर लोगो पर आर्य विचारधारा की अमिट छाप छोडी। साथ ही भजनोपदेशक सगीताचार्य ओम प्रकाश वर्मा ने भी उपस्थित जन समुदाय को अपने मधुर कठ से भजन सुनाये एव वेद मार्ग का अनुसरण करने देश भक्ति की भावना जागृत करने तथा एक ही परम पिता परमेश्वर की उपासना करने पच महायज्ञादि अपनाने के लिए प्रेरणा दायक उपदेश किया।

वार्षिकोत्सव के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि कोटा के जिलाधीश श्रीमत पाण्डेय ने आर्य परिचय दिग्दर्शिका का विमोचन किया। मत्री अरविन्द पाण्डेय ने दिग्दर्शिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आर्य समाज के उपनियम मे महर्षि का आदेश है कि प्रत्येक आर्य समाजी को परस्पर सुख दुख मे बराबर का भागीदार होना चाहिये। इसी दिशा मे कोटा नगर की आर्य परिचय दिग्दर्शिका का प्रकाशन एक सूक्ष्म प्रयास मात्र है सभी कार्यक्रम का कुशल सचालन रामदेव शर्मा ने किया

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-2 से प्रकाशित

ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् — विश्व को श्रेष्ठ (आर्य) बनाएँ

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

अथर्ववेद

दूरभाष ३२७४७७१ ३२६०९८५ | आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये | वार्षिक शुल्क ५० रुपए एक प्रति १ रुपया

वर्ष ३५ अक १८ | दयानन्दाब्द १७२ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ | आषाढ कृ –१५ सम्वत्–२०५३ | १६ जून १९९६

दस हजार हिन्दू मिशनरी प्रशिक्षित किये जायेंगे।

नये रक्त में नयी चेतना भरने का शंकराचार्यों द्वारा शुभ संकल्प

राष्टे वय जाग्रयाम यदि राष्ट म हि दू चेतना की लहर पैदा हा जाये तो दश जाति समाज की काया पलट सकती है।

अरे राष्ट क पूजनीय आचार्यो यदि आप अपने हि दू भक्तो मे हि दू रक्षा आय हि दू सस्कृति सभ्यता की रक्षार्थ प्रेरणा उत्पन्न कर ता विदेशी शक्तियो का एक दिन म घर स बाहर कर सकते है। और आगामी निर्वाचन की भमिका आपके हाथा मे रहेगी।

१ काग्रेस न गौ रक्षा हतु राष्ट्रपति के भाषण पर अपना विरोध प्रकट कर अपनी ही नाक कटाइ है। इसका लाभ लेना चाहिय।

२ पी एल ४८० का धन जो विदेशा से मिशनरियो का प्रचारार्थ आता है उसके मुकाबले म उन गरीब अचलो मे अस्पताल विद्यालय ग्रामोद्योग देकर इसाई मिशनरियो का मुकाबला किया जा सकता है।

३ पैटो डालर का आन वाले धन का भी प्रत्युत्तर हमारे प्रशिक्षित नव जवान ही दे सकेगे।

४ इन युवको मे आर्य समाज की युक्ति और तर्क पूजा विधि हि दू दवी देवताओ के प्रति श्रद्धा पैदा करना है।

५ इसमे आर्यसमाज आर एस एस व विश्व हि दू परिषद् तीनो का सम्मिश्रण करके हि दू बहुमत के तिरस्कार पर विचार करे और अल्प सख्यको की तुष्टीकरण की नीति का घोर विरोध भी किया जाय।

हमारे आचार्यो व हि दू नेताओ मे ऋषि दयान द विवेकान द की चेतना दी जाये तो आगे का समय आप के विजय रूप मे रहेगा।

आज तेनाग मे शकराचार्यो जये द्रसरस्वती तथा शकर विजयेन्द्र सरस्वती ने नयी पीढी मे नव रक्त सचार करने का जो प्रेरणाप्रद सकल्प लिया है इससे हमारा भविष्य भी उज्ज्वल होगा तथा विगत राजनीति की भूल मे सुधार भी होगा।

नये रक्त मे नयी चतना भरन का यह प्रयास स्तुत्य और सराहनीय है। अल्प सख्यका क प्रति तुष्टिकरण तथा बहुमत का अपमान ही नव जागरण प्रदान करगा बिगडत घर को यदि समय रहत बचा लिया जाय वही शभ घडी मानी जायगी नव आय चतना जय हि दू राष्ट्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

सभा मंत्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रशिक्षण शिविर का विधिवत् उदघाटन सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का विशाल राष्ट्रीय शिविर आज दिनाक ९ ६ ९६ को शिक्षा भारती पब्लिक स्कूल पालम गाव मे समारोह पूर्वक प्रारम्भ हुआ। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मत्री डा. सच्चिदानन्द शास्त्री ने इस विशाल शिविर का उदघाटन उदबोधन भाषण देकर किया। श्री श्याम सुन्दर गुप्ता ने ध्वजारोहण किया। श्री दीपक भारद्वाज ने अपने विद्यालय मे समारोह को सम्पन्न कराने हेतु विशेष सहयोग प्रदान किया। उन्होने इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य वीर दल को तीन एकड़ भूमि देने की भी घोषणा की। आर्य जनता मे इस शिविर हेतु भारी उत्साह देखने का मिल रहा है। लगभग सात सौ शिविरार्थी इस शिविर मे भाग लेने हेतु पहुच चुके है। उदघाटन के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्य देव मत्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा केन्द्रीय सभा के मत्री डा शिव कुमार शास्त्री ने शिविरार्थियो को सम्बोधित कर उनका उत्साह वर्धन किया। आर्य जन शिविर को सफल बनाने हेतु विभिन्न प्रकार से सहयोग प्रदान कर रहे है।

शिविर का समापन समारोह

इस शिविर का समापन समारोह २३ जून को सम्पन्न होगा। भारी सख्या मे पहुच कर आर्य वीरो का उत्साहवर्धन करे तथा तन मन धन से सहयोग प्रदान कर समारोह को सफल बनाये।

सम्पादक डा. सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य वीर दल आवश्यकता एवं उद्देश्य

आर्यवीर सतीश वसु 'खैरथल'

वतमान म अनेक सगठनो क होते हुए आय वीर दल ही क्यो आवश्यक है ? यह प्रश्न पूछना वैसा ही है जैसे कोई किसी माता स पूछे कि तुम्हे पुत्र की क्या आवश्यकता है ? आय समाज हमारी मातृ सस्था है महर्षि स्वामी दयानन्द गुरू आचाय और पितृ तुल्य पथ–प्रदर्शक हे जिस माता की पवित्र गोद मे वद मत्रो की लोरिया सुनकर हम शान्ति मिली स्वामी जी के शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति के सदश ने नवजीवन का सचार किया क्या यह उचित है कि उस माता की गोद बिना पुत्र के सूनी ही रह जाये।

प्रत्येक धार्मिक एव राजनैतिक सगठन की युवा इकाइया बनी हुई है जिनसे मजे हुए कार्य कर्त्ता बडे होकर सगठन का काय सभालते है। परन्तु सैकडो डी ए वी विद्यालयो एव महाविद्यालयो तथा गुरूकुलो के हाते हुए भी आर्य समाज म स्वत्र कार्यकर्त्ताओ का अकाल सा प्रतीत हो रहा है साथ ही साथ आर्य समाज मे तरूण रक्त का अभाव नजर आता है किसी सस्था के जीवित रहने के लिये यह आवश्यक है कि उसे नया रक्त जो उसी वर्ग का हो आता रहे दुर्भाग्य स आय समाज के नेता मरणासन्न होते हुए भी इस विषय मे उदासीन है आय समाज की अवनति का यही मुख्य कारण है। अच्छे कार्यकर्त्ताओ के अभाव मे अन्य सगठनो के व्यक्ति योजनाबद्ध तरीके से आय समाज के पदाधिकारी बन बैठे हैं और ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तो के विपरीत अन्य अवैदिक कार्यो मे प्रवृत्त हो रहे है।

आयवीर दल वह फैक्ट्री है जहा से चरित्रवान बलिष्ठ सुसस्कत और अनुशासति युवका का निर्माण होता है। इन्ही तपे हुए नवयुवको के कन्धो पर आय समाज का भविष्य निभर है। आज औरो की तो बात ही क्या आय समाज के अधिकारियो के बच्चे भी आय नही है। इन सबको आय बनान का एक ही उपाय है कि प्रत्येक आर्य समाज मे आयवीर दल की इकाइ अनिवार्य रूप से बनाइ जाये। व्यायामशाला पुस्तकालय तथा अन्य साधन वाद विवाद प्रतियोगिता और क्रीडा स्पर्धाए आय वीर दल के माध्यम से करवाई जानी चाहिये।

अनेक सामाजिक धार्मिक व राजनैतिक सगठन अपने स्वाथ की पूर्ति के लिये युवको को पथभ्रष्ट कर रहे है। अनेक प्रादेशिक सेवाओ का गठन हो रहा है। कुछ सगठन देश से प्रथक होने एव निर्दोष लोगो की बलि लेने पर तुले हुए है। अन्य सारे देश को ईसा की भेडे या इस्लाम के झण्ड के नीचे लान का स्वप्न देख रहे है कुछ सगठन विशाल होत हुए भी नपुसक जैसी नीति से चल रहे है। केवल आर्य समाज और आर्यवीर दल ही ऐसा सगठन है जो अज्ञान अन्याय का मुकाबला करने को कत सकल्प है।

इसमे कोई सन्देह नही रहा कि आय समाज क पास अभी भी जो ऊर्जा बाकी है उसे समेट कर यदि आयावर्त के सास्कतिक पुनर्जागरण की मशाल प्रज्ज्वलित की जावे और शहीदो की शहादत से प्रेरणा लेकर साम्प्रदायिकता जातिवाद नारी उत्पीडन व धमान्तरण के विरूद्ध आर्य वीरो और वीराग्नाओ के कदम बढने लगे तो भारत भूमि एक बार पुन आलोकित हो उठेगी निराशा के बादल छट जायेगे सघर्ष का नगाडा बजत ही पाखण्ड वाद अन्याय शोषण और विधर्मी मिशनरी मौन हाकर कौने म सिमट जायेगे। आर्य समाज की नवोदित शक्ति से जहा राष्ट्रवादी समता वादी व सस्कार वादी सगठित होने लगेगे वही अराष्ट्रीय शोषक एव सस्कार हीन ताकते बुजदिलो की तरह छिपने लगेगी।

दल के उद्देश्य

१ वैदिक धर्म आय सस्कति एव आर्य सभ्यता की रक्षा प्रचार एव प्रसार करना

२ समस्त उचित उपायो द्वारा आर्य जाति मे क्षात्र धम का प्रचार प्रशिक्षण देकर स्वात्म रक्षण और राष्ट्र रक्षार्थ किसी भी विपत्ति का सामना करने के लिये तैयार रहना।

३ जनता की सेवा के लिये आर्य वीरो का प्रशिक्षित करना

४ सक्षप मे सस्कति रक्षा शक्ति सचय और सेवा काय आय वीर दल का उद्देश्य है।

आर्य वीरों का उद्घोष

(आर्य राष्ट्र बनाऐंगे)

लिखा वेद और शास्त्र के अन्दर आर्य राष्ट्र बनाऐगे।
एक मात्र उद्देश्य हमारा कर प्रत्यक्ष दिखाऐगे।।
शिव सकल्प महान हम आर्यो की सन्तान।।

मानव मानव को यहाँ मारे अनाडियो की टोलियाँ
दीन हीन निर्दोष के ऊपर चला रहे है गोलिया
मानवता के हत्यारो का नाम निशान मिटाऐगे।।
एक मात्रा उददेश्य हमारा कर प्रत्यक्ष दिखाऐगे।
शिव सकल्प महान हम आर्यो की सन्तान।।

जनता करती त्राही त्राही रक्षक कौन जो आयेगा
बाढ खेत को खाने लगे फिर बोलो कौन बचायेगा
आर्य पुत्र जनता के सेवक हम सन्ताप मिटाऐगे।।
एक मात्र उददेश्य हमारा कर प्रत्यक्ष दिखाऐगे।
शिव सकल्प महान हम आर्यो की सन्तान।।

बना कुशासन नहीं अनुशासन मस्त रहे रगरेलियाँ
खिला रहे मघ मास खुला गुण्डो की हो गई टोलियाँ
आर्य वीर केशरिया बाना पहनकर आगे आऐगे।।
एक मात्र उददेश्य हमारा कर प्रत्यक्ष दिखाऐगे।।
शिव सकल्प महान हम आर्यो की सन्तान।।

राम लक्ष्मण बनकर के यह युवा वर्ग अब आऐगा
बन कर कृष्ण धर्म रक्षा मे निज हथियार उठाऐगा
साम दाम और भेद दण्ड की नीति सभी चलाऐगे
एक मात्र उददेश्य हमारा कर प्रत्यक्ष दिखाऐगे।।
शिव सकल्प महान हम आर्यो की सन्तान।।

निष्ठा पूर्ण महेश नैष्ठिक का यह गीत सुनाना है
ऋषि दयानन्द बता गये हमे आर्य राष्ट्र बनाना है
ब्रह्म छात्र बल आर्य वीर दल का हम तुम्हें दिखाऐंगे।।
एक मात्र उददेश्य हमारा कर प्रत्यक्ष दिखाऐगे।
शिव सकल्प महान् हम आर्यो की सन्तान।।

लेखक महेश गुरुकुल धीरणवास हिसार

सम्पादकीय

महाभारत मे कथानक है जब महात्मा भीष्म से कहा कि महाराज आप इन कष्ट कारक—कोटि—कण्टक जो मार्ग अवरुद्ध है इन्हे आप समझाइये जिससे यह महाविनाश की ज्वालाये बुझ कर शान्ति प्रदान कर सके—उस समय भीष्म ने बडे उच्च स्वर मे कहा था कि

ऊर्ध्व बाहु विरोम्येष नच कश्चिच्छ्रणोति मे।।

मे सभी से हाथ ऊचा उठाकर उद्घोष कर कह रहा हू परन्तु मेरी कोई नहीं सुन रहा है और आपाधापी मची है। और समाज विनाश की ओर जा रहा है ठीक उसी प्रकार महर्षि दयानन्द आप की कोई नहीं सुन रहा है जिसे देखो वही—अपनी ढपली अपने स्वर मे अलग अलग बजा रहा है। मैं यह क्यो लिख रहा हूँ इसका कारण है—जिसे देखो वह महर्षि दयानन्द से नीचे उतर कर बात नहीं कर रहा है।

अभी कुछ सप्ताह पूर्व सार्वदेशिक मे—रानी बाग दिल्ली के तथा कथित योग मुनि—श्री चन्द्र गुप्त का लेख प्रश्नवाचक देकर छापा था जिस पर कई विद्वानो उसका उत्तर दिया। वह भी मैने छापा था उन्होने दुबारा उत्तर देकर—छापने को दिया। मैंने उन्हे विद्वानो से वार्ता करके निर्णायक स्थिति मे आने को कहा और डा योगेन्द्र कुमार शास्त्री विद्याभास्कर से शास्त्रार्थ के लिये आहूत किया। एक दिन योग मुनि जी स्वय सावदेशिक कायालय मे पधारे। साक्षात्कार मे उन्होने अपने परिचय मे रानी बाग आय समाज का "ूव मत्री बताया। लेख की दृष्टि से ब्रह्म कुमारी दर्शन से प्रभावित प्रतीत हुए।

परन्तु साक्षात्कार के समय उन्होने अपना सामवेद भाष्य की दो प्रतिया भी प्रदान की और कहा कि अभी तृतीय भाग तैयार हो रहा है

आश्चर्य यह है कि वह सस्कत से शून्य काला अक्षर भैंस बराबर है और साधारण पुस्तक न लिखकर वेद भाष्य करने की हिम्मत की

मैने उनके सामने सामवेदीय गोभिल गृहसूत्र प्रस्तुत कर कहा कि योगमुनि जी इसमे श्राद्ध तर्पण प्रकरण को देखकर मुझ अपरिचित को बोध कराइये—अब क्या था भाष्यकार मुनि जी बगले झाकने लगे

वेद भाष्य की बीमारी—जिसे देखो वह भाष्यकार बन कर महर्षि दयानन्द वनना चाहता है—यह अनावश्यक बीमारी रुके कैसे ? यह निरक्षर महाचार्य महाशय हैं। परन्तु—महर्षि दयानन्द ने योरोपीय विद्वान वेदभाष्यकार मेक्षमूलर के लिये जिसने वेद की मान्यता दी और उस पर जब कलम चलाई तब महर्षि ने उसे 'एरण्डोऽपि द्रुमायत जहा कोई वैदिक सस्कृत विद्वान न हो और वह अपनी उन मूर्खो मे विद्वत्ता प्रदर्शित करे—तो जहा वृक्ष नहीं तो पपीता भी वृक्ष मान जाता है इस प्रकार महर्षि ने उसकी बुद्धि पर ताला लगाया था।

अब से कुछ वर्षों पूर्व एक सुलझे सन्त ने कहा था कि महर्षि दयानन्द वेदा के भाष्यकार होकर "ऋषयो मन्त्र दृष्टार मन्त्र दृष्टा ऋषि हो सकते है तो हम क्यो नहीं ? अपनी बात समझ कर कहने का प्रत्यक को अधिकार है वह तो कुछ सूझ—बूझ भी रखते थे वेद को समझाने का एक सलीका था जिसे आर्य जन भली प्रकार सुनते थे परन्तु वैदिक विद्वानो ने उन्हे भी महर्षि की मान्यता के आधार पर छोडा नही था।

मेरी मान्यता है जो विद्वान सस्कत और निरुक्त की प्रक्रिया पर अधिकार पूर्वक वेद का विश्लेषण करता है तब आपत्ति नहीं होती है परन्तु जिसे देखो अनाधिकारी व्यक्ति वेद—भाष्य पर कलम चलाने बैठ जाता है।

सम्भवत अग्रेजो ने इसी लिये वेदो को गडरियो का गीत की मान्यता देकर वेदो की मजाक उडाई थी। धन्य हो महर्षि दयानन्द आपने बुद्धिवादी मानव की टोपी न वदलकर खोपडी बदल दी और वेदो के नाना विषयो पण्डितम्मन्यो को शास्त्रार्थ के लिये ललकारा था।

आज भी पुन आवश्यकता है कि ऐसे पण्डितम्मन्य मूर्खाधिराजो को आर्य विद्वान शास्त्रार्थ के लिये ललकारे—और बुद्धिवादी मानव की बुद्धि का विकास हो।

मानवता के विकास के लिये समय समय पर ऐसी परिस्थितिया पैदा हुइ थी जिनका निराकरण विद्वज्जनो ने शास्त्राथ कर उन जडमति जनो को पैदल किया था। आत्म विस्मृति के कगार पर खडे विद्वानो ने जब धर्म के नाम पर वेदो की दुहाई देकर यज्ञ कर्म मे पशुवलि का सहारा लकर हिसा को मूर्तरूप दिया तव म बुद्ध और अनेक विद्वानो ने उन्हे तर्क की कसौटी पर कसा था उसके वाद वैदिक मान्यता और इश्वर के अस्तित्व पर नागरिकता का

प्रचार प्रसार बढा तब आचार्य शकर ने तर्क के तीरो से उसे छिन्न भिन्न किया था हजारो वर्षो से परतन्त्र मानव की बुद्धि पर "नब ताला लग गया और पुन जडमति होहि सुजान न धर्म पर वैदिक मान्यताओ को ठुकरा कर अपना नया आधार दिया

धर्म का रूप वेदिक न होकर किसी ने कहा यथा धर्म क्या है

यदि हमने बकरे को हलाल न किया तो हमारा धर्म खतरे मे और इसी प्रकार सिक्खो ने माना यदि हम ने जीव का झटका न किया तो हमारा धर्म खतरे मे है हिन्दु ने भी कहा कि यदि काली पर भैसा बकरा न काटा तो हमारा धम खतरे मे है धम का स्वरूप वेद शास्त्र और ऋषियो की मान्यता न होकर "जडमति" मानव का अविवक हम पर हावी हो गया

ऐसे समय न

महर्षि दयानन्द ने ललकार कर उद्घोष किया और शास्त्रार्थ की परम्परा से विद्वानो को सोचने पर विवश किया और उनसे तर्क की तुला पर बुद्धि को तोलने पर विवश कर दिया। अत

आज पुन आवश्यकता है ऐसे वेद भाष्यकारो पर रोक लगाओ अन्यथा भ्रमित करने वाली परम्पराओ ने पुन जन्म ले लिया जैसा कि ऊपर दर्शाया है वह अपने—अविवेक पूर्ण तर्को का सहारा लेकर मूर्खता को बढावा देगे

आज आय समाज मे विद्वानो की कमी नही है समय की परीक्षा है डा योगेन्द्र कुमार शास्त्री विद्याभास्कर ने ललकारा तो है पर उल्लू दिन के प्रकाश से घबराकर अधेरे का लाभ उठाना चाहता है उसे वैदिक सूय का प्रकाश दिखाना है यह है वैदिक धारा मे बहने की प्रक्रिया।

जडमति वेद भाष्यकारो से सावधान होने की आवश्यकता है राष्ट्रे वय जागृयाम

कविकर प प्रणव शास्त्री के शब्दो मे

गुणहीन मानवता रहित मनुज देहधार महत्व क्या ?

निष्पक्ष बन्धु विचार कर उस धर्म का मानो जो धर्म धारण ही जीवन सार है।

ले. देवी प्रसाद मस्करा

केवल मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो बुद्धि युक्त होने के कारण अपनी अपूर्णता को जान पाता है। बन्धनो से मुक्त होकर पूर्णत्व पाने की इच्छा करता है। यही कारण है कि वह अपनी वर्तमान स्थिति से सन्तुष्ट नहीं रहता और ऐसी अवस्था प्राप्त करना चाहता है जिसमे किसी प्रकार की अपूर्णता न हो। वह देह के नश्वर स्वभाव से ऊपर उठकर अमृतत्व की कामना करता है अज्ञान को दूर कर पूर्ण ज्ञान की अपेक्षा करता है। सभी प्रकार के नैतिक आर्थिक सामाजिक धार्मिक राजनैतिक इत्यादि बन्धनो के दुख से मुक्त होकर शाश्वत आनन्द की खोज मे लगा रहता है। परन्तु दुख की बात है उसके निरन्तर एव अथक प्रयत्नो के बाद भी वह स्वय को मुक्तावस्था मे नही पाता है। इसका कारण यह है कि प्रकृति के बन्धनो से रहित मुक्ति या पूर्णता नाम की कोई एक अवस्था विशेष है ही नही।

कोई भी व्यक्ति अपूर्णता की अवस्था मे सुख पूर्वक नही रह सकता। मोक्ष प्राप्ति की इच्छा उसने स्वय अपने मे किसी विशेष दिन उत्पन्न नही की वरन जन्म से ही अपने को इस इच्छा से युक्त पाया। यह इच्छा प्राकृतिक होने से न तो मनुष्य इसको त्याग ही सकता है और न ही कर्म द्वारा इसे पूर्ण कर सकता है। पूर्णत्व की इच्छा पूर्ण वस्तु को प्राप्त करने से ही पूरी हो सकती है। वह पूर्ण वस्तु किसी भी कर्म का फल नहीं हो सकती क्योकि कर्म स्वय परिछिन्न है। ऐसी अवस्था मे वह क्या करे ? इस प्रश्न का उत्तर केवल वेदान्त मे ही मिलता है

प्रकृति मे यह देखा जाता है कि प्रत्येक वस्तु का स्वभाव अपने मूल स्वरूप मे रहने का होता है और यदि उसे अपने स्वरूप से भिन्न कोई रूप दिया जाय तो वह पुन अपने मूलस्वरूप मे स्थित होने का प्रयत्न करती है। मनुष्य सदैव बन्धनो को तोडकर मुक्त होने का प्रयत्न करता है तो इसका कारण यही है कि वह स्वय मुक्त स्वरूप हो पूर्णस्वरूप स ही पूर्ण है तो फिर पूर्णत्व की इच्छा और तत्प्राप्त्यर्थ प्रयत्न क्यो करता है ? उसकी इच्छा और प्रयत्न का कारण केवल स्वस्वरूप का अज्ञान ही है। जिसके लिए ज्ञान का साधन वेदान्त अर्थात उपनिषद हैं।

स्वस्वरूप के ज्ञान को आत्मज्ञान कहते हैं जिसके अभाव मे मनुष्य दिन रात प्रयत्न करने के बाद भी स्वय को दुखो से मुक्त नहीं कर पाता है और जिसे पाकर ज्ञानी पुरुष इसी जगत मे रहते हुए मुक्ति का पूर्णता का अनुभव करता है। हम असंख्य प्राणियो को देखते हैं। कितने ही जन्तु इतने सूक्ष्म होते हैं कि उन्हें हम आखों से नही देख पाते। उनकी भी हस्ती चैतन्य के बिना नहीं। यह अद्भुत वस्तु हमारे शरीर मे निरतर वास करती है। यही हमारा स्वरूप है। किसी भी वस्तु को हम ज्यो की त्यो पडी रहने दे तो भी उसमे परिवर्तन होने लग जाते हैं। पानी भी यो ही पडा रहे तो चार पाच दिनो मे उसमें बास आने लग जाती है। हमारा शरीर तो स्नान के बगैर गन्दा हो जाता है। लेकिन चैतन्य ७० ८० वर्ष जिये तो भी उसमे कोई फर्क नहीं होता। बाहरी यत्र अच्छे से अच्छा हो तो भी उसे चलाने के लिए मनुष्य की जरूरत होती है। ऐसी अद्भुत वस्तु निरतर हमारे शरीर मे वास करती है यही हमारा वास्तविक स्वरूप है। फिर भी हमे निरतर इसका स्मरण न हो यह हमारा कितना बडा अनुरोध है।

साधारणत हम सोचते हैं कि मनुष्य अपनी इच्छा से प्रेरित होकर कर्म के साधन द्वारा क्रिया करके इष्ट फल को प्राप्त करता है जैसे कि किसान हल इत्यादि द्वारा अनाज प्राप्त करता है। इसमे हमको ईश्वर की कोई आवश्यकता नहीं है। हम कर्म करते है और हम को फल प्राप्त हो जाता है। क्या यह हमारी धारणा सही है ? विचार करने पर हमे ज्ञात होगा की यह धारणा भ्रामिक है। किसी भी कर्म फल को प्राप्त करने के लिए कर्त्ता साधन और क्रिया की आवश्यकता होती है किन्तु इनमे से कोई भी स्वतन्त्र रूप से कर्मफल उत्पन्न नही कर सकता है जैसे हल इत्यादि स्वय क्रिया नही कर सकता है। क्रिया का रूप कर्त्ता से भिन्न अथवा उसके बिना कोई आस्तित्व भी नहीं है। फिर यदि हम यह कहे कि यह कर्त्ता जीव ही कर्म फल उत्पन्न करता है तो यह भी सही नही है क्यो यह कर्ता स्वय देश काल प्रकृति के नियम कारणो से अनभिज्ञ है। यह जीव ही कर्म फल का उत्पादक होता तो उसे सदेव इष्टफल ही की प्राप्ति होती अनिष्ट की कभी नही परन्तु वस्तु स्थिति ऐसी नही दिखाइ देती है। इससे यह सिद्ध होता है कि कर्मफल प्रदान करने मे इनसे कोई भिन्न शक्ति है जिसे ईश्वर कहते है। ईश्वरीय नियमो के अनुसार कर्म फल की प्राप्ति होती हैं

ईश्वर के अस्तित्व को इस प्रकार सिद्ध किया जा सकता है। जितने भी प्राणी है उनका जन्म ऐसे जगत मे हुआ है जो पहिले से ही निर्मित था। किसी भी जीव ने न तो अपने आपको बनाया और नही अपने जन्म के बाद इस जगत को बनाया। हमने अपने आपको देखने सुनने विचार करने इत्यादि शक्तियो से युक्त पाया। इन सबका कोई निर्माता होना ही चाहिए क्योकि बिना निर्माता के कोई भी निर्माण कार्य नही हो सकता। इसी निर्माता को ईश्वर कहते है। वह सर्वज्ञ तथा सर्वशक्तिमान है क्योकि बिना ज्ञान के शक्ति के कोई निर्माण कार्य नहीं किया जा सकता है मनुष्य केवल ईश्वर प्रदत्त शक्तियो का उपयोग कर प्रकृति के नियमो को जानता है और उनका उपयोग जीवन को सुखी बनाने मे करता है। यह सब देखते हुए भी यदि कोई ईश्वर के अस्तित्व को नही मानता है तो यह बडे आश्चर्य की बात है।

ईश्वर कर्मफल प्रदाता है। ईश्वर जीवो के कर्मों के अनुरूप नियमो के अनुसार ही फल देता है और न कि पक्षपात पूवक। कर्म स्वय जडरूप होने से तथा कर्म से भिन्न उसका अस्तित्व न होने से वह सर्वश्रेष्ठ नहीं हो सकता न ही कर्म फल प्रदान करने मे वह स्वतन्त्र रूप से समर्थ है। कर्म का चेतन जीव के बिना अस्तित्व नही है। तथा कर्म को यह ज्ञान नहीं होता कि उसका फल क्या होगा जैसे कुल्हाडी से वृक्ष काट कर गिराया तो यह काटने की क्रिया नहीं जानती कि किसे गिराया है और क्यो गिराया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कर्म फल-प्राप्ति मे ईश्वर की आवश्यकता है परन्तु यह सब जानकर मनुष्य स्वय को कर्त्ता मानकर अभिमानी हो जाता है और जब अहकार आता है तब वह स्वार्थ के लिए कर्म करता हुआ उसके दुखदायी बधनो मे फँस जाता है।

हमे ईश्वरार्पण बुद्धि से कर्म करना चाहिए। ईश्वर ज्ञान इच्छा और कर्म की शक्तियो का अधिष्टाता है। उसी से हमे सब प्रकार की शक्तियों प्राप्त हुई है। इस प्रकार हम देखते है कि तर्तृत्व के अभिमान से और कर्मफल मे आसक्ति रखते हुए किए गये कर्म बन्धन के कारण होते हैं। परन्तु ईश्वर को कर्माध्यक्ष और कर्म फल दाता मान कर किये हुये कर्म चित्त को शुद्ध कर मोक्ष प्राप्ति मे सहायक होते है। इस ईश्वरार्पण बुद्धि से कर्म करने का नाम ही है कर्मयोग।

****

शाकाहार से कोई संकट नहीं

कभी-कभी मासाहारियो द्वारा यह सुनने को मिलता है कि यदि शाकाहारियों की तादाद बढती रही तो मनुष्य और जानवर मे वनस्पति के लिए सघर्ष होगा। इस प्रकार के तथ्य सही वैज्ञानिक एव अन्य जानकारियो के अभाव मे ही दिए जाते हैं। विश्व के वैज्ञानिको ने यह सिद्ध कर दिया है कि मासाहार के लिए विशेष रूप से चारगाह बनाए जाते है ताकि मासाहार उपलब्ध कराए जाने हेतु पशुओ का उत्पादन बढाया जा सके। इससे जहा एक ओर विश्व का पर्यावरण-सतुलन बिगड रहा है वही दूसरी ओर मानव जाति के लिए खाद्यान्न का सकट अधिक बढ रहा है। जहा शाकाहार के लिए एक एकड भूमि की आवश्यकता होती है वहा मासाहार के लिए सात गुना अर्थात सात एकड जमीन की आवश्यकता होती है। अकेले अमेरिका मे १० % मासाहार कम हो जाए तो वैज्ञानिको ने यह अनुमान लगाया है कि सार ससार मे कोई भी व्यक्ति भूखा नहीं रहेगा। सच तो यह है कि यदि विश्व के सभी व्यक्ति शाकाहारी हो जाए तो विश्व मे अन्न वनस्पति और फलो की कोई कमी नहीं रहेगी बल्कि मासाहार से उत्पन्न होने वाली बीमारियां जैसे कैंसर हृदय रोग आदि कम हो जाएगे और लोगो का स्वास्थ्य-लाभ होगा।

कुछ लोगो का यह कहना कि हिन्दू ग्रथो मे मासाहार की वेधता के बारे मे लिखा है सवथा गलत है। उदाहरणार्थ अथर्व वेद -६-१३ मे लिखा है जो लोग अण्डा मास खाते हैं मैं उन दुष्टो का नाश करता हू इसी प्रकार मनुस्मृति ५/४५ मे लिखा है जीव मारने की सलाह देने वाला मास का बचने वाला और पकाने तथा खाने वाले ये सभी पापी और दुष्ट हैं। वेदों मे कहीं भी मासाहार के पक्ष मे नहीं लिखा है। बल्कि कुछ स्वार्थी तत्व ही इसकी गलत व्याख्या करके लोगो मे भ्रम पैदा करते हैं। वेदो मे जहा बलि का जिक्र है वहा अपने स्वार्थ की बलि जैसे काम क्रोध लोभ मद आदि का ही सदर्भ है। यह प्रत्येक मानव की व्यक्तिगत इच्छा पर निर्भर करता है कि वह शाकाहार ले या मासाहार। लेकिन यह निर्विवाद सत्य है कि विश्व भर के वैज्ञानिक और डाक्टरो ने यह साबित कर दिया है कि स्वास्थ्य पौष्टिकता पर्यावरण नैतिकता अहिंसा तथा भयानक रोगो से लडने की क्षमता बढाने मे शाकाहार सर्वोत्तम है तथा मासाहार अनावश्यक है।

रामनिवास लखोटिया

स्वामी सत्यपति परिव्राजक

> सासारिक सुख दु ख के सम्बन्ध मे पक्ष तथा विपक्ष मे लिखे गये लेखो को प्रकाशित किया जा चुका है। विद्वानो से निवेदन है कि अब अधिक लेख न लिखे और शास्त्रार्थ के द्वारा निर्णय करे।
>
> सम्पादक

सासारिक सुख–दु ख को प्रकृति का गुण न मानने वाले जीव का स्वाभाविक गुण मानने वाले विद्वानो के विचारो का सभी विद्वान अध्ययन करे।

(१) प्रकृति जड पदार्थ है वह सुख–दु ख का अनुभव नहीं कर सकती। इसलिये सुख–दु ख प्रकृति के गुण नही हो सकते। इस प्रकार का हेतु वे विद्वान अपने पक्ष की पुष्टि मे देते है।

उत्तर–वास्तव मे उन विद्वानो का उक्त कथन हेतु नहीं हेत्वाभास है। क्योकि इसमे व्याप्ति नहीं है अर्थात यह नियम नहीं है कि जिस द्रव्य मे जो गुण हो वह द्रव्य उस गुण का अनुभव अवश्य ही करे। जैसे अग्नि मे उष्णता गुण है परन्तु अग्नि अपने उष्णता गुण का अनुभव नहीं करती। इसी प्रकार से जल मे शीतलता गुण है जल भी अपनी शीतलता का अनुभव नहीं करता। ऐसे ही अन्य प्राकृतिक पदार्थों मे भी रूप रस गन्ध आदि गुण देखे जाते है परन्तु वे प्राकृतिक पदार्थ अपने रूप रस गन्ध आदि गुणो का अनुभव नहीं करते। इसी प्रकार से प्रकति और प्राकृतिक पदार्थो मे सुख–दु ख गुण भी हैं परन्तु वे सुख–दु ख का अनुभव नही करते जड होने से। इसी जड होने के कारण से वे प्राकृतिक पदार्थ अपने किसी भी (रूप रस गन्ध आदि) गुण का अनुभव नहीं करते। यदि अनुभव होने के हेतु से ही वह गुण किसी द्रव्य मे माना जाये तो प्रकति और प्राकृतिक पदार्थों मे रूप रस आदि किसी भी गुण को नही मानना होगा क्योकि वे पदार्थ अपने किसी भी गुण का अनुभव नहीं करते जड होने से। परन्तु प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध है कि प्राकृतिक पदार्थो (पृथ्वी पर्वत वृक्ष आदि) मे रूप आदि गुण हैं।

(२) उन विद्वानो का यह भी कहना है कि सुख–दु ख जीवात्मा का अपना गुण न हो तो वह सुख–दु ख का अनुभव नही कर सकता। अर्थात जीव केवल अपने ही सुख–दु ख का अनुभव कर सकता है अपने से भिन्न पदार्थ के सुख का अनुभव नहीं कर सकता।

इसका उत्तर–यह भी हेतु नहीं हेत्वाभास है। जीवात्मा समाधि अवस्था मे ईश्वर के आनन्द का अनुभव करता है और मोक्ष मे भी ईश्वर के आनन्द का अनुभव करता है। जबकि ईश्वर जीवात्मा से भिन्न पदार्थ है। ऐसे ही जीवात्मा अपने से भिन्न पदार्थ प्रकृति के सुख–दु ख गुणो का बन्धन की अवस्था मे अनुभव करता है। अत उक्त कथन उचित नहीं है।

(३) उन विद्वानो की यह मान्यता है कि सुख–दु ख जीवात्मा का नैमित्तिक गुण है परन्तु मुक्ति मे सुख–दु ख का अत्यन्त विनाश नहीं होता अर्थात मुक्ति मे सुख–दु ख दोनो शेष रहते हैं।

परन्तु वेद और वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थो की मान्यता यही है कि मोक्ष–अवस्था मे सासारिक सुख–दु ख का अत्यन्त विनाश हो जाता है।

(४) कुछ विद्वानो की यह भी मान्यता है कि सुख–दु ख जीवात्मा का स्वाभाविक गुण है परन्तु इस मान्यता को सिद्ध करने के लिये उन्होने अभी तक एक भी प्रमाण वेद या वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थो को नहीं दिया है जिससे कि सुख–दु ख जीवात्मा के स्वाभाविक गुण सिद्ध हो सके।

(५) कुछ विद्वान ऐसा भी मानते हैं कि सासारिक सुख–दु ख प्रकृति के गुण नहीं हैं परन्तु इस विषय मे वेद वा वेदानुकूल ऋषिकृत ग्रन्थो का एक भी प्रमाण नहीं देते जिससे यह सिद्ध हो सके कि सासारिक सुख–दु ख प्रकृति के गुण नहीं हैं।

(६) कुछ विद्वान यह मानते हैं कि सुख–दु ख केवल अनुभूति का नाम है अर्थात अनुभूति को ही सुख–दु ख कहते हैं अनुभूति और सुख–दु ख कोई पृथक गुण नहीं है। परन्तु इस सम्बन्ध में वे कोई प्रमाण नहीं देते। जबकि वैशेषिक दर्शन मे कणाद मुनि जी ने सुख–दु ख को अलग और अनुभूति (ज्ञान) गुण को अलग स्वीकार किया है। वास्तविकता तो यह है कि जहा अनुभूति होती है वहा सुख–दु ख तो अनुभूति का विषय होते हैं। जैसे रूप की अनुभूति होने पर रूप गुण अनुभूति का विषय होता है रूप गुण को ही अनुभूति नाम से नहीं कहा जाता। इसी प्रकार से सुख–दु ख की अनुभूति होने पर भी सुख–दु ख अनुभूति का विषय होते हैं सुख–दु ख का ही नाम अनुभूति नहीं है। अत अनुभूति या अनुभव गुण सुख–दु ख से अलग है।

(८) वे विद्वान यह तो मानते हैं कि– सासारिक सुख–दु ख प्रकृति के स्वाभाविक गुण नही है। परन्तु यह नहीं बतलाते कि सुख व दु ख किसके स्वाभाविक गुण हैं–जीवात्मा के या ईश्वर के ? वैदिक मान्यता मे तीन ही पदार्थ है–ईश्वर जीव और प्रकृति। इनमे से किसी न किसी के तो स्वाभाविक गुण होने ही चाहिये। क्योकि गुणी के बिना तो गुण रह नहीं सकता यह नियम है।

(८) उन विद्वानो के लेखो मे प्राय वदतो व्याघात दोष भी बहुत देखा जाता है। जैसे कि– सुख दु ख को जीव का नैमित्तिक गुण भी मानना और सुख–दु ख मुक्ति मे शेष रहते है ऐसा भी मानना।

(९) उन विद्वानो के लेखो मे यह बात भी देखी जाती है कि अपने पक्ष की पुष्टि मे वे जो प्रमाण प्रस्तुत करते हैं उन प्रमाणो से उनके पक्ष की सिद्धि नहीं होती।

(१०) उनके लेखो मे यह भी देखने को मिलता है कि विपक्षी द्वारा प्रस्तुत किये गये प्रमाणो का वे विद्वान प्राय उत्तर नही देते।

(११) उनके लेखो मे भ्रान्ति उत्पन्न करने वाली अनेक बाते देखी जाती है जबकि वे विपक्षी को भ्रान्ति से युक्त और भ्रान्ति उत्पन्न करने वाला बताते है।

(१२) उनके लेखो मे ऐसा भी पढने को मिलता है कि सुख–दु ख किसके स्वाभाविक और किसके नैमित्तिक गुण हैं यह एक झगडा खडा कर दिया गया है परन्तु मेरी दृष्टि मे यह झगडा नही है किन्तु सत्यासत्य को जानने का वास्तविक प्रयास है। यह प्रयास अवश्य ही करना चाहिये। ऐसा लिखकर वे यह दिखलाना चाहते है कि वे तो सर्वहित के लिये सत्य कह रहे है और विपक्षी समाज मे झगडे उत्पन्न करके समाज की हानि करना चाहता है। जबकि वे अपने पक्ष मे ऐसा कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर पाते जिससे सब विद्वान लोग समझ ले कि वे तो सत्य कह रहे है और विपक्षी का मत असत्य है।

(१३) वे विद्वान महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के वचन और न्यायदर्शन का सूत्र जीवात्मा के लक्षणो के रूप मे प्रस्तुत तो कर देते हैं परन्तु उनकी कोई व्याख्या नही करते कि–कौन सा गुण स्वाभाविक है कौन सा नैमित्तिक केवल वचनमात्र उद्धृत करके और प्रसग से बाहर की बातें लिखकर अपना लेख पूरा करते है। यदि महर्षि के वचनो को समझना इतना सरल होता तो अनेक विद्वान महर्षि के ग्रन्थो की व्याख्या लिखने का श्रम क्यो करते।

(१४) कई विद्वान सुख–दु ख के कारणो की व्याख्या करने लगते है जो कि मुख्य विषय से बाहर की बात है। मुख्य विषय को छूते नही कि–सुख–दु ख किस द्रव्य के स्वाभाविक गुण हैं और किस द्रव्य के नैमित्तिक।

(१५) कई विद्वान सुख–दु ख के लक्षणो की व्याख्या मे ही लेख पूरा कर देते है मुख्य विषय की बात नहीं करते

(१६) कई विद्वानो का मत है कि यदि सुख–दु ख प्रकृति के गुण हैं तो सबको समान रूप से अनुभव होने चाहिये कम–अधिक मात्रा मे नहीं। उनका कहना यह भी है कि– शक्कर मीठी है परन्तु गुडमार के पत्ते खाकर या रुग्णावस्था मे वह मीठी नहीं लगती। तब उससे सुख नहीं होता। अत किसी को शक्कर से सुख होना किसी को न होना या कम सुख होना इससे सुखादि गुण शक्कर का नही मानना चाहिये।

इसका उत्तर है–गुडमार के पत्ते खाकर या रुग्णावस्था मे रसना इन्द्रिय मे दोष आ जाता है जिसके कारण शक्कर मीठी नही लगती। न कि इन अवस्थाओ मे शक्कर मे से मिठास निकल जाती है। जब शक्कर मीठी नही लगती तो सुख का भी अनुभव नही होता। जिसका शरीर व इन्द्रिया स्वस्थ होती है उसे शक्कर मीठी लगती है तथा सुख का भी अनुभव होता है। इससे सिद्ध हुआ कि मिठास और सुख की प्राप्ति शक्कर से ही होती है। उसी के ये गुण हैं। इसी प्रकार से एक व्यक्ति की नेत्रेन्द्रिय मे दोष आ जाने से उसे सूर्य को प्रकाश कम दीखता है प्रकाश दीखना है दूसरे व्यक्ति को बिल्कुल नहीं दीखता और स्वस्थ नेत्र वाले का पूरा प्रकाश दीखना है। इसका कारण भी नेत्र इन्द्रिय मे दोष का होना तथा न होना ही है। न कि ऐसा माना जाये सूर्य का प्रकाश सबको समान मात्रा मे अनुभव न होने से वह प्रकाश सूर्य का गुण ही नही है

(१७) कुछ विद्वान यह कहने हैं कि–सुख–दु ख के विषय मे मेरा मन्तव्य वही है जो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का एव अन्य ऋषियो का है

इस सम्बन्ध मे मेरा निवेदन है कि सामान्य परिस्थितियो मे उक्त कथन उचित हो सकता है। परन्तु जब विशेष रूप से समाज मे यह सवाद चल रहा हो कि महर्षि दयानन्द सरस्वती व अन्य ऋषि इस सम्बन्ध मे क्या मानते है तब इतना कह देने मात्र से इस विषय का कोई स्पष्ट निर्णय सामने नहीं आता ऐसी स्थिति मे तो सभी विद्वानो का यह कर्तव्य बनता है कि वे प्रमाणो से यह सिद्ध कर के बतलावे कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी एव अन्य ऋषि सुख दु ख को जीवात्मा का स्वाभाविक गुण मानते है या नैमित्तिक जैसा कि मैंने इस लेख मे और इससे पूर्व तीन लेखो मे प्रमाणो के आधार पर यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है सुख दु ख को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी एव अन्य ऋषि जीवात्मा का नैमित्तिक गुण मानते हैं तथा प्रकृति का स्वाभाविक गुण मानते हैं। इसी प्रकार से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी एव अन्य ऋषि ईश्वर के आनन्द गुण को ईश्वर का स्वाभाविक तथा जीवात्मा का नैमित्तिक गुण मानते है।

इससे पूर्व तीन लेख पत्रिकाओ मे प्रकाशित करने के लिये भेजे जा चुके है और यह चौथा लेख भी इसी विषय पर पत्रिकाओ मे प्रकाशित करने के लिये भेज रहा हू। मेरा सब विद्वानो से निवेदन है कि– जैसे मैंने प्रमाणो के आधार पर इस विषय को सिद्ध करने का प्रयत्न किया है ऐसे ही कोई भी विद्वान प्रमाणो के आधार पर मेरे लेखो मे कही गई बातो मे त्रुटि बतलाएगा तो उसे मै अवश्य ही स्वीकार करूगा और जो कोई बिना ही प्रमाणो के अन्यथा खण्डन–मण्डन करेगा उस पर ध्यान नहीं दिया जाएगा तथा ऐसा बिना प्रमाणो के खण्डन करना विद्वानो के लिये उचित भी नहीं है

मेरे इन लेखो मे जिन विद्वानो की मान्यताओ का उत्तर दिया गया है उनमें से मुख्य–२ विद्वानो के नाम ये है

(१) श्री आचार्य राजवीर शास्त्री (मोदीनगर (२) श्री रामनिवास जी गुण ग्राहक (३) श्री डा सु ब काले (परली बैजनाथ) इत्यादि

आर्य वन रोजड पत्रा सागपुर
जि साबरकाठा गुजरात–३८३३०७

जनकराम (एम. ए., बी. एड.)
आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म. प्र.)

समाज की समृद्धि आर्थिक उन्नति और विकास पर निर्भर है। वेदों मे अर्थ का बहुत महत्व है। जो लोग समझते है कि अर्थ–अनर्थ का मूल है। यह तो केवल मात्र माया ही है। असत्य है–इसकी उपेक्षा करनी चाहिये या इसकी ओर से बिल्कुल त्यागवृत्ति ही कल्याण का मार्ग है ऐसा वेद प्रतिपादित करता है। यह नितान्त असत्य है जो देश जितना उन्नत और विकसित होगा उतना ही वह प्रतिष्ठित माना जायेगा। प्रत्येक देश का कर्त्तव्य है कि वह आर्थिक दृष्टि से पिछडा हुआ न हो। उसके आय के स्रोत विकसित हो। सभी ओर से अर्थागम हो और उसका ठीक विनियोग हो। अर्थ के समुचित लाभ को योग कहते हैं और उसकी सुरक्षा को हेम। योगहेम का अर्थ होता है – धनागम और धन सरक्षण। यजुर्वेद की राष्ट्रीय प्रार्थना मे कहा गया है–**"योगक्षेमो न कल्पताम।"** अर्थात हमारे समाज मे योगक्षेम हो। ऋग्वेद और सामवेद मे भी समाज के सभी अगो की समृद्धि की कामना की गई है।

वेद मन्त्रो मे परमात्मा से धन प्राप्ति की कामनाओ के अनेक मत्र है–**सनो वसुन्या भर** वह परमात्मा हमे धनो स अच्छी प्रकार से पूर्ण करे *(यजु. १५/३०)*

उभाहि हस्ता वसुना पृणस्व हे प्रभु हमारे दोनो हाथो को धनों से अच्छी प्रकार भर दो *(यजु. ५/१६)*

वय भगवन्त स्याम हे प्रभु हम सब प्रकार के ऐश्वर्यों से परिपूर्ण होवे। *(यजु. ३४/३८)*

अग्नेनय सुपथाराये–हे ज्ञान स्वरूप अग्ने परमेश्वर हमे महान धनेश्वय के लिए उत्तम मार्ग पर ले चलिये। *(यजु. ७/४३)*

वय स्याम पतयो रयीणाम – हम धनो के स्वामी बने *(यजु. १०/२०)*

तेना वय भगवन्त स्याम–हम धन के भाग्यशाली हो *(अथर्व. ३/१६/५)*

मयि देवा द्रविणमा यजन्ताम–देवता मुझे धन दे *(अथर्व. ५/३/५)*

असमाति गृहेषु न –हमारे घरो मे धन धान्य की कभी कमी न हो *(अथर्व. ६/७६/१)*

इन्द्रमह वणिज चोदयामि – मैं धनाड्य व्यापारी को व्यापार के लिए प्रेरित करता हू *(अथर्व. ३/१५/१)*

येन धनेन प्रपण चरामि मैं जिस धन से व्यापार करता हू वह सदा बढे *(अथर्व. ३/१५/१)*

स ईशानो धनदा अस्तु महयम–वह ऐश्वर्यशाली इन्द्र मुझे धन दे *(अथर्व. ३/१५/१)*

इसी प्रकार बहुत से मत्रो मे धनैश्वर्य की कामना परमात्मा से की गयी है। यदि यह कामना बुरी होती तो परमात्मा स धनेश्वर्य की प्राप्ति की प्रार्थना नहीं हाती अपितु इसे त्यागने की ही इससे बचने की ही प्रार्थनाये होती। इस धनैश्वर्य के मार्ग को सुपथ कहा है। यह कुपथ नहीं हैं अत धन के उपयोग का भी यदि सुपथ हो तो धन धर्म का साधन बन जाता है।

मानव जीवन की सभी सुख–सुविधाये धन पर निभर है जहा ऐश्वर्य है वहा सुख है जहा आय के स्त्रोत उत्तम है वहा भौतिक सुख अनायास उपलब्ध होते है। भौतिक उन्नति का सार धन है धन से ही विद्या यश प्रतिष्ठा आजीविका विकास और अभ्युदय हाता है। अतएव वेदो मे अर्थोपार्जन और श्री वृद्धि के सैकडो मत्रो मे कामना की गयी हैं ऋग्वेद का कथन है कि ऐश्वर्य का सर्वोत्तम उपाय है सन्मार्ग पर चलना। सन्मार्ग पर चलने से और शुभ कर्म करने से जो श्री वृद्धि की प्राप्ति होती है वह स्थायी होती है।

व्यापार और वाणिज्य धन प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन है। अतएव कहा गया है कि "व्यापारे वसति लक्ष्मी।" व्यापार मे लक्ष्मी का निवास है। वेद मे व्यापार का सकेत करते हुए कहा गया है कि परस्पर वस्तुओ का आदान प्रदान किया जाय। समाज मे प्रत्येक वर्ग अपने श्रम से कुछ वस्तुओ का उत्पादन करे और उसे समाज के उपयोग के लिए प्रस्तुत करे। वस्तु विनिमय और क्रय–विक्रय दोनो प्रकार इसके लिए उपयुक्त हैं।

अर्थ के मूल तत्व

१ **अर्थ का आधार पशु** अर्थशास्त्र के इन मूल तत्वो को वेद के निम्न मत्रो मे बडे सुन्दर रीति से बतलाया है।

इह गाव प्रजा यध्वमिहाश्वा इह पुरुषा।
इहो सहस्रदक्षिणोऽपि पूषा नि षीदति।।
(अथर्व. २०/१२७/१२)

इस पृथिवी पर गौए अश्व एव पुरुष वर्ग उत्पत्ति धर्मा हो तथा इस पृथिवी पर पालनकर्ता सूर्य अच्छी प्रकार अपनी सहस्र उत्पादन शक्तियो से विराजमान हो–अर्थात अर्थशास्त्र का मूल आधार पृथिवी सहस्र उत्पादन सामर्थ्य के साथ सयुक्त हो। जो पृथिवी उत्पादन शक्ति रहित है उसकी उपयोगिता भी कम है उसका आर्थिक महत्व भी कम है। इसी प्रकार गौ अश्व आदि पशु खाद्य समस्या यातायात समस्या एव जीवन की उपयोगिता के लिए है। वे स्ब उत्पत्ति धर्म वाले हो। पशुओ की समृद्धि हो और पुरुष भी उत्पत्तिधर्मा हो। इन सबकी समृद्धि से ही अर्थतत्र का चक्र चलता रहेगा।

२ **अर्थ का आधार पृथिवि** - भूमि से हमे सब सुखो की प्राप्ति होती है जैसा कि वेद के निम्न मत्र मे वर्णित है।

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी।
यच्छा न शर्म स प्रथा।।
(यजु. ३६/१३)

अर्थात हे पृथिवि तू हमारे लिये सुखस्या कटकरहित निवास योग्य हो। हमारे लिए विस्तार के साथ चरण है। हमारे दोषो को हटा दे। इसी प्रकार अथर्व–वेद मे लिखा है।

निधि बिभृति बहुधा गुहा वसुमणि हिरण्य पृथिवि ददातु मे।
वसुनि नो वसुदा रासमाना देवी ददातु सुमनस्यमाना।।
(अथर्व. १२/१/४४)

जो पृथिवी अपने अन्तस्थल मे गुप्त कोषो को सुरक्षित रूप से धारण करती है वह पृथिवि मुझको सुवर्ण आदि विविध प्रकार की मूल्यवान वस्तुओ की मणि आदि विविधि रत्नो को देवे। अनेक प्रकार के धनेष्वर्यो एव निवास को देने वाली पृथिवि माता प्रसन्नता से हम सबको धनेश्वर्य प्रदान करे।

३ **अर्थ का आधार मनुष्यः-** पृथिवि ऐश्वर्यों से भरी है परन्तु उस ऐश्वर्य को प्राप्त करने के लिए पुरुष को पुरुषार्थी व परिश्रमी बनना पडेगा अन्यथा ऐश्वर्य उसे प्राप्त नहीं हो सकेगा। इसलिए वेद मे कहा है–**सूत्ये जागरण अभूत्ये स्वयम।** *(यजु. ३०/१६)* ऐश्वर्य के लिए आलस्य निद्रा आदि को त्याग कर जागृत चैतन्य हो। सोच समझकर पुरुषार्थ कर। यह पृथिवि का विशाल वैभव तुझे प्राप्त होगा। और यदि तू अकर्मण्य आलसी बनकर सोता रहा तो तुझको दारिद्रय निर्धनता ऋणादि प्राप्त होगे। इसलिए मानव जीवन को प्राप्त कर ऐश्वर्यशाली होना चाहिये।

अर्थ की प्रधानता

आर्य सभ्यता की चार प्रधान आधार शिलाओ मे मोक्ष की भाति अर्थ की प्रधानता है अर्थ का दूसरा नाम सम्पत्ति है। यह अर्थ मोक्ष का प्रधान सहायक है। बिना अर्थवृद्धि के मोक्ष नहीं हो सकता। अर्थ के ऊपर प्राणि मात्र का शरीर स्थिर है और प्राणिमात्र की जिदगी ठहरी हुई है। उस अर्थ की प्रधानता का अनुमान सहज ही कर लेना चाहिये। मनुस्मृति मे लिखा है–"सर्वेषामेव शैयानामर्थ–शौच पर स्मृतम।" अर्थात समस्त पवित्रताओ मे अर्थ की पवित्रता सर्वश्रेष्ठ है। मनु महाराज के अनुसार अर्थ सग्रह करते समय निम्न नियम का पालन करना चाहिए।

१ अर्थ सग्रह करते समय किसी भी प्राणी को कष्ट नहीं होना चाहिये।
२ अर्थ सग्रह करते समय अपने शरीर को भी कष्ट नहीं होना चाहिये।
३ अपने पुरुषार्थ से ही उत्पन्न किये गये अर्थ से निर्वाह किया जाय दूसरो की कमाई से नहीं।
४ अपना उत्पन्न किया हुआ अर्थ भी किसी गर्हित कर्म द्वारा न उत्पन्न किया हुआ हो।
५ अर्थोपादन के कारण स्वाध्याय मे पढने–लिखने से विघ्न उत्पन्न न होता हो।

अर्थात जो अथ इन पाचो नियमो को ध्यान मे रखकर उपार्जन किया जाता है वही अर्थ आर्य सभ्यता के अनुसार पवित्र होता है। किन्तु जो अर्थ इन नियमो की उपेक्षा करके सग्रह किया जाता है वह अनर्थ हो जाता है। इसलिए प्रत्येक आर्य को अनथ से बचते हुए ही अर्थोपार्जन करना चाहिये क्योकि वेद–उपदेश करते है।

ईशावास्यमिद सर्वं यत्कि ञ्च जगत्याजगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध कस्य सिवदनम।।
कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजि विषेच्छते समा।
एव त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।
(यजुर्वेद ४०/१–२)

अर्थात इस ससार मे परमात्मा को सर्वत्र हाजिर नाजिर समझकर किसी के भी धन की इच्छा न करो। उपर्युक्त मत्रो का तात्पर्य यह है कि मोक्षार्थी को ससार से उतने ही पदार्थ लेना चाहिये जिनके लेने मे किसी भी प्राणी को कष्ट न हो। ससार मे सभी प्राणी को अर्थ की आवश्यकता होती है इसलिए जब तक बहुत ही कम अथ लेने का नियम नही होगा तब तक सबके लिए अर्थ की सुविधा नहीं हो सकती।

वर्ण व्यवस्था मे धन का महत्व

पूजीबाद मे धन की महत्ता सर्वोपरि रहती है वहा धन ही सब कुद है। वर्ण व्यवस्था मे यह बात नहीं है वहा धन का स्थान कम महत्व का है। वर्ण व्यवस्था मे त्याग जीवन पर बहुत अधिक बल दिया गया है मनुष्य को धन समपत्ति के मोह मे न फस कर लिप्त न होकर त्यागपूर्वक ही उसका भोग करना चाहिये। वैदिक अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत समाज मे एक स्थान ऐसा था जो पैसा पैदा करते थे लेकिन उस दिशा मे न जाकर समाज की सेवा मे जीवन बिता देते थे। उनका स्थान वर्ण व्यवस्था मे सबसे ऊचा रखा गया था। भारत की सामाजिक व्यवस्था मे पैसे जोडने की जाय पैसे छोडने का महत्व है। धन कमाने की समय–सीमा सिर्फ २५ से ५० वर्ष की आयु तक विभिन्न गृहस्थी वर्णो के लिए नियत है। गृहस्थ ही अर्थोपार्जन की चिन्ता करता है अन्य आश्रमी नहीं। सभी वर्णो के लिए धर्म एव न्याय से जीविका करना उचित माना है। इसका परिणाम यह होता है कि धन

शेष पृष्ठ ८ पर

धर्मवीर शास्त्री

निघटु के अनुसार ऋत और सत्य समानार्थक हैं। सत्यमेव जयते नानृतम इस वाक्य मे सत्य का विलोम अनृत (न+ऋत) है जिससे सिद्ध होता है कि सत्य और ऋत अभिन्न हैं। दानो शब्दो की एकार्थकता के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं–ऋतजा=य ऋत सत्य जनयति स ऋतजा ब्रह्म जीवश्च ऋत धीतय=सत्यधारका ऋत जात = Sprung form the Sacred Truth पवित्र सत्य से उत्पन्न या विकसित दृष्टवा रूपे व्यकरोत् सत्यानृते प्रजापति अश्रद्धामानृतेऽधात श्रद्धा सत्ये प्रजापति ।।–अनृत मे अश्रद्धा और सत्य में श्रद्धा का आधार । गीता मे भी आया है–सर्वमेतदृत मन्ये यन्मा वदसि केशव। – हे कृष्ण जो कुछ आपने मुझे कहा सब सत्य (यथार्थ) मानता हू।

प्रश्न होता है कि यदि ऋत और सत्य समानार्थक हैं तो इनका बहुत बार एक साथ किन्तु परस्पर अनन्वित प्रयोग क्यो देखा जाता है। जेसे तैत्तिरीय उपनिषद् मे दीक्षा–काल मे स्नातको को उपदेश दिया गया है–

ऋत च स्वाध्याय प्रवचने च।

सत्य च स्वाध्याय प्रवचने च।

वैदिक सन्ध्या मे अघमर्षणमन्त्र है

ऋत च सत्यचाभीद्धात तपसोऽध्यजायत।

अर्थवेद का मत्र है–**सत्य बृहद् = ऋतमुग्र दीक्षा तपोपृथिवी धारयन्ति।**

उत्तर खोजने के लिये इनके अर्थों पर दृष्टि डाली जाय। महर्षि दयानन्द ने तै उ. के उपर्युक्त वचनो को ऋ भा. भू. मे वेदाक्त धर्मविषय के प्रसग मे उद्धृत किया है। उन्होने क्रमश दोनो का अर्थ किया है यथार्थ स्वरूप या ज्ञान तथा सत्याचरण। उसी ग्रन्थ मे अन्य एक अथर्ववेदीय मत्र म ऋत और सत्य का युगपत पाठ है– **पयश्च रसश्चान्न च ऋत सत्य च।** महर्षि ने अथ किया है–ऋत कहते हैं ब्रह्म को और सत्य का अर्थ है–प्रत्यक्षादि प्रमाणे से सिद्ध जैसा हृदय में ज्ञान हो वैसा ही सदा भाषण करना और सत्य को ही मानना (ऋत ब्रह्म सर्वदेवोपासनीय सत्य प्रत्यक्षादिभि प्रमाणै परीक्षित यादृश स्वात्मनि तादृश सत्यमेव वक्तव्य च) उसी प्रसग मे ऋत तप सत्य तप का अर्थ किया है यथार्थ तत्त्व मानना और सत्य बोलना।

उपयुक्त सभी प्रसगो मे महर्षि ने सत्य का तो लगभग वही अर्थ किया है जैसा लोक मे प्रचलित है अर्थात जैसा देखा समझा और सुना वैसा ही कथन करना आदि। ऋत का अर्थ उन्होने ब्रह्म भी किया है जो सत्य के लोक–प्रचलित अर्थ से विशेष है।

ऋत च सत्य चामीद्धात का महर्षि ने अर्थ किया है–सर्वत्र प्रकाशमान ईश्वर के अनन्त सामर्थ्य से वेद विद्या और त्रिगुणात्मक प्रकृति उत्पन्न हुई।

सत्य बृहद् ऋतमुग्र. मन्त्र की व्याख्या मे सत्य का अर्थ व्याख्याकारो ने वही किया है जो लोक मे प्रसिद्ध है अर्थात जैसा मन मे वैसा ही वचन–व्यवहार मे होना किन्तु ऋत का अर्थ सुष्टि–नियम किया है।

वैदिक विश्वदर्शन नामक ग्रन्थ मे शतपथ के **यदाह ऋजायुम्यात्वेति ब्रहम वा ऋत ब्रह्महिमित्र** • हवाले से लिखा है कि ऋत नाम ब्रह्म का है। एतद्ग्रन्थकार का कथन है कि वैदिक दर्शन के पूर्वार्द्धीय तत्त्वो का नाम ऋत है उन्हीं का सत्तात्मकतया सत्य नाम से भी पुकारा जाता है। आगे शतपथ के हवाल से ही लिखा है कि पूर्वार्द्ध की सृष्टि को सत्य (अथवा ऋत) तथा उत्तरार्द्ध का नाम अनृत दिया है। एक आध्यात्मिक सृष्टि है दूसरी भौतिक। भौतिक सृष्टि निरन्तर परिवर्त्तनशील है आयु से सीमाबद्ध है अत सार्थकतया अनृत है।

इसी बात को दूसरे शब्दो मे कह सकते हैं कि कारण तत्त्वो एव कार्यसृष्टि को अनृत कहा जा सकता है। कारण पूर्वार्द्धीय ऋत तीन तत्त्वो का वाचक है–एक सदेतत त्रयम (बृह. उप. वा इद नाम रूप च कर्म च) इन तीनो का दूसरा नाम त्रिपादामृत है। त्रिपाद् अर्थात १ ब्रह्म २ जीवात्मा ३ तैजसात्मा।

तैजसात्मा का अभिप्राय स्पष्ट नहीं है। इसी त्रयी का जो अभिप्राय समझ मे आता है वह यह है कि सृष्टि के साथ तीन प्रश्न जुडे है–१ किसने इसकी रचना की ? २ किसके लिये की ? ३ किस सामग्री से की ? इन प्रश्नो के उत्तर मे तीन नाम आयेगे– १ ब्रह्म या ईश्वर २ जीवात्मा ३ त्रिगुणात्मक प्रकृति। कदाचित ये तीनो ही ऋत अथवा सत्य से अभिहित हैं।

आर्य–पर्व–पद्धति कार ने ऋत को सार्वकालिक नियमो और सत्य को सार्वभौमिक नियमो के रूप मे प्रादुर्भूत हुआ लिखा है। एक अन्य विद्वान ने ऋत को गतिशील चेतन जगत और सत्य को स्थिर रहने वाला अचेतन जगत बताया है। कुछ की दृष्टि मे ऋत का अर्थ है निरपेक्ष सत्य Absolute Truth और सत्य का अर्थ है सापेक्ष सत्य Relative Truth विदेशी वेद भाष्य कारो ने ऋत को दैवी या ईश्वरीय नियम अर्थात Devine Law बताया है। सायण के अनुसार ऋत का अर्थ है जल सूर्य एव यज्ञ। ऋत के और भी कई अर्थ है। जैसे–मन (मनो वा ऋतम–जे उप) अग्नि (अय वा अग्निर्ऋतम–श) ओम (ओमित्येतदेवाक्षरम ऋतम–जै उप)

ऋत के अर्थ चाहे जितने हो हमे तो यह देखना है कि ऋत और सत्य मे अन्तर क्या है। गत्यथक ऋत धातु से ऋत और सत्तार्थक अस धातु से सत्य निष्पन्न होता है तथा जो तत्त्व गमनशील अथवा सर्वगत है वह सत्तासम्पन्न भी होना निश्चित है। इस दृष्टि से दोनो का एक ही अथ हुआ। यदि ऐसा है तो दोनो का परस्पर अनन्वित किन्तु युगपत पाठ क्यो है। यदि सत्य का अर्थ सत्याचरण सत्यभाषण या यथार्थकथन करे तो स्वाध्याय एव प्रवचन के सदर्भ मे सगति बैठ जायेगी (ऋत=सृष्टिनियम या वेद और सत्य=सत्यकारण सत्यभाषणादि) ऐसे कुछ तो विद्या हैं नहीं जिन्हे उत्पन्न होता माना जाय। वहा तो क्रमश वेद विद्या तथा त्रिगुणात्मक प्रकृति का आविर्भाव अर्थ ही सगत हो सकता है। इस अर्थ के साथ ही ऋत को शाश्वत या निरपेक्ष सत्य अथवा नियम तथा सत्य को सापेक्ष सत्य अथवा नियम के रूप मे समझने की स्थिति आती है।

उदाहरण स समझने की कोशिश करे पृथिव्यादि तत्त्वो के अपने–अपने परमाणु हैं–यह निरपेक्ष सत्य है किन्तु उनकी अद्भूत रूपता आपस के (पञ्चीकरण प्रक्रिया) पर ही सम्भव है यह सापेक्ष सत्य हुआ वेद ईश्वरीय ज्ञान है कारण मे कार्य अन्तर्हित रहना है–निरपेक्ष सत्य के उदाहरण हैं जबकि जो पैदा होता है वह मरता भी है एन मुक्ति सत्कर्मो से मिलती है आदि–आदि परस्पर निर्भर होने से सापेक्ष सत्य कहे जा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त देश काल परिस्थिति व्यक्ति आदि की अपेक्षा से कोई वस्तु आवश्यक या अनावश्यक होती है। देशगत अन्तर–जैसे भारत मे दुग्ध शाकाहार के अन्तर्गत माना जाता है व्यक्तिगत अन्तर–जैसे किसी को बैंगन बावरे किसी को बैंगन पथ्य परिस्थितिगत–जैसे आततायी से आत्मरक्षा मे हिसा अधर्म नहीं है आदि आदि। सार यह है कि सापेक्ष सत्यो से न केवल लोक–व्यवहार भरा पडा है अपितु विश्व की स्थिति ही सापेक्षता पर अवलम्बित है। सौरपरिवार के ग्रहो की स्थिति एक–दूसरे की अपेक्षा से है। यह समस्त ससार हमारा राष्ट्र हमारा परिवार और हम स्वय एक–दूसरे की अपेक्षा से ही चल रहे हैं। कारण–कार्य की अटूट श्रृखला ही तो विश्व है हम हैं और हमारा जीवन है।

द्वन्द्वो का नाम ही दुनिया है। द्वन्द्व चाहे परस्पर विरोधाश्रित हो अथवा सहयोग–सहचार पर निर्भर दोनों की पहचान एक–दूसरे के कारण है। सुख–दुख लाभ–हानि माता–पिता पति–पत्नी सभी परस्पर आश्रित हैं। न्यायदर्शन इसी कारण से मुक्ति मे सुखोपलब्धि नहीं मानता कि दुख उसका अनुषगी है। पुन ये युग्म अन्य युग्मो से सम्बद्ध होकर विश्व के अनन्त विस्तार का ताना–बाना बुनते है।

हा इन द्वन्द्वो के मध्य कोई केन्द्रीय तत्व ऐसा अवश्य है जो स्वय अविचल रहकर सबको चलाता है या चलता हुआ देखता है। कूटस्थ है ध्रुव है। इसीलिये श्री कृष्ण ने अजुन को कहा है कि वह निर्द्वन्द और नित्यसत्त्वस्थ हो जाय योग–क्षेम की चिन्ता न करे क्योकि द्वन्द्वमयता ही दुनियादारी है और दुनियादारी कर्त्तव्य पथ की सबसे बडी बाधा है। किन्तु विश्व या जगत तो अनृत है अविद्या है इसे सापेक्षसत्य भी कैसे कहा जा सकता है। वस्तुत यह विचारणीय है। अस्तु विचारे। अनृत का अर्थ है जो ऋत न हो (न+ऋत) किन्तु जो ऋत न हो वह कुछ और तो हो सकता है अर्थात जो पुरुष न हो स्त्री तो हो सकता है। क्यो अनृत का अर्थ मिथ्या या भ्रम करे ? अविद्या भी विद्या *(ब्रह्म ज्ञान विद्ययाऽमृतमश्नुते सा विद्या या विमुक्तये)* के प्राधान्य को अभाव है। न तो विद्या का सर्वथा अभाव अर्थात अज्ञान ही अविद्या का अर्थ है और न किसी अन्य को अभाव । अविद्या अर्थ है कर्म। कर्म से साधना से तपश्चर्या से मृत्यु लोक अथात ससार–सागर पार किया जाता है अज्ञान से नहीं यह आशय है कि जगत न मिथ्या है और न भ्रम। रज्जु मे सर्प के भ्रम के सदृश जगत की स्थिनि नहीं है। वस्तुत यह उपमा जगत पर चरिताथ होती ही नही क्यो ? इसलिये कि रज्जु भी सत्य है और सर्प भी सत्य है। केवल रज्जु मे सर्प का भ्रम असत्य हे और यह हुआ है रज्जु और सर्प के आकार और चेष्टागत सादृश के कारण। तब क्या जगत के सदृश जगत से भिन्न कोइ अन्य भी पदार्थ है जो भ्रम को निमित्त हो। जगत मिथ्या वादियो के पास इसका कोई उत्तर नहीं। यहा तो तमाशा यह है कि मै यदि मोहन को मोहन मानू तो अज्ञानी और यदि कहू कि मोहन ब्रह्म मे अध्यस्त है अर्थात है तो ब्रह्म मे ही गलती से उसे मोहन माने बैठा हू तो मै पूण ज्ञानी।

निसन्देह जगत परिवर्तनशील है। परिवर्तनशीलता अर्थात अवस्थान्तर की प्राप्ति एकरूपता का अभाव। इसी से जगत का अनित्य कह दिया गया। किन्तु क्या अनित्यता जगत का शाश्वत धम नहीं है ? जगत की एवविध अनित्यता भी तो नित्य है। और क्योकि सृष्टि एव प्रलय का क्रम कभी रूकता नही अत जगत को सत्य–सापेक्ष सत्य मानने मे क्या आपत्ति है। सजन और विसर्जन दोनो सापेक्ष है–दोनो एक दूसरे की पूर्वावस्था है। अस्तु, सापेक्षता कभी समाप्त नहीं होती। दूसरे ढग से देखे तो गो व्यक्ति ही मरते है गोत्व जाति तो नित्य है। ऐसा तो नहीं कि एक कल्प मे बकरी एक तरह की हो और दूसरे कल्प मे दूसरे तरह की। अत व्यक्त प्रकृति को सत्य कहना चाहिये।

साराश यह है कि जहा ऋत और सत्य का सहपाठ है वहा ऋत का अर्थ ब्रह्म जीव प्रकृति का अव्यक्त रूप वेद–विद्या जगदरचना के शाश्वत नियम तथा जीवो के अदृष्ट का निर्धारण एव सत्य का अर्थ व्यक्त प्रकृति करना समीचीन है। ऋत च सत्य च मत्र का महर्षि ने ऐसा ही अर्थ किया है।

B1/51 पश्चिम विहार नई दिल्ली ६

अनावश्यक न बोलें

अनावश्यक रूप से बोलने वाला ज्यादा बक–बक करने वाला उचित विचार किये बिना बोलने वाला जिस विषय का ज्ञान न हो उस विषय म बोलने वाला झूठ बोलने वाला और गलत बात बोलने वाला अक्सर लज्जित एव अपमानित हुआ करता है। इन दोषो से बचा रहने वाला पर निन्दा और आत्मप्रशसा करने के दोष से बचा रहता है। मनुष्य को बहुत साच विचार कर उतना ही बोलना चाहिए जितना आवश्यक और उपयोगी हो। कौआ और कोयल दिखने मे तो एक ही जैसे दिखते है और जब तक बोलते नही तब तक पता नही चलता कि कौआ है या कोयल है। किसी ने कहा है– ता गर्दे सुखन न गुफ्ता बाशद। एबो हुनरस न हुफ्ता बाशद –अर्थात जब तक कोई बातचीत नही करता बोलता नहीं तब तक उसकी अच्छाई बुराई प्रकट नही होती। जो या तो बोलता ही नही और बोलता है ता सोच समझ कर बोलता है उसे न तो लज्जित होना पडता है और न ही पछताना पडता है अत कम बोलना और उचित बोलना ही अच्छा होता है।

एक उच्च शिक्षित और विविध विषयो का प्रकाण्ड पण्डित युवक विद्वानो की सभा मे बहुत कम बालता था और प्राय चुप ही रहता था। एक व्यक्ति ने उससे इसका कारण पूछ लिय तो वह युवक बोला–गलत और बुरा बोलने की अपेक्षा न बोलना अच्छा होता है। हम जा कुछ भी बोलते है वह व्योम मे हमेशा के लिए अंकित हो जाता है क्योकि शब्द अक्षर है अविनाशी है और नाद ब्रह्म है। सही और बहुत अच्छा ज्यादा नही बोला जा सकता। कौए की भाति काव काव करते रहन की अपेक्षा कोयल की तरह कभी–कभी मधुर कूक करना अच्छा होता है। प्रकृति ने हम कान दो दिये है जबकि जीभ एक दी है जा इस बात का सकेत है कि हम सुने अधिक और बाले कम। जैसे कम खाना और गम खाना स्वास्थ्य–रक्षा के लिए हितकारी और बुद्धिमानी होता है वैसे ही ज्यादा खाना और ज्यादा बालना अहितकारी और मूर्खता का काम होता है। नीति मे कहा है– मौन मूर्खस्य बलम–यानि मूख का बल चुप रहना है पर बुद्धिमान के लिए तो यह एक श्रेष्ठ और आवश्यक गुण भी है।

एम. एस. दहिया

शहीद रमेश चन्द्र बलिदान दिवस एवं आर्य कन्या शिविर का आयोजन

करनाल (१ जून १९९६) दयानन्द आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय (जेहलम) कर्णताल करनाल मे आज शहीद रमेश चन्द्र बलिदान दिवस एव ७ दिवसीय आर्य कन्या शिविर' का समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर प्रातीय पत्रकर सघ के अध्यक्ष श्री के वी पडित ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए लाला जगत नारायण को पत्रकार जगत का भीष्म पितामह बताते हुए रमेश चन्द्र जी को निर्भिक एव सहासी पत्रकार बताया। इनके बलिदान से पत्रकार जगत को मार्ग दर्शन देने का आह्वाहन किया।

चौ. लाजपत आर्य हरियाणा ने रमेश चन्द्र को श्रद्धाजलि देते हुए पत्रकारो की अहम भूमिका को इग्ति करते हुए कहा की कलम के सिपाही अगर सो गये तो वतन के सिपाही वतन बेच देगे। इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि एव पूर्व विधायक सेठ लक्ष्मण दास बजाज एव विशिष्ट अतिथि अध्यक्ष नगरपालिका करनाल श्रीमति सुमिता सिह ने अपनी श्रद्धाजलि शहीद रमेश चन्द्र जी के चरणो मे समर्पित की।

एवम आर्य कन्या शिविर के माध्यम से बालिकाओ मे आत्मबल साहस एव आत्म सम्मान की मानोभावना को सम्बल एव दिशा देने का जो काय किया उसकी सभी वक्ताओ ने प्रशसा की। इस शिविर मे विशेष रूप से नैतिक शिक्षा बौद्धिक शिक्षा यज्ञ–सध्या ज्ञान भाषण शैली व शारीरिक शिक्षा का ज्ञान दिया गया। वाद–विवाद प्रतियोगिता कराटे व जुडो प्रतियोगिता का प्रोफेसर सूय स्वामी जी की याद मे आयोजन किया गया व उन्हे पुरस्कार वितरित किये गये।

यह समारोह विद्यालय प्राचार्य प्रिसिपल एस एन आर्य द्वारा बडे ही सुयोजित ढग से चलाया गया। समारोह पूर्ण सफलता क साथ देश प्रेम एव धार्मिक भाव को छात्रो के जीवन मे प्रसारित करने के सकल्प के साथ सम्पन्न हुआ।

गुलामी की भाषा का विरोध

इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे पडित मदन मोहन मालवीय को दीक्षान्त भाषण देने के लिए आमत्रित किया गया। मालवीय जी पधारे। मालवीय जी की वेश–भूषा और व्यक्तित्व को देखकर छात्र आनद–विभोर हो उठे। उस समय तक विश्वविद्यालय मे दीक्षान्त भाषण अग्रेजी मे देने की परिपाटी थी। मालवीय जी ने हिदी मे बोलना आरभ किया। कुछ ही क्षण बीते होगे कि एक विद्यार्थी उठ खडा हुआ और ऊची आवाज मे अग्रेजी मे बोला श्रीमानजी आपकी भाषा बडी कठिन है। समझ मे नही आती। या तो आसान जुबान मे बोलिये या अग्रेजी मे।"

मालवीय जी गभीर हो आये। अग्रेजी मे उत्तर देते हुए उन्होने कहा "मै अग्रेजी मे अपनी बात कह सकता हू, शायद ज्यादा अच्छी तरह कह सकता हू, लेकिन मे उस परम्परा का खडन करना चाहता हू, जो गुलामी की परम्परा है। धीरज रक्खो सब समझ मे आ जाएगा।

इतना कहकर मालवीय जी ने पुन हिदी मे धाराप्रवाह बोलना शुरू कर दिया फिर किसी को भी मुह खोलने का साहस नही हुआ।

वेदों में आर्थिक चिन्तन

पृष्ठ ६ का शेष

की लिप्सा नही होती। सचय का सवाल भी पैदा नहीं होता क्योंकि– **शतहस्त समाहर सहस्रहस्त सकिर** सौ हाथो से कमाने वाला हजार हाथो से बाटने को उद्यत रहता है। सारे समाजो को चार आश्रमो मे बाटा गया ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र। इसमे से सिर्फ वैश्य को ही धन कमाने का अधिकार था। यजुर्वेद मे एक मत्र आया है।

ब्राह्मणोस्य मुखमासिद् बाहू राजन्य कृत। ऊरूतदस्य यद्वैश्य पद्भ्या शूद्रो अजायत।।

अर्थात वैश्य के लिए धन कमाने की वह व्यवस्था है जैसे सारा भोजन पेट मे चला जाता है पेट उसे अपने पास न रखकर फिर सारे शरीर मे रक्त के रूप मे लौटा देता है इसी प्रकार वैश्य अपने धन सम्पत्ति समाज की सेवा मे लगा देता है। वैदिक सस्कृति का निर्माण करने वालो ने कुछ ऐसा चलन बना दिया था ऐसी प्रथा डाल दी थी कि जिससे पैसा जोडने वाले भी एक समय मे आकर पैसा छोडने लगते थे। पैसा का त्याग करना यहा की सस्कृति का अग था। कुछ दार्शनिक मनुष्य को आर्थिक प्राणी (Economic man) कहा है। वैदिक सस्कृति का दृष्टिकोण अर्थ प्रधान नहीं है। इतिहास उसका साक्षी है। चन्द्रगुप्त मौर्य ने वृद्धावस्था मे अपना राजपाट अपने पुत्र बिन्दूसार के सुपुर्द कर स्वय तपस्वी हो गया। रघुवश ने रघुकुल के राजाओ के विषय मे लिखा है कि–वद्धावस्था मे वे मुनि हो जाते थे। **'वार्धक्ये मुनि वृत्तिनाम्'** अपने सर्वस्व होम देने की प्रथा आज भी कई जातियो मे है। अमेरिका मे कई ऐसी जगली जातिया है जिनसे व्यक्ति सारी आयु सम्पत्ति का सचय करता है। जब बहुत अधिक सम्पत्ति जुड जाती है तब उसे समुद्र मे फेक देता है। आज समाज का मूल्याकन उल्टा हो गया है। आज जिस के पास कोठी है मोटर है बैंक मे रूपया जमा है वह चोर बदमाश रिश्वतखोर होते हुए भी समाज मे पूज्यनीय है। वर्ण व्यवस्था मे यह बात नहीं थी इसका मापदण्ड दूसरा था। हमे समाज मे ऐसी विचारधारा को प्रभावित कर देना होगा ताकि घूस खोर चारी बैंको के लाकरो मे काला पैसा जमा करने वाले अपना मुह छिपाते फिरे जब हम समाज को नव निर्माण के इन मूल्यो का आधार बनाकर देगे तब वैदिक वर्ण व्यवस्था के असली आधार हमारे समाज के नीव मे होगे

देश आर्थिक सकट से मुक्त रहे प्रजा मे असमृद्धि निर्धनता नग्नता क्षुधा आदि न रहे यह वैदिक समाज एव वैदिक राष्ट्र का आदर्श है। वेद का स्तोता असमृद्धि को फटकार लगाता हुआ कहता।

परोऽपेहय समृद्धे चिते हेति नयामसि। वेद त्वाह निमीवन्ती नितुदन्ती मराते।।
(अथर्व ५/७/७)

हे असमृद्धि तू हमारे देश से दूर हो जा हम तेरे शस्त्र को परे कर देते हैं हम जानते है कि तू घातक है तू व्यथ पहुचान वाली है।

वैदिका स्तोता जानता है कि देश मे असमृद्धि का या व्यापक भुखमरी का छा जाना बडा ही भयकर होता है। अतएव वह उसका चित्रण करता हुआ कहता है।

उत नग्ना बोभुवती स्वप्नया सचसे जनम। अराते चित्ते वीर्त्सन्ती आकूति पुरूषस्य च।।
(अर्थव ५/७/८)

अर्थात जब तू नग्न रूप मे राष्ट्र मे व्याप्त हो जाती है। तब जनता को स्वप्न मे भी तू ही दिखाई देती है। तू चित्त को व्याकुल कर देती है। वैदिक दृष्टि कोण यह है कि कोई भी व्यक्ति जिसने भूमि पर जन्म लिया है वह भूखा–प्यासा न रहे। **"एव व द्यावापृथिवि उपस्थे मा क्षुधन्मा तृष्त्"**

वेद लोक और परलोक दोनो को सुखी बनाने का उपदेश करता है। लोक मे रहते हुए खूब कमाओं ऐश्वर्य एकत्र करो और परलोक सुधारने के लिए उसका दान भी अच्छी प्रकार करो इस लोक से ही परलोक बनता है। अत यह लोक जितना अच्छा बनाया जायेगा उतना ही अपना कल्याण हो सकेगा। पृथिवि के धनों के साथ जब विद्या विज्ञानादि रूपी धन भी मिल जाता है तब तो और भी सुखो की प्राप्ति होती है।

खून और आंसुओ की अमर गाथा है १८५७ की जन क्रान्ति

शहीद गाव के लोग अपनी जमीन से अब तक भी वचित है। हासी से १० कि मी दूरी पर स्थित है रोहनात गाव। १८५७ की जनक्रान्ति मे भाग लेने पर यह गाव अग्रेज सरकार ने नीलाम कर दिया था कुल २० ६५६ बीघे का १६ विस्वे का यह गाव केवल ८ हजार एक सौ रूपये मे नीलाम हुआ था जिसे ६१ लोगो न मिलकर खरीदा था

इस गाव के लोगो को बागी घोषित कर दिया गया था। यहा के लोग तीन पीढी तक भटकते रहे रोजी रोटी के लिए न जाने कहा कहा की ठोकरे खानी पडी आजादी मिलने के साथ इस गाव को सुख की सास मिली १६५७ मे १० वर्ष बाद इस गाव को आदर्श गाव घोषित किया गया हरियाणा बनने पर तत्कालीन मुख्य मत्री चौधरी बसी लाल ने इस गाव को सवा लाख रूपये पुरस्कार क रूप मे दिये थे

रोहनात गाव के लोगो की मुख्य माग नीलाम की गयी धरती को वापिस पाने की रही है इसके लिए गाव के लोग अब तक भी भटक रहे है

रोहनात शहीद कमेटी के सचिव श्री भलेराम बूरा फाइले लिए नगे पाव अधिकारियो व मत्रियो के द्वार खटखटा चुके हैं हर जगह आश्वासन तो मिला है परन्तु नीलाम जमीन अभी तक नही मिला

पूव सरपच श्री बृजलाल ... इस सिलसिले मे स्व प्रधानमत्री इन्दिरा गाधी ... मिले थे रोहनात के १८५७ क प्रथम स्वतत्रता ... बलिदान देने की कहानी खून और आसुओ की ... गाथा है १

मइ १ ५७ का जब मरठ ... छावनी मे भारतीय सैनको ने अग्रजो के विरूद्ध विद्रोह कर दिया ना अगले दिन ही दिल्ली के लाल किले पर भारतीयो का अधिकार हो गया था अग्रेज दिल्ली से खदेड दिये थ तब बहादुर शाह जफर को बादशाह घोषित कर आजादी की लडाई और तेज कर दी गयी

पहली जनक्रान्ति की चिंगारी रोहनात पहुची २६ मइ १ ५७ को लोगो ने ... मे लाठी जेली बरछे भाले आदि लेकर ... नाशाम जो तत्कालीन मुख्यमत्री चौ बन्सीलाल का ... का है फिर दासी मे अग्रेजो की छावनी मे आक्रमण किया अन्य गावो के लोग भी उनसे आ मिले उस दिन हासी मे ११ अग्रेज अफसर मारे गये। सरकारी खजाना लूट लिया गया हासी क तहसीलदार को किले पर गोली मार दी गयी गोरी पलटन न ... भाग गयी हासी क्षेत्र गुलामी से मुक्त हो गया

उसी साल १४ सितम्बर को अग्रेजो ने दोबारा दिल्ली जीत ली। बहादुर शाह जफर बन्दी बना लिए गये। उनके दोनो बेट कत्ल कर दिये गये अग्रेजो का अत्याचार इतना बढा कि सारा भारत काप उठा

हासी क्षेत्र मे आजादी की ... मे भाग लेने वालो पर भी अत्याचार किये जाने लगे सामूहिक फासिया दी गयी गाव के गाव ... राड रूलरो के नीचे इन्सान पीसे गये तोप और गोलियो से क्रान्तिकारियो की जीवन लीला समाप्त की गयी

उस समय हिसार क डिप्टी कमिश्नर विलियम ख्वाजा थे जो रोहनात गाव को क्रान्ति लहर को पैनी नजर से देख रह थे उन्होने तहसीलदार हासी को १४ सितम्बर १८५७ को ... मुकदमा न ५ के अनुसार रोहनात गाव बागी है गाव की कुल जमीन की तफसील शीघ्र भेजी जाये ... तहसीलदार ने तुरन्त पूरा विवरण भज दिया चीफ सेक्रेटरी पजाब ने १३ नवम्बर १८५७ के अनुसार दूसरे कई गावो के साथ रोहनात कापूरा गाव नीलाम करने की स्वीकति दे दी इस बीच हिसार के जिलाधीश मिस्टर जनरल बिन बन गये थे। उन्होने नीलाम गाव रोहनात का नक्शा तैयार करवाया २० जुलाई १ ५८ को नीलामी की बोली लगाई गयी बोली मे रोहनात गाव को खरीदने वालो का ब्यारा इस प्रकार हे उमरा २१ खरीददार सुल्तानपुर २० महन्दीपुर १ भयाना ७ मुजाहदपुर ४ रोहनात गाव पर तोप लगाकर मकान तोड दिये गये बच्चो को अग्रेजी सैनिको ने कओ पर फेक दिया जवानो को गोली मारी गयी स्त्रियो ने कओ पर छलाग लगाकर आत्महत्या कर ली गाव के लोगो ने समय को याना आग के दरिया मे डूब कर की रोहनात गाव के बलदानियो पर सब का गर्व है

केन्द्रीय सरकार ने पहली लोक सभा मे प्रस्ताव पारित किया था कि अग्रेजो द्वारा जब्त जमीन व सम्पत्ति वापस की जायेगी लेकिन इस गाव के लोग अभी तक नीलाम जमीन वापस नही पा सके

गाव के लोगो ने प्रदेश व देश की राजनीति बदलने पर विश्वास व्यक्त करते हुए राज्य व केन्द्र दोना सरकारो से गाव की नीलाम जमीन वापस दिलाने की माग की है

रामसुकल शास्त्री पत्रकार
हासी
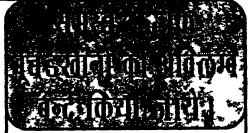
आर्य समाज नवाबगज (बरेली) के ७व वार्षिकोत्सव मे उपस्थित समस्त नर नारियो ने बूढे बैलो व साडो के कत्ल के सम्बन्ध मे सर्वोच्च न्यायालय द्वारा हाल ही मे दिये गये निणय पर खेद व्यक्त करते हुए इस सवेदन हीनता की पराकाष्ठा मानते हुए तथा इस पर पुर्नविचार की माग की है

यह जन सभा भारत सरकार से एक स्वर से माग करती है कि भारत वष ने समस्त यान्त्रिक बूचडखानो को तुरन्त समाप्त कर सम्पूर्ण गौ वश की हत्या पर अविलम्ब प्रतिबन्ध लगाया जाय

आर्य समाज की यह सभा सम्पूण देश मे पूर्ण नशाबन्दी लागू करन की माग करत हुए भारत सरकार से माग करती है कि सभी प्रकार क मादक द्रव्यो के उत्पादन और बिक्री पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगाया जाय

यह जन सभा उत्तरप्रदेश म लाटरी की बिक्री पर लगाये गये प्रतिबन्ध को हटाये जाने पर रोष व्यक्त करते हुए जनहित मे इस पुन प्रतिबन्ध लगाने की माग करती हे

रामपाल आर्य

वीर सावरकर जयन्ती समारोह

आर्य समाज लाजपत नगर नई दिल्ली क्रान्तिकारियो के मुकुट मणि वीर सावरकर का ११४ वा जयन्ती समारो श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्त की अध्यक्षता मे मनाया गया प मेघ श्याम वेदालकार ने उन के महान जीवन पर रोशनी डाली अखिल भारत जनसघ के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेन्द्र अवस्थी ने वीर सावरकर और आर्य समाज को लेकर आर्य समाज से प्रसारित कार्यो पर प्रकाश डाला राजधानी के वरिष्ठ पत्रकार श्री बनारसी सिह जी ने उन के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हे महान भविष्य वक्ता इतिहास व लेखक बताया

सुरेन्द्र शास्त्री मत्री

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर विशेष छूट

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने निम्नलिखित समस्त पुस्तके एक साथ लेने पर 40% की विशेष छूट देने की घोषणा की है यह छूट श्रावणी पर्व तक लागू रहगी यथाशीघ्र आदेश भेजकर इस सुनहर अवसर का लाभ उठाये आदेश भेजते समय 25% धन अग्रिम भेजे

1	Maharana Partap	30 00
2	Sc ence n the verds	25 00
3	Dowan of Ind an H stor	15 00
4	गोहत्या राष्ट्र हत्या	6 00
5	Sto m n Punjab	80 00
6	Bank m T lak Dayanand	4 00
7	सत्याथ प्रकाश सस्कत	50 00
8	वेदाथ	60 00
9	दयानन्द दिव्य दशन	51 00
10	आर्याभि विनिमय	20 00
11	भारत भाग्य विधाता	12 00
12	N ne Upn shad	20 00
13	आर्य समाज का इतिहास भाग 1 2	125 00
14	बृहद विमान शास्त्र	40 00
15	मुगल साम्राज्य का भय भाग 1 2	35 00
16	महाराणा प्रताप	16 00
17	सामवद मुनिभाष्य ब्रहममुनि)	13 00
18	वैदिक भजन	20 00
19	वैदिक ज्योति	20 00
20	What s Arya Samaj	30 00
21	आर्य समाज उपलब्धिया	00
22	कौन कहता है दोपदी के पाच पति थे	8 00
23	बन्दावीर वैरागी	8 00
24	निरुक्त का मूल वेद मे	2 50
25	सत्याथ प्रकाश की शिक्षाए	10 00
26	वैदिक कोष सग्रह	5 00
27	सत्यार्थ प्रकाश के दो समुल्लास	1 50
28	वेद निबन्ध स्मारिका	30 00

प्राप्ति स्थान **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**

महर्षि दयानन्द भवन 5 रामलीला मैदान दिल्ली 110002 दूरभाष 3 74771 (0985

स्वास्थ्य चर्चा

वायु विकार
बचाव और उपचार

मुह से लेकर छोटी बडी आतो तक पाचन प्रणाली मे वायु की उत्पत्ति और उसका विचरण हमारे शरीर मे घट रही जैव क्रियाओ का एक कुदरती हिस्सा है लेकिन बहुत से लोगो मे यह उस समय तकलीफ भार बना जाता है जब इसकी वजह से पेट में उमड घुमड मचने लगती है अफरा आ जाता है डकारे आने लगती है और किसी भी तरह राहत नहीं मिलती। लोगो के बीच उठते बैठते अलग परेशानी महसूस होने लगती है। यह विकार वायुरोग वायुविकार या गैस्ट्रिक ट्रबल कहलाता है। इससे कैसे बचा जा सकता है और इसके उपचार क्या हैं इसके बारे मे बता रहे हैं डॉ यतीश अग्रवाल।

मा की कोख से इस दुनिया मे आख खोलते ही पहली कुछ सासो के साथ ही हवा बच्चे के पेट तक पहुच जाती है। इसके बाद जैसे बच्चा खुराक लेने लगता है उसकी पाचन–प्रणाली मे वायु बनने का सिलसिला शुरू हो जाता है।

यह क्रम जीवन भर कायम रहता है। जब–जब हम कुछ निगलते है–कुछ खाते है पीते है या लार ही भीतर लेते हैं हवा साथ–साथ पेट मे पहुचती रहती है। उदर मे बडी आतो मे विचरण करती ५० से ७० फीसदी हवा इसी रास्ते जीवन लेती है। लार की हर घूट के साथ दो से तीन मिलीमीटर हवा भीतर का रास्ता तलाश लेती है।

प्राय हम दिन मे २००० बार लार भीतर लेते है इससे यह अदाज लगा पाना मुश्किल नही कि दिन मे हम कितनी हवा खा–पी लेते है।

यह बात यही खत्म नहीं हो जाती। बहुत से खाद्य और पेय पदार्थो मे भी हवा का समावेश रहता है।

आमाशय मे पहुचते ही जैसे अम्ल से उनका मेल–मिलाप होता है उनसे भारी मात्रा मे गैस छूटती है।

आतो मे भोजन के पचने से भी गैस बनती–निकलती है और जो कुछ पच नही पाता उस पर बडी आत मे बैठे बैक्टीरिया अपना कमाल दिखाते है और रही–सही कसर पूरी कर देते है।

इस तरह पाचन–प्रणाली मे हर पल हर क्षण वायु बनती पलती रहती है। यही वायु उदरवायु और डकारो के रूप मे बाहर जाती है।

इसका ६१ फीसदी आक्सीजन नाइट्रोजन हाइड्रोजन काबंन डायआक्साइड और मिथेन गैसो से बना होता है। मिथेन को छोड कर यह भी गैसे गध–रहित होती है गध का कारण मिथेन के अलावा अमोनिया और हाइड्रोजन सल्फाइड गैस है जो आतो मे पाई जाने वाली गेस का सिर्फ एक प्रतिशत होती है।

पेट मे गैस बनने की प्रक्रिया कई चीजो से बढावा पा सकती है।

हमारे खानपान का इससे गहरा नाता है। ज्यादा प्रोटीन वाला भोजन वायु वृद्धिकारक है। इसी तरह कुछ सब्जियो जैसे गोभी शलजम मूली प्याज पत्तागोभी सेम और खीरा और फल जैस सेब और आलूबुखारा अधिक गैस बनाते है। कुछ लोगो मे दूध और दूध से बनी चीजो से भी परेशानी बढती है। दूध पचाने के लिए जरूरी पाचक इजाइम लेक्टेज की कमी से ऐसा होता है।

धूम्रपान सुपारी पानमसाला और तम्बाकू के सेवन तथा चुइगम चबाते रहने से भी गैस बढती है। भोजन करते समय यदि आप जल्दबाजी करते है और भोजन को चबा–चबाकर खाने के बजाय निगलते जाते है तब भी मुह के रास्ते अधिक वायु शरीर मे पहुच जाती है। पानी पीते समय भी इस तरह की जल्दबाजी पेट तक अधिक गैस ले जाने का कारण है।

तनाव और चिताए भी बातकारक है निराश किस्म के लोगो मे पाया गया है कि वे आदतन मुह से अधिक वायु पेट मे ले जाते हैं। दूसरा उनमे भोजन की बडी मात्रा बिना पचे ही बडी आत मे पहुच जाती है जिससे भी ज्यादा गैस बनती है।

कब्ज से भी वातरोग को बढावा मिलता हैं इससे बडी आत मे बैक्टीरिया के असर से ज्यादा गैस बनती है। कुछ लोगो मे पुश्तैनी तौर पर भी अधिक गैस बनने की समस्या पाई जाती है।

• आधुनिक पहनावा–तग जीस स्कर्ट जो पेट को कसते है उनसे भी गैस की तकलीफ ज्यादा तीव्र हो सकती है। ऐसे मे गैस को आगे बढने मे बाधा महसूस होती है।

वातरोग मे व्यक्ति तरह–तरह की परेशानियो को महसूस कर सकता है। पेट मे खलबली मचना बेचैनी होना आतो मे ऐठन–सिकुडने से दर्द होना पेट मे अफारा आना डकारे आना हिचकिया उठना इसके कुछ खास लक्षण है। मुह से बास आने की शिकायत हो सकती है। पेट मे गडबड होती महसूस हो सकती है। पेट फूलने की शिकायत भी आम पाई जाती है।

वातरोग के लिए अपनाए जाने वाले अधिकतम उपचार प्रभावी साबित नही होते। इसका सबसे बडा कारण उनका अवैज्ञानिक होना है। सोडा पीना एट एसिडज गोलिया खाना दस्तावर दवाए लेना किसी काम का नही।

उल्टा उन्हे आजमाने से तकलीफ बढ सकती है। सोडा पेट मे जाकर कार्बन डाइआक्साइड गैस छोडता है। बाईकार्बनेट वाले एट एसिड भी यही परेशानिया पैदा करते हैं जिससे भोजन छोटी आत मे पूरी तरह पचने से पहले ही बडी आत मे पहुच जाता है और अधिक गैस बनाता है। अत इन उपायो मे उलझना व्यर्थ है।

वातरोग की समस्याओ का समाधान खान–पान रहन–सहन और जीवनशैली मे सही तब्दीलिया लाने से जुडा है।

सबसे सार्थक उपाय नियमित व्यायाम है। सुबह–शाम की सैर इसके लिए सबसे अच्छी है। उससे गैस को बाहर आने मे आसानी होती है। और कब्ज भी दूर होती है।

पेट को हल्का सा रखना भी फायदेमद साबित हो सकता है। इससे गैस को आगे बढने का रास्ता मिल जाता है।

कब्ज की शिकायत होने पर सोने से पहले रात मे दो–तीन बडे चम्मच इसबगोल लेना उपयोगी रहता है। इससे आतो की गति सामान्य बनती है और कब्ज से राहत मिलती है। परिणामत गैस की तकलीफ भी काबू मे आ जाती है। मानसिक तनाव से बचकर रहना भी लाभदायक साबित होता है। सैर यग ध्यान तनावमुक्त रहने के प्रभावी रास्ते है।

भोजन करते वक्त हडबडी न करना भी जरूरी है। छोटे कौर ले और खूब चबाकर खाए। पानी और दूसरे पेय पदार्थ भी घूट–घूट कर धीरे–धीरे पीये। इससे कम मात्रा मे वायु भीतर जाती है।

बेहतर होगा कि धूम्रपान सुपारी पान मसाला तम्बाकू और चुइगम की आदत त्याग दे। हो सकता है शुरू मे इससे दिक्कत महसूस हो पर कुछ समय बाद आप पाएगे कि इससे समस्या बहुत हद तक घट जाएगी।

घट कलह कपट का फोड़ो

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

धोती कुरता शिर पर चोटी
यह पहिचान आर्यों की मोटी
ऊच नीच की चरचा खोटी
मत मृ६ नाक स़र्फो़ो
घट कलह कपट का फोड़ो ॥
मन मे मैल तो मल न होगा
वालू रेती मे तेन न होगा
सच्चा मानव फल न होगा
वैर भावना छोडो।
घट कलह कपट का फोड़ो
कलुश कालिमा को धो डालो
मैली चादर दाग छुड़ालो।
गन्दे जल से दूर निकालो
करक साफ निचोड़ो।
घट कलह कपट का फोड़ो ॥
शुभ कर्मों को ही अपनाओ
समय अमोल न वृथा गवाओ
सभी परस्पर प्यार बढ़ाओ
नगड़ो मे मुख मोड़ो
घट कलह कपट का फोड़ो ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

शोक समाचार

श्री पन्ना लाल पीयूष को पत्नी शोक

आर्य जगत के प्रसिद्ध गायक सगीतज्ञ भजनोपदेशक श्री पन्ना लाल पीयूष की पत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी का निधन २७ ४ ९६ को हो गया। शान्ति यज्ञ एव शोक सभा उनके निवास २४३/१७ पीयूष वाणी आशाक नगर उदयपुर मे दिनाक ६ ५ ९६ को आयोजित हुयी जिसमे उपस्थित आर्य नर नारियो ने उनके प्रति श्रद्धा सुमन भट किये

सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मत्री डा सच्चिदानन्द शास्त्री ने अपने शोक सन्देश मे दिवगत आत्मा की सदगति एव श्री पीयूष जी तथा उनक परिवार को धेर्य और सहनशक्ति प्राप्ति की प्रभु से प्रार्थना की

माता जीवनी देवी का निधन

कान्हार जिला रोहतक (हरियाणा) मे दिनाक ३१ मइ १९९६ को अक्समात निधन हो गया उनकी आयु ८ वष की थी

माता जी श्री रामश्व दास गुप्त की धमपत्नी थी। वे कान्हेर आय समाज की कमठ कार्यकर्ता थी अपन पति के निधन के पश्चात वे दिल्ली त्रिनगर आर्य समाज की सेवा करती रही थी कइ व दिल्ली रह कर [illegible] कार्यों म भाग लेती थी

उनके निधन से [illegible] को बडी हानि हुइ है

अब उनके सुपुत्र श्री कष्ण चन्द्र आय न उनके शेष कार्यों को सम्पन्न करने हेतु अपना जीवन आर्य समाज को अर्पित कर दिया है

भवदीय
कृष्ण चन्द्र आय
६३१ त्रिनगर दिल्ली

डा० वेदप्रकाश आर्य नहीं रहे

महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त होम्यापेथी के प्रसिद्ध चिकित्सक डा आर्यन का देहावसान २१ मई को हो गया डा आयन सावदेशिक आय वीर दल के पूव सचालक प बालदिवाकर श्री हर के मामा एव विश्ववेद परिवार के अध्यक्ष प ब्रह्मप्रकाश जी शास्त्री के सहोदर अनुज थ

अन्त्येष्टि सस्कार प नेत्रपाल जी शास्त्री ने पूण वैदिक विधि से निगम बोध घाट पर सपन्न कराया

वीर सावरकर की सुनी होती तो पाकिस्तान न बनता

देवी दास आर्य

कानपुर यदि देश के तत्कालीन नेता भी वीर सावरकर की चेतावनी पर ध्यान दिया होता तो न तो पाकिस्तान बनता और न ही आज कश्मीर की समस्या से देश को जूझना पडता सावरकर ने देश की आजादी से पहले ही मुस्लिम तुष्टीकरण छोडने के लिये नेताओ को सचत करने का प्रयास किया था परन्तु कांग्रेसी नेताओ ने उनकी नही सुनी

उपरोक्त विचार केन्द्रीय आर्य समाज के प्रधान श्री दवी दास आर्य ने आय समाज मन्दिर गोविन्द नगर म आयोजित वीर सावरकर जयन्ती समारोह की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये

श्री आर्य ने आगे कहा कि सावरकर ने कभी भी सिद्धान्तो से समझाता नहीं किया जीवन भर राष्ट्र जागरण और देश की स्वतन्त्रता के लिये सघष करते रहे।

समारोह मे मुख्य रूप से देवीदास आर्य बाल गोविन्द आय भगति भूषण मदन लाल नवला शुभ कुमार वोहरा स्वामी प्रज्ञा नन्द सरस्वती प जगन्नाथ शास्त्री श्रीमती शीला उप्पल वीरा चोपडा दर्शना कपूर चन्द्रकान्ता आदि ने वीर सावरकर के जीवन के विभिन्न प्रेरक प्रसगो को प्रस्तुत करते हुए विचार व्यक्त किये एव भजन गाये

समारोह की अध्यक्षता श्री देवीदास आर्य ने तथा सचालन मत्री श्री बाल गोविन्द आर्य ने किया।

बाल गोविन्द आर्य मत्री
आर्य समाज गोविन्द नगर

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 16 6 96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/96
R N No 626/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 13/14 6 1996

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज नगरा झाँसी

प्रधान	श्री सुखी राम मीणा
मत्री	श्री राजेन्द्र सिह यादव
कोषाध्यक्ष	श्री जसवन्त सिह

आर्य समाज अग्रवाल मण्डी टटीरी

प्रधान	श्री अभिमन्यु कुमार गुप्त
मत्री	श्री राधेश्याम आर्य
कोषाध्यक्ष	श्री देव कुमार आर्य

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली

प्रधान	श्री राम मूर्ति कैला
मत्री	श्री वीरेश बुग्गा
कोषाध्यक्ष	श्री प्रेम नारायण सूद

आर्य समाज रामपुर मनिहारान सहारनपुर

प्रधान	श्री माल्हड सिह
मत्री	श्री राजेन्द्र सिह
कोषाध्यक्ष	श्री सुनील कुमार

आर्य समाज रामपुर कोटा

प्रधान	श्री प्रहलाद कृष्ण भार्गव
मत्री	श्री वेद्य भगवती प्रसाद श्याम
कोषाध्यक्ष	श्री कल्याण मल मित्तल

वैदिक विवाह सम्पन्न

श्री जोगो साह के सुपुत्र श्री महेन्द्र मा ग्रा गडही परासी के साथ श्री शिवकुमार आय का प्रथम पुत्रा ललिता ग्राम अगहरा सोनो (जमइ) का दिनाक २२ ४ ६६ तथा श्री बालेन्द प्रसाद के सुपुत्र श्री सुजित प्रसाद ग्राम तेनरिया लक्ष्मापुर (मुगेर) के साथ श्री वालेश्वर जी का सुपुत्री कुमारी गुडिया ग्राम अगहरा सोनो (जमइ) का विवाह दिनाक १३ ५ ६६ में बडे उत्साह पूवक प युगल किशोर आय के पारोहित्य में सम्पन्न हुआ आर्य सदस्य एव नगर के प्रमिद्ध नर नारियों ने वर वधु को आर्शीवाद दिया।

मत्री गजेन्द्र कुमार आय
अगहरा सोना

अपने दोषों को स्पष्टत: स्वीकार कर लीजिए। कामनाओं से दु:ख बढ़ता है, सन्तोष का विकास कीजिए।

सत्यार्थ प्रकाश

सोई हुई जाति के स्वाभिमान को जागृत करने वाला अद्वितीय ग्रथ है सत्यार्थ प्रकाश अवश्य पढे।

वार्षिकोत्सव

महर्षि दयानन्द साधु आश्रम जयीना गज भरतपुर राजस्थान का दसवा वार्षिकोत्सव २८ से ३० जून तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है इस अवसर पर अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मूर्धन्य सन्यासी विद्वान एव भजनोपदेशक पधार रहे है अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर तन मन धन से सहयोग कर तथा कार्यक्रम को सफल बनाये

शोक सन्देश

गत दिनाक २६ मई १९९६ इ रविवार को प्रातःकाल सवा छ बजे की वेला मे आर्य समाज बरदहा बाजार जनपद बहराइच (उत्तर प्रदेश) के पूर्व प्रधान श्री नत्थी राम जी गुप्त विद्यावाचस्पति की वयोवृद्ध धममाता (सास) का प्रस्फुटित स्वर मे निरतर ओ३म का जप करते हुए प्राणान्त हो गया। प्राणान्त काल मे उनके ज्येष्ठ नाती श्री रमेश चन्द्र गुप्त B S C (Bio) सिध्दान्त शास्त्री पूर्व कोषाध्यक्ष आर्य समाज बरदहा–बा उनकी सेवा मे सन्नद्ध थे। कनिष्ठ पुत्री के ज्येष्ठ पुत्र श्री अनिल कुमार गुप्त ने उन्हे पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार मुखाग्नि दे कर अन्त्येष्टि सम्पन्न की।

परम पिता परमात्मा से दिवगत आत्मा के प्रति हम सभी की कामना है कि वह उन्हे सद्गति प्रदान करे।

हरीनारायण आर्य
आर्य समाज बरदहा बाजार
बहराइच उत्तर प्रदेश

कृतज्ञता ज्ञापन

मेरी धर्म पत्नी लक्ष्मीदेवी के निधन पर आर्य समाजो आर्य जनो ने शोक सहानुभूति प्रस्ताव तार पत्र आदि द्वारा भेज कर सात्वना प्रदान की उनका मैं तथा मेरा परिवार आभारी है।

पन्नालाल पीयूष स्वतत्रता सैनानी
२४३/१७ अशोक नगर
उदयपुर (राज.)
फोन न. ४१३४०३

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का

विशाल राष्ट्रीय शिविर

दिनाक ६ जून, १९९६ से २३ जून, १९९६ तक
स्थान शिक्षा भारती पब्लिक स्कूल पालम गॉव, नई दिल्ली ४५

विशेष आकर्षण

शिविरार्थियो द्वारा विशाल पथ सचलन (सैनिक परेड) एव व्यायाम प्रर्दशन

युवा मेला

हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी शिविर समापन के दिन आर्य वीरो का विशाल मेला देखने को मिलेगा। जिसे देखने से आप वचित न रह जाये। अत २३ जून १९९६ को अपनी–अपनी आर्य समाजो से शिविर समापन समारोह मे बैनर झण्डे लगाकर बसो–टैम्पो आदि के द्वारा अधिक से अधिक सख्या मे पहुच कर युवको का उत्साह वर्द्धन करे।

इस महान कार्य हेतु तन–मन–धन से सहयोग दे इसके लिए क्रास चैक ड्राफ्ट तथा नकद धन राशि "सार्वदेशिक आर्य वीर दल के नाम से दिए जा सकते है। इसके अलावा दानी सज्जन आटा दाल चावल और देशी घी के टीन आदि भी दे सकते हैं जो कि आर्य समाज दीवान हाल आर्य समाज बिरला लाईन आदि मे भिजवाने की कृपा करे।

निवेदक
ब्र राज सिह आर्य

सार्वदेशिक आर्य वीर दल, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली–2 से प्रकाशित

ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् — विश्व को श्रेष्ठ (आर्य) बनाएं

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सामवेद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र अथर्ववेद

दूरभाष ३२७४७७१ ३२६०९८५ आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये वार्षिक शुल्क ५० रुपए एक प्रति १ रुपया

वर्ष ३५ अक १९ दयानन्दाब्द १७२ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ आषाढ शु.–७ सम्वत्–२०५३ २३ जून १९९६

दलित ईसाइयों को आरक्षण

भारत को पूरी तरह खंडित करने का षडयन्त्र

-पं॰ वन्देमातरम् रामचन्द्रराव

नई दिल्ली २१ जून। नइ राष्ट्रीय मोर्चा सरकार द्वारा दलित ईसाइयो को आरक्षण की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु आगामी लोक सभा सत्र मे नया अधिनियम पारित कराने की सम्भावना को देखते हुए सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा ने देश व्यापी जन जागृति अभियान तथा आन्दोलन छेडने का फैसला किया है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम रामचन्द्रराव ने समस्त प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओ के प्रधान तथ मन्त्रियो को टेलीग्राम द्वारा २२ जून को इस सम्बन्ध मे एक आवश्यक बैठक मे भाग लेने के लिये दिल्ली आमन्त्रित किया है।

सार्वदेशिक सभा की तरफ से जारी एक परिपत्र मे समूचे आर्य जगत से यह अपील की गई है कि देश को विघटन के मार्ग पर ले जाने वाले इन षडयन्त्रो का हर सम्भव विरोध किया जाना चाहिये।

सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री सूर्य देव तथा मत्री डा सच्चिदानन्द शास्त्री ने इस आन्दोलन का सयोजन कार्य प्रारम्भ कर दिया है। श्री सूर्यदेव जी ने कहा है कि अतिशीघ्र दिल्ली मे कान्स्टीटयूशन क्लब क स्पीकर हाल मे एक उच्च स्तरीय गोष्ठी भी आयोजित की जायेगी जिसमे ख्याति प्राप्त अधिवक्ताओ सेवानिवृत्त न्यायाधीशो वरिष्ठ पत्रकारो तथा विभिन्न राष्ट्रवादी नेताओ को भी आमन्त्रित किया जायेगा। दूसरी तरफ सभा के कानूनी सलाहकार श्री विमल वधावन एडवोकेट न उच्चतम यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ताओ से सम्पक प्रारम्भ कर दिया है और सभा की तरफ से भारत की इस सर्वोच्च न्यायसस्था के समक्ष इस अधिनियम को पारित न कराने के लिये प्रार्थना करने पर भी विचार किया जा रहा है।

सभा मत्री डा सच्चिदानन्द शास्त्री ने देशव्यापी आय नताओ स आह्वान किया है कि सरकार की दलित ईसाइयो को आरक्षण की इस नीति का विरोध करते हुये अविलम्ब राष्ट्रपति प्रधानमत्री तथा उच्चतम न्यायालय के अतिरिक्त अपने अपन स्थानीय सासदो को भी विराध प्रस्ताव भजे तथा उसकी एक प्रति सभा कार्यालय मे भिजवाये। सभा कार्यालय मे इस विषय से सम्बन्धित पत्र व्यवहार करते समय दलित ईसाइ आरक्षण प्रकोष्ट के नाम स सम्बोधित करे।

सभा प्रधान श्री वन्देमातरम रामच द्र र व ने देशवासियो को आगाह करत हुये कहा हे कि दलित इसाइय क आरक्षण की यह याजना देश को खण्डित करन का एक सुनियाजित षडयन्त्र है जो कि अमरीका के इशारे पर टेरस के हस्तक्षेप से रचा गया है। सभा ने कइ माह पूव ही इस षडयन्त्र को जनता के सामने रखा था परन्तु अब सरकार इस षडयन्त्र को सफल करने पर आमादा है आज यदि राष्ट्रवादी जनता ने इसका भरपूर विरोध करके अपने कर्त्तव्य का निवाह न किया तो देश की आने वाली पीढिया सुरक्षित नहीं रहेगी इस योजना से धर्मान्तरण को पूरा बल मिलेगा और हिन्दू जाति अत्यन्त कमजोर होती जायेगी इस लिये हमे इस विषय पर गम्भीर विचार करना पडेगा और इस बात को ध्यान रखना पडेगा कि

आज अगर खामोश रहे
तो कल सब कुछ लुट जायेगा।

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली मे

अत्यावश्यक बैठक

भारत सरकार द्वारा दलित ईसाइयो को आरक्षण प्रदान करने के फैसले का विरोध करने तथा आन्दोलन की रूप रेखा पर विचार करने हेतु आर्य समाज के अधिकारियो की एक उच्चस्तरीय अत्यावश्यक बैठक २२ जून को साय ४ बजे आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली मे आहूत की गयी है। इस बैठक मे दलित ईसाइयो को आरक्षण प्रदान करने तथा देश को विखण्डित करने वाले इस षडयन्त्र पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया जायेगा तथा इसको असफल करने हेतु कार्य योजना बनायी जायेगी।

सम्पादक डा. सच्चिदानन्द शास्त्री

नागरिक और वनवासिनी की वार्ता

(ऋग्वेद १०/१४६ का एक प्रसंग)

सघन कानन में एक विशाल तरु के नीचे कोई वनप्रस्थ रमणी बैठी हुई है निर्द्वन्द्व निर्भय निश्छल सांसारिक कामनाओं से सर्वथा शून्य साधना में लीन। वृक्ष पर बैठे पक्षी कलरव कर रहे हैं पास ही मयूर नृत्य कर रहे हैं दायें बायें कुछ मृगशावक विचर रहे हैं मानो सब उसका परिवार है निकट ही झरना बह रहा है कहीं कहीं सिंह व्याघ्र आदि वन्य पशुओं के पदचिन्हों की पंक्तियां स्थान की भयानकता को भी सूचित कर रहा है इतने में ही कोई राह भूला अकस्मात नागरिक उधर आ निकलता है उस रमणी को अकेला देख उसके आश्चर्य का सीमा नहीं रहता। वह सोचने लगता है कहां तो यह निविड वन और कहा मन तप नगर में कोमल यह मुग्धा नारी उसके मन में श्रद्धा का उदय होता है। उसे वह माता के रूप में देखता है समीप पहुंचकर प्रश्न करता है

अरण्यान्यरण्यान्यसौ या प्रेव नश्यसि।
कथा ग्राम न पृच्छसि न त्वा भीरिव विन्दति।। (१

हे माता क्यों तुम इन घोर जंगलों के बीच वास करती हो क्या तुम ग्राम और नगर को नहीं पूछती क्या यहां तुम्हें भय नहीं लगता आओ मैं तुम्हें नगर में चलने का निमन्त्रण देता हूं जहां एक से एक सुन्दर भवन हैं प्रासाद हैं राजमार्ग हैं रथ हैं विपणियां हैं नाटक हैं चलचित्र हैं गोष्ठी है कविता हैं संगीत है नृत्य है और ऐसी उन्नत भव्यकला है जिसके आगे विधाता भी हार मानता है

रमणी नागरिक की बात सुनती है और मुस्करा देती है कहती है कि भले तुम नगर की शोभा पर गर्व करते हो। पर मैं तो अपनी प्यारी वनशोभा पर ही मुग्ध हूं और तो नगर की राजसी चकाचौंध से चकाचौंध हुई तुम्हारी आंखों को मैं वन की सात्विक शोभा के दर्शन कराऊं देखो

वृषारवाय वदते यदुपावति चिच्चिक।
आघाटिभिरिव धावन्नरण्यानिर्महीयते।। (२

वन में वन पक्षी तानपूरे के ही स्वान का आनन्द ले रहा है स्वान की मात्रा में चिक चिक ध्वनि कर रहा है। यदि तब मन भावन उन झाड़ों के पास आ बैठता है तब ताना बाना राग अलापने लगते हैं तब ऐसा लगता है मानो वीणा में सप्तस्वर का साधन हो रहा हो।

उत गाव इवादन्त्युत वेश्मेव दृश्यते।
उतो अरण्यानि सायं शकटीरिव सर्जति।। (३

वह देखो सामने गाओं जैसे पशु चर रहे हैं ये लताकुंज प्रासाद से दृष्टि गोचर हो रहे हैं। और सायंकाल होने पर वन तथा नगर की सीमा पर खड़े होकर देखो अपूर्व दृश्य देखने को मिलता है फल काष्ठ आदि से भरा नगर की ओर जाती हुई गाड़ियों की पंक्ति को देख ऐसा प्रतीत होता है मानो वनवीथी अपने अन्दर से उन गाड़ियों का सृष्टि कर रही हो

गामङ्गैष आ ह्वयति दार्वङ्गैषो अपावधीत।
वसन्नरण्यान्या सायमक्रुक्षदिति मन्यते।। (४

इधर देखो चरवाहा गोएं चरा रहा है इसने अपनी गौओं के नाम रख लिये हैं। एक का नाम कृष्णा है दूसरी का नाम गौरी है तीसरी का इडा है चौथी का नाम आरति है। नाम ले लेकर यह अपनी धेनुओं को पुकार रहा है। जिसका नाम पुकारता है वही उसकी ओर मुंह उठाती है और दौड़ पड़ती है। मूक पशुओं से चरवाहे का यह बातचीत कैसी कौतूहलवर्धक है दूसरी ओर यह लकड़हारा वृक्ष पर चढ़ा हुआ लकड़िया काट रहा है। अन्य भी अनेक नगरवासी वनवीथी की शरण में आते हैं। पर अचानक उन में उन्हें कभी रात्रि हो जाए तो उनकी कल्पना अपने आगे हिंस्र जन्तुओं को साकार खड़ा देखने लगती है और भय के मारे उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगता है कि यह सिंह बोला यह व्याघ्र बोला। किन्तु असली बात तो यह है कि

न वा अरण्यानिर्हन्त्यन्यश्चेन्नाभिगच्छति।
स्वादोः फलस्य जग्ध्वाय यथाकामं नि पद्यते।। (५)

यह वनवीथी अपनी ओर से किसी का संहार नहीं करती पहले मनुष्य ही अपने अन्दर हिंसा की यह भावना रखता है। मनुष्य पूर्ण अहिंसक हो जाए तो अटवी उसकी माता हो जाती है सिंह व्याघ्र सब उसके अहिंसा के आगे झुक जाते हैं वन तो एक वाटिका है जहां स्वादिष्ट फलों को खाकर मनुष्य इच्छानुसार विश्राम करता है

आञ्जनगन्धिं सुरभिं बह्वन्नामकृषीवलाम्।
प्राहं मृगाणां मातरमरण्यानिमशंसिषम्।। (६)

जहां अनन्त पुष्पों की भीनी गन्ध उठती है जहां अन्य विविध सौरभ हैं जहां बिना कृषक के प्रचुर अन्न उपजता है जो मृगों की माता है उस वनवीथी को मैं बार बार प्रणाम करता हूं

नागरिक के मुख से अनायास निकल पड़ता है वनवीथी की जय हो वनमाता की जय हो।

(वैदिक मधुवृष्टि से साभार)

करूणा की पुकार

ओम प्रकाश आर्य

मानव तुमको मूक जीवों की व्यथा सुनाता हूं।
तडप तडपकर मरते उनकी कथा सुनाता हूं।
खोल सको तो खोलो अन्तर सुनते हो तो सुनो चीख
बोटी बोटी मांग रही है तडप तडपकर दया की भीख
दानवता के क्रूर करों का दृश्य दिखाता हूं।
जहां अहिंसा परम धर्म था प्राण बचाने थे दे प्राण
पशु पक्षी की कौन कहे लघु चीटी भी पाती थी त्राण
गला फाडते के अधरों में दर्द बताता हूं।
धर्म प्रधान देश से होता लाखों टन मांस निर्यात
महिष बैल गौ काटे जाते जैसे मूली गाजर पात
निर्दयता की पराकाष्ठा हृदय हिलाता हूं।
कपिल कणाद राम कृष्ण की धरती पर अवस्थित है
छतीस सहस्र कत्ल निकेतन नए ढंग से सज्जित है
बेरहमी से रेते जाते आह पिलाता हूं।
जिह्वा की लोलुपतावश औ स्वतश तिजोरियां भर जाए
झूठी चकाचौंध फैशन की औ कितनी बनती है दवाएं
लाखो पशुओ की बलि प्रतिदिन करूणा जगाता हूं।
पर्दा कष्ट में से विक्रत भारत बनने को तैयार
गौ बध का होगा आया पशुधन का होगा संहार
गौतम कपिल कणाद अत्रि की दया धसाता हूं।
लाखं पशु क्रूर मनुज के हाथो होत रोज हलाल
कब होगी अवसान धरा से हिंसा की यह सध्या लाल ?
ऋषि सताना तुममे करूणा दया बुलाता हूं।

आर्य समाज रावतभाटा वाया कोटा (राजस्थान)

प्र. यह सारा ससार किसने बनाया है ?
उ. ईश्वर ने।
प्र. ईश्वर कहा रहता है ?
उ. ईश्वर सर्वव्यापक है। ससार मे कही कोई ऐसा स्थान नही है जहा परमात्मा न हो।
प्र. ईश्वर का नाम क्या है ?
उ. गुणो के अनुसार ईश्वर के असख्य नाम है परन्तु ईश्वर का मुख्य नाम व निज नाम ओ३म है।
प्र. ईश्वर कैसा है ?
उ. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार सर्व शक्तिमान न्यायकारी दयालु, अजन्मा अनन्त निर्विकार अनादि अनुपम सर्वाधार सर्वेश्वर सर्व व्यापक सर्वान्तर्यामी अजर अमर नित्य पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है।
प्र. ईश्वर ने मनुष्य का सबसे अच्छी वस्तु क्या दी है ?
उ ईश्वर न मनुष्य को सबसे अच्छी वस्तु बुद्धि दी है और उसकी सहायता के लिए वेदो का ज्ञान दिया है।
प्र ईश्वर का ज्ञान क्या है और वह कब दिया गया ?
उ. वेद ईश्वरीय ज्ञान है वह सृष्टि के आदि मे प्रकाशित हुआ।
प्र. वेद कितने है उनके नाम क्या है ?
उ वेद चार है ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद।
प्र. देवता किसे कहते है ?
उ. जो दूसरो का कुछ दान करे उपकार करे उपदेश दे वही देवता है।
प्र. देवता कितने और कौन–कौन से है ?
उ. देवता ३३ है जिनमे सूर्य चन्द्र अग्नि वायु इत्यादि मुख्य है। इनसे यथायोग्य लाभ प्राप्त करना ही इनकी पूजा है।
प्र. क्या यदि मिट्टी पत्थर वृख आदि जिनको आजकल बहुत से लोग पूजते हैं देवता नहीं है ?
उ. नही क्यो कि वे कुछ दिव्य पदार्थ देने के स्थान मे भेट पूजा लेते है। उनकी पूजा कभी नही करनी चाहिए।
प्र. क्या कोई चलते फिरते जीवित देवता भी है ?
उ. हा माता पिता गुरू व अतिथि हमारे लिए जीवित देवता हैं। उनकी पूंजा सेवा सत्कार करना हम सबका परम कर्त्तव्य है हमे इन सच्चे देवताओ को ही मानना चाहिए।
प्र. धर्म किसे कहते है ?
उ. ईश्वर की आज्ञा–पालन पक्षपात रहित न्याय से पूर्ण हित करना सब मनुष्यो के लिए समान माननीय धर्म है।
प्र. धर्म शब्द का अर्थ क्या है।
उ. जो धारण करने योग्य हो अथवा जिससे किसी वस्तु की सत्ता प्रकट हो वह धर्म है जैसे अग्नि का धर्म प्रकाश व गर्मी है। जब तक यह दोनो गुण उसमे रहते है तो वह अग्नि कहलाती है और उसके नष्ट हो जाने से अग्नि भी राख बन जाती है। **(क्रमश)**

जब शराब इतनी गंदी चीज है तब क्यों पीते हैं ?

शराब पर प्रतिबंध लगाना कितना सही और उचित है यह तय करना थोडा मुश्किल होगा मगर सत्य यह है कि पीने वाले को जितना रोका जाएगा वह उसे पाने के प्रयत्नो को और तीव्र कर देगा उसे पाने की तलब मे वह कुछ भी कर सकता है तथा निम्नता के सबसे निचले स्तर तक भी गिर सकता है

आज के आधुनिक युग मे हमारे समाज मे शराब पीना अब एक सामाजिक आवश्यकता बन गई है शराब पहले छिप छिप कर पी जाती है परन्तु अब खुल म पी जाने लगी है यह भी जान लेना अति आवश्यक है कि शराब पीने की लत भी एक बीमारी है जबकि सामाजिक मद्यपान एक भिन्न बात है मगर यही सामाजिक मद्यपान आगे चलकर बीमारी का रूप धारण कर लेता है इस समस्या मे 'जेनेटिक कारक' भी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है शराब पीने से सबसे पहले नाडी मंडल पर प्रभाव पडता है तथा इसका अत्यधिक एव रोज पीना को अस्वाभाविक ही कहा जाता है इस कारण इसका प्रयोग करने वाला साधारण व्यवहार नही कर पाता चाहे वह परिवार मे हो या फिर अपने कार्य स्थल पर यह जानते हुए कि शराब उसके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक ही नही अपितु जीवन के लिए एक अभिशाप है वह शराब की ओर खिचता चला जाता है

शराब पर बढती मानसिक आश्रिता ही एक असामान्य व्यक्ति होने का प्रतीक है जैसे जैसे यह आश्रिता बढती है वह व्यक्ति यह कतई मानने को तैयार नहीं होता कि शराब पीना उसके जीवन के लिए हानिकर है उसका विश्वास होता है यह रोजमर्रा के जीवन मे होने वाले तनाव तथा दबाव स मुक्ति पाने का आसान साधन है कई बार उसका विचार होता है कि बिना दो चार घूट के वह आपातकालीन समस्याओ को हल नही कर पाएगा कुछ इसलिए पीते है क्योकि उन्हे 'ऊचाइयो पर होने का अनुभव होता है और कुछ इस पीने के बाद अपनी परेशानिया भूल जाते हैं कुछ का सोचना है कि पीने से उनमे आत्मविश्वास जागता है तथा स्वय के लिए एक निश्चिन्तता का बोध होता है इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे विचित्र कारण भी मिलेगे जैसे शराब अच्छे आहार का भाग है या यह कि वह इसलिए पी रहा है क्योकि उसके पास कोई काम नहीं

जब भी शराबी शराब का प्रयोग रोकता है वह वापस हटने के लक्षण से ग्रस्त हो जाता है जिसमे कष्टप्रद मानसिक तथा शारीरिक प्रतिक्रियाए होती हैं जिससे उन्मत्त प्रलाप से पीडित व्यक्ति जिसे डी टीस कहा जाता है की अवस्था अत्यधिक त्रासपूर्ण हो जाती है जिससे घबराहट कपकपी अव्यवस्था भयकर स्वप्न तथा भ्रम आदि का आभास होता है डी टीस से ग्रस्त शराबियो को यह विश्वास दिलाना बहुत आसान है कि उनके पूरे शरीर पर मकडिया चल रही हैं इस अवस्था मे शराबी इतना परेशान हो जाता है कि वह पुन शराब पीना आरम्भ कर देता है

यह आश्चर्यजनक बात नहीं है कि शराब का नियमित सेवन करने वाले कभी भी अपनी गलती नहीं मानते यह साबित करने के ध्येय से वह प्राय हरेक प्रकार के बहाने ढूढते रहते हैं यहा तक कि व अपनी शराब की आदत को भी समस्या नहीं मानते सामूहिक मद्यपान के दौरान अक्सर कुछ तीव्र भाग मिल कर पीना आरभ कर देता है जिससे मित्रो को यह अनुमान न लगे कि वह कितना पीता है वह उन आमत्रणो को

किसी भी वर्ग मे शराब पीने का चलन आनंद के लिए ही होता है। आमतौर पर ब्याह शादियो उत्सव जन्म और सफलता इत्यादि पर ही शराब पी जाती है। स्वाभाविक है ऐसे मौको पर ही एक आम व्यक्ति पहली बार शराब पीता है। जिसमे मित्रो तथा सबधियो का दबाव महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। मगर इनमे से अनेक कई कारणो से इसे रोज का क्रम बना लेते है।

ठुकरा देता है जहा शराब होने की स [illegible] ह तथा उन मित्रो का साथ भी छोड देता है [illegible] मद्यपान कम करते ह या फिर करते ही नही वह [illegible] जगह जाएगा तो उन्हे ही मित्र बनाता ह जिन्हे पीने पिलाने का शौक होता है [illegible] उत्साहरहित व्यक्ति लगते ह [illegible] आस्था किसी भी शराबी की ता होती ह [illegible] शराब अधिक पीने के कारण एक जगह से भगाए जाने पर दूसरी जगह जा पहुचता ह

आज के युवा वर्ग म भी शराब के प्रति [illegible] ह [illegible] जाता ह आकडा म यह चाहे कम दिखे परन्तु ग्रामो व [illegible] मे शहरी युवाओ की [illegible] इसके प्रति विशेष आकर्षण है [illegible] एक सामाजिक आवश्यकता के रूप म शराब पी जाती है कई वर्ग पीने [illegible] अपने सामने आने [illegible] सेवन के पक्षधर है ऐसे लोग समाज व उच्च [illegible] उच्च मध्यम वर्ग [illegible] पाए जाते है जिन्हे आधुनिक शराबो का [illegible] ह जो मूलत अपने सामाजिक स्वरूप को बदलना चाहते है आधुनिक कहलाने क [illegible] ह इस [illegible] समाज क निम्न मध्यम [illegible] एव निम्न वर्ग इसकी चपेट मे आते ही बर्बाद हो जाते

एक उच्च वर्गीय शहरी अच्छे ब्राड की शराब पीता है [illegible] कि निम्न वर्गीय सस्ती देसी शराब पीता ह निम्न वर्गीय के लिए अच्छी शराब पीना एक सपना होता है इस कारण सस्ती शराब के रोज उपयोग [illegible] वृद्धि भी होती है उदाहरणत गाजियाबाद मे सस्ती तथा आसानी से उपलब्ध पाउच [illegible] अपना प्रभाव दिखा रही है शराब के अनियन्त्रित सेवन से यहा के परिवार टूट रहे है तथा पारिवारिक हिंसा तथा [illegible] मूल्यो का यहा चलता उदाहरण है अपने परिवार की सामाजिक सुरक्षा तथा अच्छे भविष्य की [illegible] करने वाली अनेक महिलाए तथा बच्चे एक ऐसी सुबह की आस लगाए बैठे है जो उन्हे दिशा दिखा सके

भारतीय समाज की स्थिति यह हो चली ह आज पीने वाले थैली भर नहीं पूरी कैन पी रहे हैं यह कोई अतिशयोक्ति नही अपितु एक ठोस सच्चाई है सामाजिक पीने पिलाने का स्तर यह हो गया है कि लडके वाले शादियो मे तथा मित्र उत्सवो म इसकी बाकायदा माग करने लगे है भारतीय समाज आज ससार मे सबसे अधिक निकट [illegible] का सम्मिश्रण है इस कारण एक व्यक्ति का सामाजिक दायित्व भी तुलनात्मक रूप से अधिक माना जाता है इस कारण शराब पी कर किया गया अभद्र व्यवहार किसी भी तरह से [illegible] नही [illegible] उदाहरणत शादी ब्याह मे ऐसी अवस्था मे बारातियो का अभद्र तथा नशे की हालत मे अशोभनीय [illegible] र [illegible] के आधुनिक माहौल [illegible] जम [illegible]

शराब का सबसे बुरा प्रभाव पडता है व्यक्ति की काम करने की क्षमता पर जिसके परिणामस्वरूप अपने कार्य के अच्छे परिणाम [illegible] प्राप्त [illegible] एक बडी सख्या मे मद्यपान की [illegible] से [illegible] लोग [illegible] करते है तथा सभी [illegible] कारणो के एक तिहाई भाग मे शराब [illegible] है औद्योगिक दुर्घटनाओ [illegible] की महत्त्वपूर्ण [illegible] म शराब [illegible] ही और [illegible] तथा उपेक्षा और [illegible] इसका फल [illegible] दिखती है [illegible] जिसका फल [illegible] होती है

[illegible] शराबी की [illegible] व्यवहार करता कि जैसे [illegible] नियत्रण है परन्तु [illegible] मे [illegible] करने का प्रयत्न करता है तो [illegible] होती है

[illegible] प्रभाव [illegible] के [illegible] मे [illegible] ही उन्हे एक साम [illegible] व्यक्ति [illegible] पर शर्मिन्दगी महसूस होती है [illegible] बिना सोचे समझे [illegible] मे आई किसी भी [illegible] कर सकता है यह [illegible] घातक [illegible] भी हो सकते है और [illegible] भी [illegible] की शराब [illegible] वह उग्र हो जाता [illegible] यह [illegible] कि [illegible] है

यदि युवा चाहे तो वह शराब छोड सकता है आवश्यकता है कि वह अपनी [illegible] का इलाज तब कराए [illegible] पहुच [illegible] से भी आरभ हो सकता है विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि [illegible] छुटकारा पाने के लिए [illegible] शराबी की स्वय की इच्छा शक्ति काम करती है साथ ही [illegible] सामान्य बनाने [illegible] महत्त्वपूर्ण [illegible] बीमारी [illegible] व्यक्ति [illegible] [illegible] खूब [illegible]

आहार शरीर तथा सम्बन्धियो का विचार कम कीजिए आत्मा का विचार तथा ध्यान अधिक कीजिए

आर्य महिला
श्रीमती प्रकाशवती सूद

ग्गमच स्हर और नकल्यनील क दूसरा म श्री प्रकाशवती स्द इस समय इनकी आयु न फिर भ स्रि मे कमी नहीं है पति नही रहे सी करण काफी लम्ब चौ उस पुरा ढग के बने ना ग ड स फाटक वाले मकान मे प्रकाशवती स्द तन्हा रानी रहो थी लेकिन अब रौनक और रख भाल क लिए एक किरायेदार भी रख लिया है

इनके तीन बेटे विदेश म हैं और एक भारत म है सब अच्छी जगहो पर हैं कभी कभा आत हैं तो नन्हाइ छट जाती हे

कितनी मजबूर लडकियो का श्रीमती सूद ने नारक से मुक्ति दिलाइ ह इन्होने लगभग १५ लडकियो का वेश्यावृत्ति से मुक्ति दिलाइ है योर ४ उपेक्षित लडकियो का घर बसाया है दिली सुकन मिलता है उन्हे इस लोकोपकार मे

मगर इसकी प्रेरणा कहा मे मिली इसके जबाव मे श्रीमती सूद बताती हैं मेरे इजीनियर पिता दिल्ली मे रहते थ हम स्कल चावडी बाजार हो कर जात थे रास्ते मे तवायफो को देखत अजीबो गरीब फिकरबाली और चहुल होती उनके बीच मुझे लगता ये औरते आम औरतो जैसी नही है कौन हैं ये यह बात मुझे आन्दोलित करती

मट्रिक पास करने के बाद वकील साहब के साथ मेरा विवाह हो गया और मे ससुराल आ गई और एक दिन जब मैं आगरा के मेने बाजार से निकली तो वैसी ही औरते यहा भी दखीं मने फिर वही र वाल अपने पति से किए मगर मेरे पति को अच्छी नही लगती थी मेरी जिज्ञासा

परन्तु मेर आर्य समाजी ससुर साहब न मरे मन को पढ लिया उन्होने समझ लिया कि अदर काइ आग है कुछ कर गुजरने की और फिर एक दिन उत्तर प्रदेश की तत्कालीन हरिजन कल्याण मत्री श्रीमती प्रकाशवती स्द मेरठ वाली हमारे घर आइ बातचीत के दौरान उन्हा महसूस किया के मै घर की चारदीवारी मे कैद होने के लिए नही बनी उन्होने ही मुझे प्रेरणा दी कछ करने की और मै तब दीवा से घर बाहर निकल आयी

श्रीमति सूद बनाती है कि उन दिनो अ क सा इलाके म यह धधा जोरो पर था म स्व कस रसइ की नाम म अन्दर ही होता धीर धीरे नग शहर म मकान ले कर बस गए और वश्यावृत्ति का जरा और फैलने लगा आगरा की वेश्या मडी की गिनती देश की बडी वेश्या मडिया म होने लगी देश के विभिन्न भागो मे ला कर यहा लडकिया खरीदी बेची जाने लगीं

श्रीमती प्रकाशवती सूद ना छापो के समय भी पुलिस व साथ चलती थी जबकि आम तौर पर महिला समाज सुधारक यह हिम्मत नहीं कर पाती

श्रीमती सूद सन १९६३ से १९७६ तक नारी सरक्षण गृह आगरा की चेयरमैन रही है उन्होने लगभग ५ वेश्याओं की नसबदी अपने कार्यकाल मे कराइ उनके साहस का एक असर यह हुआ कि धधा करवाने वालो मे से कइ लोगो को लगा कि यह धधा गलत है और उन्होने अपनी बेटियो की पढाइ लिखाइ की ओर ध्यान देना शरू किया सही वातावरण मिलने पर लडकियो को अपनी अस्मिता की पहचान हुइ और उन्ही मे से अनेक डाक्टर वकील और इजीनियर बन कर समाज मे सम्मान प्राप्त कर रही हैं

श्रीमती सूद ने महिलाओ क विकास के लिए वनिता विकास शिक्षा केद्र खोला जा आज भी चल रहा है इस सस्था ने महिलाओ और बच्चो को शिक्षा दी जाती ह इसके बाद लेडी लायल डफरिन हास्पिटल वालो ने उन्हे सचिव बना लिया सन १९५७ मे इसी स की वे अध्यक्षा बन गई इसके अलावा श्रीमती स राजकीय शिशु सदन तथा आल इडिया वुमैन का आगरा ब्राच की भी अध्यक्ष रही

व आक्रामक रूख से परेशान असामाजिक तत्वो की आर से उन्हे धमकिया भी मिलती रहती मगर वह अपन उद्देश्य से पीछे नही हटी वे इस धध मे शामिल लोगो से कहती तुम अपनी बेटिया बेचना छोड दो हम तुम्हे कछ नही कहेगे आगरा की तवायफ भी उन्हे माता जी कहकर सम्मान देती है

उच्चतम न्यायालय ने उन्हे राजकीय नारी सरक्षण गृह आगरा की लडकियो की देखभाल का काम उनकी पद मुक्ति के बाद भी सौपा अब वृद्धावस्था के कारण उनका बाहर निकलना कम ही हो पाता हे पर फिर भी कोई अवसर आने पर श्रीमती सूद अपने कमजोर देह और बीमारियो की परेशानी को नजर अदाज कर मुहिम पर चल पडने को तत्पर रहती है

वैदिक संस्कृति के प्रतीक

यज्ञोपवीत, शिखा, मेखला

हरिदेव आचार्य

वैदिक सस्कृति म मानव को शारीरिक बौद्धिक और आत्मिक दृष्टि से पूर्ण मानव बनाने के लिए १६ सस्कारो का प्रावधान किया है। इस सस्कृति के अनुसार मनुष्यो के दो जन्म हाते हैं। इसलिए इन्हे द्विज कहा जाता है। पहला जन्म माता पिता के सम्पर्क से और दूसरा जन्म आचार्य के गुरुकुल रूपी गर्भ से होता है।

जब बालक ५ ६ या ८ वर्ष का हो जाता था तो पिता घर पर उसका यज्ञोपवीत सस्कार करके गुरुकुल मे आचार्य के समीप ले जाकर कहता था

आधत्त पितरो गर्भ कुमार पुष्करस्रजम। यथेह पुरुषोऽसत

(यजु० २। ३३)

हे पितर (विद्वान्) आचार्यगण मै यज्ञोपवीत द्वारा सस्कृत और सुशोभित इस कुमार को आपक समीप लाया हू आप लाग इस पवित्र बालक को अपने गुरुकुल रूपी गभ मे धारण करे जिससे यह बालक पुरुष बन जाए। इस मन्त्र मे वैदिक शिक्षा का सार सन्निहित है। आजकल माता पिता और परिवार के लोग बच्चे को विद्यालय मे ले जाकर उसे केवल प्रविष्ट करा देते हैं यहा उसे कैसी शिक्षा देनी है यह गुरु को भी पता नहीं है। कुछ अधिक पठित व्यक्तियो के भी केवल बालक को डाक्टर या इजीनियर बनाने क सपने होते हैं। इसी दुरवस्था को देख कर राष्ट कवि मैथिलीशरण व्यथित होकर कहते हैं

केवल नौकरी के लिए विद्या पढी जाती यहाँ।
नौकरी मिलती नहीं डिप्टीगिरी रखी कहाँ।

किस स्वर्ग का सौपान है तू हाय री डिप्टीगिरी।

(भारत भारती)

परन्तु वेदानुयायी गृहस्थ की गुरुजनो से केवल एक ही प्रार्थना है और वह है बालक को पुरुष बनाना। यदि वह पुरुष बन गया तो फिर उसे किसी भी वस्तु की कमी नहीं रहने की। पुरुष किसे कहते हैं ? एक विचारक ने इसकी बहुत ही सुन्दर व्याख्या की है

वीर सुधी सुविद्यश्च पुरुष पुरुषार्थवान।
तदन्ये पुरुषाकारा पशव पुच्छविवर्जिता।।

जिसमे शूरवीरता सुबुद्धि विद्या और पुरुषार्थ ये चार गुण हो वह ही पुरुष कहलाने का अधिकारी है। अन्य पुच्छरहित पुरुष रूप मे पशु ही हैं। अत्रिस्मृति मे लिखा है जन्मना जायते शूद्र सस्काराद् द्विज उच्यते। अर्थात प्रत्येक मनुष्य माता के गर्भ से जन्म लेकर शूद्र ही रहता है। जब गुरु आचार्य के कुल मे जाकर विद्या पढता है तब उसका दूसरा जन्म होने से उसे द्विज कहते हैं। इसलिए राजनियम एव जातिनियम के अनुसार प्रत्येक बालक और बालिका को पृथक पृथक पाठशालाओ मे अध्यापन के लिए उन्हे बाल्यावस्था मे ही प्रविष्ट कराया जाता था। वहा आचार्य पुन उसका उपनयन सस्कार करते थे उपनयन सस्कार के पश्चात् आचार्य बालक को अपने गुरुकुल रूपी गर्भ मे तीन रात्रि रख कर उसका निर्माण करते थे। और फिर उसका दूसरा जन्म होता था जिसे देखने साधारण मनुष्यो की तो बात ही क्या बडे-बडे विद्वान् भी आते थे। उस समय गुरु जिस जाति की घोषणा करता वही जाति वर्ण बालक का समाज मे प्रतिष्ठित होता था। इसलिए माता पिता भी अपने वर्ण के अनुसार बालक का निर्माण करने के लिए गर्भावस्था से ही प्रयत्नशील रहते थे। जो बालक तीव्र बुद्धि होता था उसे ब्राह्मण बनाने के लिए पाचवे वर्ष मे ही गुरुकुल मे प्रविष्ट करा दिया जाता था। इसी भाति क्षत्रिय के लिए छटे और वैश्य के लिए आठवे वर्ष मे प्रवेश होता था। सभी वर्णो के लोग इसी प्रकार नियमानुसार चलते थे। जो बालक ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य वर्णों के अनुपयुक्त रहता था उस शूद्रवर्ण मे सम्मिलित किया जाता था। द्विज बनाने की इस प्रक्रिया का प्रारम्भ उपनयन सस्कार से होता था।

उपनयन

यह विद्या का चिन्ह है यज्ञोपवीत और ब्रह्मसूत्र इसके अन्य नाम हैं। सर्वप्रथम इसे पहिनते समय जो मन्त्र बोला जाता है उसका अर्थ ज्ञान होने से इसके उद्देश्य समझने मे सुविधा रहेगी।

ओ३म यज्ञोपवीत परम पवित्र प्रजापतेर्यत सहज पुरस्तात।
आयुष्यमग्रय प्रतिमुञ्च शुभ्र यज्ञोपवीत बलमस्तु तेज।।
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।।

पारस्कर गृह्य सूत्र २। २ ११

यह यज्ञोपवीत परम पवित्र है प्रजापति परमात्मा ने गर्भावस्था मे इसे सहज ही धारण करवाया है यह आयु की वृद्धि करने वाला आगे बढाने वाला है। हे बालक तू इसे धारण कर। इससे तेरे बल और तेज की वृद्धि होवे हे बालक तू विद्या यज्ञ के योग्य है। इसलिए मै तुझे यज्ञोपवीत पहिनाकर ब्रह्मयज्ञ (विद्याध्ययन) के लिए बाधता हू (अपने गुरुकुल मे प्रवेश करता हू)

इन मन्त्रो से दो बाते स्पष्ट हो जाती हैं।

प्रजापति परमात्मा गर्भावस्था मे बालक को गर्भनाल रूपी यज्ञोपवीत स आवेष्टित करता है इस गर्भनाल का एक सिरा बालक की नाभि से जुडा रहता है और दूसरा माता के गर्भाशय की भित्ति से जिससे रमणि के द्वारा बालक का पोषण होता रहता है प्रजापति ने ऐसी सुव्यवस्था की है कि बाहर के वातावरण से सुरक्षित रह कर गर्भ का पूर्ण विकास हो जाने पर ही वह दसवे मास मे जन्म लता है परन्तु माता के भोजन व आचार विचार का प्रभाव उस पर अवश्य पडता हैं इसलिए आचार्य बालक को यह कह रहा है कि जैसे प्रजापति ने माता के गर्भ म भी गर्भनाल द्वारा तेरे पोषण की सुव्यवस्था की उसी भाति मैं भी उसी का प्रतीक यज्ञोपवीत तुझे पहनाकर अपने समीप मे धारण करता हू। यह यज्ञोपवीत परम पवित्र है। इसके धारण से तेरे आयु बल और तेज मे वृद्धि होगी अत इसे प्रसन्नता से धारण कर। आज से तू इस यज्ञोपवीत के बन्धन मे बध गया है। मैने तुझे ब्रह्मयज्ञ (विद्याध्ययन) के उपयुक्त समझ कर ही इस यज्ञोपवीत का उत्तरदायित्व दिया है। इस प्रकार यह स्पष्ट हुआ कि यज्ञोपवीत सस्कार मानव को पूर्ण पुरुष या महामानव बनाने का एक सत प्रयास है। प्रसङ्गानुसार इसकी रचनाविधि एव अन्यान्य बातो पर विचार करना युक्ति सगत होगा।

यज्ञोपवीत बनाने के लिए कच्चे सूत के तीन बार ९६ चप्पे गिन कर उन्हे तिहरा बटा जाता है। इसका एक धागा बन जाने पर उन तीन धागो को वट कर फिर एक सूत्र बनाया जाता है। ऐसे तीन सूत्रो का एक यज्ञोपवीत होता है। ऊपर ब्रह्मग्रन्थि होती है जिससे तीनो सूत्र जुडे रहते है। इस ग्रन्थि से ऊपर तीन अन्य ग्रन्थि लगाकर अन्तिम पाचवी ग्रन्थि लगा देते हैं। जिसे प्रणव ग्रन्थि कहते है। यज्ञोपवीत बाये कन्धे से दाये हाथ के नीचे से पहना जाता है। जिससे यह हृदय के समीप से होता हुआ नाभि प्रदेश तक और इससे भी आगे दायी ओर कटिप्रदेश पहुचता है।

यज्ञोपवीत विद्या आरम्भ करने का प्रतीक है। प्रतीक के पीछे भावना विशेष होती है। जैसे हमारे राष्ट्र ध्वज मे तीन रग और अशोक चक्र विशेष अर्थो की प्रतीति एव समस्त राष्ट्र की भावनाओ का प्रतिनिधित्व करते हैं। उसी प्रकार यज्ञोपवीत का सूत्र ९६ चप्पे लेने का अभिप्राय है कि व्यक्ति की सामान्यत लम्बाई अङ गुल से ८ अङ गुल तक है जिसका मध्यमान ९६ अङ गुल होता है अत उस अपने शरीर और शरीरस्थ मन बुद्धि आत्मा का सम्पूर्ण विकास करना है। उसके किसी भाग म न्यूनता नही रह जाय। सवाङीण उन्नति करने के लिए ही ९६ चप्पे सूत लिया जाता है। साथ ही बाये कन्धे पर वह पूरा लम्बाई (कटि प्रदेश) तक आ जाय यह भी प्रयोजन है कुछ विचारको के अनुसार इसे बालक पाचवे वर्ष म धारण करता है जीवन के शेष वर्ष ९६ अवशिष्ट रहे सो उनकी स्मृति म इसका ग्रहण किया गया है अर्थात उसके दूसरे जन्म की आयु ९६ वर्ष है।

इसमे तीन सूत्र होते है जो तीन ऋणो से उऋण होने का सकेत करते है तैत्तिरीय ब्राह्मण म लिखा है कि ब्राह्मण (वेद पढने वाला ब्रह्मचारी) तीन ऋणो स ऋणी होता है ये ऋण ऋषि ऋण देव ऋण और पितृ ऋण है विद्याध्ययन करने के पश्चात अन्य लोगो को विद्या पढाने स ऋषि ऋण यज्ञादि से देवऋण और माता पिता की सेवा तथा योग्य सन्तान उत्पत्ति से पितृऋण से उऋण होता है। ये तीनो सामाजिक ऋण वस्तुत मनुष्यमात्र पर ही समझने चाहिए। अत सभी को इनसे छुटकारा दिलाने के प्रतीक ये तीन सूत्र है इन तीन सूत्रो मे भी प्रत्येक मे नौ सूत्र ग्रथित है। इसके नव तन्तुओ मे ९ देवताओ की कल्पना की गई है

ओङ कार प्रथमे तन्तौ द्वितीयेऽग्नि तथैव च।
तृतीये नाग दैवत्य चतुर्थे सोम देवता।।
पञ्चमे पितृदवत्य षष्ठे चैव प्रजापति।
सप्तमे मरुतश्चैव अष्टमे सूर्य एव च।।
सर्वे देवतास्तु नवमे इत्येतास्तन्तु देवता।।

(साम छ सूत्र)

(क्रमश)

पाठकों से विनम्र निवेदन

सार्वदेशिक के पाठक आर्यावर्त की वतमान परिस्थितियो स भली भाति परिचित है। धार्मिकता के नाम पर पाखण्ड गुरुडम का छलावा सामाजिकता के नाम पर कपट और राष्ट्रद्रोह बढता जा रहा है। ऐसा लग रहा है कि वैदिक राष्ट्र रूपी जगल मे चारो तरफ आग लगी है जिससे फल फूल और वनस्पतियो रूपी विचार धारा विनाश को प्राप्त होनी प्रारम्भ हो रही है। स्वार्थी राजनीति इस आग मे घी का काम कर रही है। प्रशासको और राजनेताओ की देखा देखी (यथा राजा तथा प्रजा के सिद्धान्त के अनुसार) सामान्य जनता भी भौतिकता वादी माया जाल को अपने ऊपर ओढने मे ही अपना जीवन व्यतीत कर रही है।

सार्वदेशिक साप्ताहिक के माध्यम से वैदिक धर्म की पवित्रता को बचाने के लिए हम सदैव सकल्प बद्ध है अत पाठको से हमारा विनम्र निवेदन है कि धार्मिक और राष्ट्र वादी विचारो को अधिकाधिक जनता तक पहुँचाने के लिए सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहक बनाने की ओर ध्यान दे।

अपना वार्षिक शुल्क सदैव समय पर भिजवाए तथा आम जनता को भी इसके लिए प्रेरित कर।

इस साप्ताहिक पत्रिका का वार्षिक शुल्क केवल ५० रुपये रखा गया है जा कि लागत से भी कम है। आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये देकर बारबार वार्षिक शुल्क भेजने की दुविधा से बचा जा सकता है। आपके द्वारा भेजी गयी इस सहयोग राशि के प्रत्येक अश को वैदिक और राष्ट्र वादी भावनाओ के प्रचार मे ही व्यय किया जायेगा।

सम्पादक

आर्य समाज का अभ्युदय-कैसे हो ! !

ब्र ओमदेव पुरुषार्थी

वेद प्रतिपादित धर्म वैदिक धर्म कहलाता है वेद शाश्वत ज्ञान है परम पिता परमात्मा की अमर वाणी है। इसलिए सारे संसार के प्राणियों के लिए वेद ज्ञान की प्राप्ति एव तदनुकूल आचरण करना परमावश्यक है। प्रश्न उठता है कि वेद का सिद्धान्त सबका कल्याण करने वाला सार्वभौमिक एव सार्वकालिक है तो इसके प्रचार प्रसार में इतनी बड़ी कमी क्यों ?

इसका मुख्य कारण है या तो इसके अनुयायियों ने निष्ठा पूर्वक प्रचार प्रसार नही किया अथवा इनका कार्य शैली त्रुटिपूर्ण है

जब आर्य समाज का अभ्युदय हुआ था। उस समय लोगों में अतीव उत्साह तथा कार्य करने की उत्कट लालसा थी और आर्य समाज के कार्य में अपना सर्वस्व समर्पित करने को उद्यत रहते थे यही कारण था कि उस समय के आर्यों का जो चरित्र था उससे सभी लोग आकर्षित रहते थे। यही कारण था कि आर्य समाज ने भारतीय स्वातन्त्र्य समर में बढ चढकर भाग लिया था तभी तो काग्रेस का इतिहास लिखने वाले डा पट्टाभि सीता रमैया को लिखना पड़ा कि "भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम में अग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ने वाले ८५ प्रतिशत आन्दोलनकारी आर्य समाजी थे। आर्य समाजियों के कारण ही भारत वर्ष पूर्ण स्वातन्त्र्य को प्राप्त हुआ ।

किन्तु आर्य समाज ने बहुत बडी भूल की सारे बलिदान आर्यों ने दिए किन्तु सब व्यर्थ गए। सारा परिश्रम आर्यों ने किया किन्तु राज्य के अधिकारी बन बैठे अनार्य लोग। परिणाम सामने है देश त्राहिमाम त्राहिमाम कर रहा है देश की सीमाए जल रही है गो हत्या हो रही है पाश्चात्य की आधी बडे वेग से आई हुई है देश की भाषा का अपमान विदेशी भाषा का सम्मान आदि अनेक कार्य हो रहे हैं।

यदि देश का शासन सूत्र आर्यों के हाथ में होता तो देश का चित्र कुछ और ही होता। कलह कटुता अशान्ति के दर्शन ही न होते गो हत्या का कलक कभी का इस राष्ट्र से समापत हो गया होता। आज हम चिल्लाते हैं तो हमें साम्प्रदायिक कहकर उदबोधन किया जाता है। गो हत्या का मामला उठाते हैं तब भी हमें साम्प्रदायिक कहकर दबाने का प्रयास किया जाता है अत जब तक इस राष्ट्र में स्वच्छ वेद विहित शासन की पुर्नस्थापना नहीं होती तब तक राष्ट्र में वैदिक धर्म का पुर्नस्थापना होना अति कठिन है।

इतिहास साक्षी है कि मुसलमानों ने राज्य शक्ति के बल पर अपने सम्प्रदाय को फैलाया। जब जैनियों के हाथ में शासन सूत्र था तब समस्त भारत में जैनियों की सख्या उत्तरोत्तर बढती गई। इसी प्रकार बौद्धों इसाइयों ने जब शासन किया तो सारे भारत वर्ष को ईसाईयत के ढाचे में परिवर्तित करने का दुष्प्रयास किया। अत किसी ने ठीक ही कहा है कि

"राजा कालस्य कारणम् अर्थात् राजा ही समय का कारण होता है। अत चाणक्य जी ने ठीक ही कहा है कि "धर्मस्य मूल अर्थ अर्थस्य मूल राज्यम्" धर्म का मूल अर्थ होता है क्योंकि बिना अर्थ के धर्म कार्य सम्पादित नहीं हो सकते अर्थ की प्राप्ति राज से ही हो सकती है।

जिस समय आर्यों ने स्वार्थों के वशीभूत होकर यह घोषणा की थी कि आर्य समाज का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है यह एक विशुद्ध धार्मिक सस्था है। ऐसा कहना उस समय के आर्यों की बहुत बडी भूल थी। उन्होंने दयानन्द को समझा नहीं था। और नहीं देव दयानन्द का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पढा था। नहीं तो ऐसी उद्घोशणा कभी न करते और वैदिक धर्म तथा आर्य समाज की यह दुर्गति कभी न होती।

भावी कार्यक्रम

आर्य समाज अपनी सभाओं में तीनों प्रकार की सभाओं के अधिकारियों का चयन करें। धर्म सभा विद्या सभा तथा राज सभा।

अतिशय धार्मिक जन ही धर्म सभा के अधिकारी बनाए जायें। तथा जो वैदिक वाङमय के मूर्धन्य विद्वान हो उन्हें विद्या सभा का अधिकारी बना कर समाज में गुरुकुल आदि विद्यालयों के द्वारा शिक्षा का प्रचार प्रसार करें तथा विद्या के माध्यम से तमाम पाखण्ड पूर्ण मत मतान्तरों के साथ शास्त्रार्थ आदि करके इनका निष्कासन सुनिश्चित करें। क्योंकि जब तक ये मत मतान्तर रहेंगे तब तक वेद का प्रचार प्रसार होना दुष्कर होगा। तीसरे युवाओं को सगठित कर राज सभा का गठन करें उन्हें कार्य करने की प्रेरणा कर उनके उत्साह को बढाए। समाचार पत्रों तथा अन्य प्रचार साधनों के माध्यम से आर्य समाज के सार्वभौमिक नियमों सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार किया जाए। तथा आर्य सिद्धान्तों पर आधारित राजनीति का विस्तार पूर्वक प्रचार किया जाए। सारे राष्ट्र को एक न एक दिन आर्यों की शरण में आकर के ही सुख शान्ति के दर्शन हो सकेगें।

जब आर्य लोग शासन सूत्र को सभालकर अपने आचरणों को उत्तम बनाकर राज्य का सचालन करेंगे उन पर विद्याय सभा धर्मार्य सभा का नियन्त्रण रहेगा। तब इस राष्ट्र में सबको शिक्षा सबको न्याय एव स्वातन्त्र्य से युक्त रखा जा सकेगा। तथा चीटी से लेकर हाथी पर्यन्त सारे प्राणी अच्छे प्रकार से जीवन निवाह कर सकेगें।

आए राष्ट्र का समृधि एव वैदिक धर्म के पुनरुत्थान हेतु हम आर्य लोग पारस्परिक वैमनस्य को भुलाकर सदाचार परोपकार को जीवन का अग बनाकर तथा आश्रम व्यवस्था का पूर्णत पालन करते हुए वेदोद्धार का व्रत लें। तथा वैदिक राज्य की स्थापना करें तभी वैदिक धर्म का पुनरुत्थान सम्भव है अन्यथा सभी योजनाए दिवा स्वप्न ही बनी रहेंगी

आर्ष गुरुकुल ऐरवा कटरा (इटावा) उ प्र
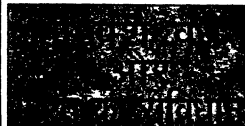
डॉ. कृष्ण लाल

हमारे सविधान-निर्माताओ ने बुद्धिमत्ता और सहृदयता-पूर्वक अडतालीसवे अनुच्छेद मे सभी दुधारू और भारवाहक पशुओ की रक्षा का निर्देश राज्य को दिया है। मध्यप्रदेश की भूतपूर्व सुन्दरलाल पटवा सरकार का यह कार्य सराहनीय था कि उसने सविधान के इस निर्देश का पालन करते हुए गोवश-वध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया था आगे चलकर मध्य-प्रदेश उच्च न्यायालय ने भी राज्य सरकार के इस निणय का समथन कर सहृदयता का परिचय दिया था।

परन्तु एक कहावत के अनुसार कानून अन्धा होता है । यह बहुत स्पष्ट है कि न्यायाधीशो को लिखित सविधान की निष्पक्ष व्याख्या करनी होती है। इसी के अनुरूप सर्वोच्च न्यायालय के विद्वान न्यायाधीशो ने कुछ कसाइयो की याचिका पर उनकी रोजी-रोटी के प्रश्न को ध्यान मे रखते हुए अपने २१-५-६६ के निर्णय मे बूढे अर्थात पन्द्रह वर्ष की आयु से ऊपर के गोवश के वध को वैध ठहराया है। दैनिक जागरण २२-४-६६ । उनका मानना है कि अडतालीसवा अनुच्छेद इन पशुओ की रक्षा नही करना क्योकि इस आयु मे न तो ये दुधारू होते हैं और न ही भार ढोने मे समर्थ।

यह तो विद्वान न्यायाधीशो द्वारा सविधान की सूक्ष्म व्याख्या की बात है परन्तु सामान्य व्यक्ति अनुभव करता है कि जैसे भारतीय परिवार में माता-पिता क [illegible] र उन्हे निकाला नहीं जाता उसी प्रकार जिन पशुओ ने असमथता की अवस्था तक पहुचने तक हमारी भरपूर सेवा की है उन्हे इस अवस्था मे मार कर खा जाना कहा की मानवीयता है। महर्षि दयानन्द ने अपनी पुस्तक गोकरुणानिधि मे और उसकी व्याख्या मे गौ की गुहार नामक पुस्तक मे यह स्पष्ट किया है कि प्रकृति का ऐसा नियम है कि कोई पशु कभी बेकार नहीं होता। यहा तक कि उसकी मृत्यु के पश्चात भी हम उसकी खाल हड्डियो आदि का उपयोग करते हैं।

ये बूढे पशु जितना खाते हैं उतना लाभ इस रूप मे पहुचा देते हैं कि एक तो इनके गोबर-गैस-सयन्त्र के द्वारा ईंधन के रूप मे प्रयुक्त होने वाली गैस बनाई जा सकती है और उस सयन्त्र मे से निकले गोबर से धरती को उपजाऊ बनाने वाली खाद तैयार की जा सकती है।

एक पुस्तक **"गौ की गुहार"** के पृष्ठ स ५०-५२ मे से निम्नलिखित उदधरण देना अप्रासगिक नहीं होगा-

"पचवर्षीय योजना के १८वे अध्याय मे 'कृषि की कुछ समस्याए' के २३वे पैराग्राफ मे लिखा है कि १६५१ की पशुगणना के हिसाब से अनुमानत २२ अरब ५० करोड मन गोबर वार्षिक होता है। बेकार कहे जाने वाले पशुओ से प्राप्त होने वाली आय मे उन पर खर्च होने वाल व्यय बहुत कम है। ऐसे पशुओ को निभाने का खर्च किसानो के लिये अधिक नहीं है। किसान की जमीन के कुछ पडती हिस्से मे खेत के चारो ओर बाढ मे लगे घास-बेल-पत्री आदि चराकर और खिलाकर इन पशुओ को जिलाये रखते हैं।

खेती से अतिरिक्त पैदा होने वाले घास-पात को खाकर घर के पशु प्रतिदिन कम से कम १० किलो बढिया गोबर देते हैं। यह गोबर पेडो की भी रक्षा करता है और धरती को भी हृष्ट-पुष्ट करता है। गैस प्लाट में दस किलो गोबर से बारह घन फुट गैस मिल जाती है। अब जिस तरह के चूल्हो का विकास हुआ है उनसे एक आदमी का भोजन बनाने के लिये छह घन फुट गैस की आवश्यकता पडती है। अगर सब पशुओ का गोबर डाल दिया जाये तो लगभग ६० करोड लोगो की रसोई बनाने के लिये गैस मिल जायेगी। यदि पशु बने रहेगे तो घास-पात खाकर गोबर देते रहेगे। गैस प्लाट मे गोबर पहुचता रहेगा तो गैस मिलती रहेगी। जितनी गैस मिलेगी उतने पेड कम कटेगे और पेड जितने कम कटेगे उतना प्रदूषण कम होगा गाय बैल बछडे-यहा तक कि अन्यथा बेकार समझे जाने वाले पशु भी गोबर देते है।

इसके अतिरिक्त आज विकसित देशो के कृषि-वैज्ञानिक भी इस विषय मे सहमत हैं कि भूमि की उर्वरा-शक्ति बनाये रखने के लिये गोबर की सेन्द्रिय (आर्गेनिक) खाद अत्यन्त आवश्यक है।

ये सब देखते हुए मेरा भारतीय सस्कृति का महत्व समझने वाले गाय का आदर करने वाले सहृदय सासदो से अनुरोध है कि सविधान के अडतालीसवे अनुच्छेद में ऐसा सशोधन करवाये जिससे कि बेकार समझे जाने वाले गोवश के बूढे पशुओ के वध को भी रोका जा सके। उसका एक तो उपाय यह है कि इस अनुच्छेद मे से "दुधारू और बुलाई मे समर्थ" शब्द निकाल दिये जाये जिससे इन तथाकथित बेकार गोवश की रक्षा हो सके। इस विषय मे सभी धार्मिक सस्थाओ यथा आर्य समाज सनातन धर्म विश्व हिन्दु परिषद जैन समाज आदि को आगे आना चाहिए। यह भी आवश्यक है कि जनता अपने क्षेत्र में सासदो पर सविधान मे यथोचित परिवर्तन के लिये दबाव डाले।

**आचार्य, सस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली।**

वेदों का विधान

देह भस्मीभूत होता है, दफ़न नहीं

(सुश्री सूर्या कुमारी व्याकरणाचार्या पाणिनि कन्या महाविद्यालय-वाराणसी)

जिस प्रकार समाज को समृद्ध समुन्नत बनाने के लिये मनुष्य के जीते जी जातकर्म आदि सभी संस्कारों की आवश्यकता है उसी प्रकार मनुष्य के मरने के पश्चात् भी समाज को नीरोग स्वस्थ पर्यावरण देने के लिये तथा सूक्ष्म शरीर से सम्बन्धित जीवात्मा की सुख शान्ति के लिये वेद मन्त्रोच्चारपूर्वक अन्त्येष्टि संस्कार भी परमावश्यक है समाज को दुर्गन्ध से बचाने के लिये तथा उसके स्वच्छ पर्यावरण के लिये मृतक का दाहकर्म ही युक्त है

हम सबका शरीर पृथिवी जल अग्नि वायु आकाश इन ५ भूतों से बना है जैसा कि सांख्य दर्शन ३ -६ में कहा पाञ्चभौतिको देह । अन्त मे यह नश्वर शरीर पञ्चभूतों में ही विलीन हो जाता है इसीलिये संस्कृत मे मृत्यु को पञ्चत्व गमन कहा जाता है किन्तु शरीर को शीघ्रातिशीघ्र पञ्चतत्त्वो में विलीन करने का पूर्ण सामर्थ्य अग्नि में ही है पृथिवी वायु आकाश एवम् जल में नहीं कि वे तत्क्षण मृत शरीर को पञ्चतत्त्वों में मिला सके अग्नि के इस विशिष्ट सामर्थ्य के कारण ही उसे इन पृथिव्यादि देवों का मुख कहा जाता है

'अग्निर्वै देवाना मुखम्'

ऐतरेय ब्राह्मण ७। ३ ।

इस प्रकार अग्नि देव के मुख में पञ्चभूतों से निर्मित शरीर को अर्पित करने पर = शरीर का दाह करने पर सभी पञ्चभूत अपने अपने तत्त्वों में शीघ्र मिल जाते है भूतो की इस विलीनता को अर्थात शरीर दाह के इस वैज्ञानिक यथार्थ सत्य को ईश्वरीय ज्ञान वेद में सुस्पष्ट शब्दों में प्रतिपादित किया गया है मन्त्र है

प्रसद्य भस्मना योनिम् अपश्च पृथिवीम् अग्ने।
ससृज्य मातृभिष्ट्व ज्योतिष्मान् पुनरासद ।।

यजु १२। ३८

अर्थात हे अग्ने ज्योतिष्मान = सबके नेता प्रकाशयुक्त जीव त्वम् = तुम भस्मना = भस्मीभूत होकर पृथिवीम् अपश्च = पृथिवी और जलादि तत्त्वों के योनिम् = कारण को प्रसद्य = प्राप्त होके मातृभि ससृज्य = माताओं के साथ समर्ग को प्राप्त करके आसद = पुन शरीर को प्राप्त करो।

मन्त्र का तात्पर्य यह हुआ कि जीव के शरीर से निकलने के पश्चात् शरीर भस्मीभूत होकर अपना अपनी योनि = कारण रूप पृथिव्यादि तत्त्वों मे मिल जाता है और वह जीव पुन माता के उदरवास को प्राप्त कर नये शरीर को प्राप्त करता है

मन्त्रद्रष्टा महर्षि दयानन्द ने इस मन्त्र में वाचक लुप्तोपमालंकार है यह कह कर मन्त्र का भावार्थ इस प्रकार प्रस्तुत किया है

हे जीवो !"तुम लोग जब शरीर को छोडो तब यह शरीर राख रूप करके पृथिवी आदि पञ्चभूतों के साथ युक्त करो। तुम और तुम्हारी आत्मा माता के शरीर में गर्भाशय में पहुंच फिर शरीर धारण किये हुए विद्यमान होते हो।"

मन्त्र में बडे ही सुदृढ शब्दों में कहा गया है कि शरीर का मात्र दाहकर्म ही होना चाहिये अन्य कोई कार्य नहीं अतः शरीर को गाड कर या जलप्रवाहित करके शरीर की दुर्दशा नहीं करनी चाहिये। यही सिद्धान्त यजुर्वेद का चालीसवा अध्याय भी दोहरा रहा है कि भस्मान्त शरीरम् यजु ४०। १५ अर्थात् शरीर अन्त में भस्म होने वाला होता है और शरीर का भस्म करना अग्नि में दाह करके ही सम्भव है गाड कर तो नहीं। इस दाह कर्म का वर्णन ऋग्वेद के १० वें मण्डल के १६ वें सूक्त में भी द्रष्टव्य है। यहा ध्यातव्य बात यह है कि वेदों में कहीं पर भी मनुष्य विशेष या आश्रम विशेष का नामोच्चारपूर्वक शरीर दाह का विधान नहीं है अपितु सामान्य रूप मे आबालवृद्ध मृत शरीर के दाहकर्म का विधान है।

वेद में प्रतिपादित शरीरदाह विधि को सम्पन्न करने का आश्वलायन गृह्यसूत्र कौषीतकी गृ सू आग्निवेश्य गृ सू वैखानस गृ सू तथा पारस्कर गृ सू में भी विधि क्रम प्रतिपादित किया गया है यथा अथैनमस्तर्वेदीध्मचिति विनोति यो जानाति ।। आश्व गृ सू ४ २ १४ इस सूत्र की नारायण टीका में कहा इध्मभूता चिति स्थलसमथा चिनोति तथा पारस्कर गृ सू में शालाग्निना दहन्त्येनम आहितश्चेन तूष्णीं ग्रामाग्निनेतरम् ३ १० ११ १२

शरीर दाह कर्म की यह वेदोक्त परम्परा महाभारत काल तक अबाध रूप से चलती रही है इसमें हमारे ऐतिहासिक ग्रन्थ रामायण महाभारत प्रमाण हैं यथा दशरथ के दाहकर्म का वर्णन अयोध्या काण्ड ७६ १, २० में आया है तथा पाण्डु के दाहकर्म का वर्णन आदि पर्व १२७ द्रोण के दाहकर्म का वर्णन स्त्रीपर्व २३ ३८ ४२ भीष्म के दाह कर्म का वर्णन अनुशासन पर्व १६८ १० १६ वासुदेव का मौसल पर्व १७ १८ २० एवं कुन्ती धृतराष्ट्र गान्धारी के दाह कर्म का वर्णन आश्रमवासिक पर्व ३८ मे आया है

परन्तु महाभारत के युद्ध के पश्चात् वैदिक परम्परायें छिन्न भिन्न हो गई महाभारत युद्ध मे सभी विद्वान शास्त्रविद नृसिंहरूपी रणानल में समाप्त हो गये वेदज्ञान लुप्त होने लगा वेदमन्त्रों के अर्थ स्वार्थ सिद्धार्थ किये जाने लगे स्मृतियो मे मनमाने प्रक्षेप कर दिये गये फलस्वरूप नये नये मत मतान्तरो अन्धविश्वासों आडम्बरो की बाढ़ में जनमानस डूबने उतराने लगा और आज भी उसी बाढ़ मे गोते खा रहा है इस आडम्बर की आधी का ग्रास अन्त्येष्टि संस्कार = शरीर दाह संस्कार भी बना स्मृतियों में प्रक्षेप कर २ वर्ष तक के बच्चों के तथा सन्यासियों के दाहकर्म के स्थान पर गाड़ने का नियम बना लिया गया यथा अद्विवर्षे प्रेते माता पित्रो आशौचम शौचम एवैतेषाम एकरात्रम त्रिरात्र वा शरीरमदग्ध्वा निखनन्ति

पार गृ सू ३। १० १५ हमारे ईसाई मुसलमानों ने भी अज्ञानतावश मृत देह को गाड कर उस पर दरगाहो कब्रो को बना कर अपने मत की पहचान बना ली। इन वेद विरोधी तत्त्वो ने मृतदेह को गाडने की प्रथा से वेदादि शास्त्रों की अवमानना तो की ही साथ ही इन्होंने जनमानस के साथ भी घोर अन्याय किया है हमारी धर्मनिरपेक्ष सरकार का ही जनता के हित का ध्यान नहीं है। आज सरकार ही नित नये नये कब्रिस्तान बनवाने मे देश का लाखों रूपया व्यय कर रहा है अपने देश मे कितने ऐसे लोग है जिनके पास सर छुपाने का एक बित्ता जमीन नहीं है पर मरे हुओ के लिये मेरे देश मे सोने बैठने के लिये न जाने कितनी एकड भूमि एलाट है

इन्हीं ईसाई मुसलमानों की ही तर्ज पर एक नया सतपन्थ गुजरात में उभरा है जो मृतदेह को गाडने की प्रथा चलाने की कोशिश में हैं और अपने पन्थ की पुष्टि में अथर्ववेद के ५ मन्त्रों को उन्होंने उद्धृत किया है।

मैं सतपन्थ मतावलम्बियों से सर्वप्रथम यह पूछना चाहती हू कि आपने अथर्ववेद के जिन मन्त्रो को उद्धृत किया है उनमें कौन सा ऐसा शब्द है जिसके आधार पर अपने त्रिलोकीय ज्ञान से मृत देह के गाडने की प्रथा आपने निकाल ली जब कि वेदमन्त्रों में कोई भी ऐसा शब्द नहीं है जिससे मृत को गाडने की बात पुष्ट हो सके वेदो की सरचना सम्पूर्ण विद्या भण्डार परमपिता परमात्मा ने बुद्धिपूर्वक की है। वेद में कहे किसी भी कथन का विधि विधान का सिद्धान्त का वेद में ही विरोध होना असम्भव है, महर्षि कणाद ने बडे ही गद्गद हो कर कहा है बुद्धि पूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे वैशेषिक द ६ १ १ अर्थात वेद का निर्माण परमेश्वर ने बुद्धिपूर्वक किया है जरा विचार करे मृत देह को जलाने का विधान पूर्व प्रदर्शित वेद के मन्त्रो मे बडे सुस्पष्ट शब्दो में किया है तो किन प्रमाणो से मृतदेह को गाडने या प्रवाहित करने की प्रथा को अथर्ववेद मे सिद्ध किया जा सकता है

वस्तुत अथर्ववेद मे विशेषतया भैषज्य विद्या का वर्णन है अथर्ववेद भेषज शास्त्र कहा जाता है यह अथर्ववेद के ही गोपथ ब्राह्मण में ये ऽ थर्वाणस्तद भेषजम यद भेषजं तदमृतम गो ब्रा पू ३ ४ अर्थात अथर्ववेद के मन्त्र औषध है जो औषध है वह अमृत है इसी प्रकार ताण्ड्य ब्राह्मण मे भी अथर्ववेद को भेषज शास्त्र बताया है भेषजं वा ऽ ऽ थर्वणानि भेषजमेव तत् करोति १२ - ९ औषध विद्या होने के कारण अथर्ववेद आयुर्वेदादि शास्त्र शास्त्रो का मूल है जैसा कि सुश्रुत ने कहा इह खलु आयुर्वेदमष्टाङ्गम उपाङ्गम अथर्ववेदस्य सूत्रस्थान १ अथर्ववेद मे अनेक प्रकार की चिकित्सा पद्धतियां वर्णित की गई है यथा प्राकृतिक चिकित्सा औषध चिकित्सा शल्य चिकित्सा इत्यादि प्राकृतिक चिकित्सा के अन्तर्गत प्रक्रिया जल सूर्य अग्नि वायु पदार्थ आते है औषध चिकित्सा के अन्तर्गत सोमराजी - बाकुची जरा - जूही कृष्ण पिप्पलमूल आदि औषधि वनस्पतियां आती है

स्मरण रहे सतपन्थ मतावलम्बियो द्वारा उद्धृत मन्त्रो का परमेश्वर तथा माता पिता वरुण आदि अर्थ तो है ही साथ ही प्रस्तुत मन्त्रों में प्राकृतिक चिकित्सा भी बताई गई है क्योंकि मन्त्रों में पृथिवी जल अग्नि इन प्राकृतिक पदार्थों का वर्णन है

मन्त्रार्थ करते समय ऋषि देवतादि ज्ञान के साथ साथ मन्त्र के देवता अर्थात प्रतिपाद्य विषय का जानना अत्यावश्यक है देवता ज्ञान के बिना मन्त्रार्थ अव्याप्त कोटि का ही रहता है मन्त्रार्थ ज्ञान की विशेषता को बृहद्देवता में इन शब्दो मे बताया है

वेदितव्य दैवत हि मन्त्रे मन्त्रे प्रयत्नत ।
दैवतज्ञोहि मन्त्राणा तदर्थम् अवगच्छति।।

१ ४

अर्थात मन्त्रो के देवता को जानने वाला ही उनके अर्थों को भली भांति समझ सकता है सतपन्थ मतावलम्बी देवता ज्ञान मे सर्वथा अछूते हैं जो कि मन्त्रार्थ करने मे अत्यन्त उपयोगी हैं मृतक को गाडने की अपनी पुष्टि में आपके द्वारा उद्धृत जो मन्त्र है उनमे ४ मन्त्रों का देवता यम तथा एक १८ २ ३४ मन्त्र का देवता अग्नि है

यम शब्द के वैदिक वाङ्मय मे अनेक अर्थ हैं जिनका अर्थ करते समय प्रकरणानुसार संयोजन किया जाता है महर्षि यास्क ने निरुक्त १० २० १२ मे यम शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार की है यमो यच्छतीति सत अर्थात देने वाले को यम कहते है परमेश्वर हमें सुख प्रदान करता है कर्मों का फल देता है अत परमेश्वर यम है। इसी प्रकार माता पिता वैद्य तथा पृथिवी आदि पदार्थ हमें जीवन प्रदान करते है अत वे भी यम हैं

अग्नि शब्द के भी निरुक्त में कई निर्वचन है उनमे प्रथम अग्रणी भवति तथा तृतीय अङ्ग नयति सन्नममान ये निर्वचन यहा प्रकरणानुकूल सगत होते है इन्हीं निर्वचनों के आधार पर प्रस्तुत मन्त्रों का परमेश्वर अर्थ सुस्पष्ट है किन्तु इन्हीं पांचों मन्त्रो के सतपन्थ द्वारा किये गये भ्रान्तिपूर्ण अर्थ के स्थान पर प्राकृतिक चिकित्सा के बोध अर्थ इस प्रकार है

शेष पृष्ठ ८ पर

देह भस्मीभूत होता है, दफ़न नही

पृष्ठ ७ का शेष

१ **मृतुचिकित्सा**

अभि त्वोर्णोमि पृथिव्या मातुर्वस्त्रेण भद्रया।
जीवेषु भद्र तन्मयि स्वधा पितृषु सा त्वयि।।

(अथर्व १८। २ ५२)

मन्त्र का देवता यम – भिषक है। रोगों का निदान करता वैद्य कह रहा है हे पाडित पृथिव्या मातु = माता पृथिवी के भद्रया वस्त्रेण – कल्याण रूपी वस्त्र से अभि त्वर्णोमि = चारो ओर से आच्छादित करता हू जीवेषु – प्राणियो म जो भद्रम = कल्याण है तनमयि = वह मुझमें हो अथात् मैं कल्याणकर्त्ता बन जाऊ जिससे पितृषु स्वधा – पालन करने वालो में जो धारण शक्ति है सा त्वयि वह तमम जाये अथात तुम रोगमुक्त होकर पालन करने वाल बन जाओ

इस मन्त्र में गीला मिट्टी की पट्टी तथा उसके लेप करने का सकेत है हमारी मातृभूमि का वस्त्र मिट्टी ही तो है जो कल्याणरूपी है। मन्त्राथ से कहीं भी मृतदेह को गाडने का भाव द्योति नहीं हाता। इस मिट्टी के लेप से स्नायुदौर्बल्य रक्तविकाररूप एक्जीमा आदि रोगों से मुक्ति मिलती है।

२) **सूर्यचिकित्सा एव मृतुचिकित्सा का प्रतिपादन**

इदमिद्वा उ नापर दिवि पश्यसि सूर्यम्।
माता पुत्र यथा सिचाभ्येन भूम अर्णुहि।।

(अथर्व १८ २। ५०)

मन्त्र का देवता यम = सूर्य एव पृथिवी है। दिवि – द्युलोक में इदम इन – यह ही वा उ = निश्चय करके सूर्यम – सूय का पश्यसि – देखता हू, नापरम = अन्य को नहीं माता पुत्रम – माता पुत्र को यथा = जैसे सिचा = वस्त्र से आचल से अभि = चारों ओर से ढकती है वैसे भूमे = पृथिवा एनम = इस मुझ आतुर को तुऊर्णुहि = ढक।

तात्पय हुआ कि जब सूर्य का प्रकाश हो तभी सम्पूर्ण शरीर में पृथिवी अर्थात गीली मिट्टी का लेप करना चाहिये तथा लेप करने के पश्चात् सूर्य के प्रकाश में बैठना चाहिये तभी मिट्टी माता के सदृश सुख देकर पित्ती चकत्ते खसरा आदि व्याधियों का शमन करने वाली सिद्ध होती है।

(३) **मृत् चिकित्सा**

असौ हा इह ते मन ककुत्सलमिव जामय।
अभ्येन भूम ऊर्णुहि।।

(अथर्व १८। ४। ६६)

मन्त्र का देवता यम = पृथिवी है असौ = वह पृथिवी निश्चय करके इह = यहा ते = तेरे मन = मन को ढकती है। इव = जैसे जामय = स्त्रिया ककुत्सलम = सुखदायी शब्द करने वाले बच्चे को ढकती है भूमे ! = पृथिवी मा ! एनम् = इस रोगग्रस्त को वैसे ही तू अभि ऊर्णुहि = भली भाति ढक।

अभिप्राय यह निकला कि रोगग्रस्त मनुष्य को माता के सदृश पृथिवी मा मिट्टी के लेप से रोगमुक्त कर उसके मन को प्रसन्न कर देती है = उत्साहित कर देती है। इस प्रकार मिट्टी की पट्टी पेट पर रखने से दमा खासी शिरोवेदना पेट दर्द दस्त बुखार अलसर आदि रोग दूर होते हैं।

(४) **सूर्य चिकित्सा**

ये निखाता ये परोप्ता ये दग्धा ये चोद्धिता।
सर्वांस्तानग्न आ वह पितृन् हविषे अत्तवे।।

(अथर्व १८। २। ३४)

इस मन्त्र का देवता अग्नि = सूर्य है। ये निखाता = निखाता शब्द नि अव्यय पूर्वक खनु अवदारणे धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ हुआ भली प्रकार फटा हुआ या खोदा हुआ। इस प्रकार निखाता वे कहलायेंगे जिनके अङ्ग पूरी तरह से फट गये हैं परोप्ता = परा = उल्टे उप्ता = (डुवप बीजसन्ताने) विस्तृत किये गये हैं अर्थात् जिनका अस्थि भग हो गई है ये दग्धा = जो जल गये हैं ये उद्धिता = जो ऊपर उठ गये हैं अथात् किसी भी अङ्ग में शोथ आदि द्वारा वृद्धि हो गई है तान सर्वान पितृन = उन सब पालन करने योग्यों को हे अग्ने = हे सूय हविषे अत्तवे = ग्राह्य पदार्थ के खाने के लिये आवह = प्राप्त करा।

मन्त्र में सूय चिकित्सा का निर्देश है। कुष्ठादि रोगों से शरीर विदीर्ण हो जाता है गल जाता है। या अस्थिभग हो जाता है जल जाता है शोथ हो जाता है तब थर्मोल्यम = सूर्य स्नान या सूर्य किरण से तैयार किये गये तैल या जल से उपर्युक्त रोगों की चिकित्सा की जानी चाहये।

(५) **मृत् चिकित्सा**

पृथिवीं त्वा पृथिव्यामा वेशयामि देवो न धाता प्र तिरात्यायु।
परापरैता वसुविद्वो अस्त्वधा मृता पितृषु स भवन्तु।।

इस मन्त्र का देवता यम = भिषक् है। वसुवित् – पृथिव्यादि पदार्थों के गुण का ज्ञाता मैं भिषक् त्वा पृथिवीम = तुझ विस्तृत को अर्थात् सम्पूर्ण प्रजा को पृथिव्याम आवेशयामि = पृथिवी में प्रवेश कराता हू जिससे न धाता देव हमारा = पोषक प्रकाशस्वरूप परमात्मा आयु प्रतिराति = आयु बढावे। व = तुम सब परापरैता = अतिशय पराक्रम वाले (परा+परा+इता = अभ्यासे भूयासम अथ मन्यन्ते निरु १० ४०) अस्तु = होओ। अध मृता – और जो मरे हुए हैं अर्थात अशक्त है वे पितृषु सभवन्तु = पालकों में होवें अथात् वे उत्साही होकर पालन करने वाले बन जावें।

मन्त्रार्थ मृतचिकित्सा का द्योतक है। जब विद्युत् आदि आघातों से मनुष्य निष्प्राण सदृश हो जाता है तब मिट्टी में दबा देने से पुन प्राण सञ्चार होने लगता है। मन्त्र में यह भी बताया गया है कि परमेश्वर ही प्राणरक्षक है उसी की कृपा से कोई भी चिकित्सा लाभप्रद होती है।

इतने पूरे विवेचन स निस्सन्देह यह सिद्ध हो गया कि वेदों में कहीं भी मृत देह को गाडने या प्रवाहित आदि करने का विधान नहीं है। मन्त्रों में पृथिवी शब्द या भूम ऊर्णुहि आदि शब्द देख कर मृतदेह को गाडने की पुष्टि करने वाले महती भूल में हैं।

स्मृतियों में भी जहा कहीं मृतदेह को गाडने का विधान है वह भी वेद विरुद्ध होने से त्याज्य है। स्मृतियों के प्रामाण्याप्रामाण्य के विषय में मीमासा दर्शनकार जैमिनि महर्षि का आदेश है विरोधे तु अनपेक्ष्य स्यात् असति ह्यनुमानम।। १। ३। ३।। अर्थात् वेदविरुद्ध होने पर स्मृतिया उपेक्षणीय हैं। वेदानुकूल होने पर ही स्मृतिया प्रमाण योग्य हैं।

इसी प्रकार सन्यासियों को गाडने के प्रमाण में मनु महाराज के अनग्निरनिकेत स्यात् ग्रामन्नार्थमाश्रयेत्।

उपेक्षको ऽशकुसुको मुनिर्भावसमाहित ।।

मनु ६। ४३।।

इस श्लोक का अनग्नि शब्द दिया जाता है जिसको मनुस्मृति की ही अन्त साक्षी खण्डित कर देती है। मनु २। ७ में कहा है

य कश्चित् कस्यचिद्धर्मो मनुना परिकीर्तित।
स सर्वो ऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि स।।

अर्थात् सब विद्याओं के भण्डार वेद में पदार्थों के विषय में जो कुछ कहा गया है उसका ही मनु महाराज ने अपने ग्रन्थ में प्रतिपादन किया है। वेद में कहीं पर भी मृतदेह को गाडने का विधान नहीं है तो कैसे मनु महाराज गाडने का विधान कर सकते हैं? धर्मशास्त्र प्रणेता मनु महाराज वेद को ही सर्वोपरि मानते हैं उन्होंने वेद विरुद्ध स्मृतियों की इन शब्दों में निन्दा की है

या वेदवाह्या स्मृतयो याश्च काश्च कुदृष्टय।
सर्वास्ता निष्फला प्रेत्य तमोनिष्ठा हि ता स्मृता।।

१२। ६५।।

अत मनु महाराज के मत्थे सन्यासियों के गाडने का कलक नहीं मढा जा सकता और न वेदों से सिद्ध किया जा सकता है। अनग्नि शब्द से तो सन्यासियों के लिये २ सकेत दिये गये हैं

(१) सन्यासियों को चूल्हा चौके के चक्कर में न पड कर भिक्षान्न से जीविका चलानी चाहिये। यह सकेत इसलिये किया गया है क्योंकि सभी को रोटी तथा मकान प्रथम आवश्यक होते हैं। इस सन्दर्भ में साख्य दर्शन ४। १२ का सूत्र भी द्रष्टव्य है कि अनारम्भे ऽपि परगृहे सुखी सर्पवत् इस सूत्र से कपिल महर्षि ने मुमुक्षु के लिये बताया है कि मुमुक्षु दूसरे के घर में ही सर्पवत् सुख का अनुभव करे गृहादि के निर्माण में न लगा रहे।

(२) यदि कोई सन्यासी सन्यास से पूर्व आहवनीयादि अग्नियों का व्रती रहा हो तो सन्यास के बाद अग्नियों का व्रत छोड कर समाज सेवा में लग जाये अग्नियों के व्रत पूर्ण करने में न लगे।

सन्यासियों को गाडने का विधान करने वालों से मेरा बलपूर्वक यह कहना है कि आपके अनुसार अनग्नि शब्द का अथ सन्यासियों को न जलाना करना कथमपि तर्क सगत नहीं है। क्योंकि स्पर्श का अनुभव जीवितावस्था में ही तो सम्भव है तथा मरने के बाद वह सन्यस्त भी कहा रहा जिसके साथ छूने न छूने का विचार हो सके ? अब तो रह गया पार्थिव शरीर जिसकी और्ध्वदैहिक क्रिया शेष रहे जावित प्राणियों को ही करनी है अत निस्सन्देह चाहे कुटीचक बहूदक हस परमहस किन्ही भी प्रकार का सन्यासी हो अथवा कोई दूसरा हो आबालवृद्ध सभी की मृतदेह का दाहकर्म होना चाहिये दफन नहीं यही वेद का आदेश है।

भस्मान्त शरीरम्

महर्षि दयानन्द साधु आश्रम का वार्षिकोत्सव

सार्वभौमिक वेद प्रचारक मण्डल, महर्षि दयानन्द साधु आश्रम जकीना गेट भरतपुर का दसवा वार्षिकोत्सव २८ से ३० जून तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान एव भजनोपदेशक पधार रहे हैं। समस्त धर्म प्रेमी महानुभावों से प्रार्थना है कि तन मन धन से सहयोग देकर आयोजन को सफल बनायें।

स्व. श्री शान्ति प्रकाश "प्रेम" का क्रान्तिकारी जीवन

(चौथी पुण्य स्मृति मे)

धर्म सिह शास्त्री डबल एम ए

आर्य समाज का मुख्य लक्ष्य कृण्वन्तो विश्वमार्यम् एक पुनीत कडी की मधुर गूज स्व श्री शान्ति प्रकाश जी प्रेम की प्रेम कुटिया के छंटे से कक्ष म मानो लगातार निकलती चली आ रही है। गढवाल भ्रमण के दौरान स्व श्री शान्तिप्रकाश जी के कक्ष मे जानेका अवसर मिला दीवार के चारो ओर वही वैदिक चित्र गायत्री मत्र आर्य समाज के नियम स्वामी दयानन्द जी सरस्वती का चित्र आदि दिखायी दिए जो मूल चित्र मैने १६६२ मे देख थे। ग्राम कुणजाली साबली गढवाल मे यही प्रेम कुटी स्व श्री शान्ति प्रकाश जी की दिव्य प्रेरणा कुटी है जहा पर उन्होने १२ दिसम्बर १६१४ को जन्म लिया। केवल १३ वर्ष की आयु म ही उनके जेष्ठ भ्राता श्री भिक्षु जी ने स्व श्री प्रेम जी को भटिण्डा के गुरुकुल मे भेजा जहापर उन्होन शिक्षा ग्रहण की। वैदिक शिक्षा का अधिकाधिक ज्ञान अजित करने के पश्चात वे आर्य समाज की सवा मे समर्पित हो गए। तब से गढवाल उत्तराखण्ड के कोने कोने मे आर्य समाज का प्रचार प्रसार तथा समाज सुधार के पुण्य कार्यों मे उनका निस्वार्थ जीवन बीता। देश की आजादी के युद्ध मे भी भाग लेकर उनके हाथो मे अग्रेजी सरकार द्वारा हथकडिया पहना दी गइ वे दो बार जेल गए अग्रेजी सरकार ने कई यातनाए दी किन्तु देश की आजादी के लिए वे अपने कर्तव्य पथ पर डटे रहे।

चार नदियो के सगम का रमणीक स्थान पचपुरी गढवाल उनके धार्मिक सामाजिक एव राजनैतिक कार्यो का प्रमुख केन्द्र रहा। इस केन्द्र बिन्दु से ही उन्होने आर्यसमाज के माध्यम से अनेक सामाजिक कुरीतियो का सामना किया आय समाज स्कूल मन्दिर तथा पचपुरी जहापर कन्या पाठशाला पुस्तकालय वाचनालय औषधालय आदि उनकी सामाजिक कुबानी थीं देखने का मिलती है वे जीवन पर्यन्त सामाजिक विषमताओ एव रूढिवादिता को समूल नष्ट करने क लिए सघष करत रहे। उनका तप और त्याग उत्कृष्ट एव अनुकरणीय था उन्होने मानव समाज का निर्माण करते हुए धर्मानुसार मानव जीवन की श्रेष्ठता को सार्थक करने मे अपना तन मन धन लगाया

गढवाल के स्वतत्रता सग्राम सनानी क्रान्तिकारी देशभक्त सुप्रसिद्ध समाज सेवी महाकृति इसी प्रम कुटी मे सासारिक चोला त्यागकर २८ जून १ ६२ को ब्रह्मलीन हो गये। जीवन और मृत्यु से जूझते हुए स्व श्री शान्ति प्रकाश जी ने अपने अन्तिम सन्देश मे यही कहा आर्य समाज से गढवाल मे जो भी सामाजिक व धार्मिक कार्य सुसम्पन्न हुए हैं वे सामाजिक व धार्मिक कार्य जनता के उत्थान हेतु वरदान सिद्ध हुए है और इन कार्यों का गढबाल मे बन्द नही होना चाहिए इसके लिए सामाजिक सभी सस्थाए आर्य समाजो और नव युवको को आगे आना चाहिए।

गढवाल की सभी आर्य समाजो सामाजिक सस्थाओ गढवाल आर्य उप–प्रतिनिधि सभा तथा हम सभी सामाजिक व्यक्तियो/नव युवको को उनके उक्त सन्देश पर अमल करके उनके सन्देश अनुसार गढवाल मे विषमता और रूढिवादिता को जड से नष्ट करने के लिए एक साथ जोर लगाना होगा यही हमारी स्व श्री प्रेम जी के प्रति सच्ची श्रद्धान्जलि होगी।

शुद्धि शान्ति प्रार्थना कार्यक्रम पर भावभीनी श्रद्धान्जलि

विभिन्न आर्य समाजो से जुडे कमठ सामाजिक कायकत्ता श्री जगदीश चन्द्र की ८२ वर्षीय पूज्य माता श्रीमती महेश्वीर दवी धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री लालमणी का दिनाक ३१ मई १६६६ की प्रभात बेला मे निधन हो गया शुद्धि शान्ति प्राथना कार्यक्रम वैदिक यज्ञ द्वारा बुद्धवार दिनाक १२ जून १६६६ को प्रात १० बजे से १ बजे तक उनके निवास स्थान सेक्टर १२/१३१० रामकष्ण पुरम नई दिल्ली मे हुआ जिसमे विभिन्न समाजो के कमठ कार्यकर्त्ता एव इष्टमित्र उपस्थित थे स्व श्रीमती महेश्वरी देवी को भावभीनी श्रद्धान्जलि अर्पित की गई। प्रवक्ताओ मे सवश्री प्रियव्रत शास्त्री जीवनलाल जी धर्मसिह शास्त्री सुरेशचन्द्र जी प्रमुख थे मानव जीवन की प्राप्ति परमात्मा की सर्वोत्तम कृति है का वणन करते हुए श्री धर्मसिह शास्त्री ने माता स्व श्रीमती महेश्वरी देवी को वैदिकधर्मी ममतामई समाजशील वशरक्षक जीवमात्र के लिए करूणा सजोने वाली महाकृति बताया जिसन ऐसे बच्चो को जन्म दिया जा धर्मानुसार मानव सामाजिक जीवन की श्रेष्ठता को साथक करने म आग रहते हैं

दयानन्द मठ दीनानगर मे महामृत्युञ्जय यज्ञ

परम पूज्य महान सन्त तपस्वी वीतराग सन्यासी पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की निरोग दीर्घायु के निमित्त उनक योग्य शिष्य स्वामी सदानन्द जी सरस्वती पूर्वनाम आचार्य जगदीश चन्द्र जी की अध्यक्षता म दयानन्द मठ दीनानगर म महामृत्युञ्जय यज्ञ १ जुलाइ से ३० जुलाइ १६६६ तक हो रहा है आप सबसे प्राथना है कि इस पुण्य महायज्ञ म सम्मिलित होकर पुण्य के भागी बने

कार्यक्रम

हवन यज्ञ प्रात ५ ३० से ८ ३० तक
हवन यज्ञ साय ५ ३० से ७ ३० तक

साथ प्रतिदिन विद्वानो क प्रवचन भी होंगे ३ जुलाइ का गुरु पूर्णिमा के अवसर पर विशेष उत्सव होगा

वद प्रचार शिविर का आयोजन

८ । ६ मगलवार को गगादशहरा । पावन पर्व पर गुरुकुल आश्रम की ओर । मेला स्थान विश्राम गृह भोला नगर मेरठ । । । वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया गया। प्रात बजे । । से शिविर । । प्रारम्भ हुआ। जिस मे यजमान थे श्री जगतसिह जी । उन्होने ही सब अतिथियो के । । भोजन । व्यवस्था की थी। इस अवसर पर गरुकल । आचार्य स्वामी विवेकानन्द जी ने गगा दशहरा के पर्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारी सस्कृति लुप्त होती जा रही है और पश्चिमी सभ्यता का प्रचार प्रसार बढ रहा है। यदि हमारी सस्कृति समाप्त हो गई तो भारत भी समाप्त हो जाएगा। उन्होने सस्कृति को बचाने और वैदिक परम्पराओ को उभारने का प्रयत्न करने पर बल दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के पूर्व प्रधान और गुरुकुल के मन्त्री श्री इन्द्रराज जी ने कहा कि वर्तमान समय मे बुराईया चारो तरफ फैल रही है। भ्रष्टाचार का बोलबाला है। हिसा और आतकवाद बढ रहा है। चरित्र का हर क्षेत्र मे ह्रास हो रहा है। इन मे मारा दोष शिक्षा पद्धति का है। शिक्षा मे सुधार हो जाए तो भारत का भी उद्धार हो जाए। उन्होने कहा कि शिक्षा का सर्व श्रेष्ठ तरीका गुरुकुल पद्धति है। जिस में नि शुल्क शिक्षा दी जाती है।

इससे पूर्व गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने स्वागत गीत सूत्र अन्ताक्षरी भाषण आदि भी प्रस्तुत किए। जिन से लोग प्रभावित हुए। इस अवसर पर भी शोभारामजी प्रेमी श्री मागे रामजी श्री कर्णसिह जी तथा श्री नेत्रपाल जी के मधुर और शिक्षा प्रद भजनोपदेश हुए। समाज थापर नगर मेरठ की श्री प्रधान डा. राज आनन्द मन्त्रिणी दयावती गान्धी डा. लाल महता जी के सुन्दर भजन और शिक्षाप्रद उपदेश भी हुए। स्वामी केवलानन्द जी ने गौ रक्षा पर विचार रखे। पण्डाल मे उपस्थिति बहुत थी। अन्त मे श्री मन्त्री जी ने दानदाताओं और अतिथियो को धन्यवाद किया।

इन्द्रराज मन्त्री
गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी)
भोलाझाल मेरठ

जनपदीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

आर्ष गुरुकुल ऐरवा कटरा इटावा मे आगामी २१ जून से आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर प्रारम्भ हो रहा है जो २७ जून तक चलेगा। इस कार्यक्रम मे योगप्रशिक्षको द्वारा बालको को प्रशिक्षित किया जायेगा। जूडो कराटे का प्रशिक्षण इस शिविर का प्रमुख आकर्षण होगा। इच्छुक अभ्यर्थी २० की साय तक गुरुकुल पहुच ले।

व्यवस्थापक
आर्ष गुरुकुल ऐरवाकटरा
इटावा

गौ–गंगा–गायत्री माता

रामकुमार गुप्ता मुरादाबाद

भारत वसुधा पर गौ वध हो सकता अधिकार नही
ऐसा कोई भी निर्णय हमे कभी स्वीकार नही
गौ गगा गायत्री से देश धर्म का नाता है
गायत्री वेदों की जननि गाय देश की माता है
वेदो मे गौ पूज्या है गोरस जीवन दाता है
इसकी पूर्ण सुरक्षा ही रक्षा भारत माता है
गो धन भारत जननि पर होने देंग वार नही
भारत वसुधा पर गोवध हो सकता अधिकार नही
जन जन का पोषण करती जननि सम दूध पिलाती है
स्वय तिनके चग चुग कर अमृत पान कराती है
गो वश हलधर से ही धरा अन्न उपजाती है
गो रक्षा है परम धर्म भारत की यह थाती है
जघन्य कर्म गो वध से बढकर पापाचार नही
भारत वसुधा पर गोवध हो सकता अधिकार नही

नव-निर्वाचित विधायक ने यज्ञ करवाया

हरियाणा वेद प्रचार मण्डल के अधिष्ठाता व सार्वदेशिक आर्य वीर दल हासी के प्रधान श्री प रामसुफल शास्त्री जी की प्रेरणा से हासी क्षेत्र के नवनिर्वाचित हविपा विधायक श्री अत्तरसिह सैनी ने अपने घर विजय श्री प्राप्त करने के बाद यज्ञ (हवन) एव सत्सग का कार्यक्रम करवाया जिसमे आचार्य प भरतलाल जी शास्त्री एम ए व श्री प रामसुफल जी शास्त्री ने हवन यज्ञ के पश्चात नव निर्वाचित विधायक को शुभ आशीर्वाद दिया तथा अपने उदबोधन मे विधायक महोदय को अच्छे धार्मिक अनुभवी लोगो का सम्पर्क व उनके सुझाव से कार्य करने का निर्देश दिया

हविपा विधायक श्री अत्तर सिह जी सैनी ने हल्के मे पूर्ण शराबबन्दी व आर्य समाज एव वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार पर पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया

यजुर्वेद पारायण यज्ञ

आर्यसमाज चौन्दकोट मझगमव के प्रधान वीरभद्र शास्त्री के सहयोग से यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न किया गया। पौराणिक क्षेत्र मे इसका अत्यधिक प्रभाव रहा तथा यज्ञ की पूर्ण आहुति से पहले वर्षा होने से वातावरण पवित्र हो गया और जनता मे यज्ञ की भावना जागृत हुई कुछ युवक समाज के सदस्य भी बने। वहा प्रचार की आवश्यकता है युवको ने उपनयन सस्कार स्वेच्छा से करवाया

आर्ष गुरुकुल मिथिला क्षेत्र छपराढी का वार्षिकोत्सव

आर्ष गुरुकुल मिथिला क्षेत्र छपरढी पो कुआढ भाया जयनगर जिला मधुबनी बिहार का प्रथम वार्षिकोत्सव दिनाक २६/५/९६ से २ जून ९६ तक हुआ। आर्य समाज मुजफ्फरपर के प्रधान श्री पन्नालाल जी आर्य ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया १ जून को इक्कीस बच्चो का सामूहिक यज्ञोपवीत सस्कार किया गया दिनाक २/६/९६ को शिक्षा सम्मेलन किया गया जिसमे मुख्य अतिथि के रूप मे बिहार के पूर्व शिक्षा मत्री श्री दिगम्बर ठाकुर दोभिज्ञ स्व प शिव शकर शर्मा काव्यतीर्थ ने उपस्थित होकर गुरुकुल के उज्ज्वल भविष्य की कामना की

महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार १९९६

वैदिक धर्म वैदिक साहित्य एव आर्य समाज के प्रति समर्पित भाव से की गई श्लाघनीय सेवाओ के फलस्वरूप महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार निधि न्यास आर्य समाज फलेरा जिला जयपुर राजस्थान की ओर से १० ००० (दस हजार रूपया) नकद उत्तरीय प्रशस्ति पत्र अभिनन्दन पत्र तथा राजस्थान सस्कृति का प्रतीक चुनडी व साफा एव श्री फल महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार स्वरूप प्रति वर्ष ऋषि निर्वाण दिवस पर प्रदान किया जाता है सन १९९६ के महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार के लिए कोई भी आर्य विद्वान स्वय अपना या अन्य आर्य विद्वान का नाम पूर्ण विवरण तथा कृतियो सहित दिनाक ३१० ९६ तक प्रस्तुत कर सकता है

अध्यक्ष
महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कारनिधि न्यास
आर्य समाज फलेरा
जिला जयपुर(राजस्थान)
पिन ३०३ ३३

वैदिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें

आर्य समाज अपने उत्सवो पर ओजस्वी वक्ता तथा वैदिक विद्वान श्री आचार्य विष्णु आर्य को आमन्त्रित कर वैदिक सिद्धान्तो और वेद मन्त्रो से युक्त महत्वपूर्ण भाषणो से स्वय लाभान्वित हो ओर श्रोताओ को महर्षि दयानन्द तथा वेद का सन्देश सुनने का सुअवसर प्रदान करे आचार्य जी ओजस्वी स्पष्ट तथा धारावाहिक वक्ता है निम्न पते पर सम्पर्क करे।

पता
श्री आचार्य विष्णु आर्य सम्पादक सत्यसुधा मासिक नजीबाबाद २४६७६३ उत्तर प्रदेश

वेद मुनि परिव्राजक
अध्यक्ष वैदिक सस्थान नजीबाबाद

हर घर मे वेद चाहिये

यदि बुद्धि विकास का विलास विकास चाहते हो तो वेद का सवाध्याय करो वह हिन्दू (आर्य) का घर नही ? जहा वैदिक साहित्य नहीं ?

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

वैदिक साहित्य

मगाकर गृह शोभा ही नही सद्मति भी प्राप्त कर

डा सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री सभा

कम लीजिए अधिक दीजिए। कम बोलिए अधिक विचार कीजिए। कम खाइए अधिक पचाइए। कम उपदेश दीजिए अधिक अभ्यास कीजिए। कम चिन्ता कीजिए अधिक प्रसन्नचित्त रहिए। कम सोइए अधिक ध्यान कीजिए। सुखी बनिए ईश्वर मे अपनी श्रद्धा को बढाइए। उपासना ध्यान मे स्थिर बनिये।

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज हिरण मगरी उदयपुर

प्रधान	श्री कृष्ण किशोर कालिया
मत्री	श्री लक्ष्मी स्वरूप जारी
कोषाध्यक्ष	श्री जगदीश विग

आर्य सगीत विद्यालय मठपारा दुर्ग

प्रधान	श्री गुलाब चन्द्र जी बसल
मत्री	श्रीमती निर्मला बसल
कोषाध्यक्ष	श्रीमती अजना शास्त्री

आर्य समाज मठपारा दुर्ग

प्रधान	श्री गुलाब चन्द्र जी बसल
मत्री	श्री दुन्नी लाला आर्य
कोषाध्यक्ष	श्रीमती अजना शास्त्री

आर्य समाज कोटला मुबारकपुर दिल्ली

प्रधान	श्री मुरारी लाल वधवा
मत्री	श्री बाल किशन दास आर्य
कोषाध्यक्ष	श्री शिव चरण दास

आर्य समाज पटेल मार्ग सहारनपुर

प्रधान	श्री डा राम सहाय नारग
मत्री	श्री राधेश्याम शर्मा
कोषाध्यक्ष	श्री राम किशोर

आर्यो का योरप का भ्रमण करने का

केवल ३५ सीटे है।

दिनाक 24 7 96 से 10 8 96 तक 18 दिन का प्रोग्राम
इसमे आप 9 देशो का भ्रमण करेगे।

1	स्पैन	वर्सिलौना	6	आस्ट्रेलिया	इगलस
2	इगलेड	लन्दन	7	जर्मनी	राइनलेण्ड
3	फ्रान्स	परिस	8	हालैड	एमस्टरडेम
4	स्विटजरलैण्ड	जेनेवा	9	ब्रसलर	गेन्ट
5	इटली	नीस फलोरैन्स रोम वेनिस			

इस सबका खर्च 105000/-रु॰ है।

1 **इसमे Air टिकट होटल Breakfast Dinner भ्रमण एयरपोर्ट टैक्स सब शामिल है। तथा वीजा भी शामिल है।**
2 **१२ वर्ष तक के बच्चो का 70000/ रु होगा।**
3 **सीट सुरक्षित रखने के लिए 10000/ रु जमा कराने होगे तथा पासपोर्ट साथ देना आवश्यक है।**
4 **बाकी पैसे 1 7 96 तक देने होगे।**

पत्र व्यवहार सयोजक के नाम
शाम दास सचदेव
आर्य समाज पहाडगज नई दिल्ली ५५
फोन ७५२६१२ घर ३५४५७७५

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 23 6 96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/96
R N No 626/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 20/21 6 1996

प्रेरक-प्रसग

[illegible]

श्रीमती विमला भण्डारी

मूर्योदय हुआ उसने आगे बढना शुरू किया। ठण्ड के कारण उसका बदन काप रहा था उसने रूक कर सूर्य की ओर देखा

सूर्य मुस्कराया बोला मै तुम्हे गर्मी दूगा तुम्हारी ठण्ड दूर करूगा आगे बढते जाओ मनुष्य।

सूर्य का आभार मान वह आगे बढा। थोडी देर बाद उसे भूख लगी उसने नजर उठाई।

फल लगे पेड की डाली झुक गई। पेड ने कहा मेरे रस भरे मीठे फल चखो और अपनी तृषा शात करो मनुष्य। वह फल खाकर तृप्त हुआ आगे बढा।

कल कल करता नदी का नीर उस कह रहा था आओ मनुष्य मेरे जल से अपनी प्यास बुझाओ प्रसन्न हो वह रूका पानी पिया। मखमली दूब ने उसे अपने ऊपर सोने के लिये आमन्त्रित किया वह थोडी देर तक उस सुहानी शैय्या पर अलसाया। रात होने लगी उसने आसमान की ओर देखा

चाद मुस्कुराया बढते चलो पथिक मैं तुम्हारी आगे की राह रोशन करूगा। छिटकी चादनी के उजाले मे पहाडो के बीच उसे एक गुफा नजर आयी।

आओ मनुष्य मेरे घर मे तुम्हारा स्वागत है।

पहाड ने कहा। प्रात फिर चल पडा वह अपने गन्तव्य को चलते चलते उसे चार व्यक्ति बैठे नजर आए वह प्रसन्न हुआ। मित्र भाव से उनके पास गया। पहले व्यक्ति ने पूछा तुम कौन हो

मनुष्य

तुम क्या करते हो

मानव सेवा जवाब था

तीसरे ने पूछा तुम्हारा धर्म क्या है भाई ?

मानव धर्म उत्तर था

चौथे ने कहा यदि तुम हिन्दू हो तो मेरे पास आ जाओ।

मुसलमान हो तो मेरे पास

सिख हो तो मेरे पास

ईसाई हो तो मेरे पास

अब तक मिलकर बैठे चारो व्यक्ति धर्म के नाम पर लडने लगे एक मनुष्य को बाटने के लिये मित्र से बैरी हो गए

सूरज चाद पेड पहाड नदी सभी मनुष्य को नि स्वार्थ बाटते ही बाटते रहे।

किन्तु मनुष्य कितना स्वार्थी है मनुष्य को ही बाटने लगा।

स्वामी श्रतमानन्द गरूकुल विज्ञान आश्रम पाली मारवाड (राज) मे नवीन सत्र मे विद्यार्थियो का प्रवेश एक जुलाइ से १० जुलाई तक परीक्षा आधार पर होगा।

इस गुरूकुल म व्याकरण वेद दशन आदि विषयो के साथ आधुनिक विषयो के अध्यापन की समुचित व्यवस्था है। गुरूकुल मे सुयोग्य स्वस्थ पचम कक्षा उत्तीण छात्र ही प्रविष्ट किये जायेगे। स्थान सीमित है इच्छुक जन शीघ्रता करे।

आचार्य
स्वामी ऋतमानन्द गुरूकुल
विज्ञान आश्रम नया गाव
पाली मारवाड (राज)

सार्वदेशिक सभा का नया प्रकाशन

"मनुस्मृति"

पृ स ५८५—मूल्य ८० रु.

भाष्य कवि स्व. पं. तुलसी रामस्वा कृत महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने म की स्मृति को प्रमाण कोटि मे माना है।

आर्य विद्वान—आर्य समाजक के क्षेत्र मे प तुलसी राम जी स्वामी अनुपम लेखक व भीष्मकार है।

ऐसे विद्वान की कृति सभा द्वारा प्रकाशित की जा रही है

ग्राहक—एक मास तक अग्रिम धन देकर ६०/रु मे प्राप्त करेंगे।

डा सच्चिदानन्द शास्त्री सभा मत्री

सत्यार्थ प्रकाश

सोई हुई जाति के स्वाभिमान को जागृत करने वाला अद्वितीय ग्रथ है सत्यार्थ प्रकाश अवश्य पढे।

अंजीर : फल भी दवा भी

वास्तव मे अजीर का फल सब्जी तथा मेवा तीनो माना जाता है इसके कच्चे फल की सब्जी बनायी जाती है दाल के साथ मिलाकर खाया जाता है। इसके पत्ते और खली जानवरो के लिए पौष्टिक आहार है। अजीर के बीजो से तेल निकाला जाता है

अजीर फल के साथ दवा भी है। यह केवल स्वाद के लिए ही नहीं बल्कि एक पौष्टिक टानिक के रूप मे भी जाना जाता है। आयुर्वेद मे अजीर को शीतल मधुर तुष्टि देने वाला स्वादिष्ट सरलता से पचने वाला क्षय पित्त वात तथा कफ का खात्मा करने वाला फल माना जाता है।

मझौल कद और गबदनुमा अजीर के पेड पर लगने वाले फलो मे ७५ प्रतिशत कार्बोहाइड्रेड ४ प्रतिशत प्रोटीन १ ८ प्रतिशत रेशा १८ प्रतिशत पानी और ० ३ प्रतिशत वसा और कई अन्य पदार्थ तथा विटामिन पाये जाते हैं। ये सब पदार्थ अजीर मे एक खास तरह का स्वाद पैदा करते हैं जिसके लिए वह लोकप्रिय है

अजीर के पत्ते जड दूध आदि दवा के काम मे आते हैं। पेचिश और अतिसार मे ताजे अजीर को पानी मे उबाल कर काढा बनाकर शहद के साथ मिलाकर पीने से काफी लाभ होता है। ताजे दूध के साथ इसका आटा मिलाकर बच्चो को पिलाने से उनकी कमजोरी दूर होती है और सेहत बनती है। अजीर के पत्तो का रस थोडा उबालकर पीने से उल्टी और दस्त मे काफी लाभ होता है। दाद तथा अन्य चर्म रोगो मे अजीर की जड पीसकर लगाने से काफी लाभ होता है। सूखी और पुरानी खासी मे अजीर काफी फायदेमद है।

यह बलगम को काफी पतला करके निकाल देता है। स्त्रियो के प्रदर रोग मे अजीर का रस शहद के साथ सेवन करने पर काफी फायदेमन्द रहता है। इसका दूध मुह के छालो पर लगाने से वह ठीक हो जाते हैं। अजीर को पानी मे भिगोकर पीने से पेट की गर्मी और वायु दूर होती जाती है

अजीर के पेड की लकडी से मूर्तिया बनायी जाती हैं। इसके तने के दूध को रग से मिलाते हैं। इससे कैनवास पर अच्छी तरह से रग चढता है।

सीमा

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर विशेष छूट

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने निम्नलिखित समस्त पुस्तके एक साथ लेने पर 40% की विशेष छूट देने की घोषणा की है। यह छूट श्रावणी पर्व तक लागू रहेगी। यथाशीघ्र आदेश भेजकर इस सुनहरे अवसर का लाभ उठाये। आदेश भेजते समय 25% धन अग्रिम भेजे।

1	Maharana Partap	30 00
2	Science in the verds	25 00
3	Dowan of Indian Histon	15 00
4	गोहत्या राष्ट्र हत्या	6 00
5	Storm in Punjab	80 00
6	Bank m Tilak Dayanand	4 00
7	सत्यार्थ प्रकाश सस्कृत	50 00
8	वेदार्थ	60 00
9	दयानन्द दिव्य दर्शन	51 00
10	आयभि विनिमय	20 00
11	भारत भाग्य विधाता	12 00
12	Nine Upnishad	20 00
13	आर्य समाज का इतिहास	
	भाग 1 2	125 00
14	बृहद विमान शास्त्र	40 00
15	मुगल साम्राज्य का क्षय	
	भाग 1 2	35 00
16	महाराणा प्रताप	16 00
17	सामवेद मुनिभाष्य (ब्रह्ममुनि)	13 00
18	वैदिक भजन	20 00
19	वैदिक ज्योति	20 00
20	What is Arya Samaj	30 00
21	आर्य समाज उपलब्धिया	5 00
22	कौन कहता है	
	द्रोपदी के पाच पति थे	8 00
23	बन्दावीर वैरागी	8 00
24	निरुक्त का मूल वेद मे	2 50
25	सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाए	10 00
26	वैदिक कोष सग्रह	15 00
27	सत्यार्थ प्रकाश के दो समुल्लास	1 50
28	वेद निबन्ध स्मारिका	30 00

प्राप्ति स्थान **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**

महर्षि दयानन्द भवन 3/5 रामलीला मैदान दिल्ली 110002 दूरभाष 3274771 3260985

सावदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुदित तथा डा. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली—2 से प्रकाशित

ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् — विश्व को श्रेष्ठ (आर्य) बनाएँ

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सामवेद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र अथर्ववेद

दूरभाष ३२७४७७१ ३२६०९८५ | आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये | वार्षिक शुल्क ५० रुपए एक प्रति १ रुपया

वर्ष ३५ अक २० | दयानन्दाब्द १७२ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ | आषाढ शु —१४ सम्वत्—२०५३ | ३० जून १९९६

दलित ईसाईयों को आरक्षण असंवैधानिक

धर्मान्तरण गतिविधियां बढ़ने का खतरा

सार्वदेशिक सभा द्वारा आन्दोलन की घोषणा

नई दिल्ली २२ जून। सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा द्वारा आज दलित इसाईयो को आरक्षण विषय पर विचार विमर्श हेतु आर्य समाज के प्रमुख व्यक्तियो की एक वैठक आर्य समाज हनुमान रोड मे सम्पन्न हुयी। इस वैठक की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान प वन्देमातरम रामचन्द्र राव जी ने की

सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री सूर्य देव ने विषय प्रवेश करते हुये कहा कि दलित हिन्दुओ को ईसाई मिशनरी यह कह कर ईसाई धर्म मे प्रविष्ट होने का आग्रह करते हैं कि इससे उनकी आर्थिक स्थिति सुधर जायेमी तथा वे जात पात के कलक से बच जायेगे। आर्थिक स्थिति सुधारने के लिये उन्हे योरोप के कई देशो से धर्म प्रचार के नाम पर आने वाले करोडो रूपयो की बाते सुनायी जाती है। इसी प्रलोभन के कारण अव तक लाखो दलित हिन्दू ईसाई धर्म मे प्रचिष्ट हो चुके हैं अब उन ईसाई दलितो के लिये आरक्षण की माग सरकार के समक्ष रख कर इसाइयो ने स्वत ही यह स्पष्ट कर दिया है कि ईसाई बने दलितो पर अब भी दलित होने का लेवल चिपका हुआ है। साथ ही यह भी स्पष्ट हो गया कि उनकी आर्थिक स्थिति भी नहीं सुधरी है।

ऐसी स्थिति मे समस्त ईसाई सम्प्रदाय धोखेबाज कहलाने के योग्य है। इन परिस्थियो के दृष्टिगत श्री सूर्यदव ने भविष्य मे ऐसे किसी भी कानून का विरोध करने का आह्वान किया। उन्होने कहा कि सार्वदेशिक सभा हर तरफ से तथा हर प्रकार से इस विषय पर मोर्चा लेने के लिये सकल्पवद्ध है।

सभा मत्री डा॰ सच्चिदानन्द शास्त्री ने इस समस्या पर एक प्रस्ताव रखा जिसका समर्थन अन्य वक्ताओ ने किया।

बैठक मे मध्य भारत के स्वामी सत्यानन्द जी तमिलनाडु के स्वामी नारायण सरस्वती जी तथा राजस्थान से श्री सत्यव्रत सामवेदी श्री राजसिह भल्ला श्री वेदव्रत शर्मा राममूर्ति केला श्री जगदीश आर्य श्रीमती शशि तथा कई अन्य आर्य नेताओ ने अपने विचार रखे।

अध्यक्षीय भाषण मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम जी ने कहा कि इस समस्या के विरुद्ध हमे एक जन आन्दोलन तो अवश्य खडा करना पडेगा अन्यथा भारत की स्वार्थी राजनीति ईसाई दलितो क लिये आरक्षण व्यवस्था लागू करके यहा पर सदा सदा के लिये विदेशी ईसाईयो के पैर मजबूत कर देगे। क्योकि इस आरक्षण व्यवस्था के सीधे प्रभाव स्वरूप धर्मान्तरण की गति विधियो मे तेजी आयेगी।

श्री वन्देमातरम जी ने स्पष्ट घोषणा करते हुये कहा कि इस आन्दोलन की सफलता केवल स्वामी दयानन्द के अनुयायी ही सुनिश्चित कर सकते हैं।

सभा प्रधान श्री वन्देमातरम जी ने कहा कि इस आन्दोलन की सफलता के लिये यह आवश्यक है कि विभिन्न प्रकार की समितिया गठित की जाये जिसके लिये उन्होने श्री सूर्य देव का अधिकत किया।

बैठक मे सर्व सम्मति से पारित प्रस्ताव।

दलित ईसाइयों के आरक्षण का विरोध

आरक्षण व्यवस्था

भारताय सविधान म अनुसूचित जाति तथा जन जातियों के लिए आरक्षण का प्रावधान रखा गया है

हिन्दूओ में मनुस्मृति पर आधारित वर्ण व्यवस्था मूलत कर्म एव योग्यता के आधार पर चल रही थी। स्वार्थी ब्राह्मणवाद न जान बूझ कर अपना सर्वोच्चता बनाने तथा उसे जारी रखने के लिए इस व्यवस्था को विकृत करके उसे जन्म पर आधारित जातिवादी रूप दे दिया गया इस विकृत जातिवाद के परिणाम स्वरूप हरिजन शूद्र अथवा दलित कहे जाने वाले वर्गों पर अत्याचार हुए और उन्हें अछूत कह कर उनके साथ अमानवीय भेद भाव किया गया सविधान निमाताओं ने इन सारी परिस्थितियों पर विचार करते हुए भारतीय सविधान में आरक्षण व्यवस्था का प्रावधान रखते हुए यह स्पष्ट घोषणा का कि यह प्रावधान दस वष क लिए होगा परन्तु स्वार्थी राजनाति ने अपने वोट बैंक बनाये रखने के लिए इसे पचास साल तक भी समाप्त करने का कोई प्रयत्न नहीं किया बल्कि शूद्र वर्ग को विशेष दर्जा देकर उनकी एक विशेष पहचान बनाने का काम किया।

वी पी सिह का सरकार न और अधिक स्वार्थ पूर्ति के उद्देश्य मे इस आरक्षण व्यवस्था का दायरा बढाने का प्रयत्न किया। मजबूर होकर उच्चतम न्यायालय को यह आदेश देना पडा कि सब प्रकार के आरक्षण मिला कर कुल पचास प्रतिशत से ऊपर नहीं हो सकते।

केन्द्र में सयुक्त मोर्चे का सरकार ने सत्ता सभालते ही यह प्रयास प्रारम्भ कर दिया कि यह आरक्षण उन ईसाईयों को भी दिया जाए जो पहले हिन्दू थे और अनुसूचित जाति या जन जाति वाले आरक्षण का लाभ ले रहे थे।

सविधान की व्यवस्था के अनुसार जो व्यक्ति हिन्दू धर्म त्याग कर ईसाई या मुसलमान बन जाता है तो उसे अल्प सख्यकों को मिलने वाली विशेष सुविधाए प्राप्त हो जाती है। कोई भी व्यक्ति ईसाई होने के बाद अल्प सख्यकों वाली सुविधाए भी लेता रहे और साथ ही अपने पूर्व धम अनुसूचित हिन्दू वाली सुविधाए भी प्राप्त करता रहे इससे बडी हास्यास्पद स्थिति और कोई नहीं हो सकती।

केन्द्र की नई सरकार अपने वोट बैंक को बढाने की खातिर सविधान की मूल भावनाओं से इस प्रकार का खिलवाड करने को भी तैयार है।

संविधान में धर्मान्तरण को मान्यता नहीं

भारतीय सवधिान धर्मान्तरण को मान्यता नहीं देता क्योंकि इससे सामाजिक व्यवस्था बिगडती है। शायद इसी कारण से धर्म परिवर्तित करने वालों को नये धर्म के अधिकार दिये गये तो साथ ही पूर्व धर्म के अधिकारों से वचित रखा गया जिससे धर्मान्तरण को प्रोत्साहन न मिले।

दलित ईसाईयों को आरक्षण देकर धर्मान्तरण की गतिविधिया तेज होंगी यह पूर्णत स्पष्ट है क्योंकि हर व्यक्ति दोनों धर्मो को मिलने वाली सुवधिाए अवश्य लेना चाहेगा। हिन्दू बनकर तो उसे केवल हिन्दुओं वाली सुविधाए ही मिलेंगी परन्तु ईसाई या मुसलमान बनने पर वह हिन्दुओं तथा अल्पसख्यकों (दोंनों) को मिलने वाली सुविधाए ले सकता है।

यदि यह आरक्षण व्यवस्था दलित ईसाईयों को दी गयी तो निकट भविष्य में दलित हिन्दुओं से मुसलमान बने लोग भी यह सुविधाए मागनें लगेंगे।

अत आज ही इस आरक्षण व्यवस्था का हर सभव विरोध प्रत्येक स्तर पर होना चाहिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा जहा एक तरफ इसे जन आन्दोलन का रूप देने के लिए कटिबद्ध है वहीं दूसरी तरफ सविधान के प्रावधानों को लेकर कानूनी लडाई लडने की भी तैयारी की जा रही है। इस राष्ट्र विरोधी षडयन्त्र को विफल करना आर्य समाज का एक मात्र लक्ष्य है।

परमपिता परमात्मा हमें शक्ति और बल प्रदान करें।

सम्पादक-डा. सच्चिदानन्द शास्त्री

जिससे किसी पदार्थ के विषय मे उत्पन्न भ्रम का छेदन हाकर हमे सत्य स्वरूप के दशन ह उस विद्या कहते है। बच्चा जब माता के गर्भ के अन्धकार से नई दुनिया के प्रकाश म आता हे तो उसे बडा ही विचित्र लगता है। जैसे वह बडा होता जाता हे वैसे वैसे उसकी जिज्ञासा भी बढती जाती है और वह शीध्र ही प्रत्येक वस्तु के रहस्य को जानना चाहता है। वास्तविकता को जानकर वह स्वय को नये ससार म पाता है। फिर किसी पदाथ के विषय मे उसकी विचार धारा बिल्कुल बदल जाती है। जैसे बाल्यावस्था मे माता द्वारा दिखाए गए चाद को बालक मामा कहकर बुलाता है और जब ज्ञान हुआ तो वह चन्दा मामा वायु और पानी से रहित ऊचे नीचे गडढो वाला नक्षत्र ही रह जाता है।

प्राचीन काल मे आठ वर्ष की अवस्था तक भौतिक पदार्थो की सामाय जानकारी के पश्चात बालक ब्रह्मचारी (विद्यार्थी) बनकर गुरू के आश्रम मे जाता था। प्रचीन प्रथा के अनुसार ब्रह्मचारी गुरू के लिए समिधाए लेकर प्रणाम करके कहता था हे गुरूदेव जिस प्रकार ये समिधाए यज्ञ मे डालने पर प्रज्वलित होती है उसी प्रकार आप मुझे भी ब्रह्मचर्य रूपी यज्ञ मे डालकर अपने ज्ञान से प्रदीप्त कर दो। आप मेरी आत्मा के अन्दर छिपी हुइ अज्ञान की राख से ढकी हुइ ज्ञान की चिगारी मे अपने ज्ञान की फूक मारकर अज्ञान की राख उडा दो और अपने उपदेशो का ईधन डालकर उसे और भी अधिक प्रज्वलित कर दो। जिससे वह चिगारी ज्योति का रूप धारण कर ले और मै उसके तज से दीप्तिमान हो जाऊ फिर अज्ञान तिमिर मे भटकते हुए ससार को अपने ज्ञान की ज्योति का प्रकाश दिखाकर सन्मार्ग पर चलाऊँ और अपने लक्ष्य की ओर बढता हुआ ज्योति स्वरूप परमात्मा को प्राप्त करू।

भक्त भगवान से प्रार्थना करता है

ओ३म असतो मा सद् गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्माऽमृतम गमय।।

अर्थात हे प्रभो। मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो। अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो। यहा अविद्या ही असत है और विद्या ही सत है अविद्या ही अन्धेरा है और विद्या ही प्रकाश है अविद्या ही मृत्यु है और विद्या अमरत्व है। इस प्रकार साधक परमात्मा से केवल एक ही प्रार्थना करता है कि हे प्रभो ! मुझे असत अथात अविद्या अन्धकार और मृत्यु से सत अर्थात विद्या प्रकाश और अमरत्व की ओर ले चलो।

जब तक अविद्या अर्थात अज्ञान है तभी तक अन्धकार है और तभी तक मृत्यु है। विद्या आने पर अविद्या (अज्ञान) का अन्धेरा और मृत्यु का भय दूर होकर अमरत्व प्राप्त होता है। यह प्राकतिक नियम है कि जहा प्रकाश आ जायेगा वहा से अन्धकार स्वय ही भाग जाएगा। छोटा सा दीपक भी भयकर बन मे अन्धेरे से टक्कर लेता हुआ तुम्हे मार्ग दिखा सकता है। शर्त यह है कि दीपक तुम्हे साथ रखना होगा। दीपक छोटा सा है और अन्धकार बहुत विशाल है फिर दीपक उससे लडता है और तब तक लडता रहता है जब तक उसम तल होता है इसी प्रकार ज्ञान की एक चिगारी भी अज्ञान तमोराशि को भस्मी भूत कर देती है।

ऋग्वेद के चालीसवे अध्याय मे कहा है– विद्ययाऽतमऽश्नुते अथात विद्या से अमृत की प्राप्ति होती है। ससार की प्रत्येक वस्तु अर्थात सत्य असत अर्थात चमक दमक के परदे से ढकी हुइ है। जिससे हम सत्य के दर्शन नही कर पाते हम उसे केवल चर्म चक्षुओ से देखकर ही सत्य मान लेते है उसी असत के परदे को हटाने के लिए ही तो भक्त प्रभु से प्रार्थना करता है हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितम मुखम तत्तवम पूषणपावृणु सत्य धमाय दृष्टे ।

हे पोषणकर्त्ता ! इस सुनहरे पात्र को सत्य से हटा दो जिससे मै सत्य स्वरूप के दर्शन कर सकू यह सुनहरा पात्र ही अविद्या है असत है इसके हटने पर ही सत्य के बास्तविकता ज्ञान के प्रकाश के दर्शन हो सकेगे और अमरत्व प्राप्त होगा इस विषय मे एक दृष्टान्त देखे

एक पण्डित जो प्रतिदिन मन्दिर मे जाकर पूजा करते थे एक दिन वे बहुत जल्दी उठे और मन्दिर मे पहुच गये। मन्दिर मे अन्धकार था। पण्डित जी डर गए सप देवता के सामने अनेक प्रकार की प्राथना याचनाए की परन्तु सब व्यर्थ सिद्ध हुई। इस प्रकार पण्डित जी का लगभग एक घटा व्यर्थ गया। अन्त मे विवश होकर पण्डित जी चल पडे। दैवयोग से मनिदर मे बाहर अग्नि जल रही थी। पण्डित जी ने घास फूस इकटठा किया और उसे जलाकर अन्दर ले गए। तो देखा कि अरे ! जिसे वह अब तक साप समझ रहा था वह तो मात्र सरकडा है। अब पण्डित जी अपनी मूर्खता पर हसने लगे।

जब तक अज्ञान का अन्धकार रहा तब तक पण्डित जी को सरकडा साप लगा और उससे डरते रहे। परन्तु ज्ञान का प्रकाश होने से सत्य के दर्शन करके अव उन्हे कोई भय नहीं रहा जैसे अमरत्व मिल गया हो।

आज तो देश मे शिक्षा के प्रचार के लिए जगह जगह विद्यालय महाविद्यालय आदि हैं। परन्तु क्या इनसे विद्या मिली हमारे ऋषि कहते है सा विद्या या विमुक्तये अर्थात विद्या वह है जो हमे छुडाती है मुक्त कराती है बन्धन से भय से अज्ञान से। परन्तु क्या हम आधुनिक शिक्षा पढकर मुक्त हो गए ! यह तो मात्र अक्षर ज्ञान हे और वह भी मात्र धन कमाने क लिए ही पढी जाती है। इससे हमारी भौतिक आवश्यकताओ की पूर्ति होती है। परन्तु वेदो मे तो इसे अविद्या अर्थात भौतिक ज्ञान ही कहा है। इसको बिल्कल छोडने के लिए भी नही कहा। इसे भी साथ–साथ लेना आवश्यक है। परन्तु इसे साध्य नहीं मानना। साध्य तो विद्या अथात आध्यात्मिक ज्ञान हैं। यह अविद्या (भौतिक ज्ञान) तो साध्य को प्राप्त करने का साधन है। ऐसा विचार करके विद्या प्राप्ति का प्रयत्न करना चाहिए।

ज्ञान का सागर इतना विशाल है कि हम इसकी थाह नही पा सकते । किसी वैज्ञानिक का कथन है–"मै देख रहा हू कि मेरे सामने ज्ञान का विशाल सागर ठहाके मार रहा है मै इसके अन्दर छिपे मोतियो को प्राप्त करने के लिए बैठा हू। मैने तो इसमे अभी तक प्रवेश भी नही किया है। और मै इसके तट पर बिखरे ककडो से ही जीवन भर खेलता रहा हू।

तुम स्वेदश के लिए

तुम स्वदेश के लिए
क्रान्ति का प्रवाह बन
देश के कल्याण हेतु
शक्ति सार्थवाह बन।
भोगवाद बढ रहा
प्राण मे लिपट रहा
मानवीय मूल्य सब
धूल मे चिपट रहा
नव प्रकाश के लिए
जागरण प्रवाह बन।
फिर विदेश का धुआ
प्राण का डुबो रहा
जिन्दगी के पोर पोर
जहरबाद बन रहा
सचेतना सदेश हेतु
सुधाभरण की चाह बन।
फिर विदेश के गुलाम हो रहे
राष्ट्र तत्त्व के ललाम खो रहे
भोगवृत्तियो तले
देश प्रेम धो रहे
धर्म सस्कृति हेतु
सदाचरण सुराह बन।

अखिलेश आर्येन्दु इलाहाबाद

धार्मिक प्रश्नोत्तरी

प्र धर्म के क्या लक्षण है।

उ धर्म के दस लक्षण है।

धृति क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रियनिग्रह।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशक धर्म लक्षणम।।
(मनुस्मृति)

अर्थात धैर्य क्षमा मन को वश मे करना चोरी न करना शुद्धता इन्द्रियो का दमन आत्मज्ञान विद्या सत्य और क्रोध न करना धर्म के य दस लक्षण है।

प्र धर्म का क्या फल होता है ?

उ धर्म करने स स्वर्ग व मोक्ष मिलता है।

प्र स्वर्ग किसे कहते है ?

उ. जो विशेष सुख व सुख की सामग्री का जीव को प्राप्त होना है वह स्वर्ग कहलाता है ?।

प्र नरक किसे कहते है ?

उ. जो विशेष दुख व दुख की सामग्री का जीव को प्राप्त होना है वह नरक कहलाता है।

प्र क्या स्वर्ग और नरक आकाश मे बने हुए हैं ?

उ नही यह कोई विशेष स्थान म बन हुए नही है वरन इसी ससार मे जीवात्मा को विशेष सुख दु ख के रूप मे प्राप्त होते है।

प्र मोक्ष किसे कहते है ?

उ. जन्म मृत्यु के बन्धन से छूटकर परमेश्वर के सानिध्य मे रहकर आनन्द प्राप्त करने को मोक्ष कहते है।

प्र. मुक्ति के साधन क्या है ?

उ. इश्वर की स्तुति प्रार्थना व उपासना करना धर्म का आचरण व पुण्य करना सत्सग इश्वर विश्वास ऋषिकृत ग्रथो का स्वाध्याय करना परोपकार आदि सब उत्तम कर्मो का करना तथा सब दुष्ट कर्मो से अलग रहना मुक्ति के साधन है।

प्र. तीर्थ किसे कहते है ?

उ. जिससे जीव दु ख सागर से तर जाए वही तीर्थ है जन येन तरति तत तीर्थम। जितने विद्या अभ्यास सुविचार ईश्वरोपासना धर्मानुष्ठान सत्य का सग ब्रह्मचर्य जितेन्द्रियता आदि उत्तम कर्म है वे सब तीर्थ कहलाते है।

प्र. लोग तो काशी प्रयाग हरिद्वार आदि स्थानो को तीर्थ कहते है।

उ. स्थान तीर्थ नही है। वहा जाने मात्र से कोई तर नही सकता। मनुष्य तो हृदय मे परमात्मा की भक्ति और उत्तम गुण धारण करने से ही तर सकते है। देखो किसी भक्त कवि ने क्या सुन्दर कहा है

तरेगा तो वही जाके हृदय मे ही हर है।
गगा के नहाने से जो पापी नर तर जाये।
मीन क्यो न तरे जा को जल मे ही घर है।
मुड के मुडाने से जो पापी नर तर जाये।
भेढ क्यो न तरे जाके मुड सब धड है।
जटा के बढाने से जो पापी नर तर जाये।
मोर क्यो न तरे जाके लम्बे–लम्बे पर है।
शख के बजाने से जो पापी नर तर जाये।
गधा क्यो न तरे जाको शख जैसो स्वर है।
तिलक के लगाने से जो पापी नर तर जाये।
हाथी क्या न तरे जा को लगता सेदूर सर है।

प्र. वर्ण शब्द का क्या अर्थ है ?

उ. गुण कर्म स्वभाव के अनुसार मनुष्य की विशेष योग्यता को वर्ण कहते है।

वेद प्रचार यात्रा सम्पन्न

न रावण्‍ग भ मा वैदिक छात्रावास की स्थापना तीन वष पूव महू आय समाज मन्दिर परिसर म की गइ थी

छात्रावास म ८ बालक न निक शिक्षण की व्यवस्था आय समाज मन्दिर महू क विद्यालय म ह बालको को दिनचर्या गुरूकुल पद्धति क अनुसार ह

वेद प्रचार यात्रा का प्रारम्भ महू म दिनाक ८ ०६ को हुआ यात्रा म छात्रावास क १ ब्रह्मचारी महात्मा यज्ञ मुनिजी सत्यभिक्षुजी स्वामी सवानन्दजी छगनसानन्दजी श्रीमती शान्तिध्वजा छात्रावास क सरक्षक प्रकाशानी मत्री अरूणानी यात्रा क सचालक ओमप्रकाश धागदार नारायणप्रसाद वैदिक सहित ७ व्यक्ति निरतर चल रह थ ग्रामीण जनता न आत्मीयता स घर–घर स पुष्पवर्षा कर स्वागत किया प्रत्यक ग्राम की सीमा पर नागरिक दल क साथ स्वागताथ पुष्पमाला लिय खड रहते थ यात्रा पूर ग्राम म भ्रमण करती थी जिसमे सैकडो नरनारी सम्मिलित हात थे

समापन क अवसर पर म भा आय प्रतिनिधि सभा क प्रधान गौरीशकर जी कौशल भी उपस्थित थ महू नगर म वेदरथ क साथ छात्रावास स ब्रह्मचारी वानप्रस्थी सन्यासी विद्वान एव सैकडो व्यक्तियो न घर घर नगर म भ्रमण किया विशेष रूप म आय वीर दल कानड एव आसपास क ग्रामो क आय वीरो न लाठी तलवार मलखम का प्रभावी प्रदशन किया और छाती पर पत्थर रखकर पत्थर तुडवाना मोटर साइकिल निकलवाना तलवार माडना आदि कायक्रम प्रस्तुत किय आयवीर दल अधिष्ठाता काशीरामजी को अनेक नागरिको न पुरस्कार म सैकडो रूपय दिय

यज्ञ सम्पन्न होन क पश्चात भजनोपदेश व प्रवचन होत थ ग्रामीण नरनारी सैकडो की सख्या म ___ सनत थ। उपदेश सुनकर प्रत्यक ग्राम क नागरिको न आग्रह किया कि हमार ग्राम म आय समाज की स्थापना की जाव तथा कम स कम ७ दिन तक वेदकथा करना चाहिय ग्रामीण भाइयो क उत्साह को देखकर निर्णय लिया है कि महू वह इन्दौर क कायकर्ता प्रत्यक रविवार को जाकर ग्रामो मे सत्सग करवायेग इस यात्रा की सफलता को दखकर निर्णय लिया है कि मध्य भारत क्षेत्र क प्रत्यक जिल म वेद प्रचार यात्रा निकाली जावेगी इस प्रकार ४ ग्राम म वेद प्रचार यात्रा १५ दिन तक प्रचार करत हुए जन १९९६ को महू मे पहुचकर समाप्त हुइ

गत ५० वर्षो म मध्यभारत क्षेत्र म आयसमाज क कार्यकर्ताओ न आय समाज क प्रचार प्रसार की योजना नही बनाइ लकिन प्रकाशचन्द्र न प राजगुरू की स्मृति म छात्रावास स्थापित किया तथा वेदप्रचार यात्रा की योजना बनाकर उन ग्रामो म आय समाज का सन्देश पहुचाया जिन ग्रामो म अभी तक आय समाज क सबध म जानकारी नही थी

वेद प्रचार यात्रा म एक वेद रथ जिस पर वेद मत्र एव वेद सबधी तथा आयसमाज सबधी जानकारी क नामपट लगाय गय थ और तीन मेटाडोर तथा कार चल रहा था

भवदीय
जगदीश प्रसाद वैदिक

वृक्षों में जीवात्मा और प्रकृति की चेतनता (?)

ब्रह्मचारी वेदमुनि आर्य

आर्य जगत् मे वादविवादो से अथवा शास्त्रार्थों के माध्यम से सत्यासत्य का निर्णय होता रहा है। इस सिलसिले मे वृक्षो मे जीवात्मा का विषय विवादास्पद बना रहा है। इस प्रकार के कुछ नवीन विषय भी आर्य विद्वानो के बीच मे प्रकट हुये है। जैसे सुख दु ख जीवात्मा के स्वाभाविक गुण हैं अथवा प्रकृति के ? इस प्रकार के विचार विमर्श होते रहना चाहिए। परन्तु सभी मान्य विद्वानों को एकत्रित होकर सत्यासत्य का निर्णय ले लेना चाहिए और सत्य को ग्रहण करने एव असत्य को त्यागने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

सम्पादक

उपरोक्त विषय के सदृश एक आश्चर्यजनक विषय को उपस्थित कर रहा हूँ। वह विषय है कि इस ससार मे जितने भी मतसम्प्रदाय हैं वे सब ईश्वर और जीव को चेतन तथा प्रकृति को जड मानते हैं। पर वेद के अनुसन्धानो के द्वारा पता लगाया जा रहा है कि यह धारणा मिथ्या है कि 'प्रकृति जड है'। वेद के द्वारा स्पष्ट प्रतीत होता है कि 'कि प्रकृति नितान्त चेतन है । चौंकिये मत पाठक जानना चाहेगे कि ऐसे कौन विद्वान् हैं जो प्रकृति को चेतन मानते हैं तो मैं अभी बता देता हूँ। वैदिक शोध सस्थान--भरतपुर से प्रकाशित "वैदिक यज्ञानुष्ठान विधि" नामक ग्रन्थ के प्रणेता श्री रमेश मुनि जी' वानप्रस्थी हैं।

प्रकृति के विषय मे विद्वान् लेखक ने १०वे पृष्ठ से १४वे पृष्ठ तक भूमिका मे लिखा है। जो निम्न प्रकार है–

१ – 'वेदो प्रर शोध करते हुए हमको यह तथ्य और रत्न रूप में प्राप्त हुआ है कि प्रकृति चेतन है जड नहीं। जैसे पृथ्वी को लोग जड मानते हैं लेकिन ऐसा है नहीं (पृ.१०)।

२ – 'जिस प्रकार हमने पेड पौधो को चेतन सिद्ध किया है उसी प्रकार सृष्टि की अनेक रचनाओ को चेतन सिद्ध करने के लिए हमारे पास अनेको प्रमाण हैं। जैसे कोई पर्वत कहीं ऊपर निकल रहा है और कोई पर्वत कहीं नीचे धस रहा है। क्या ये सब एव भूकम्प इत्यादि पृथ्वी को चेतन सिद्ध नहीं करते। नवीन खोज वायरस अथवा अणुजीवन (माइक्रोवाइटा) के अस्तित्व से समस्त ब्रह्माण्ड यानी प्रकृति चेतन सिद्ध होने में अब अधिक विलम्ब नहीं है (पृ. १३)

३ – 'सूर्य भी चेतन है और चन्द्रमा भी चेतन है। ब्रह्माण्ड मे जितने भी सूर्य ग्रह उपग्रह धूमकेतू घूम रहे हैं वे सब चेतन हैं। सूर्य चन्द्रमा नहीं रहे तो इस पृथ्वी पर प्राणी ही समाप्त हो जाय। हम इस बारे मे और शोध करे रहे हैं। जिस समय हम वेद के इस भेद को पाश्चात्य जगत् को बतायोगे तो एक तहलका मच जायेगा। और उन्हे भारत को गुरू का सर्वोच्च सम्मान देना पड़ेगा (पृ. १४)।

प्रकृति को चेतन मानने में शोधकर्ता का मुख्य आधार है कि वृक्षो को प्रकृति के अन्तगर्त मानकर वृक्षो को चेतन सिद्ध कर दिया। फलत प्रकृति भी चेतन सिद्ध हो गयी। वृक्षों में जीवात्मा वा चेतनता को निम्नप्रकार सिद्ध किया है जिन तर्कों को लगभग वृक्षो मे जीवात्मा मानने वाले सभी विद्वान् प्रस्तुत करते हैं।

वनस्पति इसी पृथ्वी की छाती को चीरकर पैदा होती है (पृ. १०)। वाद्य सगीत सुनकर पौधे ज्यादा फलते–फूलते है उनके बीजो का अकुरण अपेक्षा कृत तीव्र गति से होता है। विकास की गति को सन्तोष जनक रखने के लिए यह आवश्यक है कि एक ही राग प्रतिदिन प्रात आधा घटे तक बजाया जाय। पौधे बात भी कर सकते है। पौधे प्रेम भी कर सकते हैं और घृणा भी और वे प्रेम के साथ–साथ घृणा की भाषा भी समझ सकते हैं–ठीक पशुओ और मानवो की भाति (पृ. ११)। यदि आप उनसे घृणा करे तो वे भी आप से घृणा करने लगेगे (पृ. १२) आदि–२ देश–विदेश के वैज्ञानिको के आधार पर वृक्षो को चेतन सिद्ध कर दिया। मुख्यतया ये विचार डा जगदीश चन्द्र बोस के हैं जोकि भौतिक शास्त्र के वैज्ञानिक थे न कि वनस्पति शास्त्र के।

चेतन के केवल ये ही लक्षण नहीं है इस प्रकार के लक्षण जड प्रकृति की वस्तुओ मे भी घटाकर स्वा. दर्शनानन्द आदि विद्वानो ने प्रकृति वत् वृक्षो को जड सिद्ध कर दिया। पर यहा वृक्षो को चेतन सिद्ध करके वृक्षो के तुल्य प्रकृति की चेतनता को भी सिद्ध कर दिया गया। क्योकि वृक्षो के धटित उपरोक्त लक्षण अनेकत्र प्रकृति मे भी घटते हैं।

वृक्षो मे जीवात्मा को सिद्ध कर चुकने के बाद जब हिसा की बात आती है तो कहते हैं कि तमो गुणवाले होने से अथवा अत्यन्त अन्धकार महा सुषुप्ति और बडे नशे मे होने के कारण वृक्षस्थ जीवात्मा सुखी वा दु खी नहीं होते है (द्र विशुद्ध मंनु. १। ४९ टि. दया. सन्देश अगस्त–९५, पृ. ५)

सुषुप्तिअवस्था तो जागृदावस्था की अपेक्षा रखती है जो कि वृक्षो मे नहीं घटती। यदि मान ले कि सुषुप्ति मे होने के कारण वृक्षस्थ जीव को सुख–दु ख का अनुभव नहीं होता है तो यहा एक शका होती है कि–भोगापवर्ग के लिए जीव को जन्म मिलता है अथात् भोगापवर्ग से अतिरिक्त ओर कोई तीसरी चीज जीव को अनुभव करने के लिए इस ससार मे नहीं है। वृक्षस्थ जीव अपवर्ग (मोक्ष) अवस्था मे नहीं है यह तो सभी को मान्य है। पर माहसुषुप्ति मे होने के कारण वह जीव सुख–दु ख का भी अनुभव नहीं करता है तो वह किस–चीज को भोगता है ? क्या ऐसे भी कर्म हैं जिनका फल सुख–दु ख भी नहीं हो और ना ही मुक्ति ?

'पौधे बात भी कर सकते हैं प्रेम भी कर सकते हैं घृणा की भाषा भी समझ सकते हैं इस प्रकार 'सकते प्रयोग से ही स्पष्ट है कि यह विचार आनुमानिक है वास्तविक नही है। पञ्चावयवयोगात् सुख सवित्ति (साख्य) के आधार पर जिन युक्तियों से सिद्ध किया जाता है कि वृक्षस्थ जीवात्मा सुख–दु ख का अनुभव नहीं करता है (द्र दया सन्देश अगस्त पृ ५)। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि वृक्षो को पाञ्चो इन्द्रियो मे से एक की भी उपलब्धी नहीं है जिसके कारण वह जीवात्मा सुख–दु ख से रहित है। अब एक बात ध्यातव्य है कि वृक्षस्थ जीव काटने हेतु कुल्हाडी लेकर आते हुये मनुष्य को देखते है और दु खी होते है वाद्य सगीत सुनते हैं प्रेम और घृणा को समझते हैं तथा बोलते हैं आदि–२ वैज्ञानिको के आधार लेकर कहना निराधार है। क्योकि बिना इन्द्रियो के ये सब क्रियाये कैसी हो सकती है ? यदि इन्द्रिया हैं तो सुख–दु ख का अनुभव क्यो नही करता ? इन्द्रिया है पर निष्क्रिय हैं जिसके कारण सुख–दुख का अनुभव नहीं करता। ऐसा कहना भी युक्ति सगत नहीं है। क्योकि महर्षि जी ने यजुर्वेद–भाष्य के प्रारम्भ मे लिखा है कि– नैव कश्चिद्र आत्ममन प्राणेन्द्रिय चालनेन विना क्षणमपि स्थातुमर्हति–कोई जीव ऐसा नहीं है कि जो अपने मन प्राणवायु और इन्द्रियो के चलाये बिना एक क्षण भर भी रह सके (द्र. यजुर्वेद भाष्य–विवरण)। इससे स्पष्ट हो रहा है कि जिसमे इन्द्रिय आदि की क्रियाये (भोक्तृत्व) नहीं है उसमे जीवात्मा (भोक्ता) नहीं है अर्थात् वह जड पदार्थ ही है। इसी प्रकार सुख–दु ख से रहित पदार्थ विद्वानो के द्वारा जड ही माना गया है। जिस–'जड प्रकृति ने सुखी है न दु खी ऐसा कभी नही होता कि आत्मा न सुखी हो न दु खी (द्र मुक्ति से पुनरावृत्ति–गगा प्रसाद उपा)। आत्मा वहीं है जहा कर्म–फल भोग है (वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार)। इससे स्पष्ट है कि वृक्षो मे सुख–दु ख रूपी कर्म फलभोग न होने से जीवात्मा नहीं है। आ. श्री राजवीर जी शास्त्री भी लिखते है कि सुख–दु ख जड प्रकृति के गुण नहीं है (दया स जनवरी–९६, पृ १६)। अर्थात् जड प्रकृति मे सुख–दु ख नहीं होने हैं। इससे भी स्पष्ट है जिसमे सुख–दु ख नहीं है वह जड है। श्री शास्त्री जी और आगे लिखते हैं कि प्रकृति तो जड होने से सुख–दु ख के अनुभव से रहित है (वही पृ. १६)। अर्थात् जो सुख–दु ख के अनुभव से रहित है वह जड़ है। यहा स्पष्ट है कि वृक्ष सुख–दु ख से रहित होने से जड है। कहीं पर वृक्षस्थ जीव को सुख–दु ख से रहित मानते हुये चेतन मानना और कहीं पर सुख–दु ख से रहित चीज को जड मानना क्या परस्पर विरोध की बात नहीं है ?

अब कुछ प्रमाण देखे जहा पर वृक्षो को जड बताया गया है। असच्च सच्च परमे व्योमन्दक्षस्य जन्मन्नदितेरुपस्थे (अदिते –उपस्थे) अविनाशी प्रकृति के उपाश्रय में (दक्षस्य जन्मन्) प्रवृद्ध जगत् के प्रादुर्भाव होने पर (सत्–च–असत् च) नित्य चेतनत्व और अनित्य जड वृक्षादि (परमे व्योमन्) परम व्यापक परमात्मा के अधीन प्रकट होते हैं (ऋ. १०। ५। ७ वैदिकयन्त्रालय से प्रकाशित भाष्य)। अवयवे च प्राण्योषधिवृक्षेभ्यः (अष्टा. ४। ३। १३५) यहा पर वृक्षवाचियो को प्राणिवाचियो से पृथक ग्रहण करने से प्रतीत होता है कि पाणिनि मुनि भी वृक्षो को प्राणी नहीं मानते। द्वन्द्वो पतापगर्ह्यात् प्राणिस्थादिनि (अष्टा. ५। २ । १२८) प्राजिस्थाद् इति किम ? पुष्प फलवान् वृक्ष । इस प्रत्युदाहरण से स्पष्ट है कि पुष्पफल प्राणिस्थ नहीं है अर्थात् वृक्ष प्राणी नहीं है। 'जड प्रकृति वृक्षो मे ज्ञानधारण का गुण नही हो सकता (शतपथ के दशपथ भाग–१ पृ. ६०)।

शेष पृष्ठ ८ पर

समय, शक्ति एवं साधनों का सदुपयोग करें

अगरचन्द नाहटा, बीकानेर

किसी भी कार्य की सफलता समय शक्ति और साधन पर अवलंबित है। इस साधन त्रिपुटी के बिना साध्य प्राप्ति असंभव है साधारणतया सभी व्यक्तियों को हम यह कहते पाते हैं कि 'क्या करें अमुक काम करने की इच्छा तो है पर अवकाश नहीं मिलता अथवा यह कि शक्ति और साधनों की कमी है। पर वास्तव में विचार करके देखा जाय तो यह बात बहुत अंशों तक सही नहीं है कार्य न हो सकने का कारण समय शक्ति और साधना का अभाव उतना नहीं है जितनी तीव्र इच्छा की कमी का है उत्कट अभिलाषा और पूरी लगन हो तो समय मिल ही जायेगा साधन भी इकट्ठे हो ही जायेंगे और शक्ति स्रोत भी फूट निकलेगा। हम जिन की कमी महसूस कर रहे हैं वे हम से दूर नहीं हैं। पर दूर दिखाई देने का कारण है उन का दुरुपयोग अर्थात हम प्राप्त साधन शक्ति एवं समय का सदुपयोग करना नहीं जानते। यदि समय ही नहीं है तो कुत्सित भावनाओं वासनाओं एवं व्यर्थ के प्रपंचों और बुरे कर्मों को करने के लिए ये तीनों चीजें कहां से आती हैं ? इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने से हमारी गलत धारणा का सहज ही पता चल जायेगा।

पग पग पर हम अनुभव करते हैं कि जिस काम को हम सब से अधिक आवश्यक समझते हैं वही पहले हो जाता है। किसी भी कार्य को करने के लिए समय नहीं है कहने का तात्पर्य यह है कि हमारा समय अन्य उपयोगी या आवश्यक कार्य (जैसा भी हमने मान रखा हो) में लगा हुआ है यदि हम उसे गौण करके उसके स्थान पर जिसे करना चाहते हैं उसको प्रमुख मान लेंगे तो वही समय पहले काम से निकलकर दूसरे के लिए लग जायेगा। उदाहरणार्थ हमारे सामने दो काम साथ ही करने के लिए उपस्थित हैं जैसे भोजन करना और जयपुर जाने के लिए गाडी पकडना हमारी बुद्धि इनमें से अधिक आवश्यक कार्य पर विचार कर एक को पहले ग्रहण करेगी। मान लीजिए हमें यह अनुभव हुआ कि जयपुर जाना ज्यादा जरूरी है और भोजन करने में समय लगाने पर गाडी नहीं मिलेगी तो हम भूखे ही रह कर समय पर स्टेशन पहुचने के लिए तैयार हो जायेंगे।

यदि हमें इसके विपरीत भोजन करना अधिक आवश्यक प्रतीत हुआ तो झट से भोजन करने बैठ जायेंगे चाहे समय पर स्टेशन न पहुचने से गाडी छूट ही क्यों न जाये। यही बात अन्य सभी कार्यों के विषय में समझनी चाहिए। इससे हम इसी निष्कर्ष पर पहुचेंगे कि मौखिक रूप में चाहे हम किसी एक कार्य को अधिक आवश्यक बतलाते हुए दूसरे के लिए समयाभाव कह दें पर वास्तव में अनुभव यही होगा कि उसके लिए समय न मिलने का मुख्य कारण यह है कि उससे अधिक दूसरे काम को आवश्यक मान कर उसके लिए हमने अपना समय दे रखा है। समय तो उतना ही है उसे किस काम में लगाना है किस में नहीं यह हमारा मनोवृत्ति या विचार पर निर्भर है।

अपने जीवन काल पर जरा गहराई से विचार करें तो पता चलेगा कि समय तो हमारे पास बहुत है किंतु हम उस का ठीक से उपयोग नहीं कर पाते हैं। दूसरी दृष्टि से विचार करें तो प्रतीत होगा कि व्यर्थ जाते हुए समय पर कडी निगरानी रखना आवश्यक है। जिन कामों में जितना समय लग रहा है उससे कम समय में वे हो सकते हैं या नहीं सोचिए और जितने भी कम समय में वे हो सकते हों उन्हें कर डालने का प्रयत्न कीजिए। इससे आपको बहुत बडी सफलता मिलेगी। मान लीजिए आप छ घंटे नींद लेते हैं आधे घंटे में खाना खाते हैं तथा १५ मिनट में स्नान करते हैं इसी प्रकार से अन्य आवश्यक काम करते हैं। अब आप प्रयत्न कीजिए कि इन सभी कामों में ३० मिनट की बचत करें लें। इसी प्रकार जिन सैकडों ऊल जलूल कामों में आप का बहुत सा समय व्यर्थ ही नष्ट हो रहा हो रहा है प्रत्येक में से यथासंभव कुछ-कुछ समय की बचत कीजिए तो आप अपने बहुत से समय की बचत करके कुछ अच्छे कामों में लगा सकेंगे जिन को करने के लिए आप को समय ही नहीं मिल रहा है।

अब साधनों को लीजिए। विश्व में साधन सर्वत्र बिखरे पडे हैं। पग पग पर साधनों का ढेर लगा हुआ है पर अपनी अज्ञानतावश हम उन से लाभ नहीं उठा रहे हैं। जिसे कोई काम करना ही होगा वह गम्भीरतापूर्वक खोज में लग जायेगा और इधर उधर पर्याप्त साधनों को खोज निकालेगा और आवश्यकतानुसार उन्हें जुटा लेगा। कार्य करने वालों को साधन नहीं मिलेंगे इस शंका को हृदय से निकाल दिजिए। विश्वास को बढाइए साधन मिल कर रहेंगे। बहुत से लोग इतनी सामग्री जुट जाये तभी कार्य आरंभ करेंगे ऐसा निश्चय कर बैठते हैं। और शक्ति लगाने से कतराते हैं। अंत 'न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी' वाली मिसाल होकर रह जाती है। अर्थात् न उन के मन चाहे साधन एकत्रित हो पाते हैं न कार्य हो पाता है। मेरी राय में जितने भी साधन प्राप्त हों उन्ही के अनुसार कार्य आरम्भ कर दीजिए जब आप की जमा पूजी कुल दो सौ रूपये हो तो आप वह काम आरम्भ ही कैसे कर सकते हैं। जिसका बुनियादी खर्चा कम से कम दो हजार रूपये हो बेहतर यही है कि कोई कार्य तुरत आरंभ कर दीजिए। कर्मठता से काम में लगे रहेंगे तो सफलता भी अवश्य ही मिलेगी और साधन भी जुटते ही रहेंगे। सच्ची लगन हो तो सफलता अवश्यम्भावी है। हताश मत होइए, घबराकर काम न छोडिए, प्रयत्न निरंतर करते रहिए। पूरे न सही जितने भी साधनों से कार्य आरंभ करेंगे उतना फल तो कहीं नहीं जायेगा। अन्यथा अधिक के पीछे थोडा भी खो बैठेंगे। और उस के लिए आप को जीवन भर पश्चात्ताप करना पडेगा।

सच तो यह है कि समय की भांति ही साधनों का भी हम बहुत दुरुपयोग कर रहे हैं। मनीषियों का कहना है कि जो साधन पाप कर्म के हैं वे धर्म के भी बन सकते हैं। साधनों का अच्छे या बुरे रूप में उपयोग, बहुत कुछ हमारी विचारधारा पर निर्भर है। अत साधनों के सदुपयोग करने की कला भी ध्यानपूर्वक सीखनी आवश्यक है। गुण और दोष तो हर चीज में मिलेंगे। हम में गुण ग्रहण की दृष्टि होगी तो उस की अच्छाइयों से लाभ उठायेंगे। दोषमयी दृष्टि होगी तो दोष के भंगी बन जायेंगे।

इसी प्रकार शक्ति पर भी विचार कीजिए। वास्तव में शक्ति कहीं बाहर से नहीं आती। समय और साधन तो बाह्य वस्तुयें हैं पर शक्ति सब का मूल कारण है। उस का अक्षय भंडार तो हमारे भीतर भरा हुआ है। उपेक्षावश हम उसे भूल बैठे हैं वह अदर दबी पडी है अत उपलब्ध साधनों द्वारा उस का विकास करना है उसे प्रकाश में लाना है उस की कमी का एहसास भी उस शक्ति का अन्य कामों में लगे रहने के कारण ही है। वास्तव में हमने अपनी शक्ति विविध कामों में बिखेर रखी है। उसे बटोर कर संचय करने की परम आवश्यकता है अनावश्यक और अनुचित कामों में जो उस का अपव्यय हो रहा है उसे समाप्त करने के लिए जुटना पडेगा। और उस शक्ति को आवश्यक कामों में से लगाकर अभ्यास के बल पर उस का विकास करना होगा। लुप्तप्राय एवं सुप्त चेतना को जागृत करना होगा। संक्षेप में, कहने का तात्पर्य यही है कि शक्ति संचय कीजिए प्राप्त साधनों के अनुसार ही आगे बढियें समय को व्यर्थ खोने से बचाइए फिर सफलता आप की मुट्ठी में है।

कार्य न हो सकने का कारण समय, शक्ति और साधनों का अभाव उतना नहीं है, जितनी तीव्र इच्छा की कमी का है। उत्कट अभिलाषा और पूरी लगन हो तो समय मिल ही जायेगा, साधन भी इकट्ठे हो ही जायेंगे और शक्ति स्रोत भी फूट निकलेगा। हम जिन की कमी महसूस कर रहे हैं, वे हम से दूर नहीं हैं। पर दूर दिखाई देने का कारण है उन का दुरुपयोग।

वैदिक संस्कृति के प्रतीक

यज्ञोपवीत, शिखा, मेखला

हरिदेव आचार्य

[गतांक से आगे]

यज्ञोपवीत धारण करने वाले बालक को इन ९ दिव्य शक्तियो के गुण अपने मे धारण करने चाहिए।

१ ओ३म् कार ब्रह्मज्ञान
२ अग्नि तेजस्विता उन्नति की भावना
३ अनन्त धैर्य स्थिरता
४ चन्द्रमा सौम्यता शीतलता मधुरता
५ पितृगण स्नेहशीलता सरक्षण कुल धर्म धारणा आशीर्वाद दान
६ प्रजापति प्रजापालन स्नेह और सौहार्द
७ वायु गतिशीलता पवित्रता बलशालिता
८ सूर्य प्रकाश धारण अन्धकार नाश
९ सर्व देवता समस्त दिव्य गुण और सात्विक जीवन

अथवा ब्राह्मण को नवगुण धारण करने चाहिए

नव गुण परम पुनीत तुम्हारे तुलसी रामायण (१) सत्य (२) अहिंसा (३) चोरी न करना (४) इन्द्रिय निग्रह (५) अधिक सचय का लोभ छोडना (६) पवित्रता (७) कष्ट सहिष्णुता (८) विद्या (९) ईश्वर और धर्म पर आस्था

ये योग दर्शन के यम नियमो से मिलते है

अथवा यज्ञोपवीत से यज्ञ करने का अधिकारी बनता है और यज्ञ से सब सकल्प पूरे होते हैं

आयुर्यज्ञेन कल्पता स्वाहा प्राणो यज्ञेन चक्षुर्यज्ञेन श्रोत्र यज्ञेन वाग्यज्ञेन मनोयज्ञेन आत्मा यज्ञेन ज्योतिर्यज्ञेन यज्ञो यज्ञेन कल्पता स्वाहा

यजु० २२ ३३

नव शक्तिया (१) शरीर बल (२) बुद्धि बल (३) चातुर्य बल (४) धन बल (५) प्रतिष्ठा बल (६) सगठन बल (७) साहस बल (८) प्रारब्ध बल (९) आत्मबल

पाच गाठो मे पहली ब्रह्म गाठ है जो इस बात का प्रतीक है कि ब्रह्म प्राप्ति ही मानव जीवन का चरम लक्ष्य है उसके ऊपर तीन गाठ तीन वेदो की प्रतीक हैं और अन्तिम गाठ प्रणव गाठ कहलाती है। जब कोई निश्चय किया जाता है तब कहते हैं कि इस काम की गाठ बाध लो अथवा पाचो ज्ञानेन्द्रियो को अपने वश मे करना अभिप्राय है।

आचार्य के गर्भ की तीन शक्तिया
आध्यात्मिक अज्ञान (हृदय)
आधिदैविक अज्ञान (मस्तिष्क)
आधिभौतिक अज्ञान (नाभि)

इन तीनो अज्ञानो के बन्धन मे जकडकर आचार्य ब्रह्मचारी का समावर्तन सस्कार कर उसे मुक्त कर देता है अथवा २४ वर्ष तक आचार्य के गर्भ मे रहकर ब्रह्मचारी वसु सज्ञक होता है और उसके प्राणो का आधार नाभि केन्द्र स्वस्थ हो वीर्यादि धातुए सुपुष्ट होती है। ३६ वर्ष तक ब्रह्मचारी रहकर उसकी रुद्रसज्ञा होती है। ग्यारह प्राण उसके वश मे हो जाते हैं मस्तिष्क उन्नत होकर प्रकृति के बहुत से रहस्यो का आवरण हट कर मस्तिष्क मे ज्ञान का प्रकाश हो जाता है ४८ वर्ष तक ब्रह्मचारी रहने पर वह आदित्य सज्ञक ब्रह्मचारी कहलाता है हृदय का अज्ञान की राशी दूर हो जाती है। आदित्य के समान सर्वत्र ज्ञान का प्रकाश होकर ईश्वर साक्षात्कार हो जाता है। यही उसका पूर्ण समय है और अब गुरु मे प्रार्थना करता है

उदुत्तम वरुण पाशमस्मदवाधम वि मध्यम श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा।।

हे वरुण यम नियमो के बन्धने वाले आचार्य हमारे नाभि मस्तिष्क और हृदय पर बन्धने वाले बन्ध (कन्धिया) उतारे तो हमारे उत्तर कीजिए शिष्य की प्रार्थना स्वीकार होती है तप की भट्टी से उसे बाहर ले जाने की तैयारिया की जाती है अब वह सामान्य मानव न रहकर स्वर्ण के समान देदीप्यमान मुखरविन्द वज्र के सदृश कठोर वक्षस्थल हाथी के सूण्ड जैसी बाहू, सय के समान वर्चस्वी सर्वगुणों की खान पूर्ण पुरुष या महामानव बन गया है

गुरुकुल रूपी इस निर्माणशाला (फैक्टरी) मे निर्मित आदित्य ब्रह्मचारी को राजा महाराजा और बडे बडे धुरधर विद्वान देखने आते हैं

इस निर्माण कार्य मे जहा ब्रह्मचारी की सतत साधना है वहा आचार्य का भी कम योगदान नहीं है यज्ञोपवीत देते समय आचार्य ने प्रतिज्ञापूर्वक यह घोषणा की थी

मम व्रते ते हृदय दधामि मम चित्तमनु ते चित्तमस्तु।
मम वाचमेकमना जुषस्व बृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्।।

हे ब्रह्मचारी आज से तेरा चित्त मेरे चित्त के अनुकूल होवे मेरे द्वारा निदिष्ट व्रतो का तू एकाग्र होकर पालन कर मेरी वाणी को एकाग्र होकर सुन आज से तेरी प्रतिज्ञा के अनुकूल बृहस्पति तुझ को मुझ से युक्त करे आज उसकी यह घोषणा साकार हुई आचार्य ने अपने समान ही उसके मन बुद्धि का विकास करके समाज एव राष्ट्र को समर्पित कर दिया है इस मध्य शिष्य ने आचार्य के मृत्यु वरुण सोम औषधी और पय इन पाच रूपो को निकट से देखा है उसकी श्रद्धा उत्तरोत्तर गुरु चरणारविन्द मे बढती ही गई इस प्रकार हम देखते हैं कि यज्ञोपवीत रूपी छोटे से सूत्र ने अबोध बालक को पूर्ण पुरुषार्थी दीर्घ सविद्य और बुद्धिमान पुरुष के रूप मे परिणत करने मे महत्वपूर्ण भूमिका का वहन किया है

शिखा मेखला

यज्ञोपवीत के प्रकरण मे आचार्य की वरुण सज्ञा की है नियमो मे बाधने वाले को वरुण कहते हैं आचार्य ने ब्रह्मचारी के सिर पर शिखा कन्धे पर यज्ञोपवीत और कटि प्रदेश मे मेखला रूपी बन्धन लगाए है कटि भाग मे मेखला अधम पाश यज्ञोपवीत मध्यम पाश और सिर पर शिखा उत्तम पाश रूप मे ब्रह्मचारी को नियमो मे बाध देते है सिर के ग्रीवा से मस्तिष्क पर जहा तक बाल उगते है वहा तक चार भाग करके आगे के दो भाग और पिछला भाग छोड देने पर जो भाग शेष रहता है वही शिखा रखने का स्थान है [illegible] लघु मस्तिष्क और सुषुम्ना केन्द्र के ऊपर [illegible] परिमाण सद्य प्रसूत गाय के बछडे के खुर के समान [illegible] भाग पर शिखा रखी जाती है वह अधिपति नाम [illegible] है [illegible] ज्ञान केन्द्र [illegible] और मर्म स्थान की सर्दी और गर्मी दोनो से [illegible] है यह सुविदित है कि बाल या ऊन तप के [illegible] इसलिए कम्बल जो बर्फ के ऊपर रखते है [illegible] की उष्णता से इस भाग का निवारण [illegible] प्रकाश शीत ऋतु मे भी ठण्ड से सुरक्षा [illegible]

यदि कोई प्रश्न करे कि फिर तो सारे सिर की सर्दी और गर्मी से रक्षा करने के लिए उस पर बाल रखना ही उपयोगी है तो उसका उत्तर यह है कि बड़े मस्तिष्क का अधिक ठण्ड की आवश्यकता है। बडा बाल रखने से उष्णता बढ कर नेत्रो मे दुर्बलता और मस्तिष्क मे उष्णता बढकर बुद्धि मन्द होती है। प्राचीन काल मे चीन जापान देशीय लोग भी दाक्षिणात्य ब्राह्मणो की भाति बडी-बडी चोटिया रखते थे। परीक्षण से यह भी सिद्ध हुआ है कि दाक्षिणात्य ब्राह्मण जो कि गोखुर जितनी शिखा रखते हैं। उनके समान बुद्धिमान अन्य किसी देश मे नहीं है

इसके अतिरिक्त हमारे देश का जलवायु इतना अधिक उष्ण और रूक्ष नहीं है कि यहा सिर पर सारे बाल रखने पड़े यहा गोखुर जितनी चोटी रखना ही पर्याप्त है

यद्यपि कात्यायन स्मृति मे वैदिक धर्मानुयायियो को शिखा सूत्र रखने का विधान किया है।

सदोपवीतिना भाव्य सदा बद्धशिखेन च।
विशिखो व्युपवीतश्च यत करोति न तत कृतम्।।

फिर भी शिखा किसी धर्म विशेष का सकेत नहीं करती। लघु मस्तिष्क सुषुम्ना केन्द्र एव मर्म स्थल की सुरक्षा का यह वैज्ञानिक उपाय है जिसे किसी भी धर्म के मानने वाले धारण कर सकते है। केवल शिखा रखने मात्र से ही कोई धार्मिक नहीं बन जाता (न लिङ्ग धर्मकारणम्)

जिस स्थान पर शिखा रखी जाती है वह भाग शरीर मे सबसे ऊचा है यह इस बात का भी सकेत है कि प्रत्येक मनुष्य को चोटी तक उन्नति करने का प्रयत्न करना चाहिये।

यज्ञोपवीत और शिखा का ब्रह्मचारी गृहस्थ और वानप्रस्थ आश्रमस्थ व्यक्तियो के लिए विधान है इन तीन आश्रमो में व्यक्ति का सर्वाङ्गीण विकास हो चुका होता है। समाज के तीनो ऋण उतारे जा चुके होते हैं अत सन्यास आश्रम मे कुछ कर्तव्य शेष न रहने से शिखा और सूत्र का भी परित्याग कर दिया जाता है

मेखला

आचार्य द्वारा बाधे गये तीन पाशो मे मेखला का भी विधान किया है यह कटि के चारों ओर बाधी जाती है काची करधनी तगडी इत्यादि इसके पर्यायवाची नाम है। इसका निर्माण मुञ्ज बल्वज घास शण या ऊन अथवा कपास के सूत्र को तिहरा बट कर किया जाता है कटि मे बाधने के पश्चात पीछे एक तीन या पाच गाठे लगाई जाती हैं मेखला धारण करने का मन्त्र

इय दुरुक्तात्परिबाधमाना वर्णं पवित्र पुनती म आगात्।
प्राणापानाभ्या बल मादधाना स्वसा देवी सुभगा मेखलेयम्।।

(पार ग २ २ ८)

अर्थात् यह मेखला कठिनाई से बालने को हटाती हुई शुद्ध उच्चारण मे सहायक मुझे प्राप्त हुई है यह मेखला बहिन के समान मुझे सौभाग्य देने वाली है यह प्राण अपान को व्यवस्थित [illegible] कर मुझे बल प्रदान करती है

अथर्ववेद के [illegible] काण्ड सूक्त १३३ के [illegible] मेखला [illegible] आचार्य वेदारम्भ सस्कार करते समय ब्रह्मचारी की कमर व्रतो का पालन करने की प्रतीक मेखला को बाधता है। कामादि शत्रुओ का नाश करने के लिये ऋषियो द्वारा प्रदत्त यह उत्तम आयुध है। इसको बाध कर ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य पालन तप और पुरुषार्थ द्वारा मृत्यु का भी [illegible] मे कर लेता है ब्रह्मचर्य पालन के लिये इसे श्रद्धा से बाधा गया है यह मेखला मन मति (मनन शक्ति) मेधा (निश्चयात्मक बुद्धि) और दीर्घायु प्रदान कर

मेखला बाधने से प्राण और अपान की गति व्यवस्थित होकर शरीर की अनेक क्रियाये ठीक होने लगती हैं नाभि से ऊपर की सभी क्रियाये श्वसन भोजन पाचन [illegible] परिभ्रमण चिन्तन मनन भाषण इत्यादि प्राण द्वारा नियन्त्रित सचालित होती हैं इसी भाति नाभि से नीचे की क्रियाये भोजन पाचन मलमूत्र विसर्जन वीर्य स्खलन [illegible] विसर्जन आदि को अपान नियन्त्रित करता है मेखला [illegible] गाठ ब्रह्मचारी को सीधा नहीं सोने देती सीधा सोने से स्वप्न दोष अधिक होता है मुख खुला जाने से [illegible] का मुख द्वारा श्वास लेने की आदत पड जाती है जिसके फल स्वरूप नाक रूक जाते है नाक की हडडी बढ जाती है। सीधा सोने से भोजन का पाचन और मल का विसर्जन भी ठीक नहीं होता।

हम देखते हैं कि भारत्तोलन या अन्य परिश्रम का कार्य करते समय कटि प्रदेश को चमडे की पेटी या वस्त्रादि से कस लिया जाता है इससे झटका नहीं लगता। झटका लगने से हर्निया रोग हो जाता है और कटि प्रदेश के कसेरू फिसल कर कटि पीडा की सम्भावना भी रहती है सैनिको द्वारा बाधे जाने वाली पेटी कमर मे वस्त्र का पट्टा पुराने वृद्ध जनो द्वारा बाधी जाने वाली धोती स्त्रियो का कमर का आभूषण करधनी हर्निया [illegible] को चिकित्सको द्वारा दी गई पेटी सभी मेखला के रूपान्तर है जिनसे मेखला की उपयोगिता और बढ गई है

दयानन्द वैद विद्यालय
११६ गौतम नगर दिल्ली

सतर्कता को भय से न जोड़ें

आज के युग मे भौतिक सुख–साधनो की लिप्सा अधाधुध बढती जा रही है। परिश्रम–हीन भोग का चारो तरफ बोलबाला है। सवेदनहीन–सबधहीन प्रतिद्वन्द्विता प्रतिस्पर्धा और प्रतियोगिता का दौर ज्यादातर लोगो पर नजर आने लगा है। कम से कम मे अधिक से अधिक धन पैदा करने की सनक सवार हो चुकी है इस तरह के लोगो के लिए धन ही सर्वोपरि है। ऐसे ही तथाकथित अमानवीय कारणो से कुछ लोगो ने असामाजिक धधे भी अपना लिए हैं।

हमे अपने तन मन और धन की सुख सुविधा एव सुरक्षा के लिए असामाजिक तत्वो से सदैव सतर्क रहना चाहिए। जरा सी सतर्कता हटी और उसी क्षण हमारे साथ कोई न कोई दुर्घटना घटी। कभी कभी आवश्यकता से अधिक सतर्कता हमे जगहसाई का पात्र बना डालती है तो कभी कभी जानलेवा भी साबित हो सकती है। इसलिए व्यक्ति और स्थिति के अनुरूप सतर्कता ही बुद्धिमानी है।

प्राय कुछ लोग अनजाने डर से इतना भयभीत रहते हैं कि उन्हे अच्छे बुरे का भी ख्याल नहीं रहता। कुछ सुनी सुनाई बातो से इतना अधिक सतर्क रहने लगते हैं कि उनके पास–पडोस मे कुछ भी हो वह अपने दरवाजे से झाकते तक नहीं। चाहे कोई अपनी या स्वय उनकी मदद के लिए कितना भी पुकारे।

कुछ महिलाए अपने पतिदेव के काम–धधे पर जाने के बाद किसी मेहमान के आने पर दरवाजे पर से ही उसका नाम पता और कार्य पूछती हैं। फिर तोते की तरह रटे–रटाये वाक्य ईंट पत्थर की तरह उछालती हैं।" अच्छा जी अच्छा जी। अभी वो हैं नहीं फिर आइयेगा माफ करना आप शाम को नहीं आ सकते हैं क्या ? कोई मैसेज हो तो दे दें मैंने आपको पहचाना नहीं अभी मैं बिजी हू पाच–सात के बीच आये वे रहेगे मुझे कुछ नहीं पता उन्हीं से पूछ लीजियेगा ।"

अब उनके यहा कौन जाये ? उनके यहा सी आई डी जैसी पूछताछ होने लगती है। उनके घर जाने से बेहतर है किसी पार्क मे घटे–दो घटे सुस्ताना । भुक्तभोगियो के कटु सस्मरणो को सुनकर उस घर के अन्य मित्र सहकर्मी सहयोगी आदि वहा जाने से कतराने लगते हैं। तब अतिरिक्त सतर्की लोगों को अपनी सुख सुविधा और सुरक्षा व्यर्थ लगने लगती हैं।

कई महिलाए घर–बाहर इतना सतर्कता बरतती हैं कि उन्हे सम्पूर्ण दुनिया चोर उठाईगीर ठग इत्यादि गलत लोगों की दुनिया नजर आने लगती है। घर मे अपनी चतुरता व सतर्कता से वशीभूत महिलाए सदैव ताला–चाबी पर अपनी गिद्ध दृष्टि जमाए रखती हैं। घरेलू नौकरो के हमेशा पीछे पीछे लगी रहती हैं कहीं कोई कुछ चुरा न ले। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें घर में काम करने वालो पर नजर नहीं रखनी चाहिए। आया और बर्तन या घर साफ करने वाली नौकरानियो पर हमे जरूर नजर रखनी चाहिए पर यह मानना और समझना चाहिए कि यह सब भी हमारी ही तरह इसान हैं। इन लोगों को ऐसा नहीं महसूस होना चाहिए कि उन्हें चोर माना जा रहा है अथवा उन्हें अविश्वास हो कि कब उन्हे चोर घोषित कर दिया जायेगा या निकाल बाहर किया जायेगा। इन लोगो के समक्ष ऐसा व्यवहार या पारिवारिक वार्तालाप भी नहीं होना चाहिए कि उन्हें आपके डर रहस्य और सतर्कता का भान हो। दाम्पत्य जीवन की बातें नौकरो से कभी नहीं कहनी चाहिए। पति–पत्नी की तू–तू, मैं–मैं प्यार विश्वास अविश्वास खामियों और विशेषताओ पर सलाह और तर्क–वितर्क भूल से भी नहीं करना चाहिए। आपकी व्यक्तिगत बातें किसी नाराजगी अथवा लालच में यह लोग हर किसी को बताने में सकोच नहीं कर सकते। आप अपनी सतर्कता मे सहज मानवीयता बनाये रखे। अपने पास–पडोस के लोगों की जितनी सभव हो सके अवश्य मदद करे क्योंकि करीब मे रहने वाले ही लोग सबसे पहले आपके सुख–दुख मे शामिल हो सकते हैं बाद मे अन्य लोग। नाहक सतर्कता के कारण किसी की सहायता करने मे आपकी निष्क्रियता उनमे बदले की भावना भर सकती हैं जो कभी आपकी किसी घटना–दुर्घटना पर ज्यादा हानिकारक भी हो सकती है।

उदारता और सतर्कता के साथ–साथ आप किसी जरूरतमद अपग मुसीबत व्यक्ति अथवा नाते–रिश्तेदारो की जरूर सहायता करे पर अपनी सामर्थ्य देख समझ कर। दूसरी ओर अनजान व्यक्ति अथवा अपरिचित रिश्तेदारों पर बात–बेबात हसने–रोने वाले लोगो से दूर ही रहना ज्यादा श्रेयकर होता है।

ऐसे लोगो से भी हमे सतर्क रहना चाहिए जो तत्र–मंत्र के बल पर हर किसी की मनोकामना पूर्ण कराने का दावा करते हैं। एक तोले सोने को दस तोले मे बदलने का प्रताप बताते हैं। दस तरह के ढोगियों और ठगो के शब्दजाल से भी बचना चाहिए।

कुछेक अभिभावक अपने बच्चों के भविष्य के प्रति इतने सतर्क रहते हैं कि बच्चो के सहज–स्वाभाविक विकास मे अभिभावक कटक सिद्ध होने लगते हैं। डर शक व सकोच के मारे ये बच्चे अपनी बाल सुलभ इच्छा आकाक्षा अपेक्षा जिज्ञासा उत्साह उमग तरग शौक इत्यादि मनोभावो को अपने मन के अन्दर ही दफन कर देते हैं।

कई एक ऐसे भी माता–पिता मिल जायेगे जो अपने बच्चो के लिए खेलकूद से लेकर अन्य बच्चों से उनकी मित्रता व शत्रुता सब वही तय करते हैं। यदि बच्चे ने जरा भी नियम भग किया तो उसे तमाम प्रकार से उत्पीडित करते हैं। ऐसे बच्चे कुठित होकर बाल अपराधी भी बन सकते हैं। बच्चो के प्रति ऐसी अमानवीय सतर्कता पूरे परिवार के लिए कभी–कभी घातक भी हो सकती है। इससे दूसरे पडोसी भी आपसे तथा अपने बच्चों से आपके बच्चो को दूर रहने की हिदायत दे सकते हैं। बहुत से शक्की लोग सतर्कता के नाम पर अपनी पत्नियो पर खास नजर रखते हैं। मसलन उनके जाने के बाद पत्नी कहा जाती है घर मे क्या करती है किस किस से किस किस तरह की वार्तालाप करती है उनके मित्र या सहकर्मियो के आने पर उनके प्रति उसका व्यवहार कैसे और क्यो रहता है ? आदि व्यर्थ का सोच विचार। इस तरह की सतर्कता से दाम्पत्य जीवन मे अविश्वास कुठा खीझ घृणा क्रोध व बेकार की प्रतिस्पर्धा शुरू हो जाती है जो कभी भी भयानक रूप धारण कर सकती है।

धैय बल और विवेक के साथ सतर्क रहना आज के जीवन में आवश्यक है और बुद्धिमानी भी है। शक्की सतर्कता अथवा अतिरिक्त व व्यर्थ की सतर्कता हमारे घर परिवार और हमारे तन मन के लिए घातक भी हो सकती है। सतर्कता से वशीभूत होकर अपने आचार व्यवहार को कटु नहीं बनाना चाहिए। हमारी सतर्कता हमारी सुख सुविधा और सुरक्षा के लिए होनी चाहिए। किसी को कष्ट दुख या क्षोभ पहुचाने अथवा बोझ के लिए जरा भी नहीं।

हमें यह मान लेना चाहिए कि आज भी दुनिया मे अच्छे लोग अधिक हैं। सब बुरे लोग ही नहीं हैं। आपके आसपास वर्षों से रहने वालों पर आपको विश्वास करना चाहिए। आपसी सवाद व सबध बनाये रखना चाहिए। अगर हम ऐसा प्यार और विश्वास रखेंगे तो हमे सुख सुविधा और सहायता दूसरों से प्राप्त हो सकती है। तभी हमारी सतर्कता सार्थक हो सकती है।

राजकुमार सिह

वृक्षों में जीवात्मा....

पृष्ठ ५ का शेष

'वैदिक विचार धारा का वैज्ञानिक आधार' ग्रन्थ में ईश्वर विषयक लेख मे प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालकार जी के विचार भी विशेष ध्यातव्य हैं। 'विश्व के कण–कण मे बैठी हुई चेतना–शक्ति के अभाव मे जड–बीज मे किसी प्रकार की गति नहीं आसकती (पृ. १५४)। {स्वा. वेदानन्द जी तीर्थ ने भी सन्ध्यालोक में पृ. २३ पर यही भाव प्रकट किया।} वनस्पति–वृक्ष आदि में भी जीवन है आत्मा नहीं है इसी प्रकार अमीबा मे जीवन–तत्व है आत्म–तत्व नहीं है आत्मा वह सत्ता है जो कर्म तथा कर्मफल को साथ लेकर जीवन तत्व मे आ बैठती है (पृ. १५८)। वनस्पति वृक्ष आदि मे चेतना है–इसमे सन्देह नहीं। चेतना इसलिए है क्योकि उनमे वृद्धि होती है ह्रास होता है। परन्तु क्या उनमें आत्मा भी है ? यहा आत्मा तथा 'चेतन–शक्ति' में भेद करना होगा। चेतन–शक्ति तो वह है जो विश्व के अणु–अणु मे जगत् के कर्तृत्व–भाव से सर्वत्र व्याप रही है उसकी वजह से वनस्पति तथा वृक्ष का बीज पृथ्वी मे डालने के बाद गुरूत्वाकर्षण के नियम से बधा होने के कारण भी नीचे को जाने के स्थान मे ऊपर को अकुर के रूप मे फूट पडता है बढता है

परन्तु यह सब उस बीज में निहित चेतन शक्ति का ही प्रभाव है। वृक्ष में सूक्ष्म–शरीर को धारण करने वाले आत्मा का निवास नहीं है सिर्फ परमात्मा का निवास है। आत्मा' वह है जो शरीर मे आकर कर्मों को करता और उनका भोग भोगता है वनस्पति तथा वृक्ष मे 'चेतना' वह है जो वनस्पति की वृद्धि एव ह्रास का तो कारण है परन्तु आत्मा की तरह कर्म नहीं करती कर्मों का फल नहीं भोगती। ४५ साल हुए जब लेखक को श्री जे. सी. बोस से मिलने का अवसर मिला था। लेखक ने उनसे प्रश्न किया कि जब आप वृक्षों में भी आत्मा कहते हैं तब शाकाहारियों के सामने एक विकट समस्या खडी हो जाती है। अगर वृक्षों में भी आत्मा है तो उनका भक्षण भी जीव–हत्या है फिर मास खाने तथा वनस्पति खाने मे क्या अन्तर रह जाता है ? उन्होने उस समय बडा मार्मिक उत्तर दिया था। वे कहने लगे कि वृक्ष मे जीवन तो है आत्मा नहीं है। जीवन के लक्षण हैं–वृद्धि–ह्रास विकास बढना–घटना आदि। वृक्षों मे क्योकि विश्वात्मा का चैतन्य–स्वरूप मौजूद है इसलिए उनकी प्रेरणा–शक्ति से उसमें गुरूत्वाकर्षण के विपरीत नीचे को जाने के स्थान में बीज का ऊपर की तरफ बढ़ना उगना फलना–फूलना पाया जाता है ठीक ऐसे जैसे जड–जगत् मे व्याप्त विश्वात्मा की चैतन्यता के कारण उसमे भी गति तथा विकास एव ह्रास पाया जाता है परन्तु जड चट्टान तथा वृक्ष मे वह आत्मा नहीं है जो कर्मों को करता तथा फलो को भोगता है (पृ. १५५)।

अब वेदादि के कुछ प्रमाण देखे–'द्वा सुपर्णा. 'यस्मिन्वृक्षे. (ऋ. १। १६४। २ २२) 'समाने वृक्षे पुरुषो. (मु. रु। ११२ खे. ४। ७) इत्यादियों में ईश्वर जीव और वृक्ष = प्रकृति तीनो अनादि कहे गये हैं इनमें ईश्वर और जीव मात्र चेतन है। इनसे अतिरिक्त सब कुछ जड है। चेतन प्रतीत होने वाले मन को भी वेदादियों मे जड़ बताया गया है। प्रकृति भोग्या है जीव भोक्ता है ईश्वर फल प्रदाता। इस प्रकार सैकड़ो वेद मन्त्रों में प्रकृति को जड़ बताया गया पुरनपि शोध के फलस्वरूप प्रकृति को चेतन मानना वेद का उपहास मात्र है। वेद और तदनुकूल सत्यशास्त्रो मे प्रकृति की चेतना की ग्रन्थ तक नहीं है। वृद्धि ह्रास आदि के लक्षण मात्र से जीव की सिद्धि नहीं होती है। क्योंकि ये लक्षण जड़ के हैं–'जायतेऽस्ति विपरिणमते वर्द्धतेऽपक्षीयते विनश्यति' (नि. १। २)। जीव अपरिणामी है (शत. १४। ७। ३। १५) प्रकृति परिणामिनी है (श्वे. १। १० गीता. १५।१६)। प्रकृति में गतिशीलता ईश्वर के कारण है (यजु. ३२।८)। कार्यरूप अचेतन जगत् में जीवात्मा के कारण भी गतिशीलता बनी रहती है जैसे शरीर आदि मे। अत प्रकृति तथा उससे उत्पन्न कार्य जगत् अचेतन है (सुश्रुत शारीरस्थानम् १। ६)।।

पाणिनि महाविद्यालय
बहालगढ़ (हरियाणा)

(स्वास्थ्य चर्चा) मधुमेह और क्षय रोग

—डा के एस चन्द्रा,
चेस्ट रोग विशेषज्ञ

जब रक्त मे आवश्यकता से अधिक ब्लड शुगर की मात्रा हो जाती है तो शरीर की प्रतिरोधक क्षमता मे कमी होने से व कल कारखानो के धूल भरे वातावरण मे कार्य करने के कारण फेफडे की टी बी का सक्रमण आसानी से हो सकता है।

जब रोगी निदान व उपचार मे देरी व लापरवाही करता है तो बीमारी के कीटाणु—शरीर के किसी भी भाग को रोग ग्रस्त बना देते है। जैसे—फेफडे की झिल्ली मस्तिष्क की झिल्ली (मेनिनजाइटिस), मस्तिष्क (एनकेफ्लाइटिस), आतो मे (काक्स एबडामेन), हृदय की झिल्ली (पेरीकार्डियल एक्यूजन) इत्यादि।

जो रोगी मधुमेह की जानकारी होने पर समुचित इलाज परहेज, व सावधानिया बरतने लगते है निश्चय ही वे इन जटिलताओ से बच जाते हैं। परन्तु जो रोगी जानने के बाद भी सजग नहीं होते व कई—कई वर्षों तक लापरवाही करते रहते है, वे अपने शरीर के विभिन्न अगों को रोग से ग्रसित कर लेते हैं। मधुमेह के उपचार में रोगी को इसकी जटिलताएँ विस्तार से बतानी पड़ती है। साथ ही रोगी का सतत् सहयोग तथा उसके सबधियों की भागीदारी भी बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसके बिना उसका उपचार ही असभव हैं।

मधुमेह के रोगी का आहार नियमित एव सतुलित हो जैसे—

सुबह के नाश्ते मे

चाय, मट्ठा या दूध १ गिलास (मक्खन—क्रीम निकाला हुआ), अकुरित चना या सादी दो स्लाइस ब्रेड।

मात्रा शरीर के वजन व ब्लड शुगर के अनुसार डाक्टर से पूछकर।

दोपहर के भोजन से १—२ घटे पूर्व—

फल १००—२०० ग्राम । सतरा, पपीता, खरबूजा ककडी, खीरा, सेब आदि।

दोपहर का भोजन (दिन मे २ बजे)

—रोटी पतली दो—तीन (½ गेहू + ½ चना या सोयाबीन)

—कुल ५०—६० ग्राम आटे की। आटे मे १ चम्मच पिसी मेथी मिला लें।

—चावल माड़ निकाल कर (१ छोटी कटोरी)

—हरी सब्जी (१ कटोरी बडी)

—सलाद जितनी रूचि हो (अधिक मात्रा में)

—दाल ½ या १ कटोरी छोटी।

शाम की चाय—

(५ बजे साय) २०—२५ ग्राम भुना चना या कार्न फ्लेक्स।

रात्रि का भोजन (८—८—½ बजे)—

दो—तीन रोटी (दोपहर के भोजन जैसी) रसदार सब्जी, हरी सूखी सब्जी सलाद व ½ कटोरी दाल।

सोते समय—

दूध १ गिलास (मक्खन—क्रीम निकाला हुआ) १ चुटकी हल्दी डालकर।

मधुमेह का मुख्य इलाज भोजन में सावधानिया बरतना है। नान—वेजीटेरियन्स को दाल, दूध, चना की मात्रा कम करनी पड़ेगी। जिससे आवश्यकता से अधिक प्रोटीन न पहुचे।

रोगी के वजन, व उसके कार्य के अनुरूप, भोजन द्वारा दी गई कैलोरी ऊर्जा का सही मापदड कुशल चिकित्सक की देखरेख में करना होता है। अत उपरोक्त सारिणी मे दी गई वस्तुओं में सही मात्रा कितनी लेनी है, वह व्यक्तिगत रूप से निश्चित किया जाता है। ऐसे रोगी को किसी प्रकार का व्रत, उपवास, आदि करना उचित नहीं होता। खाली पेट व्यायाम या परिश्रम करना भी ठीक नहीं होता। ऐसे मरीजों को मानसिक, आर्थिक व शारीरिक तनाव भी रोग को बढ़ाने में योगदान करते हैं।

निश्चित परहेज

चीनी ग्लूकोज, मिठाइयाँ आइसक्रीम मीठ बिस्कुट टाफियाँ, तले पदार्थ (पुडी, पराठा समोसा पकौडी, खस्ता आदि) गन्ने का रस आलू, शकरकद, केला सिघाडा, अरबी सूखे मेवे, नारियल, गरी आदि।

क्या अधिक सेवन करे

हरे पत्ते वाली सब्जिया सलाद, कालीमिर्च अचार (जो तेल मे न बने हो), नीबू—पानी, सादा बिना चीनी का छाछ या मट्ठा।

पेशाब मे आसानी से कैसे शुगर टेस्ट करे—

एक परखनली (टेस्ट—ट्यूब) मे ५ मि ली बेनेडिक्ट सैल्यूसन लेकर, उसमे ड्रापर से मूत्र की आठ बूदे डाले उसे स्प्रिट लैम्प पर गर्म करें व ठडा करके रग देखे—

रग	लगभग शुगर मात्रा प्रतिशत
नीला या हल्का हरा रग	०%
गहरा हरा रग	१%
पीला रग	१.५%
नारगी रग	२%
लाल रग	२.५% या अधिक

ऐसे रग आने पर ब्लड शुगर जरूर टेस्ट करवाए जिससे दवा की निश्चित खुराक का सही ज्ञान होता है।

सर्व प्रथम यह टेस्ट दिन मे चार बार करना चाहिए—सुबह जागने के बाद, लगभग १०—११ बजे दोपहर ३—४ बजे, और रात्रि मे सोने से पहले। पहला और अतिम मूत्र का सेम्पल लेने से पूर्व ½ घटे पहले पेशाब करने के बाद का मूत्र ले।

मधुमेह के उपचार के नियम

इसका उपचार केवल दवाओ से सभव नहीं होता अत मरीज को सयमित व नियमित भोजन, व्यायाम तथा उपचार लेना पडता है। रोगी को अपने शरीर की स्थूलता कम करनी चाहिए। मधुमह के रोगी के लिए धूम्रपान तम्बाकू, पान मसाला, अल्कोहल आदि हानिकारक ही नहीं जीवन के लिए खतरनाक है।

उपचार हेतु दवाए कुशल चिकित्सक की देख रेख मे ही ली जानी चाहिए। जिन रोगियों को दवाए नियमित लेनी पडती है और वे इन्सुलिन का इजेक्शन लेने म सक्षम हो जाते है तो अच्छा रहता है। परन्तु इसुलिन इन्जेक्शन लेने से पूर्व मरीज का २—३ दिन के लिए अस्पताल मे भर्ती रहना जरूरी होता है। जिसमे ब्लडशुगर की दिन म २—३ बार जाच करके इजेक्शन की सही मात्रा ज्ञात की जा सके क्योंकि मात्रा अधिक या कम नहीं होनी चाहिए।

सावधानिया

प्रत्येक मधुमेह के रोगी का अपनी जेब म परिचय पत्र रखना चाहिए जिसमे लिखा हो "डायबटिक" अचानक मूर्छित होने पर चीनी या ग्लूकोज का घोल पिलाए और चिकित्सक के पास पहुचा दे।

कभी—कभी दवा की अधिक मात्रा पहुच जाने या समय से भोजन न लेने से "हाइपोग्लाइसीमिया" हो जाता है और उक्त स्थिति आ सकती है। ऐसे रोगी को जेब मे थोडी चीनी की पुड़िया रखनी चाहिए। यदि साथ मे उच्च रक्तचाप होता है तो यह और जटिलताए पैदा करता है। मधुमेह व उच्च रक्तचाप ऐसी बीमारिया है जिन पर नियम से रहने, उचित व पर्याप्त भोजन करने तथा सही इलाज लेने से नियत्रण हो जाता है। अत रोगी को इसके इलाज व सयमित भोजन को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। हाँ आवश्यकतानुसार इसके उपचार की औषधि चिकित्सक द्वारा कम या अधिक की जा सकती है इसे मेटेनसथिरैपी कहते हैं।

मधुमेह जैसी बीमारी पर नियत्रण रखने मे ही टी बी जैसी घातक बीमारी का इलाज करके निदान सभव होता है। यदि मधुमेह का सही उपचार न हुआ तो टी बी का सही नियमित उपचार भी कामयाब नहीं होता।

आचार्य शिवाकान्त जी उपाध्याय का अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज राजेन्द्र नगर के तत्वावधान मे साप्ताहिक सत्सग के पश्चात आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान चितक तथा समाज सेवा हेतु समर्पित व्यक्तित्व के धनी श्रद्धेय आचार्य शिवाकान्त जी उपाध्याय का भव्य अभिनन्दन समारोह समाज के विशालकाय सभागार मे दिनाक ९ ६ ९६ रविवार को सम्पन्न हुआ।

इस पुनीत अवसर पर दिल्ली प्रदेश की आर्यसमाजो के प्रतिनिधि उपस्थित थे। जिसमे प्रमुख थे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महा मत्री श्री रामनाथ सहगल श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय सस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली के कुलपति एव प्रख्यात शिक्षा विद डा वाचस्पति जी उपाध्याय डॉ प्रेमचन्द्र श्रीधर प्रो. बलराज मधोक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती के साथ दिल्ली की अन्य समाजो के पण्डित विद्वान अधिकारी तथा सदस्यगण उपस्थित रहे।

सर्वप्रथम समारोह मे पधारे विशिष्ट व्यक्तियो एव प्रतिनिधियो ने श्रद्धेय शिवाकान्त जी उपाध्याय का माल्यार्पण द्वारा अभिनन्दन किया तथा समाज हित मे किए गए उनके योगदानो की भूरि भूरि प्रशसा की। प्रमुख आकर्षण श्रद्धेय आचार्य उपाध्याय जी का उदबोधन रहा जिसमे उन्होने उपस्थित जन समुदाय का आह्वान किया कि आज देश को आर्य समाज जैसे नैतिक एव सामाजिक राष्ट्रीयता एव सस्कृति से ओत प्रोत सगठन की प्रबल आवश्यकता है। समारोह का सचालन आर्यसमाज राजेन्द्र नगर के प्रधान श्री अशोक सहगल ने किया तथा मत्री श्री राजेश आहूजा के साथ अन्य अधिकारियो ने जिस लगन एव निष्ठा से इस समारोह की व्यवस्था को सम्भाला वह सराहनीय है। समारोह का समापन श्रीमती सुनीति देवी शर्मा के मधुर भजन एव शान्ति पाठ के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्यसमाज राजेन्द्र नगर के कार्यकर्त्ताओ ने सभा मे उपस्थित नर नारियो का सम्मान करते हुए ऋषि लगर के माध्यम से प्रीति भोज का भी आयोजन किया जिसमे सभी उपस्थित महानुभावो ने भाग लिया।

निवेदक
राजेश आहूजा मत्री

श्री रामशरण वर्मा 'सुमन' का सार्वजनिक नागरिक अभिनन्दन

दिनाक २६ ५ ९६ को आर्य समाज धामावाला देहरादून मे एक अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। देहरादून के नागरिको एव साहित्यकारो की ओर से यह सम्मान समारोह आर्य समाज के तत्वावधान मे श्री देवदत्त बाली व यशपाल आर्य जी के सयोजकत्व मे किया गया। समारोह की अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान श्री सोमनाथ ढीगरा ने की।

सर्वप्रथम प्रतिष्ठित व्यक्तियो द्वारा माल्यार्पण कर श्री रामशरण वर्मा सुमन जी का सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह आयोजन समिति के सयोजक श्री देवदत्त बाली ने श्री रामशरण वर्मा सुमन के व्यक्तित्व एव कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हे सरस्वती साधक कहकर सम्बोधन दिया। अपने सम्बोधन मे श्री बाली ने जहा श्री वर्मा की कृतियो बाईबल की समीक्षा राष्ट्रीय जागरण के स्वर सुमन सौरभ भारतीय दर्शन का स्वरूप आदि की चर्चा की वहा आर्य समाज के शुद्धि आन्दोलन मे श्री रामशरण जी वर्मा के योगदान की भूरि भूरि प्रशसा की।

श्री बाली ने सुमन जी को एक अभिनन्दन पत्र भी भेट किया। तदन्तर श्री सोमनाथ जी ढीगरा प्रधान आर्य समाज धामावाला ने भी श्री राम शरण वर्मा सुमन को एक शाल एव नारियल भेट कर उनका भावपूर्ण अभिनन्दन किया और अपने सम्बोधन में उनके स्वास्थ्य एव उज्ज्वल भावी जीवन की कामना की।

इस अवसर पर देश साहित्य के जाने माने साहित्यकार श्री कुवर सिह नेगी पदमश्री पदमभूषण भी उपस्थित थे श्री नेगी जी ने भी श्री सुमन के द्वारा किये गये सामाजिक और साहित्यिक कार्यों की चर्चा की और श्री नेगी ने रामशरण वर्मा की साधना को प्रचार व प्रसार से अलग रहते हुए सरस्वती का साधक और जन कवि कहकर सम्बोधन दिया।

समारोह के अन्त मे श्री रामशरण वर्मा सुमन ने आयोजको का आभार प्रकट करते हुए सभी को धन्यवाद दिया।

सम्पूर्ण अभिनन्दन समारोह बड़ी शालीनता एव गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ

देवदत्त बाली
उप प्रधान आर्य उप प्रतिनिधि
सभा देहरादून जनपद

पुस्तक समीक्षा

आर्य समाज के दस नियमों की व्याख्या

भाग १-२

ले श्री प्रताप सिह शास्त्री

प्रकाशक श्री सुखदेव शास्त्री महोपदेशक

दयानन्द मठ रोहतक (हर)

आर्यसमाज के नियम और उद्देश्यो का हम प्रतिदिन या सप्ताह में एक बार जरूर ही मनन चिन्तन करते हैं। परन्तु इन नियमों के पीछे महर्षि की जो दूर दृष्टि पाक भावना निहित है उस पर गम्भीरता से विचारना आवश्यक है।

समय समय पर विद्वानों ने कलम चलाकर इनका विश्लेषण किया है परन्तु आचार्य प्रताप सिहजी का सूझ कुछ निराली है उन्होने प्रत्येक नियम पर कथानको द्वारा विचारों को समझाने का प्रयास किया है इससे विज्ञ व्याख्याताओ को लाभकारी सिद्ध होगी।

प्रथम ईश्वरीय सत्ता उसके गुणों के आधान और सत्य पर आधारित वेदो की महत्ता है। विद्या की वृद्धि करना ही परम लक्ष्य है शारीरिक आत्मिक व समाजिक उन्नति करना उद्देश्य है हा सबकी उन्नति में अपनी उन्नति निहित है ऋषि के दस नियम विश्व शान्ति के आधार एव प्रत्येक प्राणी व मनुष्य के लिये कल्याणकारी है।

आर्यसमाज के इन नियमोंकी अपूर्व व्याख्या इससे पूर्व नहीं लिखी गई है

आज का विद्वान इन नियमों की व्याख्या को सूझ बूझ के साथ पढ़ेगा तो अवश्यमेव अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि भी होगी

आर्यसमाज के विद्वानों लेखकों महोपदेशकों से साग्रह निवेदन है कि वैदिक मर्यादा के सरक्षक विद्वान विचारक इस ग्रन्थ की व्याख्या को अवश्य पढे। और अपने सुझाव भी दें

सुधीजन चिन्तन कर नियमो का सही विश्लेषण करेंगे तथा विद्वान लेखक श्री प्रताप सिह शास्त्री अपने को धन्य मानेंगे।

प्रकाशक श्री शास्त्री जी ने उन्होने इस ग्रन्थ को छापकर उपयोगी बनाया है जन जन तक यह ग्रन्थ पहुचे और आर्यजन इसका पठन कर अपनी ज्ञान की पिपासा शान्त करें

डा सचिच्दानन्द शास्त्री

आर्यों ! देश बचाओ

धू-धू कर जल रहा देश दावानल फूट रहा है।
रक्षक भक्षक बना देश का प्रहरी लूट रहा है।।
निर्बल निर्धन सुनो सबका पी अब धूट रहा है।
अगर न जागे तो निश्चित ये भारत टूट रहा है।।
नेताओ ने धर्म कर्म को मित्रो त्याग दिया है।
कुर्सी के बन गए दास ये भारी पाप किया है।
अवसरवादी बने स्वार्थी लालच धार लिया है
जिससे हो कल्याण वेद अमृत को नही दिया है।।
जनम जाति का रोग भयकर बढनित यहा रहा है।
दुश्मन है भाई का भाई पनपी फूट महा है।।
इसी फूट के कारण हमने अब तक कष्ट सहा है।
करो फूट का नाश धम ग्रन्थो मे साफ कहा है।।
लेकिन ये भारत के नेता धर्म विसार चुके है
कायरता ली धार इन्होने हिम्मत हार चुके है।।
मै मेरी मेरा मरे की चिता इहे लगी है।
पक्षपात करते है हरदम दौलत फकत सगी है।।
प्यारी भारत माता वीरो तुम्हे पुकार रही है।
रावण ने ली घेर जबानो पावन आज मही है।।
बनो राम हनुमान आर्यों आगे कदम बढाओ।
गौतम कपिल कणादि जैमिनी का तुम देश बचाओ।।
देश धर्म की रक्षा करना है कर्त्तव्य हमारा।
कायर मानव मरा हुआ है क्यो यह नही विचारा।।
जिन्हे देश से प्यार नही है उनका वश मिटादो
नन्दलाल निर्भय दुष्टा के वीरो शीष उडा दो।।

प. नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक
ग्राम व पोस्ट बहीन जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

सामग्री तथा सुझाव आमत्रित।

आर्य जगत के सुविज्ञ पाठको को जानकर हर्ष होगा कि फिल्मी जगत के कुशल लेखक श्री नसीम ज निरपुडा तथा श्री धनकुमार आर्य शास्त्री के मन्त्रयत्न से ऋषि दयानन्द पर ट वी सीरियल की योजना सम्मिलित है इस विषय से सम्बन्धित सामग्री एव पवित्र सुझाव श्री धनकुमार आर्य शास्त्री ग्राम पो निरपुडा जि मेरठ के पते पर सादर आमत्रित है पाठक गण उपयोगी विषय सामग्री लेखन तथा विचार और सुझाव भेजकर कृतार्थ करे

भवदीय
सतीश कुमार आर्य मन्त्री
आर्य समाज दयानन्दमार्ग
निरपुडा मेरठ)

मुस्लिम युवक तथा दो युवतियों ने हिन्दु धर्म अपनाया

कानपुर आर्य समाज मन्दिर गोविन्द नगर में समाज व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने एक २८ वर्षीय शिक्षित मुस्लिम युवक को उसकी इच्छानुसार वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) की दीक्षा दी। यज्ञोपवीत (जनेऊ पहनाने के बाद उसका नाम सैयद अब्दुल रहमान से बदलकर अनिल कुमार रखा। अनिल कुमार ने आर्य समाज का प्रचारक बनने की इच्छा प्रकट की।

इससे पूर्व एक एम ए तक शिक्षित मुस्लिम युवती व एक इसाई युवती ने हिन्दू धर्म अपनाया। उनके नाम शाहीन से जागृति तथा शेबी इब्राहीम से शशि रखे गये श्री देवीदास आर्य ने बाद मे उनकी इच्छानुसार उनके विवाह क्रमश नवीन कुमार व शिव कुमार से सम्पन्न कराये दोनों ने [illegible] संस्कार मे पति के साथ आजीवन साथ रहने के सकल्प की भूरि भूरि प्रशसा की।

बाल गोविन्द आर्य मन्त्री

आर्य समाज आर्य नगर (अमारा) का प्रथम वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज आर्य नगर (अमारा) बागपत उ प्र का प्रथम वार्षिकोत्सव श्री रमेशचन्द्र विद्यार्थी भरूवा सुमेरपुर व श्री शिवप्रसाद नेता जी प्रधान आर्य समाज धुन्धपुर की सयुक्त अध्यक्षता में विगत ८ ९ १० जून को बड़ी धूम धाम एव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

जिसके उपलक्ष्य में ७ जून को विशाल शोभायात्रा नगर मे मुख्य मार्गो से निकाली गयी तथा ३ जून से चतुर्वेद शतकम महायज्ञ किया गया।

इस समूचे कार्यक्रम के सयोजक व सचालक आचार्य राममुफल शास्त्री हाँसी ने अपने पैतृक गाव में वैदिक धर्म एव महर्षि दयानन्द की जय के नारों से नगर को गुजायमान करते हुए शान्ति पाठ के साथ उत्सव को सम्पन्न करवाया। पश्चात ११ जून को प्रात ८ बजे से दोपहर २ बजे तक ऋषि लगर का आयोजन किया गया। जिसमें नगर के सभी लोगों ने सपरिवार प्रीति भोज किया। जो दृश्य अवर्णनीय रहा।

कानपुर देश की आजादी के अर्ध शताब्दी के बीत जाने के बाद दलित ईसाइयों को आरक्षण देना एक राजनैतिक षडयन्त्र है। यह देश व देश के सविधान के विरुद्ध भी है। सयुक्त मोर्चा की साझा सरकार द्वारा ईसाई दलितों को आरक्षण देने का निश्चय करना तथा इस सम्बन्ध में कानून बनाने के लिये ससद में बिल पेश करना तुष्टीकरण की पराकाष्ठा है हिन्दु समाज को इस षडयन्त्र को असफल करने के लिय उनके आरक्षण के समर्थक राजनैतिक दलों से बगावत करना चाहिये

उपरोक्त विचार केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने आर्य समाज द्वारा आर्य समाज हाल गोविन्द नगर में आयेजित समारोह की अध्यक्षता करते हुये व्यक्त किये।

श्री आर्य ने आगे कहा कि जब इसाई यह दावा करते हैं कि हमारे मजहब में कोई अगडा पिछडा नहीं हैं तब ऐसी स्थिति में कुछ राजनैतिक दलों द्वारा आरक्षण की वकालत करना केवल वोट बैंक बनाने का कुचक्र है। आर्य समाज इसको किसी भी दशा में स्वीकार नहीं करेगा।

समारोह में उक्त आशय का एक प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किया गया। समारोह में मुख्य रूप से सर्व श्री देवीदास आर्य शान्तिप्रकाश आर्य बालगोविन्द आर्य स्वामी प्रज्ञानन्द सरस्वती प जगन्नाथ शास्त्री शुभकुमार वोहरा श्रीमती दर्शनाकपूर आदि ने प्रमुख रूप से प्रस्ताव के समर्थन में विचार व्यक्त किये। सभा की अध्यक्षता श्री देवीदास आर्य तथा सचालन श्री बालगोविन्द आर्य ने किया

बाल गोविन्द आर्य
मन्त्री

वधु की आवश्यकता

अग्रवाल गोयल ४० वर्षीय सम्पन्न विधुर ४ बच्चो के पिता बड़ा लडका १५ वर्ष हेतु घर बच्चो का सम्हालने वाली नि सन्तान सजातीय बेसहारा जीवन सगिनी चाहिये। विधवा तलाक शुदा स्वीकार्य। सम्पर्क करें
सुभाष चन्द लोहे वाले
धर्म प्रकाश आर्य
गली न ५ आर्य नगर कोसी कलाँ (मथुरा)

अन्त्येष्टि-संस्कार व शान्ति यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज हाजीपुर के मन्त्री श्री अरूण कुमार जी के परम पूज्य पिता श्री चन्द्रदेव सिंह का अन्त्येष्टि सस्कार दिनाक ७ ५ ९९ मगलवार को पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार आर्य विद्वानों द्वारा सम्पन्न हुआ। इनकी आत्मा को शान्ति हेतु तीन दिनों तक वैदिक यज्ञ सम्पन्न होते रहे तथा दिनाक २६ ५ ९९ को एक वृहद शान्ति यज्ञ भी आयोजित हुआ। इसमें हजारों हजार नर नारियों ने भाग लेकर दिवगत आत्मा के प्रति श्रद्धान्जली अर्पत किए प्रातिभोज के साथ दरिद्रनारायण भोज एव उन्हें वस्त्र वितरित किये गये इस सम्पूर्ण कार्यक्रम में समस्त आर्य सदस्यों का भावपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

प्रवेश सूचना

माना हवाई अड्डा रायपुर के निकट नवनिर्मित यह गुरूकुल विगत वर्ष से चल रहा है १ जुलाई से ३१ जुलाई तक प्रवेश प्रारम्भ है। यहा आधुनिक शिक्षा के साथ महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट वेद व्याकरण दर्शनशास्त्र आदि समस्त विषयों का अध्ययन कराया जाता है। प्रवेश की योग्यता पाचवी कक्षा उत्तीर्ण छात्र से लेकर आठवीं तक आवास एव शिक्षा का व्यवस्था नि शुल्क है अत सज्जन अपने बच्चो का प्रवेश दिलाना चाहे व विवरण [illegible] निम्न पते से [illegible]

[illegible]
[illegible] आर्ष [illegible]
आर्य नगर [illegible]
[illegible] ४७२ १ माना
जि रायपुर (म प्र)

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 30 6 96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/96
R N No 626/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 27/28 6 1996

आर्य समाज त्रिकुटानगर मे

वेद प्रचार

आर्य समाज त्रिकुटानगर से जम्मू मे दिनाक ३१ मई एव १ २ जून को हर वर्ष की तरह कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम मे वेदरत्न आचार्य रामप्रसाद जी वेदालकार (हरिद्वार) से पधारे थे। इनका प्रतिदिन प्रात साय वेदोपदेश होता था। प कालिदास जी एव बोधराज जी के भजनापदेश अत्यन्त सफलता पूर्वक चलते रहे यज्ञ के ब्रह्म उत्साही नवयुवक श्री ब्र वीरेन्द्र कुमार शास्त्री एम ए थे। इन्होनें मधुर वेद मन्त्रो के गान से श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध किया। कार्यक्रम के प्रथम दिन से ही सभा भवन खचाखच भरा रहा। वेदी यजमानों से ठसमठस भरी हुई होती थी। अन्तिम दिन पूर्णाहुति के तुरन्त बाद यजमानो को आशीर्वाद दिया। आचार्य जी ने सभी को प्रसाद के रूप मे पुस्तकें वितरित की। ऋषि लगर के साथ ही कार्यक्रम की प्रशसा की। दानी महानुभावो का धन्यवाद समाज के मन्त्री महोदय श्री नरेन्द्रसहगल ने किया।

भवदीय

प्रो चन्द्रमोहन कोहली

चरित्र निर्माण दिवस का आयोजन

आर्य समाज नारायण विहार की ओर से निर्मल छाया परिसार मे किशोर कल्याण बोर्ड के प्रागण मे चरित्र निर्माण दिवस का आयोजन ४ मई १९९६ शनिवार को किया गया जिसकी अध्यक्षता प्रातीय महिला सभा की वरिष्ठ उपाध्यक्षा श्रीमती शकुन्तला आर्या ने की।

वेद के मत्रो और आहुतियो से सारा परिसर सुरभित हो उठा। कन्याओ ने अन्यन्त श्रद्धा और निष्ठा से यज्ञ किया। तदन्तर प्रभु भक्ति रस के सुन्दर गीतों से वातावरण सराबोर हो उठा।

नारायणा की श्रीमती प्रेमलता जी ने कर्मफल पर अपने विचार प्रस्तुत किए। श्रीमती शकुन्तला आर्या ने मानव जीवन की उपयोगिताओ पर बल देते हुए कहा चरित्र बल से ही परिवार समाज एव राष्ट्र की उन्नति सभव है।

प्रधान श्रीमती सन्तोष वधवा ने कन्याओ को कर्त्तव्य–पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा दी।

इस आध्यात्मिक आयोजन में निरीक्षण गृह की कर्मचारियो ने भी भाग लिया। अन्त मे आर्य समाज नारायण विहार की ओर से यज्ञ शेष एव वैदिक साहित्य वितरित किया गया।

प्रधाना सतोष वधवा मन्त्रिणी–सरला कोहली

औद्योगिक महिला पाठ्यक्रम

परीक्षा परिणाम शत्–प्रतिशत

श्री महर्षि दयानद शिक्षण समिति के सचिव श्री कैलाशचद पालीवाल ने बताया कि सस्था के द्वारा सचालित औद्योगिक महिला प्रशिक्षण पाठ्यक्रम क अतर्गत तकनीकी शिक्षा मण्डल भोपाल के द्वारी बी टी की परीक्षा ली गई।

जिसमे सस्था के नियमित २९ छात्राए सम्मिलित हुई। जिसमें से २८ प्रथम श्रेणी और १ द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुई। कु गीताजलि पाटीदार और कु चेतना पड़ाडा विशेष योग्यता से पास हुई। इसी प्रकार ११ स्वाध्यायी बैठी जिसमे १ प्रथम श्रणा १ द्विनाय श्रणा म उत्तीर्ण हुई। श्रामती सामा बराल विशेष योग्यना से पास हइ मस्था की व्यवस्थापिका श्रीमती नलिना तावस प्रधान अध्यापिका श्रीमती पन्मा राठौर बधाई क पात्र हैं

शोक समाचार

आय समान मुजफ्फरपुर क प्राण भूत्पूर्व प्रधान एव मत्री उत्तर बिहार आर्य सभा के महामत्री स्वाध्याय–निणय मासिक क प्रधान सम्पादक अर्थशास्त्री एव शिक्षाविद प्रा (डा) आमप्रकाश ब्रह्मचारी का दिनाक ६ ०६ की रात्रि क उत्तरार्द्ध मे भयकर महारोग रूपा महाकाल न असमय म ही धर दबोचा दिनाक ६ ६ ९६ का अपराह्न मे उनक पार्थिव शरार को वैदिक रीत्यानुसार स्थानीय सिकन्दरपुर अखाडाघाट) का श्मशान भूमि म सस्कारित कर पचतत्त्व म विलीन कर दिया गया आर्य कल शाकाकुल अपूरणाय क्षति उनके शोक सतप्त परिवार का सान्त्वना एव आत्मा की शान्ति हतु परमश्वर स बारम्बार प्राथना

वार्षिकोत्सव एव वैदिक महायज्ञ

हर्ष के साथ सूचित करना है कि आर्य समाज नाथ नगर का वार्षिकोत्सव एव वैदिक महायज्ञ (२७ ५/९६ ३० ५ ९६) बडे धूम धाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस महोत्सव को सफल बनाने में समाज की महिलाओं की प्रमुख भूमिका रही तथा उपस्थिति भी महिलाओं की ही अधिक देखी गई। इन दिनों वैदिक साहित्य की बिक्री भी काफी हुई।

आमत्रित आर्य विद्वानों ने भिन्न भिन्न विषयों पर अपना वैदिक दृष्टिकोण प्रबल रूप से प्रस्तुत किया जिससे यहा के नागरिकों में वैदिक सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा और ठोस हो गई है और आर्य समाज के प्रति झुकाव भी बढ गया है। आगे का योजना ग्राम स्तर तक आर्य समाज की स्थापना का रखा गया है।

राष्ट्र भाषा हिन्दी को प्रोत्साहन दे

आर्य समाज उन्नाव का निर्वाचन

प्रधान	*श्री शि[illegible]*
मत्री	*श्री रवि[illegible]*
कोषाध्यक्ष	*श्री रमाशकर त्रिवेदी*

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली–2 से प्रकाशित

दूरभाष : ३२७४७७१, ३२६०९८५ आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये वार्षिक शुल्क ५० रुपए एक प्रति १ रुपया
वर्ष ३५ अंक २१ दयानन्दाब्द १७२ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ आषाढ़ कृ०-७ सम्वत्-२०५३ ७ जुलाई १९९६

पाकिस्तानी प्रधानमन्त्री द्वारा मुसलमानों से मांसाहार छोड़कर शाकाहारी बनने की अपील

पाकिस्तान की प्रधानमन्त्री श्रीमती बेनजीर भुट्टो ने अपने एक लेख के द्वारा सारे विश्व के लोगों से एक मार्मिक तथा सामाजिक अपील करते हुए कहा है कि उम्र बढ़ाने तथा उसे निरोगी रखने के लिए मांसाहार का त्याग या उसमें कमी करना अत्यन्त आवश्यक है।

"मांसाहारी भेड़िए की तरह हो गए हैं, अब भेड़ियापन के दिन लदने को हैं।"

"यदि हमने मांसाहार में कमी नहीं की तो निश्चित रूप से अपने एक बहुत बड़े कीमती संसाधन पशुधन व अपने स्वास्थ्य से हम हाथ धो बैठेंगे।"

श्रीमती भुट्टो के इस लेख को यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

सम्पादक

आर्य जन संगठित होकर देश को विघटन से बचायें

पं. वन्देमातरम् रामचन्द्र राव तथा डा. सच्चिदानन्द शास्त्री बम्बई के दौरे से वापस

दिल्ली-२ जुलाई। सार्वदेशिक सभा के प्रधान पं. वन्देमातरम् रामचन्द्र राव तथा सभामंत्री डा. सच्चिदानन्द शास्त्री आज बम्बई के दौरे से यहां पहुंचे। बम्बई में आर्य कार्यकर्ताओं के साथ आर्य समाज के संगठन को सुदृढ़ करने सम्बन्धी गम्भीर विचार विमर्श किया गया। बैठक में अन्य आर्य नेताओं के अतिरिक्त सभा के भूतपूर्व प्रधान सेठ प्रताप सिंह शूर जी वल्लभदास जी भी सम्मिलित थे। सभा प्रधान श्री वन्देमातरम् जी ने वर्तमान गम्भीर परिस्थितियों का उल्लेख करते हुये आर्य नेताओं से अपील की कि वे सगठित होकर आर्य समाज की प्रगति तथा देश को विघटन से बचाने के लिये हर सम्भव प्रयास करे। इससे पूर्व दोनों आर्य नेताओं का बम्बई पहुंचने पर वरिष्ठ आर्य कार्यकर्ताओं ने भव्य स्वागत किया। संगठनात्मक दृष्टि से आर्य नेताओं की यह यात्रा अत्यन्त सफल रही।

जब ब्रिटिश प्रधानमंत्री जॉन मेजर ने 'पागलपन से भरा, खराब तथा खतरनाक' जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया था तो उनका आशय यूरोपीय आर्थिक समुदाय के देशों द्वारा ब्रिटेन के पशुओं के मांस तथा पशुओं के आयात पर प्रतिबंध लगाए जाने के विरुद्ध अपना रोष प्रकट करना था। वस्तुतः यूरोपीय बाजार में ब्रिटेन पर इस प्रकार के प्रतिबंध से उसकी अर्थव्यवस्था पर एक आघात तो था ही।

ब्रिटेन के पशुओं के मांस के आयात पर विभिन्न देशों द्वारा लगाए गए प्रतिबंध के कुछ समय बाद ही हमने देखा था कि यूरोपियन समुदाय के देशों के दो प्रमुख नेता लंदन में मांस से बने व्यंजनों को खा रहे थे। इसका उद्देश्य शायद यही था कि लोगों में ब्रिटेन के मांस व्यापार के प्रति विश्वास बढ़े।

ब्रिटेन में गऊओं में पागलपन की बीमारी की चर्चा होने के उपरांत इसे जनस्वास्थ्य के लिए एक गंभीर खतरे के रूप में माना जा रहा था हालांकि अभी तक यह बात शायद सिद्ध नहीं हो पाई है। मास मानव स्वास्थ्य के लिए कितना जरूरी है इस बारे मे अलग-अलग विचार हैं। वैसे पाकिस्तान में आमतौर पर एक कहावत प्रचलित है,"जब आदमी जवान होता है तो वह मांस को खाता है। जब कोई व्यक्ति ४० की उम्र पार कर जाता है तो फिर मांसाहारी भोजन उस आदमी को ही खाने लगता है।"

मुझे याद है जबकि मैं छोटी थी तो उस समय पाकिस्तान में जीवनशैली काफी भिन्न थी। कुछ चीजों में व्यापक परिवर्तन एक अच्छी दिशा में आया है लेकिन पशुओं के मास पर हमारी भारी निर्भरता अभी तक घटी नहीं है।

जब मैं बड़ी हो रही थी तो उस समय मांस का उपयोग कभी-कभी विशेष अवसरों पर किया जाता था। मुस्लिम त्यौहार ईद व अन्य पर्व इस प्रकार के मोके होते थे।

हमारे अपने घर में मांसाहारी भोजन सप्ताह में एक या दो बार ही बनता था, अन्यथा अन्य दिनों मे हम चावल, मसूर की दाल तथा सब्जियो का उपयोग करते थे।

लेकिन अब अधिकाश मध्यवर्गीय परिवारों मे मासाहार एक प्रकार से सामाजिक प्रतिष्ठा का मापदंड बन गया है। इस प्रकार के भोजन को आमतौर पर समाज मे आर्थिक सफलता का मापदड भी माना जाता है।

मैं अभी भी अपने बचपन व युवावस्था के दिनों के भोजन की आदतो की अभ्यस्त हू। मैं प्रधानमंत्री के रूप में सरकारी भोजों में इस बात पर बल देती हूं कि मासाहारी भोजन की अपेक्षा मसूर की दाल तथा अन्य शाकाहारी भोजन ही परोसे जाए। मैं स्पष्ट रूप से कहू तो मैं शाकाहारी नहीं हू लेकिन इस बात को अनुभव करती हू कि मानव स्वास्थ्य के लिए मास के बजाय दालें तथा शाकाहारी भोजन कहीं स्वास्थ्यवर्द्धक तथा जल्दी पच जाने वाला होता है। बौद्धिक रूप से भी देखा जाए तो मासाहारी भोजन करना न तो स्वास्थ्य की दृष्टि से और न ही विवेक की दृष्टि से उचित है।

शेष पृष्ठ २ पर

सम्पादक- डा.सच्चिदानन्द शास्त्री

दलित ईसाईयों को आरक्षण के विरूद्ध सभा में एक प्रकोष्ठ की स्थापना

श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव द्वारा प्रधानमंत्री को पत्र

नई दिल्ली ४ जुलाई

दलित इसाईयो को आरक्षण दने सम्बन्धी बिल के आगामी वजट सत्र मे पेश होने की सम्भावनाओ को देखते हुये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य समाज द्वारा किये जाने वाले आन्दोलन की रूपरेखा तैयार करने के लिए एक विशेष प्रकोष्ठ की स्थापना कर दी है। यह पकोष्ठ सभा के उपप्रधान श्री सूयदेव जी की अध्यक्षता मे कार्य कर रहा है। २२ जून को हनुमान रोड आर्य समाज मे हुई बैठक के बाद यह प्रकोष्ठ कई बैठक कर चुका हैं जिसमे कानूनी मुद्दो पर विचार विमर्श किया जा रहा है जिससे इस बिल के लागू होने की अवस्था मे इसे भारतीय सविधान के विभिन्न प्रावधानो के तहत उच्चतम न्यायालय मे चुनौती दी जा सके।

इस बीच सभा प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी ने सविधान के विभिन्न पहलुओ पर कानूनी विशेषज्ञो द्वारा गहन विचार विमर्श के बाद एक विस्तृत पत्र वर्तमान प्रधान मत्री श्री हरदनु हल्ली डोडे गौडा देवगौडा को भी लिखा है जिसम अग्रजो के आगमन काल से लेकर अत तक की घटनाओ से यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि ईसाईयों की नियत सदैव ही इस दिशा मे अपनी सख्या बढाकर इस देश की राजनीति को प्रभावित करने की रही है। इतिहास अपनी पुनरावृत्ति अवश्य करता है इस कथन को सत्य साबित करते हुए ब्रिटिश सत्ता के स्थान पर अब अमेरिका का ईसाई मण्डल मदर टेरेसा जैसी कुटिल समाज सेविकाओ तथा सगठनो के मध्यम से उसी नियत के क्रियान्वयन मे लगा हुआ है।

श्री वन्देमातरम जी ने प्रधानमत्री से आग्रह किया है कि इन सब घटनाओ को ध्यान मे रखते हुये वे इस सवन्ध मे विधेयक तैयार करवाने की जल्दवाजी न करे और इस विचार को त्यागने का प्रयास करे अन्यथा मजबूर होकर आर्य समाज को देशव्यापी आन्दालन के लिये बाध्य होना पडेगा।

दलित ईसाई आरक्षण विरोधी प्रकोष्ठ ने अपने जन जागृति अभियान के प्रथम चरण के विभिन्न राजनैतिक दलो के नेताओ से मिलकर उन्हे विस्तृत जानकारी दन की योजना बनायी है।

मुसलमानों से शाकाहारी बनने की अपील

पृष्ठ १ का शेष

इस सबध मे मेडिकल विज्ञान के प्रमाण भी स्पष्ट सकेत देते हैं। उच्च रक्तचाप हृदय रोग कोलस्ट्रोल की बढती मात्रा आदि व्याधिया अधिक मासाहार के कारण ही होती हैं। आखिर जब पशु मासाहारी चारा खाकर बीमार पड जाते हैं जैसे कि गऊओ के पागलपन के मामले मे हुआ बताया जाता है तो निश्चित रूप से उसका असर लोगो पर पडना स्वाभाविक ही है।

पाकिस्तान मे ही अकेले कराची में १७५ लाख पशुओ–पक्षियो का रोजाना वध किया जाता है। देश में मास की कीमत आसमान को छू रही है। आप यकीन करे या नही लेकिन यह सच है कि आस्ट्रेलिया से आयतित मास पाकिस्तान की अपेक्षा सस्ता पडता है।

पाकिस्तान ही अकेला मासभक्षक नहीं है। हाल ही मे मै जब मध्य एशिया के देशो मे गई थी तो वहा हमारे एक मेजबान ने कहा था "हम भेडियो की तरह हो गए हैं।"

शायद अब हमारे 'भेडियापन के दिन लदने को हैं। इगलैंड मे 'गऊओ मे व्याप्त पागलपन की बीमारी हमारी आखे खोल देने के लिए काफी हैं। अब सोचना चाहिए कि स्वास्थ्य ही सम्पत्ति है। अगर हमने मासाहार म कमी नहीं की तो हम निश्चित रूप से अपने एक बहुत बडे कीमती ससाधन पशुधन व अपने स्वास्थ्य से हाथ धो बैठेगे।

अब मैंने सकल्प किया है कि अपने बच्चा के लिए मे उसी प्रकार का शाकाहारी भोजन उपलब्ध कराऊगी जिस प्रकार के शाकाहारी भोजन पर मैं आमन्टैर पर पली और बडी हुइ हू। मेरे बच्चे अब भुन हुए आलू, सब्जिया चावल व मसूर की दाल खीर आदि बडे चाव से खाते हैं।

दो सप्ताह पूर्व मैने अपना मेडिकल चैकअप करवाया तथा मुझे रिपोर्ट मिली उससे मैं अत्यत खुश हू। अपने अत्यत तनावपूर्ण तथा व्यस्त कार्यक्रमो के बावजूद मुझे स्वास्थ्य ठीक होने का प्रमाण पत्र दिया गया। मुझे इस बात का विश्वास है कि यह सब मेरे द्वारा अपने भोजन के कारण ही सभव हो सका है। जब मेरे बच्चे मेरी उम्र तक पहुचने तो मैं चाहती हू कि वे अपने भोजन की इसी प्रकार की आदते बनाए रखें तथा उनकी उम्र बहुत लम्बी हो।

अगर आप भी अपने जीवन के वर्ष बढाना चाहते हैं तो इस बात को ध्यान मे रख कि आपके भोजन की प्लेट या थाली मे खाने की क्या चीजें हैं ? मासाहार को घटाना या उसे छोड देना कोई पागलपम का विचार नहीं है।

१६ जून १९९६ को लन्दन के इलिग टाउन हाल के विशाल सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह मे ग्रेट ब्रिटेन की सभी आर्य समाजों तथा विभिन्न हिन्दू सगठनो के प्रतिनिधियो ने युग पुरूष महर्षि दयानन्द को श्रद्धाजलि अर्पित की। समारोह का आयोजन काग्रेस आफ आर्य समाज एब्रोड तथा डी ए वी की ऐजूकेशन सोसाईटी यू के के तत्वावधान मे किया गया।

कार्यक्रम ध्वजारोहण से प्रारम्भ हुआ जिसमें आर्य समाज लन्दन की वेद पाठ ग्रुप तथा अन्य बहनो न ध्वजगान तथा सगठन सूक्त का पाठ किया। समारोह के सचालक श्री गिरीश चन्द्र खोसला ने CASA का परिचय देते हुऐ बताया कि सार्वदशिक सभा के आर्शीवाद से विदेशी प्रतिनिधि सभाओ का यह सगठन पिछले ३ वर्षो स भारत से बाहर की आर्य सस्थाओ को एक सूत्र म पिरोन के लिये परिश्रम कर रही है जिससे की सभी सस्थाऐ एक मच पर एकत्रित होकर अपने अनुभव समस्याए प्रचार कार्यों पर विचार करत हुए सामूहिक योजना बना सके तथा सबका आपस मे सम्पर्क रहते हुऐ अपने अपने स्थानो पर आर्य समाज का कार्य सुचारू रूप से होता रहे। इसी योजना के CASA के प्रतिनिध मडल ने गत वर्ष पूर्वी अफ्रीका दक्षिणी अफ्रीका तथा ब्रिटेन की सभी समाजो का दौरा किया तथा लगभग ४० बैठको मे भाग लिया।

डी ए वी सोसाईटी के प्रधान श्री रोशन लाल भडारी ने प्रतिनिधियो का स्वागत करते हुऐ बताया कि शीघ्र ही ब्रिटेन मे D A V की गतिविधियो को आगे बढाया जायेगा। आर्य समाज लन्दन वेद पाठ की अध्यक्ष श्रीमति सावित्री छाबडा आर्य समाज मिडिल सभा के प्रधान श्री मदन मोहन शर्मा आर्य समाज बरमिघम के प्रधान श्री चन्द्र कान्त प्रिजा आर्य समाज कावेन्ट्री के मत्री श्री रमेश ओबराय वैदिक कलचर के प्रधान श्री यशपाल गुप्ता ने अपनी अपनी सस्थाओ का परिचय दते हुऐ गतिविधियो तथा भावी कार्यक्रमो के बारे मे बताया। CASA के प्रचार मत्री श्री चमन लाल गुप्ता ने अपने प्रभावशाली भाषण मे बताया कि आर्य समाज तथा हिन्दू सस्थाओ में बहुत भ्रातिया फैली हुई हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हिन्दुओ की रक्षा तथा उन्नति के लिये अपना बलिदान दे दिया। केवल पूजा पद्धति की बात को लेकर हम कभी अलग नहीं हो सकते बाकी सब कार्यक्रम हमारे एक हैं तथा हमे मिल कर कार्य करना होगा।

दूसरे अधिवेशन मे वैदिक वक्ताओ ने विभिन्न विषयो पर अपने विचार रखे तथा कहा कि इन विचारो को शीघ्र ही कार्यान्वित करना चाहिये। विषय इस प्रकार थे–सस्कार तथा यज्ञ पद्धति में एक समता आर्य समाज के नियमो का अग्रेजी मे शुद्ध सरल अनुवाद तथा विश्व व्यापी प्रसारण केवल सुशिक्षित व प्रशिक्षित विद्वानों को ही सस्कार करने की अनुमति आर्य प्रतिनिधि सभा का पुनर्गठन आर्य समाज के कार्यक्रम में सगीत व योग का समावेश युवकों का समाज के प्रति आकर्षण तथा हिन्दु सस्थाओं के साथ पारस्परिक सम्बन्ध आदि। उन्होने प्रार्थना की कि CASA इस कार्य को हाथ में लेकर इसका सार्वभौम क्रियान्वयन करे।

अन्त मे युवा कार्यक्रम में नीरज पाल का भाषण अन्नपूर्णा मिश्रा का गयन तथा नेहा ढढगल का नृत्य प्रस्तुत किया गया जिसे बहुत सराहा गया।

सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि प्रतिवर्ष इसी प्रकार का आयोजन दूसरे नगरों मे किया जाये सभा के सामने आर्य समाज बरमिंघम के सरक्षक श्री गोपाल चन्द्र प्री का प्रस्ताव रखा गया कि अगला सम्मेलन बरमिंघम में हो। करतल ध्वनि से इस प्रस्ताव का समर्थन करते हुऐ इसे पारित किया गया।

धर्म-रक्षा के लिए संस्कृत की प्रतिष्ठा जरूरी

सेकुलरों द्वारा संस्कृत को खत्म करने की साजिश

क्या धर्मनिरपेक्ष होने के लिए हिन्दू विरोधी होना जरूरी है ? कांग्रेस की गढ़ी 'सेकुलरिज्म' से उपजी यह पीड़ा न जाने कितने राष्ट्रवादी चिन्तकों व राष्ट्रीय सरोकारों से जुड़े लोगों को भोगनी पड़ रही है। आज तो अपने को ज्यादा से ज्यादा सेकुलर दिखाने के लिए हिन्दुत्व पर कडे से कड़ा आघात करना मानों एक फैशन बन गया है। हिन्दुत्व से जुडे दूसरे प्रतिमानो की तरह संस्कृत को भी अपना अस्तित्व बचाने के लिए स्वतत्र भारत में ऐसे ही कई आघातों से जूझना पड़ रहा है। इससे बडा दुर्भाग्य क्या होगा कि विद्यालयों में संस्कृत पढ़ाया जाना कांग्रेसी सरकारों को साम्प्रदायिक नजर आने लगा और निराधार तर्कों के आधार पर येन-केन प्रकारेण संस्कृत शिक्षण को त्रिभाषा फार्मूले से बाहर कर दिया गया।

भारतीय जीवन में संस्कृत का महत्व कितना रचा-बसा है, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि १८५७ के प्रथम स्वाधीनता समर में ब्रिटिश राज के विरूद्ध भारतीयों का भीषण आक्रोश अंग्रेज साम्राज्यवादियों के मन-मस्तिष्क पर इस कदर छाया रहा कि क्रान्ति विफल हो जाने के बाद ब्रिटिश शासकों ने पूरे घटनाक्रम की समीक्षा करते हुए जो निष्कर्ष निकाले और लार्ड मैकाले ने रानी विक्टोरिया को जो रिपोर्ट भेजी उसमें सबसे प्रमुख बिन्दु था भारत में संस्कृत की शिक्षा को समाप्त करना, क्योंकि भारतीयों में राष्ट्रवाद व अस्मिता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा संस्कृत साहित्य से ही निःसृत रही है। अंग्रेजों की दृष्टि में संस्कृत ही भारतीयों की चेतना सत्ता का प्राण तत्व थी, यदि उस स्रोत को ही सुखा दिया जाए तो राष्ट्रीय स्वाभिमान के लिए जूझने की ताकत कहा से मिलेगी ?

हालांकि पंडित जवाहर लाल नेहरू स्वतंत्र भारत में भी यह वक्तव्य तो देते रहे कि 'भारत का महानतम खजाना संस्कृत भाषा और साहित्य है' लेकिन सत्ता के लिए भारतीय समाज में अपनी लोकप्रियता बनाए रखने के उद्देश्य से राष्ट्रीय प्रतिमानों से जुडे होने का दिखावा करने की चतुराई से ज्यादा, नेहरू के इस वक्तव्य की कोई सार्थकता नहीं हो सकती, क्योंकि उनके प्रधानमंत्री रहते ही केन्द्र सरकार ने संविधान की धारा ३५१ का खुला उल्लंघन करते हुए न केवल संस्कृत बल्कि हिन्दी की भी जड़ों पर प्रहार किया और पं. नेहरू की बनाई नीतियों व भाषायी राजनीति के दुष्परिणाम भोगते हुए आज ये दोनों भाषाएं अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही हैं।

संस्कृत के विरूद्ध सेकुलर व अंग्रेजी मानसिकता वाली ताकतों की साजिश इस कदर जारी रही कि अभी दो वर्ष पूर्व केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् (सी. बी. एस. ई.) ने अपने पाठ्यक्रम से संस्कृत को हटाने का पूरी तरह मन बना लिया। इसके विरोध में मामले को उच्चतम न्यायालय में ले जाने पर परिषद् ने जो तर्क दिया वह इतना हास्यास्पद व बेबुनियाद है कि सर्वोच्च न्यायालय ने अपने फैसले में संस्कृत को हटाने की साजिश की न केवल भर्त्सना की, बल्कि इस प्रयास में रत तत्वों को कड़ी फटकार लगाई। परिषद् ने अपने पक्ष में तर्क दिया कि 'पाठ्यक्रम' में संस्कृत को चयनित भाषा का दर्जा देने से अरबी, फारसी को भी वैसा दर्जा देना पड़ेगा क्योंकि यदि संस्कृत को यह दर्जा दिया गया और अरबी, फारसी को नहीं दिया तो यह धर्मनिरपेक्षता के विरूद्ध होगा। इसके विपरीत २४ अक्टूबर १९९४ को सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय सुनाते हुए न्यायमूर्ति ने कहा कि 'संस्कृत' भाषा की शिक्षा देना धर्मनिरपेक्षता के विरूद्ध कहा जाना आधारहीन व गलत है। संस्कृति ही वह बांधने वाला धागा है जिससे सम्पूर्ण भारत एकसूत्र में है और भारतीय संस्कृति की विरासत संस्कृत भाषा है।'

न्यायालय ने आगे कहा कि 'भारत की आधिकारिक शिक्षा नीति के अनुसार संस्कृत को अरबी-फारसी के समकक्ष नहीं माना जाएगा, बल्कि संस्कृत का विशेष स्थान है इसलिये केवल संस्कृत को चयनित विषय के रूप में पाठ्यक्रम में रखा जाना संविधान के नियम का उल्लघन नहीं है। संविधान के अनुछेद ३५१ में स्पष्टत कहा गया है कि हिन्दी के प्रसार को प्रोत्साहन देना भारतीय संघ का कर्तव्य है तथा जहां भी आवश्यक हो हिन्दी के शब्द सामर्थ्य को बढ़ाने के लिए संस्कृत के शब्द लिए जाने चाहिए। संस्कृत को (पाठ्यक्रम से) बाहर करने की कोशिश अनुचित है।'

> ***सर्वोच्च न्यायालय ने अपने फैसले में कहा कि 'संस्कृत को अरबी-फारसी से समकक्ष नहीं माना जा सकता, बल्कि संस्कृत का विशेष स्थान है। वास्तव में भारतीय संस्कृति जिस वस्त्र में बुनी है वह संस्कृत भाषा है। अतः संस्कृत को बाहर करने की कोशिश अनुचित है।'***

धर्म-संस्कृति पर कुठाराघात

सर्वोच्च न्यायालय के इस आदेश के परिप्रेक्ष्य में संस्कृत को भारतीय जनजीवन से काटने का कुचक्र आसानी से समझा जा सकता है। संस्कृत भाषा व साहित्य की सुदीर्घ परम्परा से यह तथ्य नकारा नहीं जा सकता कि संस्कृत की शिक्षा के बिना भारतीय दर्शन व परम्पराओं को समझ पाना असम्भव है। केन्द्रीय सरकार की शिक्षा नीति में संस्कृत के इस महत्व को स्वीकार भी किया गया है, इसके लिए उदार आधारों पर अध्ययन की व्यवस्था के निर्देश भी हैं, इसके बावजूद पिछले ४७ सालों में केन्द्र सरकार का आचरण घोर संस्कृत-विरोधी रहा है, तो इसके पीछे एक ही मुख्य कारण है कि सत्ता में बैठे लोग वोट के लालच में एक वर्ग विशेष को खुश करने के उद्देश्य से अपनी हिन्दुत्व-विरोधी छवि स्थापित करने के लिए संस्कृत के अस्तित्व को भी दांव पर लगाने से नहीं चूक रहे, जबकि स्वयं सर्वोच्च न्यायालय का मानना है कि 'वास्तव में भारतीय संस्कृति जिस वस्त्र में बुनी हुई है, वह संस्कृत भाषा है।' इससे स्पष्ट है कि संस्कृत को नकारने का अर्थ भारत की सनातन संस्कृति पर अधिष्ठित समस्त जीवन मूल्यों, हिन्दु-धर्म और राष्ट्रीय चेतना पर सीधा कुठाराघात है।

म. प्र. शासन की संस्कृत विरोधी भूमिका

एक ओर सामाजिक न्याय और सेकुलरिज्म के नाम पर अरबी, फारसी, उर्दू को सरकारी संरक्षण में स्थापित करने की कोशिशें हो रही हैं। उर्दू को सीधे रोजगार से जोड़ने के लिए हजारों उर्दू पढे लोगों को सरकारी शिक्षक नियुक्त किया जा रहा है, दूसरी ओर संस्कृत को कर्मकाण्ड की भाषा, मृत भाषा कहकर न केवल भाषा के रूप में उसके अस्तित्व को समाप्त किया जा रहा है। बल्कि संस्कृत का पोषण करने वाली संस्थाओं को भी खत्म किया जा रहा है। पिछले वर्ष मध्य प्रदेश की दिग्विजय सिंह सरकार ने ऐसा ही एक कदम उठाते हुए म प्र. संस्कृत अकादमी को समाप्त करने का फैसला किया। सरकार का तर्क था कि मितव्ययता के लिए ऐसा किया जा रहा है लेकिन यह मितव्ययता की तलवार संस्कृत पर ही क्यों ? जबकि उसका वार्षिक बजट मात्र ६ लाख रुपए का है, दूसरी ओर म. प्र. उर्दू अकादमी का बजट तो ३० लाख रुपए सालाना है, जो कि ६ लाख की तुलना में ५ गुना ज्यादा है। फिर उस बड़े खर्च की कटौती का ध्यान सरकार को क्यों नहीं आया ? दरअसल संस्कृत के विरोध में दिए जाने वाले तर्क चाहे उसे त्रिभाषा फार्मूले से या केन्द्रीय विद्यालयों में चयनित विषय के रूप में समाप्त करने के लिए दिए जाए अथवा म प्र संस्कृत अकादमी खत्म करने के लिए, वे सभी निहायत बचकाने और निरर्थक होते हैं, उनके पीछे मुख्य मानसिकता अपने को सेकुलकर दिखाने की आड में वोट का लाभ लेने या हिन्दुत्व पर आघात करने की ही रहती है। तथ्यों की कसौटी पर कसें तो मुख्यमत्री दिग्विजय सिंह का मितव्ययता का तर्क बेहद लचर है। इस तरह के ये सारे तर्क चालाक दिमागों की साजिश के सिवाय कुछ नहीं हैं। बहरहाल सरकार के इस फैसले की व्यापक प्रतिक्रिया मध्य प्रदेश की जनता पर हुई विशेषकर सास्कृतिक अचल छत्तीसगढ में प्रबल जनविरोध उठ खडा हुआ। परिणामत तीखे जन-विरोध के आगे सरकार को झुकना पड़ा और संस्कृत अकादमी को समाप्त करने का फैसला फिलहाल वापस लेना पडा। लेकिन उर्दू भाषा या अकादमी को खतरा इसलिए नहीं हो सकता कि मुस्लिम वोट बैंक हाथ से ने खिसक जाए, इस डर से कौन उसकी तरफ टेढी नजर करेगा ?

डा. कर्ण सिंह का यह कथन एकदम सही है कि 'संस्कृत न होती तो भारत भी न होता'। संस्कृत विश्व की आधारभूत भाषा है न केवल भारतीय भाषाओं का, अपितु अधिकाश विश्व-भाषाओं का शब्द स्रोत संस्कृत है, यह प्रमाणित हो चुका है। इसलिए संस्कृत को 'सर्वभाषाणाम् जननी' कहा गया। संस्कृत कितनी वैज्ञानिक भाषा है, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि आज कम्प्यूटर के लिए सबसे सहज भाषा उसे ही माना जा रहा है। संस्कृत साहित्य में भरी पडी ज्ञान-विज्ञान की प्रचुर सम्पदा जर्मन विद्वान मैक्समूलर के माध्यम से जर्मनी पहुची और उस देशके सामने वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति के नए द्वार खुल गए। महाकवि कालिदास प्रणीत 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' का जर्मन अनुवाद पढकर जर्मनी का महाकवी गेटे प्रफुल्लता से नाच उठा था। ऐसी समृद्ध व लालित्यपूर्ण भाषा को कालबाह्य कहना अपनी अज्ञानता प्रकट करना है। वस्तुत अंग्रेजों ने अपने सत्ता स्वार्थों के लिए संस्कृत विरोधी जो बीज बोया था, वही आज भारत में मानसिक गुलामी का वटवृक्ष बन चुका है।

यह तथ्य झुठलाया नहीं जा सकता कि यदि भारत ने, धर्म व संस्कृति की भावधारा को निरन्तर वेगवान रखना है तो संस्कृत का सर्वप्रकारेण पोषण व संवर्धन किया जाना अपरिहार्य है। संस्कृत की प्रतिष्ठा में ही धर्म-संस्कृति और राष्ट्र अभिहित है।

> आध्यात्मिक मार्ग मे निराशा के लिए कोई स्थान नही है। उन्नति धीमी हो सकती है परन्तु सफलता निश्चित है

सत्य को अपनाने से
अदालतों के मुकदमे समाप्त हो सकते हैं

शशांक भारद्वाज नामक आठ वर्ष के एक छोटे से बालक ने एक दिन मुझसे पूछा कि 'आप कानूनी पत्रिका क्यों छापते हो'। मैंने जवाब दिया कि 'समाज मे नागरिको के बढते हुए आपसी विवादो को कम करवाने तथा देश के नागरिको को अधिकारो के साथ–साथ उन्हें कर्तव्यो से अवगत कराने के लिए।' इस प्रकार कानून के प्रति समझदारी बढने से अदालतो के मुकदमे भी कम होगे।

वह बच्चा बोला 'कि मुकदम मे यह तो पक्का है कि दोनो मे से एक पक्ष झूठ बोल रहा है। इसलिए यदि इस देश मे से झूठ बोलना खत्म हो जाय तब तो सारे मुकदमे खत्म हो जायेगे ना'?

मैं इस बच्चे की महान सामाजिक भावनाओ पर विचार कर ही रहा था कि वह बच्चा अपने प्रश्न को पुन दोहराता हुआ बोला कि 'जब झूठ बोलने वाला ही कोई नही होगा तब तो अपने आप ही हर मुकदमें का फैसला जल्दी से जल्दी हो जायेगा और अदालतो मे कोई मुकदमा बचेगा ही नहीं'।

मैने कहा यह बात तो ठीक है भई। बच्चे ने तपाक से कहा अच्छा मै आपका एक कहानी सुनाता हू। वह कहानी आप कही प्रकाशित कर देना फिर देखना लोग एक दम झूठ बोलना छोडकर हमेशा सच बोलेगे और सब मुकदमे जल्दी खत्म हो जायेगे।

उस बच्चे की इन भावनाओ का आदर करते हुए हम यह कहानी यहा प्रकाशित कर रहे हैं। अदालतो मे मुकदमे लडने वाले नागरिको से आग्रह है कि सत्य और असत्य के परिणामो पर गम्भीर विचार करे और उचित मार्ग को अपनाये। परम पिता–परमात्मा हम सबकी बुद्धियो को श्रेष्ठ मार्ग पर चलाये।

धियो यो न प्रचोदयात्

विमल वधावन एडवोकेट
मुख्य सपादक, कानूनी पत्रिका

एक शहर में एक सन्यासी रात्रि मे घूम रहे थे। एका–एक सामने से एक चोर आया। चोरने स्वामी जी से कहा कि जो कुछ भी आप के पास है वह सब मेरे हवाले कर दो।

स्वामी जी ने कहा कि बेटा मेरे पास तो कुछ भी नही केवल उपदेश है। यदि वह चाहो तो ले सकते हो।

स्वामी जी ने आगे बोलते हुए कहा कि 'बेटा अपनी बुराइया छोड दो।

चोर बोला 'मेरे मे तो बहुत बुराइया हैं। मैं चोरी करता हू, डाके मारता हू, कत्ल करता हू, छोटे मोटे झगडे फसाद करता हू, बलात्कार भी कर लेता हू और झूठ तो बोलता ही हू। अब इनमे से मैं किस–किस बुराई को छोडू।

स्वामी जी ने कहा 'बेटा तुमने तो इन सब बुराइयो को अपनी रोजी–रोटी का साधन बना रखा है। इसलिए तत्काल मैं तुम्हे सब बुराइया छोडने के लिए नही कह रहा। परन्तु यदि ईश्वर को थाडा बहुत भी मानते हो तो झूठ बोलना छोड दो और सदैव सत्य बोलने का सकल्प ले लो। बोलो कर सकते हो क्या?

चोर ने सोचा इस प्रण से तो मरी चोरी डकैतियो पर कोई असर भी नहीं होने वाला तो क्यो न आज यह प्रतिज्ञा कर ही ली जाय।

चोर ने स्वामी जी से कहा अच्छा आज से धरती माता की कसम खाकर कहता हू कि सदैव सत्य बोलूगा और झूठ कभी नहीं बोलूंगा।

स्वामी जी ईश्वर तुम्हारा भला करे कहकर आगे चल दिये।

अगले दिन पुन चोर रात्रि मे अपने काम पर निकला। उधर दूसरी तरफ राजा अपने पुलिस कर्मियो की चेकिग के लिए भेष बदल कर रात को घूम रहा था दोनो आपस मे टकराये।

चोर कडक कर बोला 'तुम कौन'? राजा ने भी कडक कर जवाब दिया 'मैं चोर हू। चोर बोला मैं भी चोर हू। चलो दोनो मिलकर चोरी करते हैं।

चोर ने सुझाव दिया आज क्यो ना राजा के ही दरबार मे चोरी की जाय। चोर रूपी राजा ने स्वीकृति म सिर हिला दिया।

दोनो ने मिलकर राजा की तिजोरी पर हाथ मारा उसमे तीन हीरे थे।

चोर बोला 'इनको बाटने मे दिक्कत होगी इसलिए हम दो ही हीरे लेते हैं और एक–एक बाट लेत हैं। तीसरा हीरा तिजोरी मे ही पडा रहने दो।

एक–एक हीरा लेकर दोनो अलग–अलग चल दिये परन्तु उससे पूर्व राजा ने उस चोर का पूरा अता–पता मालूम कर लिया।

अगले दिन राजा ने दरबार मे चोरी की सूचना देते हुए राज्य के समस्त चोरो को पकड लाने की आज्ञा दी।

सभी चोर पेश हुए। उनमे असली चोर भी शामिल था। राजा ने पूछा सच–सच बताओ हमारी तिजोरी से हीरे किसने चुराये है।

चोर को अपनी ईश्वर के नाम ली हुई प्रतिज्ञा याद आ गयी और वह एक दम बोल पडा 'हीरे मैंने चुराये थे परन्तु मेरे पास एक ही हीरा है दूसरा हीरा एक अन्य चोर ले गया तथा तीसरा हीरा हमने तिजोरी मे ही छोड दिया था।

राजा ने तत्काल गृह मत्री को आदेश दिया कि जाओ तिजोरी मे जाकर देखो तीसरा हीरा है या नही।

गृह मत्री ने जाकर तिजोरी खोली और देखा कि तीसरा हीरा वहीं पडा था। वह सोचने लगा कोई भी चोर आधी चोरी क्यो करेगा। उसकी बात का कौन यकीन करेगा। अब जब उसने आरोप अपने सिर ले ही लिया है तो यह तीसरा हीरा यदि राजा को न भी मिले तो भी चोरी का आरोप तो इसी के सिर लगना है। मत्री के मन मे बेईमानी आ गई। उसने वह तीसरा हीरा अपनी जेब मे छिपा लिया।

राज दरबार मे पहुचकर मत्री ने कहा 'महाराज वहा तीसरा हीरा नहीं है और निश्चय ही वह तीसरा हीरा भी इसी ने लिया होगा।

राजा जानता था कि तीसरा हीरा तो तिजोरी मे ही होना चाहिये। अत उसे गृह मत्री पर शक हुआ। उसने तत्काल गृह मत्री की तलाशी का आदेश दिया। मत्री की जेब से हीरा निकल आया।

राजा ने इस चोरी और झूठ बोलने के कारण गृह मत्री को जेल मे डाल दिया तथा चोर की सत्य वादिता और सत्य प्रतिज्ञा की जानकारी राजदरबार को देते हुए राजा ने उस चोर को गृह मत्री बना दिया।

क्या अदालतों में चल रहे मुकदमों के पक्षकार इस प्रकार सत्यवादी बन सकते हैं?

अल्मोड़ा में दस दिवसीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर सम्पन्न

नगर समाज अल्मोडा द्वारा आयोजित दस दिवसी योग एव प्राकृतिक चिकित्सा शिविर १४ जून से २३ जून १९९६ ई तक अति हर्ष तथा उल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुआ। योग एव प्राकृतिक चिकित्सा के प्रशिक्षक थे मौरीशस निवासी डा धर्मवीर साहित्य रत्न तथा उनकी पुत्री डा अमृता। ये महानुभाव कुछ वर्षो से भारत में ही रहकर यहा के योगाचार्यो एव कुशल वैद्यों से योगाभ्यास तथा प्राकृतिक चिकित्सा में दक्षता प्राप्त कर उसे मानवों को उपकृत कर रहे हैं।

इस शिविर में ५० प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिय और उन्हें हठयोग की कुजल जलनेति रबरनेति कपालभाति आदि क्रियाओं का अभ्यास कराया गया। साथ ही विविध प्रकार के आसनों प्राणायामों तथा धारणा ध्यान का अभ्यास कराया गया। प्रत्येक प्रयोग के पूर्व उसकी विधि तथा उससे लाभ को अच्छी प्रकार समझाया गया। इसके अतिरिक्त शिविर में प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा रक्तचाप, मधुमेह दाम जोडों का दर्द कमरदर्द सिरदर्द आव एव पेचिस कब्ज इत्यादि रोगों के लगभग दो सौ रोगियों की चिकित्सा भी बिना दवा के प्राकृतिक साधनों मिट्टी जल तथा योगासन प्राणायाम आदि द्वारा की गई। स्त्री रोगियों की चिकित्सा डा अमृता जी तथा पुरुष रोगियों की चिकित्सा डा धर्मवीर जी योगी करते रहे। शिविर सामाप्ति की पूर्वसन्ध्या पर प बगाल तथा पजाब के भूतपूर्व राज्यपाल श्री भैरवदत्त पाण्डे जी ने भी योग के महत्व पर प्रकाश डालते हुए शिविर की सफलता के प्रति अपनी शुभकामना व्यक्त की।

डा जयदत्त उप्रेती शास्त्री
मन्त्री आर्य समाज अल्मोडा

'स्वस्थ' की अवधारणा का वैदिक स्वरूप

डॉ. रमेशचन्द्र आर्य

समस्त प्राणियो मे अपने विनाश के कारणो से बचने तथा यथा सम्भव उन्हे नष्ट करने के प्रयास एव अपने अस्तिव को दीधतर काल तक बनाए रखने की नैसर्गिक प्रवृत्ति पायी जाती है। वैदिक प्रार्थनाओ मे मनुष्य की सौ वष तक अथवा उससे भी अधिक काल तक जीने की अनेकश कामनाए मनुष्य की इस प्रवृत्ति की प्रकाशक है। लेकिन इस शताधिक वर्षयुक्त आयु का स्वरूप कैसा हो इस पर भी वेदो मे पर्याप्त विचार उपलब्ध होते हे। दीन एव रुग्णावस्था मे जीने का अर्थ दीर्घायुष्य की प्राप्ति नही है। मनुष्य मृत्युपर्यन्त स्वस्थ रहे तभी आयु की सार्थकता है। अत स्वस्थ के प्रत्यय की वैदिक आलोक मे विवेचना करना अपेक्षित है।

चिकित्सा–विज्ञान के प्रतिनिधि ग्रन्थ चरक सहिता मे 'स्वस्थ के निर्धारण का मापदण्ड ये पाच भाव–विशेष माने गये है १–शरीर मे त्रिदोष (वात पित्त कफ) की समावस्था २–शरीरस्थ अग्नि की समावस्था ३ समस्त धातुओ की समावस्था ४–प्राकृत मल–क्रिया तथा ५–प्रसन्न आत्मा इन्द्रिया एव मन। अधुना वैज्ञानिको द्वारा जिस व्यक्ति की शारीरिक मानसिक सामाजिक तथा आध्यात्मिक स्थितिया प्राकृत हो उसे स्वस्थ माना गया है। उल्लेखनीय है कि चरकोक्त प्रथम चार भाव शारीरिक प्रसन्न इद्रियो से मनोशारीरिक प्रसन्न मन से मानसिक तथा सामाजिक एव प्रसन्न आत्मा से आध्यात्मिक स्वस्थ्य की उत्कृष्टता अभिप्रेत है। अधुना विश्वस्तर पर सवमान्य परिभाषा के अनुसार शारीरिक सामाजिक तथा आध्यात्मिक रूप मे स्वस्थ व्यक्ति को ही स्वस्थ श्रेणी मे रखा गया है। अवलोकन से यह विदित होता है कि वेदो मे स्वस्थ की योग्यता मे निहित समस्त भावो का उत्तम विवेचन उपलब्ध होता है।

शारीरिक दोषो मे सर्वाधिक बलवान दोष वायु है और इसके कर्मो मे सबसे प्रमुख कर्म है चलत्व। यदि सूक्ष्मदृष्टया विचार करे तो गति शरीर के परिप्रेक्ष्य मे दो ही मुख्य भेदो मे विभाजित किया जा सकता है–ग्रहण और त्याग। ग्रहण से कोषिकीय आदान तथा त्याग से कोषिकीय विसर्ग तात्पर्य से इस तथ्य का बोध सुगमतापूर्वक हो जाता है। इन दोनो कार्यो के लिए क्रमश प्राण तथा अपान उत्तरदायी हैं। अन्य वात–भेदो को इस दृष्टि से इन्हीं मे समाहित किया जा सकता है। इनके स्थिर रहने एव असन्तुलित न होने के लिए वेदो मे प्रार्थना की गई है (अथर्व १६/४/३ ८/२/११ ८/१/१)। अपान के अन्तर्गत समस्त उत्सर्ग भावो की समाविष्टि से मल क्रिया का अन्तर्भाव इसी मे समाहित है। वात के इन दो भेदो के पुन बाह्य तथा अन्त ये दो–दो कर्मभेद जानना उचित है। धातुओ मे साम्यता यदि सुस्थापित नही होगी तो उत्कृष्ट धातुओ का उत्पादन भी असम्भव ही होगा। अत शारीरिक धातुओ की प्रकृष्टता से शरीर सतेज ओजस युक्त एव सबल हो कर स्थैर्य प्राप्त करे (अथर्व १६/२६/३ २/१७/१) इसके लिए धातु–क्रम मे समता अत्यन्त अपेक्षित है। स्वत्व–सरक्षणार्थ शक्ति की याचना (अथर्व २/१७/७) से व्याधि–प्रतिरोधक क्षमता प्राप्त करने का स्पष्ट निर्देश प्राप्त होता है। स्वास्थ्य के लिए व्याधि प्रतिरोधशक्ति अनिवार्यत आवश्यक है। उल्लेखनीय है कि सम्प्रति चिकित्सा–विज्ञान एव समस्त विश्व के समक्ष चुनौती रूप म उपस्थित भयावह एव प्राणधाती व्याधि एड्स मे इसी व्याधि प्रतिरोधक तन्त्र का घात हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति नानाविध विकारो से ग्रसित हो मृत्यु को प्राप्त होता है।

शारीरिक दोष तथा धातुओ समावस्था मे रहे इसके लिए शरीराग्नि का सामान्य होना नितान्त आवश्यक है। स्थिर अग्नि ही अपेक्षित उपकार एव नियमन करने मे समथ (ऋ १/५६/१) होने से शरीरस्थ त्रयोदश अग्नि–भेद प्राकृत अवस्था मे रहने पर ही स्वास्थ्य सभव है। इसी से अनेक विध शारीरिक कर्म सम्पन्न करने की इसकी 'शतमूर्द्धन शक्ति (यजु १७/७१) का उपयोग हो पाता है वेद अग्नि के वर्धन तथा सन्तुलन को स्थिर रखने के लिए उपाय करने रहने का सदुपदेश (ऋक ५/१८/५) देता हे आयु बल तथा आरोग्यादि का अग्नि ही धारक (ऋक ५/८/५) होने से इसका महत्त्व सर्वाधिक हे

वेदो मे शारीरिक स्वास्थ्य के लिए मन्त्र क्रिया शारीरिक भाव ही नहीं मिलते वरन आन्तरिक एव बाह्य आगिक स्वास्थ्य का भी उल्लेख मिलता है स्वस्थ शरीर प्रत्यक्षत सुगन्धित [illegible] युक्त तथा सर्वान्त पुष्ट हो [illegible] स पू [illegible] स्वच्छ तथा व्याधि रहित बाहु उरू जघा पादादि मे वेग शक्ति–स्थैय (अथर्व १९/६० १–२) समुचित प्रमाण मे होना चाहिए इसके साथ ही स्त्री श्रोणि किचित विस्तृत तथा उसमे यथा समय गर्भधारण की क्षमता (अथर्व ५/२३/३) एव पुरुष मे गर्भ स्थापन करने की सामर्थ्य (अथर्व ५/२५/८) भी अवश्य होनी चाहिए

वैदिक प्रार्थनाओ मे सर्वाधिक मन्त्र मानसिक भावो मे पवित्रता का सचार करने हेतु आए है। मानसिक व्यक्तित्व को उत्तम एव निष्पाप रखने के लिए अनावश्यक एव अनपेक्षित चिन्ता तथा चिन्तन की सर्वथा उपेक्षा करना (अथर्व ८/१/७–६) चचल मन की उद्विग्नता दूर कर उसे व्यष्टि तथा समष्टि के कल्याणथ शुभ सकल्पो की ओर प्रेरित करना (यजु ३४ १–६) तथा कल्याणकारी विषयो को ही ग्रहण करने (ऋक १।८६।८) का सदैव यत्न करते रहना चाहिए। निर्मल मन के माध्यम से जो ज्ञान आत्मा तक पहुचता है वह निर्दुष्ट एव तथ्य परक होता है आत्मिक बल के लिए व्यक्ति को मेधा एव बुद्धि से सुसपन्न (यजु ३२।१३ १५) होना चाहिए। ज्ञानार्जन एव उसका सदुपयोग व्यक्ति के आध्यात्मिक स्वास्थ्य का भी हेतु है। प्राणिमात्र के कल्याणाथ स्वज्ञान का उपयोग (सर्वभूतहितै रत–गीता) आध्यात्मिक बल का सर्वोत्कृष्ट साधन है अतएव बुद्धि एव मेधा मे वृद्धि का सत्प्रयास निरन्तर करते रहना चाहिए दूसरी ओर धी धृति स्मृति का उत्तम होना स्वास्थ्य का लक्षण है। विकत मन इनमे तत्पर नही होता अथवा विपर्यता प्रदर्शित करता है मन एक निर्दोष साधन के रूप मे काम करता रहे इसके लिए आवश्यक है कि काम क्रोध लोभ मद मोह तथा मत्सर का दमन करने की दृढता हो (अथर्व ८ ४। २०)। इस दृढता से आत्म बल वर्धित एव चिरकाली होता है।

मनुष्य के ज्ञान प्राप्ति तथ कर्म सम्पादन के साधन क्रमश ज्ञानेन्द्रिया एव कर्मेन्द्रिया है स्वस्थ जीवन के लिए इनका स्वस्थ रहना अनिवाय है ज्ञानार्जन मे ज्ञानेन्द्रियो का अति हीन मिथ्या–योग इन्द्रिय वैकल्य का कारण हो सकता है (अथर्व १६।६।३ ५) अत स्वस्थ व्यक्ति की वागिन्द्रिय श्रवणेन्द्रिय दशनेन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय तथा स्पर्शनेन्द्रिय स्वशक्तियो से समृद्ध रहनी चाहिए वागेन्द्रिय की ऊर्जस्विता एव माधुय श्रवणेन्द्रिय की सुश्रुति भद्रसुश्रुति व उपश्रुति दशनेन्द्रिय की सौपण चाक्षुष्य तथा सतत ज्योति घ्राणेन्द्रिय की प्राण–ग्रहण शक्ति एव स्पर्शेन्द्रिय की यथार्थ सवदेन शक्ति की सपन्नता (अथर्व १६।२।१ २ ४ ५) इनके उत्तम स्वास्थ्य की द्योतक है।

मनुष्य का जीवन–यापन बिना समाज के दुष्कर है। उसके समाज की विशषता यह भी हे कि उसमे पशु–पक्षी तथा अन्य प्राणी यहा तक कि वनस्पतिया भी सम्मिलित है अन्तर्मानवीय सम्बन्ध यदि सुस्थापित न हो तो व्यक्ति स्वस्थ नही रह सकता अपने सामाजिक स्वास्थ्य के प्रति सचेत व्यक्ति दुष्ट अज्ञानी तथा आचारहीन व्यक्तियो के सग से उपेक्षा तथा विद्वान तथा सदाचारी व्यक्तियो का साहचर्य (क्रमश ऋक १ १ ६।५ एव १०।११८ हेतु उद्यत रहना है यहा एक शका स्वभाविक हे कि इससे तो सुधारवाद के सिद्धान्त ही कोरा रह जाएगा अथवा सुधारवादी को अस्वस्थ ही मानना पडेगा वस्तुत इस कथ्य मे यह तथ्य निहित है कि [illegible] अज्ञानी व्यक्ति के दुष्प्रभाव [illegible] निर्लिप्त रह [illegible] विद्वानो के साहचर्य के अभाव मे भी उनके गुणो को धारण करने की क्षमता स्वस्थ व्यक्ति मे होनी चाहिए एसी प्रवृत्ति व्यक्ति को मानसिक शान्ति भी प्रदान करती ही है विवेक का उद्बोधन भी करती है स्वय के द्वारा कोइ अपराध अथवा त्रुटि अज्ञान मे हो भी जाए तो निसकोच उसका परिज्ञान तथा स्वीकारोक्ति मे हिचकिचाहट न करे (ऋक ७ ८६ ३) उसके समाधान हेतु विद्वज्जनो से परामर्श करना चाहिए दूसरा के द्वारा की गई व्यवहारिक त्रुटियो के प्रति उदार दृष्टिकोण तथा जानबूझ कर किए गये अपराधो के प्रति दृढ निश्चय अच्छी एव स्वस्थ मानसिकता का परिचायक है।

पर्यावरण की शुद्धता मनुष्य ही नही चराचर जगत की स्थिति के लिए आवश्यक है अत पृथ्वी एव अन्तरिक्ष को प्रदूषण से बचाकर (अथर्व १६।१५।५, ऋक १०।७।१) समस्त मानव समाज सहित प्राणी मात्र को व्यक्तियो के त्रास से दूर रखने हेतु प्रयासरत रहना चाहिए तभी समस्त ऊर्जा का स्रोत सूर्य जगत के लिए मधुमान हो (ऋ १ ६ ८) सकता है अर्थात सूर्य से ऊर्जा का सम्यक वितरण तभी हो सकता है जबकि पर्यावरण शुद्ध हो सम्प्रति ओजोन परत का छिद्रण मनुष्य द्वारा वेद की उपर्युक्त याचना की उपेक्षा का ही तो परिणाम है। मान्यता है कि इसके कारण समस्त प्राणियो वनस्पतियो तथा भूगर्भ पर होने वाले अनिष्ट प्रभाव से विश्व का वैज्ञानिक वर्ग अत्यन्त आतकित है

शेष पृष्ठ ६ पर

जातिवाद को नियन्त्रित कैसे किया जा सकता है ?

त्रिलोक बजाज

वर्ण व्यवस्था हमारी सस्कृति की द्योतक है। इसका विकृत रूप जातिवाद है। राजनीतिज्ञो ने स्वार्थो की पूर्ति के लिये देश को ऐसी दुर्गति के कगार पर खडा कर दिया है कि किसी भी धार्मिक या सामाजिक सस्था के लिये जातिवाद को नियन्त्रित करना असम्भव प्रतीत हो रहा है। यदि मनु जी महाराज को यह अनुमान हो जाता तो सम्भवत वह वर्णव्यवस्था का शुभारम्भ ही न करते यदि उन्हे इस बात का आभास हो जाता कि वर्ण व्यवस्था की जातिवाद के रूप मे ऐसी दुर्गति होगी तो शायद लोगो को अपनी क्षमता कार्यकुशलता हैसियत के अनुसार समाज का कार्य चलाने का आह्वाहन कर देते। न ब्राह्मण न क्षत्रिय ओर न ही वैश्य तथा शूद्र का सवाल धृणा का रूप धारण करता। स्वामी दयानन्द सरस्वती को भी यदि शूद्रो की छाया से भी घृणा करने वाले सवर्णो के दृष्टिकोण का पता लग जाता तो वह भी कुछ सावधान हो जाते। इसमे कोई सन्देह नही आर्य समाज ने अछूतोद्धार के लिये बडा सघर्ष किया परन्तु वर्तमान परिस्थितिया भयावह रूप धारण कर रही हैं।

महात्मा गान्धी जैसे महानात्मा की यदि इसलिये भर्त्सना हो रही है कि उन्होने अछूतो के स्थान पर एक सम्मानित शब्द हरिजन का प्रयोग कर दिया तो उस ऋषिवर दयानन्द के परोपकार का क्या जिन्होने दलित वर्ग के उत्थान के लिये इतना तप त्याग और तपस्या की। हा आर्य समाज का यह कर्त्तव्य था कि उत्तरप्रदेश मे जब जातिवाद के नाम पर वोट बैंक बनाये जा रहे थे तो उसे सजग हो जाना चाहिये था। आर्य समाज को अपने लिये मतो की आवश्यकता नहीं। आर्य समाज कोई राजनीतिक सस्था भी नही। उसका कार्यक्षेत्र तो समाज को राजनीतक सामाजिक धार्मिक दृष्टिकोण से व्यवस्थित करना है। जिस समय मन्दिरो और मस्जिदो का विवाद चरम सीमा तक पहुच चुका था उस समय भी आर्य समाज को अपनी भूमिका निभाने का सुअवसर हाथ से खोना नहीं चाहिये था। आर्य समाज की इन धार्मिक स्थलो मे कोई रूचि नही है परन्तु जिस समय अयोध्या मे राम मन्दिर बनवाने के लिये राजनीतिक रथो का प्रयोग हो रहा था। राजनीतक पताकाये लहराई जा रही थी तो उस समय भी लोगो को आह्वान करना चाहिये था कि यह धार्मिक स्थल साधु सन्तो महात्माओ के कार्य क्षेत्र मे आते हैं। इनका राजनैतिक दलो से कोई सम्बन्ध नहीं है।

जब आर्य समाज के सम्मुख धर्म और राजनीति के समन्वय का विवाद खडा हुआ तो भी हम सरकारी पक्ष को समझने मे असफल हुए। धर्म एक व्यक्तिगत आस्था है। एक कर्त्तव्य परायणता की भावना का साक्षात्कार है। सरकारी पक्ष तो यह था कि धर्म मे राजनीति को घसीटा न जाये। हम उसमे भी सरकार की निन्दा करते रहे। सारे अयोध्या काण्ड का दुष्परिणाम यह निकला कि अल्पसख्यक मुसलमान समुदाय दलित वर्ग और पिछडी श्रेणिया एक मच पर एकत्रित हो गई और जातिवाद को पाव पसारने का अवसर मिल गया। इस जातिवाद का प्रकोप उत्तर प्रदेश तक ही सीमित न समझिये। यह बिहार प्रान्त मे भी चुनाव मे एक चेतावनी देगा। वहा शासक दल के जीतने की सम्भावनाये कम है। इसलिये लालू यादव की पराजय के लिये प्राप्त समाचारो के अनुसार यादवो और काशीराम को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। सरकार भी जातिवाद को सिर उठाने मे कम जिम्मेदार नही है। जिस पर मुसलमानो की तुष्टिकरण का आरोप लग रहा है उसी के विरूद्ध मुसलमान भी सक्रिय हो गय। क्यो कि न मन्दिर बन सका और न ही सरकार मस्जिद की–आर्य समाज के लिये जातिवाद के उन्मूलन की एक चुनौती है। आर्य सामाज को अपनी एक रणनीति बनानी होगी। आर्य समाज कोई धर्मिक सस्था ही नहीं है। कोई साधारण सस्था भी नहीं है। यह तो एक आन्दोलन है। आर्य सामाज ने ही सामाजिक क्रान्ति लाई थी। राजनीतिक स्वतन्त्रता के लिये लोगो को जागृत किया था। उसी स्वाधीनता की रक्षा का भार भी आर्य सामाज के कन्धो पर है। इसी ने सामाजिक कुरीतियो को दूर करना है और एक वर्गहीन समाज की स्थापना के लिये सघर्षरत होना है।

चाहे काग्रेस हो। चाहे भाजपा हो। हमे उनसे कुछ लेना देना नहीं है। काग्रेस को अपने लोकतान्त्रिक धर्म निरपेक्ष सवैधानिक मूल्यो का पालन करना है। चाहे विजय हो या पराजय हो उसका बडा उत्तरदायित्व है कि एक वर्ग विहीन समाज की स्थापना मे अपने आदर्शो सिद्धान्तो ओर मन्तव्यो को दृष्टिगत रखना है। दूसरी ओर भाजपा को भी हिन्दुत्व का नारा छोडना होगा। हिन्दुत्व हमे भी प्यारा है। राष्ट्रीयता के हम भी पक्षधर है। परन्तु ऐसे हिन्दुत्व को कोई भी धर्म निरपेक्ष दल स्वीकार नहीं करेगा जिसमे से सकीर्णता की अकर्मण्यता की ओर साम्प्रदायिकता की दुर्गन्ध आ रही हो।

जातिवाद का मुकाबला करने के लिये सब धर्मनिरपेक्ष शक्तियो को एक मच पर आकर एकत्रित होगा। इसका तात्पर्य यह नहीं कि हमे अपने दलित भाइयो से धृणा है। हम भी चाहते हैं। ईमानदारी से चाहते हैं कि उन्हे भी सामाजिक न्याय मिले। सामाज मे उनका सम्मान बढे। उन्हे भी आरक्षण की तमाम सुविधाये उपलब्ध हो। उन्हे शासन मे भी भागीदार बनाया जाये। यदि देश का राष्ट्रपति एक मुसलमान बन सकता है। एक सिख राष्ट्रपति बन सकता है तो दलित वर्ग का अथवा पिछडी श्रेणियो का राष्ट्रपति भी बन सकता है। उस पूरे अधिकार हैं। उसे भी सुअवसर प्रदान करना चाहिये। वे भी तो हिन्दू जाति के अग हैं। हमारी दुर्वलता है। कमजोरी है कि हम उन्हे अपने गले नहीं लगा सके। उन्हे आश्वस्त नहीं कर सके।

दलित वर्गो की भी यही मातृभूमि है। भारत ही उनकी कर्मभूमि है। धर्मभूमि है। पुण्यभूमि है। उन्होने भी सदा अपने सवर्ण भाइयो के साथ रहना है। भारत यदि जीवित है तो डा अम्बेडकर की सेवाओ के कारण ही प्रतिष्ठित है। भारत यदि आज भी भारत है तो हमारे दलित वर्ग के भाइयो को स्मरण रखना चाहिये कि स्वामी दयानन्द जैसे समाज सुधारको कुरीति निवारको धर्म प्रचारको पाखण्ड निवारको और देश के प्रहरी के कारण ही है अछूतोद्धारकों के रूप मे उन्ही (ऋषिवर) को सदा स्मरणीय रखा जायेगा। उनकी सेवाये सदा वन्दनीय रहेगी। आर्य समाज को किसी पन्थ, सम्प्रदाय मत से धृणा नहीं है। वह तो दूसर पन्थो और समुदाओ की कुरीतियो और पाखण्डो का वर्णन करके अपने सुधार की प्रक्रिया को निरन्तर जारी रखे हुए है और करता भी रहेगा। आर्य समाज आज भी उनके उत्थान का पक्षधर है। ❖

'स्वस्थ' की अवधारणा का वैदिक स्वरूप

पृष्ठ ५ का शेष

विश्व ताप मे वृद्धि के परिणाम स्वरूप ध्रुवीय प्रायद्वीप मे पिछले वर्ष जो महाकाय हिम–खण्ड पिघल गये हैं वे भावी जल–प्रलय तक का स्पष्ट सकेत देने हैं। यह मानव द्वारा पृथ्वी और अन्तरिक्ष की शुद्धता के प्रति उपेक्षा का ही तो परिणाम है।

सर्वजन सुखाय सर्वजन हिताय की भावना व्यक्ति के मानसिक तथा आध्यात्मिक स्वास्थ्य की प्रतीक है। प्राणीमात्र का कल्याण (अथर्व १०।३१।४ प्रकृति के प्रति अविधानक कर्म एव विचार (ऋ १०।६३।८) तथा सामाजिक सरचना को उत्तम बनाए रखना (ऋ १०।१९१।२–४) उत्कृष्ट मानसिक एव आत्मिक अवस्था के परिचायक है सदशिक्षादान (ऋ १०।६३।४) सरलता (ऋ २५ १५) तथा स्वावलबन (यजु २३।१५, अथर्व ४।१४।४) सामाजिक स्वास्थ्य के प्रशस्त साधन हैं। इसके साथ ही सामाजिक दृष्टि से व्यक्ति को स्वस्थ तभी कहा जा सकता है जबकि उसम सामाजिक सरचना के विघातक भावो को नष्ट करने के लिए दृढ निश्चय हो (अथर्व २।१२।३) तथा मन को पापी बनाने वाले विचारो को रोकन की सामर्थ्य हो। विकृत मन शारीरिक विकार भी उत्पन्न कर देता है। वर्तमान युग मे मनोविकारी तथा समाज–विघाती भावो की वृद्धि जिसका कारण मुख्यत आर्थिक सम्बन्धो की अवाछित अतिव्याप्ति है के परिणामस्वरूप अनेक प्रकार के हृदय विकार उच्चरक्त चाप नाडी दौर्बल्य प्रभृति अनेकानेक व्याधियो के पाश ने मानव स्वास्थ्य को अपहृत कर लिया है। आर्थिक सम्बन्धो के इस अप्रत्याशित विस्तार ने स्वय मनुष्य को सामाजिक सरचना के सम्मुख एक प्रश्न–चिन्ह के रूप मे खडा कर दिया है।

इस प्रकार वेदो मे स्वस्थ की सकल्पना का विस्तृत विवेचन उपलब्ध होता है। स्वास्थ्य के समस्त घटको का सुन्दर एव निर्मल वर्णन किया गया है। यहाँ प्रस्तुत सन्दर्भो को तो सकेत मात्र समझना चाहिए।

लुहारी जिला–मेरठ
उ प्र–२५०६१७

वेद का परमात्मा सर्वव्यापी है

डा योगेन्द्र कुमार शास्त्री (जम्मू)

श्री यागमुनि जी ने मेरे लेख के प्रत्युत्तर मे मुझे दो पत्र भेजे है जिनका उत्तर स प्रमाण इस लेख मे दे रहा हूँ। प्रथम तो मुझे योगमुनि जी के लेख से यह पता चलता है कि योगमुनि जी ने वैदिक व्याकरण को भली प्रकार जानते हे और न सस्कृत व्याकरण को। आपने अपने लेख मे एक शब्द लिखा है "उपरियुक्त" जो अशुद्ध है। होना चाहिये उपर्युक्त" इसी प्रकार आपने लिखा है कि इन्द्र से इन्द्रा स्त्रीलिग मे बनता है। यह भी आपने अशुद्ध लिखा है इन्द्र का स्त्रीलिग मे इन्द्राणी बनता है।

इसी प्रकार आप अपनी कल्पना से ईश शब्द का स्त्रीलिग ईशा बना रहे है यह किस नियम के आधार पर बना रहे है कृपया बताये।

यदि आप वैदिक भाषा जानते और उसका व्याकरण जानते तो वेद के अर्थो का अनर्थ नहीं करते।

यजुर्वेद (३२–८) के इस मन्त्र में (परमधाम) शब्द कहा से ले आये ? वेनस्तत्पश्यन निहित गुहासत यत्र विश्व भवत्येक नीडम।। यहा भाष्यकारो ने गुहा शब्द का अर्थ बुद्धी किया है सत का अर्थ सत्य स्वरूप परमात्मा किया है। अर्थ हुआ–ज्ञानी व्यक्ति (तत सत) उस सत्य परमात्मा का (गुहा) बुद्धि मे (पश्यन) देखने हुए उस स्थिति मे पहुच जाता है (यत्र) जहा (विश्वम एकनीडम भवति) विश्व एक घोसले के समान हो जाता । यहा परमधाम की कोई बात नही है।

इसी मन्त्र में (तस्मिन्) शब्द आया है इसका अर्थ है–उसमे अर्थात परमात्मा मे यहा आधार आधेय भाव स्पष्ट है। पाणिनिसूत्र है– आधारोऽधिकरणम आधार अर्थ म अधिकरण सज्ञा होती है अधिकरण मे सप्तमी विभक्ति होती है। मन्त्र मे तस्मिन्निद सञ्च विचेति का अर्थ हुआ परमात्मा मे यह जगत प्रलय की अवस्था मे प्रकृति के रूप मे विद्यमान रहता है उस अवस्था मे परमात्मा निमित्त कारण है और जड जगत् का प्रकृति उपादान कारण है इसी नियम से सृष्टि का निर्माण होता है। वह इतना अनन्त विराट है कि प्रलय और सृष्टि के समय सम्पूण जड जगत और जीवात्माए उसके भीतर ही रहती है। फिर एक बात और कही ह कि सब उत्पन्न हुई वस्तुओ मे वह विभू व्यापक हे।

(विभू) शब्द का सस्कृत शब्दकोष मे सस्कृत साहित्य मे एवम वेद मे व्यापक ही अर्थ है। इतनी स्पष्ट बात को आप नही समझ पा रहे है।

इसी भाव को यजुर्वेद (४०–५) का मन्त्र स्पष्ट रूप मे कह रहा है

"तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाहयत" वह परमात्मा सबके भीतर है और वह सबके बाहर भी है। सम्पूर्ण सृष्टि के वह बाहर भी है यह शब्द उसके व्यापक रूप को प्रकट करता है।

"नत् अन्त अस्य सर्वस्य वाक्य भी उसकी व्यापकता को व्यक्त करता ह। सर्वस्य शब्द मे जिसमे आपका वायरूप भी आ जाता हे तथा सभी प्राणियो के शरीर भी आ जाते है। जबकि आपके मत में परमात्मा ऊपर आसमान मे एक जगह रहता है। नीचे किसी वस्तु म या शरीर मे व्यापक नही है यह आपका मत वेदविरूद्ध हे

यजुर्वेद से सम्बन्धित उपनिषद बृहदारण्यकोपनिषद मे परमात्मा को अस्थूलम (बृ ३–८) कहा है–उस स्थूल या अणु नही कहा जा सकता वह न लम्बा है न छोटा हे जबकि आपका परमात्मा आसमान मे इसी प्रकार का होगा जो सीमा मे बद्ध होगा। आपकी मान्यना इस उपनिषद के भी विरुद्ध है।

परमात्मा न किसी का उपादान कारण है और न उसका कोइ उपादान कारण है

न तस्य कार्य करण च विद्यते (श्वेता ६–८) ओत प्रोत शब्द का अर्थ उपादान रूप मे व्यापकता नही है अपितु सर्व व्यापकता ही इसका अथ है क्यो कि प्रजासु पद ही बतला रहा है कि उत्पन्न हुए कार्य जगत मे वह व्यापक है और स्पष्ट करने के लिय वहा विभु शब्द विद्यमान है विभु शब्द सर्वत्र साहित्य मे और सस्कृत शब्दकोष मे व्यापक अर्थ मे ही प्रसिद्ध है। आप जो मनमाना अथ कर देगे बिना प्रमाण के वह अर्थ सस्कृत के एव वेद के विद्वानो को मान्य नही होगा।

इशावास्यम पद का अथ स्पष्ट है–ईश्वर से आच्छादित होने योग्य यह सम्पूण जगत ईश्वर मे आच्छादित है यह सम्पूर्ण सृष्टि उसक अनन्त रूप के एक अश है यजुर्वेद के मन्त्र ३१ १ मे कहा है–

"स भूमि सवत स्पृत्वात्यतिष्ठत अर्थात वह ईश्वर भूमि को चारो तरफ से स्पश करके विद्यमान है। यहा स्पष्ट है ईश्वर पृथिवी के चारो तरफ भी है। वह पृथिवी के भीतर भी व्यापक है इस बात का यजुर्वेद की व्याख्या करने वाली उपनिषद बृहदारण्यक मे लिखा है।

य पृथिव्या तिष्ठन पृथिव्या अन्तरो य पृथिवी न वेद यस्य पृथिवी शरीरम (बृह–३–७–४)

जो परमेश्वर पृथिवी मे रहता हुआ पृथिवी के भीतर है परन्तु जड पृथ्वी उसे नही जानती पृथिवी जिसका शरीर है। अब आप बतलाइये आपका ईश्वर तो ऊपर आसमान मे ही रहता है। वैदिक साहित्य मे तो उसे सर्वत्र व्याप्त बतलाया जा रहा है

अथर्व वेद (१०–८–३) मे कहा है

वेदाह सूत्र विततम यस्मिन्नोता प्रजा इमा

साधक कहता हे मै उस व्यापक सूत्र को जानता हू जिसमे सम्पूण प्रजाए ओत है समाई हुई हैं। वह व्यापक सूत्र परमात्मा ही है। योगमुनि जी की दृष्टि मे परमात्मा प्रत्येक मानव शरीर मे व्यापक नहीं है परन्तु वेद मे तो यह कहा है अन्ति सन्तम जहाति (अ १० ८–३२) जीवात्मा की समीपता को वह छोडता ही नही है

यजुर्वेद मे ही पुरुष सुक्त मे मन्त्र है (मनु ३१७३) वहा ईश्वर की महिमा को बतलाते हुए कहा है–

एतावानस्यमहिमा क्या उसकी इतनी ही महिमा है ? उत्तर मे कहा हे अतो ज्यायाश्च पुरुष

इससे भी वह बडा है–पादोऽस्य विश्वाभूतानि सम्पूर्ण भौतिक जगत उसक एक अश मे है। शष तीन अश दिव्य लोक मे अमृत रूप मे विद्यमान है। यहा स्पष्ट है कि इश्वर सर्वव्यापक तथा इस सृष्टि से बाहर भी विद्यमान है।

यही भाव मुण्डकोपनिषद मे स्पष्ट किया गया है

ब्रह्नैवेदममृत पुरस्तात ब्रहन पश्चात ब्रहन दक्षिणतरचोत्तरेण। अधरचोर्ध्वं च प्रसृतम

अर्थात सामने पीछ दक्षिण म उत्तर मे नीचे ऊपर सब जगह वही विद्यमान है। यहा भी उसकी सव व्यापकता वर्णित की गइ है।

यजुर्वेद की व्याख्या करने वाली उपनिषद श्वेताश्वतरोपनिषद् मे लिखा है

विश्वस्यैक परिवेष्टितार ज्ञात्वा शिव शान्तिमत्यन्तमेति। (श्वेता–४ १४)

यहा कहा है सम्पूर्ण विश्व को परिवेष्टित (आच्छादित) करने वाले शिव को जानकर अत्यन्त शान्ति मिलती है। इससे भी उसकी सर्व व्यापकता सिद्ध होती है।

वही (श्वता ४–१५) मे कहा है

सवभूतेषुगूढ वह ईश्वर सभी भौतिक जगत मे छिपा हुआ है। वही (श्वेता ६ २) कहा गया है येनावृत्त विश्वमिद हि सवम जिससे यह सम्पूर्ण विश्व आवृत है आच्छादित है ढका हुआ है

इसी उपनिषद मे बडे ही स्पष्ट शब्दो मे परमात्मा को सर्वव्यापी कहा है देखिए

एको देव सर्व भूतेषुगूढ सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा। (श्वेता ६ ११)

अर्थात वही एक दव सब म छिपा हुआ है और सर्वव्यापी है।

वही कहा है सर्वव्यापी स भगवान श्वेता ३–११) वह भगवान सव व्यापी है

इतने प्रमाणो के रहते हुए योगमुनि जी परमात्मा को सर्वव्यापी न माने तो यह उनका हठधर्म ही कहा जा सकता है। वे लिखते है–

यह सर्व व्यापक की उपज अज्ञान वश है वास्तव मे उसकी शक्ति ही सव व्यापी है

योगमुनि जी स्वय अज्ञानान्धकार मे पडे हुए हैं जो शक्तिमान् को और उसकी शक्ति को अलग २ मान बैठे है। परमात्मा और उसकी शक्ति का नित्य सम्बन्ध है। गुण और गुणी का नित्य सम्बन्ध होता है जहा परमात्मा होगा वहा उसका शक्ति भी होगी और जहा उसकी शक्ति होगी वहा परमात्मा भी होगा

आपने जो दो दृष्टान्त दिये है–एक दीपक का तथा दूसरा पुष्प का ये दोनो दृष्टान्त परमात्मा के स्वरूप को स्पष्ट नही करते। आप कहते है जैसे दीपक और उसका प्रकाश तथा पुष्प और उसकी सुगन्ध व्यापक है उसी प्रकार परमात्मा की शक्ति व्यापक है। परमात्मा व्यापक नही है सुनिय–रूप अग्नि का गुण है जहा जहा अग्नि होगी वहा वहा रूप होगा और जहा जहा रूप होगा वहा वहा अग्नि की विद्यमानता होगी मिट्टी के दीपक या रूई की बत्ती मे प्रकाश नही होता प्रकाश अग्नि का गुण है इसी प्रकार पुष्प के

शेष पृष्ठ ८ पर

राजधर्म

(महर्षि दयानन्द के वचन)

(१) परमात्मा की सृष्टि मे अभिमानी अन्यायकारी अविद्वान लोगो का राज्य बहुत दिन नही चलता। (स प्र ११)

(२) जिस राजा के राज्य मे डाकू लोग रोती विलाप करती प्रजा के पदार्थ और प्राणो को हरते रहते है वह राजा जानो भृत्य अमात्यसहित मृतक है जीता नही। (स प्र ६)

(३) एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिये। किन्तु सभाधीन राजा राजा और सभा प्रजा के आधीन और प्रजा राज सभा के अधीन रहे। (स प्र ६)

(४) स्वतन्त्र राजा प्रजा का नाश करता है। (स प्र ६)

(५) अज्ञानियो के सहस्रो लाखो करोडो मिलके जो कुछ व्यवस्था करे उसको कभी नहीं मानना चाहिये। (स प्र)

(६) एक अकेला सब वेदो का जानने हारा द्विजो में उत्तम सन्यासी जिस धर्म की व्यवस्था करे वही श्रेष्ठ धर्म है।। (स प्र ६)

(७) राजा और सब मनुष्यो को उचित है कि कभी मृगया (शिकार) और मद्यपान आदि दुष्ट कर्मो मे न फसे। (स प्र ६)

(८) राजाओ का वेद प्रचार रूप अक्षय कोष है।। (स प्र ६)

(९) राजाओ के राजा किसान आदि परिश्रम करने वाले है और राजा उनका रक्षक है। (स प्र ६)

(१०) जो कोई सभा मे अन्याय होते हुए को देखकर मौन रहे अथवा सत्य न्याय के विरूद्ध बोले वह महापापी होता है। (स प्र ६)

(११) जिस राजा के राज्य मे न चोर न पर स्त्री गामी न दुष्ट वचन का बालने हारा न साहसिक डाकू और न दण्डध्न अर्थात राजा की आज्ञा का भग करन वाला है वह राजा अतीव श्रष्ठ है। (स प्र ८)

मानव धर्म

(महर्षि दयानन्द के वचन)

(१) जिस–जिस कर्म से जगत का उपकार हो वह–वह कर्म करना और हानिकारक छोड देना ही मनुष्य का मुख्य कर्तव्य कर्म है।। (स प्र १० समु)

(२) विद्वानो का यही काम है सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण असत्य का त्याग करके परमानन्दित होते है।। (स प्र १०)

(३) मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य का निर्णय करने कराने के लिये है न कि वाद विवाद विरोध करने कराने के लिये। (स प्र ११ अनु.)

(४) सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद या लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है। (स प्र १२ अन.)

(५) मनुष्य का आत्मा यथायोग्य सत्यासत्य के निर्णय करने का सामर्थ्य रखता है। (स प्र १३ अनु)

(६) मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत अन्यो के सुख–दुख और हानि–लाभ को समझ। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे।। (स्वमन्तव्या)

(७) जहा तक हो सके वहा तक अन्यायकारियो के बल की हानि और न्यायकारियो के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम मे चाहे प्राण भी भले ही जावे। (स्वमन्तव्या)

(८) जो स्वाथवश होकर पर–हानि मात्र करता है वह जानो पशुओ का भी बडा भाइ है। (स प्र भूमिका)

(९) जिन पशुओ का मन विद्याविकास मे सत्योपदेश विद्यादान से ससारी जनो के दु खो को दूर करने से सुभूषित वेद विहित कर्मो से पराये उपकार करने मे लगे रहते है व नर और नारी धन्य है। (स प्र ३)

(१०) दुष्ट व्यसन मे फसने से मर जाना अच्छा है (स प्र)

भारतीय योगाचार्य द्वारा अमेरिका में योग का प्रचार

रोहतक २५ जून। अन्तराष्ट्रीय कायकल्प योग सस्थान के अध्यक्ष एवम विश्व प्रसिद्ध योगाचार्य ओमदत्त को अमेरिका के शिकागो नगर मे गत दिवस वहा के प्रसिद्ध कैसर रोग विशेषज्ञ डा. सुखदेव सोनी द्वारा एक टोयटो कोरोला कार भेट की गई यह कार आचार्य को उनके योग के प्रचार व प्रसार कार्यों मे तेजी लाने के उद्देश्य से उपहार स्वरूप प्रदान की गई। इस कार का मूल्य साढे सत्तरह हजार डालर जो भारत मे छ लाख रुपये के लगभग बनता है।

कार भेट करने के अवसर पर आर्य समाज मदिर शिकागो लैड मे एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया जिसमे डा. सुखदेव सोनी ने आचार्य के योग प्रचार की भूरि–भूरि प्रशसा की तथा शिकागो लैड की आर्य समाज के मत्री वीरेन्द्र कुमार ने भी आचार्य के अमेरिका प्रवास के दौरान उनके योग प्रचार प्रसार के तरीको की प्रशसा की और डा सोनी का कार भेट करने के लिए अभार प्रकट किया तथा आशा प्रकट की इससे उनके अमेरिका मे आर्यसमाज के कार्यो के प्रचार–प्रसार करने मे सहायता मिलेगी।

आचार्य ने आज यहा एक फैक्स सन्देश मे बताया कि उनके इस कार्य का श्रेय महर्षि दयानन्द को जाता है यह उनका ही सम्मान है। मै तो उनके विचारो का ही प्रसार कर रहा हूँ तथा डा. सोनी महर्षि दयानन्द के सच्चे सेवक हैं। इनका जीवन मन–वचन तथा कर्म से महर्षि के अनुसार है।

वेद का परमात्मा सर्वव्यापी है

पृष्ठ ७ का शेष

सुगन्धित मे पृथिवी का गुण है पृथिवी का लक्षण है 'तत्र गन्धवती पृथिवी जहा गन्ध होगी वहा पृथिवी तत्त्व भी होगा और जहा पृथिवी तत्त्व होगा वहा गन्ध भी होगा दोनो का नित्य सम्बन्ध है। उसी प्रकार जहा परमात्मा होगा वहा उसकी शक्तिया भी रहेगीं तथा जहा परमात्मा की शक्तिया होगी वहा परमात्मा भी होगा।

इस प्रकार ये दोनो दृष्टान्त आपके विरूद्ध ही जाते हैं।

गुण शब्द सस्कृत साहित्य मे एवम दार्शनिक जगत मे दो अर्थों मे प्रयुक्त है। अच्छाईयो के लिये तथा सत्व रज तम के लिये। जब परमात्मा को निर्गुण कहा जाता है तब उसका तात्पर्य सत्व रज तम से रहित उसे कहा जाता है। ये तीनो गुण हैं। प्रकृति का और इन गुणो का नित्य सम्बन्ध है। जब हम परमात्मा के गुण ऐसा कहते हैं तब परमात्मा की शक्तिया यही समझना चाहिये। परमात्मा की शक्तिया परमात्मा से अभिन्न हैं देखिये साख्य मे प्रकृति को त्रिगुणात्मिक कहा है। सस्कृत मे देखिये 'गुणी गुण वेत्ति न वेत्ति निर्गुण गुण शब्द का प्रसगानुसार अर्थ लेना चाहिये। गुण और गुणी का नित्य सम्बन्ध है। ऐसी दार्शनिक मान्यता है।

योग मुनि जी आप इन बातो का उत्तर दीजिये–

१ ब्रह्मकुमारी मत स्त्रीलिंग मे ही क्यो प्रसिद्ध हुआ जबकि जीवात्मा न स्त्रीलिग है न पुल्लिग है न नपुसकलिग है।

२ आपके दादा लेखराज जी यदि प्रजापति ब्रह्मा थे तो उन्होने वेदों का प्रचार क्यों नही किया ? जिसे आप कर रहे हैं।

३ दद नख र [illegible] के अनुर [illegible] न सृष्टि समाप्त होनी थी। ऐसा क्यो नही हुआ।

४ दादा लेख राज जी की पत्नी भगवती जी का सुना है केसर हुआ था उसे वह जिन्दा क्यो नही रख सके ?

५ आपके गुरू स्त्रियो को गोद मे बैठाकर दीक्षा देते थे एक देवी ने यह रहस्य खोला था जो प्रत्यक्षदर्शी थी। क्या यह सच है ?

६ क्या आप विभु शब्द का व्यापक अर्थ मे सप्रमाण निषेध कर सकते है ?

७ क्या अनेक आकाश सिद्ध कर सकते हैं ?

८ क्या शिव विष्णु और ब्रह्मा इन तीन सत्ताओ को स्वतन्त्र रूप मे वेद मे सिद्ध कर सकते है ?

९ आपके चित्रो मे ब्रह्मकुमारी ही स्वर्ग में क्यो जा रही है ? ब्रह्मकुमार क्यो नही ?

१० सुना है सिन्ध मे दाद लेखराज जी को जेल भी जाना पडा था। क्या यह सच है ?

योगमुनि जी आपने लिखा है कि–

महर्षि दयानन्द ने –परमात्मा को अर्ध सत्य के रूप मे प्रस्तुत किया है इसका तात्पर्य हुआ आप महर्षि दयानन्द सरस्वती के विरोधी हैं पता नहीं आप आर्य समाज में मन्त्री कैसे बन गये थे ?

इसी लिये हम आपसे जनता के सामने खुलकर शास्त्रार्थ करना चाहते हैं आप वाक विवाद से बचने की बात करते है। विद्वानो के समक्ष बैठकर जहा निर्णायक वेदो के विद्वान होगे। आपने जो वेद मन्त्रो का मनमाना अर्थ किया है उसकी अनर्थकता तथा महर्षि दयानन्द के द्वारा किये अर्थों की सार्थकता हम सिद्ध करना चाहते हैं।

ब्रह्मकुमारी मत वेद विरुद्ध है यह भी शास्त्रार्थ का दूसरा विषय रहेगा। आईये मैदान में।

म न १३२ पुराना हस्पताल
जम्मू–१८०००१

वेदों में समाजवाद

वेदो का आप स्वाध्याय करें तो आपको विदित हो जायेगा कि वेदो मे समाजवाद व साम्यवाद भरा पडा है। वेदो का समाजवाद त्याग अहिंसा सत्य प्रेम शान्ति समानता सहृदयता और कल्याणकारी भावना पर आधारित है न कि ईर्ष्या द्वेष घृणा हिंसा अन्याय स्वार्थ व विद्रोह की भीति पर। वेदो मे एक मन्त्राश आता है 'केवलाघो भवति केवलादी' जो अकेला खाता है वह पाप खाता है। वेदो के भजनोपदेशक भी इसी भावना का एक भजन सुनाते हैं भूखा प्यासा पडा पडोसी तूने रोटी खाई तो क्या ? इससे बढकर आपको समाजवाद की भावना और कहा मिलेगी ? वैदिक वाङमय मे ही सारे विश्व को एक परिवार बताया है वसुधैव कुटुम्बकम। परिवार में छोटा बडे का आदर व सम्मान करता है बडा छोटे को प्यार व स्नेह देता है। परिवार के सदस्यो मे परस्पर वैमनस्य नही होता बल्कि प्रेम पूर्वक एक जुट होकर परिवार की उन्नति व समृद्धि बढाने मे अपना कर्त्तव्य पालन समझते है इसी प्रकार वेद चाहता है सारे विश्व के रहने वाले भाई भाई की भाति एक दूसरे की तकलीफ को अपनी तकलीफ समझते हुए प्रेमपूर्वक रहे

अथर्ववेद मे मन्त्र आता है 'माता भूमि पुत्रोऽहम पृथिव्या' भूमि हमारी माता है हम सब उसके पुत्र हैं। इससे बढकर भ्रातृभाव का उपदेश आपको अन्य ग्रथो मे मिलना मुश्किल है। वेद का मन्त्र है मित्रस्याह चक्षषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम मित्रस्याह चक्षषा सर्वाणि भूतानि समीक्षाम्हे सब प्राणी मुझ मित्र की दृष्टि से देखे और मै सबको मित्र की दृष्टि से देखू। यह है मित्रता की पराकाष्ठा।

वेदो मे यज्ञ व दान की बडी महिमा गाई गई है। यह दोनो प्रक्रियाये परोपकार व समाजवाद पर आधारित हैं। यज्ञ से हुए शुद्ध व सुगन्धित वायुमण्डल का लाभ हमारा पडोसी मित्र या अमित्र सभी उठाते हैं इसीलिये वेदो मे कहा गया है यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ करना मनुष्य का श्रेष्ठतम कर्म है। वेदों में सभी परोपकारी कार्यों का यज्ञीय कार्य की सज्ञा दी है जिसमे मनुष्य परोपकारी कार्यों को करने की प्रेरणा लेता है और परोपकारी कार्य समाजवाद का अभिन्न अग है। इसी प्रकार दान के लिए वेदो म मन्त्र आया है शत हस्त समाहार सहस्र हस्त सकिरा यानी हम सौ हाथो से कमावे और हजार हाथो से बाटे। इसका तात्पर्य यह है सौ व्यक्ति जितना कमाते है उतना खूब मेहनत करके एक व्यक्ति कमावे और उस सचित धन को हजार जरूरतमद लोगो मे बाट देवे यानी सब लोग मेहनती और दानी बने जिससे कोई व्यक्ति भी भूखा न सो सके।

वेद त्यक्तेन भुजीथा मागृध का पाठ पढाकर मनुष्य को सुखी व सन्तोषपूर्ण जीवन यापन करने की कला सिखाता है। यानी ससार के समस्त ऐश्वर्यो का त्याग भाव से उपयोग बिना उनमें लिप्त हुए करो और दूसरे के धन का लालच न करो यह सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करने की उच्चतम श्रेणी है

वेद समाज व राष्ट्र को सगठित रहने का उपदेश देता है। वेदो मे कई सगठन सूत्र आये है ओ३म सगच्छध्व सवदध्व स वो मनासि जानताम हे पुरुषो! तुम परस्पर मिलकर चलो मिलकर बातचीत करो। ज्ञानी बन कर तुम अपने मनो को भी एक बनाओ।

ओ३म समानो मन्त्र समिति
समानी समान मन सहचित्तमेषाम।
समान मन्त्र ममिमन्त्रये व
समानेन वो हविषा जुहोमि।।

तुम्हारे गुप्त विषयो के गम्भीर विचार मिलकर हो विचार के लिये तुम्हारी सभायें एक जैसी हो जिनमे तुम सब मिलकर बैठ सको तुम्हारा मनन मिलकर हो निश्चय मिलकर हो मै तुम्हे मिलकर विचार करने का उपदेश देता हू और तुमको पारस्परिक उपकार के लिये समान रूप से त्याग के जीवन म नियुक्त करता हू

वैदिक परम्परा मे सबको मिलकर प्रेमपूर्वक काम करने का बडा महत्व है जो समाजवाद का प्रमुख लक्ष्य है। सगठित व अनुशासित समाज ही राष्ट्र को उन्नत बना सकता है वैदिक विचारधारा तप व त्याग में आनन्द बताती है। ईदन्नमम यह मेरा नही ईश्वर का है या राष्ट्र का है की भावना को प्रश्रय देती है और आज का मार्क्स का समाजवाद भोग को प्रधानता देता है कर्त्तव्य को गौण और अधिकार को मुख्य मानता है द्वेष और घृणा को बढाता है समाज व राष्ट्र मे विघटन पैदा करता है। इसीलिए आज मालिक और मजदूरो मे शिक्षक और विद्यार्थियो मे बाप और बेटो मे प्रेमकी बजाय राजमर्रा झगडे होते देखते हैं जिससे कल कारखाने बन्द होते जा रहे हैं व्यवसाय व व्यापार ठप्प होते जा रहे हैं परिवारो मे कलह व क्लेश बढता जा रहा है और शि... ...डता का साम्राज्य है जिससे सिर्फ अपन देश मे ही नही पूरे विश्व मे अशान्ति व अनुशासनहीनता व्याप्त है। यदि विश्व में सुख व शान्ति की स्थापना करना चाहते हो तो 'सर्वे भवन्तु सुखिन' का पाठ पढाने वाले वैदिक मार्ग का अनुसरण करने के अलावा अन्य कोई मार्ग नही है

खुशहाल चन्द्र आर्य
१६० महात्मा गाधी रोड कलकत्ता ७०००७
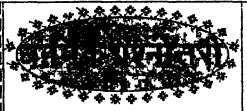
प्र वर्ण और जाति मे क्या अन्तर है ?

उ जाति जन्म से होती है और मरण पर्यन्त रहती है। वर्ण परिवर्तनशील हैं अर्थात कर्मानुसार बदल जाता है।

प्र वर्ण कितने है ? क्या माता पिता अन्य वर्णस्थ हो तो उनकी सन्तान ब्राह्मण बन सकती है ?

उ वर्ण चार हैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र माता पिता किसी वर्ण के हो उनका पुत्र अपने गुण कर्मानुसार वर्ण प्राप्त करता है। अत अन्य वर्णस्थ भी ब्राह्मण बन सकता है और ब्राह्मण की सन्तान शूद्र बन सकती है

प्र हम तो सनातन से यही देखते है कि ब्राह्मण की सन्तान ब्राह्मण ही कहलाती है ?

उ केवल पाच सात पीढी के वर्तमान व्यवहार को सनातन नहीं कहते अपितु वास्तव म सनातन वह है जो सृष्टि तथा वेद के आरम्भ से आज तक है। वेद मे आज्ञा है वर्ण गुण कर्म स्वभाव से सदैव बदलते हैं। यदि ऐसा नही मानो तो ब्राह्मण के ईसाई मुसलमान हो जाने पर भी उसे ब्राह्मण क्यो नही कहते सनातन शब्द का अर्थ है सदा एक रस रहने वाला इसीलिए इश्वर को सनातन कहा जाता है।

प्र सनातन धर्म का क्या अर्थ है ?

उ सनातन धर्म धर्म का यह नियम ह जो कभी बदले नहीं सदा एक सा रहे जो कभी पुराना न हो सदा नया रहे। जैसे रात दिन का चक्र ... है। यह सनातन धर्म है क्योकि किसी युग किसी देश मे वह बदल नही सकता

प्र आजकल जिसे सनातन धर्म कहते है क्या उसमे बहुत से रस्म रिवाज पीछे से आकर मिल गये है जैसे शुद्ध पानी दूर तक बहते बहते गदला हो जाता है। क्या फिर भी उस सनातन धर्म कह सकते हे ?

उ पण्डितो मे लोभ अत्यन्त बढ गया उनका बहुत सी मिलावट वाले धर्म के सनातन धर्म कहना भूल है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जिस धर्म का प्रचार किया है वही शुद्ध सनातन धर्म है। इस प्रकार आर्य समाज भी सनातन धर्म को मानता है। सनातन धर्म कहलाने वाले धर्म मे बहुत सी बाते पीछे से मिला दी गई उनको छोड दना चाहिए

प्र क्या मूर्ति पूजा सनातनी है ?

उ कदापि नही यह बात तो आप मन्दिरो की मूर्तियो को देखकर ही जान सकते है मन्दिरो मे जो मूर्तिया होती है उनमे अधिकतर श्रीकृष्ण जी महाराज की है जो भिन्न भिन्न नामो से पुकारी जाती हैं अत स्पष्ट है कि यह मूर्तिया श्रीकृष्ण जी के जीवन से पूर्व नहीं पूजी जाती थी इसी प्रकार श्रीराम से पूर्व राम की मूर्तिया नही पूजी जाती थी अत इनका मूर्तिपूजन सनातन धर्म नहीं अपितु नवीन धर्म है

प्र क्या मूर्ति पूजा के कारण पण्डिता ... ... ?

उ हा कहानिया ढ ... राम ... पूजा नही करते ... बटरेते है ... दूसरा का ...

आर्य समाज लंडन का वार्षिक निर्वाचन

प्रधान	प्रो सुरेंद्र नाथ भारद्वाज
उप प्रधान	श्री प्रियव्रत चोपडा
	श्रीमती प्रतिभा बहल
मन्त्री	श्री मदन आनद
उपमन्त्री	श्रीमती कैलाश भसान
	श्री प्रभाकर शर्मा
कोषाध्यक्ष	श्री सुरेंद्र कुमार वेदी
उपकोशाध्यक्ष	श्री सुभाष मित्र वमा
लोकसपर्क अधिकारी	श्री सत्पाल बत्रा
पुस्तकालयाध्यक्ष	श्रीमती ओ३म धिल्लन

कार्य कारिणी सभा के सदस्य

श्रीमती सुदर्शना कौशल श्री यशदेव प्रिजा श्री अरूण कहेर श्री वीरेंद्र वीर वर्मा श्री युद्धवीर सिह पुरी श्री धम सघ श्री भारत भूषण शर्मा श्री सुरेश सोफट

अन्तरंग सभा के सदस्य

प्रो सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज डॉ मदन बहल श्रीमती सावित्री छाबडा श्री सुरेन्द्र कुमार वेदी श्री राजेन्द्र कुमार ओबगय श्री जगदीश राय शमा।

ऑडिटर -
श्रीमती प्रेमलता सोनी

शोक समाचार

आर्य समाज एव आर्य वीर दल बरहटा–छोटा के युवा कर्मठ व लगन शील कार्य कर्त्ता श्री काशीराम जी आर्य 'शिक्षक' के पुत्र सव मित्राय का आकस्मिक निधन दि. ६ ६ ९६ को हो गया है। दि. १६ ६ ९६ को सत्सग भवन मे श्री रतन सिह प्रधान की उपस्थिति मे एक शोक–सभा का आयोजन किया गया। प्रभु–दिवगत आत्मा को सदगति प्रदान करे व परिवार जन को दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करे कि प्रार्थना ईश्वर से की गई व एक मिनिट का मौन रखा गया।

— प्रमुख समाजसेवी एव आर्य समाज के कर्मठ–कार्यकर्त्ता श्री ओमप्रकाश सोनी ज्येष्ठ सुपत्र श्री दाऊलाल सोनी (पूर्व कार्यकर्त्ता प्रधान स्मृति भवन न्यास एव प्रधान नगर आर्य समाज गुलाबसागर जोधपुर) का दिनाक ९ जून ९६ की रात्रि को अकस्मात देहावसान हो गया है।

जोधपुर नगर की समस्त आर्य सस्थाओ की ओर से दिवगत आत्मा की चिरस्थायी शान्ति एव शोकाकुल परिवार को सान्त्वना प्रदान करने हेतु प्रार्थना सभा का आयोजन दिनाक १५ जून ९६ शनिवार को साय ६ बजे महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन जोधपुर मे सम्पन्न हुआ। अनेको सस्थाओ तथा व्यक्तियों ने उनको श्रद्धान्जलि अर्पित की।

— अत्यन्त दुख के साथ लिखना पड रहा है कि ब्रह्मानन्द जिज्ञासु आर्य कवि के अग्र स्वतत्रता सेनानी श्री चन्द्र देव नार ा जी का हृदय गति रूक जाने से दिना ५ ६ ९६ को निधन हो गया। वे आर्य समाज के प्रेमी व समर्थक रहे तथा स्वतत्रता सेनानी थे। वे ७२ वर्ष के थे।

उनके निधन से हम सब शोकान्वित हुए। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा उनके शोकसतप्त परिवार को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करे।

भवदीय
ब्रह्मानन्द जिज्ञासु आर्य कवि

भारत गोसेवक समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रेमचन्दजी गुप्ता अस्वस्थ

नई दिल्ली २४ जून। भारत गोसेवक समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष सनातन धर्मी नेता श्री प्रेमचन्द जी गुप्ता की रीढ की हड्डी में ट्यूमर होने के कारण डा एम एल सिघवानी की देखरेख में बतरा अस्पताल नई दिल्ली में उपचार चल रहा है।

एम आर आइ टैस्ट होने के बाद सुप्रसिद्ध न्यूरो सर्जन श्री एच एन अग्रवाल श्री गुप्ताजी के ट्यूमर का ऑपरेशन करेंगे।

श्री गुप्ताजी के स्वास्थ्य लाभ के लिए गुप्ता कालोनी में वैदिक विद्वानों द्वारा रूद्राभिषेक व महामृत्युजय का जाप हो रहा है।

(गगा सिह)
कार्यालय सचिव

हिन्दी में विवरण न होने से

गाय की हड्डियां खाने पर मजबूर

गाजियाबाद उत्तर प्रदेश के हवाले से १३ जून १६६६ के समाचार पत्रो में सूचना प्रकाशित हुई है कि हालैंड की एक कम्पनी के लिए ब्राजील मे गाय की हडिडयो के चूरे से निर्मित टाफी को गाजियाबाद सहित पूरे देश मे बेचे जाने का सनसनीखेज मामला प्रकाश मे आया है। यह कम्पनी फूटेला टाफी भारत मे बडे पैमाने पर बेच रही है। फूटेला मे अन्य सामग्रियो के अलावा गाय की हडिडयो का चूरा भी है। टाफी के डिब्बे पर अग्रेजी मे लिखे इसके अवयवो के नाम मे गाय की हडिडयो का चूरा भी शामिल है। दरअसल फ्रूटला टाफी मे गाय की हडिडयो का मामला उस समय प्रकाश में आया जब लोहियानगर स्थित रेस्टोरेट के मालिक ने उसके पैकेट पर लिखी इबारत को पढा। आज भारत के ऐतिहासिक सास्कतिक और धार्मिक स्थलो पर भी गाय की हडिडयो के चूरे के मिश्रण वाली यह टाफी बडे पैमाने पर बेची जा रही है आज जैसे ही गाय की हडिडयो का चूरा मिश्रित फ्रूटेला टाफी गाजियाबाद मे बिकने का मामला प्रकाश मे आया यहा राजनैतिक सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रो मे इसकी तीखी प्रतिक्रिया देखी गई है।

अनेक सस्थाए सरकार से यह माग करती रहीं हैं कि विदेशी अथवा स्वदेशी कपनियो के पेकेटो और शीशियों आदि पर भारतीय भाषाओ मे भी फ्रास के समान विवरण लिखा जाना अनिवार्य किया जाए ताकि जनसाधारण भी यह समझ सके कि जो कुछ उसे बेचा जा रहा है वह क्या है और उसके प्रयोग की विधि क्या है ? उक्त घटना के सदभ मे पुन सभी जनप्रतिनिधियो धार्मिक सामाजिक और भारतीय भाषाओ की सेवा मे कार्यरत सस्थाओ से अनुरोध है कि इस माग को पूर्ण सगठन शक्ति से और निरन्तर उठाते रहे ताकि ग्राहक केवल अग्रेजी मे विवरण होने से किसी धोखे मे न आए।

जगन्नाथ

सयोजक राजभाषा कार्य
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद
सरोजिनी नगर नई दिल्ली २३

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज टीकागम पुरी

प्रधान श्री श्याम किशोर यादव
मत्री श्री छेनी पोद्दार
[illegible]

आर्य समाज जी टी रोड खतौली

प्रधान श्री [illegible] गौतम
मत्री श्री कृष्ण चन्द
कोषाध्यक्ष श्री योगेश कुमार

आर्य समाज मैनपुरी

प्रधान श्री केशव सिह
मत्री श्री सुधीर दुबे
कोषाध्यक्ष श्री सरताज बहादुर

चम्पारण जिला आर्य सभा

प्रधान श्री महथ प्रसाद
मत्री प गधाकान्त द्विवेदी
कोषाध्यक्ष श्री जवाहर प्रसाद आर्य

आर्य समाज शामली

प्रधान श्री धमवीर जी वर्मा
मत्री श्री रामकुमार गुप्ता
कोषाध्यक्ष श्री पूरण चन्द

जिला आर्य सभा सगरूर

प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार
मत्री श्री सुरेन्द्र पाल गुप्ता
कोषाध्यक्ष श्री जगन्नाथ गोयल

आर्य समाज सौरिख फर्रुखाबाद

प्रधान श्री रामनाथ आर्य
मत्री श्री प्रमोद कुमार
कोषाध्यक्ष श्री बादाम सिह आर्य

जीवन में निश्चित लक्ष्य बना लें, उस पर दृढ रहें तथा सावधानी पूर्वक आगे बढते जायें।

वेद प्रचार का आयोजन

आर्य समाज सक्ती के तत्वावधान मे ग्राम तुर्री मे हवन (यज्ञ) का कार्यक्रम रखा गया। यज्ञ का सचालन श्री देवव्रत आर्य जी के निर्देशानुसार सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम मे दाशरथी राव आर्य वैदिक स्कूल के प्रधानाचार्य श्री योगेश साहू जी आर जी थवाइत श्री बेइराम कन्नौजे श्री जगन्नाथ निर्मलकर श्री प्रकाश कसेर राकेश महन्त सजय पान्डेय भूपेश यादव कृष्णा सोनी सजीव कन्नौजे सतोष देवागन इत्यादि सदस्यो ने इस यज्ञ को सम्पन्न करने मे बडा ही सहयोग प्रदान किया। इस यज्ञ मे उपस्थित ग्राम तुर्री के ग्रामीण प्रतिनिधियो ने इस यज्ञ की भूरि भूरि प्रशसा की एव सक्ती आर्य समाज के सचालक से निवेदन किया कि ग्राम तुर्री मे भी आर्य समाज की स्थापना हो ताकि वहा भी इस प्रकार के आयोजनो से जनता लाभान्वित हो सके।

गृह प्रवेश कार्यक्रम सम्पन्न

श्री अशोक आहूजा मालिक लक्ष्मी ड्रेसेस बुधवारा बाजार खण्डवा के नव निर्मित भवन का गृह प्रवेश कार्यक्रम श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। आशीर्वाद एव उदबोधन आर्य समाज के पुरोहित श्री वेदपाल जी आर्य द्वारा सम्पन्न हुआ। इसमे वैदिक रीति से सम्पन्न कराये जाने पर बल दिया गया कि सभी सोलह कार्यक्रम आडम्बर विहीन तथा पूर्ण वैदिक रीति से कम से कम खर्च मे होते है होना चाहिए। शाति पाठ के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ।

राधेश्याम पाडेय 'दीन

वैसी फसल काटता मानव बीज जिस तरह बोता है।
रोने वाला हसने लगता हसने वाला रोता है।

वैदिक धर्म मलिन लोहे को आर्य बना कुन्दन करता है।
सध्या–वन्दन हरीतिमा दे मरुथल को नन्दन करता है।
ओ३म् शब्द मे शक्ति अपरिमित वही करे जो होता है।
रोने वाला हसने लगता हसने वाला रोता है।

आदर्शों की रक्षा करना आदर्शो की बात है।
देख रात को क्यो घबराते आने वाली प्रात है।
गायत्री का महामन्त्र कलुषित काया को धोता है।
रोने वाला हसने लगता हसने वाला रोता है।

जो आसू की भाषा समझे ऐसा व्यक्ति महान है।
करे असम्भव को जो सम्भव वह ही तो भगवान है।
पढे भोर मे ओ३म नाम जो वही तो मिट्ठू तोता है।
रोने वाला हसने लगता हसने वाला रोता है।

हर विपत्ति से लोहा लेना ये कायर का काम नही।
मान बेचकर करे नौकरी ये शायर का काम नही।
सुख–दुख सिक्के के दो पहलू धीरज तू क्यो खोता है।
रोने वाला हसने लगता हसने वाला रोता है।

राम–कृष्ण की वसुन्धरा ये दयानन्द की माटी है।
स्वाभिमान की जहा कहानी कहती हल्दीघाटी है।
'दीन' जहा कण–कण मे ईश्वर कभी न जगता सोता है।
रोने वाला हसने लगता हसने वाला रोता है।

सण्डवा चण्डिका
प्रतापगढ (उ प्र

नवीन आर्य समाज की स्थापना

मुगेर (विहार) के टीका रामपुरी छेत्र मे एक नवीन आर्य समाज की स्थापना की गयी है। दिनाक ४ ६ ९६ से ६ ६ ९६ तक आयोजित वृहद यज्ञोपरान्त छेत्र के प्रवुद्ध जनो की उपस्थिति मे नवीन आर्य समाज को विधिवत प्रारम्भ किया गया। आर्य समाज टीकारामपुरी की स्थापना मे श्री रघुवीर नैष्ठिक का प्रयास सराहनीय रहा। पडित राम देव प्रसाद शास्त्री तथा अम्बिका जी नालन्दा की उपस्थिति मे इस नवीन आर्य समाज की कार्यकारिणी का गठन किया गया। श्री श्याम किशोर यादव को प्रधान तथा श्री छेदी पोद्दार को सर्व सम्मति से मत्री नियुक्त किया गया।

श्री जगत नारायण आर्य को सम्मानित किया गया

आर्य समाज मलाही मे ९ ६ ९६ को जिला सभा के प्रधान श्री जगत नारायण आर्य का आर्य समाज के लिये की गयी सेवाओ को ध्यान मे रखते हुये अभिनन्दन किया गया। समारोह की अध्यक्षता विहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री ने की। श्री जगत नारायण जी की ७५वीं वर्षगाठ के अवसर पर क्षेत्र के प्रमुख आर्य सामाजियो तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने माल्यार्पण कर उनका अभिनन्दन किया। जिला सभा की तरफ से उनको अभिनन्दन पत्र भेट किया गया। अन्य समाजों की तरफ से उनको वस्त्र आदि भी भेंट किये गये।

राष्ट्र भाषा हिन्दी को प्रोत्साहन दें

हर घर में वेद चाहिये

यदि बुद्धि का विकास तथा परिवार को धार्मिक बनाना चाहते हो तो वेदो का स्वाध्याय करो। वह हिन्दू (आर्य) का घर नहीं ? जहा वैदिक साहित्य नही ?

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

वैदिक साहित्य

मगाकर गृह शोभा ही नहीं सद्मति भी प्राप्त करे।

डा सच्चिदानन्द शास्त्री
मत्री

आर्य समाज संगरूर का वार्षिक निर्वाचन

प्रधान	श्री वीरेन्द्र कुमार
मत्री	श्री मेहर चन्द्र
कोषाध्यक्ष	श्री राजेन्द्र आर्य

बदी का बीज बोकर नेकी की आशा न करे।

ब्राह्मण आर्य परिवार की कन्या २६। B A। ५-२" हेतु वर तथा युवक ३६। M A। ५०००। ५-७" राजकीय सेवारत हेतु वधु। पूर्व पत्नी से सम्बन्ध विच्छेद। नि सन्तान विधवा भी विचारणीय। सम्पर्क करे।

मिश्रा
c/o डा अजय श्रीवास्तव
बडा चौराहा
आर्य कन्या पाठशाला विल्डिग
हरदोई-२४१००१

आर्य समाज रेहरा बाजार गोण्डा का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज रेहरा बाजार जि गोण्डा का वार्षिकोत्सव ३ से ५ जून तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर नित्य प्रात ७ बजे से १० बजे तक यज्ञ व भजनोपदेश होते रहे तथा साय ६ बजे से विद्वानो के द्वारा प्रवचन तथा उपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। समारोह मे श्री जोमित्र शास्त्री श्री सत्य प्रकाश जी तथा कामता प्रसाद जी कर्मठ ने अपने ओजस्वी वक्तव्य तथा भजन के द्वारा भारी सख्या मे पधारे श्रोताओ का मन मोह लिया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

त्रिनिदाद और टोबेगो के प्रधान मत्री हिन्दी सीख रहे हैं

त्रिनिदाद और टोबेगो के भारतीय मूल के प्रधानमत्री श्री वासुदेव पाडेय हिन्दी साफ्टवेयर लेकर भावविभोर है। पश्चिमी द शो मे वे पहले आदमी हैं जिन्होने इस नए मल्टीमीडिया साफ्टवेयर को खरीदा है। इस साफ्टवेयर का निर्माण भारत के सेटर फार द डिवलपमेट ऑफ अडवास्ड कम्प्यूटिग सी-डी एसी ने किया है। त्रिनिदाद के विश्व वद्यालय मे पाचवे विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर आयोजित एक कम्प्यूटर प्रदर्शनी मे उन्होने हिन्दी के साफ्टवेयर को देखते ही खरीदने का ऑर्डर दे दिया। श्री पाडेय को इस साफ्टवेयर की लीला श्रृखला ने सबसे ज्यादा आकर्षित किया। उन्होने उत्साहित होकर कहा कि इस पैकेज के माध्यम से वे छह महीन मे एकदम सही-सही हिन्दी बोलना सीख लेगे।

जनसत्ता मुबई १३ अप्रैल १९९६ साभार

सावदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-2 से प्रकाशित

ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् — विश्व को श्रेष्ठ (आर्य) बनाएँ

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सामवेद | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र | अथर्ववेद

दूरभाष ३२७४७७१ ३२६०९८५ आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये वार्षिक शुल्क ५० रुपए एक प्रति १ रुपया
वर्ष ३५ अंक २२ दयानन्दाब्द १७२ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ आषाढ कृ.-१४ सम्वत्-२०५३ १४ जुलाई १९९६

हिन्द महासागर से हिमालय तक भारत एक रहेगा

सम्वाददाता सम्मेलन में सभा प्रधान श्री वन्देमातरम् जी की घोषणा
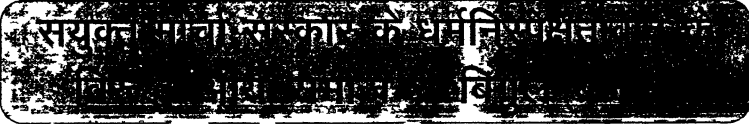
उमन्त्रेत दलित ईसाइयो क आरक्षण ... ये म लाने हेतु सयुक्त मोर्चा सरकार के प्रयत्नो का विरोध किये जाने की विधिवत घोषणा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आज दिल्ली मे आयोजित एक सम्वाददाता सम्मेलन मे कर दी गयी है।

सवाददाता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव ने तथाकथित धर्मनिरपेक्षता वाले राजनीतिक दलो को आड हाथो लेते हुये कहा कि

सयुक्त मोर्चा सरकार विभिन्न विचारधाराओ वाली राजनैतिक पार्टियो का गठजोड है। इन सभी राजनैतिक पार्टियो ने उस विचारधारा को कायम रखने के लिए गठबन्धन किया है जिसे ये **धमनिरपेक्षता** कहते है

इन तरह घटको मे अखिल भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस राजनीति के क्षेत्र मे लम्बे समय से सर्वप्रमुख रही है। उनके १९९६ के निर्वाचन घोषणा पत्र मे कहा गया है—

धर्म निरपेक्षता का मूलाधार अल्पसख्यको को सुरक्षा प्रदान करना है।

श्री वन्देमातरम ने इस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि अल्पसख्यको को सुरक्षा प्रदान करना राज्य का मुख्य कर्तव्य है परन्तु ऐसा बहुसख्यको की कीमत पर नहीं किया जाना चाहिए। जनसख्या के ताजा आकडे स्पष्ट करते है कि बहुसख्यको की जनसख्या निरन्तर घट रही है और अल्पसख्यको की जनसख्या निरन्तर विस्मयकारी तेज गति से बढ रही है।

१९९६ के चुनाव घोषणा पत्र मे जनता दल भी विभिन्न समुदायो के प्रति तुष्टीकरण की भावना को प्रदर्शित करने मे काग्रेस से पीछे नहीं रहा है।

सभा प्रधान श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव तथा उप प्रधान श्री सूर्य देव जी सम्वाददाता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए

जनता दल ने चुनाव घोषणा पत्र मे अपना प्रस्ताव इस प्रकार प्रस्तुत किया है।

जनता दल का यह सुविचारित अभिमत है कि दलित ईसाइयो को आरक्षण तथा अन्य लाभ मिलने ही चाहिए और यदि आवश्यकता पडे तो इसके लिए सविधान मे अपेक्षित सशोधन भी किया जाना चाहिये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इन राजनैतिक दलो के भारतीय अल्पसख्यको के प्रति इस दुराग्रह को देखकर चकित और चिन्तित है विशेष रूप से जबकि ये राजनैतिक दल राष्ट्र को विखण्डित एव अस्थिर करने की गतिविधियो मे सलग्न है

शायद यही सयुक्त मोर्चा सरकार का धर्म निरपेक्षता वाद है।

श्री वन्देमातरम ने कहा कि ऐसा प्रतीत होता है कि सयुक्त मोर्चा सरकार हिन्दू दलितो के समान ही ईसाई दलितो का आरक्षण देने से सबन्धित बिल को ग्यारहवीं लोकसभा के १ जुलाई १९९६ से प्रारभ होने वाले आगामी सत्र मे प्रस्तुत करने का निश्चय कर चुकी है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मोर्चा सरकार के इस निर्णय का निम्न आधार पर विरोध करती है

यह बिल विपरीत दिशा मे की गई प्रगति का परिचायक है। इस से राष्ट्रीय एकता एव सदभाव की चेतना का सवर्धन नहीं होगा अपितु जातीय एव साम्प्रदायिक वर्ग चेतना का सवर्धन होगा

शेष पृष्ठ ११ पर

सम्पादक- डा.सच्चिदानन्द शास्त्री

म्न प रघुनन्दन ग्म की भनेक पाण्डित्यपूर्ण ग्रन्थ भाय जनता क समक्ष प्रस्तुत की गई है

भाषा विषयक अक्षर विज्ञान और वैदिक सिद्धान्तो के प्राषक वैदिक सम्पत्ति नामक प्रसिद्ध अमूल्य ग्रन्थ है जिनके लिखने म लेखक ने अपने विवेक से बहुत काम लिया है लिखने से पूर्व लेखक क विभिन्न भाषाओं की अनेकानेक ग्रन्थो क परिशीलन करना पडा अक्षर विज्ञान ऐसी ही पुस्तक है उनकी विद्या मे रुचि गवेषण शक्ति सर्वथा प्रशंसनीय है अक्षरो के अथ और रूप निकलने मे विशेष प्रतिभा प्रदर्शित की है। भाषा विज्ञान का ऐसा भदभुत ग्रन्थ महा वैयाकरणों के अतिरिक्त दिखाइ नहीं पडा

द्वितीय पुस्तक है वैदिक सम्पत्ति इस पुस्तक मे अ यं सिद्धा त वेदो की अपौरुषेयता इश्वर का अस्तित्व भौतिकवाद एव विकासवाद पर विचार वैदिक सिद्धान्तो का प्रतिपादन अध्यात्मवाद प्राच्य पश्चात्य साहित्य प्राणीशास्त्र वनस्पतिशास्त्र भूगोल खगोल ज्यातिष आदि विषयो पर सप्रमाण विचार व्यक्त किये हैं यह विशाल वैदिक ग्रन्थ है। मान्य विद्वान का सगीत पर भी अधिकार था इस पर भा अपने विशेष पुस्तक तैयार की थी। आचार्य जी बडे ही दृढ सकल्प क व्यक्ति थे।

अक्षर विज्ञान उत्तर प्रदेश हिन्दी सस्थान ने प्रकाशित किया है जो ८५ वष पूर्व छपी थी पाणिनीय वैयाकरणो के वाद यह भदभुत ग्रन्थ है।

एस विलक्षण पाण्डित्य पूर्ण विद्वता से व्याकरण पर साधिकार कलम चलाई है जिससे स्पष्ट है कि किस प्रकर वैदिक सस्कत–सस्कति विश्व की एक मात्र जननी है।

तहरीर (लेखन) के कार्य मे आपने अपनी प्रतिभा का जो प्रदर्शन किया है इस विलक्षणता के अतिरिक्त विद्वान विचारक को वह प्रतिष्ठा न मिल सकी जो कि मिलनी चाहिये थी।

आपके जीवन वृन पर विशेष जानकारी उपलब्ध नही की गई। आप एक सदगृहस्थ थे आपका जन्म १८७७ मे ग्राम छोटी खेडा पो भोजपुर रायबरेली उ प्र मे विप्र कान्यकुब्ज तिवारी परिवार मे हुआ था। स्वर्गवास प्रयागनारायण शिवाला कानपुर मे ज्वर से पीडित होकर १६३२ मे हुआ।

आपक पिता प मथुरा प्रसाद तिवारी भारतीय सेना मे सूबेदार पद पर थे।

प्रारम्भिक शिक्षा गाव के सरकारी पाठशला मे कक्षा चार तक हुई। पूज्य पिताजी की प्रवल इच्छा थी कि पुत्र अग्रेजी पढकर अफसर बने। समीप की रियासत मुरामऊ के मैनेजर उडानसिह सोमवशी खेडा म रहत थे उनके यहा अग्रेजी पढने के लिये इन्हे वहा लगा दिया कुछ समय मे ही अग्रेजी का अच्छा ज्ञान हो गया। इसी समय जीवन यापन हेतु पढाई छाडकर कलकत्ता जाना पडा और प्राइवेट फर्म मे मुनीमम हो गये। इसी दौरान आपने वेद–शास्त्रो का अध्यापन किया। इसी अध्ययन क्रम मे आप मे राष्ट्रीयता के भाव भी कट कट कर भरे गये

कलकत्ता के बाद आप बम्बइ चले गये मुनीमी करते हुए मराठी गुजराती भाषा का ज्ञान प्राप्त किया अतिरिक्त समय मे वेद शास्त्र उपनिषद के महत्त्वपूण तथ्य समझत व समझात थे कुछ समय बाद बम्बइ भी छोड आये गाव म आकर मुरामऊ की स्टेट नीलाम हो रही थी तब व मुसलमान मैनेजर स मिले उनसे कारन की आयते और उनकी व्याख्या समझायी यह आप से अत्यधिक प्रभावित हुआ और कुछ धन लेकर मौजा मोहनपुर शर्मा जी के नाम लिख दिया आप गाव के लम्बरदार हो गये

उन्होने सगीत की शिक्षा गुरू जानकी नरकिहार भोजपुर से प्राप्त की। उनके सगीत ज्ञान पर मुग्ध होकर गुरू ने कहा रघुनन्दन तुम सगीत और शास्त्र ज्ञान म मुझसे आगे हो

शर्मा जी कुछ समय सरगुजा स्टेट मे फारेस्ट पद पर आफिसर रहे स्टेट कान्सिल के सदस्य भी रहे इसके वाद आप पुन बम्बई चले गये

अपनी साधना से प्राप्त ज्ञान को उन्होने अक्षर विज्ञान नामक पुस्तक मे उदघाटित किया है इस पुस्तक द्वारा यह सिद्ध किया है कि वैदिक सस्कत सारी विश्व भाषाओ की जननी है उन्होने भाषाओ को समेटिक तथा नान सेमेटिक दो वर्गों म विभाजित किया उन्होने भरत म — शब्द और योरूप मे काऊ कैस बन गया सस्कत म गोधूम शब्द अरब मे जाकर गदुम बन गया पितृ–पितर पीटर मातृ मदर फादर भ्रातृ ब्रदर बिरादर ब्रदर कैसे प्रसारित हुए। उन्होने सारी भाषाओ को सस्कत से निकले अपन देशीय परिवेश के अनुसार स्वरूप बदलते चले गये। सस्कत के वर्णमाला अक्षर कैसे परिवर्त्तित होते हुए विश्व की समस्त भाषाओ की ओर गये। चौदह भाषाओ मे उनकी पुस्तक का अनुवाद हुआ है। आध्यात्मिक ज्ञान की महोदधि आचार्य द्वारा–वैदिक सम्पत्ति नामक ग्रन्थ की रचना की गई जिसे बम्बई के विद्वान शूरजी वल्लभदास व उनके परिवार मे श्री प्रताप भाई ने प्रकाशित किया–उपरान्त अन्य प्रकाशन के वाद सावदशिक सभा दिल्ली ने दो बार ग्रन्थ का प्रकाशन किया। उपयोगिता की दृष्टि से इस की इतनी माग है कि हाथों हाथ पाठको के पास चला जाता है।

प्रतिभा के धनी शास्त्रो के मर्मज्ञ पुस्तक की पाण्डुलिपि लिखते लिखते दर दर भटके आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को दौलनपुर मे जाकर दिखाई उन्होने सेठ रगनाथ के नाम पत्र लिख दिया उन्होने प्रकाशन का आश्वासन दिया था।

उनकी असामयिक मृत्यु के पश्चात–आर्य समाज द्वारा–शर्मा जी के ग्रन्थो के प्रकाशन का अधिकार लेकर प्रकाशित किया और यश के भागी बने।

आज हमे ऐसी पुस्तका का प्रकाशन कर उनका परिचय पाठको से कराना है जिसके लिखने मे लेखक ने अपने मस्तिष्क का सही सदुपयोग किया है।

इस प्रकार राजपूत मस्तक के जीवन मे ले का साधुवाद न गहेये मन वेद रूचि और गवेषणा था नाम क मन है प्राच प्र र को गा गय के भूषण से विभूषित किया गया नाम आये। प्रगट ह से रश्मि उपस उर गत

आर्य जगत अपने आर्य री में दयानन्द सरस्वती और विभूषित स्वामी श्रद्धानन्द महाराज की भाति आप साहित्य की अमरता के साथ अमर व गये हैं।

आज हमे सक्षिप्त जीवन परिचय जानते पाठक गण भी पूर्ण परिचित हो सके

उत्तर प्रदेश आर्य महासम्मेलन की पूर्णता हेतु मेरठ में बैठक समितियां गठित

आर्य महासम्मेलन

मेरठ मे दि १ २ व ३ नव ६६ को।

सयोजक प० इन्द्रराजी

स्वागताध्यक्ष चौ माधव सिह

तदर्थ समिति

कै देवदत्त आय नगेन्द्र सिह आर्य स्वराज नन्द जी धमपाल जी श्रीमती सरोज आर्या ब्रह्म सिह आर्य पदम सेन आय सत्य प्रकाश गौड ओम प्रकाश जौहरी ज्ञानेन्द्र प्रकाश रमेश चन्द्र गुप्ता उर्मिला रस्तौगी श्रीमती कैलाश देवी डा राज आनन्द अभय राम कोषाध्यक्ष श्री सुदर्शन लाल आनन्द सह कोषाध्यक्ष श्री अश्वनी कुमार पाहवा

समितिया

धनसग्रह समिति प्रचार व्यवस्था पडाल व प्रकाश भोजन व्यवस्था यज्ञ व्यवस्था स्मारिका चिकित्सा व्यवस्था योग प्रशिक्षण समन्वय स्वागत व्यवस्था जल एव सफाई व्यवस्था एव कार्यक्रम व्यवस्था।

नगेन्द्र सिह आर्य
जिला मत्री

मानव-मूल्यों का ह्रास एवं साहित्यकारों का दायित्व

डा० कन्हैयालाल शर्मा

देहधारी मानव ने 'मनुर्भव' (मानव बनो) वैदिक सकल्प से जिस यात्रा का शुभारम्भ किया था वह सहस्राब्दियों तक निरन्तर चलती रही। इस यात्रा के दौरान उसे ईश्वर–अश एवम अविनाशी जीव के रूप में पहचाना गया। बाद में विदेशी प्रभाव से उसे सामाजिक या विवेकशील प्राणी के रूप मे पहचाना गया। दोनों अवस्थाओं मे वह सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी बना रहा। आत्म–तत्त्व की स्वीकृति उस के जीवन–चक्र की धुरी बनी रही। इस काल में उसने अपने जीवन–मूल्यो को बनाये रखने के लिए कभी शिथिलता नहीं दिखाई।

देश मे पाश्चात्य विचारधारा ने बल पकडा है। वैज्ञानिक विकास से बौद्धिकता की जडे जम गई और मानव मे तर्क एव सशय को पोषण मिला। इससे जो–कुछ प्रत्यक्ष है और प्रयोग द्वारा सिद्ध किया जा सकता है उसे स्वीकार्य समझा जाने लगा और शेष सभी अस्वीकार्य बना। अत सुस्थापित भारतीय जीवन–दृष्टि पर प्रश्न–चिन्ह लगा दिया गया और आत्मतत्त्व की स्वीकृति भी प्रश्न–चिन्ह के घेरे मे आ गई। प्रत्यक्ष भौतिक–जगत को सर्वस्व माना जाने लगा और उस की अधिकाधिक प्राप्ति के लिए घुडदौड आरम्भ हुई। धर्म अर्थ काम और मोक्ष–जैसे जीवन–मूल्यो में से अर्थ एव काम ने प्रधानता ग्रहण की। मोक्ष एव धर्म की चर्चा मानव की रूढ़िग्रस्तता का पर्याय कही जाने लगी। उसमे स्वेच्छाचारिता पनपी और पराई आंखो मे धूल झोंक कर स्वार्थसिद्धि की और वह अग्रसर हुआ

आधुनिक उद्योगीकरण ने अर्थ–व्यवस्था को ऐसी दिशा प्रदान की कि मानव को उसकी मशीन का एक पुर्जा बन जाना पडा। एक ओर तो उसकी उपलब्धियो की ओर वह ललचाया और दूसरी ओर उन से लाभान्वित होने के लिए पैसे की होड मे वह बेतहाशा दौड लगाने लगा। इससे वह भीतर से सूख गया और धन–सचय की अन्धी दौड मे उसने समस्त पारिवारिक–सामाजिक सम्बन्धो का निर्धारण अर्थ द्वारा करना आरम्भ कर दिया। अर्थ को सिर चढा लेने के असह्य बोझ को ढोता–ढोता वह टूटा–टूटा–सा, अन्दर से खोखला–सा समाज से कटा–कटा–सा मानव देहधारी प्राणी बन कर रह गया।

भौतिकवादी जीवन–दृष्टि के साथ–साथ अनेक पाश्चात्य विचारधाराओ से भारतीय मानव प्रभावित हुआ। वहा की व्यक्तिवादी जीवन–पद्धति उसे रुचिकर प्रतीत होने लगी। वहा का परिवार–समाज–ढाचा भी उसके लिए आदर्श बना और उनकी चमक–दमकमयी जीवन–शैली उसने अपना ली।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद लोक–तान्त्रिक राजनीति ने मानव–मूल्यों को सर्वाधिक प्रभावित किया। चुनाव की राजनीति में जातिवाद प्रान्तवाद भाषावाद बोतलवाद आदि के विकट ताण्डवनृत्य मानव–मन को विकृततर बनाते चले गये। विकृततर होती हुई राजनीति ने हमारे पारिवारिक सामाजिक धार्मिक एव सास्कृतिक जीवन को चरमरा दिया है और मानव को इस अवस्था पर ला खड़ा कर दिया है कि उसका विकृतरूप जिन पशुओं को उपमान रूप में प्रस्तुत कर समझाया जाता रहा है वे सभी उपमेय श्रेणी मे आ गये हैं और मानव उपमान मे।

समाज मे सत्य के स्थान पर असत्य ने प्रतिष्ठा पा ली है अहिंसा के स्थान पर आतकवाद हत्या व छुरेबाजी ने अपना दबदबा स्थापित कर लिया हैं अपरिग्रह के स्थान पर धन–सग्रह की अँधी दौड लगी हुई है ब्रह्मचर्य के स्थान पर बलात्कार व्यभिचार बढा हैं अस्तेय के स्थान पर चोरी जेबकटी रिश्वतखोरी कालाबाजारी आदि का जाल बिछता जा रहा है। मानव चोर वचक स्वार्थी अपराधी दम्भी बनते जा रहे है। मूल्य–समर्पित व्यक्तियो का जीना दूभर होता जा रहा है। पूजा–स्थल बन रहे हैं पर काले धन से सन्त–महात्मा मुनिजनो का सम्मान हो रहा है

साहित्यकार सत्य, शिव एव सुन्दर का उपासक कहा जाता है। इनकी उपासना की योग्यता अर्जन करने के लिए उससे धर्म, दर्शन, साहित्य इतिहास, भूगोल मनोविज्ञान आदि के अध्ययन की अपेक्षा की गई है। श्रेष्ठ साहित्यकार बनने के लिए उसे जीवन का अध्ययन व्यापक एव विस्तृत दृष्टि से करना होता हैं तब उसका सृजन उसे मनीषी, द्रष्टा एव स्रष्टा रूप मे स्थापित करता है। और तभी वह सत्य शिव व सुन्दर की स्थापना करता है। आज के सहित्कार का दायित्व है कि वह जीवन को समग्रता मे अपने युग की आवश्यकता को ध्यान मे रखकर देखे व समझे और उसे इस रूप मे चित्रित करे कि वह मानव मूल्यों को स्थपित करने मे सहयक बने।

पर काले धन से [illegible] धन से सम्मान खरीदा जा रहा है और सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त की जा रही है। परम्परागत परिवार टूट रहे है समाज–व्यवस्था ध्वस्त हो रही है राष्ट्रीय स्वाभिमान भाषणो मे सिमट गया है और श्रेष्ठ जनो को अपमानपूर्ण जीवन जीना पड रहा है।

आज समाज व राष्ट्र को मूल्य–समर्पित नेतृत्व की आवश्यकता है पर उसका अभाव–सा दिखाई दे रहा है। अब उनकी दृष्टि साहित्यकार की ओर लगी है। उसको यह अभूतपूर्व अवसर प्राप्त हुआ है।

अमरीका योरोप के साहित्यकार समाज मे जो कुछ घटित हो रहा है उसके चित्रण से ऊबने लगे हैं। साहित्य–क्षेत्र मे उछाले गये नारे और वाद उन्हे अहसास दिलाने लगे हैं कि वे दिग्भ्रमित हैं। अत वे आधुनिकता की चर्चा करने लगे है और मानवता को सही दिशा देने की सोच उभरी है।

भारतीय साहित्यकारो के सृजन का वास्तविक चित्र तब उभरता है जब हम किसी बुक–स्टाल की पुस्तको पत्र–पत्रिकारिताओ पर दृष्टि डालते हैं। अधिकाश साहित्य–सृजन एक ही दिशा मे हो रहा है–सैक्स उत्पीडन हत्या जासूसी चोरी–डकैती भोग–प्रवृत्ति को रेखाकित किया जा रहा है। पूजीवादी व्यवस्था के इशारो पर लिखा गया यह साहित्य अपने सही उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर पा रहा है।

साहित्य को 'समाज का दर्पण' या जीवन की व्याख्या बताने के नाम पैर समाज या जीवन की हूबहू नकल कर देना फोटोग्रेफी–जैसा कौशल तो प्रदर्शित करता है पर वह साहित्यकार के गुरुतर दायित्व के निर्वाह के प्रति उसकी उदासीनता का परिचय भी देता है।

साहित्यकार सत्य शिव एव सुन्दर का उपासक कहा जाता है। इनकी उपासना की योग्यता अर्जन करने के लिए उससे धर्म दर्शन साहित्य इतिहास भूगोल मनोविज्ञान आदि के अध्ययन की अपेक्षा की गई है। श्रेष्ठ साहित्यकार बनने के लिए उसे जीवन का अध्ययन व्यापक एव विस्तृत दृष्टि से करना होता हैं तब उसका सृजन उसे मनीषी द्रष्टा एव स्रष्टा रूप मे स्थापित करता है। और तभी वह सत्य शिव व सुन्दर की स्थापना करता है। आज के साहित्यकार का दायित्व है कि वह जीवन को समग्रता मे अपने युग की आवश्यकता को ध्यान मे रखकर देखे व समझे और उसे इस रूप मे चित्रित करे कि वह मानव–मूल्यो को स्थापित करने मे सहयक बने।

यहा आकर दो विचारधाराए परस्पर विरोधी सी प्रतीत होती हैं। एक के अनुसार जीवन जैसा है उसे ठीक उसी रूप मे चित्रित करने तक ही साहित्यकार का दायित्व है और दूसरी के अनुसार साहित्यकार का दायित्व मानव को दिशा–बोध कराना उसमे सत–असत का बोध जगा कर सत की ओर अभिप्रेरित करना है। इसके लिए वह सुन्दरम का उपयोग करता है और अपने कथ्य को सुग्राह्य एव सुपाच्य बनाता है। थोथे वादो के कुचक्र मे न पड कर उसे अपना लक्ष्य निर्धारित करके अपनी समस्त कलाकारिता के साथ उसकी ललक जगाने मे सक्रिय योगदान करना चाहिये। उसका साहित्य मीठी कुनैन के सदृश बन कर ही मानवता को रोग–रहित कर सकता है ओर स्वास्थ्य–बोध करा सकता है।

भारतीय समाज तुलसीदास का चिर ऋणी है क्योकि उन्होने जीवन के विभिन्न पहलुओ के मूल्यो का बोध कराया और स्वस्थ जीवन जीने की कला समझाई। मीरा के अलौकिक अतीन्द्रिय प्रेम और कबीर के मानव–मात्र की एकता की सशक्त अपील ने हमे सम्भाला है। ज्ञान क्रिया और इच्छा के सामजस्यपूण जीवन जीने पर आनन्द की उपलब्धि का सन्देश अभी–अभी जयशकर प्रसाद ने दिया है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने विश्वप्रेम की जो मधुर झकार उठाई थी उससे मानव–मानव के बीच मे उठी दीवारे ढह गई थीं। यह सत्य है कि गाधी जी के श्रेष्ठ जीवन को आदर्श मान कर भारत के कोटि–कोटि जन उनके चरणचिन्हो पर चलने लगे थे पर यह भी सत्य है कि महात्मा तुलसीदास का दिखाया मार्ग आज भी मौन आमन्त्रण दे रहा है। सहित्यकार द्वारा स्थापित मानव–मूल्यो की गूज–अनुगूज शताब्दियो तक चलती रहती है।

आज के साहित्यकार को उसका युग पुकार रहा है मानो वह कह रहा हो–मानव को निज स्वरूप मे प्रतिष्ठित करो। वह सूखता जा रहा है उसे हरा करो पल्लवित–पुष्पित करो। मानव–मानव के बीच उठ रही असख्य दीवारो को गिराओ। उसमें राष्ट्र–प्रेम जागृत करो। उसे इस योग्य बनाओ कि परिवार एव समाज का अभिन्न अग बन कर जिये। उसे पशु बनने से रोको। वह मानवता का पुजारी बने। कभी देवता मानव–देह धारण करने के लिए ललचाते थे उसी देव–दुर्लभ मानव–देह को जीवन–मूल्यो से सजाओ। उसकी धमनियो मे विष घुल गया है उसे अमृत पिलाओ। उसे अपनी सामान्य भाव–भूमि पर प्रतिष्ठित करो। यह कल्पना विलास का युग नहीं है और न कला के नाम पर पच्चीकारी का युग है। यह तो पुनर्निर्माण का युग है और मानव का सम्पूर्ण विनाश से बचाने का युग है।

साधक अपनी इन्द्रियो मन बुद्धि को बस मे करके ईश्वर मे लगाता है ईश्वर मे लीन हो जाता है। जीवात्मा और परमात्मा द्वैत हैं जब साधक अपने आपको परमात्मा से जोड देता है और उसमे इतना लीन हो जाता है कि द्वैत भाव से एकत्व भाव की स्थिति मे आ जाता है तभी उसे ईश्वर की प्राप्ति होती है।

साधना दो प्रकार की होती है। (१) चित्त की साधना (२) प्राण की साधना। चित्त का साधक सासारिक भौतिक वस्तुओ को प्राप्त करता है। प्राण का साधक मोक्षगामी होता है। प्राण की साधना को ही ब्रह्मविद्या एव योगविद्या कहते हैं। भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को श्रीमद् भगवत गीता मे ब्रह्मविद्या एव योग विद्या की साधना बतलायी है। श्री कृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन ! ब्रह्मविद्या एवम योग विद्या अनन्तकाल से लोप हो चुकी थी। अब मैं तुम्हे बता रहा हू। गीता के चौथे अध्याय मे भगवान श्री कृष्ण कहते हैं–

इम विवस्वते योग प्रोक्तवानहमव्ययम्।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत्।।

गीता–४–१

अथात ह अजुन मन इस अविनाशा याग विद्या एव ब्रह्मविद्या को कल्प के आदि मे सूर्य के प्रति कहा था और सूर्य ने अपने पुत्र मनु के प्रति कहा और मनु ने अपने पुत्र राजा इक्ष्वाकु के प्रति कहा।

एव परपराप्राप्तमिम राजर्षयो विदु।
स कालेनेह महता योगो नष्ट परतप।।

गीता–४–२

इस प्रकार परम्परा से प्राप्त हुए इस योग को राजर्षियो ने जाना परन्तु हे अर्जुन ! वह योग बहुत काल से इस पृथ्वी लोक मे लोप (प्राय) हो गया था।

दुर्बल और अजितेन्द्रिय मनुष्यो के लिए इस योग विद्या का नाश ही समझना चाहिए इसी कारण इसे नष्ट हुआ कहा। परम्परा प्राप्त का अर्थ यह है कि यह योग अपूर्व कर्म है पढ लिख कर समझा और समझाया नहीं जा सकता इसे सदगुरू शिष्य को बतलाते हैं और शिष्य प्राप्त करते हैं यही प्रथा है।

स एवाय मया तेऽद्य योग प्रोक्त पुरातन।
भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्य ह्येतदुत्तमम्।।

गीता–४–३

अर्थात भगवान श्री कृष्ण कहते है कि हे अर्जुन ! वह ही यह पुरातन योग अब मैंने तेरे लिए वर्णन किया है क्योकि तू मेरा भक्त और प्रिय सखा है इसलिए तथा यह योग बहुत उत्तम और रहस्य अर्थात अति मर्म का विषय है।

यदि भगवान अपने भक्त और सखा को ही यह तत्व बताये तो अभक्त की गति कैसे होगी ?

भक्त का तात्पर्य योगी से है। बिना योग साधन भक्त हो नहीं सकते। कारणयह है कि यदि हम भगवान् से दूर रहे तो प्रेम कैसे होगा ? इस कारण योग बिना भक्ति नहीं। योगी का चित्त स्थिर होने से उसमे ज्ञान स्वत ही प्रकाशित होता है। अयोगी का चित्त विषयो मे आसक्त होने के कारण उसका ज्ञान लोप हो जाता है वह माया और मोहाच्छन्न होकर अहकार के वश हो भगवत से पृथक हो जाता है इस कारण इस तत्व को समझ नहीं सकता। यदि ऐसा न हो तो भगवान पक्षपाती गिने जाये।

"पाशबद्ध भवेद जीव पाशमुक्त भवेद शिव।"

मनुष्य आप ही जीव है आप ही शिव है आप ही अपना मित्र और आप ही अपना शत्रु है। स्वरूप (अर्थात आत्म स्वरूप) मे ही मित्रता है उससे पृथक होना ही शत्रुता है।

जिन साधको मे भगवत कृपा से साधना सिद्ध हो जाती है वह तो परम श्रद्धावान हो जाता है। जैसे–जैसे साधना सिद्ध होती जाती है वैसे–वैसे ज्ञान भी होता जाता है। आनन्द ही आनन्द आता है और अटूट विश्वास बढता हुआ चलता है। साधक मे बिना साधना के विश्वास होता ही नहीं।

परम पूज्य गुरुदेव स्वामी निजानन्द सरस्वती उच्चतम श्रेणी के सन्त एव योगी हैं। वे ब्रह्मविद्या एव योगविद्या के रहस्य को भली भान्ति अति गहराइ स जानत ह। परम पूज्य गुरुदव स्वामा निजामन्द सरस्वती कहते है कि साधना अति गूढतम है। गूढतम रहस्यो से भरी पडी है भूतल मे किसी विरले मे ही साधना सफलीभूत होती है। जिस पर प्रभु कृपा हो जाये साधना प्राय लोगो में जाने अनजाने घटती रहती है। साधना के विज्ञान को जानना केवल गुरु कृपा से ही हो सकता है। गुरू चरणो मे सारा जीवन समर्पित हो गुरू के अक्षरश आदेशो का पालन अत्यन्त आवश्यक है। यही साधन धाम की प्रथम कुन्जी है।

ससारी विद्याओ के अनेक गुरू होते हैं लेकिन अध्यात्म विद्या का अलौकिक विलक्षण गुरु होता है। वे सारे भूतल मे गिने–चुने ही होते हैं। वे अपने को गुरू के रूप मे प्रकट नहीं होने देते। जिसमे अपनी अध्यातम ज्योति जल सकती है उसका वे स्वय वरण करते हैं। वे उसको अपना सारा प्रेम उडेल देते हैं और उसके पूर्ण निर्माण मे अपना सर्वस्व अर्पित कर देते हैं। किसान जिस तरह अपने खेत मे पूर्ण समर्पित हो जता है। किसान ऊसर ओर जगली भूमि को उर्वरक बनाने मे अपनी सर्वस्व शक्ति लगाकर उत्तम से उत्तम बीज वपन करता है। समयानुसार जल निराई खाद को देता ही रहता है। सुरक्षा के लिए स्वय बाड का काटा बनकर रक्षा करता है। बीज वपन से पुन बीज निर्माण तक सुरक्षा की आवश्यकता होती है। यह अति कठिन कार्य है। इसी प्रकार ससार म सबस कठिन काय गुरूत्व ह। शिष्य तो बीजवत् समर्पित होता है उसे तो साधना मे कुछ करना ही नहीं है। उसका केवल समर्पित रहना ही साधना हैं मिट्टी कुम्हार को पूर्ण समर्पित होती है। मिट्टी को घड़े बनने तक मे क्या कुछ करना पडता है ? गर्भ को शुक्राणु जिस तरह पूर्ण समर्पित होता है उसका विकास स्वय होता है उसको अपने मे विकसित होने मे कोई श्रम नहीं करना पडता।

गुरु तो गर्भवत धारण पोषण रक्षा और प्रसव तो स्वय करते हैं। शिष्य के पूर्ण विकास मे गुरु पूर्ण सहयोगी होते हैं। शुक्रवत–गर्भ को समर्पित कोई शिष्य इस जगत मे क्या मिल सकता है ? गुरु को शिष्य के निर्माण मे गर्भवत कष्ट और प्रसव की असह्य वेदना को सहन करना ही पडता है। शरीर के सभी धातुओ का सार से सेचन करना भी पडता है।

अतएव जगत मे सद्गुरू मिलना ही कठिन है। बिना सद्गुरू के साधना कदापि सम्भव ही नहीं है। बहुत सी पुस्तको मे साधना लिखी पडी है उनके भाष्य बुद्धि बल से किये गये हैं। साधक मे साधना सिद्ध होने से सब विपरीत दिखायी देता है। जब तक साधना नहीं सिद्ध होती तब तक साधना भी विपरीत दीखती है बुद्धि स्वीकार ही नहीं करती। फिर उस बुद्धि में लेख के माध्यम से कुछ प्रवेश कैसे कराया जाये। ससार मे गरूडम बहुत है। डमरु के पोल से ही आवाज आता ह जितना नाचता ह उतना हा आवाज आती है। सदगुरू तो ठोस गुरूता लिए होते है जिन्हे नाचना और नचाना कठिन होता है। आवाज तो आना दुर्लभ ही है। अतएव अति गुह्य होते हैं। गुह्य की गुह्य विद्या का प्रकाश लेख द्वारा प्रकाशित करना सम्भव ही नहीं दीखता।

क्रमश

धार्मिकता और साम्प्रदायिकता एक चिंतन

स्वतत्र लता शर्मा (बैगलूर)

यह कल्पना नहीं वास्तविकता है कि भारत की पुण्य धरा आर्यावर्त के नाम से विख्यात थी आर्यो का चक्रवर्ती साम्राज्य भूण्डल पर सर्वत्र फैला हुआ था। वेद मत्रो के सस्वर पाठ से दिशायें गूजती थीं हिरण्यगर्भ इस धरती के आचल मे बहुमूल्य हीरे मोती थे। इस सम्पदा से भी अधिक मूल्यवान इस देश का धर्म और सस्कृति थी इस धर्म और सस्कृति की रक्षा राजा और प्रजा शासक परस्पर मिलकर करते थे और पीढी दर पीढी इस अमूल्य सम्पदा को सीने से लगाये इस देश का जन जीवन स्पदित था।

फिर तूफानी आक्रमणो का एक दौर चला। हूण आए शक तातार आए मगोल आए और भी अनेक आए पर वे इस देश के धर्म और सस्कृति की चट्टानी दीवारो मे दरार तक न डाल सके। इसके विपरीत जिन इरादो को लेकर वे आये थे वे नेस्तनाबूत हो गये और वैदिक धर्म और सस्कृति की गरिमा से अविभूत होकर उसे अपना बैठे। अपनी पुरानी पहचान खोकर वे भारत के हो गये। भारत ने उन्हे आत्मसात कर लिया और वे भारतीय ही कहलाने लगे।

फिर एक दौर चला आक्रमणो का। एक के बाद एक खूखार अक्रान्ता अपनी तलवार की प्यास को मासूम बेगुनाहो क रक्त से बुझाता हुआ इस धरती को रौंदता हुआ आगे बढने लगा और इस धरती पर अपने पैर जमाने मे सफल हुआ। तलवार के जोर पर धर्म परिवर्तन का सिलसिला शुरू हुआ। आर्यो का एक अश कटा पर फिर भी इस देश के धर्म और सस्कृति को विशेष क्षति नहीं पहुची।

एक और दौर चला आक्रमण का। व्यापारी के वेश मे आए छली अग्रेजो ने राजनीति का सौदा किया और सौदागर से मालिक बन बैठे। यहा की सस्कृति पर सतही खरोंचे आयीं कुछ नुकसान अवश्य हुआ पर उसके ढह जाने की नौबत नहीं आयी। फिर एक दौर चला आक्रमण का। यह आक्रमण न तो तलवार का है न तराजू का । यह आक्रमण है अर्थ का धन का। आज पैसे से ईमान धर्म खरीदा जा रहा है। भारत एक विश्वव्यापी षडयन्त्र का शिकार हो रहा है। यह षडयन्त्र इस देश के धर्म और सस्कृति को विनष्ट करने के उद्देश्य से रचा गया है।

विधर्मियों के राज्य में शकराचार्य और गोस्वामी तुलसीदास ने हिन्दू धर्म की हिचकोले खाती नाव को डूबने से बचाया अग्रेजो के शासन काल मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद की दुदभि बजाकर मृतप्राय हिन्दू जाति की सोयी हुई चेतना को जगाया। आज हम स्वतन्त्र हैं। और स्वतन्त्र देश मे कोई अपने धर्म और सस्कृति की रक्षा हेतु आवाज उठाता है तो उसे साम्प्रदायिक कह कर उसकी वाणी को बद किया जाता है। उसे सकीर्ण विचारधारा का पोषक कह कर तिरस्कृत किया जाता है शान्ति भग करने तक का आरोप लगा कर उसे कानून के शिकजे मे जकड दिया जाता है। कैसी विडम्बना है ? अपने ही देश मे हमीं बेगाने हो गये हैं।

सम्प्रदाय धर्म से सम्बन्ध रख सकता है। लेकिन धर्म सम्प्रदाय नहीं हो सकता। धर्म गगन सा विस्तृत सागर सा गहरा हिम सा धवल गगा जल सा पवित्र है। इसे दिशाये बाध नहीं सकती जातीयता की दीवारे कैद नहीं कर सकतीं। धर्म सार्वकालिक सार्वभौमिक एक ही है। धर्म को आत्मसात कर अपने जीवन का अभिन्न अग बनाने के हेतु वेद ने आदेश दिया है—मनुर्भव मनुष्य बनो। देवत्व की ऊचाइयो तक कोई विरला ही पहुच पाता है। दानव के स्तर पर प्राय सभी उतर आते हैं मानव चोला पाकर मानवता को जीवन आधार बनाकर जीना धार्मिकता का लक्षण है। जो एक अच्छा मनुष्य बन जाता है क्योकि उसके जीवन मे धर्म उतर आता है। उसके हृदय मे किसी भी व्यक्ति वर्ग जाति के प्रति द्वेष घृणा का भाव नहीं रहता। धर्म का व्यापक रूप जब सकीर्ण परिभाषा द्वारा विकृत हो जाता है वहीं अर्थ का अनर्थ हो जाता है। धम की ऊचाइयो से उतार कर जब सकीर्ण दायरे मे बाधा जाता है तभी साम्प्रदायिकता का जन्म होता है। साम्प्रदायिकता धर्मान्धता से उपजती है सकीर्णता मे पनपती है घृणा से पोषित होती है हिंसा से फैलती है और उसकी अन्तिम परिणिति विध्वस और विनाश मे होती है।

साम्प्रदायिकता का अर्थ यदि केवल एक विशिष्ट सम्प्रदाय के प्रति अटूट आस्था का भाव ही हो तो इसमे विशेष हानि नहीं होती। उससे सकीर्ण मनोवृत्ति अवश्य पैदा होती है क्योकि तब अपने उस विशिष्ट सम्प्रदाय के सिवाय व्यक्ति किसी दूसरे के हित का चिन्तन नहीं करता। पर साम्प्रदायिकता का अर्थ जब अपने विशिष्ट सम्प्रदाय के हित के लिए दूसरो को आघात लगाना हो जाता है हिसा के मार्ग को अपनाना हो जाता है तब साम्प्रदायिकता विनाशकारी सिद्ध होने लगती है। साम्प्रदायिक वृत्ति के मनुष्य की अवस्था उस ज्वालामुखी पर्वत के समान हो जाती है जो न जाने कब फट पडे और अपने चारो ओर विनाश ही विनाश का दृश्य उपस्थित कर डाले।

साम्प्रदायिकता की भावना प्राय उन देशो मे पायी जाती है जहा विभिन्न मतावलम्बी रहते हो। सिद्धान्तो विचारो उपासना पद्धतियो की विभिन्नता आपसी सम्बन्धो मे कई बार जहर भी घोल देती है और आपसी फूट का कारण बन जाती है। यह आपसी फूट विभिन्न मतावलम्बियो को एक दूसरे के रक्त का प्यासा बना देती है जो साम्प्रदायिक दगो का रूप धारण कर लेती है। भारत मे साम्प्रदायिकता का बीजारोपण अग्रेजो के शासन काल मे हुआ। अपनी सत्ता को कायम रखने के लिए उनके हाथ एक सूत्र अनायास ही लग गया। यह सूत्र था विभाजित करो व शासन करो। सदियो से मिल जुल कर साथ रहने वालो मे उन्होने भेदभाव उत्पन्न किया फूट डाली और इस स्थिति का लाभ उठाते हुए अपने शासन की नींव को सुदृढ बनाया। वे अपनी नीति मे सफल हुए। भाईचारे का व्यवहार करने वाले एक देसरे को सन्देह की दृष्टि से देखने लगे। सन्देह से विश्वास डगमगाया घृणा द्वेष शत्रुता का बोलबाला हो गया परिणामत मुस्लिम लीग ने सिर उठाया विशाल भारत खडित हुआ और साम्प्रदायिकता की अग्नि ने मानवता को जला कर राख कर दिया। एक वर्ग को अपने रहने के लिए अलग स्थान चाहिये था पाकिस्तान बना। और जो मुसलमान भारत छोडकर जाना नही चाहते थे उन्होने इस धरती पर अपनी जडे मजबूत कर लीं और उनमे से भी साम्प्रदायिक तत्व अपने आप को अल्पसख्यक कहने वाले अल्पसख्यको को प्रदान की जाने वाली समस्त सुविधाये प्राप्त करके भी देशहित विरोधी बाते करते हैं तो उनका अपराध क्षम्य हो जाता है। उनके विद्राह को यह कह कर माफ कर दिया जाता है कि वह देश का कमजोर वर्ग है उसे अपने अधिकारो की सुरक्षा के लिए आवाज उठाने का अधिकार सविधान ने प्रदान किया है उनकी मागो को पूरा करना हमारा कर्त्तव्य है उनकी रक्षा करना हमारा धर्म है और जब इसी देश का बहुसख्यक वर्ग अपने धर्म की रक्षा के लिए सदियो से बेहाशी की नीद मे सोये अपने धर्मबन्धुओ को जगाने का प्रयास करता है तो उस पर साम्प्रदायिकता का ठप्पा लगा दिया जाता है।

आज देश पर महासकट के बादल मडरा रहे हैं। सरकार की कथित धर्मनिरपेक्षता की नीति की आड लेकर विदेशी ताकते इस देश मे साम्प्रदायिकता की अग्नि भडका कर देश मे अराजकता फैला रही है। अपनी कुचाल को सफल बनाने के लिए उन्होने एक और पासा फेका है। ५०० वर्षो से अधिक एक ही धर्मवृक्ष की दो शाखाओ पर बैठे हिन्दू और सिख मिलजुल कर अमन से जी रहे थे। उनमे परस्पर रोटी बेटी का व्यवहार रहा है। हिन्दू गुरूद्वारो मे मत्था टेकते हैं तो सिख मन्दिरो मे चढावा चढाते रहे हैं। देश का बटवारा हुआ तो मिलजुल कर उन्होने दुख झेला। गर्दिश मे एक दूसरे का साथ न छोडा कन्धे से कन्धा मिलाकर आगे बढते रहे। समृद्धि का सुख मिला तो उसे मिल बाट कर भोगा पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किए तो कदम से कदम मिलाकर देश की सीमाओ की रक्षा करने के लिए सीने पर गोलिया खायीं। उन्हीं भाइयो मे दरार पैदा कर उनको एक दूसरे के विरूद्ध भडकाया गया। इस मे असफल हो जाने पर अपनी भरपूर शक्ति साधन मे वे ताकते काश्मीर की सुरम्य घाटी मे होली जला रही हैं। उत्तर पूर्व सभी स्थानो मे आग लगी है जो जल चुका है। उसे जीवित नहीं किया जा सकता लेकिन जो बचा है उसे सुरक्षित करने के लिए कुछ ठोस कदम उठाने आवश्यक हैं। उससे पहले बिखरी हुयी हिन्दू जाति को एक सूत्र मे पिरोकर उसे सगठित कर सशक्त बनाना है। जात-पात की दीवारो को तोडकर ऊच नीच के भेदभाव को मिटाकर हिन्दुओ का एकीकरण करना जरूरी है। एक समय था जब हम गाते थे वेदो का डका बजाते चलो सोने हुओ को जगाते चलो।

शेष पृष्ठ ६ पर

जीवन के अर्थशास्त्र की वास्तविकता

भूदेव साहित्याचार्य आनन्द विहार दिल्ली ६२

श्रद्धा किसे कहते हैं ? श्रद्धा के सन्दभ मे श्रुति ह कि श्रद्धा से सत्य मिलता है। और यदि पूछा जाय कि सत्य किसे कहते है ? तो इसके सन्दभ मे भी श्रुति यह है कि सोने के पात्र म साने के ढक्कन से ढके मूल का नाम सत्य ह।

सत्य नाम का मूल हिरण्यमय पात्र मे हिरण्यमय ढक्कन से ढका हुआ है। उस मूल को जब तक ढक्कन उठाकर देख नहीं लिया जाता तब तक लक्ष्योपलब्धि की सार्थकता की बात अधूरी है। लोक के कवि का सन्देश है साच बराबर तप नही झूठ बराबर पाप। जाके हिरदय साच है ताके हिरदै आप। इसलिय जब तक जान मे जान रहे व्यक्ति सत्य के उजागर मे जी जान से तत्पर रहे।

सत्य को जानना जरूरी है। सत्य बिना श्रद्धा के मिलेगा नही। इसलिये श्रद्धा को जानना जरूरी है। अत श्रद्धा को एक बार फिर से समझने का प्रयास करते हैं।

लोक मे हाथ जोड झुकाय मस्तक बन्दना की स्थिति को हमने अनेक बार देखा है। लोग कहते है यह श्रद्धा है

परन्तु तार्किको के एक बडे दल से सुना है कि जब तक वस्तुस्थिति अज्ञात रहे और हाथ जोड झुकाय मस्तक वन्दना की स्थिति जारी रहे तो यह स्थिति एक मनोरजक तमाशे के अतिरिक्त कुछ भी नही है।

किन्तु श्रुति सूक्ति पुनरपि हम पर चोट करती है श्रद्धया विन्दते बसु। श्रद्धा के बिना किसी भी वसु आर्थात धनकी उपलब्धि असम्भव है। इसको प्रकारान्तर से यो कह लीजिये कि श्रद्धा बसु दिलान वाली विद्या है विद्या है तकनीक है कला है। जितने भी बसु हैं वे सब श्रद्धा के कोष मे जमा है।

वेद मत्र ने पुकारा सत्य यश और श्री से श्रगार करो। लोग दौडे। रसिक थे। बाजार से महगे महगे कास्मैटिक्स खरीदे। विविध इत्र तेल पुलेल लिये। बढिया बढिया कपडे लिये। चश्मे लिये और भी न जाने क्या क्या लिया। श्रुतिमाता ने रोका ये सब नहीं। केवल वही लो जो हमने कहा था। भक्त बोला तो ? उत्तर मिला इसमे तो की क्या बात। चार दिन की चादनी फिर अधियारी रात। ये सब तो चार दिन चमकने वाली चीजे है। चार दिन की चमक किसी के लिये भी हितैषी नहीं है। इसलिये सत्य यश और श्री के कास्मैटिक्स कास्मैटिक्स। इत्र इत्र। तेल तेल। पुलेल पुलेल इत्यादि। लोक का कवि धौंक उठा– श्रद्धा का अजन भाव का मजन भक्ति का ओढ दुशाला रे।

श्रत + धा यह है श्रद्धा। श्रत सत्य यश श्री। जीवन का ताना बाना निराला है। किसी ने लेना देखा हो देना नही याना देखा हो जाना नही। रोना देखा हो हसना या गाना नहीं। जन्म देखा हो मृत्यु नहीं। मृत्यु देखी हो जन्म नही। कौन होगा ऐसा स्यात कोई न कह सकेगा कि मै हू। यहा लेना देने से। आना जाने से। रोना हसने से। और जन्म मृत्यु से अपेक्षित है। इतना ही क्यो ? इतना भी कि यह अपेक्षा बरावरी से है। व्यवहार बराबरी का चलता है। एक कम हो दूसरा ज्यादा। इससे व्यवहार चल ही नही सकता। एक दुकानदार का गौर से देखिय। उसके तराजू पर ध्यान दीजिये। तराजू के दोनो पलडे बराबर और काटा एक दम ठीक चाहिये। दुकानदार दिन भर यही करता है।

और उसकी सन्तुष्टि के लिये उसके ग्राहक की सन्तुष्टि के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है। यहा किसी भी प्रकार की चालाकी कपट और अन्य इसी प्रकार के किसी जजाल या सजाल की रचमात्र भी गुन्जाइश नही। मूख दुकानदार ने सोचा आख मे धूल भर दू। भर दी। किन्तु भविष्य गहन वीराने अधेरे से भर गया। ग्राहक ने मोचा उसका भी अन्तिम परिणाम वही निकला। ऐसा ह य किन्तु क्यो ? एक सामान्य व्यक्ति से पूछा। उसने उत्तर दिया दोनो मे ईमानदारी नही रही। विवेचक ने कहा– धा समाप्त हो गई । क्यो कि उनमे से एक या दोनो पक्ष की श्रत उन दोनो के आचार से मौत क विवर मे समा गई सस्कत कवि ने कहा आचारहीन न पुनन्ति वेदा। वद भी पढले तब भी तो आचरणहीन कैसे सुधरगा ? उसका सुधरना (पवित्र होना) बहुत ही मुश्किल हे।

श्रद्धा शर्म हैं। मैंने आपसे लिया है। म आपका पूरे का पूरा अपको आपके बिना कह ही वापस करू। बडी विनम्रता से। कृतज्ञता ज्ञापन पूर्वक। अहकार से मुक्त होकर। आपने मुझसे लिया है तो आप भी ऐसा ही करे। यह शर्म हमारी और आपकी परस्पर सम्मान वृद्धि करेगी। हममे एक दूसरे के प्रति विश्वास और आस्था भरेगी। हमारे व्यवहार को सुदीर्घ बनायेगी।

आदमी भूल गया। उसने श्रद्धा का नाम लिया और अपने ही एक अभिन्न व्यक्ति को ठग लिया। उसके पारिश्रमिक को बुरी तरह जुगाली पूवक चबा गया। एक तमाशा बन गया। परस्पर धोखाधडी प्रारम्भ हा गई। झासेवाजी के सम्बन्ध स्थापित हो गये। कागज की नाव कब तक चलती। गली और डूब गयी। और डूब गये उस पर जितन भी सवार थे सो सब।

बेचारी श्रद्धा बदनाम हो गई।

आज श्रद्धा बुरी तरह बदनाम है। ठीक वैसे जैसे कोई कदाचारिणी बाजारू यह सिलसिला काफी लम्बे अन्तराल से चला आ रहा है।

लोभी गुरू लालची चेला दोनो खेले दाव।
भवसागर मे डूबते बैठे पत्थर की नाव।।

काश कोई श्रद्धा को बचा पाये क्योकि श्रद्धा श्रद्धा है। श्रद्धा हमारे वास्तव्य जीवन का अर्थशास्त्र है। जीवन के अर्थशास्त्र की वास्तविकता हे।

श्रद्धा है जितना लेना उतना बिना किसी ननुनच के बिना किसी मीन मेख के वापस कर देना सचमुच श्रद्धा से सत्य ही मिलता है। श्रद्धा से सभी प्रकार की सम्पत्तियो की प्राप्ति होती है।

धार्मिकता और साम्प्रदायिकता

पृष्ठ ५ को शेष

आज उसी का सशोधन कर इन सुरो को गुजाना जरूरी है– शुद्धि का डका बजात चलो बिछडे हुओ को मिलाते चलो। यह समय का सबस बडा तकाजा है

जनजागरण द्वारा राष्ट्रीयता की दबी चिनगारी को पुन सुलगाना अति आवश्यक है। हम सर्वप्रथम भारतीय हैं। भारत हमारी जननी है इसकी आन बान मान की रक्षा करन के लिए हमे सर्वस्व उत्सर्ग करने के लिए तत्पर रहना चाहिए यह भाव हर भारतीय के हृदय मे हिलोरे ले इसके लिए सुनियोजित कायक्रम के अनुसार प्रचार प्रसार का प्रबध करना आवश्यक हैं।

अल्पसख्यक वर्गो की रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य हे यह ता सही है लेकिन बहुसख्यक वर्ग को भी तो स्वाभिमान से जीने का अधिकार है। दुर्भाग्य से हमारे देश मे कुर्सी की राजनीति ने राजनैतिक सामाजिक और नैतिक मूल्यो का ह्रास कर दिया है। कुर्सी की रक्षा के लिए अल्पसख्यको के प्रति अपनायी गयी तुष्टिकरण की नीति देश के लिए घातक सिद्ध हो रही है। इस नीति में आमूल परिवर्तन करना आवश्यक है। अराजकता व आतक फैलाने के लिए विदेशो से जो विपुल धनराशि निरन्तर आ रही है उस पर कडा नियत्रण रखना होगा। बलात व प्रलोभन से धर्म परिवर्तन कराने वालो की गतिविधियो पर कडी निगरानी रखनी आवश्यक हे और प्रमाणित हो जाने पर उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही भी जरूरी है। अतरराष्ट्रीय तत्व देश मे फूट के बीज न बो सके इसके लिए कानूनी विधान करना होगा। अब भी यदि हम गफलत की नींद में सोते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब इतिहास स्वय को फिर से दोहरायेगा। इसलिए जागो और सतर्क प्रहरी बनकर देश धर्म और सस्कृति की रक्षा करो।

****

वैदिक धर्म और विज्ञान

आचार्य रामानन्द शास्त्री

आज धर्म से मानव–समाज को घृणा हो रही है। इस समय धर्म विश्व के लिए अभिशाप बन गया है। मेरा तात्पर्य धर्म के मौलिक नियमो से नहीं है इन्हे तो सब मानते हैं। दया करूणा मैत्री आदि को तो सब स्वीकार करते हैं किन्तु यहा हमारा प्रयोजन व्यक्ति विशेष द्वारा सचालित मत मजहब अथवा फिरका से हे जिनके कारण विश्व मे सुखपूर्वक जीवनयापन करना दूभर हो गया है। इस्रायल (यहूदी) फिलिस्तीन (मुसलमानो) की लडाई धार्मिक है। तेल अबीब के हवाई अडडे पर गोली मार कर निरीह लोगो की हत्या की गई इसलिए कि–ये यहूदी हैं मूसा को अपना पैगम्बर मानते हैं तौरत इनकी धर्म पुस्तक है। लीबिया के छापामार दस्ते ने इस्रायल के गावो मे घुस कर १०–११ वर्षो के बच्चो की मार्मिक हत्या की जिसे सुन कर मानवता काप उठती है। बरूत मे ईसाइ और मुसलमानो के रक्त से सडक गीली हो गई हे। आयरलैण्ड मे प्रोटस्टेण्टो और कैथेलिको का युद्ध शान्ति का नाम ही न ले रहा है। उसी प्रकार पाकिस्तान म शिया सुन्नी का द्वन्द्व तथा बेचारे अहमदिया मुसलमान गेर मुसलिम घोषित हो गए है। क्योकि उनका अपराध यह है कि उन्होने हजरत मुहम्मद को अन्तिम नबी नही स्वीकार किया है। अमरिका मे राष्ट्रपति कैनेडी की हत्या भी मजहवी जहर हे

उपर्युक्त घटनाए न इस युग की ह सनातन विचारधारा का पुराना इतिहास तो निरीह मानव के रक्त से रजित है जो बिना कारण धर्म क नाम पर मारे गए। यह मतमतान्तर विज्ञान की प्रगति मे बाधक रहा है। ब्रूनो गैलेलिया आदि की निमम यातनाए सत्य के प्रकाश के कारण हई। अरब के खलीफा ने रेखागणित की पढाइ इसलिए बन्द कर दी क्योकि पाइन्ट (बिन्दु) की परिभाषा खुदा से मिलती है। स्पेन के कारडोबा विश्वविद्यालय मे बीजगणित की पढाई बन्द कर दी गई क्योकि यह जादू–टोना मालूम पडता है। उस समय स्पेन मे जादू–टोना धर्म–कानून के विरूद्ध था।

इन सब का कारण व्यक्ति विशेष द्वारा स्थापित मत मजहब है। यद्यपि इन मजहबो क सस्थापको का उद्देश्य पवित्र था व उस समय की परिस्थिति म मानवता का उपदेश कर चले गए। किन्तु पश्चात् उनके अनुयायियो न उपदेश को न समझ कर व्यक्ति पूजा मे विरत हो अनेक प्रकार का अत्याचार तथा अनाचार का सृजन किया।

इसका कारण व्यक्ति पूजा (पर्सनल कल्ट) ही है। तर्कबुद्धि का तिलाजलि देकर व्यक्ति–विशेष को अतिमानव मानना तथा विज्ञान विरूद्ध चमत्कारो मे विश्वास करना है। विश्व के सम्पूर्ण धर्म प्रचारको ने यद्यपि स्वीकार किया है कि मै कोई नयी शिक्षा का उपदश नही दे रहा हू, तथापि अपन अनुयायियो को अपना भक्त बनाने का प्रयास किया है।

श्री कष्ण ने कहा है (मदयाजी मा नमस्कुरू) अर्थात मेरे साथ चला मेरी पूजा करो–अहम त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच–अर्थात–मैं तुम्हारे सारे पापो को धो डालूगा मत चिन्ता करो। ईसामसीह की भी यही घोषणा थी–तुम्हारे सारे पापो को लेकर शूली पर चढ रहा हू। मुझ पर विश्वास करो स्वर्ग का राज्य मिलेगा। भगवान गौतमबुद्ध ने मृत्यु के समय रोते हुए अपने प्रिय शिष्य आनन्द से कहा कि–मेरे मरने के बाद मेरा उपदेश ही तुम लोगो के लिए दीपक का काम करेगा। मूसा ओर जरथुस्त्र न इसी प्रकार का ओदश अपने अनुयायियो को दिया था। सिख गुरूओ के अनुयायी तो उनके ग्रन्थो को ही साक्षात गुरू मान कर पूजा करते तथा पखा झलते हैं। बाइबिल कहती है

धन्य वे है जो अपने वस्त्र धो लेते है क्योकि उन्हे जीवन के पेड के पास आने का अधिकार मिलेगा और वे फाटको से होकर नगर मे प्रवेश करेगे। पर कुत्ते टोन्हे और व्यभिचारी और हत्यारे और मूर्तिपूजक और हर एक झूठ चाहन वाला और गढने वाला बाहर रहगा।

प्रकाशित वाक्य

किन्तु आज ईसाई सबस अधिक मूर्तिपूजक है किन्तु केवल मसीहा की मूर्ति के। हजरत मुहम्मद ने एक खुदा का उपदेश किया बुतपरस्ती का प्रवल विरोध किया। एक अल्लाह का उपदेश दिया बिना मुहम्मद क कलमा पूर्ण नहीं माना जाएगा। उसका परिणाम यह हुआ कि नई मूर्तिपूजा कब्र की पूजा होने लगी मुहम्मद के कब्र पर नदस अधिक रत्न चढाय गये हे

इनमे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ऐसे है जिन्होने कहा कि–हमारा कोई अपना मत नहीं ह तुम से कोइ पूछे कि तुम्हारा क्या धर्म है तब कहो मेरा अपना मत नहीं हे तुम से कोइ पूछे कि तुम्हारा क्या धर्म है तब कहो मेरा धम वेद है। वद का अथ ज्ञान होता ह वेदिक धम का अर्थ ज्ञान का धर्म अर्थात वेज्ञानिक धर्म है।

महाभारतकार कहते है

> सर्व विदु वेद विदो
> वेदे सर्व प्रतिष्ठितम्।
> वेदे हि निष्ठा सर्वस्य
> यद् यदस्ति च नास्ति च

शान्ति पर्व

मनु ने कहा है

> सर्व वेदाद् हि निर्भभौ।

इसलिए वैदिक धर्म विज्ञान का विरोधी कभी न रहा न वह विज्ञान की प्रगति मे बाधक ही बना। गणित ज्योति रेखागणित बीजगणित वैशेषिक (रसायन भौतिकी) आयुर्वेद आदि शास्त्रो का उदगम वद ही है ऐसा उपरोक्त शास्त्रकार प्रतिपादन करते हैं।

नारद ने सनत्कुमार से कहा

> ऋग्वेद भगवोध्येमि, यजुर्वेद सामवेदमाथर्वणाम् चतुर्थमितिहास पुराण पञ्चम वेदाना वेद पित्रम् राशिं दैव निधि, वाकोवाक्यम् एकायनम् देवविद्याम् ब्रह्मविद्याम् भूतविद्याम्, क्षत्रविद्याम् नक्षत्रविद्याम् सर्पदेव जन विद्याम् एतद् भगवोऽध्येमि सोऽह भगवो मन्त्र विदेवोस्मि नात्मवित्। श्रुत ह्येव मे भगव शोचामि त मा भगवान् शोकस्य पार तारयत्विति त हो वाच। यद्वै किञ्चैतद्द अध्यगीष्ठा नामैवदद्।

छान्दोग्य उपनिषद

यहा पर नारद ने १४ विद्याओ का उल्लेख किया जिन्हे वे जानते है किन्तु सनतकुमार स प्रार्थना करते है कि महाराज ! मे मन्त्रविद हू किन्तु आत्मविद्या जानना चाहता हू अत मुझे आत्मविद्या का उपदेश कीजिए।

> **स सर्वविद्या प्रतिष्ठा मधवीय ज्येष्ठ पुत्राय प्राह मुराऽकोपहि।**

अर्थात–उन्होने सारी विद्याओ का आधार ब्रह्मविद्या का उपदेश किया। यहा पर ब्रह्मविद्या को सारी विद्या का आधार कहा गया हे। इसस सिद्ध होता है कि वैदिक धर्म विज्ञान की प्रगति का बाधक नहीं रहा है। ओर मजहवो का कहना है कि मजहब मे अकल का दखल नहीं हे। वेदिक धर्म तो तर्क द्वारा खरा उतरन वाले को ही धर्म मानता है।

मनु महाराज कहते है

> **यस्तर्केणानु संधत्ते स धर्म वेद नेतर।**

अर्थात–जो तर्क से अनुसधान करता है वही धर्म को जानता है

गीताकार की उक्ति ह

> **त विद्धि प्रणिपातेत परि प्रश्नेन सेवया।**

अर्थात–तुम उस तत्त्व को प्रश्न और प्रश्न पर प्रश्न कर समझो।

> **विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तया कुरू।**

अर्थात–विचार कर जैसा चाहो वैसा करो।

विज्ञान का उद्दश्य सत्य की खोज हे वैदिक धर्म का भी उद्देश्य सत्य की खोज एव उसकी प्राप्ति है। अत वैदिक धर्म विज्ञान का विराधी नहीं अपितु पूरक है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि वेदिक युग मे काफी तर्क एव विचार विमश के बाद तत्त्व का निर्णय हाता था। वृहदारण्यक उपनिषद म याज्ञवल्क्य एव मैत्रेयी का सम्वाद सर्वविदित हे जिसमे प्रत्यक जनपद के दार्शनिक एकत्र हो तत्त्व का निर्णय करते थ।

निरूक्त मे लिखा है कि ऋषिया के दिवगत हो जाने के बाद तर्क ही ऋषि है। अत धर्म और विज्ञान मे साम्य हे।

स्वामी दयानन्द ने इसी वैदिक धर्म की ओर लौटने का आदेश दिया। जहा पर जाति पाति काला गोरा देश अथवा विदेश का भेद नही हे। मित्रस्य चक्षुषा सवाणि भूतानि समीक्षन्ताम मित्र की दृष्टि से सारे प्राणियो को दखो।

स्वामी जी ने इसी वेदिक धम क प्रचार आर्य समाज की स्थापना की। आर्य का अर्थ होता है प्रगतिशील ज्ञानी आय समाज [illegible] ही प्रगतिशीलो तथा ज्ञानियो का स [illegible]

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

मरण का स्मरण

एक बार एक सन्त से किसी ने विनय पूर्वक पूछा–"महाराज ! आपका जीवन कितना निश्चिन्त और शान्त है ? हमारा जीवन काम क्रोधादि से ग्रस्त और चिन्ता की ज्वाला मे जलता रहता है। क्या आप कोई ऐसा उपाय बताएगे जिससे हम अपना जीवन आपके समान निश्चिन्त और शात बना सके" ? सन्त ने कहा कि उपाय तो फिर बताऊगा पहले तुम एक बात जान लो कि आज से आठवे दिन मरने वाले हो। अब तुम्हारी मृत्यु अति समीप आ गई है।

यह सुनते ही वह मनुष्य घबरा गया। सन्त जी को प्रणाम करके झटपट वह सीधा घर पहुचा। पलग पर बैठ गया हाथो पर सिर धरकर और कुछ गम्भीरता से सोचने लगा पर उसे निरन्तर अपनी मौत ही सामने नाचती दिखाई दी। कुछ देर पश्चात् वह उठा और अपने पडोसियो के बीच जाकर बोला–समय समय पर मैं आपसे अपनी जिदगी मे काफी लडता झगडता रहा हू। आज मैं आपसे उन सारे अपराधो के लिए क्षमा मागता हू।

फिर इसी प्रक[illegible] से कभी कहा सुनी हुई थी उन उन से वह इसी प्रकार क्षमा–याचना करने गया। फिर अपनी पत्नी से बोला–मैंने तुझे कई बार छला है–कठोर व्यवहार और कटु शब्दो से सैकडो बार तेरा दिल दुखाया है तुझ पर हाथ भी उठाया है पर तेरे समक्ष आज हृदय से क्षमा की भिक्षा माग रहा हू। मुझे कृपाकर क्षमा कर दे।

फिर अपने बच्चो को छाती से लगाकर बोला मैने अनेक बार तुम सबको व्यर्थ ही डाटा–फटकारा है, मारा पीटा है। अब मैं तुम्हारे साथ ऐसा बर्ताव नहीं करूगा।

धीरे धीरे ये आठ दिन बीत गए। घबराहट के मारे वह पुरूष बीमार सा होकर पलग से चिपक गया। आठवे दिन सन्त उस मनुष्य के घर पहुचे। उन्हे देखते ही उसने दौडकर उन्हे प्रणाम किया और पूछा–"मेरा समय आ गया क्या गुरूदेव" ? "आखो के सामने मृत्यु निरन्तर नाचती रहती थी इसलिए सभी पडौसियो मित्रो और अन्य मिलने जुलने वालो से अपने पिछले जीवन मे जाने अनजाने मे किए अपराधो के लिए क्षमा मागता रहा हू" उस व्यकित ने कहा।

यह सुनते ही सन्त ने मुस्कराते हुए कहा–आठ दिन तक जिस मृत्युदेव का निरन्तर स्मरण करते हुए तूने सबसे प्रेमपूर्वक बर्ताव किया है उसी मृत्युदेव का प्रतिदिन स्मरण करके हम अपना जीवन–व्यवहार करते हैं। इसीलिए हमारे जीवन मे काम क्रोध लोभ मोह आदि शत्रु पास ही नहीं फटकने पाते। हमारे निश्चिन्त और शान्त जीवन का रहस्य मरण मे स्मरण मे छिपा है। हम नित्य विचार करते हे कि एक दिन तो अवश्य ही यह शरीर मिट्टी मे मिलने वाला है–"भस्मान्त शरीर" फिर उसके लिए क्या पाप या अत्याचार करे ? अच्छा यही है कि शान्ति से परमात्मा का और उसके परम बलशाली दूत मृत्यु का स्मरण निरन्तर करते रहे। कहा भी है कि मृत्यु को अपना गुरू बनाकर प्रभु का नित्य स्मरण किया करो–

मृत्योरहं ब्रह्मचारी यदस्मि
निर्याचन भूतात्पुरूष यमाम

(अथर्व ६। १३३। ३)

ब्रह्मचारी (शिष्य) हू, क्योकि मैं भूतमात्र से सयम रूपी पुरूषार्थ को माग रहा हू। किसी कवि ने कहा है–

जिस मरने से जग डरे मो को सो आनन्द।
कब मरिये कब पाइये, पूरन परमानन्द।।

उस व्यक्ति ने भी प्रसन्न होकर सन्त से कहा–"मैं समझ गया गुरूदेव ! मुझे अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया। आज से मैं भी मृत्यु का स्मरण करके पाप और दुष्टता से बचने की कोशिश करूगा और परमात्मा का स्मरण करके धर्म करने की।

इन्द्र देव आर्य

प्र. अलग–अलग देवता मानने से हिन्दुओ की क्या हानि हुई।

उ. इससे हिन्दुओ के कितने ही टुकडे हो गए। शिव के पुजारी शैव और विष्णु के पुजारी वैष्णव कहलाने लगे तथा अपने–अपने इष्टदेव की मूर्तिया बनाली और एक–दूसरे की देवमूर्ति को झूठा बतलाने लगे इस प्रकार परस्पर झगडे फिसाद होने लगे। हिन्दू सगठन के लिए यह आवश्यक है कि इन मूर्तियों की पूजा छोड कर एक परमेश्वर की उपासना आर्य सिद्धात के अनुसार करे जिससे आपस मे प्रेमभाव उत्पन्न हो।

प्र. श्रीराम व श्रीकृष्ण जब हमारे महापुरूष थे तो उनकी पूजा न करना समझ मे नहीं आता ?

उ. श्रीराम व श्रीकृष्ण हमारे महापुरूष थे उन्होने अपने जीवन मे जो मार्ग दिखाया था उस पर हमे चलना चाहिए। केवल उनके नाम की रट लगाना और उनकी कल्पित मूर्तियो पर पैसा बटोरना या फल–फूल चढाना पूजा नही कहलाती। वास्तविक आदर करने मे सनातन–धर्मियो और वैदिक धर्मियो मे कोई अन्तर नहीं। किसी कवि ने कहा है–

जपते हो तुम रात दिन जिन पुरूषो के नाम।
क्यो जी तुम करते नही उनके से शुभ काम।।

प्र. हिन्दुओ की अवनति का क्या कारण है ?

उ. हिन्दुओ का दान अधिकतर मन्दिरो मे जाता है। सेठ लोग अधिकतर अलग–अलग मन्दिर बनवा देते हैं। निधनो को पढाने और वैदिक पुस्तको के प्रचार मे अपने दान को नहीं लगाते। यह दोष तभी दूर होगा जब आर्य समाजी तथा सनातन धर्मी सब एक होकर गायत्री मन्त्र का जाप तथा वेद मन्त्रो का सहगान करेगे। एक ईश्वर की उपासना करेगे तथा वैदिक धर्म पर आरूढ रहेगे।

प्र. आर्य किसे कहते हैं ? क्या आर्य समाज कोई सम्प्रदाय है ?

उ. श्रेष्ठ विद्वान तथा धर्मात्मा पुरूषो को आर्य कहते हैं जो चारो वेदो की आज्ञानुसार अपना जीवन व्यतीत करे। आर्य समाज कोई सम्प्रदाय नही है। आर्य पुरूषो के सगठन का ही नाम आर्य समाज है।

प्र. आर्य पुरूषो का धर्म क्या है ?

उ. वेदो का पढना–पढ़ाना सुनना–सुनाना आर्यों का परम धर्म है क्योंकि मनुष्य के समस्त कर्त्तव्य का उल्लेख वेदो में मिलता है।

प्र. जीव और ब्रह्म एक है या अलग–अलग हैं ?

उ. अलग–अलग हैं। अद्वैतवादी साधुओं का 'अहब्रह्मास्मि' (मैं ब्रह्म हूँ) कहना जगत को मिथ्या कहना केवल भोली–भाली जनता को धोखा देना है।

प्र. मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य क्या है ?

उ. मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य दुःख अज्ञान और अशाति से छूटकर परम आनन्दरूपी मुक्ति प्राप्त करना है जिसमें सदा सुख शाति आनन्द मिलता है और सर्वविध बधन कट जाते हैं।

(क्रमशः)

स्वास्थ्य चर्चा

आंख के रोग और उपचार

वैद्य विद्याधर व्यास

आख मानव शरीर का एक महत्त्वपूर्ण अग है। उसके बिना ससार ही शून्य सा लगता है। इसीलिए तो अपने यहा यह कहावत प्रचलित है–आख है तो जहान है। सचमुच आख नहीं तो मनुष्य कुछ नहीं है। ऐसे मे हर क्षण हर पल उसे दूसरे का सहारा चाहिए किन्तु इस घोर भौतिकवादी युग मे कौन किसका सहायक होता है ? यहा आखो के कुछ रोग और उसके उपचार की बात हम बता रहे हैं–आख मे परेशानी होने पर नेत्र रोग विशेषज्ञ से मिले और ऐसी विषम स्थिति मे जब तक आप डाक्टर के पास नहीं पहुच पाते हैं तब तक आपको स्वय कुछ न कुछ उपचार करना चाहिए। आखो मे एकाएक सूजन आ जाए तो यह मानकर चले कि यह अपने से आमत्रित किया हुआ रोग है। इस सम्बन्ध मे विशेषज्ञो की मान्यता है कि ऐसा तब होता है जब कपडे तौलिया और अन्य सौन्दर्य प्रसाधनो के सहारे रोगो के कीटाणु आख मे पहुचकर उसे रोगाक्रात कर देते हैं।

इससे आख लाल हो उठती है पानी और कीचड निकलना आरम्भ हो जाता है। सूर्य की रोशनी हो या बिजली बल्ब सहित लालटेन की रोशनी भी अच्छी नहीं लगती किरकिरापन एव जलन का अनुभव हो तो ऐसे मे गुनगुने पानी से दिन रात मे दो बार आखो को धोये। कोई एन्टीबायोटिक ड्राप डाले। सुरमा या काजल जैसी कोई चीज नहीं लगाये।

उसी तरह बरौनियो के पास की ग्रथी मे इन्फैक्शन हो जाए जो कि अधिकर हाथो से ही होता है यो हवा के लगने से भी ऐसा होता है। इसमे आखो मे लाली छा जाती है। पलको के किनारों मे सूजन होकर दर्द होने लगता है। डाक्टरी शब्द मे इसे 'विनी' कहा जाता है। इसमे गर्म पानी की पट्टी लाभदायक होती है। सूजनवाली जगह पर गर्म पट्टी का सेक भी लाभदायक है। यदि आखो में कुछ पड गया हो तो आखो मे तेज चुभने वाले दर्द का अनुभव होने लगता है। साथ ही आखो मे लाली छा जाती है। पानी आने लगता है। आख को बार–बार मलने की इच्छा प्रकट होती है। ऐसे मे पलको को खूब झपकाये। आखो पर ठढा पानी के छीटे मारे। मले नही। पडी हुई चीज यदि नजर आये तो उसे रूमाल के कोने से निकालें किन्तु पुतलियो को कभी न छुये। आधे घटे मे आखो मे पडी चीज नहीं निकले तो डाक्टर की शरण ले। वैद्य के पास जाये। आख और उसके आसपास घाव हो गये हो तो इसमे आख में सूजन और खून जैसी सुर्खी छा जाती है। इसमे कभी–कभी जोरदार दर्द सहित धुधला दिखना आदि लक्षण भी प्रकट होते हैं।

इस रोग में भी ठडे पानी की पट्टी लाभदायक है। पेटेण्ट दर्द निवारक दवा भी ले। फिर डाक्टर से परामर्श ले। आख मे कभी कभार किसी धारदार चीज या नाखून से खरोच लग जाती है। इसमे गहरा दर्द पानी आना लाली धुधला दिखना और रोशनी अच्छी नहीं लगती है। ऐसे मे आख पर ठढा पानी के छींटे मारे। जितना शीघ्र हो 'वैद्य' या डाक्टरी उपचार कराये।

इसी तरह अनेक लोग तब परेशान दिखलाई देते है जब साबुन शैम्पू, पाउडर इत्र तेल गैस आदि चीजे आखो मे पड जाती है। इसमे जलन का अनुभव तो होता ही है साथ ही आख खोलने मे तकलीफ होती है। आख मे लाली के साथ पानी आने लगता है धुधला दिखने लगता है। रोशनी भी अच्छी नहीं लगती।

ऐसे लक्षणो मे ठढे पानी से आख बार–बार धोये। तकलीफ अधिक हो तो डाक्टर से मिले या वैद्य को बुलाये।

नि:शुल्क शिक्षा का एक मात्र केन्द्र

श्री नि:शुल्क गुरुकुल महा विद्यालय अयोध्या फैजाबाद म कक्षा १ से लेकर आचार्य पर्यन्त छात्रो का प्रवेश १ जुलाई से प्रारम्भ हो गया है। शिक्षा प्राचीन वैदिक पद्धति द्वारा प्रदान की जाती है। छात्रावास की व्यवस्था उपलब्ध है यहा पर ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य आश्रम का पालन करते है समस्त परीक्षाओ की मान्यता सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्व विद्यालय वाराणसी तथा उत्तर प्रदेश सरकार से समकक्षता प्राप्त है। सस्कृत के साथ ही साथ आधुनिक विषयो के शिक्षण की उत्तम व्यवस्था है छात्रो के चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया जाता है इच्छुक अभिभावक कार्यालय से सम्पर्क कर १ जुलाई से ३१ जुलाई तक प्रवेश हेतु बच्चो को लाए।

नागेन्द्र कुमार मिश्र, प्राचार्य
नि:शुल्क गुरुकुल महा विद्यालय

अमृतफल: बेल

डॉ॰ (श्रीमती) स्वराज गुप्ता
एम॰ ए॰ (द्वय) आयुर्वेद विशारद

पुराणो मे बिल्व की उत्पत्ति की अनेक कथाए है इसका जन्म वैशाख (ग्रीष्म) मास मे हुआ था। यह घर की बगीची मे भी लगाया जा सकता है। काटे होने के कारण बदरो का खतरा कम रहता है। इसके अदर अथाह स्वर्ण भण्डार है।

बेल की जड छाल पत्ते बीज गोद सभी का उपयोग औषधि मे होता है। लकडी यज्ञ मे काम आती है। कच्चे फल को आग मे भूनकर पक्के फल का गुदा निकाल कर शर्बत मिठाई मुरब्बा आदि बनाया जाता है। चटनी भी बनाई जा सकती है। गर्मियो मे पके बेल का शर्बत नियमित पीने से कायाकल्प होता है। यह आतो को धोकर बलवीर्य की वृद्धि करता है। अनादि काल से चित्त–निरोध तथा एकाग्रता के लिए प्राय सन्यासी प्रयोग करते रहते है। इसके गूदे से लकडी जोडने का मसाला भी बनता है।

इसे अग्रेजी मे आइल फोलिया सस्कृत मे बिल्व एव श्रीफल असम बगाल महाराष्ट्र मे बेल तमिल मे विल्वम तेलुगू मे मारेडू कहते हैं। यह एक मझोला पतझडी वृक्ष होता है। इसके पत्ते मे तीन या पाच पत्रक होते है। पाच पत्रक का बेल वृक्ष दुर्लभ होता है। पत्तो के साथ बडे–बडे नुकीले काटे होते है। बेल के फूल सफेद रग के मधुर सुगन्धित लगभग २५ से मी॰ व्यास के तथा छोटे गुच्छो मे होते हैं।

अनेक रोगो मे लाभप्रद है जैसे–चक्कर आना मूर्च्छा आखो के विकार मधुमेह मानसिक कुठा ग्लानि आत्महत्या के विचार में इसलिए चाहे जैसे हो आतो मे स्थिर आव को बाहर निकाल ही देना चाहिए। कुछ लोग कहते हैं कि बेल खाने से आव हो जाता है जबकि ऐसा बिल्कुल नहीं है। सत्य यह है कि आव तो शरीर मे वर्षो से जमा होती रहती है बेल खाने से आव बाहर निकलती है। बेल के गूदे मे एक गोद–सा होता है जो आतो मे जमा आव को अपने गोद मे चिपकाकर बाहर निकालता है आतो मे पुराने जमा बिना पचे हुए मल को आव कहते हैं जिसमे चिकनाई और मिठास का समावेश होता है। गूदे के साथ चिपचिपे बीज के कारण लोगो को बेल कम पसद आता है जबकि गोद का काम अतिसार को नष्ट कर देना है। अत बेल का शर्बत बनाकर प्रयोग किया जा सकता है ग्रीष्म मे 'लू' नाशक मधुर शीतल पेय है।

बेल के छोटे वृक्ष जिसमे बेल न लगा हुआ हो की जड को काली मिर्च के पत्तो के साथ पीसकर खिला देने से जिसे साप काटा हो फायदा होता है।

कामेच्छा दमन के लिए बेल पत्तो का सेवन सन्यासी लोग करते है। सन्यासी इसकी भस्म बनाकर शरीर से भी लपेटते है ताकि शरीर रोगाणुओ तथा त्वचा दोषो से मुक्त रहे। अजीर्ण अम्लपित्त शूल के दर्द यकृत रोगो मे इसका उपयोग होता है।

डॉ॰ धर्मपाल आगामी तीन वर्षो के लिए गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पुनः कुलपति नियुक्त

हरिद्वार १ जुलाई। डा॰ धमपाल ने गुरूकुल कामडी विश्वविद्यालय का आगामी तीन वर्षों के लिए आज पुन कार्यभार सम्भाल लिया। उनका पिछला कार्यकाल गत ३० जून १९९९ को समाप्त हो गया था। यद्यपि विश्वविद्यालय मे कला से सम्बन्धित विषय तो पहले से ही कन्याओ के लिए चल रहे थे तथापि भौतिकी रसायन गणित माइक्रोबायोलोजी पयावरण तथा विज्ञान जैसे आधुनिक विज्ञान विषय भी प्रारम्भ किए गए। हरिद्वार के साथ–साथ देहरादून स्थित कन्या गुरूकुल महाविद्यालय मे एम.सी.ए. जैसे अद्यतन पाठयक्रम भी सफलतापूर्वक चलाए जा रहे है। हरद्वार विश्वविद्यालय मे एम. सी. ए. के साथ–साथ कार्मिक प्रबन्ध एव औद्योगिक सम्बन्ध तथा एम.बी.ए. जैसे महत्वपूर्ण पाठयक्रम भी प्रारम्भ हो गए है।

इससे पूव आज प्रात मुख्य कार्यालय मे यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री सूर्यदेव जी ने कहा कि डॉ धर्मपाल ने जिस निष्ठा एव परिश्रम के साथ विश्वविद्यालयकी सेवा की है तथा विश्वविद्यालय के सभी सकायो वर्गो तथा कमचारियो मे सद्भाव बनाए रखकर विश्वविद्यालय की प्रगति तथा विस्तार किया है उनसे आशा की जाती है कि वे भविष्य मे भी विश्वविद्यालय मे और नये आयाम जोडेगे जिससे इस विश्वविद्यालय की खुशबू पूरे विश्व मे फैले।

इस अवसर पर कुलाधिपति जी के अतिरिक्त दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री एव शिष्ट परिषद के सदस्य श्री वेदव्रत शर्मा कुलसिचव डॉ. जयदेव आचाय वेदप्रकाश शास्त्री विभिन्न पकायाध्यक्ष प्राध्यापक गुरूकुल फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष डॉ राजकुमार रावत सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री महेन्द्र कुमार गुरूकुल के मुख्याध्यापक डॉ. दीनानाथ वित्त अधिकारी श्री जयसिह गुप्ता विश्वविद्यालय गुरूकुल तथा फार्मेसी के कर्मचारी गण उपस्थित थे। डा धर्मपाल के पुन पदभार ग्रहण करने पर सभी वर्गों मे खुशी की लहर दौड गई।

एक आवश्यक निवेदन

अपनी शक्ति व सामर्थ्य के अनुसार मैंने यह निश्चय किया है कि चलते फिरते गुरूकुल के रूप मे किसी एक युवक को एक वर्ष तक अपने साथ रख कर स्वय उसका खर्च वहन करते हुए अपनी अल्पमति व योग्यता से वैदिक सिद्धान्त की जानकारी एव पुरोहित प्रशिक्षण देकर तथा वैदिक कर्मकाण्डी बनाकर आर्य समाज का मिश्नरी प्रचारक तैयार करूगा। जो भी ब्रह्मचारी युवक वैदिक सिद्धान्तो की जानकारी प्राप्त कर आर्य समाज का प्रचारक बनना चाहता हो वह निम्न पते पर सम्पर्क करे। न्यूनतम योग्यता दसवीं श्रेणी उत्तीण। अनाथ बेसहारा व निर्धन को प्राथमिकता दी जायेगी।

भवदीय

पुरोहित रामसुफल शास्त्री वैदिक प्रवक्ता
१ आर्य समाज जी. टी. रोड हासी (हिसार)
२ आर्य समाज मन्दिर महम (रोहतक) हरियाणा

प्रवेश सूचना

(गुरूकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम कोटद्वार पोडी गढवाल) हिमालय की सुरम्य घाटियो मे स्थित एव प्राचीन गुरूकलीय पद्धति पर आधारित अवसान गुरूकुल महाविद्यालय कण्डावाश्रम मे १ जुलाई १९९९ से प्रवेश आरम्भ हो रहे है विश्वविख्यात स्थल की इस शिक्षण सस्था मे कक्षा ३ से १० तक आवासीय शिक्षण की व्यवस्था है। इस सस्था मे बालको के नैतिक चारित्रिक उत्थान पर विशेष वल दिया जाता है। साथ ही योग व्यायाम कम्पयूटर शिक्षा का समावेश कर वालको की बहुमुखी प्रतिभा को विकसित करने मे यह सस्था अग्रणीय है।

विशेषताए

१ प्राकृतिक रमणीय वातावरण से भरपूर।
२ नगर के कोलाहल से दूर शान्त एकान्त स्थान।
३ सुयोग्य एव चरित्रवान अध्यापको की व्यवस्था।
४ तरणताल की उत्तम व्यवस्था।
५ मनोरजन हेतु विशाल क्रीडास्थल।
६ सात्विक एव पौष्टिक भोजन व्यवस्था।
७ दूध के लिए गौशाला व्यवस्था।
८ रोगियो के रोग उपचार की उत्तम व्यवस्था।

नोट स्थान सीमित है अत शीध्र ही अपना स्थान सुरक्षित करायें

ब्र विश्वापाल जयन्त सस्थापक
गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम
कोटद्वार पौडी गढवाल २४६१४६

वेद प्रचार मण्डल

उत्तर पश्चिमी दिल्ली का निवार्चन सम्पन्न

नई दिल्ली २२ जून। वेद प्रचार मण्डल उत्तरी–पश्चिमी दिल्ली का वार्षिक निर्वाचन सरक्षक श्री प. हरदत्त जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

जिसमे श्री ए एल मनोचा–प्रधान श्री लाजपत राय आहुजा व श्री भजन प्रकाश आर्य–उप प्रधान श्री नरेशपाल आर्य–महामन्त्री श्री दुर्गा प्रसाद कालडा–मन्त्री श्री ओम प्रकाश कालडा–कोषाध्याक्ष व श्री वीरेन्द्र आर्य–अधिष्ठाता (आर्यवीर दल) चुने गए।

चचल दास आर्य
प्रचारमत्री

वैदिक सगोष्ठी

[illegible]

प्रधान मंत्री ने भी हिन्दी के महत्व को समझा

[illegible] अक में प्रकाशित हुआ है

प्रधान मन्त्री श्री देवगौडा ने देशवासियों का हिन्दी में [illegible] जल्दी हिन्दी सीखने का [illegible]

श्री देवगौडा ने खुद अपना हिन्दी में [illegible] किया और हर भी अपने सम्बोधन के आरम्भ में ही आकाशवाणी और दूरदर्शन से राष्ट्र के नाम अपने प्रसारण की शुरुआत में प्रधान मन्त्री ने कहा बहनो और भाइयो आप सबने मुझे प्रधानमन्त्री के रूप में इस महान देश की सेवा करने का अवसर दिया है इसके लिए मैं आप सबका आभारी हू मुझे खेद है कि इस वक्त मैं आपको हिन्दी में सबोधित नहीं कर सकता मैं आपकी अनुमति से अंग्रेजी में बोलना चाहता हू लेकिन मैंने निश्चय किया है कि जल्दी से जल्दी हिन्दी भाषा सीख लूगा

अनुरोध है कि जब प्रधानमन्त्री सरीखे अत्यन्त व्यस्त और बडी आयु के व्यक्ति हिन्दी के महत्व को समझते हुए हिन्दी सीख सकते है तो उनसे प्रेरणा लेकर अन्य जनताओं और उच्च अधिकारियो को भी तुरन्त हिन्दी सीखना आरम्भ कर देना चाहिए

अहकार त्यागने से मनुष्य लोकप्रिय
क्रोध त्यागने से शोकरहित
इच्छाओ को त्यागने से धनी
एव लोभ त्यागने से सुखी होता है।

आर्य समाज बागपत द्वारा राष्ट्र रक्षा हेतु यजुर्वेद पारायण यज्ञ

[illegible] शान्ति [illegible] समाज [illegible] राष्ट्र रक्षा [illegible] शान्ति हेतु यजुर्वेद पारायण [illegible] यज्ञ [illegible] श्री [illegible] श्री माधवसिंह जी [illegible] इन्द्रराज [illegible]

मन्त्री

आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

[illegible] कालोनी स्थित [illegible] रविवार प्रात यज्ञ सत्सग एव भजन हुए तत्पश्चात साय [illegible] बजे [illegible] नगर से बेण्ड [illegible] आर्यवीरो की शोभायात्रा प्रारम्भ [illegible] गाधीनगर होते हुए [illegible] कालोनी पहुची और वहा [illegible] परिवर्तित हो गई शोभायात्रा मे आर्यवीरो और वीरागनाओ ने वैदिक सस्कृति अर्थात आर्य सस्कृति के अनुसार जयघोषो से गगन को गुजायमान कर दिया साथ मे आर्य समाज और ऋषि दयानन्द के गगन भेदी जयघोषो से वातावरण को हर्षित करते हुए स्वर्गमय बना दिया शोभायात्रा मे टेम्पो कार व ओ३म ध्वजा लिए हुए आर्यवीरो के अतिरिक्त आर्य नर नारी भी सम्मिलित थे

साय ६ बजे समापन समारोह प्रारम्भ हुआ समारोह के मुख्य अतिथि एव मुख्य वक्ता वेदो के प्रकाण्ड विद्वान श्री कृष्णदत्त शास्त्री विद्यावाचस्पति जनकपुरी नई दिल्ली थे अध्यक्षता समाज सेवी श्री परशुराम अग्रवाल ने की सचालन श्री बाबूलाल धावरी ने किया

आर्य वीर दल हासी द्वारा स्वतन्त्रता दिवस मनाया जायगा

सार्वदेशिक आर्य वीर दल हासी द्वारा आगामी १५ ८ [illegible] को राष्ट्रीय पर्व स्वतन्त्रता दिवस (१५ अगस्त) का पावन पर्व आर्य समाज जी टी रोड वकील कालौनी हासी मे प्रात [illegible] बजे से ११ बजे तक हरियाणा [illegible] प्रधान मण्डल के प्रधान बाबू हरनारायण [illegible] नगर पालिका हासी की अध्यक्षता मे मनाया जायेगा जिसमे (हवन यज्ञ) के पश्चात देश भक्ति के भजन उपदेश व स्कूली बच्चो के कार्यक्रम प्रस्तुत किये जायेगे

हिन्द महासागर से हिमालय तक

पृष्ठ १ का शेष

यह बिल भारत के वर्तमान कानून के विरूद्ध है।

यह बिल भारतीय सविधान की धारा ३४१ का स्पष्ट उल्लघन है।

धारा ३४१ के अन्तर्गत केवल उन्हीं जातियो का आरक्षण दिया गया है जो अनुसूचित जातियो की सूची मे है

इसी धारा के अन्तर्गत हिन्दू दलितो को आरक्षण मिल रहा है यदि वे धर्म परिवर्तित कर लेते है तो वे आरक्षण के उन लाभो से वचित हो जाते है जो उन्हे अब तक मिले हुए थे

[illegible] पूर्व [illegible] अब ईसाई बहुसख्यक है [illegible] है मिजोरम मेघालय और नागालैण्ड ईसाईयो के सन्दर्भ मे अब इन प्रान्तो मे स्थिति मे परिवर्तन आ गया है

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इस परिवर्तन को अच्छा नही मानती। वस्तुत इससे एक वर्ग विशेष की पहचान बढ जाएगी ईसाई अब इन तीन प्रान्तो मे बहुसख्यक स्थिति मे आ गये है

धार्मिक दृष्टि से अल्पसख्यक होने के कारण उन्हे अभी भी वे सभी लाभ मिलते रहेगे जो अल्पसख्यको को मिलते है और यदि सयुक्त मोर्चा सरकार इस प्रस्तावित बिल को पारित करा लेती है तो उन्हे आरक्षण का वह लाभ भी मिलने लगेगा जो हिन्दू दलितो को मिलता है

इस सदर्भ मे हम सयुक्त मोर्चा सरकार से प्रश्न करते है कि यदि उनको इस प्रकार की धर्म निरपेक्षता की दिशा मे सुनियोजित सफलता मिल जाती है तो क्या उनका यह धर्म निरपेक्षता वाद वास्तव मे धर्म निरपेक्ष राष्ट्र मे परिवर्तित होगा ?

यदि इसी प्रकार की गति विधिया जारी रही तो क्या हिन्द महासागर से लेकर हिमालय तक फैले भारत की भौगोलिक एव राजनैतिक इकाई की यह छवि ऐसी ही बनी रहेगी ?

पूर्वोत्तर एव पश्चिमोत्तर प्रान्तो ने तो पहले से ही रग बदलना प्रारम्भ कर दिया है

इसी सदर्भ मे हम पूछते है कि धर्म निरपेक्षता की दिशा मे सुनियोजित ये कदम क्या कोई प्रगति लायेगे ?

हमारा स्पष्ट निष्कर्ष है **धर्म निरपेक्षता की दिशा मे नहीं अपितु राष्ट्र के विखण्डन की दिशा मे भारत को टुकडे टुकडे करने की दिशा मे ये सुनियोजित कार्यवाही की जा रही है।**

सयुक्त मोर्चा सरकार के इस प्रयास ने हमे ऐसी स्थिति मे लाकर खडा कर दिया है जहा हम यह सोचने के लिए विवश है कि सयुक्त मोर्चा मे सम्मिलित राजनैतिक दलो की दृष्टि मे भारतीय सविधान की धारा ५१ ए का तथा विशेष रूप से उस भाग का कोई महत्त्व नही है जिसमे भारत की जनता से आग्रह किया गया है कि वे परस्पर धार्मिक भाषायी क्षेत्रीय तथा वर्गीय विभिन्नताओ से ऊपर उठकर सद्भाव एव भ्रातृत्व की भावना को बढाये

हम पुन सयुक्त मोर्चा सरकार से आग्रह करते है कि वे राष्ट्र के हित मे इस बिल को प्रस्तुत ही न करे।

श्री वन्देमातरम् राम चन्द्र राव ने सवाददाताओ को बताया कि हमारे विरोध की अगली प्रक्रिया मे जन जागृति अभियान के साथ साथ राष्ट्रीय राजनीतिक नेताओ से भेट करके इस प्रयास को विफल करना होगा

श्री वन्देमातरम् जी ने स्पष्ट कहा कि सार्वदेशिक सभा इस मामले को लेकर उच्चतम न्यायालय मे एक रिट याचिका भी प्रस्तुत करने पर विचार कर रही है

सवाददाता सम्मेलन मे सभा के उपप्रधान श्री सूर्यदेव मन्त्री डा सच्चिदानन्द शास्त्री न्याय सभा सदस्य तथा उच्चतम न्यायालय के अधिवक्ता श्री विमल वधावन गुरूकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति डा धर्मपाल तथा दिल्ली सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा सम्मिलित हुए

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 14-7 96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/96
R N No 626/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 11/12 7 1996

आर्य वीर ने सोलह गऊओं को बचाया

मेवात मे ८५ प्रतिशत मुसलमान रहते हैं जो गरीब अल्पसख्यक हिन्दुओ पर भारी जुल्म करते हैं। मुसलमान गुडे दूर दूर से हिन्दु स्त्रियो व बच्चो को बहला-फुसला कर मेवात मे ले आते हैं तथा यहा उनका धर्म परिवर्तन कर दिया जाता है।

मेवात एक लघु पाकिस्तान माना जाता है मेवात के प्रत्येक ग्राम मे गऊ हत्या रोजाना होती है। किन्तु आर्य समाज यहा पूरी शक्ति से वेद धर्म प्रचार एव गऊ रक्षा का कार्य कर रहा है। अभी-अभी गऊ हत्या का एक मामला प्राकश मे आया है।

ग्राम उटावड के निवासी अय्यूव पुत्र सफेदा तथा आलम पुत्र हमीदा १६ गऊओ को उत्तर प्रदेश को ले जा रहे थे। इसकी सुचना प. नन्दलाल निर्भय महामन्त्री वैदिक सेवा सामिति मेवात केन्द्र बहीन को मिल गई। श्री निर्भय ने तुरन्त श्री ज्ञान चन्द मुलिया थानेदार हथीन मेवात को सतर्क कर दिया। बहादुर थानेदार ने भारी फुर्ती का परिचय देते हुए पुलिस दल के साथ कसाइयो को जा घेरा जो पुलिस को देखते ही दौड पडे किन्तु पुलिस के जवानो ने दोनो गऊ हत्यारो को दबोच लिया।

थाना प्रभारी ने दोनो हत्यारो का मुकदमा दर्ज करके चालान कर दिया तथा १६ गऊओं की प्राण रक्षा करके उन्हे वीर शहीद कान्हा गऊशाला बहीन (मेवात) को सौप दिया है।

श्री ज्ञान चन्द गुलिया थाना प्रभारी हथीन तथा प. नन्दलाला निभर्य की सर्वत्र सराहना हो रही है। श्री निर्भय ने भारत सरकार से गऊ रक्षा की माग की है।

ब्रह्मदेव आर्य
आर्य समाज बहीन जिला फरीदाबाद
(हरि.)

श्री गंगम श्रीनिवास का स्वर्गवास

आर्यसमाज सिकन्द्राबाद राष्ट्रपति रोड के प्रधान श्री गगम श्रीनिवास जो आर्य समाज के कुशल और कर्मठ कार्यकर्त्ता थे उनका देहान्त दि १८-६-६६ को हो गया।

समाज मन्दिर सिकन्द्राबाद से श्री क्रान्ती कुमार कोरटकर प्रधान आन्ध्र प्रेदेश आर्य प्रति-निधिसभा के अध्यक्षता मे दि २३-६-६६ ई रविवार को शोक सभा आयेजन किया गया। इस सभा मे आ. प्र. आर्य प्रतिनिधि सभ के मन्त्री श्री जी कृष्णाराव के अतिरिक्त सर्व श्री ओ३म प्रकाश रामचन्द्र आय धन्न लाल पवन मालवे तथा अन्य लोगो ने श्रद्धाजली अर्पित की-सर्व सम्मति से एक शोक प्रस्ताव पारित किया गया तथा दो मिनट मौन रखने के पश्चात सभा का विसजन हुआ।

जी कृष्णायन मन्त्री
आ. प्र. आर्य प्रतिनिधि सभा
हैदराबाद

शराब का ठेका बन्द किया गया

आर्यसमाज मन्दिर मालडबन्द विस्तार बदरपुर नई दिल्ली के कार्यकर्त्ता प. तुलसीराम आर्य ने यहा शराब ठेका खोलने का विरोध किया फलत सामूहिक प्रदर्शन किया गया जिससे शराब का ठेका बद कर दिया गया।

चीन में रामायण की गूंज रामायण से मानव कल्याण का सन्देश

पिछले दिनो चीन मे तेरहवा अन्तर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन हुआ। इसमे ग्यारह देशो के प्रतिनिधि उपस्थित हुए। २६-२७-२८ अप्रैल १९९६ को यह रामायण सम्मेलन शेनझेन विश्वविद्यालय मे सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के मानद अध्यक्ष और वाल्मीकि रामायण क चीनी भाषा के अनुवादक प्रो. जी. शिएन वृद्धावस्था के कारण सम्मेलन मे नहीं आ सके परन्तु उन्होने अपने लिखित सन्देश मे रामायण को तो भी चीन की सास्कृतिक धरोहर घोषित किया। उन्होने आशा व्यक्त की इससे मानव हितकारी सन्देश विश्वकल्याण करेगे।

सम्मेलन के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री लल्लन प्रसाद व्यास ने घोषित किया-इन रामायण सम्मेलनो का उद्देश्य है कि रामायण के सन्देशो की चर्चा कर प्रेम सद्भाव एकता और एकात्मता बढाई जाए।

चीन की चार प्रसिद्ध नर्तकियो भरतनाटयम के माध्यम से रामायण का सन्देश प्रस्तुत किया। कलकत्ता की सुष्मिता बनर्जी ने रामायण पर आधारित चालीस मिनट का भाव भरा नृत्य प्रस्तुत किया।

सार्वदेशिक साप्ताहिक के लेखको से निवेदन है कि अपने लेख टाइप करवाकर या साफ साफ लिखाई मे भेजे।

सामयिक विषयो पर लेख वैदिक सिद्धान्तो तथा राष्ट्रीय विचारधारा के अनुकूल होने चाहिए।

वैदिक विद्वानो से निवेदन है कि गहरे एव गभीर विषयो पर लिखते समय जनसामान्य हेतु सरल भाषा का प्रयोग करे तथा लेख यथा सम्भव सक्षिप्त होने चाहिए।

रचनाओ को प्रकाशित करने या न करने का अधिकार सार्वदेशिक का है। अप्रकाशित रचनाये लौटाने की व्यवस्था नहीं है।

सम्पादक

आहार, शरीर तथा सम्बन्धियों का विचार कम कीजिए, आत्मा का विचार तथा ध्यान अधिक कीजिए

स्वा सुकर्मानन्द जी महाराज का देहावसान

डा योगेन्द्रकुमार शास्त्री जी के जन्मदाता पिताजी स्वामी सुकर्मानन्द जी ने ६८ वर्ष की आयु मे गयत्री मन्त्र का जप करते हुए १६ जून को प्राण त्यागे। स्वामी जी ने जीवन भर आर्य समाज को प्रचार किया तथा स्वय भी जीवन भर सच्चे आर्य बने रहें। उन्होने पजाब हरियाणा उत्तर प्रदेश जम्मू काश्मीर महाराष्ट्र आन्ध्राप्रदेश हिमाचल की सभाओ माध्यम से भी प्रचार काय किया। अपने पीछे वे डा योगेन्द्र कुमार शास्त्री सोमवीर शास्त्री भद्रवीर भजनोपदेश इन तीनों पुत्रो को आर्य समाज के लिये समर्पित कर गये है। वे गृहस्थाश्रम से वानप्रस्थ वने तथा वाद मे स्क सर्वानन्द जी महाराज से सन्यासश्रम मे दीक्षित हुए। अन्त मे एक योगी की तरह अरनिया ग्राम मे अपने प्राण त्यागे।

मन्त्री-आर्य समाज अरनिया
जिला बुलन्द शहर उ प्र

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नइ दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-2 से प्रकाशित

ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् — विश्व को श्रेष्ठ (आर्य) बनाएँ

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सामवेद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र अथर्ववेद

दूरभाष ३२७४७७१ ३२६०९८५ | आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये | वार्षिक शुल्क ५० रुपए एक प्रति १ रुपया

वर्ष ३५ अक २३ | दयानन्दाब्द १७२ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ | आषाढ शु.—५ | २१ जुलाई १९९६

देश की राष्ट्रवादी जनता दलित ईसाईयों को आरक्षण का हर सम्भव विरोध करे

आपके एक पत्र रूपी बूंद बूंद से आन्दोलन का समुद्र बन सकता है

नई दिल्ली १५ जुलाई दलित ईसाइयो को आरक्षण का मामला सम्भवत ससद के वर्तमान मानसून सत्र मे ही प्रस्तुत होगा। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कई माह से इस मुद्दे का विरोध करती रही है। प्रधानमत्री को इस सम्बन्ध मे सावदशिक सभा प्रधान श्री वन्दमातरम राम चन्द्र राव जी के द्वारा एक पत्र भी लिखा गया था और आठ जुलाई को श्री वन्देमातरम् जी ने एक सवाददाता सम्मेलन के द्वारा इस विषय को राष्ट्रीय समाचार पत्रों मे चर्चा का विषय बनाया था। सार्वदेशिक सभा प्रधान जी के द्वारा ही लिखा गया एक सक्षिप्त लेख अलग से प्रकाशित करवा कर देश की समस्त आर्य समाजो और प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओ को भेजा जा रहा है।

मेरा समस्त आर्य बन्धुओ से निवेदन है कि दलित ईसाईयो को आरक्षण देने सम्बन्धी सरकार के प्रयत्नो का भरपूर विरोध करे। भारत के प्रधानमत्री राष्ट्रपति उप–राष्ट्रपति भाजपा नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी श्री लाल कृष्ण आडवानी श्री मुरली मनोहर जोशी तथा अपने अपने स्थानीय नवनिर्वाचित ससद सदस्यो को पत्रो तथा टेलिग्राम के माध्यम से अपना विरोध सदेश अवश्य भेजे। दलित ईसाईयो को आरक्षण का विरोध मुख्यत निम्न बिन्दुओ के आधार पर किया जाए।

१ दलित ईसाईयो को आरक्षण भारतीय सविधान के प्रावधानो के पूर्णत विरूद्ध है।

२ दलित ईसाईयो को आरक्षण देने से धर्मान्तरण की गतिविधिया बढेगीं जिससे साप्रदायिक तनाव तथा दगे होगे और कानून व्यवस्था बिगडेगी।

३ इस साप्रदायिक आरक्षण व्यवस्था से मुसलमान भी आरक्षण की माग करेगे जिससे समाज मे और अधिक तनाव उत्पन्न होगा।

४ दलित ईसाईयों को आरक्षण से हिन्दू दलितो को मिलने वाली आरक्षण सुविधा मे कटौती होगी। अत हिन्दू दलितो को भी इस आरक्षण सुविधा के विस्तार का भरपूर विरोध करना चाहिये।

५ दलित इसाइय क आरक्षण म व दोहर लाभ प्राप्त करने के हकदार होगे जो कि न्यायसगत नही है। ईसाई होने के नाते वे अल्पसख्यको के लाभ लेगे तथा साथ ही बहुसख्यक हिन्दू समाज के दलितोद्धार के लिए बनाई गई इस आरक्षण व्यवस्था का भी लाभ उठायेगे। कोई व्यक्ति एक ही समय पर अल्पसख्यको तथा बहुसख्यको दोनो को मिलने वाला लाभ नहीं ले सकता।

६ दलित ईसाईयो को आरक्षण से निकट भविष्य मे लोकसभा तथा विधान सभाओ के लिए आरक्षित सीटो पर भी ईसाई समुदाय कब्जा कर लेगा। धन के बल पर उनके लिए ऐसा करना कठिन नहीं होगा इन परिस्थियों म ईसाई आरक्षित सीटो पर भी चुनाव लड सकेगे तथा अन्य अनारक्षित सीटो पर भी वे चुनाव लडने के हकदार होगे। इन प्रावधानो के चलते वह दिन दूर नहीं जब ससद म ईसाई सदस्यो की भरमार होगी। ऐसी परिस्थिति [illegible] क्या भारत मे परोक्ष रूप से अमरिका और इग्लण्ड जैसे ईसाइ देशो का राज्य क़ायम नहीं होगा ?

इस देश को टुकडे–टुकडे करने के लिए किये गये षडयत्र बहुत शीघ्र ही रग दिखाने वाले हैं। आज भी यदि राष्ट्रवादी जनता आलस्य वृत्ति मे पडी रही तो देश का भविष्य हम सबको कभी माफ नहीं करगा। ईसाई देशो से धन–बल प्राप्त करने वाले हमारे राजनेता हमारे ही वोटो से चुने जाकर ससद को तथा सारे देश को अमेरिका जैसे देशो के इशारे पर चलाने के लिए तत्पर हैं।

अत पुन पाठको से विनम्र अनुरोध है कि

शेष पृष्ठ २ पर

नई दिल्ली में १४ जुलाई को राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के पूर्व प्रधान स्वर्गीय श्री देवरस की शोकसभा का आयोजन किया गया जिसमे सघ के वर्तमान प्रधान श्री राजेन्द्र सिह जी तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम राम चन्द्र राव जी तथा हिन्दु परिषद के नेता श्री अशोक सिघल मच पर उपस्थित हैं।

सम्पादक- डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री

इस्लामी राज्य में गैर मुस्लिमों का हक

भानुमति के कुनबे के एक सदस्य ने वाजपेयी सरकार के प्रति विश्वास मत पर चर्चा के दौरान इस बात पर गहरा रोष प्रकट किया कि फिलहाल धर्मनिरपेक्ष भारत के किसी भी राज्य का मुख्यमंत्री मुसलमान नहीं है। कुनबे के ही एक अन्य दगलबाज ने भारत पाकिस्तान और बगलादेश का एक महासघ बनाने की बात कही। कुनबे के दोनो सदस्य अब देवगौडा मत्रिमडल के सदस्य हैं।

कुछ वर्षो पूर्व पाकिस्तान मे शरीय शासन लागू करवाने तथा अहमदिया मुसलमानो को गैर मुस्लिम करार दिये जाने के लिए भीषण दगे हुए थे। पाकिस्तान सरकार ने न्यायमूर्ति मुनीर की अध्यक्षता मे एक कमीशन बैठाया जिसे अन्य बातो के अलावा यह भी निर्णय करना था कि किसी इस्लामी राज्य मे गैर--मुस्लिमो की क्या स्थिति होगी। इस कमीशन के सम्मुख पाकिस्तान के प्रमुख मुस्लिम विद्वान उपस्थित हुए। इस सबध मे कुछ रोचक तथ्य (बहुतो के लिए अरूचिकर भी) प्रकाश मे आये। कमीशन द्वारा पूछे गये इस प्रश्न के उत्तर मे कि यदि पाकिस्तान इस्लामी राज्य हो तो गैर मुस्लिमो की क्या स्थिति होगी ? विभिन्न मुस्लिम विद्वानो के उत्तर निम्न थे।

मौलाना कादरी अध्यक्ष जमायतुल उलेमा पाकिस्तान वह जिम्मी होगे। उन्हे कानून बनाने राज्य के प्रशासन और सरकारी नौकरियो मे कोई स्थान नहीं मिल सकता । वह राज्य मे किसी भी अधिकारी पद पर नहीं रखे जा सकते।

मौलाना अहमद अली उनको प्रशासन मे कोई स्थान नहीं दिया जा सकता। मियां तुफैल अहमद जमायते इस्लामी गैर मुस्लिमों के अधिकार मुसलमानो के समान नही हो सकते।

मौलाना अब्दुल हमीद बदायूनी गैर--मुस्लिमो को नागरिक अधिकार नहीं दिये जा सकते।

कमीशन के सम्मुख प्रमुख उलेमाओ के विचारो मे निम्नलिखित सिद्धातो का प्रतिपादन भी किया गया है

(१) यदि भारत को हिन्दू राज्य घोषित किया जाये तो उन्हे कोई आपत्ति नहीं।

(२) भारत मे मनु के नियमो के अनुसार मुसलमानों से शूद्रो और म्लेच्छो जैसा व्यवहार किया जाये तो अनुचित न होगा।

(३) भारत मे मुसलमानो को सरकारी नौकरी नहीं करनी चाहिए।

(४) भारत--पाक युद्ध मे भारतीय मुसलमानो द्वारा पाकिस्तान के विरूद्ध कोई भी कार्यवाही करना इस्लाम विरूद्ध है अपितु पाकिस्तान की हर प्रकार से सहायता करना उनका कर्त्तव्य है।

(५) यदि भारतीय मुसलमानो के लिए शरीय का पालन करना सभव न रह जाये जिसमे राजनीतिक इस्लाम भी शामिल है तो उन्हे पाकिस्तान आ जाना चाहिए। इस्लामी सिद्धातों के अनुसार इन भारतीय मुसलमानो को खपाना पाकिस्तान के लिए धार्मिक अनिवार्यता है।

(६) युद्ध--बदियो को सीधे--सीधे कत्ल किया जा सकता है अथवा उन्हे जीवन भर गुलाम बनाये रखा जा सकता है।

(७) शरीय (इस्लामी) राज्य मे मूर्ति बनाना सगीत नृत्य फोटोग्राफी फिल्म और सिनेमा वर्जित है। (पुरूषोत्तम मुस्लिम राजनीतिक चिन्तन और आकाक्षाये पृ. ३३ ४७)

उपर्युक्त तथ्यो के आलोक मैं यह स्पष्ट है कि किसी मुस्लिम राज्य मे गैर मुस्लिम केवल गुलाम बनकर रह सकते है। जिम्मेदार पदो पर उनकी नियुक्ति नहीं की जा सकती। जामयते इस्लामी के सस्थापक मौलाना मौदूदी का कहना है

'इस इस्लामी दृष्टिकोण का सबूत यह है कि पैगम्बर अथवा खलीफाओ के काल मे ऐसा एक भी उदाहरण नहीं है कि जिसमे किसी गैर मुस्लिम को ससद का सदस्य किसी सूबे को गर्वनर न्यायाधीश किसी सरकारी विभाग का निर्देशक अथवा खलाफा के चुनाव मे वोट देन का भी अधिकार दिया गया हो। (डैनियल पाइप्स इन द पाथ आफ गाड पृ. ४५)

यदि भारत--पाकिस्तान--बगलादेश एक हो जाये तो पहला नुकसान कुनबे को ही होगा। हा यदि कुनबे के ये दोनो इस्लाम--प्रेमी सदस्य अपने मत्री पद बनाये रखना चाहेगे तो इन्हे अपना धर्म परिवर्तन करना होगा (यदि परिवर्तित करने के लिए इनके पास अभी भी कुछ बचा हो तो !)।

डा विनय कुमार सिन्हा

देश की राष्ट्रवादी जनता..

(पृष्ठ १ का शेष)

उपरोक्त बिन्दुओ के दृष्टिगत स्वय व्यक्तिगत रूप से भी कार्यवाही करे तथा आर्य समाजो और प्रान्तीय सभाओ के अतिरिक्त अपने सम्पर्क की अन्य समस्त अनुकूल सस्थाओ के पदाधिकारियो को दलित ईसाईयों को आरक्षण का विरोध करने के लिए प्रेरित करे।

सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री सूर्य देव जी ने एक विशेष पत्र के साथ सभा प्रधान श्री वन्देमातरम जी की अपील समस्त नवनिर्वाचित ससद सदस्यो को प्रेरणा के उद्देश्य से भेजी है तथा कुछ सासदो से व्यक्तिगत सम्पर्क भी किया जा रहा है। इस आन्दोलन मे राष्ट्रवादी जनता के सहयोग की परम आवश्यकता है। कृपया राष्ट्र हित मे इस विरोध को व्यक्त करने से न चूके।

शोक समाचार

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजीपुर के उपप्रधान श्री रामवृक्ष सिह का २५ जुलाई १९९६ को देहान्त हो गया उनकी अन्त्येष्टि वैदिक रीति से हुई और शाति यज्ञ ६ जुलाई १९९६ को काधरपुर मे सम्पन्न हुआ इस अवसर पर जिला सभा के प्रधान रामप्रसाद आर्य मत्री राजनाथ सिह प्रचार मत्री नारायन प्रसाद उप मत्री सतप्रसाद पुरोहित नरसिह तिवारी सहित बहुत सख्या मे नर--नारियो ने उपस्थित होकर श्रद्धाञ्जलि अर्पित की

वर्त्तमान युग के हिन्दी-साहित्यकार

डा० विजयेन्द्र स्नातक प्रयाग हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति निर्वाचित

हिन्दी विधा के आदि प्रेरणा श्रोत--महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य भाषा नाम से हिन्दी और लिपि का नाम देवनागरी लिपि कहा था। बगाल के विद्वान श्री केशव बाबू ने उन्हे सस्कृत मे सम्भाषण करने पर कहा था कि महाराज ! आप जो जनोपयोगी--समाज सुधारक बाते कहते हैं वह जनता के अति महत्त्व की है आप जनता की भाषा मे ही बोलकर वक्तव्य तो अत्युत्तम होगा।

महर्षि ने निरभिमान होकर उचित बात स्वीकार कर आर्य भाषा मे हिन्दी लिखना पढना और सम्भाषण प्रारम्भ किया।

स्वतन्त्रता आन्दोलन मे आर्य समाज के मच से जो प्रेरणादायक विचार सारे देश मे राष्ट्रीय मच से दिये गये उसकी भाषा भी हिन्दी ही थी। परिणामत हिन्दी--साहित्य की रचनाओ मे किसी न किसी प्रकार महर्षि की छाप लगी थी। गुरूकुलो की स्थापना उनमे पठन--पाठन--सस्कृत निष्ठ हिन्दी ही पूरे देश मे छायी थी।

हिन्दी--साहित्य का इतिहास--महर्षि की भाषा--प्रेरणा से प्रभावित है एक से एक दिग्गज--लेखक--साहित्यकार पत्रकार--आर्य भाषा और देवनागरी लिपि से प्रभावित है। आधुनिक हिन्दी साहित्य--आर्य समाज का चिर ऋणी रहेगा।

दिल्ली भारत की राजधानी है--हिन्दी--इस का हृदय है--भिन्न भिन्न स्थानो पर महान हिन्दी के विद्वान पैदा हुए है। दिल्ली मे भी रससिद्ध विचारक डा. नगेन्द्र स्व. आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन आचार्य डा. विजयेन्द्र स्नातक जैसे ख्याति प्राप्त हिन्दी सेवी विद्वान शोभायमान है।

इसी श्रृखला मे डा. विजयेन्द्र स्नातक ने गुरूकुल वृन्दावन से स्नातक होकर आर्य जगत की जो सेवा की है। उसी का परिणाम है आज स्नातक जी को साहित्य--सम्मेलन प्रयाग ने इस सस्थान का सभापति चुना है। आर्य जगत आपके सभापति चुने जाने पर गौरव अनुभव करता है आप दीर्घायुष्य को प्राप्त कर हिन्दी जगत की सेवा कर यशस्वी बने।

डा. सच्चिदानन्द शास्त्री
मत्री सभा

हिन्दू समाज और आर्य समाज

आचार्य सुधाशु

ससार मे लगभग एक अरब बीस करोड ईसाइ एक अरब दस करोड मुसलमान है। हिन्दु सम्पूर्ण जगत मे साठ सत्तर करोड होग। सकडो इसाई देश है और पचास पचपन मुस्लिम देश हे बौद्धा क भी बहुत देश हे परन्तु इतने देशा के इसाइयो मे एक भी पादरी एसा नही है जो अपने को ईसा मसीह का अवतार कहता हो जबकि इसाइयो की मान्यता है कि इसा मसीह का पुनरागमन होगा। कोई भी मुल्ला या मुस्लिम अपने को पैगम्बर या इमाम महदी नहीं घोषित करता जबकि मुस्लिम की मान्यता हे कि इसा मसीह और इमाम मेहदी प्रकट होग और इस्लाम का प्रचार करेगे। इसी तरह कोई भी बौद्ध अपने को भगवान बुद्ध का अवतार घोषित नही करता।

जब हम हिन्दु समाज पर विचार करते है तो देखते हे कि यहा सैकडो लोग अपने को साक्षात परमात्मा का अवतार घोषित किये हुए है

जैसे जैसे अवतारो की सख्या बढ रही हैं वैसे वैसे देश मे भ्रष्टाचार और पाखण्ड भी बढता जा रहा है। पुराणमतानुसार जब जब धर्म की हानि होती ह तब तब इश्वर मनुष्य रूप मे अवतरित होता ह। ससार के देशो पर विचार किया जाय तो जितना भ्रष्टाचार भारतीय उपमहाद्वीप म हे शायद ही अन्यत्र हो सारे के सारे भगवान हिन्दू और हिन्दुस्तान को उठाने की बात करते ह परन्तु हिन्दू और हिन्दुस्तान की [illegible] दयनीय होती जा रही है [illegible] शर्म की बात है कि पाकिस्तान मे हिन्दु मुसलमान बन जाते ह परन्तु भारत और नेपाल मे भी हिन्दु मुसलमान और इसाइ बन जाते है जबकि भारत और नेपाल म हिन्दुओ की सख्या बढनी चाहिए यह तो सर्वविदित हे कि जहा हिन्दुओ की सख्या न्यून हे वही देश द्रोह की बाते उभरती है।

> ***हम अपनी कमजोरी छिपाने के लिए कह देते है कि ईसाइयत और इस्लाम के प्रचार के लिए विदेशो से आकूत धन आता है। यह सत्य है। परन्तु हम देखे कि इन भगवानो और नये नये सम्प्रदायो को विदेशो से कितना धन आता है। महेश योगी सतपाल बालयोगेश्वर सतसाई ब्रह्मकुमारी आनन्द मार्ग चन्द्रस्वामी रजनीश इस्कॉन गायत्री परिवार राधास्वामी निरकारी मिशन आदि भगवानो और सस्थाओ को विदेशो से जितना धन प्राप्त होता है उतने मे इस देश की काया पलटी जा सकती है।***
>
> ***ईसाई और मुसलमान विदेशो से धन लाकर यहा के हिन्दुओ को ईसाई और मुसलमान बनाते है परन्तु भगवान लोग धन लाकर महल बनाते है। पैसा मनुष्य पर खर्च न करके पत्थरो पर खर्च करते है। हिन्दु समाज जितना पत्थर को सजाने पर खर्च करता है उसका सौवा भाग भी यदि निर्धन हिन्दु पर खर्च करे तो विधर्मीयो की सख्या इतना न बढे।***

हम अपनी कमजोरी छिपाने के लिए कह देते है कि ईसाइयत और इस्लाम के प्रचार क लिए विदेशो से आकूत धन आता है। यह सत्य है। परन्तु हम देखे कि इन भगवानो और नये नये सम्प्रदायो को विदेशो से कितना धन आता है महेश योगी सतपाल बालयोगेश्वर सतसाई ब्रह्मकुमारी आनन्द मार्ग चन्द्रास्वामी रजनीश इस्कार गायत्री परिवार राधास्वामी निरकारी मिशन आदि भगवानो और सस्थाओ को विदेशो से जितना धन प्राप्त होता है उतने मे इस देश की काया पलटी जा सकती है

ईसाई और मुसलमान विदेशो से धन लाकर यहा के हिन्दुओ को ईसाई और मुसलमान बनाते है परन्तु भगवान लोग धन लाकर महल बनाते है। पैसा मनुष्य पर खर्च न करके पत्थरो पर खर्च करते हैं। कइयो क पास विमान है। इनके आश्रम (महल) ऐसे है कि वैसे किसी सम्राट के भी न होगे। सम्भवत भारत मे किसी पादरी के पास न तो विमान होगा और न तो इनके जैसे महल होगे। इनके आश्रमो मठो मे रहने वाले कुत्ते बिल्ली दूध दही नही पूछते परन्तु आश्रम क बाहर गेट पर फूल बेचने वाला हिन्दु सूखी रोटी खाता है हिन्दु समाज जितना पत्थर को सजाने पर खर्च करता है उसका सौवा भाग भी यदि निर्धन हिन्दू पर खर्च करे तो विधर्मियो की सख्या इतनी न बढे

ऐसा लगता है कि जातिवाद हिन्दु समाज क लिए इश्वर जीव और प्रकृति की तरह नित्य हो गया है कथन म अतिशयोक्ति है परन्तु आप विचार करे कि इस प्रथा को समाप्त करने के लिए कितना सघर्ष हुआ। गौतम बुद्ध महावीर कबीर नानक दयानन्द विवेकानन्द श्रद्धानन्द महात्मा गाधी और विनोबाभावे आदि महापुरुषो की एक लम्बी श्रृखला है। शायद ही एसी कोइ बुराई हो जिसको समाप्त करने के लिए इतने महापुरूषो ने इतने प्रयत्न किये हो

हम देखते है कि इतने परिश्रम क पश्चात भी जातिवाद ज्यो का त्यो बना हुआ हे भारत म जितने भी महापुरूष हुए है उनमे आर्य समाजी विचार के महापुरूषो ने जितन रचनात्मक ढग से इस कुरीति को समाप्त करने का प्रयत्न किया उतना शायद ही किसी ने किया हो आर्य समाज को जितनी सफलता मिली उतनी किसी को नहीं परन्तु खेद है कि आर्य समाज जातिवाद समाप्त करते करते स्वय भी आज जातिवाद से ग्रस्त हो गया है।

कोइ कह सकता है कि छुआछूत आदि पूर्व की भाति नहीं है। परन्तु वे नही समझते कि जातिवाद अपना रूप बदलकर बढ रहा है आज से एक दो दशक पहले जाति के नाम पर सभाये नही थी परन्तु आज तथाकथित जाति के नाम पर सभाये बनी हुइ हे पहल जाति के नाम पर भगवान नही बटे थ परन्तु आज जाति के नाम पर महापुरूषो को बाट दिया गया है ब्राह्मण महासभा वाले परशुराम को क्षत्रिय महासभा वाले राम को यादव सभा वाले श्रीकृष्ण को अग्रवाल सभा वाले अग्रसेन को वाल्मीकि सभा वाले वाल्मीकि को तथा हरिजन आदि गौतम बुद्ध और अम्बेडकर को अपना आदर्श पुरूष और भगवान मान रहे है। इन सभाओ के बनने के पहले सभी जाति के लोग सभी महापुरूषो को आदर्श पुरूष अपना मानते थे परन्तु अब धीरे धीरे तथाकथित अपनी जाति से भिन्न महा पुरूषो के प्रति लोगो की श्रद्धा कम होती जा रही ह अब तो जातीय सभा के लोग तथाकथित अपनी जाति के कुख्यात पुरूष को अच्छा और अपना मान रहे हैं

यात्रा मे एक सज्जन से मेरी राम आदि महापुरूषो पर चर्चा चल रही थी वह व्यक्ति राम के बजाय परशुराम की प्रशसा कर रहा [illegible] रावण के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की पूछने पर ज्ञात हुआ कि वह ब्राह्मण महासभा क पदाधिकारी है। सभा बनने के पूर्व उसे रावण बुराइया दिखाई देती थी अब जाति के नाम अब रावण मे अच्छाइया दिखायी देने लगी [illegible] लोगो की धीरे धीरे तथाकथित अन्य जाति [illegible] महापुरूष के प्रति श्रद्धा कम हो रही हे और अपने जाति के कुख्यात व्यक्ति के भी प्रति महानुभूति उत्पन्न हो रही है हर सभा वाले अपने जाति के गरीब असहायो की सहायता कर रहे है सम्पूर्ण मानव समाज या सम्पूर्ण हिन्दु समाज के हित चिन्ता को छोडकर तथाकथित अपने जाति के हित की सोचते है हरियाणा का व्यक्ति असम बगाल मे अपने ही जाति के नीच से नीच व्यक्ति को मत्री मुख्यमत्री देखना चाहता ह दूसर जाति क व्यक्ति [illegible] पसन्द नहीं [illegible] जाति के नाम पर जो सगठन बनी है वे किनसे युद्ध की सम्भावना का दृष्टिगत करके बनी हे ? क्या वे पाकिस्तान चीन से लडने के लिए बनी है ? या हिन्दु मुस्लिम दगा मे हिन्दुओ की रक्षा के लिए बनी हे ? नही वे हिन्दुओ के ही विनाश क लिए बनी हे

महर्षि दयानन्दसरस्वती के काल म जाति के नाम पर सभा और सेनाय नही थी पाखण्ड था परन्तु भगवान नही थे आज की स्थिति पहले की अपेक्षा अधिक विकट है आज देश और समाज की स्थिति नाजुक है देश मे जिस गति स शिक्षा का प्रसार हो रहा है उसी गति से भगवानो और नये नये पन्थो की भी सख्या बढ रही है

ऐसी स्थिति मे आर्य समाज [illegible] यत्व बढ जाता है क्योकि आर्य समाज जितना उत्कष्ट विचार किसी के पास नही है आज आर्य समाज क प्रचार प्रसार की आवश्यकता पहले की अपेक्षा अधिक है लेकिन हिन्दु समाज की स्थिति जैसे दिन प्रतिदिन दयनीय होती जा रही हे उससे दोगुनी गति से आर्य समाज की भी स्थिति दयनीय होती जा रही है

आर्य समाज म मन्दिर गुरूकल [illegible] उपदेशक लेखक साहित्य (साहित्य आर्य समाज क पास इतना उत्कष्ट और विशाल हे उतने किसी सस्था के पास नहीं होगे ब्रह्मचारी सन्यासी और वानप्रस्थी की कमी नहीं है पर सिर्फ कमी हे आर्य समाज क [illegible] ढग से सचालन की आर्य समाज मे [illegible] [illegible] हे पर [illegible] [illegible] उपयोग नही [illegible] है

जब शिष्य गुरू को पूर्ण समर्पित हो जाता है तब उसकी विद्या स्वत उसके अन्दर प्रवेश कर जाती है। परम पूज्य गुरूदेव साधना को सक्रामक रोग की तरह स्वत सक्रमण करने वाली कहते हे। एक दूसरे के अन्दर सगति से सहजता से प्रवेश कर जाती है। जिस तरह किसान खेत मे पानी देते समय केवल (नका) नाली को ही बदलता है पानी दूसरी क्यारी मे स्वत ही भर जाता है। जमीन मे बीज जाते ही जमीन का जलादि प्रवेश कर उसके आवरण को तोड वृक्षाकार बना देता है। इसलिए साधना का दूसरा नाम ही समर्पण योग है। इसी को सहज योग कहा जाता है क्योकि इसमे कुछ स्वेच्छा नहीं करनी पडती। जो कुछ होता है स्वत ही होता है। श्वास प्रश्वास स्वत ही चलते है हृदय की गति स्वय चलती है। रक्त सचार आदि क्रिया अपने आप होती रहती है इसमे जीव की कोई इच्छा नहीं होती। ठीक इसी तरह साधना मे इच्छारहित क्रियाये होती हैं इसलिए इसे अनीक्षित योग कहते है। विश्व के सभी प्राणी इच्छा मे जीते हैं कोई भी प्राणी इच्छा रहित दिखाई नहीं देता। इच्छा रहित होते ही अनीक्षित की क्रियाये होन लगती है वहीं से अनीक्षित होते ही साधना प्रारम्भ हो जाती हे। बिना समर्पण इच्छा रहित हो ही नहीं सकता इच्छा रहित होना ही समर्पण है। विद्याकाल मे विद्यार्थी का विद्वान् को समपित हुए बिना विद्या आ ही नहीं सकती। छल कपट से छल कपट ही आयेगा। चित्तवृति निरोध नहीं हो पायेगा। चित्त का चिन्तन बढता जायेगा फिर चित्त चिन्तनरहित कैसे होगा। बिना चिन्तन रहित हुए चित्तवृत्ति रहित कैसे हुआ जा सकता है। वृत्ति का निरोध कैसे सम्भव है। असम्भव सी लगने वाली समस्या का हल केवल ऐषणाओ को तिलाञ्जलि ही देना होगा तिलाञ्जलि शब्द अपने मे बडा ही महत्व का है। तिलो से भरी अजली की इच्छा को हटा देने से कर स्वत ही ढीले हो जायेगे तिल एक–एक कर अजली से बह कर बाहर चले जायेगे। कर अर्थात कर्त्तव्य को ढीला करने से काम भी छूट जाता है। ससार के सब काम स्वत छूट जाते हैं काम के छोडने का प्रयास भी काम बन जाता है। इच्छा के दायरे मे आ जाता है। सम्यक प्रकार से कामनाओ को छोड देने को सन्यासी कहते हैं। काम से कामना बनती है काम के छोडने से कामना छूटेगी। इसीलिए सन्यास की दीक्षा के समय प्रतीक रूप से जल मे खडे होकर अपने चोटी के बाल को जल से भरी अञ्जली मे रखकर आदेश दिया जाता है। कर (हाथ) को जरा ढीला करो चोटी का बाल जल के साथ बह कर अनन्त जल मे अन्त हो जाता है। एक–एक कर तीनो ऐषणाए पुत्रैषणा लोकेषणा जल के प्रवाह के साथ बह जाती हैं। कर से कर्त्तव्य रूपी ऐषणाओ को बहाना नहीं पडता वे स्वत बह जाती है। ऐषणाओ के बहे बिना चित्त विमल कैसे होगा ? बिना विमल हुए परम विमल प्रभु चित्त मे कैसे वास करेगे।

सन्यास ही साधना है साधना ही सन्यास है। योग का नाम ही सन्यास है। गेरूवेवस्त्र एक प्रतीक हैं कि सभी ऐषणाये समाप्त हो चुकी है। अग्नि कूडे कबाडे का जला कर स्वत ही भस्मिभूत कर देती है, उसमे केवल अग्नि प्रज्ज्वलित होनी चाहिए। ऐषणाओ रूपी सरसता मे कूडे कबाड की भाति मे सरसता के सूखे बिना उसमे अग्नि प्रज्ज्वलित हो ही नहीं सकती। कामना और वासना से अनिक्षित हुए बिना उसे तो रस मिलता ही रहेगा। रसास्वादन के सस्कार से पुन कामना वासना और भोग उदय ही होता रहेगा। योग अग्नि के उदय होते ही सब कबाड स्वत जल जाता है उसे जलाना नहीं पडता। योग अग्नि समर्पण की प्रसादी है प्रसाद से पाप का विनाश होता है। गुरु समर्पण होने पर प्रभु समर्पण स्वत हो जायेगा कुछ भी पुरूषार्थ नहीं करना पडेगा। महर्षि पतञ्जलिजी ने योगदर्शन मे लिखा।

पुरूषार्थ शून्याना गुणाना प्रतिप्रसवा कैवल्यम

अर्थात पुरूषार्थ शुन्य होने पर योग यात्रा प्रारम्भ होती है। गुणो की समाप्ति पर पूर्ण होती है। यह योग पथ की पूर्ण पोथी है। पूर्ण रहस्य से भरा पडा–पूर्ण समर्पण से पोथी का पन्ना खुलता है तभी चित्त अनावरण हो पाता है।

महर्षि पतञ्जलि महाराज योगदर्शन मे कहते हैं

तद्वैराग्यादपि दोषबीज क्षये कैवल्यम।

अर्थात योग के क्षेत्र में वैराग्य उदय से उक्त ख्याति मे वैराग्य होने से अनादिकाल से चित्त मे विद्यमान दोषबीज क्षीण हो जाते है दोष बीज का नाश हो जाने पर मोक्ष कैवल्य की भी प्राप्ति होती है।

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिक ।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योनी भवार्जुन।।

गीता ६–४६

अर्थात श्री कृष्ण कैहते है कि योगी तपस्वियो से श्रेष्ठ है और शास्त्र के ज्ञान वालो से भी श्रेष्ठ माना गया है तथा सकाम कर्म करने वालो से भी योगी श्रेष्ठ हैं तपस्वी ज्ञानी और कर्मी इन सबो से योगी श्रेष्ठ है इस कारण हे अर्जुन ! तुम योगी हो।

कृच्छ्र चान्द्रायणदि तथा पचाग्नि आदि तप करने वालो को तपस्वी कहते हैं। शास्त्रादि अध्ययन करने वालो को ज्ञानी कहते हे। यजन–याजन होमदि कर्म करने वालो को कर्मी कहते हैं।

यहा विचार करना चाहिए कि इन कर्मो से चित्त कदापि स्थिर नहीं होता। अस्थिर चित्त वाले को कभी परमात्मा (ईश्वर) का ज्ञान (ब्रह्मज्ञान) लाभ नहीं हो सकता। ब्रह्मज्ञान को लाभ किये बिना आनन्द कन्द ब्रह्म (परमात्मा) को नहीं पा सकते इस कारण श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि तुय योगी बनो।

योगश्चित्तवृत्ति निरोध । अर्थात जब तक चित्त की वृत्तियो का निरोध नहीं होगा आवागमन नहीं छूट सकता। चित्त की वृत्तिया ही केवल जन्म–मृत्यु का कारण हे। इस कारण विज्ञजनो को योग पथ का अवलम्बन ही एक मात्र कर्त्तव्य है।

सूक्ष्म रहस्य यह है

इस शरीर रूपी क्षुद्र ब्रह्माड मे तीन लोक वर्तमान है। तपस्वी जो तपलोक मे रहते हैं। ज्ञानी जिनको कूटस्थ का ज्ञान हुआ है। कर्मी जो कर्म योग का अनुष्ठान करते हैं। योगी वह जो द्वैत ज्ञान रहित हो अद्वैत ज्ञान प्राप्त कर अभेद आत्मा स्वरूप हुआ हे। इसी कारण पूर्वोक्त अवस्थाओ से यह अवस्था श्रेष्ठतर है। यह सब सद्गुरु कृपा और साधन मार्ग मे उन्नतिशील पुरूषो को ही ज्ञात होता है। जो पुरुष साधन द्वारा पूर्ण रीति से आत्म द्वारा परमात्मा को साक्षात कर लेता है वही योगियो मे श्रेष्ठ कहलाता है अर्थात जो समष्टि को छोड व्यष्टि मे लय हुआ है वही श्रेष्ठ है।

कैवल्य मन्दिर सिकन्दरा
आगरा

वैदिक सस्कार प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के तत्वावधान मे सप्त दिवसीय सस्कार प्रशिक्षण शिविर मे २३ से ३०.६.६६ तक निरन्तर सात दिनो तक अत्यन्त गम्भीरता के साथ प्रशिक्षण का क्रम चला। सन्ध्या यज्ञ का प्रायोजक प्रशिक्षण मत्रोच्चारण शुद्ध करवाना प्रत्येक विधि का महत्व शिविरार्थियो को समझाया गया। सस्कारो के प्रशिक्षण क्रम मे नामकरण चूडाकर्म उपनयन गृह प्रवेश व विवाह सस्कार का विशेष प्रशिक्षण देने हेतु विधि भाग विधि–व्याख्या महत्व व वैज्ञानिकता पर जोर दिया गया

प्रतिदिन परीक्षा ले कर शिविरार्थियो का मूल्याकन करने से शिविर की गम्भीरता व गरिमा मे वृद्धि हुई। समग्र मूल्याकन के आधार पर प्रथम स्थान श्रीगगानगर से आये श्री देशराज "सत्येच्छु" ने व द्वितीय स्थान वही के श्री राम निवास गुण ग्राहक ने एव तृतीय स्थान छोटी सादडी के श्री मोहन लाल आर्यपुष्प ने प्राप्त किया। उन्हे प्रमाण–पत्र सस्कार चन्द्रिका डा सत्यव्रत सिद्धान्तालकार के तथा अन्य साहित्य से पुरस्कृत किया गया। उन सहित सात प्रशिक्षणर्थियो को मूल्याकन के आधार पर सस्कार विशारद की उपाधि से विभूषित किया गया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का लाभ शिविरार्थियो के अतिरिक्त स्थानीय जिज्ञासु जन भी लेते रहे। विशेष रूप से आचार्य श्री अर्जुनदेव स्नातक द्वारा दिए जाने वाले सारगर्भित ओजस्वी व प्रेरक प्रवचनो ने अद्भुत समा बाध दिया। उन प्रवचनो की सुधी जनो द्वारा भूरि–भूरि प्रशसा की गयी।

आवास एव भोजन की नि शुल्क व्यवस्था न्यास की ओर से की गई जिसकी शिविरार्थियो व आचार्य जी ने अत्यन्त प्रशसा की।

समापन अवसर पर शिविरार्थियो ने शिविर मे प्राप्त उपलब्धियो की चर्चा करते हुए निरन्तर ऐसे कार्यक्रम हो इसकी आवश्यकता को प्रतिपादित किया। न्यास के अध्यक्ष ने न्यास की तरफ से प्रतिवर्ष इस प्रकार के प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने का आश्वासन दिया।

श्री हनुमान प्रसाद चौधरी
अध्यक्ष

वैदिक ज्ञान की सार्वभौमि[illegible]

(ले डॉ. यौगेन्द्र कुमार शास्त्री (जम्मू))

वेद ईश्वर का स्वाभाविक ज्ञान है।

याज्ञवल्क्य महर्षि अपनी पत्नी मैत्रेयी को उपदेश करते हुए कहते हैं–

एव वा अरे ऽस्य महतो भूतस्य नि श्वसितमेतद् यद् ऋग्वेदो यजुर्वेद सामवेदो ऽ थर्वांगिरस।

हे मैत्रेयी! जिस प्रकार शरीर से श्वास निकल कर फिर उसी मे प्रविष्ट हो जाता है उसी प्रकार परमेश्वर का ज्ञान उसके स्वभाव से प्रकट होता है और प्रलय काल में उसी मे समा जाता है। परमेश्वर की तरह उसका वेद ज्ञान भी नित्य है।

श्वेताश्वतरोपनिषद मे कहा है–

स्वाभाविकी ज्ञान बल क्रिया च

अर्थात परमेश्वर का ज्ञान बल और क्रिया ये उसमे स्वाभाविक हैं।

वेद ज्ञान मनुष्यमात्र के लिये है।

महर्षि स्वा. दयानन्द सरस्वती ने वेद शब्द का निर्वाचन करते हुए लिखा है–

विदन्ति विद्यन्ते विन्दन्ते विन्दते सर्वे मनुष्या सर्वा सत्यविद्या यैर्येषुवा ते वेदा।

अर्थात सभी मनुष्य जिनसे सब सत्य विद्याओ को प्राप्त करते है वे वेद हैं।

यजुर्वेद (२६। १) मे लिखा है–

यथेमा वाच कल्याणीमावदानि जनेभ्य

परमेश्वर स्वय कहता है कि–मैं वेद का उपदेश मनुष्य मात्र के लिये करता हू।

परमात्मा स्वय कहता है–कि धरती के सभी मानवो मे एकता हो।

समानी व आकूति समाना हृदयानि व समानमस्तु वो मनो

धरती पर रहने वालो तुम्हारे विचार एक हो। तुम्हारे हृदय एक हो। तुम्हारे मन एक हो।

वेद मे न एवम व शब्द की विशेषता

सस्कृत व्याकरण की दृष्टि से अस्मद् शब्द का छठी विभक्ति के बहुवचन मे अस्माकम रूप बनता है जिसका अर्थ है हमारा हमारे हमारी इसी अस्माक को न आदेश हो जाता है। न का भी वही अर्थ है जो अस्माकम का है।

इसी प्रकार युष्मद् शब्द का छठी विभक्ति के बहुवचन मे युष्माकम रूप बनता है जिसे व आदेश हो जाता है अर्थ होगा तुम्हारा तुम्हारे तुम्हारी। वदो मे न शब्द का प्रयाग बहुत हुआ है। जैसे–

धियो यो न प्रचोदयात।

स्वस्ति नो वृहस्पतिर्दधातु।।

इत्यादि प्रार्थना की गई है कि वह परमेश्वर हम सबकी बुद्धियो को श्रेष्ठ कर्मो के लिये प्रेरित करे।

वह वृहस्पति हम सबको कल्याण प्रदान करे।

शान्ति वरण क प्रकरण मे न शब्द अनेक बार आया है।

न शब्द के द्वारा प्रार्थी अपना तथा धरती पर रहने वाले सभी प्राणियो का कल्याण चाहता है। न शब्द सार्वभौमिक प्राथना से युक्त है व शब्द मे कहने वाला अर्थ अपने को अलग रख कर दूसरो का कल्याण चाहता है। व की अपेक्षा न शब्द से अधिक व्यापक है।

जो व्यक्ति अपनी योग्यता दिखाने के लिये स्वस्ति नइन्द्रो वृद्धश्रवा के स्थान पर "स्वस्ति व इन्द्रो वृद्धश्रवा बोलकर आशीर्वाद देते हैं वे साथ मे अपना कल्याण क्यो नहीं चाहते। दूसरी बात यह है कि वेद मन्त्र को बदल कर बोलने का किसी को अधिकार नहीं है।

जो व्यक्ति सत्या सन्तु यजमानस्य कामा के स्थान पर अधिक यजमानो को देखकर यजमानाना कामा बोलते है वे भी अनधिकार चेष्टा करते हैं।

वेद मे सार्वभौमिक प्रार्थनाए

देखिये वेद मे कहा है–

"मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे

हम सभी पृथ्वी पर रहने वाले मानव एक दूसरे को मित्र की आखो से देखे।

सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु

सारी दिशाओ मे रहने वाले मानव मेरे मित्र बन जावे।

परमात्मा स्वय कहते हैं कि

अविद्वेष कृण्णोमि व

मे धरती पर रहने वाले तुम सभी प्राणियो को [illegible] हू यह व शब्द का सार्थक प्रयोग है क्या कि परमात्मा स्वय द्वेष रहित है

वेद मे विश्ववन्धुत्व की भावना देखिये

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते स भ्रातरो

इस धरती पर रहने वाले छोटे बडे सभी आपस मे भाई भाई है। इतनी महान सार्वभौमिक बात वेद ही कह सकता है। सबके लिये प्रार्थना की है–

भद्र कर्णेभि श्रृणुयाम

हम सब कानो से अच्छा सुने। भद्र पश्येम अच्छा देखे।

यह प्रार्थना भी सार्वभौमिक है।

वेद महानता इसमे भी है कि वेद केवल मनुष्यो का ही कल्याण नही चाहता अपितु पशु पक्षियो का भी कल्याण चाहता है। वेद मे अनेक स्थानो पर द्विपदे एव चतुश्पदे शब्द आये है। देखिये **शन्नो अस्तु द्विपदे शञ्चतुष्पदे**

दो पैर वाले एव चारपैर वाले सभी प्राणियो का कल्याण हो।

वेद मे सम्पूर्ण धरती पर रहने वाले प्राणियो के लिये एक सी व्यवस्था दी है।

वेद सम्पूर्ण धरती का सविधान है।

वेद मे कहा है–

अनागो हत्या वै भीमा निरपराध प्राणी की हिसा निन्दनीय और भयानक है परन्तु जो निरपराध प्रणियो की हिसा करता है उस प्राणी की हिसा उचित है।

वेद मे कहा है जो हमारी गायो को घोडो को पुरूषो को मारता है उस शीशे से बीध कर मार डालो।

वेद की दृष्टि मे दुष्ट हिसको की हत्या से धरती पर सभी सुखी रह सकते हैं। धरती पर वर्तमान उग्रवाद का यही सही निदान है।

वेदोऽखिलो धर्ममूलम

धरती पर जितने सम्प्रदाय उत्पन्न हुए हैं और उनकी जितनी धार्मिक पुस्तके हैं। उन पुस्तको मे जो सार्वभौमिक सत्य है। वह सबसे पहले वेदो में भी मिलता है। वेद क्यो कि ससार के पुस्तकालय मे सबसे प्राचीन ग्रन्थ है अत उन सम्पूर्ण सार्वभौमिक धार्मिक मान्यताओ का मूल वेद ही सिद्ध होता है।

वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है।

विश्व समाज परिवार एव व्यक्ति से सम्बन्धित विकास का मार्ग वेदो मे विद्यमान है। वेद सम्पूर्ण मानवो आत्माओ को पुरूष शब्द से सम्बोधित करके कहता है।

उद्यान ते पुरूष नावयानम

हे आत्मा तेरा उद्देश्य उन्नति की तरफ जाना है पतन की तरफ जाना नहीं।

वेदो मे ब्रह्म विद्या सृष्टि विद्या चिकित्सा विद्या तार विद्या नौविमानादि विद्या मानोविज्ञान आदि सभी विद्याए विश्व के कल्याण के लिये मूल रूप मे विधमान है।

वदो मे सम्पूर्ण विश्व के लिये शान्ति की कामना

शान्ति पाठ के मन्त्र मे

द्यौ शान्ति अन्तरिक्ष शान्ति पृथिवी शान्ति इन तीन वाक्यो से द्यूलोक अन्तरिक्षलोक एव पृथिवी पर शान्ति की कामना की गई है। ये सभी विचार वेद की सार्वभौमिकता सिद्ध करते है। ऐसा सार्वभौमिक वैज्ञानिक ज्ञान ही ईश्वरीय ज्ञान कहलाने के योग्य है।

बालक के बचपन की आदतें ही उसके व्यक्तित्व की आधार शिला है

लेखक - श्री महेश वी. शर्मा, गुमानपुरा कोटा (राजस्थान)

बाल गोपाल। भगवान का साक्षात स्वरूप। सासारिक छल कपट घृणा एव द्वेष से परे वे सीधे सच्चे व ईमानदार होते है। इसलिए किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है जहा बच्चो का निवास होता है वहा स्वर्ग होता है। बालक माता के मातृत्व की शोभा एव पिता के पुरूषार्थ के गौरव होते है। बचपन तो बहते पानी की तरह है उसे हर क्षण निर्देशन की आवश्यकता है। बच्चे को बार-बार समझाना पडता है। हर नई वस्तु का परिचय बारम्बार कराना पडता है। इस समय माता पिता धैर्य रखे। बचपन जीवन का नीव है और जीवन रूपी भव्य भवन के निर्माण से पूर्व बचपन रूपी नीव का सुदृढ होना आवश्यक है।

बच्चे का जन्म दिन कितना महत्वपूर्ण है इसको ध्यान मे रखकर ही माता-पिता को बच्चे के जन्म लेने के क्षण से ही उसके सभी साधन-सुविधाओ का ध्यान रखते हुये ममतापूर्ण स्वतत्र खुशनुमा वातावरण मे बच्चे मे ऐसी आदते डाल कि भविष्य मे वह अच्छी आदतो के बल बूत पर अपने व्यक्तित्व का निमाण कर अपने देश के लिए अच्छा नागरिक ही नहीं बने वरन समाज मे भी अपने व्यक्तित्व की छाप छोडे बच्चा सीखना [illegible] ह कुछ करना चाहता है। अच्छी आदतो से उसमे नये सस्कार डाले जा सकते हैं। जिससे उसका बचपन उन्नति की ओर आगे बढता है। बच्चो मे नई आदते नए सस्कार डाल-कर उसमे समाज के अनुकूल व्यवहार मे परिवर्तन लाकर सर्व श्रेष्ठ नागरिक बनाया जा सकता है।

बालक के बचपन की आदते ही उसके व्यक्तित्व की आधार शिला होती है। आदत सतत व यात्रिक किया है जो व्यक्ति के चरित्र को प्रभावित करती है। आदते जब विवेक से सचालित होकर शील व अनुशासन के अन्तर्गत कार्य करती हैं तो बालक चरित्रवान बनता है। यह तो सर्वमान्य तथ्य है कि बच्चा सबसे अधिक अपने माता-पिता व परिवार से ही सीखता है। अत इन सभी की जिम्मेदारी है और अति आवश्यक कर्त्तव्य व दायित्व है कि बच्चो मे अच्छी आदतो का निर्माण करे। इस समय बच्चे की बोलने उच्चारण करने चलने दौडने बैठने की क्रियाओ मे गति एव कौशल्य डालने का प्रयास किया जाना अति आवश्यक है। इस सदर्भ मे बच्चो की त्रुटियो पर ध्यान रखे और सही ढग से सुधार करे। बालक के पालन पोषण मे लापरवाही उसकी उपेक्षा और अत्यधिक लाड प्यार भी उस गदी आदतो का शिकार बना बाल अपराधी बना सकता है। इस समय माता पिता की सतर्कता से बच्चे की गतिविधियो जैसे कहा घूमता है क्या करता है। आदि पर ध्यान देना चाहिए। बच्चे की मित्र-मडली एव उसके पास पडोस का वातावरण ठीक है तो वह निश्चय ही अच्छी आदते सीखेगा साथियो के सामने डाटे फटकारे नहीं ऐसा करने से वे हीन भावना से ग्रस्त हो जायेगा।

किसी विद्वान ने सत्य ही कहा है कि पौधे को जिस तरफ झुका दोगे वृक्ष वैसा ही बढगा। ऐसे ही व्यक्ति के जीवन मे शैशव व बाल्यावस्था ही वह समय है जब हम उसे जैसा चाहे वैसा झुका या बना सकते है। भाषा चरित्र एव व्यवहार मे इस वक्त बच्चे मे जो आदते पडती हैं उनका प्रभाव उसके भावी जीवन पर निश्चय ही पडता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक एलडर ने ठीक ही कहा है पूरे जीवन का ढाचा शैशव मे ही बन जाता है। बचपन मे बालक का नाडी मडल लचीला अपरिपक्व एव परिवर्तन शील रहता है। यह वह समय होता है जब बच्चे मे अच्छी आदत डाली जा सकती है और बुरी आदतो को मिटाया जा सकता है। बाद मे नाडी मडल के परिपक्व हो जाने से आदते पक्की व स्थायी हो जाती है जो लाख प्रयासो से भी बदलना सभव नहीं अच्छी आदतो हेतु बच्चो मे परिस्थितियां व अनुकूल वातावरण का निमाण करने की अत्यधिक आवश्यकता है।

उदाहरणार्थ बालक मे बचपन से ही कुछ [illegible] मोटी निम्न आवश्यक आदते [illegible] जो सरल भी है और बच्चा इनमे [illegible] महसूस नहीं करता-(१ बच्चो को प्रात ही जल्दी उठायें शौच आदि से निवृत्त करके दात साफ कराये स्नान करावे और थोडा बहुत व्यायाम करावे या घूमावे। (२ प्रतिदिवस ईश्वर प्रार्थना करने और शाम को खेलने के लिए अवश्य प्रेरित करे। (३) बच्चो को श्रम की महत्ता व उसके अच्छे फल के बारे मे समझावे सत्य बोलना मादक वस्तुए व मासाहार से दूर रहना सदचरित्र व सदाचरण का पाठ पढावे छल प्रपच व बनावटी बातो से परे रहने की आदते डाले। इसके लिए यह आवश्यक है आप भी जो कुछ अच्छी आदते बता रहे है उनके ऊपर आप भी चल रहे है। आपकी कथनी व करनी मे अन्तर नही होना चाहिए। (४) बचपन मे जब बच्चा अपनी कोई दिशा निर्धारित नहीं कर सकता और उसकी अपनी कोई रूचि भी विकसित नहीं होती ऐसे मे बच्चा समय काटने हेतु शरारते करता है और मा-बाप उसकी जिज्ञासाओ का सही समाधान करने के बदले डाटते-फटकारते और मारते हैं। परिणाम बच्चे के स्वभाव में विद्रोह व चिड-चिडापन आता है अत आप उसकी रूचि अनुसार अच्छी आदतो का विकास करे। उसे ऐसी दिशा दिखावे कि वो अपने इच्छित शौको का विकास कर आगे अग्रसर हो।

(५) कभी माता-पिता अपनी प्रतिष्ठा व झूठी शान बताने हेतु बच्चो के सामने बढ चढकर अपनी औकात का दूसरो के सामने बखान करते है। बच्चा सब समझता है इसे देखकर उसमे बुरे आचरण व आदते का निर्माण होता वह अपने दण्ड के भय से कुछ कहेगा नहीं परन्तु स्वयं कुठा ग्रस्त हो अनुशासन हीन हो बुरी आदतो मे पडेगा। (६) बच्चो मे लोभ-लालच व आवश्यकता से अधिक खाने-पीने व पैसा खर्च करने की बुरी आदत न डाले। उन्हे सादा जीवन व उच्च विचार के आदर्शों पर चलन की अच्छी आदते सिखावे और आप भी इस पर चले। (७) बच्चे की मित्र मडली व पास-पडोस का वातावरण सही व सुदर है तो उसमे अच्छी आदते आवेगी। आपके दाम्पत्य सबधो का बच्चो की आदतो पर काफी प्रभाव पडता हे आपके सबध व व्यवहार मधुर हैं तो बच्चो मे भी अच्छे व्यवहार करने व मधुर बालन की व अच्छी आदते पडेगीं जो उनके सामाजिक जीवन मे उन्हे भविष्य मे प्रतिष्ठित करेगी। (८ ध्यान रहे। आप अपने बच्चो से बडी बडी अपेक्षाए अवश्य रक्खे। परन्तु उनकी रूचि के अनुसार [illegible] माता-पिता बच्चो की अभिरूचियो आवश्यकतानुसार तथा उनकी बुद्धि के अनुरूप उनके [illegible] निमाण अच्छी आदतो को बरकरार रखते है व बच्चो का भविष्य सुधारने मे सफलता अवश्य प्राप्त करते है।

[illegible] मे बचपन से ही अच्छी आदते [illegible] उन्हे अनुशासन प्रिय बनाने मे सहयोग प्रदान करेगा इससे वे श्रेष्ठ आचरण की ओर अग्रसर हो सदैव उनकी अच्छी आदतो व कार्यो को प्रोत्साहन देवे। बच्चो की जिज्ञासाओ को शान्ति से सुन उचित समाधान करे। बच्चो का रोजाना एक दो घटे का समय देकर उन्हे महापुरूषो के आदर्शों के प्रति सजग करे। उपदेश स्वरूप नही वरन क्रियात्मक से जीवन मे ढालने हेतु प्रेरित करे। उन्हे कभी भी कुठित न होने देवे। बच्चे माता-पिता की धरोहर है। अस्तु। बच्चो मे अच्छी आदते डाल जिससे वे न केवल अभिभावको परिवार जनो के लिए सुख व सतोष का कारण बनते है वरन समाज एव राष्ट्र भी ऐसे बच्चो को पाकर सदैव गौरवान्वित होता है।

धर्म के आधार पर आरक्षण का विरोध

आर्य समाज मदिर गुजरावाला टाउन-११ दिल्ली ११०००६ के सभी सभासद एव अधिकारी धर्म के आधार पर आरक्षण के किसी भी प्रयास का घोर विरोध करते हैं। अत दलित ईसाईयो के नाम पर धार्मिक वर्गीकरण व देश की एकता खण्डित करने के प्रयास को तत्काल रोके। हम सर्वसम्मति से माग करते हैं कि सरकार दलित ईसाइयो के आरक्षण का प्रस्ताव तत्काल वापिस ले तथा सम्पूर्ण देश मे समान नागरिक सहिता लागू करे।

महाशय राम बिलास खुराना
प्रधान

धन्यवाद बनाम प्रार्थना

★ धन्यवाद ★

वैदिक गुरूकुल वानप्रस्थाश्रम आनन्द धाम गढी ऊधमपुर जनवरी १९८१ से शुरू हुआ था। इन १५ वर्षों में धार्मिक जनता ने मुझे इतना सहयोग दिया कि आश्रम में किसी चीज की कमी नहीं आने दी। इस समय आश्रम दिन दुगुनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है। आश्रम की सडक पक्की बन चुकी है। तीन बसों का आना जाना शुरू हो गया है। लोगों का आना जाना और आश्रम में रहना शुरू हो गया है। यह आश्रम जम्मू-काश्मीर का हरिद्वार बन गया है। यह आश्रम वैष्णों देवी की तरह तीर्थ स्थान बन गया है। आप आश्रम आयेंगे तो आनन्द धाम घाट देखकर बहुत प्रसन्न होंगे। आप आश्रम में देखेंगे विचित्र गुफा जिसमें मृत्यु लोक और स्वर्ग नरक दिखाया गया है। आप आश्रम में देखेंगे बच्चों का गुरूकुल, फ्री डिस्पैन्सरी। धार्मिक पुस्तकालय और लायब्रेरी। गौशाला, मौसमी का बाग, आम का बाग, महर्षि जीवन झांकी। महर्षियों के नाम के ६ द्वार पानी का कुआं, यज्ञशाला और वेद मन्दिर। वर्ष में दो बार योग साधना शिविर लगते हैं। हर रोज ध्यान, योग, संध्या हवन और सत्संग होता है। आश्रम में १०१ कमरे तैयार किये जा रहे हैं। ६० कमरे तैयार हो चुके हैं। आश्रम में महात्मा वसिष्ठ मुनि जी ने साढे तीन साल का मौन रखा हुआ है। ब्रह्मचारी योगेश्वर जी ने पाच साल का मौन रखा हुआ है। २४ लाख का दूसरा गायत्री महायज्ञ शुरू हो चुका है। **यह आश्रम धार्मिक जनता का है इसलिये मैं धार्मिक जनता का प्यार भरे हृदय से धन्यवाद करता हूं।**

★ प्रार्थना ★

आचार्य अखिलेश्वर जी ने छोटी आयु में ही अपना घर और परिवार छोड दिया था। और गुरूकुल कालवा मे दाखिल हो कर पूरे विद्वान बन कर वेद प्रचार के लिये निकल पडे थे। १९८७ में मेरे साथ उनकी मुलाकात हुई, ११-६-८८ को मैने उनके नाम आश्रम की वसीयत कर दी और अपना उत्तराधिकारी बना लिया था। ६ जून १९९९ को आश्रम का पूरा हिसाब किताब करके आश्रम को आचार्य अखिलेश्वर जी को सौंप दिया था, ६ जून को आश्रम के पास कैश हैंड एक लाख ५ हजार सात सौ सत्तर रु. और बैंक में जमा तेईस हजार रु. और कुल रकम एक लाख अठाईस हजार सात सौ सत्तर रु. था। मैंने प्यारे आचार्य अखिलेश्वर जी को आशीर्वाद दिया है, कि वह आश्रम को स्वतंत्र रूप से चलायें।

धार्मिक जनता से मेरी प्रार्थना है कि वह आचार्य अखिलेश्वर जी को तन-मन-धन से सहयोग दें। और समय निकाल कर आश्रम को देखने आवें। आश्रम की जानकारी के लिये आश्रम समाचार मुफ्त मंगवायें।

आश्रम का पताः

महात्मा रसीलाराम वैदिक गुरुकुल वानप्रस्थाश्रम आनन्दधाम

पोस्ट हरतरयान गढी ऊधमपुर पिन-१८२१२१ (जम्मू कश्मीर) फोन नः २२४

आश्रम प्रधान-गोपाल भिक्षु

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 21 7 96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/96
R N No 626/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 18/19 7 1996

आसन व्यायाम लाठी भाला अ प्रशिक्षण ओमदेव पुर दिया। ३०- शिविर का जिसमे अविभावक। क्षेत्रीय गणमान्य लोगो ने बालकों के प्रदर्शन की भूरि भूरि प्रशसा की। अन्त मे गुरूकुल के प्राचार्य प. राजदेव शर्मा ने सभी का धन्यवाद कर शिविर समापन की घोषणा की।

आर्य समाज लैन्सडोन के हीरक जयन्ती समारोह के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान प वन्देमातरम जी मत्री डा सच्चिदानन्द शास्त्री श्री सत्यानन्द मुजाल श्री विमल वधावन एव स्वामी योगानन्द जी।

आर्य समाज भरवाई चिन्तपुरनी का ८१ वां वार्षिकोत्सव

शिवालिक के सर्वोच्च शिखर भरवाई मे प्रति वर्ष की भान्ति इस वर्ष २४ जुलाई से २६ जुलाई तक हवन यज्ञ सत्सग वेद सप्ताह वेद कथा का कार्यक्रम रखा है।

पूज्यस्वामी ब्रह्मानन्द जी भगवानदेव जी चैतन्य वेद प्रवक्ता पूज्या बहन सत्यप्रिया जी शाम सिह हितकरनी जी महात्मा प्रेमी जी रेडियो कलाकार प्रसिद्ध भजन मण्डली श्री प. हरिचन्द्र जी इसके अतिरिक्त और भी जम्मू—लुधियाना आदि से विद्वान नेतागण पधार रहे हैं।

१ प्रति वर्ष की भान्ति रात्रि कायक्रम नित्य समाज मन्दिर मे होगा।
२ दिन का कार्यक्रम यज्ञ के यजमान श्री प. केवल कुमार जी प. रत्न चन्द जी प. किशन चन्द—हरिश्चन्द्र शास्त्री प. किशन देव जी प. सोम दत्त ब्रह्म दत्त जी आदि के गृहो मे हुआ करेगा।
३ श्री किशन देव जी के गृह पर २७ जुलाई शनिवार के दिन सारा कार्यक्रम होगा।
४ २८जुलाई रविवार को पूर्णाहुति कार्यक्रम प. किशन चन्द हरिश्चन्द्र शास्त्री के गृह पर होगा। आप सभी सब जगह सादर आमन्त्रित है।
५ बाहर से पधारने वालो के आवास एव भोजन की व्यवस्था होगी।

नोट—२८/७ रविवार रात ८ से १० भजन—उपदेश कथा २६ प्रात सोमवार ७ से ११ तक हवन यज्ञ भजन उपदेश डगोहज श्री कशमीरा सिह जी के घर मे होगा।

प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्ष गुरूकुल ऐरवा कटरा (इटावा) के प्रागण मे आर्य वीरदल का दस दिवसीय प्रशिक्षण शिविर बडे ही हर्षोल्लास मय वातावरण मे सम्पन्न हुआ। इस शिविर मे ५० आर्य वीरो ने सोत्साह भाग लिया। विगत २१ जून से शिविर मे आर्य वीरो ५

शोक समाचार

आर्य समाज सैनिक विहार के सस्थापक सदस्य श्री कृष्ण चन्द्र गुप्ता के ज्येष्ठ पुत्र श्री सुधीर गुप्ता का ४८ वर्ष की अल्पायु मे अचानक हृदय गति रुक जाने से ३ जुलाई को बम्बई मे देहान्त हो गया।

आप श्री सुनील गुप्त डिप्टी सुपरीटेण्डेट तिहाड जेल के ज्येष्ठ भ्राता व श्री राजेन्द्र दुर्गा के मोसैरे भाई थे।

श्रद्धाजली सभा सोमवार १५ जुलाई १९९६ साय ४ बजे कम्युनिटि हाल सैनिक बिहार निकट रानी बाग दिल्ली—११००३४ मे सम्पन्न हुयी।

राजेन्द्र दुर्गा

लेखकों से निवेदन

सार्वदेशिक साप्ताहिक के लेखको से निवेदन है कि अपने लेख टाइप करवाकर या साफ साफ लिखाई मे भेजे।

सामयिक विषयो पर लेख वैदिक सिद्धान्तो तथा राष्ट्रीय विचारधारा के अनुकूल होने चाहिए।

वैदिक विद्वानो से निवेदन है कि गहरे एव गभीर विषयो पर लिखते समय जनसामान्य हेतु सरल भाषा का प्रयोग करे तथा लेख यथा सम्भव सक्षिप्त होने चाहिए।

रचनाओं को प्रकाशित करने या न करने का अधिकार सार्वदेशिक का है। अप्रकाशित रचनाये लौटाने की व्यवस्था नहीं है।

सम्पादक

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली 2 मे प्रकाशित

(विदेश समाचार)

प्रान्तीय आर्य महिला सभा की मंत्राणी

श्रीमति कृष्णारहेजा की होलेंड यात्रा

पिछले दिनो दिल्ली से प्रान्तीय महिला सभा की उपमन्त्राणि श्रीमति कृष्णा रहेजा जी होलेड पधारी। वैसे तो उनकी यात्रा उनके सुपुत्रो द्वारा रोटरडम मे खोले एक व्यापारिक प्रतिष्ठान के शुभारम्भ (उदघाटन) करने तथा विदेशो मे भ्रमण करने के उद्देश्य से थी पुनरपि माता जी तो आर्य समाज के अमिट रग मे रगी होने के कारण दिल्ली से चलते समय ही वे अपन साथ होलेड की समाजो व आर्य पुरूषो का पता टेलीफोन आदि नोट करके चली थीं। आपने होलण्ड पहुचते ही घूमने फिरने के कायक्रम छोड–छाड कर मुझे फोन किया और कहा कि मे यहा के आर्य समाजो आर्यों व महिला कार्यकर्ता–पडिताओ से मिलना व उन्हे देखना चाहती हू। मैने बातचीत करके उनसे मिलने व सायकाल आने क समय देकर तथा उनके निवास का पता लेकर फोन रख दिया। उसी समय मैने रोटरडम की एक पडिता चक्रकली सिह के यहा फोन किया तो वहा महिलाओ का समाज ध्याय हेतु) लगा हुआ था और उन्होने फौरन आने को कहा पर माता जी के निवास पर फोने न होने तथा वहा उपस्थित न होने से प्रथम दिवस ही वे उपर्युक्त महिला समाज मे न पहुच सकी। सायकाल मैने माताजी से भेट की दिल्ली मे जो यत्र–तत्र यह पर ठहरा था पर क्योंकि न परिचय नहीं हुआ माताजी के यज्ञमय जीवन का तात्कालिक सस्मरण सुनकर आनद लिया कि वे अपने साथ मे यज्ञ का सब सामान लेकर आई थीं व प्रतिदिन यज्ञ करना उनका नियम भी था पर इस यात्रा मे उन्हे बीच मे किसी होटल मे रूकना पडा था वहा जब सुबह माता जी के कमरे से यज्ञ धूम्र निकला तो होटल का सायरन बज उठा व फायर विग्रेड की गाडिया आ ई माताजी को प्रथम तो लगा कि ऐसा मैने कौन सा मत्र आज बोल दिया जिससे यह तहलका मच गया है ? परन्तु पुत्रो ने समझाया कि यह यूरोप हे इन्हे क्या पता आप यज्ञ कर रही हैं पुण्य कार्य कर रही है। इन्होने तो धुआ देख कर होटल मे आग लगने का भ्रम हुआ सो आग बुझाने वाली पुलिस ने होटल को घेर लिया है। खैर, माता जी का यह अनुभव रोटरडम के अपने निवास पर भी धोखा दे गया ऐसा कि प्रात जब माताजी ने यज्ञ आरम्भ किया तो पचधृताहुतिया पूर्ण होते ही वहा के चर्च का घटा बजने लगा माताजी फौरन ही अपना यज्ञ वहीं पूर्ण करने लगीं एव यज्ञकुण्ड को ढकने लगी तो पुत्रादियो ने हसते हुये माताजी को कहा "कि माताजी आप अपना यज्ञ आराम से करो यह तो चर्च का घण्टा बज रहा है और प्रतिदिन इसी समय बजता है। आथात यहा भी माताजी ने समझा कि होलेण्ड की फायरविग्रेड पुलिस का सायरन बज रहा है। इन सब घटनाओ के घटते रहने पर भी माताजी प्रतिदिन अपना यज्ञ सम्पन्न करती रहीं। यह घटना उनके सच्चे 'यज्ञमयजीवन की सफलता की द्योतक कही जा सकती हे। अस्तु

माता कृष्णा रहेजा जी ने अन्य देशो की भाग दौड नहीं की। उनका पूरा १५ दिन का वीजा था और एक सप्ताह तो हो ही रहा था एक सप्ताह बाकी था। मैने प्रयास करके माताजी के लिये तीन कार्यक्रमो मे सम्मिलित होने का अवसर बनाया जिनका क्रमश विवरण निम्न है।

हिन्दू कल्चरल सेन्टर (हिन्दू सास्कृतिक केन्द्र देनहाग)

यह सस्था होलण्ड के एक जागरूक आर्य विचारक एव लेखक श्री डा॰ नदकिशन मारहे द्वारा कई वर्ष पूर्व आरम्भ की थी। इससे पूर्व श्री मारहे ने आर्य समाजो का भी सगठन किया था। एक समारोह मे माता कृष्णा रहेजा को प॰ देवनारायण शुमधन जी अपनी गाडी मे लेकर पहुचे। यज्ञ के द्वारा उदघाटन कार्यक्रम आरम्भ

होलेण्ड मे २३ जून ९६ को यज्ञ वेदि पर ब्रह्मा के रूप में यज्ञ कराती हुयी माता कष्णा रहेजा जी।

हुआ यज्ञोपरान्त श्री मारहे ने सस्था के उद्देश्य व सचालित गतिविधियो की सूचना दत हुय समस्त अभ्यागत विद्वानो से सहयोग की आकाक्षा की। प्रथम माता कृष्णा रहेजा ने ही सगच्छध्व सवदध्व आदि वैदिक सगठन मन्त्रो का उपदेश करते हुये एकजुट होकर अपनी सस्कृति की सुरक्षा व वैदिक धर्म प्रचार करने का सदुपदेश किया।

इसके पश्चात प॰ बन्धू ने यज्ञ का महत्व बताते हुये श्री मारहे के कार्य की सराहना की व अपना पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। तत्पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा॰ महेन्द्र स्वरूप जी ने बच्चो मे स्वाभिमान भरने व अग्रेसिव (आक्रामक) बनने की आवश्यकता बताई।

श्री रामपाल शास्त्री ने सामाजिक आत्मिक उन्नति की चर्चा करते हुये कहा कि "हमारे विचार अलग हो सकते हैं पर हमारे मन अगल अलग न हो"। अन्त मे प॰ जीवन गणेश जी ने कृत मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सत्य अहित मन्त्र का सदेश देते हुये श्री मारहे जी से निवेदन किया कि किसी के सहयोग की अपेक्षा न करते हुये अकेले ही बढते चलो कर्म करोगे तो विजय अवश्य मिलेगी। अन्त मे सस्था के ही अधिकारी डा॰ दुर्गाजी ने मासिक (हिन्दूजगत) अथवा त्रैमासिक पत्रिका द्वारा भारत की प्राचीन सस्कृति सभ्यता को यूरोप की भाषाओ मे अनूदित करके सर्वत्र पहुचाया जायेगा। श्रीमान मारहे जी ने सबका धन्यवाद किया व आशीर्वाद ग्रहण कर प्रसाद वितरणा द्वारा सबका सम्मान किया यही यह सभा समाप्त हुई।

सत्यसनातन वैदिक प्रकाश (आर्य समाज अमस्टरडम)

इस सस्था के सचालक प॰ शुभधनी जी ने ज्योही माता कृष्णा रहेजा का आगमन सुना तो रेडियो द्वारा २० घण्टे के अन्दर ही अन्दर नगर भर श्रीमति रहेजा के ब्रह्मत्व मे यज्ञ–भजन व उपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया। इस दिन समाज का पूरा हाल महिलाओ से खचाखच भरा था। साथ ही अनेक प्रतिष्ठित लोगो के अतिरिक्त पिछले दिनो आर्य पडित बने दो गोरे (आर्य प्रचारक) डचमैन भी विशेष रूप.से आये थे। यह पहला अवसर था कि भारत से कोई आर्य महिला प्रचारिका आ कर समाज मे यज्ञ–व प्रवचन की। माता जी ने यज्ञ की क्रियाओ की सुन्दर २ व्याख्याये की व भजन सुनाये। इस अवसर पर प॰ साहिबदीन प॰ सत्यानन्द (डचमैन) प॰ धर्मेन्द्र शर्मा (डचमैन) डा॰ महेन्द्र स्वरूप (सभाप्रधान) श्रीमति रसियावन एव श्रीमति छोटे आदि ने अपने–२ विचार रखे। यज्ञ की यजमाना श्रीमति रूक्मिणी शुभधन थी। अन्त मे माता जी को जो दक्षिणा स्वरूप राशि भेट की गई उसे उन्होने सबके सामने अपने आर्य कन्या गुरूकुल न्यू राजेन्द्र नगर की बालिकाओ को दान कर दी जिससे वे स्वय वहा जाकर विभिन्न वस्तुओ के रूप मे वितरित करेगी। ओ३म सकीर्तन व शान्ति गान के उपरान्त कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यह राशि ९६३/३५ गिल्डर्स थी।

अनाथ बच्चो का सहायक समाज (आर्य समाज रोटरडम)

यह सस्था भारत से किसी भी आर्य विद्वान के आते ही उसे सम्मानित कर अविलम्ब प्रचार कराने मे सदेव तत्पर रहती है। इसके सचालक प॰ देवनारायण शुभधन जी विगत ४० वर्षो से इसका सफल सचालन करत ह माता कष्णा रहेजा जी की सूचना पाते ही उन्होने ने २० जून बुधवार का सत्सग–यज्ञ–भजन–कीतन के कार्यक्रम का आयेज्न किया रेडियो द्वारा नगर भर मे प्रचार किया गया यह सत्सग अतीव सफल रहा। हवन के उपरान्त प॰ बदल जी ने एक भजन तथा रामपाल शास्त्री ने समाज व आत्मिक उन्नति सम्बन्धी उपदेश किया। तदुपरान्त माता कृष्णा जी ने स्वरचित भजनो द्वारा तथा मानव जीवन उद्देश्य को लेकर भक्ति विषयक अत्युत्तम प्रेरक भजनोपदेश किया। इसमे नगर की अनेक महिलाओ ने भाग लिया अन्त मे यहा भी माताजी ने प्राप्त २२२ दक्षिणा की यह राशि कन्या की गरीब सस्थाओ को दान करने की घोषणा की। लोगो ने माताजी की भूरि–भूरि प्रशसा की तथा माताजी अपने साथ जो पुस्तके चार्ट तथा यज्ञ कुण्ड चन्दन की लकडी मालाये आदि सामान लाई थी उन्होने उनका सबको वितरण किया। यही आज माता जी का अन्तिम कार्यक्रम था। सब लोगो ने महसूस किया कि यदि अधिक समय माताजी होलेण्ड मे ठहरती तो यहा की महिलाओ मे और अधिक जागृति आती व आर्य समाज के प्रचार प्रसार मे चार चाद लगते। पुनरपि हम सब खुश है माताजी की यात्रा से। अब वे रविवार को भारत वापस जा रहीं है हम सब आर्य प्रतिनिधि सभा नीदरलेड के कार्यकर्त्तागण उनकी शुभयात्रा की कामना करते हैं एव परमात्मा से यही प्रार्थना करते है कि उनका यज्ञमय जीवन सदा इसी तरह सबको प्रेरणा करने वाला हो।। ओ३म शम।।

ओमप्रकाश सामवेदी
शिक्षाशास्त्री पौरोहित्याचार्य (भारत)
वाटरगैस्ट्राट ४५ ए
३०२५ एद रोटरडम हॉलैण्ड

आर्यवीर बन

वक्त की पुकार, नींद त्याग, आर्यवीर बन।।

नीद त्याग कर उठे अगर, तो देश उठ पडे,
गवाह है निशा, दकन निजाम राज्य मे गडे,
तू है छटा विहान की तू ही प्रभात की किरन।।

घटी न राजनीति की कुचाल है निशाचरी,
कर्णधार भ्रष्ट है, प्रमाण ज़ैन डायरी
सभी सफेद पोश किन्तु कालिमा लगे बदन।।

सुरेन्द्रनाथ राज्यपाल से अनेक, क्या कहे,
दीमके लगी, शेयर दलाल देश खा रहे
कहीं पे सेण्ट कीट्स काण्ड है कहीं महागबन।।

गरीब है गरीब तो धनी महाधनी यहा
नही उदार भाव प्रात जाति भेद है घृणा,
समाज मे भरी घुभन सभ जगह भरी दु खन।।

समाज मे निरीह नारिया बलात्कार है
कहीं तलाक है, कही दहेज की शिकार है,
सुलग रही कहीं चिता, दहक रहा कहीं कफन।।

युवा दिशा विहीन है, न भारतीय वेश है,
अभक्ष्य वस्तु, कैबरे, चढा नशा विशेष है,
न देशभक्ति शेष, न शेष शक्ति बाकपन।।

न वेद का प्रचुर प्रचार है, अनेक पथ है,
विवेक से परे कथा भरे अनेक ग्रथ है,
कहीं है भागवत कथा, कहीं पे रात्रि जागरण।।

कलह विरोध मे निमग्न आर्य समाज है,
इसे भी सूक्त सगठन रहा न रच याद है,
सो रहे समस्त लोग, रेत का बना भवन।।

वक्त की पुकार, नींद त्याग, आर्यवीर बन।।

वीरेन्द्र कुमार राजपूत, एम ए
८/१२१ बृजधाम, रे हरथला कालोनी, मुरादाबाद

जो मनुष्य अधर्म—अत्याचार करते हैं चाहे तत्काल उन्हें उसका फल न मिले परन्तु धीरे धीरे उनकी जड़े कट जाती हैं।

इस्लामीकरण के खिलाफ उठी औरत

सुमन गुप्ता

क्या आप सोच सकते हैं कि एक इस्लामी देश मे भी औरत अपनी आवाज उठा सकती है यह सच है यहा के महिलाओ के सगठनो की प्रमुख कार्यकर्ता रूबीना बताती है कि जिया उल हक के हुकूमत के साथ आये इस्लामीकरण और हदद अध्यादेश के कारण बलात्कार के मामले में चार मर्दो की गवाही आश्वयक मानी गयी जो व्यवहारिक है ही नहीं क्योकि ऐसे अपराध गवाह खडा करके नहीं किये जाते यदि औरत गवाही न दिला सके अपने पक्ष मे तो उसे जिनह (पर पुरूष सम्बध) के आरोप मे सजा दी जाती थी इससे औरतो ने बलात्कार और छेडछाड जैसे अपने ऊपर हुये अत्याचारो की रिपोर्ट करनी ही बद कर दी क्योकि अत्याचारो को सिद्ध करने की जिम्मेदारी उन पर होती थी और साक्ष्य के अभाव मे मामला सिद्ध न होने पर उन्हे ही कोडे लगाये जाते थे और उन्हीं के खिलाफ कार्रवाई भी होती थी।

प्रस्तुत है सुश्री रूबीना से क्षणिक मुलाकात पर एक दृष्टि .

औरत का दर्द किसी देश क्षेत्र का अग नहीं वह इस पूरी व्यवस्था मे छिपा है। हर देश की औरत लड रही है व्यवस्था सेसिमोन कहती है औरतें चूकि अन्य वर्गो की भाति सगठित नहीं होती इसलिये वे अपने अधिकारो के लिये लड नहीं पाती। सुश्री रूबीना से जब मुलाकात हुई वे दिल्ली के यगमैन क्रिश्चियन हाल मे आयोजित भारत–पाक मैत्री मिलन मे पाक प्रतिनिधिमडल की सदस्य थी वे यहा सेमिनार मे गैर सरकारी सगठनो की मैत्री में भूमिका मामले पर मौलाना वहीऊद्दीन के साथ सह अध्यक्ष थी देखने मे और वेषभूषा से सुश्री रूबीना आधुनिक भारतीय दिख रही थी जबकि मौलाना वहीउद्दीन अपनी परम्परागत वेशभूषा के कारण परम्परागत पुरातनपथी पाकिस्तानी प्रतिनिधि मडल मे आयी दो महिलायें श्रीमति निकहत (पेशावर) और रूबीना (लाहौर) कहीं से भी नहीं लगती थी कि वे पाकिस्तान की हैं दोनो साधारण सलवार दुपट्टे में थी और भारतीयो की कल्पना से दूर उनके सिर पर दुपट्टे नहीं थे और न ही उन्होने बुर्का पहन रखा था दोनो के बाल कटे हुए थे सुश्री निकहत पेशावर मे एक डिग्री कालेज की मनोविज्ञान की लेक्चरर है तो सुश्री रूबीना सामाजिक कार्यकर्ता।

क्या आप सोच सकते है कि एक इस्लामी दश म भी औरत अपनी आवाज उठा सकती है यह सच है यहा के महिलाओ के सगठन ने इसे उठाया है जिस मध्यवर्ग की महिलाओ से लकर निम्न वर्ग तक की मजदूर औरते भी जुडी है। सगठन की प्रमुख कार्यकर्ता रूबीना बताती है कि जिया उल हक के हुकूमत के साथ आये इस्लामीकरण और हद्द अध्यादेश के कारण बलात्कार के मामले मे चार मर्दों की गवाही आवश्यक मानी गयी जो व्यवहारिक है ही नहीं क्योकि ऐसे अपराध गवाह खड़ा करके नहीं किये जाते यदि औरत गवाही न दिला सके अपने पक्ष मे तो उसे जिनह (पर पुरूष सम्बध) के आरोप मे सजा दी जाती थी इससे औरतो ने बलात्कार और छेडछाड जैसे अपने ऊपर हुये अत्याचारो की रिपोर्ट करनी ही बद कर दी क्योकि अत्याचारो को सिद्ध करने की जिम्मेदारी उन पर होती थी और साक्ष्य के अभाव मे मामला सिद्ध न होने पर उन्हे ही कोडे लगाये जाते थे और उन्हीं के खिलाफ कार्रवाई भी होती थी। रूबीना बताती है कि आज भी ये कानून जिन्दा है लेकिन औरतो मे इसके खिलाफ जागरूकता आयी है। यद्यपि हमारे देश की प्रधानमत्री बेनजीर स्वय महिला है किन्तु औरत की दशा मे कोई बुनियादी अन्तर नहीं आया है और न ही औरतो के खिलाफ बने कानून ही रद्द हुये है। बेनजीर की सरकार मे कुछ छोटी–मोटी सहूलियते मिली हैं जैसे औरतो के लिये महिला थाने और अलग से बैंक जैसी व्यवस्थाये है किन्तु ये थाने व्यवहारिक तौर पर सुविधाजनक नहीं है क्योकि गाव की कोई अनपढ गरीब महिला शहर मे इतनी दूर कैसे आकर अपना दुख दद बता सकती है।

रूबीना बताती है कि हम लाग राजनीति से सीधे जुडे नहीं है लेकिन महिलाओ के हितो के लिये काम करने वालो मानवाधिकार के मुद्दे के ऊपर काम करने वालो का समर्थन करते हैं। वे कहती हैं कि हम अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष से कर्ज लेने ग्लोबलाइजेशन अधाधुध सैन्यीकरण और निजीकरण के खिलाफ है। हम चाहते है कि पाकिस्तान की पार्लियामेट मे पहले जो २० % सीटे आरक्षित थी महिलाओ के लिये पहले उन्हे बहाल किया जाये जिससे अधिक से अधिक महिलाये चुनकर जाये और अपने हक की लडाई लड सक और काले कानूने के रद्द करवा सके इसके लिये हम लोगो का नारा है कि यदि महिलाओ को प्रतिनिधत्व नहीं तो टैक्स नहीं।

रूबीना जो स्वय महिला अधिकारो के लिये कार्यरत है कहती है कि हम सिर्फ महिलाओ के लिये ही नही वरन हर तरह के भेदभाव के खिलाफ है जहा तक पर्दाप्रथा का सवाल है वह न उच्च वर्ग मे है और न ही निम्न वर्ग मे। यह एक मानसिकता है जिससे निम्न मध्यम और नव धनाडय या ऐसा खाता–पीता आदमी क्लर्क सचिव और नया शहरी पैसा होने पर बीवी को सजा सवार कर घर के अन्दर परदे मे रखता है क्योकि वह समझता है कि औरत का पर्दा उसके स्टेटस की निशानी है गरीब अपनी मजबूरियो के कारण जिसे छिपा नहीं सकता।

यह पूछने पर कि कट्टरपथियो का आपके आन्दोलन के प्रति क्या दृष्टिकोण है वे कहती है कि वे इसे इस्लाम के नाम पर बेहूदगी की सज्ञा देते है और ऐसे कार्यो मे लगी महिलाओ को भ्रष्ट बताते हैं पश्चिम की औरते बताते हैं। यद्यपि हमारे सवालो का जवाब उनके पास नहीं होता है। इन सबके बावजूद औरत न ही इस्लामीकरण के खिलाफ सबसे ज्यादा आवाज बुलन्द की है। शुरूआती दिन मे इन कार्यो मे लगी उन औरतो को उनकी नौकरी से निकाल दिया गया उनके आदमियो की नौकरी छीन ली गयी उन्हे तरह तरह से मानसिक शारीरिक और आर्थिक रूप से प्रताडित किया गया किन्तु हम लोगो की पकड कुछ ज्यादा थी इसलिये वे चाहकर भी हमारा कुछ बिगाड नही सके।

१९७१ मे दो सौ ओरते क साथ सैनिका ने बलात्कार किया। हम लागो न दस मामले का भी उठाया 'ब्लासुफमी मामले को भी हम उचित नहीं समझते इसलिए इसके खिलाफ भी हमारे सगठन ने आवाज उठायी।

यह पूछने पर कि आप अपने आन्दोलनो मे कहा तक सफल हुई है वे कहती है कि पहले कराची मे इस सगठन की स्थापना हुई थी जिसमे दबाव गुट बना था इसके बाद कई अन्य प्रन्तो मे इसका विस्तार हुआ और आज इस आन्दोलन से न सिर्फ औरते जुडी हैं वरन अन्य क्षेत्रे मे सघर्षरत लोग भी आगे आये हैं और हमारी जग जारी है व्यवस्था के खिलाफ।

(नित्य नूतन १ जुलाई १९९६ से साभार)

हार्ट फेल्यॉर और हार्ट अटैक कैसे टाले ?

डा सत्यदेव आर्य

(भू पू निदेशक चिकित्सा एव स्वास्थ्य सेवाये राजस्थान)

हृदय जब काम करते–करते थक जाता है उसकी मासपेशिया शिथिल पड जाती है और धडकने मे अपेक्षा से अधिक व्यवधान आ जाता है या धडकना बन्द कर दता है तो हार्ट फेल्यार की स्थिति बनती है और जब इसकी मासपेशियो मे अनुपात से अधिक उक्त सञ्चारण रूक जाता है तो हार्ट अटैक की स्थिति बनती है। हार्ट अटैक से पूर्व एक स्थिति ऐसी बनती है जिसमे इनके कारोनरी धमनियो यत्किञ्चित कोलेस्टराल के जमे चकत्ते क्त पवाह म रुकावट पैदा करते हैं जिससे र्मन न नी तथा थोडे से श्रम स सीने म ाता हे जो बाये हाथ मे भी उतर धिकाश आशिक ही होता है अ न पर ठीक हो जाता है। उस ि क ए ाइना का दद कहते हैं। यह हार्ट अटेक होने की आशका को व्यक्त करता है। इसके बार बार उठने और उपयुक्त उपचार न कराने पर हार्ट अटैक की स्थिति उभर ही आती है।

हृदय हमारे शरीर का सबसे अधिक गतिशील एव क्रियाशील अवयय है। जन्म से मृत्यु पयन्त यह निरन्तर धडकता ही रहता है। एक पल भी विश्राम नहीं करता। प्रत्येक मिनट मे यह ७२ बार धडकता है और लगभग ५ लीटर रक्त पम्प करता ह इस दर स १ दिन म यह एक लाख बार क ष म ३ क ड लाख बार आर १०० वष क आयु तक ३ अरब ८० करोड बार धडक चुका हाता हे। इतन अधिक क्रियाशील अवयय पर यदि हम अपनी ही ना समझी से अतिरिक्त काय भार डाले या इसके यथोचित रक्त सम्भररय से होने वाले पोषण मे व्यवधान डाले ता निश्चय है कि यह पूर्ण आयु से पूर्व ही थक कर धडकना बन्द कर देता है।

यह अवाञ्छनीय स्थिति हम पैदा करते हैं अपनी स्पर्धापूर्ण दिनचर्या से भाग दौड की जिन्दगी से अत्यधिक शारीरिक श्रम से यथा खेलकूद की आवश्यकता से अधिक स्पर्धाओ से शराब व तम्बाखू के सेवन से जो इसकी गति को १० गुणा बढाये रखते हैं तनावपूर्ण चिन्तायुक्त जीवन से काम क्रोध मद मोह लोभ ईर्ष्या द्वेष असूयादि की कुवृत्तियो से और इन्द्रिय निग्रह के अभाव से।

अतिरिक्त कार्यभार डालने के अनन्तर हम अपनी अव्यवस्थित एव अनियमित खान–पान की आदत से इस पर इसके पोषण में व्यवधान डालने का भी भार डालते हैं। यदि हम अपने आहार मे आवश्यकता से अधिक सतृप्त वसा जिसमे कालेस्टराल की मात्रा अधिक होती है काम मे लाते हे आर हजम करने के लिए पर्याप्त परिश्रम नही करत केवल बैठक की दिनचर्या ही बनाये रखते है ता यह कालेस्टराल रक्त धमनियो मे जम कर चकत्त पेदा कर दत जिससे रक्त सचार म व्यवधान पैदा हाने लगता हैं। यह व्यवधान विशष का हृदय की छाटी कारोनरी धमनियो आर मस्तिष्क की छोटी धमनियो मे रूकावट पैदा करत हे जिनस कमश हाट अटैक ओर पक्षाघात हा क न भर आती हैं हृदय तो रक्तहीनता की स्थिति में तडप उठता है और हमे भी तडपा देता है। उपयुक्त तत्कालिक उपचार के अभाव मे मृत्यु हो जाती है।

सतृप्त वसा अधिकाश पशु श्रेणी से प्राप्त खाद्य पदार्थों मे मिलती है जैसे मास अभ्रक प्रकार की हिल्सादि मछली अण्डा–विशेष कर इसकी जर्दी तथा घी मक्खन मलाई पनीर आदि मे और नारियल के तेल मे भी। सामान्यतया रक्त कोलेस्टराल की मात्रा १३०–२५० मिली ग्राम /मिली लिटर रहनी चाहिए। यदि २५० मिली ग्राम/मिली लीटर से अधिक रहती है तो मासाहारियो को शाकाहारी बन जाना चाहिए और शाकाहारियो को घी मक्खन मलाई आदि की जगह शुद्ध वनस्पति तेल ही काम में लाना चाहिये जैसे तिल्ली सरसो मुगफली करडी सोया आदि का। पनीर आइसक्रीम फ्रूट क्रीम आदि भी काम मे नहीं लाना ही हितकर है। मलाई निकला दूध और उसी का बना दही मट्ठा आदि भी काम मे लाना हितकर है।

एक साधारण कामकाज करने वाले व्यक्ति के लिए जिसकी आयु २५ वर्ष है और वजन पुरूष व महिला मे क्रमश ५५ और ४५ कि॰ ग्रा है दैनिक २४०० और १६०० कैलोरीज ऊर्जा की आवश्कता होती है। यह ऊर्जा हमे खाद्य पदार्थों स बन सन्तुलित आहार म मिल जाता ह। इसका २५ व २० ० भाग उसा से मिलना चाहिए जो ६५ व ५५ ग्राम होता है। इसका अधिकाश भाग हमे खाद्य पादार्थों से मिल ही जाता है। केवल क्रमश १५ व १० % भाग अतिरिक्त आहारीय वसा से प्राप्त होता है। उच्च कोलेस्टराल वाले व्यक्तियों को यह भाग केवल ऊपर दर्शाए वनस्पति तेलो से ही प्राप्त करना चाहिए।

दैनिक सन्तुलित आहार सन्दर्भित व्यक्तियो के लिए मात्रा ग्राम मे

खाद्य पदार्थ	पुरूष	महिला
अनाज	४६०	४१०
दाले	४०	४०
सब्जिया हरे पत्ते वाली	५०	५०
(जडे वाली)	५०	५०
अन्य	६०	४०
मौसमी फल	३०	३०
दूध	१५०	१००
		गर्भवती व धात्री माता को १०० ग्राम अतिरिक्त
घी तेल आदि	४०	२०
शक्कर गुड आदि	३०	२०
मूगफली मेवे आदि	१०से२०	१० से २०

उच्च कोलेस्टराल व मोटापे के व्यक्तियो को अत्यधिक मिष्ठान भी काम मे नहीं लाना चाहिए। पर ट्राईग्लिसराइड्स की मात्रा बढाता है जो यकृत मे कोलेस्टरॉल मे परिवर्तित हो जाता है।

हमारे सन्तुलित आहार में चापड सहित मोटा आटा छिलके सहित मिश्रित दाले अकुर निकले अनाज (गेहू, मौठ चना चवला आदि) कच्ची खाने योग्य सब्जियो यथा मूली गाजर टमाटर ककडी खीरा प्याज चुकन्दर करमकल्ला सलाद आदि कच्ची ही काम मे लानी चाहिए। मौसमी फलों मे विशेषतया ऐसे फलो का प्रयोग करना चाहिए जिसमे पोटाशियम की मात्रा अधिक हो जैसे मौसमी किन्तु केला सतरा अनार पपीता सेब अगूर अमरूद बेर खुमानी लौकाट जामुन आदि पोटाशियम हृदय की मास पेशियो को सक्षम बनाए रखता है।

साधारण काम काज करने वाले व्यक्तियों को जो अधिकाश बैठक का कार्य ही करते हैं प्रतिदिन लगभग ४५ मिनट का प्रात भ्रमण अवश्य करना चाहिए जिससे हृदय की धमनियो मे लोचकता बनी रहे नई कोशिकाए पनपती रहे और रक्त सञ्चरण ठीक बना रहे तथा उच्च रक्त दाब भी नियन्त्रित बना रहे। मोटापा मधुमेह व अस्थि सन्धि–शोथ तथा दमा से प्रसित लोगों को भी प्रात भ्रमण करना अत्यावश्यक है।

प्रतिदिन प्रात १०–१२ प्राणायाम कर लेना भी अति लाभदायक सिद्ध होता है। इससे हृदय को अधिक आक्सीजन मिल पाता है जिससे इसकी मासपेशियो सक्षम बनी रहती हैं कॉरोनरी केपिलरीज भी ठीक से पनपती रहती है फेफडे स्वस्थ रहते हैं और आन्तरिक ग्रन्थिया भी सक्षम रहती हैं।

इस प्रकार हम अपनी व्यवस्थित दिनचया आर यथोचित खानपान स हाट फल्यार आर हार्टअटैक का टाल रख सकते हैं।

एस बी १६१ बापू नगर जयपुर –३०२०१५

सूचना

गुरूकुल प्रभात आश्रम-भोला झाल मेरठ मे ३० जून से प्रवेश परीक्षा बन्द हो गयी है अत अब इस वर्ष परीक्षा दिलाने वालो से अनुरोध है कि अपना समय यहा आकर व्यर्थ न करे और आगामी वर्ष की प्रतीक्षा करे। आश्रम की प्रवेश परीक्षाये प्रति वर्ष १५ जून से ३० जून तक ही होती हैं।

आचार्य
गुरूकुल प्रभात आश्रम

एम॰ ए॰ (वेद) में पांच सौ रूपए छात्रवृत्ति

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति डा. धर्मपाल ने वैदिक साहित्य के अध्ययन को प्रोत्साहन देने के लिए एम. ए. (वेद) प्रथम वर्ष मे प्रवेशार्थियो को सत्र १६६६–६७ मे पाच सौ रूपए प्रतिमाह छात्रवृत्ति देने की व्यवस्था की है।

विश्वविद्यालय के आचार्य एव उप–कुलपति प्रो. वेदप्रकाश शास्त्री ने एक विज्ञप्ति के द्वारा आज यह जानकारी दी कि जिन प्रवेशार्थिया ने स्नातक स्तर पर (१०+२+३) प्रथम श्रेणी प्राप्त की हो तथा जिनकी आयु प्रवेश के समय २५ वर्ष से कम हो उन्हे एम ए. (वेद) मे प्रवेश लेने पर सत्र १९६६–६७ मे पाच सौ रूपए प्रतिमाह छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

दूरभाष ३२७४७७१ ३२६०९८५ आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये वार्षिक शुल्क ५० रुपए एक प्रति १ रुपया

वर्ष ३५ अक २४ दयानन्दाब्द १७२ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ श्रवण शु.–३ २८ जुलाई १९९६

पुनः विश्वास घात का षडयंत्र

प. वन्देमातरम्

नई दिल्ली—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प वन्देमातरम रामचन्द्र राव द्वारा देश के सभी ससद सदस्यो से आग्रह किया है कि दलित ईसाईयो को आरक्षण राष्ट्रीय सीमाओ के तीसरे विभाजन की नीव है। जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण १६४७ और १६०५ मे सस्थापित मुस्लिम लीग को सरकारी सेवाओ ससदीय निर्वाचनो तथा अन्य विशिष्ट सेवाओ में आरक्षण का टुकडा डाल कर विभाजन की नीव जिसका भवन १६४७ मे पाकिस्तान के नाम से निर्मित किया गया। वही षडयत्र स्वतत्र भारत की ग्यारहवी सरकार दलित ईसाई आरक्षण के नाम से करने जा रही है। आपको चाहिये कि सरकार द्वारा किये जाने वाले इस राष्ट्रघाती बिल को तर्कपूर्ण ढग से ससद और राष्ट्रपति को बाध्य करे कि वह पास न हो सके।

श्री राव द्वारा सम्बोधित पत्र मे देश के सभी सदस्यो लोक सभा राज्यसभा को वताया गया है कि आरक्षण खासकर सम्प्रदाय आधार पर असवेधानिक है।

सविधान के विरुद्ध अथवा राष्ट्रीय हितो के कुठारा घाती प्रस्ताव को पूर्णत अस्वीकार किया जाना चाहिए। किन्तु केन्द्र सरकार भारतीय एकता स्थापित के लिए सम्प्रदाय विभाजन करना चाहती है। आपका कर्त्तव्य बनता है कि दलगत भावना से ऊपर उठकर सरकार के इस काले प्रस्ताव का विरोध हो।

श्री राव ने कहा कि दलित इसाईयो को आरक्षण देने से एकता नही सीमाआ का विभाजन होगा जो भयानकतम विकृत चेहरे को पश्चिमी के आवरण मे लपेट कर ससद मे लाया जा रहा है। यह भारतीय अखण्डता के साथ विश्वासघात है इससे भूखे शेर की तरह भारतीय समाज इस्लाम और ईसाईयत स्वी कार करने लगेगा भार – तीयता का नाश सृष्टि का महाविनाश सिद्ध होगा विदेशी साम्प्र दायिक सा– म्राज्य वादियो द्वारा भारत को विभिन्न छोटे छोटे खण्डो मे विभाजित करने के लिए आन्तरिक रूप से लगे है। आप सभी को राष्ट्रीय हितो की कसौटी पर विश्वासघात्त के प्रत्येक षडयत्र का कडा विरोध किया जाना चाहिए।

प वन्देमातरम जी ने इसी पत्र मे आगे कहा है कि राष्ट्रभक्त दलितो और पिछडो के २७ प्रतिशत उनके अधिकार से कटौती होगी। आखिर जिस आधार पर सरकार ने दलितो को आरक्षण समाज मे सम्मान जनक स्थान दिलाने के उदेश्य से किया था। यह वर्ग समाज मे क्या आर्थिक सामाजिक शैक्षिक रूप र पूण हागया क्या सडको प दिन र त घूमते नौकरी की तलाश म भारतीय समाज के युवा वर्ग सम्पन्न हुआ नही पहले उसे समाज स आरक्षण क नाम पर अस्पृश्यता का प्रमाण पत्र देदिया। अब उसे बदत्तर ओर धृणित जीवन यापन करने क लिए सरकार उसक २७ प्रतिशत आरक्षण सुविधाओ मे से १५ प्रनिशत कटौती कर दलित इसाईया को देने की घोषणा ता काग्रेस सरकार कर चुकी थी जिसका क्रियान्वित सयुक्त मोर्चा सकरार करने जा रही है। इस दलित ओर पिछडो के साथ होने वाले घोर भयानक विश्वासघात का विरोध किया जाना चाहिए।

उन्होने आगे रहा कि एक ओर अल्पसख्यक और दूसरी ओर बहुसख्यक समाज के दलितोद्धार के लिए बनाई गई आरक्षण व्यवस्था का भी लाभ उठायेगे। विचार करना होगा कि कोई एक ही व्यक्ति एक ही समय पर दो धाराओ मे कैसे स्नान कर सकता है किन्तु सरकार ऐसा करने का मन बना चुकी है।

श्री राव द्वारा प्रेषित पत्र मे देश के तमाम राष्ट्रवादी ससद सदस्यो और समाजिक सस्थाओ विद्यार्थीयो का आव्हान किया है कि भारतीय एकता और अखण्डता के साथ दिये जाने वाले विश्वासघात का सार्वजनिक रूप स विरोध करना चाहिए।

सावदशिक सभा के प्रधान प वन्देमातरम ने कहा कि दलित ईसाइ बनाये गये लोगा को सविधान निर्माण के समय भी आरक्षण का मामला आया था लेकिन सरदार पटेल डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी डा भीम राव अम्बेडकर ने स्पष्ट शब्दो मे एक स्वर से कहा था कि भारतीयता का त्याग करने वाला पुत्र भी भारतीय नागरिक सुविधाओ का अधिकारी नहीं माना जाना चाहिए। राष्ट्रभक्तो के सतर्क ढग से विरोध को समझते हुए इस प्रस्ताव को खारिज किया गया।

उन्होने कहा कि १९६३ मे भी लीवर समिति न इसी विषय पर अपनी सस्तुति रखते हुए कहा है कि हिन्दुत्व की पावन धारा से अलग हुए ईसाई अथवा मुस्लिमो को आरक्षण देना असवैधानिक है क्योकि इससे कई घुमावो मे भयानक स्थिति उत्पन्न होगी। सविधान सभा मे लम्बी वहस के बाद यह निर्णय हुआ कि आरक्षण कि अस्थाई व्यवस्था केवल हिन्दु समाज के पिछडे और अछूत रहे जान वाले वर्ग के लिए ही है जिन्हे वर्षों के आधार पर सदियो से अमानवीय अत्याचार का शिकार बनाया गया है।

दलित ईसाईयो को आरक्षण का प्रस्ताव देश के महान स्वराज्य सेनानियो का भी घोर अपमान है। इस अपमान को राष्ट्रभक्त जनता बर्दाश्त नही कर सकेगी। इसी लिए आप सभी को चाहिए कि सरकार द्वारा लगाये जाने वाले इस प्रस्ताव का बडा विरोध किया जाये।

लोक सभा सदस्यों से सम्पर्क अभियान

नई दिल्ली २१ जोलाइ सावदेशिक आयप्रतिनिधि सभा क प्रधान प० वन्दमातरम रामचन्द्र राव जी क द्वारा जारी कि गइ अपील का सभा क उपप्रधान सूर्यदव जी क द्वारा जारी एक पत्र क साथ लोकसभा के समस्त ५४३ नव–निर्वाचित ससदो तक पहुचाने का अभियान एक दिन मे पूरा कर लिया गया। इसके कार्य को न्याय सभा के सदस्य श्री विमल वधावन सहित पाच सदस्यो की एक टीम ने सम्पन्न किया। लगभग ४०० सासद को व्यक्तिगत सम्पर्क के द्वारा पत्र वितरित किय गये तथा सक्षिप्त विचार विमश भी हुआ। शेष पत्रो को डाक द्वारा भेजा गया।

सम्पादक- डा.सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादक के नाम पाठकों के पत्र

चरित्र से राष्ट्र का निर्माण सम्भव है।

वर्तमान समय मे आज इस विश्व पुरातन आयावर्त देश मे आर्थिक सामाजिक एव राजनैतिक आदि अनेक प्रकार के सकट हो सकते है। किन्तु हमारी दृष्टि मे सबसे बडा सकट है चारित्रिक पतन का जब तक यह सकट दूर नहीं हो होगा तब तक आथिक सामाजिक एव राजनैतिक आदि सकट दूर नहीं हो सकते। हमारे इस आर्यावर्त देश की सबसे बडी पूजी है उसका यह चारित्रिक बल। तभी तो भगवान मनु ने हिमालय की चोटी पर खडे होकर घोषणा की थी कि एतद्देश प्रसुतस्य सकाशाद अग्रजन्मन। स्व स्व चरित्र शीक्षेरन पृथिकत सर्वमानव।।

समस्त भूमण्डल के मानवो ने इस आयावर्त देश मे उत्पन्न हुये ब्राह्मणो के चरणो मे बैठकर अपन-अपने चरित्र की शिक्षा ली। चरित्र के कारण ही तो यह हमारा देश विश्व के इतिहास मे सर्वोपरि रहा है

दुनिया की आदि पुस्तक वेद है वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है। अत परमेश्वर ने अपने प्यारे पुत्र-पुत्रियो को कितना सुन्दर उपदेश दिया है-

परिमाग्ने दुश्चरिता द्बाधस्व मा सुचरिते भज।

उदायुषा स्वायुषो दस्या ममृता अनु।। अर्थात हे प्रकाश स्वरूप परमेश्वर आप कृपा करके मुझे दुराचार से हटा कर सदाचार की ओर प्रेरित करो। चरित्र शब्द एक व्यापक अर्थ रखता है।

यदि ससार का मानव दुराचार को छोडकर सदाचार को अपने जीवन मे अपनाले तो ससार स्वर्ग बन जाये कोई किसी प्रकार के दुखो से पीडित ना रहे। परन्तु हम देखते है सुनते है कि कोई बिरला ही व्यक्ति होता है जो अपने चारित्रिक बल से देश जाति समाज व राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर ले जाता है। चरित्रवान व्यक्ति जिस भी क्षेत्र मे कार्य करता है उसकी सुगन्ध सम्पूर्ण क्षेत्र मे फैलकर मार्ग दर्शन करती है। महापुरूषो के इतिहास को आद्योपान्त पढिये पता चलेगा कि उनका चरित्र कितना महान था इसलिये तो वह विश्व के इतिहास मे अमर हो गये परन्तु आज हम देखते हैं कि चाहे वह धार्मिक क्षेत्र है या सामाजिक अथवा राजनैतिक क्षेत्र है हर क्षेत्र मे चरित्रहीनता भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी ब्लैकमार्किट चाचावाद प्रदेशजाति समाज अथवा मानवता का उत्थान सम्भव है जिस देश व जाति का चरित्र ऊचा होता है वह देश व जाति सदैव ही उन्नति शील होती है किन्तु जिस देश व जाति का चरित्र ऊचा नहीं होता वह देश व जाति पराधीनता को प्राप्त होकर नष्ट-भ्रष्ट हो जाती है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिन देश व जातियो मे चरित्र निर्माण की भावनाये है वह देश व जातिया आज भी जीवित हैं ?

आज मेरे देश का युवा वर्ग अनेक प्रकार की बुराईयो मे ग्रसित है फैशन परस्ती जीवन का आधार बन गइ है चलचित्र (सिनेमा) टी वी उपन्यास अश्लील साहित्य का प्रचार जोरो पर है। सहशिक्षा ने तो और भी बुराईयो को जन्म दिया है अण्डा मास शराब अफीम वीडी सिगरेट तम्बाकू आदि का प्रयोग युवको मे मौज मेला मनाना ही जीवन का लक्ष्य बन गया है। राष्ट्र भक्ति नहीं देश किधर जा रहा है यह किसी को पता नहीं युवको मे नैतिकता का अत्यन्ताभाव है समझ मे नहीं आता कि राष्ट्र का क्या बनेगा ?

इसीलिये यह अत्यावश्यक है कि युवकों के चरित्र-निर्माण के लिये कोई ठोस पग उठाया जाये ताकि राष्ट्र की युवा पीढ़ी को राष्ट्र-निर्माण मे सहायक बन सके अन्यथा देश बचेगा नही चरित्र-निर्माण ही राष्ट्र की धरोहर है चरित्र ही देश जाति समाज सस्कृति व सनातन परम्पराओ को जीवित रख सकता है। क्योंकि चरित्रवान व्यक्ति ही निर्भय होकर राष्ट्र का नेतृत्व करता है। किसी हिन्दी के कवि ने ठीक ही कहा है कि-

निर्धन धनवान से डरता है।
निर्बल बलवान से डरता है।
मुरख विद्वान से डरता है।
किन्तु ये तीनों चरित्रवान से डरते है।

फिर आगे कहा है

गिरि से गिरकर जो मरे मरे एक ही बार।
चरित्र गिरे जो मरे बिगडे जन्म हजार।।

आइये हम चरित्रवान सदाचारी इमानदार बने तभी सुख शान्ति व आनन्द की प्राप्ति होगी।

(जगदीश चन्द्र वसु") ९५

देश की गिरती दशा और शराब

जिन लोगो को समाज व्यवस्था के लिए नियुक्त किया गया है उनके पास शराब बन्दी के विरूद्ध तर्को का अभाव नही। प्रथम शराव बिक्री से होने वाले भरपूर राजस्व से है। तर्क दिया जा रहा है कि शराव बन्दी लागू करेगे तो फिर तैयार रहना होगा हजारो करोड रूपये की आय की हानि के लिए और जब इतना धन खजाने मे नहीं जायेगा तो फिर कैसे होगा विकास ? कैसे युवक युवतियो और बच्चो को शिक्षा मिल सकेगी ? कैसे मार्ग हीन ग्रामो को मुख्य मार्गो से जोडा जायेगा जिसके कारण राशन की एक छोटी सी दुकान भी किसी गाव में ढग से स्थापित नही हो सकी है।

आन्ध्र प्रदेश सरकार को राज्य मे शराव बन्दी अधिनियम लागू करने से दो हजार करोड की हानि हुई हरियाणा राज्य सरकार द्वारा इसी अधिनियम के तहत नौ सौ करोड की सम्भावित हानि की पूर्ति के लिए राज्य सरकार ने आते ही करो की चाबुक उठाने के लिए विवश होना पडा। कारण स्पष्ट है कि वगैर किसी सैद्धान्तिक व्यवस्था अथवा चिन्तन के आथिक तर्क से प्रभावित हो जाता है कि कुछ भी करो शराब कि बिक्री तो होगी उसे कानून के चाबुक से प्रतिबन्धित कर दी जायेगी तो भी चोरी से बिक्री होगी। अमीर को भला क्या कमी है ? वह चोरी से शराव को ब्लैक से भी खरीदने मे अभिरूचि रखता है ? इसकी मार तो गरीब पर पडेगी जो ब्लैक की शराव नही पी सकेगा तो कच्ची का प्रयोग करेगा जहरीली टिचरी पियेगा और कभी आखो की रोशनी गवाएगा तो कभी प्राण गवा बैठेगा। अर्थात जिस गरीब को गरीबी से मुक्त करने की प्रतिज्ञा पूर्ण करने के लिए उसके प्राणो को लेने की भी व्यवस्था है। जब यह तर्क भी सविधान की धारा को कडा बनाने की वेदी पर बलि हो जाता है तो अपहरण जैसी कुप्रवृत्तियो का जन्म होता है। इन कुप्रवृत्तियो को समाप्त करने के लिऐ कानून नहीं बल्कि लोगो मे जागरूकता पैदा करनी चाहिए।

हम सहमत है कि मानवोदय से मनुष्य जिस दुष्प्रवृत्तियो के साथ जी रहा है उनके विरूद्ध माहौल बनाया जाना चाहिए। समाज मे नारी का सम्मान हो। पर क्या जब तक माहौल न बने तक तक नारी के साथ होने वाले अत्याचार के विरूद्ध कानून बनाया जाना चाहिए ?

माहौल ऐसा तैयार हो कि मनुष्य हृदय मे किसी भी प्रकार का कोई कुविचार न रहे। पर क्या वैसा होने तक चोरो और डकैतो को कानून की गिरफ्त मे लेना ही नही चाहिए ? माहौल ऐसा बनेकि जुआ शराव वैश्यावृत्ति अपहरण लूट आतक जैसे शब्द सुनते ही वह स्थान त्याग दे। अगर ऐसी व्यवस्था तत्काल सम्भव नही तव तक क्या कैसीनो के स्टालो के सम्पूर्ण राष्ट्र मे उदघाटन किये जाने चाहिए। ऐसा वातावरण बने कि लोग शराव जैसे शब्द से स्वय ही घृणा करने लगे। समाज के व्यवस्थापको को चाहिए कि वह आन्ध्र से एन. टी. रामाराव और हरियाणा के वसीलाल द्वारा शराव बन्दी के नाम पर चुनाव मे विजय श्री का वरण किया है और वृद्ध जनो ने इसी नारे के आकर्षण से वृद्ध हरियाणा के शेर को उसकी माद से निकालकर हरियाणा के राज्यसिहासन पर आरूढ कर दिया है ? निश्चित ही कुछ तो अवश्य है कि दूरस्थ के एक जन जाति गाव को महिलाए अचानक फैसला कर लेती है कि वे अपने शरावी पतियो को घर मे प्रवेश नही देगी ? आखिर क्यो। सहारनपुर और गाजियाबाद अथवा हरियाणा बाहरी दिल्ली की महिलाऐ मैदान मे उतर आती है कि वे अपने क्षेत्र को सूखी मिट्टी मे परिवर्तित कर ही लेगी ?

शराव बिक्री के समर्थको ने सरकारी राजस्व की हानि तो देख ली पर उन्होने यह अन्दाज नही लगाया कि शराव के कारण अनगिनत परिवारो को कुबेर से कगाल बनाया है। शायद उन्होने शरावी पतियो के हाथो प्रत्येक रात्रि को बुरी तरह पिटती पत्नियो और मा बहनों की दर्दनाक चीत्कार को नही सुना अथवा देखा है। शराव से होने वाले राजस्व लाभ से होने वाले विकास मे स्वतत्रता के पाचवे दशक तक शिक्षा मन्दिरो की प्रति एक ग्राम मे स्थापना क्यो नहीं कर सके ? पर शराब की बिक्री से होने वाले आर्थिक लाभ को प्राप्त करने के लिए। प्रत्येक गाव मे ठेका शराब के वर्वादी के लिऐ खोल दिये हैं। बच्चो के पोषण की व्यवस्था के स्थान पर उनके सरक्षको की जान लेने की व्यवस्था रखी है।

शराव बन्दी तो होनी ही चाहिए क्यो कि यह एक अविजय युद्ध अव तक चला आ रहा है वह जारी रहेगा ही। दावा यह नहीं कि बुराई को पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया जायेगा या इस शब्द को ही ससार के शब्दकोष से हटा दिया जायेगा। कहने का मुख्य भाव यह है कि शराव बन्दी के लिए एक ऐसा कानून ओर सामाजिक वातावरण बनना ही है कि न तो शराब दस कदम कि दूरी पर पानी की तरह मिले या ऐसी मिले कि वह नारी और बच्चो के भविष्य की बर्वादी सिद्ध हो।

भारतीयता हीन, समाज में एकता स्थापित नहीं कर सकते ?

विश्व आज एक गम्भीर त्रासदी से जूझ रहा है। समूची मनुष्यता नैतिक चारित्रक पतन की शिकार है। प्रत्येक मनुष्य निहित स्वार्थ भाव में लिप्त है। प्रत्येक व्यक्ति कि इच्छा केवल दिन भर कि वह प्रगति कर और समृद्धि के शिखर पर ध्रुव तारे की तरह चमके जिसे सम्पूर्ण भौतिक कृत्रिम सुविधाओ से पूर्ण जीवन यापन करे। इसी लालसा ने मनुष्य को सरक्षक के स्थान पर सहारक बना दिया। ससार की मानव रचना के समय परमात्मा ने मनुष्य को बुद्धि विवेक और ज्ञान का अथाह सागर दिया जिस को ऋषि मुनियों महर्षियो ने अपनी साधना को चार खण्ड विश्व की उत्पत्ति से अब तक करीब दो अरब वर्षों से अधिक मनुष्य का मार्ग दर्शन करते आ रहे है जिनमे महर्षि मनु का प्रमुख स्थान है। इस बात से कोई भी बुद्धिशली प्राणी इन्कार नही कर सकता और नहीं वह यह रहता कि मनुस्मृति मे वर्णित श्लोको ने मनुष्य वर्ग के किसी विशेष व्यक्ति के साथ अन्याय किया है। वर्तमान मे इसी प्रकार की भ्रान्तिया उत्पन्न हो रही है। इन भ्रान्तिया का समाधान तत्काल नहीं किया गया तो मनुष्यत निहित स्वार्थो की धारा मे विलीन होकर नष्ट हो जायेगी मनुष्यता वादियो को चाहिए कि वह इस प्रश्न पर तत्काल विचार करे।

मनुस्मृति ने मनुष्य को सुव्यवस्थित जीवन यापन करने के लिए उसके शरीर को चार खण्डो मे विभाजित किया है। सिर अर्थात मुख से बुद्धिमान (ब्राह्मण) वाहु से बलवान (क्षत्रिय) पेट से लाला अर्थात वैश्य पैरो से उसे शूद्र सभी को गुण कर्म और स्वभाव से ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य शूद्र माना है। जन्मगत ब्राह्मण पद अथवा क्षत्रिय वैश्य शूद्र की सीमाओ से विभाजित नही किये जा सकते । शरीर की रचना एक दूसरे के समन्वित होने से ही होगी उसे विभाजित करने से नही।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्पष्ट शब्दो मे सम्पूर्ण विश्व के कृत्रिम विवेकशील विद्वानो को चेतावनी देते हुए कहा था कि मनुष्य धर्म एक है। इसे इस्लाम ईसाईयत मे विभाजन मनुष्य को स्वार्थी और अनैतिक चरित्र बनायेगा पारिवारिक विभाजन होगे स्वाधानीता सग्राम १८५७–२३ माच को व्यक्त यह उनकी उनकी आशका वतमान मे भविष्यवाणी सिद्ध हुई है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती दिव्य दृष्य थे। उन्होने भारतीय दर्शन शास्त्रो वेदो स्मृतियो पुराणो उपनिषदो का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन किया था। उसमें से भारतीयत्व के प्रत्येक अश का विट्रिश साम्राज्य वाद के द्वारा किये जा रहे आक्रमण के विरूद्ध उन्होने मनुष्य को एकता के ब्रह्म सूत्र मे पिरोने के लिए सघर्ष किया। उनका आन्दोलन मनुष्य को आर्दश मर्यादाओ के मार्ग से उद्प्रेरित होकर जीविकार्जन करने की व्यवस्था प्रस्तुत कि महर्षि मनु और महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सदैव मानवीय एकता के मूल्यो को प्रतिस्थगित करने के लिए वर्ण व्यवस्था के वास्तविक रूप को प्रमुखता दी थी।

चार वर्ण व्यवस्था मनुस्मृति मे दिये गये है। जिनका आधार गुण कर्म और स्वभाव है। न कि जन्म वर्तमान मानव मूल्यो क क्षय मे प्रत्येक मानवता वादी का कर्त्तव्य है कि वह एकता के लिए। सामाजिक न्याय को जाति गत अथवा सम्प्रदायगत आधार पर देना अति भयानक रूप से दरिद्रता और विखण्डन की स्थिति प्रकट होगी। इस विषमता पूर्ण और भयानकतम सकट की घडी मे सभी को राजधर्म और समाज व्यवस्था स्थापित करने के लिख। निहित स्वार्थों से ऊपर उठकर विश्व दृष्टि से व्यवस्था बनानी चाहिए।

विश्व दृष्टि से पूर्व भारतीय भावना से परिचय करना आवश्यक है। क्योकि भारतीयता के भाव मे भारत अशक्त बना दिया है कि पडौसी उसकी सम्प्रभुता से मजाक कर सके। जब कोई सक्रमण रोग अनियत्रित होता है तो उसके कारण तलाश कये जाते है और रोगी को उसके बाद ही रोग मुक्त किया जा सकता है। हमारे यह विभिन्न प्रकार के रोग फैले है जैसा कि ऊपर बताया गया है। यदि गहरे से देखा जाये तो सभी समस्याओ का उदय एकात्मवादी भारतीयत्व की भावना से विहीन होने के कारण है।

जाति हीन समाज व्यवस्था का आधार वर्ण व्यवस्था अथवा भारतीय भावना को एकात्म करती है उसे सम्प्रदाय अथवा जातिय आधार पर विभाजित नही । भारतीयत्व भावना की जाग्रति राष्ट्रीय एकता नही बल्कि विश्व एकात्मता के विराट स्वरूप को प्रकट करती रही है। यही भावना स्वतत्रता सग्राम के महापुरूषो क भारत का भव्य निर्माण कर सकती हे

(शेष पृष्ठ ६ पर)

–आर्येश राज

आज के सन्दर्भ में : आर्य समाज की आवश्यकता

आज कुछ लोगो की यह कुछ गलत सी धारणा बन गई है कि वर्तमान मे जब आर्य समाज की कुछ भी तो आवश्यकता शेष नहीं रही। उनका इस सम्बन्ध मे यह कहना है कि क्योकि इसके द्वारा चलाये गये अनेको कार्यक्रमो मे से कुछ तो सरकार ने अपना लिये हैं और बहुत से जनता ने स्वय अपने जीवनोपउपयोगी समझकर बिना किसी सकोच के सहर्ष अपना लिये और शेष सयम के प्रभाव तथा सामाजिक और आर्थिक व राजनीतिक उथल–पुथल के कारण हमारे जीवन का अग बन गये है और कुछ बनते जा रहे हैं। परन्तु ऐसा होते हुए भी आर्य समाज की उपयोगिता व आवश्यकता से आज की स्थिति में इकार करना ऐसे विचारहीन लोगो को एक नितान्त भ्रम के सिवा कुछ भी नहीं है।

याद रहे आर्य समाज एक पवित्र आन्दोलन सार्वभौमिक आदोलन है कोई साधारण सामयिक गाधी ने कहा था कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात काग्रेस की कोई आवश्यकता नहीं रही अत इसे भग कर देना चाहिये। यह और बात रही कि किन्ही लोगो ने अपने स्वार्थ के विशीभूत होकर अपने नेता का आदेश पालन न कर आज कई नामो से काग्रेस को चलाये जा रहे है। परन्तु जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है कि आर्य समाज एक आन्दोलन है जो युग–प्रवर्तक युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने मानव–जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे फैली कुरीतियो को दूर करने और इसको समृद्ध बनाने के वास्ते चलाया था। जीवन मे फैली कुरीतिया कभी पूर्णतया शीघ्रता से समाप्त नहीं हुआ करती क्योकि जगद नियन्त प्रभु ने जीवन को काम करने मे स्वतन्त्र बनाया है अत इसके परिणामस्वरूप समाज मे कुरीतिया न्यूनाधिक होती रहती है परन्तु पूर्णतया कभी समाप्त नहीं हुआ करती। अत इस अनुपात मे आर्य समाज के आन्दोलन की उपयोगिता जैसे इसके आरम्भिक दिनो मे भी आज उससे कहीं अधिक जरूरत है।

अत इसकी आवश्यकता सर्वदा सर्वत्र बनी रहना ही हर प्रकार से नितान्त जरूरी है। यद्यपि आर्य समाज अपने जन्मकाल से ही मूलरूप मे ही जागरूक रहा जिस कारण देश की अपने थोडे ही जीवनकाल के समय मे कायापलट करके रख दी। परन्तु कुछ समय से किन्हीं राजनीतिक अथवा कुछ ज्ञात–अज्ञात कारणो से इसके कार्यों मे कुछ शिथिलता सी आ गइ है और सतर्क एव सचेत रहने के स्थान पर कुछ अलसाने सी लगती है परन्तु इसका अभिप्राय यह कदाचित नही है कि यह मृत प्राय हो गई है। हा इस शिथिलता के परिणाम यह हुआ कि कुछ समाप्त प्राय अराष्ट्री तत्व फिर से उग्र रूप मे उभरकर हमारे समाने आ खडे है

कुछ कुरीतिया

आज तो यह दशा हो गई है कि अशिक्षित ही क्यो वरन सभी वर्गों के लोग उभरकर सामाजिक कुरीतिया के शिकार होते जा रहे हैं सतीप्रथा जो हमारे देश पर एक घोर धृणित अभिशाप था और जो राजा राममोहन राय के कठोर प्रयत्न से लगभग डेढ सौ वर्ष से समाप्त हो गई थी फिर से अनको इस प्रकार की घटना घटन लगी है। छ सात वर्ष की बात है कि राजस्थान के दिवराला ग्राम मे एक १८ वर्षीय मायूम नव युवती रूप कवर नाम की लडकी को उसके पति के शव के साथ जबरदस्ती किन्हीं दकियानुसी स्वार्थी लोगो ने जिदा जलने का विवश कर दिया था।

भौतिकता म ग्रस्त धन दौलत के लोभी अज्ञानान्धकार मे डूबे कुछ लोग तात्रिको के कहने अपने प्यारे नन्हे–मुन्ने मायूम बच्चो की बलि देने से जरा भी नही हिचकते। आश्चर्य की बात तो यह है कि दक्षिणी अमेरिका म सदियो से रग भद के आधार पर बनने वाली सरकार इस

शेष पृष्ठ ६ पर

प्रशान्त के अस्तित्व, को खतरा

"अन्धविश्वास की परतन्त्रता" बालाजी का साम्राज्य

वैसे तो भारत वर्ष मे रूढिवादिता का बोल बाला है और ऐसे बहुत से स्थानो मे से मेहन्दी पुर के बालाजी का नाम विख्यात है। रूढिवादियो के लिये प्रसिद्ध इस स्थल पर जाकर रूढिवादिता को बतलाने के लिये किसी प्रत्यक्ष प्रमाण की आवश्यकता शेष नही रहती।

किसी भी व्यक्ति को शारीरिक व मानसिक यातना देने को अपराध माने जाने वाली कानूनी व्यवस्था वाले राष्ट्र मे यदि धार्मिकता के नाम पर खुले आम अमानवीय कुकृत्यो का घिनौना साम्राज्य समृद्ध हो तो इससे बडा दुर्भाग्य उस राष्ट्र के नागरिको का शायद ही कोई और हो।

जी हा यही दुर्भाग्य है हमारा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती" जैसे व्यक्तित्व ने अन्धविश्वास और पाखण्ड को समाप्त करने के लिये जहा अपने जीवन की आहुति दे दी उसी देश मे आज के इस कथित आधुनिक युग मे मेहन्दीपुर के बालाजी जैसे स्थल फल फूल रहे हैं जिसे मूर्ख लोग तीर्थ स्थल भी कहते हैं।

भूतो और पिशाचो के साम्राज्य मे विश्वास रखने वाले अन्धविश्वासी लोगो मे शायद ही कोई हो जिसको इस स्थल की जानकारी न हो न सिर्फ राजस्थान से अपितु पूरे भारतवर्ष से श्रद्धालु यहा इलाज करवाने आते है। जो शरीर मे उपस्थित किसी भी शारीरिक या मानसिक रोग के होने को भूतो और चुडैलो का शरीर मे वास मानते हैं यहा पर कई प्रमुख स्थल है जैसे प्रेतराज का दरबार बालाजी का मन्दिर आदि।

यहा पर आने वाले लोग पण्डितो के मायाजाल मे इस कदर फसे हुये हैं कि वे सभी प्रकार की समस्याओ को इलाज के लिये किसी डाक्टर की सलाह लेना वाजिब नहीं समझते हैं। बल्कि बालाजी मन्दिर से प्राप्त भभूत करवाते हैं।

यहा पर दिन मे प्रेतराज का दरबार लगता है जिसमे रोगी व्यक्ति उट पटाग हरकते ही नहीं करते बल्कि अपने आप को विभिन्न प्रकार की यातनाऐ भी देते हैं।

इस दरबार का नजार बेहद खौफनाक होता है। क्योकि बीमार लोगो को यहा यह एहसास करवा कर लाया जाता है कि उनके शरीर मे जो भूत या भूतनी घुस गई है। उसी वजह से वो इस प्रकार की उदण्ड हरकते करने को बाध्य हैं अन्यथा वो पूर्ण स्वस्थ हैं और यही कारण है कि रोज पीडित लोगो को स्वय को प्रताडित करने से रोका ही नही जाता है बल्कि उन्हे और अधिक उदडता करने के लिए उकसाया जाता है जो दर्शनार्थियो के लिये एक हकीकत बन जाती है रोगियो की ऐसी स्थिति मे भी उनसे कई प्रकार के वे सिर पैर के प्रश्न किये जाते हैं जैसे वह कौन है (अर्थात तू कौन सा भूत या भूतनी है) तू इसमे कब आई या आया जैसे अधविश्वास में लिपटे कपोल कल्पित प्रश्न पूछे जाते हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि लोगो की ऐसी दर्दनाक स्थिति देख कर भी लोगो मे दया भाव नही आता बल्कि भक्तगण श्रद्धा भाव से हाथ जोड के ये सब तमाशा देखते हैं।

यही नहीं जब कुछ ज्यादा बीमार व्यक्ति अधिक चीखते चिल्लाते हैं तो उनके बालो को खींच कर और उनकी पिटाई करके भूत भगाने को ढोंग मन्दिर के कर्मचारी या पण्डितो के द्वारा बखूबी किया जाता है। ऐसे ही रोगी जब पिट पिट कर थक जाते हैं तो थक कर शान्त हो जाते हैं और उनके निढाल होकर शान्त होने को पण्डित लोग भूत का डर जाना या निकल जाना मानते हैं।

यही नहीं इलाज करवाने के लिये आई महिलाओ व लडकियो के साथ अभद्र व्यवहार ही नहीं किया जाता बल्कि उनकी शारीरिक प्रताडना भी की जाती है।

कथित पिशाच पीडितों के अनुभव

बालाजी मे इलाज के लिये आये लोगो मे से कुछ से जब ये पूछा गया कि उन्हे कैसा अनुभव होता है जब उनके बारे मे बाहरी हवा का वास बताया जाता है। तो लोगो ने बताया कि अकसर हमारा सिर बेहद भारी हो जाता है। मन मिचलाने लगता है कई बार उल्टिया भी आती हैं हम गाली गलौज करने लगते हैं लडाई झगडे करने लगते हैं और इन सब से हमे सकून की अनुभूति होती है पीडित की इस समस्या के विषय मे जब चिकित्सक से पूछा गया तो उसने इसके कारणो मे व्यक्ति का गैस्टैन्टोआजिस्ट व मानसिक तनाव और मानसिक रूप से अस्थिर होना ऐसी ही समस्याओ को कारण बताया।

इसके अतिरिक्त वे व्यक्ति जो जीवन के प्रति उदासीनता का रूख अपना लेते हैं या हताश हो जाते हैं। वे भी अपने मन व मस्तष्कि से स्वय को असक्षम मानते हैं और अपना मानसिक सन्तुलन बनाये नहीं रख पाते तो कई बार इसी प्रकार की हरकते करते हैं जब यही हरकते बार-बार की जाती है तो परिवार के सदस्यो की आस पडोस के अन्धविश्वासी लोग भूत पिशाच का प्रकोप होने के लक्षण बताते हैं। और तब ऐसे लोगो को बालाजी लाया जाता है तो हवा पानी के बदलाव के अतिरिक्त घर के मानसिक तनाव से भी राहत मिलने से वे स्वय को स्वस्थ अनुभव करते हैं। और अपने घरो को लौट जाते हैं और इसे बालाजी की कृपा मानते हैं। परन्तु अधिकतर वर्षों पुराने पारिवारिक माहौल मे जाने पर फिर से पुरानी समस्याओ से जूझने लगते हैं।

लेकिन बडे सकोच के साथ यह कहना पडता है कि इस प्रकार बालाजी आकर इलाज करवाने का यह क्रम उनके जीवन का एक प्रमुख अग बन जाता है। जिसके कुचक्र मे फस कर वो अपनी कथित स्वतन्त्रता को एक पारदर्शी परतन्त्रता नकाब पहना देते हैं जिसके नीचे न सिर्फ वे खुद बल्कि अपने आस पास के समाज को भी अनजाने मे ही सही किन्तु भ्रमित अवश्य कर डालते हैं। क्या हमारा हमारी कानूनी व्यवस्था का और प्रशासन का इसके विनाश के प्रति कोई कर्त्तव्य नहीं ?

सुनीता सैनी

अंग्रेजी भाषा में साहित्य रचना पर सरकारी पुरस्कार क्यों ?

(कई पुस्तको के लेखक डा पाचाल राष्ट्रपति के विशेषाधिकारी (भाषा) और सघ लोक सेवा आयोग के निदेशक (राजभाषा) रह चुके हैं। सम्प्रति "नागरी सगम" पत्रिका के सम्पादक हैं-सम्पादक)

कितने आश्चर्य की बात है जिस अग्रेजी के दल-दल से ऊपर उठकर भारतीय भाषाओ के विकास का प्रावधान हमारे सविधान मे किया गया है हम उसे उल्टे चल रहे हैं। हमारा ध्यान आज भी भारतीय भाषाओ विशेषकर हिन्दी को प्रोत्साहन देने की बजाए अग्रेजी को प्रोत्साहन देने की ओर ही दिखाई देता है।

सविधान की आठवीं अनुसूची मे जिन क्षेत्रीय भाषाओ का उल्लेख है उनमे अग्रेजी को कोई स्थान नहीं है। सविधान के अनुच्छेद ३४३ के अनुसार "सघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी।" किन्तु अग्रेजी का प्रयोग अभी चलता रहेगा।

हिन्दी भाषा के विकास के लिए विशेष निर्देश भी सविधान के अनुच्छेद-३५१ में दिए गए हैं जिनमे कहा गया है कि "हिन्दी भाषा की प्रसार-वृद्धि उसका विकास करना ताकि वह भारत की सामाजिक सस्कृति के सब तत्वो की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके तथा उसकी आत्मीयता मे हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और अष्टम अनुसूची में उल्लिखित अन्य भारतीय भाषाओ के रूप शैली और पदावली को आत्मसात् करते हुए तथा जहा तक आवश्यक या वाछनीय हो वहा उसके शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करना सघ का कर्त्तव्य होगा।" इसमे कहीं भी अग्रेजी के विकास की बात नहीं कही गई है।

ससद के दोनों सदनों द्वारा १६६८ मे पारित सकल्प में भी कहा गया है कि "जब कि सविधान की आठवीं अनूसूची मे हिन्दी के अतिरिक्त भारत की १४ मुख्य भाषाओं का उल्लेख किया गया है और देश की शैक्षणिक एव सास्कृतिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि इन भाषाओ के पूर्ण विकास हेतु सामूहिक उपाय किए जाने चाहिए यह सभा सकल्प करती है कि हिन्दी के साथ-साथ इन सब भाषाओ के समन्वित विकास के लिए भारत द्वारा राज्य सरकारों के सहयोग से एक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा ताकि वे शीघ्र समृद्ध हों और आधुनिक ज्ञान के सचार का प्रभावी माध्यम बने।"

इस प्रकार भारतीय भाषाओ के विकास का दायित्व मानव ससाधन विकास मत्रालय के शिक्षा विभाग का है। भाषा प्रभाग ने भारतीय भाषाओ मे प्रकाशन के लिए वित्तीय सहायता देने हेतु एक योजना परिचालित की है। किन्तु खेद है कि इस योजना को अब अग्रेजी भाषा के प्रोत्साहन के लिए भी लागू कर दिया गया है। ऐसा क्यो ? क्या अग्रेजी भाषा का विकास करना भी भारत का कर्त्तव्य है ?

डा. परमानन्द पाचाल

बच्चो की क्यारी

"अंकल" क्यों नहीं ?

कुछ दिन पहिले की बात है एक सज्जन अपने लडके के साथ मुझसे मिलने आए और उन्होंने अपने लडके को कहा कि अकल जी को नमस्ते करो। अभिवादन स्वीकार करने के बाद मैने उनसे कहा कि बच्चे को हिंदी मे ताऊ अथवा चाचा कहने के लिए बता दिया करे तो अधिक अच्छा हो। वे कहने लगे कि अकल शब्द काफी अधिक प्रचलित हो चुका है और वह अब हिंदी मे भी रच पच गया है अत उससे परहेज करना उचित नही। वे सज्जन एक ऐसी सस्था के ऊचे अधिकारी थे जिसका प्रभाव और शाखाए भारत भर मे है तथा वह भारतीय सस्कृति व सभ्यता व भाषाओ की पोषक सस्था है मैने उनसे कहा कि की कोई आवश्यकता नहीं है किन्तु जब एक विदेशी शब्द का लेना अनुचित है भकल शब्द से यह स्पष्ट नही होत कि जिसके लिए वह शब्द प्रयोग किया जा रहा है वह ताऊ चाचा मामा फूफा तथा मौसा आदि मे से कौन सा है अकल शब्द के प्रयोग से भाषा भ्रष्टता की अति तब हो जाती है जब बच्चे अपने बाप दादा की उम्र के राह चलते ६० ७० वर्षी वृद्धो को भी अकल कह कर पुकारते हैं एक तरफ तो अग्रेजी वाले व्यर्थ ही कहते रहते है कि हिंदी मे शब्दावली की कमी है दूसरी तरफ हम अपनी शब्दावली को भी तिलाजलि देकर यदि विदेशी शब्द अकल का प्रयोग करते रहेगे तो कुछ काल के बाद हम अपने रिश्ते के ऐसे शब्द भी भूल जाएगे जिनके निश्चित सम्बन्ध और अर्थ है एक ही शब्द अकल के डण्डे से चाचा ताऊ मामा फूफा और मौसा आदि सभी हाके जाते हैं। ऐसी दूर्दशापूर्ण स्थिति भारतीय समाज मे पैदा करने का प्रयत्न सहन नहीं किया जा सकता है। इस वार्तालाप ने मुझे इस लेख को लिखने और उसे विस्तार देने के लिए प्रेरित किया।

इसी प्रकार आटी शब्द को कहने से यह स्पष्ट नही होता है कि वह चाची ताई बूआ मामी मौसी आदि मे से किससे सम्बन्धित है अग्रेजी मे एक शब्द ब्रदर इन ला आता है जब कोई मुझे इस शब्द से किसी का परिचय कराता है तो मै मजाक मे पूछ लिया करता हू कि वह बहनोई है जिसे हम अपेक्षाकत अधिक सम्मान देते हैं अथवा साला या फिर साढू है ये सभी शब्द पर्यायवाची नही है अग्रेजी मे एक और रिश्ता बनता है जिसका हम कहते हैं फादर इन ला जिसके लिए हिन्दी मे सरल शब्द ससुर है और मदर इन ला के लिए हिन्दी शब्द सास है अग्रेजी मे शब्द डाटर इन ला है जिसके लिए हिन्दी मे सरल शब्द पुत्र वधु है सिस्टर इन ला शब्द से यह नही पता चलता है कि नन्द है या साली अथवा जेठानी है या देवरानी। मदर इन ला अर्थात कानून से माइ तो क्या और सब माइ परमात्मा ने गैर कानूनी बनाए है ? दुनिया की किस सरकार का कौन सा कानून है जो साले बहनोई आदि की परिभाषा निधारित करता है

भारतीय जीवनपद्धति का आधार सयुक्त परिवार और पारस्परिक सम्बन्धो की निकटता एव मधुरता है इसलिए यहा पत्नी पति के चाचा को पितसरा ताऊ को तायसरा फफा को फफसरा मामा को मोलसरा इत्यादि कहती है इन सब मे सरा ससुर का ही सक्षिप्त रूप है ... नन्दोई नन्द के पति है इन सब रिश्तो मे परस्पर हास परिहास की रमणीय है ... प्यारे ननदोइया इसी प्रकार पजाबी लोकगीत है छोटा दे भाभी नाल लडया ... अग्रेजी नामो से इन रिश्तो की मधुरता समाप्त हो जाती है वस्तुत अग्रेजी मे इन शब्दो के लिए उपयुक्त शब्द ही नहीं है

स्वतन्त्र भारत मे स्वतन्त्र नागरिक होने के नाते न केवल यह कर्त्तव्य बनता है कि अपनी भाषा को अपनाए अपितु यह भी आवश्यक है कि अपनी भाषा मे रिश्ते सम्बनधी विदेशी शब्दो का प्रयोग न करे जो कि बोलने मे लम्बे और यथार्थ सम्बन्ध बनाने मे अशक्त है इन निश्चित रिश्तेदारी का स्पष्ट पता नही चलता और भ्रम बना रहता है यह भेडचाल भी अग्रेजी भाषा की तर्ज पर चल पडी है इस से भारतीय सस्कृति पर भी कुप्रभाव पडा

अत भारतीय सस्कृति और सभ्यता के पक्षधरो को ... अपने भारतीय रिश्तो को प्रयोग करना चाहिए और अपनी भाषा मे अनावश्यक विदेशी शब्दो की घुसपैठ को रोकना चाहिए इस बात का प्रचार ... सामाजिक गोष्ठियो ... सभाओ सम्मेलनो आदि मे भी ... या ... चाहिए

XXXXXX

शैतान और मनुष्य

खून और आसुओ कहानी
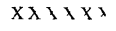
हासी से १० कि मी दूर रोहनात नाम का शहीद गाव है जहा के लोग अब तक भी अपनी भूमि से वचित हैं १८५७ की जनक्रान्ति मे भाग लेने पर यह गाव अग्रेज सरकार ने नीलाम कर दिया था। कुल २० ६५६ बीघे १६ बिस्वे का यह गाव ८ जहार एक सौ रूपये मे नीलाम हुआ था। जिसे ६१ लोगों ने मिलकर खरीदा था।

इस गाव के लोगों को बागी घोषित कर दिया गया था। यहा के लोग तीन पीढ़ी तक भटकते रहे। रोजी रोटी के लिए उन्हें न जाने कहा कहा की ठोकरें खानी पडी। आजादी मिलने पर इस गाव को कुछ सुख की सास मिली। १९५७ में १०० वर्ष बाद इस गाव को आदर्श एव शहीद गाव घोषित किया गया। हरियाणा बनने पर तत्कालीन मुख्यमन्त्री चौ. बन्सी लाल ने इस गाव को एक लाख पच्चीस हजार रुपये का पुरस्कार प्रदान किया था।

रोहनात गाव के लोगों की मुख्य माग नीलाम की गयी धरती की रही है। इसके लिए गाव के लोग अब तक भटकते रहे हैं। रोहनात शहीद कमेटी के सचिव श्री मलेराम बूरा फाइलें लिए नये पाय अधिकारियो मत्रियो के द्वार खटखटा चुके हैं। हर जगह आश्वासन मिला पर नीलाम जमीन अभी तक नहीं मिली।

गाव के पूर्व सरपच श्री बृजलाल जी इस सिलसिले मे स्व प्रधान मन्त्री इन्दिरा गाधी से भी मिले थे रोहनात के १८५७ के प्रथम स्वन्त्रता सग्राम मे बलिदान देने की कहानी खून और आसुओ की अमर गाथा है १० मई १८५७ को जब मेरठ व अम्बाला मे भारतीय सैनिको ने अग्रेजो के विरूद्ध विद्रोह कर दिया तो अगले दिन ही दिल्ली के लाल किले पर भारतीयो का अधिकार हो गया। अग्रेज सैनिक दिल्ली से खदेड दिये गये। तब बहादुर शाह जफर को बादशाह घोषित कर आजादी की लडाई तेजकर दी गयी

पहली जनक्रान्ति की चिंगारी रोहनात पहुची २९ मई १८५७ को लागो ने हाथों मे लाठी लेली बरछी भाले आदि लेकर पहले तो गाम जो वर्तमान समय के तत्कालीन मुख्य मन्त्री चौ बन्सीलाल का हल्का है फिर हासी अग्रेजों की छावनी मे आक्रमण किया। अन्य गावो के लोग भी इनके साथ आ मिले। उस दिन हासी में ११ अग्रेज अफसर मारे गये। सरकारी अग्रेजो का खजाना लूट लिया गया हासी के तहसीलदार को किले पर गोली मार दी गयी। गोसी पलटन म १४ भाग खडी हुई। हासी क्षेत्र गुलामी से मुक्त हो गया। उसी साल १४ सितम्बर को अग्रेजों ने दोबारा दिल्ली जीत ली। बाहादुरशाह जफर बन्दी बना लिए गये उनके दोना बेटे कत्ल कर दिये अग्रेजो का अत्याचार इतना बढा कि सारा भारत काप उठा

हासी क्षेत्र की जगे आजादी मे भाग लेने वालो पर भीषण अत्याचार किये जाने लगे सामूहिक फासिया दी गयी गाव जलाये गये रोड रोलरो के नीचे इन्सानों को पीसा गया। तोप और गोलियों से क्रान्तिकारियों की जावन लीला समाप्त की गयी

उस समय हिसार के डिप्टी कमिश्नर विलियम ख्वाजा थे। वे रोहनात गाव की क्रान्ति लहर को पैनी नजर देख रहे थे। उन्होंने तहसीलदार हासी को १४ सितम्बर को लिखा कि मुकदमा न ५ के अनुसार रोहनात गाव बागी हो गया है। गाव की कुल जमीन की तफसील तुरन्त भेजी जाये। तहसीलदार ने तुरन्त पूरा विवरण भेज दिया। चीफ सेक्रेटरी पजाब ने १३ नवम्बर १८५७ के अनुसार दूसरे कई और गावों के साथ रोहनात का पूरा गाव नीलाम करने की स्वीकृति दे दी। इस बीच हिसार के जिलाधीश जनरल विन बन चुके थे। उन्होंने नीलाम गाव रोहनात का नक्शा तैयार कराया। २० जुलाई १८५८ को नीलामी की बोली लगायी गयी। नीलामी में रोहनात गाव को खरीदने वालो का ब्यौरा इस प्रकार है–

गाव उमरा २६ खरीददार सत्यपुर ... मुजफ्फरपुर ४ ... लगाकर मकान तोड दिये गये ... को अग्रेजी सैनिक ... दिया जवानो ... स्त्रिया ने भयभीत होकर अपनी इज्जत बचाने के लिए कुओ मे छलाग लगाकर आत्म हत्या कर ली ... लोगो ने समय की यात्रा आग के दरिया मे डूब कर की रोहनात गाव के बलिदानियो पर सबको गर्व है

केन्द्र सरकार ने पहली लोकसभा मे प्रस्ताव पारित किया था कि अग्रेजो द्वारा जब्त जमीन व सम्पत्ति वापस की जायेगी लेकिन इस गाव के लोग अभी तक नीलाम जमीन वापस नहीं पा सके

गाव के लोगो ने प्रदेश व देश की राजनीति बदलने पर विश्वास व्यक्त करते हुए राज्य व केन्द्र दोनो सरकारो से गाव की नीलाम जमीन वापस दिलाने की अपील की है

रामसुफल शास्त्री
पत्रकार

प्रभात आश्रम

प्रभात आश्रम कि प्रतिभा आर्य जगत को जान कर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्र सत्यदेव जुलाई ५ से १० तक अमेरिका मे आयोजित विश्व तीरन्दाजी प्रतियोगिता मे भाग ना प्रतिनिधित्व करने गये

सांस्कृतिक प्रहरी

नई दिल्ली हिन्दु हैरिटेज प्रतिष्ठान के प्रवक्ता श्री हरी बाबू कसल ने अपनी एक प्रेस विज्ञप्ति मे सास्कतिक प्रदूषण फैलाने वाले दूरदशन कार्यक्रमो फिल्मी पोस्टरो आदि के अश्लील तत्वो द्वारा जो स्थिति पैदा की जा रही है उससे सम्पूर्ण भारतीय जन चिन्तित है। इसे रोकने के लिए छुट पुट प्रयास हुए है परन्तु इस सास्कृतिक क्षेत्र मे प्रदूषण के विरूद्ध कोई व्यापक अभियान प्रारम्भ नही हुआ है। यही कारण है कि हमे सास्कृतिक प्रदूषण निवारण अभियान आरम्भ करने की प्रेरणा मिली है।

श्री कसल ने आगे कहा है कि इस अभियान मे महिलाओ की भूमिका मुख्य रहेगी। सेवानिवृत्त पुरुष और विद्यार्थी भी सहयोग कर सकते है। इस अभियान के तहत सहयोग देने वाले व्यक्ति सास्कतिक प्रहरी कहलायेगे। इनका कार्य दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले आपित्त जनक कार्यक्रमो के सदर्भ मे प्रयोजको तथा दूरदर्शन के अधिकारियो को विभिन्न सामाजिक सास्कृतिक एव धार्मिक सस्थाओ की ओर से पत्र भिजवायेगे। तथा प्रतिनिधि आर्य हिन्दु हैरिटेज प्रतिष्ठान के नेतृत्व मे भेट करके ऐसे कार्यक्रमो को रोकने के लिए आग्रह करेगा।

असम योग के प्रति रूचि

गोवाहटी—आर्यसमाज मन्दिर द्वारा असम मे वेद विद्यालय के सयुक्त तत्वाधान मे योग विद्यालय मुगेर विहार के विख्यात योगाचार्य जी महाराज के सफल निर्देशन मे जीवन निर्माण प्रशिक्षण शिविर आयोजन किया गया। जिसका समापन ६ जौलाई १९९६ को हुआ।

बताया जाता है कि असम के नागरिको मे इस शिविर ने योग क्रियाओ के प्रति गहरी अभिरूचि पैदा की है। सुप्त आत्मा चेतना हीन है जागृत होने लगी है सात दिवसीय जीवन निर्माण प्रशिक्षण शिविर में आशानुरूप लोगो की उपस्थिति योग के प्रति उनकी आकर्षण का प्रत्यक्ष उदाहरण है।

विज्ञप्ति मे बताया है कि लोगो की योग के प्रति विशेष रूचि को देखते हुये प्रशिक्षण को अनवरत चलाने का निर्णय किया गया है जिसका सचालन महर्षि दयानन्द योग केन्द्र नामक सस्था बनाकर उसे स्थापित करने के लिए एक समिति का गठन किया गया।

विज्ञप्ति म यह भी बताया गया है कि सर्म्पूण असम मे स्वामी दयानन्द योग रेड के नाम से आर्य सभ्यता के वास्तविक तथ्यो को समझना आवश्यक है कि सस्कृत प्रशिक्षण शिविरो का आयाजन किये जाने चाहिए। ऐसा ही एक प्रशिक्षण शिविर जिसका विषय सस्कृत सम्भावना वर्ग तथा सस्कृत प्रशिक्षण शिविर का १५ जौलाई से २५ जौलाई १९९६ से गोवाहटी में आयोजित किया गया है जिसमे आसाम के अलावा मणिपुर और त्रिपुरा के शिक्षार्थी भी भाग ले रहे हैं।

प्रभात आश्रम

पृष्ठ ५ का शेष

प्रतियोगिताओ मे ब्र सत्यदेव को स्वर्ण पदक सहित अनेक रजत एव कास्य पदक मिले है। यह प्रतियोगिता १६ से १८ वर्ष आयु वाले बालको की ही है।

ब्र. सफलता से गुरुकुल प्रभात आश्रम के साथ ही आर्य समाज का भी गौरव बढा है।

ब्र सत्यदेव राष्ट्र गौरव हेतु सघर्षरत

XXXX

आर्य साहित्य पुरूस्कार समारोह सम्पन्न

मुम्बई आर्य समाज सान्ताक्रुज के विशाल तथ्वाधान मे आर्य जगत के वयोवृद्ध लेखक प. शिवपूजन सिह कुशवाहा को श्रेष्ठ श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरूस्कार से सम्मानित किया गया।

श्री कुशवाहा प. लेख राम बलिदान शताब्दी समारोह के उपलब्ध मे राजपाल एण्ड सन्स को आर्य प्रकाशन पुरूस्कार से सम्मानित किया। श्री शिव पूजन सिह को हार श्रीफल शाल और ५१०००/ रूपये की धनराशि का ड्राफ्ट व रजत ट्राफी भेट की गई। जबकि महाशय राजपाल को पुरूस्कार ट्राफी उनके सुपुत्र श्री विश्वनाथ ने प्राप्त की है।

प्रेस विज्ञप्ति मे बताया गया है कि प्रति वर्ष मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार से उन आर्य लेखको को सम्मानित किया जाता है जिन्होने आ जीवन लेखन के माध्यम से वैदिक सस्कृति का प्रचार और प्रसार किया हो। इस वर्ष आर्य साहित्य पुरूस्कार के साथ प. लेखराम बलिदान शताब्दी समारोह मनाया गया।

डा. सोमदेव शास्त्री ने प लेखराम के वैदिक सिद्धान्तो के प्रसार प्रचार के बलिदान की जीवनी श्रोताओ को सुनायी व उनके बातये मार्ग पर चलने का आह्वान किया।

समारोह के समापन पर शान्ति पाठ और जयघोष के पश्चात सभी ने प्रीति भोज मे भी भाग लिया।

पुन सम्प्रदायिक आधार पर भारत के विभाजन की तैयारी

वैदिक रीति से पुत्री का विवाह सम्पन्न

रीवा विधवा विवाह वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का गत २० मई से १६ जून १६६६ तक आयोजित किया गया इस समयावधि मे श्रीराम कुमार गुहा निवासी जबलपुर का विवाह सस्कार वैदिक रीति से आचार्य श्री पवेद भूषण ने सुश्री सुनीता देवी सुपुत्री श्री लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता निवासी रीवा के साथ सम्पन्न कराया गया।

उल्लेखनीय यह है कि श्रीमती सुनीता गुप्ता के पूर्व पति का गत चार वष पूर्व निधन हो गया था अल्पायु श्रीमती गुप्ता का लम्बा जीवन निर्वाह हो पाना असम्भव था। इसलिये पिता श्री लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता ने अपनी विधवा पुत्री का पुर्न विवाह कर उसे समाजिक रीति रिवाजो के साथ साथ परम्पराओ का भी पालन किया है।

उपस्थित जनो ने आशा व्यक्त कि है कि इसे वर्तमान पीढी के नव युवको को प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिये।

आवश्यक सूचना

वेद–प्रचार एव सस्कारादि हेतु सम्पर्क करे–

'गरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के पुराने स्नातक सेवा निवृत्त वरिष्ठ हिन्दी–सस्कृत प्राध्यापक अमृतपाल शास्त्री एम ए (हिन्दी–सस्कृत) साहित्य रत्न ओ टी प्रभाकर विद्याभास्कर विद्यारत्न आजकल निम्नलिखित पते पर उपलब्ध हैं। अत जो भी आर्य बन्धु, आर्य समाजे वैदिक सस्कारो पारिवारिक सत्सगो साप्ताहिक–सत्सगों उत्सवो एव वेद–सप्ताह जैसे शुभावसरो पर बुलाना चाहे तो समय से पूर्व लिखकर अपनी तिथि नियत करवालेवे।

अमृतपाल शास्त्री

पता– एम ए जे ३२ सै १२ नोएडा जि गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) फोन ०११–८–५५६०२४

राष्ट्रभाषा हीन, देश का प्रधानमंत्री क्यों ?

भारत एक गणतत्र है। सयुक्त राज्य अमरिका नहीं किन्तु गत २८ मई को राज्यमक्तो की सत्ता भक्ति का स्पष्ट रूप से दर्शन हो गया कि राष्ट्रीयत्व हीन व्यक्ति अगर देश का प्रधान मत्री बनेगा जिसे राष्ट्रीय भाषा का ज्ञान स्वभावगत नहीं तव राष्ट्रीयता की क्या स्थिति होगी ? यह कहने की बात नहीं है। जिसे राष्ट्र भाषा भूषा का ज्ञान नहीं वह क्यो ? लालकिले की प्राचीर से राष्ट्र को सम्बोधित करने के लिए कृत्रिम भाषा शिक्षण का नाटक रचा जा रहा है।

भारतीयता सकट मे है। विचार करना होगा कि भारतीयता की रक्षा कैसे हो ?

प्रवीण आर्य
खीरी उ.प्र.

दलित और दरिद्रता

छदम–धर्मनिरपेक्षतावादियो द्वारा किया जा रहा यह दुष्प्रचार नितान्त असत्य एव सुनियोजित षडयन्त्र है कि दलितो एव पिछडो की आर्थिक राजनैतिक एव सामाजिक दुर्दशा केवल ब्राह्मणो ठाकुरो एव हिन्दू–धर्मशास्त्रो की देन है। क्योकि विदेशी मुस्लिम हमलावरो के आने से पहले तो देश मे दलित एव पिछडी जातियो वालो के भी बहुत से राजपाट मौजूद थे। लेकिन ऐसे दलित एव पिछडे वशो के राजाओ को भी क्षत्रिय वग मे ही शुमार कर लिया जाता था। क्योकि वर्ण एव जाति दो भिन्न व्यवस्थाये हैं। उन दिनो क्षत्रिय आदि राजपाट–कार्यों का वर्णीकरण (व्यवसायीकरण) जन्मजात–जाति वर्णाधारित नहीं किया जाता था।

वर्ण–व्यवस्था तो व्यक्ति के सामाजिक व्यवसाय आधारित मनुष्यकृत एक ऐसा सामाजिक सस्थान है जो केवल मनुष्यो के ही लिये प्रासगिक है अन्य प्राणी–प्रजातियो के लिये प्रासागिक नही है। लेकिन जातित्व एक जन्मजात–प्राकृत शारीरिक चरित्र (गुण) है जिसका निर्धारण एव परिवर्तन प्राय मृत्यु एव पुनर्जन्म से ही सम्भव होता है। अत मनुष्यो सहित अन्य सभी प्राणियो को भी यह जातित्व गुण उपलब्ध है। कहा जा सकता हे कि जातित्व जन्मजात होता है। और किसी भी जन्मगत जाति का कोई भी मनुष्य कभी भी एव पिछडी जातियो के राजा हो चुके व्यक्ति को भी क्षत्रिय करके ही जाना जाता था।

धर्म सभ्यता सस्कृति साहित्य एव राजनीति के क्षेत्रो मे भी हमारी इन दलित एव पिछडी जातियो के गौरवशाली योगदान के अकाटय प्रमाण आज भी मौजूद हैं। दलित जाति के वाल्मीकि जी की रामायण सूतपुत्र व्यास जी रचित महाभारत एव पिछडी जाति के तुलसीदास जी की श्रीरामचरितमानस जैसे महाकाव्य हमारे इन दलित एव पिछडे वर्गों के साहित्यक दार्शनिक अध्यात्मिक एव धार्मिक उत्कर्ष के अनुपम उदाहरण है। आज पिछडी समझी जाने वाली यादव जाति के श्रीकृष्ण तो अपने समय के आज तक के सभी क्षत्रिय सम्राटो के महाचक्रवर्ती से भी बडे सम्राट एव महापूज्यनीय महायुग निर्माता थे।

वैष्णवमत के प्रचार–प्रसार मे आलवरो के योगदान को सभी वैष्णवजन आज भी सम्मानपूर्वक याद करते हैं। भगवत कथा मे ब्राह्मण पुरोहितगण सूतपुत्र का वाचन श्रद्धा एव भक्तिभाव से करते हैं। ब्राह्मण यदि दुष्ट स्वभाव होते तो सूतपुत्र को ज्ञान अर्पण क्यो करते ? और ठाकुर एव वैश्य समुदाय (व्यवसाय) के लोग विनय भाव से सूतपुत्र की उस भागवत का श्रवण क्यो करते ? या पिछडो के श्रीकृष्ण को क्यो पूजते ?

वास्तव मे इन दलितो का सर्वाधिक नुकसान (जाति–परिवतन के विषय मे पुनजन्म सिद्धान्त को न समझने वाले) इस्लामी शासको के जिम्मी कानून और जजिया से शुरू हुआ। मुसलमान शासको एव नवाबो के इन दोनो कानूनो ने भारत के हिन्दुओ के इन दलितो एव पिछडो की शिल्पकारियो व दस्तकारिया की आर्थिक शक्ति को छिन्न भिन्न करके दूसरो का मोहताज बना दिया कि उनका सामाजिक सम्मान मलिनता मे विघटित होकर रह गया। क्योकि इनके वित्तीय प्रक्षयदाता तो पहले ही मुसलमानो से हथियार हार चुके थे। और रही सही कसर बाद मे उपनिवेषवादी अग्रेजो के क्रिमिनल ट्राइव एक्ट मार्शल रेस ला जैसे जातिवादी वाले कानूनो ने पूरी कर दी। मुस्लिम शासको के द्वारा थोपी गई मनसबदारी और बेगार प्रथा एव अग्रेजी की दी हुई जमींदारी प्रथा भी इन दलितो के लिये मणन्तिक सिद्ध हुई। इन कुप्रथाओ स देश के जमींदार एव हरामखोर लोग (जिनमे हिन्दू एव मुस्लिम दोनो ही समुदायो के लोग शामिल थे) तो अवश्य लाभान्वित हुये। लेकिन इन कुप्रथाओ से देश का वह बहुसख्यक शिल्पकार एव दस्तकार वर्ग तबाह हो गया जिसे आजकल दलित कहा जाता है लेकिन जिसके बल पर मुस्लिम हमलावरो के आने से पहले भी यह देश सोने की चिडिया कहाता था।

हमारे समाज मे छूआछूत का भाव बेशक था। लेकिन उस छूआछूत मे ऊचनीच की प्रथा नही थी। उस छूआछूत मे छूआछूत से सम्बद्ध दोनो ही पक्ष परस्पर समतुल्य सम्मानीय होते थे। वह छूआछूत स्वस्थ वैज्ञानिक चिन्तन एव मर्यादित प्रेम पर आधारित थी। उसमे इन दलितो के प्रति घृणाभाव नही था। यथा आजकल भी चिकित्सक विज्ञानीजन अपने हर कदम पर ऐटीसेप्टिक एव इसटैरेलाइजेशन का भरपूर सहारा लेते है। प्राय सभी सवर्ण हिन्दू एव स्वय ये दलित हिन्दू भी मासिक धर्म वाली अपनी धमपत्नि तक को छूना वर्जित समझते थे। और अपनी क्वारी रजस्वला कन्या के हाथ का भोजन तक ग्रहण नही करते।

******

ईसाईयों को आरक्षण का औचित्य

ईसाई सम्प्रदाय द्वारा आरक्षण की माग करना व उसके लिए किसी भी प्रकार के हथकण्डे बनाना कोई चौकाने वाली बात तो नही है। हा यदि चौकाने का स्वभाव ही हो तो इस बात पर चौंका जा सकता है। कि ये माग अब तक दबी कैसे रही ? इसे तो बहुत पहले ही उठकर एक शिशु की भाति ठुमक–ठुमक कर अब तक चल भी देना था। अब तो उन्हे विवशत उठानी पडी है। जब सीताराम केसरी जैसे केन्द्रीय मन्त्री आरक्षण की रेवडी केवल मुसलमानो को ही बाटे तो इस–घोर अन्याय को ईसाई वर्ग चुपचाप कैसे सहन करले ? भला उन्होने कौन सी भारत की कम सेवा की है ? यदि मुस्लिम आक्रान्ताओ ने तलवार की धार स भारत से काफिरपन को दूर किया न' उन्होने हिन्दुत्व के विशाल कलैवर को सेवा के नाम से पतला करने मे छल कपट लोभ लालच धोखा पाखण्ड किसका सहारा नही लिया ? यदि केसरी जी यही तर्क दे कि उनकी वीरता व पराक्रम को ही सम्मानित किया जा सकता है तो वे सीना फुलाकर डायर का नाम ले सकते हैं। कुल मिलाकर केसरी जी की तज पर ये आरक्षण के प्रबल दावेदार है। और आरक्षण ही क्य' हमारी कांग्रेस की कृपा रही तो देश मे अंग्रेजी हटाओ देश बचाओ के नारे को चुनौती दी जा सकती है। यदि उर्दू देश की सपर्क भाषा हो सकती है तो अंग्रेजी क्यो नहीं ? केसरी को चुनाव जीतने के लिए मुसलमानो को आरक्षण देना आवश्यकत लग रहा है। तो चव्हाण की योजना उर्दू को सपर्क भाषा बनाकर चुनाव का चक्रव्यूह भेदने की है। ऐसे मे यदि किसी ने भूल से भी कह दिया कि भारत की प्राचीन सभ्यता सस्कृति की रक्षा होनी चाहिए। तो सभी दल मिलकर उसे साम्प्रदायिक घोषित कर देगे चाहे वे किसी विकास के गभीर मुद्दे पर एकजुट न हो सके। भारत की राजनीति की इसी कलकित घृणित व मत्सर मानसिकता का परिणाम है कि जो हिन्दू पाकिस्तान मे रह गये वे त्रस्त होकर अस्त हो रहे हैं। जो मुस्लिम भारत मे रह गये वो मस्त होकर भ्रष्ट हो रहे हैं। अन्तस को सतत झुलसाते रहने वाली इस पीडा को स्वतन्त्रता सेनानी ही जान सकता है। क्या पाकिस्तान मे रह जाने वाले हिन्दुओ मे एक भी परिवार ऐसा न होगा जिसका कोई सदस्य मा मातृ–भूमि की बलिवेदी मे आहुत ना हुआ हो ? क्या उस मा के बलिदान पुत्र को पता था कि विभाजन की विभीषिका मे मेरा अनाथ परिवार कुछ कुटिल कथित राजनेताओ की कल्पित सीमारेखा के उस पार भी नही जा पायेगा जो हिन्दुओ के लिए जीने के आधे अधूरे भी अधिकार दे सके। कुल मिलाकर बलिदानो के एक लम्बे इतिहास के बाद स्वतन्त्रता मिली तो मुसलमानो का जो उच्श्रखलता के रास्ते चलकर उद्दण्डता के रूप मे मानवता का सिरदर्द बनकर रह गई। इन भीषणाताओ को देखते हुए भी यदि मुसलमानो को आरक्षण व उर्दू को सपर्क भाषा बनाने की बात सत्ताधीशा द्वारा उठाई जा सकती है। तो कौन सा अनर्थ है जिसकी कल्पना असम्भव हो ? जब क्रूरता को गले लगाया जा सकता है तो कुटिलता को नकारने का हमारे पास कोई तर्क शेष नही रहता।

ईसाई वर्ग अपनी चिर परिचित शैली मे पूरी शक्ति से आरक्षण प्राप्ति के मैदान मे कूद पडा है। समय की बात है कभी हम अपने अधिकारो के लिए उनके सामने आन्दोलन करते थे तब जिस क्रूरता नही नही वीरता' के साथ ये निरीह जनता को कुचल देते थे वैसा हम नही कर सकते। ऐसी बात नही कि हमारे अन्दर कुचलने की शक्ति वा सामथ्य न हो साहस या पराक्रम का ताजा प्रमाण देखना हो तो भाषा सत्याग्रही श्री पुष्पेन्द्र जी चौहान से पूछकर देखलो। उनके घाव व चोटो से भी कहीं अधिक ह्रदय की वेदना से आपको हमारे साहस व पराक्रम का परिचय मिल जायेगा। सिद्ध है कि साम्प्रदायिकता की भाति बल प्रयोग भी हमारे लिए ही पेटेण्ट हो चुका है। ईसाई धर्म का यह नीति कौशल ही कहा जायेगा कि उन्होने हमारे ही कुछ बन्धुओ को धर्मान्तरण की प्रक्रिया द्वारा इस अभिशाप से मुक्त करा लिया है। भाषा सत्यागृही जैसा वर्ताव हम उनसे नहीं कर सकते। इसके अन्य भी कई कारण हैं यथा वो कोई भारत को जोडने की बात नहीं कर रहे फिर बल प्रयोग क्यो ? बल प्रयोग से पूर्व सामने वाले के शक्ति स्रोत भी देखे जाते हैं इस आन्दोलन के पीछे कई शक्ति सम्पन्न राष्ट्र हो सकते हैं। जबकि पुष्पेन्द्र के पीछे तो भारत के सर्वाधिक उपेक्षित तिरस्कृत हिन्दू कहलाने वाले भी नहीं है। और यही कारण है कि देश का नाम तो हिन्दूस्तान हो गया। मगर यह कथित हिन्दुओ का नहीं हो सका। जब इस देश का नाम आर्यावर्त्त था तो यहा के निवासी आर्य थे अब यह हिन्दुस्तान है तो यहा के निवासी वास्तव में हिन्दू बनकर ही रह गये हैं। ध्यान रहे हिन्दू शब्द किसी भी भारतीय भाषा का नही बल्कि फारसी का है। जो इसका अर्थ जानना चाहे वे किसी फारसी के विद्वान से जान ले। वहा इसके अर्थ काला चोर नास्तिक आदि बताये जाते हैं।

देश के अति महत्वपूर्ण चुनाव आकाशीय पिण्ड की गति से देश की ओर आ रहे है उसके भय को भाप कर कुछ बुद्धिमान 'चार कदम सूरज की ओर बढा रहे हैं। चाहे परिणाम तुलसीदास के सम्पाती जैसे निकले। मगर तब आप समाचार पत्रो के मुख पृष्ठ पर यह छपा हुआ नही पायेगे चुनाव मे भारी पराजय के सदमे स मृत्यु। भारत की राजनीति की यह विशेषता रही है कि वह कई बार दोलत्ती खाकर भी तन्मय भाव से गधे–घोड किसी के भी तलवे चाट सकती है। इस ओछी मानसिकता का लाभ उठाने का इससे उत्तम कभी समय हाथ नही लगेगा। तभी तो चल्ते चूल्हे पर दो रोटी सेकने के लिए इसाइ वग भी लालायित है। बस एक बार आश्वासन तो मिले। जब एक को बुलाकर मनाकर आरक्षण दिया जाये और दूसरे को मागने पर भी नही तो क्या ऐसी काइ अन्तर्राष्ट्रीय सस्था नही जो इस घोर अन्याय के लिए मानवाधिकार आयोग की तर्ज पर किसी राष्ट्रीय सरकार के कान खीच सके। ईसाइ जगत इस मैदान मे पूरी शक्ति से कूद चुका है। कुछ ही दिन पूर्व कुछ भारतीय इसाई प्रचारक घूम–घूमकर बाईबल बाटते मिले। मात्र रूपये मे बडे स्तर बेची जा रही इस पुस्तक को बिष बेल कहा जाये तो अनर्थ नही। इसके सन्दर्भ मे अफ्रिका स्वतन्त्रता सग्राम के महान योद्धा जोमो के न्याता ने कहा था –"जब ईसाई मिशनरी (प्रचारक) अफ्रिका मे आये तो उनके पास बाईबल वा हमारे पास जमीन थी। इन्होने हमे आखें बन्द कर (इसा पर विश्वास करके) प्रार्थना करना सिखाया। जब हमने आखे खोली तो हमारे पास बाईबल थी व जमीन इनके पास जा चुकी थी"। पलक झपकते ऐसा महान चमत्कार करने वाली ये बाईबल भारत मे भी प्रकारान्तर से ऐसा ही कर चुकी है। मगर यह देश का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि इसमे कोई जोमो के न्याता पैदा नहीं हुआ। जो इस सत्य को साहस पूर्वक उद्घाटित कर सकता। यहा तो सोने की चिडिया कहे जाने वाले भारत के समृद्धि रूपी रक्त को डकारने के बाद भी देश के १/१२ भाग को हडप कर सपूर्ण भारत कोई गिद्ध दृष्टि से देखने वाले ईसाईयो को जो जून १९५२ की घर–बन्धु में पत्रिका' मे ये सामूहिक सकल्प व्यक्त कर चुके हैं। आज हमारे सामने सरगुजा का विस्तृत राज्य है जिसे मसीह के राज्य मे मिलाना है। को भी उत्साहित करने के लिए हमारे पजाब के तत्कालिन राज्यपाल श्री गाडगिल १९५६ की ६ फरवरी को घोषणा करते हैं ईसाई मिशनरियों ने जो काम परतन्त्र भारत के ५० वर्षो मे भी नहीं किया था वो काम स्वतन्त्र भारत के १० वर्षों मे कर दिया। चूकि सन्दर्भ परतन्त्र भारत का दिया है अत सहज अनुमन्य है कि वह काम भारत के विकास व गौरव गरिमा के हित मे तो नहीं होगा। यदि ऐसा माने तो इसका अर्थ निकलेगा कि परतन्त्र भारत म इसाई मिशनरी देश की उन्नति मे लगे हुए थे। ऐसा मानना हास्यास्पद ही नहीं लज्जाजनक भी है। पश्चिमी बगाल मे अलगाव की आग भडकाने मे इनके सक्रिय सहयोग को तत्कालिन गृह राज्य मन्त्री श्री योगन्द्र मकवाना ने स्पष्ट स्वीकारा था यहा तक कि २६ अगस्त १९७९ को प० बगाल की सरकार ने इन्हे बारिया बिस्तर बाध कर भाग जाने को साहसिक आदेश भी दिया था। मगर धर्म निरपक्षता की छत्रछाया के रहते हुए किसकी हिम्मत है कि देश के हित मे किसी देशद्रोही को भगा सके। सूडान ने स्वतन्त्र होते ही ऐसे ३० मिशनरियो को निष्कासित करके भगा दिया था। पडौसी नेपाल में भी स्व सस्कृति के अन्त के खतरे को भापकर धर्मान्तरण पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाकर इन्हे अपने अधिकार मे ले लिया था। कारण कि उनके पैरों में कथित व छद्म धर्म निरपेक्षता की लौह श्रृखलाऐ नहीं थी। उनके लिए राष्ट्रहित ही सर्वोपरि था। हे प्रभु ! कितना अच्छा होता कि ये देश को खडित करने वाली धर्म निरपेक्षता इस देश में भी न होती। तब का भारत विश्व का आदर्श होता। हमारे यहा समन्वय के नाम पर सिद्धान्तों की बलि देने वालों का स्थान के न्याता जैसे स्पष्टवादी [illegible] भक्तों को मिलता ! किसी भी देश की सभ्यता सस्कृति, व मान मार्यादा को छिन्न–भिन्न कर नष्ट कर डालने वाले ये ईसाई मिशनरी ढूढे नहीं मिलते और ये आरक्षण का बवेला।

दुर्भाग्य की पराकाष्ठा तो ये है कि इस उग्र आन्दोलन की शुरूआत मदर टेरेसा जैसी सेवा के लिए प्रसिद्ध मानवता की सेविका ने की है

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आज के सन्दर्भ में

पृष्ठ ३ का शेष

घृणित प्रथा को छोडकर केवल मानवता के आधार पर सरकार बनाने में सफल है जबकि ऋषि मुनियो और राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के देश मे कुछ देशद्रोही स्वार्थी लोग अपने स्वार्थ हित साघने हेतु सफल और मानवता को आधार की उपेक्षा कर वर्ग भेद के दूषित आधार पर सरकार बनाने मे जुटे हैं। इसके सामाजिक न्याय की आड मे फिर से अपना ताडव नृत्य दिखा रही है।

यही नहीं तथाकथित हरिजनो और अछूतो पर स्वर्ण हिन्दुओ के अत्याचार ने इतना उग्र रूप धारण कर लिया है कि विधर्मी लोग इस स्थिति का अनुचित लाभ उठाने में रत हैं। वैसे तो मुसलमान—ईसाई मिश्नरी दो भयकर चूहो के रूप मे इस असहाय हिन्दू जाति की जडों को मुद्‌तो से काटने मे लगे थे परन्तु आज स्थिति और भी भयकर हो गई है। इस कारण कि मुसलमानो तथा ईसाईयो का इस हिन्दू जाति के प्रति एकसा दृष्टिकोण है होने के कारण पूर्वान्तर क्षेत्र मे इन दोनो का गठ जोड होने जा रहा है और विदेशी धन के आधार वहा के गरीब लोगो को लोभ लालच देकर धडाधड अपना धर्म छोडकर विदेशी किया जा रहा है। यदि इस दूषित बढते हुए प्रभाव को समय रहते न रोका गया तो जल्दी ही यह सारा क्षेत्र विधर्मी बन जायेगा। दूसरी ओर मुसलमान मौलवी समुदाय विदेशी विपुल ध नराशि अरब देशो के पेट्रोल डालर की सहायता से यह धर्मान्तरण कार्य बडी तीव्र गति से कर रही है कुछ वर्ष पूर्व हुई दक्षिण भारत के मीनाक्षीपुरम की धर्मान्तरण की घृणित घटना से कौन परिचित नहीं हैं। यही नहीं कुछ समय हुआ कि हैदराबाद (दक्षिण) मे हुई एक मुस्लिम कांफ्रेस और लन्दन स्थित मुसलमानों के जमायती ने कुछ ऐसे प्रस्ताव भी पास किये थे कि शीघ्रतिशीघ्र पेट्रोल डालर की विपुल धनराशि को मदद से निम्न वर्गों के भोले—भाले साधन हीन अभावग्रस्त हिन्दुओ को लोभ—लालच और आवश्यकता पडने पर धमकिया देकर भारी सख्या मे मुसलमान बना दिया जाए। यदि मुसलमानो की यह धर्मान्तरण की योजना किसी तरह सफल हो जाती है तो एक दिन ऐसा भी आ सकता है कि आज का हिन्दू वर्ग यहा बहुसख्यक होता हुआ भी कुछ समय पश्चात कालान्तर में अल्पसख्यक हो जायेगा और यहा के रहने वाले मुसलमान पाकिस्तान तथा वगला देश की मदद से इस बचे—कुचे ऋषि—मुनियो राम—कृष्ण की जन्म—भूमि को मुस्लिम देश की घोषणा की माग करे। अत यह ध र्म—परिवर्तन का प्रश्न एक साधारण धार्मिक प्रश्न न होकर एक देशव्यापी राजनीनिक षडयन्त्र है जिसकी रोकथाम के लिए आर्य नेताओ विशेषकर आर्य युवको को बडे सतर्क होने की नितान्त आवश्यकता है।

यह ज्ञातव्य है कि आर्य समाज आरम्भ से विशाल हिन्दू जाति की रक्षा के लिए एक पुलिसमैन की तरह प्रहरी का कार्य करता चला आ रहा है। जब—जब और जहा—जहा भी इस जाति के किसी भी अग पर किसी दुष्वृत्ति वाले ने आघात (चोट) किया और विधर्मियो ने इनके देवी—देवता के अपमान करने की कुचेष्टा की तो आर्य समाज ने ही तुरन्त उनको मुहतोड उत्तर देकर उनकी रक्षा की। इससे प्रभावित होकर ही पजाब हिन्दू—सनातन धर्म सभा के महोपदेशक प. दीनदयाल ने एक बार आर्य समाज के निर्भीक उपदेशक प. लेखराम जी को कहा था कि जब तक आर्य समाज मे पण्डितो लेखराम जैसे उपदेशक मौजूद हैं तब कि किसी भी हिन्दू को किसी विधर्मी से भयभीत होने की कदाचित् भी आवश्यकता नहीं हैं। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने तो उपनिषद के शब्दो मे सहस्रो राज्यो के आनन्द से कहीं अधिक समाधी के आनन्द को भी लात मार कर इस हिन्दू जाति ही नहीं अपितु मानव कल्याण के वास्ते कार्य क्षेत्र मे उतरे और इसकी रक्षार्थ अपने जीवन की बलि दे दी। महर्षि तो इस देश जाति की दयनीय दशा को देखकर बडे पीडित रहते थे और रात्रि को सोते—सोते कूक मार कर उठ जाते थे और सेवक के पूछने पर दर्द की दवा लेने अथवा किसी डाक्टर को बुलाने वास्ते तो ऋषि दर्दभरी वाणी में कहा करते थे—इस दर्द की दवा किसी वैद्य डाक्टर के पास नहीं हैं।" उनके दिल की यह तडपन महात्मा भरत का राम—लक्ष्मण और माता सीता के वियोग की तडपन से कुछ कम नहीं थी। सन्त गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस मे भरत की पीडा का वर्णन कुद ऐसा किया है—

इसी तडपन के कारण महर्षि प्राय कहा करते थे कि जो देश की उन्नति करना चाहो तो आर्य समाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए नहीं कुछ हाथ न लगेगा क्योकि हम सबको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर अपना अब भी पालन होता है आगे भी होगा—उसकी उन्नति तन मन धन से सब मिलकर प्रीति से करें इसलिये जैसा आर्यसमाज आर्यवर्तीय देश (भारतवर्ष) की उन्नति का कारण हो सका है अन्य दूसरा और कोई नहीं हो सकता। अत आर्य समाज की उन्नति मे ही देश की उन्नति निहित है।

यह भी याद रहे कि इस बीसवीं शताब्दी मे जो देश समाज राष्ट्र मे नव जागरण का सूर्य चमक रहा है वह सब महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती और उनके द्वारा सस्थापित सर्व हितकारी सन्ध्या के प्रचार—प्रसार के कारण ही सम्भव हो पाया है।

परन्तु जैसा कि पहले सकेत किया जा चुका है कि राजनैतिक और स्वार्थी लोगो की दुष्वृत्तियो के कारण देश पतनोमुखी हो रहा है। इसी सकट की घडियो मे आर्य समाज अपने स्वरूप दायित्व और कर्तव्य को समझे और भ्रष्टाचार के महासागर मे डूबते देश की नैया को पार लगाने की क्षमता यदि किसी सस्था मे है तो वह केवल आर्य समाज मे ही है। आज देश के सारी सस्थाए और देश हितैषीआर्य समाज की ही ओर आखे लगाये है। किसी ने ठीक ही कहा है—

बडे गौर से सुन रहा था
जमाना दास्ता हमारी
मगर अफसोस
हम ही सो गये सुनाते सुनाते।

यदि हम समय रहते न जगे और एक जुट होकर हम कार्यरत न हुए तो आने वाली पीढी हमे ही इस पतन की जुम्मेदार ठहरायेगी।

अत समय की पुकार यही है कि सब आर्य सस्थाये अपने आपसी भेद—भावो को भुलाकर इस दयनीय घोर अन्धकर की स्थिति की चुनौती को स्वीकार करके कार्यरत हो जावे और अपने शुद्ध आचरण से देश समाज राष्ट्र को फिर से गौरवान्तित करे।

चमन लाल आर्य

आर्य समाज का निर्वाचन

बिजनौर आर्य प्रतिनिधि सभा व गढवाल का सगठनात्मक चुनाव निविरोध हुआ जिससे श्री जयनारायण अरूण प्रधान वैद्य आनन्द प्रकाश आर्य मत्री विरेन्द्र पाल गुप्ता को कोषाध्यक्ष पद पर चुना गया।

वीरोखाल (पौडी गढवाल) आर्य समाज सावली का सगठनात्मक चुनाव सम्पन्न।

श्री हेमराज प्रधान गगाप्रसाद रोहली मत्री और कोषाध्यक्ष श्री मोतीलाल को सर्व सम्मति से चुना गया।

फरीदा बाद आर्य समाज का निर्वाचन सम्पन्न जिसमे मूलराज मलहोत्रा प्रधान व्रज लाल कत्थाल मन्त्री एम. के. खट्टर कोषाध्यक्ष पद पर चुने गये।

आर्य समाज उदयपुर प्रधान पद पर श्री धूली राम बन्धु मन्त्री श्री विनोद कुमार आर्य कोषाध्यक्ष श्री हुक्म चन्द्र शास्त्री चुने गये।

सीतापुर आर्य समाज के प्रधान पद पर श्री रनवीर सिह मन्त्री श्री विजय कुमार शर्मा कोषाध्यक्ष श्री मदन गोपाल खेतान चुने गये।

दिल्ली—रोहिणी आर्य समाज के प्रधान पद पर श्री सुखदेव शर्मा मन्त्री श्री नरेशपाल आर्य कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र तनेजा चुने गये।

दिल्ली किजवे—आर्य कुमार सभा के प्रधान पद पर श्री उमेश चन्द्र तिवारी मन्त्री श्री रूपेश वतरा और सोरम भाटिया कोषाध्यक्ष पद पर चुने गये।

आर्य महरौली समाज दिल्ली के प्रधान पद पर श्री पुरूषोत्तम दास मन्त्री श्री एस. पी. सिह और कोषाध्यक्ष श्री आनन्द स्वरूप अग्रवाल चुना गया।

जम्मू—आर्य समाज रणसिह पुरा के प्रधान पद पर श्री महेन्द्र प्रकाश मन्त्री श्री अतुल कुमार और कोषाध्यक्ष श्री हरदयाल जी को चुना गया।

१९९९ के बनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर आयोजित

नई दिल्ली अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ की प्रवक्ता ईश्वररानी ने बताया कि प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी १५ मई से २ जून तक भारत की राजधानी दिल्ली रानी बाग (शकूर बस्ती) आर्य समाज मे शिविर का आयेजन किया गया। इस प्रक्रिया का शुभारम्भ अब से लगभग २५ वर्ष पूर्व आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान स्व. श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री ने किया था। सन १९९२ उनके देहावसान के पश्चात इस कार्य को उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमलता जी खन्ना निर्बाध रूप से गति दे रही हैं। श्रीमती खन्ना जी इस सस्था के मत्री पद को भी सुशोभित कर रही हैं। इस वर्ष इस शिविर मे मध्य प्रदेश राजस्थान उत्तर प्रदेश आदि के लगभग ७५ (पचहत्तर) प्रशिक्षार्थियो ने भाग लिया। शिविर के अतिम पाच दिनो मे सम्बन्धित गावो (जहा–जहा से प्रशिक्षार्थी आये थे) के २० सरपचो ने भी भाग लिया और सम्पूर्ण कार्यक्रम का अवलोकन किया।

उन्होने कहा आर्य समाज के छट नियम ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना" के आधार पर प्रशिक्षार्थियो को सन्ध्या हवन का अभ्यास कराया गया। व्यायाम द्वारा शारीरिक स्वस्थता की ओर भी ध्यान दिया गया तथा रूढिवादिता व विधर्मी कुचक्रो से सावधान रहने का प्रशिक्षण दिया गया। प्रतिदिन प्रात ५.३० बजे से ७ बजे तक सन्ध्या हवन उपदेश के द्वारा मार्ग दर्शन करने का कार्यक्रम चलता रहा। उपदेश स्व. श्री पृथ्वीराज शास्त्री द्वारा लिखित लघु पुस्तिका "सन्ध्या यज्ञ और आर्य समाज का साकेतिक परिचय के आधार पर दिये जाते रहे। सुबह ७.३० बजे से ८ बजे तक व्यायाम नियम पूर्वक होता रहा। ९ बजे से १२ बजे तक सध्या के मन्त्रो का शुद्ध उच्चारण अभ्यास कराया जाता रहा। मध्यान्ह तीन बजे तक टेलीविजन पर रामायण आदि कार्यक्रम दिखा कर अपने पुरातन इतिहास का परिचय दिया जाता रहा। जाति की एकता की परिपक्वता के लिए निम्न पाच सूत्रो का ज्ञान भी कराया गया– भाषा ओ३म् का झण्डा (गायत्री मन्त्र) वैदिक धर्म एक अभिवादन (नमस्ते)

उन्होने कहा कि सभी प्रशिक्षार्थियो को गावो मे इन पाच सूत्रों के प्रचार करने की प्रेरणा दी गई।

इस शिविर मे विभिन्न समयों पर आकर निम्न विद्वानो व अधिकारियो ने प्रशिक्षार्थियो को सम्बोधित किया–

१ श्री वन्देमातरम रामचन्द्रराव प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
२ श्री सोमनाथ जी मरवाह कार्यकारी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व प्रधान अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ
३ श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती
४ श्री आचार्य नरेश जी
५ ब्र. राजसिह जी
६ श्री डा. महेश जी विद्यालकार
७ डा. कृष्णलाल जी
८ श्री आहूजा जी
९ श्री रामनाथी जी सहगल

ग्रामीण अचलो के प्रशिक्षार्थी व सरपचो के ज्ञानवर्धन व मनोरजनार्थ बसो द्वारा हरद्वार गुरुकुल कागडी व ऋषिकेश आदि का भ्रमण भी कराया गया। मार्ग मे मुजफ्फर नगर मण्डी आर्य समाज के श्रद्धालु भाई बहनो ने सबका स्वागत किया तथा भोजनादि का प्रबन्ध भी किया। सघ उनका आभारी है।

हरिद्वार मे इनके ठहरने की व्यवस्था गुरुकुल कागडी मे रही। वहा के अधिकारियो ने उत्तम व्यवस्था करके खान–पान आदि का समुचित प्रबन्ध किया। इसी प्रकार वापसी मे पर व्यास आश्रम के अधिकारिकयों ने जलपान आदि द्वारा प्रशिक्षार्थियो की सेवा करके आशीर्वाद दिया।

२ जून ९९ को शिविर का समापन किया गया। प्रत्येक प्रशिक्षार्थी को जाने का किराया व कपडे आदि देकर विदा किया गया। रानी बाग के श्रद्धालु परिवारो व अन्य सहयोगियो ने खान पान की व्यवस्था की। जाते समय साथ का खाना भी भेट किया गया।

अन्त मे सब सस्थाओ व दानी महानुभावो के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सघ सबका धन्यवाद करता है।

द. अफ्रीका आर्य समाज के श्री गगादयाल का निधन

आर्य समाज के कार्य को भारी क्षति–एस राम भरोसे दक्षिण अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के सयुक्त मत्री श्री सीतू गगादयाल के असामयिक निधन पर अपना हार्दिक शोक प्रकट करते हुए सभा के प्रधान श्री एस रामभरोसे ने कहा कि उनक निधन से द अफ्रीका मे आर्य समाज को आगे बढने के प्रयास का तथा काय को भारी क्षति पहुची है। दक्षिण अफ्रीका क शानदार आर्य भवन के निर्माण मे भी उनका भारी योगदान था। उनके निधन से आर्य जगत शोक सम्पत परिवार के साथ दु खी है प्रभू से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्‌गति मिले।

स्वामी सत्यपति अस्वस्थ

स्वामी सत्यपति परिव्राजक कुछ समय से अस्वस्थ हैं। जिनका उपचार अहमदाबाद में चल रहा है। अत आर्य समाज के अधिकारी इस अस्वस्थ अवस्था मे प्रसार प्रचार के लिए अनुग्रह अथवा पत्राचार न करे।

वीरेन्द्र का निधन

नई दिल्ली–प्रमुख समाज सेवी श्री वसन्त बलराम के ४४ वर्षीय छोटे भ्राता वीरेन्द्र कुमार का गत दिवस निधन हो गया। वे भारतीय सर्वेक्षण विभाग मे कार्यरत थे।

दिवगत आत्मा की शान्ति हेतु शुद्धि यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमे सभी इष्ट मित्रो तथा सम्बन्धियो ने उन्हे यज्ञ मे आहूति देकर आत्मा शान्ति की परमात्मा से प्रार्थना की गई।

अभिनन्दन

नई दिल्ली वरिष्ठ पत्रकार व प्रमुख समाज सेवी श्री वालेश्वर अग्रवाल के ७६ वे जन्मोत्सव पर आयोजित एक समारोह में उन्हे राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के वयोवृद्ध नेता श्री वसन्त राव जी ओक न शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया वही राष्ट्रीय राजधानी विधान सभा के अध्यक्ष श्री चरटी लाल जी गोयल पूर्व सासद श्री कृष्ण मोदी तथा समाज सेवी लाला रमेश्वर दास गुहा ने उन्हे तिलक और पिच्चतर हजार रुपये की थैली भेट की।

समारोह को हिन्दी दैनिक के सम्पादक श्री नरेन्द्र मोहन दिल्ली विधान सभा के अध्यक्ष चरटी लाल गोयल तथा पत्रकार डा वेदप्रताप वैदिक ने सम्बोधित किया। सभी ने श्री अग्रवाल की समाज सेवा और राष्ट्रभक्त की उत्कृर्ण प्रेरणा बताया। दिल्ली विधान सभा अध्यक्ष श्री गोयल ने उनकी राष्ट्रभक्ति और समाज सेवा के कार्यो से नवयुवको को आदर्श बनाना चाहिए।

इस अवसर पर प्रख्यात पत्रकार प्रमुख समाज सेवी प्रखर प्रवक्ता श्री वालेश्वर अग्रवाल ने वहा समाज सेवा और राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा महामना मालवीय जी से ली वही राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ ने मुझे राष्ट्र सेवा के प्रति आत्म भाव की मिश्री खिलाई है। समारोह के सयोजक श्री सुभाष विद्यालकार पूर्व उपकुलपति हरिद्वारा गुरुकुल विश्व विद्यालय ने आये हुए अतिथियो का स्वागत किया।

आर्यवीर दल प्रान्त प्रमुखों की घोषणा

नई दिल्ली सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की युवा शाखा के प्रमुख श्री डा देवव्रन्त आचार्य ने भारत के प्रत्येक प्रदेश के युवाओ को सगठित करने और युग निर्माण की दृष्टि से चरित्रवान बनाने हेतु प्रदेश प्रमुख की नियुक्तिया निम्न प्रकार से की है।

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली—श्री विनय आर्य उत्तर प्रदेश आचार्य धर्मपाल हरियाणा उमेद शर्मा राजस्थान से सत्यवीर सिह मध्य प्रदेश वावू लाल आनन्द महाराष्ट्र प्रो एकनाथ कर्नाटक—शशि कुमार उडीसा सूबेदार वेंकटेश आन्ध्र प्रदेश भीखू भाई गुजराल कृष्ण चन्द्र आर्य हिमाचल नारायण दास जी।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के मुखिया ने अपनी प्रेस विज्ञप्ति मे बताया कि विहार बगाल और पजाव के वरिष्ठ अधिकारियो से सम्पर्क जरूरी है। नाम आते ही इन राज्यो मे भी युवा—प्रमुखो की नियुक्ति कर दी जायेगी।

सदाचार अथवा चरित्र का महत्व

धर्मसिह शास्त्री,

लीजिए हमको शरण में हम सदाचारी बनें ब्रह्मचारी धर्म रक्षक, वीर व्रतधारी बने।

वैदिक मत्रो म हमारे ऋषियो और महात्माओ ने इसी लिए परिमपिता परमात्मा से प्रार्थना की है –

"असतो मा सदगमय तमसो मा ज्योतिर्गमय तृत्योमा अमृत गमय।" अर्थात हे ईश्वर मुझे असत्य से सत्य की ओर ले जाना अन्धकार से मुझे प्रकाश की ओर ले जाना। असत्य और अन्धकार का सम्बन्ध मनुष्य की चरित्रहीनता से है। मैथिलीशरण गुप्त ने सदाचार को स्वर्ग और दुराचार को नरक माना है जैसे कि

खलो को कही भी नही स्वर्ग है
भला के लिए तो यही स्वर्ग है।
सुनो स्वर्ग क्या है ? सदाचार है
मनुष्यत्व की मुक्ति का द्वार है।
नही स्वर्ग कोई धरावर्ग है
जहा स्वर्ग का भाव है स्वग है।
सदाचार ही गौरवागार है
मनुष्यत्व ही मुक्ति का द्वार है।।

बुरी सगत से शिक्षा दीक्षा का प्रभाव समाप्त हो सकता है क्योकि कहा गया है कि सत्सगति दोषगुणा भवन्ति अर्थात दोष और गुण सत्सग से ही उत्पन्न होते हैं। सत्सगि निम्न से निम्न व्यक्ति को उत्तम बना देती है गोस्वामी जी ने कहा

सठ सुधरहि सत्सगति पाइ पारस परस कुवा तु सुहाई, अत पारस पत्थर का स्पर्श करते ही लोहा भी सोना बन सकता है इसी प्रकार व्यक्ति भी सत्सगति से सुधर जाते है "कीटोअपि सुमन सगत अरोहत सता शिरा अर्थात साधारण कीडा भी फूलो की सगति से बडे मे बडे दवताओ और महापुरूषो के मस्तक पर चढ जाता है। "सत्सगति कवय कि न करोति पुसाम"— स्वानुभाव भी मनुष्य को सचरित्र बनने मे सहायक सिद्ध होते है। अग्रेजी मे कहावत का भाव यह है कि "अगर मनुष्य का धन नष्ट हो गया तो उसका कुछ भी नष्ट नही हुआ और यदि उसका चरित्र नष्ट हो गया तो उसका सबकुछ नष्ट हा गया।" शुद्धाचरण से मनुष्य को धन भी प्राप्त होता है और वह दीर्घजीवी भी होता है उसकी सन्तान अच्छी होती है। एक अन्य श्लोक मे कहा गया है कि –

आचाराल्लभते आयु आरादीप्सिता प्रजा।
आचारलभते ख्याति आरालभते धनम।।

आजाद हिन्द फौज का जब निर्माण हुआ तो घोषण की गई कि भारतीयो तुम मुझे अपना खून दो मे तुम्हे अपनी खोई गयी स्वतत्रता दूगा। चरित्रबल हमारे देश की ओर समाज की प्रधान समस्या है। हमार महान नेता महात्मा श्री मोहनदास करमचन्द गाधी ने कूटनीतिक चातुर्थ को बडा नहीं समझा बुद्धि विकास को बडा नही माना। चरित्र महत्व को ही बडा माना है। यह चरित्रबल भी केवल एक ही व्यक्ति का नही समूच देश का होना चाहिए ओर चारित्र को सुधारने का प्रयत्न करत रहना चाहिए।

वृत यत्नेन सरक्षेत वित्तमायाति याति च।
अक्षीणे वितत क्षीणो वृत्ततस्तु हतोहत।

अथात चरित्र की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। सदाचार के महत्व को समझना चाहिए। धन तो आता है और चला जाता है। धन से क्षीण हुआ मनुष्य क्षीण नही हुआ परन्तु जिस मनुष्य का चरित्र नष्ट हो जाता है और सदाचार के महत्व को नही समझता वह तो नष्ट है ही।

ईसाईयों को आरक्षण का औचित्य

पृष्ठ ८ का शेष

तो सभी राजनैतिक दलो को साप सूघ गया। केवल भाजपा जैसे राजनैतिक अछूत दल की प्रवक्ता ने बडी शालीनता से उन्हे इस कार्य पर पुनर्विचार की राय दी। भारत की मानसिकता भी बडी रहस्यमयी है जब वे आपके अनपढ पिछडे आदिवासियो की सेवा के मार्ग पर धर्मान्तरण द्वारा राष्ट्रीयता परिवर्तित कर रही थी तो उन्हे एक उच्च मानद सम्मान से विभूषित किया। आज जब उसका परिणाम सामने है तो इस पर पुनर्विचार की राय दी जा रही है। हम कितनी जल्दी भूल जाते है कि हमारी लाठी छल—कपट व भुलावा देकर लेने वाला व उसी से हमारा ही सिर फोडने को आतुर व्यक्ति प्रार्थना को कितना महत्व देता है ?

हमारे कुछ बुद्धिजीवी तर्क देते हैं कि ईसाई समाज मे सवर्ण अवर्ण होते ही नहीं तो आरक्षण कैसा ? ये तर्क बच्चो मे चल सकता है। कारण कि प्रश्न ईसाई समाज की रचना व व्यवस्था का नही समस्या भारत की है तो समाधान भी भारतीय रीति नीति व मानसिकता से होगा। जब यहा ब्राह्मण घर मे जन्म लेकर शराब अण्डा मास का खुला सेवन करने वाला—वेद यज्ञ तप त्याग सयम का नाम तक न जाननेवाला ब्राह्मण ही बना रह सकता है। तो दलितो न ईसाई होकर कौनसा पाप किया जो वे दलित नहीं रहे। कथित धर्म परिवर्तन ही यदि ऐसा पाप है तो शासन ने इसे रोकने के लिए प्रयास क्यो नही किये ? क्यो मिशनरियो को प्रोत्साहन दिया गया। दूसरा तर्क हमारे विधि विशेषज्ञो द्वारा दिया जाता है कि धर्म के आधार पर आरक्षण देना हमारे सविधान मे नही है। ऐसे महानुभावो को कथित केसरी से पूछना चाहिए कि मुसलमानो को आरक्षण की बात किस आधार पर की जा रही है ? दूसरे यह सर्वविदत है कि सविधान मे जनहित के लिए सशोधन होते रहे हैं व होते रहेगे। सविधान जनता के लिए है जनता सवधिान के लिए नही। कम से कम वर्तमान राजनीति ने तो ये सिद्ध कर दिया है कि सविधान केवल सत्ताधारियो की स्वाथ साधना (वोट बैक) के लिए कभी भी किसी भी प्रकार परिवर्तित व परिभाषित किया जा सकता है। शाहबानो प्रकरण मे जो कुछ हुआ वो ईसाईयो के लिए क्यो नहीं ? सर्वोच्य न्यायालय का हर आदेश कानून के कन्धो पर बैठकर ही जनता मे आता है। समान नागरिक सहिता का आदेश क्या सविधान के प्रतिकूल था ? जब कानून की माग को टाला जा सकता है कानून हटाये और बनाये जा सकते है। तो आरक्षण के लिए ऐसा क्यो नहीं ?

निष्कर्षत यही कहा जा सकता है कि वर्तमान मे लोकतन्त्र को दुरूपयोग चरम पर है। उसमे किसी अनर्थ की सम्भावना से चौंकना नही चाहिए। सत्ताधीशो ने भारतीय जनता को क्षेत्रीय हितो मे उलझा कर हमारे राष्ट्रीय चिन्तन को कुण्ठित कर दिया है। जब तक राजनीति भारत की प्राचीन सभ्यता सस्कृति साहित्य सस्कार व वेद शास्त्रो से नही जुडेगी तब तक ऐसे दुष्चक्र चलन ही रहेगे। इन्हे किसी प्रकार भी रोका नही जा सकता।

****

R N No 626/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 25/26-7-1996

सांसदों को पत्र

माननीय बन्धु

भारतीय ससद की लोक सभा के सदस्य चुने जाने पर हम आपका हार्दिक अभिनन्दन करते है।

आप जानते ही होगे कि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार दलित हिन्दुओ से ईसाई बन लोगा को भी आरक्षण की समस्त सुविधाए देने के उद्देश्य से इसी सत्र मे एक बिल पेश करने जा रही है।

आय समाज के अन्तर्राष्ट्रीय प्रधान श्री वन्देमातरम रामचन्द्रराव जी ने समूचे देश की राष्ट्रवादी सस्थाओ को ऐस प्रयास क. विरोध करने का आह्वान करते हुए एक अपील जारी की है जिसकी एक प्रति इस पत्र के साथ सलग्न की जा रही है।

यदि इस प्रकार का कानून पारित होता है तो सारे भारत की राष्ट्रवादी जनता इसका पूर्ण विरोध करेगी। एसा निम्न मुख्य बिन्दुओ के कारण होगा

१ दलित ईसाईयो को आरक्षण भारतीय सविधान के प्रावधानो के पूर्णत विरूद्ध है।

२ दलित ईसाईयों को आरक्षण देने से धर्मान्तरण की गतिविधिया बढेगीं।

३ इस साम्प्रदायिक आरक्षण व्यवस्था से मुसलमान भी आरक्षण की माग करेगे जिससे समाज मे और अधिक तनाव उत्पन्न होगा।

४ दलित ईसाईयो को आरक्षण से हिन्दु दलितो को मिलने वाली आरक्षण सुविधा मे कटौती होगी। अत हिन्दु दलितो को भी इस आरक्षण सुविधा के विस्तार का भरपूर विरोध करना चाहिये।

५ दलित ईसाईयो को आरक्षण से वे दोहरे लाभ प्राप्त करने के हकदार होगे जो कि न्यायसगत नहीं है। ईसाई होने के नाते वे अल्पसख्यको के लाभ लेगे तथा साथ ही बहुसख्यक हिन्दु समाज के दलितोद्धार के लिए बनाई गई इस आरक्षण व्यवस्था का भी लाभ उठायेगे। कोई व्यक्ति एक ही समय पर अल्पसख्यको तथा बहुसख्यको दोनो को मिलने वाला लाभ नहीं ले सकता।

६ दलित ईसाईयो आरक्षण से f भविष्य में लो तथा विधान के लिए आरक्षित सीटो पर भा ईसाई समुदाय कब्जा कर लेगा। धन के बल पर उनके लिए एसा करना कठिन नहीं होगा। इन परिस्थियो मे ईसाई आरक्षित सीटो पर भी चुनाव लड सकेगे तथा अन्य अनारक्षित सीटो पर भी वे चुनाव लडने के हक दार होगे। इन प्रावधानो के चलते वह दिन दूर नहीं जब ससद में ईसाई सदस्यो की भरमार होगी। ऐसी परिस्थितियो मे जरा विचार करे कि क्या भारत मे परोक्ष रूप से अमरिका और इग्लैण्ड जैसे ईसाई देशो का राज्य कायम नहीं होगा ?

करने के लिए ... **बहुत शीध ही रग दिखाने वाले है।** अत आपसे निवेदन है कि राष्ट्रहित मे इस प्रकार के प्रयासो के विरूद्ध भारतीय ससद को राष्ट्रवादी जनता की भावनाओ से अवगत कराने का कष्ट करें।

शुभ कामनाओ सहित

भवदीय

सूर्य देव
उप प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन,
रामलीला मैदान नई दिल्ली

धरती का स्वर्ग रहे ?

गुरुकुल को देकर प्राण–दान नर–कुल को धन्य महान किया।
देवेन्द्र देव स्वामी महान–ऋषि पर जीवन बलिदान किया।

शैशव से रहकर रागहीन वैराग्य आग मे ज्ञान जगा
ऋषि–आदर्शो के अनुरागी तपसी त्यागी का ध्यान जगा।

तपते–तपते तपसी जीवन विद्या विवेक निष्णात हुआ।
जागते–जागते ही जग को अज्ञात निशा मे प्रात हुआ।।

गुरु 'ब्रह्मदत्त के शिष्य बने व्याकरण–भानु का तेज लिये
गुरु ब्रह्मानन्द शरण मे आ दर्शन–साहित्य सहेज लिये।

आजन्म ब्रह्मचारी रहकर जग प्रेय–मार्ग को त्याग दिया
जन मगल का पावन व्रत ले श्रुति–श्रेय मार्ग का राग लिया।।

ऋषि 'दयानन्द का दिव्यं स्वप्न अनवरत जगाये अन्तर मे
अज्ञान अविद्या–तम हरकर आलोक रश्मि भर घर–घर मे।

ऋषि शिक्षा के अनुरूप आप शुचि आर्ष ज्ञान के दानी बन
जीवन का तिल–तिल होम दिया ऋषि परम्परा के मानी बन।।

तप स्वाध्याय निष्काम–दान ही जीवन के आदर्श रहे
आर्यो का गौरव शिखर सदा धरती का भारतवर्ष रहे।

तुम इसी लक्ष्य की वेदी पर जीवन का कण–कण चढा गये
'गुरुकुल गौ 'ज्ञान महत्ता को निज आचरणो बढा गये।।

तप त्याग तुम्हारा उदाहरण 'गुरुकुल साक्षात गवाही है।
पद–चिन्ह पडे रह गये यहा आगे जा पहुचा राही है।

बलिदानो से सीचे बिरवे इक दिन निश्चय हरियायेगे।
जीवन के जलधन बरसेगे अमृत के बादल छायेगे।।

आवश्यक सूचना

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी मे प्रवेश प्रारम्भ है। कक्षाए–शिशु से एम ए (आचार्य) तक/आर्ष पाठ पद्धति–अग्रेजी विज्ञान के सहित/पी–एच डी की भी सुविधाए/निर्धन सहायता छात्रवृत्तिया/स्नातिकाओ का भविष्य अति उज्जवल/भूकम्प पीडित एव आर्य कार्यकर्ताओ को वरीयता/ स्थान सीमित/सम्पर्क सूत्र–

डा पुष्पावती अध्यक्ष
डा ४५/१२६ नई बस्ती
रामापुरा, वाराणसी

देवप्रिय आर्य का निधन

सोनीपत आर्य समाज के प्रधान श्री प दे वप्रिय आर्य का गत दिवस स्वर्ग वास हो गया।

पदेवप्रिय आर्य एक सत्यनिष्ठ ओर सिद्धान्त वादी समाज सेवी थे। आपने स्वधीनता सग्राम मे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। समाज को आपके निधन से गहरा आघात हुआ है। जिसकी तत्काल पूर्ति सम्भव नहीं है। प्रभु उन्हें सद्गति दे।

करें सार्थक नर

करे सार्थक नर–जीवन कीं
सफल बने निज धर्म

अपने कर्तव्यो के प्रति–हम
होकर सजग करे निज कर्म

सत्य अहिसा की राहों पर
हम जीवन–ज्योति जलाए

हर प्रकार के प्रदूषण को
समूल नाश कर जाए

अधियारे को देर भगाकर
अमृत ज्योति जलाए

परहित राष्ट्रहितो मे हम
सारा जीवन अर्पित लाए

दुख दरिद्र बाधाओ को
मिलकर करें प्रशस्त

अमानवीय अनृत का भानु
जल्दी हो जाए अस्त

वेदज्ञान विज्ञान बढाए
सुधासार सुख पाए

जनहित मे अपना हित समझे
ऐसा पावन हृदय बनाए

मानवीय मूल्यों के हित मे
सब मिलकर आगे आए

यह करूणा भाव जगाए।

अखिलेश आर्येन्दु

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली–2 से प्रकाशित

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् — विश्व को श्रेष्ठ (आर्य) बनाएँ

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

दूरभाष ३२७४७७१ ३२६०९८५ आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये वार्षिक शुल्क ५० रुपए एक प्रति १ रुपया

वर्ष ३५ अंक २८ दयानन्दाब्द १७२ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ सम्वत् २०५३ श्रावण शु० ११ २५ अगस्त १९९६

दिल्ली में विशाल संवाददाता सम्मेलन

दलित ईसाईयों को आरक्षण का व्यापक विरोध

देश भर में दलित बचाओ आन्दोलन चलाया जायेगा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर एकत्रित देश भर के आय नेताओ ने एक मत से दलित इसाईयो को आरक्षण के विरोध मे व्यापक आन्दोलन प्रारम्भ करने पर विचार किया बैठक मे इस विषय पर सभी चर्चा के बाद प्रमुख आर्य नेताओ ने अगले दिन एक सवाददाता सम्मेलन को सम्बोधित किया

सवाददाता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान श्री वन्देमातरम जी ने कहा कि भारत की स्वतत्रता के पश्चात राष्ट्रीय राजनीति और राजनीतिज्ञो का मुख्य मुददा हिन्दू समाज को जो सदियो से बिना भेदभाव सबके साथ रह रही थी विभाजित करना और मुस्लिमो तथा ईसाईयो को खुश करना रहा है। यह सब धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हुआ है इस बात को सामाजिक न्याय के नाम पर मडल आयोग की सिफारिशो से और अधिक बढावा मिला। इसका फल यह हुआ कि भारतीय समाज विघटन के कगार पर पहुच गया। राजनीति और समाज मे अपराधीकरण का उदय हुआ। समाज का विभाजन तो हुआ ही इसके साथ राष्ट्र के प्रत्येक क्षेत्र मे भ्रष्टाचार फैल गया। यह सब धर्म तथा जातीयता के नाम पर हो रहा है। आज राष्ट्र तथा समाज विभाजन के कगार पर तो पहुचा ही है साथ ही भारतीय सस्कृति भी ह्रास के किनारे पर पहुच गई है।

श्री वन्देमातरम जी ने कहा कि काग्रेस द्वारा मतान्तरित ईसाईयो को हिन्दू दलितो के समान दिये जाने वाले आरक्षण के लाभ पहुचाने की असफल चाल को अब अपने आपको धर्म निरपेक्ष कहने वाली वर्तमान साझा सरकार ने चलाने का निश्चय किया है। वह धर्म निरपेक्षता की आड में हिन्दू दलितो के हितो की कुर्बानी देकर दलित वोटों को बटोरने के उद्देश्य से एक विधेयक इस सत्र में लाना चाहती है। इस विधेयक द्वारा हिन्दू दलितो के आरक्षण/प्रतिशत मे कटौती तो होगी ही पर इससे अधिक अन्य हिन्दू दलित वर्ग भी आकर्षित होकर ईसाई मत को अपनायेगा। इससे धर्म परिवर्तन को भी बढावा मिलेगा

समस्त प्रातीय नेताओ ने जोर देकर कहा कि आर्य समाज ने इस विधेयक का घोर विरोध करने का निश्चय किया है क्योंकि किसी को अल्प सख्यक वोट बटोरने की राजनीति [illegible] को धम निरपेक्षता के उपदेश की आवश्यकता नहीं है

यदि आज भारत मे साम्प्रदायिक विभाजन के पश्चात भी धम निरपेक्षता का घोष सनाई दे रहा है तो इसका कारण हिन्दू बहुमत की सहन शीलता है न कि यह भ्रष्टाचारी छाती पीटने वाले राजनीतिज्ञो की घोषणाय जो सामाजिक न्याय का अर्थ भी नही जानते है

आर्य समाज जो एक अन्तर्राष्ट्रीय समाज सुधारक सस्था और जो वैदिक सस्कृति के पुनरुद्धार का कार्य कर रही है ने भारत की स्वतत्रता मे सबसे आगे रहकर स्वतत्रता के लिए कार्य ही नही किया अपितु भारत माता के चरणो में बलिदानो की झडी लगा दी। यह अब सामाजिक न्याय व धम निरपेक्षता के नारे लगाने वाला के सामने मूकदर्शक बनकर नही रह सकता आर्य समाज अ दलित बचाओ आन्दोलन की घोषणा करता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरग तथा साधारण सभा मे की अपनी बैठक मे सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम रामचन्द्रराव का इस आन्दोलन की रूपरेखा तेयार कर उसे चलाने का सव सम्मत अधिकार दिया है राष्ट्रीय स्तर की हिन्दू सस्थाये उन्हे पहले ही अपने पूर्ण समर्थन का आश्वासन दे चुकी है

इस सम्बाददाता सम्मेलन से पूर्व उत्तर प्रदेश बिहार पजाब बगाल आन्ध्रप्रदेश राजस्थान कर्नाटक गुजरात तमिलनाडु आसाम जम्मू काश्मीर उडीसा मध्य प्रदेश दिल्ली तथा हिमाचल प्रदेश आदि प्रान्तो से आये आर्य नेताओ ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन मे भी भाग लिया ◆

शराब विरोधी आदोलनो को समर्थन

आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय प्रधान श्री वेन्देमातरम रामचन्द्र राव ने सारे देश मे शराब विरोधी मुहिम चलाने के लिए देश भर की आर्य समाजो को निर्देश जारी किए हैं। आन्ध्र प्रदेश से आए कुछ आर्य नेताओ की एक बैठक मे श्री वन्देमातरम ने चन्द्र बाबू सरकार को भी चेतावनी देते हुए कहा है कि यदि आन्ध्र मे शराब बन्दी हटाई गई तो इस सरकार को एक दिन भी चलने नहीं दिया जाएगा। प्रान्त के आर्य समाजी व्यापक आन्दोलन करेगे।

श्री वन्देमातरम ने कहा कि पूरे देश मे जहा अन्य सस्थाए भी शराब विरोधी आन्दोलन चलाएगी वहा स्थानीय आर्य समाजे उन्हे पूर्ण समर्थन देगी। उन्होने कहा कि शराब के ठेको को आग के हवाले कर दिया जाना चाहिए परन्तु व्यक्तिगत हिसा को बढावा न दिया जाए।

श्री वन्देमातरम ने आन्ध्र की पूर्व सरकार तथा हरियाणा की वर्तमान सरकार की भरपूर प्रशसा करते हुए कहा कि राष्ट्रवादी तथा सामाजिक पृष्ठ भूमि वाले मुख्य मत्रियो को इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मत्री

सम्पादक डा.सच्चिदानन्द शास्त्री

ईसाईयों को आरक्षण के विरुद्ध हस्ताक्षर अभियान

सार्वदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे दलित ईसाईयो को आरक्षण दिए जाने के केन्द्रीय सरकार के प्रयासो के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी अभियान के तहत एक ज्ञापन पत्र हस्ताक्षर योजना प्रारम्भ की गई है इस योजना के अनुसार लगभग १ करोड हस्ताक्षरो सहित एक ज्ञापन पत्र राष्ट्रपति जी को सौपा जाएगा। प्रत्येक प्रान्तिय प्रतिनिधि सभाओ सारे देश की आर्य समाजो तथा अन्य राष्ट्रवादी सगठनो से सभा प्रधान श्री वन्देमातरम जी ने आह्वान किया है कि इस हस्ताक्षर अभियान मे सहयोग कर। ज्ञापन हस्ताक्षर पत्र का नमूना यहा प्रकाशित किया जा रहा है। आप से निवेदन है कि इसी प्रारूप को सादे कागज पर तैयार करके यथा सम्भव अधिक से अधिक हस्ताक्षर करवा कर सार्वदेशिक सभा कार्यालय ३/५ दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली २ के पते पर भेजे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के ज्ञापन-पत्र के समर्थन में

हम भारत के नागरिक धर्मान्तरित ईसाई दलितों को हिन्दू दलितों के समान आरक्षण देने के प्रयास का विरोध करते हैं। धर्म के आधार पर आरक्षण अथवा अन्य लाभ राष्ट्र की एकता-अखण्डता के लिए घातक हैं तथा असवैधानिक है।

क्रम सख्या	नाम व पता	हस्ताक्षर

वेद सप्ताह एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टी पर्व

आय समाज ग्रेटर कैलाश-१ नई दिल्ली के तत्वावधान मे २४ अगस्त से ५ सितम्बर तक श्रावणी पर्व वेद सप्ताह एव श्री कष्ण जन्माष्टमी पर्व समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर प० श्यामसुन्दर जी स्नातक के ब्रह्मत्व मे अथर्ववेद परायण यज्ञ भी सम्पन्न होगा। प्रतिदिन प० श्याम सुन्दर जी स्नातक प० वेद कुमार जी के प्रवचन तथा श्री गुलाव सिह राघव के भजनोपदेश सुनने हेतु अधिक से अधिक सख्या मे पधारे। ५ सितम्बर को यज्ञ की पूर्णाहुति एव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व श्री योगेश जी मुजाल की अध्यक्षता मे सम्पन्न होगा। इस अवसर पर डा० महेश विद्यालकार डा० प्रेमचन्द जी श्रीधर सहित अनेको अन्य प्रतिष्ठित विद्वान पधार रहे है। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर धर्म लाभ उठाये। *अशोक कुमार पाहुजा प्रधान*

प्राणनाथ घई एडवोकेट

मत्री

श्रावणी वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज किराना बाजार गुलबर्गा मे २४ से २८ अगस्त ६६ तक श्रावणी वेदप्रचार सप्ताह हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर प्रसिद्ध युवा भजनोपदेशक प० योगेशदत्त जी आर्य मुनि वशिष्ठ जी आर्य तथा प० राजवीर जी विद्यावाचस्पति पधार रहे हैं। इस अवसर पर विशाल गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया है। इस यज्ञ की पूर्णाहुति २८ अगस्त को सम्पन्न होगी। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाये।

हाउसिंग सोसायटी के अध्यक्ष की जमानत याचिका खारिज

नई दिल्ली १८ अगस्त। आय नगर ग्रुप कापरेटिव हाउसिग सोसाईटी पटपडगज के अध्यक्ष हरिदेव आर्य की अग्रिम जमानत की याचिका अदालत ने खारिज कर दी है। अतिरिक्त सेशन जज बीएस चोधरी ने आज अपने फैसले मे कहा कि सासायटी के अध्यक्ष के नाते हरिदेव आर्य धोखाधडी के आरोपी है। उन्होने गलत तरीके से सोसायटी के सदस्यो को फ्लेट आबटित किये हैं इसम मोटी रकम के गोलमाल का अदेशा है। इसलिए अदालत हरिदव आर्य की अग्रिम जमानत की याचिका खारिज करती है।

श्री आर्य के खिलाफ सोसायटी के सदस्य लक्ष्मीचद्र डा० सुनील रहेजा और नवीन बगई ने पुलिस में साझी शिकायत दर्ज कराइ थी। कनाट प्लेस थाने मे एक अगस्त का दर्ज रपट के मुताबिक हरिदेव आर्य ने उन तीनो को १६८१ से लगातार ग्रुप ए के मकान का पैसा दने के बावजूद ग्रुप बी का मकान अलाट कर दिया। जबकि इसी वर्ष नए दनाए सदस्यो को ग्रुप ए का मकान अलाट किया। तीनो ने आरोप लगाया कि नए सदस्यो से लाखो रुपए रिश्वत लेकर करीब दस बारह पुराने सदस्यो के साथ यह हराफेरी की गई है।

इस शिकायत के आधार पर पुलिस ने हरिदेव आर्य को घर और दफ्तर के पते पर तलाशा। फिर मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट वी०के० महेश्वरी की अदालत से उनकी गिरफ्तारी के आदेश हासिल किए। अदालत ने दस सितबर तक हरिदव आर्य को गिरफ्तार कर पेश करने को पुलिस को आदेश दिया था। इस बीच पुलिस ने सासायटी के मकानों की वीडियो फिल्म भी बनवाइ जिससे साफ जाहिर होता है कि अधबने मकान पुराने सदस्यो को आवटित कर दिए गए हैं। अपनी गिरफ्तारी के आदेश को चुनौती देते हुए हरिदेव आर्य ने अतिरिक्त सेशन जज श्री चौधरी की अदालत मे अग्रिम जमानत की याचिका दायर की थी।

वेद जयन्ती समारोह

आर्य समाज मदिर १५ हनुमान रोड नई दिल्ली म श्रावणी पर्व के अवसर पर यजुर्वेद परायण यज्ञ सामूहिक यज्ञोपवीत सस्कार सगीत एव प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किये गये है। प्रतिदिन २८ अगस्त से ५ सितम्बर तक आचार्य श्री रामकिशोर जी शर्मा के ब्रह्मत्व म यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयाजन किया गया हैं इस अवसर पर श्री श्यामवीर राघव के भजनोपदेश होगे। ५ सितम्बर का यज्ञ की पूर्णाहुति तथा छात्र छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता भी सम्पन्न होगी।

शिलान्यास समारोह एवं वेदप्रचार सप्ताह

आय समाज मदिर नागल राया दिल्ली मे भव्य भवन निर्माण हेतु शिलान्यास समारोह १८ अगस्त को प्रात ११ बजे से प्रारम्भ हो रहा है शिलान्यास प्रसिद्ध समाज सेवी महात्मा धमपाल जी के कर कमलो से सम्पन्न होगा। इस अवसर पर डा० दवव्रत आचार्य के ब्रह्मत्व मे यज्ञ सम्पन्न होगा तथा आचार्य विश्वबन्धु जी श्री यज्ञमुनि वानप्रस्थी क प्रवचन तथा श्री शोभा राम प्रेमी के भजनोपदेश हागे।

महर्षि शाण्डिल्य के इन शब्दो म कितना गूढ ज्ञान छिपा है यह केवल विचार करने पर ही जाना जा सकता है। जितना गहन चिन्तन इसका किया जायेगा उतनी अधिक सामर्थ्य मनुष्य को अपने को समझने की प्राप्त होगी। परन्तु यह ससार तो परमपिता परमात्मा का बनाया हुआ है। फिर मनुष्य अपने ही बनाए हुए ससार मे कैसे रहता है ? यह एक विचित्र पहेली सी मालूम होती है परन्तु यह शाश्वत सत्य है इसे निश्चय जानिये। तीन अनादि हैं – परमात्मा जीव और प्रकृति इनमें प्रथम प्रकृति को लीजिए। प्रकृति का केवल एक ही गुण है कि यह अनादि है नित्य है। दूसरा है जीव यह भी नित्य है और रहेगा परन्तु नित्यता के साथ–साथ इसमे दूसरा गुण है ज्ञान का अर्थात जीव अनादि है और ज्ञानवान भी। तीसरा है परमात्मा परमात्मा अनादि है ज्ञानवान है परन्तु उसका स्वरूप आनन्दमय है वह अनादि सर्वज्ञ और आनन्द का भण्डार है।

साधन को साध्य मान लेना

अपने कर्मो के अनुसार जीव विभिन्न योनिया मे जन्म पाकर आनन्द की इच्छा करता है वास्तविकता यह है कि परमात्मा की स्थिति उस चुम्बक की तरह है जो अपनी आनन्द शक्ति के कारण सदैव जीव रूप लोहे को अपनी ओर आकर्षित करता है। जीवन का भी आनन्द प्राप्ति से वचित कर देता है। मनुष्य अपने लक्ष्य से भटक कर परमात्मा से प्राप्त साधन रूप प्रकृति को अपना साध्य मान लेता है और अपने लिए एक नई अपनी ही बनाई हुई सृष्टि मे निवास करने लगता है।

जर को ही जिन्दगी का सहारा समझ लिया,
मल्लाह ने किश्ती को किनारा समझ लिया।
चुन्धिया गई है आखे भोगो की चमक से,
भोगों को जिन्दगी का दुलारा समझ लिया।।

इस प्रकार मनुष्य एक मकडी की तरह अपने लिए सुखमय जाल अपने ही शरीर से बुनकर तैयार करता है और उसी मे फस जाता है कोई मार्ग उससे बाहर आने का न पाकर उसी मे अपने जीवन के अमूल्य क्षणो को खो बैठता है।

स्वनिर्मित संसार में जन्म

यह तो सत्य है कि ससार को परमात्मा ने रचा है परन्तु जीव के लिए कैसा हो इसका निर्णय तो जीव को स्वय करना है इसलिए जैसा ससार मनुष्य अपने कर्मों के द्वारा अपने लिए बनाता है वैसे ही ससार मे वह रहता है। इस लोक में ही नहीं अपने भावी जीवन के प्रारब्ध का निर्माता भी मनुष्य स्वय है। परमपिता परमात्मा जीव का कल्याण चाहते हैं अत कर्मों के अनुसार न्याय देकर बार–बार इस ससार में जीव को विभिन्न योनियों में जन्म देते हैं। यह जीव पर निर्भर है कि उसका यह ससार कैसा हो। ठीक ही कहा है

तेरा करम तो आम है दुनिया के वास्ते।
मैं कितना पा सका यह मुकद्दर की बात है।।

ससार का निर्माण विचाराधीन

इस स्वय के द्वारा निर्मित ससार की रचना जीव के द्वारा अपने विचारो के आधार पर होती है इसलिए हमारे जीवन का प्रथम आधार है हमारे विचार। विचार का आधार है हमारे सस्कार जो हम अपने समाज स अपने माता–पिता गुरुओ सम्बन्धियो और पडोसियो से प्राप्त करते हैं। इन्हीं अच्छे सस्कारा की प्राप्ति ही शिक्षा का उद्देश्य है। धर्म का लक्ष्य भी मनुष्य के कर्मो का शुभ मार्ग पर प्रेरित करना है।

Religion provides a moral base for all the activities of a man-Mahatama Gandhi.

अच्छे सस्कारो से अच्छे विचारो की प्राप्ति और विचारो से ही किए गए कर्मो का फल भी शुभ होता है। इन्ही कर्मो के आधार पर हम अपने लिए नये ससार की रचना करते है इसलिए महर्षि के इन शब्दो मे शाश्वत सत्य है। क्योकि कहा है

उन्मन्सा ध्यायते तद वाच वदति यद वाचा वदति कर्मणा करोति यद कमणा करोति तदपि सम्पद्यते।

हमारे प्रत्येक विचार का अन्त कहा हे कर्म मे और कम का परिणामक है हमारा प्रारब्ध जिसे लोग प्राय भाग्य का नाम देते हैं। मुकद्दर कहकर पुकारते हैं। वेद म आया है "क्रतुमय पुरुष" यह मनुष्य अपने ही सकल्पा का बना है।

प्रसिद्ध विद्वान रोमा रोला के शब्दो मे

Action is the end of all thoughts, a thoughts which d'oes not look towards' action is an abortion and a treachry.

मनुष्य का लक्षण

मनुष्य की परिभाषा देते हुए महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट शब्दो मे लिखा है मनुष्य उसी को कहना है कि मननशील होकर स्वात्मवत अन्यो के सुख–दु ख और हानि–लाभ को समझे।

इसलिए मनुष्य यह अनमोल शरीर प्राप्त कर ऐसा कोई कार्य न करे जिससे वर्तमान और भविष्यत दौनो बिगड जाए और अपने द्वारा बनाए ससार मे कष्टतम जीवन जीने पर विवश हो जाए।

नहीं देता कोई किसी को सजाए।
सजा बनके आती है अपनी कजाए।।

दया का अर्थ क्षमा नहीं

प्रभु तो न्यायकारी और दयालु हैं हमारे कर्मों के अनुसार फल देना यही उनकी सबसे बडी दया है हमे मानव जन्म मिला है। यह भोगयोनि है और कर्मयोनि भी। यहा हम नया बोते हे बोए को काटते हैं आवश्यकता केवल मनुष्यत की आदमीयता की है अगर यह नही तो कुछ भी नही।

गुल मे उलफत नहीं तो कुछ भी नहीं।
गुल मे नक्हत नहीं तो कुछ भी नहीं।
आदमी मे हजार जौहर हो।
आदमीयत नहीं तो कुछ भी नहीं।।

Your little hands were never made to tear each others eyes.

तुम्हारे छोटे–छोटे और कोमल हाथ दूसरे की आख नोचने के लिए नहीं बनाए गये। इसलिए है मर्त्यजीव ! अपने कर्मो पर निरन्तर दृष्टि रखकर जीवन की इस निरन्तर चलने वाली यात्रा मे अपने कर्मो के द्वारा ऐसा ताना बाना बुन कि अच्छा ही चोला फिर पहनने को मिल सके। इसी मे जीवन की सार्थकता है। यह कभी विस्मृत न कर कि मनुष्य अपने ही कर्मो द्वारा बनाए गये ससार मे जीता है।

ई – ३६ रणजीत सिंह मार्ग
आदर्श नगर दिल्ली – ३३

अपने सकल्पो पर दृढ रहिये, जरा भी न डिगिये अविचल रहिये। सासारिक बातो मे न पडिये। विषय की बातो से मन विषयमुखी बन जाता है, सदा परमात्मा सम्बन्धी बाते कीजिये, मूलधाम को लौट जाइये, वह मूलधाम परब्रह्म ही है।

वर्तमान परिवेश और वानप्रस्थाश्रम

मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति, इन्दौर

वैदिक समाज व्यवस्था मे वर्णाश्रम' का बड़ा भारी महत्व है। वर्ण (व्यवसाय–कैरियर) का चयन समावर्तन–सस्कार या विद्या सामाप्ति के पश्चात युवक की रुचि योग्यता तथा झुकाव पर आधारित था। कहा भी है – सस्काराय द्विज उच्यते' अर्थात् सस्कारों के द्वारा ही व्यक्ति की रुझान (ऐप्टीटयूट) का पता चलता था। यह वर्ण–व्यवस्था का ताना–बाना आश्रमो पर आधारित रहता था। शास्त्रो के अनुसार केवल सुसस्कारी ब्राह्मण–वर्ण का व्यक्ति ही प्राय सन्यासाश्रम मे प्रविष्ट होता था।

अर्थात प्रत्येक सद्गृहस्थ को पाचो यज्ञ दैनिक रूप से सम्पन्न करना होते हैं। आश्रम शब्द स्वय मे गूढ भाव प्रधान है चारो आश्रमो मे श्रम' करना अनिवार्य है। जो वैदिक सस्कृति कर्म पर्याय श्रम मे आस्था रखती हो उसमे समाज के एक घटक को श्रमी–परिश्रमी होना नितान्त आवश्यक है। अजगर की भाति केवल खा–पी लेने तथा पडे–पडे केवल स्वास लेते रहने का नाम जीवन नही है। कर्म कुरु अथावा कर्म करते हुए सौ से भी अधिक वर्षों तक जीवित रहने की जिजीविषा रखना एक आर्य का स्पष्ट लक्ष्य था। यह हमारी औसत आयु की समयावधि है।

प्रसगवश हम यहा केवल वानप्रस्थाश्रम के सम्बन्ध में अर्थात वर्तमान परिवेश मे इसकी प्रासगिकता तथा उपयोगिता के सम्बन्ध मे ही विचार करेगे। 'वानप्रस्थ' का शाब्दिक अर्थ वान (वन) + प्रस्थ अर्थात ५० वर्ष की आयु समाप्त होते ही हमे गृहस्थ के दायित्वो से मुक्त होकर आत्म–चिन्तन और आत्म विकास के लिए वन की ओर प्रस्थान कर देना चाहिए। आचार्य दयानन्द ने तो यहा तक कहा है कि यदि पत्नी चाहे तो उसे भी साथ ले किन्तु साथमे रहते हुए भी 'यौनाचार' न करे और दोनों आत्म–विकास की ओर बढने का प्रयास करे। यह कितना बडा आत्म–अनुशासन तथा प्रवृत्ति की ओर से निवृत्ति की ओर चलने का कैसा कठिन मार्ग है। यदि पत्नी की इच्छा न हो तो उसे अपने पुत्रो को सौंप कर उसे 'पितर' मानकर उसकी सेवा–सुश्रुषा तथा रक्षा करने का दायित्व सौंप कर स्वय 'पीत वस्त्र' धारण कर एकान्त और शान्त वन में अपनी पर्ण–कुटि बनाकर ब्रह्मयज्ञ देवयज्ञ तथा अतिथि यज्ञ को करते हुए परमात्मा की स्तुति प्रार्थना और उपासना में अहर्निश लगा रहे।

मनोवैज्ञानिको के मतानुसार अभ्यास' और 'वैराग्य' की भावना से वानप्रस्थ होना बहुत ही उत्तम कोटि का तप है। उपनिषदो मे भी श्रेय मार्ग और प्रेय मार्ग की बहुत ही विशद चचा की गई है। प्रवृत्ति मार्ग (प्रियमार्ग) तथा निवृत्ति मार्ग (श्रेयमार्ग) यही जीवन के दो अतिम छोर हैं। रजोगुणी और तमोगुणी को प्राय प्रवृत्ति मगीय ही देखे जाते हैं। जबकि सतोगुणी अधिकाशत निवृत्तिमार्ग (श्रेयमार्ग) के अनुगामी होते देखे गये हैं। गृहस्थाश्रम से वानप्रस्थाश्रम मे प्रवेश करना मानो अपने लौकिक दायित्वो को पूर्ण कर कायरता न प्रकट करते हुए अब अपने गत ५० वर्ष के उज्ज्वल कार्यों तथा अनुभवो का लाभ तथा ज्ञान देना यह बानप्रस्थियो के ही वश की बात थी। वैदिक कालीन नगरो क आसपास वानप्रस्थियो की अनेक कुटिया स्थापित हो जाती थी जहा नगरो के सभी लोग अपनी ज्ञान–पिपासा शात करने के लिए वानप्रस्थियो की इन घास–फूस की झोपिडयो के निकट इकटठे हो जाया करते थे और वानप्रस्थी मुनिगण ज्ञानार्थियो तथा जिज्ञासुओ की आध्यात्मिक–तृष्णा को प्रवचनों के द्वारा शात किया करते थे। इस प्रकार वान प्रस्थियों के समूह अपने निकट के समाज एव नगर वस्तियो को उचित मार्ग दर्शन देकर समाजोन्नति मे महत्वपूर्ण योगदान दिया करते थे। यह थी हम आर्यों का गौरव शाली समाज–व्यवस्था थी। इसमें कोई कृत्थन नहीं था।

वर्तमान परिवेश मे प्राचीनकाल की तरह न तो घने सुनसाम और शात न तो वन रहे और न नगरो–कस्बो मे रहने वाले ज्ञान–पिपासु ही। आज की उपभोक्त्य सस्कृति ने हमारे प्राचीन वैदिक मूल्यो को तिरोहित कर दिया। नागरिको की आजीवन प्रवृत्तिवादी या भोगवादी मनोवृत्ति ने मनुष्य को अर्थ लोलुप बना कर रख दिया। इन पक्तियों के लेखक के एक प्राचार्य–मित्र अमेरिका के एक शहर मे पत्नी सहित किसी पारिवारिक कार्य हेतु गये। वहा के प्रचार्य मित्र अपने एक अन्य सहपाठी से जो कि लम्बे समय से वहीं (अमेरिका) मे रहता था उससे मिलने गये। प्रात का समय था उसी समय यह दुर्भाग्यपूर्ण रहा कि उस आथितेय मित्र के पिताजी की अकस्मात मृत्यु हो गई। उस आथितेय (मेजवान) ने प्राचार्य–मित्र से कहा–पिताजी की डेड बाडी (शव) पडोस के कमरे में पडी है। नगर पालिका निगम की गाडी उनकी डेड बाडी को ५–७ मिनट मे ही आ रही है। जब यह 'शव' यहा से चला जाए तब हम शाति से घूमने–फिरने और मनोरजन पार्क मे सैर के लिए चलेगे। यद्यपि अमेरिका मे इस घटना को सामान्य मान लिया जाये किन्तु भारत और भारतीय– सस्कृति मे 'पिता की मृत्यु' बडी भारी हृदय–विदारिणी घटना मानी जाती है। पूरा परिवार लम्बे समय तक शोकागुल रहता है।

> *भारतीय दर्शन निवृत्तिवाद की ओर स्पष्ट सकेत करता है। कुछ लोग इस दर्शन पर अुगली उठाते हुए कहते है–भारत सदा ही अभावग्रस्त जीवन जीने का उपदेश देता रहा। किन्तु ऐसे आक्षेप कर्त्ता भूल जाते हैं कि इस निवृत्तिवाद की आधार शिला प्रवृत्तिमर्ण (प्रेममार्ग) ही है। इसी प्रवृत्ति मार्गीय वृत्ति को हमारी शास्त्रीय भाषा मे गृहस्थाश्रम कहा गया है। –सपादक*

किन्तु अमेरिका मे तो 'शव' को नगर निगम को सौंप कर प्रभु द्वारा अपना अतिम कर्त्तव्य समझ लिया जाता है। यह अन्तर है भोगवादी–सस्कृति तथा अध्यात्मवादी–सस्कृति म है। यहा 'मातृमान पितृमान आचार्यमान पुरुषो वेद' कहकर पिता को महान सम्मानित स्थान दिया गया है। पिता के अनेक ऋणों से मुक्त होने के लिए ही पुत्र गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर वशावली की अभिवृद्धि कर ऋण–मुक्त होने का प्रयास करता था। और अब कहा

सम्प्रति भारत की उपभोक्तावादी सस्कृति की आधी के थपेडो से अपने आपको बचा नहीं सका। यह देश का दुर्भाग्य है कि आज की युवा–दम्पति अपने माता–पिता सास–ससुर को परिवार पर भार तुल्य मानकर उन्हे परिवार के अतिरिक्त सदस्य (एक्स्ट्रा मेबर) मानकर उनकी उपेक्षा कर रही है। उन्हे घर से बाहर कर उनके भाग्य के भरोसे छोड देती है। कुछ समाज सेवकों ने यह स्थिति देखकर वृहत्तर नगरो में 'वृद्धाश्रम' स्थापित किये हैं। इन वृद्धाश्रमो में पुत्र से निराद्रित और बहू से उपेक्षित वृद्ध माता–पिता दु ख के आसुओं से भरी गीली आखों को लेकर इन 'वृद्धाश्रमों' मे रहने के लिए विवश हो रहे है। यह भी एक विडम्बना ही है कि वानप्रस्थाश्रमो मे रहने वाले हमारे ये पितर अब इन वृद्धाश्रमों मे रह रहे हैं। विवाह सस्कार के समय यही माता–पिता अपनी पुत्रवधु को श्वसुरे सम्राज्ञी भव कह कर लाये थे अर्थात हे ! प्रभु वधु तो सास–ससुर की 'सम्राज्ञी' के समान है। तू इस परिवार की महारानी है उसी महारानी ने अपनी सास को मेहतरानी बनाकर घर से धक्के दे कर निकाल दिया। यदि यही उपभोक्तावदी ससकृति भारत में कुछ दिन और रही तो शायद यह 'परिवार' सस्था का अस्तित्व ही खतरे में पड जायेगा। किसका विवाह और कौस सा परिवार होगा ?

ईस गभीर और विडम्बना पूर्ण स्थिति को देखते हुए क्या हमारा 'वानप्रस्थाश्रम' निरूपयोगी हो गया ? क्या वैदिक आदर्श का यह सुदृढ स्तम्भ जर्जर हो कर गिर जायेगा ? नहीं नहीं पहिले की अपेक्षा अब वानप्रस्थाश्रम का महत्व और भी बढ गया है। आइये इसे वर्तमान सन्दर्भ में इस तरह विचारें।

यदि गहराई से 'वानप्रस्थाश्रम' के सम्बन्ध में दार्शनिक दृष्टि से विचार करे तो स्पष्ट प्रतीत होगा कि 'वानप्रस्थ' जीवन की वह अनुभवपूर्ण बेला है जिसे समाज को नियमित और अनिवार्य आवश्यकता होगी। वानप्रस्थआश्रम एक वह श्रेष्ठ मनोभावना है जो प्रवृत्ति या श्रेय मार्ग की ओर से मन को निवृत्ति मार्ग (श्रेयमार्ग) की ओर ले जाने वाली है। जो लोग प्रौढ एव वृद्ध लोगो के जीवन के कटुतम एव विशाल अनुभवो से परिवार समाज और राष्ट्र को लाभ पहुचाने की इच्छा रखते हैं वे सदैव ही प्रौढो सेवा–निवृत्तो तथा वृद्धों का सम्मान करते रहेंगे। समाज व राष्ट्र को उनके ज्ञान अनुभव तथा भविष्य का अनुमान आदि का लाभ मिलता ही रहेगा।

इन दिनो न तो नगरो–कस्बो के निकट वन ही हैं और न वहा किसी त्यागी साधू–सन्यासी की कुटिया ही। फलत वानप्रस्थ की इच्छा रखने वाले इन परिस्थितियो को देखते हुए अपना घर न छोडे। दूसरे ऐसे प्रौढ और वृद्ध जो शारीरिक–व्याधियो से दु खी अथवा विकलाग है वे समाज तथा राष्ट्र पर कृपा कर अब अपने घर ही रहें। घर पर ही रहकर नित्यप्रति ब्रह्मयज्ञ (सध्या) देवयज्ञ (यज्ञ स्वाध्याय) तथा परिवार के बच्चो को सस्कारवान तथा आस्तिक बनाने का पवित्र कार्य करे। आज परिवार के बच्चे तथा युवा वर्ग दूर–दर्शन–सस्कृति के कुप्रभाव के कारण मानसिक रूप से समय से पूर्व ही युवा हो रहे हैं। यदि परिवार ही बिगड गये तो फिर उनका नाम लेवा भी नहीं बचेगा। इसलिए प्रौढ एव वयोवृद्ध माता–पिता अपने परिवार न छोडे।

हा इन प्रौढो और वयोवृद्ध स्त्री–पुरुषों को यह सुझाव देना अब उचित होगा कि वे वानप्रस्थ की भावना के अनुरूप अपना अधिक से अधक समय वैदिक सिद्धान्तो के अध्ययन–मनन तथा सध्या यज्ञ एव स्वाध्याय के प्रति अपना अधिव से अधिक समय लगावे। यह वही समय है जब आत्म–चिन्तन इन्द्रिय–निग्रह सयम तथा स्वाध्याय के प्रति अधिक लगाव रखे। आत्मा–परमात्मा के प्रति लगाव श्रद्धा तथा चिन्तन से ही हमारा आत्म–विकास होगा। यहा आत्म–विकास का तात्पर्य यह है कि इतना होने पर ही हम आत्मा के माध्यम से अन्य जीवों में पीडा दु ख–सुख आनन्द की अनुभूति करेंगे। और परार्थ करने की स्वार्थ–परता को अपने शेष–जीवन का लक्ष्य बनायेंगे। अपनी आध्यात्मिक उन्नति करना स्वाध्याय कर उन विचारों का परिवार तथा आस–पास उनका प्रचार करना ही आधुनकि परिवेश में एक क्रियाशील वानप्रस्थ जीवन होगा। इतना करने पर हम जहा परिवार मे उपयोगी बन सकते हैं, वहीं समाज और राष्ट्र की उन्नति मे अपनी क्षमतानुसार सहयोग दे सकते हैं।

प्रकिरण

अ/१३ सुदामा नगर इन्दौर

कर्मों का फल कब कैसा कितना मिलता है यह जिज्ञासा सभी धार्मिक व्यक्तियो के मन मे होती है। कर्मफल देने का कार्य मुख्य रूप से ईश्वर द्वारा सचालित व नियन्त्रित है वही इसके पूरे विधान को जानता है। मनुष्य इस विधान को कम अशो मे व मोटे तौर पर ही जान पाया है उसकी सामर्थ्य ही इतनी है। ऋषियो ने अपने ग्रन्थों में कर्मफल की कुछ मुख्य मुख्य महत्त्वपूर्ण बातो को वर्णन किया है। उन्हे इस लेख मे प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

कर्मफल सदा कर्म के अनुसार मिलते हैं। फल की दृष्टि से कर्म दो प्रकार के होते हैं। १ सकाम कर्म २ निष्काम कर्म। सकाम कर्म उन कर्मो को कहते हैं जो लौकिक फल (धन पुत्र यश आदि) को प्राप्त करने की इच्छा से किये जाते हैं। तथा निष्काम कर्म वे होते हैं जो लौकिक फलो को प्राप्त करने के उद्देश्य से न किए जाये बल्कि ईश्वर/मोक्ष प्राप्ति की इच्छा से किए जायें।

सकाम कर्म तीन प्रकार के होते है–अच्छे बुरे व मिश्रित। अच्छे कर्म जैसे–सेवा दान परोपकार करना आदि। बुरे कर्म जैसे–झूठ बोलना चोरी करना आदि। मिश्रित कर्म जैसे–खेती करना आदि इसमे पाप व पुण्य (कुछ अच्छा व कुछ बुरा) दोनो मिले जुले रहते है।

निष्काम कर्म सदा अच्छे ही होते हैं बुरे कभी नहीं होते। सकाम कर्मो का फल अच्छा या बुरा होता है जिसे इस जीवन मे या मरने के बाद मनुष्य पशु पक्षी आदि शरीरो मे अगले जीवन मे जीवित अवस्था मे ही भोगा जाता है। निष्काम कर्मों का फल ईश्वरीय आनन्द की प्राप्ति के रूप मे होता है जिसे जीवित रहते हुए समाधि अवस्था मे व मृत्यु के बाद बिना जन्म लिए मोक्ष अवस्था मे भोगा जाता है।

जो कर्म इसी जन्म मे फल देने वाले होते हैं उन्हे 'दृष्ट जन्म वेदनीय' कहते हैं। और जो कर्म अगले किसी जन्म मे फल देने वाले होते हैं, उन्हे 'अदृष्ट जन्म वेदनीय' कहते हैं। इन सकाम कर्मों से मिलने वाले फल तीन प्रकार के होते हैं – १ जाति २ आयु, ३ भोग। समस्त कर्मों का समावेश इन तीन विभागो मे हो जाता है। जाति–अर्थात् मनुष्य पशु, पक्षी कीट पतग वृक्ष वनस्पति आदि विभिन्न योनिया आयु–अर्थात् जन्म से लेकर मृत्यु तक का बीच का समय भोग–अर्थात् विभिन्न प्रकार के भोजन वस्त्र मकान यान आदि साधनों की प्राप्ति। जाति आयु व भोग–इन तीनों से जो 'सुख–दुःख' की प्राप्ति होती है कर्मों का वास्तविक फल तो वही है। किन्तु सुख–दु ख रूपी फल का साधन होने के कारण 'जाति आयु, भोग' को फल नाम दे दिया गया है।

दृष्ट जन्म वेदनीय कर्म किसी एक फल–केवल आयु या केवल भोग अथवा दो फल–आयु व भोग को दे सकते हैं। जैसे उचित आहार–विहार व्यायाम ब्रह्मचर्य निद्रा आदि के सेवन से शरीर की रोगो से रक्षा की जाती है तथा बल–वीर्य पुष्टि भोग सामर्थ्य व आयु को बढ़ाया जा सकता है। जबकि अनुचित आहार विहार आदि से बल आयु आदि घट जाते हैं। दृष्ट जन्म वेदनीय कर्म 'जाति रूप फल' को देने वाले नहीं होते हैं। क्योंकि जाति (–योनि) तो इस जन्म मे मिल ही चुकी है, उसे जीते जी बदला नहीं जा सकता जैसे मनुष्य शरीर की जगह पशु का शरीर बदल लेना। हा मरने के बाद तो शरीर बदल सकता है पर मरने के बाद नई योनि को देने वाला कर्म अदृष्ट जन्मवेदनीय कहा जायेगा न कि दृष्ट जन्म वेदनीय।

अदृष्ट जन्म वेदनीय कर्म दो प्रकार के होते हैं–

१ नियत विपाक २ अनियत विपाक। कर्मों का ऐसा समूह जिसका फल निश्चित हो चुका हो और जो अगले जन्म मे फल देने वाला हो उसे नियत विपाक कहते हैं। कर्मों का ऐसा समूह जिसका फल किस रूप मे व कब मिलेगा यह निश्चित न हुआ हो उसे अनियत विपाक कहते हैं।

कर्म समूह को शास्त्र मे कर्माशय नाम से कहा है नियत विपाक कर्माशय के सभी कर्म परस्पर मिलकर (सम्मिश्रित रूप मे) अगले जन्म मे जाति आयु, भोग प्रदान करते हैं। इन तीनो का सक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से जानने योग्य है–

१ जाति–इस जन्म मे किए गए कर्मों का सबसे बडा महत्त्वपूर्ण फल अगले जन्म मे जाति–शरीर के रूप मे मिलता है। मनुष्य पशु पक्षी कीट पतग–स्थावर वृक्ष के शरीरो को जाति के अन्तर्गत ग्रहण किया जाता है। यह जाति भी अच्छे व निम्न स्तर की होती है यथा मनुष्यो मे पूर्णाङ्ग विकलाङ्ग सुन्दर–कुरुप बुद्धिमान मूर्ख आदि पशुओ मे गाय घोडा गधा सूअर आदि।

२ आयु–नियत विपाक कर्माशय का दूसरा फल आयु–अथात जीवनकाल के रूप मे मिलता है। जैसी जाति (शरीर–योनि) होती है उसी के अनुसर आयु भी होती है। यथा मनुष्य की आयु सामान्यतया १०० वर्ष गाय घोडा आदि पशुओ की २५ वर्ष तोता चिडिया आदि पक्षियो की २–४ वर्ष मक्खी मच्छर भौरा तितली आदि कीट पतगो की २–४–६ मास की आयु होती है। कुछ प्राणी ऐसे भी होते हैं जिनकी आयु कुछ ही दिनो की होती है। मनुष्य अपनी आयु को स्वतन्त्रता से घटा बढा भी सकते है।

३ भोग–नियत विपाक कर्माशय का तीसरा फल भोग (–सुख दु ख को प्राप्त कराने वाले साधन) के रूप मे मिलता है। जैसी जाति (शरीर–योनि) होती है उसी जाति के अनुसार भोग होते हैं। जैसे मनुष्य अपने शरीर बुद्धि मन इन्द्रिय आदि साधनो से मकान कार रेल हवाई जहाज मिठाईया पखा कूलर आदि साधनो को बनाकर उनके प्रयोग से विशेष सुख को भोगता है। किन्तु गाय–भैंस–घोडा–कुत्ता आदि पशु केवल घास चारा रोटी आदि ही खा सकते हैं। वे मिठाई गाडी मकान वस्त्र आदि की सुविधाए उत्पन्न नहीं कर सकते हैं। जैसे कि पूर्व मे कहा गया कि 'नयतविपाक कर्माशय' से मिली आयु व भोग पर 'दृष्ट जन्म वेदनीय कर्माशय' का प्रभाव पडता है जिससे आयु व भोग घट–बढ सकते है पर यह एक सीमा तक (उस जाति के अनुरूप सीमा मे) ही बढ सकते हैं।

अदृष्ट जन्म वेदनीय कर्माशय के अन्तर्गत अनियत विपाक कर्मों का फल भी जाति आयु, भोग के रूप मे ही मिलता है। परन्तु यह फल कब व किस विधि से मिलता है इसके लिए शास्त्र मे तीन स्थितिया (–गतिया) बतायी गयी है। १ कर्मों का नष्ट हो जाना २ साथ मिलकर फल देना ३ दबे रहना।

१ प्रथमगति–कर्मों का नष्ट हो जाना–वास्तव मे बिना फल को दिए कर्म कभी भी नष्ट नही होते किन्तु यहा प्रकरण मे नष्ट होने का तात्पर्य बहुत लम्बे काल तक लुप्त हो जाना है। किसी भी जीव के कर्म सर्वाश मे कदापि समाप्त नहीं होते जीव के समान वे भी अनादि अनन्त है। कुछ न कुछ मात्रा–सख्या मे तो रहते ही हैं। चाहे जीव मुक्ति मे भी क्यो न चला जावे। अविद्या (–राग द्वेष आदि) के सस्कारो को नष्ट करके जीव मुक्ति को प्राप्त कर लेता है जितने कर्मो का फल उसने अब तक भोग लिया है उनसे अतिरिक्त जो भी कर्म बच जाते हैं वे मुक्ति के काल तक ईश्वर के ज्ञान मे बने रहते हैं। इन्ही बचे कर्मो के आधार पर मुक्ति काल के पश्चात जीव को पुन मनुष्य शरीर मिलता है। तब तक ये कर्म फल नही देते यही नष्ट होने का अभिप्राय हैं।

२ दूसरी गति–साथ मिलकर फल देना–अनेक स्थितियों मे ईश्वर अच्छे व बुरे कर्मो का फल साथ–साथ भी दे देता है। अर्थात–अच्छे कर्मो का फल अच्छी जाति आयु और भोग मिलता है किन्तु साथ मे कुछ अशुभ कर्मो का फल दु ख भी भुगा देता है। इसी प्रकार अशुभ का प्रधान रूप से निम्न स्तर की जाति आयु भोग रूप फल देता है किन्तु साथ मे कुछ शुभ कर्मो का फल सुख भी मिल जाता है। उदहारण के लिए शुभ कर्मो का फल मनुष्य जन्म तो मिला किन्तु अन्य अशुभ कर्मों के कारण इस शरीर को अन्धा लूला या कोढी बना दिया। दूसरे पक्ष मे प्रधानता से अशुभ कर्मों का फल गाय–कुत्ता आदि पशु योनि रूप मे मिला किन्तु कुछ परिणाम स्वरूप सेवा भोजन आदि अच्छे स्तर के मिले।

३ तीसरी गति–कर्मों का दबा रहना–मनुष्य अनेक प्रकार के कर्म करता है उन सारे कर्मों का फल किसी एक ही योनि–शरीर मे मिल जाये यह सभव नहीं है। अत जिन कर्मों की प्रधानता होती है उनके अनुसार अगला जन्म मिलता है। जिन कर्मों की अप्रधानता रहती है वे कर्म पूर्व सचित कर्मों मे जाकर जुड जाते हैं और तब तक फल नहीं देते जब तक उन्हीं सदृश किसी मनुष्य शरीर में मुख्य कर्म न कर दिए जाये। इस तीसरी स्थिति को 'कर्मों का दबे रहना' नाम से कहा जाता है।

उदाहरण–किसी मनुष्य ने अपने जीवन मे 'मनुष्य की जाति–आयु–भोग दिलाने वाले कर्मों के साथ–साथ कुछ कर्म सूअर की जाति–आयु–भोग दिलाने वाले कर्म भी कर दिए। प्रधानता–अधिकता के कारण अगले जन्म मे मनुष्य शरीर मिलेगा और सूअर की योनि देने वाले कर्म तब तक दबे रहेगे जब तक कि सूअर की योनि देने वाले कर्मों की प्रधानता न हो जाये।

उपर्युक्त विवरण का सार यह निकला कि इस जन्म मे दु खो से बचने तथा सुख को प्राप्त करने के लिए तथा मोक्ष की प्राप्ति के लिए हमे सदा शुभ कर्म ही करने चाहिए और उनको भी निष्काम भावना से करना चाहिए।

–दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन रोजड
पत्रा–सागपुर जिला–साबरकाठा
गुजरात ३ ३३०७

नारियों को वेद पढ़ने का अधिकार है

— रत्ना कुमारी

हमारे देश मे अज्ञानता से नारी जाति को नीचा दिखा कर उसकी बडी दुर्दशा की गई है किन्तु इतिहास उठा कर देखे जहा नारी का गौरवपूर्ण स्थान रहा है। सुप्रसिद्ध समाज सुधारक जगदगुरु महर्षि दयानन्द के हम ऋणी हैं कि उन्होने हमारे भूल हुए स्वाभिमान को याद दिलाया। नकली धर्माचार्यों की स्त्रीशूद्रौ ना धीयाताम इति श्रुति जैसी कपोलकल्पित उक्तियो का सप्रमाण उत्तर दिया। आश्चर्य हाता है कि शकराचार्य जैसे विद्वानो पर जिन्होने 'द्वार किम्केम नरकस्य ? नारी कह कर नारी को नरक का द्वार बताया। लेकिन वेद कहता है —

देवीर्द्वारो विश्रयध्वम् सुप्रायणा न ऊतये प्र प्र यज्ञ पृणीतन।। ऋ० ५। ५। ५।।

अर्थात — हे मनुष्यो ! तुम (सुप्रायणा) भली प्रकार गृहो मे प्रवेश करो। तथा (द्वार) द्वारो के समान सुख देने वाली उत्तम (देवी) दिव्य नारियो का (न ऊतये) हम सबकी (समाज की) रक्षा के लिए (विश्रयध्वम) विशेष रूप से आश्रयण करो एव (यज्ञम्) गृहस्थाश्रम रूपी यज्ञ को (प्र प्र पृणीतन) पुष्ट करो।

इस प्रकार इस वद मत्र मे नारी को सुख का द्वार प्रतिपादित किया है। सन्त तुलसीदास जी ने तो ढाल गवार शूद्र पशु नारी। ये सब ताडन के अधिकारी।। कह कर वेद पढने के अधिकार की चर्चा न कर नारी को बस ताडन का ही अधिकारी बना दिया। जब कि यजुर्वेद के २६वे अध्याय के दूसरे मत्र म स्पष्ट कहा है —

यथेमा वाच कल्याणीम् आवदानि जनेभ्य। ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।।

अर्थात ईश्वर ने उपदेश दिया कि (यथा) जैसे मैं (जनेभ्य) सब मनुष्यो के लिए (इमाम्) इस (कल्याणीम्) कल्याण अर्थात ससार को मुक्ति के सुख को दने हारी (वाचम्) ऋग्वेदादि चारो वेदो की वाणी का (आवदानि) उपदेश करता हू, वैसे तुम भी किया करो। तथा (ब्रह्मराजन्याभ्याम) ब्राह्मण क्षत्रिय (अर्य्याय) वैश्य (शूद्राय) शूद्र और (स्वाय) अपने भृत्य व स्त्री आदि (अरणाय) और अति शूद्रादि के लिए भी वेदो का प्रकाश किया है।

इससे यह सिद्ध हुआ कि परमात्मा ने कल्याणी वेद वाणी का उपदेश समस्त मानवमात्र को ससार की सम्पूर्ण जनता को चाहे वह ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य स्त्री पुरुष कोई भी हो सबके लिए किया है। जिससे सभी विज्ञान को बढा कर दुखो से छूट कर आनन्द को प्राप्त हो।

इसी प्रकार अथर्ववेद ११। ६। १८ देखे-जहा ब्रह्मचर्येण कन्या युवान विन्दते पतिम कह कर ब्रह्मचर्येण = ब्रह्मचर्य के सेवन से अर्थात् ब्रह्म नाम वेदादि शास्त्रो को पढ के उत्तम शिक्षा को प्राप्त करके कन्या तदनुरूप पति को प्राप्त होवे ऐसा कहा है। कन्या को सुस्पष्ट—ब्रह्मचर्य के पालन के लिए वेद पढने के लिए कहा है। और भी श्रौतग्रन्थो मे — इय मन्त्र पत्नी पठेत ऐसी आज्ञा देकर पत्नी से ही कतिपय मन्त्रो को बुलवाया है। कहीं भी यह नहीं कहा गया कि स्त्रिया वेद न पढे या व्यक्ति विशेष पढे। परमपिता परमात्मा ने तो सम्पूर्ण जगत को वेदादि ग्रन्थो के अध्ययनाध्यापन के लिए तथा अग्निहोत्रादि अनुष्ठान के लिए आज्ञा दी है। मन्त्र देखे — पञ्चजना मम होत्र जुषध्वम ।। ऋ १०। ५३। ४।। कि चारो वर्ण तथा अन्य सभी इस अग्निहोत्र का प्रीतिपूर्वक अनुष्ठान करे। तैत्तिरीय ब्राह्मण मे कहा अयज्ञो वा एष यो अपत्नीक तै स २। २। २। ६ अर्थात् पत्नी के बिना यज्ञ करना न करने के समान होता है। इन प्रमाणो से सुस्पष्ट है नारी वेदमन्त्रो का उच्चारण उनका पाठ—स्वाध्याय उपदेश सब कर सकती है। ऋग्वेद ८। ३३। १९ के स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ पाठानुसार तो नारी को यज्ञ की ब्रह्म बता कर उसे सर्वोच्च स्थान ही दे दिया है। भला वेदाध्ययन किये बिना स्त्री यज्ञ के ब्रह्मा पद पर समासीन हो सकेगी ? भविष्य पुराण मे भी सब आश्रमो से श्रेष्ठ गृहस्थाश्रम को तथा गृहस्थ मे घर को एव घर मे भी नारियों को सबसे श्रेष्ठ माना है। उत्तर पर्व ४। ७७१।।

यजुर्वेद के २३वे अध्याय के ३६ ३७वे मन्त्र का तो देवता ही स्त्री है। तथा वेदो के अनेक मन्त्र नारी को पुरन्धि काम्या कुलायिनी उरुधारा चतुष्कपर्दा आदि नामो से सम्बोधित करते हैं। यजुर्वेद का १५। ३ मन्त्र नारी को 'स्तोमपृष्ठा विशेषण से विभूषित कर रहा है जिसका अर्थ है (१) 'स्तोमा पृष्ठा ज्ञापायितुम इष्टा यस्या सा अर्थात् इष्ट स्तुतियो (मन्त्रो) की जिज्ञासा है जिसको वह स्त्री। तात्पर्य यह हुआ कि स्तुतिपरक वेद मन्त्रादिको को जानने की इच्छा नारी मे विद्यमान होनी चाहिये अर्थात उसे वेद पढने चाहिए।

(२) इसी शब्द का दूसरा अर्थ है — स्तोम (वेदमन्त्र) पीठ मे हैं जिसके अर्थात वह स्त्री जो सदैव स्वाध्याय हेतु वेद की पुस्तक को अपनी पीठ पर रख कर ही चलती है। चलते समय अन्य सामानो के साथ वेद को भी रखना कभी नही भूलती। इस प्रकार 'स्तोमपृष्ठा' शब्द पुकार पुकार कर कह रहा है कि नारी वेद पढने के अधिकार से कदापि वञ्चित नहीं। तभी तो प्राचीन नारिया राजा—महाराजाओं के साथ शास्त्रार्थ किया करती थी यथा याज्ञवल्क्य—मैत्रेयी गार्गी सवाद सुप्रसिद्ध है।

जिन्होने नारी को वेदाध्ययन से वचित रखने की दुहाई दे कर कई अनर्गल प्रलाप किये हैं वे सभी इन प्रमाणो से तर्कों से ध्वस्त हो जाते हैं। विचार करे जो आख कान नाक मस्तिष्क बुद्धि नर मे है वैसी ही रचना तो नारी की भी है पुन अपने ज्ञान वर्धन के लिए परमात्मा की दी हुई बुद्धि का उपयोग करने के लिए विकास करने के लिए परमात्मा की प्रकाशित वाणी वेदवाणी को नारी क्यो न पढे ?

पूर्वमध्यमा छात्रा पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी

राम राज्य भारत में ला दो

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

नफरत की दीवार गिरादो।
वैदिक पगदण्डी से सारा कूडा-करकट दूर हटादो
नफरत की दीवार गिरादो।

काहू को कटु वचन न बोलो, कबहू न रस में विष घोलो।
रहो परस्पर मिलजुल करके द्वेष-ईर्ष्या सभी मिटा दो।
नफरत की दीवार गिरादो।। १।।

सतपथ छोड कुपन्थ गहो ना-तन पर दारुण दुःख सहो ना।
मिथ्या मत पन्थो से बचकर असत अविद्या मार भगादो।
नफरत की दीवार गिरादो।। २।।

करनी करलो नीकी नीकी-हरियो विपदा दीन दुःखी की।
प्रिय वचन उच्चारण करके वातावरण विशुद्ध बनादो।
नफरत की दीवार गिरादो।। ३।।

लेकर सत्य धर्म का तोशा-एक ईश का करो भरोसा।
ओम पताका हाथ उठाकर, जग में वैदिक ज्योति जगादो।
नफरत की दीवार गिरादो।। ४।।

वेदामृत पी पावन होलो-जगह जगह मत वृथा डोलो।
करो देव पूजन यज्ञादि वेद ज्ञान घर घर फैला दो।
नफरत की दीवार गिरादो।। ५।।

ऐसा मधुमय देश बनाये-गूजे पावन वेद ऋचाये।
कहे स्वरूपानन्द आर्य रामराज्य भारत मे लादो।
नफरत की दीवार गिरादो।

संसार सागर की शाश्वत बूंद

पं० सत्यपाल शर्मा, वेदशिरोमणि, एम०ए०

"अजी अब आपके वेदो का क्या बनेगा ?" मैंने पीछे घूमकर देखा। एक बाबू टाईप व्यक्ति जो थे तो आर्य समाज के प्रेमी ही–शायद सदस्य नहीं थे अन्यथा एकदम इतना बडा बम का गोला छोडने को तैयार न होते बुशर्ट और पैंट में मेरे पीछे चले आ रहे थे और थोडा सा परिचय हो जाने के कारण यह गोला उन्होने मुझी पर छोडा था। मैं जानता था कि थोडा सा पढ लिखकर अपने आप को सुविद्वान समझने वालो के अब ऐसे ही प्रश्नो का हल करने के लिए तैयार रहना होगा अत मुझे आश्चर्य तो नहीं हुआ पर दुख अवश्य हुआ कि आर्य समाज के इतने सारे सत्सगो मे जाने के बाद भी इनके विचार करने का स्तर अभी जहा का तहा ही है मैंने भी यथाशक्ति कोमलता का पुट लाते हुए पूछा। "कहिए ऐसी क्या भीड पड गई ? वेदो को कहा से खतरा पैदा हो गया ?" अजी वाह पडित जी ! आप को तो पता नहीं चन्द्रमा को जीत लिया गया ? इतने उत्साह और जोश के साथ कह रहे थे मानो वे खुद अपनी मुट्ठी मे उसे पकड लाए हो। 'चन्द्रमा को जीत लिया गया। कैसा अहकार भरा था इन शब्दों में। सोचा हम मनुष्य भी कितने अल्पज्ञ हैं कि अपनी थोडी सी सफलता को जिसमे निश्चय ही प्रभु की प्रेरणा सम्मिलित है और जिसे दिन रात गिर्जाघरो में चन्द्रयात्रियो के स्वास्थ्य और उनके सक्षेम प्रत्यावर्तन के लिए प्रभु से प्रार्थना करने वाले पाश्चात्यो ने तो समझा पर हम लोगो ने समझ कर भी नहीं समझा 'अपनी बहुत बडी विजय मानने लगते हैं ? और विजय किस पर चन्द्रमा पर ? आपसे चन्द्र ने कभी दुश्मनी तो मोल नहीं ली थी। कभी आपको अपनी छाती पर पैर रखने से उसने इन्कार तो नही किया था ? हा उसकी मौन दृष्टियो मे हम पार्थिव मनुष्यो के लिए एक सस्नेह निमत्रण चुनौती भरा निमत्रण अवश्य था और आज हमें इस बात की खुशी है कि हम उसके निमत्रण का सक्रिय उत्तर दे सके। हम इसे अपने प्रयत्नो की सफलता के रूप मे तो देख सकते हैं पर यह सोचना कि हमने प्रकृति पर या उसके किसी अश पर और उसके द्वारा प्रभु पर विजय पा ली एक बहुत बडा धोखा होगा।

मैंने इन सब भावनाओ मे अपने आप को उस समय बहने दिया शान्ति से बोला–"चन्द्रमा पर मनुष्य पहुच गए तो उससे वेदो पर कौन सा तूफान आ पडा भाईसाहब ?" के मेरी ओर कुछ ऐसी नजरो से देखने लगे जैसे मैं बिल्कुल मूर्ख हू और उनकी महान बुद्धि की तह तक पहुच पाने में असमर्थ रहा हू। बोले "अब तो पडित जी आपको "चन्द्रमा देवता" कहना छोड देना होगा। अब वह देवता नहीं रहा।" और मैंने भी सोचा कितनी अहता है हम मनुष्यो म और कितना अज्ञान भी है। पूछा मैंने तो क्या आपका मतलब है कि इन चन्द्रयात्रियो के पैर पड जाने से चन्द अब देवता नहीं रहा राक्षस हो गया ? क्या मनुष्य के पैर इतने नालायक हैं ? अब वे जरा सिटपिटाए। हिचकचाते हुए बोले "नहीं यह मतलब नहीं है मेरा। आप लोग देवता उसी को कहते हैं न कि जिसके बारे मे कुछ पता न लगे और जससे कुछ भय खाना आवश्यक हो कि पता नहीं इसका मेरे जीवन पर क्या प्रभाव होगा, इसलिए अभी से इसकी प्रार्थना करने लगो–सो, अब तो वह बात खत्म हो गई–अब तो मनुष्य ने चन्द्रमा को अपनी आखो से देख लिया वहा की मिट्टी और चट्टान तक खोद लाया है और अभी तो वहा की बहुत कुछ चीजें लाएगा। सो एक बार रहस्य खुल जाने पर वह देवता नहीं रह जाता।"

"तो फिर क्या बन जाता है ?" पूछा मैंने।

कुछ नहीं वह भी सामान्य सा हो जाता है। उसकी वह देवता वाली महिमा खत्म हो जाती है सो ही अब चन्द्रमा की महिमा खत्म हो गइ और उसके साथ ही वेदो की महिमा भी खत्म हो गइ जिन्होने उसे देवता कहा है और भगवान की तो कम हो ही गई" – वह गर्दन अकडा कर बोले जैसे मानो इतना सब कहकर उन्होने आमस्ट्रॉग के समान वेदो पर अपने चरण रख दिए हो।

भाईसाहब आपकी देवता की परिभाषा बडी विचित्र है। यह किसने कहा अपसे कि देवता चन्द्रमा को इसलिए कहते हैं कि उसके रहस्यो का पता नहीं है। क्या आपको अपनी माता और पिता के बारे में जानकारी है ?

जी क्यो नहीं होगी ? उन्होने ता जन्म ही दिया है और पाला–पोसा है बडा किया है वर्षों रहे हैं उनकी छाया में तो उनके बारे मे जानकरी क्यो नहीं होगी ?

तो बताइए कि वे देवता हैं या राक्षस ? मैंने सीधी चोट मारी। वे तिलमिला से गए। बोले क्या मतलब आपका ? मैंने कहा–महाराज आपके कहने के अनुसार जिसके बारे मे जानकारी हो जाए वह देवता नहीं रह जाता तो अब जब आपको अपने माता–पिता के बारे मे चन्द्रमा से भी अधिक जानकारी प्राप्त है तो वे देवता रहे कि नहीं ?

वे तो कभी देवता नहीं थे।

वाह भाई साहब आपकी अपने माता–पिता के प्रति कितनी सुन्दर भावना है ? क्यो न हो। हो सकता है आपकी दृष्टि मे आपके माता–पिता आपके लिए देवता न हो पर वेद और उपनिषद तो अब भी – "मातृ देवो भव पितृ देवो भव" कहकर उन्हे देवता घोषित करते है।

अच्छा जी ? आपके वेद माता–पिता को भी देवता कहते हैं ?

जी हा पर अब आप बताइए कि क्या आपको उनसे डर लगता है कि पता नहीं वे आपके साथ क्या कर बैठे ?

जी मैं क्यो डरूगा अपने माता–पिता से ? वे कोई जानवर थोडे ही हैं ?

तो भाई साहब देवता की आपकी दूसरी परिभाषा भी गलत हो गई कि देवताओ को देवता इसलिए माना जाता है कि उनसे भय लगता है। और इसीलिए उनकी प्रार्थना करते हैं। उनकी एक बात और बात दो, आपको सबसे ज्यादा डर किस जानवर से लगता है।

शेर से।

तो फिर आप रोजाना सुबह शाम अपने घर मे शेर की मूर्ति के सामने हाथ जोडते होगे कि और किसी को खाना हो तो खा लेना मुझे मत खाईयो रोज तुम्हारी प्रार्थना करता हू।

क्यो ? चुप क्यो रह गए ? उत्तर दीजिए न ? भाई साहब अब आपकी तीसरी बात भी गलत हो गई कि प्रार्थना का मूल कारण भय है महाराज ! ये गलत बाते आपके दिल मे बैठाई हैं वेदो के और भारतीय सस्कृति के दुश्मनो ने। इन अग्रेज विद्वानो ने भारतीय देवतावाद भारतीय प्रार्थना और वेद तथा भगवान का मजाक बनाया है। अब इन वेदो का मजाक हमारे ही आर्य उडा रहे हैं। न जाने किस से ऋग्वेद के मत्रो का हिन्दी अनुवाद करा लिया और कहते फिरते हैं कि हमारे वेदो मे कुछ नहीं रखा। जो कुछ वेदो मे लिखा है इसका पता आपको हमारे हिन्दी अनुवाद से पता चल जाएगा। एक तो पाश्चात्य वैज्ञानिक हैं जो आखे खोलकर विश्व के एक–एक अग को सही रूप मे पहचान और जान लेना चाहते है ओर एक ये हमारे ही भाई हैं जो अपने को बहुत प्रगतिशील और सुधारक बताते है और बजाए इसके कि व आखे खालकर अपने इस महान ग्रथ की बातो क सम्बन्ध मे अनुसधान और खोज कार्य करे आखे ओर बन्द कर लेते हे। अब आप ही देखिए अग्रेजी चश्म वेदो के बारे मे आपने पढा हुआ है तो आपको इन दवताओ के ही सम्बन्ध मे कितनी गलत जानकारी है।

इतना कुछ सुनकर ही वे अच्छा जी कहकर विदा ले गए।

पर सोचने की बात यह है कि क्या वेद के मन्त्रो का अपना कुछ शाश्वत मूल्य नही है ? क्या वेदो म चन्द्रमा को जो देवता शब्द से लिखा है वह गलत है ? कोई भी आय जिसने इनके सम्बन्ध मे महर्षि के विचारो को पूर्ण रूप से हृदयङ्गम किया हुआ है इन बातो को नहीं मानेगा। वेदो ने केवल चन्द्रमा को ही नहीं पृथिवी को भी देवता बताया है जल और अग्नि को भी देवता बतलाया है। और आज क्या मानव को इनके सम्बन्ध मे चन्द्रमा से अधिक जानकारी प्राप्त नही है ? इतनी निकटता हो जाने क बाद भी क्या इनके देवतात्व मे कोई फर्क आया है ? क्या अब विद्वानो ने इनको देवता कहना बन्द कर दिया है ?

बात यह है कि पाश्चात्य चरण चिन्हो पर चलने वाले तथाकथित विद्वानो का दृष्टिकोण ही सीमित है। वेदो ने पृथिवी आदि को देवता इसलिए कहा है कि वे दिव्य शक्तियो वाले है इनमे एक नियमितता है अनुशासन है ये दिव्य शक्ति के सीध नियन्त्रण मे काम कर रहे हैं और इसलिए इनकी गति तथा इनका व्यवहार आदि सब कुछ नियमित है। इनके निश्चित गुण है निश्चित धर्म हैं। इसीलिए उपनिषदो ने भी इनको "जन्मना देवता" कहकर मनुष्य "कर्मणा देवता" बतलाया है। जन्म से ही ये सब पृथिवी चन्द्र आदि देवता है। इनका देवतात्व स्वाभाविक सहज अविनश्वर और नित्य है। कारण ? ये जड है। चेतन नहीं है। इनके पास अपनी बुद्धि नही है और सीध उस पर परमचैतन्य परम–आत्मा परम–ज्ञान के नियन्त्रण म चल रहे हैं जिससे कभी कोई भूल हो ही नहीं सकती क्योकि वह सर्वज्ञ है सर्वव्यापक है सर्वशक्तिमान है। और मनुष्य की अपनी बुद्धि है। वह अपने ही माता–पिता तथा मित्र के जो उसका हित चाहने वाले है तथा प्रत्यक्ष हैं नियन्त्रण को तो क्या मानेगा जो सवथा अदृश्य है ? जिसकी आवाज वह सुन नहीं सकता ओर जानता है कि मेरे कुछ भी करने पर उसे क्या पता चलेगा वह देख थोडे ही रहा है। इसीलिए उपनिषदो ने कहा कि भौतिक तत्त्वो के गुण धर्म अर्जित नहीं है स्वाभाविक हैं इसलिए उनमे अनियमितता नहीं दिखाई देती। मनुष्य के लिए देवतात्व अर्जनीय है। उसे प्राप्त करना है। वह प्राप्त होता है अपने कर्म से।

वेद भगवान की शाश्वत वाणी है। नित्य और सत्य है। इसके मन्त्रो का अनुवाद कभी नहीं हो सकता। व्याख्यान और विवेचन अवश्य हो सकता है। 'अग्नि' शब्द का अर्थ 'अग्नि' लिख देने मात्र से वेदो का अर्थ स्पष्ट नहीं हो जाता। वेद मन्त्र तत्त्व बीज है। इनमे बाइबिल या कुरान का सा कथानक नही है। कथानको और व्याख्यानो का तो अनुवाद हो सकता है पर 'तत्त्व बीजो' का कभी भी अनुवाद नहीं हो सकता। किस बीज मे क्या शक्ति है इसका पता उससे सहस्रो और हजारो गुना विस्तृत वृक्ष के द्वारा ही पता चलता है। वृक्ष बीज का व्याख्यान रूप है। इसी प्रकार का विस्तृत व्याख्यान जब एक–एक मन्त्र का होगा जब मनुष्य श्रम की नानाविध शक्तियो का अनुसधान करेगा तब उसे वेदो की महत्ता का पता चलेगा

यह कितनी बडी विडम्बना है कि सम्पूर्ण विश्व को मानवता और नैतिकता का पाठ पढाने वाला जगत गुरु आज स्वय अपने दुर्दिनो पर रो रहा है। जिस देश ने राम जैसा बेटा हनुमान जैसा सेवक आरुणी और एकलव्य जैसे शिष्य एव गाधी जैसा महामानव पैदा किया वही आज अपने युवा पीढी की उद्दडता और उच्छृखलता पर आसू बहा रहा है। आज पुत्र अपने पिता की बात नहीं मान रहे हैं शिष्य अपने गुरुओ का सम्मान नहीं कर रहे हैं और छोटा भाई अपने बडे भाई की बात नहीं मान रहा है। कहीं चिनार के वृक्षो मे आग लगी हुई है तो कहीं सतलुज की दरिया खून से लाल हो रही है। कहीं बाबा साहब अम्बेडकर की प्रतिमा खण्डित की जा रही है तो कहीं भारतीय सविधान की अग्नि–परीक्षा हो रही है। क्या यही है भारतीय सस्कृति ? क्या यही मिला है राम कष्ण बुद्ध महावीर गुरुनानक और हजरत महम्मुद से। अगर नहीं तो फिर ऐसा क्यो हो रहा है ? कौन है इन सबके लिए उत्तरदायी ? लेखक ने अपने शोध ग्रथ के माध्यम से इन प्रश्नो का उत्तर देने का एक अदना सा प्रयास किया है। भारत मे मूल्यो के विघटन के लिए किसे जिम्मेदार ठहराया जाए ? इस प्रश्न का उत्तर दे रहे है दिल्ली उच्चतर मा० वि० के प्रधानाचार्य जो मेरे शोध के विषय है। इस विखराव के लिए जो भी कारण सामने आये हैं उनका वर्णन एक एक कर अधोलिखित ढग से किया जा सकता है।

आदर्श नेतृत्व का अभाव

९८ प्रतिशत प्रधानाचार्यो का मानना है कि आज के युवा पीढी के अध पतन का सबसे बडा कारण है—आदर्श नेतृत्व का अभाव। आज हमारे पथ प्रदर्शक ही पथ भ्रष्ट हो गये हैं। अधेरी गुफाओ मे अगर मशालची ही रास्ता भटक जाये तो पीछे चलने वालो को काल के गाल में जाने से कोई नहीं बचा सकता है। आज भारत नेतृत्व विहीन हो गया है। आज सकट चरित्र का नहीं बल्कि नेतृत्व विहीनता का है। आज गाधी नेहरु पटेल और सुभाष जैसा कोई राजनेता नहीं दिखता जिसे युवा पीढी अपना आदर्श मानकर उसके पद चिन्हो पर चलने की अपेक्षा अपने हिसाब से जो भी बनना चाहते है बन रहे हैं कहीं वे उग्रवादी बन रहे हैं तो कहीं वे नक्सलवादी बन रहे हैं तो कहीं अपराधी बन रहे हैं। ये अपना रास्ता स्वयमेव चुन रहे हैं तो फिर ये घडियाली आसू क्यो ?

समाज मे व्याप्त दुष्प्रवृत्तियाँ

९८ प्रतिशत प्रधानाचार्यो का यह मत है कि समाज के या राष्ट्र के विघटन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण कारण है समाज का गिरता हुआ चरित्र और इसमे कुष्टरोग की तरह व्याप्त दुष्प्रवृत्तिया। आज भारत मे स्मगलिग जमा खोरी चोरी बाजारी और रिश्वतखोरी का बोलबाला है। इसका हमारे बच्चे के चरित्र पर बहुत ही गलत प्रभाव पड रहा है। वे भी रातोरात बडे बनने के चक्कर मे गलत रास्ते अपना रहे हैं। जिस समाज मे भष्ट्राचारी की भर्त्सना करने के बजाये उसे सम्मान प्राप्त होता है उस समाज को नर्क मे जाने से कोई नहीं बचा सकता। आने वाली या वर्तमान युवा पीढी को भी तो कार बगले फ्रीज और रगीन टीवी की जरुरत है। वे शार्ट कट रास्ता अपनाने में जरा भी नहीं हिचक रहे हैं। इस प्रकार ये दुष्प्रवृत्तिया हमे खोखला कर रही हैं।

भावनात्मक शिक्षा का अभाव

किसी भी राष्ट्र के भविष्य के उज्ज्वल बनाने मे वहा के विद्यालयो की अहम भूमिका होती है। प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री दौलत सिह कोठारी के शब्दो मे "किसी राष्ट्र के भाग्य का निर्माण उसकी कक्षाओ मे होता है। लेकिन आज का आलम यह है कि विद्यार्थियो के चहुमुखी विकास की जगह मात्र उनके मस्तिष्क के विकास पर ही बल दिया जा रहा है। परीक्षा मे अधिक अक अर्जित करना ही आज विकास का मापदड हो गया है। आज भावनात्मक पक्ष की अवहेलना की जा रही है। वास्तव मे शिक्षा का अर्थ होता है मस्तिष्क हाथ और भावना या ह्रदय तीनो का समुचित विकास करना इस दृष्टिकोण से आज की शिक्षा व्यवस्था सर्वांगीण विकास की जगह एकाकी विकास पर बल दे रही है। आज का विद्यार्थी प्रतियोगिता नामक रोग से ग्रस्त है। उसे डाक्टर इन्जीनियर आई०ए०एस० और चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट बनना है तो वे रूचियो को ताक पर रख कर हम अपने सपनों को उनके माध्यम से पूरा करना चाहते हैं। हम उन्हे वो बनाना चाहते हैं जो वे बनना नहीं चाहते। जो नहीं हैं वह बनना बडा ही कठिन काम है। अत भावना को जब तक पूर्ण रूपेण विकसित नहीं किया जाएगा तब तक इस गिरावट को नहीं रोका जा सकता है।

पश्चिमी सभ्यता एव सस्कृति का प्रभाव

करीब ९० प्रतिशत प्रधानाचार्यो का यह मानना है कि आज की युवा पीढी के गुमराह होने का अहम कारण है पश्चिमी सभ्यता एव सस्कृति का प्रभाव। आज ओडिसी कुच्चीपूडी कत्थकली और भरतनाटयम की जगह पाप सौंग ने ले लिया है। बम्बईया फिल्मो का प्रभाव दिलो दिमाग पर छाता जा रहा है। बच्चो मे अपराधी प्रवृत्तियों के बढने का सबसे बडा कराण है पश्चिमी फिल्मों का प्रभाव । इस बात को तो आज से कुछ दिन पूर्व अपनी ससद मे भी स्वीकार किया गया है।

उपरलिखित कारणो/तथ्यो के अतिरिक्त अभिभावको की तरफ से अन्य मानसिकता शारीरिक श्रम की अवेहलना सम्पत्ति का अनुचित बटवारा धार्मिक सस्थाओ की विफलता परिवार की विफलता बुद्धिजीवी वर्ग का सुविधा भोगी हो कर कर्तव्यच्युत हो जाना और विद्यालय मे नैतिक एव धार्मिक शिक्षा अभाव भी हमारे अध पतन के लिए उत्तरदायी है। खासकर बुद्धिजीवी वर्ग का सुविधा भोगी होना तो अत्यन्त ही महत्वपूर्ण कारण है। यह वर्ग अपने कर्तव्य से विमुख हो गया है। आज यह वर्ग दोहरी जिन्दगी जी रहा है। और रग बदलने मे गिरगिट को भी मात दे रहा है। आज अधिकाश वकील पत्रकार और शिक्षक अपने पेशे के प्रति कर्त्तव्य परायण नहीं है। वे सुविधा की खोज मे लम्बी पक्ति मे खडे हो गये हैं। ये आज अपनी जिन्दगी को विलासपूर्ण बनाने के लिए और उसके लिए साधन जुटाने के लिए लम्बी दौड मे लग गये हैं। अब आप ही सोचिए कि जिस देश मे चेतना का अलख जगाने वाला स्वय ही दिगभ्रमित हो जाये उस राष्ट्र को गिरने से कौन बचा सकता है ?

निश्कर्षत यह कहा जा सकता है कि अगर वास्तव मे अपने राष्ट्र को सास्कृतिक क्षरण से रोकना है तो एक आन्दोलन की आवश्यकता है जो जीवन के हर क्षेत्र मे हो। समाज अर्थतत्र राजनीति शिक्षा और धर्म सबको सुधारने की जरुरत है। अन्यथा एक दिन हम स्वय अपनी अकर्मण्यता पर बैठकर रोयेगे। और हमारी युवापीढी अपनी जड से कटकर कहीं और जा जुडेगी। अत अभी भी समय है कि हम विखराव को रोकने का समुचित प्रयास करे।

जल का औषधोपचार – एक आश्चर्य

गोविन्दराम वासुदेव राठी

बहुत-सी बीमारिया केवल सादा जल सही पद्धति से पीने से ठीक हो जाती हैं। आयुर्वेद मे इसे 'जल–चिकित्सा' कहा गया है। हमें देखना है कि यह प्रयोग किस प्रकार करने से शीघ्र तथा पूर्ण राहत मिलेगी। चर्चा करने के पहले यह देखेगे कि इस प्रसग में कौन–कौन–सी बीमारिया ठीक होती हैं। इनमे – सिरदर्द रक्तचाप पाडु, आमवात अर्धाङ्गवायु, चर्बी बढना सधिवात नाक की हड्डी बढने से जुखाम रहना नाडी की धडकन बढना दमा खासी पुरानी खासी यकृतक रोग गैस अम्लपित्त अल्सर मलावरोध अन्न–नलिका में अन्दर से सूजन गुदा बाहर आना बवासीर मधुमेह आमातिसार टी बी पेशाब की बीमारिया कान की बीमारिया आखो की बीमारी खून आना तथा सूजन गले के विकार गर्भाशय के विकार अनियमित मासिक धर्म श्वेत प्रदर गर्भाशय का कैंसर स्तन की गाठ का कैंसर मेदश्वर तथा अन्य छोटी–मोटी बीमारिया हैं।

उपर्युक्त बीमारियो के लिए सादा जल ही लाभदायक है। प्राणी के शरीर को चलाने वाली मुख्य मशीन पेट ही है। जल को सही तरीके से पीने से पेट की अतडिया साफ होकर कार्यरत रहती हैं। इसलिए निम्न पद्धति से जल नियमित रूप से पीने से अनेक बीमारिया स्वत ठीक हो जाती हैं –

प्रात काल उठते ही प्रतिदिन बिना मजन किये केवल कुल्ला करके सवा लीटर (लगभग चार गिलास) जल एक साथ पीना चाहिए। जल पीने के बाद मजन आदि कर सकते हैं। इतना जल एक साथ न पिया जा सके तो पहले पेट भर पीकर ४–५ मिनट वहीं पर चलकर शेष जल पी ले। बीमार एव नाजुक स्वास्थ्य वाले व्यक्ति यदि एक साथ चार गिलास पानी न पी सके तो पहले एक या दो गिलास पानी से प्रयोग शुरू करें। धीरे–धीरे बढाकर चार गिलास तक आ जाएँ। इसके बाद पूरा पानी नियमित रूप से पीना जारी रखें। एक साथ इतना जल पीने से शरीर पर कोई कुप्रभाव नहीं पडता है। शुरुआत के तीन दिनो तक पानी पीने के बाद थोडी देर मे दो–तीन बार पेशाब अवश्य आयेगा, परन्तु तीन–चार दिनो के बाद वह नियमित हो जायेगा।

जल ग्रहण करने के बाद पैंतालीस मिनट तक कुछ भी सेवन न करे। यह जल वक्रीकृत चिपकी तथा सुस्त आतों को साफ सक्रिय करता है। जिससे आतों मे पड़े अन्न (खाया हुआ) का सत्व आतो द्वारा शोषित होकर उसका खून मे रूपान्तर होता है तथा पुराने खून की सफाई भी होती है। यह शुद्ध तथा नया खून शरीर में सचारित होकर शरीर के घटको का दुरुस्त कर बलवान् बनाता है और शरीर रोगमुक्त होता है। भविष्य मे भी शरीर निरोग बना रहता है।

यह तो हुई प्रात कालीन जल–सेवन की विधि। भोजन करते समय या भोजन के बाद कब कैसे और कितना जल पीना चाहिये इसकी चर्चा भी आवश्यक है आइये अब इस पर भी कुछ विचार किया जाए –

भोजन के दो घन्टे बाद जल पीना चाहिए। बीच मे उसके पहले न पीये। भोजन के समय जल पीने की ज्यादा आवश्यकता पडे तो १०० मिली तक ही पीना चाहिए। भोजन के बाद दो घूट अन्न–नलिका साफ करने के उद्देश्य से पीये। भोजन के बाद दो घन्टे तक न रुक सकते हैं तो एक घन्टे बाद २०० मिली जल ग्रहण किया जा सकता है। दो घन्टे बाद आप कितना भी पानी पी सकते हैं।

खाये हुए पदार्थ का पेस्ट बनने मे लगभग २ घन्टे का समय लगता है। भोजन के समय गैस्ट्राईट नामक गैस भोजन को पचाने हेतु पैदा होती है। वही गैस भोजन का पैस्ट मे रूपान्तर करती है। वह जल मे घुलनशील है। भोजन के तुरन्त बाद जल पीने से गैस जल मे घुलने से अन्न का पाचन होने में कठिनाई होती है। ऐसी हालत मे कच्चा अन्न आतो मे जाकर सडन पैदा करता है जिससे अम्लपित्त होता है। अम्लपित्त ही रोगो की जड है। इसलिये भोजन के तुरन्त बाद जल नहीं पीना चाहिये।

रात्रि के भोजन के बाद बिस्तर पर जाते समय जल के अलावा कुछ भी सेवन न करे। सोने के एक घन्टा पहले खाना–पीना हो जाना चाहिए। दोनो समय भोजन के एक घन्टा पहले भरपूर जल पीने से अग्नि प्रदीप्त होकर भूख बढिया लगती है। जल अशुद्ध हो तो उबले जल का ही प्रयोग करे। दिन भर मे कम से कम ६ लीटर जल तो पीना ही है ज्यादा भी पी सकते हैं। शुरू–शुरू मे ४–५ दिन कठिनाई रहेगी बाद मे सामान्य हो जायेगी। रोगियो पर इस प्रकार जल का उपयोग करने पर अनुभव यह हुआ कि इस प्रयोग से दो साल से कोई बीमारी नहीं आई बल्कि १० किलो वजन बढ गया चर्बी वाले की चर्बी कम होकर वह सामान्य हो गया। रोगी सर्दी जुखाम खासी और अजीर्ण से भी पीडित नहीं हुए।

कफ प्रकृति वाले को ठडा जल नहीं पीना चाहिए। वात के रोगी को यह प्रयोग प्रथम एक सप्ताह तक रोजाना तीन बार कराना चाहिए–सुबह और दोनो भोजन के एक घन्टा पहले। इसके बाद रोजाना एक ही बार प्रयोग करे। वैसे हरेक को यह प्रयोग करने से पूर्ण लाभ मिलता है। यह प्रयोग जीवन भर करना हितकर है। सशक्त व्यक्ति के करने से आगे रोगी बनने की उम्मीद नहीं रहती। मलावरोध अम्लपित्त आग्निमान्द्य एक सप्ताह मे तथा ब्लडप्रेशर मधुमेह रोग मे एक मास मे आराम हो जाता है। इस प्रयोग से मनुष्य प्रफुल्लित और उत्साही बनता है। यह प्रयोग अमृत स्वरूप है। और एकदम सादा बिना खर्चे का तथा निर्दोष कमजोर व्यक्ति भी कर सकता है।

कर्मचन्द गुप्त परोपकारिणी सभा अजमेर

हमारा प्यारा आर्य समाज

– डॉ० ओमशरण विजय, जयपुर

हमारा प्यारा आर्यसमाज नयन का तारा आर्यसमाज।
देश का प्रहरी आर्यसमाज धर्मवन के हरि आर्यसमाज।।
प्रवर्तित करके वेद का ज्ञान
दिखाया सुन्दर सत्य महान।
प्रभु पूजा का दे सत–ज्ञान
दिया शुभ जीवन मत्र प्रदान।।
सत्य सथानक आर्यसमाज पाप सहारक आर्यसमाज।
वेद उद्धारक आर्यसमाज पुण्य विस्तारक आर्यसमाज।।
दिया मानव को ऐसा बोध
बह गया सारा कल्मश क्रोध
मिटाया जग से अत्याचार
बनाया सबको निज परिवार।।
स्वराज उद्घोषक आर्यसमाज सुराज का पोषक आर्यसमाज।
सोहे जिस पर सत्य धर्म का ताज पीडित का त्राता आर्यसमाज।।
केहरी सम करके उद्घोष
हिन्दू मे भर करके नवजोश।
धर्म का करके सफल अभियान
विधर्मी किए हताश निदान।।
बना कर सारे बिगडे काज जाति सम्मान बचाया आज।
किया उद्घाटित वैदिक राज जगत से न्यारा आर्यसमाज।।
हमारा प्यारा आर्यसमाज।
नयन का तारा आर्यसमाज।।

प्रधान आर्यसमाज
कृष्णपोल बाजार जयपुर (राज०)

वेद प्रचार महोत्सव एवं सत्संग भवन उद्घाटन समारोह

सभी धर्म प्रेमी सज्जनो को हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि आर्य समाज कोटद्वार मे हमेशा की भाति इस वर्ष भी दिनाक १ सितम्बर ६६ से ५ सितम्बन ६६ तक वेद प्रचार महोत्सव तथा सत्सग भवन उदघाटन समारोह धूमधाम से मनाया जायेगा।

इस अवसर पर आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। सत्सग भवन का उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प० रामचन्द्र राव वन्देमातरम जी की अध्यक्षता मे ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी के कर कमलो द्वारा दिनाक १ सितम्बर ६६ को होगा। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रचार मत्री श्री विशम्भर दयाल जी द्वारा ५ सितम्बर को सन्यास ग्रहण होगा।

वेद प्रचार महोत्सव कार्यक्रम

१ सितम्बर ६६ से ५ सितम्बर ६६ तक

वेद प्रवचन — भक्ति सगीत

ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी — श्री धर्मसिह आर्य

उद्गीथ साधना स्थली (हिमाचल प्रदेश)
ग्राम–गागलहेडी सहारनपुर
श्री विद्यारत्नजी आर्य
रेडियो सिगर नजीबाबाद

कन्या गुरुकुल का शुभारम्भ

आर्य जगत को सहर्ष सूचित किया जाता है कि बिजनौर जनपद के प्रसिद्ध नगर नजीबाबाद मे एक कन्या गुरुकुल का शुभारम्भ "आर्ष कन्या विद्यापीठ" नाम से जुलाई मास से हो चुका है। विद्यापीठ की सञ्चालिका पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी की स्नातिका प्रियवदा व्याकरणवेदनैरुक्ताचार्या होगी। कन्याओ को इस गुरुकुल मे व्याकरण–महाभाष्य–निरूक्तादि वेदागो का विधिवत अध्यापन कराते हुए लक्ष्य वेद तक पहुचाने का प्रयास किया जायेगा तथा साथ ही गणित–अग्रेजी भूगोल आदि विषय भी कक्षा ८ तक अनिवार्यरूपेण पढाये जायेगे। आगे की परीक्षाये महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध होगी। कक्षा ५ उत्तीर्ण होनहार सस्कारित व बुद्धिमती कन्याओं का प्रवेश प्रारम्भ है।

सम्प्रति यह गुरुकुल सीमित तथा अस्थायी परिसर मे चलाया जा रहा है अत इसके सुचारू रूप से सञ्चालन हेतु ५ बीघे भूमि की तत्काल आवश्यकता है। सभी दानी महानुभावो से आग्रह है कि भूदान के पवित्र यज्ञ मे सहयोग करते हुये इस विद्यास्थली के उज्ज्वल भवष्यि हेतु निम्न–लिखित पते पर मासिक वार्षिक अथवा स्वसामर्थ्यानुसार अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर सम्बल प्रदान करे।

प्रियवदा वेदभारती
प्राचार्या–आर्ष कन्या गुरुकुल
आर्यसमाज आदर्शनगर नजीबाबाद
पिन–२४६७६३
जन०बिजनौर (उ०प्र०)

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला मण्डल की ओर से

वेद प्रचार सम्पन्न

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला मण्डल की ओर से वद प्रचार दिवस आर्य समाज मन्दिर ग्रेटर कैलाश पार्ट २ मे श्रीमती सरला महता की अध्यक्षता मे अत्यन्त समारोह पूर्वक मनाया गया।

यज्ञदि के अनतर श्रीमती शकुन्तला सेतिया ने ध्वजारोहण का पुनीत कार्य किया। लाजपत नगर स्त्री आर्य समाज की बहिनो तथा गुणवती ने वेद विषयक गीत प्रस्तुत किय।

विभिन्न स्त्री आर्य समाजो की बहिनो द्वारा स्वस्ति वचन के प्रथम २० मत्रो की प्रतियोगिता हुई। जिसमे बहिनो ने बडे उत्साह से भाग लिया। प्रथम द्वितीय तृतीय और चतुर्थ आने वाली प्रतियोगी बहिनो को मण्डल की ओर स पुरस्कार दिया।

वेद सम्मेलन मे श्रीमती शकुन्तला दीक्षित सुशीला त्यागी और डा० शशि प्रभा ने वेद के गूढ रहस्यो एव सिद्धान्तो का बडी सरल भाषा मे प्रतिपादन किया।

मण्डल अध्यक्षा श्रीमती शकुन्तला आर्या ने वेद के प्रतिदिन स्वाध्याय पर बल देते हुए कहा कि वेदानुकूल जीवन से आज की सभी समस्याओ का निवारण हो जाता है। दलित ईसाईयो क आरक्षण के विरोध मे श्रीमती आर्या ने कहा कि ये नीति सरकार की तुष्टिकरण और वोट बटोरने की चाल के ही अर्न्तगत है। इस आरक्षण नीति का आर्य महिलाए डट कर विरोध करेगी।

सभा म मुख्य अतिथि के रूप मे श्रीमती कपिला हिगोरानी अधिवक्ता सुप्रीम कोर्ट दिल्ली ने अपनी सेवाओ का निर्धन लोगो के लिए नि शुल्क रूप से देने की पेशकश की।

अन्य मे मन्त्र ग्रटर कैलाश की ओर से सभी अभ्यागत बहिनो का समुचित आतिथ्य किया गया।

भवदीय
शकुन्तला आर्या

मुक्तक

जन्म जननी भूमि गौरब स्वर्ग से कुछ कम नहीं है।
प्राण भी जाये चले पर वीर को कुछ गम नहीं है।
देश की स्वाधीनता मे देह आहुति कर गये जो।
उन शहीदो के लिए वह स्वर्ग इसके सम नहीं है।।

गढे युग साधना शिल्पी समय को मोड कर चलदे।
अपरिग्रह आत्म सयम का दुपट्टा ओढ कर चलदें।
धधकती भट्टिया बारूद की यह कब प्रलय करदें।
गुठे अब आर्य घट दुर्भावना का फोड कर चलदे।।

पथ सत्यम शिवम सुन्दरम के तुम राही हो।
प्रज्ञान ब्रह्म तत्वमसि के अवगाही हो।
करते आये उल्लेख समय की छाती पर।
भूले क्यो अपना रूप अमिट तुम सहाही हो।।

क्षरण क्षण–क्षण जहा पर इन्द्रियों का बन्द हो जाये।
विखरती बैखरी का स्वर, जहा पर मन्द हो जाये।
उतरती चेतना के लोक में फिर परा–पश्यन्ती –
निकलते शब्द जो सध कर अमर वह छन्द हो जाये।।

सत्यव्रत सिह चौहान सिद्धान्त शास्त्री
पुडरी – मैनपुरी (उ०प्र०)

अश्लीलता की परिभाषा भारतीय संस्कृति में

डा राजेन्द्र आर्य, बल्हारपूर

समय की बदलती लहरे भारतीय सस्कति से हमे इतनी दूर बहा कर ले गयी है कि हमे अपनी पहचान भी भूल गयी लगती है। विदेशियो की भौतिकता ने हमे इतना भ्रमित कर दिया है कि हमे नैतिकता के अर्थ को डिक्शनरी मे ढूढना पड रहा है। मनोरजन और शरीर सुख के पीछे हम इतने विक्षप्त और दीवाने हो गये हैं कि हमने भौतिकता के कफन मे आध्यात्मिकता को लपेट कर रख दिया है। आज हम शरीर के उर्जा के केन्द्र आत्मा और ब्रह्माड के निर्माता परमात्मा के अस्तित्व पर भी प्रश्न चिन्ह लगा सकते हैं। इतनी हमारी बुद्धि कुठित हो गयी है। और इसे हम अपने तरक्की का सबूत मानकर गर्व से सिर ऊचा उठाकर शान से कहते फिरते हैं कि हमने पुरानी अवैज्ञानिक मान्यताओ आडम्बरो और दकियानूसी विचारधारा को छोड दिया है। भौतिक सुख सुविधा के आश्चर्यजनक नये नये वैज्ञानिक उपकरणो को जुटाकर हम कहने लगे हैं कि हमने हर क्षेत्र मे बडी तरक्की की है।

काश कि हम महसूस कर पाते कि जितने हम भौतिकता के पीछे भाग रहे है उतना हमारा नैतिक पतन होता जा रहा है। पतन की अधेरी खाई मे हम इस तरह डूब रहे हैं कि हममे अच्छे बुरे सही गलत उचित अनुचित की सीमा रखाए तय करने तक की योग्यता नहीं रह गयी है जबकि भारतीय सस्कति ही इन तमाम आदर्शो की जननी रही है। भारतीय सस्कति मे वो शिक्षाए है जो अच्छे बुरे सही गलत अपने पराए की स्पष्ट पहचान कराती हैं। इसी सस्कति मे यह महानता है कि अपनी पत्नी को छोड अन्य सभी स्त्री जाति को माता और बहन समझा जाता है।

> ***यह उन लोगो के लिए कितने शर्म की बात है कि खुद को तो भारतीय कहते है और ये भी कहते है कि अश्लीलता की कोई स्पष्ट परिभाषा ही नहीं है।***

हमारी बदलती रुचि और प्रवृत्ति ने तथा विदेशी अधानुकरण की नीति ने और हमारी विगत सरकार की उदासीनता और वोटो की स्वार्थी राजनीति मे हमारी सस्कति को दीमक लग गयी है। और अब हम धीरे धीरे हृदय व भावना विहीन मशीनी मानव रोबोट बनने लगे है भावना शून्य ऐसे लोग जो भारतीय सस्कति से ही अपरिचित हैं वे भला क्या जाने लोक लाज मर्यादा शील अश्लील।

आधुनिकता का जामा पहनकर विदेशी सस्कति के चश्मे से अवलोकन करने वालो को भारतीय जनता के हित मे शील अश्लील की व्याख्या कभी सभव नहीं है।

इसी अश्लील की परिभाषा को कानूनी दाव पेच मे उलझाकर समझने ओर समझाने का दिखावटी निरर्थक प्रयास के बजाय भारतीय सस्कति मे पले एक भाई से पूछो की सर्वसाधारण परिस्थिति मे वह अपनी जवान बहन के शरीर के कितने भाग को खुला देखने मे शर्मिंदगी नही महसूस करता एक माता से पूछो की वह अपनी जवान कन्या को शरीर का कितना भाग ढक रखने की ताकीद देती हे और पूछो एक पति से की वह अपने दोस्त मडली और आदनीय बुजुर्गो के सामने अपनी आदर्श पत्नी के किन किन अगो को कितने प्रमाण मे खुला रखने की अनुमती दे सकता है। और पर पुरुषो के साथ पत्नी को किस हद तक व्यवहार करने की छूट दे सकता है। इन बातो को समझने वालो के लिए अश्लीलता की परिभाषा कभी गुत्थी बनकर नहीं उलझती

जब तक अनुचित ढग से पैसा कमाने की स्वार्थी मनोवृत्ति भले बुरे का विचार न कर सबको खुश करने की वोटो की गदी अधर्म की परिभाषा की अवहेलना करने की प्रवृत्ति मौजूद रहेगी नब तक अश्लीलता की परिभाषा कभी सभव नहीं हे

आर्य समाज की तरफ से कापी वितरण व सत्कार समारोह

आर्य समाज लोअर परेल सस्था की ओर से मुफ्त कापी वितरण और सत्कार समारभ महाराष्ट्र विधान सभा के अध्यक्ष श्री० दत्ताजी नलावडे इनके अध्यक्षता म लोअर परेल यहा अभी अभी सम्पन्न हुआ इस समय आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री० ओंकारनाथ जी आर्य मुख्य अतिथि थे।

सस्था के अध्यक्ष श्री० शा ाराम ग ावलकर इन्होने अपने प्रास्ताविक भाषण म स स्था के कामकाज पर दृष्टीक्षेप किया

श्री० दत्ताजी नलावडे अध्यक्षीय भाषण मे हरएक ने अपने उन्नती के बारे मे न स ा ते हुये औरो की उन्नती को समझना चाहिए यह महर्षि दयानन्द सरस्वती इनके उपदेशोकोंसस्थया आर्य समाज लोअर परेल यह सस्था कर रहा है

इस समय सल्लगार श्री ा ी नलावडे अध्यक्ष महाराष्ट्र विधान सभा आ वि ियरत्न पुरस्कार विजेता इनका श्री ओ ारनाथ आर्य इनके हस्ते स्मृतिचिन्ह शाल औ श्रीफल दकर सत्कार किया गया। उसकी ा ह सस्था के अध्यक्ष श्री शा ाराम गावलकर विश कार्यकारी अधिकारी उपाध्यक्ष श्री० रमेश ध म्पकर विशेष कार्यकारी अधिकारी सल्लागार श्री म ादेव देवले नगर सेवक वर्वीशेष कार्यकारी अधिकारी और सस्था के ज्येष्ठ कार्यकर्ता श्री ि ष्णु गेणूजी जाधव स्वात्रता सैनिक ानक श्री० दत्ताजी नलावडे इनके हस्ते शाल अ र श्री ा देकर सत्कार किया गया

आर्य प्रतिनिधि सभा रांची द्वारा वेद प्रचार

छोटानागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा राची के द्वारा वेद प्रचार कार्यक्रम के प्रथम चरण के अर्न्तगत जून व जुलाइ माह मे उत्तरी छोटानागपुर और सथालपुर गना प्रमण्डल के कान्हाचट्टा पित्तीज चन्दवारा घोडथाना भसरी वैजनाथपुर उधना बा ार बगमगन्ज र्धा ्गर बडहरना और जगन्नाथपुर क रथयात्रा मेल मे प्रतिनिधि सभा के प्रचार मत्री प० गोविन्द प्रसाद आर्य विद्या वारिधि (चतरा) प० राम प्रसाद आर्य भजनोपदेशक (स नगर) और शिवधारी आर्य तवलावादक (औरगाबाद) की मण्डली के द्वारा प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। वेद प्रचार का द्वितीय चरण २१ अगस्त से खुशरुपुर (पटना) व २८ अगस्त से डोर डा राची) से पुन प्रारम्भ होगा

दयाराम पादार

आधारशिला समारोह

महान मनीषी महर्षि दयानन्द जी के मिशन एव वेद ज्ञान को जन जन तक पहुचाने हेतु आय समाज क आन्दोलन को चलाया गया उस श्रखला मे १८ ८ ६६ को आर्य समाज राड ड ा फस २ निकट काठी न ४३० पानीपत म भव्य अर्य समाज मन्दिर निमाण हेतु आधार शिला क कार्य प्रमुख समाज सेवी तथा आर्य समाज व कर्म कायकत्ता सेठ आदित्य प्रकाश जी आर्य के कर कमलो द्वारा सम्पन्न होगा इस कायक्रम म वेद प्रवचन आर्य जगत के प्रमुख स यासी स्वामी माधवानन्द जी सरस्वती करेगे

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अर्जुन जी आर्य श्री जगदीश चन्द्र लीखा (स्टट ब एव श्रीमति सुधा रानी आर्य होगे ध्वजारोहण आय जगत के प्रमुख विद्वान एव स्वतन्त्रता सना ा प्र त्तम चन्द जी शरर एम० ए० करगे

वेदप्रचार कार्यक्रम का आयोजन

मुजफ्फरपुर आयसमाज के प्रधान श्री पन्ना लाल आय की अध्यक्षता मे मुजफ्फर समाज ०३ दिवसीय वेद प्रचार कार्यक्रम २४ अगस्त ६६ से ५ सितम्बर ६६ तक करने का लिया है जिससे ४ दिनो तक मुजफ्फरपुर शहर के विभिन्न चौक पर नुक्कड सभा आय करेगी तथा २८ अगस्त ६६ से ५ सितम्बर तक आर्य समाज मन्दिर मे वेद कथा कायक्रम जायेगा जिसमे राष्ट्र क्षा सम्मेलन गौ रक्षा सम्मलन महिला सम्मेलन वेद सम्मेलन भाषा सम्मेलन राजधम सम्मेलन शका समाधान धम सम्मलन पुरोहित प्रशिक्षण छात्रो ए अन्य प्रतियोगी छात्रो को प्रमाण पत्र व पुरस्कार वितरण आदि का महत्वपूर्ण कार्यक्रम करने का निर्णय सर्व सम्मति से लिया गया साथ साथ ६ दिनो तक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर नियमित रूप से २ अगस्त से ५ सितम्बर ६ तक चलेगा।

पन्ना लाल आर्य प्रधान
आर्यसमाज मुजफ्फरपुर

पोस्टल रजि॰ ग्न व डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 25 8 96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/96
R N N F2^^7 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 22/23 8-1996

आर्य समाज निर्वाचन

आर्य समाज हरदोई

प्रधान	श्री आचार्य देवशर्मा जी भिक्षु
मन्त्री	नन्दकिशोर अवस्थी
कोषाध्यक्ष	श्री रामलाल गुप्त

आर्य समाज गया

प्रधान	श्री लक्ष्मी नारायण
मन्त्री	श्री जगदम्बा प्रसाद
कोषाध्यक्ष	श्री मुशीप्रसाद

आर्य समाज मीरानपुर कटरा

प्रधान	श्री सत्य प्रकाश आर्य
मन्त्री	श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष	श्री अशोक कुमार

गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) भोलाझाल (मेरठ)

प्रधान	श्री मनोहर लाल
मन्त्री	श्री इन्द्रराज
कोषाध्यक्ष	श्री माधव प्रसाद

आर्य समाज छोटीसादडी

प्रधान	श्री वृद्धिशकर जी उपाध्याय
मन्त्री	श्री विनय वद परोरी
कोषाध्यक्ष	श्री पुष्पन्द्र देव उपाध्याय

आर्य समाज कृष्णपोल बाजार, जयपुर

प्रधान	डा० आमशरण विजय
मन्त्री	श्री ओमप्रकाश वर्मा
कोषाध्यक्ष	श्री सूरजनारायण गुप्त

साधना पक्ष और सांख्य सूत्र

डा० प्रमोद कुमार शास्त्री

तत्मीमासा प्रमाणमीमासा एव आचार मीमासा ये तीनो दर्शन शास्त्र के महत्वपूर्ण स्तभ है। इन्ही के आधार पर दर्शन का विशाल महल टि है। इनमे आचार मीमासा का तात्पय तत्त लिए कर्तव्य कर्मो का पालन और अकर के परित्याग से है। इस आचार मी साधना पक्ष को दशनो मे भिन्न भिन्न प्रस्तुत किया है। वैसे भी कहा जा **"आचारहीनेन पुनन्ति वेदा** अर्थात ? पुरुष को वेद भी पवित्र नही कर सकते। हृदय की पवित्रता वे तत्व ज्ञान असम्भव है। अत तत्व ज्ञान के लिए आचार सहिता का पालन अत्यावश्यक है। यहा साख्य शास्त्र की दृष्टि को सम्मुख रखकर उसके द्वारा निर्दिष्ट आचार सहिता को प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

यद्यपि साख्य शास्त्र को विशिष्ट रूप से ज्ञान योग का प्रतिपादक माना जाता है। चूकि इस दशन की दृष्टि म ज्ञान से ही मुक्ति सभव है। जिस प्रकार अधकार का विनाश मात्र प्रकाश द्वारा ही सभव है वैसे ही अज्ञान के विनाश मे ज्ञान ही एक मात्र एसा साधन है जो अज्ञान को नष्ट कर मोक्ष को प्रशस्त करता है। परन्तु शका यह होती है कि साख्य मोक्ष प्राप्ति मे जिस ज्ञान की चर्चा करता है उसकी प्राप्ति किस प्रकार आर किस साधन से होगी ? साख्य ने जिस प्रक्रिया से इस शका का समाधान किया हे वही प्रक्रिया आचार सहिता या साधना पक्ष के नाम से जानी जाती है।

साख्य दर्शन की मान्यता है कि आत्म ज्ञान म सबसे अधिक सहायक विषयो के प्रति अनासक्त बुद्धि का होना है। जो बुद्धि विषयो के प्रति राग मोह या आसक्ति बनाये रखती है वह आत्म ज्ञान मे प्रतिबन्धक मानी जाती है। इस लिए सासारिक वस्तुओ के प्रति मन की उदासीनता परमावश्यक है तथा आसक्ति का विनाश जरूरी हे। आसक्ति का विनाश साख्य दृष्टि मे ध्यान द्वारा मना गया है।

शोक समाचार

श्री कपूर चन्द आजाद का निधन

आर्य समाज मीरजापुर द्वारा एक शोक सभा दिनाङ्क ८ अगस्त को आर्य समाज मन्दिर मे श्री सूर्यदेव शर्मा को अध्यक्षता मे हुइ जिसम श्री कपूर चन्द आजाद उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के लम्बी बीमारी के बाद निधन पर दु ख प्रकट किया गया तथा दिवगत आत्मा की शान्ती एव शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य के लिए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की गई।

मत्री लालजी गुप्ता ने कहा श्री आजाद जी की मृत्यु से आर्य समाज मीरजापुर की अपार क्षति हुई है जिसकी पूर्ति होना असम्भव है।

वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी का निधन

वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी गया आर्य समाज के भूतपूर्व प्रधान आर्य समाज गया के आधार स्तम्भ, कर्मठ आर्य नेता ७६ वर्षीय श्री बुलाकचन्द सेठ (महाशय जी) का निधन दि० १२ मई को अपने निवास स्थान पर हो गया। स्व० महाशय जी के निधन से आर्य जगत की अपूरणीय क्षति हुइ है। वे कीर्ति शेष बने रहेगे।

पाठकों से विनम्र निवेदन

सार्वदेशिक के पाठक आर्यावर्त की वर्तमान परिस्थितियो से भली भाति परिचित है। धार्मिकता के नाम पर पाखण्ड गुरुडम का छलावा सामाजिकता के नाम पर कपट और राष्ट्रद्रोह बढता जा रहा है। ऐसा लग रहा है कि वैदिक राष्ट्र रूपी जगल मे चारो तरफ आग लगी है जिससे फल फूल और वनस्पतियो रूपी विचार धारा विनाश को प्राप्त होनी प्रारम्भ हो रही है। स्वार्थी राजनीति इस आग मे घी का काम कर रही है। प्रशासको और राजनेताओ की देखा देखी (यथा राजा तथा प्रजा के सिद्धान्त के अनुसार) सामान्य जनता भी भौतिकता वादी माया जाल को अपने ऊपर ओढने मे ही अपना जीवन व्यतीत कर रही है।

सार्वदेशिक साप्ताहिक के माध्यम से वैदिक धर्म की पवित्रता को बचाने के लिए हम सदैव सकल्प बद्ध है अत पाठको से हमारा विनम्र निवेदन है कि धार्मिक और राष्ट्र वादी विचारो को अधिकाधिक जनता तक पहुचाने के लिए सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहक बनाने की ओर ध्यान दे।

अपना वार्षिक शुल्क सदैव समय पर भिजवाए तथा आम जनता को भी इसके लिए प्रेरित करे।

इस साप्ताहिक पत्रिका का वार्षिक शुल्क केवल ५० रुपये रखा गया है जो कि लागत से भी कम है। आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये देकर बारबार वार्षिक शुल्क भेजने की दुविधा से बचा जा सकता है। आपके द्वारा भेजी गयी इस सहयोग राशि के प्रत्येक अश को वैदिक और राष्ट्र वादी भावनाओ के प्रचार मे ही व्यय किया जायेगा।

सपादक

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-2 से प्रकाशित

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् — विश्व को श्रेष्ठ (आर्य) बनाएँ

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

दूरभाष ३२७४७७१ ३२६०९८५ आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये वार्षिक शुल्क ५० रुपए एक प्रति १ रुपया

वर्ष ३५ अक २९ दयानन्दाब्द १७२ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ सम्वत् २०५३ भाद्रपद कृ० ४ १ सितम्बर १९९६

श्रावणी पर्व तथा श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के अवसर पर

आर्यजन स्वाध्याय और वेदप्रचार का व्रत लें

पाखण्ड खण्डन, राष्ट्र रक्षा, चरित्र निर्माण, गोपालन तथा विश्व को आर्य बनाने का प्रयत्न करें

आर्यों के सामाजिक और वैयक्तिक जीवन मे पर्वों का सदा से स्थान रहा है। इस पृथ्वी पर मानव जातिया किसी न किसी प्रकार का पर्व अवश्य मनाती हैं। पर्व शब्द जहा आनन्द से पूरित करता है वहा ग्रन्थि होने से धारक भी है। जिस प्रकार ईख के रस को ईख की ग्रन्थि सुरक्षित रखती है और बास आदि की दृढता को उसकी गाठे स्थिर रखती हैं उसी प्रकार शरीर की स्थिति स्थापकता शरीर की ग्रन्थियों द्वारा सुरक्षित है।

श्रावणी आर्यो के प्रसिद्ध पर्वों मे एक महान पर्व है। यह वैदिक पर्व है। इसका सीधा अर्थ अध्ययन और अध्यापन करने वालो से होता है। गृह्य सूत्रो के अनुसार इसका सीधा सम्बन्ध वेद और वैदिको से दिखाया गया है।

इस वर्ष श्रावण शुक्ल पूर्णिमा तदनुसार २८ अगस्त १९९६ को श्रावणी पर्व अत्यन्त पवित्रता गम्भीरता एव शालीनता के साथ आर्य समाज मन्दिरो सस्थाओ तथा अपने गृहो मे आर्य पर्व पद्यति के अनुसार सम्पन्न करे। श्रावणी के दिन यज्ञ व्रतग्रहण वेद प्रवचन आदि के कार्यक्रम करे तथा सामूहिक यज्ञोपवीत कराने का आयोजन करके अधिक से अधिक व्यक्तियो को यज्ञोपवीत धारण कराये। इसी दिन हैदराबाद सत्याग्रह के शहीदो को श्रद्धाजलि अर्पित की जाये। सप्ताह भर विद्वानो से वेदो का प्रवचन कराया जाये तथा समस्त आर्य बन्धु, वैदिक ग्रन्थो के स्वाध्याय और सामाजिक कुरीतियो आदि के निवारण का भी व्रत ले।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव तथा मत्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने देश देशान्तर की समस्त आर्य जनता से अपील की है कि आगामी ५ सितम्बर ९६ को योगीराज श्री कृष्ण का जन्मोत्सव पूर्ण श्रद्धा के साथ समारोह पूर्वक मनाया जाये और उनके जीवन तथा व्यक्तित्व पर विद्वानो के प्रवचन व व्याख्यान कराये जाये।

आज देश के सामने जो गम्भीर सकट और चुनौतिया हैं उनके निवारण हेतु योगिराज श्री कृष्ण जैसे महापुरुषो की राष्ट्र और विश्व को बडी जरूरत है। आर्य समाजो द्वारा श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य मे आयोजित वेद प्रचार सप्ताह का समापन ५ सितम्बर ९६ का श्रीकष्ण जन्माष्टी पर ही होगा। महाराज श्रीकृष्ण का जीवन पूर्ण रूपण वैदिक था उन्होने आजीवन वैदिक मार्यादा का पालन किया। अन्याय को दूर करना और न्याय को प्रतिष्ठापित करना उन्होने अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। योगिराज श्रीकृष्ण सच्चे वदज्ञ ओर प्रभु भक्त थे

महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे श्रीकष्ण के विषय मे लिखते है देखो श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है। उनका गुण कम स्वाभाव और चरित्र आप्त पुरुषो के सदृश है जिसमे अधर्म का कोइ आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से लेकर मरणपर्यन्त बुर' काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा। श्रीकृष्ण के समान प्रगल्भ बुद्धिशाली प्रज्ञावान व्यवहार कुशल कर्नुत्ववान पराक्रमी पुरुष ज्ञानी आज तक ससार मे नहीं हुआ। अत आर्य जनता से अनुरोध है कि योगिराज श्रीकष्ण का जन्मोत्सव समस्त आर्य समाजो मे पूर्ण श्रद्धा के साथ मनाया जावे।

हैदराबाद के आर्य शहीदों को श्रद्धांजलि

श्रद्धाजलि अर्पण करते हैं हम करके उन वीरो का मान।
धार्मिक स्वतन्त्रता पाने को किया जिन्होन निज बलिदान।।
परिवारो के सुख को त्यागा देश के अनेको वीरो ने।
कष्ट अनेको सहन किए पर धम न छोडा वीरो ने।।
ऐसे सभी धर्म वीरो के आगे शीश झुकाते हैं।
उनके उत्तम गुण गण का हम निज जीवन में लाते हैं।।
अमर रहेगा नाम जगत मे इन वीरो का निश्चय से।
उनका स्मरण बनाएगा फिर वीर जाति को निश्चय से।।
करे कपा प्रभु आर्य जाति में कोटि कोटि हों वीर।
धर्म देश हित जो कि खुशी से प्राणा की आहुति दे वीर।।
जगदीश को साक्षी जानकर यही प्रतिज्ञा करते हैं।
इन वीरों के चरण चिन्ह पर चलने का व्रत करते हैं।।
सर्व शक्ति दे बल ऐसा धीर वीर सब आर्य बने।
पर उपकार परायण निश दिन शुभ गुण धारी आर्य बने।

धर्मवीर नामावली

श्यामलाल जी महादेव जी राम जी श्री परमानन्द।
माधव राव विष्णु भगवन्ता श्री स्वामी कल्याणानन्द।।
स्वामी सत्यानन्द महाशलय मलखाना श्री वेद प्रकाश।
धर्म प्रकाश रामनाथ जी पाडुरग श्री शान्ति प्रकाश।।
पुरुषोत्तम जी ज्ञानी लक्ष्मण राव सुनेहरा वेकटराव।
भक्त अरुडा मातूराम जी नन्हू सिह जी गोविन्दराव।।
बदन सिह जी रतिराम जी मान्य सदा शिव ताराचन्द।
श्रीयुत छोटे लाल अशर्फीलाल तथा श्री फकीर चन्द।।
राधा कृष्ण सरीख निर्भय अमर हुए इन वीरो का।
स्मरण करें विजयोत्सव के दिन सब ही वीरो धीरो का।।

सम्पादक- डा.सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गठित

तदर्थ समिति आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

कार्यालय-नगर आर्यसमाज, १४३० प० शिवदीन मार्ग, कृष्णपोल, जयपुर-३

निर्वाचन की अधिसूचना

(नियम स० २६ (क) के अनुसार दो मास पूर्व)

प्रमाण मिला है कि आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के नाम पजीकृत आर्य समाज मोती कटला, जयपुर का चौडा रास्ता स्थित एक भवन, जिस पर आर्य समाज लिखा हुआ था, जिसका मूल्य लगभग १६ लाख रुपये था, वह दि० २१ जून, १६६६ को केवल ८ लाख रुपये मे श्री केशवदेव वर्मा ने श्री सुमेधानन्द की सहमति से बेच दिया है।

मान्यवर ! आप को यह जानकर हर्ष होगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का निर्वाचन रोकने के लिए गत वर्ष से श्री सुमेधानन्द आदि ने जो अनेक मुकदमे किये थे तथा न्यायालय मे जो प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया था उसे न्यायालय अपर जिला एव सैशन न्यायाधीश क्रम ८ जयपुर ने दिनाक १६-८-१६६६ को अस्वीकार करक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा नियुक्त तदर्थ समिति जिसके प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी तथा मत्री श्री भगवती प्रसाद सिद्धान्त भास्कर है उन्हे उक्त सभा का निर्वाचन कराने इस मे श्री सुमेधानन्द आदि द्वारा कोई भी बाधा न डालने तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की अन्तरग सभा के नाम से चुनाव के सम्बन्ध मे कोई भी कार्य न करने का आदेश प्रदान किया है।

न्यायालय ने इस से पूर्व अपने दि० २२-२ १६६६ के आदेश मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली के अधिकारो को मान्यता प्रदान की है। उक्त सभा द्वारा श्री सुमेधानन्द व श्री केशवदेव वर्मा आदि को आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान मे अत्यन्त अवैध अनुचित कार्य करने सार्वदेशिक सभा के कार्यालय पर कब्जे का असफल प्रयास करने सुमधानन्द द्वारा स्वय को सार्वदेशिक सभा का मत्री घोषित करने सभा पर अनेक मुकदमे करने एव अनेक दुष्कृत्यो के कारण आर्य समाज से निष्कासित किया जा चुका है। अत इनका आर्य समाजो एव उक्त सस्थाओ से कोई सम्बन्ध नहीं है।

आर्य समाजो को सूचित किया जाता है कि सार्वदेशिक सभा एव न्यायालय के आदेशानुसार आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का निर्वाचन रविवार दि० २७ अक्टूबर १६६६ को आर्य समाज आदर्श नगर जयपुर मे करने का निश्चय किया गया है। आर्य समाजो को वार्षिक चित्र गत वर्ष भेजे जा चुके हैं जिसमे ३१ मार्च १६६६ तक का विवरण भरकर दशाश व निश्चित कोटि की राशि सहित अनिवार्य रूप से दिनाक २७ सितम्बर ६६ तक तदर्थ समिति के कार्यालय मे प्राप्त करादे। जिनके पास वार्षिक चित्र न हो वे शीघ्र मगवा सकते हैं। दि० २६ सितम्बर रविवार को वार्षिक चित्रो की जाच करके प्रतिनिधियो की स्वीकृति वार्षिक अधिवेशन एव निर्वाचन आदि का कार्यक्रम आर्य समाजो को भेज दिया जावेगा। सभा के निर्वाचन अधिकारी श्रीमान राजेन्द्र सिह सेवा निवृत्त अतिरिक्त जिला न्यायाधीश जयपुर नियुक्त किये गये हैं। इस अधिसूचना के साथ ही निर्वाचन की प्रक्रिया आरभ हो गई है। अत समस्त आर्य समाजे निर्वाचन मे उत्साहपूर्वक सम्मिलित होकर सार्वदेशिक सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के सगठन को सुदृढ बनावे तथा समस्त राजस्थान मे वैदिक धर्म प्रचार को प्रगति देने के लिए सुयोग्य अनुभवी एव कर्मठ कार्यकर्त्ताओ का निर्वाचन करे।

आर्य बन्धुओ ! इस समय धर्म देश की अत्यन्त गभीर अवस्था है—ईसाई व इस्लाम का प्रचार तीव्र गति से बढ रहा है वैदिक सभ्यता—सस्कृति पर इनके प्रबल प्रहार हो रहे हैं वर्तमान सरकार वोटो के लिए इन्हे प्रोत्साहन एव देश घातक विशेष अधिकार दे रही है देश की अखण्डता व स्वतत्रता को नष्ट करने के लिए देश में जहा विघटनकारी सक्रिय हैं वहा आर्य समाज मे भी अनेक वेशो मे विघटनकारी सक्रिय हैं वे अपने निहित स्वार्थों व सत्ता के लिए बोगस अवैध सार्वदेशिक सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा बनाकर आर्य समाजो मे फूट डालने विघटन करने का अक्षम्य अपराध कर रहे हैं।

जबकि महर्षि दयानन्द ने अपने वेदना भरे शब्दो मे चेतावनी दी है कि – आपस की फूट से कौरव पाडवो व यादवो का नाश हुआ सो तो हो गया परन्तु अभी तक भी यह भयकर राक्षसी रोग आर्यों के पीछे लगा हुआ है न जाने यह कभी छूटेगा या आर्यों को सब सुखो से छुडाकर दुखसागर मे डुबा मारेगा। हम परम पिता परमात्मा के वेद मत्रो द्वारा दिए गये इस उपदेश का भी पालन करे कि हमारा सगठन व सभा एक ही हो। आशा है आर्य समाज के सच्चे हितैषी विवेकशील सगठन प्रेमी वेद एव महर्षि दयानन्द की उपरोक्त चेतावनी एव वेदोपदेश को हृदयगम करेगे।

भवदीय

भगवती प्रसाद सि० भास्कर मन्त्री

तदर्थ समिति आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, १४३०, प० शिवदीन मार्ग, कृष्णपोल, जयपुर।

शिक्षा का प्रथम पाठ प्यार और विश्वास है

—ए० सी० चन्द्रा

नई दिल्ली उक्त विचार है आयुक्त आयकर (छूट) श्री ए०सी०चन्द्रा जी के जो कि सहपत्नी आर्य अनाथालय व उससे सबधित सस्थाये आर्य बाल गृह आर्य कन्या सदन व रानी दत्ता आर्य विद्यालय मे ५०वे स्वतत्रता दिवस समारोह का झडा फहराते हुए मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए बच्चों से एव शिक्षकों से कहे।

श्री चन्द्रा जी ने देश भर मे बलिदान होने वाले स्वतत्रता सेनानियो को स्मरण करते हुए इस आजादी को बरकरार रखने के लिए आज के छात्रो एव नवयुवको की जिम्मेदारी का एहसास भी कराया। यहा के बच्चो के हसते मुस्कराते चेहरे देखकर सचालको द्वारा नि शुल्क पाल—पोष कर उचित शिक्षा प्रदान कर इनको आज का एक आदर्श नागरिक बनाने की प्रक्रिया पर रूचि लेते हुए श्री चन्द्रा ने बच्चो को सलाह दी कि हमारा जीवन बनडे क्रिकेट मैच की तरह है जिसमे एक बार खेलने के बाद दुबारा खेला नहीं जाता। आप भी इसी तरह जीवन का सदुपयोग कर देश की सेवा व रक्षा करे यही हमारा सौभाग्य होगा। श्रीमती चन्द्रा ने यहा के शिक्षकों को सलाह दी कि शिक्षा के क्षेत्र मे यू तो बहुत से विषय पढाये जाते हैं लेकिन इस शिक्षा को प्राप्त करने का प्रथम पाठ प्यार और विश्वास है। इसी के आधार पर ही देश के इन भावी कर्णधारो का हम सही मायने में जीवन निर्माण कर सकेंगे ताकि आगे चलकर यह अपने आप को पहचानें और देश की चुनौतियों का सामना कर सकें।

समारोह की अध्यक्षता रानी दत्ता आर्य विद्यालय के प्रबन्धक श्री ज्ञानेश चौधरी जी ने की। मच का सचालन प्राचार्या श्रीमती इन्दु गोयल ने किया और धन्यवाद सस्था के सचिव श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री जी ने किया। सह प्रबन्धक डॉ० प्रधान भी थे। इस अवसर पर बच्चो ने राष्ट्रीय भक्ति से ओत–प्रोत अनेक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये। सस्था के अधिष्ठता श्री हमीर सिह रघुवशी ने बताया कि महात्मा गाधी से लेकर राष्ट्रपति प्रधानमत्री मत्रीगण सासदो सत–महात्मा पत्रकार बुद्धिजीवी सहित अनेक लोगों का अभी तक ये बच्चे आशीर्वाद प्राप्त कर चुके हैं। इसी तारतम्य मे श्री ए०सी० चन्द्रा साहब का आगमन हुआ है।

हमीर सिह रघुवशी अधिष्ठाता

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह : कुछ संस्मरण

डा० कपिलदेव द्विवेदी, कुलपति, गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर (हरिद्वार) तथा निदेशक विश्वभारती अनुसन्धान परिषद् ज्ञानपुर(वाराणसी)

आज से ५० वर्ष पूर्व से ऊपर की घटनाओ का स्मरण करते हुए हृदय रोमाचित और हर्ष विह्वल हो उठता है। आज ७० वर्ष से अधिक आयु हो जाने पर वे घटनाए बाल्यकाल की स्फूर्ति, चेतना और जागरूकता की अमिट छाप छोड जाती है जिसने आर्य जाति के इस इतिहास में आत्म बलिदान के लिए प्रेरित किया था। सन १९३९ के प्रारम्भ में हैदराबाद के निजाम के विरुद्ध आर्यसमाज ने युद्ध का बिगुल बजाया।

हैदराबाद में निजाम के विरुद्ध आर्य सत्याग्रह की आवश्यकता क्यों पडी। इसके विषय में सक्षेप मे यह कहा जा सकता है कि हैदराबाद स्टेट मे ९० प्रतिशत जनता हिन्दू और १० प्रतिशत मुसलमान थी। शासक मुसलमान था अत उन्होंने यह प्रक्रिया अपनायी कि विभिन्न प्रतिबन्ध लगाकर हिन्दूओं को मुसलमान बनाया जाए। उन्होने जो मुख्य प्रतिबन्ध लगाए थे उसमे नये मन्दिरों के निर्माण पर रोक पुराने मन्दिरों का जीर्णोद्धार का निषेध तथा हिन्दुओं के गेरुए या ओम के झडे पर रोक प्रमुख थे। लूट–पाट अत्याचार हत्या द्वारा हिन्दुओं को आतकित किया जाता था। सरकारी नौकरो को टोपी के स्थान पर तुर्की टोपी लगाने के लिए बाध्य करना तथा वेशभूषा मुसलमानी अपनाने को कहा हिन्दुओ के कथा कीर्तन धार्मिक जुलूस पर नाना प्रकार के प्रतिबन्ध थे। इससे हिन्दु जनता अत्यन्त आतकित व पीडित थी। काग्रेस आदि अन्य सभी सस्थाए इस विषय मे मूकदर्शक थी। अत आर्य समाज को विवश होकर यह सत्याग्रह करना पडा।

इस आन्दोलन के कुशल नेतृत्व हेतु पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी तथा तत्कालीन प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को चुना गया। उन्होंने ४ फरवरी १९३९ को शोलापुर से सत्याग्रह हेतु गुलबर्गा प्रस्थान किया और ७ फरवरी १९३९ को सभी सत्याग्रहियो को एक वर्ष का कठोर कारवास दिया गया।

इस सत्याग्रह का बिगुल बजते ही गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) में भी अपूर्व उत्साह था। सत्याग्रह हेतु विद्यार्थियो ने अपने नाम लिखवाने प्रारम्भ कर दिए थे। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे सत्याग्रह हेतु प्रोत्साहित करने और छात्रो मे मत्र फूकने का कार्य तत्कालीन कुलपति आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ (रावजी) ने किया। श्री राव जी का जन्मस्थान हैदराबाद था अत वे अपनी मातृभूमि को निजाम के निरकुश अत्याचारो से मुक्त करने के लिए उद्वेलित थे। मैं उस समय १२वीं श्रेणी का विद्यार्थी था। प्राय सभी प्रतियोगिताओं खेलकूद भाषण लेखन शास्त्रार्थ आदि में भाग लेता था। अत मेरी अन्तरात्मा ने प्रेरणा दी कि मैं भी इस सत्याग्रह मे अपनी एक आहुति अवश्य दू। इसी आधार पर मैंने पिताजी आदि को सूचना दिए बिना अपना नाम श्री राव जी को प्रस्तुत कर दिया।

श्री राव जी ने यह निश्चय किया कि गुरुकुल से पहला जत्था शीघ्रातिशीघ्र भेजा जाए। अत मार्गव्यय हेतु धन सग्रह के लिए मैं स्वामी विवेकानन्द जी सहारनपुर बिजनोर और मुजफ्फरनगर जिलो मे गए। श्री राव जी ने इस जत्थे की तैयारी की सूचना महात्मा खुशहालचन्द खुर्सन्द (आनन्द स्वामी) को भेज दी थी। जब हम लोग धन सग्रह करके लौटे तो ज्ञात हुआ कि श्री खुशहालचन्द खुर्सन्द जी ने भी मार्गव्यय हेतु रुपया भेजा है। फरवरी १९३९ के अन्तिम सप्ताह में ज्वालापुर से पहला जत्था स्वामी विवेकानन्द जी के नेतृत्व में गया। इसमें मेरे अतिरिक्त श्री हितलाल शास्त्री डा० हरिश्चन्द्र आत्रेय आदि थे।

यहा यह उल्लेखनीय है कि इस धर्म–सत्याग्रह में गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर ने चार जत्थे भेजे। जिनमे १०० से भी अधिक ब्रह्मचारी अध्यापक तथा कार्यकर्त्ता थे। इस सत्याग्रह मे गुरुकुल के स्नातक जो अन्य स्थानों पर आचार्य या शिक्षण आदि का कार्य कर रहे थे उन्होने भी अपनी आहुति दी। इस प्रकार महाविद्यालय ज्वालापुर द्वारा दी गयी आहुतियो की सख्या २०० से भी अधिक थी। भारत वर्ष मे किसी भी अन्य सस्था ने इतने सत्याग्रही इस धर्म आन्दोलन मे नहीं भेजे थे। इसके द्वारा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की ख्याति आर्य समाज के इतिहास में अमर हो गयी। हमलोग दिल्ली झासी बम्बई होते हुए शोलापुर पहुचे। वहा दूसरा जत्था राजस्थान के प्रमुख एडवोकेट एव आर्य नेता श्री कुवर चादकरण शारदा के नेतृत्व मे सत्याग्रह के लिए जा रहा था। श्री शारदा जी ने इच्छा प्रकट की कि गुरुकुल महाविद्यालय का जत्था भी उनके साथ भेजा जाए। उनकी इच्छा के अनुसार गुरुकुल का पहला जत्था श्री शारदा जी के साथ गिरफ्तारी के लिए गुलबर्गा गया।

मुझे भी शारदाजी के साथ गिरफ्तार होना था किन्तु महात्मा खुशहाल चन्द जी ने मुझे रोक लिया श्री खुशहालचन्द जी ने विद्यार्थियों से पूछा कि किसका लेख सर्वोत्तम है तो छात्रो ने मेरे नाम का सुझाव दिया। शोलापुर से आर्य सत्याग्रह की सूचना के लिए 'दैनिक दिग्विजय' नाम का समाचार पत्र निकाला जा रहा था। रविवार को प्रेस बन्द रहते थे अत श्री खुशहाल चन्द जी की इच्छा थी कि रविवार को भी दैनिक पत्र स्टेनसिल काटकर निकाला जाए। उन्होने मुझसे कहा कि तुम्हें इस कार्य के लिए रुकना है तुम मेरे साथ गिरफ्तार होगे। मैंने बहुत अनिच्छापूर्वक उनकी आज्ञा स्वीकार की और उनसे कहा कि एक शर्त पर मैं रुक सकता हू। उन्होने कहा कि क्या शर्त है ? मैंने कहा कि आप गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मार्गव्यय का रुपया तार द्वारा भेजे और वहा से एक जत्था तुरन्त बुलवायें। उन्होने यह शर्त सहर्ष स्वीकार कर ली। तुरन्त तार द्वारा रुपया श्री राव जी के नाम गुरुकुल भेजा गया। सूचना मिलते ही गुरुकुल से दूसरा जत्था श्री भूदेव शास्त्री के नेतृत्व में भेजा गया। इसमें श्री प्रकाशवीर शास्त्री डा० सुदर्शन शास्त्री आदि थे। जिस दिन यह जत्था शोलापुर पहुचा है उससे अगले ही दिन २२ मार्च १९३९ को २०० सत्याग्रहियो ने शोलापुर से प्रस्थान किया और गुलबर्गा में गिरफ्तारी दी। मुझे दो वर्ष की सामान्य एव ६ मास की कठोर अर्थात् कुल ढाई वर्ष की सजा दी गयी। जब इस सजा के कुछ नाम लिखे जा रहे थे तब उस समय कुछ रोचक प्रसग आए। किसी ने अपना नाम यवन काल किसी ने अष्टाध्यायी के सूत्र वृद्धि, तोलि आदि लिखवाए। मैंने अपना नाम 'कपिलदेव शास्त्री विद्याभास्कर' लिखवाया। उनकी पद्धति के अनुसार नाम पिता का नाम ग्राम जिला प्रान्त होता था। मेरे नाम में उन्होंने कहा कि नाम कपिलदेव पिता का नाम – शास्त्री ग्राम –विद्याभास्कर हो गया अब जिला बताओ। मैंने उन्हे बतलाया कि अभी पिता का नाम नहीं हुआ है उसके बाद ग्राम व जिला बताऊगा। इस प्रकार नामावली में अनेक रोचक प्रसग हुए।

सजा सुनने के पश्चात् हम लोगो को जेल के कपडे तसला चप्पू अगोछा कम्बल टाट आदि दिए गए और हमारे कपडे आदि वहीं रोक लिए गए। विभिन्न वार्डों में हम लोगो को भेजा गया। सामान्यत हमारी दिनचर्या यह रहती थी–प्रात सध्या यज्ञ भजन। उसके बाद नाश्ता और ठीक ८ बजे बाहर कठोर काम पर ८ घटे के लिए जाना पडता था। साय सध्या हवन के पश्चात भोजन दिया जाता था।

हम लोगो को कठोर कार्य के रूप मे पत्थर तोडने का काम दिया गया। हम लोग लाइन में बैठ जाते थे और घटे भर हथौडे से पत्थर तोडते थे। उसमे सबने यह उपाय निकाला कि पत्थर पर हथौडी का लकडी वाला हिस्सा जोर से मार देने पर हथौडा टूट जाता था हम लोग दूसरी हथौडी की व्यवस्था होने तक विश्राम करते थे।

यहा यह उल्लेखनीय है कि श्री शारदा जी से पहले जेल मे यज्ञ की व्यवस्था नहीं थी। श्री शारदा जी ने पहुचते ही जेलरो को कहा कि हम लोग आर्य हैं जब तक हवन नही कर लेगे तब तक अन्न ग्रहण नहीं करेगे। पहले जेलरो ने यज्ञ की अनुमति नहीं दी सत्याग्रहियो ने अनशन प्रारम्भ कर दिया। विवश होकर उन्हे यज्ञ की अनुमति देनी पडी। इसमें मनोरजन का अश यह था कि जमीन पर कुण्ड मे ही हवन किया जाए जमीन खोद कर नहीं। उन्हे यह आशका थी कि यदि ये जमीन खोदकर हवनकुण्ड बनाएगे तो उसका अभिप्राय होगा कि ये हमे जमीन खोदकर दफनाना चाहते हैं। अत भूमि खोदकर यज्ञ करने पर कडा प्रतिबन्ध था।

दूसरा मनोरजक दृश्य यह था कि जेल के वार्डरो को बता दिया गया था कि प्रात सूर्योदय के बाद तथा सायकाल सूर्यास्त से ठीक पहले यज्ञ होगा। जेल के वार्डर सूर्यास्त न हो जाए अत दौड–दौड कर घी सामग्री समिधा आदि पहुचाते थे। हमारे अन्य साथियो को जमीन की खुदाई चक्की चलाना आदि कार्य दिए गए थे जो कमजोर एव वृद्ध या नाजुक थे उन्हे चरखो आदि का काम दिया गया था।

भोजन के विषय मे कुछ रोचक कार्य होते थे जैसे सब्जी मे पानी बहुत अधिक तथा ढूढने पर कहीं दाल आदि का दाना मिलता था। दो रोटिया ढाई ढाई छटाक की दी जाती थीं। रोटिया बहुत बडे तवे पर उलट–पलट कर सेक दी जाती थी अत ऊपर से जल जाती थीं तथा अन्दर कच्ची रह जाती थी। केवल दो समय भोजन मिलता था इसके अतिरिक्त कुछ नहीं दिया जाता था। आटा कैसे गूथा जाता था यह भी रोचक प्रसग है। एक बडे हौज में आटे की बोरी उलट दी जाती थी नल से पानी छोडा जाता था तथा एक पहलवान पैरो से आटा गूथता था। इस प्रकार रोटी के लिए आटा गूथा जाता था।

हमें गुलबर्गा जेल मे कालकोठरी वाले बैरको में रखा गया था जो चारों तरफ से तारकोल से पुता हुआ था और उसमे कटघरे के तुल्य लोहे के दरवाजे थे। यद्यपि देखने में ये कोठरिया भयकर थी परन्तु गर्मी के समय मे ये कोठरिया ठण्डी रहती थीं अत हम लोगो को सुख की अनुभूति हुई। जेल मे रहते हुए सभी ने श्री खुशहालचन्द जी को 'पजाब केशरी' की उपाधि दी थी जो बाद मे प्रचलित हुई।

गुलबर्गा जेल मे मैं एक मास रहा और बाद मे हैदराबाद जेल मे स्थानान्तरित कर दिया गया। वहा मुझे सेग्रिगेशन वार्ड मे रखा गया। वह छूत की बीमारी वालो के लिए अलग कमरा था जिसमे अधिक से अधिक सात व्यक्ति रह सकते थे। जेल वालो ने उसमे हम लोगो के ४५ सत्याग्रही साथी रखे। स्थान की कमी के कारण हम सभी लोग दिन मे दो बार शौच आदि के लिए बाहर ले जाए जाते थे।

शेष पृष्ठ ६ पर

श्रावणी पर्व पर विशेष

आओ अमरत्व की तलाश में चलें

भगवान देव 'चैतन्य' एम०ए० साहित्यालंकार

आज यदि हम कहे कि लोगों के पास भौतिक प्रसाधनो की कमी है तो यह बात सत्य नहीं है। आज निश्चित रूप से लोग भौतिक रूप से समृद्ध हुए हैं मगर यह बात सत्य है धन-धान्य की प्रचुरता होने के बावजूद भी आज मानव पहले से अधिक दुखी है। इसका सबसे बडा कारण ही यह है कि हम अपनी जीवन पद्धति को ही भूल गए हैं। हमारे जीने का लक्ष्य क्या है-हम लोग इसी बात को नहीं जानते हैं और यदि यही नहीं जानते हैं तो फिर जीने के क्या मायने रह जाते हैं। किसी भी व्यक्ति से आप पूछे कि इतनी दौड-धूप और धन कमाने की होड किसलिए है तो वह तुरन्त जवाब देगा कि जीने के लिए। लेकिन यदि आप उससे पूछेगे कि जीने का लक्ष्य किया है तो वह आपको इस ढग से देखेगा मानो आप कोई बहुत ही अप्रासागिक प्रश्न पूछ रहे हैं। आज के मानव के साथ यही सबसे बडी त्रासदी है कि वह जीने का मकसद ही भूल गया है। हमारे वेद शास्त्रों मे इस मानव शरीर को बहुत ही महत्वपूर्ण बताया गया है। इस योनि को देव दुर्लभ तक बताया गया है। इसका कारण ही यह है कि इस मानव शरीर मे आकर ही हम यज्ञ सत्सग दानपुण्य साधना प्राणायाम आदि के द्वारा उस परम पिता को प्राप्त कर सकते हैं जिसको पाना जीव का लक्ष्य है। यदि इस मानव जीवन को भी हम पशुओं की तरह खाने-पीने और मौज मस्ती मे ही बिता देगे तो हमसे बडा अभागा और कोई नहीं होगा। क्योकि पता नहीं फिर किन-किन योनियो मे कितने काल तक हमें पुन भटकना पडेगा। इसीलिए उपनिषद का ऋषि एक स्थान पर प्रार्थना करते हुए परमात्मा से कहता है कि - 'हे प्रभो यदि इस जन्म मे आपको मैं प्राप्त नहीं कर सका तो 'महति विनष्टि अर्थात मेरा बहुत बडा नुकसान हो जाएगा।' मानव को अपनी इस योनि का महत्व जानना चाहिए। क्योकि यही एक योनि है जो हमे कर्म करने का स्वातन्त्रय प्रदान करती है शेष सभी योनिया तो मात्र भोग योनिया ही हैं परमात्मा की प्राप्ति के लिए हमे अपना यह रथ आत्मा की ओर मोडना होगा अर्थात अब तक यदि हम केवल मात्र शारीरिक स्तर पर जी रहे हैं तो अब हमे आत्मिक स्तर पर जीना होगा। आज मानव भोगो मे डूबकर अपने लिए शान्ति और तृप्ति खोज रहा है मगर उसे यह सब मिल नहीं पा रहा है। वह स्वय ही इस बात को अनुभव भी कर रहा है कि बार-बार भोगो को भोगने के बाबजूद वह इस प्यासे का प्यासा ही बडा हुआ है मगर प्रत्यक्ष अनुभव करने के बावजूद वह इस सत्य को स्वीकार नही करता है और फिर-फिर उन्हीं भोगों की शरण मे जाकर तृप्ति को खोज रहा है। इससे बडा दुर्भाग्य और भला क्या होगा कि भोग स्वय ही व्यक्ति को बतला रहे हैं कि भाई हम मे तृप्त करने की सामर्थ्य नहीं है। मगर मानव है कि इस तथ्य को भुलाकर बार-बार और भी अधिक वेग के साथ उन्हीं भोगों मे डूबता रहता है। परिणाम यह होता है कि भोगों की भोगने की इच्छा और अधिक बलवती हो जाती है। मनु महाराज ने कितना सत्य कहा है कि भोग भोगने से इनकी तृष्णा ठीक इसी प्रकार से और अधिक बढ़ जाती है जैसे आग में घी डालने से उसमे लपटें और अधिक तीव्र हो जाती हैं। इसीलिए हमारे पूर्वजों ने कुछ तथ्य हमारे समक्ष रखे थे कि -

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा।

अर्थात भोगो को भोगने से मन तो कभी तृप्त नहीं होता है मगर धीरे धीरे ये भोग ही हमे भोग जाते हैं। कभी तृष्णा समाप्त नहीं होती है बल्कि हमारी इन्द्रिया और शरीर ही जीर्ण-शीर्ण हो जाता है।

इससे पूर्व पता नहीं हमारे कितने जन्म हुए हैं। कितनी बार हमने विवाह किए कितनी बार मकान बनाए कितनी ही बार बैंक बैंलेस बढाए मगर तृष्णा ज्यो कि त्यो बनी हुई है। इससे साफ पता चलता है कि इन सभी भौतिक प्रसाधनो में तृप्ति है ही नहीं। पुराणो मे एक ऐसे पात्र का वर्णन आता है जो भोग भोगने के लिए अपने बेटे और पोते की आयु का भोग भी कर लेता है मगर वही अन्तत यही तथ्य हमारे समक्ष रखता है कि भोगो को भोगने से कोई भी व्यक्ति कभी भी तृप्ति को प्राप्त नहीं हो सकता है। इस पात्र का नाम था यायाति। जब हमारे सामने यह तथ्य भली प्रकार से प्रकट हो गया कि इन सासारिक भोगो से हमे तृप्ति मिल ही नहीं सकती है यह बात तो तय है कि जब प्यास है तो कहीं न कहीं तृप्ति भी अवश्य है। इसी तृप्ति की खोज मे हमें भी चलना चाहिए क्योकि यहीं हमारा परम लक्ष्य है। इसी की खोज मे हमारे ऋषि महर्षियो ने अपना जीवन लगा दिया और उस परम तृप्ति को प्राप्त हुए। सबसे बडी बात है दृढता की। आज के मानव के सामने जरा सा प्रलोभन आता है तो वह वहीं पर डावाडौल हो जाता है मगर आध्यात्म मार्ग पर चलने के लिए प्रबल विवेक शक्ति और दृढ सकल्प की आवश्यकता है। यहा मैं कठोपनिषद के नायक नचिकेता का स्मरण कराना चाहता हू। वह जब मृत्यु ऋषि के पास पहुचता है और तीसरे वर के रूप मे आत्मा के सम्बन्ध मे प्रश्न पूछता है तो ऋषि उसकी पात्रता की परख करने के लिए बहुत ही सुहावने प्रलोभन उस युवक के समक्ष रखते हैं। वे कहते हैं कि यदि तू आत्मा के विषय मे न पूछे तो इसके स्थान पर मैं तुम्हे इस पृथ्वी का राज्य दे सकता हू। धन-धान्य के अम्बार दे सकता हू। सुन्दर दासिया दे सकता हू और भी जो तू चाहे मैं तुम्हें दे सकता हू मगर तू आत्मा के बारे मे मत पूछना। यदि आज का कोई युवक होता तो सम्भवत वह कुछ सुन्दर स्त्रिया और कुछ लाख की एफ०डी० माग लेता मगर धन्य है वह युवक नचिकेता जो इस प्रकार के प्रलोभनो को एकदम ठुकरा देता है और आत्मिक ज्ञान की जिज्ञासा को प्रमुखता देता है। उस युवक की दृढता और अध्यात्मिक पिपासा से हमें शिक्षा लेनी चाहिए। वह युवक अपने वर दाता के सामने एक ऐसी बात कहता है कि उसे निरुत्तर ही कर देता है। उसका वह उत्तर केवल भौतिकता के पीछे दौडने वाले व्यक्तियों की आखें खोलने वाला है। वह इन सभी प्रसाधनों को 'श्वोभाव' की सज्ञा देता है अर्थात ये वस्तुए तो कल तक रहने वाली हैं। आप इन्हे दे भी देगे मैं लम्बी आयु भी पा लूगा इनके भोगों मे भी लगा रहूगा मगर एक बात तो निश्चित है कि ये सदा रहने वाला नहीं हैं इधर मेरी आख बन्द हुई कि इन सबका अस्तित्व मेरे लिए समाप्त है। ऋषिवर मैं तो उस तत्व की बात कर रहा हू जो मरने के बाद भी मेरे साथ रहेगा। कितनी बडी बात उस युवक ने कही है। हमे भी इन भौतिक प्रसाधनों की अनित्यता को बहुत जल्दी ही समझ लेना चाहिए और उस अमरत्व की खोज मे चल देना चाहिए जिसके लिए हम युगो युगों से भटक रहे हैं।

इस अमरत्व की प्राप्ति के लिए महात्मा बुद्ध का प्रेरणादायक उदाहरण भी हमारे समक्ष है। उस युवक को किसी प्रकार की कमी नहीं थी। आप कल्पना कीजिए कि जिस बाप ने परिवारको को यह आदेश दे रखा हो कि मेरे इस बेटे को इस ढग से रखना है कि इसे दुख नाम की वस्तु का अहसास तक भी न हो सके उस बेटे के ठाटबाट की कल्पना हम कर सकते हैं मगर जब यह राजकुमार बुढापे और मृत्यु के दर्शन करता है तो इसके ह्रदय मे वैराग्य उत्पन्न हो जाता है और अमरत्व की तलाश मे राजपाट अपनी सुन्दर स्त्री तथा बेटे तक को छोड़कर चल पडता है। तब तक कठोर से कठोरतम् साधनाए करता है जब तक उसे सिद्धि प्राप्त नहीं हो जाती है। इसी प्रकार एक और युवक का स्मरण हमें आता है जो अपनी प्रिय बहिन और चाचा जी की मृत्यु को देखकर अचभित सा रह गया और युवावस्था मे ही उसके ह्रदय में वैराग्य के अकुर प्रस्फुटित हो गये। अन्तत उन्होंने भी अमरत्व की प्राप्ति के लिए युवावस्था में ही गृह त्याग कर दिया और योगियो की तलाश मे स्थान स्थान पर घूमते रहे। इसके मार्ग में भी कई प्रलोभन आए। कुछ लोगो ने कहा कि आपको हम भगवान का अवतार घोषित करके लाखों रुपयों की सम्पत्ति आपके नाम कर देगें मगर इस युवक ने भी अमरता के मार्ग मे आने वाली प्रत्येक भौतिकता को तिलाजलि दे दी। तभी तो ये अमरत्व को प्राप्त हो सके। वेदो का प्रकाण्ड पण्डित बनकर इन्होंने उनका मार्ग पुन प्राणी मात्र के कल्याण के लिए प्रशस्त किया। यही महामानव आगे चलकर आर्यसमाज के सस्थापक और उच्चकोटि के समाजसुधारक बने। इनका नाम था महर्षि दयानन्द सरस्वती। ऐसे एक नहीं अनेक लोगो ने अपने लिए अमरत्व का मार्ग चुनकर अपना जीवन धन्य कर लिया। सनतकुमार के पास जाकर महर्षि नारद जी भी तो यही कहते है कि महाराज मैं मन्त्रवित् तो हो गया हू मगर मैं आत्मवित् होना चाहता हू। प्रकाण्ड विद्वान याज्ञवलक्य अपनी पत्नी मैत्रेयी को उपदेश देते हुए इसी आत्म तत्व की बात करते हैं उनका साफ रूप से यह कहना है कि धन दौलत के बल पर कोई भी शान्ति को प्राप्त नहीं कर सकता है इसके लिए तो आत्मा को प्यार करना होगा। उन्होंने बडे ही रहस्य की बात दुनिया के समक्ष रखी है कि मैत्रेयी ससार में कोई भी अपनी आत्मा से अधिक किसी को प्यार नहीं करता है।

पिता अपने पुत्र को इसलिए प्यार नहीं करता कि पुत्र उसे प्यारा है बल्कि वह उसे भी इसलिए प्यार करता है क्योंकि वह अपनी आत्मा को प्यार करता है इस रहस्य को समझने के लिए जरा गहराई से विचार करने की आवश्यकता है। कोई भी वस्तु हमें तभी तक अच्छी लगती है जब तक वह हमारी आत्मा के अनुकूल बनी रहती है। जहा भी वह प्रतिकुल हुई कि हम उसे त्यागने के लिए तैयार हो जाते हैं। इसलिए याज्ञवलक्य ने आत्मा को ही प्यार करने की बात कही है। इस रहस्य को बडी गहराई से समझकर इसे कार्यान्वियन करने की आवश्यकता है।

शेष पृष्ठ ८ पर

योगीराज श्रीकृष्ण और आर्यसमाज

लेखक डा० महेश विद्यालंकार

हमारे देश का सौभाग्य रहा है कि यहा श्रीकृष्ण जैसे धर्मात्मा पुण्यात्मा योगीराज तपस्वी त्यागी वेदज्ञ नीतिज्ञ लोकहितकारी महापुरुषो ने जन्म लिया। जो अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से सारे ससार के प्रेरक व मार्गदर्शक बने। इतिहास मे ऐसा अद्भुत विलक्षण और बहुआयामी व्यक्तित्व दुर्लभ है–जैसा योगीराज श्रीकृष्ण का है। हजारो वर्षो के घात प्रतिघातो वात्याचक्रो व विवादो को झेलते हुए वे आज भी पूजित व अलौकिक महापुरुष के पद पर प्रतिष्ठित हैं। उनका जन्मदिन भारत मे ही नहीं अपितु विदेशो मे भी आदर श्रद्धा और उत्साह से समारोह पूर्वक मनाया जाता है उतना अन्य किसी का नहीं ? उनके समकालीन तथा बाद मे अनेक महापुरुष हुए किन्तु जितनी धूमधाम श्रद्धाभाव पूज्यभाव और व्यापक स्तर पर श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव मनाया जाता है उतना अन्य किसी का नहीं ? इसके पीछे महत्वपूर्ण तथ्य हैं उनके जीवन का उद्देश्य था परित्राणाय साधूनाम सज्जनो की रक्षा करना विनाशाय दुस्कृताम दुष्टो का दलन करना और धर्म सस्थापनार्थाय धर्म की रक्षा व स्थापना करना। इन्हीं उद्देश्यो की पूर्ति के लिए उन्होने अपना सपूर्ण जीवन लगा दिया। वे खण्ड-खण्ड भारत को अखण्ड देखना चाहते थे।

श्रीकृष्ण का जन्म कारागार मे हुआ। जन्म से पहले ही मृत्यु के वारण्ट निकल गए। पराये घर मे पले। मामा को मारना पडा। राज्य छोडकर भागना पडा। धर्म युद्ध मे नाना रूप धारण करने पडे। अपमान और कष्टो का जहर पीना पडा। उनका सम्पूर्ण जीवन विषम परिस्थितियो कठिनाईयो और सघर्षो का अजायबघर रहा है। ऐसी अवस्था मे भी कभी निराश व हताश नहीं हुए सदैव मुस्कराते रहे। आज के साधनहीन निराश हताश मानव समाज को उनके जीवन का यह प्रेरक पक्ष सदा सभलने और आगे बढने की प्रेरणा देता रहेगा। यदि हम उनके जीवन से सीखना चाहें तो बहुत कुछ सीख सकते हैं। दुर्भाग्य है कि हमने अपने महापुरुषों के चरित्र को इतना विकृत कलकित तथा अतिरजनापूर्ण बना दिया है कि उनका सत्य स्वरूप ही ओझल हो गया है। श्रीकृष्ण को भागवत पुराण और लोक साहित्य मे जोर जार शिरोमणि मक्खन चोर लम्पट भोगेश्वर और गलियो का मजनू सिद्ध किया है। रही सही कसर टेलीविजन सीरियल रासलीला कृष्णलीला आदि पूरी किए दे रहे हैं। भयकर अश्लीलता पाखण्ड और अन्धविश्वास का प्रचार प्रसार किया जा रहा है। उस आप्त पुरुष के चरित्र को कीचड मे उछाला जा रहा है। पुराणों के आधार पर उन्हें भगवान मानकर मनगढन्त लीलाए व बाते जोड दी गई हैं जिन्हे सुनकर लज्जा से सिर झुक जाता है।

आर्य समाज श्रीकृष्ण के पुराणो मे वर्णित स्वरूप को तर्क प्रमाण युक्ति के आधार पर नहीं मानता है। श्रीकृष्ण के यथार्थ स्वरूप का महाभारत में पता चलता है। जहा उन्हे सर्वगुण सम्पन्न राष्ट्रनायक योगी उपदेष्टा विश्वबन्धु नीतिनिपुण मार्गदर्शक आदि विशेषण दिए गये हैं। आर्यसमाज सत्य का शोधक और सत्य का प्रचारक रहा है। ऋषि दयानन्द की यह भी ससार को देन रही है महापुरुषो के स्वच्छ धवल निर्मल जीवन चरित्रो का यथार्थ स्वरूप सबके समान रखना। ऋषिवर ने योगीराज श्रीकृष्ण के उज्ज्वल चरित्र का और उनके महान योगदान का जो प्रमाण पत्र दिया है वह हम सबके लिए पठनीय स्मरणीय एव अनुकरणीय है – श्रीकृष्ण का गुण कर्म स्वभाव और चरित्र महापुरुषो के सदृश है। आर्य समाज श्रीकृष्ण को महापुरुष के रूप मे प्रतिष्ठित करता है। पौराणिक इन्हे ईश्वरावतार मानते हैं। इनकी मूर्तियो की पूजा करते हैं। वैदिक विचारधारा अवतार व मूर्तिपूजा नहीं मानती है। आर्य मान्यता इनके चरित्र की विशषताओ को अपनाने का सन्देश देती है जबकि पुराणपथ चित्र की वाह्य पूजा तक ही सीमित है। कैसी विचित्र विडम्बना है– जिसे हम भगवान मानते हैं उसी भगवान को हम नचाते हैं गवाते है और उसी के नाम पर भीख मागते हैं। तालिया बजा बजाकर तमाशा देखते हैं। ऐसा करना अपने महापुरुषो के साथ अन्याय है। जिन्होने कभी भीख नहीं मागी थी उन्हे हमने भिखारी बना दिया ? जिन्होने अपने को कहीं भी भगवान नहीं कहा उन्हे भगवान बनाकर भगवान पद की गरिमा व शक्ति को मानव शरीर मे सीमित कर दिया ? महापुरुषो के रूप मे इनसे जीवन और जगत के लिए बहुत कुछ सीखा जा सकता है। किन्तु लोगो ने मास मदिरा सेवन के लिए देवी का सहारा लिया। चरस भाग–धतूरा पीने के लिए शिव जी को सहारा बनाया। भोग विलास व्यभिचार दुराचार के लिए श्रीकृष्ण को आगे किया। लोग भेड चाल मे भागे जा रहे हैं। पढे लिखे लोग रूढियो व अन्धविश्वासो की पूजा कर रहे हैं। आज दुनिया श्रीकृष्ण के विकृत चरित्र स्वरूप तथा लीलापूर्ण बातो को मान रही है।

आर्य समाज ऐसी मिथ्या कल्पित एव आधारहीन बातों को नहीं मानता है। वह महापुरुषो के प्रेरक उज्ज्वल जीवन चरित्रों का सत्य मूल्याकन करता है। उनके चारित्रिक विशेषताओ को प्रचारित तथा प्रसरित करता है। वैदिक चिन्तन क्रियात्मक व व्यवहारिक पक्ष पर बल देता है। बना आचरण के धर्म का कोई महत्व नहीं है। श्रीकृष्ण ने क्रियात्मक जीवन के माध्यम से जीवन के विविध पक्षों को प्रस्तुत किया। यदि कोई सीखना चाहे तो जीने की कला इनसे सीखे। इनके व्यक्तित्व मे धर्म दर्शन सस्कृति इतिहास नीति रीति काव्य आदि सब कुछ विद्यमान है। श्रीकृष्ण ने गाये चराईं मुरली बजाई जब शख बजाना पडा तो शख बजाया जब सारथी बनने की जरूरत पडी तो सारथी बने। जब सुदर्शन चक्र उठाना पडा तो सुदर्शन चक्र उठाया। जो भी काम किया सुन्दरता व निपुणता से किया यही उनका योग कर्मसु कौशलम था। सारा जीवन मुसीबतों कष्टो सघर्षो व चिन्ताओ मे रहा किन्तु वह आत्मज्ञानी सदा मुस्कराता हुआ झेलता रहा। कभी चेहरे पर शिकन नहीं आने दी। कभी धैर्य नही छोडा। हर परिस्थिति मे सन्तुलन बनाये रखा। यही समत्व योगमुच्यते उनका हमारे लिए अमर सन्देश है। आध्यात्म की दृष्टि से श्रीकृष्ण की स्थान बहुत ऊचा है। गीता मे प्रदत्त ज्ञान के आगे सारा ससार नत मस्तक है।

उनके जीवन व्यवहार स्वभाव आचरण सोच आदि मे अनेक प्रेरक घटनाओ से इतिहास भरा पडा है। हम मूल को और सत्य स्वरूप को भूलते जा रहे हैं ? काल्पनिक चमत्कारिक और अति शयोक्तिपूर्ण बातो को सत्य वचन महाराज बाबा वाक्य प्रमाणम कहकर मानते आ रहे हैं ? इनमे महापुरुषो की चारित्रिक गरिमा का अवमूल्यन हो रहा है ? आज महापुरुषो के जन्मदिन पर्व कथा प्रवचन रामलीलाए कृष्णलीलाए आदि सभी मात्र मनोरजन खाने पीने घूमने व मौजमस्ती के साधन बनते जा रहे है ? इनके पीछे जो जीवन सदश प्रेरक प्रेरणाए सीखने के सकल्प व्रत आदि बडी तेजी से छूट रहे हैं। इसमे धार्मिक नैतिक और जीवन मूल्यो का तेजी से ह्रास हो रहा है। जड पूजा तेजी स बढ रही है धर्म घट रहा है आडम्बर ढोग पाखण्ड और अन्धविश्वास फैल रहे हैं।

आज आवश्यकता है श्रीकृष्ण के वास्तविक स्वरूप और चरित्र को समझने की। उनके योगदान महत्व तथा चारित्रिक विशेषताओ को जन जन तक पहुचाने की। जो उनके चरित्र के साथ भ्रान्तिया व विकृतिया जुड गई हैं। उनका तर्क प्रमाण युक्ति से निराकरण कर जनता तक यर्थाथ स्वरूप को पहुचाने की। यह दायित्व आर्य समाज का है। क्योकि आर्य समाज का जन्म ही भ्रान्तिया विकृतियो और अन्धविश्वास को मिटाने के लिए हुआ है। खेद है कि आज का आर्यसमाज भी अपने उद्देश्य और कर्त्तव्य को भूलता जा रहा है ? जो मुख्य कार्य वेद प्रचार और जनता को जीवन व जगत का सीधा सच्चा एव सरल मार्ग दिखाना था वह छूटता जा रहा है। व्यर्थ के विवादो व उलझनो मे समय शक्ति व धन का नष्ट किया जा रहा है। आर्य समाज को अपने महापुरुषो के स्वच्छ–पवित्र जीवन चरित्रो को जन जन तक पहुचाने के लिए आगे आना चाहिए। यह उसका दायित्व है।

उत्सव पर्व जयन्तिया व महापुरुषो की जन्मतिथिया जीवन और जगत को सत्य न्याय धर्म आदि के मार्ग पर प्रेरित करने के लिए आती हैं। योगीराज श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव हमे सन्देश व प्रेरणा दे रहा है कि आज ससार मे अरा अधर्म अन्याय पाप सघर्ष आदि बढ रहा है। हम धर्म पूर्वक आचरण करते हुए सत्य और न्याय की रक्षा करनी चाहिए। तभी हम व्यास के इस कथन मे स्वर मिलाकर कह सकेगें – कृष्ण बन्दे जग गुरुम्। ✱

भारतीय पर्वों का महत्व

श्रावणी उपाकर्म क्यों मनाया जाता है ?

विनोद सिंह आर्य

भारत पर्वों का देश' के नाम से जाना जाता है। विश्व के अन्य देशो की अपेक्षा भारत मे मनाये जाने वाले पर्वो की सख्या अधिक है।

पूरयति जनान् आनन्देन इति पर्व

अर्थात् जो जनो में मनुष्यो मे आनन्द को भर दे वहीं पर्व है। ससार के समरागन मे जूझ रहे मनुष्यो को नवीन स्फूर्ति व नूतन उल्लास प्रदान करने के लिए हर वर्ष पर्व आते हैं। भारतीय मनीषी व दर्शन मनुष्य जीवन के प्रति आशावादी और उदात्तवादी दृष्टिकोण को रखता है। विष्णु शर्मा की विश्व विख्यात नीति कथा पुस्तक 'पचतत्र' मे एक जगह यह श्लोक आता है–

अय निज परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदार चरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

'यह मेरा है यह पराया है इस प्रकार का चिन्तन सकुचित व्यक्तियो का ही हो सकता है। किन्तु उदात्त विचारो और भावनाओ वालो के लिए तो सम्पूर्ण भूमण्डल के प्राणी उनके कुटुम्ब परिवार के सदस्य हैं सारा ससार उनका परिवार है।

भारत मे इस प्रकार का उदात्त व आशावादी चिन्तन होने के कारण ही यहा पर्वो का बाहुल्य है। भारत की पुण्य भूमि पर समय समय पर असख्य महापुरुषो ने जन्म लिया जिन्होंने पथभ्रष्ट ससार को सही मार्ग बताया धर्मात्माओ की रक्षा कर दुष्टो व पापियो का नाश किया। ऐसे महापुरुषो की जयतियो को भी पर्वो के रूप मे मनाया जाता है। इस प्रकार वर्ष भर पर्वो का ताता लगा रहता है और इनको मनाने का मुख्य उद्देश्य भी यही है कि हमारे मे सदैव उत्साह बना रहे और हम कर्त्तव्य कर्मो के प्रति सचेष्ट रहते हुए समता बनाये रखे।

वैदिक काल मे कर्म के अनुसार मनुष्यो को चार वर्णो मे विभक्त किया गया था–ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र। यू तो सभी पर्वो को सभी वर्णो के लोग मानते हैं किन्तु चार पर्व प्रमुख हैं और चार वर्णो के लोग उनको विशेष रूप से मनाते हैं। श्रावणी को ब्राह्मणो का विजयदशमी को क्षत्रियो का दीपावली को वैश्यो का और होली को शूद्रो का विशेष पर्व माना जाता है।

भारतीय पर्वो मे सबसे बडी विशेषता यही है कि वे प्रकृति व ऋतुओ पर आधारित है ऋतुओ के परिवर्तन के साथ साथ पर्व आते जाते हैं। भारतीय नववर्ष बसन्त ऋतु से प्रारम्भ होकर शिशिर ऋतु की समाप्ति के साथ समाप्त हो जाता है।

भारतीय 'तिथि पत्र पद्धति के बारह मास के नाम इस प्रकार है चैत्र वैशाख ज्येष्ठ आषाढ श्रावण भाद्रपद आश्रियुज कार्तिक मार्गशीर्ष पुष्य माघ फाल्गुन। चैत्र और वैशाख मे बसन्त ज्येष्ठ और आषाढ में ग्रीष्म श्रावण और भाद्रपद मे वर्षा आश्रियुज और कार्तिक में शरद मार्गशीर्ष और पुष्य मे हेमन्त तथा माघ और फाल्गुन मे शिशिर ऋतु का आगमन होता है। वसन्त ऋतु में नग्नधवल डालियो वाली वनस्पतियो मे पुन नवीन पल्लव व कोपले फूट पडती हैं विकसित होती है प्रकृति पल्लवित और पुष्पित होती है। ग्रीष्म ऋतु मे जहा गरम प्रदेशो मे रहने वाले चिलचिलाती धूप से विचलित होकर वट पीपल आम्र आदि वृक्षो की घनी छाया का आनन्द लेते हैं वहीं शीत प्रदेशो मे रहने वाले धूप मे शरीर तापने का स्वाद लेते हैं। वर्षा ऋतु में ग्रीष्म की गरमी से व्याकुल मनुष्य वर्षा की प्रथम बूदो के धरती पर गिरने से उठी सोधी सुगन्ध का आनन्द लेते हुए वर्षा की आनन्दमयी बौछारो से शीतल होता है। शरद ऋतु में आकाश से बादल छट जाते हैं ज्योत्स्नापूर्ण विभावरियो मे ही माता भूमि से ही वनस्पतिया और औषधिया प्राणदायिनी मधुर रसो को ग्रहण करती हैं आम आदि मधुर फल भी ज्योत्स्ना मे ही रस को प्राप्त करते हैं चन्द्रमा में यह आकर्षण शक्ति होने के कारण ही समुद्र मे ज्वार और भाटा आते हैं। हेमन्त ऋतु मे शीत की वृद्धि होती है सन्ध्या वेलाओ मे धरती की धुध ढक देती है। आकाश से हिमपात होता है ऊचे ऊचे पहाड धवल हिम से आच्छादित हो जाते हैं पर्वतो की चोटिया रूई सदृश हिम से आच्छादित होकर ऐसी दिखाई देती है जैसे स्वेत किरीटो को धारण किये हो। शिशिर ऋतु में प्रकृति का वार्षिक कायाकल्प हो जाता है पतझड के कारण सभी वृक्ष नग्न हो जाते हैं पतली टेढी टहनी अगणित शिरा जाल सी फैली गुम्फित तरूओ की रेखा छवि कम्पित भू पर छायाकित दिखाई देती है। पपित फूल पत्तो के भार से भूमि दब जाती है और यही वनस्पतियो के लिए उर्वरक का काम भी करते हैं। जहा वसन्त ऋतु सयोग का प्रतीक है वहीं शिशिर ऋतु वियोग का।

श्रावणी पर्व श्रावण मास की पूर्णिमा के मनाया जाता है वैसे यह पर्व पूरे दो मास तक चलता है। श्रावणी पर्व का भी ऋतु चक्र से घनिष्ठ सम्बन्ध है श्रावण और भाद्रपद मास मे वर्षा ऋतु का आगमन होता है। इस ऋतु मे भारतीय विश्व विद्यालयो (घोर अरण्यो मे बसे गुरुकुलो आश्रमो से तपस्वी वानप्रस्थी और सन्यासी नगरो और ग्रामदिको मे आकर वेद प्रचार किया करते थे चतुर्वेद पारायण सहित बड बडे यज्ञो अग्निहोत्र हवन) का आयोजन किया जाता था और इन यज्ञो की पूर्णाहुति श्रावण पूर्णिमा के दिन होती थी। पूरे दो महीने तक प्रात साय नगरो और ग्रामो के नागरिक वेद शास्त्र श्रवण किया करते थे तदनुरुप अपने जीवनों को ढालने का प्रण लेते थे। श्रवण के नाम से विख्यात इस मास विशेष के नामकरण के पीछे भी यही रहस्य छिपा हुआ है। श्रावण की उत्पति श्रवण से हुई है श्रवण अर्थात् सुना और जिस मास मे सुना जाता है वेद शास्त्रों उपनिषदो आदि की पुनीति प्रेरक वाणी को सुना जाता है वही श्रावण मास है।

श्रावण पूर्णिमा के दिन ही यज्ञ में पूर्णाहुति देने से पहले सभी स्त्री पुरुष अपने यज्ञोपवीत को बदलते हैं हल्दी लगे हुए तीन सूत के धागों वाले नूतन यज्ञोपवीत को मन्त्रपाठ सहित धारण करते हैं।

ओ३म् यज्ञोपवीत परम पवित्र प्रजापतेर्यत्सहज पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्य प्रतिमु चशुभ्र यज्ञोपवीत बलमस्तु तेजः।।
ओ३म् यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्यत्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।।

सूत के तीन धागो वाले यज्ञोपवीत को धारण करने के पीछे मनुष्य द्वारा तीन ऋणो को चुकाने की भावना निहित है। यज्ञोपवीत वह पुनीत प्रतीक है जो मनुष्य को पितृऋण ऋषिऋण और देवऋण से उऋण होने की सतत् प्रेरणा प्रदान करता है। अनुपम स्नेह और दुलार से लालन पालन करने वाले 'माता पिता के ऋण (पितृऋण) से उऋण होने के लिए उनके वेदानुकूल आज्ञाओं का पालन करते हुए तुल्य खान पान वस्त्र आवास आदि की ससम्मान समुचित व्यवस्था करना चाहिए। अपने गर्भ रूपी गुरुकुल मे शिष्य को धारण कर उसे सुशिक्षित और सुसस्कारित करने वाले गुरुदेव का ऋण (ऋषिऋण) उनकी सेवा सुश्रूषा कर और उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान को बाटते हुए चुकाना चाहिए। हमारा यह शरीर जिन पचभूतों आकाश वायु, अग्नि जल भूमि से बना है और जिनसे हम अपने शरीर को स्वस्थ व पुष्ट रखने के लिए श्रेष्ठ पदार्थो के लेते हैं तथा पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं उन पचभूतो के ऋण (देवऋण) से उऋण हाने केलिए नित्य प्रात साय अग्निहोत्र कराना चाहिए।

पितृऋण से उऋण होने के लिए प्रयत्न करना ही पितृयज्ञ करना है। पर्यावरण को पवित्र करने के लिए किए जािने वाले सभी कार्यो को और अग्निहोत्र को करना ही देवयज्ञ करना है।

आधुनिक भारतीय समाज को जन्मगत जाति पाति और स्त्री के प्रति हीन भावना रूपी कोढ ने बुरी तरह से जकड लिया है। धर्म के ठेकेदार आज भी इस बात को कहते नहीं थकते कि स्त्रियो और तथा कथित नीच जातियो के लोगो को यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार नहीं है। कोई इन काठ के उल्लुओ से पूछे कि क्या स्त्रियों और शूद्रो के ऊपर पितृऋण ऋषिऋण और देवऋण नहीं होते ? क्या इनका पालन-पोषण माता पिता ने नहीं किया ? क्या इन्होने गुरुओ से शिक्षा नहीं पायी या नहीं पाते हैं ? क्या पर्यावरण के प्रदूषण मे भी इनका भाग नहीं होता ?

सोती हुई भारत जाति को वेदोद्धारक वेदो वाले महर्षि देव दयानन्द ने झकझोर कर जागृत किया और सभी को आपने वेदपठन और यज्ञोपवीत धारमण के अधिकार से अवगत कराया। आज ही के दिन (श्रावण पूर्णिमा को) स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज की विभिन्न शाखाओं मे आयोजित श्रावणी उपाकर्म' मे भाग लेकर समाज के सदस्य नूतन यज्ञोपवीत धारण करते हैं।

कालान्तर मे मध्यकाल मे (महाभारत युद्ध के पश्चात) श्रावणी पर्व के साथ 'रक्षा बन्धन' भी जुड गया जिसमे भाई बहन के पवित्र सम्बन्ध की भावना निहित है। इसी दिन हिन्दू परिवारो की बहने अपने भाइयों की कलाइयों पर राखी बाधती हैं और भाई अपनी बहन को उसकी व उसके परिवार की रक्षा का वचन देते हैं।

आइए श्रावणी उपाकर्म और रक्षाबन्धन के पुनीत अवसर पर व्रतपूर्वक हम यज्ञोपवीत धारण करें और पितृऋण ऋषिऋण देवऋण से उऋण होने तथा राष्ट्र रक्षा दुर्बलों दीन-हीनो अशक्तों अबलाओं की रक्षा करने की प्रतिज्ञा करें। ☘

महाभारत में पात्रों का आध्यात्मिक रहस्य

सर्वप्रथम महर्षि व्यास ने द्वापर युग में स्मरण के रूप मे चली आ रही जन श्रुतियों का सकलन किया। तथा उस ग्रथ का नाम जय रखा। जिसमे मात्र १८००० श्लोक थे। समयान्तर मे अनेक ऋषियो द्वारा मूल प्रति मे अनेक श्लोकों का समावेश करते हुए ग्रथ का नाम जय से भारत रखा गया। तदुपरान्त भी निरन्तर ऋषियो मुनियो द्वारा कहानी का विस्तार किया जा रहा था अनेकानेक क्षेपको के समावेश से ग्रथ का विस्तार होते होते श्लोकों की सख्या १०० ००० तक पहुच गयी और इसका नाम महाभारत रखा दिया गया महाभारत एक काव्य है। काव्य कवियो की कल्पना से अकुरित होकर ग्रथ का रूप लेता है यह एक कथा है। कहानी है इतिहास नहीं। इसके पात्रो के सभी नाम गुणवाचक हैं रूपक हैं। निम्नलिखित विश्लेषण से वास्तविकता स्पष्ट हो जावेगी। हमारे शरीर को निर्मित करने वाले पाच तत्व एव पाच ज्ञानेन्द्रिया ही वस्तुत पाच निर्विकारी पाण्डव है और यही पाच विकारो अर्थात कौरवो दल का वध करने वाले हैं जिस अहिंसक युद्ध ने ईश्वर के प्रीत बुद्धि पाण्डव जन विकारो रूपी कौरवो का वध करके पवित्रता धारण करते हैं वही महाभारत का युद्ध है।

और वर्तमान कलियुग ही कर्म क्षेत्र है। कुरुक्षेत्र कु कर्मेण रुदनेन-क्षेपणेन च त्रस्त य क्षेत्र स कुरुक्षेत्र अर्थात् कुकर्म से रोने से तथा प्रक्षेपण से जो ससार त्रस्त है वह कुरुक्षेत्र है। हमारा शरीर रथ पाच तत्वो पृथ्वी जल पावक गगन समीर से निर्मित है। जो अनित्य है। इस रथ का रथी आत्मा जन्म मरण से न्यारा एव शाश्वत है। प्राचीन ग्रथ महाभारत में जिस युद्ध का वर्णन कवियो ने किया उसकी वास्तविकता क्या है ? ज्ञान मथन और विवेक चिन्तन से मीमासा स्पष्ट होती है। युधिष्ठिर पृथवी (हाथ) जो धारण करती है वह धरती है। धरती ही धन का प्रतीक है। हाथ इसकी प्राप्ति धारणा एव उपभोग मे पूर्ण सहभागी है। धरती पर अपना अपना वर्चस्व कायम करने के लिए युगो युगो से युद्ध एव महायुद्ध होते आये हैं परन्तु इस धन युद्ध या लोभ मे भी जन पूणत स्थिर रहता है वह (युद्ध + य+ स्थिर) = युधिष्ठिर कहलाता है।

लोभस्य युद्धे य स्थिर स युधिष्ठिर

अर्जुन – ज्ञान अर्जति य स अर्जुन – जो ज्ञान का अर्जन करता है वह अर्जुन है। अग्नि (आख) अग्नि ज्वलनशील है। जलना और जलाना प्रकाश देना इसका धर्म है। आख भी ज्योति और प्रकाश का प्रतीक है तथा वह ज्ञानार्जन का माध्यम है। ज्ञान भी एक ज्वाला रूपी एटम बम है जो अज्ञान को खत्म करता है। ज्ञान अर्जन करने की चीज है। इन्सान को ज्ञान और मशीन को काम आवश्यक है। जो ज्ञान पुंज से युक्त ज्ञान मणि है जो अज्ञान के प्रति क्रोध को जीत लेता है वह अर्जुन है।

भीमसेन – जल (मुख) जल शक्ति का स्रोत है। इसके सार्थक उपयोग से अखण्ड ऊर्जा उत्पादित होती है। जिससे सम्पूर्ण विश्व प्रकाशित होकर सम्पूर्णता को प्राप्त होता है। तथा दुरुपयोग से अपार जन धन की हानि होती है जल ही भीमकाय है अर्थात भीमसेन है। जो बलिष्ठ है बल वीर्य सरक्षक है ऊर्जा का भण्डार है। अथवा जो भी भीमकाय है वह भीम है। स्व भास्करम् रक्षति य स भीम अर्थात जो अपनी शक्ति की रक्षा करता है सग्रह करता है वह भीम है। अपने बल गदा प्रहार से काम रुपी शत्रु का वध करता है वह भीम है।

नकुल – गगन (कान) यस्य कुल न अस्ति स नकुल जिसका कोई सम्प्रदाय या कुल नहीं है आकाश शाश्वत अनन्त है वह एक है। परन्तु सभी का है। सर्वदा है। अविभाज्य है। वह किसी एक कुल जाति धर्म देश आदि का नहीं है अर्थात् न कुल है यह गगन शब्द का सग्रह है। व्यक्ति का कर्ण भी ध्वनि का सग्रह करता है मोह कुल एव परिवार का प्रतीक है। जो किसी सासारिक कुल परिवार का नहीं है। किसी धर्म वश का नहीं है। अर्थात् जिसने मोह को जीत लिया है वह नकुल है। गगन सदृश्य विशाल है मोह ही शकुनी है जो गान्धारी– माया का भाई है। यही कौरव दल का षडयत्रकारी मामा है। शका कुनीति यस्य आभूषण स शकुनि। शकाये एव कुनीतिया षडयत्र ही जिसके आभूष्ण है वह शकुनि है। आश्र ही मोह रूपी शकुनि एव कुनीतिया षडयत्र ही जिसके आभूषण है वह शकुनि है। तात्पर्य यह है कि जो पाण्डव अपने मोह का वध करते है वही नकुल है।

सहदेव – वायु (नासिका) सभी सम्पूर्ण जगत की है। सभी के जीवन की सहयोगी है वायु ही प्राण है सभी प्राणियो मे इस प्राण वायु के निरोधन मे नासिका सहायक है। जो सभी के जीवन के हेतु सहयोग देने वाली है। सर्वेषाम् सहयोग ददाति य स सहदेव जो समीर को सहयोग देता है वह सहदेव है। जो हमेशा साथ रहता है साथ देता है वह सहदेव है।

दु शासन – लोभ के वशीभूत दूसरो को दुख देने के लिए ही जिसका शासन है वह दु शासन है। वस्तुत ज्येष्ठ पाण्डव युधिष्ठिर ही लोभ रूपी विकार अर्थात् कौरव दु शासन के सहार करता है। तात्पर्य यह है कि जिस पाण्डव ने धरती या धारण करने के लिए लोभ का सवरण कर कौरव सैना के दु शासन अर्थात् लोभ का वध कर दिया है वही युधिष्ठिर है। दुर्योधन – (काम) कामविकार ही कौरव दल का प्रमुख उदण्ड राजकुमार है। दुराचरेण यस्य धन स दुर्योधन (दु+य+धन) दुराचरण के लिए ही जिसका धन है वह दुर्योधन है – कामी व्यक्ति का सम्पूर्ण धन (उर्जा शक्ति वीर्य) दुराचरण के लिए ही होता है। भीमसेन ने कृष्ण के इशारे पर दुर्योधन का काम की जघा क्षेत्र में ही गदा का प्रहार किया जिससे दुर्योधन का वध हुआ। अर्थात काम पर बल बुर्ज प्रहार से विजय प्राप्त कर अति बलिष्ठ भीमाकार हो गये। अर्थात जो पाण्डव काम विकार रूपी कौरव बल के दम्भी राज कुमार दुराचारी दुर्योधन का वध ज्ञान गदा के प्रहार से कर देते है वही भीमाकार है भीससैन है भीम है।

धृतराष्ट्र – सत्ताधीश धृष्टया अपहृत्य सर्व राष्ट्र य नृप स धृतराष्ट्र। अर्थात जिसने धृष्टता पूर्वक सभी देशो का अपरहरण कर रखा है वह धृतराष्ट्र है। जो अपने वश धर्म जाति मोह मे अन्यो के समान राज्य चला रहा है तथा सत्ता से चिपका हुआ है खिलवाड कर रहा है। देश से समाज से वह धृतराष्ट्र है। ऐसा की कृत्य वर्तमान सत्ताधीन शासनासीन तथाकथित देश के रक्षकों का है।

गान्धारी – (माया) जिसने आखों मे पट्टी बाध रखी है। माया के पजे की पाच अगुलिया है। काम व क्रोध लोभ मोह अहकार अपने इन पाचो सहयोगियो से माया ने सारे विश्व को अपने चगुल मे फसा रखा है। अखिल विश्व माया के मायाजाल मे उलझ गया है। माया ही गान्धारी है जिसने धृतराष्ट्र के लिए उनके नक्षे कदम पर आखो में पट्टी बाध डाली है। यह सब मोह वश हो रहा है क्योकि मोह गान्धारी का भाई है। शकुनि – (मोह) यह माया का मोह है। अर्थात् गान्धारी का भाई है। शकुनि माया मोह एक दूसरे के पूरक है। क्योकि माया अधी है तो मोह लूला लगडा है। माया देख नहीं सकती तो मोह चल नहीं सकता। इसलिये मोह रूपी लगडा भाई – माया रूपी अन्धी बहन के कन्धे पर सवार होकर एक दूसरे के पूरक बनकर धृतराष्ट्र के राज्य को चला रहे हैं।

कर्ण – (क्रोध) क्रोध रूपी विकार ही कौरव दल का सूत पुत्र करण है। कर्ण (कान) ही क्रोध का जनक है निमित्त है – क्रोध की जन्नी ध्वनि है। जो श्रवणेन्द्रिय की खुराक है। अर्जुन ही करण का वध करने वाला है। अर्थात् क्रोध का विजेता है तात्पर्य यह है कि जिस पाण्डव ने ज्ञानाग्नि को प्रज्ज्वलित करके कौरव सैनानी कर्ण। क्रोध रूपी विकार का वध किया हौ वह अर्जुन है।

जयद्रथ – अहकार – अहभाव ही सहयोग का शत्रु एव सहयोग का जनक है। जहा अहकार है वहा सहयोग नहीं असहयोग है। सहदेव नहीं असहदेव है। ज्ञान पाकर जो वायु की तरह हलका होकर सबके लिए प्रवाह मान है स्व मान से जिसके पर मान व अर्थात् शरीरिक मात्रा का अभिमान का अहकार का वध कर दिया है। वह सहदेव है – अहकार ही घमण्डी दुराचारी जयद्रथ है। अहकार प्रभावैन जर्जर यस्य रथ स जयद्रथ (ज+य+रथ=जयद्रथ) महाभारत मे अर्जुन द्वारा जयद्रथ का वध वर्णित है। ऐसा ही हो सकता है क्योकि जिसने सम्पूर्ण ज्ञान अर्जित कर लिया है वही अर्जुन है अत वह अहकार रूपी जयद्रथ का वध निरकार हो–वायु की तरह हलका है सबके लिए सहयोगी है वह सहदेव है।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो गया कि इस अखिल विश्व मे हर मानव आत्मा कुरुक्षेत्र अथवा कर्मक्षेत्र रुपी महाभारत पर युद्ध रत है। अनीति व अवगुणो के प्रतीक कौरव है तथा धर्म एव सदगुणो के स्वरूप ईश्वर प्रेमी वह प्रीति वृद्धि पाण्डव है। अन्तत इस महाभारत मे विजय धर्म सत्य व नीति की होनी है। इसलिय हर मानव आत्मा को काम क्रोध आदि विकारो का त्याग कर पवित्रता और सद्गुणो के कारण करना चाहिये। सृष्टि के इस परिवर्तन काल मे इस से ही वह पुण्य फल स्वर्ग की प्राप्ति कर सकता है। ◆

क्या अभी नहीं जागोगे ?

अभी कुछ ही वर्षो पूर्व तक कैसा उन्नत समय था। सत्यनिष्ठ कर्तव्यनिष्ठ राष्ट्र हितैषी नेतागण तदनुसार वैसी ही उच्च आचरण वाली जनता। लेकिन उस समय भी महात्मा गाधी कहते थे कि रामराज्य की स्थापना करनी है। सतयुग को लाना है।

दुर्भाग्य है कि वह उज्ज्वल चरित्रवान नेतृत्व जाने कहा विलीन हो गया ? और छा गया है चारो ओर जातिगत् द्वेष फैलाते करोडो अरबो का अनैतिक धन डकारते चरित्र हनन करते स्वार्थ सिद्धि मे लिप्त सिद्धान्तहीन दिशाहीन कलुषित ह्रन्य वाले नामधारी नेताओ का बाहुल्य। येन केन प्रकरेण किसी भी प्रकार से सत्ता हथियाने वालो को सिद्धान्त एव राष्ट्र हित से क्या ? ये क्षुद्र व्यक्तित्व स्वार्थ सिद्धि हेतु इधर उधर दौड भाग रहे हैं।

भ्रष्टाचार अनैतिक आचरण दूषित आहार सास्कतिक प्रदूषण द्वारा जनता का चरित्र भी अधोमुखी होने लगा है। जो प्रजा कुछ समय पहले सत्य एव कर्त्तव्यनिष्ठ थी उसी के द्वारा अपराधिक व्यक्तित्व उद्देश्य एव सिद्धान्तहीन व्यक्तियो को समर्थन देकर शासक बनाया जा रहा है। निश्चित ही कुछ वर्षो पहले का ही समय रामराज्य था।

और इस सब गम्भीर शोचनीय स्थिति की पूर्ण रूप से जिम्मेदार है यह वर्तमान काग्रेसी सस्कति। जिसकी अदूरदर्शिता एव स्वार्थ सिद्धि से सम्पूर्ण देश भ्रष्टता की ओर बढ रहा है। प्रत्येक क्षेत्र शहर गाव घोर अव्यवस्था एव अनुशासनहीन होता जा रहा है एव भ्रष्टता के कारण बढ रही है भीषण महगाई।

हालाकि राष्ट्र भक्तों एव कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों की भी अभी कमी नहीं है लेकिन अनुशासित कर्त्तव्यनिष्ठ ईमानदार व्यक्तियो एव सगठनो को समर्थन करना क्या इस समय सबका प्रथम कर्त्तव्य नहीं है ? अपनी सस्कति सतति अस्मिता को विनाश से बचाना क्या सबका दायित्व नहीं है ?

लेकिन भारतीय सस्कृति के बिगाड के इस नाजुक दौर मे भी धार्मिक सगठन साधु महात्मा क्या इसी प्रकार कथा कीर्तन रासलीलाये ही रचाते रहेगे ? राष्ट्र भक्तो एव क्रान्तिकारियो का जन्मदाता वह प्रेरक आर्य समाज जिसका मुख्य उद्देश्य ही सामाजिक उन्नति करना कराना एव ससार का उपकार करना है कब तक तटस्थ भाव अपनाये रहेगा ?

आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार मे अग्रणी

आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद की एक साधारण सभा ११ ८ १९९९ रविवार को मध्यान्ह १२ बजे आर्य समाज अमरोहा मे सम्पन्न हुई। इस सभा मे निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुए।

१ श्री रामस्वरूप सिह आर्य को सर्व सम्मति से आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद का कार्य कारी प्रधान नियुक्त किया गया।

२ जनपद मुरादाबाद मे जिला आर्य सम्मेलन आर्य समाज अमरोहा मे कराना तय पाया गया। इस सम्मेलन मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान व मत्री जी का स्वागत करने का निर्णय लिया गया।

३ गगा मेला तिगरी घाट पर कार्तिक मे आर्य वीर दल का शिविर लगाने का निर्णय लिया गया और शिविर मे आर्य समाज का प्रचार प्रसार बडे स्तर पर करने का निर्णय लिया गया।

गगा मेला तिगरी घाट पर शिविर के सयोजक श्री रामस्वरूप सिह आर्य एव सस्थापक रईस चौ० खचेडू सिह को बनाया गया।

भवदीय
मत्री
आर्य उपप्रतिनिधि सभा
मुरादाबाद

हे प्रभु हमारी बुद्धियों को श्रेष्ठ मार्ग पर चलाओ

आओ अमरत्व की तलाश में चलें

पृष्ठ ४ का शेष

हमे सासारिक भोग विलास मे सुख की प्राप्ति भले ही हो जाए मगर चिर तृप्ति नहीं मिल सकती है। उपनिषद की भाषा मे इसे ही अल्प सुख और भूमा सुख कहा गया हैं। हमें अल्प से भूमा सुख की ओर बढने की आवश्यकता है। इस भूमा सुख की प्राप्ति ही मानव जीवन का लक्ष्य है। महर्षि दयानन्द जी ने कहा है कि वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है मगर उन्होने भी वेदो का मुख्य विषय ईश्वर प्राप्ति ही कहा है। शरीर के बिना या भौतिक पदार्थो के बिना हमारा निर्वहन असभव है मगर इसी को सबकुछ मानकर चलना भी अपने आपको धोखा देना है। यह तो साधन मात्र है साध्य तो अमरत्व है। विद्या और अविद्या अर्थात आध्यात्मिकता और भौतिकता का समन्वय करता हुआ वेद हमें आदेश देता है कि —

अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।
यजु० ४०/१४

अर्थात अविद्या से मृत्यु का अतिक्रमण करके विद्या से अमरत्व को प्राप्त करें। यही शिक्षा हमें आज के इस भौतिकवादी युग मे ग्रहण करनी है और यही हमारी सुख और शान्ति का आधार है। इसके बिना किसी को भी निजात नहीं मिल सकती है। भौतिकता की अन्धी दौड ने हमारे सभी आदर्शों को ताक पर रख दिया है। व्यक्ति ही व्यक्ति के खून का प्यासा बन गया है। दीन ईमान सब समाप्त हो गए हैं। हर कोई बस एक ही धुन मे है कि रातो रात वह लखपति या करोडपति बन जाए। इन्द्रियो के भोगो को ही सबकुछ मानकर चलने वाला व्यक्ति आज और कुछ सोचने या सुनने के लिए तैयार ही नहीं है। इसका परिणाम भी हम देख रहे हैं कि आज का मानव अपना चैन खो चुका है। उसे नींद के लिए भी दवाईयों का आश्रय लेना पड रहा है। ऐसी ऐसी भयकर बीमारियो का शिकार हो गया है जिनका कि कोई उपचार तक भी नहीं है। सब कुछ पाकर भी वह खाली है अन्यथा इस दौड को कहीं तो समाप्त होना ही चाहिए था। सुख शान्ति और चैन की जिन्दगी के लिए समूची जीवन पद्धति को बदलना होगा। इस मगमरीचिका से छुटकारा पाने के लिए आध्यात्मिकता का सहारा लेना होगा। उस परमात्मा को जाने बिना दु खों से छूटने का और कोई मार्ग हो नहीं सकता है। इसलिए वेद हमे कहता है—

वेदाहमेत पुरुष महान्त आदित्यवर्ण तमस परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्य पन्था विद्यतेऽयनाय।
यजु० ३१/१८

अर्थात उस पुरुष को मैं जानता हू अर्थात सब मनुष्यों को उचित है कि उस परमात्मा को अवश्य जाने। वह बडो से भी बडा है उससे बडा व उसके बराबर कोई नहीं है। आदित्यादि का रचक और प्रकाशक वही एक परमात्मा है तथा वह सदा प्रकाश स्वरूप है। अविद्यादि दोषो से दूर है—दूर करने वाला है। उस परमात्मा को जानकर ही जीव मृत्यु को अलघन कर सकता है। अन्यथा नहीं। बिना परमेश्वर की भक्ति और उसके ज्ञान के मुक्ति का मार्ग कोई नहीं है।

वेद का यह मन्त्र डके की चोट पर मानों ऐलान कर रहा है कि हे मानव यदि तू सासारिक दु खों और मृत्यु आदि से बचना चाहता है तो उस परमात्मा को जान उसी के जानने से अमरत्व की प्राप्ति हो सकेगी। कठोपनिषद का ऋषि साफ शब्दो मे इस रहस्य को बताने के लिए और अमरत्व तक पहुचने के लिए मार्ग बताता हैं कि —

आत्मान रथिन विद्धि शरीर रथमेव तु।
बुद्धि तु सारथि विद्धि मन प्रग्रहमेव च।
इन्द्रियाणि हयानाहु विषयास्तेषु गोचरान्।
आत्मेन्द्रियमनोयुक्त भोक्तेत्याहुर्मनीषीण।
कठो० ३–३–४

उपनिषद का कथन है कि यह शरीर एक रथ के सामान है। रथ मे धोडे जुते होते हैं घोडो के लगाम लगी होती है लगाम को हाथ मे लिए सारथी रथ चलाता है। रथ का स्वामी पीछे बैठा होता है। वह स्वय तो कुछ नहीं करता मगर रथ को वह जिधर चाहता है उधर ही रथ को चलना होता है। यदि घोडे जिधर चाहें भागने लगे तो रथ की क्या हालत होगी। शरीर रथ है ससार के विषय वे मार्ग हैं जिन पर रथ को चलना है इन्द्रिया घोडे हैं मन लगाम है बुद्धि सारथि है आत्मा इस रथ का स्वामी है। इसलिए आत्मा जिधर को कहे उधर बुद्धि को चलना चाहिए बुद्धि जिधर को कहे उधर मन को लगाम फिरानी चाहिए, मन जिधर मोडे उधर इन्द्रियों को जाना चाहिए। यदि यह क्रम रहेगा तो आत्मा अपने गन्तव्य स्थान पर पहुचेगा अन्यथा यह पता नहीं किन किन योनियों में बार-बार भटकता रहेगा। श्रावणी पर्व को मनाने की सार्थकता इसी में है कि हम अपने आप को अमरता की ओर अग्रसर करें ताकि हमारा जन्म सफल हो सके।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह : कुछ संस्मरण

पृष्ठ ३ का शेष

हैदराबाद जेल के मुख्य द्वार के सामने कुछ पब्लिक शौचालय थे इनमे हमलोग शौच के लिए जाया करते थे। इसमें बाहर के लोग भी शौच जा सकते थे। हमलागों ने देखा कि सुल्तान बाजार हैदराबाद के आर्यसमाज के कुछ कार्यकर्ता सड़क से हमें देखते हैं और कुछ सकेत करते हैं। इसके लिए यह योजना बनाई गयी कि सुल्तान बाजार हैदराबाद समाज के लोगों को सूचित किया कि हम लोग अमुक नम्बर के शौचालय के ऊपर कोने में कुछ समाचार आदि रख दिया करेंगे। हमे जो आवश्यकता होगी उसकी सूचना देगें और जेल में सत्याग्रहियो की भी आवश्यक सूचना देंगे। इस प्रकार हम लोग प्रतिदन विशेष नम्बर वाले शौचालय में ऊपर कागज रख देते थे और उसका उत्तर प्रतिदिन आर्यसमाज से प्राप्त हो जाता था।

किसी प्रकार यह सूचना जेल वालों को भी मिली। वे सबकी तलाशी लिया करते थे कि इनके पास कागज और पेन्सिल न हो। अत कागज का छोटा पर्चा और पेन्सिल भी बहुत सभालकर एव छिपाकर रखनी पडती थी। मैंने जेल में देखा कि बाल काटने और दाढी बनाने की व्यवस्था बहुत भ्रष्ट है अत मैंने दाढी रख ली थी और सत्याग्रह के पश्चात् ही उसे कटवाया। इस दाढी की उपयोगिता यह थी कि दाढी के उलझे हुए बालों में मेरी छोटी से पेन्सिल फसी रहती थी और किसी को दिखाई नहीं पडती थी अत कई बार तलाशी में दाढी ने हमारी रक्षा की।

हैदराबाद मे अन्य उल्लेखनीय सस्मरणो में दो तीन बाते और हैं जिनका उल्लेख उपयुक्त होगा। भोजन के विषय मे जेल वालों ने काफी क्रूरता का परिचय दिया था। जिस दिन जेल में नम्बर आदि लगते थे उस दिन वे जानबूझ कर सब्जी में मास डाल देते थे। रोटियो में पर्याप्त मात्रा में रेत होना साधारण–साधारण बात थी। रोटिया कच्ची हो या पक्की हों इसकी कोई शिकायत नहीं कर सकता था। एक दिन सायकाल के भोजन में हम सभी को सन्देह हुआकि सब्जी में मास है। हमारे साथी डी०ए०वी कालेज लाहोर आदि के पजाबी छात्रो ने सब्जी मे मास का टुकडा दिखाया। फलस्वरूप दो दिन भूख हडताल रही। जेलवालों ने हडताल समाप्त कराने के लिए अनेक प्रयत्न किए परन्तु जब हडताल समाप्त नहीं हुई तो उन्हे विवश होकर भोजन के लिए राशन देने की व्यवस्था करनी पडी उसके पश्चात् हम लोग स्वय भोजन बनाते थे।

जेल के अन्य वार्डों में क्या हो रहा है यह समाचार पाने के लिए हमारे पास कोई साधन नहीं था। इसके लिए विधि यह निकाली गयी थी कि जिस वार्ड में किसी प्रकार का कष्ट या अत्याचार हो तो वे लोग तुरन्त 'आर्यसमाज की जय' 'वैदिक धर्म की जय' आदि नारे लगाना प्रारम्भ कर देते थे। यह क्रम आधा या एक घन्टे तक चलता था। जेल के अधिकारी दौड़कर आते थे और बन्दूक आदि दिखाकर शान्त करने का प्रयास करते थे। उसके उत्तर में उन्हे कहा जाता था कि अमुक वार्ड से नारे शुरु हुए हैं आप वहा जाकर उनकी समस्या का समाधान कीजिए।

एक दिन की घटना है 'मुन्तजिम' (जेल सुपरिन्टेन्डेंट) महोदय एक वार्ड मे पहुचे। किसी ने उन्हें 'मूर्खानन्द' कह दिया, वहा वे नहीं बोले। दूसरे वार्ड मे आकर सत्याग्रहियों से पूछा कि 'मूर्खानन्द' का क्या अर्थ होता है। सत्याग्रहियो ने जानबूझकर बताया कि मूर्खानन्द का अर्थ है–आलिम फाजिल (महाविद्वान्)। उन्हें इससे बहुत सन्तोष हुआ। अगले दिन उन्होने उसे वार्ड मे जाकर कहा कि मुझे मूर्खानन्द कहा कीजिए।

हैदराबाद जेल मे सत्याग्रहियो से जेल के चारो ओर पाच फीट १० फीट चौडी सडक बनवायी गयी। हमलोगो को ६ घटा मजदूर की तरह मिट्टी खोदना उसे सिर पर ढोना तथा सडक बनाने का कार्य करना पडा। निजाम ने पजाब से खाक्सार (पजाबी मुसलमान) बुला रखे थे और वे निर्दयतापूर्वक लोगो से यह कार्य कराते थे।

जेल मे चीनी या गुड के दर्शन नही हुए अत कुछ सत्याग्रही केवल मिठास के लिए दवाई की बोतलों का पानी डाक्टर से मागा करते थे। हम लोग रविवार के दिन सामान्य राशन की जगह गुड और मूँगफली लेते थे और पीस कर रोटी में भरकर मोटी (लिट्टी) बनाते थे। वहा वह अमृत तुल्य प्रतीत होती।

मेरे विरुद्ध जेल में सब से शिकायत यह थी कि मैं लोगों को माफी मागने से रोकता था इसके लिए मुझे कई बार चेतावनी दी गयी और ऐसा न करने के लिए कहा गया।

जेल में शारीरिक ह्रास अवश्य हुआ परन्तु मुझे कई उपलब्धिया भी हुई। मैं जेल मे जाते समय सत्यार्थप्रकाश २८ उपनिषदो का गुटका महाभारत शान्तिपर्व ले गया था। मैं प्रतिदिन यज्ञ के बाद कुछ प्रवचन भी करता था शेष समय मेरा स्वाध्याय का क्रम चलता था। मैंने इस काल में पूरा सत्यार्थ प्रकाश अक्षरश पढा और उसमें से विशेष बातें नोट की। २८ उपनिषदों का गुटका २ बार पूरा पढा और सभी आवश्यक सन्दर्भ नोट किया। महाभारत शान्तिपर्व का भी अध्ययन किया। इसके अतिरिक्त मैंने मराठी भाषा अच्छी तरह पढी और हिन्दी की तरह मराठी का अखबार पढ और समझ सकता था। मराठी में समर्थ गुरु रामदास का 'दासबोध और श्री तिलक का 'गीता रहस्य' भी पढा। तेलगु पढना शुरू किया था परन्तु विशेष प्रगति न हो सकी।

हमारे साथी ब्रह्मचारी दयानन्द का जेल में यातनाओं से देहान्त हुआ। ये श्री सच्चिदानन्द शास्त्री महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के ज्येष्ठ भाई थे। इस सत्याग्रह मे लगभग दस हजार से भी अधिक व्यक्ति गिरफ्तार हुए। इनमे पजाब हरियाणा उत्तरप्रदेश और हैदराबाद के सत्याग्रहियो की सख्या सर्वाधिक थी। विभिन्न यातनाओं में कई दर्जन सत्याग्रही बलिदान हुए।

हम सभी सत्याग्रही १७ अगस्त १९३९ को निजाम से समझौता होने के कारण जेल से मुक्त हुए। लौटते समय महात्मा गाधी जी से मिले। उन्हें अपनी यातनाए सुनायीं। जेल से लौटने पर मैं ३ मास अत्यन्त रुग्ण रहा और बडी कठिनाई से स्वस्थ हो सका।

इस सत्याग्रह की उपलब्धि स्वरूप मैं दो आर्य महात्माओ के निकट सम्पर्क मे आया वे हैं –महात्मा नारायण स्वामी जी एव महात्मा आनन्द स्वामी (खुशहालचन्द जी खुर्सन्द)। महात्मा नारायण स्वामी जी ने मुझे रामगढ (नैनीताल) मे अध्यापक के पद पर नियुक्ति दी और चार वर्ष मुझे पितृवत स्नेह दिया तथा मार्ग दर्शन किया। उनके आशीर्वाद स्वरूप मुझमे वेदो के कार्यों मे विशेष रुचि उत्पन्न हुई। महात्मा आनन्द स्वामी ने लाहौर मे एम० ए० सस्कृत की पढाई में पूर्ण सहयोग दिया और बाबा गुरुमुख सिह जी (अमृतसर) से दो वर्ष के लिए छात्रवृत्ति दिलवायी। मुझे दैनिक हिन्दी मिलाप मे ६ मास के लिए सह–सम्पादक बनाया। मैं इन दो महात्माओ के प्रति उनके आशीर्वाद के लिए कृतज्ञता प्रकट करता हू। ◆

कृष्ण तुम्हारा शत् शत् बन्दन

पं० राधे श्याम आर्य विद्यावाचस्पति

बिखरे हुए राष्ट्र को तुमने जागृति का नव मत्र दिया
राष्ट्र अस्मिता की रक्षा कर सत्य धर्म का तत्र दिया
सद् विवेक से सत्य ज्ञान से योगेश्वर तुमने ही–
राष्ट्र विरोधी तत्वो का सब नष्ट महा षडयत्र किया
भरत भूमि ही नहीं विश्व को दिया अभयता स्पन्दन।
कृष्ण तुम्हारा शत् शत् बन्दन।।

शौर्य शक्ति साहस का तुमने बाल्यकाल से दिया सुपरिचय
दानवता के सहारण का किया ह्रदय मे दृढ सा निश्चय
बढे लक्ष्य तक चरण तुम्हारे निर्भय होकर सकल्पित हो
विश्व विजयिनी राष्ट्र शक्ति का करके सचय
मिटा दिया तुमने युग मानव पुन मनुजता का कटु क्रन्दन
कृष्ण तुम्हारा शत शत बन्दन।।

काम क्रोध मद लोभ जीत कर बने तुम्ही थे पूर्ण मनुज
देख तुम्हारी शक्ति अपरिमित काप उठे थे सभी दनुज
भ्रातृ भाव का नव सदेशा दिया तुम्ही ने पूर्ण धरा को
प्यार दिया तुमने जन–जन को बना सभी को सगा अनुज
तुम लाए देवत्व धरा पर किया मनुजता अभिनन्दन।
कृष्ण तुम्हारा शत् शत् बन्दन।।

युद्ध क्षेत्र मे तुमने पावन गीता का सदेश दिया
सत्य पथो पर लाए जग को वेदो का उपदेश दिया
मोहासक्त पार्थ का तुमने दूर किया था सारा भ्रम
धर्म तथा आध्यात्म प्रभासे आलोकित यह देश किया
अपने सत्कार्यों से तुमने। बना दिया मिट्टी का चन्दन।
कृष्ण तुम्हारा शत् शत् बन्दन।।

मुसाफिर खाना, सुल्तान पुर (उ०प्र०)

आर्य शिक्षण संस्थाएं साम्प्रदायिक सद्भाव की मिसाल हैं

श्रीमती प्रभा वीसे

गत ७ता० को श्री महर्षि दयानन्द शिक्षा समिति के द्वारा सचालित शाला के छात्र छात्राओ को सम्बोधित करते हुए म०प्र० राज्य सहकारी जाति वित्त एव विकास निगम भोपाल की उपाध्यक्ष श्रीमती प्रभा वीसे ने कहा कि आप लोग आपस क मन म मेल छुआछूत दुर्भावना नही रखे आप लोग आपस मे भाई बहन हैं। और यदि आपका कोई साथी आर्थिक दृष्टिकोण से या बौद्धिक दृष्टि से कमजोर है एक दूसरे के दु ख मे सहाभागी बने। जन्म से कोई बडा या छोटा नही होता ब ल्कि कर्म से आदमी की पहचान होती है यही बात स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी कही है।

इस अवसर पर श्री हीरालाल पिप्तन पूर्व विधायक एव अध्यक्ष अ०भा०भारत अनु जाति परिषद भोपाल तथा आर्य समाज के पधान श्री वृष्णलाल आर्य शिक्षण समिति के सचिव श्री कैलाशचन्द पालीवाल ने भी सबाधित किया।

अतिथियो का स्वागत स्मृति चिन्ह आभार प्रदर्शन पार्षद आर्य महिला समाज की सचिव श्रीमती चद्रकान्ता पालीवाल ने किया। इस अवसर पर पार्षद श्री हुकुम मेलन्दे श्री रूपचन्द आर्य श्री पी० के० वाज्पेयी क्षेत्र अधिकारी जिला अत्यवसायी भी उपस्थित थे।

देव स्वामी बलिदान दिवस

सिरसागज २७-७-९९। आज यहा गुरुकुल स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिरसागज जिला फिरोजाबाद के उन्नायक महात्मा देव स्वामी जी महाराज का १९वा बलिदान दिवस कुल भूमि मे उस के कुल वासियो के द्वारा विशेष यज्ञ पूर्वक एक साद्रा समारोह आयोजित करके मनाया गया। इस अवसर पर कुल वासियो ने भाव विभोर होकर महात्मा जी के पावन व्यक्तित्व और कृतित्व का स्मरण करके उन्हे अश्रुपूरित आखो से भाव भीनी श्रद्धाञ्जलिया दीं।

उल्लेखनीय है कि महात्मा देव स्वामी जी महावैयाकरण प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के शिष्य तथा अष्टाध्यायी महाभाष्य के विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न विद्वान थे। उन्होने अपनी लगन और तपस्या से गुरुकुल को भारत के अग्रणी गुरुकुलो की पक्ति मे खडा कर दिया था। महात्मा जी महर्षि दयानन्द प्रतिपादित तथा सत्यार्थ प्रकाश मे उल्लिखित पाठ विधि के कट्टर पक्षपाती थे जब कि प्रबन्ध तन्त्र उन की इस बात से सर्वथा असहमत रहता था। इस का दुष्परिणाम यह हुआ कि तत्कालीन प्रबन्धक दो अध्यापको तथा तीन ब्रह्मचारियो ने मिलकर दि० २७-७ ९९ की रात मे महात्मा जी को गोलियो से भून दिया। इस हत्या के अपराध मे सभी अपराधियो को आजीवन कारावास का दण्ड मिला हुआ है।

आर्य समाज लन्दन द्वारा यूरोप में वेद प्रचार

नई दिल्ली आर्य समाज लन्दन के उपमत्री श्री पुकाकर शर्मा ने विशेष भेटवार्ता के अन्तर्गत सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामत्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री को बताया कि आर्य समाज लन्दन मे यूरापीय स्तर पर युवा शक्ति के गठन व आर्य समाज के प्रचार व प्रसार के लिए एक विशेष योजना प कार्य कर रहा है। उन्होने अपनी भेटवार्ता मे कहा की नयी कार्यकारणी इस बात पर विशेष रूप मे कार्य कर रही है कि आर्य समाज लन्दन पूरे पश्चिम जगत मे सार्वदेशिक का सही मायने मे प्रतिनिधित्व करे और आर्य समाज सगठन को मजबूत करने में अपना पूर्ण योगदान कर सके उन्होन बताया कि अनेको महत्वपूर्ण कार्यों के साथ साथ हमने हिन्दी भाषा भारतीय सगीत तथा अन्य विषयो पर जिनका भारतीय सस्कृति और भारतीय शिक्षा पर नवयुवकों व बच्चो के लिए विशेष प्रकार कि कक्षाओं का प्रबन्ध किया है।

आया पर्व महान

राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

वेद प्रचार करें जगती पर वेदो का हो फिर सम्मान।
यही बताने आर्य जनो को आया है यह पर्व महान।

पर्व श्रावणी का यह पावन देता हमको नव सदेश।
वेद ज्ञान की आभा से हो आप्लावित यह विश्व विशेष।

दूर हटें जो छाए भू पर है पाखण्ड तथा आडम्बर।
क्षत-विक्षत हों कुरीतिया सब फैले वैदिक धर्म निरन्तर।

दूर धरा से अन्ध-भक्ति हो मिटे कुहासा अज्ञानो का।
धर्म ध्वजा लहराए भू पर फैले ज्योतिष विज्ञानों का।

हिंसा-का आतकवाद का मिटे असीमित घना अंधेरा।
वेदो के पावन प्रकाश से आलोकित हो नया सवेरा।

वैदिक धर्म ध्वजा फहराए जन-जन के अन्तर्मन में।
सत्य-पथों के बने पथिक हम, तप हो, त्याग भरा मन में।

ईर्ष्या-द्वेष-कलह सब तज कर मनुज करे जगती-कल्याण।
दीन-दलित-शोषित-उत्पीडित पाए निर्भयता का त्राण।

भूमि समस्त बने यह प्यारी-वेद ज्योति से ज्योतिष्मान।
याद दिलाने यही हमे है आया फिर यह पर्व महान।

विदेश यात्रा समाचार

आर्य समाज हावडा के उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थी प० श्री खगेन्द गिरि (आर्य) जो आर्य समाज सिलिगुडी उत्तर बगाल मे ६ वर्ष तक सफल पुरोहित प्रचारक के रूप में कार्य कर चुके हैं अव १४ जुलाई को अमेरिका के अटलाण्टा वैदिक टेम्पल के निमन्त्रण पर वैदिक धर्म प्रचारार्थ गये।

प० मधुसूदन
वैदिक उपदेशक विद्यालय
हवडा आर्य समाज
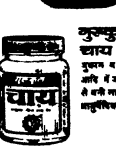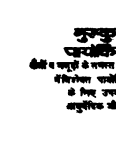
हिन्दी अकादमी द्वारा प्रदत्त

साहित्यकार विजयेन्द्र स्नातक शलाका सम्मान से सम्मानित

नई दिल्ली १९ अगस्त। वयोवृद्ध साहित्यकार विजयेन्द्र स्नातक को हिदी अकादमी के वर्ष ९४ ९५ के शलाका सम्मान से सम्मानित किया गया। इसके अलावा अनेक अन्य साहित्यकारो व पत्रकारों को विभिन्न पुरुस्कारो से सम्मानित किया गया।

प्रगतिशील विचारधारा के साहित्यकार व पत्रकार समारोह मे नदारद थे। इस विचारधारा के छह व्यक्तियो का चयन वर्ष ९१ ९२ के शलाका तथा साहित्य सम्मान के लिए किया गया था और ये सभी पुरुस्कार लेने नही आए।

पुरुस्कार उपराज्यपाल पी०के०दवे ने भेट किए। समारोह की अध्यक्षता मुख्यमत्री साहिब सिह ने की। मूर्धन्य साहित्यकार डा० विद्यानिवास मिश्र विशिष्ट अतिथि के रूप मे उपस्थित थे।

जोरदार तालियो के बीच वयोवृद्ध साहित्यकार विजेन्द्र स्नातक को वर्ष ९४ ९५ के शलाका सम्मान से सम्मानित किया गया। श्री दवे ने उन्हे पुष्पमाला अकादमी प्रतीक चिन्ह एक दुशाला प्रशस्ति पत्र तथा ५१ हजार रुपये का चैक भेट किया।

इस वर्ष साहित्यकार सम्मान से सम्मानित होने वालो मे सत्यपाल चुघ (मरणोपरात) (सहित्यसेवा) कैलाश वाजपेयी (साहित्यसेवा) गोविद मिश्र (साहित्यसेवा) रामबहादुर राय (पत्रकारिता) हरिबाबू कसल (राष्ट्रभाषा प्रचार प्रसार) राजेद्र मिश्र (उडिया से हिन्दी अनुवाद) व रवीन्द्र सेठ (तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन) शामिल हैं। श्री दवे ने प्रत्येक साहित्यकारो को २१ हजार रुपये का चेक दुशाला प्रशस्ति पत्र व अकादमी स्मृति चिन्ह भेट कर सम्मानित किया स्व० सतपाल चुघ का सम्मान उनकी पत्नी सुभाषिनी चुघ ने ग्रहण किया।
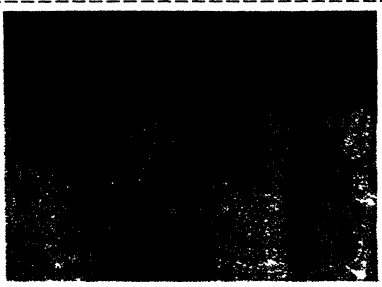
पहली बार आरभ किए गए काका हाथरसी पुरस्कार ९५ ९६ हास्य कवि अशोक चक्रधर को दिया गया। इस पुरस्कार मे उन्हे ३१ हजार रुपये की राशि का चेक दुशाला प्रशस्ति पत्र तथा प्रतीक चिन्ह प्रदान किया गया।

इसके अतिरिक्त इस अवसर पर साहितियक कृति पुरस्कार ९४ ९५ भी प्रदान किया गया।

रक्षाबन्धन -त्यौहार

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

यह अनोखा रक्षाबन्धन का, त्यौहार सजनी
उमड-घुमड घनघोर घटाये छाई काली काली
मनभावन सावन का महीना जगल मे हरियाली।
भय्या, भाभी के गठ बन्धन का त्यौहार सजनी।। १।।

राखी लेकर बहन चली निज भय्या के घर आई।
राखी बाध कलाई मे मन फूली नही समाई।
प्यारे भय्या के अभिनन्दन का त्यौहार सजनी।। २।।
झूले झूल रही है कामिन गीत मल्हारे गाये।

चहल पहल घर घर मे हो रही नृत्य करे महिलाये।।
ये सुखदाई मनोरजन का त्यौहार सजनी ।। ३।।
पूर्णिमा के बाद अष्टमी पावन दिवस कहाया।
महामानव श्रीकृष्णचद जी इसी दिवस जन्माया।। ४।।
ये है जन्मदिवस यदुनन्दन का त्यौहार सजनी

आंचलिक गढ़वाल आर्य सभा का गठन

आर्य समाज के सार्वभौमिक आन्दोलन और आर्य समाज की गौरवशाली शक्ति को मानव समाज के कल्याण एव आचलिक गढवाल के दिल्ली प्रवासियो के आत्मिक व सामाजिक उन्नति हेतु उनमे एक ईश्वरवाद आदर्श पुरातन वैदिक मत की यज्ञ प्रणाली व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार की जागृति लाने के लिए दिनाक १८ अगस्त १९९९ को आचलिक गढवाल के कर्मठ ऋषि सैनिको की एक सभा का आयोजन श्री मोहनलाल जिज्ञासु जी की अध्यक्षता मे किया गया। सभा मे सर्व सम्मति से " आचलिक गढवाल आर्य सभा दिल्ली की स्थापना की गई जिसमे आचलिक वरिष्ठ ऋषि भक्तो ने प्रसन्नता व्यक्त की तथा महर्षि के आदर्शरूपी भावनाओ को जनहित मे पहुचाने के लिए अपना पूर्ण सहयोग देने का सकल्प लिया।

सभा का निर्वाचन निर्विरोध सम्पन्न हुआ जिसमे सव श्री मोहनलाल जिज्ञासु प्रधान गोविन्दराम उप प्रधान धर्मसिह शास्त्री महामत्री गोपाल आर्य मत्री अमरदत्त आर्य कोषाध्यक्ष एव हीरा सिह निरीक्षक चुने गए।

श्री जय प्रकाश त्यागी की धर्म पत्नी दिवंगत

अत्यन्त दुख के साथ सूचित किया जाता है कि श्री सुशील त्यागी एडवोकेट की माता जी श्रीमती रघुवती पत्नी श्री जय प्रकाश त्यागी का ८ ८ ९९ को स्वगवास हो गया। १५ ८ ९९ को उनकी अरिष्ठि सम्पन्न हुई। साय तीन बजे शम्भू दयाल दयानन्द सन्यास आश्रम दयानन्द नगर मे अयोजित शान्तियज्ञ मे अनको गणमान्य व्यक्तियो ने उन्हे श्रद्धासुमन अर्पि किये।

मुस्लिम परिवार वैदिक धर्म में दीक्षित

१ ८ ९९ को ग्राम भाऊपुर पोस्ट कुर्की बाजार जिला अम्बेडकर नगर उ०प्र० मे आर्य समाज लोहिया नगर अकवर पुर क प्रयास से प राजकरण आर्य मत्री आर्य समाज मसेन मिर्जापुर रामनगर अम्बेडकर नगर के पौरोहित्य मे एक मुस्लिम परिवार का शुद्धि सस्कार किया गया तथा वैदिक विवाह सस्कार की दीक्षा देकर वैदिक (हिन्दू धम) म दीक्षित किया गया जिन का नामकरण निम्न प्रकार किया गया

पुराना नाम	नया नाम
दीन मुन्म्मद	राम दयाल आर्य
कैसर जहा	आशा आर्य

दो पुत्र तथा एक पुत्री को भी इस प्रकार वैदिक धर्म मे लाया गया।

पोस्टल र० डिवीजन व डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 1-9-96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/96
R N No 026/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 29/30-8 1996

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल का निर्वाचन

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल का सगठनात्मक चुनाव प० रामकृष्ण जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। जिसमे सर्व श्री बलदेव कृष्ण पिपलानी प्रधान श्री रामशरणदास आर्य महामत्री तथा श्री सुरेन्द्र-नाथ सहगल को कोषाध्यक्ष सर्व सम्मति से चुना गया।

श्री रामशरणदास आर्य महामत्री

शान्ति यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज मनिहारी टोला (साहेबगज) के प्रचार मत्री काशी नाथ मण्डल के प्रयत्न से तानबडिया निवासी श्री बाहुन महतो की माता का स्वर्गवास के पश्चात श्री सत्यप्रकाश आर्य के पौरहित्य मे ३-८-९६ को शान्ति यज्ञ किया गया। माता की स्मृति मे दो दिनो का भजनोपदेश श्री आर्य द्वारा किया गया जिसमे समझाया गया कि आर्य लोग माता पिता का श्राद्ध-तर्पण जीवित मे ही करते हैं।

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य जनो एव आर्य समाज के मत्री/ प्रधान एव सदस्या से विनम्र निवेदन है कि गुरुकुल अयोध्या के निलम्बित मुख्याधिष्ठाता श्री प्रदीप आर्य द्वारा गुरुकुल से चुराई गई रसीदो द्वारा श्री प्रद्युम्न पाण्डेय से दान के रूप मे चन्दा कटवाया जा रहा है जबकि इस सस्था से इन दोनो लोगो का कोई सम्बन्ध नही है। धन सग्रह करके उस धन का उपयोग स्वय करते हैं।

अत जिस किसी आर्य समाज मे प्र पाण्डेय द्वारा गुरुकुल अयोध्या की रसीद गई हो कृपया उसकी फाटो कापी गुरुकुल का प्रेषित करे और भविष्य मे इन्हे किसी प्रकार का कोई सहयोग प्रदान न करे।

अध्यक्ष
श्री निशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय
अयोध्या–फैजाबाद (उ०प्र०)

शोक समाचार

सखेद सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज के आजीवन सेवक पू० स्वामी कृष्णानन्दजी तीर्थ (अम्बाला वाले) का विगत दि ११ ८ ९६ रविवार को प्रात ७०० बजे देहावसान हो गया। पूज्य स्वामी जी की अन्त्येष्टि क्रिया पूर्ण वैदिक रीति से आर्यसमाज मन्दिर महर्षि दयानन्द मार्ग अहमदाबाद २२ द्वारा सम्पन्न की गई।

वेद प्रचार ९५ ..

दिनांक २८-७-९६ से ११-८-९६ तक

आर्य समाज कटुआ मे दिनाक २८ ७-९६ से ११ ८-९६ तक गायत्री महायज्ञ एव वेदप्रचार उत्सव धूम धाम पूर्वक मनाया गया जिसमे लगातार १५ दिन धार्मिक जनता ने वर्षा मे भी सोत्साह बडी सख्या मे भाग लिया।

आचार्य अखिलेश्वर जी (दिल्ली) सचालक महात्मा रसीलाराम वैदिक वानप्रस्थाश्रम आनन्द–धाम उधमपुर तथा श्री नरेन्द्र आर्य भजनीक दिल्ली के सारगर्भित प्रवचन तथा भजन हुए। अतिम एक सप्ताह महात्मा गोपाल भिक्षु जी के प्रवचन भी हुए। ११-८-९६ को असख्य जनता ने ऋषि लगर का भी सेवन किया।

उत्तदीप कुमार, प्रधान

आचार्य पद रिक्त

आर्ष गुरुकुल मिथिला क्षेत्र छपराढी पो० कुआढ भाया ज्यनगर जिला–मधुबनी बिहार के लिए एक व्याकरणाचार्य की आवश्यकता है जो अष्टाध्यायी प्रथमावृत्ति काशिका व महाभाष्य तक पढा सके तथा गुरुकुल के नियम को पालन करके कराने मे दक्ष हो। वेतन २०००/ रु तक दिया जायेगा। इच्छुक व्यक्ति शीघ्र पत्र व्यवहार करे।

संस्कृत शिक्षा एवं संस्कार शिविर सम्पन्न

सनवाड १४ अगस्त आर्य समाज सनवाड द्वारा आयेजित पाच दिवसीय सस्कृत शिक्षा एव सस्कार शिविर १० अगस्त से १४ अगस्त को स्वामी सत्यानद सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हो गया। मुख्य अतिथि प० सत्यदेव ब्रह्मचारी बडौदा गुजरात के थे।

शिविर मे योगा सस्कृत शिक्षा एव सस्कारो के बारे मे सीखने के लिए २२ शिविरार्थियो ने भाग लिया।

ब्रह्मचारी ने अपने उदबोधन मे अनेक उदाहरण देते हुए कहा कि जिस प्रकार किसी मशीनरी या वस्तु विशेष खरीदने के साथ उसके विषय मे मुख्य जानकारी के लिए पुस्तिका या पत्रक साथ मे होता है। उसी प्रकार ईश्वर ने यह मनुष्य रूप मानव यन्त्र भेजने के साथ वेद रूपी पुस्तिका इसके साथ दी है जिससे इसे पढकर समझकर मानव मानवता का पालन कर सके।

ख्याली लाल आर्य ने उपस्थित विद्वानो का स्वागत किया अन्त मे डा० मोहन प्रकाश सिह आर्य मत्री आर्य समाज ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए प्रथम द्वितीय तृतीय आने वाले शिविरार्थीयो को बधाई देने के साथ आशा व्यक्त की, कि भविष्य मे आप जैसी प्रतिभाये ही इस देश की सस्कृति को अपने सस्कारो द्वारा रक्षा करेगी।

आर्य समाज कीर्तिनगर नई दिल्ली के तत्वावधान में सामवेदीय यज्ञ तथा वेद प्रवचन

आर्य समाज कीर्तिनगर नई दिल्ली मे श्रावणी उपाकर्म एव श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व के उपलक्ष्य मे २६ अगस्त से १ सितम्बर ९६ तक सामवेदीय यज्ञ तथा वेद प्रवचन आदि के कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं। इस अवसर पर ३० अगस्त ९६ को महिला सम्मेलन तथा १ सितम्बर को आर्य महासम्मेलन के विशेष कार्यक्रम रखे गये हैं। पूज्य स्वामी आनन्दवेश की अध्यक्षता मे होने वाले इस समारोह मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव श्री मदन लाल खुराना, डा० वाचस्पति उपाध्याय श्री सूर्य देव जी तथा डा० धर्मपाल जी आदि पधार रहे हैं। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर धर्मलाभ प्राप्त करे।
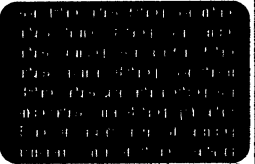
सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली–2 से प्रकाशित

मानव होकर दानव क्यों बनते हो ?

दानव के कार्य की तरफ एक नजर डालिए। उसका काम ही है तहस नहस करना। और यदि हम मानव होकर भी तहस नहस की प्रवृति की तरफ ही अग्रसर होगे तो हम दानव बनते जाऐंगे।

जिन्दगी की छोटी छोटी बातो की ओर हम यदि दृष्टिपात करे तो हम पाएगे कि हम दानव बनते हुए रूक सकते हैं। सबसे छोटा उदाहरण तो रोज मर्रा की जिन्दगी मे पैदल चलते हुए मकोडे तिलचटटे आदि को देखते हैं उन्हे रौद देते है। बडा अहकार है भाई हमारे मन मे कि हम मानव है और यह कि बिना यह देखे चलते हैं कि कोई मरे तो मरे। दानव भी अलमस्त होकर चलता है और रास्ते मे आए हुए पशु पक्षी पेड पौधे आदि को रोदता हुआ चला जाता है। अरे भाई हम तो मानव है हमारी तो मति (विवेक) भी है फिर क्यो दानव को प्रारूप रखे जहा तक हो सके सभी मे सद्भावना कायम रखे।

हमारे दैनिक जीवन मे भी व्यापार आदि मे चाहिए कि हम दानव का रूप नहीं रखे। व्यापार के दौरान हमने किसी को अगर ऋण दिया है अथवा किश्तो पर सामान दिया है और अगर उसकी किश्त समय पर नहीं आई हो तो भी हम दानव का रूप ग्रहण न करे और उसे दी हुई वस्तु का पुन अधिकार ग्रहण न करे बल्कि सामने वाले व्यक्ति को समझने की चेष्टा करे और मानवीय मूल्यो का हनन न करते हुए हम अमानवीय तत्वो का सहारा न लेते हुए आगे बढे। रूपया वसूलना तो होगा ही यह व्यापार है आपका परन्तु इस कार्य को निष्पादित करने के लिए आप मानवीय मूल्यो को ताक मे न रखते हुए भी तो अपना कार्य कर सकते हैं। क्या जल्लाद रूपी रवेए को अपनाने से ही आप अपना व्यापार कर सकते हैं – जी नहीं। दानवता का रूप छोडकर मानवता का रूप दैनिक दिनचर्या मे अपनाने की दृढ प्रतिज्ञा को कर लिजिए और बाकी कार्य स्वत ही सुचारू रूप से निबटता चला जाएगा।

इसी तरह जब पुराने किराएदार से मकान खाली कराने की बात आती है तो यह देखा जाता है कि आपके शहर मे कुछ ऐसे व्यक्ति मिल जाऐगे जो कि किरायेदार से मकान खाली कराने का ठेका लेते हैं और बडे ही ठोस शब्दो में एक-दो माह मे आपको आपका मकान किरोयदार से खाली करवा देने की गारटी देते हैं। आप उनके इस प्रस्ताव को सहृदय स्वीकारते हैं। और अब आप पाते हैं कि एक माह समापत होने के पहले ही आपका मकान खाली हो ही गया। आप अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। खाली कराने वाले दलाल को उसकी फीस देते हैं और रात को उस मकान मे (शेम्पैन) शराब की दावत भी देते हैं। इधर आप मकान खाली करवाने की खुशी की दावत का आनन्द ले रहे हैं और उधर आपको शायद आभास भी नहीं कि उस किरायेदार को कितनी तकलीफो का सामना करना पड रहा है। मकान से निकाले जाने से उसके लिए तो आपका स्वरूप दानव से कोई कम नहीं है। आपने कभी सोचा कि उस दलाल ने जिसे आपने किराएदार से मकान खाली करवाने के लिए चद रुपये दिए थे उसने क्या क्या अमानवीय कार्य किए होगे जब जाकर वह किराएदार का रास्ता अवरुद्ध किया होगा उसके पश्चात उसे कई प्रकार से डराया धमकाया होगा। नाना प्रकार की परेशानियो से जकड कर तब जाकर उसे मकान खाली करना पडा। एक मिनट समय निकाल कर जरा सा सोचिए तो सही कि ऐसा अमूल्य मानव जीवन प्राप्त होने पर भी हम अमानवीय कार्य करके दानव रूपी कार्य करने लगे तो हमारा यह मानव जीवन पाना पूर्णतया विफल हो जाएगा। ऐसी विचारधारा हर छोटे मोटे कार्य करते समय दिमाग में आनी चाहिए। यदि हम अमानवीय कार्य की तरफ देखे भी नहीं सोचे भी नहीं और करने की तो बात ही दूर की है। उपरोक्त तो एक छोटा सा उदाहरण था।

मन वचन और कर्म द्वारा किसी को सताए नहीं यह सताना ही तो अमानवीय दानवरूपी कार्य है। हमारी रोजमर्रा की जिन्दगी मे मानव जीवन सार्थक बनाने के लिए अगर हम दानवरूपी अमानवीय प्रवृत्तियो को ताक मे रखकर सच्चे मानव बनने की प्रक्रिया मे लग जाए तो हम निश्चित रूप से अपना जीवन सफलता पूर्वक नेक मानव के रूप मे निवाह कर सकते है जिसका सबसे बडा लाभ तो हमे स्वय ही मिलेगा क्योकि हमारा यह मानव रूप जो हमने बडी मेहनत से मुददत के बाद पाया है उसका अच्छा सदुपयोग हमने किया। इसके लिए हमे चाहिए कि हम दानव न बन जाए और सच्चे मानव के रूप मे जीवन निर्वाह करे और इस अमूल्य मानव जीवन को सार्थक बनाए।

◆

सम्पादक के नाम पत्र

माननीय श्री शास्त्री जी

सम्पादक सार्वदेशिक साप्ताहिक

आपके द्वारा सपादित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र सार्वदेशिक साप्ताहिक" नियमित रूप से प्राप्त हो रहा है इस कृपा के लिए अत्यन्त आभारी हू। इस साप्ताहिक पत्र के माध्यम से समस्त आर्य जगत की गतिविधियो की जानकारी तथा आर्य समाज के सिद्धान्तो एव मतव्यो से सबधित लेख एव राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत निबन्ध कविताए आदि पढने को सहज उपलब्ध हो जाते है।

अभी-अभी प्रकाशित अक २८ की सामग्री अत्यन्त प्रभावपूर्ण है सभी लेख रचनाए तथा कविताए आदि प्रेरणादायी, प्रभावी एव विचारोत्तेजक ढग से दिए हुए है। अक के सपादन तथा सार्वदेशिक के नियमित प्रकाशन के लिए मेरी ओर से हार्दिक बधाई एव अभिनदन स्वीकार करे। आपके सभी सहयोगियो को भी यथा योग्य नमस्ते कहे।

भवदीय

रासा सिह रावत

ससद सदस्य (लोकसभा)

यज्ञमय जीवन निर्माण करने का आह्वान

यज्ञमय जीवन निर्माण करने से ही मानव सेवा हेतु परोपकार सेवा सहायता सहयोग भाव उत्पन्न होता है। और इसके लिए यह विचार आर्य समाज गुरुकुल कागडी के साप्ताहिक सत्सग से प्रकट करते हुए वेद विद्वान डा० भारतभूषण विद्यालकार ने कहा कि मात्र अग्नि प्रज्ज्वलित कर समिधा घृत सामग्री डालने से ही यज्ञ नहीं होता वरन मानव को अपने सद् विचार कर्म व्यवहार कर्त्तव्य वाणी सेवा दया उपकार द्वारा ही सुगन्ध फैला कर एव ईश्वर के प्रति विश्वास रखकर मानव जीवन को धन्य बनाने का आहवान किया।

इस अवसर पर अन्य अध्यापको तथा कर्मचारियो और ब्रह्मचारियो के अतिरिक्त कुलपति डा० धर्मपाल जी उपस्थित थे उन्होने मानसिक तनाव पूर्ण जीवन से मुक्ति का एक मात्र उपाय यज्ञ और सत्सग का मार्ग अपनाने की अपील की।

सत्सग सयोजन सहायक मुख्याधिष्ठाता प० महेन्द्र कुमार ने किया।

एक सामयिक प्रश्न

क्या हिन्दुत्व भारतीयता का पर्याय है ?

डा० भवानी लाल भारतीय

आज भारत के राजनैतिक दलो मे हिन्दुत्व तथा भारतीयता को लेकर एक बहस छिडी हुई है। भारतीय जनता पार्टी तथा उसके चिन्तन से सहमत लोग हिन्दू को भारतीय का पयाय मानते है तथा हिन्दुत्व एव भारतीयता मे कोई अन्तर नही करते। उनकी दृष्टि मे भारत का प्रत्येक नागरिक हिन्दू है क्योकि वे इस शब्द को किसी धर्म सम्प्रदाय तथा उपासना पद्धति का सूचक नही मानते अपितु वे इसे राष्ट्र का सूचक कहते हैं। इसके विपरीत अन्य लोग हिन्दुत्व को एक सकीर्ण विचारधारा मानते है। कुछ अन्य लोगो ने एक मध्यम मार्ग निकाला है। वे कट्टर हिन्दूवाद तथा उदार हिन्दू वाद मे अन्तर करते हैं। उनकी दृष्टि मे स्वामी विवेकानन्द तथा महात्मा गाधी आदि उदार हिन्दूवाद के प्रस्तोता थे जब कि प० मालवीय सावरकर और तिलक आदि ने कट्टर हिन्दू का पक्ष लिया था।

यह तो निर्विवाद तथ्य है कि प्राचीन भारतीय शास्त्रो मे हिन्दू शब्द का कहीं भी उल्लेख नही हुआ है। यहा तक कि अकबर के शासनकाल मे लिखित रामचरितमानस मे भी हिन्दू शब्द का प्रयोग नहीं मिलता जब कि आज से चार सौ वर्ष पूर्व यह शब्द इस देश मे पूर्णतया प्रचलित हो चुका था। हिन्दू शब्द सस्कत भाषा का भी नही है तथापि मेरुतत्र अदभुत कोष श्ब्द कल्पद्रुम तथा पारिजातहरण नाटक आदि कतिपय नवीन ग्रन्थो मे यह श्ब्द प्रयुक्त हुआ है। प्रचलित हिन्दू धर्म के जो निकटवर्ती बौद्ध जेन सिख आदि मत पन्थ हे वे भी हिन्दू शब्द को स्वीकार करन मे आपत्ति करत है। सिखो ने तो इस शताब्दी के प्रारम्भ मे स्पष्ट घोषणा कर दी थी कि हम हिन्दू नहीं हे तथा उन्हे कोई हिन्दू न कहे अनेक जनो को भी स्वय के लिए हिन्दू शब्द का प्रयोग करना अस्वस्ति दायक हो जाता है।

एक अन्य बात भी है। भारत मे करोडो व लोग भी बसते है जो आस्था और उपासना की दृष्टि से उन मतो से जुडे हे जो पूर्व एव मध्य एशिया मे उत्पन्न हुए थे। हमारा अभिप्राय पारसी यहूदी ईसाई तथा इस्लाम से है हमारे देश मे पारसियो और यहूदियो की सख्या तो कम हो है किन्तु इसाइया तथा मुसलमान पयाप्त स ख्या मे है। धर्म विज्ञान की दृष्टि से ये धर्म सामी क मजहब कहलाते हे। इनमे कई बाते समान हे। ये मत किसी एक पुस्तक के ईश्वर वाक्य (खुदा का कलाम) कह कर प्रामाणिक मानते है। पारसियो के लिए जेदावस्ता यहूदियो के लिए तौरत ईसाईयो के लिए बाइबिल तथा मुसलमानो के लिए कुरान सर्वोपरि प्रमाण है ये मत या मजहब किसी एक या अनेक मनुष्यो को ईश्वराज्ञा से धरती पर आये पैगम्बरो की सत्ता देते है तथा उनके जीवन एव उपदेशो को आदर्श मानते है। पारसी मत का पैगम्बर जाथुस्त्र यहूदियो का मत प्रवर्तक मूसा ईसाइयत का आधार जीसस क्राइस्ट तथा इस्लाम मे अन्तिम पैगम्बर हजरत मोहम्मद को सर्वोपरि मान्यता तथा प्रतिष्ठा प्राप्त है। सेमेटिक इन मजहबो के उपासना पूजा के नियमो लौकिक आचरण तथा सामाजिक व्यवहार मे भी बहुश एकता दिखाई पडती है। अधिकाश मत सामूहिक उपासना को आवश्यक इतिकर्त्तव्य मानते हैं और सप्ताह मे एक निश्चित दिन स्थान विशेष पर सम्मिलित होकर ईश्वराधना करना आवश्यक समझते है।

इसके विपरीत हिन्दू कोई निश्चित धर्म या पूजा उपासना वैयक्तिक अथवा सामजिक विधि विधान मे एकता का समर्थक कभी नही रहा। हिन्दू या हिन्दुत्व के पक्षपोषक भी इस तथ्य को स्वीकार करते हैं। लोकमान्य तिलक ने हिन्दू धर्म को परिभाषित करने का प्रयास इस प्रकार किया

प्रामाण्यबुद्धिर्वेदेशु नियमानामनेकता।
उपास्यानामनियमो हिन्दू धर्मस्य लक्षणम।।

यह लक्षण स्पष्ट ही अव्याप्ति दोष से ग्रस्त हैं। तिलक के अनुसार वेदो मे प्रामाण्य बुद्धि रखना प्रत्येक हिन्दू के लिए आवश्यक है। यदि इस लक्षण को हिन्दू कह जाने वाले प्रचलित मत सम्प्रदायो पर लागू करे तो मात्र सनातनी इनमे शैव वैष्णव शाक्त आदि सभी मतो का समावेश होगा। तथा आर्य समाजी ही हिन्दू कहलायेगे क्योकि ये दो वर्ग ही वेदो मे प्रामाण्य बुद्धि रखते है यद्यपि वेद को प्रमाण मानने के विस्तार मे जाने पर इनके विचारो मे भी पर्याप्त अन्तर है। इनसे भिन्न जैन बौद्ध आदि मत स्पष्ट ही वेद बाहय तथा अवेदिक है जिनकी वेदो मे किंचित भी आस्था नही है नियमो मे अनेकता किसी सामाजिक या धार्मिक सगठन का दूषण है या भूषण इसका निर्णय विवेकवान लोग स्वय ही करे तथाकथित हिन्दू धर्म के धार्मिक सामाजिक तथा लौकिक नियमो मे विषमता पराकाष्ठा तक पहुची हुइ है जिसे प्रमाणित करने के लिए कोई उदाहरण देना आवश्यक नही है।

उपास्य देवो की अनियमता तथा विविधता ने तथाकथित हिन्दू धर्म को क्षति ही पहुचाई हे उसका कोई उपकार नही किया। कहने को तो हिन्दूवादी अनेकता मे एकता एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति तथा सर्वदेव नमस्कार केशव प्रति गच्छति का राग अलापते हे किन्तु इनमे उपास्य देवो की अनेकता से इन्कार नहीं किया जा सकता मध्यकालीन हिन्दू सम्प्रदायो की आस्थाओ तथा उपासनाओ के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि उपास्यो की अनेकता ने हिन्दू समाज मे विषमता फूट दुराग्रह के प्रसार तथा सामाजिक सामन्जस्य को नष्ट करने की भूमिका ही निभाई है।

सनातनधर्म के उपदेशक प० माधवाचाय ने हिन्दू का निम्न श्लोक मे परिभाषित किया

ओकार मूल मत्राढय पुर्जन्मदृढाशय।
गोभक्तो भारतगुरुर्हिन्दुहिसन दूषक।

अर्थात ओकार को श्रेष्ठ मत्र मानने वाला पुनर्जन्म मे विश्वास रखने वाला गोभक्त तथा हिसा को निदित मानने वाला भारतीय मूल के गुण मे आस्था रखने वाला हिन्दू कहलाता है। यह लक्षण भी तर्क की कसौटी पर खरा नही उतरता। यद्यपि ओकार की मान्यता जेन बाद्ध तथा सिख मत मे है किन्तु अनीश्वरवादी चार्वाक (यह मत भी हिन्दू धर्म के ही अन्तर्गत है) की ओकार मे क्या श्रद्धा हो सकती है। चार्वाक की ही भाति ब्रह्मसमाजी भी पुनर्जन्म को स्वीकार नहीं करते पुन उन्हे हिन्दू कैस कहा जा सकता है। ब्रह्मसमाज का इतिहास साक्षी है कि ब्राह्म विवाह विधि से विवाह करने वाले दम्पती को यह घोषित करना पडता हे कि वे न हिन्दू हे न मुसलमान या इसाई। दूर क्या जाये कल के रामकृष्ण मिशन तथा विवेकानन्द के अनुयायियो ने सरकार से निवेदन किया था कि उन्हे हिन्दू धर्म से पृथक माना जाये।

जहा तक गो भक्ति का सवाल है यह भी कहने की ही बात है। बकौल सनातनी पण्डिता के पुराकाल मे जो गोमेध यज्ञ होते थे उनमें गाय की बलि दी जाती है। श्रौत सूत्रो तथा गृहय सूत्रो से ऐसे पुष्कल प्रमाण दिए जा सकते है जो यज्ञो मे सामान्य पशु बध को ही स्वीकार नही करते अपितु शूलगव जैसे यागो मे गाय बैल की बलि को भी उचित मानते हे। ऐसी स्थिति मे गोभक्ति केवल वागविलास ही कहलायेगा। हिसा से विरक्ति तो हिन्दुओ पर स्वल्प भी लागू नही होती। जहा वैदिकी हिसा हिसा न भवति जेसी उक्तिया प्रचलित हो वहा अहिसा परमो धर्म तो शब्दाडम्बर ही रह जाता है। इसके विपरीत यहा वाममार्ग शाक्त तथा कापालिक आदि ऐसे मत है जो सम्पूर्णत हिसा प्रधान है तथा उनमे नर बलि तक का प्रचलन प्राप्त हे जो हिन्दू मे [illegible] प्रधान मानते है वे कलकत्ता के कालीघाट जाय जहा नित्य न जाने कितने मूक पशुओ की देवी के आगे बलि दी जाती है। हिन्दू राष्ट्र कहलाने वाले नेपाल के पशुपतिनाथ जैसे मदिर तो पशु पक्षियो की बलि देने मे अद्वितीय कहे जा सकते है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म का न तो एक रूप है न उसकी एक पूजा पद्धति। अब तनिक इस बात पर विचार करे कि क्या इस बिडम्बना मूलक स्थिति मे हिन्दू य हिन्दुत्व को भारत की राष्ट्रीयता का पयाय माना जा सकता है। सावरकर ने वर्षो पूवे अपने हिन्दुत्व नामक ग्रन्थ मे हिन्दू की निम्न परिभाषा की है

आसिधु सिधुपर्यन्ता यस्य भारतभमिकी।
पितृभू पुण्यभूमिश्चैव सवै हिन्दुरिति स्मृत।।

अथात सिधु नदी से लेकर सिधु हिन्द महासागर) पयन्त भारत भूमि को जो अपनी पितृभूमि तथा पुण्य भूमि मानता है वही हिन्दू

एक सीमा तक यह परिभाषा अदुष्ट कही जा सकती है निश्चय ही भारत को अपने पूर्वजो की भूमि तथा पुण्यभूमि कहना उचित ही है किन्तु याद रखना होगा कि करोडो भारत मूल के लोग जो विदेशो मे बसकर वहा की नागरिकता प्राप्त कर चुके है स्वय को हिन्दू भले ही कहे किन्तु वे भारतीय तो हरगिज नही हैं। मारिशस के [illegible] लाख हिन्दू भारतीय नही है यद्यपि भारत उनकी पितृ भूमि है और पुण्यभूमि भी है। इसी प्रकार नेपाल के डेढ करोड निवासी हिन्दू है किन्तु वे हिन्दुस्तानी अथवा भारतीय नही है पुन हिन्दू या हिन्दुत्व को भारत या भारतीयता का पर्याय कैसे कहा जा सकता है

मुस्लिम मदरसों के साथ ही राष्ट्र विरोधी गतिविधियां बढ़ीं

लखनऊ २७ अगस्त। उत्तर प्रदेश सरकार ने भारत नेपाल सीमा पर कथित रूप से बढ रही इस्लामी कट्टरपथियो की भारत विरोधी गति–विधिया पर चिन्ता व्यक्त की है। राज्य सरकार द्वारा तैयार करायी गयी एक उच्च स्तरीय रिपोर्ट मे कहा गया है कि क्षेत्र मे मुस्लिम शिक्षण सस्थाओ और धार्मिक सस्थाओ के बढने के समानान्तर एसी भारत विरोधी गतिविधिया बढी हैं। रिपोर्ट मे कहा गया है कि नशीले पदार्थो तथा वन सामग्री की तस्करी के एक बडे केन्द्र बन चुके इस क्षेत्र मे पाकिस्तानी खुफिया एजेसी आइ०एस०आई० घुसपैठ बनाने मे लगी है। राज्य सरकार ने सीमावर्ती क्षेत्र की इन समस्याओ को देखते हुए सीमा क्षेत्र विकास कार्यक्रम नाम की एक महत्वाकाक्षी योजना शुरु करने का निर्णय किया है इस योजना के लिए केन्द्र सरकार की स्वीकृति मागी गयी हैं। इस योजना के ब्यौरे के साथ उपरोक्त रिपोर्ट केन्द्र सरकार को भेजी गयी है। सूत्रो के अनुसार नेपाल सीमा पर बढती भारत विरोधी गतिविधिया तस्करी घुसपैठ और भारत के अपराधियो को सीमा पर शरण दिये जाने की गम्भीर समस्या को देखते हुये यह सीमा क्षेत्र विकास कार्यक्रम तैयार किया है।

प्रस्तावित योजना मे गृह लोक निर्माण नगर विकास तथा वन विभाग द्वारा समन्वित रूप से क्षेत्र मे आधारभूत सुविधाये विकसित करने का लक्ष्य रखा गया है। ये सुविधाये पुलिस तथा वन विभाग के अधिकारियो को ७३० किलोमीटर लम्बी सीमा पर निगरानी रखने मे काफी मददगार होगी। इस रिपोर्ट मे केन्द्रीय गृह मत्रालय द्वारा १६६२ मे गठित अध्ययन दल द्वारा प्रस्तुत तथ्यो को भी शामिल किया गया है। इस अध्ययन दल ने भी उत्तर प्रदेश के नौ जिलो से लगने वाली भारत नेपाल सीमा पर बढती भारत विरोधी गति–विधियो पर चिन्ता व्यक्त की थी।

राज्य सरकार की रिपोर्ट मे खुफिया सूत्रो के हवाले से कहा गया है कि कुछ समय पहले काठमाडू मे एक पाकिस्तानी बैक की शाखा खोली गयी है जिसमे आई०एस०आई० से जुडे लोग कर्मचारी है।

रिपोर्ट मे भारत नेपाल सीमा से काठमाडू होकर भारतीय रुपये की दुबई हागकाग और सिगापुर के लिए हाने वाली तस्करी का भी जिक्र किया गया है। रिपोर्ट मे सीमा क्षेत्र मे नयी स्थापित धार्मिक सस्थाओ पर नजदीकी निगाह रखने पर जोर दिया गया है। क्योकि रिपोर्ट के अनुसार इनमे से कई का इस्तेमाल विरोधी गतिविधियो के लिए किया जा रहा है। इसके अलावा रिपोर्ट मे जिन मुख्य बिन्दुओ पर जोर देने की बात की है उनमे सीमा क्षेत्र पर बढती तस्करी नेपाल शरणार्थियो की बढती सख्या जगलो का विनाश आदि प्रमुख है रिपार्ट मे इन बिन्दुओ पर ध्यान देकर अविलम्ब कदम उठाये जाने की माग की गयी है।

रिपोर्ट मे भारतीय अपराधियो के नेपाल मे शरण लेने के उदाहरण दिये गये हैं इनमे मिर्जा दिलशाद बेग और बबू श्रीवास्तव के नाम प्रमुख है।

आर्य नगर ग्रुप हाऊसिंग सोसायटी की कमेटी भंग

नइ दिल्ली ३१ अगस्त रजिस्ट्रार कोआपरेटिव सोसायटी दिल्ली ने पटपडगज के आर्य नगर ग्रुप हाऊसिग की कमेटी भग कर दी है। रजिस्ट्रार ने आगामी ६ महीने के लिए दिल्ली सरकार के उपायुक्त कार्यालय के कार्यकारी मजिस्ट्रेट श्री मनजीत राय को इस सोसायटी का प्रशासक नियुक्त किया है। सोसायटी के कमेटी अध्यक्ष के खिलाफ अदालत मे मुकदमा चल रहा है। सासायटी अध्यक्ष श्री हरिदेव आर्य पर पुरान सदस्यो के बजाय पैसे लेकर नये सदस्य बनाकर उन्हे फ्लैट देने का आरोप बना है

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी के सदस्य चौ० लक्ष्मीचन्द तथा डा० सुनील रहेजा तथा नवीन वगई आदि ने १ अगस्त १६६६ को श्री हरिदेव आर्य के खिलाफ कनाट प्लेस थाना नई दिल्ली मे फ्लैटो के आवटन मे धोखाधडी करने के सम्बन्ध मे एक रिपोर्ट धारा ४२० के अन्तर्गत दर्ज कराई गई है। श्री हरिदेव आर्य ने जो १६८२ से ए श्रेणी के सदस्य बने हुए थे और उनसे उसी श्रेणी के पैसे भी वसूल किये थे उन सदस्यो को ए श्रेणी के प्लाट न देकर बी० श्रेणी के दिये और ए० श्रेणी के मकान जिनकी बाजार मे आजकल लगभग २० लाख रुपये कीमत है हरिदेव आर्य ने १६६६ मे अवैध रूप से नये सदस्य बनाकर उन्हे एलाट कर दिया।

रजिस्ट्रार कोआपरेटिव सोसाइटी ने इस एलाटमेट को कैंसिल कर दिया है। श्री हरिदेव आर्य के खिलाफ अतिरिक्त जिला जज ने उसकी अग्रिम जमानत खारिज करते हुए एलाटमेट मे भारी घोटाल के सकेत अपने जजमेट मे दिये हैं। श्री हरिदेव ने अपनी गिरफ्तारी पर रोक लगाने के लिए हाई कोर्ट मे अपील करी है हाईकोर्ट के जज श्री एस० एन० भारद्वाज ने १६ अगस्त को एक नोटिस जारी कर ११ सितम्बर को अगली सुनवाई होने तक उन्हे गिरफ्तार ने करके पुलिस को नोटिस दिया है कि मामले की पूर्ण जानकारी रिकार्ड सहित उन्हे दी जावे।

२३ अगस्त को रजिस्ट्रार ने कमेटी भग कर दी है अपने फैसले मे उन्होने लिखा है कि अध्यक्ष ने कारण बताओ नोटिस का सही जबाव नहीं दिया न ही आरोपो के बारे मे सही जबाव दिये हैं। जब भी उनसे किसी प्रकार का जबाव मागा गया तो श्री हरिदेव ने उत्तर दिया ही नहीं। और न ही उन्होने किन्ही नये सदस्यो की आज तक कमेटी मे एप्रूवल ली है। सारे काम अध्यक्ष अपनी मर्जी से अवैधानिक रूप से करता रहा है इसीलिए इस सोसायटी को भग किया गया है।

चौ० लक्ष्मीचन्द डा० सुनील रहेजा नवीन वगई

पच्चीसवीं वेदगोष्ठी

श्री वैद्य राम गोपाल शास्त्री स्मारक समिति एव सस्कृत विभाग कालिन्दी कालेज ३ सितम्बर मगलवार को ३०० बजे दोपहर को आपको पच्चीसवीं वेदगोष्ठी मे सादर निमन्त्रित करते हैं।

विषय महर्षि दयानन्द की दृष्टि मे कर्मकाण्ड
वक्ता डा० निरूपण विद्यालकार
अध्यक्ष डा० भाई महावीर (पूर्व सासद)
स्थान कालिन्दी महिला कालेज पूर्वी पटेल नगर नई दिल्ली–११०००८

व्याख्यान के पश्चात शका–समाधान एव जलपान।

निवेदक
डा० कृष्ण लाल अध्यक्ष
२३१८ आर्य समाज रोड नई दिल्ली–११०००५
दूरभाष ५७२१६४६

यदि आप ठीक मार्ग पर हैं तो समालोचनाओं की चिन्ता न कीजिए

शिक्षक दिवस पर विशेष

शिक्षक और समाज

प्रो० चन्द्र प्रकाश आर्य

अध्यापक राष्ट्र का निर्माता है। प्राथमिक कक्षा से लेकर कालेज तथा विश्वविद्यालय स्तर तक वह हजारो लाखो छात्रो को पढाता है। कला विज्ञान वाणिज्य तकनीकी धर्म नीतिशास्त्र मानविकी आदि सभी प्रकार की शिक्षा वह देता है। वह राष्ट्र के वर्तमान और भविष्य का निर्माता है परन्तु आज वह अपना ही निर्माण करने मे अधिक लगा हुआ है। स्कूल अध्यापको से लेकर कालेज अध्यापको तक अधिकाश टयूशनो मे लगे हुए है जगह जगह कोचिग केन्द्र तथा अकादमिया खोली हुई है। इसीलिए डाक्टरो की प्राईवेट प्रेक्टिस की तरह अध्यापको की टयूशनो पर प्रतिबन्ध की माग हो रही है।

कारण स्पष्ट है। स्कूल कालेजो मे अध्यापक कम से कम समय पढाना पसन्द करते है। देहात के स्कूलो म तो बहुत स अध्यापक समय पर पहुचत ही नही सरकारी स्कूलो के बारे मे यह धारणा बनती जा रही है कि वहा पढाई होती ही नहीं ? या अध्यापक पढाते ही नहीं ? इसी कारण माता पिता अभिभावक अपने बच्चो को पब्लिक स्कूलो मे भजना पसन्द करते हैं परन्तु इस बारे मे पब्लिक स्कूल भी उतन ही जिम्मेवार है। पब्लिक स्कूल धन कमाने का व्यवसाय बनते जा रहे है। शहरो मे तो जगह जगह पब्लिक स्कूल अग्रेजी माध्यमी स्कूल खुल गए है। अब तो कस्बो और देहातो म भी पब्लिक स्कल खुल गए है परन्तु इनक कारण सरकारी स्कूलो तथा उनमे पढने वालो की दुर्दशा हो रही है। [illegible] प्रतिशत [illegible] कम लोग ही [illegible] बालको को इन पब्लिक स्कूलो मे भ[illegible] पाते ह शेष ६ [illegible] प्रतिशत लोग [illegible] स्कूलो की महगी शिक्षा का खर्च सहन नही कर पाते शिक्षा के बारे मे कोठारी आयोग [illegible] समिति न प्राथमिक शिक्षा मे समानता लाने प बल दिया था जबकि य पब्लिक स्कूल अ[illegible]मानता पैदा कर रहे है नवोदय स्कूल भी इसी प्रकार के स्कल ह यही दोहरी शिक्षा प्रणाली असमानता का कारण है। यदि सरकार को शिक्षा तथा सामान्य शिक्षा का स्तर सुधारना है तो स्कूलो को कानून द्वारा बन्द करना होगा।

इसके साथ साथ स्कूलो के अध्यापको को अपनी छवि सुधारनी होगी। अपने कर्त्तव्य का ईमानदारी से पालन करना होगा। आज अध्यापको का ध्यान अपने आर्थिक लाभ की ओर अधिक रहता है कर्त्तव्य अथवा पढाने की ओर कम है। यह ठीक है कि अध्यापको की भी अपनी समस्याये है उनकी भी आर्थिक तथा प्रशासन से जुडी कठिनाईया है। उनका तो समाधान होना ही चाहिए किन्तु दूसरी ओर अध्यापक को अपने पढाने के कर्त्तव्य को तो पालन करना ही चाहिए। इसी कारण वह समाज से कटता जा रहा है दूर होता जा रहा है। समाज की गतिविधियो मे उसकी भागीदारी कम होती जा रही है।

यही स्थिति कालेज आध्यापको की है। वह बडे बडे वेतन पाता है महगाई भत्ते लेता है किन्तु पढाता कितने घटे है ? एक सप्ताह मे प्रतिदिन तीन घटे (३ घटे) के लगभग पडते हैं। सरकार तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू०जी०सी०) कहता है कि ६ ६½ घटे कालेज मे ठहरिए किन्तु कालेज प्रोफेसर इसके लिए तैयार नहीं। कालेजो के बारे मे अक्सर लोग कहते हैं कि यहा सारा साल छुट्टिया रहती हैं बात कुछ हद तक ठीक है किसी भी कालेज मे साल मे चार पाच महीनो से अधिक कक्षाये नही लगती। इसी कारण विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू०जी०सी०) ने विश्वविद्यालयो तथा कालेजो के अध्यापको के लिए सप्ताह मे ४० घटे अपनी अपनी सस्थाओ मे उपलब्ध रहने के निर्देश जारी किए हैं किन्तु अध्यापक प्रोफेसर इसे मानन को तैयार नही। वह इसको नैतिक जिम्मेवारी नही मानता। वह समाज का सर्वाधिक शिक्षित होते हुए भी समाज से दूर होता जा रहा है।

बात यही तक सीमित नही रह गई है। घर आकर वह टयूशनो मे व्यस्त हो जाता है अग्रेजी विज्ञान वाणिज्य गणित आदि विषयो मे टयूशनो की भीड लगी रहती है। फिर डाक्टरी इन्जीनियरी एम०सी०ए० आदि व्याव[illegible]यिक परीक्षाओ की कोचिग अलग चलती है इन केन्द्रो मे छात्रो से भारी फीस वसूल की जाती है फिर [illegible] दिल्ली आदि बड बडे शहरो म फीसे भी बडी बडी होती है। क्या इस प्रकार महगी कोचिग [illegible] को देश के सभी छात्र [illegible] है ? क्या कालेज अध्यापक सगठनो ने अथवा [illegible] अध्यापक सगठनो ने [illegible] ओर ध्यान [illegible] है क्या इन सगठनो मे ६ ८ घटे [illegible] के लिए विश्वविद्यालय अनुदान [illegible] की पालना [illegible] कभी सोचा है कि [illegible] दिन १००-१२० से [illegible] [illegible] कार्यक्रम [illegible] [illegible] आर्थि[illegible] कठिनाइया [illegible] है किन्तु [illegible] पढाई के दिन [illegible] चाहिए अन्यथा वह [illegible] से दूर होता चला जाएगा

विश्वविद्यालय के अध्यापक की स्थिति और भी चिन्तनीय है वहा तो सप्ताह मे पढाई के दिन घटे क्रम से कम होते है फिर हडताल आन्दोलन चुनाव आदि भी होते है। पजाब हरियाणा चडीगढ तथा दिल्ली के विश्वविद्यालयो मे जाकर देख लीजिए अथवा वहा पढने पढाने वालो से पूछ लीजिए। वहा रीडर तथा प्रोफसर के बडे बडे पद हैं। वहा शोध रिसर्च तथा पी०एच०डी० होती है किन्तु वहा साल मे पढाई के कितने दिन होते हैं ? इस ओर सभवत किसी का ध्यान नही ? एक रिपोर्ट (इडियन ऐक्सप्रेस चडीगढ ४ ३ ६९) के अनुसार ६३ ६४ मे पजाबी विश्व विद्यालय पटियाला मे पढाई के कुल नब्बे (९०) दिन थे ६४ ६५ सत्र मे बढकर एक सौ बीस (१२०) हो गए तथा वर्ष ९५ ९६ मे १३५ हो गए जबकि विश्वविद्यालय से जुडे कालेजो मे १९९५ ९६ में पढाई के दिन ९० से १०० तक रहे। यदि सर्वेक्षण करवाया जाए तो यही स्थिति देश के अधिकाश विश्वविद्यालयो तथा कालेजो मे मिलेगी इस बारे मे विभिन्न कालेज अध्यापक सघो तथा विश्वविद्यालय एव कालेज अध्यापक महासघ द्वारा शीघ्र ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। पढाई के दिन बढाने की जरूरत है।

आज विश्वविद्यालय समाज से कट गए है अलग-थलग पड गए हैं देश के सामाजिक आर्थिक बदलाव मे उनकी भूमिका नगण्य हो रही है विश्वविद्यालय के अध्यापक अपने ही रीडर प्रोफेसर विभागाध्यक्ष चेयरमैन डीन अधिष्ठाता आदि बनने मे लगे रहते हैं। अथवा पी०एच०डी० गाईड अथवा शोध निर्देशक बनने को उतावले रहते है। और बहुत सारे सम्मानित पद है जिनकी प्राप्ति हेतु वे प्रयत्नशील रहते है इन सबका अपना महत्व है किन्तु समाज के प्रति दलित उपेक्षित अशिक्षित वर्ग के प्रति भी तो उनका दायित्व है कितनी जातीय हिसाये होती है जैसे हाल ही मे बिहार मे रणबीर सेना द्वारा किया गया नरसहार काड क्या इन आचार्यो प्रोफेसरो ने कोई विरोध प्रकट किया ? उत्तर प्रदेश मे २३ अगस्त १ ९४ को मुजफ्फर नगर काड हुआ। इसमे नारी की अस्मिता को प्रताडित किया गया। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इसे जघन्य काड कहा तथा बलात्कार को मौत के समान बताया परन्तु कितने अध्यापक सगठनो ने अथवा विश्वविद्यालयो के आचार्यो ने इस काड की निन्दा की ? उ[illegible] उ[illegible]यापक सगठनो ने कोई सामूहिक वक्तव्य दिया ? इसी प्रकार देश की सामाजिक धार्मिक [illegible] को सलझाने मे वह क्या योगदान दे रहा है ? देखने और सोचने की बात है वह [illegible] अपने विश्वविद्यालय रूपी किले म [illegible] है बाकी समाज से उनको क्या लेना देना यह ठीक है कि शिक्षको की अपनी समस्याए है उनकी भी प्रशासन [illegible] शिक्षा से जुडी अनेक कठिनाइया है [illegible] विभिन्न स्तरो पर [illegible]

[illegible] दिनो मे प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च [illegible] शिक्षक [illegible] [illegible] है [illegible] समाज मे कितने [illegible] समान [illegible] आगे नही आ पा[illegible] भ्रष्ट छवि वाले [illegible] देश की समाज के मार्गदर्शक बने हुए है क्योकि [illegible] चुनाव जीतकर आए है [illegible] कारण भले ही राजनीति का अपराधीकरण [illegible] है [illegible] मे शिक्षक कैसे समाज का मार्गदशन करे ?

वह राष्ट्रनिर्माता होकर भी चुप बैठने को विवश है भ्रष्ट तरीको से वह चुनाव लड नही सकता और न ही उसके पास इतने साधन हैं। ऐसी स्थिति मे शिक्षक को प्रशासन मे लोकसभा विधान सभाओ तथा अन्य निकायो मे उचित प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए। आज सर्वत्र आरक्षण की बात हो रही है दलित ईसाईयो को भी आरक्षण विचाराधीन है मुस्लिम भाइयो को भी साथ लगाने का प्रयास हो रहा है। अन्य सभी वर्गो को प्रतिनिधित्व देने की चर्चा होती है किन्तु शिक्षक के बारे मे कोई बात नहीं ?

अत देश को आगे ले जाने के लिए समाज तथा राष्ट्र मे शिक्षक को उचित प्रतिनिधित्व देना आवश्यक है

दूसरी ओर शिक्षको से उच्च शिक्षा सम्पन्न वर्ग से समाज को भारी अपेक्षाये हैं। देश की शिक्षा का (दो तिहाई) धन उच्च शिक्षा पर खर्च होता है। अत उच्च शिक्षा सम्पन्न वर्ग को राष्ट्र की बुनियादी समस्याओ को हल करने मे सहयोग करना चाहिए तभी जाकर देश को भ्रष्ट राजनीतिज्ञो के चगुल से बचाया जा सकता है।

अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
दयालसिंह कालेज करनाल

विदेशी मिशनरियों के ईसाई आरक्षण शिकंजे से
दलितों को बचाओ

डा० कृष्णवल्लभ पालीवाल

वर्तमान दलित ईसाई आरक्षण की माग को राजनैतिक स्वरूप देना तथा काग्रेस सी०पी०एम० एस०पी० एव वर्तमान सयुक्त मोर्चा आदि को वोट बैक का प्रलोभन देना विदेशी ईसाइयो की पुरानी योजना है क्योकि भारत से अग्रेजो के चले जाने के बाद भी चर्च का मार्ग दशन ये विदेशी ईसाई ही करते चले आ रहे हैं जिनकी सख्या लगातार बढती जा रही है और १६७२ मे १६६८ से बढकर १६६४ मे २३२६ हो गई है (गृह मत्रालय रिपोर्ट १६६५)। आज लगभग तीन हजार विदेशी ईसाई शिक्षा चिकित्सा समाज सेवा विकास कार्यक्रम पर्यावरण वैज्ञानिक परामर्शदाता आदि के रूप मे कार्य कर रहे हैं जिनमे से अधिकाश की रूचि भारत की राजनैतिक गतिविधियो मे रहती हैं और मदर टरेसा का ता २१ नवम्बर १६६५ को कैथोलिक्स विशप्स काफ्रेस आफ इडिया द्वारा धरना मे शामिल होना उनकी राजनैतिक गतिविधियो मे भाग लेना और उनका मार्ग दर्शन करना जग जाहिर है। हालाकि ऐसी ही बातो के कारण "मदर टरेसा को मिशनरीज आफ चैरिटी की सिस्टर्स को वियतनामियो को ईसाईयत मे धर्मान्तरित करने के सदेह के कारण वियतनाम से उनके निष्कासन का आदश दिया गया। (स्टेट १६ ०३ १६६६)

दलित ईसाई आरक्षण की माग क्यों ?

इसके दो मुख्य कारण हैं – (१) दलित हिन्दुओ का पेट काटना और (२) सरकारी खर्चे पर हिन्दू दालेतो का ईसाइयत मे धर्मान्तरण की गति को तेज कर भारत का विघटन करना।

महर्षि दयानन्द के अछूतोद्धार कार्यक्रम को काग्रेस ने अपनाया अनुसूचित जाति जनजातियो और पिछडे वर्ग के विकास की अनेको योजनाए बनाई उन्हे व्यवहारिक रूप दिया और छुआछूत को अनु० १७ के अर्न्तगत न केवल समाप्त किया बल्कि उस उल्लघन करना कानूनी अपराध माना। इन कार्यो के लिए अनुसूचित जातियो पर धन व्यय किया गया। इससे धर्मान्तरण की गति कम हुई और १७–०८–१६६६ को ही २५० ईसाई परिवार हिन्दू बने हे क्योकि धर्मान्तरण के बाद दलित हिन्दू आरक्षण की सुविधाओ से वचित हो जाता है। यही हिन्दू धर्मान्तरण की सबसे बडी रूकावट है। अत विदेशी ईसाईयो और विश्व चर्च ने जोर देकर यह नारा लगाया कि ईसाइयत मे धर्मान्तरण के बाद भी दलितो मे पिछडा पन है भेदभाव है। अत उन्हे पहिले जैसा आरक्षण मिलते रहना चाहिए जो कि इस असत्य प्रचार को नग्न करता है कि ईसाइयत मे समानता है भेदभाव नहीं है और यदि धर्मान्तरण के बाद भी भेदभाव है तो दलितो की आखे खुल जानी चाहिए। उन्हे ईसाई मिशनरियो के बहकावे से बचना चाहिए बल्कि पुन स्वधम मे वापिस आ जाना ही श्रेयस्कर होगा। जफेत मसीह (बगलौर) मानते हैं कि "आज दलितो से बन ईसाई उच्च जाति के ईसाइयो मे नहीं जा सकते"। (फ्रन्ट लाइन दिस० १६६५)। अत धर्मान्तरण दलितो की समस्या का हल नहीं है। इसके विपरीत ईसाई आरक्षण की माग स्वीकृत हो जाने पर उनके कोटे म से ही कटोती होगी जो सीधे सीधे हिन्दू दलितो के पेट पर लात मारना है।

दूसरे चर्च मानता है कि वे धर्मान्तरण मे धन का प्रयोग करते हैं – क्लिफोर्ड मैनगार्ड ने माना है कि "हमने लोगो को धर्मान्तरण के लिए प्रलोभन दिए हैं और व्यक्तिगत रूप से लोगो का दुरूपयोग किया है। (क्रिश्चियनिटी इन चैजिग इडिया पृ० २८) फादर टेम्पेरा – सैंटपाल मुम्बई ने माना है –" १६४७ मे भारत की आजादी के बाद मिशनरियो के सामने नई दिक्कते आई हैं। जब भारत पर अग्रेजो का राज्य था तो मिशनरी गतिविधियो को प्रोत्साहन मिलता था और कुछ तरीको से धन की आपूर्ति भी होती थी। आजादी के बाद हमारी कुछ आर्थिक सहायताए समाप्त हो गई हैं प्रगति कम नहीं हुई है मगर जितनी हमे चाहिए उतनी हमारे पास नहीं है। (कैथोलिक होम मैसेन्जर मई १६६३)। अत दलितों के धर्मान्तरण के लिए दलितो को मिलने वाली सरकारी सहायता पर उनकी निगाहे हैं। ऐसा करना उनके कार्यक्रम का एक तरीका भी है जैसा कि जे० एफ० स्टेकर दी० आरसेनल फार दी क्रिश्चियन सोल्जर इन इडिया (पृ० ४६३) मे लिखते हैं कि – "कोई भी तरीका अपनाओ कोई उदाहरण तर्क उपमा लाओ मागो उधार लो चुराओ ईजाद करो ताकि हिन्दू तुम्हारे पास आए। अत जैसा बी०डी० भारती ने "रिजर्वेशन फार दलित क्रिश्चियन्स अगस्त १६६६ (पृष्ठ २०) मे साफ लिखा है कि – " चर्च दलित ईसाइयो के लिए आरक्षण इसलिए मागती है ताकि वह हिन्दू दलितो के धर्मान्तरण कार्यों के लिए धन की आपूर्ति करदाताओ के धन से कर सके जो कि अधिकाश हिन्दुओ से आता है और काग्रेस कर दाताओ के धन से ईसाइयो के वोट सुरक्षित करना चाहती है जिसमे पार्टी का भी धन खर्च न हो"। यानी काग्रेस सयुक्त मोर्चा आदि करदाताओ के पैसे से सत्ता मे रहना चाहते हैं और विश्व चर्च सरकारी खर्चे पर दलितो का पेट काटकर दलितो का तेजी से धर्मान्तरण करना चाहती है।

हिन्दू दलितो को हानिया–

(१) यदि यह विधेयक पास हो गया तो अनुसूचित जातियो को मिलने वाले १५ प्रतिशत आरक्षण कोटे मे से ही ईसाईयो को आरक्षण दिया जायेगा जैसे – धर्मान्तरण बढेगा इसाइयो की सख्या बढेगी वैसे – २ उनका कोटा भी क्रमश कम होता जायेगा। (२) आरक्षण की सुविधा सब ईसाईयो को जाएगी चाहे वे धर्मान्तरित दलित हो अथवा नहीं। अत तीन करोड ईसाई भी आरक्षणो के अधिकारी होगे। (३) उच्च वर्ग (३५ ४० प्रतिशत) के ईसाई अधिकाश (६०-६५) दलित ईसाइयो के अधिकारो का लाभ उठायेंगे और दलित तो दलित ही बन रहेगे जैसा कि आज भी है। (४) जब विदेशी मिशनरियों और उच्च वर्ग के लोगो द्वारा नियत्रित आज ईसाई सस्थाओं में दलितो का आरक्षण नहीं है तो बाद मे कैसे होगा। आर्क विशप एल्विन फर्नान्डिज (टाईम्स आफ इडिया २४ ११ ६५) के अनुसार – "ईसाई स्कूलो कालेजो अस्पतालो तथा अन्य सस्थाओ मे २५ प्रतिशत स्थान दलित ईसाईयो को देने का सुझाव भी कैथोलिक यूनियनो ने नहीं माना।" इसी प्रकार १६७६ मे महाराष्ट्र सरकार ने दलित ईसाईयो को ३४% आरक्षण की सिफारिश की मगर महाराष्ट्र ईसाई युनियनो ने इसे नहीं माना (आर्य जगत २६ ५ ६६)। इस प्रकार दलित हिन्दू इस विधेयक की स्वीकृति के बाद धर्मान्तरण के बाद अपना धर्म भी खोएगा और आरक्षण में भी नगण्य हो जाएगा तथा हिन्दू दलितो की तो जबरदस्त हानि होगी ही क्योकि उनका आरक्षण प्रतिशत का कोटा धर्मान्तरण से जनसख्या घटने के साथ घटता जायेगा। (५) विश्व चर्च का उद्देश्य तो बोडोलैण्ड झारखण्ड एव पूर्वोत्तर क्षेत्र जैसे भागो मे अलगाववाद की आग फैलाकर भारत को अस्थिर करना है जैसाकि आज हम स्पष्ट देख रहे हैं।

फिर क्या करे ?

(१) दलित ईसाई आरक्षण देना असवैधानिक है (अनु० ३४१ ३६६) क्योकि दलित ईसाई अनुसूचित जाति के नहीं है। (गजट जून १६३६ अनु० ३६६ (२४))। अत काग्रेस व सयुक्त मोर्चा सरकार पर दबाब डाला जाए कि प्रधानमत्री इस बिल को ससद मे पेश न करे।

(२) सभी हिन्दू (दलित+सवर्ण) इस विधेयक का सर्वत्र विरोध करे क्योकि यह विरोध ही सच्चा दलितोद्धार है जिसके लिए स्वामी दयानन्द महात्मा फूले व डा० अम्बेडकर आदि ने सघर्ष किया था।

(३) दलितो को आरक्षण ही कुछ और समय के लिए है तो दलित ईसाइयो को आरक्षण देना वह भी धर्म के आधार पर पथ निरपेक्षता के विरुद्ध है। अत सेक्यूलरिष्ट भी इसका विरोध करे।

(४) इस असवैधानिक दलित घातक एव राष्ट्र विघटन कारी विधेयक का सभी हिन्दू एव विशेषकर दलित सासद ससद के भीतर और बाहर व प्रचार माध्यमो मे इसका डटकर विरोध करे। इसके दूरगामी बुरे परिणाम होगे।

(५) दलितो के धर्मान्तरण को गैर कानूनी माना जाए और धर्मान्तरणकारी गति विधियो मे लगे विदेशी मिशनरियो को देश से निष्कासन किया जाए जैसाकि अनेकों इस्लामी देशों में है।

(६) ईसाई देशों से आने वाले धन स्त्रोतो व उसके खर्चे पर सरकारी नियत्रण हो।

(७) सर्वोच्च न्यायालय (ए०आई०आर ७३७ १६८६) के अनुसार देश स्तर पर ईसाई दलितो की स्थिति पर अध्ययन किया जाए और उसके बाद ही कोई निर्णय लिया जाए वरना देश हित मे हिन्दू स्वय ही इस विधेयक का सर्वोच्च न्यायालय में याचिका लगाकर न्याय मागे।

१२६–डी०डी०ए० फ्लैट(एम०आई०जी)
राजौरी गार्डन
नई दिल्ली–२७

वेद को वेद से कैसे समझें ?

ले० मनोहर विद्यालंकार

वेद को वेद से समझने का भाव यह है कि किसी शब्द का अर्थ करते हुए वह शब्द वेद मे जहा-जहा आया है उन सब को देख कर उसके प्रसग क्षेत्र परिवेश और विशेषणो पर विचार करने के बाद उपस्थित प्रसग मे अपना मन्तव्य देना चाहिए। 'वेद को वेद से समझो कह देना बडा सुगम है। यद्यपि यह विधि उत्तम और कम से कम दोषपूर्ण है किन्तु इसे अपनाना अत्यन्त श्रम साध्य है।

इस प्रक्रिया को अपनाने के लिए वेद का इतना अधिक बार पारायण और अनेक बार उस का अर्थ सहित स्वाध्याय किया होना आवश्यक है कि-किसी भी शब्द पर विचार करते हुए उसके प्रयुक्त होने के अनेक प्रसग और उन प्रसगो मे आए उसके विशेषण और अर्थ का ध्यान स्मरण हो जाये। जिस से उपस्थित प्रसग मे उन विशेषणो और अर्थों का अध्याहार किया जा सके।

वेद स्वाध्याय से पूर्व अवधेय

पूर्व आग्रह रहित होकर वेद का स्वाध्याय करने के लिए अवधेय है कि–

१ वेद मे यदि एक शब्द दस या बीस बार आया है और नौ या अठारह बार उसका एक ही अर्थ किया गया है तो ६ वीं या १६ वीं बार उसका अर्थ केवल सम्प्रदाय के आग्रह से नही बदलना चाहिये।

२ (क) आधुनिक सस्कृत व्याकरण के आधार पर वेद के प्रयोग को अशुद्ध नहीं कहना चाहिये क्यो कि वेद के बहुत समय बाद व्याकरण बना है।

(ख) प्रचलित सस्कृत मे प्रयुक्त शब्दार्थ से यदि वेद मे सगति न लगती हो तो धातु से व्युत्पत्ति करके अथवा निघण्टु और ब्राह्मण मे उसके प्रयुक्त अर्थ को देखकर सगति लगानी चाहिये।

(ग) स्वाध्याय से पूर्व वैदिक व्याकरण का सामान्य ज्ञान प्राप्त करने से बहुत सी बातो का स्वयमेव समाधान हो जाता है।

(घ) वेद मे व्यत्यय की आज्ञा दी गई है किन्तु उस की भी मर्यादा है। जहा तक सभव हो व्यत्यय के प्रयोग से बचना चाहिए।

(ड) सुपा सुलुक की खुली छूट है। अर्थात प्रथमा के एक वचन मे प्रयुक्त शब्द यथा 'इन्द्र' और मूल शब्द यथा इन्द्र का आप चाहे जिस विभक्ति और चाहे जिस वचन मे परिवर्तन कर सकते हैं।

३ ऐतिहासिक नामो को देखकर वेद मे इतिहास मानना उचित नहीं प्राय सम्प्रदायवादी अपने गुरु अथवा पूर्व पुरुष का नाम देख कर वेद मे उन की महिमा का वर्णन अथवा वेद को उसके बाद की कृति मानने लगते हैं। उदाहरण के लिए–विष्णु शिव महादेव ऋषभ ईशा मूशा इत्यादि।

४ यदि किसी मन्त्र मे एक ही शब्द को बहुत पदार्थों का विशेषण दर्शाया हो तो उस सन्दर्भ की छाया मे अन्यत्र प्रयुक्त इस शब्द का प्रसग के अनुसार कुछ भी अर्थ लिया जा सकता है। यथा विराट् और अदिति।

५ यदि एक शब्द वेद में केवल दो तीन बार प्रयुक्त हुआ हो तो उसका दूसरे या तीसर स्थान पर भी वही अर्थ लिया जाना उचित है जो किसी एक जगह उसका स्पष्ट रूप मे प्रकट हो रहा है।

वेद को समझने के लिए कुछ उदाहरण

वेद को वेद से समझने के कुछ उदाहरण देखते हैं–

(१) ऋक ६/२५/६ मे 'वृत्रहा देववीतम और ऋक ८/३/१८ मे 'वृत्रहा भूर्यासुति मे वृत्रहा को देववीतम और भूर्यासुति अर्थात दिव्यगुणो से सम्पन्न तथा प्रचुर उत्पादन करने वाला कहा है। वृत्रहा के इन विशेषणो को ध्यान मे रख कर–

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभि।
तमिन्महत्सु आजिषु उतेमर्भेषु हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत्।।

ऋषि–गोतमो राहुगण। दे०–इन्द्र। ६० पक्ति ऋक १। ८१। १।।

आवरणो–बाधाओ को दूर करने वाला। वृत्रहा इन्द्र (राजा या प्रमुख) मनुष्यो की सहायता से स्वय आनन्दित और शक्तिशाली बनता है तथा अपनी प्रजा के आनन्द और सामर्थ्य को बढाता है। इसलिए उसे छोटे और बडे सघर्षो तथा आयोजनो मे सहायतार्थ बुलाते है। वह हमारी वाजेषु अविषत सघर्षो मे रक्षा करता है और आयोजनो मे हमे बढाता है। यहा वृत्रहा के साथ इन विशेषणो का अध्याहार करके अर्थ होगा देववीतम द्विव्यगुणो को हमारे अन्दर धारण कराके हमे आनन्दित और शक्तिशाली बनाकर हमे रक्षा योग्य बना कर हमारी रक्षा करता है। भूर्यासुति–स्वय प्रचुर उत्पादन समर्थ होने के कारण हममे प्रचुर उत्पादन की प्रेरणा देकर हमे बढाता है।

(२) अकर्मा दस्युरभि नो अमन्तुरन्यव्रतो अमानुष। ऋक १०। २२। ८ मन्त्र मे किसी प्रकार का उत्पादक कार्य न करके दूसरो पर आश्रित रहने वाले–अकर्मा व्यवहार ज्ञान शून्य होकर अवमन्ता दूसरो को पीडित करने वाला–अमन्तु अपने कर्त्तव्यो और उत्तरदायित्वो का पालन न करने वाला–अन्यव्रत मानवीय भावो (दया दान आदर सहयोगादि) से रहित–अमानुष चार प्रकार के मनुष्यो को दस्यु कहा गया है।

इन्द्रो यो दस्यू अधरा अवातिरत।

ऋक १। १०१। ५।।

यहा दस्यून् का अर्थ करते हुए उपरले चारो विशेषणो का अध्याहार करके अर्थ करना चाहिये कि ऊपर वर्णित चारो प्रकार के व्यक्तियो को पदावनत करने वाला व्यक्ति ही 'इन्द्र श्रेष्ठ कहलाने या प्रमुख बनने योग्य समझा जाना चाहिए।

(३) तवेमे पञ्च पशवो विभक्ता गावो अश्वा पुरुषा अजावय अर्थव० ११। २।६।। मे–गाय अश्व मनुष्य बकरी और भेड–पाच को पशु कहा है। अत–

प्रजावान न पशुमान अस्तु गातु। ऋक ३। ५४। १८ मे पशुमान का अर्थ करना उचित होगा कि मेरे पास गाय घोडे भेड बकरी तथा सेवक रूप मे बहुत सारे आदमी हो।

(४) सहस्रयामा पथिकृद् विचक्षण। ऋक ६। १०६। ५।। मे सुख हास प्रदाता अनेक मार्गों (आयोजनो) के ज्ञाता और कठिन से कठिन परिस्थिति मे माग ढूढ लेने वाले को विचक्षण कहा है। इस आधार पर–

ऋषिर्विप्रो विचक्षण। ऋक ६। १०७। ७१ मे विचक्षण का अर्थ सहस्रयामा और पथिकृत करके विप्र– विशेष रूप से समाज की कमियो को पूरा करने वाले को ऋषि मानेगे या कहेगे।

(५) **सूनु सत्यस्य सत्पतिम्।** ऋक ८। ६६। ५।।
अभिष्टिकृद् विचर्षणि । ऋके ६। ४८।५।।

दमूना देव सविता वरेण्य। ऋक ७। १४ ४ के आधार पर हमे अन्यत्र आए हुए इन शब्दो का निम्न अर्थ करने की प्रेरणा मिलती है। सत्यपति का अर्थ करेगे सत्य का आग्रही सत्य का आचरण कर्त्ता तथा दूसरो को सत्यमार्ग पर चलने की प्रेरणा देने और रक्षा करने वाला। विचर्षणि का अर्थ करेगे। बुराईयो तथा आन्तर व बाह्य शत्रुओ पर आक्रमण करके अपने और समाज के अभीष्ट को साधने वाला। वरेण्य का अर्थ करेगे। अभिलाषित पदार्थों को देनेवाला (दानमना) दिव्य भावो से युक्त (देव) उत्पादक और प्रेरक (सविता)।

(६) द्यौष्टवा पिता पृथिवी माता जरामृत्यु कृणता सविदाने। अथर्व० २। २८। ४।। के आधार पर प्रसग वश 'द्यावापृथिवी का अर्थ पिता माता और पितरो का अर्थ द्यावापृथिवी किया जा सकता है।

सूर्यो मे चक्षु पृथिवी शरीरम। अ० ५। ६। ७। इय समित पृथिवी। अथर्व० ११। ५।। ४।।

ब्रह्मचार्येति समिधा समिद्ध कार्ष्ण वसानो दीक्षितो दीर्घश्मश्रु। अथर्व० ११। ५। ६।

इन मन्त्राशो मे समन्वय करके समिधा का अर्थ शरीरेण किया जाना चाहिए और वही उपर्युक्त है।

(७) **विराड वाग विराट पृथिवी**
विराडन्तरिक्ष विराट प्रजापति।
विराण्मृत्यु साध्यानामधिराजो
बभूव तस्य भूत भव्य वशे।।

अथर्व ६। १०। २४।।

मन्त्र के आधार पर विराड शब्द का प्रसङ्गानुकूल वाणी पृथिवी अन्तरिक्ष प्रजापति और मृत्यु मे से कुछ भी अथ किया जा सकता है।

(८) **अदितिर्द्यौ रदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्र।** यजु० २५। २६।।
विश्वेदेवा अदिति पञ्चजना अदितिर्जात मदितिर्जनित्वम।। *ऋक १। ८६। १०।। अथर्व० ७। ६। १।।*

यह मन्त्र तीनो वेदो मे होने से महत्वपूर्ण होते हुए कई सकेत देता है।

(क) प्रसग के अनुकूल अदिति का अथ ऊपर वर्णित मे से कुछ भी हो सकता है।

(ख) अदिति = अखण्डनीय अनादि अनन्त शक्ति दो आयाम वाली है उसमे जडता और चेतनता दोनो है। अथवा जगत के मूल मे जड प्रकृति और चेतन आत्म तत्व दो पदार्थ हे

(६) **ईशा वशस्य या जाया साऽस्मिन्वर्णमाभरत।** अथर्व ११। १०।

विश्व के वशी परमात्मा की पत्नी रूप ईशा = प्रकृति (उत्पादक शक्ति) इस जगत के प्रत्येक पदार्थ मे पृथक पृथक रूप भरती है। इस आधार पर–

शेष पृष्ठ ८ पर

मारीशस में गत ६० वर्षों से ऋषि मुनियों की सेवा करने वाली देवी

श्रीमती जसवन्ती मोहित जी का महा प्रयाण

—पंडित धर्मवीर घूरा शास्त्री एम०बी०ई० अध्यक्ष मोरिशस हिन्दी लेखक संघ उप-उपाध्यक्ष, भारत-मारीशस मैत्री संघ वाक्वा

सौ आने सत्य है कि मोरिशस आर्य जगत के साथ साथ सैकडो अन्य परिवार के सदस्य गण भी श्री मोहनलाल मोहित जी आर्य रत्न आर्य भूषण तथा आर्य जगत के नेता जी की अर्धांगिनी देवी तुल्या माता जसवन्ती जी का देहावसान जो गत १६ जुलाई का हो गया। इस से मोहित परिवार और आस पास के पडोसी लोग सुन कर दौड पडे रातो रात और प्रात काल हिन्दी भाषा ओर फ्रेंच भाषा मे यह मृत्यु सम्बन्धी दुखद समाचार मोरिशस की जनता के घर घर रेडियो द्वारा आया तो लोग अति द्रवित होने लगे थे।

खुद उन का पुत्र डा० जगदीश जी हैं और डा० घूरा जी आर्य सभा के भूत पूर्व प्रधान सेवा मे लगे ही रहते थे और उन के साथी मित्र डाक्टर गण सेवा चिकित्सा मे लगे ही रहते थे पर होनी को कौन टाल सकता था। श्रीमती जसवन्ती मोहित जी की अवस्था ८६ वर्ष की हो चली थी। श्री मोहन लाल जी के साथ ६० वर्ष पूर्व विवाह हुआ था। आप पति जी की सेवा मे १ मास कम ७० वर्ष बिताये। इसी बीच आप के ६ बच्चे निम्न प्रकार हुये श्री राजेन्द्र जी डा० जगदीश जी सुभाषचन्द्र जी बहन पदमावती जी सरस्वती जी और भगवन्ती जी उन के १२ नाती पोते नातिने पोतिने हुई। एक बेटे का विवाह बम्बई नगर के महान आर्य सेवक आर्य समाजो के प्रधान श्री भगवती प्रसाद बोम्बे वाशी की सुपुत्री बेटी वेदवती जी के साथ सन १९७५ मे हुआ था। आप यहा पर श्री मोहनलाल मोहित जी आर्य रत्न आर्य भूषण के विशाल कोक्रिट भवन मे अपने स्वसुर पति और दो बच्चो के साथ रहती है। यह परिवार अति सुखी परिवार है। अब ससुर जी के आशीर्वाद हर रोज प्राप्त होते थे। श्री मोहित मोहनलाल जी हमारे आर्य जगत के नेता हैं। आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से यहा की आर्य सभा मे अतरग कमेटी मे इन दिनो मनोनीत है। गत ६० वर्षो मे आप यहा पर आर्य जगत की सेवा मे लगे हैं। साथ ही साथ बचपन से अब तक लावेनिर के गाव के आर्य समाज सत्सग मे आप जरूर जाते हैं। आवश्यकता अनुसार अपना विचार भी व्यक्त किया करते हैं। आप ने ही भवन निमार्ण जमीन दी। माता जी ने घर और बच्चो की सेवा मे अपना सारा समय लगा दिया। सब के विवाह अपने पति जी के साथ करवाये। ग्रामीण आर्य महिला मण्डल की आप प्रधाना रहीं।

माता जी का जब विवाह हुआ था तब अमेरिका से एक व्यक्ति पधारे थे। वह एक चित्रकार थे विश्वास पर चित्र निकाल कर अमेरिका ले गये और ६ मास बाद अच्छी तैयारी के साथ चित्र यहा पर भेजा जो अभी भी बरामदे मे हम देख सकते हैं। उस समय की लागत ३० रुपये की थी। अभी वह चित्र लगता है नया है। श्री मोहनलाल जी हमे यज्ञ के बाद वह चित्र कितने प्रेम से दिखाया था।

अन्त्येष्टि सस्कार से पूर्व मोरिशस के माननीय राष्ट्रपति महामहिम श्री कसाम उत्तिम जी को उप राष्ट्र पति महामहिम श्री रवीन्द्र घरभरण जी को मोरिशस के प्रधान मन्त्री माननीय डा० नवीनचन्द्र रामगुलाम जी और कितने मन्त्री गण धारा सभा के कितने प्रतिनिधि गण भारतीय उच्चायोग के अधिकारी महानुभावो को भी हम ने देखा वे सब श्री मोहनलाल जी और उनके बच्चो से मिलते रहे। सभी वर्गों धर्मों के लोगो को भी हम ने मौके पर शोकातुर देखा था। आर्य सभा मारीशस के करीब २५ पण्डितो पण्डिताओ को भी हम ने सम्वेदना प्रकट करते हुए देखा। अन्त्येष्टि स्थल पर १ दर्जन पण्डितो ने सस्कार करवाया वेद मन्त्रो के साथ सब ५ दिनो तक हम ने यज्ञ अनुष्ठान किया था।

आर्य सभा के मन्त्री श्री सत्यदेव प्रियतम जी उपमन्त्री श्री मूलशकर रामधनी जी उपदेशक मण्डल के अध्यक्ष पण्डित राजमन रामसाघ जी प० सोलिक जी प० महादेव जी प० गोविन्द जी प० रकन्य जी आदि को भी भाषण करते और हमारी ओर से मोहित परिवार की ओर से सान्त्वना प्रगट करते हुए देखा था।

बनारस ज्ञानपुर मे माता दसवन्त जी ४ बार भारत गई है और इन के नाम से ३०००० रु० से एक निधि चलाई जाती है काशी मे। वहा के शिक्षा केन्द्र की अध्यक्षा श्रीमती प्रज्ञादेवी जी एक समय रहीं। इस निधि मे श्री मोहन लाल जी और ६०००० रु० भेजन वाले हैं ताकि सब जोड हिसाब से अधिक बच्चे पढ सकेंगे। इन दिनो ७ लडकिया इसी ब्याज से यहा पढती हैं। उस समय १ लाख होगा। मृत्यु से कुछ वर्ष पूर्व की बात है स्व० स्वामी सत्यप्रकाश जी यहा मोरिशस मे पधारे थे। कुछ समय आर्य भवन मे रहे और भारत मे उन का शोध कार्य जो वेदो का अग्रेजी मे रहा वे पूरा कर रहे थे यहा भी करते थे पर तीन अन्तिम सप्ताह श्री मोहित परिवार मे वे गये श्री मोहनलाल जी के आग्रह से और वहीं पर माता जी ने उन की अन्तिम सेवा की वेदवती जी ने पूरा सहयोग दिया था। फिर भारत लौटे।

इसी प्रकार स्व० ओमप्रकाश त्यागी जी स्व० प्रकाशवीर शास्त्री जी स्व० डा० दुखन राम जी भारत के और विद्वान गण अमेरिका के डा० उदर बुद्ध जी दक्षिण अफ्रिका आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री शिशुपाल रामभरोस जी आदि पण्डित वर्ग आदि की वहा उन की सेवा खूब की गई। हमारी ओर से भी आत्मा की सद्गति के लिए दुखी परिवारो की शान्ति के लिए प्रार्थना है। देवी जी ने और ४ जगहो पर निधिया दी हैं। श्री मोहित जी की और सेवक निधिया है। आप विशेष यात्रा कर चुके हैं।

प० धर्मवीर शास्त्री एम०बी०ई० वाक्वा
मारीशस

वेद को वेद से कैसे समझें ?

पृष्ठ ७ का शेष

ईशा वास्यमिद सर्व यत्किञ्च जगत्या जगत।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध कस्यस्विद्
धनम्।। यजु ४०।१।।

इस मन्त्र मे ईशा का अर्थ ईश = परमेश्वर या ईशा (ईसा की चर्चा) न मान कर निम्न अर्थ करना चाहिये।

इस ब्रह्माण्ड मे जो कुछ चलता फिरता अथवा वासना को उत्पन्न करने वाला अथवा बसने योग्य जो कुछ है वह सब ईशा = प्रकृति अथवा प्रकृति का विकार है। अत परमेश्वर ने जितना और जो कुछ दिया है उसका समुचित भोग कर। दूसरो के अधिकारो पर या उनके धन और धनार्जित पदार्थों पर लालच मत कर। यह सारा प्राकृतिक धन आनन्दमय (क) प्रजापति का है। वही कर्म फल के रूप मे अपनी व्यवस्था के अनुसार देता है। यदि अधिक की इच्छा हो तो प्रयत्न कर 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समा । बिना कर्म किये किसी पदार्थ को प्राप्त करने की कामना मत कर।

(१०) **तीक्ष्णीयास परशोरग्ने तीक्ष्णतरा उत।**
इन्द्रस्य वज्रातीक्ष्णीयासो येषामस्मि पुरोहित
अथर्व० ३।१९।४।।

यहा विशेषण तो दिये हैं। उस की कल्पना करनी होगी। वे वीर भी हो सकते हैं और अस्त्र शस्त्र भी हो सकते हैं।

५२२ कटरा ईश्वर भवन
खारी बावली
दिल्ली—११०००६

पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज एवं पूज्यपाद स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज (चम्बा) का

आशीर्वाद

दयानन्द मठ दीनानगर

८-३-९९

सेवा में श्रीमान् आदरणीय महात्मा गोपाल भिक्षु जी

बहुत आदर के साथ नमस्ते

ईश्वर से आपकी शत वर्ष आयु और उत्तम स्वास्थ्य की कामना है। आपने जगल मे मगल कर दिया है। महात्मा रसीला राम आनन्द धाम मे दूर-दूर से लोग पहुचते है। मानसिक आत्मिक शान्ति के लिए जो उन्हे वहा आकर उपलब्ध होती है। यज्ञ मे भी लोगो की बहुत श्रद्धा है गायत्री यज्ञ से मनुष्यो की बुद्धि पवित्र होती है। इस प्रकार के पुण्य कार्य आप आनन्द धाम मे करते ही रहते है। यह सब कार्य मनुष्य कल्याण के है। इसके लिए आपको बधाई। शुभकामनाओ के साथ

भवदीय

सर्वानन्द सरस्वती

दूसरा पत्र

२७-६-९९

श्री मान वानप्रस्थ श्री गोपाल भिक्षु जी

सादर नमस्ते

ईश्वर से आपकी शतवर्ष आयु और उतम स्वास्थ्य की कामना है। आपने आनन्द धाम का कार्य श्री आचार्य अखिलेश्वर जी को सौप दिया है यह उत्तम है। श्री आचार्य जी सब प्रकार से योग्य है। वक्ता है। विद्वान हैं। भविष्य में यह आश्रम बहुत उन्नति करेगा। आपका आशीर्वाद सदा उनके साथ रहेगा। शुभ कामनाओं के साथ

भवदीय

सर्वानन्द सरस्वती

तीसरा पत्र

दयानन्द मठ चम्बा

१०-६-९९

आदरणीय महात्मा गोपाल भिक्षु जी

सादर नमस्ते

कल आपका कृपा पत्र मिला। यह जान कर अत्यधिक हर्ष हुआ कि आचार्य अखिलेश्वर जी ने आश्रम का कार्यभार सभालकर आपको निश्चिन्त कर दिया है। जिस बात की आपको प्रतीक्षा थी वह अब सम्पन्न हो गई है। अस्तु बधाई स्वीकार कीजिये। वस्तुत अधिक कार्यभार सहन करने की शक्ति भी तो अब न्यून होती जा रही है। मेरा आपसे आग्रह है कि अब आप इस एक मास मे किसी भी समय दीनानगर जाकर पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से सन्यास की दीक्षा ले ले। और आप आश्रम मे विरक्त भाव से रहे। आत्म कल्याण ही आपका लक्ष्य हो। आश्रम की हानि लाभ से अपने को न जोड़े। सम्भव हो तो यथा सभव सहयोग और परामर्श दें।

आपका अपना ही

सुमेधानन्द

पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज एव पूज्यपाद स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज (चम्बा)का मेरे साथ २७ साल से सम्बन्ध है। समय-समय पर मुझे उनका आशीर्वाद प्राप्त होता रहता है। परमात्मा से मेरी प्रार्थना है कि मुझे लम्बी आयु तक उनका आशीर्वाद प्राप्त होता रहे। धार्मिक जनता से प्रार्थना है कि वह आश्रम देखने आवे। आश्रम की जानकारी के लिए आश्रम समाचार मुफ्त मगवाये।

आश्रम का पता

महात्मा रसीलाराम वैदिक गुरुकुल वानप्रस्थाश्रम आनन्द धाम, पोस्ट हरवरयान गढ़ी ऊधमपुर, पिन-१८२१२१ (जम्मू-काश्मीर),

आश्रम प्रधान, गोपाल भिक्षु

भीखवाद या मनुवाद

(आरक्षण) (गुणतन्त्र)

स्वतन्त्रता क ५०व वर्ष मे प्रवेश पर सभी भारतीयो का मस्तक गर्व से ऊँचा उठना चाहिए किन्तु प्रत्यक दृष्टिकोण व विश्व के मानचित्र पर भारत की निराशाजनक स्थिति हमे शोचनीय व शमसार करती ह। जनसख्या की दृष्टि से विश्व म दूसरा बडा देश होने व स्वतन्त्रता प्राप्ति के ५० वर्ष हान पर भी भारत का इतना पिछडे रहना स्पष्ट सकत देता है कि वर्तमान राजनैतिक सामाजिक ढाचे से हमारा अभ्युदय असम्भव है।

आरक्षण की सरल परिभाषा है योग्यो को नकार कर आयोग्यो या अर्धयोग्यो को अवसर प्रदान करना। भारत मे आरक्षण का इतिहास देखे ता राजकीय आरक्षण पूर्णत मुगल व अग्रेज शासको की देन ह। हालाकि भारतीय समाज मे वर्ण व्यवस्था का पालन हो रहा था किन्तु उसमे कुछ ही विषयो मे अति सीमित विशेष अधिकार जब कुछ वर्गो मे जन्म के कारण ही मिलने लगे तो यह मनुवादी न रह कर विकृत वर्ण व्यवस्था ही थी लेकिन इस विकृत वर्ण व्यवस्था के कारण भी यहा का श्रमिक वर्ग कभी भी दलित या पतित न हुआ व न ही कहलाया था। अत्याचारी विदेशी शासको व उनके जी हजूरो की जोर जबरदस्ती के कारण ही भारत के श्रमिक वर्ग का ऐसे पतित व अधिक दलित बन कर मैला ढाना पालकी उठाना हरम आदि मे लगना पडा। इस काल मे ही आरक्षण (राजकीय) के बल पर जमीदार राय बहादुर व बाबू सस्कृति उत्पन्न हुई। चूकि आरक्षण देता है– कर्त्तव्य विहीन अधिकार।

मनुवाद तो एक सरल गुण तन्त्र की स्थापना करता है। इसके चारो सूत्र एक दूसरे से बधे है–

1) Quality not equality
2) Class cooperation and not class war
3) No education without design
4) No punishment or reward without descrimination

इस प्रकार समाज क मूल शत्रु अशिक्षा अन्याय अभाव के विरुद्ध सघर्ष कर रहे तीन वर्ग शिक्षक रक्षक पोषक व उनका सहायक चौथा श्रमिक वर्ग परस्पर मिल कर देश और समाज का उत्थान करते थे। कोई व्यक्ति कर्त्तव्यो का पालन कैसे करता है उसी पर निर्भर थे उसी के वर्ण अधिकार।

अत यह तो आवश्यक है कि हम समाज मे सभी का जन्म से विकास के भेद भाव शून्य अवसर उपलब्ध कराए लेकिन उच्च शिक्षा व पदो पर व्रतधारी योग्यो को ही अवसर देवे। इसी मे अयोग्यो अर्धयोग्यो का भी हित होगा और भारत का सभी स्तरो पर निश्चित अभ्युदय होगा अन्यथा आरक्षित वर्गों को भी अधिकाशत सहज यू ही पडा रहना होगा व अतत समाज मे वैमनस्य अलगाव अपरिचय उत्तरोत्तर बढेगा और सहजता व आत्मीयता घटती जाएगी। विडम्बना है कि सभी राजनैतिक पार्टियो ने अदूरदृष्टि स्वार्थों मे व मात्र वोटो की सौदागिरी के लिए इस भीषण आरक्षण अन्याय के सर्वनाशी एव भिखारी मार्ग पर देश और समाज को धकेल रखा है। आइए गौरवशाली भविष्य एव सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय हेतु हर स्तर पर आरक्षण (भीखवाद) रोकने का यथा शक्ति प्रयत्न करे।

जय प्रकाश आर्यबन्धु
महावर साडी एम्पोरियम
कमला नगर
दिल्ली–११०००७

व्यस्क महिला चाहिए

सम्भ्रान्त शिक्षित पुत्री के साथ जयपुर राजस्थान मे फूफाजी मासीजी आदि की महिला गार्जियन रूप रहने हेतु हाथ खर्च भी लगभग ५०० रु० मासिक प्राप्त होता रहेगा। कृपया अपना परिचय आदि लिखिये।

सिहल जी मार्फत पोस्ट वाक्स १०८५ वाराणसी (उ०प्र०)

सखाय आ निषीदत पुनानाय प्र गायत।
शिशु न यज्ञैः परिभूषत श्रिये ।।

ऋ० ६ / १०४ / १।।

आओ मित्रो ! मिल जुल बैठो
भूरि भूरि प्रभु गान करो।
शिशु तुल्य निष्पाप प्रभु का
यज्ञा से सुस्तवन करो।।

करो वेद स्वाध्याय बढे हम
अनुपद धर्म विचार करे।
यज्ञोपवीत सूत्र को ले कर
व्रत का धारण सभी करे।।

यह पाणिनि की पाठशाला
प्रशिक्षण की सुदढ शाला।
असह्य को भी सहन कर
गतिशील है प्रज्ञान शाला।।

सस्नेहादर

मेधा देवी
पाणिनि कन्या महाविद्यालय
तुलसीपुर वाराणसी–१०
(उ०प्र०) २२१०१०

गोहत्या राष्ट्र एवं भारत का कलंक

— ब्रह्मानन्द जिज्ञासु —

८ अगस्त के क्रान्ति दिवस के शुभ अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद के आह्वाहन पर आर्य समाज एव प्रभु भक्त परिषद के सदस्यो ने गोहत्या के विरोध मे जिलाधिकारी कार्यालय के समक्ष ८ बजे सुवह से ४ बजे शाम तक धरना दिये। इस अवसर पर आर्य समाज के भू०पु० पुस्तकाध्यक्ष तथा प्रभु-भक्त परिषद के महासचिव श्री ब्रह्मानन्द जिज्ञासु "आर्य कवि" ने जनमानस का ध्यान गाय के महत्व पर दिलाया। श्री जिज्ञासु आर्य कवि ने कहा कि वैदिक युग से ही गाय को भारतीय राष्ट्र पशु के रूप मे मानते रहे। गाय से इतना लाभ है कि उसका वर्णन करना सरल नहीं। भारत कृषि प्रधान देश है कृषि रक्षा हेतु गाय बैल की रक्षा परमावश्यक है। गो दुग्ध अमृत तुल्यम। बच्चा से जवान तथा बूढे सभी उम्र के लिए गाय का दूध परमौषध का कार्य करता है। गाय दुग्ध सेवन से व्यक्ति स्वस्थ दीर्घायु होता है। जब कि इसका मास सेवन से कई एक बिमारिया पैदा होती हैं जैसे अल्सर गठिया ब्लडप्रेशर तथा कैंसर। गाय से भारतीयो का इसी हेतु इतना लगाव है कि इससे लाभ ही लाभ है। अत जनता एव सरकार को गोवश की रक्षा हेतु ठोस कदम उठाना चाहिए तथा कानूनन गो हत्या बन्द कर देना चाहिए। गोहत्या राष्ट्र हत्या के समान है तथा यह भारत के लिए कलक है।

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक भारत के जितने भी महापुरुष राजा महाराजा ऋषि मुनि एव चितक हुए सभी एक स्वर से गाय की रक्षा पर बल देते रहे। योगेश्वर कृष्ण राजा दीलिप महर्षि वशिष्ठ महात्मा बुद्ध महावीर स्वामी महर्षि दयानन्द महात्मा गाधी सत विनोवा आदि भी गाय के रक्षा पर बल देते रहे। इतना ही नही विदेशियो मे जार्ज वर्नाड शा स्पेन हावर सुकरात आनि ने भी मासाहर को त्याज्य समझा और निरीह पशुओ के रक्षा के लिए प्रयत्न करते रहे। मुस्लिम सत फकीर भी गोहत्या के विरोधी रहे। मुगल बादशाह बाबर ने फरमान जारी कर भारत मे गो वध बन्द कर दिया था। बाद मे हुमायु, अकबर आदि बादशाहो ने भी गो हत्या बन्द रखा। किन्तु दु ख है कि अग्रेजो ने गोहत्या पुन जारी कर दिया। हिन्दुओ और मुसलमानो मे वैमनस्य बढ फूट डालो और राज्य करो के तहत गो हत्या जारी कर देश मे एकता को नष्ट किया। स्वराज्य के पश्चात गो बध बन्द होना चाहिए था। किन्तु काग्रेस भी अग्रेजो के ही पद चिन्हो पर चला और फूट डालो राज्य करो के ही तहत गोहत्या जारी नहीं रखा वरन और वृद्धि कर दी। अत हमे चाहिए इसे सरकार को निरस्तकर गोभक्तो की सरकार बनाए जिससे गोहत्या शीघ्र बन्द हो।

देहरादून में वेदप्रचार का १७-दिवसीय आयोजन

राजेन्द्रनगर कालोनी मे २६ जुलाई से ११ अगस्त तक विभिन्न परिवारो मे वैदिक सत्सगो का आयोजन कर आर्य समाज धामावाला देहरादून के कार्यकर्त्ताओ ने यज्ञ और वेदप्रचार का सुन्दर आयोजन किया। श्रीमती शान्ति बेरी और श्रीमती स्नेहलता खटटर का इस आयोजन मे विशेष योगदान रहा। क्षेत्र की अन्य महिलाओ का भी सक्रिय सहयोग रहा।

१३ दिन तक वैदिक विद्वान प० देवदत्त बाली के प्रवचन हुए। चार प्रवचन श्री ललित मोहन पाण्डेय द्वारा किये गये।

पूर्णाहुति वाले दिन आर्य समाज के सदस्य श्री रमेशचन्द्र शर्मा ने पौरोहित्य का कार्य किया। आर्य समाज के मत्री श्री चन्द्र सैन गोयल भी उपस्थिति रहे।

ऋषि मेला नवम्बर में

महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का बलिदान एक शताब्दी पूर्व दीपावली पर अजमेर मे हुआ था। प्रतिवर्ष इस अवसर पर परोपकारिणी सभा द्वारा आनासागर के तट पर स्थित ऋषि उद्यान पुष्कर रोड मे ऋषि मेला समारोह का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर देश–विदेश के आर्य जन बडी सख्या में पधार कर महर्षि के प्रति अपनी श्रद्धाजलि समर्पित करते है। इस वर्ष यह आयोजन शुक्र शनि रविवार १९९९ का मनाया जा रहा है। जिसमे अनेक कार्यक्रम सम्पन्न होग। धर्मप्रेमी जन बडी सख्या मे भाग लेगे।

आर्य समाज बाजार सीताराम दिल्ली में

दलित ईसाईयों को आरक्षण के विरोध में विशाल सभा

आर्य समाज बाजार सीताराम दिल्ली की ओर से एक विशाल सभा दलित ईसाइयो को आरक्षण के विरोध मे आर्य समाज मन्दिर मे रविवार को हुई। इस सभा की अध्यक्षता प्रसिद्ध समाज सेवी श्री विरेश प्रताप चौधरी अध्यक्ष आर्य अनाथालय पटौदी हाऊस ने की।

इस अवसर पर श्री सोहनलाल रामरग उपाध्यक्ष विश्वहिन्दू परिषद दिल्ली वाल्मीकि समाज के अध्यक्ष श्री सतपाल जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महामत्री श्री रामनाथ सहगल श्री केलकर जाटव श्री पी०एस०तोमर आदि वक्ताओ मे इस राष्ट्रघातक बिल के विरोध मे सडक से लेकर ससद तक विरोध करने की बात कही। वक्ताओ ने कहा इस बिल से जहा धर्मान्तरण को बल मिलेगा वहीं देश टूटने का भी खतरा है।

सभा के सयोजक तथा आर्य प्रदिेशिक सभा के उपमत्री श्री मामचन्द रिवाडिया ने कहा कि मैं इस विधेयक के विरोध मे हर प्रकार का बलिदान करने के लिए तैयार हू। आर्य समाज सनातन धर्म तथा सभी हिन्दू सगठनो को सगठित होकर इस विधेयक का पूरी शक्ति से विरोध करना चाहिए। एक विशाल रैली के माध्यम से ससद को घेरना चाहिए और वोट के लालची नेताओ को बताना चाहिए कि देश को तोडने का काम न करे अन्यथा इतिहास उन्हे क्षमा नही करेगा।

श्री विरेश प्रताप चौधरी ने कहा कि इस विधेयक के पास हो जाने से अनुसूचित जाति के बन्धु लालच के बशीभूत होकर धर्मान्तरण करेगे। हिन्दूओ की सख्या मे कमी होगी। राष्ट्रवादी शक्तिया कमजोर होगी और फिर देश के विभाजन के लक्षण उपस्थित होगे। अत सभी हिन्दू सगठनो को सडको पर आकर दलित बन्धुओ को आगे करके एक विशाल रैली का शीघ्र आयोजन करना चाहिए मै इस काय के लिए हर प्रकार का सहयोग देने के लिए तैयार हू।

श्री बाबूराम आर्य समाज कोषाध्यक्ष ने एक प्रस्ताव रखा जो सर्व सम्मति से पास हुआ।

अन्त मे सभा मत्री श्री अरूण गुप्ता ने सभी वक्ताओ तथा श्रोताओ का धन्यवाद किया। शान्ति पाठ तथा जलपान के बाद सभा समाप्त हुई।

मामचन्द रिवाडिया
सयोजक

पास्टल ' रजिस्ट्र व डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 8-9-96 बिना टिकट भजन का लाइसेंस नं० U(C) 93/96
R N No 526/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 5/6-9-1996

आर्य समाज

निर्वाचन

आर्य समाज कलसाडा

प्रधान	श्री गोविन्द सिह आर्य
मत्री	श्री छिगाराम आर्य
कोषाध्यक्ष	श्री नत्थीसिह आर्य

आर्य समाज अम्बाला

प्रधान	श्री सुरेन्द्र कुमार
मत्री	श्री धर्मवीर आय
कोषाध्यक्ष	श्री कृष्ण कुमार दीवान

आर्य समाज गाजीपुर

प्रधान	श्री अमर नाथ वर्मा
मत्री	श्री जयकृष्ण आय
कोषाध्यक्ष	श्री सजय कुमार वमा

आर्य समाज ब्रह्मपुरी

प्रधान	श्री महात्मा आर्य मुनिजी
मत्री	श्री टूकीराम भारद्वाज
कोषाध्यक्ष	श्री कमल कुमार गुप्ता

आर्य समाज भूड बरेली

प्रधान	श्री जसवन्त सिह
मत्री	श्री विद्याशकर अनलेश
कोषाध्यक्ष	श्री राम मोहन राय

आर्य समाज महाराजपुर

प्रधान	श्री दीनदयाल जी आर्य
मत्री	श्री इन्द्र प्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष	श्री लखनलाल जी आर्य

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा सहारनपुर

प्रधान	श्री सेठपाल (छपरेडी)
मत्री	श्री अनिल कुमार आय (उसड)
कोषाध्यक्ष	श्री राजाराम शास्त्री

आर्य समाज मन्दिर पाली

प्रधान	श्री सुरन्द्र कुमार बाजपेयी
मत्री	श्री राधेश्याम जोशी
कोषाध्यक्ष	श्री वेद प्रकाश आर्य

आवश्यक सूचना

वैदिक धर्म प्रचार हेतु सम्पर्क करें

आर्य समाज के युवा विद्वान आचार्य सजय दव शास्त्री ने वैदिक धर्म का देश देशान्तर में प्रचार करने के उद्देश्य से मैक्समूलर भवन पुणे (महाराष्ट्र) से जर्मन भाषा का कोर्स करके वर्तमान म ब्रह्मकुल वेद विद्यालय देवधर्म इन्दौर को केन्द्र बनाकर अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया है। जो भी आर्य बन्धु एव आर्य समाजे वेद कथा व वैदिक धर्म प्रचार हेतु इनका कार्यक्रम रखना चाहे वे निम्न पते पर सम्पर्क करे –

आचार्य सज्य दव शास्त्री
ब्रह्मकुल वेद विद्यालय
देवधर्म इन्दौर (म०प्र०)

संस्कृत दिवस मनाया

देश की सस्कृति को जीवित रखना है तो सस्कृत भाषा को जीवित रखना होगा। सस्कृत ने ही भारत के विश्वगुरु स्वरूप को आज भी बनाए रखा है। सस्कृत के बिना भारत की एकता अखडता की बात की ही नही जा सकती। ये विचार आज सस्कृत दिवस के उपलक्ष्य मे भूपेन्द्र भवन पहाडगज मे अनेक प्रतिष्ठित विद्वानो द्वारा व्यक्त किए गए। सस्कृत दिवस के अवसर पर आज यहा अखिल भारतीय सस्कृत सम्मेलन द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम मे विभिन्न वक्ताओ ने इस बात पर रोष व्यक्त किया कि प्रान्तीय सरकारे सस्कृत भाषा को शिक्षा पद्धति से हटाकर देश की सस्कृति को खत्म कर रही है।

वैवाहिक सेवा

विवाह योग्य युवक युवतियों के लिए शुभ सूचना

सुयोग्य वर वधू के चयन मे आजकल अधिकतर माता पिता/अभिभावक कठिनाई का अनुभव करते है। इस समस्या के समाधान हेतु यह वैवाहिक सेवा आरम्भ की जा रही है।

यदि आप अपने युग पुत्र पुत्री के विवाह सम्बन्ध के लिए चिंतित है तो सम्पर्क करे।

महाशय रामविलास खुराना
प्रधान–आर्य समाज मन्दिर
मुजरगवाला टाउन पार्ट II दिल्ली–११०००६

आर्य समाज मन्दिर बी०एन०पूर्वी शालीमार बाग दिल्ली में

श्रावणी पर्व का आयोजन

श्रावणी के पावन पर्व पर आर्य समाज मन्दिर मे सोमवार २६ अगस्त से रविवार १ सितम्बर ६६ तक वृहद यज्ञ एव वेद कथा का भव्य आयोजन किया गया।

यज्ञ के ब्रह्मा एव वेद प्रवक्ता आचार्य सत्यानन्द जी वेद वागीश के ब्रह्मत्व मे विशाल यज्ञ पूर्ण श्रद्धा के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर वैदिक विद्वानो के प्रवचन तथा भजनोपदेश एव अन्य अनेक कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली–2 से प्रकाशित

आज के संदर्भ में तुलसी के राम

गोस्वामी जी राम भक्त थे राम दशरथ नन्दन राम राजपुत्र व राजा थे देश में बढती हुई अराष्ट्रीय गतिविधि से महर्षि वाल्मीकि चिन्तित थे। ठीक उसी प्रकार मुगलिया सल्तनत मे अकबर की कूटनीति पूर्ण बढती हुई अराष्ट्रीय राजनीति से सन्त तुलसीदास भी चिन्तित थे। रावण की घातक विस्तारवादी नीति ने राम को राजपुत्र से राजा के पद पर आसीन कर रावण के बढते हुए कदमो को रोकने के लए राजतन्त्र के रूप मे लाकर खडा किया।

तो तुलसीदास ने अकबर के बढते राजतन्त्र को रोकने के लिए राष्ट्र को राम के नाम पर राममय बनाने का शुभ सकल्प लिया। इसके लिए आवश्यकता थी वीर पुरुष राम की। ऐसे राम की नहीं जहा राजा राजपुत्र के मोहपाश मे न बधकर राजतन्त्र का पुजारी हो और राज्य की टूटी श्रखला को राज्य के विधि विधानो से युक्त कर प्रजातन्त्र को शासनतन्त्र से बाधे। जिससे शासन मे अनुशासन बने और अराष्ट्रीय नीति को दृढता से रोका जा सके।

सन्त तुलसीदास ने राष्ट्र को वीर पूजा का पाठ राम के नाम से कराया और जय राम जी का उद्घोष दिया। राजतन्त्र के वादी बने वस्तुत गोस्वामी जी के समक्ष राज्य प्रणाली का सही लक्ष्य हो जहा दृष्टि पडी वह थी।

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी सो नृप अवस नरक अधिकारी।

राम धर्म का आश्रय पाकर धर्म विश्वासी राम का धर्मतन्त्र का शासन चाहते थे अच्छा शासन वहीं है जिसके शासन मे खल चोर दुराचारी के व्यवसाय नष्ट हो जाए किस प्रकार से

अर्क जवास पति बिन भयऊ
जिमि सुराज खल उद्यम गयऊ।।

मदार वृक्ष के पत्ते वर्षा ऋतु मे पेड पत्ते रहित हो जाय उसी प्रकार शासन मे अनाचार नष्ट हो जाता है।

उस राज्य को धिक्कार है जिसमे अपराधी मौज मारते फिरे ऐसे अकबर के शासन तन्त्र को राम के द्वारा सन्त तुलसीदास ने किस वाक्य से कहलवाया

निशिचर हीन करहु महि भुज उठाई प्रण कीन्ह?
सकल मुनिन के आश्रम जाय-जाय सुख दीन्ह।।

ऐसे समय में भारत भूमि पर दण्डकारण्य का दृश्य उपस्थित हुआ था कुछ समय मे ही अराष्ट्रीय तत्वो स दण्डकारण्य को मुक्त करा दिया। तपस्वी आश्वस्त हो तप साधना मे तल्लीन हो गये।

सन्त तुलसीदास ने अकबर की कूटनीति से त्रस्त भारत भूमि को राजा या राष्ट्र को कर्त्तव्य पालने हतु बाध्य कर दिया। राजनीति और धर्म अर्थात कर्त्तव्य की अवहेलना नहीं हो सकती थी। भय था परलोक का और डर था घट घटवासी भगवान के अपयश का

राम के राजा होने पर नभ स्थल सभी ही मे सुख शान्ति छा गइ कोई किसी से बैर नहीं करता था। राम के प्रताप से विषमता धनी निर्धन दासता स्वामित्व सभी प्रकार के भद समाप्त हो गये।

मुगलिया सल्तनत के बढते कदमो को रोकने का उद्देश्य ही रामराज्य का नारा देना था वर्ग सघर्ष और विघटन जो बढ रहे थे उसे मिटाकर रामराज्य के द्वारा ही अन्याय को दूर करने का भाव तुलसी को अभिप्रत था राम का आदर्श ही धर्म और ईश्वर विश्वास मन मस्तिष्क को सरस बनाता है इसी से सन्त को कहना पडा कि

बरनाश्रम निज निज धरम निरत पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहि भय सोक न रोग।।

तुलसीदास अकबर की कूटनीति को वेद मारण चलाकर राष्ट्र मे एक चेतना देकर धर्म से दूर नहीं करना चाहते हैं श्रेणी विहीन राज्य की कल्पना अकबर की कूटनीति थी। धर्म विहीन समाज के बनाने की कल्पना दीने इलाही मार्ग का अवलम्बन कराकर ही राष्ट्र से राष्ट्रीयता हटाई जा सकती है। तुलसीदास हिन्दू के मन मे भावनात्मक एकता वेद धर्म की सही पहचान कराकर ही करना चाहते थे। ज्ञान शून्य भौतिकवादी आस्तिकता का झूठा नारा देकर हिन्दू मानसिकता बदली जा रही थी। तब सन्त ने कहा था

सब नर करहिं परस्पर प्रीति चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति।

श्रुति नीति वेद की नीति पर लगे योग्यतानुसार मानव मे क्षमता पैदा कर शक्ति हीन राष्ट्र मे राम के आदर्श भावो को पैदा कर अराष्ट्रीय तत्व से सन्त बचाना चाहते थे। जब सहीभाव भरे जायेगे तभी रामराज्य मे दीनता नहीं होगी और समर्थ रामराज्य बनेगा। निर्भयता के भाव भरने मे सन्त ने कहा कि

सब निर्दम्भधर्मरत पुनि नर और नारि चतुर सब गुनी।।
सब गुनग्य पंडित सब ज्ञानी सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी।।

मूर्खता का कहीं नाम नहीं राष्ट्र मे ज्ञानी जनो की कमी नहीं सदा दूसरों के उपकार मे लगे रहे यह भाव भरकर अकबर की कूटनीतियो का राजनीति धर्मतन्त्र सदाचार और भावनामयी बनाने का उपदेश भी दे रहे हैं। मानव मे चरित्रहीनता भी न सदा रूके और दूसरो के द्वारा हमारी नारी की शुचिता भी नष्ट न की जा सके तब सन्त ने कहा—

एक नारी व्रत रत सब झारी ते मन वचन कर्म पति हितकारी

प्रजा मे सयम के भाव-आदर्श राम राजा की मनस्थिति देकर राम राज्य वह भी पौरुष विहीन नहीं धर्मरत और पौरुष युक्त राम राज्य को देकर अकबर की कूटनीति को दूर करने हेतु राजा को भी प्रजानुगामी दिखा रहे हैं।

गोस्वामी जी की राजनीति साम्यवाद समाजवाद आदि के चक्कर मे न डालकर एक लक्ष्य को देख रही है लक्ष्य है प्रजा सदाचार युक्त पौरुष और वह पौरुष बढती अराष्ट्रीय राजनीति से टकराकर राम के नाम पर प्रजा मे शक्ति देना ही लक्ष्य था।

हमे रावण की बढती शक्ति विपरीत विश्वामित्र के राम चाहिए और मुगलिया सल्तनत के बढते अधर्म पर तुलसी के रामादर्श की कोरी कल्पना नहीं। महाराणा प्रताप जैसे अद्भुत शक्ति सम्पन्न पौरुष को जगाना है। लक्ष्य की ओर बढना ही तुलसी ने राम को आदर्श माना और कहा

निशिचर हीन करहु महि—

हम पर भी अहसान करो

धर्मवीर शास्त्री

भटक रहे हैं बहुत काल से अब तो कुछ ध्यान करो
दुनिया के इस गहन विपिन से समुद्धार भगवान करो।
काम क्रोध की लोभ मोह की महापक मे पडे हुए
विषय-वासनाओं का निश दिन ज्वर है हम पर चढा हुआ।

छूट सके इनसे उपाय वह कृपया कृपा-निधान करो।
राग द्वेष की जलन न दिल में वैर भाव का नाम रहे
मित्र भावना हो सबके प्रति मन सदा निष्काम रहे।
अन्त करण शुद्ध निष्कल्मष सदा दुग्ध-समान करो
टेढी चाल छोड जीवन में सरल शान्त बस बन जाए।
रमे प्रेम मे एक तुम्हारे वहीं कहीं आसन पाए।
मानव-जीवन दिया भक्ति का भी प्रभु अपनी दान करो
देख लिया ससार घूमकर तुम सा कोई और नहीं
बिना हेतु जो करे सुरक्षा सखा मित्र सिरमौर नहीं।
तुम मे हम मे दूरी के प्रभु, दूर सभी व्यवधान करो
अन्तिम आस तुम्हारी ही है दया करो हे दीन-दयाल?
आत्म ज्ञान का दे उजास मृदु अन्धकूप से शीघ्र निकाल।
तारे कितने ही अतीत मे हम पर भी अहसान करो

बी १/५१ पश्चिम विहार नई दिल्ली-११००६३

भारतीय भाषाओं की उन्नति के लिए

सघ लोक सेवा आयोग द्वारा ली जाने वाली सिविल सेवा परीक्षा जिसके आधार पर आई०ए०एस आदि लगभग ३० राजपत्रित सेवाओ के लिए भर्ती की जाती है मे अग्रेजी के अलावा सविधान की अष्टम अनुसूची मे उल्लिखित भाषाओ मे से एक भारतीय भाषा भी अनिवार्य है। शेष प्रश्न पत्रो के उत्तर अग्रेजी के अतिरिक्त सविधान मे उल्लिखित किसी भी भारतीय भाषा मे दिए जा सकते है। इस विकल्प का लाभ उठाकर पर्याप्त सख्या मे परीक्षार्थियो ने भारतीय भाषाओ के माध्यम से आई०ए०एस० मे भी सफलता प्राप्त की है। किन्तु यह बहुत जरूरी है कि भारतीय भाषाओ के माध्यम से परीक्षा देने वालो के लिए सभी राज्य सरकारे अपने राज्य मे अनुशिक्षण एव मार्गदर्शन के लिए विशेष कोचिग क्लासो तथा कार्यशालाओ का आयोजन करे और सदर्भ-पुस्तकालयो की स्थापना भी करे। दिल्ली सरकार की हिन्दी अकादमी समुदाय भवन पदम नगर किशनगज दिल्ली-७ ने ऐसी व्यवस्था दिल्ली मे रहेने वाले परीक्षार्थियो के लिए की है। अब जबकि देश स्वतत्रता की स्वर्ण जयन्ती मना रहा है यह जरूरी है कि अन्य राज्य सरकारे भी ऐसी ही व्यवस्था करे। कुछ अन्य प्रतियोगी परीक्षाओ मे भी हिन्दी एव अन्य भारतीय भाषाओ के माध्यम का विकल्प दिया जा चुका है। उनकी तैयारी के लिए भी विशेष कक्षाओ का आयोजन किया जाना चाहिए जिससे कि भारतीय भाषाओ के माध्यम से परीक्षार्थियो की सख्या मे वृद्धि हो तथा अग्रेजी का वर्चस्व और इन सवाओ मे अग्रेजी दा अधिकारियो का एकाधिकार समाप्त हो सके।

सभी जन प्रतिनिधियो धार्मिक सामाजिक और भारतीय भाषाओ की सेवा म कार्यरत सस्थाओ से भी अनुरोध है कि इसके लिए पूर्ण सगठन शक्ति से राज्य सरकारो पर दबाव बनाए रखे और निरन्तर प्रयत्न करते रहे। वे स्वय अथवा धर्मार्थ ट्रस्टो क माध्यम से भी विशेष कक्षाओ का आयोजन कर सकती हैं। इस रचनात्मक कार्य मे व्यय कम होगा और लाभ अधिक। जब भारतीय भाषाओ के माध्यम से सफल होकर युवक और युवतिया सरकारी पदो पर नियुक्त होगी तो कार्यालयो मे अंग्रेजी का वर्चस्व अपने आप कम होता जाएगा और भारतीय भाषाओ का व्यवहार पक्ष सबल होगा।

जगन्नाथ सयोजक राजभाषा कार्य
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद
सराजिनी नगर नई दिल्ली-११००२३

विश्व भाषा के रूप में हिन्दी

कैलाशचन्द्र पंत

वह क्षण आल्हाद और आश्चर्य का था जब रायल जार्डेनियन एयरलाइस की विमान परि- चारिका ने अरबी और अग्रेजी के साथ ही हिन्दी मे भी उद्घोषणा की। हिन्दी के इस उपयोग को व्यावसायिक दृष्टिकोण ही माना जायेगा। अम्मान से दिल्ली आने वाले अधिकाश यात्री भारतीय होते हैं इसलिए एयरलाइस उनकी सुविधा के लिए हिन्दी का प्रयोग करने लगी है। लेकिन हमारे लिए यह प्रसन्नता की बात थी कि एयर इण्डिया से बाहर भी हिन्दी बोली जा रही है।

विश्व भाषा के रूप मे जब हम हिन्दी को स्थापित करने की बात करते हैं तो यह कोरी कल्पना नहीं है। भारत की विशाल जनसख्या और भारत के बाहर अनेक देशो मे हिन्दी बोलने तथा समझने वालो की सख्या को नजरअदाज नहीं किया जा सकता। जिस दिन सयुक्त राष्ट्र सघ की एक भाषा हिन्दी स्वीकार कर ली जायेगी उस दिन दुनिया के कई देश हिन्दी पढाने की व्यवस्था करने लगेगे।

आज भी मॉरीशस सूरीनाम इटली ब्रिटेन जर्मनी कोरिया इडोनेशिया के अतिरिक्त हगरी मे पौराणिक कथाओ का अनुवाद हुआ और हिन्दी अध्ययन के प्रति रूचि बढ रही है। पोलैड मे तीन विश्वविद्यालयो मे हिन्दी का अध्यापन हो रहा है। प्रेमचद जैनेद्र इलाचद्र जोशी और फणीश्वरनाथ रेणु की कृतियो का अनुवाद हुआ। पोलैंड की श्रीमती स्ताशिक के शोध प्रबध का विषय आधुनिक हिन्दी साहित्य मे सास्कृतिक टकराव हिन्दी साहित्य के अध्येताओ के लिए दिलचस्प है। कुछ समय पूर्व तक भारत मे पोलैड के राजदूत प्रो० बृस्की ने भारतीय लोक नाटको पर अच्छा काम किया है। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की बकरी का अनुवाद भी पोलैंड म सराहा गया। सोवियत रूस मे हिन्दी फिल्मी गाने बहुत लोकप्रिय हुए। राजकपूर की फिल्म श्री ४२० का गाना मेरा जूता है जापानी ये पतलून इग्लिस्तानी स्र पे लाल टोपी रूसी फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी सर्वाधिक लौकप्रिय हुआ। हिन्दी फिल्मो को रूस मे हिन्दी पहुचाने का श्रेय जाता है। डॉ० बारान्निकोव ने 'नीक का प्रकाशन प्रारभ किया है जिसका अर्थ है भारतीय सिनेमा के ताजा समाचार। रूस में सोवियत सघ क विघटन के बाद हिन्दी का प्रचार अवश्य अवरुद्ध हुआ है। फिर भी हिन्दी सीखने वालो की सख्या बढ रही है। जापान के टोकियो विदेशी भाषा विश्वविद्यालय मे छात्र हिन्दी पढ रहे हैं। ओसाका मे स्नातक पाठयक्रम चल रहा है। जापान मे रामायण के माध्यम से हिन्दी शिक्षण का अभिनव प्रयोग चल रहा है। चीन में विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग ने चीनी हिन्दी शब्दकोष तैयार किया है। गयाना और सूरीनाम मे हिन्दी की विधिवत पढाई होती है। जर्मनी इटली फ्रास होलैंड ब्रिटेन आदि पश्चिमी देशो मे हिन्दी का अध्यापन हो रहा है। हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन का जिक्र इतने विस्तार से स्वीकार करने का उद्देश्य यह बताना है कि विश्व के अनेक देश हिन्दी के महत्व को स्वीकार कर चुके हैं। अनेक देशो में आप्रवासी भारतीय हिन्दी पढने के लिए व्याकुल है। जब विश्व मे हिन्दी बोलने और समझने वालो की सख्या बढ रही है तो विश्व भाषा के रूप मे उसका विकास होना निश्चित है। दुनिया की किसी भी भाषा के पीछे राजनीतिक प्रभुत्व आर्थिक समृद्धि वैज्ञानिक क्षमता या फिर बोलने वालो की सख्या दीखती है। सयुक्त राष्ट्र सघ मे मान्यता प्राप्त करने क लिएि अब भारत को कूटनीतिक प्रयास तेज कर देने चाहिए। भारत के साथ मॉरीशस नेपाल सूरीनाम गयाना ट्रिनीडाड और दक्षिण अफ्रीका खडे रहेगे। पाकिस्तान भी विरोध नही करेगा। इण्डोनेशिया सिगापुर और थाईलैड का समर्थन भी प्राप्त किया जा सकता है। सयुक्त राष्ट्र सघ मे हिन्दी के प्रयोग की व्यवस्था के लिए आर्थिक मार शायद ज्यादा है। भारत सरकार यदि यह खर्च नहीं उठा सकती तो सयुक्त राज्य अमेरिका मे निवास कर रहे भारतीय पूरा व्यय वहन करने को तैयार हैं। पचम विश्व हिन्दी सम्मेलन मे ट्रिनीडाड पहुचे अमेरिका के प्रतिनिधियो ने यह घोषणा की है।

हिन्दी के लिए कुछ करने का इरादा पालने वाले प्रवासी भारतीयो ने एक अच्छा मच तैयार कर दिया है। अपनी माटी से जुडे रहने की ललक अपने सास्कृतिक उत्तराधिकारी पर गर्व और भारत तथा भारतीयो के सस्कार विदेशो मे रच बस गई नई पीढी को सौंपने की चिता ने विदेशो मे हिन्दी के कार्य को विस्तृत आधार दिया है। ऐसे सभी लोगो को एक मच पर एकत्र करन की दृष्टि से प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन नागपुर मे आयोजित किया गया था। उसके बाद दूसरा सम्मेलन मॉरीशस मे तीसरा दिल्ली मे चौथा पुन मॉरीशस मे और पाचवा हाल मे ही ट्रिनीडाड मे हुआ। दूसरे सम्मेलन मे जिस विश्व हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना का प्रस्ताव पारित हुआ था वह अब वर्धा मे स्थापित हो रही है विधेयक तैयार है ससद मे पास होना भर है। यह कल्पना की जा सकती है कि विश्व हिन्दी विद्यापीठ से निकलने वाले स्नातक विदेशो मे भारत के सास्कृतिक दूत होगे। जिन समस्याओ का समाधान कूटनीतिक स्तर पर हल किया जा सकेगा। इसके लिए जरूरी है कि हमारे विदेश मत्रालय के कर्णधार मारीशस ट्रिनीडाड और सूरीनाम जैसे छोटे देशो को उपेक्षा की दृष्टि से नही देखे। समानता के आधार पर व्यवहार करे और विशिष्ट सौजन्य दिखावे। जिन देशो को ज्यादा महत्व दिया जाता रहा उनका भारत के प्रति बर्ताव अब तक समझ मे आ जाना चाहिए। दो टापुओ का एक सुदर देश है ट्रिनीडाड। वेस्टइडीज का एक महत्वपूर्ण और विकसित गणतत्र। पोर्ट आफ स्पेन उसकी राजधानी। सारे भौतिक साधनो के लिए आयात पर निर्भर। लेकिन अपनी अर्थव्यवस्था को मछली शराब शक्कर पर्यटन और वनो से सतुलित बनाये हुए है। उसके क्रिकेट खिलाडी तो मशहूर हैं ही बहुत ही करीने से शहर को बसाया गया है। सफाई लगभग वैसी ही है जैसी किसी यूरोपीय देश मे दिखाई दे जाती है। लोगो की आर्थिक हालत भी अच्छी है। प्रत्येक घर मे कार है। यातायात सुचारू ढग से सचालित है। ड्राइवर सावधानी से कार चलाते है और गाडी पार्क करते हैं। ट्रिनीडाड मे भारतीय काफी सख्या में है उनके बाद अफ्रीकी मूल के लोग हैं। ईसाईयो की सख्या हिन्दुओ की अपेक्षा कुछ ज्यादा है। दोनो अपने-अपने धर्म का पालन करते हैं। हिन्दुओ की भाषा बदल गई है। इसलिए धार्मिक सस्कार होते हुए भी कठिनाई का अनुभव करते है। घर के बाहर मदिर बना रखे हैं। उन पर फहराते रगीन झडे किसी भी भारतीय के घर की पहचान करा देते है। हिन्दुओ ने रोमन लिपि मे आरती और और कुछ मत्र पढकर याद कर लिए हैं। वहा हिन्दू कन्या महाविद्यालय महासभा भवन और आदेश आश्रम सास्कृतिक गतिविधियो का सचालन करने मे अग्रणी हैं। कई लोग मिले जिन्हे रामचरित मानस की चौपाइया कठस्थ है। एक दूसरे का अभिवादन सियाराम' कहकर करते है।

ट्रिनीडाड मे भी डेढ सौ वर्ष पूर्व बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश से बधक बनाकर मजदूरो को ले जाया गया था। वे लोग अपने थोडे-बहुत सामान के साथ रामचरित मानस लेते गए थे। इन मजदूरो ने कडा सघर्ष किया पहले तो जगल काटकर द्वीप को सुदर बनाने मे और फिर उसके विकास मे। आजादी के लिए भी सघर्ष करने मे आप्रवासी भारतीय आगे रहे। आज वहा के राजनीतिक शैक्षणिक और सामाजिक वातावरण मे भारतवशी सबसे आगे है। उन लोगो के दिला की धडकन मे भारत के लिए प्रेम का सगीत सुना जा सकता है। टैक्सियो और कारो मे भारतीय गानो के कैसेट बजते सुनाई देगे। हिन्दी फिल्मो को देखने के लिए भीड उमडती है। इस परिवेश मे सात समुद्र पार वेस्टइडीज के एक देश का प्रधानमत्री भारतीय मूल का हो तो गर्व होना स्वाभाविक है। वासुदेव पाण्डे हिन्दी नही बोल पाते लेकिन हिन्दी सीखने की इच्छा व्यक्त कर चुके है। ट्रिनीडाड मे ही हिन्दीनिधि की स्थापना वहा के निवासियो के हिन्दी प्रेम का प्रतीक है। इस फाउडेशन क अध्यक्ष चका सीताराम हैं। प्रो० जगन्नाथन विश्व विद्यालय मे है और उन्ही के अथक प्रयासो का सुफल था कि ट्रिनीडाड जैसे छोटे-से देश मे पचम विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित हो सका।

सम्मेलन का केन्द्रीय विषय भारतीय आप्रवासियो के सदर्भ मे हिन्दी था। यह सच है कि सूरीनाम गयाना और ट्रिनीडाड जैसे देशो मे हिन्दी के पठन पाठन की समुचित व्यवस्था आवश्यक है। उस परिवेश मे पुस्तके तैयार करनी होगी। वहा की सरकारो को पाठयक्रम मे हिन्दी शामिल करने हेतु दबाव डालना होगा। इन सब बातो के साथ ही हिन्दीभाषियो और भारतवशियो को एक साझा मच पर लाने का प्रयास भी जरूरी है। समस्या है कि यह काम कौन करे ? इस बार सम्मेलन ने अतर्राष्ट्रीय हिन्दी सचिवालय की स्थापना का प्रस्ताव पारित किया है। भारत और मॉरीशस की सरकारे यदि शीघ्र ही कुछ ठोस काम कर सकीं तो विश्व भाषा के रूप मे हिन्दी को उभरते देखा जा सकेगा।

शेष पृष्ठ १० पर

हिन्दी : राष्ट्रीय एकता का सेतु

डॉ० रामधारीसिंह 'दिनकर'

भारत सबसे पुरातन सस्कृतिया मे से एक की जन्मभूमि होने के साथ साथ एक अन्य रूप मे भी मानवता क लिए आता है। जिस धर्म भाषा तथा सस्कृति न ससार का अलग अलग देशो और राज्यो मे विभाजित किया है उन्होने भारत मे एक अदृश्य रूप से एकता प्रदान की है। राष्ट्रीयता ने यूरोप को अलग अलग देशो के रूप मे विभाजित किया है पर भारत मे एकता को दृढ किया है। भारत साधारण भाषा मे कहे जाना वाला एक राष्ट्र नही हे अपितु समस्त ससार का सक्षप है। भारतीय बहुत सी भाषाए बोलते हैं जिनमे कई ता अन्य राष्ट्रो की विकसित भाषाओ से भी अधिक वेभवशाली है।

भक्ति के दृष्टिकोण से भी भारत कई धर्मों का जन्मदाता है। भारत हिन्दू धर्म की प्रधान भूमि होते हुए भी पुरातन काल से ही कई अन्य महत्वपूर्ण धर्मो को ग्रहण करता रहा है। ईसाई धर्म इग्लैंड मे पहुचने से कम से कम दो सदियो पहले भारत पहुचा। सबसे पुराने मुसलमान भारत मे शायद रहे थे जो कि हजरत मुहम्मद के जीवन काल मे ही बनाये गये थे और जोरोस्त्रिन के अनुयायी ६३६ ई० में ही अरबों द्वारा जिन्होने मुस्लिम धर्म ग्रहण कर लिया था अपने देश फारस से निकाले जाने पर भारत आ गऐ थे। कुछेक ऐसा भी धम हैं जिनकी शाखाए हिन्दू धर्म से ही निकलीं तथा जो अब तक एक अलग धर्म के रूप मे रह रहे हैं। ऐसे सब धर्म भारत को ही अपना जन्म स्थान मानते हैं तथा सास्कृतिक एकता को बल प्रदान करते है जिसके कारण भारत मे एकता बनी हुई है। सहिष्णुता हमारी हमारे राष्ट्र की बडप्पन की निशानी रही है।

लेकिन सास्कृतिक एकता ही पर्याप्त नहीं है। हमे अपनी राजनैतिक एकता के प्रति भी सदैव जागरूक रहना है। एकता तथा स्वतत्रता दोनो ही एक मुद्रा के दा भाग है।

हमने अपनी स्वतत्रना कवल शक्ति के कम होने के कारण ही नहीं खोई अपतु राजनैतिक एकता की भावना न होने के कारण अपनी स्वाधीनता लुटाई। पुन आज हमने अपनी आजादी भी सैनिक शक्ति बढाने के कारण ही प्राप्त नहीं की है। हमने पहले शासको को भगाने के लिए खडग नहीं उठाई। भारत को राजनैतिक रूप से एक समझने से ही हमने स्वतत्रता प्राप्त की है जो कुछ पीछे घटित हुआ है दुबारा आगे घटित हो सकता है। यदि एकता समाप्त हो गई तो स्वतत्रता अपने आप चली जायेगी।

हम गाधीजी के उनके द्वारा चलाये गए कई आन्दोलन जिन्होने देश की एकता को बनाये रखा के लिए आभारी हैं। उनमे से हिन्दी आदोलन भी है जो कि अग्रेजी का छोटा पुल होने के साथ साथ एक बडा पुल है। जो लोग अहिन्दी भाषी प्रातो मे रहते हुए भी हिन्दी पढते हैं वे सच्चे भारतीय सैनिको मे से हैं। लेकिन यही पर्याप्त नहीं है हिन्दी भाषी प्रातो के भी लोगो को हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाए पढनी चाहिए।

भाषा के दृष्टिकोण से भी भारत उस दिशा की ओर तेजी से अग्रसर हो रहा है जबकि अनुवादको की बडी भारी सख्या की आवश्यकता पडेगी। इस परिस्थिति का सामना करने के लिए भारत के प्रत्येक भाग मे द्विभाषी स्नातको की आवश्यकता है। अग्रेजी तथा हिन्दी दोनो का अपना अपना स्थान है लेकिन हमे अपनी भाषाओं के अतिरिक्त अन्य भाषाओ के ज्ञाताओं द्वारा सेतु बनाने की आवश्यकता है।

कुछेक दक्षिण भारतीय भाषाये उत्तरी भारतीय विद्यालयो मे प्रारम्भ कर दी गई हैं लेकिन आदोलन में अभी कोई विशेष उन्नति दृष्टिगोचर नहीं हुई लगती यदि सरकार घोषणा कर दे कि दो भारतीय भाषाओ के ज्ञाताओ को अन्य बातो की समानता होते हुए प्राथमिकता दी जायेगी तो आन्दोलन तीव्रता पकड सकता है। यदि एकसी नीति अपनायी जाये तो कुछ ही वर्षों मे ऐसे कुई पुल बनकर तैयार हो जायेगे और आधी शताब्दी मे ही भारतीय एकता की नींव सुदृढ हो जायेगी।

भारत मे पुरातन काल से ही धर्म तथा सस्कृति की राजनीति से अधिक भिन्नता रही है। स्वाभाविक रूप से हमारी भाषाए उन विचारों से भरी पडी हैं जो कि मनुष्यों को उच्च स्तर पर एक बना कर रखतीं हैं। हम धार्मिक दृष्टिकोण से एक रूढिवादी तथा सीमित दृष्टिकोण वाली जाति नहीं हैं। प्रत्येक धर्म के निगम और आगम कहे जाने वाले दो भाग होते हैं। निगम ही धर्म की जड कही गइ है और आगम तो ढाचे की शाखाए मानी गई है। निगम के स्तर पर सारे ससार के धर्म एक ही है। निगम का सरोकार दर्शन के उन मूलभूत प्रश्नो से है जिनमे स सब धर्मो की उत्पत्ति हुई है। लेकिन आगम तो रीति रिवाज अथवा देव पूजन का ढग मात्र है। निगम ही एक ऐसा बिन्दु है जहा पर धर्म को एकता सूत्र मे बाधा जा सकता है परन्तु आगम दृष्टिकोण से ही धर्म विभाजन होकर धर्म विभिन्न दिशाओ की ओर जाकर एक दूसरे से भिड जाता है।

जब कभी भी धर्म के विरुद्ध क्राति हुई तो वह उसकी जड के प्रति न होकर उसकी शाखाओ के प्रति हुई है। जब बुद्ध ने पुरातन वैदिक धर्म के विरुद्ध आवाज उठाई तो वह धर्म के आगम भाग के विरुद्ध थी।

निगम दृष्टिकोण से उस क्राति के बाबजूद भी बुद्ध धर्म के बिल्कुल निकट रहे। जब टैगोर ने सब धर्म छोड दिये केवल एक धर्म को पकड रखने की ललकार लगाई तो उनका निर्देश भी ससार के सब धर्मो के निगम भाग की ओर था। और जब डा राधाकृष्णन आत्मा के धर्म की बात करते हैं तो उनका तात्पर्य भी धर्म के उसी निगम भाग से होता है।

जब हिन्दी सहित सब भारतीय भाषाए धर्म रूपो का प्रतिनिधित्व करती है तो ऐतिहासिक करणो से हिन्दी मे धर्म के निगम पक्ष को अधिक स्थान मिलता है। तमिल कवि कम्बन तथा तेलगु कवि पोटाना की भाति हिन्दी मे तुलसीदास सूरदास तथा विद्यापति की कृतियो मे हम धर्म के आगम पक्ष पर अधिक बल देखते हैं। निगम पक्ष जिनका सही प्रतिनिधित्व त्रिकुराल तथा वैमन की कविता मे है कई कवियो द्वारा अपनाया गया है जिनमे नौवी शताब्दी के सरहपा तथा नहाया से लेकर केवल ४००० वर्ष पहले के तुलसी भी शामिल है।

इसका कारण बौद्ध धर्म के साथ भारतीय सस्कृति का दो अत धाराओ से प्रवाहित होना है। वदो से निकला हुआ यह प्रबाह भारतीय सस्कृति का मातृप्रवाह हैं दूसरी ओर बुद्ध द्वारा सचालित प्रवाह एक क्राति प्रवाह के रूप मे बह रहा है। विश्लेषण करने पर यह ज्ञान होगा कि मनु शकर कम्बन पोतान तुलसीदास से लेकर तत्कालीन तिलक तथा मालवीय भारतीय सस्कृति के मातृ-प्रवाह का प्रतिनिधित्व करते हैं जबकि बुद्ध नागार्जुन तिरुकराल वारुन नरहया तथा नानक और कबीर से लेकर महात्मा गाधी तक क्राति प्रवाह के प्रतिनिधि हैं। तिरुकरान्न को निरपेक्ष बुद्धि प्रवाह वाला कहा जा सकता है।

हिन्दी भारत मे एक्य बनाये रखने वाली भाषा रही है। यह कभी भी उत्तर भारतीय हिन्दुओ का सकीर्ण विषय नहीं रही अपितु अमीर खुसरो नानक कबीर रैदास रज्जब रहीम रसखान पलटूदास तथा अन्यान्य कवियो की हिन्दू मुस्लिम एकता सामाजिक समानता तथा अनगिनत जातीय भाषा तथा धर्मिक गुटो के प्रेम प्रचार का माध्यम रही है। सहस्रो वर्षों से हिन्दी साहित्य ऊपर उठ रहे भारतीय राष्ट्र की सामाजिक एकता के लिए अथक प्रयास करता रहा है। यदि कोई इसका राजनितिक प्रारूप देखना चाहे तो वह महात्मा गाधी के जीवन मे देख सकता है जिन्होंने दो धार्मिक सम्प्रदायों की समान्यताओं पर बल देकर दोनों को एक दूसरे के निकट लाने में अपने जीवन अर्पित किये।

हिन्दी कभी भी विघटनकारी शक्ति नहीं रही। हिन्दी ने तो पहले ही गुजरात से लेकर असम तक

शेष पृष्ठ ६ पर

हिन्दी अपनायें, स्वाभिमान जगायें

भगवान दास

सहा० सम्पादक पालिका समाचार

भाव उपजते नागरी पर इगलिश की तान।
भारतीयता की बनी मेम यहा पहचान।।

राष्ट्र हमारा सबल तन हिन्दी इसका प्राण।
बिना प्राण के है यह निष्क्रिय अरु बेजान।।

मा की लोरी से मिला हिन्दी का सगीत।
पर यौवन मे बावले क्यो इससे बे प्रीत।।

हिन्दी से ही राष्ट्र का स्वाभिमान सम्मान।
हिन्दी का व्यवहार है कौमी गौरव गान।।

भाषा के प्रति है जहा पूर्ण समर्पण भाव।
उन्नति के पथ पर वही राष्ट्र विश्व के राव।।

हिन्दी ही है राष्ट्र के माथे का सिन्दूर।
जो रक्षा इसकी करे पायें सुहागी नूर।।

सारे जग मे नागरी की अद्भुत पहचान।
इसके स्वर ध्वनि पूर्णत. हैं विज्ञान समान।।

हिन्दी मे क्षमता बहुत ध्वनी लिखे हर कोय।
जैसा बोलें लिख सके पुनि पढ सकते सोय।।

इसीलिये यदि चाहते होवे राष्ट्र समर्थ
हिन्दी को अपनाये लो सुधरे सारे अर्थ।।

सरकारी निज कार्य मे हिन्दी लो अपनाय।
शुद्ध शब्द ना आय तो नागरि लिखो बनाय।।

अखिल विश्व मे नागरी लिपि का हो उपयोग।
सभी स्तरो पर करो मिलजुल सब उद्योग।।

इगलिश के अक्षर जिन्हे दीखे मैंसाकार।
अग्रेजी मे छापते विवाह कार्ड धिक्कार।।

इगलिश भाषा के लिए कितना मोह रुझान।
निज मातृभाषा के प्रति क्यों बेरुख श्रीमान ?।।

जिस माता का दूध पी पहुचे यौवन द्वार।
उस माता को कर दिया तुमने वे घर बार।

इगलिश मे पी०एच०डी० हिन्दी मैट्रिक ज्ञान।
हिन्दी भाषी के तदपि दोनो ज्ञान समान।।

अग्रेजी श्रम साध्य है फल गूलर फल जान।
हिन्दी शिक्षा श्रम सुकर फल तरबूज समान।।

निज भाषा शुचि सस्कृति देशोन्नति के मूल।
इनके रक्षक राष्ट्र नर रहें सतत फल-फूल।।

अग्रजीमय विश्व का सकल ज्ञान विज्ञान।
ऐसी जिनकी सोच है वे हैं निपट अजान।।

रूस फ्रास इटली तथा जर्मन अरु जापान।
निज भाषा माध्यम पढे सभी ज्ञान विज्ञान।।

इगलिश भाषी देश से ऊची उनकी शान।
उद्योगो धन धान्य में वे हैं शिखर समान।।

स्वाभिमान सम्मान की ऊची रक्खो सोच।
निजभाषा व्यवहार मे करो नहीं सकोच।।

हिन्दी मे वह ज्ञान है जो नहीं सकल जहान।
इसके कारण विश्व मे है अपनी पहचान।।

हिन्दी ऐसी वरतिये जो हो सरल सुबोध।
जन-साधारण भी जिसे समझ सके अविरोध।।

शब्द चयन ऐसा करो जिसका नहीं विकल्प।
सहज शब्द सूझें तुरन्त श्रम होवे अति अल्प।।

'पुट-अप' शब्द का अर्थ गर 'प्रस्तुत सूझे नाय।
'पेश' या कि लिप्यन्तरण नागरि लिखो बनाय।।

'इजिनियर' के शब्द का अभियन्ता है अर्थ।
'इजिनियर' ही गर लिखें तो भी अर्थ समर्थ।।

भाषा वह समृद्ध है सब कुछ लेय पचाय।
भाषाओं के शब्द सब आत्मसात कर जाय।।

जो भाषा अपनी अलग खिचड़ी रही पकाय।
अन्य बोलियों के सभी देती शब्द उडाय।।

ऐसी भाषाये त्वरित होती नष्ट समूल।
प्रान्त धर्म से जोडना इनको भारी भूल।।

भाषायें सब विश्व की हैं जग की सम्पत्ति।
इन्हें सीखने का जतन मानवता की भक्ति।।

सब सज्जन दृढता सहित लेवें शुभ सकल्प।
केवल हिन्दी में करें सभी कार्य अविकल्प।।

◆◆◆◆◆◆

अब तक हिंदी का क्या हुआ ?

अटलबिहारी वाजपेयी

हिंदी का किसी भारतीय भाषा से झगडा नहीं है हिंदी सभी भारतीय भाषाओ को विकसित देखना चाहती है लेकिन यह निर्णय सविधान सभा का है कि हिंदी केन्द्र की भाषा बने जब सविधान सभा ने यह निर्णय किया तो सविधान का जो प्रारूप बना था उसमे अग्रेजी के प्रयोग के लिए केवल दस साल रखे गये थे बाद मे अहिदी भाषी लोगो की कठिनाई को ध्यान मे रख कर पाच साल की अवधि बढा कर पद्रह साल की गयी यह गलती की गयी कुछ लोग इस मत के है और इसमे सच्चाई हो सकती है कि अगर अग्रेजी जानी थी तो एक बार मे ही चली जानी चाहिए थी अग्रेजी को धीरे-धीरे हटाना मुश्किल है

एक समय इग्लैंड मे दो भाषाए चलती थी एक फ्रेंच भाषा और दूसरी लैटिन भाषा जितने भी कानून बनते थे फ्रेंच भाषा में बनते थे और ऊची शिक्षा की भाषा लैटिन थी उस समय फ्रेंच और लैटिन को बनाये रखने के लिए अग्रेजी को न लाने के लिए यही तर्क दिये जा रहे थे जो आज अग्रेजी को बनाये रखने के लिए और भारतीय भाषाओं को न लाने के लिए दिये जा रहे हैं।

१८५० मे इग्लैंड की पार्लियामेट को एक पिटीशन एक याचिका दी गयी उस पिटीशन मे क्या कहा गया यह मैं पढना चाहता हू। 'इसे नामक विजेता के प्रति हमारी गुलामी का बिल्दना मानते हुए फ्रेंच भाषा मे हमारे कानून का होना और यह कि उन कानूनो के अनुसार चलना जिनको जनता नहीं जान सकती पाशविक गुलामी से कुछ ही कम है कि इसलिए इसे शासन के कानून और परम्पराए बिना शब्दो को सक्षिप्त किये तत्काल मातृभाषा मे लिखे जाने चाहिए। इस सम्बन्ध मे इग्लैड की पार्लियामेट ने जो निर्णय किया उसको भी इस सदन को ध्यान मे रखना चाहिए यह २२ नवबर १८५० का फैसला है।

ससद ने यह घोषित करना और कानून बनाना उचित समझा है और इस वर्तमान ससद द्वारा इसके अधिकार द्वारा यह घोषित हो और कानून बने कि सभी रिपोर्ट बुक और न्यायाधीशो के निर्णयो और इग्लैंड के कानून की पुस्तकों का इगलिश भाषा मे अनुवाद हो और पहली जनवरी १८५१ से और उसके बाद से न्यायाधीशों के निर्णयो की सभी रिपोर्ट बुक और कानून की अन्य सभी पुस्तके जो प्रकाशित होगी इग्लिश भाषा मे होगी इग्लैंड मे भी अग्रेजी को लाने के लिए लडाई लडनी पडी थी।

इग्लैंड में भी यह तर्क दिया गया था कि अगर डॉक्टरो की पढाई अग्रेजी मे की गयी तो मरीज मर जायेगे अग्रेजी इस योग्य नहीं है कि वह कानून और शिक्षा का माध्यम बन सके लेकिन इग्लैंड की जनता ने अग्रेजी लाने का स्वाभिमानपूर्ण निर्णय लिया और आज अग्रेजी को इतना विकसित कर दिया है कि हम उस अग्रेजी के मोह मे पड गये हैं हम उस अग्रेजी को छोडना नहीं चाहते हैं मेरी मातृभाषा हिंदी है लेकिन हिंदी को केन्द्र की राजभाषा बनाने का निर्णय हिंदीवालों ने नहीं किया सविधान सभा मे हम नहीं थे सविधान सभा में राजभाषा बनने से पहले हिंदी को जो ऊचा स्थान दिया गया वह गैर हिंदीवालों ने दिया था सविधान सभा ने केवल उस पर मुहर लगायी अगर ससद चाहती है तो संविधान को बदल दे।

हिंदी का किसी भारतीय भाषा से झगडा नहीं है हिंदी सभी भारतीय भाषाओ को विकसित देखना चाहती है लेकिन यह निर्णय सविधान सभा का है कि हिंदी केन्द्र की भाषा बने जब सविधान सभा ने यह निर्णय किया तो सविधान का जो प्रारूप बना था उसमे अग्रेजी के प्रयोग के लिए केवल दस साल रखे गये थे बाद मे अहिदी भाषी लोगो की कठिनाई को ध्यान मे रख कर पाच साल की अवधि बढा कर पद्रह साल की गयी यह गलती की गयी कुछ लोग इस मत के हैं और इसमे सच्चाई हो सकती है कि अगर अग्रेजी जानी थी तो एक बार में ही चली जानी चाहिए थी अग्रेजी को धीरे-धीरे हटाना मुश्किल है लेकिन जनता की कठिनाइयो पर विचार करके यह निर्णय किया गया कि पद्रह साल तक अग्रेजी चले।

इस निर्णय से हमारे दक्षिणवासी मित्र असतुष्ट नही थे अल्लादी कृष्णस्वामी अय्यर गोपाल स्वामी आयगार और टीटी कृष्णामाचारी–इनके लिए पद्रह साल की अवधि सतोषजनक थी अगर सविधान की व्यवस्था से कोई असतुष्ट था तो अहिदी भाषी असतुष्ट नहीं थे बल्कि राजर्षि पुरुषोत्तमदास टडन असतुष्ट थे जो अतर्राष्ट्रीय अक नही जानते थे या मौलाना आजाद असतुष्ट थे जो हिंदी नहीं हिंदुस्तानी जानते थे लेकिन अहिंदी भाषा भाषी या दक्षिणभाषी असतुष्ट नहीं थे।

डॉ राजेद्र प्रसाद ने सविधान सभा के अध्यक्ष के रूप मे कहा था कि भाषा के सबध मे हमने जो निर्णय लिया है वह बडा नाजुक निर्णय है इसे साल के साल महीने के महीन हफ्ते के हफ्ते और मिनट के मिनट मे हमे कार्यान्वित करना होगा मगर केंद्रीय सरकार समझती थी या केंद्रीय सरकार मे जिनके हाथ मे भाषा सबधी नीति को क्रियान्वित करने का अधिकार था वे समझते थे कि चौदह साल और ग्यारह महीने बीतने के बाद फिर परिवर्तन का प्रयत्न किया जायेगा। जब १९६५ आया था तो देश इस परिणाम पर पहुचा कि अभी अग्रेजी को नहीं हटाया जा सकता है और इसलिए अग्रेजी को आगे भी चलाने की व्यवस्था की जाये।

१९६३ मे एक कानून बना नेहरूजी के जिन आश्वासनों की चर्चा की जाती है वेसे आश्वासन अगस्त सितबर १९५६ में फ्रेंक एथनी के एक गैर सरकारी प्रस्ताव के उत्तर में बोलते हुए प्रधानमत्री ने दिये थे नेहरूजी ने कहा था अग्रेजी एक सहयोगी भाषा के रूप मे बनी रहेगी और मैं तब तक इसे नहीं हटाऊगा जब तक गैर हिंदी भाषी राज्य इसे हटाने को न कहें राष्ट्रपति की ओर से हिन्दी के प्रयोग के सबध मे कुछ आदेश जारी किये गये थे उनमें एक आदेश यह भी था कि हिंदी सघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओ की भाषा होगी। १९६५ के बाद यह हो जाना चाहिए था, यह क्यो नहीं हुआ ? हिंदी के साथ और भारतीय भाषाए भी परीक्षा का माध्यम बनें यह हम चाहते हैं और इस तरह की माग की गयी थी काग्रेस वर्किंग कमेटी ने १९५४ मे इस आशय का प्रस्ताव पास किया था कि हिंदी के साथ अन्य भारतीय भाषाओ को भी केन्द्रीय सेवाओ की परीक्षाओ का माध्यम होना चाहिए १९६० म गृह मत्रालय ने इस तरह का एक निर्देश भी जारी किया था लेकिन भारतीय भाषाए परीक्षा का माध्यम नहीं बनायी गयीं।

सब इस बात को स्वीकार करते हैं कि हिंदी का प्रयोग धीरे धीरे बढना चाहिए और सब इस बात को स्वीकार करेगे कि आज जो देश की स्थिति है उसमे हिंदी और अग्रेजी के बीच मे ईमानदारी से बाई लिगुअलिज्म होना चाहिए हिंदी को बराबरी का दरजा नहीं दिया गया इतना ही नहीं हिंदी को नीचा स्थान दिया गया है यह ईमानदारी से दो भाषाई केद्र की नीति नहीं है कोई समझौता नही है यह अग्रेजी परस्तो के सामने समर्पण है। हम समझौते के लिए तैयार हैं हम जानते हैं देश की एकता बडी है और भाषा उसका साधन है हम कोई काम ऐसा नही करना चाहेगे जिससे देश की एकता खतरे मे पड जाये लेकिन देश की एकता को बचाने का यह तरीका नहीं है कि अग्रेजी के व्यवहार को अनतकाल तक कायम रखने की व्यवस्था की जाये।

आचार्य कृपलानीजी ने भी यह बात कही थी कि अग्रेजो ने सेना मे हिंदी चलायी। सेना मे हर प्रदेश के लोग हैं हर एक जगह के लोग हैं लेकिन सेना मे हिंदी चली १९४७ मे मध्य भारत में राजस्थान मे और हैदराबाद म भी भारतीय भाषाए हाई कोर्ट तक चली थी मैं मध्य भारत से आता हू मध्य भारत का हाई कोर्ट हिंदी मे फैसले करता था उर्दू मे हैदराबाद मे काम चलता था। १९४७ के बाद स्वाधीनता के बाद स्वतत्रता के बाद वहा अग्रेजी चालू कर दी गयी हिंदी को पीछे हटना पडा जब सविधान बना तब भी अग्रेजी को जारी रखने की कोशिश की गयी १९६३ मे फिर अग्रेजी को आगे बढाने का बिल लाया गया। और अब १९६७ मे फिर से अग्रेजी समर्थन मे बिल लाया गया और कहा यह जा रहा है हर बार यह कहा गया कि अब हिंदी आ जायेगी अब हिंदी के मार्ग मे जो बाधा है वह हट जायेगी अब हिंदी पर किसी तरह की रोक नहीं रहेगी।

जो हिंदी नहीं जानते और केंद्रीय सेवा मे अग्रेजी मे काम करना चाहते हैं वे अग्रेजी मे काम करें। लेकिन जो हिंदी में काम करना चाहते हैं उन्हें अग्रेजी में अनुवाद देना अनिवार्य नहीं होना चाहिए दोनो भाषाओं की स्थिति बराबर होनी चाहिए इसका कैसे विरोध किया जा सकता है ?

शेष पृष्ठ ६ पर

आखिर कब तक राष्ट्र भाषा के साथ भेदभाव बना रहेगा

गोपाल आर्य

सर्व विदित है कि राष्ट्र की गौरवता की मुख्य निशानिया उसका राष्ट्रीय झण्डा राष्ट्रीय गान एव राष्ट्रीय भाषा/सविधान का बडा महत्वपूर्ण स्थान ही नहीं बल्कि हर नागरिक का परम कर्त्तव्य है कि हम मुख्य अगो का सम्मानपूर्वक आदर कर। ये अग राष्ट्र के जागृति एव स्वाभिमान की निशानिया भी है जिनसे देश की सस्कृति एव उसके प्रति जागृति की भावना एव आदर पैदा होता है। चिन्तन और मनन से बार बार मन व्याकुल हो उठता है कि हमारे राष्ट्र प्रेम और राष्ट्र भाषा का कहा तक आदर हो रहा है एव हर नागरिक कहा तक इसको सम्मान एव उन्नति दे पा रहा है। शासक/न्याय सभा अपनी राष्ट्र भाषा का कहा तक आदर/सम्मान कर रहे हैं। राष्ट्र भाषा के हनन/अपमान पर क्या कार्यवाही की जा रही है। प्रजा के ऊपर शासन चलाने वाले शासक एव न्याय पर चलाने वाले स्वतन्त्रता का ढोल पीटने वाले गाधी के पग चिन्हों की बात कहने वाले क्या आजादी एव स्वाभिमान बनाये हुए हैं ? राष्ट्र भाषा को पूर्णत लागू करने के लिए राष्ट्र मे ही धरना और फिर उस पर अत्याचार राष्ट्रीयता की पहचान तो नहीं। यह तो पराधीनता एव असमानता है कि एक राष्ट्रीय नागरिक अपनी राष्ट्रीय भाषा का स्वतन्त्रता से अपने देश में प्रयोग करने से वचित रहता है। जिस आदर्श स्वाधीनता की भाषा ने जीवन दान दिया और देश एव उसकी सस्कृति के प्रति बलवती भावना जागृति दी उसके प्रति समस्त शासक एव प्रजा का मूल कर्त्तव्य होना था कि वही जुवान पर रहे और पराधीनता के समूल स्वर उखाडे जायें। राष्ट्र के अगों का अपमान वह भी उसी राष्ट्र मे इसके लिए कडी से कडी सजा का प्रावधान होना चाहिए।

अपने राष्ट्रीय गौरव के दिवानों की जुवान अपनी राष्ट्रीय भाषा पर निर्भर होनी थी और समस्त प्रयोग उसी मे अनिवार्य होना चाहिए था परन्तु आर्य भाषा उसके शासकों द्वारा भेदभाव के कगार मे पिटती जा रही है क्योकि अमीर गरीब उच नीच बना रहे। एक गरीब आदमी अपने बच्चो को साधारण खर्चा/व्यय पर भी अपनी राष्ट्र के स्तर पर शिक्षा न दिला सके और एक शासक/मत्री अधिकारी जिसके सहारे अग्रेजी डिसको पिसको स्कूल पल रहे विदेशी पराधीनता की भाषा/सस्कृति से गौरवन्वित होके अपनी स्वाधीनता की भाषा का प्रयोग नहीं चाहता। राजकीय कार्य मे एव तमाम परीक्षाओं मे अग्रेजी ही चाहता है क्योंकि अग्रेजी के माध्यम से गरीबों पर शासन चला सके। विदेशी पराधीनता की दादागिरी चला सके। हिन्दी का नारा और विदेशी भाषा के जरिये से बडे बडे पदो पर बैठना और राष्ट्र भाषा का अपमान करना। क्यो नहीं बडे बडे पदों पर हिन्दी के माध्यम से शिक्षित वर्ग को नहीं लगाया जाता क्यों समस्त पदों को राष्ट्र भाषा के माध्यम से नहीं भरा जाता। इन पहलुओं पर नजर डाले तो यह स्पष्ट है कि वहा ऊच-नीच, अमीर-गरीब का भेदभाव है। अपने राष्ट्रीय अगों की रखवाली करने वालो की आज आवश्यकता है जो देश एव आदर्श के प्रति अपना सब कुछ न्योछावर कर दें शहीद हो जायें। ऐसे शासक चाहिए जो राष्ट्रीय सस्कृति पर कुर्बान हो। विदेशी भाषा का समूल ही देश से नष्ट कर देना चाहिए जिससे पराधीनता का घोर सकट छाया था और अब राष्ट्र के अन्दर स्वदेशी सस्कृति मिटा रही है ऊच नीच अमीर गरीब की जडों को जकडी हुई है। यदि इसे ही सबसे बडा जातिवाद कहा जाये तो बुरा नहीं होगा जिससे स्वतन्त्रता/समानता का हनन हो रहा है।

अपने राष्ट्रीय गौरव के दियानो की आर्य भाषा थी पराधीनता की नहीं कारण वे देश और उसके सस्कृति गौरव के खातिर गोलिया पिस्तौल की सीने पर खाकर चल दिये किन्तु देश/भाषा एव सस्कृति पर कहीं आच नहीं आने दी। जिस शिक्षा को ग्रहण करने से हमारे अन्दर देश प्रेम स्वाधीनता आर्य विचार एव अवगुण दूर हों जायें वह शिक्षा भारतीय शिक्षा में ही है। परन्तु जब मार्ग से भटक गये तो रास्ते का मालूम नहीं की कहा से आये और कहा जा रहे हैं वाली बात है। आखिर कब तक हम अपनी राष्ट्र भाषा के साथ अन्याय करते रहेगे, क्यों ३-४ वर्ष के बच्चे को अग्रेजी मिशनरी में डालकर अग्रेजी के अक्षर रटा कर किसके लिए तैयार कर रहे हैं। परीक्षाओं का माध्यम अग्रेजी से कब तक विदेशी भाषा पर निर्भर रहें अमीर-गरीब, ऊंच-नीच का भेदभाव चलता रहेगा। चहु ओर विदेशी दासता दिखती है इससे लगता है कि स्वतन्त्रता अभी मिलनी बाकी है। आदर्श पुरातन सस्कृति को नष्ट किया जा रहा है और नवयुवको को विदेशी सस्कृति मे ढाला जा रहा है। टाटा गुडबाई अकल-आटी से भारतीयता को आखिर कहा ले जाना चाहते हैं क्या पहचान चाहते हैं। यदि राष्ट्रीय भाषा का सभी सम्मानपूर्वक आदर करे और समस्त शिक्षा/परीक्षाओं का माध्यम राष्ट्रीय भाषा पर हो तो समानता आ जाये। यही उचित और प्रत्येक नागरिक का परम कर्त्तव्य होना चाहिए कि अपने देश/सस्कृति और भारतीय भाषा का सम्मान पूर्वक आदर करें और जो इसका अपमान करें उसके लिए कडी से कडी सजा का प्रावधान हो।

****

अब तक हिंदी का क्या हुआ ?

पृष्ठ ५ का शेष

दूसरी बात यह है कि अनुवाद की व्यवस्था कहा की जाए और कैसे की जाये ? अध्यक्ष महादय जब से केंद्र की भाषा हिंदी बनाने का फैसला किया है कर्मचारियो को हिंदी सिखायी जा रही है लाखो कर्मचारियो ने हिंदी सीखी है बहुत से कर्मचारी हिंदी पहले से जानते हैं कुछ अहिंदीभाषी कर्मचारी भी हिंदी मे आदेश दे रहे हैं हम हिंदी की अनिवार्यता चाहते हैं और न अग्रेजी की अनिवार्यता चाहते हैं सचमुच में परीक्षाओ का माध्यम सभी भारतीय भाषाए होनी चाहिए और केंद्र सरकार ने अगर यह व्यवस्था नहीं की है तो भारतीय भाषाओ मे आपस में ईर्ष्या द्वेष पैदा करने की जिम्मेदारी केंद्र सरकार की है। कम से कम परीक्षाओ का माध्यम भारतीय भाषाओ को बनाने के मामले मे देरी नहीं होनी चाहिए। लेकिन जब तक नही होता तो अगर कोई हिंदी माध्यम से परीक्षा देना चाहता है तो हिंदी माध्यम से दे और जो अग्रेजी माध्यम से देना चाहता है तो अग्रेजी माध्यम से दे, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए।

एक बात यह होनी चाहिए कि प्रति वर्ष हिंदी के मामले मे कितनी प्रगति हुई है इसकी रिपोर्ट सदन के समने आनी चाहिए देश को उसके बारे में परिचित कराना चाहिए आज हमें एक नये भारत का समाना करना पड़ रहा है करोड़ों नौजवान अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करके राष्ट्रीय रगमच पर अवतीर्ण हो रहे हैं करोड़ों लोगों ने मताधिकार पाया है, मताधिकार के महत्व को पहचाना है औद्योगिकीकरण के कारण लोग नगरों मे आ रहे हैं इन गावों बदली हुई भारत की परिस्थितियों को ध्यान में रख कर हमें केंद्र की राजभाषा के सबध मे निर्णय करना होगा आज हिंदी क्षेत्रो के विद्यार्थी बिगडे हुए हैं यह समझना गलत होगा कि उन विद्यार्थियों को किसी ने भडकाया है वे विद्यार्थी इसलिए बिगडे हुए हैं कि उन्हे अपना भविष्य अधकारमय दिखायी दे रहा है वे मातृभाषा मे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं उन प्रदेशो मे अग्रेजी वैकल्पिक भाषा कर दी गयी है अब अगर केंद्र की परीक्षाओं में अग्रेजी अनिवार्य होगी तो केंद्र की परीक्षाओ में उनके लिए सफलता प्राप्त करना असभव होगा उनके लिए यह सवाल अपने भविष्य का सवाल बन गया है। उनकी भावनाओं के साथ सदन को अपने को एक रूप कर के देखना चाहिए।

मैं अहिंदी प्रदेशों के बारे मे भी कहना चाहता हू अगर मद्रास मे तमिल चलेगी और मुबई मे मराठी मे राजकाज होगा अगर कलकत्ता मे बगाली भाषा के माध्यम से शिक्षा दीक्षा और शासन व्यवहार होगा तो क्या फिर नयी दिल्ली में त्रिशकु की तरह से अग्रेजी लटकती रहेगी अगर भारतीय भाषाए आगे बढेगी अगर भारतीय भाषाए शिक्षा का माध्यम बनेगी अगर भारतीय भाषाओं में राजकाज चलेगा तो फिर नयी दिल्ली में हमें सपर्क के लिए कोई न कोई भाषा का निश्चिय करना होगा उस भाषा को लादने का सवाल नहीं है वह भाषा अपने आप विकसित हो रही है वह भाषा अपने आप जगह ले लेगी।

चौथी लोकसभा (१९६७) में दिया गया श्री वाजपेयी का वक्तव्य उस समय तक हिंदी सहित किसी भारतीय भाषा को सघ लोकसेवा आयोग की परीक्षाओं के माध्यम के रूप में मान्यता नहीं मिली थी।

(ससद के रिकॉर्ड से साभार)

अंग्रेजी वालों का कुचक्र

विश्वम्भर प्रसाद 'गुप्त-बन्धु'

स्वभाषा-प्रेम एक वाछनीय गुण है जिसका उपयोग राष्ट्र का सास्कृतिक सगठन तथा राष्ट्रीय एकता सुदृढ करने के लिए होता है। परन्तु निहित स्वार्थ वालो ने अग्रेजी को जमाए रखने के लिए स्वभाषा प्रेम का भी दुरुपयोग ही किया है। भोले लोग उनकी चाल मे आकर राष्ट्रभाषा के स्थान पर स्थानीय बोलियों को क्षेत्रीय भाषा का नाम देकर उन पर ही अपना ध्यान केन्द्रित कर बैठे और कतिपय विघटनकारी तत्वो ने उन्हे प्रोत्साहित भी किया। सविधान की आठवीं अनुसूची मे अठारह भाषाए हैं। किन्तु अब हिन्दी की विभिन्न बोलियों को भी अलग-अलग अनुसूचित करने की माग प्रस्तुत की जा रही है। यह हिन्दी का पक्ष कमजोर करने का ही षडयत्र है।

राजस्थानी हरयाणवी ब्रज भाषा बुन्देली मैथिली भोजपुरी छत्तीसगढ़ी आदि काफी समृद्ध बोलिया हैं और इनके बोलने वाले भी काफी बडी सख्या मे हैं। इनमें से बहुतों मे बहुत अच्छा सहित्य भी है। किन्तु इन सभी को समेट कर ही तो हिन्दी बनी है। इनके साहित्य को हिन्दी का श्रेष्ठ साहित्य स्वीकार किया गया है जिस पर हिन्दी को गर्व है। किन्तु अब इनको भी क्षेत्रीय भाषा बनाने से इनके बोलने वालों की अलग-अलग गिनती होने लगेगी और हिन्दी बोलने वालो की सख्या उतनी ही घटाकर दिखाई जाने लगेगी। इस प्रकार राजभाषा बनने का उसका आधार ही समाप्त हो जाएगा। आकडों की इस बाजीगरी के पीछे अग्रेजी वालों का कुचक्र निहित है। यह एक दूरगामी दुरभिसन्धि है जो क्षेत्रीय भाषाओं के विकास सम्बर्द्धन और सम्मान करने की आकर्षक चाशनी मे लपेटी हुई विष की गोली के समान होगी। इस प्रकार राष्ट्र भाषा के मार्ग में बाधा खडी होगी। राष्ट्र नेता विद्वान अभी से सावधान हो जाए। साहित्य अकादिमियो की गति विधिया भी कुछ अग्रेजी भक्तों द्वारा निर्देशित होती हैं जो स्थानीय बोलियों को भाषाओं का बाना पहिनाकर प्रत्यक्षत विद्वानों का सम्मान करते हैं और परोक्ष रूप से हिन्दी का मार्ग अवरुद्ध करते हैं।

कुचक्र के निहित दुष्परिणाम

इस कुचक्र के दुष्परिणाम अनेक हैं किन्तु कुछ प्रमुख हानिया ही यहा गिनाई जा रही हैं –

१ हिन्दी में समाहित सभी बोलियो को अलग-अलग क्षेत्रीय भाषाए मान लेने से हिन्दी भाषी जन समूह का बिखराव हो जाएगा। हिन्दी का राजभाषा बनाने का मुख्य कारण उसके बोलने की विशाल सख्या थी इसकी घटक बोलियो को पृथक-पृथक भाषाओं का नाम दे दिया जाएगा तब हिन्दी भाषियों की सख्या उसी हद तक कम दिखाई जाने लगेगी। फिर अग्रेजी वालो को यह कहने का मौका मिलेगा कि इतनी कम सख्या–बल–वाली हिन्दी भाषा को दिया गया राजभाषा का दर्जा समाप्त किया जाए। इस प्रकार अग्रेजी का विरोध भी मन्द हो जाएगा और वह अबाध गति से चलती रहेगी। तब सविधान में सशोधन करके उसे आठवीं सूची मे लाने मे कितनी देर लगती है।

२ सघ-लोक-सेवा-आयोग की परीक्षाओं से अग्रेजी अनिवार्यता हटाने के लिए बरसो से आन्दोलन चल रहा है किन्तु समय समय पर आयोग का यही उत्तर मिलता रहा है कि भारतीय भाषाओं की सख्या अधिक होने के कारण उनमे परीक्षा सचालन सम्भव नहीं है। क्षेत्रीय भाषाओ की सख्या और भी बढते जाने से आयोग के घिसे पिटे उत्तर मे और भी दृढता आएगी और राष्ट्र हित मे किए जा रहे अग्रेजी हटाओ आन्दोलन को गहरा धक्का लगेगा।

३ भाषाओ की सख्या बढने से तदनुरूप भाषायी राज्यो की माग प्रस्तुत होगी और छोटे छोटे बहुत से राज्य होगे तो उतने ही राज्यपाल उतनी ही सरकारे उतनी ही विधान सभाए विधान–परिषदे उतने ही कार्यालय आदि बढेगे। यह व्यवस्था कुछ स्वार्थी राजनेताओ के लिए तो वरदान सिद्ध हो सकती है। किन्तु गरीब देश के बेचारे कर दाताओं पर सामन्ती प्रशासन व्यय का वर्तमान कमरतोड मार और भी बढकर अत्यन्त अहितकर सिद्ध होगी।

४ भारत में अग्रेजों के जाने के बाद लौह पुरुष सरदार पटेल ने भारत की पाच छह सौ देशी रियासतो का भारत मे विलय करके एक शक्तिशाली गणतत्र स्थापित किया था। निहित स्वार्थ वाले उस एकात्मता का विध्वस करके राष्ट्र को फिर छोटे छोटे राज्यों में बाट देना चाहते हैं और उनके बढे हुए व्यय के लिए ऋण ग्रस्त देश को और भी ऋण में डुबोकर किसी ऋणदाता विदेशी राज्य की झोली मे डालने की ओर अनजाने ही प्रयास रत हैं। उनकी इन गतिविधियो के पीछे विदेशी हाथ होने से इन्कार नहीं किया जा सकता। अनेक राज्यो के स्वतत्र होने के प्रयास किसी न किसी छद्म रूप मे आरभ ही हो चुके हैं।

५ बहुत सी समृद्ध बोलिया जो भाषा के रूप में सविधान मे अनुसूचित नहीं है विश्वविद्यालयो में ऊचे स्तर तक पढाई जाती हैं। उनमे समृद्ध साहित्य और शानदार परम्पराए हैं। उनमें गभीर शोध कार्य और उत्कृष्ट साहित्य सृजन हो रहा है। सभी के अध्येता लेखक और कवि विद्वान यथा योग्य सम्मान के पात्र हैं। लोक-साहित्य की वृद्धि से हिन्दी साहित्य समृद्ध होता है। किन्तु राष्ट्र भाषा हिन्दी सारे देश की सम्पर्क भाषा तथा राजभाषा होनी चाहिए और सभी को उसके प्रति उचित श्रद्धा रखते हुए उसकी सेवा करनी चाहिए। राष्ट्रभाषा का उचित सम्मान राष्ट्र प्रेम का प्रतीक है जो अपनी बोली के प्रेम से कही ऊपर है। हमे चाहिए कि कोई भी ऐसा कार्य या प्रस्ताव न करे जिससे राष्ट्र भाषा हिन्दी के अस्तित्व या प्रचार प्रसार पर तात्कालिक या दूरगामी प्रतिकूल प्रभाव पडे।

पिछले साल ही राजस्थान विधान सभा मे एक प्रस्ताव पर विचार हुआ था कि राजस्थानी को भारत के सविधान की आठवी सूची में क्षेत्रीय भाषा के रूप मे मान्यता दिलाई जाए। राजस्थानी हिन्दी की एक बोली है जो अनेक दृष्टियो से सम्पन्न है। इसे क्षेत्रीय भाषा का दर्जा मिलने पर राजस्थानी बोलने वालों को प्रसन्नता होती और राजस्थानी के विकास के लिए अवसर प्राप्त होते ऐसा प्रस्ताव के पक्षधरो का विचार था। किन्तु यह प्रस्ताव कुछ राष्ट्रनेता दूरदर्शी विद्वानों के विरोध के कारण उस समय वापस ले लिया गया था। फिर भी उसके पक्षधर अभी भी सक्रिय हैं। बोलियो को भाषा घोषित करने की ऐसी माग कुछ अन्य राज्यो मे भी पनप रही है। अत ऐसे प्रस्तावो के प्रति हमें सावधान रहना चाहिए।

बी १५४ लोकबिहार दिल्ली ११० ०३४

मातृभाषा के प्रयोग पर शारीरिक यातना

पिलखुवा (उ०प्र०) के एक मिशनरी स्कूल मे हिंदी बोलने पर बच्चो की पिटाई न केवल आपत्तिजनक बल्कि लज्जास्पद भी है। आज के दौर में स्कूलो मे बच्चो को बेत लगाना एक मध्ययुगीन सी घटना है। मातृभाषा के प्रयोग पर बच्चों को शारीरिक यातना से तो ऐसा लगता है कि इस तरह के स्कूल किसी सप्रभु स्वतत्र एव स्वाभिमानी राष्ट्र में नहीं चल रहे। वदे मातरम और जयहिंद बोलने पर ब्रिटिश पुलिस के हटरों एव हिंदी के उच्चारण पर पिटाई में विशेष अतर नहीं है। अतीत की औपनिवेशक मानसिकता आज भी इतना हावी है कि स्थिति मे गुणात्मक परिवर्तन नहीं नजर आ रहा। मैकाले की शिक्षा प्रणाली के विस्तार का ही यह दुष्परिणाम है कि पिछले कुछ दशकों में अंग्रेजी माध्यम स्कूल कुकुरमुत्तो की तरह उग आए हैं। हालत घर का न घाट का वाली है। ये स्कूल प्राय एक विराष्ट्रीयकृत व्यक्तित्व तैयार करने का काम करते हैं। अपनी जडो से कटा हुआ युवक समाज और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया मे जाहिर है खास योगदान नहीं कर सकता। जहा तक करुणा और प्रेम की भावना उत्पन्न करने का प्रश्न है उसके बारे मे जितना कम कहा जाए वही अच्छा। वास्तविकता तो यह है कि अपने आप मे इन शब्दो का कोई अर्थ नहीं। अधिक नहीं केवल अमेरिका न्यूजीलैंड कनाडा आस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका का पिछली कुछ शताब्दियो का इतिहास देखा जाए तो करुणा और प्रेम के प्रचार की धज्जिया उड जाएगी।

अग्रेजी भाषा की कुछ से उपयोगिता है और आज वह एक अतरारष्ट्रीय सपर्क भाषा बन चुकी है। लेकिन भारत मे जिस तरह अग्रेजी पढाई जा रही है और तथाकथित अग्रेजी माध्यम स्कूल जीवन की सफलता की कुजी बन बैठे हैं वही सर्वथा अनुचित है। यह हमारी सास्कतिक अस्मिता पर प्रहार भी है। नारलीकर जैसे विद्वानो का तो मत है कि प्रारभिक शिक्षा मातृभाषा मे ही दी जानी चाहिए। अब यह सिद्ध है कि बालक प्रारभिक दौर में अपनी भाषा मे बहुत तेजी से ज्ञान ग्रहण करता है। चीन और रूस सहित विश्व के अनेक देशो का भी यही अनुभव है। इन देशो की विज्ञान के क्षेत्र मे उप–लब्धिया किसी विदेशी भाषा की बदौलत नहीं हैं। पिलखुवा के मिशनरी स्कूल में हुई घटना हमारी सामाजिक बीमारी का एक लक्षण है। शताब्दियो की दासता से उत्पन्न यह बीमारी आसानी से दूर नहीं होने वाली। यदि यह अहसास पूरे समाज मे हो कि एक तरह की मानसिकता और शिक्षा प्रणाली के कारण पूरे राष्ट्र का क्षरण हो रहा है तो स्थिति मे परिवर्तन सभव हो सकता है।

****

विदेशी कंप्यूटर कम्पनी ने भी माना हिन्दी का लोहा

रंजन कुमार सिंह

हिंदी को विज्ञान एव तकनीकी की भाषा न समझने वालो को एक और झटका लगने वाला है। कम्प्यूटर पर हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं मे तो पहले से काम किया जाता रहा है और अब तो कम्प्यूटर की सचालक प्रणाली के ही हिंदीकरण की योजना बनाई जा रही है।

सबसे बडी बात यह है कि योजना सरकार द्वारा नहीं तैयार की गई है बल्कि कम्प्यूटर के क्षेत्र मे विश्व की अग्रणी आइ०बी०एम कारपोरेशन ने इस महत्वाकाक्षी परियो[illegible]र काम करने का निर्णय लिया है। टाटा इफौमेशन सिस्टम लिमिटेड के बैनर तले इस परियोजना को कार्यरूप दिया जाएगा। टाटा इर्फोमेशन सिस्टम्स लिमिटेड (टी०आई०एस०एल) अमेरिकी कम्पनी आई०बी०एम तथा टाटा समूह की कम्पनी टाटा कसलटेसी सर्विसेज का सयुक्त उद्यम है।

एशिया प्रशात क्षेत्र और खासकर भारत मे सॉफ्टवेयर के उभरते बाजार के मद्देनजर आई०बी०एम कारपोरेशन ने जब यहा अपना कार्यालय स्थापित किया था तभी उसका नजरिया साफ हो गया था और अब अपने दो विश्व प्रसिद्ध सॉफ्टवेयरो–ओएस/२ तथा पीसी–डॉस को मूल रूप से हिंदी मे लाने का फैसला करके उसने जतला दिया कि यहा के बाजार मे वह दूसरी विश्व प्रसिद्ध कम्पनी माइक्रोसॉफ्ट से टक्कर लेने के लिए कमर कस चुका है।

यह एक इत्तेफाक ही है कि सॉफ्टवेयर के क्षेत्र मे जहा माइक्रोसॉफ्ट कारपोरेशन विश्व की नबर एक कम्पनी है वहीं हार्डवेयर के क्षेत्र मे यह स्थान आई०बी०एम को प्राप्त है। लेकिन आई०बी०एम कारपोरेशन अब मूलत हार्डवयेर कम्पनी के तौर पर अपनी छवि उतार फेकना चाहता है। इसी दिशा मे पहल करते हुए आई०बी०एम ने पहले तो सॉफ्टवेयर क्षेत्र की एक अन्य अग्रणी कम्पनी लोटस कारपोरेशन का अधिग्रहण किया और फिर माइक्रोसॉफ्ट के ख्यातिलब्ध उत्पादो एमएस डॉस तथा एमएस विंडोज के मुकाबले क्रमश पीसी डॉस तथा ओएस/२ को खडा करने की कोशिश की। हालाकि इसी दौरान/ माइक्रोसॉफ्ट के मालिक बिल गेटस अपनी कम्पनी की कमाई की बदौलत अपना नाम दुनिया के सबसे धनी आदमी के तौर पर दर्ज कराने मे सफल रहे और बाजी आई०बी०एम कारपोरेशन के हाथ से खिसकती नजर आई।

इस पटखनी के सबक लेते हुए आई०बी०एम कारपोरेशन ने अपनी नीतियों पर पुनर्विचार शुरू कर दिया है और अपने सॉफ्टवेयरो के लिए विभिन्न स्थानीये भाषाओं के बाजारों की सभवानाए टटोल रहा है। ऐसे में उसका ध्यान एशिया प्रशात क्षेत्र और विशेष तौर से भारत पर जाता यह लाजिमी ही था।

यह एक दुखद पहलू ही है कि लगभग तमाम विश्वस्तरीय सॉफ्टवेयरो के भाषाई सस्करण यूरोपीय तथा धुर पूर्व एशियाई देशो को ध्यान मे रख कर तो तैयार किए जाते रहे लेकिन दक्षिण पूर्व तथा पश्चिम एशियाई देश उनेस अछूते ही रहे। अब जब आई०बी०एम का ध्यान इस क्षेत्र तथा उनकी स्थानीय भाषाओ की तरफ गया है तो यह उसे ग्लोबल सोच को नहीं बल्कि इस बाजार की ताकत को ही रेखाकित करता है।

फिलहाल देश मे औसतन प्रति हजार व्यक्ति पर एक कम्प्यूटर है। आई०बी०एम का मानना है कि यदि अतर्राष्ट्रीय स्तर के सॉफ्टवेयरो के भाषाई सस्करण तैयार किए जाए तो इस क्षेत्र मे कम्प्यूटर का प्रयोग बढा कर उसे हर हजार व्यक्ति पर दस के औसत तक लाया जा सकता है। इसके लिए वह मात्र सतह तक न रह कर सीधे जड तक पहुचने की तैयारी कर रहा है। और इसी कारण हिंदीकरण की शुरुआत उसने एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर से न करके आपरेटिग सिस्टम से ही करने का फैसला किया है। वैसे भी विभिन्न भाषा सस्करण पहले से ही बाजार मे उपलब्ध रहे हैं लेकिन यह पहला मौका होगा जब कप्यूटर की सचालक प्रणाली विशुद्ध रूप से हिंदी में काम कर सकेगी। मतलब यह कि कम्प्यूटर को अब तमाम निर्देश हिंदी मे दिए जा सकेगें।

बहुत सभव है कि आई०बी०एम कारपोरेशन की नजर भारत सरकार की राजभाषा नीति की तरफ हो जिसके तहत सभी सरकारी कार्यालयो मे द्विभाषी कम्प्यूटर लगाना आवश्यक है। निश्चय ही सरकारी खरीद किसी भी विक्रेता के लिए एक बडा सबल है लेकिन केवल इसी पर आश्रित रह जामा इस बाजार की सभावनाओ को नकार देना होगा। देश मे 'चार्टर्ड एकाउटेट' का एक बडा वर्ग आज यदि कारोबार 'बैलेस शीट तैयार कर रहा है तो उससे भी बडा कारोबार आज मुनीमजी के बही खातो में उलझा हुआ है। इस वर्ग को निश्चय ही विशुद्ध हिंदी के पहले कम्प्यूटर का इतजार है।

आश्चर्य नहीं होगा कि हिंदी में अपनी इस पहल के बाद आई०बी०एम कारपोरेशन अन्य भारतीय भाषाओ मे भी अपने आपरेटिग सिस्टम' के सस्करण निकले। गैर हिंदी प्रदेशो मे भाषाई चेतना जितनी जागृत है उतनी हिंदी प्रदेशों मे नहीं। यदि पुस्तको की तरह सॉफ्टवेयरो के भाषाई सस्करण भी हिदी सस्करणों के मुकाबले ज्यादा लोकप्रिय हो तो इसमें आश्चर्य क्यो ?

क्या १४ सितम्वर का स्वप्न साकार हो सकेगा ?

भारत के राष्ट्रीय इतिहास मे १४ सितम्बर सन् १६४६ का एक विशेष महत्व है। इस दिन स्वतत्र भारत की सविधान सभा ने सर्व सम्मति से सर्वगुणआगरी नागरी लिपि मे लिखित हिन्दी को सघ की राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित किया था। क्योकि पिछली कई शताब्दियो के मुस्लिम और अग्रेजो के शासनकाल में इस देश की नैसर्गिक लोकभाषा होते हुए भी हिन्दी की सरकारी अथवा राजकीय काम काज की भाषा के रूप में उपेक्षा की जाती रही थी अत देश के स्वतन्त्र होने के साथ ही उसको चिर प्रतीक्षित जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त हो जाने से प्रत्येक देश प्रेमी द्वारा उत्साहित और उल्लसित होकर गर्व और गौरव अनुभव किया जाना सर्वथा स्वाभाविक था।

परन्तु हमारे देश के राजनीतिक दुश्चक्र के कारण कालान्तर मे उक्त उत्साह और उल्लास क्षणिक और अस्थायी ही प्रतीत होने लगा और ज्यों ज्यो समय व्यतीत होता जा रहा है हिन्दी सघ की राज–भाषा तो क्या सर्वथा हिन्दी भाषी राज्यों की भी पूर्ण रूप से राज–भाषा हो सकेगी यह 'हनोज दिल्ली दूरस्त' ही मानी जाती रहेगी।

जिस प्रकार त्रेता युग में महाराज दशरथ द्वारा राम को राजगद्दी दिये जाने पर भी कैकेई ने उनको उक्त पद से १४ वर्ष के लिए पृथक करके वनवास दे दिया था उसी प्रकार सविधान सभा ने एक हाथ से हिन्दी को राजभाषा के पद पर राज्याभिषेक करके भी दूसरे हाथ से आरम्भ मे १५ वर्ष के लिए और बाद मे शनै शनै प्राय सदैव के लिए उसको उससे वचित किया जाता रहा है।

१४ सितम्बर सन ४६ को सविधान के अनुच्छेद ३४३ खण्ड (१) मे जहा एक ओर सघ की राज–भाषा हिदी देवनागरी होगी का प्रावधान किया गया था वहा दूसरी ओर उसी अनुच्छेद के खण्ड (२) (१) में यह प्रावधान करके कि इस सविधान के प्रारभ से १५ वर्ष की कालावधि के लिए सघ के उन सब राजकीय प्रयोजनों के लिए अग्रेजी भाषा प्रयोग की जाती रहेगी जिनके लिए ऐसे आरम्भ के ठीक पहले वह प्रयोग की जाती थी सम्बन्धित अनुच्छेद की मूल भावना को ही नष्ट कर दिया गया।

उस समय यह प्रावधान १५ वर्ष के लिये दृष्टि से अपवाद रूप मे रखा गया था ताकि अनेक अहिन्दीभाषी राज्याधिकारी इस काल के दौरान हिन्दी का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकें परन्तु पूर्वोक्त राजनीतिक कुचक्र ने केवल केन्द्र में ही नहीं हिन्दी भाषी राज्यों तक मे ऐसी स्थिति पैदा कर दी कि प्रारम्भिक १५ वर्ष तो क्या उसके उपरान्त दूसरे १५ वर्ष तक तथा अब ६ वर्ष और व्यतीत हो जाने पर भी अग्रेजी सर्वत्र पटरानी बनी बैठी है और अभागिनी हिन्दी को दासी का दर्जा मिला हुआ है जबकि

शेष पृष्ठ ६ पर

भारत की समासिक संस्कृति और हिन्दी

डॉ० परमानन्द पांचाल

(५वें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन ४ अप्रैल से ८ अप्रैल १६६६ तक ट्रिनीडाड तथा टुबैगो में सम्पन्न हुआ। भारत सरकार की ओर से सम्मेलन में भाग लेने के लिए एक सरकारी प्रतिनिधिमण्डल भी भेजा गया। अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री माता प्रसाद भारतीय प्रतिनिधिमण्डल के नेता थे। डॉ० परमानन्द पांचाल ने भी सरकारी प्रतिनिधि के रूप में सम्मेलन में भाग लिया। डॉ० पांचाल जी ने सम्मेलन में जो आलेख पढ़ा वह यहा दिया गया है सम्पादक)

भारत और सस्कृति का अविच्छेद्य सम्बन्ध होता है। भाषा सस्कृति की वाहिका होती है मैडलवान ने ठीक ही लिखा है कि प्रत्येक सस्कृति का सारतत्व उसकी भाषा मे अभिव्यक्ति पा सकता है और पाया करता है। भाषा न केवल सस्कति का अविभाज्य अग है अपितु उसकी कुजी भी है। भाषा के बिना यदि सस्कति पगु है तो सस्कति के अभाव मे भाषा अधी। भारतीय सस्कृति विश्व की एक प्राचीनतम सस्कृति है। हजारो वर्षों की यात्रा करने और विभिन्न सघर्षों से गुजरने के बाद भी उसकी आभा धूमिल नहीं हुई है। प्रत्येक परिस्थिति घात और आघात उतार और चढाव को झेलत हुए भी वह एक रत्न की भाति दैदीप्यमान है। इसी रहस्यमयी चमत्कार से चकित होकर उर्दू के प्रसिद्ध कवि सर मोहम्मद इकबाल ने कहा था

"कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियो रहा है दुश्मन दौरे जहा हमारा।"

वह कौन सी बात है जिसके कारण इसका अस्तित्व और इसकी अस्मिता अक्षुण रही है। भारतीय सस्कति का मूल मत्र उसकी उदात्तता सहिष्णुता और समस्त वसुधा को एक कुटुब मानने मे है। सत्य की खोज इसका चरम लक्ष्य रहा है। किन्तु सत्य के सम्बन्ध मे यह भी कहा गया है एक सदविप्रा बहुधा वदन्ति एक सत्य को विद्वान अनेक प्रकार से कहते हैं। यही विचार धारा भारतीय सस्कति का प्राण स्पदन रही है और विभिन्नता मे एकता असत्य मे सत्य को ढूढती रही है भारतीय गगा की तरह प्रवाही समुद्र की तरह विशाल और गिरि शिखरों की भाति उदात्त है वह विद्या अविद्या प्रेय श्रेय अभ्युदय निश्रेयस द्यावा पृथ्वी सभी को आत्मसमा करती हुई निरतर आगे बढी है। अच्छे गुण कहीं से भी मिले उन्हे ग्रहण करने की लालसा इसमे रही है। ऋग्वद का यह अमर सदेश आ नो भद्रा कत्वा यन्तु विश्वत प्रत्येक दिशा से शुभ एव सुन्दर विचार हमे प्राप्त हो यही इसकी गुण ग्राहकता का प्रमाण हे हिन्दी इसी समासिक सस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है।

हिन्दी भाषा की सास्कृतिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए सर्वप्रथम हमें इसके भाषिक स्वरूप और इसके मुहावरे तथा लोकोक्तिया किसी भी जीवित भाषा के प्राण होते हैं। इसके पीछे उनका सास्कृतिक इतिहास बोलता है। ये जन सामान्य की भावनाओ की अभिव्यक्ति का समान रूप से माध्यम होते हैं। जिन घटनाओ और सामाजिक अनुभवो पर उनका निर्माण हुआ होता है वे उस भाषा को बोलने वालो के सस्कारो की साझी विरासत होते हैं किसी वर्ग विशेष की नहीं। ये मुहावरे और कहावते सास्कृतिक एकता की कसौटी है। यदि हम हिन्दी भाषा मे प्रचलित मुहावरों पर एक दृष्टि डाले तो हम देखेगे कि इनके पीछे जो जातिगत सस्कार छिपे हैं वे स्वत भारत की सामाजिक सस्कृति की कहानी कहते हैं जो किसी एक वर्ग सम्प्रदाय या धार्मिक मान्यताओ वाले वर्ग के लिए नहीं वरन सभी के लिए समान है।

हिन्दी के कुछ मुहावरो और लोकोक्तियों को देखिये "मुल्ला की दौड मस्जिद तक गए थे नमाज छुडाने रोजे गले पड गये मिल गई रोजी नहीं तो रोजा खुदा अपने घोडो को हलवा खिलाता है जब मिया बीवी राजी तो क्या करेगा काजी मुल्ला की मारी हलाल सत्तर चूहे खा के बिल्ली हज को चली तकदीर का सिकन्दर होना खैरात बटना ईद का चाद होना खलीफा बनना नमक हलाल होना कब्र में पाव लटकाना तौबा करना बाबा आदम के जमाने का आदि। ऐसे न जाने किने मुहावरे और लोकोक्तिया हमारी इसी मिली–जुली सस्कृति को वाणी देते हैं। इन मुहावरो को क्या हिन्दु, क्या मुसलमान सभी बोलते हे यही हिन्दी की सामाजिक सस्कति की विरासत है स्पष्ट है कि इनका प्रचलन इस्लामी सस्कारो से हुआ। किन्तु अब ये हिन्दी की धाती बन गए है और सभी वर्गो की समान रूप से अभिव्यक्ति का माध्यम है।

हिन्दी भाषा और साहित्य का समग्र इतिहास हमारी समन्वित सस्कृति का इतिहास है। इसक विकास मे आरम्भ से ही विभिन्न मतानुयाइयो और धर्मावलबियो का योगदान रहा है। हिन्दी की सवा हिन्दी भाषियो ने ही नहीं हिन्दीतर मनीषियो और विदेशियो ने भी की है। साहित्य की इस गगा जमुना धारा के प्रवाह मे मा सरस्वती के न जाने कितने उपासको ने अपने श्रद्धा कलश उडेले हैं न जाने कितने भगीरथ पुत्रो ने इसके लिए कठोर परिश्रम किए है और न जान किनने सतो फकीरो के उपदशो की यह वाग्धारा रही है

हिन्दी भाषी जहा भी गए उन्हाने वहा अपनी सस्कति और भाषा को अक्षुण्ण बनाय रखने के सतत प्रयास किए जिसका उदाहरण आज हम ट्रिनीडाड मारीशस फीजी गयाना सूरीनाम ओर दक्षिण अफ्रीका आदि देशो मे प्रत्यक्ष रूप मे देख रहे ह इन्ही आप्रवासी भारतीयो ने हिन्दी की इस पताका का इन देशो मे फहराय रखा है। हमे हिन्दी की इस सजीवनी शक्ति का बनाये रखना है। इसी म इसकी लाकप्रियता निहित है

२३२ ए पाकेट १ मयूर विहार
फेज–१ नई दिल्ली ११००६१

हिन्दी : राष्ट्रीय एकता का सेतु

पृष्ठ ४ का शेष

के सारे उत्तर भारत को एकता के सूत्र मे बाध दिया है और आने वाले समय मे उत्तर दक्षिण भारत को एक पक्के सूत्र मे बाध देगी।

पन्द्रहवीं शताब्दी के मैथिली कवि विद्यापति हिन्दी भाषी जगत की पूर्ववत सीमा बिहार मे फले फूले लेकिन उन्हे केवल हिन्दी का कवि ही नही पुकारा जाता है बग तथा असम प्रति के लोग भी उन पर उतना ही अधिकार मानते है इसी प्रकार मीरा बाई हिन्दी भाषी जगत की पश्चिम सीमा पर स्थित राजस्थान मे पैदा हुइ लेकिन उन्हें गुजराती की कवियत्री भी माना जाता है और बग तथा असम के लोगो का विद्यापति तथा थार मरुभूमि की कोकिला मीरा पर गुजराती लोगो के अधिकार को झुठला देना सरल नहीं है इसका कारण यह है कि बिहार प्रदेश के पार हिन्दी बगाली मे बदल जाती है और राजस्थान की परिधि पार करने पर हिन्दी का मिश्रण गुजराती मे हो जाता है। सारे उत्तरी भारत मे एक ही नामरहित भाषा है और सब भाषाये जिनमे हिन्दी भी शामिल है उस नामरहित भाषा की प्रतिरूप है हिन्दी के रस अथाह सागर मे अधिक सार्वभौमिकता के दर्शन सत कवियो के धर्म क निगम पक्ष पर बल देन क फलस्वरूप ही है

नवज्योति से साभार

क्या १४ सितम्बर का स्वप्न साकार हो सकेगा ?

पृष्ठ ८ का शेष

केन्द्र की प्राय सभी महत्वपूर्ण घोषणाऐ अग्रेजी मे होती है। विदेशी राष्ट्र के साथ पत्र व्यवहार तथा करार भी अग्रेजी भाषा क माध्यम से ही किये जाते है यहा तक कि इस बार को छोडकरपहले के प्राय अधिकाश राष्ट्रपति १५ अगस्त और २६ जनवरी को राष्ट्रीय महत्व के भाषण अग्रेजी मे दिया करते थे और फिर उनका अनुवाद हिन्दी मे कराया जाता था जिससे हिन्दी का अपमान ही होता था। बाहर के देशो मे ता हिन्दी का नाम मात्र को भी प्रवेश है ही नहीं स्वय अपने देश मे भी उसे कितना सम्मान मिलता है यह अभी कुछ दिन पूर्व भारत मे आयोजित एशियाई खेल और निर्गुट राष्ट्रो के सम्मेलन के दौरान देखने को मिला था जब उनका समूचा कार्य और सूचनापट तक हिन्दी मे न होकर हमारी दीर्घकालीन दासता की दयोतक अग्रेजी मे ही देखने को मिले थे।

अब भी दूरदर्शन के द्वारा जो राष्ट्रीय कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है उसका अधिकाश भाग अग्रेजी भाषा मे प्रदर्शित किया जाता है। इतना ही नहीं कुछ दिन पूर्व जब सरकार ने आल इण्डिया रेडियो के स्थान पर आकाशवाणी का प्रयोग प्रचलित किया था नो तमिलनाडु के शासको की एक ही घुडकी मे उक्त हिन्दी के शब्द को वापिस लेकर अग्रेजी शब्द का प्रयोग चालू कर दिया इससे भी राज भाषा के गौरव को ठेस ही पहुची थी।

अब तो स्थिति यह हो गई है यदि कभी कोई हिन्दी सेवी सविधान के उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त समूचे देश मे हिन्दी भाषा का प्रचलन करने का प्रश्न उठाता है तो उस कट्टर हिन्दी पन्थी कहकर उसको अहिदी भाषिया पर बल पूर्वक हिन्दी थोपने वाला तथा देश की एकता को भग करने वाला कहा जाता है।

हिन्दी को सघ की राज भाषा बनाने के विरोध मे जो सबसे बडा षडयन्त्र रचा गया था वह ससद मे की गई वह धोषणा थी कि जब तक अहिन्दी भाषी राज्य हिन्दी को ग्रहण न करे तब तक सहभाषा के नाम से अग्रेजी चलती रहेगी तथा यह भी कि जब तक एक भी राज्य हिन्दी को अपने राज्य की राज भाषा धोषित नहीं करे वह सघ अर्थात पूरे देश की राज भाषा नहीं बन सकती।

इसका स्पष्ट परिणाम यह होगा कि नागालैण्ड जैसे राज्य जो अग्रेजी को ही अपनी राज भाषा स्वीकार कर चुके हैं कभी भी हिन्दी को राजभाषा नही मानेगे फलत हिन्दी सघ की भी राज भाषा नहीं हो सकेगी।

इससे ही यह प्रश्न उभर कर ऊपर आता है कि क्या १४ सितम्बर का वह स्वप्न जो स्वतत्र भारत की राज-भाषा हिन्दी होने के रूप मे देखा या कभी भी साकार हो सकेगा ?

युगलकिशोर चतुर्वेदी

आज की आवश्यकता
समग्र क्रान्ति

सत्याथ प्रकाश के पाच समुल्लासो मे व्यक्तिगत अभ्युदय की चर्चा के बाद छठे समुल्लास मे जब समष्टि अभ्युदय की बात प्रारम्भ होती है तो स्वामी जी सर्व प्रथम राज धर्म की व्याख्या करते हैं। राजधर्म से ही राजनीति का महत्व स्पष्ट है।

स्वदेश की चर्चा करने समय ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी जी के मुख से देशभक्ति का स्रोत फूट निकला है। जहा कहीं भी पराधीनता से पैदा हुई दुर्दशा का वर्णन आया ऋषि के हृदय की व्यथा फूट पडती है। देश समाज अथवा राष्ट्र का कायाकल्प करने के लिए उस युग पुरुष ने जिस विद्रोह विप्लव या क्रान्ति का आह्वान किया उसी वातावरण की आज आवश्यकता है। उस विद्रोह और क्रान्तिकारी भावना को पुन जगाया जाए यही आज की आवश्यकता है।

वन्देमातरम् रामचन्द्र राव

विश्व भाषा के रूप में हिन्दी

पृष्ठ ३ का शेष

वैसे भारत के विदेश मत्रालय के अधिकारियो से यह आशा कम ही है कि हिन्दी भाषा उनकी प्राथमिकता सूची मे आ सकेगी। अतर्राष्ट्रीय रिश्तो को देखने का उनका नजरिया वैसा नहीं है जैसा किसी भारतीय का होना चाहिए। लेकिन ब्रिटेन स्थित भारतीय उच्चायुक्त लक्ष्मीमल सिघवी की पूरे समय सम्मेलन मे उपस्थिति आशा जगाती है। वे राजनयिक के साथ ही विधिवेत्ता और साहित्य प्रेमी हैं। देखना है कि वे किस तरह विदेश मत्रालय को अतर्राष्ट्रीय हिन्दी सचिवालय की स्थापना के लिए प्रेरित करते हैं। वैसे माग यह भी है कि भारतीय मूल के आप्रवासियो से सबधित देशो के लिए एक केन्द्र जल्दी ही स्थापित कर दिया जाए। मुझे नही पता कि किसी भारतीय राजदूत ने ऐसा कोई सुझाव अपने मत्रालय को भेजा है। हिन्दी के प्रति ट्रिनीडाड की ललक का आभास इस तथ्य से हो जाता है कि वहा १९८६ मे हिन्दी निधि की स्थापना के बाद १९९२ मे अतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन आयोजित किया गया। चार वर्ष बाद पचम विश्व हिन्दी सम्मेलन की मेजबानी का अवसर मिला। ट्रिनीडाड मे भारतवशिया से मिलना एक सुखद और आत्मीय अनुभूति का क्षण था। भारत और भारतीयता की अत सलिला का बहते देखकर आनन्द होना स्वाभाविक है। जो वातावरण बना है उसके पीछे कुछ वैयक्तिक प्रयास और अशासकीय स्तर पर स्वय सवी प्रयास ही दिखलाई दिये। कही कहीं जैसे अमेरिका मे तीन हिन्दी सस्थानो का कार्यरत रहना समन्वय के अभाव को दर्शाता है। क्या ये लाग भारत के लिए एक शक्तिपुज सिद्ध नही हो सकते ? यदि हा तो भारत सरकार को पहल करनी ही चाहिए। लेकिन इस बारे मे हमारी सरकार का रवैया उत्साबर्धक नही है। यह एक सच्चाइ है कि अमेरिका मे सम्मेलन आयोजित करने के प्रयास ६ वर्षों से चल रहे थे। वहा के आयोजको की एक ही इच्छा थी कि भारत के राष्ट्रपति अथवा प्रधानमत्री सम्मेलन का उद्घाटन करने की स्वीकृति दे। लेकिन वह स्वीकृति सिद्धात के आगे व्यवहार तक नहीं जा सकी। इसी बीच दो सम्मेलन हो गए। बीच मे काफी लम्बी अवधि बीत गई। भाषा और सस्कृति के सबध मे सरकारी दृष्टिकोण क्या इसमे प्रतिबिम्बित नहीं होता ? ऐसी स्थिति मे हिन्दी सस्थाओ को पहल करनी चाहिए और सरकार उनको सहयोग प्रदान करे।

इस सदर्भ मे अतर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन का जिक्र करना आवश्यक है। दसवा सम्मेलन चीन मे शेधने नगर मे हो रहा है। चीन और भारत के रिश्ता के बीच यह अशासकीय प्रयास सास्कृतिक सतु का निर्माण कर रहा है। यदि लल्लनप्रसाद व्यास इतना बडा विश्वव्यापी कार्य कर सकते है। और अतराष्ट्रीय सहयोग परिषद् तथा प्रवासी भारतीय समाज दुनियाभर मे फैले भारतीयो को एक सूत्र मे बाधने का सार्थक प्रयास कर सकती है तो भारत सरकार के विदेश मत्रालय को इन अशासकीय सस्थाओ का मददगार बनना चाहिए। सरकार का अवलब पाकर ये स्वय सेवी प्रयास गति पकड लेगे जिसका लाभ अततोगत्वा अतर्राष्ट्रीय सदर्भ मे भारत सरकार की भूमिका को ही मिलेगा। और तब लुफ्तहसा अमरीकी एयरलाइस ब्रिटिश वेस्टइडिज एयरलाइस और ब्रिटिश एयरवेज के विमानो मे भी हिन्दी की गूज सुनी जा सकेगी। हिन्दी फिल्मो और प्रकाशनो को विस्तृत बाजार प्राप्त होगा।

मत्री/सचालक
मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
हिन्दी भवन भोपाल–४६२००२

हिन्दी प्रेमी डॉक्टर

नई दिल्ली के प्रसिद्ध लेडी हॉडिग मेडिकल कालेज के १३ मार्च १९९९ को हुए वार्षिक उत्सव मे रेजिडेंट डॉक्टर एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ० आनन्द शुक्ला ने अपना भाषण विशुद्ध हिन्दी मे देकर अन्य डॉक्टरो के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। जबकि कार्यक्रम का सचालन धारा प्रवाह अग्रेजी भाषा मे हो रहा था।

डॉ० शुक्ला ने अपना हिन्दी प्रेम उस मेडिकल कालेज मे झलकाया जिसकी न केवल बुनियाद अग्रेजो ने रखी थी बल्कि आज भी उसका नाम एक वायसराय की पत्नी के नाम पर (लेडी हॉडिग) है। अपने भाषणमें उन्होने एक भी शब्द अग्रेजी का न बोलकर यह बता दिया कि उच्च शिक्षा मे हिन्दी का सम्मान आज भी बरकरार है।

जगन्नाथ
सयोजक राष्ट्रभाषा कार्य
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्
सरोजिनी नगर नई दिल्ली–११००२३

डॉ० भवानी लाल भारतीय वेद प्रचारार्थ होलेण्ड यात्रा पर

आर्य लेखक परिषद् के अध्यक्ष डॉ० भवानी लाल जी भारतीय ३ मास के लिए वेद प्रचारार्थ हालेण्ड यात्रा पर जा रहे हैं। वे यूरोप के अनेक देशो की भी वेद प्रचारार्थ यात्रा करेगे। स्वदेश २१ दिस० ९९ के बाद लौटेगे।

ओलम्पिक खेलों में भारत के हारने का मुख्य कारण-अंग्रेजी

रामेश्वर दयाल गोयल

क्या भारत का कोई भी बुद्धिजीवी ऐसा उदाहरण दे सकता है कि जिन खिलाडियो ने ओलम्पिक मैं स्वर्ण पदक जीते हैं उनके देश के बच्चो के लिए बचपन से ही किसी विदेशी भाषा का पढना अनिवार्य हो ? इस पृष्ठभूमि में ओलम्पिक मे भारत के हारने का कारण साफ है कि यहा के बच्चो को सारा दिन अंग्रेजी रटाई जाती है। स्कूल से आने के पश्चात उसे दो घन्टे घर मे पढाई (होमवर्क) कराया जाता है। फिर उसके पास खेलने का समय ही कहा बचता है ?

अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा के कारण आज छोटे छोटे बच्चो की आखो पर चश्मे लग गये हैं। जिन बच्चो को बचपन से ही किताबी कीडा बना कर उनकी शारीरिक एव मानसिक उन्नति को रोक दिया जाये और उन्हे विदेशी भाषा का गुलाम बना दिया जाये उन बच्चो से हम यह आशा करे कि ये ओलम्पिक खेलो मे स्वर्ण पदक जीते यह हमारी मूर्खता नहीं तो क्या है ? कितने दुख और आश्चर्य की बात है कि अर्जुन जैसे धनुर्धारी के देश का सपूत आज निशाना लगाने मे विश्व के सभी देशो से पीछे खडा है। वाह री भारतीय राजनीति तेरा विश्व मे कोई जवाब नहीं जिसने सम्पूर्ण देश को अंग्रेजी का गुलाम बना दिया और देश की प्रतिभा को समूल नष्ट कर दिया।

दुख की बात तो यह है कि खेल सिखाने तथा उसमे दाखला कराने वाले प्राय सभी कालेजो तक मे प्रवेश परीक्षा तथा शिक्षा का माध्यम केवल अंग्रेजी है। यही कारण है कि इतनी अधिक जनसख्या वाले विशाल देश के होते हुए भी खिलाडियो का चयन अंग्रेजी सुविधा वादी परिवारो तक ही सीमित रह जाता है भारत की ग्रामीण परिवेश से आने वाली युवा पीढी परम्परागत रूप से अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ और बलवान होती है। इन युवको को उन्हीं की भाषा मे खेल प्रशिक्षण की आवश्यकता है। विदेशी भाषा के मझधार मे फसाकर इनकी अन्तर्हित ऊर्जा को समाप्त किये जाने का षडयन्त्र तुरन्त बन्द होना चाहिए।

मेरा यह दावा है कि जब तक इस देश की शिक्षा मे अंग्रेजी की अनिवार्यता किसी भी विषय अथवा स्तर तक बनी रहेगी इस देश के बच्चे अन्य स्वतन्त्र देशो के बच्चो की भाति ओलम्पिक खेलो मे स्वर्ण पदक कदापि नहीं जीत सकते। यदि देश के बच्चो को हृष्ट पुष्ट एव खिलाडी बनाना है तो शिक्षा के प्रत्येक स्तर तथा विषय से अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त करना होगा सम्पूर्ण देश को नशा मुक्त करना होगा नैतिक शिक्षा पर बल देना होगा और अंग्रेजी पर व्यय होने वाले धन को स्वास्थ्य एव खेल शिक्षा पर खर्च करना होगा तभी देश के बच्चो से हम ओलम्पिक खेलो मे स्वर्ण पदक जीतने की आशा कर सकते हैं अन्यथा नहीं।

भारतीय कषि अनुसधान समिति
११३० सदर करनाल-१३२००१

सभी पीडित बहनों की रक्षा का संकल्प लें

कानपुर रक्षाबन्धन के दिन केवल बहन का ही नहीं अपितु दुखी व पीडित बहनो की रक्षा का सकल्प लेना चाहिए। आज हमारे देशमे महिलाये सबसे अधिक दुखी पीडित हैं उनके उत्थान के लिए पुरुषो को प्रयत्न करना चाहिए।

उक्त विचार केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान देवीदास आर्य ने आर्य समाज व स्त्री आर्य समाज गोविन्द नगर के तत्वावधान मे आयोजित श्रावणी तथा रक्षाबन्धन समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रकट किये श्री आर्य ने कहा कि आर्य समाज सदैव सामाजिक कुरीतियो रूढिवादी अन्ध विश्वास और महिलाओ पर होने वाले अत्याचार का विरोध करता रहा है। आज से ५७ वर्ष पहले आर्य समाज ने हैदराबाद निजाम के धार्मिक अत्याचारो के विरुद्ध सत्याग्रह करके निजाम को झुकने पर विवश कर दिया था समारोह मे हैदराबाद दक्षिण सत्याग्रह के शहीदो को भी श्रद्धाजली भेट की गयी। तथा इस सत्याग्रह के जीवित सत्याग्रही स्वतन्त्रता सेनानी श्री देवीदास आर्य का अभिनन्दन किया गया समारोह मे सर्वश्री जाति भूषण बाल गोविन्द आर्य प [illegible] शास्त्री स्वामी प्रज्ञानन्द श्रीमती दर्शना कपूर कैलाश मोगा वीरा चोपडा आदि ने विचार प्रकट किये।

मत्री
गलगोविन्द आर्य

वेद मन्दिर हरदोई मे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं श्रावणी महोत्सव

वेद मन्दिर हरदोई मे २८ अगस्त से ४ सितम्बर तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एव वेद प्रचार सप्ताह का कार्यक्रम समारोह पूर्वक मनाया गया इस अवसर पर आर०एन०भाटिया जिलाधीश हरदोई मुख्य अतिथि के रूप मे पधारे श्री शिव कुमार शास्त्री हरदोई श्री नन्द किशोर अवस्थी श्री अनन्त भिक्षु जी श्री रमेश चन्द्र आचार्य श्रीमती रश्मी आचार्य तथा श्री अवधेश कुमार जी ने अपने ओजस्वी विचारो के द्वारा श्रोताओ को लाभान्वित किया यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान श्री कुन्दन लाल जी वैद्य थे। सैकडो लोगो ने इस अवसर पर उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त किया कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा

आर०बी०सक्सेना
श्रीमती सुधा विद्यावाचस्पति

हिन्दी–महिमा

श्रीधर शर्मा 'हलधर'

अंग्रेजो को भगा दिया अंग्रेजी हमे भगानी है।
भारत छोडो आन्दोलन मे दी हमने भी कुर्बानी है।
इस कलक को दफना देगे भीष्म प्रतिज्ञा ठानी है।
राष्ट्र भाषा हिन्दी है अपनी हम सब हिन्दुस्तानी है।

भारत का गौरव है हिन्दी हम सब हिन्दुस्तानी है।
सरल सुबोध सहज है हिन्दी जन जन की ये वाणी है।

कहने को आजाद है हम आजादी अभी अधूरी है।
अंग्रेजी की दासी हिन्दी ये भी कैसी मजबूरी है।
अपना देश है अपना शासन अंग्रेजी राज चलाती है।
क्योंकर भारतभूमि अपनी इण्डिया कहलाती है।

भारत को भारत कहने की मन मे हमने ठानी है।
सत्य शुभद शिवम है हिन्दी जन जन की ये वाणी है।।

हिन्दी देश के रहने वाले सब जन हिन्दुस्तानी है।
धर्म जाति का भेद नहीं यहा रिश्ते सब इन्सानी है।
सत्य अहिसा प्रेम शान्ति को जन जन ने अपनाया है
अनेकता मे एकता को सच करके दिखलाया है।

साक्षर हो सब भारतवासी जन जन की ये वाणी है।
सुन्दर सुखद सरल है हिन्दी जनता की यह वाणी है।

देवो की भाषा है हिन्दी हम सब देव समान है।
देवनागरी लिपि हमारी छन्द रसो की खान है।
जो पढे लिखे वे वही हम बोले कितनी सुन्दर वाणी है।
उच्चारण ध्वनि शुद्ध हमारी भाषा हिन्दुस्तानी है।

सारी दुनिया की वाणी से सुन्दर अपनी वाणी है।
राष्ट्र भाषा हिन्दी है अपनी हम सब हिन्दुस्तानी है।

पोस्टल रजि ट्रेशन व डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 15 9 96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/96
R N No 626/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 12/13-9 1996

आर्य समाज शकरपुर दिल्ली में

वेद-प्रचार की धूम

आय समाज मन्दिर शकरपुर डी० ११० दिल्ली मे १ सितम्बर से ५ सितम्बर तक वेद–प्रचार एव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रतिदिन चारो वेदो के शतक का यज्ञ डा० धर्मदेव शास्त्री एम०ए० महोपदेशक द्वारा कराया गया। यज्ञ मे शकरपुर के अनेक स्त्री पुरुषो ने यजमान बनकर वेद प्रचार सप्ताह को सफल बनाया। यज्ञ के उपरान्त यज्ञ के ब्रह्म जी ने देवयज्ञ की महत्ता श्रावणी उपाकर्म और श्रीकृष्ण जन्म पर प्रकाश डाला जिससे लोगों मे यज्ञ के प्रति भावना जागृत हुई।

श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी ने इस अवसर पर कविता द्वारा रक्षाबन्धन और श्रीकृष्ण पर अपने उदगार रखे जिससे सभी जन प्रभावित हुए।

पडिता प्रतिभा वशिष्ठ श्री नन्दलाल निर्भय श्री ओमप्रकाश रूहिल व श्रीमती विद्यावती के सुन्दर भजन हुए। श्री मिश्रीलाल गुप्ता प्रधान व श्री राम निवास कश्यप मत्री ने सभी का धन्यवाद किया और प्राप्त सदुपदेश को आगे बाटने तथा श्रीकष्ण के गुणो को अपनाने का आग्रह किया।

आर्य सम्मेलन का आयोजन

आर्य समाज खैर थल जिला अलवर (राजस्थान) के सयोजन मे राजस्थान की नगरी खैर थल मे दिनाक १४ १५ अक्टूबर ६६ को आर्य सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

आर्य समाज खैर थल के महामत्री श्री किशोरी लाल आर्य ने बताया है कि इस अवसर पर वृहद यज्ञ किया जाएगा। इस सम्मेलन मे देश के बडे बडे आर्य नेता विद्वान सन्यासी उपदेशक एव भजनोपदेशक भाग लेगे।

सम्मेलन की तैयारिया जोर शोर से चल रही हैं कार्यकर्त्ताओ मे भारी उत्साह नजर आ रहा है।

नन्दलाल निर्भय पत्रकार
आर्यसदन बहीन (मेवात) फरीदाबाद

श्रद्धाज्जलि सभा

आर्य समाज लल्लापुरा–वाराणसी के सदस्य श्री वेदप्रकाश आर्य पुत्र श्री बुद्धदेव आर्य के ट्रक दुर्घटना मे दि० २१ अगस्त ६६ को असामयिक निधन पर आज आर्य समाज के साप्ताहिक सत्सग के पश्चात शोक सभा हुई। इस सभा मे श्री ज्वलन्त कुमार शास्त्री अमठी श्री प्रशस्य मित्र शास्त्री रायबरेली श्री राजेन्द्र प्रसाद शास्त्री कु० माधुरी रानी श्री रामगोपाल आर्य श्री मेदालाल आर्य एव सभी अधिकारियो सदस्यो विद्वानो व अतिथियो ने श्री आर्य के सरल स्वभाव मृदुभाषी एव आर्य समाज के हितेषी भाव का स्मरण करते हुए उन्हे श्रद्धाज्जलि दी।

ईश्वर से दिवगत आत्मा को सदगति तथा शोकाकल परिवार जनो को धैर्य धारण करने की प्रार्थना की गइ

विजय कुमार आर्य

उपनयन सस्कार समारोह

श्रावणी के पर्व पर आर्ष गुरुकुल नोएडा मे उपनयन सस्कार २८ अगस्त को सम्पन्न हुआ।

श्रावणी के अवसर पर गुरुकुल के आचार्य डा० जयेन्द्र कुमार ने गुरुकुल के ब्रह्मचारियो को यज्ञोपवीत धारण करवाया तथा नगर के अन्य लोगो का भी उपनयन सस्कार किया।

उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए उन्होने कहा कि भारतीय सस्कृति मे शिखा और सूत्र का धार्मिक महत्व के साथ–साथ वैज्ञानिक महत्व भी है।

प्रधान डा० मुमुक्षु आर्य जी ने गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर जोर देते हुए कहा कि राष्ट्र उत्थान मे गुरुकुलो की भूमिका महत्वपूर्ण है। आचार्य जयेन्द्र कुमार जी ने सभी का धन्यवाद करते हुए ब्रह्मचारियो को अनुशासित रहने का उपदेश दिया।

डा० मुमुक्षु आर्य
प्रधान

यजुर्वेद पारायण यज्ञ

प्राचीन परम्परा का निवाह करते हुए आर्य समाज नोएडा और आर्ष गुरुकुल नोएडा मे १२ से १८ अगस्त तक यजुर्वेद परायण यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ के ब्रह्म गुरुकुल के प्राचार्य डा जयेन्द्र कुमार रहे। इस कार्यक्रम मे नोएडा की यज्ञ प्रेमी जनता ने बढ चढ कर भागेदारी की

यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर आयोजित विशिष्ट समारोह मे मुख्य महानुभावो मे सुश्री डा० शशिप्रभा कुमार मुख्य अतिथि श्री लालवानी जी आचार्य अमृतलाल जी आर्य समाज के प्रधान डा मुमुक्षु आर्य तथा अन्य समाज सदस्य उपस्थित थे।

योगी राज कृष्ण राष्ट्र निर्माता थे उन्हे मत भूलो इसी मे भला है

स्वामी ब्रह्मदेव

आर्य समाज मौलड बन्ध विस्तार बदरपुर दिल्ली मे युगनायक श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व बडी धूम धाम से मनाया गया। शाम के यज्ञ (हवन) के बाद योगी राज श्री कृष्ण के महान जीवन पर प्रकाश डालते हुए स्वामी ब्रह्मदेव सन्यास आश्रम गाजियाबाद ने अपने व्याख्यान मे श्रीकष्ण महाराज को महान राष्ट्र निर्माता और सच्चा ईश्वर भक्त बताया तथा उनके यज्ञमय जीवन से शिक्षा लने पर बल दिया।

आर्य जगत के ख्याति प्राप्त कवि पडित नन्दलाल निर्भय सिद्धाताचार्य ने अपने भजनोपदेश मे योगीराज श्रीकृष्ण को महान त्यागी पराक्रमी तथा उच्चकोटि का राजनेता व धुरन्धर विद्वान बताया। श्रोताओ को गीता और महाभारत बार बार पढने की प्रेरणा दी जिसकी श्रोताओ ने सराहना की।

इस अवसर पर पडित तुलसी राम आर्य तथा श्रीचन्द्र आर्य ने भी भजन सुनाए।

अन्त मे श्रीओम प्रकाश आर्य ने सभी उपदेशको तथा श्रोताओ का धन्यवाद किया।

इस कार्यक्रम की समस्त बदरपुर क्षेत्र मे सराहना की जा रही है।

नेतराम आर्य मत्री

तमिलनाडु में अंग्रेजी विरोध

पिछले दिनो तमिलनाडु के मुख्यमत्री श्री एम करुणानिधि ने विधानसभा मे यह घोषित किया कि प्रदेश के राजकाज से अंग्रेजी को हटाना आवश्यक है। उन्होने अपने मत्रियो तथा विधायको का आह्वान किया कि वे अपना सारा काम काज तमिल मे करे।

उन्होने यह भी घोषणा की कि वे शीघ्र ही इस काम के लिए एक मत्री के अधीन नया विभाग खोलेग जिसका काम होगा कि यह सरकारी कामकाज मे तमिल के प्रयोग को बढाए और अंग्रेजी के प्रयोग का तिरस्कार करे।

तमिलनाडु के मुख्यमत्री की इस घोषणा का सर्वत्र स्वागत होना चाहिए और अन्य प्रदेश सरकारो को इससे प्रेरणा लेनी चाहिए।

दक्षिण समाचार ३१ ७ ६६
जगन्नाथ सयोजक राजभाषा कार्य
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद
एक्स० बाई० सरोजिनी नगर
नई दिल्ली–११००२३

... की इससे ई पहचान है
... की भाषा हिन्दी मेरी महान है।।

... इसने पाया पुण्य प्रकाश।
प्रभु का ... पर दिन प्रतिदिन हो रहा विकास।

भाषा नही भावना के मधुरिम स्वर का गुजान है।।
जैसा लिखा पढो वैसा ही स्वय पूर्ण ये भाषा है।

वेद सस्कृत सदाचार की परिपूर्ण परिभाषा है।
सस्कृत की पुत्री का होता आज चतुर्दिश गान है।

तुलसी सूर कबीर आदि ने इसका गौरव गान किया।
निज साहित्य सृजन कर इसम जग का भूषण बना दिया।

सरल सुबोध सुललित भाव इसको प्रभु का वरदान है।।
महाराष्ट्र गुजरात आन्ध्र कर्नाटक हो, या कोई प्रान्त।

निज भाषा के साथ अधिकतर हिन्दी मे करते है बात।
भाषाओ का भूषण इसमे भरा ज्ञान विज्ञान है।।

दैनिक कार्य कलापो मे सब हिन्दी को अपनाये हम।
सत्य शिव सुन्दरम हिन्दी का प्रिय मान बढाये हम।

आर्य राष्ट्र भाषा का जग मे हो नित गौरव गान है।

पुरोहित आर्य समाज काकडवाडी बम्बई

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली 2 से प्रकाशित

ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् — विश्व को श्रेष्ठ (आर्य) बनाएँ

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सामवेद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र अथर्ववेद

दूरभाष ३२७४७७१ ३२F ९८५ | अजीवन सदस्यता शुल्क ०० रुपये | वार्षिक शुल्क रुपए एक प्रति रुपया

वर्ष ३५ अक ३२ | दयानन्दाब्द १७२ | सृष्टि सम्वत् १९७२९ १ ९७ | सम्वत् २ ५३ | भाद्र शु १ | २२ सितम्बर १

दलित ईसाईयों को आरक्षण का बिल मानसून सत्र में पेश नहीं हो सका

जन जाग्रति अभियान को और तेज किया जायेगा

नई दिल्ली ११ सितम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे दलित ईसाईयो को आरक्षण देने के सरकारी प्रयास के विरुद्ध छेडे गये जन जागरण अभियान के पहले चरण का परिणाम यह निकला है कि सरकार को इस बार यह बिल संसद के मानसून सत्र मे प्रस्तुत करने का विचार त्यागना पडा। सरकार के इस प्रयास का विरोध समूचे आर्य जगत द्वारा युद्ध स्तर पर किया गया था। देश के अन्य राष्ट्रवादी सगठनो ने भी आर्य समाज की आवाज मे अपनी आवाज मिलायी और हर प्रकार से आन्दोलन मे सहयोग का आश्वासन भी दिया।

आन्दोलन की तैयारियो की जानकारी प्रैस विज्ञप्तियो तथा ज्ञापनो के द्वारा समय समय पर सरकार को दी जाती रही है। दूसरी तरफ स्वय ईसाई सगठनो के उच्च वर्ग ने भी इस आरक्षण व्यवस्था को लागू करने के प्रयास का विरोध किया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम रामचन्द्रराव के नेतृत्व मे कई राजनेताओ से भी सम्पर्क किया गया ... ...

... ... पक्ष ... रहा है ... जाग्रति अभियान ... ... घोषित न करदे ... ईसाईयो को आरक्षण देने का ... पूर्णत ... दिया गया है

सभामन्त्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओ को विशेष रूप से तथा समस्त आर्य जगत से पुन आग्रह किया कि दलित ईसाईयो को आरक्षण के विरुद्ध हस्ताक्षर अभियान को तीव्र गति से सम्पन्न करे। आर्य समाजो से सम्बन्धित विद्यालय अपने छात्र छात्राओ के माध्यम से कम से कम २० २५ हस्ताक्षर पत्र छात्र एकत्रित करे इसी प्रकार का अभियान आर्य समाजो के प्रत्येक सदस्य के द्वारा चलाया जाना ...

हैदराबाद मे १७ सितम्बर को "हैदराबाद मुक्ति दिवस" मनाया जायेगा

सभा प्रधान प० वन्देमातरम राम चन्द्र राव समारोह की अध्यक्षता करेगे।

आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे हैदराबाद मुक्ति दिवस समारोह ११ सितम्बर १९९६ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प० वन्देमातरम रामचन्द्र राव की अध्यक्षता मे सम्पन्न होने जा रहा है। सभा प्रधान जी आज साय ३ बजे दिल्ली से हैदराबाद के लिए प्रस्थान कर गये है

हैदराबाद जाने से पूर्व प० वन्देमातरम जी ने बताया कि हैदराबाद को निजाम से मुक्त कराने के पीछे हमारा लक्ष्य केवल हैदराबाद के हितो तक ही सीमित नही था अपितु इसके पीछे समूचे राष्ट्र की प्रतिष्ठा एव रक्षा का प्रश्न था। उस समय विदेशी ताकतो के विरुद्ध खुला विद्रोह हमने किया था परन्तु आज दुर्भाग्य है कि विदेशी ताकते सामने की लडाई न लड के हमारे ही भाइयो को एक दूसरे के विरुद्ध लडाकर देश को विधटित करने का षडयन्त्र कर रही है।

हैदराबाद मुक्ति दिवस प्रतिवष १७ सितम्बर को मनाया जाता है १७ सितम्बर १९४८ को निजाम ने सरदार पटेल के समक्ष समर्पण करके हैदराबाद का भारत मे विलय स्वीकार किया ... इस समस्त आन्दोलन मे जहा भारत भर के हजारो आर्य समाजियो ने ... मे अपने जीवन का जोखिम उठाते हुए सत्याग्रह मे भाग लिया था वहे वन्देमातरम बन्धुओ ने निजाम की सेना के कई महत्वपूर्ण भेद सरदार पटेल तक पहुचा कर १९४८ के पुलिस एक्शन को सफल बनाया था स्वय सरदार पटेल ने वन्देमातरम बन्धुओ तथा समूचे आर्य समाज को इस सफलता का श्रेय दिया था।

◆

सम्पादक डा.सच्चिदानन्द शास्त्री

इन अंधविश्वासों में कब तक जलेगी मानवता ?

[illegible] कमल [illegible] चामलग (अरुणाचल प्रदेश) [illegible] युवतिया [illegible] सिमाइ व खोदग तिखक [illegible] लाल लोहा सलाख घुसाया गया। बाद [illegible] जिन्दा जला डाला गया सिमाई की तो [illegible] मृत्यु हो गई। ज्ञात हो कि एक [illegible] घटना [illegible] तगसा बापटिस्ट [illegible] एसोसिएशन (टी०बी०सी०ए०) एक [illegible] मिशनरी संस्था [illegible] लगभग ३० सदस्यो ने [illegible]) म आकर एक सोलह वर्षीय [illegible] युवती मिलाग सिमाई के सम्बन्ध मे [illegible] घोषणा करवायी कि इस लडकी का [illegible] आदि शक्ति प्राप्त है।

क्रम से डागतग थखू सहित कई अन्य लडकियो [illegible] इसका अनुयायी बनाया गया। गाव के कुछ [illegible] चर्च से जुड लोगो से सम्पर्क करने के बाद नेनाग सिनाइ (तथाकथित ओझा का रूप) ने यह घोषणा की कि कमाई सिमाई व खोदग तिखक के शरीर म (आत्मा) पिशाच का वास हो गया है। बस उसके द्वारा इतनी ही घोषणा की जानी काफी थी कि टी०बी०सी०ए० के सदस्यो द्वारा उन दोनो युवतियो को उनके घर से खींचता हुआ मिशनरी हाऊस तक लाया गया जहा उन्हे लैम्प पोस्ट से बाधकर शुरू किया गया मानवता पर दानवता का क्रूरतम नाच। पाच दिनो के दानवी नाच के बाद उनके मुह मे लोहे की गरम छड घुसाई गयी फिर भी उन्हे सकून नही मिला। यह फैसला किया गया कि जब तक पिशाच गाव छोड नही देता है दोनो को जलाकर राख कर दिया जाएगा।

दहशतजदा ग्रामीणो से चिता बनवायी गई धर्म के ठेकदारो द्वारा गाए गए स्तुतिगान के बीच इन दो अबलाओ को झोक दिया गया आग मे। मानवता मुर्दा हो गयी पौरुष किसी मे नही बचा जो प्रतिकार कर सके। जघन्यता का अत इतना ही नहीं था आग से बाहर रहे शरीर के अगो को जलती लकडी से दागा गया तथा निरीह ग्रामीणो से बनवाई गई चिता के चारो ओर ढोल नगाडा बजवाया गया।

कुछ इसी तरह का समाचार दक्षिण बिहार (राची) के एक समाचार पत्र मे प्रकाशित हुआ था। खबर के अनुसार एक महिला की डायन के आरोप मे पीट पीट कर हत्या कर दी गई।

मानवता के माथे पर लगा कलक का टीका सिर्फ न्यू कमनो या दक्षिण बिहार के हादसो का ही परिणाम नहीं है। राजधानी दिल्ली भी कलक के टीके को चमकाने मे किसी से पीछे नहीं। पिछले दिनो वेलकम कालोनी (शाहदरा) निवासी पच्चीस वर्षीया आशा को बीमारी से निजात दिलाने के लिए तथाकथित गुरुजी (पन्नालाल) ने जलती सिगरेट से उसके शरीर को बुरी तरह से जला दिया।

आखिर कब तक चलता रहेगा धर्म की आड मे घिनौना अपराध कैसे मान लिया जाए कि सदियो से चली आ रही सती प्रथा का अत हो गया है। रूपकुवर की चिता ही अन्तिम चिता थी। ग्रामीण परिवेश म विशेष रूप से अधविश्वास की जड गहरी है। तथाकथित डायन महिला को आए दिन बाल मुडवा कर सरेआम नगा घुमाने की बात तो पुरानी हो गई है। कर्मकाडियो के अनुसार तत्र मत्र साधना के फलस्वरूप डायन बनने के बाद डायन महिला अपनी इच्छानुसार किसी का भी अहित कर सकती है।

धर्मिक पाखण्डो के रचयिता तथाकथित धमगुरुओ द्वारा थोपे गए अधविश्वासो ने व्यक्ति को भाग्यवादी बना दिया है जबकि विभिन्न शकाओ के बारे मे मनोवज्ञानिको ने अपने मत स्पष्ट कर दिये है। इन्होने भूत प्रेतो का अस्तित्व होने से इकार किया है। बीसवी सदी के आरम्भ मे ही विश्व प्रसिद्ध मनोविश्लेषक फ्रायड ने साइको-एनैलिसिस का विकास कर स्थिति बिल्कुल स्पष्ट कर दी थी। दुख की बात है कि आज का बुद्धिजीवी वर्ग भी अधविश्वास से विशेष प्रभावित है। टाइम्स पत्रिका मे प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार अक्टूबर १९९४ मे स्विटजरलैड मे एक धार्मिक सम्प्रदाय आर्डर आफ दी टेम्पल के ७१ लोगो ने दो अलग अलग जगहो पर इसलिए आत्महत्या कर ली क्योकि उनके धर्मगुरु के अनुसार निकट भविष्य मे विश्व का विनाश सम्भव है।

उनकी सततियो की रक्षा मात्र आत्म बलिदान से की जा सकती है इसलिए उन्हे आत्महत्या करनी चाहिए। कितनी खोखली मानसिकता है। आखिर मानव के चाद पर पहुचने का क्या अर्थ है। वायुयान रोबोट उपग्रह सब कुछ क्या मात्र कोरी कल्पना है ?

सम्पूर्ण विश्व का सामाजिक परिवेश इस दूषित रोग से ग्रसित है। इस रोग ने समाज के विकास की गति को भी स्थिर कर दिया है। पिछले वर्ष गणेष दुग्धपान का नाटक क्या था ? चमत्कार ने नाम पर कार्यालयो मे कर्मचारियो की उपस्थिति के बावजूद भी उस दिन के उत्पादन मे जो गिरावट अई उसके कौन उत्तरदायी है ? क्या दुग्धपान की अफवाह फैलाकर अपनी मिशनरी की कामयावी की जाच करने वाले देशद्रोही नहीं है।

युवतियो मे कुछ बीमारिया आम होती हैं-हिस्टीरिया समयानुसार सतानोत्पत्ति न होना बाझपन इत्यादि। होना यह चाहिए कि किसी योग्य चिकित्सक के पास इलाज करवाया जाए लेकिन होता कुछ और है। इनका इलाज करवाया जाता है तथाकथित पीर महात्माओ से जो यौन शोषण के अलावा कुछ नहीं करते।

क्या यह सच नहीं है कि अधविश्वास जिज्ञासा तथा प्रयत्न दोनो का निषेध करता है। वह व्यक्तियो को सकारात्मक कर्मण्यता से नकरात्मक अकर्मण्यता तथा अपराधो की ओर प्रवृत्त करता है।

बेहतर यही होगा कि हम कायर होने के बजाय सिमाई व तिखक की चिता सजाने के बजाए आतकित करने वाली उन सभी शक्तियो का समाना करे जो धर्म के माध्यम या गलत तरीको से आकर समाज को गलत रास्ते पर धकेलती है।

योगेन्द्र कुमार

श्री लखोटिया मानव सेवा पुरस्कार से अलंकृत

भारत की सुप्रसिद्ध सस्था आर्थिक अध्ययन सस्थान के द्वारा सम्राट होटल नई दिल्ली मे ३१.८.९६ को आथिक सुधारो पर आयोजित सेमिनार के समय सुप्रसिद्ध आयकर विशेषज्ञ और भारतीय शाकाहर परिषद (उत्तराचल) के अध्यक्ष श्री रामनिवास लखोटिया को उनकी मानवीय सेवाओ के उपलक्ष्य मे मानव सेवा पुरस्कार से अलकत किया गया यह अवार्ड भूतपूर्व केन्द्रीय मत्री डा० जगन्नाथ मिश्रा के करकमलो द्वारा प्रदत्त किया गया। कुछ वर्ष पूर्व इसी सस्थान द्वारा श्री लखोटिया को उद्योग रत्न अवार्ड से विभूषित किया गया था। सेमिनार के प्रारम्भ मे इस सस्था के निदेशक श्री कुलबीर सिह ने मेहमानो का स्वागत किया।

भूल सुधार

सार्वदेशिक सभा के ८७वे वार्षिक वृतान्त मे पृष्ठ १५ पर सम्पत्ति स० ६ आर्य समाज जोधपुर (रातानाडा) का विवरण देते समय किसी की गलत सूचना के आधार पर सभा कार्यालय द्वारा श्री दाऊलाल सोनी के सम्बन्ध मे लिख दिया गया है कि (उनका पिछले दिनो निधन हो गया है) यह इस प्रकार पढा जावे कि श्री दाऊलाल सोनी जो कि आर्य समाज रातानाडा की सम्पत्ति के लिए सार्वदेशिक सभा की ओर से मुख्त्यार आम नियुक्त हैं पूर्णत स्वस्थ हैं और पूर्ववत कार्यरत हैं। सभा कार्यालय ने अपनी भूल स्वीकार कर ली है।

सम्पादक

स्व० श्री जयानन्द भारतीय की पुण्य-तिथि पर श्रद्धान्जलि

आचलिक गढवाल आर्य समाज दिल्ली के तत्वाव धान मे गढवाल के क्रान्तिकारी समाज सुधारक परमदेशभक्त तेजस्वी निर्भीक दृढ प्रतिज्ञ बहादुर स्वतत्रता सेनानी वैदिक धर्मावलम्बी ऋषिभक्त कर्मवीर जयानन्द भारतीय जी की ४४ वीं पुण्य-तिथि (६ सितम्बर) समाज कार्यालय डब्लु०पी०६ए मौर्य इन्क्लेव पीतमपुरा दिल्ली मे श्री मोहन लाल जिज्ञासु जी की अध्यक्षता मे मनाई गई जिसमे अनेकानेक ऋषिभक्तो ने भाग लेकर स्व० श्री भारतीय जी को गढवाल का दयानन्द व गाधी बताते हुए मानव समाज के कल्याण हेतु अचलो मे आर्य समाज के मच से वैदिक धर्म का प्रचार करके समाज सुधार का अद्वितीय कार्य पर उनकी गौरवशाली शक्ति उनका व्यक्तित्व क्रान्तिकारी जीवन देशभक्ति व समाज को उनकी अनुकरणीय प्रेरणा पर चलने का आवाहन किया।

महान विभूति स्व० श्री भारतीय जी के कार्यो को इस सामाजिक व धार्मिक वातावरण मे त्याग और तपस्या से सघर्ष के साथ आगे बढाने का सकल्प लिया गया समाज ने सौम्य शील दयालु स्वभाव से परिचित सर्वप्रिय गुणयुक्त सुप्रसिद्ध सत्य धर्मनिष्ठ समाजसेवी श्री वेदप्रकाश जी को उप प्रधान तथा श्री रवीन्द्र कुमार जी को पुस्तकाल ध्यक्ष नियुक्त करते हुए अन्तरग सभा मे लिया।

दलित ईसाइयों को आरक्षण : एक षड्यन्त्र

चर्च की अदृश्य सत्ता

डॉ० प्रेमचन्द श्रीधर

भारत मे ईसाईमत अपने पाव तीव्रता से पसारने का प्रयास कर रही है। अनुसूचित जातियो को मिलने वाले आरक्षण से धर्मान्तरण के कार्य की गति मे बाधा उत्पन्न होती है। ईसाइमत अपने वैचारिक बल पर या सिद्धान्तो की सत्यता के आधार पर नहीं फैलता। ६० प्रतिशत अभावग्रस्त अशिक्षित तथा सुदूर क्षेत्रो मे रहने वाले वनवासी आदिवासी लोग तथा उनमे भी प्राय अनुसूचित जातियो का वर्ग किसी न किसी प्रलोभन का शिकार होकर अपने धर्म को छोडकर ईसाई मत स्वीकार कर लेता है परन्तु वहा भी उसकी स्थिति पूर्ववत दयनीय बनी रहती है सविधान की दृष्टि से ईसाई मत स्वीकार करने के बाद कोई भी अनुसूचित नही रहता। इसका एक उदाहरण सर्वोच्च न्यायालय के १९८५ के एक मुकदमे मे दिए गए निर्णय के रूप मे हमारे सामने है। इस मुकदमे मे जो सूसई बनाम भारत सरकार के रूप मे था यह कहा गया कि सूसई (याची) पहले हिन्दू था अनुसूचित जाति का था जो बाद मे ईसाई हो गया। अत उसे अनुसूचित जाति के आधीन मिलने वाली सुविधाओ से वचित कर दिया गया है जो अनुच्छेद १४ के परिपेक्ष्य मे विभेदकारी है।

उच्चतम न्यायाल्य ने अपने निर्णय मे यह भी माना था कि जाति प्रथा हिन्दू समाज मे चूकि पहले कार्य के आधार पर थी और इसी आधार पर जाति–विभाजन था परन्तु कालान्तर मे यह जन्म के आधार पर हो गई। इसके दुष्परिणाम स्वरूप एक लम्बे काल तक समाज मे कतिपय कमजोर वर्गो का (जातियो का) बहुत ही बुरी तरह शोषण हुआ ऊच नीच घृणा अस्पृश्यता आदि अनेक सामाजिक बुराइयो ने जन्म लिया। परिणाम स्वरूप हिन्दू समाज का एक वर्ग जो महत्वपूर्ण अग है आर्थिक शैक्षणिक सामाजिक दृष्टि से पिछड गया। इस वर्ग को एक लम्बे काल तक घोर अत्याचारो का तथा अपमान का सामना करना पडा। हिन्दू समाज के इसी अग के उत्थान के लिए तथा उनको सामाजिक आर्थिक तथा शैक्षणिक दृष्टि से सुरक्षा प्रदान करने की दृष्टि से हमारे मनीषी सविधान निर्माताओ ने एक निश्चित अवधि तक आरक्षण का प्रावधान केवल हिन्दू अनुसूचित जातियो के लिए किया।

भारत के सविधान के अनुच्छेद १७ का मूलपाठ भारत की जनता का सकल्प व्यक्त करता है। सविधान घोषणा करता है कि अस्पृश्यता से उपजी किसी निर्योग्यता को लागू करना अपराध होगा जो विधि के अनुसार दण्डनीय होगा।

सविधान के अनुच्छेद १५ (४) और १६ (४) इसी मूल धारणा जिसकी अनुच्छेद १७ मे चर्चा है का परिणाम है। अनुच्छेद १५ (४) धर्म मूलवश जाति लिग या जन्म स्थान के आधार पर किसी भी प्रकार के विभेद का विरोधी है। और १६ (४) राज्य को सामाजिक और शैक्षणिक दृष्टि से पिछडे हुए नागरिको के किन्हीं वर्गो के लिए या अनुसूचित जातियो अनुसूचित जनजातियो के लिए कोई विशेष उपबन्ध करने का अवसर देता है।

ईसाई मत मे ऊच नीच का भाव नहीं है ईसाई पादरी यही प्रलोभन हमारे भोले भाले अभावग्रस्त अशिक्षित भाईयो को देते हैं। प्रश्न है कि क्या ईसाई पादरी यह घोषणा करने के लिए तेयार हैं कि धर्मान्तरण के बाद भी उनके यहा वह (अर्थात धर्मान्तरित हिन्दू) अनुसूचित बना रहता है। ईसाइमत मे भी ऊच नीच छुआछूत और शोषण सब होता है ? यदि ऐसा है तो निश्चित रूप से धर्मान्तरण करके ईसाई पादरी एक बहुत बडा षडयन्त्र कर रहे है जिसको वह स्वय अधिक जानते है क्योंकि अब वे उन्ही अनुसूचित जाति जनजाति वनवासी लोगो के लिए उन्हे दलित ईसाई नाम देकर आरक्षण माग रहे है। यदि यह सब सत्य है तो ससद मे धर्मान्तरण के विरोध मे एक मत से राष्ट्र के हित मे बिल पास करना चाहिए और कानून बनाने के बाद उसे दृढता से लागू भी करना चाहिए। सभी विदेशी पादरियो को एक दम देश स चले जाने को कहना चाहिए। इस लेखके अगले पृष्ठो मे हमने इसी षडयत्र का खुलासा करने का प्रयास किया है।

सविधान को लागू हुए ४७ वर्ष हो गए यदि हमारे अनुसूचित भाइयो के जीवन मे अभी भी दयनीय स्थिति बनी हुई है तो तथ्यो को एकत्र करके उच्च स्तरीय जाच होनी चाहिए। यह एक वास्तविकता है कि इस आरक्षण का लाभ इसी वर्ग के अन्तर्गत शिक्षा अर्थ ओर पद की दृष्टि से सम्पन्न लोगो ने या उनके बच्चो ने उठाया है। ससद के अन्दर और बाहर शोर मचा रहे है। जो इस आरक्षण की सुविधा के वास्तविक हकदार हैं वे आज भी उसी शोषण अत्याचार और अपमान को सहन कर रहे हैं ऐसे लोगो का प्रतिनिधित्व करने वाले नव धनाढ्य सम्पन्न और शिक्षित लोग जो अब स्वय शोषित नही रहे इन असहाय और पीडित लोगो का चर्च के षडयन्त्र का शिकार होने का अवसर प्रदान कर रहे हैं।

सविधान की धारा ३३८ के माध्यम से महामहिम राष्ट्रपति जी को एक रिपोर्ट प्राप्त करनी चाहिए जो अनुसूचित जातियो की यथास्थिति की जाच करे। इसक लिए इसी अनुच्छेद के ही अर्न्तगत विशेष अधिकारी की नियुक्ति का भी प्रावधान है। जिसके अर्न्तगत वह अधिकारी यह सुनिश्चित करेगा कि सविधान के अन्तर्गत जिन रक्षा के उपायो का प्रावधान किया गया था उनसे शोषित लोगो को कहा तक लाभ मिला है ?

सत्ता की राजनीति मे सभी राजनैतिक दलो का लक्ष्य येन केन प्रकारेण सत्ता मे आना होता है। राष्ट्र के हित की चिन्ता राष्ट्र की मूल सस्कृति की रक्षा का भाव वहा नगण्य होता है। वहा हर नीति को मतो की प्राप्ति के आधार पर तोला जाता है। दल को सत्ता तक पहुचाने मे जिसमे लाभ है वही उनके लिए महत्त्वपूर्ण होता है। अल्पसख्यक बहुसख्यक शब्द भी इसी आधार पर उछाले गए। ऐसे ही दलीय स्वार्थान्धता ने तुष्टिकरण के द्वारा अधिकतम मतो की प्राप्ति के लालच मे दलित ईसाई शब्द को उछाला है।

सत्ता और स्वार्थ जिनके लिए राष्ट्रीय हित को साधने का मापदण्ड हो अधिकार और ससद मे प्राप्त अनैतिकता के आधार पर बहुमत जिनकी शक्ति का आधार हो ऐसे तथाकथित राजनेता क्या हमारी बात सुनेगे इस पर भी हमे सन्देह है। हा सैकुलरिज्म का लबादा ओढे हुए ये लोग किसी को भी जो इनका लिखकर या बोलकर विरोध करेगा उसे साम्प्रदायिक कह देगे। यही इनका ब्रह्मास्त्र है। यह षडयन्त्र क्या है ? इसी की आगे हमने चर्चा की है

इलाहाबाद से एक मासिक पत्रिका प्रकाशित होती है नई आजादी उदघोष इसके जून १९९६ के अक मे अत्यन्त महत्वपूर्ण रहस्य का उद्घाटन श्री अमय ने किया है – यहा हम उन्ही शब्दो मे व्यक्त करना उपयुक्त समझते हैं। उन्होने लिखा है सी०आई०ए० (अमेरिका की सैन्ट्रल इन्टैलीजैन्स एजैन्सी) ने १६ ऐसे देशो की सूची बनाई है जो निकट भविष्य मे कभी भी टूट सकत है भारत का नाम भी इसी सूची मे शामिल है। सूची मे ज्यादातर देश गरीब लोकतान्त्रिक देश है। सी०आई ए का तर्क है कि अन्य देशो और व्यवस्थाओ के मुकाबले गरीब देशो के बिखरने का अदेशा ज्यादा रहता है। इसी तर्क के साथ भारत को भी इस सूची मे शामिल किया गया है। आगे कहा है "वास्तव मे जिस समय भारत आजाद हुआ इसके पहले से देश मे सी०आई०ए० की अलगाववादी गतिविधिया शुरू हो गई थी देश के आजाद होते समय ब्रिटेन ने अपनी "कूपलैण्ड योजना के क्रियान्यन के लिए उत्तर पूर्वी भारत को चुना। इस योजना का उद्देश्य यह था कि यदि अग्रेजो को शेष भारत से निकलना पडता है तो उत्तर पूर्वी भारत फिर भी ब्रिटिश उपनिवेश बना रहेगा। (पृष्ठ १६) द्वितीय विश्व महायुद्ध के समय जब जापनी फौजे पूर्वी भारत की सीमा पर पहुची तो आसाम के जगलो मे अमरीकी राजनीतिक सेवा कार्यालय का एक विभाग खोला गया था। जरूर उस समय ईसाई मिशनरियो से काफी सहायता प्राप्त कर रहे थे। कहा जाता है कि भारत को स्वतन्त्रता की पूर्व बेला मे इन्ही ईसाई मिशनरियो ने गिरजाघरो व सभागारो मे प्रचार करके वहा के नागा लोगो को भडकाया और स्वतन्त्रता दिवस को "नागा स्वतन्त्रता" दिवस के रूप मे मनाने और "दक्षिण एशिया के पहले ईसाई राज्य की घाषणा करने का आह्वान किया था।

जिसे हम पूर्वी अचल या असम अचल के नाम स पुकारत हैं उसमे सात राज्य हैं असम राज्य के दस जिले है जिनमे ८ मैदानी तथा २ पर्वतीय है। बाकी के ६ राज्य भी पर्वतीय हैं। वे पर्वतीय राज्य है मेघालय त्रिपुरा मिजोरम मणीपुरी नागलैण्ड और अरूणाचल। इनमे मेघालय मिजोरम और नागलैण्ड ईसाइ बाहुल्य वाले राज्य है। आजादी के बाद से ही अमरीका ने सी०आई०ए० की मदद से इस क्षेत्र मे पृथकतावाद को हवा देना शुरू कर दिया था। १९६० मे ही सी०आई०ए० के तत्कालीन निदेशक तथाकथित सघीय नागा सरकार के नेता अगामी जाकू पिजो से मिले थे। नागा क्षेत्रो मे उसी के परिणाम स्वरूप सैकडो निर्दोष लोगो की इस अलगाववादी आन्दोलन के कारण हत्या हो गई। सी०आई०ए० के भूतपूर्व ऐजेन्ट जॉनस्मिथ ने बाद मे इस बात की पुष्टि की कि पृथकतावादी गतिविधि को चलाने के लिए बहुत बडी मात्रा मे शस्त्रो और धन की सहायता इन नेताओ को उपलब्ध कराई गई थी। १९७६ मे एक व्यापक स्तर पर समाज वैज्ञानिक अध्ययन जार्ज वाशिगटन विश्व विद्यालय के शोध–कर्त्ताओ के द्वारा कराया गया और यह सुनिश्चित किया गया कि पृथक ईसाई राज्यो की स्थापना के लिए कहा तक सफलता मिलना सम्भव है। उसी आधार पर १९८० मे आस पास अमरीकी मिशनरियो ने अपनी गतिविधियो को तेज कर दिया।

शेष पृष्ठ १० पर

वेदों का स्वरूप और उनकी कतिपय विशेषताएं।

डा० मञ्जुलता विद्यार्थी

मैक्समूलर ने अपनी पुस्तक इण्डिया वाट कैन टीच अस मे लिखा है अगर मै विश्व भर मे उस देश को ढूढने के लिए चारो तरफ आखे उठा कर देखू, जिस पर प्रकृति देवी ने अपना सपूर्ण वैभव पराक्रम तथा सौन्दर्य खुले हाथो लुटा कर उसे पृथ्वी का स्वर्ग बना दिया है तो मेरी अगुली भारत की तरफ उठेगी।

और अगर मुझसे पूछा जाए कि अन्तरिक्ष के नीचे कौन–सा वह स्थल है जहा मानव के मानस ने अपने अन्तराल मे निहित ईश्वर प्रदत्त अत्यतम सद्भावो को पूर्णरूप से विकसित किया है गहराई मे उतरकर जीवन की कठिनतम समस्याओ पर विचार किया है और उनको इस प्रकार सुलझाया है जिसको जान कर प्लेटो तथा काण्ट का अध्ययन करने वाले मनीषी भी चकित रह जाये तो मेरी अगुली भारत की तरफ उठेगी।

और अगर मैं अपने से पूछू कि हम यूरोपवासी जो अब तक ग्रीक रोमन तथा यहूदी विचारो मे पलते रहे हैं किस साहित्य से वह प्रेरणा ले सकते हैं जो हमारे भीतरी जीवन का परिशोध करे व्यापक बनाये विश्वजतीन बनाये सही अर्थों मे मानवीय बनाये जिससे हमारे पार्थिव जीवन को ही नहीं हमारी सनातन आत्मा को प्रेरणा मिले तो फिर मेरी अगुली भारत की तरफ उठेगी।"

जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिक शोपेनहा का कहना था कि विश्व के सम्पूर्ण साहित्यक भण्डार मे किसी ग्रथ का अध्ययन मानव के विकास के लिए इतना हितकर तथा ऊचा उठाने वाला नही है जितना कि उपनिषदो का अध्ययन।

औरगजेब के बडे भाई दाराशिकोह ने बहुत कष्ट सहे औरगजेब के अत्याचार भी किन्तु उपनिषदो को नहीं छोडा। वह तो उपनिषदो पर इतना मोहित था कि काशी से पडितो को बुलाकर छ महीने तक उनकी व्याख्या सुनता रहा और १५२६ मे उनका फारसी मे अनुवाद किया।

अस्तु! मैक्समूलर शोपेनहार तथा दाराशिकोह जिस भारतीय विचारधारा से प्रभावित हुए जिस साहित्य से प्रेरणा ली उन सबका स्रोत 'वेद' है। ब्राह्मण उपनिषद दर्शन गीता आदि महान ग्रथो का अपना आधार वेद है। वे ज्ञान विज्ञान के आदि स्रोत हैं। हम इन्हीं वेदों के विषय मे चर्चा करेगे।

विश्व के पुस्तकालय मे वेद सबसे प्राचीन पुस्तक है। विश्व के समस्त विद्वान वेद को ससार का सबसे प्रचीन ग्रथ स्वीकार करते हैं। वेद शब्द 'विद् ज्ञाने धातु से बना है जिसका अर्थ होता है ज्ञान। यह तो सभी जानते हैं कि वेद सख्या मे चार हैं – ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद तथा अथर्ववेद। ऋग्वेद मे कुल १० मण्डल तथा १०५२२ मत्र हैं तथा यही सबसे बडा वेद है। यजुर्वेद मे ४० अध्याय तथा १६७५ मत्र हैं। सामवेद मे कुल १८२४ मत्र है तथा अथर्ववेद मे ५६७७ मत्र हैं। कुल मिलाकर चारो वेदो मे २०२६८ मत्र हैं। इन्हीं चारो को वेदो की सहिताये भी कहते हैं।

वैदिक परम्परा के अनुसार आज से लगभग एक अरब छयानवे करोड आठ लाख तिरेपन हजार सतानवे वर्ष पूर्व जब इस पृथ्वी पर मनुष्य की सर्वप्रथम उत्पत्ति हुई तभी ईश्वर ने चार ऋषियो अग्नि वायु, आदित्य और अगिरा मे क्रमश ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद तथा अथर्ववेद का प्रकाश किया। इन्हीं ऋषियो ने अन्य मनुष्यो को इन वेदो का ज्ञान दिया और तब से आज तक गुरु–परम्परा से इन वदो का आदान प्रदान चलता आ रहा है।

भारतीय परम्परा के अनुसार वेद का ज्ञान परमात्मा की भाति अनादि है। और प्रत्येक सृष्टि के प्रारम्भ मे वह पूर्व कल्पो की भाति मनुष्यो को प्राप्त होता है। जिस प्रकार सूर्य आकाश पृथ्वी आदि सृष्टि के आदि मे रचे जाते है उसी प्रकार सृष्टि के प्रारम्भ मे वेदो की रचना होती है। हमारा समस्त प्राचीन वाङ्मय – ब्राह्मण उपनिषद दर्शनग्रथ इसी मत की पुष्टि करते है। सृष्टि के प्रारम्भ से ले कर महाभारत काल पर्यन्त वैदिक साहित्य ही उपलब्ध होता है।

अब हम वेद की विषय सामग्री पर आते है। ऋषि दयानन्द के अनुसार–वेदो से मनुष्यो को परमेश्वर से लेकर तृण पर्यन्त पदार्थों का ज्ञान होता है। वेदो का ज्ञान विषय के अनुसार चारो वेदो मे क्रमश ज्ञान कर्म उपासना और विज्ञान के रूप मे प्रकट हुआ है। इन चारो का सामान्यत सभी वेदो मे निरूपण किया गया है किन्तु विशेष रूप से एक विषय का एक एक वेद में निरूपण है।

सबसे पहले ऋग्वेद को लेते हैं – ऋग्वेद का मुख्य विषय ज्ञान है। इसमे सभी प्रकार के पदार्थों के गुण कर्म स्वभाव का मुख्यतया वर्णन है। ऋग्वेद के दशम मण्डल के नासदीय सूक्त मे प्रलय की अवस्था और उसके अनन्तर सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन किया गया है। मैक्समूलर को इस सूक्त मे ऐसे तत्व मिले जो उसके मतानुसार बीसवीं सदी से पूर्व के नहीं होने चाहिए। इन्हीं मैक्समूलर ने कभी वेदो को गडरियो के गीत कहा था वहीं मैक्समूलर वेद को ज्ञानकोष मानने पर बाध्य हुआ और उसे लिखना पडा कि यह परमात्मा की प्रेरणा से ऋषियो को प्राप्त हुआ प्रतीत होता है। ऋग्वेद के –

ऋतञ्च सत्यञ्चा भी द्धात पसो ध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत तत समुद्रो अर्णव ।।
ऋ० १०/१६०/१

समुद्रादर्णवादधि सवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।।
ऋ० १०/१६०/२

सूर्याचन्द्र मसौ धाता यथापूर्वम कल्पयत्।
दिवञ्च पृथ्वीचान्तरिक्ष मथो स्व ।।
ऋ० १०/१६०/३

ये सभी मत्र ईश्वर ने किस प्रकार इस महान जगत् को रचा। इसका सकेत कर रहे हैं।

यजुर्वेद कर्मप्रधान है। इसमे मुख्यता कर्मकाण्ड आचरण व्यवहार का विधान है। मनुष्य ज्ञान प्राप्त करके उसे किस प्रकार प्रयोग करे इसमे बताया गया है। उसका यह मत्र–

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत ँसमा ।
एव त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।
यजु० ४०/२

मनुष्य को सौ वर्श तक निष्काम भाव से श्रेष्ठ कर्मो को करते हुए जीने का उपदेश दे रहा है। हमारी गीता भी इसी सदेश को दोहरा रही है। **कर्मण्येवधिकारस्तु मा फलेषु कदाचन्।** इसी प्रकार –

असूर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृता ।
तास्ते प्रेत्यादि गच्छन्ति ये के चात्महनो जना ।।
यजु० ४०/३

मत्र बता रहा है कि आत्मा का हनन करने वाले धोर अन्धकार मे प्रविष्ट होते हैं।

सामवेद मे ईश्वर स्तुति वन्दना एव आध्यात्मिक उन्नति के साधनो का वर्णन है। इसमे शान्तिदायिनी प्रार्थनाये है। एक उदाहरण प्रस्तुत है–भक्त अग्निस्वरूप परमात्मा स अपने अन्तर मे दिव्य ज्योति फैलाने की प्रार्थना करते हुए कहता है –

"ओ३म अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि।" *साम० १/१*

अथर्ववेद विज्ञान प्रधान है। ऋषि दयानन्द ने विज्ञान का अर्थ बतात हुए लिखा है कि "विज्ञान उसको कहते है। कि जो कर्म उपासना और ज्ञान इन तीनो से यथावत उपयोग लेना और परमेश्वर से लेके तृणपर्यन्त पदार्थों का साक्षात बोध का होना उनसे यथावत उपयोग का करना।"

विभिन्न विषयो के ज्ञान कर्म एव व्यवहार के द्वारा मनुष्य उसमे पारगत हो कर उसे समाज की समृद्धि के लिए कैसे उपयोग करे यही अथर्ववेद का विषय है। यह कला कौशल एव ज्ञान विज्ञान की विभिन्न शाखाओ का व्यवहारिक ग्रथ है। अथर्ववेद का पहला मन्त्र ही कह रहा है कि तृण से लेकर परमेश्वर पर्यन्त जो पदार्थ ससार की स्थिति के कारण हैं उन सबका तत्त्वज्ञान सब मनुष्य वेद द्वारा प्राप्त करे पराक्रमी और परोपकारी हो कर सदा आनन्द में रहें–

ये त्रिषप्ता परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रत ।
वाचस्पतिर्बला तेशा तन्वों अद्य दधातु मे ।।
अथर्व० १/१

वेद की विषय वस्तु की थोडी सी झलक देखने के बाद हम वेदो की कतिपय विशेषताओ की ओर आते हैं–

१ वेद ईश्वरीय ज्ञान है। भारत के जितने भी विचारक आचार्य और ऋषि मुनि हो गये हैं वे प्राय सबके सब वेद की प्रामाणिकता स्वीकार करते हैं उसे निर्भ्रान्त मानते हैं तथा सर्वज्ञ परमात्मा का दिया ज्ञान स्वीकार करते हैं। हमारा समस्त प्राचीन वाङमय तथा ऋषि मुनि वेदों को अपौरूषेय या ईश्वर कृत मानते हैं। इस विचारधारा के अनुसार जिस प्रकार इस सृष्टि को वह भगवान हमे देता है उसी प्रकार इसका ज्ञान भी प्रदान करता है ताकि इसको यथावत जानकर उसका सदुपयोग कर सकें। वेदज्ञान नियम पर ही वह सारे ससार का नियत्रण करता है। ऋग्वेद के दशम मण्डल के ७१वे सूक्त मे ज्ञान की उत्पत्ति के सभी मौलिक प्रकारों पर प्रकाश डाला गया है।

पश्चिम के वेदज्ञ विद्वानो का मत इससे भिन्न है। वे वेद को ईश्वरकृत न मानकर उन ऋषियों द्वारा बनाये हुए ग्रथ मानते हैं जिन्होंने समय-समय पर अपने भाव-समूह को वैदिक ऋचाओ के माध्यम से व्यक्त किया था। वर्तमान युग मे ऋषि दयानन्द योगीराज अरविन्द धर्मदेव विद्यालकार तथा डा० वेदप्रकाश जैसे अनेक वेद मर्मज्ञ विद्वान वेदों को ईश्वरकृत मानते हैं।

क्रमशः

हित की बात

आचार्य शिवपूजन

तुच्छ वस्तु को त्याज्य समझो सुष्ठु पदाथ ग्रहण करो–यही महत्ता का चिन्ह है। मेरे प्यारे भाइया ! सोचो तो सही कि स्वामीजी से पुरुष सत्तम क उपदश आदेश का कहा तक आप लोगो ने पालन किया ? किस तरह उनका सुप्रयोग किया ? भला हाथ मे आये हुए अनमोल रतन को काच का टुकडा समझकर क्यो फेकते हो ? क्या दोष ही ढूढ निकालने मे सिद्धहस्त रहे ? गुणावली की ओर दृष्टि भी नही फेरी ? बस सीख लो जो दोषयुक्त रहता है वही दूसरे को दोषमय देखता ह परन्तु जिसका अन्त करण विमल और शुद्ध है उसक लिए ब्रह्माण्ड स्वच्छ दर्पण क सदृश ह।

धर्म–ससार म युग परिवतन का जब समय आता है तब वह जगन्नाटक सूत्रधार परमेश्वर उसी समय के अनुकूल ज्ञान सामग्री सम्पन्न एक गुरु गरीयसी आत्मा ससार स प्रेरित करता हे जो बडे बडे अपमानो का शान्त भाव से सहन कर लेता हे विश्व की निस्वार्थ सेवा करने म अपनी कीर्ति बुद्धि देह और सारी अवस्था का स्वाहा कर देता है ससारियो के हितार्थ सभ्यता का प्रवाह समयानुकूल मोड देता है शीतोष्ण सुख दु ख निन्दा स्तुति मानापमान प्रतिष्ठा और तिरस्कार किसी की ओर कुछ ध्यान न देकर परोपकारार्थ अपने सर्वस्व की तिलाजलि दे देता हे। वही ससार–विश्रुत महात्मा कहा जाता है। हमारे श्रद्धास्पद महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ऐसे ही व्यक्तियो की गणना के समय कनिष्ठिकाधिष्ठित हो सकते हैं।

स्वामी जी के सिद्धान्त कैसे उज्ज्वल उदार उत्कष्ट परिमार्जित स्वाभाविक अकत्रिम और नीतिपूर्ण ह इस बात क सहज ही सबकी समझ मे भली भाति आ जाना बडी टेढी खीर है उनके शुद्ध विचारा म कितनी राष्ट्रीयता भरी हु ई उनकी बातचीत मे कसी प्रदीप्त प्रति प्रस्फुटित होती हे ओर उनका जीवन रहस्य कैसा विलक्षण तथा निष्कलक है य सब बात उसी का सूझ पडेगी जो एकान्त म बैटकर स्वदश की आधुनिक दुरवस्था पर आठ आठ आसू बहाएगा।

आज दिन जितने आर्य भाई हे उनमे सब नहीं तो कम से कम सैकडे नब्ब के हिसाब से ऐसे है जो यही समझ बैठे है कि स्वामीजी ने केवल सनातनधर्म का ध्वस करने के लिए भारतमाता की गादी सुशोभित की थी। उनके लिए स्वामीजी राग ईष्या द्वेष कलह फूट वैर ओर विरोध यही सब अमृत फल ससार मे छाड गए। उनसे स्वप्नावस्था म शायद कह भी गए कि खुल्लमखुल्ला मयादापुरुषात्तम भगवान रामचन्द्र और योगीश्वर भगवान कष्णदेव को समय समय पर जली कटी सुनाते रहना भगवान व्यासदेव ऐसे वेदविशारद का दम्भी ओर मिथ्यावादी कहकर पुकारना वाल्मीकि ऐसे बृहत काव्यात्मक इतिहास–लेखक को लथाडते रहना किसी की कुछ न सुनना बस अपनी ही धुन मे मस्त रहना।

हाय री आर्यसन्तान ! तूने अपने देश के एक उत्तमोत्तम आदर्श पुरुषपुगव के विशद–जीवन से कैसी गन्दी शिक्षा प्राप्त की ! उनके विकसित जीवनोद्देश्य से कैसा निकृष्ट निष्कर्ष निकाला !! तूने अपने यहा के एक दिग्गज–धुरन्धर धर्मतत्त्ववेत्ता पर कैसा भद्दा कलक आरोपित कर ससार–बीच नाम हसाया !!!

पुनरपि हमार सनातनी भाइयो की सख्या भी कम नही है जो स्वामीजी का कट्टर विधर्मी उपद्रवी ज्ञानच्युत और कवल नाम कमानेवाला ही कहकर सन्तुष्ट हो जात हे। उनकी समझ म स्वामीजी का मुख्य उद्दश्य यही था कि देश म घर घर कलह ओर घोर अशान्ति का विस्तार हो धर्म-कम का ह्रास हो ओर ब्राह्मणो की रोजी बन्द हो।

शाबाश सनातनी भाइयो ! छिद्रान्वेषण ओर व्यर्थ दोषारोपण करने की अच्छी जिम्मेवारी तुम लोगो का मिल गइ है। तुम्हीं लोग प्रात स्मरणीय भगवान गौतम बुद्ध को हिन्दू–धर्म का प्रबल शत्रु मानत हो। तुम्हीं लोग कबीरपथी दादूदयाली नानकशाही आदि मतानुयायियो को व्यर्थ अपना जानी दुश्मन समझते हो। धर्म की सत्ता और महत्त्व खूब समझे बिना ही आपस मे लड पडते हो। प्यारे भाइयो ! क्या तुम लोगो की मर्यादा इसी मे बढेगी ? तुम लोगो क लिए क्या यही [illegible] क्या इसी म तुम लोगो की शोभा ह [illegible] धर्माभिमानी सनातनी भाइयो क [illegible] गया सर्कीर्ण [illegible] सनातनी क मनन एसा क्षुद्रातिक्षुद्र भाव क्यो [illegible] उनक नेत्र म ऐसी माह की गाढी रतौन्धी ? उनका अभ्यन्तर इस तरह कलुषित ? उनके विचार एसे दूषित भावना ऐसी पतित ? विश्वास एसा भ्रष्ट ऊपर चिकना और भीतर इतना मनोमालिन्य ?

प्यारे आर्य और सनातनी भाइयो ! कब तक तुम लोग दो नाम से पुकारे जाओगे ? वैर फूट क बीज को कब तक सीचते उगाते रहोगे ? स्वामीजी के उज्ज्वल उद्देश्यो का गूढ रहस्य कब तक समझते रह जाओगे ? उनके सिद्धान्त–रत्नो को कब तक परखोगे ?

तुम्ही लोगो की सन्तोषजनक सख्या देखकर तो भारतमाता न आशा की टकटकी बाधी थी। किन्तु दुर्दैव ! बीच ही म एसी ढगी रार मची कि दिग्दिगन्त मे विषाक्त द्वेष धूम्र फल गया। क्या तुम लोगो को कुछ बाहर की भी खबर हे ? कब तक कूपमण्डूक बने रहोगे ? अजी [illegible] स्वामीजी की ही घुडकी सुनकर मुसलमान भाई एकदम जाग पडे हैं वे तो अब अपनी कौम मे जागृति फैला रहे है –

ऐ भाई मुसलमानो ! तुम्हे कुछ भी खबर है ?
तुम ख्वाब मे हो और जमाने मे सहर है।।
मीठी न कहो नीद को यह नीद है कडवी।
यह कन्द वो है जिसमे हलाहल का असर है।।

भाई भारतीयो ! आर्य और हिन्दू आर्य और सनातन–इन शब्दो का बेकार झगडा छोडो। स्वामीजी के ज्वलन्त उद्देश्यो को समझो। प्रेमपूर्वक सच्चे हृदय से निष्कपट भाव से आपस मे गले मिलो। याद रखो यदि वहीं हमारे स्वामीजी कहीं अमेरिका मे जन्म लिए होते इग्लैड और जमनी मे उत्पन्न हुए होते अथवा अरब या फारस मे ही पैदा हुए होते तो आज दिन वहा उनका कितना ऊचा सम्मान होता ? उनकी अपरिमिय विद्वत्ता का लोहा कौन नहीं मानता उनकी मानसिक शक्ति कमी बलीयसी समझी जाती ? उनकी तेजस्विता ओर मनस्विता की कैसी समुचित प्रतिष्ठा होती किन्तु हा ! हन्त ! मुझ आज तक यह यह भी मालूम नही कि स्वदेश सजात मनीषियो का किस तरह सम्मान किया जाता है ? अपन दशक अन्दर उपजे हुए विद्वान विद्रुम का कितना मूल्य होता है ?

प्यारे भाइयो ! स्वामीजी का मुख्य उद्दश्य यह था कि समूचे भारत के हिन्दू और मुसलमान आर्य और अनार्य अपने को भारतीय समझ भारत मे जन्म धारण करने का गौरव और गर्व ग्रहण करे एकता के दृढ सूत्र मे बद्ध होकर भेद भाव को बिसारे अविद्या का अन्धकार दूर कर तत्त्वज्ञान के सूर्योदय से अपने हृदय–शतदल को प्रफुल्लित करे जाडयान्धकार का विनाश कर यथार्थ [illegible] किरण [illegible] का पीकर अमर हो अपना च सामाजिक कुरीतियो का विधिपूर्वक मूलोच्छेद [illegible] की कुप्रथाओ का पूर्णतया सम्मार्जन [illegible] अत्याचार और व्यभिचार के मूल कारणो बीजो क सर्वथा विनाश तथा अभाव हो [illegible] ब्रह्मचर्य व्रत के पालन करने के अभ्यास का सारे देश म प्रसार हो जाय देश के अन्दर वीर पराक्रमी बलिष्ठ धीमान प्रज्ञाचक्षु, प्रत्युत्पन्नमति और प्रतिभाशाली सन्ताने उत्पन्न हो सभी भारतीय परिश्रम मे व्यस्त रहे कार्यदक्ष और उद्यमशील हो देव भरोसे न रहे आलस्य के पजे मे न फसे पर भाग्योपजीवी बनने से बचे और कर्मनिष्ठ हो सबल का अधिकार सबल न छीने दुर्बल को बलवान न सतावे इत्यादि।

शेष पृष्ठ ६ पर

हाय ऐसे देशभक्त महर्षि के जाज्वल्यमान सिद्धान्तो से जो लोग अच्छी शिक्षा ग्रहण नही करते उनसे भला क्या आशा की जा सकती है ? सच्ची बात तो यह है कि अभी तो कितने हमारे भाय और सनातनी भाई ऐसे है जो केवल पल्लवग्राही है किन्तु व्यर्थ की धर्म विडम्बना पसारे फिरते है मागते भीख चुकाते गाव का जमा। स्वामीजी के सिद्धान्तो का तनिक भी समझते तक नही पर आर्य बनकर फूले फिरते है और सनातनी बनकर समालोचना दर समालोचना करते फिरते है। कैसे अचरज की बात है।

स्वामीजी का जीवनोद्देश्य कैसा उच्चाशयपूर्ण था यह निसन्देह अनुभवनीय और अनुकरणीय है। कहने के लिए तो लाखो की सख्या मे सनातनी हिन्दू भाई ही है जो पुण्यश्लोक तापस शिरोमणि गोतम बुद्ध का नास्तिक ओर वेद विरोधी कहकर पुकारते है और गीतामृतवर्षी कृष्णचन्द्र ऐसे योगिराज ज्ञान निधान भगवान को इन्द्रियासक्त और भोगी विलासी कहा करते है। इससे क्या वे वस्तुत निन्द्य कर्म करनेवाले थे ? कौन मूर्खाधिराज उन्हे इस तरह का कलक लगावेगा ? आप लोगो ने सुना होगा कि यूटन जब स्वदेशमे अपना विचार लेकर कार्यक्षेत्र मे अवतीर्ण हुआ तो सभी लोग उस उपेक्षा की दृष्टि से देखने लग गए चारो ओर से उसे फटकार ही मिली किन्तु करोडो विघ्न बाधाओ का बडी बहादुरी और दिलेरी से सामना करते हुए वह अपने उद्देश्य–पथ से विचलित नही हुआ और अन्तकाल उसे पूरी सफलता प्राप्त हुई। खैर अभी लोगो की आखो पर पट्टी बधी हुई है मगर याद रहे भाइयो ! वह दिन अब दूर नही है जिस दिन स्वामीजी के उद्देश्यो को आबाल वृद्ध नर नारी लमझ लेगे और देश मे सुशान्ति की तूती बोलने लगेगी।

यहा धर्म ससार के भीतर जितने कार्यकर्त्ता हैं उनमे उदारता का अभाव होने से धर्म पर बडे जोर का धक्का पहुच रहा है। सब लोग आपस के छिद्रान्वेषण मे ही लगे पाए जाते हैं। धर्मोपदेशक झगडे और बहस की गठरी लादे फिरते है। ज्ञानोपदेश और शान्ति विस्तारिणी–प्रेम प्रसारिणी शिक्षा का लेशमात्र भी उनके द्वारा देश मे नहीं फैलता। हमारे सनातन धर्मावलम्बियो के ही घर आज दिन भी पाखण्डपूर्ण परम्परा की –कितनी ही घिनौनी कुरीतियो की लकीर पिट रही है। भला उसका सशोधन क्यो नही किया जाता ? क्या खाली जबानी जमाखर्च से बेडा पार लगेगा ? बकवाद करने से धर्म की मर्यादा बढेगी ? बहस और थोथी जबानदराजी करने से धर्म की नीव टिकाऊ हो सकेगी ? हरगिज नही।

प्यारे भाइयो ! अच्छी चीज का भी दुष्प्रयोग – दुर्व्यवहार करने से उसकी सच्ची सत्ता की ज्योति मन्द पड जाती है। स्वामीजी के अक्षुण्ण सिद्धान्तो को यदि तुम मिल जुलकर विचारोगे उसका समयानुकूल ढर्रे पर चलाने की चेष्टा करोगे तो सभव है कि वेदोक्त धर्म का शरीर इस तरह कलुषित न हो अन्यथा भारी भय है कि स्वामीजी ऐसे नीतिविचक्षण पुरुषसिह के उद्देश्यो का कही बेतरह दुष्प्रयोग हो गया तो सन्देह नही कि धर्म कर्म रसातल मे चला जायेगा। सभी लोग उनके सिद्धान्तो के समझने का दावा करते है पर वास्तविक रूप मे सब लोग नही समझते हैं। स्वामीजी के ज्ञानसागर मे जो ऊपर ही ऊपर तैरते है वे केवल फेन और तृण-काष्ठादि व्यर्थ पदार्थो के भागी होते हैं किन्तु जो लोग भीतर पेठकर डुबकी लगाकर ढूढते हैं वे अवश्य ही मूगे मोती पाते है।

सार ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु
हसैर्यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात्।।

तुच्छ वस्तु को त्याज्य समझो सुष्ठु पदार्थ ग्रहण करो–यही महत्ता का चिन्ह है। मेरे प्यारे भाइयो ! सोचो तो सही कि स्वामीजी से पुरुष सत्तम क उपदेश आदेश का कहा तक आप लोगो ने पालन किया ? किस तरह उनका सुप्रयोग किया ? भला हाथ मे आये हुए अनमोल रतन को काच का टुकडा समझकर क्यो फेकते हो ? क्या दोष ही दूढ निकालने मे सिद्धहस्त रहे ? गुणावली की ओर दृष्टि भी नही फेरी ? बस सीख लो जो दोषयुक्त रहता है वहीं दूसरे को दोषमय देखता है परन्तु जिसका अन्त करण विमल और शुद्ध है उसके लिए ब्रह्माण्ड स्वच्छ दर्पण के सदृश है।

विचारो ! देखो ! घोर निद्राभिभूत भारतीय धर्मकेसरी के कान ऐठकर स्वामीजी ने एक खूब कडी चपत नही जमाई होती तो आज दिन धर्म के अन्दर इतनी जागृति नहीं दीख पडती। तमावृत धर्म ससार आलोकमय कैसे होता ? यह तो कहिए कि भला आपने स्वय कभी अकेले मे बैठकर स्वामीजी के सिद्धान्तो को टटोला है ? उनके जीवन आकर से कितने रत्न खोद निकाले है आपने ? या यो ही बकझक लगाये चलते हैं ? स्वामीजी एकता का रद्दा जमा गए और आप उस पर कुदाल मार रहे हैं झगडे की नींव डालने के हेतु ? ख्याल रखिए– धर्मस्य तत्त्व निहित गुहायाम – Religion lies in heart not in discussion । गुप्त या प्रकट रीति से भारत के सभी धर्मावलम्बियो के हृदय मे यह बात समा गई है कि स्वामीजी अगर सब मुह्यमान धर्मानुयायियो को खूब अच्छी तरह लताडते नही सब धर्मो के मवाद भरे फोडे मे नश्तर पेश नहीं करते सबकी नाक पर के फोडे नही दुखाते सबके अवनति–पथ को कटक–सकुल नहीं कर डालते तो आज दिन भारत के सभी धर्मानुयायी इस तरह कान नही खडा करते सब धोती झाडकर उठ खडे नही होते। यह स्वामीजी का ही प्रताप है कि चारो ओर धर्मसभाए स्थापित हो रही है–हो चुकी हे और आइन्दा भी होगी प्रत्येक वर्ष धर्म की वृद्धि और रक्षा के लिए अनेक चेष्टाए और चर्चाए की जाती है। महोपदेशक तोडे ऐठ रहे है। सभी लोग धर्म किस चिडिया का नाम है। यह समझने लग गए है धार्मिक पत्र और पत्रिकाए चारो ओर दृष्टिगोचर हो रही है। सब लोग अपने अपने धर्म की रखवाली करने के उपाय मे सलग्न हो रहे हैं। भारतधर्म–महामण्डल और ऋषिकुल ऐसी सस्थाए क्या कही सुनने मे भी आतीं अगर स्वामीजी की कृपा न होती ? स्वामीजी की दूरदर्शिता यदि कृपा न करती तो हाथोहाथ सनातन धर्म पताका कैसे फहराने पाती ? स्वामीजी के मोटे सोटे की चोट न पडती तो सब लोग आलस्यभरी निद्रा तन्द्रा क्योकर त्यागते ? धर्मभीरु लोग चौकन्ने ही नही होते। अस्तु ! मोहान्धकार मे बिललाते फिरते हुए धर्मभीरुओ को स्वामीजी ने वह वह गिन गिनकर भीतरिये घुस्से लगाए है कि जब जब पुरवेया बहेगी तब तब वे उस चोट से व्यथित और तदुपरान्त सुखी होगे

प्यार बन्धुओ ! सोचो जरा अगर तुम्हारी दृष्टि म विधवा विवाह खटकता है तो बाल विवाह अनमिल जोडी का दु खभारमय समुद्वहन–क्यो रुचता है ? श्राद्ध खण्डन खटकता है तो उसके अन्दर होनेवाले मर्मभेदी अन्याय और अनर्थ क्यो नहीं खटकते ? मूर्तिपूजा–खण्डन से दु ख होता है तो देवाना प्रिय पण्डो का उपद्रव और अत्याचार क्यो नही स्मरण हो आता ? निरक्षर भट्टाचार्य विलास रत मालपूआ चाभनेवाले मसनद के बोझ हट्टे कट्टे साधू बाबा और देश दुर्गति से अनभिज्ञ महन्तो के मचाए हुए उत्पात क्यो भूल जाते हैं ? पण्डे और बाबा लोगो द्वारा जो अनर्थ और अनाचार दिन दूना रात चौगुना फैल रहा है उनकी ओर ध्यान क्यो नही दौडता ? देश के उन मुफ्तखोरो की ओर क्यो नजर नहीं फिरती ?

किसी का दिल दुखाना स्वामीजी था सिद्धान्त नहीं था। मगर न जाने क्यो दुनिया की कुछ ऐसी अटपटी चाल है कि जिसमे जो दोष हो यदि वह दोष उसे ही दिखलाकर सावधान होने की चेतावनी दे दी जाय तो उसे बहुत नागवार गुजरता है। धर्म ससार की अगर स्वामीजी ने कडी समालोचना ही की तो क्या बुरी बात की ? समालोचना यदि सच्ची हो और दिल की सच्ची लगन से निकली हो तो तीखी होने पर भी वह हितकारिणी ही समझी जा सकती है। कडी समालोचना का असर बडा ही जबरदस्त हुआ करता है। जो मेरा ठीक ठीक ऐब बतलावे वही मेरा मित्र।

स्वामीजी से देशभक्त और समाज सुधारक के ऊपर व्यर्थ जो आक्षेप मढे जाते है वे सर्वथा निर्मूल होते है। जो गडकर इस बात की जाच पडताल करेगा और पता लगा लेगा उसीको इस बात की खबर होगी कि स्वामीजी का असल उद्देश्य क्या था। जातीयता और राष्ट्रीयता एकता ब्रह्मचर्य और मातृभाषानुरागिता मितव्ययिता और पवित्र शान्ति विचारशीलता और प्रखर बुद्धिमत्ता सहृदयता और समप्राणता गुणग्रहाकता और स्वत्व सरक्षण अधिकारप्रियता और आध्यात्मिक स्वतत्रता सहनशीलता और जितेन्द्रियता आत्म–निग्रह और समदर्शिता–यही सब मुख्य तथा सुदृढ स्तम्भ हैं जिनपर स्वामीजी के सिद्धान्त–भवन का निर्माण हुआ है।

प्रिय वाचकवृन्द ! इन उपर्युक्त गुणो को एक-एक करके समझिए। इनपर विचार दौडाइए। माला ठकठकाकर इनका जप अनुष्ठान कीजिए। स्वामीजी की देशहितैशिता का शुद्धादर्श सामने रख लीजिए। जीवन सार्थक बनाइए। देश का कल्याण कीजिए। मातृभाषा को राष्ट्रभाषा बनाने की चेष्टा करते जाइए। वीर्यरक्षा से शरीर पुष्ट कीजिए। ज्ञानार्जन और विद्याभ्यास से आत्मा की पुष्टि कीजिए। देश की दशा पर आखो को उमडने दीजिए। भ्रम मे पडकर समय नष्ट न कीजिए। अबलाओ का हक मत छीनिए। नारी जाति के साथ अन्याय का धन्धा मत खडा कीजिए। एक नियम सगठित करके समाज के शासक हो जाइए। बस यही सब स्वामीजी के सर्वव्याधिविनाशक अमृत बूटी नुस्खा है ◆

ये पितर-प्रेत के झमेले

– सूर्या कुमारी व्याकरणाचार्या

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शत समा *यजु० ४० । २* इस ईश्वरीय आज्ञानुसार मनुष्य का जीवन कर्त्तव्यमय है अर्थात वह कर्त्तव्य का पर्याय है उसे कर्त्तव्य के लिए ही जीना है। इस कर्त्तव्यमय जीवन के ब्रह्मयज्ञ देवयज्ञ आदि पञ्चमहायज्ञ अनिवार्य अङ्ग हैं जिनमे तृतीय है पितृयज्ञ।

"पित्रे यज्ञ = पितृयज्ञ पिता के लिये जो यज्ञ वह पितृयज्ञ हुआ। पितृ नाम पिता का है क्योकि वह पालन करता है–पालयति इति पिता। तथा "यजदेवपूजासगतिकरण दानेषु धातु से निष्पन्न यज्ञ शब्द पित्रादि के सत्कार सेवा एव उनके साहचर्य को प्रकट करता है अर्थात पितृयज्ञ का तात्पर्य हुआ जो पालन करने वाले ऋषि देव विद्वान आचार्य गुरु माता पिता पितामह पितामही मातामह मातामही ताऊ ताई चाचा चाची बडे भ्राता भाभी आदि विशिष्ट जन है उनकी सेवा करना सत्कार सम्मान करना। यह पितृयज्ञ ही श्राद्ध है क्योकि पित्रादि की सेवा श्रद्धा से की जाती है श्रद्धया सम्पाद्य कर्म इति श्राद्धम श्रद्धा अस्मिन कर्मणि विद्यते इति श्राद्धम श्रद्धा प्रयोजनमअस्य कर्मण इति वा श्राद्धम । और तर्पण भी पितृयज्ञ को ही कहते है क्योकि हमारी सेवा सत्कार आदि से पालनकर्त्ता पित्रादिजन तृप्त होते है तृप्यन्ति येन कर्मणा तत तर्पणम – जिस कर्म से तृप्ति हो वह कर्म तर्पण है। इस पितृयज्ञ के लिए दिन पक्ष मास आदि निश्चित नही किये जा सकते यह अहर्निश सम्पाद्य काय है यता हि पित्रादि सभी चेतन प्राणी है उन्हे किसी भी समय किसी भी वस्तु, सेवा आदि की आवश्यकता सम्भव है। जैसा कि मनु महाराज ने कहा है

कुर्यादहरह श्राद्धमन्नाद्येनोदकेन वा।
पयोमूलफलैर्वाऽपि पितृभ्य प्रीतिमावहन।।

मनु० ३। ८२

गृहस्थी जन अह अह प्रतिदिन अन्नादि भोज्यपदार्थ फल दुग्ध जल आदि से पितृभ्य = माता–पिता आदि पालन करने वालो की प्रीति–पूर्वक श्राद्धम – श्रद्धापूर्वक सेवा सत्कारादि कुर्यात = करे। मनुमहाराज के द्वारा बताई गई पितृ सेवा ही वास्तविक पितृयज्ञ की परम्परा हमारे देश की रही है।

हमारे देश का दुर्भाग्योदय स्वरूप महाभारत युद्ध हुआ जिसमे सभी आचार्य गुरु विद्वान मारे गये सत्यासत्य कर्त्तव्याकर्त्तव्य को बताने वाला कोई न रहा फलत आडम्बर अन्धविश्वास अज्ञान के चगुल मे देश जकड गया और पितर शब्द का उपर्युक्त अर्थ न होकर वह मरे हुए अर्थ मे प्रयुक्त होने लगा। पितृयज्ञ श्राद्ध तर्पण जैसे दैनन्दिन कृत्य पक्षविशेष तथा स्थितिविशेष = मरणोत्तर के कर्त्तव्य बना दिये गये जो आश्विन मास की प्रतिपदा से अमावस्या तक सम्पन्न किये जाते हैं। भूत प्रेतो के द्वारा अनिष्ट की आशका तथा अभीष्ट की आशा ने तो और भी मृतक श्राद्ध एव तर्पण की गहरी जडे जमा दी। पितृयज्ञ के इस बिगडे स्वरूप का अपना दु ख किसी कवि ने इन शब्दो मे व्यक्त किया है –

जियत पिता से पूछि न बात मरे पिता को दूधऔ भात।
जियत पिता से दण्डमदण्डा मरे पिता को तोषक तकिया।।

बुद्धिजीवी प्राणी होने के नाते हम जरा सोचे पितर शब्द सस्कत शब्द के पितृ शब्द का जो पिता रूप एकवचन मे बनता है उसका ही तो बहुवचनान्त रूप है। जब एकवचनान्त पिता शब्द से जीवित पिता का अभिधान होता है तो क्यो नही बहुवचनान्त पितर शब्द से जीवित पित्रादि लिये जायेगे ? अर्थात लिये ही जायेगे। वेदो मे ब्राह्मण ग्रन्थो मे एव स्मृति आदि मे जो जीवित है उन्हे ही पितर कहा गया है यथा–

१ ***ऊर्जं वहन्तीरमृत घृत पय कीलाल परिस्रुतम।***
स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन।। *यजु० २। ३४*

यहा मन्त्र मे बताया गया है कि प्रत्येक

हमारे देश का दुभाग्योदय स्वरूप महाभारत युद्ध हुआ जिसमे सभी आचार्य गुरु विद्वान मारे गये सत्यासत्य कर्त्तव्याकर्त्तव्य को बताने वाला कोई न रहा फलत आडम्बर अन्धविश्वास अज्ञान के चगुल मे देश जकड गया और पितर शब्द का उपर्युक्त अर्थ न होकर वह मरे हुए अर्थ मे प्रयुक्त होने लगा। पितृयज्ञ = श्राद्ध तर्पण जैसे दैनन्दिन कृत्य पक्षविशेष तथा स्थितिविशेष = मरणोत्तर के कर्त्तव्य बना दिये गये जो आश्विन मास की प्रतिपदा से अमावस्या तक सम्पन्न किये जाते है। भूत प्रेतो के द्वारा अनिष्ट की आशका तथा अभीष्ट की आशा ने ता और भी मृतक श्राद्ध एव तर्पण की गहरी जडे जमा दी।

मनुष्य अपने पुत्र पौत्र सेवकादि का आदेश कि मेरे पितृन पिता पितामह माता मातामह आचार्य आदि की उत्तम जल अमृत स्वरूप रस घृत दूध अन्न फल देकर तर्पयत तृप्ति करे।

२ **मर्त्या पितर।** *शत०ब्रा० । १। ३। ४*

मर्त्य मनुष्य ही पितर है

३ **अध्यापयामास पितृन शिशु आङ्गिरस कवि।** *मनु० २। १२६*

आङ्गिरस नामक विद्वान बालक ने पितृन अपने पिता समान चाचा आदि पितरो को पढाया।

इस प्रकार "पितर शब्द जीवित पिता चाचा ताऊ आचार्यादि का ही वाचक है मृत का नही अन्यथा उपयुक्त कथन असगत हो जायेगे क्योकि मरे हुओ को पढाना या उनकी सेवा के लिए दूसरो को आज्ञा देना असम्भव है।

पितर कौन है ? मरे या जीवित ? यहा जानने के लिए हम वदिक ग्रन्थो की खोज न भी करे तो भी भगवद गीता का ही देख जिसका हम नित्य पाठ करते है प्रवचन करते है। गीता मे सुस्पष्ट पितर से जीवितो का ही ग्रहण है। कुरुक्षेत्र के मैदान मे कौरव पाण्डव आमने सामन एक दूसरे को युद्ध मे पराजित करन के लिए खडे है उस समय आत्मवादी अर्जुन अपने आत्मीय जनो को सम्मने उपस्थित देख युद्ध करने से इन्कार करता है। उन आत्मीय जनो मे पितरो को भी अर्जुन ने गिनाया है यथा

आचार्या पितर पुत्रास्तथैव च पितामहा।
मातुला श्वशुरा पौत्रा श्याला सम्बन्धिनस्तथा।
एतान न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन।।

गीता १। ३४ ३५

यहा "पितर शब्द जीवित धृतराष्ट्र आदि जो आत्मीय जन है उनके लिये प्रयुक्त है यदि पितर शब्द का अर्थ मरा हुआ होगा तो न हन्तुमिच्छामि यह अर्जुन का कथन पितर के साथ कैसे सङ्गत होगा ? विकलता होगी ? अत निसन्देह पितर शब्द जीवित व्यक्तियो का ही वाचक है मृत का नही।

पितर जीवित होगे तभी श्राद्ध और तर्पणादि कार्य भी सम्पन्न हो सकते है क्योकि जो हमने कार्य किया वह श्रद्धा से किया गया है और उससे तृप्ति हुई है यह बात जीवित ही अनुभव कर बता सकते है मरे हुए नही। जो मरे हुए है वे हमे प्रेत बनकर डरायेगे अथवा हमारा अनिष्ट करेगे यदि इसके निवारण के लिए हम तथाकथित श्राद्ध और तर्पण करते है तो यह हमारा कोरा भ्रम है।

प्रेत

प्रेत सज्ञा जीवात्मा की प्रकर्ष गति गमन विशेष के कारण है प्रकर्षेण इत गत इति प्रेत । देखिए जब हम बडी से बडी या छोटी से छोटी यात्रा करते है अटैची बिस्तरबन्द आदि नाना वस्तुये साथ ले जाते है यहा तक कि शहर जाने पर भी कुछ न कुछ हमारे हाथ मे होता ही है रिक्त हाथ नही जाते। तथा लोगबाग जाते समय बिदाई भी देते है। यहा कितने आश्चर्य की बात है कि मरने के बाद जीवात्मा सदा के लिए जा रहा है और साथ मे कुछ नही ? वस्त्र तक नही ? जिस शरीर को नित्य मल मलकर साफ सुथरा करते रहे वह भी दो और फिर क्षण वह निकल गया हम पता भी नही चला हम देख भी नही सके कोई विदाई भी न दे सका और बिना कुछ लिये चल दिया जीवात्मा इस प्रकार जीवात्मा का यह प्रकृष्टतम गमन है गमन के जाने के सामान्य तौर तरीको से भिन्न यह गमन है अत इस प्रकष गमन के कारण जीवात्मा प्रेत कहा जायेगा क्योकि वह प्रकष्ट गमन से युक्त है तथा प्रकर्षेण इत गत अस्मात इति प्रेत जीवात्मा जिस शरीर से प्रकर्ष गमन के द्वारा निकलकर गया है उस शरीर का नाम भी प्रेत हुआ। प्रेतमग्नौ अभ्याद धाति। बृहदा०उप० ५। ११। १ (प्रेत मृत शरीर को अग्नि मे रखता है)।

उपर्युक्त शास्त्रीय विवेचन से सुस्पष्ट हुआ कि प्रेत कोई योनि विशेष नही है जहा जाकर वह हमे कष्ट देगा और हमारे द्वारा पितृपक्ष अर्थात आश्विन मास के कृष्णपक्ष म श्राद्ध तपण किये जाने पर अभ्युदय करेगा। यदि लोक प्रचलन के अनुसार प्रेत योनि मे गये हुए जीवात्मा का यह सामर्थ्य है तो वह मरणोपरान्त ही क्यो ऐसा सामर्थ्य दिखाता है ? अपने मरण को भी रोककर तथा अपने सामर्थ्य से सवदा ही परिवार मे रहकर आत्मीयजनो को धनादि वैभव से तृप्त करता रहता।

जीवात्मा तो अपने कर्मो के अनुसार (कर्मवैचित्र्यात् सृष्टिवैचित्र्यम साख्य०द० ६। ४१) विभिन्न जन्मो को पाता है। शरीर से निकलने के बाद जीवात्मा भटकता नही है बृहदारण्यकोपनिषद् का कथन है कि जैसे तृणजलायुका घास पर चलने वाला कृमि अपने स्थान क

शेष पृष्ठ ६ पर

आदर्श मित्र के गुणों की पहचान

धर्म सिंह शास्त्री, डबल एम०ए०

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य समाज मे ही रहना चाहता है और अपनी भावनाओ को आदान प्रदान करना चाहता है। अपने दुख और सुखो का साथी बनना चाहता है। वास्तव मे जीवन मे अकेलापन विधाता का एक अभिशाप है। इसलिए ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त मे प्रभु का उपदेश है –

ओ३म समानो मत्र समिति समानी समान मन सह चित्तमेषाम।
समान मत्रमभिमत्रये व समानेन वो हविषा जुहोमि।।
ओम समानि व आकूति समाना हृदयानि व
समानमस्तु वो मनो यथा व सुसहासति।

अर्थात ईश्वर उपदेश दे रहे हैं कि "तुम्हारे गुप्त विषयो के गभीर विचार मिलकर हो विचारो के लिए तुम्हारी सभाए एक जैसी हो जिनमे तुम सब मिलजुलकर बैठ सको तुम्हारा मनन मिलकर और निश्चयपूर्वक समान हो मै तुम्हे मिलकर विचार करने का उपदेश देता हू और तुमको पारस्परिक उपकार के जीवन मे नियुक्त करता हू। तुम्हारे सकल्प और प्रयत्न मिलकर हो तुम्हारे हृदय परस्पर मिले हुए हो तुम्हारे अन्तकरण मिले रहे जिनमे परस्पर सहायता से तुम्हारी भरपूर उन्नति हो"।

एक कहावत है कि "एकाकी बादल रो देते एकाकी रवि जलते रहते"। किसी भी मित्र की रक्षा उन्नति उत्थान सभी कुछ एक सन्मित्र पर ही आधारित होते हैं।

कराविव शरीरस्य नेत्रयोरिव पक्ष्मणि।
अविचार्य प्रिय कुर्यात तन्मित्र मित्रमुचयते।।

अर्थात जिस प्रकार मनुष्य के दोना हाथ शरीर की अनवरत रक्षा करते है उन्हे कहने की आवश्यकता नही होती और न कभी शरीर ही कहता है कि जब मै पृथ्वी पर गिरू तब तुम आगे आ जाना और मुझे बचा लेना। हाथ एक सच्चे मित्र की भान्ति सदैव शरीर की रक्षा करते है। इसी प्रकार आख की पलके भी आख की रक्षा करती हैं वे आख के अन्दर एक छोटा सा तिनका भी जाने से रोकती हैं। इसी तरह मित्र को अपने कर्त्तव्य का पालन करना ही चाहिए। तुलसीदास ने मित्र की जहा पहचान बताई है वहा एक यह भी बताया है कि "कुपथ निवारि सुपन्थ चलावा गुण प्रकटहि अवगुण ही दुरावा"–तात्पर्य यह है कि अगर हम झूठ बोलते है चोरी करते हैं किसी को धोखा देते हैं या हममे किसी प्रकार की कोई त्रुटि है तो एक श्रेष्ठ मित्र का कर्त्तव्य है कि वह हमे सन्मार्ग पर चलाने की प्रेरणा दे। तन से मन से धन से वह सच्चे मित्र की रक्षा करे। एक व्यक्ति अगर विपत्ति के गहन गर्त मे डूबते हुए अपने मित्र को निकालकर बाहर ले जाते है तो वह एक पुण्य का कार्य है। रहीम ने लिखा है कि –

रहिमन सोई मीत है भीर परे ठहराई
मथत मथत माखन रहे दही मही बिलगाई।

मित्रता होनी चाहिए मीन और नीर जैसी। सरोवर मे जबतक भरपूर जल रहा मछलिया भी क्रीडा और मनो–विनोद करती रहीं परन्तु जब तालाब मे पानी कम हुआ तो पानी कम की वजह से विपत्ति आई तो मछलिया उदास रही जबतक जल रहा तबतक वे तालाब का साथ अवश्य देती हैं। तुलसीदास जी ने अच्छे मित्र की कसौटी विपत्ति ही बनाई है –

धीरज धर्म मित्र अरू नारी
आपतिकाल परखिए चारी।
जे न मित्र दुख होहि दुखारी
तिनहिं विलोकत पातक भारी।।

इसलिए सस्कृत मे कहा गया है कि "आपगदत चन जहाति ददाति काले" अर्थात विपत्ति के समय सच्चा मित्र साथ नहीं छोडता अपितु सहायता के रूप में कुछ न कुछ देता ही रहता है। जिस प्रकार स्वर्ण की परीक्षा कसौटी पर घिसने से होती है उसी प्रकार मित्र की परीक्षा विपत्ति के समय त्याग से होती है। "गुहानि गूहति गुणान प्रकटी करोति" अर्थात जीवन का कोई भी क्षेत्र हो मित्र को अपने मित्र के साथ सहानुभूति तो बनाए रखनी ही चाहिए। इसी प्रकार गुप्त जी ने भी लिखा है" सहानुभूति चाहिए महाविभूति है यही"। उर्दू का एक शेयर है जो इसी प्रसग मे प्रकाश डालता है

खाके जो तीर देखा कीमगाह की तरफ
अपने ही दोस्तो से मुलाकात हो गयी।

कीमगाह उस स्थान को कहा जाता हैं जहा पर छुपकर तीर चलाया जाता है पीछे से किसी ने तीर चलाया पीठ पर लगा दर्द हुआ पीछे मुडकर देखा तो वहा अपना ही दोस्त बैठा हुआ तीरन्दाजी करते दिखायी दिया।

कृष्ण और सुदामा की मित्रता का उदाहरण आज के युग मे देखना एक काल्पनिक चित्रमान ही रह गया है इसलिए सस्कृत मे एक विद्वान ने कहा है –

परोक्षे कार्य हन्तारम प्रियवादिनम
पर्जयेत तादृश मित्र विषकुभ पयोमुखम

अर्थात जो सामने मीठा बोलता है ओर पीछे काम बिगाडता है ऐसे मित्र को छोड देना चाहिए। श्रेष्ठतम मित्र के क्या लक्षण होते हैं भर्तृहरि ने एक श्लोक मे लिखा है –

पापानिवायरति योजयते हिताय गुहानि गूहति
गुणान प्रकटी करोति।
आपदगतम चन जहाति ददाति काले
सन्मर्भवलक्षणत्रिदम प्रवदन्ति सन्त ।।

अर्थात जो बुरे मार्ग पर चलने से रोकता है हितकारी कामो मे लगाता है गुप्त बातो को छिपाता है तथा गुणो को प्रकट करता है आपत्तिकाल के समय साथ नहीं छोडता यथा समय पडने पर कुछ मदद देता है विद्वान उन्हीं गुणो को सर्वश्रेष्ठ मित्र के लक्षण बताते हैं।

सदैव मित्र से वाणी विवाद नही होना चाहिए धन आदि का सम्बन्ध भी अधिक नहीं होना चाहिए मित्र की पत्नी से कभी परोक्ष मे सभाशण नही करना चाहिए अन्यथा मैत्री सम्बन्ध चिरस्थायी नहीं रह सकते जैसे कि इस श्लोक मे कहा गया है

पदीच्छेत विपुला प्राति त्रीणि तत्र न कारयेत
वाग विवादोदर्थ सम्बन्ध एकान्ते दारभाषनम।

महाकवि बिहारी की भी उक्ति प्रशसनीय है– *"जो चाहो चटक न घटे मैलो होय न मित रज राजसु न छुवाइए नेह चीकने चित।"* आज के मित्र ऐसे भी होते हैं कि मुख पर कहेगे कि आप अच्छे आदमी हैं आप जैसे मित्र को पाकर हम सौभाग्यशाली हुए और जहा पीठ मुडी और दूसरा कोई मिला तो कहने लगे देखो एक नम्बर का हरामी है पचासों गलतिया तो इसकी मेरी डायरी मे नोट हो रही है आने दो कभी मौका ऐसें हाथ लगाऊगा कि याद रखेगा। वह मित्र इस प्रकार है जैसे विष से भरा हुआ घडा हो और उस घडे के मुख पर दूध लगा दिया जाए तो– *विषरस भरा कनक घट जैसे"।*

हमे सर्वोच्च ज्ञानवर्धक ज्ञान वेदो में मिलता है जिनमे विस्तृत रूप में परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई है यथा मानवमात्र के पूर्ण हित के लिए बताया गया है –

ओम अभय न करत्यन्तरिक्षमभय
द्यावापृथिवी उभे इमे
अभय पश्चादभय पुरस्तादुत्तरादधरादभय नो अस्तु।
ओम अभय मित्रा दभयमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात
अभय नक्तमभयम दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु।

अर्थात हे भगवन अन्तरिक्ष लोक हमे निर्भयता प्रदान करे द्युलोक व पृथिवी लोक हमारे लिए अभय हो पश्चिम मे व पीछे पूर्व मे व आगे उत्तर मे व दक्षिण मे व नीचे से हमे निर्भयता प्राप्त हो अर्थात सब ओर हमे मित्रता प्राप्त कराओ। हे अभय प्रभु हमे मित्र से भय न हो और अमित्र से भी भय न हो जाने हुए और न जाने हुए लोगो से भय न हो दिन और रात्रि सभी कालो मे हम निर्भीक हो। सब आशाए एव दिशाए हमारे लिए हितकारी हो।

ओम श नो मित्र श वरूण श नो भवत्वर्यमा
श न इन्द्रो बृहस्पति श नो विष्णुरूरूक्रम।
आम श नो मित्र श वरुण श विवस्वाछमन्तक
उत्पाता पार्थिवान्तरिक्षा श नो दिविचरा ग्रहा।

अर्थात मित्र हम सबके लिए कल्याणप्रद हो वरूण सूर्य और यम हम सबका कल्याण करे न्यायकारी अर्यमा हम सबका कल्याणकारक हो इन्द्र और बृहस्पति हम सबके लिए कल्याणमय हो और विष्णु हमारा कल्याण करे। पृथ्वी और आकाश मे होने वाले अनिष्ट हमे सुख देने वाले हो और स्वर्ग मे विचरण करने वाले गृह भी हमारे लिए शान्ति प्रदान करने वाले हो। इसीलिए यजुर्वेद मे कहा गया है कि

ऋते दृहमा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि
भूतानि समीक्षन्ताम।
मित्रस्याह चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।

यथा हे प्रभु, हमारी दृष्टि को दृढ कीजिए सभी प्राणी मात्र हमे मित्र की दृष्टि से देखे मैं भी सभी प्राणियो को मित्र की दृष्टि से देखू और हम परस्पर एक–दूसरे को मित्र की दृष्टि से बर्ते। हे प्रभु, ऐसी सुदृढता हम सबमे प्रदान कीजिए।

मित्र हो सब प्राणी ऐसी प्रभु कृपा करो
हितैषी मैं बनू सबका ऐसी प्रभु कृपा करो
मिटे बैर विरोध सबका ऐसी प्रभु कृपा करो
व्रती हो बढे आगे ऐसी प्रभु कृपा करो।

मित्र बहुत ही प्यारा शब्द है। इसका उच्चारण करते हुए मन माधुर्य से भर उठता है। अगर सच्चा मित्र समय पर सगे सम्बन्धी से भी अधिक हित साधन करता है वह अपने सखा के लिए तन मन धन का बलिदान कर देता है तो मित्र प्रभुराजा है। उसके कर्त्तव्यो और गुणो के कारण वह सबके लिए "यज्ञिय" है। आओ हम सब जगत के साथ मित्रता का व्यवहार करें जिससे जगत सुख शान्ति का परमधाम बन सके और मित्र सदैव नमस्करणीय बना रहे। आदर्श मित्र के लिए जैसे वेद में कहा है –

अय मित्रो नमस्य सुशेवो राजा सुक्षत्रो अजनिष्ट वेधा।
तस्य वय सुमतौ यज्ञियस्य अपि भद्रे सौमनसे स्याम।।

डब्ल्यू०पी० ६६ए मौर्य इन्क्लेव
पीतमपुरा दिल्ली–११००३४

पुस्तक समीक्षा

१ **सन्ध्या यज्ञ प्रकाश**
पृ०२०० मूल्य० २०रु

२ **चतुर्वेद–शतकम्**
(ऋक यजु० साम० अथर्व०)
प्रत्येक के पृ० १०४ मूल्य० १५ रु प्रति

ले० डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, मंत्री सभा

१ **"सन्ध्या यज्ञ प्रकाश"** द्वितीय बार छपी प्रथम बार की एक हजार प्रति हालैण्ड आर्य समाज ने ले ली थीं।
विशेषताये मत्र-अर्थ अनुशीलन पठनीय है सन्ध्या क्यो ? प्रार्थना क्यो यज्ञ क्यों का परिचय देकर स्वस्ति वाचन शान्ति करण यज्ञ का अर्थ सहित विश्लेषण स्वाध्याय शील वेद के अध्याओ के मत्रो का अर्थ सहित परिचय। अन्त मे कुछ मननीय भजन भी दिये हैं।
सभा मे एक समय मे अर्थ सहित सन्ध्या यज्ञ प्रार्थना के साथ स्वस्तिवाचन शान्तिकरण सहित अच्छी पुस्तक की माग थी। जिसकी पूर्ति की जा सकी है।
आर्यजन इस पुस्तक को देखे पढे फिर अपनी सन्तुष्टि के साथ दो शब्द उपयोगिता के लिखें तो लेखक का उत्साह वर्धन भी होगा।

२ **"चतुर्वेदशतकम्"** आर्यजनता की आवश्यकतानुसार अवतक कई विद्वानों ने चारो वेदो के सौ सौ मत्रो का अर्थ सहित सकलन किया है जिसे आर्य जनता ने सराहा है। इसी की पूर्ति हेतु सार्वदेशिक सभा मे भी ऋक यजु० साम अर्थव० के चुने हुए सौ सौ मत्रो का शब्दार्थ भावार्थ तथा उसका अनुशीलन भी पढने योग्य दिया है।
समय समय पर सार्वदेशिक सभा द्वारा नया प्रकाशन आपके हाथो मे पठनीय दिया है। जिसकी सभी ने सराहना की है। मैं समझता हू इन वेद के शतको को भी आप पसन्द करेगे।

प्रथम प्रयास हैं आप को रुचिकर लगा तो लेखक अपने को धन्य मानेगा। आगे मेरा प्रयास है कि "एकादशोपनिषद" म० नारायण स्वामी जी महाराज का एक जिल्द में प्रकाशित कर आप की सेवा में प्रस्तुत करू।

प्रतीक्षा के साथ **सम्पादक**

हम पर भी अहसान करो

धर्मवीर शास्त्री

हम पर भी अहसान करो।

भटक रहे है बहुत काल से अब तो किचित ध्यान करो।
त्रस्त हुए है घूम घूम कर अब तो भव से त्राण करो।
दुनिया के इस गहन तिमिर से समुद्धार भगवान ! करो।

काम क्रोध की लोभ मोह की महापक मे पडे हुए।
विषय वासनाओ के निशिदिन ज्वर है हमपर चढे हुए।
छूट सके इनसे उपाय वह कृपया कृपानिधान करो।

राग द्वेष की जलन न दिल मे वैर भाव का नाम रहे।
मित्र भावना हो सब के प्रति अन्तस्तल निष्काम रहे।
अन्त करण शुद्ध निश्कल्मष हे प्रभु ? दुग्ध समान करो।

टेढी चाल छोड जीवन मे सरल शान्त हम बन जाये।
रमे प्रेम मे एक तुम्हारे वही कही आसन पाये
मानव जीवन दिया भक्ति का भी प्रभु ? अपनी दान करो।

देख लिया ससार घूम कर तुम सा कोई और नही।
बिना हेतु जो करे सुरक्षा सखा मित्र सिरमौर नही।
तुम मे हम मे दूरी के प्रभु दूर सभी व्यवधान करो।

अन्तिम आस तुम्हारी ही है दया करो हे दीन दयाल
आत्म ज्ञान का दो उजास मृदु अन्धकूप से शीघ्र निकाल।
तारे कितने ही अतीत मे हम पर भी अहसान करो।

बी १/५१ पश्चिम विहार
नई दिल्ली ६३

आर्य समाज मदुरै का निर्वाचन

२५ ८ ६६ को आर्य समाज मदुरै की साधारण सभा स्वामी नारायण सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुयी। वार्षिक वृतान्त तथा आय व्यय का विवरण सभा के समक्ष रखा गया जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया तदुपरान्त आर्य समाज के नवीन अधिकारियों का चुनाव किया गया। चुनाव में केवल मत्री जी का चुनाव हुआ जिसमे श्री एम०एस०राममूर्ति जी को चुना गया। अन्य अधिकारियो का निर्वाचन सर्व सम्मति से निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

श्री जी०आर०गोपालराव प्रधान श्री जे०एस०राजाराम तथा श्री एम०एस०तुलसीराम उप प्रधान श्री एस०ओ०के०रामप्रकाश के०वी० जानकीराम उपमत्री श्री एस०वैकटेशम जी कोषाध्यक्ष श्री सी०बालसुब्रमणीयन जी पुस्तकाध्यक्ष।

सभा प्रधान श्री जी०आर०गोपालराव को अन्य अन्तरग सदस्यो की नियुक्ति का अधिकार प्रदान किया गया।

न्यू मोती नगर में वेद प्रचार की धूम

आर्य समाज न्यू मोती नगर नई दिल्ली में दिनाक २६ ८ ६६ से १-६-६६ तक वेद प्रचारका आयोजन किया गया जिसमें आचार्य श्रीमति लक्ष्मी ममता दिल्ली श्रीमती शकुन्तला देवी नजफगढ़ दिल्ली तथा आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक एव ख्याति प्राप्त कवि व लेखक पंडित नन्दलाल निर्भय ग्राम बहीन (फरीदाबाद) ने अपने भजनोपदेशों ऐव व्याख्यानो से श्रोताओ को लाभान्वित किया।

दिनाक १-६ ६६ को राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया।

जिसमें श्री नन्दलाल निर्भय रमेश चन्द्र शास्त्री दिल्ली श्री चन्द्रशेखर शास्त्री दिल्ली ने राष्ट्र पर आने वाले घोर सकट पर जनता का ध्यान आकर्षित किया। इस आयोजन की सर्वत्र प्रशसा की जा रही है।

तीर्थराम टन्डन प्रधान
आर्य समाज न्यूमोती नगर
नई दिल्ली–१५

ये पितर–प्रेत के झमेले

पृष्ठ ७ का शेष

छोडने से पहले दूसरा स्थान ग्रहण कर लेता है तभी पूर्व का स्थान छोडता है वैसे ही जीवात्मा का स्थान निश्चित है वह अपने कर्मों की वासना के अनुसार दैव प्राजापत्य आदि मनुष्य योनि तथा पशु-पक्षी आदि योनियो को प्राप्त करता है। यदि किसी जीव विशेष के तुष = भूसी रहित निष्कित् पुण्य कर्म होते हैं अर्थात मात्र पुण्य का ही सचय होता है तब वह मरने के पश्चात् अपने पुण्य कर्म की सीमानुसार ब्रह्मानन्द मे लीन रहता है जो मुक्ति की दशा कही जाती है उस दशा को विरले ही प्राप्त करते हैं।

पिण्डदान-

'पिण्डदान' शब्द मे दान शब्द जुडा हुआ है। दान आदान की अपेक्षा रखता है तो वह आदान = लेना क्रिया तो सशरीर अर्थात् जीवितों मे् ही सम्भव है मरे हुओ मे नहीं। और "पिण्ड" पिडि सघाते धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ है सघात। शरीर भी पञ्चमहाभूतो का सघात है अत शरीर पिण्ड हुआ। अन्न आदि द्रव्य भी पक कर पिण्ड बन जाते हैं सो अन्न आदि द्रव्य भी पिण्ड कहलाये। इस प्रकार–

१पिण्डाव दानम = पिण्ड = सशरीर के लिए दान
२पिण्डस्य दानम = अन्न आदि द्रव्यो का दान ये दो अर्थ ही "पिण्डदान" शब्द के हैं। स्वर्गतजनो के लिए पिण्डपारना अर्थ नहीं है और यह दान सेवा शुश्रूषा हर समय की चीज है कोई खास ऋतु महीना इसके लिए कैसे निर्धारित हो सकता है।

इस प्रकार हमे जीवित पितरो की सेवा शुश्रूषा श्रद्धापूर्वक करनी चाहिए और उन्हे तृप्त रखना चाहिए तभी हमारे कार्य श्राद्ध और तर्पण नाम से कहलाने योग्य हो सकेगे और हमारा पितृयज्ञ पूरा होगा। वस्तुत आश्विन मास का कृष्णपक्ष हमारे वृद्धजनो के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से सवदेनशील बन जाता है क्योकि शरद ऋतु प्रारम्भ होने वाली है उस समय वर्षा ऋतु मे सचित कफ की वृद्धि के कारण तथा पित्त की विकृति के कारण बहुत सी वातव्याधिया वृद्धजनो को पीडित करती है अत उन व्याधियो से बचाने के लिए हमें विशेष रूप से आश्विन मास मे श्रद्धापूर्वक तृप्ति कारक औषधि आदि से उनका उपचार करना चाहिए। यही हमारा वास्तविक श्राद्ध और तर्पण है।

सूर्या कुमारी व्याकरणाचार्या
पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी

दलित ईसाइयों को आरक्षण : एक षड्यन्त्र

पृष्ठ ३ का शेष

यहा यह लिखना असगत न होगा कि १९८२ मे त्रिपुरा मे कार्यरत एक अमरीकी मिशनरी को एव इससे पूर्व एक असम मे भी कार्यरत मिशनरी को अलगवाव वादी गतिविधियो मे सलिप्त पाया गया था और इसी कारण भारत से निकाला गया था।

श्री अभय इसी पत्रिका के पृष्ठ २० पर लिखते हैं कि कुल मिलाकर सी०आई०ए० का भारत मे अलगाववादी प्रवृत्तियो का बढाने का इतिहास रहा है और आज यदि सी०आई०ए० भारत के टूटने की भविष्यवाणी कर रही है तो इसके पीछे जरूर कोई षडयन्त्र है।

"न्यू इग्लैण्ड" योजना

ऊपर जिन छ पर्वतीय राज्यो का हमने वर्णन किया है उनमे अधिकतर वनवासी रहते हैं। ईसाई मिशनरियो के द्वारा उनकी परिस्थितियो का लाभ उठाकर उन्हे धर्मान्तरित करना ईसाई साम्राज्य को बढाने की योजना का एक अग है। इसके भी भू-राजनैतिक कारण है। सन १९४१ मे असम के गवर्नर राबर्ट रीड ने एक योजना बनाई थी जिसे "न्यूइगलैण्ड योजना" या क्राउन कालोनी योजना कहा गया। इस योजना के अन्तर्गत बगाल की खाडी से लेकर सदिया तक का इलाका जिसमे आज के सभी छ पर्वतीय राज्य तथा ब्रह्मदेश का चिदवन जिला बगलादेश का चिरगाव भी शामिल है—मिलाकर एक कमिश्नरी बनाना चाहिए जो कमिश्नर के द्वारा शासित होगा और जिसका सीधा सम्बन्ध इगलैण्ड की सरकार से होगा ऐसी व्यवस्था थी। इस सारे क्षेत्र का भारत से कोई सम्बन्ध नहीं होगा। इस सारी योजना का चर्चिल ने अनुमोदन किया था। इसी बीच इगलैण्ड की सरकार बदल गई। भारत स्वतत्र हो गया। यह योजना अस्थाई रूप से स्थगित हो गई।

सन १९४३ मे सर स्टेफर्ड क्रिप्स ने कुछ ईसाई नेताओ के बीच बोलते हुए कहा था कि ईसाई चर्च विश्व को उचित नेतृत्व नहीं दे सके हैं यदि नेतृत्व नहीं दे सके तो सारी दुनिया को ईसाई झण्डे के नीचे लाना असम्भव होगा।

इस लेख के प्रारम्भ मे हमने जिस कूपलैण्ड योजना की चर्चा की है उसका स्पष्टीकरण यहा करना आवश्यक हो गया है अन्यथा हम अपने मन्तव्य को आप तक पहुचाने मे असफल रहेगे। अत यहा उसका खुलासा कर रहे है डॉ० नित्यानन्द के शब्दो मे "आक्सफोर्ड यूनीवर्सीटी के प्रोफेसर सर रेजिनॉल्ड कूपलैण्ड ने क्रिप्स योजना बनायी थी। इस योजना में मुस्लिम लीग को सन्तुष्ट करने का पूरा प्रयत्न किया गया था। इस योजना के अन्तर्गत भारत के चार भाग प्रस्तावित थे—सिन्धु प्रदेश गगा प्रदेश ब्रह्मपुत्र डेल्टा और दक्षिण प्रदेश। देश राज्यो के पृथक सघ का भी प्रस्ताव था ईसाई मिशनरियो के कार्य के लिए असम के पर्वतीय क्षेत्र मे कानूनी सरक्षण मागा गया था। क्रिप्स मिशन २२ मार्च १९४२ को भारत पहुचा"। (देखे—मुस्लिम तुष्टिकरण की मृग मरीचिका पृष्ठ ५८)

ऊपर की योजना का स्वतत्र भारत मे राजनैतिक दलो की अल्पसख्यको के थोक वोट प्राप्त करने की नीति के अन्तर्गत तुष्टिकरण को अपनाने के कारण अब अनुकूल परिस्थितिया पाकर क्रियान्वयन हो रहा है। दलित इसाइयो को आरक्षण देने की बात भी ईसाइयो के थोक वोट प्राप्त करने का एक तरीका है। यदि इस सम्बन्ध मे बिल पास कर दिया गया तो "न्यूइगलैण्ड योजना" को निश्चित रूप से बल मिलेगा। इसलिए हम इसे ईसाई साम्राज्यवाद का एक षडयन्त्र कह रहे हैं।

इस विषय मे हम डॉ०जे०सी० कुमारप्पा को भी उद्धृत करना यहा आवश्यक मानते हैं उनका कहना है – "कि पाश्चात्य देशो की सेना के चार अग होते हैं – वायु सेना नौसेना स्थल सेना और चर्च। इसको ईसाई नेताओ ने स्वत स्वीकार किया है। "वर्ल्ड काउन्सिल आफ चर्चेज" के अधिवेशन मे एक पुस्तक पेश की गई। "क्रिश्चियनिटी एण्ड रेवोल्यूशन"। जिसको तैयार किया है वर्ल्ड काउन्सिल के एशिया के सयुक्त सचिव ने। उसमे कहा गया है कि जब दो देशो में सैनिक सधि होती है तो वह दो सरकारो के बीच होती है जनता के बीच कोई सम्बन्ध नहीं जुड पाता। इस मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध के अभाव मे न हम कम्यूनिज्म के विस्तार को रोक पाते हैं और न राष्ट्रीय भावना के उद्रेक को। इससे पाश्चात्य राष्ट्रो के हितो की भारी क्षति हो रही है। चर्च से यह अपेक्षा है कि वह जनता के बीच मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध स्थापित करके पाश्चात्य हितो की रक्षा करे।। (देखे विदेशी घुसपैठ और असम सुरूचि साहित्य का प्रकाशन १९८१) यह मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध कैसे स्थापित किया जाता है यह भी बडा रूचिकर है चौका देने वाला तथ्य है और जानने योग्य है। इसके पाच अग हैं –

१ – रोमन लिपि
२ – अग्रेजी शिक्षा
३ – बाईबल और उसका प्रदेश की भाषा मे अनुवाद तथा चर्च की स्थापना
४ – पाश्चात्य सभ्यता का विचार आहार और आचार।
५ – स्वास्थ्य सवा के नाम पर अस्पताल। जहा जहा भी ईसाई मिशनरी जाते हैं वहा की जन जातियो की बोलियो का अध्ययन कर उन्हे रोमन लिपि देते हैं। अग्रेजी शिक्षा प्रारम्भ करते हैं। बाईबल का साहित्य तैयार किया जाता है। पाश्चात्य सभ्यता जिसमे रहन सहन की सब बात आती है का प्रचार किया जाता है स्वास्थ्य सेवा के नाम पर अस्पताल खोले जाते हैं। चर्च की स्थापना की जाती है और मिशनरी उन जनजातियो को भारत से तोडते हैं। मिशनरियो के द्वारा कहा जाता है कि "ये जो हिन्दू हैं ये तुम्हारे ऊपर हावी हो जाएगे और हमेशा नौकरो जैसा व्यवहार करेगे। तुम्हारी अपनी पहचान नष्ट हो जाने वाली है इसलिए ईसाई होना आवश्यक है उन्हे अनेक प्रकार के प्रलोभन देकर कहा जाता है कि "तुम हिन्दुओ से अपने अलग अस्तित्व की रक्षा के लिए ईसाई धर्म स्वीकार कर लो।" इस प्रकार अलगाववादी अराष्ट्रीय आतकवादी गतिविधियो को बल मिलता है।

भारत के पूर्वी क्षेत्रो व अन्य भूमिगत आन्दोलनो के पीछे इसी मनोवृत्ति का हाथ है। धीरे धीरे सत्ता मे रहने के लालच मे सत्ताधारी राजनीतिज्ञो के द्वारा इस षडयन्त्र को बल मिला है। वर्तमान मे "ईसाई दलित" शब्द को उछालना और उनके लिए आरक्षण की माग भी इसी षडयत्र का एक अग है।

सत्तालोलुप हमारे राजनेता इस तथ्य को समझ नहीं पा रहे या स्वार्थवश सब कुछ जानते हुए भी इस असवैधानिक अनैतिक एकदम धर्म के नाम पर आधारित माग को समर्थन देकर आरक्षण का बिल ससद मे ला रहे हैं। यह भारत के भविष्य के साथ खिलवाड है और राष्ट्र के हित के साथ द्रोह करने से कम पाप नहीं है।

ई/३६ रणजीत सिह मार्ग
आदर्श नगर दिल्ली – ३३
दूरभाष ७२४२४३१

हिंसा पर अहिंसा की विजय

आर्यवीरों का साहसिक कारनामा

दिनाक २९ ८ ९९ को सायकाल ४ बजे मे सूचना मिली की खानपुर ग्राम के तालाब पर मछेरे मछली पकड रहे हैं। सूचना मिलते ही हम सभी .आर्ष महाविद्यालय खानपुर गुरुकुल के ब्रह्मचारी उनके पास पहुचे और सभी जीवित मछलिया तालाब मे वापस छुडवा दीं। उनके पास कुछ दूसरे ग्राम से लाई हुई लगभग ४ क्विटल निर्जीव मछलिया थीं उन्हे वे ले जाना चाहते थे कि ये तो मर चुकी है हमने कहा यहा से एक भी मछली नही जा सकती हम तो इनका जमीन मे दबायेगे। उन्होने बहुत हाथ पैर पीटे कि हमारा ३० ००० रुपये का माल है हम तो साहब के आदेश से यहा आये हैं तथा सरपञ्च को रिश्वत देने का भी प्रयत्न किया। उनसे मत्स्य अधिकारी वाला कागज भी हमने छीन लिया और फिर मैटाडोर से जगल मे ले जाकर सारी मछलिया भूमि मे दबा दी। इस धटना के तुरन्त एक धण्टे बाद वे मछेरे नारनौल से मत्स्य अधिकारी को बुला लाये। गुरुकुल मे और ग्राम मे भी पञ्चायत हुई। लेकिन हमने स्पष्ट कह दिया कि यह पाप व अत्याचार ग्राम मे कभी नहीं होने देगे तथा मछलियो को अब कोई नहीं उखाड सकता। सभी ब्रह्मचारी लाठिया लेकर उस गडढे के पास पहुच गये थे। बहुत सधर्ष के बाद आर्य वीरो की विजय हुई अर्थात अधर्म पर धर्म की दुराचार पर सदाचार की हिसा पर अहिसा की विजय हुई। जिसके परिणाम स्वरूप उन्हे खाली हाथ ही लौटना पडा।

हमारी गुरुकुल सस्था गौ आदि प्राणिमात्र की रक्षा के लिए बहुत जागरूक है। हमने ग्राम ग्राम मे मानवता के इस कलक मासाहार के विरूद्ध जन जागरण अभियान आरम्भ कर दिया है। हमारी एक ही आवाज पर ५०० आर्य वीर किसी भी प्रकार के बलिदान के लिए एकत्र हो सकते हैं। यदि ग्राम ग्राम मे एक एक नोजवान भी इस अत्याचार के विरूद्ध छाती खोलकर खडा हो जाये तो अण्ड मास की इस विदेशी सस्कृति के आक्रमण स अपनी वैदिक सस्कृति की रक्षा की जा सकती है।

ग्राम ग्राम मे मछली मुर्गी और सूअर फार्म खुलते जा रहे हैं। यदि तुम चुपचाप बठे हुए देखते ही रहे तो यह घी दूध की खान भारत देश शीघ्र ही सड जायेगा। अभी भी भारत का दुग्ध उत्पादन मे दूसरा स्थान है ससार मे।

अब भी आलस्य व स्वार्थ छोडकर इन बेजुबान पशुओ की रक्षा के लिए मैदान मे आओ। बेसहारो के सहारे बनो और मुटठी बन्द करके धोषणा करो कि ऋषि मुनियो की इस पवित्र धरती पर यह अत्याचार अब सहन नहीं होगा।

कबूतर के आख बन्द कर लेने से बिल्ली का भय दूर नहीं होगा इस पाप के भागीदार तुम हो—
समर शेष है नहीं पाप का भागी केवल न्याय।
जो तटस्थ हैं समय लिखेगा उनके भी अपराध।।

यह सारा ससार मार्गदर्शन के लिय तुम्हारी ओर टक्टकी लगाकर दख रहा है निराशा छोडो लोग तुम्हे सर माथे पर बेठाने का तयार खडे है लेकिन

"हम ही सो गये कथा कहते कहते"

धन्यवाद

यशदेव शास्त्री—व्यायाम शिक्षक
सार्वदेशिक आर्यवीर दल

देश से मांस निर्यात की नीति समाप्त हो—राष्ट्रपति से मांग

कानपुर आर्य समाज गोविन्द नगर मे आर्य समाज तथा विश्व हिन्दू परिषद के सयुक्त तत्वाव—धान मे श्री कृष्ण जन्माष्टमी तथा विश्व हिन्दू परिषद स्थापना दिवस समारोह केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवी दास आर्य का अध्यक्षता मे मनाया गया।

समारोह मे योगी राज कृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओ पर प्रकाश डालते हुए श्री देवी दास आर्य ने कहा कि आज हिन्दू की उपेक्षा इस लिए हो रही है क्योकि वह जातिवाद मे बटा हुआ है। उसने भगवान कृष्ण के शक्ति रूप नीति निपुणता को छोड दिया है। श्री कृष्ण का जीवन सघर्ष का जीवन था इस गुण को हिन्दू समाज अपनाये।

सभा मे सर्व सम्मति से एक प्रस्ताव पारित कर राष्ट्रपति से माग की गयी कि गो वश की हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाये तथा मास निर्यात की नीति को समाप्त किया जाये।

समारोह मे मुख्य रूप से सर्व श्री देवी दास आर्य डा० सत्य देव पाण्डेय निहाल चन्द्र तनेजा (प्रान्तीय सगठन मत्री गौ रक्षा समिति) बाल गोविन्द आर्य राम पाल सिह पान्चाल (रूद्रपुर) स्वामी प्रज्ञा नन्द सरस्वती प० जगन्नाथ शास्त्री शुभ कुमार वोहरा श्रीमती कैलाश मोंगा आदि ने विचार व्यक्त किये। समारोह की अध्यक्षता श्री देवी दास आर्य ने तथा सचालन मत्री श्री बाल गोविन्द आर्य ने किया।

गढ़वाल आर्योपप्रतिनिधि सभा का चुनाव

आर्य जगत की सर्वोच्च सस्थाओ के सूचनार्थ निवेदन है कि गढवाल आर्योपप्रतिनिधि सभा का दूसरे सत्र का विधिवत चुनाव दिनांक २२ ६ ९९ को प्रात १० ०० बजे साधारण अधिवेशन मे आर्यसमाज मन्दिर कोटद्वार मे सम्पन्न होगा। इस अवसर पर यह सभा सर्वोच्च सस्थाओ के आशीर्वाद की आकाक्षी है।

निवेदन है कि अपने शुभ कामना के दो शब्द शीध्र भेजने की महति कृपा करेगे ताकि सभा को बल मिल सके।

वेद प्रचार सप्ताह एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व समारोह पूर्वक सम्पन्न

वेदो मे समाहित सिद्धान्ता एव आदर्शो को जनमानस के साथ एकाकार करने के लिए देश तथा विदेश की समस्त आय समाजो म श्रावणी स लेकर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक वेद प्रचार क विशेष कार्यक्रम आयोजित किये गये इस अवसर पर विशेष यज्ञ तथा वेदो पर उपदश विभिन्न विद्वानो द्वारा किये गये। नवीन यज्ञोपवीत धारण किये गये तथा हैदराबाद सत्याग्रह म बलिदान होने वाले अमर शहीदो को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी। अन्य अनेको विशेष कार्यक्रमो का समापन श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर हुआ इस दिन योगीराज श्री कृष्ण क जीवन पर प्रकाश डाला गया तथा बताया गया कि आर्य समाज किस प्रकार से श्री कृष्ण जी के चरित्र की पूजा करता है। देश विदश की समाजो से उक्त कार्यक्रम मनाये जान के समाचार प्राप्त हो रहे है। स्थानाभाव के कारण यहा केवल आर्य समाजो के नाम ही प्रकाशित किये जा रहे है।

आर्य समाज चिरगाव आर्य समाज शकरपुर दिल्ली आर्य समाज नीवन शाहदरा दिल्ली आर्य समाज बसन्त बिहार नइ दिल्ली आर्य समाज कीर्ति नगर नई दिल्ली आर्य समाज माडल टाउन ।। दिल्ली आर्य समाज केराक्त आर्य समाज जनकपुरी दिल्ली आर्य समाज हलीखड आर्य समाज माडल टाउन पठानकोट आर्य समाज शाहजहापुर आय समाज गुडगाव छावनी आर्य समाज नागदा आर्य समाज सूरत आर्य समाज मदुरै आर्य समाज नासिक आर्य समाज [illegible] स्टेट गुडगाव आर्य समाज फरीदाबाद आर्य समाज गणेश गज लखनऊ आर्य समाज सीतापुर आय समाज हजारीबाग बिहार आर्य समाज पूर्वी चम्पारण आर्य समाज रानी की सराय आर्य समाज झासी आर्य समाज कोटा आर्य समाज अलवर आर्य समाज हल्द्वानी आय समाज गटर कैलाश २ दिल्ली आर्य समाज गगदा ज आर्य समाज बसव कल्याण वीदर आर्य समाज खतोली आर्य समाज मानसरोवर पार्क शाहदरा दिल्ली आर्य समाज समस्तीपुर विहार।

नैतिक शिक्षा विकास प्रशिक्षण एव पारितोषिक वितरण समारोह

महर्षि डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल समस्तीपुर मे त्रिदिवसीय नैतिक विकास प्रशिक्षण एव पारितोषिक वितरण का कार्यक्रम श्री मुरारी प्रसाद के सयोजकत्व मे सम्पन्न हुआ।

प० रामप्रवेश शास्त्री ने बच्चो मे शुद्ध उच्चारण तथा वेद ज्ञान का प्रशिक्षण दिया। एम०डी ए वी० ट्रस्ट करनाल (हरियाणा) के पूर्वी भारत के निदेशक श्री विजय कुमार सिघल ने पारितोषिक वितरण किया। ट्रस्ट पूर्वी भारत के सयोजक श्री कमलेश दिव्यदर्शी ने स्कूल की प्रगति पर प्रसन्नता व्यक्त किया तथा कहा कि प्राचीन एव आधुनिक शिक्षा के समन्वय के आधार पर व्यवहारिक शिक्षा द्वारा बच्चो का भविष्य अच्छा बनाया जा सकता है

इस अवसर पर प० नवल किशोर शास्त्री डा० एम०के०श्रीवास्तव मनोहर लाल पाहवा दीनदयाल कावडा राम प्रसाद आर्य आदि ने भी नैतिक विकास तथा चरित्र निर्माण के लिए वैदिक सस्कृति तथा ज्ञान से परिचित होने को कहा

मनोहर लाल पाहवा
मन्त्री

नई दिल्ली 11049 96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 22 9 96 बिना टिकट भजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/96
R 626 27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 19/20 9 1996

सात्विक दान प्रदान किया

श्री रमेश चन्द्र गुप्त बरदहा बाजार एव अनिल कुमार गुप्त विश्वेश्वर गज बहराइच ने अपनी ... जो दिवगत २६ मई १९९६ को दिवगत हो ... की पुण्य स्मृति मे उक्त दोनो भाइया ने ... सार्वदेशिक सभा मे वेद प्रचार के लिए ... दिया

आवश्यकता है

एक सुयोग्य वैदिक पुरोहित (ब्रह्मचारी या वानप्रस्थी) की जो आर्य सेवा एवम सस्कार केन्द्र रुड़की ... वैदिक सस्कार करा सके और ... का दरकी शिक्षा भी दे सके ... मे यज्ञशाला सत्सगभवन और पुरोहित ... निवास उपलब्ध है बिजली पानी की ... है खुला स्थान है इच्छुक व्यक्ति ... शैक्षिक योग्यता कार्य अनुभव आयु ... सहित पत्र द्वारा लिखकर भेजे केन्द्र से १ ० रु० तक मासिक पारितोषिक ... प्राप्त दक्षिणा पुरोहित की होगी

हमारा पता

डा० आनन्द स्वरूप आर्य प्रबन्धक ट्रस्टी
आर्य सेवा प्रतिष्ठान ट्रस्ट
७२ सिविल लाईन
रुडकी (दूरभाष ०१३३२ ७२ ३१)

निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर

(२ अक्टूबर यज्ञोपरान्त उदघाटन)

हर वर्षो की भाति यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर स्वर्गीया किरण देवी जी जैन की स्मृति मे श्री वैद्य चन्दगी राम जी विद्यार्थी जैन परिवार मण्डी बहादुरगढ के सहयोग से किया गया है शिविर मध्य वेणू नेत्र सस्थान नई दिल्ली के सुप्रसिद्ध नत्र विशेषज्ञ आप के जाने पहचाने डा सतीश चन्द्र जी गुप्ता एम०बी०बी एस एम एस (आप ... राजेश रस्तोगी एम बी बी एस एम एस एवन डा० उमागोपाल एम बी०बी०एस ... आ एम एस आदि डाक्टरो द्वारा ओ पी डी (...) नेत्र निरीक्षण एवम आपरेशन किए जाएगे श्री लाला हरिकिशन दास जी गुप्त ... के कर कमलो द्वारा १० बजे उदघाटन किया जाएगा। दूध भोजनादि एवम ऐनक निःशुल्क दी जाएगी ऋतु अनुसार बिस्तर गिलास थाली चम्मच और सेवक अपने साथ अवश्य लेकर आये नत्र रोगियो को सूचना देकर पुण्य ... यश के भागी बने

विशेष सूचना आश्रम मे श्री लक्ष्मीकान्त मिश्र नाडी विशेषज्ञ आयुर्वेद एव प्राकृतिक चिकित्सा के अनुभवी वैद्य की सेवाए प्राप्त है प्रत्येक रविवार प्रात ६ बजे निराहार (खाली पेट) पहुचकर नये पुराने सभी रोगो से पीडित लाभ उठाए

अश्रम दिल्ली रोड पर हरियाणा रोडवेज बस स्टाप के निकट है

कम्प्यूटर पाठ्यक्रम अब हिंदी मे भी

नवभारत टाइम्स नई दिल्ली ५ ८ ९६ मे छपे समाचार के अनुसार इदिरा गाधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) के कम्प्यूटर और सूचना विज्ञान ... (...०ओ०सी०एस०) के निर्देशक प्र ... पत्र के अनुसार भारत मे पहली बार यह विश्वविद्यालय कप्यूटर अनुप्रयोग मे मास्टर (म०सी ...) कप्यूटर अनुप्रयोग मे स्नातक (बी ...) कार्यालय प्रबध मे कप्यूटर डिप्लोमा (डी०...) और कप्युटिग मे प्रमाण पत्र (सी ...) कार्यक्रम हिंदी माध्यम से प्रारभ कर रहा है

इन कार्यक्रमो के जनवरी ९७ सत्र के लिए ... इग्नू के मुख्यालय और सभी क्षत्रीय ... अध्ययन केद्रो पर उपलब्ध है

वेद प्रचार (सप्ताह)

आर्य समाज रणवीरसिह पुरा मे ५ सितम्बर १ को श्री कृष्ण जन्म उत्सव समारोह बडी धूम धाम से मनाया गया इस समारोह मे बहुत बडी सख्या मे बच्चे युवक महिलाए और पुरुष शामिल हुए इस समारोह मे योगीराज श्रीकृष्ण का योगीस्वरूप प्रस्तुत किया गया यह समारोह प्रधान श्री महेन्द्र प्रकाश जी की अध्यक्षता मे हुआ इस समारोह मे प० हरिश्चन्द्र जी शास्त्री तथा स्वामी भूमानन्द जी मुख्य अतिथि थे समारोह मे मच का सचालन मत्री अतुल कुमार जी ने किया

अतुल कमार गुप्ता
मत्री आर्य समाज
रणवीर सिह पुरा

मारीशस सभा के अतिथि सार्वदेशिक सभा मे

श्री रघुनाथ सिचर्न आर्य सभा मौरिशस के एक पुरोहित और कर्मठ समाज सेवक हैं। समाजो मे जा जाकर बडी रूचि और लगन से आर्य धर्म का प्रचार करते है समय समय पर रेडियो द्वारा वैदिक धर्म पर प्रोग्राम के माध्यम से अपने जनता के लिए सदेश भी प्रसारित करते रहे है कई वर्षों से अपने ... समाज की सेवा हेतु प्रधान व मत्री रह चुके हैं

अपनी भारत यात्रा के दौरान आर्य समाजो तथा आर्य सस्थाओ से सम्पर्क करने दर्शनीय स्थान देखने और कछ सदेश देने के लिए उत्कट अभिलाषा प्रकट कर रहे हैं। इनकी भारत यात्रा सितम्बर ९६ ई० से आरम्भ हुयी है कोई एक मास के लिए।

आप सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे पधारे तथा प्रधान प० वन्देमातरम राम चन्द्रराव तथा मत्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री से आर्य समाज की गति विधियो की जानकारी प्राप्त की।

अशोक विहार चरण ३

में वेद सप्ताह तथा श्री कृष्ण जन्मदिवस

दिल्ली आर्य समाज अशोक विहार चरण ३ मे श्रावणी के अवसर पर वेद सप्ताह तथा श्री कृष्ण जन्म अष्टमी उल्लास एव उत्साह पूर्वक मनाए गए। २८ अगस्त से ५ सितम्बर तक प्रात एव साय सामवेद मत्रो के उच्चारण के साथ आहुतिया यज्ञ मे समर्पित गई इस वेद सप्ताह का समापन श्री कृष्ण जन्म दिवस के अवसर पर हुआ

सार्वदेशिक न्याय सभा के सदस्य श्री विमल वधावन एडवोकेट ने इस वेद सप्ताह के समापन अवसर पर आगतुक धर्म प्रेमी जनता का धन्यवाद करते हुए कहा कि साम वेद समन्वय का प्रतीक है परमात्मा ने ऋग वेद मे विशुद्ध ज्ञान तथा यजुर्वेद मे कर्म प्रधानता पूर्ण निर्देशो के बाद इस आशय से सामवेद की ऋचाए प्रदान की कि मानव ज्ञान एव कर्म मे समन्वय स्थापित करता हुआ अपने जीवन लक्ष्य (मोक्ष) प्राप्ति की ओर अग्रसर होता रहे उन्होने कहा कि प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन की प्रत्येक अवस्था मे ईश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए सुख दुख उतार चढाव मान अपमान तथा समाज के अन्य प्राणियो और अपनी इच्छाओं के बीच समन्वय स्थापित रखना चाहिए यही सामवेद के निर्देशों का सार है

इस वेद सप्ताह के अवसर पर किए गए यज्ञो में श्री राजसिह जी भल्ला ब्रह्मा थे स्त्री आर्य समाज की मत्रिणी श्रीमति प्रेमलता सब्बरवाल ने सायकालीन आयोजनो मे महिलाओं को वैदिक मार्ग दर्शन दिया

श्री कृष्ण जन्मअष्टमी उत्सव का सफल सचालन श्रीमति प्रेमलता सब्बरवाल तथा आर्य समाज के मत्री श्री ओम प्रकाश अरोड़ा ने किया।

आर्य समाज मदुरै मे श्रावणी उपाकर्म समारोह पूर्वक सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर मदुरै मे २८ ८ ९६ को श्रावणी उपाकर्म सस्कार स्वामी नारायण सरस्वती की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक आयोजित किया गया इस अवसर पर विशेष यज्ञ सम्पन्न हुआ। नवीन उपनयन धारण किये गये श्रावणी सर्व की प्राचीनता एव महत्ता पर प्रकाश डाला गया एव यज्ञोपवीत की वैज्ञानिकता एव महत्व पर विशेष उपदेश हुए प्रीतिभोज धन्यवाद एव शान्ति पाठ के बाद सभा समाप्त हुइ

यदि आप ठीक मार्ग पर हैं तो
समालोचनाओं
की चिन्ता न कीजिए

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली 2 से प्रकाशित

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् — विश्व को श्रेष्ठ (आर्य) बनाएँ

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

दूरभाष ३२७४७७१ ३२६०९८५ | आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये | वार्षिक शुल्क ५० रुपए | एक प्रति १ रुपया

वर्ष ३५ अक ३३ | दयानन्दाब्द १७२ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ | सम्वत् २०५३ | आश्वि० कृ० ३ | २९ सितम्बर १९९६

राजनीतिक अदूरदर्शिता के कारण विघटन और अराजकता के बादल छाने लगे

— वन्देमातरम रामचन्द्र राव

हैदराबाद मुक्ति दिवस समारोह पूर्वक सम्पन्न

हैदराबाद १७ सितम्बर। आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे हैदराबाद मुक्ति दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। यह विशाल आयोजन महाराष्ट्र मण्डल आवासन सभागार हैदराबाद मे पूर्ण साज सज्जा के साथ सम्पन्न हुआ। हजारो आर्य नर नारियो की उपस्थिति मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव की अध्यक्षता मे इस कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। सभागार मे दक्षिण भारत के कोने कोने से पधारे आर्य नेताओ ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढाई।

आर्य समाज जिन्दाबाद तथा भारत माता की जय के उद्घोषो के साथ सभा प्रधान श्री वन्देमातरम् जी ने अपने उद्बोधन को प्रारम्भ किया। पडित जी ने हैदराबाद के इतिहास को दोहराते हुए निजाम की बर्बरता का चित्र खींचा, तथा निजाम से मुक्ति पाने के लिए आर्य समाज के प्रयास की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने अपने सस्मरण सुनाते हुए बताया कि आज से ५८ वर्ष पूर्व आर्य समाज ने देश की एकता तथा अखण्डता के लिए तथा निजाम हैदराबाद के अत्याचारो से मुक्ति पाने के लिए जो सत्याग्रह सफलता पूर्वक किया था आज की परिस्थितियो मे पुन ऐसे ही सत्याग्रहो की नितान्त आवश्यकता है। आज हमारे देश मे वोटो की राजनीति ने देश को विघटन तथा पतन के गर्त मे धकेलने का पूर्ण षडयत्र रच दिया है। वर्तमान सयुक्त मोर्चे की सरकार द्वारा दलित ईसाईयो को आरक्षण देने की घोषणा के दूरगामी दुष्परिणाम होगे। आर्य समाज ने हैदराबाद मुक्ति सग्राम की तरह ही आज की इन विषम परिस्थितियो मे पुन आन्दोलन छेडने का निर्णय लिया है।

आज देश मे सीमावर्ती इलाको तथा अन्य भागो मे अलग राज्य बनाने की माग जोर पकड रही है उत्तराखण्ड मेघालय नागालैण्ड मिजोरम तथा पजाब के कुछ हिस्सो को देश से तोड़ने की साजिश बड़े जोरो से चल रही है और हमारी वर्तमान सरकार भविष्य के दूरगामी परिणामो की उपेक्षा करके उत्तराखण्ड को अलग स्वतत्र राज्य बनाये जाने की घोषणा भी कर चुकी है। सरकार की इस घोषणा से देश का विघटन होगा और अराजकता को बल मिलेगा।

सभा प्रधान ने कहा कि इस विघटन की प्रक्रिया मे सबसे बड़ा साधन हमारे देश का सविधान ही है जो भारत की जनता को एकता के सूत्र मे बाधने का कोई भी मार्ग उपलब्ध नहीं करता। उन्होंने समूचे देश के राष्ट्रवादी सगठनो एव आर्य जनता से अपील की कि अपने [illegible]

तमिलनाडू आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों का निर्वाचन

२५ अगस्त १९९६। तमिलनाडू आर्य प्रतिनिधि सभा की वार्षिक साधारण सभा की एक बैठक आर्य समाज मदुरै मे स्वामी नारायण सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई वार्षिक रिर्पोट तथा खातो का विवरण प्रस्तुत करने के बाद प्रदेश तथा समूचे देश की समस्याओ पर विचार विमर्श तथा आर्य समाज की भूमिका के बारे मे सदस्यो ने विचार विमर्श किया।

अन्त मे प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो का चुनाव भी स्वामी जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। सभा के निम्न अधिकारी चुने गए।

प्रधान	श्री जी०आर०गोपाल राव
उप प्रधान	श्री जे०एस०राजा राम
	श्री एम०एस०तुलसी राम
मत्री	श्री एम०एस०राममूर्ति
उपमत्री	श्री के०वी०जानकी राम
	श्री एस०ओ०रामप्रकाश
कोषाध्यक्ष	श्री एस०वैकटेश
पुस्तकाध्यक्ष	श्री सी०बाला [illegible]

सम्पादक- डा.सच्चिदानन्द शास्त्री

सर्व हितकारी–सन्देश
ईश्वर सम्बन्धी वेदोक्त मान्यता

ब्रह्म ईश्वर, जगदीश्वर, प्रभु, परमेश्वर, परमात्मा, भगवान् आदि जिसे कहते है, उसका मुख्य नाम 'ओ३म्' है। अतः सभी मनुष्यों को वैदिक विधि से 'ओ३म्' का जप करना चाहिए।

'ओ३म्' ही सृष्टि की रचना, पालना, प्रलय करता और हम सब जीवों को हमारे शुभ–अशुभ कर्मों का यथावत् फल देता है। वह निराकार, सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ, अचल, अखण्ड, अविनाशी, अजन्मा और परिपूर्ण है।

ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गणेष, महादेव, रूद्र, इन्द्र आदि उसके गौण नाम हैं। ससार मे 'ओ३म्' से महान् और कोई नहीं है। 'ओ३म्' नाम का जप विधिवत् करने से सुख-शान्ति की प्राप्ति और आत्मिकोन्नति होती है।

ओ३म् है जीवन हमारा ओ३म् प्राणाधार है।
ओ३म् है कर्त्ता विधाता ओ३म् पालनहार है।।

ओ३म् ही है दुःख विनाशक ओ३म् सर्वानन्द है।
ओ३म् है बल तेजधारी ओ३म् करुणाकन्द है।।

ओ३म् सबका पूज्य है हम ओ३म् का पूजन करें।
ओ३म् ही के ध्यान से हम शुद्ध अपना मन करे।।

ओ३म् के जप से हमारा ज्ञान बढता जायेगा।
अन्त में यह ज्ञान हमको मोक्ष तक पहुंचायेगा।

वैदिक मिशनरी कमलेश कुमार आर्य अग्निहोत्री
आर्यसमाज मन्दिर देवलाली बाजार,
कुबेरनगर,–अहमदाबाद, (गुजरात) ३८२३४०

दलित ईसाईयों को आरक्षण का आर्य संस्थाओं द्वारा व्यापक विरोध

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने सयुक्त मोर्चा सरकार द्वारा "दलित ईसाईयों को आरक्षण" देने सम्बन्धी विधेयक के विरोध में आर्य संस्थाओं तथा समस्त राष्ट्रवादी संगठनों से अपील की थी कि इस विधेयक का व्यापक विरोध किया जाना चाहिए। सभा प्रधान जी के निर्देशानुसार विभिन्न संस्थाओं द्वारा इस सम्बन्ध में विरोध प्रस्ताव पारित किये गये हैं तथा यह प्रस्ताव राष्ट्रपति प्रधान मंत्री तथा अन्य जगहों पर भारी संख्या में भेजे गये हैं तथा भेजे जा रहे हैं। इस विरोध प्रस्तावों की प्रतिया सभा कार्यालय में भी प्राप्त हो रही हैं। इन विरोध प्रस्तावों में कहा गया है कि दलित ईसाईयों को आरक्षण भारतीय संविधान के प्रावधानों के पूर्णत विरुद्ध है। दलित ईसाईयों को आरक्षण देने से धर्मान्तरण की गतिविधियां बढेगीं इस साम्प्रदायिक आरक्षण व्यवस्था से मुसलमान भी आरक्षण की मांग करेंगे। जिससे समाज में तनाव बढ़ेगा। इस आरक्षण से हिन्दू दलितो को मिलने वाली आरक्षण सविधा में कटौती होगी। इनके अतिरिक्त भी इस आरक्षण से भयावह दूरगामी परिणाम सामने आयेगे। भारी संख्या में प्राप्त होने वाले इन प्रस्तावो को स्थानाभाव के कारण अलग अलग छापना सम्भव नहीं हो पा रहा है अत केवल संस्था के नाम प्रकाशित किये जा रहे हैं। आर्य समाज साकेत (पजीकृत), आर्य समाज रेलवे कालोनी, रतलाम (म०प्र०), आर्य समाज भारत हैवी इलेक्ट्रिक्ल्स पिपलानी, भोपाल, आर्य समाज अशोक विहार–। (पजी०) एफ–ब्लाक, अशोक विहार, दिल्ली, आर्य समाज लल्लापुरा वाराणसी–(उ०प्र०), आर्य समाज सक्ती जिला–बिलासपुर (म०प्र०), आर्य समाज कैलाश–ग्रेटर कैलाश–१ (पजी०), आर्य समाज आवला (बरेली), आर्य समाज धामावाला, देहरादून, आर्य समाज शकरपुर दिल्ली। ♣

गुरुकुल वृन्दावन के यशस्वी स्नातक
श्री सत्यपाल शर्मा ने संन्यास आश्रम की दीक्षा ली

दक्षिणात्य तपस्वी कर्मकाण्डी ब्राह्मण आर्य समाज के प्रतिष्ठित विद्वान श्री सत्यपाल शर्मा वेदशिरोमणि ने लगभग ६८ वर्ष की आयु मे १८ अगस्त १६६६ को गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली में स्वामी दीक्षानन्द से संन्यास की दीक्षा ली। इस कार्यक्रम में दिल्ली के समस्त आर्य समाज, स्त्री आर्य समाज एवं आर्य शिक्षण सस्थाए सम्मिलित हुए। एक दिन पूर्व ११ कुण्डीय यज्ञ का आयोजन हुआ जिसमे आर्य समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति सपरिवार यजमान बने। श्री सत्यपाल जी वर्तमान में बैंगलूर में 'सत्यसुषमा वैदिक रिसर्च इन्स्टीट्यूट' के नाम से सस्था का संचालन करते हुए वैदिक प्रचार कर रहे हैं।

इस समारोह में बैंगलूर से वेदपाठी श्री भट्ट जी तथा अन्य गण्यमान्य व्यक्ति भी आये थे। दिल्लीवासियो ने १७-७-६६ प्रात ६ बजे से शाम पाच बजे तक यज्ञ में तथा रात्रि को डॉ० उषा शर्मा के सचालन में संगीत सम्मेलन में सम्मिलित हुए। दूसरे दिन गुरुकुल का प्रांगण खचाखच भरा हुआ था। श्री सत्यपाल जी जैसे ही दीक्षा वस्त्र धारण कर उपस्थित हुए और स्वामी सत्यम् के नाम की घोषणा आचार्य प्रवर स्वामी दीक्षानन्द जी ने की उसी समय तालियों की गडगड़ाहट के साथ द्युलोक से भी मेघ मालाओं ने अपनी गडगडाहट से श्री स्वामी 'सत्यम्' का स्वागत किया। इसी अवसर पर डॉ० उषा शर्मा ने जो स्वामी सत्यम् की कनिष्ठ भगिनी हैं, सन्यासाश्रम की ओर बढने का संकल्प करते हुए घोषणा की। इस अवसर पर बहुत से विद्वानों का भी सत्कार किया गया। गुरुकुल वासियों का प्रबन्ध सराहनीय था।

आपके दो कनिष्ठ भ्राता श्री श्रुतिशील वेदशिरोमणि एम०ए० भी गुरुकुल वृन्दावन से स्नातक होकर कनाडा अमेरिका में वैदिक धर्म व ऋषिदयानन्द के मिशन के सच्चे सिपाही बनकर आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में लगे हैं।

श्री सत्यपाल जी के लघु तृतीय भ्राता श्री यज्ञप्रियजी गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार से विद्याभास्कर उपाधि प्राप्त कर तथा इगलैण्ड वासी होकर वैदिक धर्म प्रचार में संलग्न हैं।

आपके माता पिता सौभाग्यशाली हैं जिन्होंने सुयोग्य सन्तान उत्पन्न कर यश के भागी बनें।

मेरा साक्षात्कार उस समय हुआ जब आप 'सत्यपाल शर्मा' मेरठ शहर आर्य समाज में पौरोहित्य पद पर आसीन होकर अच्छा यश प्राप्त किया और उसी समय मेरठ कालिज से एम०ए० पास कर एक वर्ष मेरठ कालिज में अध्यापक कार्य भी किया। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० में महोपदेशक पद पर मेरठ में ही नियुक्त हुआ था।

स्वभाव के सरल सच्चे ब्राह्मण हैं। उसी ब्राह्मणत्व की रक्षा कर ऋषि दयानन्द ने जिस सन्यास की दीक्षा लेने का जो योग्यतम अधिकार ब्राह्मण को दिया उसी के अनुसार आपने सन्यास की दीक्षा ली।

मैं समझता हू आप इस सन्यास की रक्षा अपनी दीक्षा के अनुसार स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज ने जो आदेश निर्देश महर्षि दयानन्द की आज्ञानुसार दिया है सत्य स्वरूप से निर्वहन करेंगे।

मैं सन्यासी तो न बन सका हा नाम से और काम से सन्यासी ही हूं। मुझे भी यह योग्यता प्राप्त हो और आपकी भाति सन्यास की दीक्षा लेकर आपकी पक्ति में पंक्तिबद्ध हो सकूं।

एक साथी होने के नाते मेरी शुभकामनायें प्राप्त कर इस कर्मक्षेत्र में और यशस्वी बनें। ♣

डॉ० महेश विद्यालंकार अस्वस्थ

वैदिक विद्वान् डॉ० महेश विद्यालंकार गत १५ दिनों से बुखार के कारण अस्वस्थ है। उनकी बाईं टांग में सूजन हैं और चिकित्सको ने उनके चलने-फिरने पर रोक लगा दी है, तथा उन्हें पूर्ण विश्राम की सलाह दी है।

दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों के कार्यक्रमों को सफल बनाने हेतु उन्होंने जो स्वीकृति दे रखी थी, उसमें सम्मिलत होने में वे अब असमर्थ है। उनका टेलीफोम नम्बर भी बदल गया है। आर्य समाजों के अधिकारियो तथा आर्यजनों से प्रार्थना है कि उनका नया टेलिफोन नम्बर ७२४ ७४४६ अंकित कर लें।

ईश्वर से उनके दीर्घजीवी होने की कामना के साथ प्रार्थना हैं कि वे शीघ्र स्वस्थ हो और अपने प्रवचनों एवं लेखों के माध्यम से आर्य विचारों के प्रचार-प्रसार में संलग्न हो। ♣

वैदिक संस्कार को बढ़ावें

ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः

रघुनाथ आर्य

सस्कार से ही बालक मानव बनता है। ससार का कोई भी मनुष्य वा वस्तु सस्कार से ही चमकता है। सस्कार हीन हो जाने पर धूमिल तथा मलिन हो जाता है। तत्पश्चात् त्याज्य हो जाता है। अत सस्कार सबके हित के लिए अत्यावश्यक है।

सस्कार का कार्य बालक के जन्म के पूर्व से ही प्रारम्भ हो जाना चाहिए। गर्भस्थशिशु के तीन सस्कार गर्भाधान पुसवन तथा सीमन्तोन्नयन है। जन्म के पश्चात् तेरह सस्कार हैं। जो मनुष्य मात्र के लिए अत्यावश्यक हैं।

सभी भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सस्थानो की पाठय तालिका एक सी हो इस विषय पर मैं अपना विचार मनुस्मृति के आधार पर दे रहा हू कि राजकीय विधालयों तथा अपने-अपने विधालयो के प्रत्येक विद्यार्थी का यज्ञोपवीतादि सस्कारे कराकर द्विज अर्थात् पवित्र विद्यार्थी बनाकर तत्पश्चात वैदिक तथा लौकिक दोनो प्रकार की विद्याओं को पढावे।

'सभी विद्यार्थियों के लिये यज्ञोपवीतादि सस्कार अत्यावश्यक हैं।

उपनीय गुरु शिष्य शिक्षयेच्छौचमादित ।
आचारमग्निकार्यं च सन्ध्योपासनमेव च।

मनु २/६९

पदार्थ--मनु महाराज कहते हैं।

शिक्षा के लिए विधालय मे विद्यार्थी के आने पर (आदित) सर्वप्रथम (गुरु) वा शिक्षक (शिष्यम्) विद्यार्थी को (उपनीय) यज्ञोपवीत सस्कार कराके (शौचम्) स्वच्छ रहने की विधि (आचरम्) सदाचार तथा सद्व्यवहार की विधि (सन्ध्योपासनम्) सध्या तथा उपासना की विधि (च) और (अग्निकार्यम्) अग्निहोत्र की विधि (एव) (सभी) (शिक्षयेत्) अवश्य सिखावे।

'सनध्यायन्ति सन्ध्यायते वा परब्रह्म यस्या सा सन्ध्या भली भाति जिस विधि से परमात्मा का ध्यान किया जाय वह सध्या है।

यज्ञोपवीतादि सस्कारो से हीन विद्यार्थी 'व्रात्य' हो जाता है। व्रातात समूहात् च्यवति यत अर्थात् गुण कर्म स्वभाव से पतित।

मनुमहाराज कहते हैं --

अत ऊर्ध्वं त्र्योऽप्येते यथाकालम सस्कृता ।
सावित्रीपतिता व्रात्या भवन्त्यार्य विगर्हिता ।

मनु २/२९

पदार्थ -- शिक्षा के लिए विद्यालय में विद्यार्थियों के आने पर शिक्षक के पक्षपात् पूर्ण तिरस्कार के कारण विद्यार्थी समूह (यथाकालम्) उसी समय से (असस्कृता) यज्ञोपवीतादि सस्कारो से रहित होकर (ऊर्ध्वम्) आयु बीतने के पश्चात् (एतेत्रय अपि) ज्ञान कर्म उपासना इन तीन प्रकार की वैदिक विद्याओं का इच्छुक विद्यार्थी समूह (सावित्री पतिता) गायत्री आदि वैदिक विद्याओं से रहित होकर (आर्य विगर्हिता) श्रेष्ठ गुणों से पृथक निन्दित होकर (व्रात्या) गुण कर्म स्वभाव से पतित (भवन्ति) हो जाते हैं।

इस प्रकार सस्कार से वचित विद्यार्थी समूह चारो श्रेष्ठ आश्रमो (ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ तथा सन्यास) से पृथक तथा चारो श्रेष्ठ वर्णों (ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तथा शूद्र) से पृथक होकर गुण कर्म स्वभाव् से पतित होकर निन्दित कार्य करते हुए 'व्रात्य' बन जाते हैं।

जिस प्रकार ईसाईयो मे 'बपतिस्मा' होता है तथा मुसलमानो मे 'खतना' होता है उसी प्रकार यज्ञोपवीतादि सस्कारों से प्रत्येक बालक को द्विज बनाने का प्रावधान सृष्टि के आदि काल से चला आ रहा है। कुछ काल पूर्व से शिक्षकों के पक्षपात पूर्ण व्यवहार के कारण सस्कारो को सामूहिक न करने के कारण जातिया उपजातिया सवर्ण-अवर्ण ऊच नीच छुआ छूत मासाहार मद्यसेवन जुआ आदि अनेक अवैदिक पाखण्ड तथा कदाचार परम्परागत रूप से प्रचलित हो गये हैं जिनके कारण आर्यावर्त वा भारत को परतन्त्र होना पडा। वही रोग आज भी हमारे समाज को आर्यत्व से पतित तथा खण्डित किये जा रहा है। भारत के तथा विश्व के आप्त पुरुषो से प्रार्थना है कि इन अवैदिक पाखण्डो प्रचलनो तथा घातक परम्पराओ का समूलनाश करे तथा विद्यालयो मे यज्ञोपवीतादि सस्कार सबके हित के लिए अवश्य ही सचारित करावे। पवित्र प्रजाये वैदिक सस्कारो से ही सम्भव हैं।

परमात्मा द्वारा सबको सस्कारित करने का आदेश वेद के माध्यम से आप्त पुरुषो को मिला है। जो इस प्रकार है--

ओ३म इन्द्र वर्धन्तो अप्तुर । कृण्वन्तो
विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो अराव्ण ।

ऋग्वेद ९/६३/४

पदार्थ--परमात्मा आदेश करते हैं -- हे (अप्तुर) पक्षपात रहित वैदिक विद्वानो ऋषियो आचार्यों (इन्द्रम) वैदिक सस्कार को (वर्धन्त) बढाइये। (विश्वम्) सारे ससार को (आर्यम्) आर्य (कृण्वन्त) बनाइये। (अराव्ण) दुष्ट प्रवृत्तियो का (उपघ्नन्त) विनाश कीजिये।

ईश्वरीय आदेश का पालन आवश्यक है। इसी आदेश का पालन भगवान श्री राम ने किया भगवान श्री कृष्ण ने किया अनेक ऋषियो ने किया अनेक ज्ञानियो ने किया महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किया। अत हम सबको भी पक्षपात रहित होकर इस वैदिक आदेश का पालन करना चाहिए।

सस्कारहीन मनुष्य को आर्य बनाकर वर्णाश्रम मे लाने का विधान आदि काल से ही मनु महाराज ने ईश्वरीय आदेश पर विधिवत बतला दिया है। मनुस्मृति के श्लोक का पक्षपात रहित पदार्थ करने पर पाखण्डियो के सारे रहस्य सामने आ जाते हैं ऐसा लगता है कि प्रतियोगिता करके ग्रन्थो मे प्रक्षेप किया गया है। ग्रन्थो मे क्षुद्र के स्थान पर शूद्र द्विज वा विप्र के स्थान पर ब्राह्मण शुश्रुषु के स्थान पर दासता अर्थ करके वाक्याश के सद्भाव को सत्य से पृथक करके पक्षपात पूर्ण अर्थ किया गया है। कहीं कहीं ग्रन्थो मे वाक्याश ही परिवर्तित कर दिया गया है। यह मानवता द्रोही धर्म द्रोही तथा राष्ट्र द्रोही कार्य पाखण्डियो द्वारा किया गया है तथा अभी भी किया जा रहा है। -- जैसे स्त्रीशूद्रौनाधीयाताम

जब मनुष्य सस्कारहीन तथा सावित्रीपतिता होकर अज्ञानवश अनार्य दस्यु मलेच्छ तथा चाण्डाल हो जाता है परन्तु उसमे ईश्वर प्रदत्त बुद्धि रहने के कारण विचारने की शक्ति रहती है। अपने आयु के मध्य किसी भी समय ईश्वरीय प्रेरणा से वा किसी आघात प्रतिघात से वा सत्सग से प्रभावित होकर पश्चात्ताप की अग्नि मे जलते हुए पवित्र होकर शेष जीवन पवित्रता तथा परोपकार युक्त व्यतीत करना चाहता है। अपने द्वारा किये कर्मो के प्रतिफल की कामना करते हुए शेष जीवन को धर्म पूर्वक व्यतीत करने के लिए ईश्वर से तथा वैदिक महात्माओ से पवित्र होने की कामना करता है एव प्रार्थना करता है--

ओ३म पुनन्तु मा देवजना पुनन्तु मनसा धिय ।
पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेद पुनीहि मा।।

यजुर्वेद १९/३९

पदार्थ--हे। (जातवेद) वेद को प्रत्यक्ष करने वाले परमात्मा (पुनीहिमा) मुझको पवित्र कीजिये। हे। (देवजना) वेद के विद्वानो (पुनन्तु मा) मुझको पवित्र कीजिये। मेरे (मनसा) मनको (धिय) बुद्धि को (पुनन्तु) पवित्र कीजिये। मेरे समान पतित (विश्वाभूतानि) सारे प्राणियो को (पुनन्तु) पवित्र कीजिए।

इस प्रकार पतित वा व्रात्य की प्रार्थना को अन्तर्यामी परम दयालु परमात्मा अपनी विधि व्यवस्था के अनुकूल जानकर तथा दयाकर आप्त पुरुषो वा वैदिक महात्माओ को आदेश करते हैं--

ओ३म यथेमा वाच कल्याणीमावदानी जनेभ्य ।
ब्रह्म राजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।

यजुर्वेद २६/२

पदार्थ--हे आप्त पुरुषो वा वैदिक विद्वानो जैसे मैं (जनेभ्य) सभी मनुष्यो के लिए (इह) इस ससार मे (इमाम्) इस (कल्याणीम्) कल्याण करने वाली (वाचम्) चारो वेद रूपी वाणी का (आवदानि) उपदेश करता हू वैसे ही आप लोग (ब्रह्म राजन्याभ्याम) शिक्षक तथा शासक के लिए (च) और (अर्याय) वैश्य के लिए (च) और शूद्राय निर्माता के लिए (च) और (स्वाय) महिला के लिए (च) और (अरणाय) अन्त्यज व्रात्य चण्डाल मलेच्छ दस्यु वा पतित के लिए भी अच्छी प्रकार से वेदवाणी का उपदेश कीजिये। इस प्रकार ईश्वरीय आदेश से सभी मनुष्यो को चाहे वे बुरे थे या भले थे उनके इच्छानुकूल उनको सस्कारित करना तथा वर्णाश्रम मे लाना विद्वानो का कर्त्तव्य हा जाता है। अत पक्षपात छोड कर वैदिक सस्कार को बढावे।

स्वामी श्रद्धानन्द पुस्तकालय आर्य समाज
मदिर पुरानी गुदरी -- बेतिया

दलित ईसाईयों के आरक्षण का प्रश्न

डॉ० प्रेमचन्द श्रीधर

पूर्व प्रधानमत्री श्री नरसिह राव जाते-जाते एक नई समस्या को जन्म दे गए जो देश के लिए अत्यन्त अहितकर है और यह ऐसा नया दर्द है जो कभी भी भारत माता के शरीर को कैन्सर के रोग की तरह कमजोर करता चला जाएगा। वह प्रश्न है दलित ईसाइयों को आरक्षण देने का। लोकसभा में तो माननीय अध्यक्ष महोदय ने इसको अपूर्ण घोषित कर प्रस्तुत ही होने नहीं दिया। और हमारे महामहिम राष्ट्रपति जी महोदय ने इसके लिए अध्यादेश पर स्वीकृति देने से इन्कार कर दिया। इसके पीछे केवल दलित ईसाइयो के थोक मतो को प्राप्त करने का लालच था अन्य कोई देश का हित साधन तो क्या हाना था कि लोकसभा के चुनाव हुए भारत की जनता ने काग्रेस को बहुमत मे आने से रोक दिया परन्तु भारतीय जनता पार्टी भी चुनाव मे पूर्ण बहुमत प्राप्त करने में असमर्थ रही इस कारण पूरे १३ दिन के अपने अत्यन्त अल्पकालीन शासन के बाद सरकार को जाना पडा। इधर छोटे-छोटे १३ दलों का सगठन सयुक्त मोर्चे के रूप मे बना और काग्रेस का समर्थन पाकर सरकार बनाने में सफल हुआ। इस सयुक्त मोर्चे की सरकार ने कुछ साझा कार्यक्रमों की घोषणा की और उसमें दलित ईसाइयों को आरक्षण देने का काम भी कार्यक्रम का एक अग बना। अब शीघ्र इस सम्बन्ध मे जैसा कि सरकार ने अपनी नीतियो की घोषणा की है एक बिल ससद के वर्षाकालीन सभा मे प्रस्तुत होने वाला है। इस कारण ससद तथा ससद के बाहर पत्र-पत्रिकाओ में यह चर्चा का विषय बन गया है।

श्री एम०एन०बुच का एक लेख हिन्दुस्तान टाइम्स में इसके विरोध में आया। श्री सजय शर्मा ने भी इसके विरोध मे अपनें तर्क प्रस्तुत किए हैं परन्तु विद्वान लेखक श्री महीप सिह ने अपने जनसत्ता मे प्रकाशित लेख मे इस आरक्षण का समर्थन किया है। उनके दिए तर्कों से लगता है कि वे पूर्वाग्रह के रोग से ग्रसित हैं। लगता है श्री महीप सिह समस्या की वास्तविकता से अनभिज्ञ हैं अथवा जानबूझकर गलत पक्ष का समर्थन कर रहे हैं। इतिहास के विद्वान के रूप में उनसे ऐसी आशा तो नहीं की जा सकती ऐसा नहीं हो सकता कि वे ईसाइयो के देश में आगमन तथा उनके धर्मान्तरण करने की गतिविधि को न जानते हों। वे पक्षपात पूर्ण समर्थन कैसे कर गए यह अभी भी चिन्तन और चिन्ता का विषय बना हुआ है हमें उनके तर्कों से सहमत होने में कठिनाई है। श्री महीप सिह का कहना है इसका विरोध इस आधार पर किया जा रहा है कि धर्मान्तरण को बढ़ावा मिलेगा। यह तो एक अटल सत्य है। धर्मान्तरण की गति तीव्र होगी और तब अराष्ट्रीयता और अलगाव की भावना को बल मिलेगा। इतिहास इस सत्य का साक्षी है। देश का बटवारा भी इसी आधार पर हो गया कि मुसलमानों की एक प्रदेश विशेष में जनसख्या की प्रतिशत मे अप्रत्याशित वृद्धि हो गई। ऐसे ही पूर्वी भारत के क्षेत्र मे नागालैण्ड मिजोरम और मेघालय आज ईसाई बाहुल्य प्रदेश होने से देश के अन्य भाग से अपने को अलग-थलग मानते हैं। उनकी सम्पूर्ण शासन व्यवस्था भी ईसाई मत पर आधारित है वहा अल्पसख्यक लोगो का जीवन दूभर हो गया है। महात्मा गाधी जी ने कहा था— "यदि ईसाई मिशनरी मानवता के नाम पर सहायता के कार्य को गरीब लोगों के लिए करने की बजाए शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के द्वारा गरीब लोगो का धर्मान्तरण करेगे तो मैं उनको यहा से चले जाने के लिए कहूगा।" (क्रिश्चयनिटि एन ए येनिज्म इण्डिया पृ० २५ क्लिफोर्ड वाई०एम०सी०ए० प्रकाशन कलकत्ता) जब उनके इस कथन की भारी प्रतिक्रिया हुई तो इनको पुन अपना वक्तव्य देना पडा और उन्होने ७ मई १६३१ के "यग इण्डिया" मे लिखा—"भारत के स्वराज्य मिलने पर मुझे इसमे कोई सन्देह नहीं कि ईसाई मिशनरियों को धर्मान्तरण की स्वतन्त्रता मिलेगी और वे इसका दुरूपयोग करेंगे। अन्य लोगों की तरह मैं भी बलपूर्वक यही कहूगा कि उनका ऐसा करना गलत कार्य है।" (यग इण्डिया पृष्ठ २७)

श्री महीप सिह का एक अन्य तर्क है कि ईसाई दलित भी तमिलनाडु और केरल जैसे राज्यों मे पिछडे पीडित और उपेक्षित है। शायद विद्वान लेखक ने इतिहास के इस तथ्य से एक दम आख मूद ली कि ५ जून १६३६ के भारतीय गजट के अनुसार कोई ईसाई दलित नहीं है। भारत सरकार के अनुसूचित जाति सम्बन्धी आदेश १६३६ जो बकिंघम पैलेस में ३० अप्रैल १६३६ को सुनाया गया था। यह आदेश धारा ३०६ (१) के अन्तर्गत प्रीवी कौन्सिल के द्वारा ब्रिटेन के राजा की उपस्थिति में दिया गया कि —

१ इस आदेश का नाम भारत सरकार का आदेश १६३६ (अनुसूचित जाति सम्बन्धी) होगा।

२

३ कोई भी भारतीय ईसाई अनुसूचित जाति का नहीं माना जाएगा। (नो इन्डियन क्रिश्चियन शैल बी डीम्ड टू बी ए मैम्बर आफ ए शैड्यूल कास्ट)

इस प्रकार हमेशा के लिए इस प्रश्न का १६३६ में ही समाधान कर दिया गया था। भारत के महामहिम राष्ट्रपति जी ने भी १६५० मे सविधान के अनु० ३४ (१) के अन्तर्गत अनुसूचित जाति सम्बन्धी आदेश दिया जो कि ब्रिटिश एक्सेलन्ट हिज मैजस्टी के उपरोक्त ६ जून १६३६ के आदेश में आरक्षण की सुविधा केवल अनुसूचित जाति के लोगो के लिए थी। ससद ने इन सुविधाओ को सिख और नव बौद्धों को जो अनुसूचित जाति के थे सविधान की धारा २५ (२ २) के अन्तर्गत इस लिए दिया क्योकि वे सभी हिन्दू के अन्तर्गत आते हैं १६५० से ही सिख बौद्ध हिन्दू ही माने गए हैं।

रही बात ईसाइयों के दलित होने की। जितने भी हरिजन या अनुसूचित जाति के गरीब लोग भारत मे हैं ईसाई लोग उनको कई प्रकार के प्रलोभन देकर ईसाई मत मे दीक्षित करते हैं और यह बात उनकी पत्रिका "एक्जामिनर" ने जो रोमन कैथोलिक चर्च का मुख्य पत्र है स्वीकार भी की है अपने इस साप्ताहिक मे जो बम्बई से प्रकाशित होता है वे स्वीकार करते हैं कि पिछली चार शताब्दियो मे जितना भी धर्मान्तरण हुआ है वह सब अनुसूचित जातियों आदिवासियों तथा जन जातियो से किया गया है। इनमें से १० प्रतिशत लोग पढे लिखे हैं और शिक्षा सस्थानों के बावजूद ६० प्रतिशत अभी भी अनपढ हैं। "चर्च की सस्था को लगा कि कोई पढा लिखा जो अभाव-ग्रस्त भी नहीं हमारे सिद्धान्तो को स्वीकार नहीं करता केवल अनपढ अभावग्रस्त भोले भाले लोग कुछ सुविधाओं व अन्य प्रलोभनो के कारण आसानी से ईसाई हो जाते हैं। ईसाई पादरी इन्हें यही समझाते हैं कि हिन्दू धर्म मे तुम्हें नीचा समझा जाता है ईसाई मत मे सब को समानता का अधिकार है। परन्तु दलित भाई ईसाई बनने के बाद भी ऊच-नीच के भाव से अभिशप्त रहते हैं। उनकी बस्तिया अलग हैं गिरजाघर कब्रिस्तान नाई मोची तक सब अलग हैं। इनके साथ रोटी-बेटी का सम्बन्ध भी नहीं किया जाता। यहा तक कि ईसाई शिक्षण सस्थाए उन्हें अपने विद्यालयों में आरक्षण का लाभ भी नहीं देना चाहते। सन १६७६ मे महाराष्ट्र में ऐसा ही हुआ। ३४ प्रतिशत स्थान दलितों के लिए आरक्षण किए जाने के सरकारी आदेश को कोर्ट मे ले जाया गया और अल्पसख्यको के विशेष अधिकारों के आधीन कोर्ट ने भी इनके ही हक में फैसला सुनाया। राष्ट्रवादी विचारधारा के आर्क एल्विन फर्नाण्डीज का कहना है "जो चर्च दो हजार सालों से दलितो और पिछडो की मुक्ति का दावा कर रहा है कि ईसाई बन जाने के बाद भी दलितों के भाग्य में दलित रहना ही बदा है क्या यह ईसा के उपदेशों पर चल पाने में सफल होने की स्वीकृति है ?" इन्ही महोदय ने २४ नवम्बर, ६५ को अग्रेजी दैनिक टाइम्स आफ इण्डिया में यह रहस्योद्घाटन किया कि ईसाई स्कूलों, कॉलेजों अस्पतालों तथा अन्य सस्थानों के २५ प्रतिशत स्थान दलित ईसाइयों को देने का सुझाव भी कैथोलिक यूनियन ने नहीं माना।

क्रमशः

सच्चिदानन्द शास्त्री को नमन

किया ध्रुव धारणाओं पर मनन है।
सच्चिदानन्द शास्त्री को नमन है।
जन्म ले सस्कारों की डगर पर,
चले तुम शून्य से पहुचे शिखर पर,
तपादी देह शिक्षा-साधना में,
सृजन-सघर्ष की आराधना में,
रवानी का जवानी में चमन है।
सच्चिदानन्द शास्त्री को नमन है।।
पथिक स्वाधीनता गामी रहे तुम,
दलित उत्थान के हामी रहे तुम,
अनेको बार झझावात आये,
कभी विचलित तुम्हें वे, कर न पाये,
किया आजन्म दुरितों का दमन है।
सच्चिदानन्द शास्त्री को नमन है।।
विचरते से विचारों के गगन में,
निरत-निर्भीक से अपनी लगन में,
मथन करके समय का सिन्धु खारी,
निकाला ज्ञान का भण्डार भारी,
नसीहत की नसीहत में अमन है।
सच्चिदानन्द शास्त्री को नमन है।।
तुम्हारी दूरदर्शी दिव्य दृष्टी,
दयानन्द देव की सकल्प सृष्टी,
दिखाया कार्य कर-दर विज्ञता से,
रहे लड़ते निरतर अज्ञता से,
सुगन्धित राष्ट्र का तुमसे चमन है।
सच्चिदानन्द शास्त्री को नमन है।।

सत्यव्रत सिह चौहान सिद्धान्त शास्त्री मत्री
आर्य समाज पुडरी–मैनपुरी (उ०प्र०)

ऋषि दयानन्द की वेदार्थ शैली

विद्यावाचस्पति आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र

**सायणाद्युडुमध्ये वै कोऽस्ति कुमुद बान्धव।
इति प्रश्नोत्तरे नान्यो दयानन्द विना भुवि।।**

आचार्य सायण आदि भाष्यकार वेदो के विषय मे अन्धकारावृत रात्रि मे तारागण के समान ही रहे तो फिर इस वेद विद्या का प्रकाशक चन्द्रमा कौन है ?

इस प्रश्न के उत्तर मे यही कहा जा सकता है कि इस समस्त भूमण्डल मे महर्षि दयानन्द को छोडकर शीतल सुखप्रद प्रकाश करने वाला अन्य कोइ चन्द्रमा नही है।

इस सूक्ति के परिप्रक्ष्य मे हम देखते हे कि तात्कालिक दर्शन और कमकाण्डीय ज्ञान निष्णात आचार्य सायण आदि पौराणिक कथाओ और सूत्र ग्रन्थो के जाल और रूढिवादान्ध निशा मे ऐसे फस गये हे कि उनकी दृष्टि प्रक्रिया त्रय परक वेदार्थ शैली जिसे स्कन्द स्वामी ने भी अपनाया था उसे न देख सकी इतना ही नही प्रत्युत्त आगे आने वाले सूक्ष्मेक्षिका रहित विद्वानो के लिए भी इनका भाष्य अलडघनीय और आदश मित्ति बन गया जिसक आगे मानो कुछ गन्तव्य मार्ग ही शेष न रहा हो सायणाचार्य न वेदार्थ को लोक प्रचलित रूढियो के पीछे धसीटा। इनकी दृष्टि मे इन्द्र रूद्र अदिति विष्णु आदि ये समस्त ऐतिहासिक जन या पदार्थ थे। इन्होने उक्त शब्दो के केवल अधिदैवत अर्थ यज्ञ परक किये। जबकि महर्षि दयानन्द ने इन्द्र का अर्थ परमेश्वर जीवात्मा शूर वीर विद्वान सम्राट शिल्पी कषक आदि अथ किये। रुद्र का भी अर्थ परमेश्वर प्राण राजा सेनापति विद्वान आदि किय। अदिति क भी परमेश्वर आत्मा विदुषी मात' अन्य आदि थ करके ईश्वरीय ज्ञान वद को व्यापक और अपौरुषेय ज्ञान की दृष्टि से लेखक नाष्यव म क्रन्तदर्शी भाष्यकार सिद्ध हुए तथा रूढियो का सुदृढ श्रृङ्खलाओ से उन्मुक्त क परम्पराआ से आ रही धारणाओ का समूल उन्मूलन किया उदाहरण स्वरूप ऋषि क पूर्व से ही समुद्र यात्रा करना पाप समझा जाता था यहा तक कि अविकसित बुद्धि आचार्यों ने रूढियो के श्लोक बनाकर मनुस्मृत्यादि ग्रन्थो मे भी प्रक्षेप कर दिय यथा

समुद्र यात्री वन्दीन *(मनु० ३। १५८)*

जो समुद्र की यात्रा करता है वह ब्राह्मण श्राद्ध मे भोजन कराने योग्य नही हे बोधायन धर्म सूत्र मे समुद्र यात्रा करने वाला निन्दनीय है औशनस स्मृति मे भी देखिये

**वेदविक्रयिणश्चैते श्राद्धादिषु विगर्हिता।
धर्म विक्रयिणो यत्र परपूर्वा समुद्रगा।।**

यहा भाव तो यह था कि ब्राह्मण वेद तथा धर्म का उदरार्थ विक्रय करने के लिए समुद्र यात्रा करेगा तो वह निन्द्य है परन्तु लोक धारणा म कोई भी समुद्र यात्रा करेगा वह भी निन्दनीय है इसी प्रकार

**अङ्ग बङ्ग कलिङ्गेषु सौराष्ट्र मगधेषु च।
तीर्थ यात्रा विना गत्वा पुन संस्कार मर्हति।।**

अङ्ग बङ्ग कलिङ्ग सौराष्ट्र आदि मे जाना भी निषिद्ध मान लिया गया फिर देश का दशन सगठन व नियन्त्रण कैसे हो गया ? भला कितना झूठ मतित्व है ?

महर्षि ने ऐसी रूढियो को छिन्न भिन्न कर वेद मत्रो मे समुद्र यात्रा के व्यापार द्वारा राष्ट्र की समृद्धि करने का उपदेश दिया।

इतिहास साक्षी है कि ब्राह्मण वेद प्रचारार्थ राजा व्यापारी आदि जावा सुमात्रा कम्बोडिया श्याम थाईलैण्ड आदि मे जाते रहे। इसी प्रकार वेद निरूद्ध मतो के मतवालो की भी महिमा निराली है। जैनियो ने वेद मे अपन तीथकरो ऋषभ आदि के नाम छाट लिये चक्र की नेमि अर्थात पहिये का हाल देखकर उसे तीर्थकर मालूम पडे। मयूख शब्द का दख वराहावतार की कल्पना वैष्णवो ने कर ली शाङ्करो ने त्र्यम्बकम पद मे शकर जी को दखा अग्नि मीडे पुरोहितम की व्याख्या पवन पुत्र हनुमान परक कर डाली राम और कष्ण पदो का पाकर इतिहास के दाशरथि और वासुदव कष्ण को देखने लग निष्कर्ष यह हे कि अपनी अपनी धारणा मे वद का घटा लिया। वेद क अनुयायी न बनकर वेद को अपना अनुयायी बना लिया इस स्वार्थी बुद्धि शून्य उदरम्भरिया न वद क स्वरूप की चिन्ता न की केवल अपन स्वरूप को प्रतिष्ठित और महिमा मण्डित करते रह

महर्षि न वद की तुला पर शिव क मनो को तोला थोथ मतो की पोल खोल नि सारता सिद्ध की। महर्षि के परिश्रम और क्रान्ति का परिणाम यह हुआ कि पौराणिका का भी ध्यान वेद की ओर आकष्ट हुआ पर दुख हे कि वे आज भी वेदो की अपेक्षा पुराणो की प्रतिष्ठा अधिक करते है। कथा है तो पुराण की प्रवचन है तो पुराणो पर खोज ह तो पुराणो पर पाठ है तो पुराणा का। प्रतिवर्ष जितना धन दुर्गा सप्तशती और पुराण प्रचार मे व्यय होता है इसका शताश भी वेद प्रचार पर लग जाव तो हिन्दू समाज मे जागरण व चेतना की अचूक लहर आ जाये

हर्ष की बात है कि सन १९९२ मे विश्व हिन्दू परिषद के तत्त्वावधान मे त्रिवेणी तट पर भारद्वाज पुरम बसाया गया और विराट अभूतपूर्व कायक्रम ९ दिन तक चला जिसमे दस दिन वेद विषय ५२ विचार चले यथ वेद दशन वद और पुराण आदि दस विषयो पर विचार भाषण चले ५ और दशन विषयक सम्मेलन वहा मेरी अध्यक्षता म सम्पन्न हुआ मध्य ह्नोत्तर सत्र मे एक गुजराती पौराणिक प्रचारक सत पुरुष ने मेरे भाषण का सन्दर्भ देते हुए यह उसने मच पर स्वीकार किया कि वस्तुत महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रादुर्भाव के बाद ही वेदो की सर्वाधिक मान्यता प्रतिष्ठित हुई

किन्तु आश्चय तो यह है कि रूढिवादियो न अपने विवक का ढक्कन नही खोला उनक आचरण वही रहा कि पचो का फसला सिर माथ परनाला वही गिरेगा

आइय वेद की अनादिता और अपौरुषेयता क सिद्धान्त को ध्वस्त करने वाले कहने को वेद क पुजारी पर वस्तुत विवेक की दृष्टि से वेद विद्रोही सिद्ध हो रहे है उदाहरण के लिए निम्न मत्र देखिये इसमें दूर दूर तक न तो वासुदेव दवकी के नाम की गन्ध है और न अवतारवाद और मूर्ति पूजा की मान्यता है परन्तु वैष्णव भाई अपने सम्प्रदाय की मान्यता और विधियो को वेद मत्रो मे दिखलाने की शब्दार्थो की खीचतानी कर रहे हैं। हमने एक पौराणिक पडित की पुस्तक मे निम्न मत्र का अथ देखा तो उन्होने कष्णावतार के सिद्ध करने की भूमिका बाध दी। इन सस्कत शून्य पडित जी को बुद्धि और विवेक से कोई सम्बन्ध नही। मत्र है

**कृष्णन्त एम रुशत पुरो भास्चरिण वर्चिर्वपुषा मिदेकम।
यदप्रवीता दधते गर्भ सद्यश्चिज्जातो भवसीदु दूत।।**

(ऋ० ४।७।९)

पडित जी ने (कष्णम) पद देखकर कष्णावतार सिद्ध करते हुए लिखा कि यहा साक्षात परमात्मा का अवतार है वे मत्रार्थ मे लिखते हैं

आपकी ही ज्योति को हथकडी बेडी से जकडी हुई देवकी ने गर्भ रूप से धारण किया और शीघ्र (सद्यश्चिज्जातो भवसीदु दूत) प्रकट होकर उनसे अलग हो गये

अल्प सस्कतज्ञ भी जान सकते ह कि उक्त ऋग मत्र म कही भी देवकी का नाम नही न हथकडी वेडी का वाचक कोई शब्द हे भो न कष्ण शब्द सम्बोधन मे है यह तो नपुसक लिङ्ग मे प्रथम विभक्तयन्त है सायणाचार्य की दृष्टि म (एम) का विशेषण ह

फिर दुजन तोष न्याय स कष्ण सम्बन्धी मान भी लिया जाय तो क्या कष्ण के बाद म वेद र एसी बात हे तो अनादि न समाप्त हो गयी यदि कोई कह कि किसी अन्य पूर्व कल्प क अवतीण कष्ण का वणन ह तो भी उल्लिखित तक क पीछे यदिप्रेक्ष्य अखण्ड रहा और अनवस्था दाष भी होता न्याय की दृष्टि से साध्यसम हत्वाभास दाष होगा। मन्त्र मे कष्णावतार की खाज करना खर और शशक के सिर पर सीग टटोलन के समान ही मूर्खता हे

इस मतिमोर पण्डित न पौराणिका के आरा य सायणाचार्य क अथ का भी न दखा सायण अपनी रूढ यज्ञ परक शैली म उक्त मत्र का अथ करते है।।

मत्र का देवता अग्नि हे कष्ण और विष्णु भी नही वे लिखते है ह अग्ने राचमानसय तब सम्बन्धि वत्य कष्ण वर्ण भवति तब सम्बन्धिनीदीप्ति पुरस्ताद भवति चरणशील त्वदीय तज रूपवता तेजस्विना मुख्यमेव भवति ये त्वामनुपगत यजमाना त्वज्जनन हेतु सरणि धारयन्ति खलु

**सत्व सद्य एव उत्पन्न सन
यजमानस्य दूतो भवस्येव।**

अथात हे अग्ने प्रकाशित हात हुए तुम्हारा गमन मार्ग काले रग का होत है तुम्हारी दीप्ति ..मक आगे हानी है तुम्हारा चलनशील तेज स्त्रियो के लिए मुख्य होता है तुम्हे न पान वा यजमान तुम्हारे गभ अर्थात उत्पन्न होने के कारण असीम कष्ट को धारण करते है तुम शीघ्र उत्पन्न होकर यजमान के दूत बनते हो

उक्त अथ सायण का है किसी आय समाजी का किया तो नही है इसमे न कही हथकडी वेडी न कही देवकी और न कही देवकी पुत्र कष्ण है। यह बात दूसरी है कि सायण कर्म कर्म (यश) काण्ड परक ही व्याख्या कर सक पर इस मत्र म ऋषि ने भौतिक अग्नि न लेकर विद्वान अर्थ किया है ऋषि ने तो वद की शताब्दियो से पडी हथकडी और बडी तीक्ष्ण शास्त्र सम्मत तर्क की छनी से सदा सदा के लिए काट दी लख का कलेवर बढ जाने क भय स अधिक न लिख कर इतना ही पर्याप्त है कि ऋषिवर ने इस मत्र का भावार्थ इस प्रकार लिखा है

हे (विद्वन) अध्यापक कपालो आप बिजली के तेज की विद्या का हम लोगो को बोध कराइये कि जिस तेज से दूत के सदृश कार्यो को हम लोग करावे।

ऋषि ने इस प्रकार सर्वत्र ही पदार्थ विज्ञान शिल्प विद्या आदि समस्त ज्ञानो का भण्डार वेद को सिद्ध कर दिखाया। जिस प्रकार फ्रेंच कवि लामार्टीन ने कहा है कि होमर थे ओकटन और तारो को मिलाया जाये तो एक कालिदास बनता है तो मै कहता हू कि वेद के उत्तम भाष्यकार ऋषियो के पुनीत प्रवचन दशोद्धारको की भक्ति और समपण योगियो का आत्मसाक्षात बुद्ध की करुणा कष्ण की गोरक्षा आचार्य शकर की विद्वत और अष्पाद जी तक प्रतिमा एकत्र की जाय तो एक दयानन्द की चेतना निष्पन्न होती है ♣

हमारे सत्ताधारियों ने अपने अंग्रेजी प्रेम से सारे देश को ही गूंगा बना कर रख दिया

चौदह सितम्बर हिन्दी दिवस। हिन्दी को राष्ट्र ओर राज्य का सम्पक भाषा की मान्यता सवधानिक ओर सरकारी तौर पर प्रदान करने का प्रावधान और प्रतिज्ञा इसी दिन की गई थी सविधान को आत्मार्पित करते हुए १६५० मे यह कहा गया था कि पद्रह वष बाद अर्थात २६ जनवरी १६६५ से हिन्दी राज्य की भाषा हो जाएगी ओर तब सभी सरकारी कामकाज हिन्दी मे किए जाने लगग पन्द्रह वष बीते। १६६५ आया। तमिलनाडु म आत्मदाह अनशन आन्दोलन की आग भडक उठी वह आदोलन वस्तुत था तो राजनीतिक किन्तु उसे हिन्दी विरोध का आधार बनाकर चलाया गया था कि उत्तर वाले दक्षिण वालो पर अपना शासन ही नही अपनी भाषा भी थापकर उन्हे गुलाम बनाना चाहते है उन्हे हिन्दी और उत्तर वालो की गुलामी नहीं चाहिए। हिन्दी थापन या किसी भी राज्य की सहमति और इच्छा के विरुद्ध हिन्दी किसी पर थापी नही जाएगी का मुहावरा भारत के प्रथम प्रधानमत्री पडित जवाहरलाल नेहरू की देन है। इसका उपयोग और दुरुपयोग दोनो तभी से (१६५० से) किया जा रहा और होता आ रहा है।

आजादी के बाद स १६५० तक जो दक्षिण भारत ओर अहिन्दी भाषी प्रदेश हिन्दी सीखते रहे व हिन्दी पठन पाठन मे पटुता प्राप्त करने का प्रयास कर रहे थे १६५० के बाद की कांग्रेस राजनीति के कारण वे ही हिन्दी के विरुद्ध ताल ठोककर खडे हो गये तो नेहरू जी ने भाषाई राज्यो का निमाण करने के लिए १६५६ म राज्य पुनर्गठन आयोग बनाकर देश को भाषाई आधार पर विभाजित करके भाषाई शत्रुता और पराएपन का स्थायित्व ही नही प्रदान किया अपितु सम्पूर्ण देश से भिन्न एक समानान्तर क्षेत्रीय अस्तित्व अस्मिता और सस्कृति की अवधारणा का बीज भी बोया १५ अगस्त १६४७ को मुस्लिम लीग द्वारा मजहबी द्विराष्ट्रवाद के आधार पर भारत का विभाजन कराने के बाद शेष भारत का भाषाई बटवारा करके अलगाव को बढाया और बल प्रदान किया सन १६५० से अब तक हम भारत के लोग ओर केन्द्रीय तथा कुछ राज्य सरकार हिन्दी लेखक ओर पत्रकार सरकारी ओर गेर सरकारी स्तर पर हर १४ सितम्बर को हिन्दी दिवस मानने की लकीर पीटते आ रहे है हिन्दी अग्रेजी की दासी की तरह उसके दरबार मे झाड बुहारी लगाने का काम पूर्ववत करती आ रही हे और उसकी दूसरी सखिया अर्थात शेष राष्ट्रीय भाषाए अपनी अपनी सीमाओ मे सिमट कर रह गइ है। ५० वर्षीय स्वाधीन भारत राष्ट्र भी अधिकत रूप से अग्रेजी बोलता और अग्रजी भाषा मे ही राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय काम करता है। वस्तुत भारत एक गूगा राष्ट्र है न वह अपनी भाषा और भाषाओ का उपयोग कर पा रहा है उपभोग करता है और न ही उसकी सरकारे राष्ट्रभाषा के साथ राष्ट्रीय भाषाओ की सौमनस्यता पेदा होने देती या सौमनस्यता पैदा करती है

हिन्दी को राष्ट्र जीवन मे उचित स्थान न मिलने देने और लगातार हिन्दी विरोध की आग पर अपनी राजनीतिक रोटिया सेकने वालो मे

भानु प्रताप शुक्ल

तथाकथित उदारवादी साम्यवादी सेकुलरिस्ट और क्षेत्रवादी शक्तिया प्रमुख रही हैं। हिन्दी का विरोध सर्वप्रथम १६वीं शताब्दी मे इस्लामी और उर्दूवादियो द्वारा किया गया था। उन्हे हिन्दी के कारण देश की आम जनता के हाथो मे अपनी सत्ता चले जाने का डर था। भारत मे राज कर रहे अग्रेजो के चाटुकार ने भी इसका घोर विरोध किया। उर्दू के न चल पाने के कारण बाद मे जब इनकी आशाए विफल होने लगीं तब इन्होने अग्रेजी का दामन थाम लिया।

ईसाई मिशनरियो ने इनका इसलिए समर्थन किया कि अग्रेजो का यह पिछलग्गू वर्ग भारत की आम जनता को भारतीयता से दूर ले जाने मे यदि सफल हो जाएगा तो इससे उन्हे यहा इसाईयत फैलाने मे सफलता मिलेगी क्योकि आम भारतवासी को उसके लोकजीवन सस्कृति और भारतीयता से जोडकर रखने मे हिन्दी और दूसरी भारतीय भाषाए अत्यन्त महत्वपूर्ण कारक रही है महत्वपूर्ण कारक हैं भी। उनकी यह मान्यता थी और है भी कि हिन्दी और दूसरी भारतीय भाषा भाषियो का सामाजिक और भाषाई अभिसरण रोककर ही भारतीयो की सास्कतिक और राष्ट्रीय एकता एकात्मता को ताडा जा सकता है इस तथ्य और इन षडयन्त्रो से भारत का राष्ट्रवादी वर्ग अनभिज्ञ नही था या है तो भी भारत के विखण्डन के इस षडयन्त्र को नाकाम करने का ऐसा कोइ कारगर प्रयास नही किया गया कि स्वाधीन भारत अपनी भाषा मे बोलता काम करता और अग्रेजो की गुलामी से मुक्त होने के बाद अग्रजी की गुलामी से भी मुक्त हो जाता। देश के अहिन्दी भाषी राष्ट्रवादियो द्वारा हिन्दी को राष्ट्र को एक सूत्र मे पिरोने का सबसे महत्वपूर्ण कारक स्वीकार करने के बाद भी हिन्दी विरोध को रोका नही जा सका। चाहे महात्मा गाधी रहे हो या सुभाष बोस सरदार पटेल या सुब्रह्मण्यम भारती इनके जैसे अहिन्दी भाषियो ने ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार करके आजादी की लडाई इसी के माध्यम से लडी थी। देश की आजादी की लडाई मे हिन्दी भी एक मुद्दा थी। हिन्दी को इन्होन न केवल राष्ट्रभाषा के रूप मे प्रतिष्ठित किया अपितु इसे देशभर मे प्रचलित करके परस्पर सम्पर्क की भाषा बनाने का सच्चे दिल से प्रयास किया था।

किन्तु दूसरी ओर इन्हीं की छाया मे पल एव रह रहे अग्रेजो के विरोधी किन्तु अग्रेजी भक्तो ने हिन्दी का विरोध किया हिन्दी का विरोध करते रहे और वे ही आज भी हिन्दी का विरोध पहले इस तर्क पर टिका था कि हिन्दी स्वय मे कोई भाषा है नही। उर्दू को नागरी में लिखने से वह हिन्दी हो जाती है। यह तर्क हास्यास्पद और सत्य के एकदम विपरीत होते हुए भी यह बकवास जारी रहा। मध्यकाल मे लगभग सम्पूर्ण भारत की आम जनता द्वारा बोली जाने वाली एक भाषा जो थोडे बहुत अन्तर के साथ विभिन्न बालियो के रूप मे प्रचलित थी नागरी मे ही लिखी जाती थी। उसी को जब मुसलमानो ने फारसी लिपि में लिखा और उसमे अरबी फारसी के शब्दो का मेल किया तो वही लश्करी भाषा बाद मे उर्दू बनी। बीतते समय के साथ साथ उर्दू भाषा से अधिक एक मानसिकता बन गई। इसने बाद मे मजहबी साम्प्रदयिकता और साम्राज्यवादी मानसिकता का रूप ले लिया और बढते बढते सन १६४७ मे भारत का और १६७१ मे पाकिस्तान का विभाजन कराया। कुछ प्रभावशाली उर्दू भाषियो द्वारा किया जाने वाला हिन्दी विरोध विरासत के रूप मे अग्रेजी भक्तो द्वारा किए जाने वाले हिन्दी विरोध मे बदल गया। अग्रेजी परस्तो द्वारा किया जाने वाला हिन्दी विरोध दक्षिण मे हिन्दी विरोधी आन्दोलन की ही तरह मिशनरियो के कुचक्रो और षडयत्रो का भी परिणाम था। देश में अग्रेजी लागू कराने और उसे स्थायित्व प्रदान करने के लिए ईसाई मिशनरियो ने मैकाले की अवैध सन्तानो का सहारा लिया। अग्रेजी भाषा की दरिद्रता को छिपाने के लिए उन्होने पहले हिन्दी पर शब्दो की कमी का आक्षेप लगाया जबकि शब्दो की दरिद्रता अग्रेजी मे है न कि हिन्दी मे। उदाहरण के लिए अग्रेजी मे सूर्य पृथ्वी समुद्र वन आदि के लिए कितने शब्द है और हिन्दी के कोषागार मे कितने हैं ? किन्तु यह बात यहीं समाप्त नहीं हो जाती। एक आरोप यह भी है कि हिन्दी मे विज्ञान गणित इतिहास भूगोल आदि का कोई मौलिक लेखन नहीं हुआ। यह आक्षेप लगाने वाले वास्तव मे अपनी जानकारी की इस दरिद्रता को छिपाते है कि उनके अपने मानसपिताओ ने इस विषयो को हिन्दी मे कभी पनपने ही नही दिया। क्या वे यह बता सकत है कि १८वीं शताब्दी के अन्त और १६ वी शताब्दी के मध्य तक भी इन विषयो मे अग्रेजी मे कितनी पुस्तके उपलब्ध थी ? वास्तव मे ये सभी विषय अग्रेजी मे पिछली दो शताब्दियो मे ही विकसित हुए हैं। यदि हिन्दी को सरकारी सरक्षण न भी मिला होता किन्तु उसे इस प्रकार के विरोध का सामना न करना पडा होता तो स्थिति भिन्न होती।

अभी हाल मे हिन्दी विरोध का एक नया स्वर सुनाई देने लगा है। यह स्वर आर्थिक उदारीकरण के विमान पर सवार होकर भारत की भूमि पर उतर बहुराष्ट्रीय निगमो और उनसे मोटी माटी धनराशि पाने वाले भारतीय नौकरो का है। स्वदेशी के विरुद्ध लडाई मे हिन्दी और भारतीय भाषाओ का विरोध उनका प्रमुख हथियार है। बहुराष्ट्रीय निगम अपने भारतीय नौकरो द्वारा हमारे ऊपर अग्रेजी थोपकर रखने का प्रयास कर रहे हैं। अरब मे अरबी यूरोप तथा लैटिन अमरीका मे जर्मन फ्रेंच स्पैनिश तथा चीन मे चीनी भाषा अग्रेजी को चुनौती दे रही है किन्तु भारत सहित तीसरे विश्व के देशो मे इसे कोई गभीर चुनौती देता दिखाई नही देता। ऐसी स्थिति मे यदि निकट भविष्य मे हिन्दी को रोमन लिपि मे लिखने पर जोर न दिया जाने लगे तो कोई बहुत बडा आश्चर्य नही होगा। जो लिपि अग्रेजी भाषा का व्याकरणसम्मत सतोषजनक विकास नहीं कर सकी वह हिन्दी का विकास नही नाश करने के लिए एक प्रभावी उपाय हो सकती है। इससे बहुराष्ट्रीय निगमो को लाभ यह होगा कि उन्हे

शेष पृष्ठ ६ पर

वेदों का स्वरूप और उनकी कतिपय विशेषताएं।

गताक से आगे

डा० मञ्जुलता विद्यार्थी

(२) वेदो को ज्ञान का मूल स्रोत तथा अगाध सागर माना गया है।

महर्षि मनु ने लिखा है– **सर्वज्ञानमयो हि स। वेद ज्ञानमय है ज्ञान के भण्डार हैं**

–मनु० २। ७

इसी प्रकार याज्ञवल्क्य ऋषि का कहना है–'सभी ग्रथ शाश्वत वेदो से ही निकले है और कोई भी ग्रथ वेदो के समान नहीं है।

आधुनिक युग के प्रकाण्ड विद्वान ऋषि दयानन्द का कहना है कि वद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक हैं।

योगीराज अरविन्द ने तो यहा तक कहा है कि वेदो मे विज्ञान की वे सच्चाइया भी है जिन्हे आधुनिक विज्ञान अभी तक नहीं जान पाया है।

मैक्समूलर भी वेद को ज्ञानकोष मानने पर बाध्य हुआ। डार्विन के विकासवाद पर पुस्तक लिखने वाले वालिस महोदय ने ऋग्वेद के नासदीय सूक्त को पढकर लिखा कि– ज्ञान का क्रमिक उन्नति सम्बन्धी विकास असमव है।

श्री एन०बी० पावगी अपनी पुस्तक 'दी वैदिक फादर्स आफ ज्योलिजी मे लिखते हैं–'किसी विरोधाभास व भ्रम के बिना अपने पाठको को स्मरण कराना चाहता हू कि वेदो मे ऐसे अनेको वैज्ञानिक सूत्र हैं जिनका पता लगाना शेष है क्योकि उनमे असमाप्य वैज्ञानिक सम्पदा है।

इसी प्रकार अमरीकी विद्वान टीलर विलकाक्स लिखते हैं– वह (भारत) महान वेदो का देश है जिसमे न केवल पूर्ण जीवन के लिए धार्मिक विचार हैं बल्कि वैज्ञानिक सूक्त भी हैं जो कि विज्ञान द्वारा सत्य सिद्ध हो चुके हैं। विद्युत रेडियम इलेक्ट्रान हवाईजहाज आदि का वैदिक विद्वानो को पूर्ण ज्ञान प्रतीत होता है।

स्पष्ट है भारतीय और विदेशी विद्वानों ने वेद को ज्ञान विज्ञान का सागर माना है। हमारा प्राचीन वाङमय तो वेद को सब विद्याओ का मूल मानता ही है। वेद का ज्ञान बीज रूप मे है। वह सूत्र और सक्षिप्त रूप मे है जिसे स्पष्ट करने के लिए ऋषियो ने अनेक ग्रथो की रचना की। समस्त वैदिक साहित्य ब्राह्मण उपनिषद दर्शन सब वेदो के व्याख्या ग्रथ ही है। ईशोपनिषद तो थोडा भद से पूरे का पूरा यजुर्वेद का चालीसवा अध्याय ही है। डा० लक्ष्मीनारायण गुप्त के अनुसार वेद अथाह विस्तृत महासागर की भाति है उसमे गाता लगा कर ऋषियो ने कुछ रत्न प्राप्त कर लिए परन्तु असीमित इश्वरीय ज्ञान की थाह किसे मिली ?

(३) वेदो की भाषा भी ईश्वरीय है। वैदिक साहित्य भाषा को भी ज्ञान के साथ ईश्वर की स्वीकार करता है। ज्ञान और भाषा का अटूट सम्बन्ध है। ज्ञान बिना भाषा के व्यक्त नहीं किया जा सकता ईश्वर ने मनुष्य को वाणी उसी प्रकार दी है जिस प्रकार बुद्धि दी है। वेद ईश्वर प्रदत्त शब्दमय ज्ञान है।

वेदो की भाषा ही वह प्राचीनतम भाषा है जो परमेश्वर से प्राप्त होती है। चारो वेदो मे भाषा भेद नहीं है। अलग समय पर अलग अलग ऋषियो द्वारा लिखे जाने पर भाषा भेद होना ही चाहिए। इस बात का कोई चिन्ह इस पृथ्वी पर नहीं मिलता कि वैदिक भाषा से पहले कोई और भाषा यहा प्रचलित थी। वर्तमान लौकिक सस्कृत वैदिक सस्कृत से निकली है। ससार की सभी भाषाओ मे सस्कृत के शब्दो की उपस्थिति उसी रूप मे अथवा अपभ्रश रूप म मिलती है। विश्व के सभी भाषा वैज्ञानिक इस तथ्य को स्वीकार करते है। वेद की भाषा विश्व के प्रथम मानव की आदि भाषा है।

(४) वेदोत्पत्ति के समय से आज तक वेदमत्रो मे कोई फेर बदल कमी बढोत्तरी या काट छाट नहीं हुई है जैसा कि अन्य ग्रन्थो मे हाता रहा है। वेदो मे अक्षर मात्रा बिन्दु, विसग की रचना छन्दोबद्ध है तथा भाषा स्वर सहित ह। छन्दोबद्ध रचना का शब्द इधर उधर बहक नही सकता। स्वर अपने कौशल से अर्थ को पुष्ट करते है। स्वरो का फेर अर्थ को बदल देता है। यह खूबी सिवा वेदो के दुनिया की किसी भाषा मे नहीं है। दूसरा ऋषियो ने वेदरक्षा के निमित्त वेदो की विभिन्न प्रकार की पाठविधि तैयार की यथा सहिता पाठ पद पाठ क्रम पाठ। ऋषियो ने अपने शिष्यो को वेदमत्रो को भिन्न प्रकार से स्मरण करवाया। इसमे मत्रो के साथ ऋषि देवता और छन्द को भी स्मरण करवाना था। इसके अतिरिक्त उन्होने वेदो के शब्दो की सख्या लिखी एव अनुक्रमणिकाए बनाई। परिणामत मूल सहिताए आज तक वैसी की वैसी है। उनमे एक भी अक्षर की न तो मिलावट हो सकी और न हटावट।

(५) वेदो का ज्ञान नित्य है शाश्वत है सृष्टि नियम के अनुकूल है। उसमे किसी देश जाति या काल का इतिहास नही है। सृष्टि के प्रारम्भ मे प्रकाशित होने के कारण वेदज्ञान नित्य है उसमे अनित्य इतिहास नहीं हो सकता। उसमे मिलने वाले वशिष्ठ विश्वामित्र मित्र जमदग्नि कण्व इत्यादि शब्द व्यक्ति विशेष वाचक नही है अपितु गुण विशेष व्यक्ति तथा पदार्थसूचक है। साथ ही वदो के शब्द यौगिक है रूढि नही। समस्त आध्यात्मिक और भौतिक विद्याओ का मूल उसमे है। उसमे सारा ज्ञान विज्ञान बीज रूप मे विद्यमान है। वेद के वास्तविक अर्थ को जानने के लिए प्राचीन ऋषियो के मार्ग का अबलम्बन जरूरी है जिस पर चल कर प्राचीन ऋषियो ने खोजे की थी।

(६) वेद की एक विशेषता उसका सार्वजनिक व सार्वभौमिक होना हे। जैसे भगवान ने पृथ्वी जल अग्नि वायु, सूर्य चन्द और अन्न आदि पदार्थ सबके लिए बनाये है वैसे ही वेद भी सबके लिए प्रकाशित किये हैं। वेद मे कहा गया हे **यथेमा वाच कल्याणीमा वदानि जनेभ्य।** मनुष्य मात्र को वेद पढने सुनने और समझन का अधिकार है। उसकी शिक्षाये सर्वथा पवित्र निष्पक्ष सार्वभौम युक्तियुक्त तथा विज्ञान सम्मत है। वेद मे कहा गया है मनुर्भव मनुष्य बनो। वेद मे मनुष्यो को सबोधित किया गया है किसी विशेष देश विशेष जाति या विशेष रग के मनुष्य को नही। वास्तव मे वैदिक सस्कृति सार्वभौम सस्कृति है इसे भारतीय सस्कृति तो इसलिए कहते हैं कि भारत के लोगो ने इस सस्कृति की विशेष रूप से रक्षा की है और इसे अपने जीवन मे लाने का प्रयत्न किया है।

(७) वेद सहिताये बहुत सरल तथा पवित्र हैं। उनमे ज्ञान कर्म उपासना का ज्ञान बहुत सरलता से मिलता है। उदाहरण के लिए यजुर्वेद के चालीसवे अध्याय का मत्र है– **ईशा वास्यमिद सर्व यत्किञ्च जगत्या जगत।** इस ससार मे जितने पदार्थ हैं उन सबमे ईश्वर व्याप्त है।

मनुष्य के कर्तव्याकर्तव्य के सम्बन्ध मे आज्ञाये हैं– **सगच्छध्व सवदध्व स वो मनासि जानताम।** हे मनुष्यो तुम्हारी गति और वाणी परस्पर अनुकूल हो। तुम्हारे मन परस्पर समान विचार करन वाले हो।

इसी प्रकार परमात्मा की उपासना के सूक्त हैं जो सरलता लिए हुए हैं ओ३म विश्वानि देव अवितुर्दुरितानि परासुव यद्भद्र तन्न आसुव। कितना सरल अथ हे सपूर्ण जगत के स्वामी हमारे सम्पूर्ण दुरितानि (यानी दुगुण दुव्यसन तथा दुखो को) दूर कर दीजिये ओर जो भद्र (यानी कल्याणकारी गुण कम स्वभाव और पदाथ है वह सब) हमे प्राप्त कराइये।

अन्त मे मै यही कहना चाहूगी कि वेद को परमात्मा का ज्ञान न मान कर जो भारतीय या पाश्चात्य विद्वान उन्हे ऋषिकृत रचना मानते है उनसे भी वेदो का महत्व कम नही होता हमारे उपनिषद दर्शन गीता और इसी कोटि क अन्य ग्रन्थ ऋषियो की रचना होते हुए भी कम महत्व नहीं रखते उनके विचारो के आगे तो बडे बडे विचारक अपना मस्तक झुकाते है। वेदो के उपदेशो के आधार पर ही उपनिषद दर्शन तथा गीता जेसे ग्रथ लिखे गये।

ऋषि दयानन्द के अनुसार पाच हजार वर्ष पूर्व तक इस विश्व मे वेदमत से भिन्न काई मत न था। वेदोक्त सब बाते विद्या से अविरुद्ध है। वेदो की अप्रवृत्ति होने के कारण महाभारत युद्ध हुआ। महाभारत के बाद से देश का पतन प्रारम्भ हुआ। वेदो के अर्थ के अनर्थ हुए। अविद्या अन्धकार के भूगोल मे विस्तृत होने से मनुष्यो की बुद्धि भ्रमयुक्त हो कर जिसक मन मे जैसा आया वैसा मत चल या देश अज्ञानान्धकार म फसता चला गया खैर। यह अलग इतिहास का विषय है।

आधुनिक युग मे ऋषि दयानन्द सरस्वती ने पुन प्राचीन आष सिद्धान्तो के अनुरूप वेदो का भाष्य कर उसे सब सत्य विद्याओ का पुस्तक घोषित किया और मानवमात्र को वेदो की ओर लोटो का सदश दिया। यूरोप के वेद विद्वान मेक्समूलर न फिर कहा– उन्नीसवी शती का सबसे बडा आविष्कार वेदो का आविष्कार है ओर इस क आविष्कारक निसन्देह महर्षि दयानन्द ह।

अन्त मे राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त क उदगार प्रकट करते हुए म अपने शब्दो को विराम देती हू

फैला यहीं से ज्ञान का आलोक सब ससार मे
जागी यहीं थी जग रही जो ज्योति अब ससार में।
इजील और कुरान आदि थे न तब ससार मे
हमको मिला था दिव्य वैदिक बोध जब ससार में।।

जिनकी महत्ता का न कोई पा सकता है भेद ही
ससार मे प्राचीन सबसे है हमारे वेद ही।
प्रभु ने दिया यह ज्ञान हमको सृष्टि के आरम्भ मे
है मूल चित्र पवित्रता का सभ्यता के स्तम्भ मे।

विख्यात चारो वेद मानो चार सुख के सार है
चारो दिशाओ के हमारे वे जय ध्वज चार है।
वे ज्ञान गरिमागार हैं विज्ञान के भण्डार है
वे पुण्य पारावार है आचार के आधार है।।

तो आइये इन ज्ञान गरिमागार और विज्ञान क भण्डार वेदो के स्वाध्याय का व्रत ले।

श्रुति सौरभ
इजीनियर्स कालोनी
बनी उमरी
अकोला (महाराष्ट्र

आचार्य मनु की वर्ण व्यवस्था : वैज्ञानिक श्रम विभाजन

मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

विगत कुछ समय से समाज व्यवस्था के महान संस्थापक आचार्य मनु महाराज की मनुस्मृति को लेकर कतिपय अर्द्ध शिक्षित एव पूर्वाग्रही लोगो ने समाज मे गहरी दरार और फूट डालने की दृष्टि से वर्ण व्यवस्था के सम्बन्ध मे भ्रान्तिया फैलाना प्रारम्भ कर दिया है। आर्यो की गुण कर्म-स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था या वैज्ञानिक श्रम विभाजन कई दृष्टि से समाजोपयोगी बनी हुई है। आचार्य मनु महाराज ने वैदिक परम्परा के आधार पर ही इसे सस्थापित कर समाज को एक सूत्र म बाध कर बहुत ही सुन्दर प्रयास किया है।

मनु की वर्ण व्यवस्था का आधार यजुर्वेद का यह प्रसिद्ध मत्र है

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य कृत ।
उरू तदस्य यद्वैश्य पदभ्या शूद्रो अजायत ।।

अर्थात आलकारिक रूप से समाज का मुख ब्राह्मण बाहु क्षत्रिय उदर (पेट) वैश्य तथा पैर शूद्र के तुल्य है। प्रत्यक समाज मे शिक्षक (ब्राह्मण) रक्षक (क्षत्रिय) पालक (वैश्य) और सेवक (शूद्र) अनिवार्यत होते है। प्रत्येक विज्ञान की अपनी अपनी शब्दावली होती है। वैदिक विज्ञान मे समाज व्यवस्था मे इन्ही को ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र कहा है वद आदि-काव्य है और यह उस पुरातन पुरुष (परमात्मा) का अमर काव्य है जो न तो कभी जजरित होता है और न कभी पुराना ही पडता है। सनातन काल से सभी विद्वानो की सम्मति स यह चार घटक अनिवार्य माने गये है। यहा एक महत्वपूर्ण तत्व का उल्लेख कर दना [illegible] है। वद म प्रयुक्त सभी शब्द यागिक है रूढ नही। वेद मत्रो की व्याख्या करते समय हम प्राय रूढ एव लौकिक शब्दावलियो के अथ लगाने लगते हे इस कारण वेद मत्रो की अथ भ्रष्ट होने लगती है। इस ही वर्ण व्यवस्था कहते है। वर्ण शब्द वृञ वरण धातु से बना हे जिसका अर्थ चुनना वरण करना स्वीकार करना हे। वर्ण का अर्थ रग भी होता है।

समाज म ज्ञान का प्रतिनिधि होने स ब्राह्मण मुख बल पराक्रम के कारण क्षत्रिय को बाहू की उपमा प्रदान की गई है। खाद्यान्न उत्पन्न कर पशु पालन व समाज मे इनका यथावत वितरण करने के कारण वैश्य को पेट कहा गया है। अन्त मे जो इनमे से किसी भी गुण या योग्यता को धारण नही कर पाता वह शूद्र कोटि अथात पैरवत कहा गया है। यह चारो घटक या तत्व समाज व्यवस्था या वर्ण व्यवस्था के अनिवार्य तत्व हैं इनमे न कोई छोटा या न बडा। अर्थात समाज के प्रत्येक घटक से उसकी योग्यता क्षमता फिर वह चाहे बौद्धिक आर्थिक अथवा शारीरिक हो के अनुसार कार्य लेकर समाज को विकासोन्मुख करना ही वैदिक वर्ण व्यवस्था है। समाज के कार्य मे सबको भागीदार बनना ही वर्ण व्यवस्था है।

सम्प्रति बहु चर्चित मनुस्मृति वदानुकूल सिद्धान्तो पर ही है। यह मनुस्मृति परत प्रमाण ग्रथ है। चूकि यह एक मानव (अल्पज्ञ) की रचना है इस कारण यह निभ्रान्त नहीं है इसीलिए इसे परता प्रमाण ग्रथ माना गया है। यह ग्रथ मानव समाज की आदि रचना काल से एक महान समाज व्यवस्था का निर्देशित करने वाला वैज्ञानिक ग्रथ है यह सर्व विदित है कि समाज के तीन प्रबल शत्रु है – अज्ञान अन्याय और अभाव। अज्ञान को दूर करने का दायित्व लेने वाला ब्राह्मण अपनी शक्ति पौरुष एव क्षमता से अन्याय को समाप्त कर सामाजिक न्याय प्रदान करने वला क्षत्रिय। कृषि कार्य पशुपालन व्यापार कल कारखानो द्वारा आवश्यक और समाजोपयोगी वस्तुए तैयार करने वाला एव कला कौशल वाणिज्य चातुर्य से अभाव दूर करने वाला वैश्य कहाता है। जो पढने हेतु पर्याप्त अवसर तथा साधन प्रदान करने के बाद भी अपना बौद्धिक विकास न कर सक अथात शारीरिक बल पौरुष से रहित और व्यापार आदि कला कौशल से अक्षम अयोग्य हो जाय वह क्षुद्र (शूद्र) कोटि मे मान लिया जाता है। इस प्रकार समाज मे सबसे उनकी बौद्धिकता पौरुषता तथा वाणिज्य चातुर्य एव शारीरिक सेवा द्वारा उपयोग लिया जाता है। यहा स्मरण रखने योग्य यह सिद्धान्त अथवा प्रश्न योग्यता क्षमता तथा सामर्थ्य अथवा दूसरे शब्दो मे गुण कर्म तथा स्वभाव (रूचि) का है। इन सबका सम्बन्ध जन्म से बिल्कुल नही है। इसीलिए मनु महाराज ने ठीक ही कहा है–जन्मना जायते शूद्र सस्काराय द्विज उच्यते। अर्थात मनुष्य मात्र जन्म से शूद्र उत्पन्न होता है किन्तु सस्कारो के द्वारा उसे द्विज अर्थात समाजोपयोगी बनाया जाता है। इसमे जन्मना जाति व्यवस्था की तनिक सी भी गध नही है।

समाज के नियम के अनुसार परिवतन शील होता है मध्ययुग म इस कर्मणा वर्ण व्यवस्था का स्थान जन्म से या प्रथा के रूप मे ले लिया गया तो ये ढेर सारी सामाजिक समस्याये उत्पन्न हो गई। व्यक्ति को उच्चतम योग्यता का समाजोन्मुख कार्यो म लगाना उनकी योग्यता से समाज को लाभ पहुचाना ही वर्ण व्यवस्था हे इसका जन्म से कोई सम्बन्ध नही। कर्मणा सिद्धान्तानुसार श्रम विभाजन द्वारा शोषण और शोषित का यह सामाजिक कलक धोया जा सकता है। यही कारण है कि मनुस्मृति समाज की सम्पूर्ण व्यवस्था को परिभाषित करने वाला एक अमूल्य एव महान ग्रथ है। दुर्भाग्य से इस व्यवस्था की जो आलोचना की जा रही है वह मनु के मिलावटी स्वरूप को व्यवहार मे अपनाकर की जा रही है तथा यथार्थ को गौण कर दिया गया। इसी कारण यह सारा ऊहापोह मचा हुआ है। इसी प्रक्षिप्त मनुस्मृति पर ही मनुवादी कहकर तरह तरह के आरोप लगाये जा रहे हैं।

कुछ अर्द्ध परिपक्व मानसिकता ने शूद्र वर्ण को लेकर एक बावेला मचा रखा है। इस बावेला के आधार पर राजनैतिक स्वार्थो की पूर्तियो के सोपान तैयार किये जा रहे हैं। जबकि यह सब समाज को दिग्भ्रमित करने जैसा है इस समय हम यहा आधुनकि शब्दावली मे वैदिक वर्ण व्यवस्था की चर्चा प्रस्तुत कर रहे है। उच्चस्तरीय परिक्षाए उत्तीर्ण करने के पश्चात जो उपाधिया या प्रमाण पत्र दिये जाते हैं। उन्हे वर्ण प्रमाण पत्र कहा जाये तो अन्योक्ति नही होगी। सामान्यत प्रशिक्षण जो कि स्नातक अथवा स्नातकोत्तर के बाद होता है उसे मौलिक रूप से चार विभागो मे विभक्त किया जा सकता है। प्रथम शिक्षक प्रशिक्षण द्वितीय प्रशासनिक एव न्यायिक तृतीय व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा चतुर्थ यात्रिक तथा तकनीकी प्रशिक्षण। इन उपर्युक्त चारो प्रशिक्षणो की सक्षिप्त व्याख्या इस प्रकार हो सकती है। शिक्षक प्रशिक्षण का कार्य शिक्षा उपदेश देना व्यावसायिक तथा प्रशासनिक का कार्य राज्य व्यवस्था तृतीय का कार्य प्रबन्धन व्यवस्थापन तथा व्यवसाय आदि करना और अन्य उत्पादन निर्माण कार्य सामान्य सूई या कील से लेकर आकाश यान निर्माण भवन निर्माण तटबन्ध निर्माण आभूषण निर्माण अस्त्र शास्त्र निर्माण चीनी वस्त्र आदि निर्माण सम्पूर्ण निर्माण कार्य है। यदि इन चारो प्रखडो मे से एक को भी निकाल दिया जाय या तिरस्कृत कर उपेक्षित कर दिया जाये तो समाज का ढाचा भरभरा कर नीचे गिर पडेगा। अथात प्रत्येक घटक युवा होने पर ज्ञान प्रशिक्षण के आधार पर जिस कार्य का वरण करता है वह उसी वर्ण का हो जाता है। वैदिक भाषा मे क्रमश शिक्षक को ब्राह्मण व्यायिक प्रशासनिक को क्षत्रिय व्याव–सायिक को वैश्य तथा औद्योगिक को शूद्र नामक सज्ञा से उद्‌बोधित किया जाता है। इसमे क्या आपत्तिजनक है ?

इतना ही नहीं प्रत्येक वर्ण मे भी चार श्रेणिया स्वीकार की गइ है। उदाहरणार्थ–प्रथम श्रेणी मे अधिकारी द्वितीय श्रेणी मे उनके सहयोगी अधिकारी (निरीक्षक उपनिरीक्षक प्रधानाचार्य व्याख्याता) तृतीय श्रेणी–सहायक अध्यापक लिपिक वर्ग तथा चौथी श्रेणी मे अनुचर सेवक भृत्य (पिउन) आदि। इस प्रकार चाहे वैदिक शब्दावली क्यो न बदल गई हो कर्म विज्ञान के आधार पर समाज के किसी भी घटक का किसी भी स्थिति मे न तो छोडा जा सकता है और न उपेक्षा ही।

जहा तक वर्ण व्यवस्था की आलोचना का प्रश्न है इस सम्बन्ध में इतना अवश्य ही कहा जायेगा कि विगत कुछ शताब्दियो से ब्राह्मणो ने जात्याभिमान के नश मे समाज के कुछ समुदायो को मानवोचित अधिकारो से वचित कर रखा था। इन्ही शोषित दलित तथा उपेक्षित लोगो के क्रोध के आवेश को अब रोका नही जा सकता। वह क्रोध अब इतना अधिक उग्र बन चुका है कि उनके सामने चाहे हम वर्ण व्यवस्था को जन्म से नहीं कर्मानुसार कह कर उनका मन बहलाना भी चाहे जो उन्हे बहलाया फुसलाया नहीं जा सकता। कतिपय जात्याभिमानियो के पापो के कारण पूरा समाज शापित हो चुका है और वर्ण व्यवस्था की चूले अब हिल चुकी हैं। यही कारण है कि महामानव मनु द्वारा रचित समाज व्यवस्था एव सामाजिक न्याय प्रधान ग्रथ मनुस्मृति को स्थान स्थान पर अपमानित किया जा रहा है तथा मनुवादी समाज मे रहने वालो को पानी पी पी कर कोसा जा रहा है। सवर्णो के विरुद्ध अकारण विद्रोह फैलाया जा रहा है।

आज आवश्यकता है एक महान उद्घोष की। वह महान उद्घोष है – मनुर्भव। हम सर्वप्रथम इस हाड मास के पुतले को 'मनुष्य' माने। उसे मनुष्य मान कर उसके साथ मानवोचित व्यवहार करे। उसे मानवाधिकार का वह बोध कराये

शेष पृष्ठ ६ पर

आचार्य मनु की वर्ण व्यवस्था : वैज्ञानिक श्रम विभाजन

पृष्ठ ८ का शेष

जिसे चारों वेदों में प्रतिपादित किया गया है। वर्ण-विद्वेष को धूर्त एव वाचाल राजनीतिज्ञों ने फैलाया है। वैदिक वर्ण व्यवस्था मे न तो शोषण-शोषित को स्थान है और न मनुष्य को मानवोचित अधिकारों से वचित करने का प्रावधान है। राष्ट्रसघ तो अभी अभी मानवोचित अधिकारों की चर्चा करने लगा है किन्तु आज से डेढ़ अरब वर्ष पूर्व ही वेद ने मानवोचित अधिकारों की चर्चा कर मनुष्य को मनुष्य बनने का पवित्र उपदेश दिया है। वेद के उपदेश में लिग-भेद, वर्ण-भेद रक्त भेद, राष्ट्र भेद आदि सकुचित बातो की चर्चा है ही नहीं। वहा तो विश्व कुटुम्ब की कल्पना कर सभी मनुष्यों को अपने बृहद परिवार का सदस्य बनाकर उसे ईश्वर प्रभु कहा गया है। यहा ध्यान रखने योग्य बात है कि स्व० डॉ अम्बेडकर ने भी वैदिक वर्ण-व्यवस्था को कर्माधारित होने के कारण उसको बहुत प्रशसा की है। वे इस व्यवस्था के प्रशसक थे।

आज विश्व के सभी बुद्धिजीवी एक स्वर से इस सत्य को स्वीकार कर रहे हैं कि मनु की वर्ण-व्यवस्था से असहमति व्यक्त नहीं की जा सकती। मनु ससार के लिए सबसे उत्तम एव सब से प्रथम बढ़िया सामाजिक व्यवस्था देने वाले है। इसीलिए मनुमहाराज को महामानव या महापुरुष कहा जाता है। किसी ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य या शूद्र के घर जन्म लेने से कोई सीधा विद्वान सेना नायक व्यापार-निष्णात या सफल सेवक नहीं हो जाता। वर्ण का निर्णय तो शिक्षा समाप्ति के पश्चात् समावर्तन सस्कार के समय गुरुकुल किया करते थे। किन्तु आज तो सबसे बडी विडम्बना यह है कि कुछ जन्मन्य जात्याभिमानी चमडे के प्रसिद्ध व्यापारी घोषित होने के बाद भी अपने आपको ब्राह्मण कहलाने का दम्भ करते हैं। यह कितनी घृणास्पद बात है कि आरक्षण के लोभी शिक्षक अध्यापन का पवित्र कार्य करने के पश्चात् भी अपने को दलित पिछडा वर्ग अथवा शूद्र कहलवाना पसन्द करते हैं। ऐसे ही अस्वाभिमानी कथित ब्राह्मणो के कारण आज समाज में विघटन के कीटाणु बहुत ही तेजी से फैलते जा रहे हैं। पूर्व प्रधानमत्री वी०पी०सिह के कार्यकाल में देश ही आग में जलने लगा था और देश में जातिवाद एव वर्णवाद उभरा था।

कुछ न्यायविदों का कथन है कि देश के विद्वान मिलकर प्रक्षिप्त-मनुस्मृति के विरुद्ध आन्दोलन करें। इसके पूर्व शुद्ध मनुस्मृति का आकलन कर लेना बहुत आवश्यक है। यहा यह भी याद रखना है कि हमारे उच्च शिक्षा-सस्थानों में आज भी सायण और महीधर के वेदभाष्यों को पढ़ाया जा रहा है। इसका यह दुष्परिणाम देखने में आता है कि कुछ विद्वान अभी भी स्त्रियों तथा शूद्रों को वेदाध्ययन के अधिकार को न मानते हुए उनका घोर अपमान तक करते दिखाई देते हैं। कुछ शकराचार्यों ने जब स्त्रियों को वेदाध्ययन के प्रति अनाधिकारी बताया तो उन्हें उनके ही श्रोताओ में से सुसस्कारी एव सुशिक्षित स्त्रियों के क्रोध का सामना करना पडा और वे उन विदुषी महिलाओं के सामने मैदान छोड़कर भाग खडे हुए। क्या शकराचार्यों को यह सब शोभा देता है।

यह भी कुछ कम आश्चर्य की बात नहीं है कि यदि मनु महाराज द्वारा प्रस्थापित वेदोक्त वर्ण व्यवस्था को जब जब साधारण लोगों के सम्मुख रखा जाएगा तब तब [illegible] कथित ब्राह्मण घराना ही [illegible] है। [illegible] यह भी निर्विवाद सत्य है कि जो व्यक्ति सत्य [illegible] विशुद्ध मनुस्मृति की वर्ण-व्यवस्था पर विचार करेगा वह उसका विरोध बिल्कुल भी नहीं करेगा। कहना न होगा कि ऐसे उच्च गुण वाले व्यक्ति किसी भी सम्प्रदाय मत अथवा पथ में अवश्य होगें जो मनुस्मृति द्वारा वर्णित मानवाधिकार के सिद्धान्त पर आधारित वर्ण व्यवस्था को बिना किसी सकोच के अवश्य ही स्वीकार करेगे।

अन्त मे हम यह भी कहना चाहेंगे कि 'शूद्र भी हमारी वर्ण व्यवस्था का एक अनिवार्य अग है। आज शूद्र शब्द का जो घृणित एव अपमानपूर्ण अर्थ लगाकर समाज में अलगाववादी तत्वों को प्रोत्साहन देते हैं वे जानबूझ कर बड़ा भारी अपराध कर रहे हैं इन विरोध कर्त्ताओं को जब मनुस्मृति के प्रक्षिप्त होने की तथा आत्मस्वमानी कथित ब्राह्मणों का स्वार्थपूर्ण कार्य बताया जाता है जब वे इस सत्य को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होते। हमारे दीर्घ कालीन अनुभव से इस सम्बन्ध मे यही कहा जा सकता है कि ऐसे हठवादी अपने क्षणिक स्वार्थों के कारण इस सत्य को स्वीकार नहीं करते। क्योकि उनके सम्मुख आरक्षण के द्वारा मिलने वाली सुविधायें छिन जाने का भय सताता है। फलत समाज हित तथा शुभ चिन्तको के सामने भी यह प्रश्न है कि इस सत्य को इन 'मनुवादी-विरोधियों' को कैसे समझाया जाये। इन्हीं मनुवादियो के विरोध में कुछ सगठनो ने उत्तर प्रदेश में सामाजिक घृणा फैलाने के लिए 'तिलक तराजू और तलवार इनको मारो जूते चार' अर्थात् तिलक (ब्राह्मण) तराजू (वैश्य या बनिया) तथा तलवार (क्षत्रिय) ये सभी मनुवादी होने के कारण अपमान करने योग्य हैं। तार्किक रूप से एक-एक जूता तो ब्राह्मण क्षत्रिय तथा वैश्य को मारा जायेगा और चौथा जूता किसे लगाया जायेगा? इसका उत्तर सम्भवत इन पक्तियो को रचने वाला ही बतायेगा कि चौथा जूता उसे ही लगाया जाये ऐसे नादान अथवा भ्रमित लोग यह नहीं जानते हैं कि सामाजिक बुराईया जूते मारने से कभी भी दूर नही होती। समाज सुधार के लिए राजा राम मोहन राय प० विद्या सागर केशव चन्द्र सेन महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वामी विवेकानन्द अरविन्द घोष महात्मा गाधी तथा ज्योतिबा फुले एव डा० अम्बेडकर जैसे त्यागी मनीषियो की आवश्यकता होती है। सिर पर जूता मारने की अपेक्षा सिर के अन्दर विद्यमान बुद्धि ज्ञान और विचार परिवर्तन होने से सामाजिक सुधार होता है। केवल आरक्षण का लालीपाप दिखाने से कुर्सी तो प्राप्त की जा सकती है किन्तु बौद्धिक शक्ति नहीं प्राप्त की जा सकती। इस प्रकार के उत्तेजक नारे शोषित दलित तथा उपेक्षित लोगों को क्रोधित कर सकते हैं किन्तु सामाजिक स्तर नहीं सुधार सकते। इन्हीं बाहरी एव उत्तेजक बातो के कारण समाज मे विघटन होने लगता है वर्ग भेद उभरता है तथा युवा-वर्ग आग लगा कर आत्महत्याये करने लग जाते हैं। सामाजिक-हित की दृष्टि से इस प्रकार के विघटनकारी विचार उचित नहीं कहे जा सकते।

अन्तत आज मनु द्वारा प्रतिपादित तथा मनुस्मृति में उल्लिखित वर्ण-व्यवस्था ही वैज्ञानिक एव सर्वोचित है। इस समय प्रक्षिप्त मनुस्मृति का बहिष्कार तथा विशुद्ध मनुस्मृति के प्रचार अध्ययन अध्यापन प्रचार-प्रसारण की बहुत आवश्यकता है। जिस प्रकार भारतीय सविधान आदरणीय है उसी प्रकार वेद उपनिषद दर्शन गीता तथा सत्यार्थ प्रकाश भी समादरणीय है। इनके पठन-पाठन तथा प्रचार प्रसार की नितान्त आवश्यकता है।

मनुदेव अभय सुकिरण
अ/१३, सुदामा नगर इन्दौर (म०प्र०)

हमारे सत्ताधारियो ने अपने अंग्रेजी प्रेम से सारे देश को ही गूगा बना कर रख दिया

पृष्ठ ६ का शेष

अपनी वस्तुए बाहर से आयात करके सीधे बेचने मे सुविधा होगी। यदि रोमन लिपि मे भारतीय भाषाए लिखी जाने लगेंगी तो उन्हे अपने व्यापार मे आसानी होगी भारतीय उद्योग को मटियामेट करने और भारतवासियों के ठगने के लिए विज्ञापन मे सुविधा होने के साथ साथ अग्रेजियत की मानसिकता को स्थायित्व प्रदान किया जा सकेगा और इस प्रकार भारत की आत्मा को भी आसानी से गुलाम बना सकेगे।

जिस प्रकार भारतीय शिक्षा का सेकुलरीकरण अग्रेजी का बोलबाला और पब्लिक स्कूलो का प्रसार हो रहा है उसके कारण हिन्दी और भारतीय भाषाओ के विरुद्ध चल और चलाए जा रहे कुचक्र और तेज होगे अभी तो हम केवल "क से कार्तिके और "ग से "गणेश के स्थान पर "क" से "कबूतर" और "ग से गधा पढा रहे हैं फिर वह दिन भी दूर नहीं होगा जब "क" से "कोकाकोला और प से "पेप्सी पढाया जाने लगेगा। तब यह कोई बडी बात नहीं होगी कि मनोवैज्ञानिको और शिक्षाशास्त्रियो की ऐसी टोली बना दी जाएगी या बन जाएगी जो यह सिद्ध करेगी कि इस प्रकार की पढाई से ये कम्पनिया अपना प्रचार करने मे नहीं अपितु इस शिक्षा पद्धति से मानव कल्याण का महान कार्य करने मे जुटी हुई है

यह कहा गया है कि निज भाषा की उन्नति सभी विकास का मूल है इसलिए देश के जिन लोगो मे अभी कुछ भी स्वाभिमान शेष है उन्हे हिन्दी और दूसरी भारतीय भाषाओ के विकास के लिए आगे आना चाहिए उन्हे आगे आना ही होगा। अग्रेजी के प्रति मोह रखने वालो को यह समझने और समझाने की आवश्यकता है कि वे चाहे कितना भी कुचक्र और षडयत्र रचे करें हिन्दी और राष्ट्रीय भाषाओ को मात नहीं दे सकते मातृभाषा का कोई विकल्प न कभी था और न आज है

कोई भी देश अपनी भाषा मे बोलकर और उसके माध्यम से कार्य करके ही विकास के शिखर पर पहुच सकता है। प्रश्न केवल हिन्दी भाषा का नहीं राष्ट्र की भाषा भावना और भौतिक समृद्धि का भी है। यदि देशवासी अपने आप से ही कट जाएगे यदि उनके अपने और अपनो के बीच ही सवाद नहीं हो सकेगा तो विकास किसका कैसा और कौन करेगा? यह कार्य केवल भाषा या हिन्दी दिवस मनाने का कर्मकाण्ड करके नहीं किया जा सकता। ♣

समाज सेवा का महत्व राजनीति से अधिक : सत्य नारायण बंसल

नयी दिल्ली १६ सितम्बर । समाज सेवा का स्थान जीवन मे सबसे ऊचा है। दीन दुखियो का जीवन सवारकर उन्हें उन्नति की ओर अग्रसर करने के प्रयास मे सलग्न लोग वस्तुत राजनेता से अधिक सम्मान के अधिकारी है। सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री सत्य नारायण बसल ने ये शब्द आज राजधानी के हृदय स्थल दरियागज मे स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य अनाथालय के परिसर में रानी दत्ता आर्य विद्यालय के स्थापना दिवस समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहे।

चित्र मे अधिष्ठाता श्री रघुवशी दिल्ली सरकार के परिवहन मत्री श्री राजेन्द्र गुप्त सस्था के प्रधान श्री वीरेन्द्र प्रताप चौधरी आदि

श्री बसल ने कहा कि आज कल सारा सम्मान राजनीति मे चला गया है लेकिन वास्तविक सम्मान के अधिकारी वे हैं जो समाज की नि स्वार्थ सेवा करते हैं। इनका सम्मान राजनेताओ से कम नहीं होना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने समाज सेवा के क्षेत्र मे जो स्वप्न देखे थे – राष्ट्र भाषा गौ रक्षा नशाबन्दी और नारी शिक्षा का स्वप्न उसे मूर्त रूप प्रदान किये बिना हम सस्कारयुक्त पीढी का निर्माण नहीं कर सकते।

श्री बसल ने जो राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ के प्रान्तीय सचालक हैं भारी हर्ष ध्वनि के बीच कहा कि सघ पूरी शक्ति से महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने में जुटा है। इसके द्वारा सचालित २१ हजार सेवा प्रकल्प और १२ हजार स्कूल इस दिशा मे एक विनम्र प्रयास है।

लगभग एक हजार निराश्रित बालक–बालिकाओ को स्वाबलम्बी बनाने के प्रयास मे जुटे श्री वीरेश प्रताप चौधरी को आशीर्वाद देते हुए कहा कि वह सत्ता के पद पर आसीन किसी मत्री से कम सम्मान के अधिकारी नहीं।

दिल्ली सरकार के परिवहन व आबकारी मत्री श्री राजेन्द्र गुप्ता ने समारोह मे उपस्थित बच्चो से आत्मीय सवाद की शैली मे बात की तथा उन्हे अपनी दृष्टि का विकास कर प्रगतिशील नागरिक बनाने की प्रेरणा दी। उन्होने कहा कि आर्य अनाथालय और देसराज परिसर मे सचालित सस्थाये आर्य समाज की रचनात्मक सेवा का श्रेष्ठ उदाहरण है।

श्री वीरेश प्रताप चौधरी ने बताया कि गत वर्ष स्थापित रानी दत्ता आर्य विद्यालय मे बारहवीं कक्षा तक शिक्षा प्रदान करने की योजना है। उन्होने उन समाज सेवियो को श्रद्धा से याद किया जिन्होंने अपना पूरा जीवन और सम्पत्ति आर्य अनाथालय से जुडी सस्थाओ के विकास मे होम कर दी। इस अवसर पर आर्य बाल गृह व आर्य कन्या सदन का वार्षिकोत्सव भी मनाया गया।

श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री जी ने बताया कि इन सस्थाओ से निकले हजारो बच्चे आज देश के सफल नागरिक हैं। इनमे डाक्टर इन्जीनियर और न्यायिक मजिस्ट्रेट हैं।

'सारे जहा मे हिन्द है सारा वतन हमारा विद्यालय की बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत इस कव्वाली को उपस्थित जनो की भरपूर सराहना मिली। स्वामी उत्तम प्रकाश जी ने नयी पीढी को शेर जैसा साहसी बनने की प्रेरणा दी। श्री ज्ञानेश चौधरी ने समागतों का आभार व्यक्त किया। रानी दत्ता आर्य विद्यालय की मुख्याध्यापिका श्रीमती इन्दु गोयल और आर्य अनाथालय के अधिष्ठाता श्री हमीर सिह रघुवशी ने आरम्भ मे सस्था की प्रगति का विवरण दिया। आर्य समाजी नेता श्री सूर्य देव चन्द्रवती चौधरी स्मारक ट्रस्ट के प्रधान श्री सुशील प्रकाश चौधरी श्री धर्मपाल गुप्ता श्रीमती शारदा नारग और श्रीमती वीणा मल्होत्रा सहित राजधानी के प्रमुख समाज सेवी इस अवसर पर उपस्थित थे।

हमीर सिह रघुवशी
अधिष्ठाता–आर्य अनाथालय

यदि आप ठीक मार्ग पर हैं तो समालोचनाओ की चिन्ता न कीजिए।

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक गुरुकुल करतारपुर का वार्षिक उत्सव

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक गुरुकुल करतारपुर का वार्षिक उत्सव (धार्मिक मेला) इस वर्ष ७ अक्टूबर ६६ से १३ अक्टूबर ६६ तक बडे समारोह पूर्वक हो रहा है। सामवेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा डा० महावीर रीडर संस्कृत विभाग गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार होगें।

जिसमे कार्यक्रम अनुसार सामवेद पारायण यज्ञ प्रात ६ ३० बजे से ८ ३० बजे तक और साय ४ बजे से ६ बजे तक यज्ञ प्रवचन एव मधुर सगीत होगें। वेद पाठ गुरुकुल के ब्रह्मचारी करेगे। रात्री को भी ८ बजे से ६ बजे तक विभिन्न विद्वानो के प्रवचन व मधुर सगीत होगे।

आप सभी आर्य बन्धु व माताए एव बहने सादर आमन्त्रित हैं। उत्सव मे रहने व खाने का पूर्ण प्रबन्ध श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर की ओर से होगा।

खोजवां में आर्य वीर दल शाखा का पुनर्गठन

आर्य समाज खोजवा मे क्षेत्रीय युवाओ की एक बैठक दि० ८ ६ ६६ को श्री सत्यनारायण अग्रवाल की अध्यक्षता मे हुई जिसमे आर्य वीर दल सगठन का गठन हुआ। तथा इस स्थानीय शाखा का नाम प० श्याम कष्ण वर्मा शाखा रखा गया। बैठक के आरम्भ में जिला सभा के मत्री श्री प्रमोद आर्य ने आर्य वीर दल सगठन के उद्देश्य एव इसकी प्रासगिकता पर विचार व्यक्त किया। जिला सभा के प्रधान श्री अवध बिहारी खन्ना खोजवा आर्य समाज के मत्री डा० ओम प्रकाश शास्त्री ने सगठन सचालन हेतु विभिन्न बिन्दुओ पर प्रकाश डाला।

इस नवगठित सगठन के निम्न पदाधिकारी मनोनीत किये गये। शाखा नायक (अध्यक्ष) श्री मुरारी लाल गुप्ता उपशाखा नायक श्री उदय आर्य मत्री श्री सत्येन्द्र आर्य तथा कोषाध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर सिह। अन्त मे अध्यक्षीय उद्बोधन के पश्चात सभा का समापन हुआ।

प्रमोद आर्य मंत्री
आर्योप्रतिनिधि सभा वाराणसी

विद्वान की आवश्यकता

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के तत्वावधान में सचालित सत्यार्थ प्रकाश की रचना स्थली नवलखा महल के लिए ऋषि मिशन के प्रति समर्पित सस्कार प्रवचनादि मे निष्णात स्वस्थ एक विद्वान की आवश्यकता है जो नवलखा महल को महर्षि दयानन्द की विचारधारा सम्पूर्ण विश्व मे प्रचारित करने के एव सशक्त केन्द्र के रूप मे विकसित करने में सहायक हो सके। मासिक दक्षिणा रु० ३०००/ (अक्षरे तीन हजार रु०) व आवास व्यवस्था नि शुल्क होगी। वानप्रस्थी/सन्यासी को वरीयता।

इच्छुक सज्जन पूर्ण विवरण सहित निम्न पते पर पत्र व्यवहार/आवेदन करे।

अध्यक्ष श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल गुलाब बाग
उदयपुर–३१३००१

अमर शहीद लाला जगत नारायण बलिदान दिवस सम्पन्न

लुधियाना ८ सितम्बर अमर शहीद लाला जगत नारायण सस्थापक हिन्द समाचार पत्र समूह का बलिदान दिवस आर्य समाज एव वेद प्रचार मण्डल की ओर से आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) म बडी श्रद्धापूर्वक मनाया गया। समारोह के आरम्भ मे यज्ञ किया गया जो प० योगराज शास्त्री ने सम्पन्न कराया और समारोह की अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान श्री मतवाल चन्द आर्य ने की।

इस अवसर पर आर्य कालेज के प्रिसिपल श्री वी०के०मेहता पजाब एग्रो इण्डस्ट्रीज के चेयर मैन श्री राकेश पाण्डे विधायक अखिल भारतीय स्वतन्त्रता सेनानी शान्ति दल के उपप्रधान श्री मगल सेन वधवा आर्य समाज के महामत्री प० सुरेन्द्र कुमार शास्त्री सहित अनेको सस्थाओ के अधिकारियो तथा गणमान्य व्यक्तियो ने लाला जगत नारायण जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

जन्माष्टमी पर्व एवं शिक्षक दिवस

विश्वविद्यालय गुरुकुल कागडी हरिद्वार द्वारा आयोजित कृष्ण जन्माष्टमी पर्व एव शिक्षक दिवस पर कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप मे सम्बोधित करते हुए आर्य विद्या सभा के मत्री प० प्रकाशवीर विद्यालकार ने भगवान कष्ण और सर्वपल्ली डा० राधा कष्णन के जीवन से सीख लेकर अपने जीवन का सही मानव रूप मे प्रस्तत करने का आह्वान किया।

समारोह अध्यक्ष कुलपति डा० धर्मपाल जी ने अपने आर्शीवचन मे शिक्षको का आह्वान किया कि जिस प्रकार का उनका जीवन उनका व्यवहार उनका आचरण उनकी भाषा उनकी शिक्षा होगी उसी के अमुसार उनसे शिक्षित बच्चो का जीवन बनेगा। इसलिए शिक्षको को समय व स्थान को देखकर आचरण करने का आह्वान किया।

सर्वश्री आर्य नेता डा० रामेश्वर दयाल गुप्ता विश्वविद्यालय के आचार्य प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री तथा दिल्ली से पधारें न्यू फ्रीडममूवमेट के सयोजक श्री ओम पूर्ण स्वतन्त्र ने दोनो महापुरुषो के प्रेरक प्रसगो की चर्चा करते हुए उन सरीखे मानव बनने पर बल दिया।

आर्य विद्या सभा मत्री प्रो० प्रकाशवीर विद्यालकर को विद्यालय की ओर से सहायक मुख्याधिष्ठता महेन्द्रकुमार जी द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

इस अवसर पर गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के स्नातक २६ वर्षीय सेवाराम विद्यालय के वरिष्ठ अध्यापक प० महावीर जी को मत्री जी द्वारा स्मृति चिन्ह भेट किया गया। ♣

नेमदारगंज नवादा में वेदप्रचार

आर्य समाज मन्दिर नेमदारगज (नवादा) की ओर से वेदप्रचार सप्ताह रक्षा बन्धन से श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य मे २५ घरो मे हवन यज्ञ एव पारिवारिक सत्सङ्ग का आयोजन किया गया। यह सफल रहा सभी यजमान दम्पतियो ने जन्माष्टमी के उपलक्ष्य मे ५ कुण्डीय यज्ञशाला मे चौक बाजार मे यज्ञोपवित धारण करते हुए यज्ञ किया। इस कार्यक्रम से क्षेत्र मे आर्य समाज की दुन्दुभि बज उठी। युवा वक्ता श्री सजय कुमार सत्यार्थी के अथक प्रयास एव उद्बोधन को सर्वत्र सराहा गया। निकटवर्ती प्रमुख आर्य समाज रजौली एव अकबर पुर के पदाधिकारियो ने उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया। ♣

लुधियाना में वैदिक भाष्य प्रतियोगिता का आयोजन

लुधियाना ११ सितम्बर वेद प्रचार मण्डल की ओर से युवा वर्ग एव छात्रो मे गए भारतीय सस्कृति के प्रचार एव प्रसार के लिए आरम्भ किये अभियान के अर्न्तगत वैदिक भाषण प्रतियोगिता का ओयोजन किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री अर्जुन सिह उप महा प्रबन्धक (टैलिफोन करता) थे। समारोह के अध्यक्ष श्री रोशन लाल आर्य प्रधान आर्य युवक सभा पजाब ने अपने सम्बोधन मे मनुष्य जीवन के महत्व पर प्रकाश डाला। प्रतियोगिता मे सफल प्रतियोगियो को पुरस्कार वितरित कर उनका उत्साह वर्धन किया गया। प्रिसीपल के०के०रूद्रा ने इस अवसरपर बच्चो को वैदिक सस्कृति अपनाने पर बल दिया और मण्डल द्वारा किए जा प्रयासो की सराहना की। श्री बोधराज श्री बनारसी दास तुली ए अन्य गणमान्य व्यक्तियो ने समारोह मे भाग लिया मण्डल की ओर से छात्रो को पुरस्कार प्रदान किये गए। ♣

डाक विभाग का सराहनीय कार्य

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद के अनुरोध को मानते हुए डाक विभाग ने ४०००० अन्तर्देशीय पत्रो पर निम्न नारे छपवा दिए है

१ 'घर मे मातृभाषा दफ्तर मे राजभाषा और
२ 'हिन्दी राष्ट्र की एकता का माध्यम है।

परिषद ने डाक विभाग से यह भी निवेदन किया है कि 'हिन्दी का सम्मान देश का सम्मान नारा अन्तर्देशीय पत्रो और पोस्ट कार्डों पर छापे।

पाठको स अनुरोध है कि अन्य कार्यालय की सामग्री पर भी हिन्दी के प्रचार सम्बन्धी नारे लिखवाने/छपवाने का यत्न करे तथा अन्य प्रकार से भी इन नारो के प्रचार मे सहयोग दे।

जगन्नाथ
सयोजक राजभाषा कार्य
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद
एक्स०वाई० ६८ सरोजिनी नगर
नई दिल्ली ११००२३

वार्षिकोत्सव एवं यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

(सनवाडा। ४ सितम्बर) आर्य समाज सनवाड उदयपुर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित यजुर्वेद पारायण महायज्ञ आज सातवे दिन समापन समारोह के साथ सम्पन्न हो गया।

समारोह के अध्यक्ष लाल चन्द मित्तल व सरक्षक महाराज आर्यमुनि थे। विशिष्ट अतिथि डूगर सिह आर्य को श्री फल शाल एक अभिनन्दन पत्र व पाच सौ एक रुपया नकद देकर सम्मानित किया गया। यह सम्मान पुरस्कार उनकी ६१ वर्ष की निरन्तर आर्य समाज की सेवा के उपलक्ष्य मे दिया गया।

आर्य समाज सनवाड़ ने प्रतिवर्ष उपरोक्त पद्धति से विद्वान लेखक समाज सेवी आदि को सम्मानित करने का प्राक्धान बनाया है जिससे छिपी हुई प्रतिभाओ का भी सम्मान होने से दूसरो को भी आगे बढने की प्रेरणा मिले। ♣

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 29 9 96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/96
R N No 626/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No. U(C)93/96 Post in NDPSO on 26/27-9 1996

आर्य समाज निर्वाचन

आर्य समाज लल्लापुरा वाराणसी

प्रधान श्री राम गोपाल आर्य
मत्री श्री विजय कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष श्री सत्यप्रकाश आर्य

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजीपुर

प्रधान श्री राम प्रसाद अर्य
मत्री श्री राजनाथ सिह
कोषाध्यक्ष श्री नन्द किशोर सेठ

आर्य समाज वरगल

प्रधान श्री बजार वीर कुमार आर्य
मत्री श्री गोपी रेड्डी गोविन्द आर्य
कोषाध्यक्ष श्री लक्ष्मी नरसैय्या जी

आर्य समाज शाहपुरा भीलवाडा

प्रधान श्री मोहन लाल जी शास्त्री
मत्री श्री वशी लाल सोनी
कोषाध्यक्ष श्री सत्यपाल शर्मा

आर्य समाज जगाधरी वर्कशाप

प्रधान श्री दिलबाग राय मल्होत्रा
मत्री श्री केशव दास आर्य
कोषाध्यक्ष श्री अमृतलाल

आर्य समाज गान्धी नगर दिल्ली

प्रधान श्री महेन्द्र पाल वर्मा
मत्री श्री शिवशकर गुप्ता
कोषाध्यक्ष श्री ओकार सिह

आर्य समाज औरैया इटावा

प्रधान श्रीमती आशा आर्या
मत्री श्री प्रमोद कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष श्री तेज बहादुर आर्य

आर्य समाज मीरानपुर कटरा शाहजहापुर

प्रधान श्री सत्य प्रकाश आर्य
मत्री श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष श्री अशोक कुमार आर्य

आर्य समाज बल्केश्वर कमला नगर आगरा

प्रधान श्री रमेश चन्द्र आर्य
मत्री श्री एस०पी०कुमार
कोषाध्यक्ष श्री राम जी दास गुप्त

प्रभु हमारी बुद्धियों को श्रेष्ठ मार्ग पर चलाओ

आनन्दनिकेतन तथा मोती बाग दिल्ली में वेद प्रचार

योगीराज श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य पर आनन्द निकेतन तथा मोती बाग मे श्रीकृष्ण के जीवन तथा शिक्षाओ पर एक अति सुन्दर कथा यज्ञ का आयोजन किया गया।

यह कथा ३० अगस्त से ३ सितम्बर तक आचार्य चन्द्र शेखर द्वारा बहुत ही रोचक ढग से की गई। उन्होने गीता के श्लोक बहुत सुन्दर ढग से गाये और समझाये इस कारण उनका प्रवचन बहुत प्रभावपूर्ण रहा।

आनन्द निकेतन मे पाच दिनो तक लगातार आचार्य जी ने ज्ञानकी गगा बहाई और ४ तारीख को इस ज्ञान गगा की पूर्णाहुति आर्य समाज मोती बाग मे हुई। इस अवसर पर भजनोपदेशक ज्योति प्रसाद ने भी अपने सुन्दर भजनो द्वारा लोगो को प्रभावित किया । जनता ने इस कार्यक्रम को पसन्द किया तथा धर्म लाभ उठाया और आर्य समाज का प्रचार हुआ।

ऋषि मेला नवम्बर में

महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का बलिदान एक शताब्दी पूर्व दीपावली पर अजमेर मे हुआ था। प्रतिवर्ष इस अवसर पर परोपकारिणी सभा द्वारा आनासागर के तट पर स्थित ऋषि उद्यान मे ऋषि मेला समारोह का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर देश विदेश के आर्य जन बडी सख्या मे पधार कर महर्षि के प्रति अपनी श्रद्धान्जलि समर्पित करते हैं। इस वर्ष यह आयोजन शुक्र शनि रविवार १ २ ३ नवम्बर १९९६ को मनाया जा रहा है। जिसमे अनेक कार्यक्रम सम्पन्न होगे। धर्मप्रेमी जन बडी सख्या में भाग लेगे।

ईसाई युवती को वैदिक धर्म में दीक्षा

"काशी। आर्य उपप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आर्य समाज काशी बुलानाला के हाल मे दि० २६ ८ ९६ को आर्य समाज काशी के पुरोहित श्री रामदेव शास्त्री के पौरोहित्य में सुश्री मिनाक्षी सिह को यज्ञ एव मन्त्रोच्चार के साथ हिन्दू धर्म मे दीक्षित किया गया। तथा नया नामकरण 'सुश्री मिनाक्षी अग्रवाल हुआ।

तत्पश्चात नवदीक्षित युवती का श्री अनिल अग्रवाल पुत्र श्री अजनि कुमार अग्रवाल निवासी महामनापुरी कालोनी करौंदी वाराणसी के साथ पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार विवाह सस्कार सम्पन्न हुआ।

उक्त दोनो सस्कार समारोहो की अध्यक्षता कर रहे जिला सभा के प्रधान श्री अवधबिहारी खन्ना ने दीक्षित युवती का हिन्दू धर्म मे स्वागत किया तथा वर वधु एव दानो पक्षो के लोगो को सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ भेट किया । अन्त मे हर्षोल्लास के साथ शान्तिपाठ के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि वैद्य धर्मपाल जी स्वतन्त्रता सैनानी दिनाक ३० ९ ९६ से ६ १०-९६ तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ करा रहे हैं। इस महायज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती योगधाम आश्रम हरिद्वार होगे। श्री सुखदेव जी शास्त्री तथा बहिन सुभाषिणी आचार्या कन्या गुरुकुल खानपुर कला को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया। आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव जी बेधडक के मधुर भजन होगे। इनके अतिरिक्त अनेक सामाजिक धार्मिक एव राजनैतिक नेताओं को आमन्त्रित किया गया है जिनके पधारने की पूर्ण आशा है।

आप सबसे प्रार्थना है कि आप अपने परिवार एव इष्ट मित्रो सहित यज्ञ मे सम्मिलित होकर विद्वानो के उपदेशो से लाभ उठावे।

वैदिक शोध गोष्ठी सम्पन्न

श्रावण शुक्ला एकादशी रविवार स० २०५३ वि० को प्रभात आश्रम मेरठ मे पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज की सरक्षता एव डा० निरुपण जी विद्यालकार के सयोजकत्व में प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी वैदिक शोध गोष्ठी का आयोजन हुआ। विषय था वैदिक सहिताओं मे युग्म देवता"। विषय गम्भीर था किन्तु प्रबुद्ध श्रोताओ एव शोधपत्र वाचक मान्य विद्वानो की शका समाधान परम्परा ने वातावरण को पर्याप्त रोचक एव आकर्षक बना दिया। मान्य विद्वानो को ही नही अपितु सामान्य लोगो को भी गोष्ठी के विषय की सार्थकता का अनुभव हो रहा था। सभी ज्ञान सरिता में अवगहान कर प्रमुदित थे। अन्त मे गोष्ठी के सयोजक डा० निरुपण ने सभी विद्वानो एव श्रोताओ का आभार एव धन्यवाद अभिव्यक्त किया। शान्ति पाठ के पश्चात् गोष्ठी विसर्जित हो गयी। व्यवस्थापक प्र० कौस्तभ

वैदिक धर्म अपनाया

दि० १३ ८ ९६ को सईदा अतिमुन्निसा पिता का नाम सैयद महमूद जयनगर प्रथम ब्लाक बगलौर ।। मुस्लिम जाति की कन्या को शुद्ध करके उसका वैदिक नाम सपना रखा गया और उसका विवाह एक आर्य युवक मनोज कुमार सक्सेना न्यू रेलवे कोलानी कोटा ज० के साथ सम्पन्न कराया। उपरोक्त दोनो सस्कार आचार्य श्री करण सिह जी आर्य द्वारा सम्पन्न कराये गये। यह कार्य आर्य समाज रेलवे कालोनी रगपुर रोड कोटा के तत्वावधान में हुए।

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-2 से प्रकाशित

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

दूरभाष ३२७४७७१ ३२६०९८५ आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये वार्षिक शुल्क ५० रुपए एक प्रति १ रुपया

वर्ष ३५ अक ३४ दयानन्दाब्द १७२ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ सम्वत् २०५३ आश्वि० कृ० ९ ६ अक्टूबर १९९६

मानव जीवन के यथार्थ सत्य की मीमासा

श्राद्ध और तर्पण

यह श्राद्ध पक्ष है। इस में हिन्दू अपने पितरो का श्राद्ध करता है। श्राद्ध करना परमधर्म है किन्तु मृतकों का नहीं अपितु जीवितो का।

प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह अपने जीवित माता पिता, आचार्य तथा साधु सन्तो की तन मन, धन से श्रद्धा पूर्वक सेवा करता रहे।

माता पिता आचार्य तथा अतिथि ही देव कहलाते है। इन की हृदय से सेवा करना पुण्य का कार्य है। देवो की सेवा से परमात्मा भी प्रसन्न होते है। देवों द्वारा दिया गया आशीर्वाद कल्याण का हेतु है।

आर्य समाज जीवित माता पिता की सेवा करने को ही श्राद्ध मानता है। हिन्दू समाज में श्राद्ध और तर्पण के नाम पर जो विकृतिया उत्पन्न हुई उसका दुष्परिणाम जीवित माता-पिता का सच्चा श्राद्ध न कर मृतक पूर्वजो के नाम पर दूसरो को खिलाकर श्राद्ध और तर्पण का अवैदिक रूप धारण कर लिया।

वैदिक विचार धारा मे जीव किस योनि मे जाता है यह तो अनिर्णित है। महर्षि दयानन्द जी के सिद्धान्तानुसार मृतको का श्राद्ध न कर जीवित माता पिता और आचार्य की सेवा करके तृप्त करना यही तर्पण है और सेवा करना ही श्राद्ध है।

विदेशी षडयंत्रकारी, घूसखोर सत्ताधारी देश को खोखला कर रहे हैं।

समूचा राष्ट्र महाभारत काल की स्थिति के समीप

-प० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव

महाभारत काल मे भारत की जो स्थिति थी आज कई प्रकार के उथल पुथल के पश्चात भारत पुन उसी स्थिति पर पहुचा है।

पाडव और कौरव दोनो युद्ध करने कुरुक्षेत्र पहुच चुके थे एक ओर पाडव थे दूसरी ओर कौरव कुल के बडे पुत्र होने के नाते युधिष्ठिर हस्तिनापुर की गद्दी पाने के अधिकारी थे।

धृतराष्ट्र अन्धे थे और भौतिक आखो से भी अन्धे थे और पुत्र दुर्योधन के प्रति उनका जो वात्सल्य था उसी ने उन्हे अन्धा बनाया हुआ था।

कुरुक्षेत्र एक रणभूमि मे परिवर्तित हो गया। युद्ध में सभी बडे-बडे योद्धा मारे गये। जैसे भीष्म पितामह कर्ण अभिमन्यु इत्यादि।

अन्धे धृतराष्ट्र के अन्धेपन ने भारत को किस हालत तक पहुचा दिया था यह सर्वविदित है विस्तार से कहने की आवश्यकता नहीं।

आज का भारत भी लगभग उसी दशा को पहुच चुका है अन्तर सिर्फ इतना है कि महाभारत काल मे धृतराष्ट्र अन्धा था आज के भारत मे वह सभी लोग अन्धे हो चुके हैं जिन्हे भारत की प्रजा कहा जाता है।

कहते तो यह हैं कि हमारा सविधान देश के हित के लिए बनाया गया है परन्तु वस्तुस्थिति इसके विपरीत है।

भारत एक राष्ट्र है जैसा कि अन्य राष्ट्र भी है। प्रजातत्र के नाम पर इस देश मे भी चुनाव होते हैं चुनाव मे जीतने वाले अपने राष्ट्र के हितकारक नहीं अपितु अपनी जाति अपना मजहब अपना प्रदेश अपनी भाषा अपना निजी स्वार्थ इस प्रकार से अलग-अलग बट चुके हैं। वे ही चुनाव लडते हैं और वे ही सरकार बनाते है।

प्राय देखा गया है कि चुनावी प्रक्रिया मे विदेशी धन का भी उपयोग होता है।

महाभारत काल मे जो महायुद्ध हुआ उसमे न सिर्फ योद्धा मरे बल्कि मरणास्त्रो के उपयोग से अधिक सख्या मे साधारण लोग भी मरे।

महाभारत काल मे गधार देश से आये हुए शकुनी के क्रिया कलापो से राष्ट्र को जो क्षति पहुची वह हम सबको विदित ही है।

आज भी भारतवासियो का जो सहार हो रहा है उससे कोई सबक नहीं सीखा जा रहा बल्कि विदेशी षडयत्रकारी घूसखोर सत्ताधारी इस देश को जो हानि पहुचा रहे है वह कल्पनातीत है।

सम्पादक- डा. सच्चिदानन्द शास्त्री

सर्व हितकारी–सन्देश

जीवात्माओं के विषय में वैदिक विचार

जीवात्माए शाश्वत और चेतन है। इनकी सख्या ईश्वर के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता। किन्तु ये अनादिकाल से जितनी हैं उतनी ही अनन्तकाल तक रहेगी इनमे एक भी न्यूनाधिक नहीं होगी। क्योकि इन्हे कोई बना और मिटा नहीं सकता।

जीवात्माए निराकार एकदेशी अल्पज्ञ और अल्प सामर्थ्ययुक्त हैं। शास्त्रकारो ने इन्हे कर्म करने मे स्वतन्त्र और कृतकर्मों का फल (ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अन्तगत – मनुष्य पशु पक्षी कीट पतग की योनियो के माध्यम से) भोगने मे परतन्त्र माना है। इनका कोई परिवार नही होता और न ये बाल युवा वृद्ध अथवा नर मादा होती है।

मानव तन धारी जीवात्माए यदि पुरुषार्थ करे तो आवागमन के चक्र से मुक्त हो सकती हैं। इनके बन्धन का मुख्य कारण अविद्या (मिथ्याज्ञान) है। अत शुद्ध ज्ञान कर्म उपासना से ही इनका कल्याण सम्भव है।

जीवात्माए ब्रह्म अथवा ब्रह्म (ईश्वर) का अश नहीं होती। इनकी पृथक से स्वतन्त्र सत्ता सदा सर्वदा विद्यमान रहती है। प्रकृतिपाश से मुक्त होकर ये ईश्वर के आनन्द मे निमग्न हो जाती है। और मोक्ष की अवधि समाप्त होने पर पुन जन्म मरण के बन्धन मे आती है।

विषयाधीन जीवात्माओ की मुक्ति नहीं होती–इसलिए मोक्ष की इच्छा रखने वालो के लिये विषयासक्ति से बचना अति आवश्यक है।

वैदिक मिशनरी, कमलेश कुमार आर्य ♣

एक आदर्श परिचय

श्रीमती शशी आर्या

एक उभरता व्यक्तित्व

श्रीमती शशी आर्या एक पढी लिखी सुशिक्षित महिला है आर्य समाजी परिवार की श्री आनन्द बोध सरस्वती (श्री लाला रामगोपाल शालवाले) की सुयोग्य सुपुत्री हैं। आप एक योग्य परिवार से चल कर दूसरे सुयोग्य परिवार में श्री जगदीश आर्य की गृहणी बन कर उस घर मे सुशोभित हुई। दोनों सुयोग्य परिवारों का मिला जुला गगा जमुनी मस्तिष्क हमें आर्य समाज के सुधार के कार्य रूप में मिला है उनके सद्गुणों से दिल्ली आर्य समाज का पूरा क्षेत्र भली भांति परिचित है।

पुरानी महिला वर्ग में श्रीमती प्रकाश आर्या श्रीमती शकुन्तला आर्या श्रीमती शकुन्तला दीक्षित, श्रीमती सरला मेहता, श्रीमती कृष्णा चड्ढा जैसी सुयोग्य महिलाओं ने जहा आर्य समाज के उत्कर्ष में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है उसी परम्परा में श्रीमती शशी आर्या का योगदान अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

पिछले दिनों जब जन्तर-मन्तर पर ईसाइयत के विरोध में आर्य महिला सभा दिल्ली की ओर से जो प्रदर्शन (धरना) दिया गया था उसमें सभी के भाषणों के साथ श्रीमती शशी आर्या के सुलझे हुये विधि विधान से पूर्ण जो विचार आर्य जनता ने सुने उससे मालूम पडा कि वह जनता जनार्दन की सेवा के जो स्फुट विचार देना चाहती हैं वह कितने सुलझे हुए हैं।

हमें पूर्ण को विश्वास है कि महिलाओं की पंक्ति में श्रीमती शशी आर्या अपना एक सर्वोच्च स्थान भविष्य में बनायेंगी। आर्य परिवार की परम्परा का निर्वहन तथा आर्य समाज की गतिविधियों में भी पूर्ण क्षमता के साथ जो सहयोग दे रही है वह भी अपने में एक अनुकरणीय है। मैं समझता हू कि उनकी योग्यता और क्षमता का अनुकरण कर नयी महिला पंक्ति में नये नये नाम भी लिखे जायेंगे। श्रीमती शशी आर्या स्वय तो यशस्वी होंगी ही दोनों वश परम्पराओं और आर्य समाज की पीढी में भी एक महत्वपूर्ण स्थान बनाकर नयी पीढी को प्रेरणा प्रदान करेंगी ऐसी आशा है।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सम्पादक ♣

आर्यवीरदल (असम शाखा) द्वारा

दस दिवसीय आर्यवीरदल शिविर का आयोजन

आर्यवीरदल असम शाखा द्वारा दिनाक ३० ७ ९६ से दिनाक ८ ९ ८६ तक ग्राम तोतलापारा पो० भेडगाव जिला दरग (असम) मे दसदिवसीय आर्य वीर दल शिविर का सफल आयोजन किया गया। श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी फरीदाबाद हरियाणा मे अध्ययन रत्त छात्र तथा प्रशिक्षक श्रीविवकरत्न आर्य उर्फ रिजु एव आर्य प्रतिनिधि सभा असम के प्रचारक श्रीकृष्णमित्र के सफल निर्देशन मे उक्त शिविर दिनाक ८ ८ ९६ को भव्य समापन समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। स्थानीय उपप्रधान श्री दिपेन वोडो की अध्यक्षता मे ३० ७ ९६ को इस शिविर का उद्घाटन हुआ था। उद्घाटन के दिन काफी सख्या मे ग्राम तथा अन्य नागरिक उपस्थित थे। समापन समारोह की अध्यक्षता प्रतिष्ठित समाज सेवी आदरणीय श्री रमेन बडो ने की। इस अवसर पर भी लोगो की उपस्थिति सन्तोष जनक रही। स्थानीय लोगो मे काफी उत्साह देखा गया।

प्रशिक्षार्थियो के सर्वाङ्गीण विकास हेतु आयोजित इस शिविर मे ५० शिक्षार्थीयो ने भाग लिया जिन मे १५ का प्रदर्शन प्रशसनीय रहा शिविर मे भाग लेने वाले छात्रो तथा स्थानीय नागरिको की इच्छा को देखते हुए प्रति वर्ष इस शिविर का अयोजन करने का निर्णय लिया गया। ♣

भव्य आर्ट गैलरी की स्थापना

महर्षि दयानन्द कृत कालजयी ग्रन्थरत्न सत्यार्थ प्रकाश की रचना स्थली नवलखा महल मे एक भव्य आर्ट गेलेरी की प्रस्थापना प्रस्तावित है जिसमे महर्षि जी के जीवन से सम्बद्ध घटनाओ का चित्रित किया जावेगा। अतएव समस्त आर्यजनो से निवेदन है कि यदि उनके पास इस प्रकार के चित्र फोटो आदि हो तो कृपया निम्न पते पर भजने का श्रम करे। यदि आप चाहेगे तो चित्र/फोटो की कॉपी बनाकर मूल वापस कर दिया जावेगा। इस सम्बन्ध मे डाक व्यय आदि भी न्यास की ओर से दिया जा सकेगा।

निवेदक

हनुमान प्रसाद चौधरी अध्यक्ष
श्री मद दयानद सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर ♣

संभव हो तो सुखराम बनो।

धर्मवीर शास्त्री

क्या और जरूरत बनने की सभव हो तो सुखराम बनो ?
क्यो कष्ट झेलते हो इतना पढ–पढ क्यो आख फुडाते हो।

पढ कर मुश्किल से एक–आध कुर्सी कुछ ऊची पाते हो।
सेवक बनने का स्वाग रचो कुछ ही दिन को निष्काम बनो।

मोट खादी का कुर्त्ता हो वैसा ही धजा पजामा हो।
पावो मे हो चप्पल मानो इस युग के शुद्ध सुदामा हो।

बादाम अगर खाने है तो कुछ दिन सेवक बे–दाम बनो।
वर्करी लीडरी की सीढी जमकर नेता का काम करो

जनता के सम्मुख आ–आकर कायम अपनी पहचान करो
नेता का जीत भरोसा लो उसके मासूम गुलाम बनो ?

मौका निर्वाचन का आये अपनी भी जाहिर चाह करो
इससे उससे कहलाओ भी कुछ भी कर अपनी राह करो

मिल जाए टिकट जन आस्था के घर घर जाकर धनश्याम बनो ?
निर्वाचित हुए कि निज दल के नेता तक अपनी पहुच करो

मडराओ उसके इर्द गिर्द पद वन्दन उसका रोज करो
कुछ जुगत भिडाओ नेता की पहली पसन्द का नाम बनो ?

अब क्या है ? मत्री पद पाया खींचो जितना हो माल सके ?
गडढे मे जाये देश–धर्म कर लो खुद को खुशहाल सखे।

कीडी से प्रात आये थे हाथी से होते शाम बनो
लाइन सब और अकारथ है सम्भव हो तो सुखराम बनो।

बी १/५१ पश्चिम विहार
नई दिल्ली–६३ ♣

दलित ईसाईयों के आरक्षण का प्रश्न

(गतांक से आगे)

फ्रंट लाईन २१ दिसम्बर के अक मे बगलूर के जाफित मसीह का बयान भी ध्यान देने के योग्य है जो लोग दलित ईसाइयो के लिए आरक्षण का समर्थन कर राजनैतिक गोटिया खेल कर केवल थोक वोट प्राप्त करने के लिए दलित ईसाइयो को भ्रमित कर रहे हैं उन्हे श्री जाफित मसीह के इन शब्दों को गम्भीरता से लेना चाहिए "चर्च का बाया हिस्सा हमारे लिए था दाया महिलाओ के लिए तथा मध्य भाग उच्च वर्ग के ईसाइयो के लिए रहता था। आज भी दलितो से ईसाई बने लोग उच्च जाति के ईसाइयो के घरो मे नहीं जा सकते उन्हे रेस्तरा मे जाने की सैलून मे हजामत बनवाने की मनाही है। उच्च वर्गीय ईसाई उन नलो को धोकर साफ करते हैं जिनसे दलित पानी पीते है" क्या एक मान्य ईसाई भाई के इस कथन के बाद भी कुछ और प्रमाण देने की आवश्यकता रह जाती है ?

एक सुनियोजित ढग से भारत में पथ निरपेक्षता की आड मे "दलित ईसाई इस शब्द को बल पूर्वक उछाला गया। उधर स्नेह सेवा और सद्भावना का लबादा ओढे हुए मदर टैरेसा ने अपनी अच्छी राजनीतिक पैठ होने के कारण इस शब्द को अच्छा उछाल दिया यहा तक कि आरक्षण की माग के लिए धरने मे शामिल भी हो गई। इसकी प्रतिक्रिया हुई तो इस एक दम अनैतिक कदम से अपने को अलग भी कर लिया। वोटो की राजनीति करने वाले सत्तालोलुप राजनैतिक भेडिये इस मौके से क्यो चूकते उन्होने वोटो के लालच मे दलित ईसाइयो के आरक्षण की माग का समर्थन कर दिया।

हमने अभी दलित ईसाई आरक्षण की माग का ऊपर की पक्तियो मे वर्णन किया है। १८ नवम्बर १९९५ दयावती मोदी पुरस्कार प्राप्त करने के लिए इसी आरक्षण के मुद्दे को लेकर मदर टेरेसा धरने मे सम्मिलित हुई सब समाचार पत्रो मे निन्दा के सम्पादकीय प्रकाशित हुए तब २४ नवम्बर को कलकत्ता की पत्रकार वार्ता मे लिखित विज्ञप्ति प्रकाशित कर अपने को इस घटना से अलग कर लिया।

परन्तु सत्य कभी छिपता नहीं। सघर्ष समिति के सयोजक जोस डेनियल ने दो टूक अपने शब्दो मे कहा कि—"हमने तो मदर टेरेसा को पूरे कार्यक्रम के बारे मे बता दिया था। मदर टेरेसा को यद्यपि इसके लिए आग्रह नहीं किया गया था वह स्वय वहा पहुची और पूरा भाग लिया"। इसका राजनैतिक क्षेत्रो मे प्रभाव भी बढ़ा। एक धर्मात्मा द्वारा सेवा का लबादा ओढने के बाद झूठ का भी आश्रय लिया गया यह कहा तक ठीक है ?

अभी-अभी दिल्ली के एक साप्ताहिक मे बहुत ही चौकाने वाले आकडे प्रस्तुत किए गए हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि भारतीय ईसाई वर्ग पिछडा और पीडित नहीं है अपितु अपनी सख्या से कहीं अधिक शासन मे भागीदार हैं।

१४ जून १९८३ को एक उच्च समिति की रिपोर्ट मे कहा गया है कि देश के २० प्रतिशत से अधिक शिक्षा सस्थानो पर ईसाईयो का आधिपत्य है जबकि कुल जनसख्या का ईसाई लोग २३ प्रतिशत हैं। १३ राज्यो के विस्तुत आकडे इकटठे करने के बाद यह रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। प्रशासन मे भागीदारी का जहा तक प्रश्न है यह भारतीय प्रशासनिक सेवा मे २७४ प्रतिशत भारतीय पुलिस सेवा मे २६० प्रतिशत केन्द्रीय सेवा मे ३८५ प्रतिशत बैंक सेवा में २६७ प्रतिशत सार्वजनिक क्षेत्र मे ३८३ प्रतिशत है। प्रथम श्रेणी की सेवा मे ८७७ प्रतिशत द्वितीय श्रेणी की सेवा मे ४०१ प्रतिशत और तृतीय श्रेणी मे ३१३ प्रतिशत है।

डॉ० प्रेमचन्द श्रीधर

श्री महीप सिह ने अपने लेख मे एक और कुतर्क दिया है कि सिख और बौद्ध मजहबो के दलितो को तो आरक्षण दिया गया है क्या विद्वान लेखक इस तथ्य से अनभिज्ञ हैं कि सिख बौद्ध जैनी शैव वैष्णव सनातन धर्मी या फिर निराकार के उपासक आर्य समाजी सब हिन्दू समाज के अग हैं। भारत के सविधान की धारा २५ (२२) के अनुसार सिख बौद्ध व जैन आदि सभी हिन्दू हैं। स्वय सर्वोच्च न्यायालय ने "हिन्दू शब्द की परिभाषा मे इसे एक जीवन पद्धति स्वीकार किया है। हिन्दू कोई धर्म विशेष नहीं है। यह एक ऐसी जीवन पद्धति का नाम है जहा विचार और उपासना की पूर्ण स्वतन्त्रता है परन्तु सबकी सस्कृति एक ही है "एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति।"

भारत के उच्चतम न्यायालय ने ए०आई०आर० १९८६ एस०सी० ७३३ मे एक निर्णय के अनुसार यह कहा है कि दलित ईसाईयो को आरक्षण सुविधाए देने के पहले या कोई नया कानून बनाने से पहले यह जाच पडताल की जाए कि क्या किसी अनुसूचित जाति के सदस्य को ईसाइयत मे धर्मान्तरण के बाद कोई कठिनाई हुई जैसी कि किसी अनुसूचित जाति के सदस्यो के साथ होती है। दलित ईसाइयो को अभी तक ऐसी कोई कठिनाई नहीं हुई और न ही कोई जाच पडताल ही की गई है अत इस आधार पर भी दलित ईसाइयों के लिए नए बिल का लाना असवैधानिक तथा उच्चतम न्यायालय के निर्णय की अवेहलना है और न्यायालय की अवमानना का अपराध बनेगा।

हमने भारत सरकार (अनुसूचित जाति) आदेश १९३६ का ऊपर उल्लेख भी किया है इसके आधार पर कोई भी ईसाई मतावलम्बी इस सूची मे नहीं आता।

सविधान की धारा १६(४) मे कहा गया है कि आरक्षण उन्हीं लोगो को मिलेगा जिनका अपनी जनसख्या के अनुपात मे सरकारी सेवा मे समुचित प्रतिनिधित्व नहीं है। इस आधार पर आरक्षण देने का पाप करना असवैधानिक है।

जहा तक ईसाई मतावलम्बी भारतीयो की जनसख्या की वृद्धि का प्रश्न है १९११ से १९९१ तक यह निरन्तर बढती चली गई है। १२१ प्रतिशत से १९७१ की जनगणना मे २३६ प्रतिशत हो गई थी अब २३० प्रतिशत है।

आरक्षण निश्चित कोटा हरिजन जिनमे हिन्दू, सिख बौद्ध आदि आते हैं १५ प्रतिशत है जनजाति साढे सात प्रतिशत अन्य पिछडी जाति जिनमे मुस्लिम और ईसाई भी सम्मिलित हैं २७ प्रतिशत तथा अन्य आर्थिक रूप से पिछडे हुए लोगो का १० प्रतिशत। इस प्रकार कुल साढे ५९ प्रतिशत बैठता है जबकि सर्वोच्च न्यायालय द्वारा आरक्षण की अधिकतम सीमा ५० प्रतिशत कर दी है।

इस प्रकार यदि दलित ईसाईयो को यह आरक्षण दिया गया तो यह निश्चित रूप से उन दलित और अनुसूचित तथा पिछडे हुए लोगो के भाग से होगा जो अपने सामाजिक शैक्षणिक और आर्थिक आधार पर पहले ही इसे प्राप्त कर रहे हैं। उनमे आज भी १० प्रतिशत शिक्षित हैं शेष ९० प्रतिशत अपनी अनपढता और अभाव के कारण आज भी शोषण का शिकार हैं।

ईसाइयो की शिक्षा का स्तर बहुत अच्छा है वे सब प्रशासनिक सेवाओ मे अपनी जनसख्या से भी अधिक अनुपात मे भागीदार है ऐसा होने पर वे शत-प्रतिशत आरक्षण प्राप्त कर लेने और शेष आगे आने वाले सैंकडो वर्षों तक भी उभर नहीं सकेगे। परिणामत "दलित ईसाई" के नाम पर आरक्षण धर्मान्तरण के कार्य को बढावा देगा जो कि अन्तत अराष्ट्रीयता और अलगाव की भावना का रूप लेकर देश के भविष्य के लिए दुर्भाग्यपूर्ण सिद्ध होगा। वैमनस्य जातिवाद के आधार पर घृणा और आतकवाद को जन्म देगा।

भारत की स्वतन्त्रता से पूर्व कोई भी प्रदेश ईसाई जनसख्या का बाहुल्य वाला नहीं था। नागालैण्ड मिजोरम और मेघालय आज ईसाई बाहुल्य प्रदेश हैं जहा प्रान्तो की भाषा अग्रेजी है धर्म ईसाई मत है और अन्य लोग आज वहा अल्पमत मे आ गए हैं। अब उनका निशाना मणिपुर त्रिपुरा और आसाम के अन्य भाग हैं। वहा के निवासी अपने को अब भारतीय नहीं मानते।

ईसाइयो की दो करोड ३० लाख की आबादी मे से ७० प्रतिशत लोग इसी अनुसूचित जातियो से हैं जो कि धर्मान्तरित किए गए हैं। साढे सात प्रतिशत आरक्षण उन्हे स्वत ही प्राप्त है क्योकि शिक्षा की दृष्टि से वह पिछडे हुए नहीं है। सविधान की धारा २५, २६ ३० के कारण उन्हे अपने शिक्षण सस्थाओ को चलाने तथा अपने मत की शिक्षा देने का भी अधिकार है जो अन्य मत व धर्म वालो को प्राप्त नहीं है। इस प्रकार ये लोग बहुसख्यक और अल्पसख्यक लोगो को प्राप्त होने वाले सभी अधिकारो का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। भारत सरकार के समाज कल्याण मन्त्रालय के अन्तर्गत प्रस्ताव स० १२०११/६८/६३ बी०बी०सी० (सी) दिनाक १० ६ १९६३ और स० १२०११/६/६४ बी०बी०सी० दिनाक १९ १०-१९६४ के अनुसार बहुत से मुसलमान और ईसाई २७ प्रतिशत आरक्षण के अन्तर्गत आ गए हैं भारत सरकार की इस प्रकार की सूची परिशिष्टि सूची १ और २ के अन्तर्गत इन जातियो के नामो को देखा जा सकता है।

हमे यह नहीं भूलना चाहिए इस प्रकार की आरक्षण की माग १९५८ मे तत्कालीन गृहमत्री श्री गोविन्द बल्लभ पन्त से की गई थी। इन्होने ३१ अक्टूबर १९५८ को पत्र का उत्तर देते हुए स्पष्ट लिखा ईसाई मत मे धर्मान्तरित होने वाला व्यक्ति इस अनुसूचित जाति को मिल्ने वाले आरक्षण की सूची में नहीं आता। इसी आशय का पत्र तत्कालीन प्रधानमत्री प० नेहरू को भी दिया गया था। ७ नवम्बर १९५८ को इस पत्र का उत्तर देते हुए श्री प० जवाहर लाल नेहरू ने भी लिखा था कि सविधान के नियमो के अन्तर्गत ईसाई मतावलम्बी अनुसूचित जाति अथवा वर्ग के अन्तर्गत नहीं आते।

सविधान की धारा ३६६ और ३४१ के अन्तर्गत अनुसूचित जाति की परिभाषा को स्पष्ट कर दिया गया है दलित ईसाई इस वर्ग मे नही आते।

इन तथ्यो के आधार पर हम यह आग्रह करते हैं कि देश के नेतागण विशेषकर वे लोग जो दलित अनुसूचित जनजाति के लोगो का ससद मे अथवा मत्रीमण्डल मे प्रतिनिधित्व करते हैं और इन्हीं के अधिकार की रक्षा का दम भरते हैं सब प्रकार के स्वार्थ का दलगत लाभ का और अन्य पूर्वाग्रहो का त्याग कर देश हित मे ससद के बाहर इस असगत अन्यायपूर्ण असवैधानिक माग का विरोध करे और जन जागरण करके जिनके अधिकार का हनन होने वाला है उन्हे सतर्क करे पूरी ईमानदारी से सघर्ष करे। अन्यथा समय निकल जाने पर लकीर पीटने से कुछ नहीं होगा ? आने वाला इतिहास इस भूल के लिए उन्हे कदापि क्षमा नहीं करेगा—

वक्त पर कतरा है काफी अबरे खुश अन्दाम का।
जल गया जब खेत मेंह बरसा तो फिर किस काम का।।

ई ३६ रणजीत सिह मार्ग
आदर्श नगर दिल्ली—११००३३

प्रासंगिकता—गांधी और गांधीवाद की

श्री राम गोपाल, नई दिल्ली

सन १९२० से १९४७ मे अग्रेजो के भारत छोडने तक के घटनाक्रम का निष्पक्ष विवचन करने पर पता चलगा कि अपने जीवन काल मे ही स्वय गाधी जी ने गाधीवाद को दफना दिया था। किन्तु यह बदलाव स्वामी श्रद्धानन्द लाला लाजपत राय मदनमोहन मालवीय जैसे काग्रेस के कुछ ही नेता समझ पाये और उन्होने काग्रेस छोड दी। स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या एक जनूनी मुस्लिम युवक ने १९२६ म कर दी। १९२ मे लाला लाजपत राय अग्रेजी राज्य की लाठियो के शिकार हो गय। प० मदन मोहन मालवीय अकेले रह गय। वे भी १९४६ मे बगाल मे हुये हिन्दुओ के नरसहार और महिलाओ पर हुए अत्याचारो को सहन नही कर पाये और वे भी स्वर्ग सिधार गये। वास्तव मे गाधी और गाधीवाद के दो स्वरूप हैं। एक तो १९२० से पहले का जब कि गाधी जी ने दक्षिण अफ्रीका मे रहते हुए अपने सिद्धान्तो को सन १९०९ मे हिन्द स्वराज्य नामक एक छोटी पुस्तिका मे लिपिबद्ध किया और उन्हे क्रियान्वित करने की शुरूआत की। इस पुस्तक मे गाधी जी ने लिखा (१) भारत एक राष्ट्र है जनता के अनेक धर्मावलम्बी होने के कारण से ही भारत बहुराष्ट्रीय देश नही हो जाता (२) स्वराज्य का अर्थ केवल यह नहीं है कि राजसत्ता अग्रेजी से हटकर भारतीयो के पास आ जाय। इसका अर्थ है ब्रिटिश राज्य तत्र ब्रिटिश विधि विधान और न्याय व्यवस्था सभी का भारतीय प्रणालियो द्वारा पुनर्स्थापन जिनकी जडे हिन्दू सभ्यता और सस्कृति मे जमी हो (३) अग्रेजी भाषा के स्थान पर हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओ की स्थापना (४) भोगवाद पर आधारित योरोपीय सभ्यता का त्याग और अहिसा और त्याग परक भारतीय सभ्यता का प्रसार (५) गावो का विकास और पचायती राज की पुन-स्थापना (६) औद्योगीकरण और निपट शहरीकरण के स्थान पर गावो और प्रकति की ओर प्रस्थान और कुटीर तथा लघु उद्योगो को बढावा हिन्दू स्वराज्य म गाधी जी ने ब्रिटिश पार्लियामट को वेश्या और बाझ कहा। लगभग ९० वर्ष पहले के स्तर के हिसाब से आज की भारतीय ससद को क्या कहा जाए यह सोचने की बात है। गाधी जी को उन सभी जटिल मशीनो से चिढ थी जिनका उद्देश्य धन कमाना तथा प्रकति और मानव दोनो का निरकुश दाहन करना था। उस समय गाधी-वाद की वेशभूषा (अफ्रीका मे रहते हुए) योरोपीय थी किन्तु आत्मा विशुद्ध हिन्दू या भारतीय थी।

१९१५ मे गाधी जी भारत आये। १९१७ मे गुजरात एजुकेशनल काग्रेस मे बोलते हुए गाधी जी ने कहा कि भारतीय समाज की सबसे बडी सेवा यह होगी कि हम स्वय को और समाज को अग्रेजी के प्रति जनित मोह से छुटकारा दिला पाये। इस अध विश्वास ने भारत को गुलाम बना रखा है। सबसे पहली और सबसे महा देश सेवा यह होगी कि हम अपनी स्थानीय भाषाओ को अपनाये हिन्दी को नैसर्गिक राष्ट्र भाषा का पद दिलाये और सभी राष्ट्रीय कार्रवाई हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओ मे करे उद्देश्य और उद्देश्य प्राप्ति के उपाय दोनो की शुद्धता होना गाधी के आवश्यक मसले थे।

व्यक्तिगत जीवन म उनके अनुसार ब्रह्मचर्य पालन सत्य भाषण निजी जीवन म पवित्रता अहिसा परापकार शाकाहार शराब आदि नशो से परहेज ये सब आवश्यक थे।

१९१९ मे ही गाधी जी ने काग्रेस मे प्रवेश किया। अगले ही वर्ष लोकमान्य तिलक का देहान्त हो गया और काग्रेस का नेतृत्व गाधी जी पर आ पडा। राजनेता के रूप मे गाधी जी ने देखा कि अग्रेजी सत्ता के विरुद्ध समस्त हिन्दू समाज काग्रेस के साथ है किन्तु मुस्लिम लीग के नेतृत्व मे मुस्लिम समाज अग्रेजी राज्य का पोषक और काग्रेस विरोधी है। गाधी दृष्टि मे हिन्दू मुस्लिम एकता के बिना अग्रेजी राज से मुक्ति असभव थी। १९२० से ही गाधी जी का परम उद्देश्य मुस्लिम समाज को अग्रेजो के विरुद्ध और हिन्दू काग्रेस के पक्ष मे लाना हो गया। तुलसी दास जी की शैली मे कहा जाय तो गाधी जी के लिए **एकै धर्म एक व्रत नेमा काम वचन मन मुस्लिम प्रेमा** – हो गया उसी समय प्रथम महायुद्ध के परिणाम स्वरूप ब्रिटिश सरकार ने टर्की के इस्लामी साम्राज्य (आटोमन एमपायर) के टुकडे कर दिये और टर्की के सुलतान का खलीफा पद यानि मुस्लिम समुदाय का धार्मिक नेता समाप्त कर दिया। इससे भारत के कट्टरवादी मुसलमानो यथा मौलाना मुहम्मद अली शौकत अली मौलाना अबुल कलाम आजाद मे अग्रेजो के प्रति अत्यन्त रोष व्याप्त हो गया। ऐसे मे मुस्लिम लीग न अग्रेजो के विरुद्ध किसी भी आदोलन से अपने को अलग रखा। किन्तु गाधी जी ने इसे हिन्दू मुस्लिम एकता स्थापित करने का सुनहरा मौका समझा और खिलाफत आदोलन को राष्ट्रीय आदोलन की सज्ञा देते हुए इसके अगुआ बन गये। कुछ समय के लिए भारत भर मे हिन्दू मुस्लिम जन समुदाय के सयुक्त जलूस जलसे हुए जिनमे वन्देमातरम और अल्लाहो अकबर के नारे एक ही मच से उठे। किन्तु जहा कही हिन्दू जनता इस आदोलन मे शामिल नही हुई वहा हिन्दू जनता पर आक्रमण हुए। केरल मे मालवर प्रदेश मे मोपला मुस्लिमो ने सामूहिक रूप से हिन्दुओ पर बडे पैमाने पर धातक हमले किये। हजारो व्यक्ति कत्ल हुए स्त्रियो के साथ बलात्कार हुआ और हजारो को बलात मुसलमान बनाया गया। तथापि गाधी जी की दृष्टि मे हिन्दू मुस्लिम एकता जैसे महान आदोलन के दौरान यह कोई बहुत बडी कुर्बानी नहीं थी। उन्होने मोपला विद्रोहियो को अपने बहादुर और धर्मप्राण भाइयो की ही सज्ञा दी। खिलाफत आदोलन फेल होना था और यह हुआ था। पर यह बहुत बुरी तरह फेल हुआ क्योकि स्वय टर्की की जनता ने १९२३ म सुल्तान के विरुद्ध विद्राह करके धर्मनिरपेक्ष और प्रजातात्रिक सरकार स्थापित कर दी और खलीफा का पद ही समाप्त कर दिया। इससे भारत का कट्टरवादी मुस्लिम समुदाय खिसिया गया और उसका सारा गुस्सा निहत्थे और असहाय हिन्दू जनता पर निकला। काग्रेस को छोडकर मुस्लिम समुदाय मुस्लिम लीग मे जाने लगा इसी समय से काग्रेस मे और ब्रिटिश साम्राज्य मे यह होड लग गई कि कौन मुस्लिम समाज को अधिक दे सकता है। मुस्लिम समुदाय को आकर्षित करने के लिए गाधी जी हिन्द स्वराज्य के एक एक सिद्धान्त की बलि चढाते रहे।

१९२०-२१ मे जबकि गाधी जी हिन्दू समाज को बताते कि अहिसा ही उनका परम धर्म है खिलाफत आदोलनकारियो को गाधी जी ने कहा कि उन्हे कुरान के अनुसार हिसा करने का अधिकार है। १९२१ मे ही अपने मुखपत्र 'यग इण्डिया' मे गाधी जी ने लिखा कि लोग यह न समझे कि हिन्द स्वराज्य मे जिस स्वराज्य की तस्वीर मैंने खडी की है वैसा स्वराज्य कायम करने के लिए मेरी कोशिशे चल रही है। इस पुस्तक मे बताये कार्यक्रम के एक ही हिस्से का आज अमल हो रहा है वह है अहिसा ये वाक्य मैं इसलिये लिख रहा हू कि आज के आन्दोलन को बदनाम करने के लिए इस पुस्तक मे बहुत सी बातो का हवाला दिया जाता मैंने देखा है अन्य बातो के लिए गाधी जी ने लिखा "मैं जानता हू कि भारत अभी तैयार नही है।"

अहिसा के विषय मे गाधी जी की धारणा यह थी कि हिन्दुओ के लिए तो यह अनिवार्य है किन्तु मुस्लिम के लिए एच्छिक है क्योकि उनकी धर्म पुस्तक कुरान हिसा की अनुमति देती है। गाधी जी ने श्रीमदभगवतगीता का भाष्य अपने अहिसा के सिद्धान्त की पुष्टि करने के लिए किया। गाधी जी की मान्यता थी कि महाभारत युद्ध कोई ऐतिहासिक घटना नहीं हुई न श्री कृष्ण न श्रीराम ऐतिहासिक पुरुष हुये। उनके अनुसार महाभारत और रामायण के सभी चरित्र कवियो के काल्पनिक चरित्र थे जिनके माध्यम से महर्षि व्यास व वाल्मीकि ने सनातन रूप स चले आ रहे मानव के भीतर बसे दैविक और आसुरी वृत्तियो का सघर्ष दिखया है।

जब एक कट्टरपथी मुस्लिम नेता (मुहम्मद अली) ने वन्दे मातरम गान के समय बहिर्गमन किया तो गाधी जी ने उसके आचरण को इस्लाम सम्मत मानते हुए उचित ठहराया। मुसलमानो ने कहा कि उनकी भाषा तो उर्दू है। गाधी जी ने हिन्दी का पक्ष छोडकर हिन्दुस्तानी का राग उठा लिया जिसे देवनागरी और फारसी दोनो लिपियो मे लिखा जा सके। गाधी जी सवय गो भक्त थे किन्तु हिन्दुओ को कहा कि इस विषय मे मुसलमानो को समझाये। वे न माने तो सब्र करे। मुस्लिम उलेमाओ ने कहा कि वे तो शरीयत का ही पालन करेगे। गाधी जी न मान लिया। १९३७ मे शरीयत एक्ट पास हुआ। गाधी जी तथा काग्रेस ने चू नहीं की। यह शरीयत ही आज समान नागरिक सहिता के रास्ते मे सबसे बडी रूकावट है। इस पर भी मुस्लिम समुदाय सतुष्ट नहीं हुआ और पाकिस्तान की माग रख दी। गाधी जी जो भारत को सदा से एक राष्ट्र मानते थे कहने लगे कि यदि एक पिता के चार बेटो मे एक अलग होना चाहे तो सिद्धान्तत उसे रोका तो नहीं जा सकता इस प्रकार गाधी जी ने पाकिस्तान को वैधानिक समर्थन प्रदान कर दिया। केवल भाई चारे की दुहाई देकर तो भारत विभाजन रोका नहीं जा सकता था। एक प्रकार से गाधी जी ने भारत को एक राष्ट्र नही बल्कि एक परिवार की साझा सपत्ति का दर्जा प्रदान कर दिया।

शेष पृष्ठ ६ पर

कर्म की लिप्तता

भूदेव साहित्याचार्य, महोपदेशक

न कर्म लिप्यते नरे—आदमी कर्म मे लिप्त न हो। लिप्त हो गया तो बध गया। लिप्त नहीं हुआ तो मुक्त है। कर्म का त्याग नहीं है। कर्म तो करना ही होगा। त्याग है लिप्त होने का—लिप्त न हो इसका ध्यान रखना है।

'न कर्मणामनारम्भानैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते।

निष्काम कर्म के अर्थ मे कर्म करना इसका निषेध नही है। फिर—

'नहि कश्चित क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत।
कार्यते ह्यवश कर्म सर्व प्रकृतिजैर्गुणै ।।

कर्म करने म तो मनुष्य प्रकृतिज गुणो के कारण एक प्रकार से परवश है। मनुष्य या कोई भी प्राणी क्यो न हो ससार मे आया है तो कर्म तो करना ही होगा। इस दुनिया मे ऐसा कोई नहीं है जो कर्म किये बिना एक भी क्षण बैठ सकता हो।

हमने कहा कर्म मे लिप्त न हो। कब लिप्त हो जाते हैं कर्म में ? इसे इस चुटकुले से समझिये—बरसात का मौसम था। नदी नाले नहरे लबालब बह रहे थे। ऐसी ही लबालब बहती एक नहर से कुछ मित्र गुजरने लगे। देखते क्या है कि एक कम्बल—सा कुछ बहकर जा रहा है। ये लगभग सभी तैराक थे। निश्चय किया कि जो सबसे ज्यादा तैराक है वह कूदकर इस बहते हुए कम्बल को निकाल लाये। कूद गया। उसे निकालने की कोशिश कर रहा है। परन्तु बहने वाला कम्बल नहीं भालू है और भयभीत भालू अपने प्राण बचाने की दृष्टि से इस प्रकार से उससे लिपट गया है कि उसे छोड नहीं रहा है। यह तैराक डूबने को हो रहा है। बाहर के साथियो ने कहा कम्बल छोड दे और यह कह रहा है कि कम्बल को तो मैने छोड दिया है मित्रो ! यह कम्बल ही मुझे नहीं छोड रहा है।

क्या था क्या कम्बल इनका था ? इनके बाप का था ? लालच मे आ गये। देखा नही पानी कितने तेज—प्रवाह मे है। कूद पडे। कर्म की लिप्तता कहा है ? कूदने में ? कम्बल पकडने में ? लाने मे ? नहीं यहा कहीं भी कर्म की लिप्तता नहीं है। कर्म की लिप्तता है लालच मे लोभ में और इनके सगे सगनियो मे। इसलिये जब कहा जाता है कि कर्म मे लिप्त न होना तो इसका अर्थ यह नहीं होता कि कर्म मत करना। भूल गये लोग

मुई नारि गृह सपति नासी।
मूड मुडाय भये सन्यासी।।

कुछ करने—धरने का तिलाजलि दन का नाम सन्यास रख लिया। सस्कृत मे सूक्ति है— ***अवश्यमेव भोक्तव्यं कृत कर्म शुभाशुभम्।*** कर्म किसी प्रकार का शुभ या अशुभ जो कर दिया है उसका फल जरूर भोगना पडगा। उन्होने सोचा यह ठीक—अब कुछ करेग ही नही। न रहेगा बास न बजेगी बासुरी। परन्तु यह विचार नही आया कि एक पूरी बडी बासुरी तो हमारी यह काया है जिसे हम ससार मे लकर आये है। पुन एक पूरी बडी बासुरी तो हमारा वह अस्तित्व है जिससे हम हैं। प्रश्न यह नही है कि हम क्या है। जो भी है है तो। हम है तो कर्म है बासुरी तोड देने से बासुरी का बजना टूट सकता है। बासुरी बजना रूक सकता है। परन्तु हम तो टूटने वाले नहीं है। केवल यही अधिक से अधिक हो सकता है कि यहा नहीं तो वहा। एक प्रकार से कर्म हमारा पर्याय है। इसलिये जहा भोक्तव्य की बात आई—वहा शुभ+अशुभम यह दिया है। मतलब शून्य नहीं है। अभाव नहीं है। शुभ या अशुभ है। कुछ भी करो बैठो मत। न वरना शून्य नही है। आप देख ले भोजन की थाली सामने हो और आप निवाला तोडकर मुहतक न ले जाये फिर देखे कैसे भूख मिटती है। आप को सयोगवश कोई कमरे मे बन्द कर दे और आपको जाने की जल्दी हो आप कोशिश न करे आवाज न दे किसी को खालेने के लिए फिर देखे कैसे निकलते है।

मुक्ति कैसे हो ? कृष्ण ने कहा—कर्म अकर्म और विकर्म रूप से एक ही कर्म तीन प्रकार का है। इसे ठीक प्रकार से समझने की कोशिश करो। कर्म की गति बडी गहरी होती है।

यस्य सर्वे समारम्भा काम सकल्प वर्जिता ।
ज्ञानाग्नि दग्ध कर्माण ।

जिनके समारम्भ काम सकल्प से वर्जित होते है और जो कर्म ज्ञानाग्नि से दग्ध होते हैं वे कर्म ही वस्तुत कर्म होते हैं। जिनके शुरु मे ही लोभ लालच आदि के भाव हो और जो ज्ञानाग्नि से दग्ध होन की अपेक्षा समझ सोच का जिनमे स्थान ही न हो ऐसे कर्म मनुष्य को लिप्त करन हैं अर्थात बाधते हैं। **मनुष्य को चाहिए ऐसा करे कि लिप्त न हो।**

आर्य समाज आनन्द विहार
दिल्ली—९२

♣

शराब से सर्वनाश

प० नन्द लाल "निर्भय" पत्रकार

भारत मे आजकल शराब पीने का जोर शोर से रिवाज बढता जा रहा है। जन्म दिवस विवाहोत्सव आदि हर शुभावसर पर हर ग्राम शहर मे सर्वत्र शराब पार्टी का आयोजन प्राय किया जाता है। बाल तरुण वृद्ध सब मदिरापान करने मे अपनी शान समझते हैं। अब तो स्त्रिया भी पुरुषो की होड करके मदिरा पान करने मे नहीं चूकती। इस प्रचलन को भारत का दुर्भाग्य ही कहा जाए तो उचित ही होगा।

शराब का अर्थ है सडा हुआ पानी। इस सडे हुए पानी को पीकर मनुष्य पागल हो जाते है। उनकी बुद्धि खराब हो जाती है। उनको भले बुरे का ज्ञान नही रहता। शराबी व्यक्ति नाना प्रकार के पाप कर बैठते हैं। उनका विवेक सूझ बूझ खत्म हो जाती है।

शराबी व्यक्ति महा आलसी प्रमादी बन जाता है। उसका स्वभाव चिडचिडा बन जाता है। वह मासाहारी और क्रूर स्वभाव वाला बन जाता है। उसे धम कर्म की बात अच्छी नहीं लगती।

"शराब भीतर अक्ल बाहर" की कहावत शराबी व्यक्ति पर पूरी तरह लागू होती है। ऐसी एक नहीं हजारो मिसाल है। शराबी व्यक्तियों ने शराब के नशे के चक्कर मे भारी से भारी पाप कम कर दिये इस पापिन शराब ने ससार मे लाखो घर बर्बाद कर दिये कवि के शब्दो में —

अय शराब तूने अक्सर कौमो को खाके छोडा।
जिसने भी सिर उठाया उसको मिटा के छोडा।।
राजो के राज्य छीने शाहो के ताज छीने।
गर्दन कसो को तूने नीचा दिखा के छोडा।।

इस पिशाचनी शराब ने बडे बडे राजा महाराजा नबाब बादशाहों को मिट्टी मे मिला दिया। बडे बडे धनी मानी व्यक्ति शराब के कारण ससार से समाप्त हो गए। मुगल पठान मराठे राजपूत यादव जाट इस शराब ने ससार मे धराशायी कर दिए उनके साम्राज्य ऊचे ऊचे महल किले आज खाली नजर आ रहे है।

योगी राज श्री कृष्ण चन्द्र महाराज सर्व विश्व मे त्याग तपस्या योग बल विद्या मे सर्व अग्रणी थे तभी तो युधिष्ठिर से राजसूय यज्ञ मे अर्घ दने लिए भीष्म पितामह ने कहा था हे प्रिय पुत्र युधिष्ठिर सुनो इन समस्त राजाओ म जो यहा देश विदेश से आए हुए है इनम मुझ श्री कृष्ण चन्द्र से उत्तम कोई नही दीखता, ऐसा कौन सा राजा है जिसे यदुकुल भूषण श्री कृष्ण ने अपने तेज बल से नहीं जीता हो। यह सुनकर युधिष्ठिर ने श्री कृष्ण को ही अर्घ दिया या अर्थात उनको सम्मानित किया था

वास्तव मे उनका जीवन सर्वोत्तम था जिनका सकल विश्व मे भारी सम्मान था किन्तु उसी महापुरुष के आगे ही यादव शराब पीने लगे। योगी राज श्री कृष्ण ने उन्हे काफी समझाया परन्तु वे नहीं माने। परिणाम स्वरूप आपस मे शराब पी पी कर लड कर मर गए।

श्री कृष्ण के सामने उनका वीर पुत्र प्रद्युम्न लडते हुए मारा गया। उनका प्यारा महा पराक्रमी साथी सत्याकी उन्हीं के सम्मुख वीरगति को प्राप्त हुआ। इस प्रकार जिन यादवो की सकल विश्व मे धाक थी वे भी मद्यपान करने के कारण ससार से मिट गए।

विवश होकर श्री बलराम और योगी राज श्री कृष्ण चन्द्र भी वन को तपस्या करने चले गए।

वीर राजपूत महा पराक्रमी व महा साहसी रण बाकुरे थे जिनका लोहा सारा ससार मानता था उनमे हाथी जैसा बल और शेर जैसी फुर्ती थी। उनके ठाट निराले थे उनकी रण मे वीरता मुसलमान भी मानते थे किन्तु जब वे मद्यपी बन गए तो उन्हे विदेशी मुसलमानो के आगे माथा टेकना पडा और भारत को गुलाम बनावा दिया। इस विषय म इतिहास को पढ कर देखा जा सकता है।

छत्रपति महावीर शिवाजी महाराज का जीवन चरित्र पढने पर पता चलता है कि वे कितने उच्च चरित्र के स्वामी थे। उनके अच्छे चरित्र की मुसलमान इतिहासकारो ने भी बडाई की है।

शेष पृष्ठ ६ पर

हम आर्य हैं वा हिन्दु ?

प्रो० सुरेन्द्र नाथ भारद्वाज

बडे आश्चर्य की बात है कि ज हमे आर्य शब्द तो मन घडन्त प्रतीत होता और हिन्दु शब्द जिस का कि चार वेद छ स्त्र रामायण महाभारत भगवदगीता आदि दि प्रामाणिक सस्कृत ग्रन्थो मे कोई उल्लेख पाया जाता प्रिय लगता है। शास्त्रा स अपर्प लोग आर्य शब्द का स्वामी दयानन्द का हुआ शब्द समझत है। हमे बडा आश्चय है जब हम सुनते है कि ग्रामो मे जब सना पण्डित जाते हे तो आर्य शब्द का अथ करत घोड की पूछ का बाल। अनपढ लोग उनके बहकाने म आ जाते है। नीचे लिखे प्रमाणो से विदित हो जायेगा कि वास्तविकता क्या है ?

सब से पहले हम अपने ब्राह्मण बन्धुवो से पूछत हैं कि जो सकल्प वे कराते हैं क्या हे ?

आर्य वर्ते भरत खण्डे जम्बूद्वीप इस मे अपने देश का नाम आर्य वर्त है। इस से ही पता चलता है कि यहा के निवासियो का नाम आर्य है। हमारे देश का नाम हिन्दुवर्त नहीं वहा है। यदि हमारा नाम हिन्दु होता तो हमारे देश व नाम हिन्दुवर्त होता।

ऋग्वेद के मण्डल ६ अनुवाक ६३ मन्त्र ५ मे स्पष्ट शब्द आते है – **कृण्वन्तो विश्वमार्यम** अर्थात हम सारे विश्व को आर्य बनावे। यह नही कहा कि हिन्दू बनावे

भगवद् गीता तो प्राय घर घर मे शोभा पा रही है। जिस समय अर्जुन कौरवो की सेना और अपन भाइयो की सेना रण भूमि मे देख कर अपने अस्त्र शस्त्र गिरा देता है तो उस समय कृष्ण भगवान कहते है।

कुतस्त्वा कश्मलमिद विषमे समुपस्थितम
अनार्य जुष्ट मस्वर्ग्यम कीर्ति कर मर्जुन।।
अध्याय २ श्लोक २।।

हे अर्जुन तुमको इस विकट समय मे यह घबराहट कैसे पैदा हो गई जो अनार्यो को सेवित है।

इस श्लोक मे भगवान कृष्ण ने यह नहीं कहा कि जो हिन्दुओ को सेवित है कहा तो यह कहा कि जो अनार्यो को सेवित है।

वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग १२ श्लोक ७८ मे महाराज दशरथ राम वनवास के समय महारानी कैकेयी से कहते है कि यदि मैने राम को वन मे भेज दिया तो लोग मुझ आर्य को अनार्य कहेगे। श्लोक मे स्पष्ट यह शब्द आते है अनार्य इति मामार्य।

जब सीता जी को रावण उठाए लिए जा रहा है तो वे जटायु को सम्बोधन करके क्या कहती हैं ?

जटायो पश्य मामार्या ह्रियमाणामनाथवत।
अनेन राक्षसेन्द्रेण करुण पापकर्मणा।।
अयोध्या काण्ड सर्ग ४६ श्लोक ३८

हे जटायु देख (माम आर्यम) मुझ आर्या को यह राक्षसराज बलात्कार से उठाए लिये जा रहा है।

आप इन शब्दो पर ध्यान दे 'मुझ आर्या को शब्द आए हैं। 'मुझ हिन्दू को शब्द नहीं आए है।

सस्कृत की डिक्शनरी अमर कोष मे आर्यशब्द के अर्थ देखिए।

महाकुल कुलीनार्य सभ्य सज्जन साधव महाकुल कुलीन आर्य सभ्य सज्जन साधु सब का एक ही अर्थ है।

अब आप हिन्दू शब्द के अर्थ भी निकालिये अमर कोष मे तो क्या किसी सस्कृत कोष मे भी हिन्दू शब्द न पाएगे। हिन्दू शब्द लिखा है तो फार्सी कोष मे जिस को ग्यासुल्लुग्रात कहते हैं।

हिन्दू बमैनिये दुज्द में आयद अज खयाबा।

अर्थात–चोर डाकू लुटेरा के अर्थ मे आता है।

फारसी की शाइरी मे हिन्दू शब्द आता है गुलाम अर्थात दास के अर्थ मे। देखिये शेख फरीदुद्दीन अत्तार किसी की प्रशसा करते हुए कहते है।

गर तवानम गुफ्त हिन्दुए तो अम।
हिन्दु ए खाकेसरे कूए तो अम।।

यानी मै कह सकता हू कि मैं तेरा हिन्दू हू यानी तेरे कूचे को खाक का गुलाम हू। इस से आगे और सुनिये।

हिन्दु ए बा दाग रा म्यफरोश तो।
हल्का कुन ई बन्दा रा दर गोश तो।।

यानी जिस हिन्दू के दाग लगा हुआ है उस को बेच मत उस के कानो मे छेद कर दे।

पहले जमाने मे जिस को गुलाम बनाते थे उस को दाग देते थे और उस के कानो मे छेद करते थे। यह प्रत्येक गुलाम अर्थात दास की निशानी थी।

वास्तव मे हिन्दू शब्द मुसलमानो ने अपने शासन काल मे हमारे गले घृणा से मढ दिया था। जब स्वामी दयानन्द ने प्रचार करना आरम्भ किया तो हमारी आख खुली। आर्य समाज स्थापित होने से लगभग ५ वर्ष पूर्व ही काशी के पण्डितो ने व्यवस्था दे दी थी कि हमारा नाम हिन्दू नही आर्य है। ♣

विदेश समाचार

विश्व नागरिकों द्वारा मारीशस के आर्य भवन में सहभोज

यह भोज गत २६ अगस्त को आर्य सभा भवन पोर्टलुई मे हुआ था। इस मे भारतीय मूल के ५०० यात्री सार विश्व क काने कोने से पधारे थे। वे सभी भारतीय मूल के वशज है और महात्मा गाधी सस्थान मे होने वाले गो०पी०ओ० विश्व जुडाव मे पधारे थे। यह जुडाव तीन दिवसीय रहा। इस का उदघाटन मारीशस के राष्ट्रपति माननीय श्री कसाम उत्तिम जी ने किया था। मौके पर मारीशस के स्थानापन प्रधान मत्री माननीय श्री कैलाश प्रयाग जी ने एक भाषण द्वारा इस का प्रारम्भ किया था।

गौरव की बात रही कि सत्रो के अन्तिग दौर मे अध्यक्ष श्री धनदेव बहादुर जी ने वेद का यह मत्र सुनाया और इस की व्याख्या अग्रेजी मे की–

ओ सगच्छध्व स वदध्व स वो मनासि जानताम।
देवा भाग मया पूर्वे सजानाना उपासते।।

जन समुदाय पर इस व्याख्या का बहुत अच्छा प्रभाव पडा था। एक होकर चलने सोचने कार्य करने और सहयोग स प्रगति होगी।

नई दिल्ली भारत क पत्रकार श्रीबलेश्व अग्रवाल जी ने इस सम्मेलन की सर्वप्रथम कार्यवाही भारतीय मूल के प्रवासी भारतीयो को एकत्रित करके सन १९२६ मे अमेरिका के एक नगर नममोक मे किया था पर आप न प्रेस वालो को बताया कि उस समय आस पास के कुछ लोग पधारे थे।

गौरव की बात यह भी है कि मारीशस के सम्मेलन मे तृनिडाड के प्रधान मत्री माननीय वासदेव पाण्डे जी का जब सन्देश पढा गया था आप ४२ वर्ष पूर्व तृनिडाड आर्य प्रतिनिधि सभा की एक प्राथमिक पाठशाला मे पढाते थ आप एक अच्छे गायक भी हे।

मौके के लिए एक स्मारिका का प्रकाशन किया गया था। भारत के प्रधान मत्री माननीय श्री देवे गौडा जी का मारीशस के प्रधान मत्री माननीय डाक्टर नीवनचन्द्र रामगुलाम जी का मारीशस स्थित भारतीय राजदूत श्री श्याम शरन जी आदि के सन्देश इस स्मारिका मे प्रकाशित है।

सब देशो के प्रतिनिधियो ने मौके पर बारी बारी स अपने अपने देश के प्रवासी भारतीयो पर किये जाने वाले न्याय या अन्याओ का वर्णन किया। फीजी प्रान्त से कोई भी नहीं आया था पर बृजबान नगर आस्ट्रेलिया से श्री विमन प्रसाद जी ने जो कभी फीजी टापू मे निवास करते थे उन्हाने ने एक सुन्दर भाषण दियाथा। आप फीजी प्रोढ सस्थान और विद्यार्थि परिषद के अध्यक्ष हैं

आर्य भवन मे उस रोज आर्य नेता श्री मोहनलाल मोहित जी आर्य रत्न आर्य भूषण आर्य सभा के प्रधान श्री जसकरन मोहित जी और मत्री श्री सत्यदेव प्रितम जी और अन्य अतरग सदस्य गण पधारे थे उन महानुभावो के स्वागत सत्कार के लिए। वे अति प्रसन्न हुए थे।

नेपाल आर्य सभा के पूर्व प्रधान भूत पूर्व सासद श्री नन्द किशोर जी ने दफ्तर मे आकर वहा के समाज की प्रगति पर बाते की। आप के और साथी पधारे थे। दक्षिण अफ्रिका आर्य प्रति–निधि सभा के श्री गोकुल जी भी दफ्तर मे विराजे थे। सभी लोगो को आर्योदय पत्रिका प्रदान की गई थी।

ये लोग हमारे डी०ए०वी० कालेज को पास मे देखने गये थे।

प० धर्मवीर धूरा, शास्त्री, एम०बी०ई०
प्रधान मोरिशस हिन्दी लेखक सघ
उप प्रधान भारत मारिशस मैत्री सघ

छः शत्रुओं से बचो

उलूकयातु शुशुकयातु जहि श्वयातुमुत कोकयातुम।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातु दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र।
अथर्व० ८। २२।।

(१) उल्लू के समान आचरण अर्थात मूर्खता।
(२) भडिया के समान क्रूरता।
(३) कुत्ते की वृत्ति अर्थात परस्पर लडना और दूसरो के सामने दुम हिलाना।
(४) चिडिया के समान अत्यन्त काम विकार।
(५) गरुड के समान आचरण अर्थात घमण्ड अहकार आदि।
(६) गीध के समान लोभ।

इन छ विकारो को दूर करो और इनसे सबको बचाते हुए स्वस्थ समाज का निर्माण करो।

पंच महायज्ञों की अनिवार्यता एवं आवश्यकता

धर्मवीर शास्त्री

पच महायज्ञो की आवश्यकता अथवा अवश्यकरणीयता पर विचार करने से पूर्व यज्ञ क अर्थ पर विचार करे। निरुक्त की मान्यता है कि सभी सज्ञाए धातुओ से बनी है—***नामानि आख्यातजानि।*** यज्ञ की धातु है यज जिसके तीन अर्थ हैं—देवपूजा सगतिकरण तथा दान। देव का अर्थ है विद्वान—***विद्वासो हि देवा।*** पूजा का अर्थ है सत्कार—पूजन नाम सत्कार। अत देव पूजा का अर्थ हुआ विद्यावृद्धो का सत्कार। यज का दूसरा अर्थ है सगतिकरण जिसका अर्थ हे सामाजिक सगठन। व्यक्तिगत सुरक्षा और विकास सगठन के बिना असम्भव है। परिवार से लेकर राष्ट्र और विश्व समाज तक व्यक्तियो के लिए ही व्यक्तियो के द्वारा निर्मित होते हैं। सगतिकरण का अर्थ द्रव्यो का सश्लेषण और विश्लेषण भी है। इस तरह समस्त ज्ञान विज्ञान एव शिल्प विद्या सगतिकरण का अर्थ होने से यज के अन्तर्गत आ जाते हैं। यज का तीसरा अर्थ है दान। दान अर्थात स्वेच्छा से किसी की सहायता करना तथा सहयोगपूर्वक जीवन यापन। सामाजिक उपयोगिता की जो वस्तु जिसके पास है वह उसे औरो को भी दे। अकेला खानेवाला अन्न के बजाय सामाजिक उत्तरदायित्वहीनता का पाप ही भोगता है—केवला ***घो भवति केवलादी।*** दान अनेक प्रकार का होता है—अन्नदान अर्थदान विद्यादान समय और श्रम का दान इत्यादि।

जो यज के अर्थ हैं वे ही यज्ञ के हैं। यदि यज्ञ के साधारण अर्थो को दृष्टि म रखकर विचार करे तो भी उसकी उपयोगिता कम नही है। फिर महायज्ञ का तो कहना ही क्या। महायज्ञ पाच कहे जाते है—ब्रह्मयज्ञ देवयज्ञ पितृयज्ञ बलिवैश्वदेवयज्ञ और अतिथियज्ञ।

इनम प्रत्येक महायज्ञ क प्रयोजन पर बहुत कुछ कहा जा सकता है। सक्षेप म इन्हे इस प्रकार समझ सकते हैं।

मनु ने अध्यापन को ब्रह्मयज्ञ कहा है ***अध्यापन ब्रह्मयज्ञ।*** ब्रह्म अर्थात वेद। इस प्रकार वेद का अध्ययन अध्यापन ब्रह्मयज्ञ माना गया। महर्षि दयानन्द ने सन्ध्योपासना को भी ब्रह्मयज्ञ बताया है। तब ब्रह्मयज्ञ का प्रयोजन हुआ परमेश्वर के अनन्त सामर्थ्य का चिन्तन करते हुए अपनी चेतना का ऊर्ध्वारोहण अर्थात दिव्य जीवन की प्राप्ति। इस प्रकार ब्रह्मयज्ञ का समन्वित अथ हुआ मोक्षोपदेशक शास्त्रो के स्वाध्याय ओर प्रवचन के साथ साथ अहोरात्र की सन्धिवेलाओ मे ईश्वरोपासना। दूसरा हे देवयज्ञ। विद्वानो का सत्कार वायु वृष्टि जल आदि तत्त्वो की शुद्धि देवयज्ञ के प्रयोजन है। कहा है—***यज्ञाद् भवति पर्जन्य पर्जन्यादन्नसम्भव।*** अन्नोत्पत्ति का मूल भी देव यज्ञ है। देवयज्ञ माध्यम है विद्वानो क सत्कार का सेवा का। सीधे किसी न किसी निमित्त से भी विद्वत्सपर्या देवयज्ञ का निष्पादन है। विद्वान का अर्थ है आध्यात्मिक क्षेत्र का सदाचारी अभिज्ञ। ध्यान रहे आध्यात्मिक नेतृत्व के बिना केवल पदार्थ विद्या से समुन्नत समाज मानसिक स्तर पर अध पतित होता है। अमृत का अधिकारी मानव जिस विद्या से होता है वह पदार्थ विद्या नहीं है अध्यात्म विद्या या ब्रह्म विद्या है। विद्वत्सेवा स अभ्यागत का भी विगलन होता है। वे महान आदर के पात्र होने उचित हे जो सासारिक समृद्धि की चमक दमक से दूर रहकर विद्या की अर्चना करते हैं ओर जीवन भर अकिचन रहकर भी प्रसन्न रहते है। जहा राजा रक्तरजित इतिहास का सृजन करते है। वहा से विद्या धन दुनिया को जीवन दर्शन देते है। स्वाहाकार केवल हाहाकार हे यदि यजमान मे विनम्रता त्याग वृत्ति एव सदाचार विद्वानो के प्रति समादर भाव उत्पन्न न हो।

जीवित माता पिता वृद्ध जन गुरु आचार्य की यावत तृप्ति अन्न वस्त्रादि से सेवा पितृयज्ञ है। पूज्य जनो के स्वर्गारोहण के उपरान्त उनकी कीर्तिरक्षा के लिए कोई लोकोपयोगी कार्य भी श्राद्ध के रूप मे करना चाहिए। त्यागी तपी विद्वानो साधु सन्यासियो की सेवा भी करणीय है। ध्यान रहे पौराणिक परम्परा के श्राद्ध तर्पण को युक्तियुक्त एव परिष्कृत रूप देना ही आर्य दृष्टि है।

भूखे प्राणियो को पशु पक्षी चींटी आदि जीवो को भोजन देना बलिवैश्वदेव यज्ञ है तथा अचानक पधारे अभ्यागत अतिथि की सेवा अतिथि यज्ञ है। कहा है जिसके द्वार से अतिथि भूखा लौट जाता है उसके सारे पुण्य ले जाता है। अतिथि सत्कार शिष्टाचार का इतना आवश्यक अग है कि उससे व्यक्ति की एव राष्ट्र की आकर्षक छवि का निर्माण होता है।

मीमासा मे तीन प्रकार के कर्म बताये गये है नित्य प्रतिषिद्ध एव काम्य पच महायज्ञ नित्य कर्मों म गिने गय ह। इनक न करन स पाप होता है। इस सन्दर्भ म मनु का कथन है

ब्रह्मयज्ञ देवयज्ञ भूतयज्ञ च सर्वदा।
नृ यज्ञ पितृयज्ञ च यथाशक्ति न हापयेत।।

ये पच महायज्ञ [illegible] याग की भावना को दृढ बनाने की भूमिका माने जाते है कहा है ***महायज्ञैश्च यज्ञेश्च ब्रह्मीय क्रियते तनू।*** मनुष्य जीवनयापन क लिए अनेक प्रकार से जीव हिसादि वर्जित कर्म करने को बाध्य होता रहता है उसमे जो पाप होता है उसका किचित परिहार इन यज्ञो क द्वारा होता रहता है।

ये पाच यज्ञ मनुष्य की आचार सहिता हे जिनके जरिये मनुष्य अपने ऊपर चढ ऋणो की अशत अदायगी करता है। ये ऋण समाज राष्ट्र और ईश्वर का ऋण। इन ऋणो स यत किचित मुक्ति के लिये पचयज्ञो के जरिये कर्त्तव्यो का निर्धारण किया गया ह। मनुष्य कर्त्तव्य पक्ष को न भूले इसलिये ही पच यज्ञो का नित्य विधान है। इसी से यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म कहा गया है कि वह मनुष्य क कर्त्तव्यो मुटा करता है। ***सम्यञ्चोऽग्नि सपर्यत*** के द्वारा वेद ने हमे मिलकर यज्ञ करने का आदेश दिया है। क्यो ? इसलिये कि यज्ञो द्वारा व्यक्ति उस स्तर तक उठ सकता है जहा से उसे समाज विश्व एक और अखण्ड अनुभव हो। यज्ञमय जीवन समरस और सर्वमय जीवन है जिसमे कोई भेदक ग्रथि है ही नही। यदि यज्ञ का परिणाम दृष्टि मे व्यापकता का विकास नही है तो समझना चाहिए कि यज्ञ को समझा ही नही गया।

यज्ञ दूसरो के लिए जीना सिखाते हैं। सृष्टि स्वय यज्ञ ह। प्रत्येक परमाणु सयोग [illegible] की प्रक्रिया [illegible] विभाग [illegible] चाहिए कि प्रत्येक परमाणु दूसरे पर [illegible] अपक्षा स चल रहा ह। वैज्ञानिक जिसे सापेक्षवाद कहते है वह यज्ञ की भावना का ही रूप है ईश्वर का ऐश्वर्य यज्ञरूप होन मे ही है। सहजीवन सौमनस्य यज्ञ की आत्मा हे

देखिए प्रकति मे यज्ञ का दान अथ कैसे सुसगत हो रहा है।

जीवन दता सूय चन्द्र भी जग हित खुशी जुटाता
प्यास बुझाने का धरती की देखो बादल आता
नदी नीर फल वृक्ष अन्न सब देती धरती माता
सुरभि सर्वत वन समुनो की मारुत है पहुचाता

महायज्ञो का प्रत्यक्ष लाभ यह हे कि उनक अनुष्ठान स प्रदूषण दूर हाते हे। कुविचार मन का प्रदूषण है। ब्रह्मयज्ञ से मानसिक प्रदूषण स मुक्ति मिलती है। देवयज्ञ वातावरण को पवित्र करता ह पर्यावरण की रक्षा का देवयज्ञ उत्तम साधन हे शेष तीनो महायज्ञ परिवार और समाज क स्तर पर जो प्रदूषण ह उनको दूर करत ह। इनम समाज का सुन्दर स्वस्थ सहयोगी एव समरस बनाने की अदभुत सामर्थ्य ह। सारा झगडा ***इद मम इद मम*** का है। यज्ञ ***इदन्न मम*** का पाठ पढाता है। त्याग विश्व की नाभि है [illegible] यज्ञ का अथ हे स्व का परार्थ अपण ह उसका है स्वाहा हे।

बी १ ५१ पश्चिम विहार नई दिल्ली ३

अंग्रेजी की अनिवार्यता तत्काल समाप्त करो

अखिल भारतीय आर्य युवक सभा [illegible] कालोनी नई दिल्ली के [illegible] जसबीर आर्य जी न ससद भवन [illegible] सभा कक्ष म दिनाक १४ सितम्बर [illegible] हिन्दी दिवस क अवसर पर भारत सरकार स जोरदार शब्दो मे माग की है कि देश क सभी राज्यो म शिक्षा क क्षत्र स अग्रजी की अनिवार्यता तत्काल समाप्त की जाये। उन्होने आगे कहा कि अग्रेजी की अनिवार्यता के कारण अधिकतर बच्चे अनपढ रह जाते ह जो बाद मे बाल मजदूर अथवा अपराधी बन जाते हैं। जिस कारण राष्ट्र अधोगति की ओर जा रहा है।

ससदीय हिन्दी परिषद द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम म डा० जसबीर आर्य जी को मुख्य वक्ता के रूप मे आमन्त्रित किया गया था। इस अवसर पर हिन्दी के जाने माने विद्वान सासद विभिन्न पार्टियो के अधिकारी लोक सभा सचिवालय क अधिकारी व अन्य विशिष्ठ व्यक्ति उपस्थित थ। डा० जसबीर आर्य जी ने उपस्थित लोगो को आर्यसमाज एव आर्य समाज द्वारा हिन्दी के क्षत्र म किए जा रहे कार्यो की विस्तार से जानकारी दी।

भवदीय

प० कृष्ण विद्यावाचस्पति
महासचिव
अ० भा० आर्य युवक सभा

(स्वास्थ्य चर्चा)

डेंगू का प्रकोप : क्या करें

डा० संजय

डेंगू अर्थात कमरतोड बुखार एक विषाणु के संक्रमण से होता है। यह विषाणु टोगा फेल्बी जाति का होता है और ऐडीज इजिप्टाई नामक मच्छर द्वारा काटने से व्यक्ति इस बुखार से पीडित हो जाता है। यह रोग मच्छरो की बहुतायत अथात गर्मी के मौसम मे होता है। वैसे इस विषाणु की चार जातिया होती हैं जो कि हर मौसम मे एशिया प्रशात महासागर भागो के अलावा पश्चिमी अफ्रीका मे पाई जाती हैं। इन चार मे से कोई डेगू विषाणु महामारी का कारण बन सकता है।

भारत फिलीपीस थाईदेश क्यूबा मध्य अमरीका के मध्य मे विस्तृत देशो मे इस विषाणु की बहुतायत हैं इस रोक की महामारी अठारवीं शताब्दी से होती रही है। भयकर महामारी ब्रिसबेन मे १९०६ १९२७ डरबन एथेनस १९२८ मे हुई थी। मुख्यत ऐडीज इजिप्टाई मच्छर के अलावा स्टेगोमाया मच्छर की जातिया भी इस रोग को फैलाती हैं। इस बात के भी प्रमाण मिले हैं कि बदरो मे इस विषाणु को पनाह मिलती है। ऐडीज मच्छर घर के छोटे छोटे पौधो के गमलो मे या घर के आसपास एकत्रित पानी मे पलते हैं ।

मनुष्य इन सक्रमित मच्छरो से प्रभावित होने के ५ से ८ दिन के बाद बीमारी का शिकार हो जाता है। हर उम्र व स्त्री व पुरुष समान रूप से इसके शिकार होते हैं। पीडित व्यक्ति तीन विभिन्न लक्षणो द्वारा प्रभावित होते हैं।

कुछ तो सिर्फ बुखार भूख न लगना सिरदर्द व बदन दर्द व शरीर पर हल्के से छपाके निकलना आदि से प्रभावित होते हैं व ७२ घटे के अदर पुन स्वस्थ हो जाते है इसे हल्का डेगू बुखार भी कहा जाता है।

मुख्य डेगू बुखार आख की लाली जुकाम से शुरू होता है कुछ घटे बाद तीव्र सिर दर्द आख के पिछले भाग मे दर्द पैर व जोडो मे दर्द । खासकर पीठ के निचले भाग मे भयकर दर्द होता है जिस कारण इस रोग को "कमर तोड ज्वर" की सज्ञा दी गई है। बुखार बहुत तेज हो जाता है व बीच बीच मे ठड कम्पन के दौरे होते हैं व अधिक पसीना निकलने से अधिक कमजोरी आ जाती है। सिरदर्द यहा तक की गर्दन व सिर घुमाने से अधिक बढ जाता है। इसी प्रकार आख घुमाने से दर्द होता है। नींद व भूख कम हो जाती है व स्वाद भी खराब हो जाता है व नाक से पानी व गले मे दर्द होता है।

ज्वर के तीन या पाचवे दिन के बीच छपाके खास कर शरीर के पिछले भाग मे निकल आते हैं जो बाद मे मुह व हाथो पर खासकर अदर के भाग मे फैल जाते हैं। गर्दन कोहनी व जाघ के ऊपर की गिल्टिया बडे तेज हो जाती हैं। इन छपाको मे मामूली सी खुजली भी होती है और एक दो दिन मे यह ठीक हो जाते हैं दाने की तरह के छपाके निकल आते हैं।

दो या तीन दिन बाद बुखार कम हो जाता है या सामान्य हो जाता है और मरीज करीब सभी लक्षणो से मुक्त हो जाता है लेकिन दो दिन बाद फिर यही लक्षण पुन उभर आते हैं हालाकि इस बार वह इतने तीव्र नहीं होते। डेगू ज्वर का दो बार उभर आना एक विशेष व महत्वपूर्ण लक्षण है। ५ से ६ दिन बाद बुखार ठीक हो जाता है व व्यक्ति कई हफ्तो तक कमजोरी का शिकार बना रहता है। दोनो प्रकार का डेगू ज्वर जानलेवा नहीं होता व ४ से ६ दिन में स्वत ही ठीक हो जाता है।

इस रोग का निदान रक्त म इसक विषाणु का कलचर कराके व रक्त की विशेष जाचो द्वारा पक्का पता चला जाता है। जहा तक इलाज का प्रश्न है बुखार व दर्द के लिए पेरासिटामोल का उपयोग किया जाता है। एसपिरिन जहा तक हो नही लेना चाहिए। तरल पानी दूध सूप फलो का रस आदि अधिक मात्रा मे सेवन करना चाहिए।

तीसरे प्रकार का डेगू ज्वर जान लेवा भी हो सकता है।

हिमोरेजिक डेगू ज्वर शुरू मे तो पहले के ज्वर जैसा ही लगता है यह खास कर व्यस्क व बच्चो मे ज्यादा पाया जाता है। अचानक ही मरीज की हालत नाजुक हो जाती है। हाथ पैर ठडे पड जाते हैं व रक्तचाप गिर जाता है। खून की उल्टी काले रग का पखाना कभी कभी नाक से खून आना इसका मुख्य लक्षण है। पीडित का स्वास्थ्य तेजी से गिरना शुरू हो जाता है और यदि पर्याप्त इलाज नहीं किया गया तो मृत्यु का शिकार भी हो सकता है।

रोकथाम के तौर तरीको मे मच्छर मानव जाति का दुश्मन है इसे घर मे गमलो मे नाली मे रूके हुए पानी मे न पलने दे। मच्छर भगाने वाली क्रीम खासकर सुबह व दोपहर को शरीर के खुले भाग मे लगाए। इस रोग की रोकथाम करने वाला वैक्सीन का निर्माण तो हो गया है लेकिन अभी व्यावसायिक रूप से निर्मित न हो पाने के कारण उपलब्ध नही है। तब अपने शरीर की रक्षा मच्छर के शिकार होने से करे व डेगू ज्वर से बचे ♣

डेंगू का होम्योपैथिक उपचार

डा० ए०के०अरुण

प्राय सभी चिकित्सा पद्धतियो मे डेगू बुखार से बचने तथा इसके इलाज पर गहन अध्ययन और चितन जारी है। अखबारो की ताजा रिपोर्ट मे अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान सस्थान म रह रहे चार कनिष्ठ चिकित्सको को भी डेगू बुखार के शक पर सस्थान मे भरती कराया गया है।

'डेगू' को आम प्रचलित भाषा मे 'हड्डी तोड' बुखार भी कहते है। कोई २६ वर्ष पूर्व १९७० मे लगभग इसी समय दिल्ली मे इस बुखार का जबरदस्त सक्रमण हुआ था। उस समय यह बुखार कानपुर तथा लखनऊ मे भी फैला था। डेगू रक्त ज्वर पिछले तीन दशक से डेगू बुखार को डेगू रक्त बुखार भी कहा जा रहा है। विश्व स्वास्थ्य सगठन के अनुसार हाल के वर्षों मे डेगू रक्त ज्वर एक बडी जन स्वास्थ्य समस्या बनता जा रहा है। इस खास बुखार का कारण डेगू के एक से ज्यादा किस्मो का एक साथ आक्रमण माना जा रहा है। इस बुखार मे श्वास की दिक्कते भी हो सकती हैं। दो चार दिनो के हल्के सक्रमण के बाद अचानक रक्तचाप का कम हो जाना शरीर पर दाने निकलना चमडे के अन्दर रक्तचाप तथा कान नाक से रक्त का बढना खून की उल्टी तथा कभी कभी लम्बी बेहोशी के लक्षण उभर जाते हैं। खून की उल्टी तथा कोमा (बेहोशी) की स्थिति मे रोगी का बचना मुश्किल होता है।

'चिकुगुनिया' नाम का एसा ही खतरनाक वायरस १९५२ ई० मे खोजा गया था जो खून की उल्टी वाले बुखार के लिए दक्षिणी पूर्वी एशिया महाद्वीप मे चर्चित है।

बचाव

इस बुखार से बचने के लिए मच्छरो से बचाव तथा इसके पनपने पर रोक लगाना बेहद जरूरी है। डेगू के विशेष मच्छर एडीस तथा इसके लार्वा के नष्ट करने के लिए आरगेनो फास्फोरस नाशक एबेट का प्रयोग करना चाहिए यह एक सरक्षित कीट नाशक माना जाता है तथा लगभग तीन महीने तक मच्छरो को पनपने बढने मे रोक सकता है। इसे पानी मे मिलाना चाहिए। यह पानी के स्वाद को भी प्रभावित नहीं करता।

बडे पैमाने पर महामारी के रूप मे डेगू के फैलने पर अत्यन्त सूक्ष्म रूप मे मच्छर नाशक मालथियान या सुमिथियान (लगभग २५० मि०ली० प्रति हेक्टेयर) का हवा मे छिडकाव करना चाहिए।

सामान्य रूप से यह जरूरी है कि कोठियो फ्लेटो मे रहने वाले लोग अपने कूलर टकियो नालियो मे पानी एक दो दिन से ज्यादा समय तक जमा न रहने दे। पानी जमा होने के स्थान पर मिट्टी का तेल या कीटनाशक डाले।

सरकार व समुदाय के स्तर पर सफाई व जनस्वास्थ्य के सभी जरूरी उपाय होने ही चाहिए।

होमियोपैथिक चिकित्सा पद्धति में डेगू बुखार के लक्षणो के उपचार के लिए कई दवाईया हैं। १९७० मे जब डेगू बुखार फैला था तब व्यापक अध्ययन और परीक्षण के बाद होमियोपैथी की दवा 'यूपेटोरियम परफोलेटम' को रोग निरोधी दवा के रूप मे सफलतापूर्वक प्रयोग मे लाया गया था। भारत सरकार के केन्द्रीय होमियोपैथिक अनुसधान परिषद के निदेशक तथा प्रसिद्ध होमियोपैथिक चिकित्सा वैज्ञानिक डा० डी०पी०रस्तोगी के अनुसार हालाकि डेगू बुखार से बचने के लिए होमियोपैथिक दवा के चयन का अध्ययन जारी है लेकिन यूपेटोरियम परफोलेटम २०० की एक खुराक सुबह शाम लगातार एक सप्ताह तक लेना लाभप्रद होगा।

डेगू बुखार मे होमियोपैथी की दवा कारगर है। रोग लक्षणो की सदृष्यता के आधार पर किसी जानकारी या होमियोपैथिक चिकित्सक की देख रेख मे उपचार हाना चाहिए।

एकोनाइट तेज बुखार लेकिन ठडा पसीना बेचनी तथा तेज प्यास इस दवा के मुख्य लक्षण है। डेगू के आरम्भिक स्थिति मे यह एक अच्छी दवा है। इसे ३० शक्ति मे दो या तीन घटे के अन्तराल पर लेना चाहिए।

बेलाडोना यह दवा विशेषकर बच्चो के डेगू बुखार की अच्छी दवा है। इसके रोग लक्षणो मे तेज बुखार (२०४ १६ फारेनहाइट) जलन सर दर्द लेकिन प्यास नही पाव ठडे हो चेहरा लाल जोडो मे दर्द बिजली के झटके की तरह महसूस हो तो दवा की ३० शक्ति दो या तीन घटे के अन्तराल पर देनी चाहिए

जेलसेमियम डेगू का ऐसा बुखार जिसमे नाडी धीरे चले मासपेशियो मे दर्द हो तेज सर दर्द ठड लगे चक्कर आए शरीर ढीला हो प्यास न लगे पीछे कमर मे दर्द हो चमडे पर फुन्सी जैसे दाने हो तो जेलसेमियम ३० शक्ति की १० १२ खुराक तीन चार घटे के अन्तराल पर दे।

रसटक्स इस दवा के लक्षणो मे बेचैनी बदन मे दर्द जिह्वा सूखे तथा भूरे रग के हो तेज प्यास लगे जोडो मे तेज दर्द हो सोने मे तकलीफ हो बुखार बढे गर्म सिकाई से आराम आए तो दवा की ३० शक्ति तीन चार घटे के अन्तराल से लेनी चाहिए।

इयूपेटोरियम परफोलेटम डेगू बुखार के लिए यह दवा सर्वोत्तम दवा मानी जाती है। इस दवा के लक्षणो मे हड्डी मे दर्द मुख्य है इस बुखार को हड्डी तोड बुखार भी कहते है। उल्टी होना सर के अग्र भाग मे दर्द। तेज प्यास ठढ लगना जीहवा पर उजली परत का जमना आदि प्रमुख लक्षण है। इस दवा को बोन सेट या हड्डी जोड भी कहते हैं। दवा की २०० शक्ति दिन मे तीन चार बार ले।

यह दवा डेगू के रोग विरोधी दवा के रूप मे भी मानी गई है। बुखार की शिकायत पर इस दवा की दो खुराक प्रतिदिन सुबह-शाम एक सप्ताह तक लेनी चाहिए।

डेगू बुखार हालाकि आक्रामक बुखार है लेकिन समय पर इसकी जानकारी और चिकित्सा से यह ठीक हो जाता है। बुखार के आरम्भ मे इसे पहचानना कठिन होता है लेकिन यदि बुखार के साथ जोडो म तेज दर्द हो तो डेगू का शक करना चाहिए।

डेगू बुखार छूत का बुखार या रोग नहीं है अत रोगी से भेदभाव नहीं रखना चाहिए। रोगी को एक साफ हवादार कमरे मे लिटाना चाहिए। मच्छरो का पूरा ध्यान रखे मच्छरदानी का प्रयोग करे कमरे व मकान के चारो तरफ मच्छरनाशक का प्रयोग करे। गन्दगी से बचे तो बुखार पर काबू पाया जा सकता है। ♣

शराब से सर्वनाश

पृष्ठ ५ का शेष

शिवाजी महाराज को महान बनाने वाली उनकी महान माता जीजाबाई थी। वह पवित्र एव धार्मिक विचारो की नारी थी। वह शिवाजी महाराज को रामायण तथा महाभारत की कहानिया सुनाती थीं तभी तो शिवाजी ससार मे चमक गए थे।

उच्च चरित्र व शाकाहारी भोजन के कारण ही उन्होने महान साम्राज्य की स्थापना की। शिवाजी महाराज के उच्च चरित्र और विकट वीरता के आगे महा शक्तिशाली पापी औरगजेव (आलमगीर) को भी हार माननी पडी थी उनका नाम सुनकर मुसलमानो की सेना मे हा हा कार मच जाता था। वे महावीर अदम्य साहसी थे।

यह भारत का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि उनकी मृत्यु केवल ५३ वर्ष की अवस्था मे ही हो गई और भारत की स्वतन्त्रता का उस देव पुरुष का स्वप्न पूरा न हो सका।

उसी बहादुर देश भक्त का पुत्र सम्भा जी जब सुरा सुन्दरी का दीवाना बन गया तो वह और उसका साथी कुल कलेश शराब के नशे मे पकडे गए और औरगजेब ने उनको कत्ल करवा दिया। इस प्रकार मद्यपान के कारण सम्भा जी ने मराठा राज्य नष्ट कर दिया।

आज कल छोटे छोटे व्यक्ति भी मद्यपान करने लगे हैं। यह सब सरकार की गलत नीति का परिणाम है। सरकार राजस्व प्राप्ती का बहाना बना कर देश की जनता को शराब पिलाकर धर्म भ्रष्ट कर रही है। देश मे दिन प्रतिदिन चरित्र हीनता बढती जा रही है भारत के युवक युवतिया कामी बनते जा रहे हैं। गुण्डा गर्दी बेईमानी उग्रवाद आतकवाद का बोल बाला है। हत्याए बलात्कार की घटनाए बढ रही हैं जिससे पूरा देश दु खी है।

ऋषियो ने शराब को पापो की जननी बताया है। सौ दुर्घटनाओ हत्याओ मे से ८० प्रतिशत शराब के कारण होती है। फिर भी सरकार इस बुराई को नही मिटाती इससे बडी दु ख की बात और क्या होगी ?

महर्षि दयानन्द सरस्वती लोक मान्य तिलक महात्मा गाधी आदि सभी महापुरुषो ने मदिरा पान घोर पाप माना है इसलिए भारत की जनता को इस जीवन धातक मदिरा के विरुद्ध जोर दार आन्दोलन छेडना होगा तभी देश की अधी बहरी गूगी निकम्मी सरकार इस महा कलक को मिटाएगी। भगवान भारत वासियो को शक्ति साहस प्रदान कर

आर्य सदन बहीन (फरीदाबाद)

सत्य की विजय

काम भलाई के करता है प्या आर्य समाज सुनो
अबला दीन अनाथो की जो सदा बचाता लाज सुनो

दानव दल से टकराता है तज अपना सुख साज सुनो
परोपकारी सच्चा है यह करता सदा सुकाज सुनो

देश धर्म मानवता पर जब सकट कोई आता है
प्यारा आर्य समाज हमारा सकट से टकराता है

वेद विरोधी हजारो से कभी नही दहलात है
साहस का ये महापुज है विजय सदा ही पाता है

महादेव का देश जगत मे कहलाता है हरयाण
जिसके यौद्धाओ के बल को सर्व विश्व ने है मान

हरयाणा का युवा वर्ग बन गया सुरा का दीवाना
हरयाणा की पीडा को तब आर्य वीरो ने जाना

स्वामी दयानन्द योगी के वीर बहादुर सेनानी
प्राण हथेली पर रख करके बढे सूरमा बलिदानी

नाश निशानी है यह मदिरा लगा दिया निर्भय नारा
सिह गर्जना सुन वीरो की चकित हुआ था जग सारा

किया आन्दोलन मदिरा को गन्दा पानी बतलाया
वेद प्रचार किया वीरो ने दोष सुरा का समझाया

डन्डे खाए सही मुसीबत गये जेल मे बलध री
सूखे प्यासे रहे बहादुर कभी नही हिम्मत हारी

चौधरी बशीलाल धन्य हैं जिसने गल्ती को माना
बन्द शराब करादी जिसने हित अनहित को पहचाना

विजय सत्य की हुई अन्त मे मान गई दुनिया सारी
आर्य वीर वचन पालक है गुण गाते है न ारी

वीरो का प्यारा हरयाण मिटने से बा ज
निर्बल निर्धन भूखा नगा नजर न आई अ

अगर सभी भारत के नेता वैदिक पथ पर आ जा
चमक उठेगा भारत जग को जगत गुरु हम कह ए

हे भगवान दया के सागर भारत पर कृपाकर दो
भारत मा की गोद दयामय वीर सपूतो से भर दो

राम भरत लक्ष्मण हनुमान से भेजो फिर यहा
योगी राज कृष्ण अर्जुन के गाए ब गुणगान ५६

प नन्द लाल निर्भय भजनोपदेशक
आर्य सदन बहीन जनपद फरीदाबाद हरयाणा

प्रासगिकता—गाधी और गाधीवाद की

पृष्ठ ४ का शेष

भारत का विभाजन हो गया। पाकिस्तान और भारत दो राष्ट्र बन गये लाखो लोगो की जाने गई किन्तु गाधी जी जिनका वादा था कि पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा को कुछ नहीं हुआ। पाकिस्तान मुसलमानो के लिए इसलिये मागा गया था कि वे हिन्दुओ के साथ नहीं रह सकते थे ८७ प्रतिशत मुस्लिम वोटरो ने पाकिस्तान के पक्ष मे वोट दिया। केन्द्रीय असेम्बली की मुस्लिम सीटे ३० थी और सभी मुस्लिम लीग ने जीती कांग्रेस को एक भी मुस्लिम सीट नहीं मिली पाकिस्तान ने अपने प्रदेश से चुन चुन कर हिन्दू और सिक्खो को या तो मार दिया या भारत मे धकेल दिया। ऐसी स्थिति मे किस आशा और विश्वास के साथ गाधी जी ने भारत से मुस्लिम समुदाय का पलायन रोका। एक मुस्लिम बुद्धिजीवी अनवर शेख ने तो कहा कि भारतीय मुसलमानो का सबसे बडा नेता मोहन दास करमचन्द्र गाधी ही हुआ है। जिसने अपने समस्त प्रभाव का उपयोग हिन्दू जन समुदाय पर इस प्रकार किया कि वे मुसलमानो को भारत से न निकाले जैसा पाकिस्तान ने किया। आज की नई पीढी यह सब प्रश्न पूछने लगी है।

गाधी जी ने अपना उत्तराधिकारी उन्हीं प० जवाहर लाल नेहरू को बनाया और उन्हे भारत के भविष्य की डोर थमा दी जिन्होने गाधी जी के हिन्द स्वराज्य मे प्रतिपादित सिद्धान्तो और राम राज्य की अवधारणा का लिखकर खडन किया था जवाहर लाल नेहरू ही बडे बडे उद्योगो और शहरी सभ्यता के हिमायती थे वे गावो को कूडादान समझते थे जो रामराज्य नहीं सावियत सघ की तर्ज पर समाजवादी व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे जो हिन्दी और हिन्दू दोनो के विरोधी और अग्रेजी भाषा और अग्रेजी सभ्यता के पक्षधर थे। १२ जनवरी १९२८ के यग इडिया मे गाधी जी ने एक लेख लिखा जिसमे आग्रह किया कि अग्रेजी के इडिपेडेस शब्द की जगह स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया जाये। इसका प्रतिवाद करते हुए जवाहर लाल नेहरू ने गाधी जी को लिखा आपका लेख पढकर मुझे लगा कि मेरे और आपके बीच एक बहुत बडी सैद्धान्तिक खाई है। आपको पश्चिमी सभ्यता के विषय मे गलतफहमी है। मै आपके विचारो से पूर्ण रूप से असहमत हू और मानता हू कि आपका रामराज्य न तो पहले कभी अच्छा था और न ही मैं इसे स्थापित करना चाहूगा मेरी मान्यता है कि पश्चिम की औद्योगिक सभ्यता ही भारत मे फैलेगी। सन १९४५ मे नेहरू जी ने अपने विचारो को फिर दुहराया।

सन् १९२१ मे तो गाधी जी ने भारत को हिन्द स्वराज्य के सिद्धान्तो के लिये तैयार ही नहीं पाया। तो भी इस बात का प्रमाण है कि १९ ४ तक गाधी जी अपने किसी भी पुराने सिद्धान्त से विमुख नही हुए। जवाहर लाल नेहरू से गाधी जी को आत्मीयता अवश्य थी पर सैद्धान्तिक मतभेद कई बार उग्र रूप मे प्रकट होते रहे। प्रश्न यह उठता है कि क्या १९४६ ४७ आते आते गाधीवाद उनकी धोती लगोटी तक सिमट कर रह गया था और मानसिक रूप से वे जवाहर लाल नेहरू के आदर्शो के आगे आत्मसमर्पण कर चुके थे। यदि ऐसा नही था तो उन्होने क्या अपना सारा जोर नेहरू से अधिक योग्य और एक निष्ठ गाधीवाद सरदार पटेल के स्थान पर जवाहर लाल को देश की बागडोर दिलवाने मे लगाया। क्यो अनुशासन प्रिय पटेल को ही बलि का बकरा बनाकर जवाहर लाल का नायक बनाया वास्तविकता यह है कि हिन्द स्वराज्य मे प्रतिपादित गाधीवाद का सवरूप भिन्न है जिसका पैरोकार सरदार पटेल था गाधी द्वारा ने अगीकत मुस्लिम परस्ती उनके उत्त जवाहर लाल नेहरू द्वारा प्रतिपादित और द्वारा क्रियान्वित पालिसी को भी गाधीवाद की ही सज्ञा दी गई। इसी गाधीवाद का सरकारी तौर पर प्रचार व प्रसार ५० साला से हो रहा है आज जब भारतीय जनता पार्टी गाधी जी के नाम स्वदेशी स्वावलम्बन और रामराज्य का समर्थन ले लेती है ता उसकी हसी उडाई जाती है क्योकि भाजपा जिस गाधीवाद की बात करती है वह सिर्फ गाधी जी के हिन्द स्वराज्य मे है जो तो गाधी जी स्वय छोड चुके थे ♣

सोमयुक्त जीवन–योग

☞ कोई दूसरा व्यक्ति मेरा 'जीवन' नहीं बना सकता है। 'बताना' बात और है और बनाना बात और। 'जन्म' की 'मृत्यु' है पर जीवन तो अबिरल धारा है। अपने जीवन को जीवन्त बनाने की आवश्यक क्रिया तो मुझे ही करनी होगी।

☞ जैसे उचित मात्रा में स्वच्छ खाद्य सामग्रीयों मसाले व ताप से भोजन सुस्वादु बनाया जाता है ऐसे ही 'जीवन' भी बेजायका या बदजायका न रखकर सुस्वादु बनाऊगा।

☞ स सोमेन सृजामि– यजुर्वेद १६/१ मजाक वेदमाता बता रही है कि सोम में सयुक्त होकर 'जीवन' सृजित हो जाते हैं। निश्चय हो गया कि उस परम सत्ता ओ३म् के सत्य– शिव–सुन्दर 'सोम' आश्रय से मेरा भी जीवन सुस्वादु होगा।

☞ इन्द्रियो के भोगो (रूप रस शब्द गन्ध स्पर्श) को भोगकर इनकी तृष्णा आग मे घी डालने जैसे बढती जाती है इसलिए इस मरणधर्मा एन्द्रिक 'शरीर' की रक्षा में शारीरिक सुखों के लिए नहीं बल्कि शाश्वत 'आत्मा' के जीवन आन्नद 'सोम' प्राप्ति के लिए करूगा।

☞ जड पदार्थों (भूमि भवन सोना) व चेतन (पति पत्नी पुत्र मित्र) की वृद्धि या हानि कई सयोगो से होती है इसलिए इनकी समुचित वृद्धि एव व्यवहार धार्मिकता व उत्कृष्टता से लेकिन निष्काम भाव से करूगा।

यम नियम पालन के फल

अहिंसा	*बैरभाव न्यून/नष्ट होगा*
सत्य	*उन्तम इच्छाए सफल होगी*
अस्तेय	*आध्यात्मिक व भौतिक गुण व पदार्थों की प्राप्ति*
ब्रह्मचर्य	*शारीरिक व बौद्धिक बलो की प्राप्ति*
अपरिग्रह	*आत्मज्ञान व जन्मजन्मातर का ज्ञान*
शौच (शुद्धि)	*गन्दगी के अनुभव से शरीरो का आकर्षण घटेगा एकाग्र बुद्धि बन जाने से साधक इन्द्रजीत बनेगा।*
सन्तोष	*विषय भोगने की इच्छा नष्ट होकर शान्ती का सुख*
तप	*शरीर इन्द्रिय मन बलिष्ठ होकर नियत्रण में होती है।*
स्वाध्याय	*आध्यात्मिक पथ पर दृढ़ता उत्पन्न होकर सोम प्राप्ति*
ईश्वर– प्राणीधान	*ईश्वर की सर्वत्र उपस्थिति का आभास से समाधि शीघ्र लगना।*

☞ अर्जित एव सयोगों से उपलब्ध सभी ससाधनों का 'सोम' प्राप्ति हेतु दोहन पूरे पुरषार्थ से करते रहने के उपरान्त ही इस अल्पज्ञ याचक 'पुत्र' की अपने सर्वज्ञ ओ३म' से अधिकारी प्रार्थना है कि मेरे 'सोमयुक्त जीवन व्रत' को चरितार्थ करने की बुद्धि सामर्थ्य सयोग वे मुझमें सदैव बनाए रखे।

☞ 'सोमयुक्त जीवन' को जीवन्त करने के लिए मैंने दृढता से अपने पग महर्षि पातञ्जल के अष्टाग योग की प्रथम सीढी यम (अहिसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह) नियम (शौच सतोष तप स्वाध्याय ईश्वर प्रणिधान) हेतु उठा दिए हैं। चूकि क्रिया तो मुझे ही करनी है अत कर्त्तव्य कर्मो को मैं टकराऊगा नहीं बल्कि अब शीघ्रता से नियमपूर्वक निबटाऊगा।

प्रकाशक

आचार्य कर्मवीर शास्त्री प्रतिष्ठान (प०)
आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग नई दिल्ली

राधा कृष्ण शान्ती देवी आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट (प०)
२७ भामाशाह मार्केट कमला नगर दिल्ली

हिन्दी के लिए अंग्रेजी मानसिकता हटाना आवश्यक

कानपुर आर्य समाज गोविन्द नगर के तत्वावधान में हिन्दी दिवस के सम्बन्ध मे एक समारोह केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता में किया गया।

समारोह मे अध्यक्ष श्री देवीदास आर्य ने कहा कि जब तक देश मे अग्रेजीयत की मानसिकता रहेगी तब तक हिन्दी को सर्वोच्च स्थान नहीं मिल सकता। अत सबसे पहले अग्रेजी मानसिकता को समूल नष्ट करना पडेगा तभी हिन्दी का विकास सम्भव है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के श्री बाल गोविन्द आर्य ने कहा कि यह कितनी लज्जा की बात है कि आजादी के ५० वर्ष बाद भी हम हिन्दी दिवस मना रहे हैं। जब तक नौकरियों की परीक्षाओ मे अग्रेजी विषय से सम्बन्धित प्रश्न पत्र को सम्मिलित किया जायेगा हिन्दी के साथ न्याय नहीं हो सकेगा।

डा० जाति भूषण ने कहा कि सब लोगों को अपने निजी तथा सामाजिक कार्यो मे हिन्दी को अपनाना चाहिए।

समारोह में सर्वश्री देवीदस आर्य प० जगन्नाथ शास्त्री प्रज्ञा नन्द जाति भूषण बाल गोविन्द आर्य श्रीमती चन्द्रकान्ता गेरा मनोरमा देवी सीला उप्पल आदि ने प्रमुख रूप से विचार व्यक्त किये। समारोह की अध्यक्षता श्री देवीदास आर्य ने सचालन मत्री श्री बाल गोविन्द आर्य ने किया।

बाल गोविन्द आर्य मत्री

प्रजातन्त्र में आरक्षण को कोई स्थान नहीं

समान नागरिक संहिता लागू की जाए

रामप्रकाश

हमारी शासकीय प्रणाली प्रजातन्त्र पर आधारित है और इसके साथ जुड़ा शब्द है समानवाद तथा धर्मनिरपेक्षता। यहीं से प्रारम्भ होता है विरोधाभास। धर्म (कर्त्तव्य) की अवहेलना का परिणाम क्या होगा उसका अनुभव होने लगा है। अन्त क्या होगा अनुमान लगा रहे हैं। सब अपने विवेक अनुसार कारण भेद भाव पूर्ण व्यवस्था जति वर्ग समुदाय क्षेत्र लिंग सख्या के आधार पर सरक्षण और आरक्षण न हो वरन् सरक्षण प्रत्येक नागरिक को प्रदान करना किसी भी तन्त्र में शासन का कर्त्तव्य है और आरक्षण के लिए प्रजातन्त्र मे कोई स्थान नहीं होना चाहिए। प्रजातन्त्र मे समान नागरिक सहिता ही उचित है वरन प्रजातन्त्र और समाजवाद कैसा ? जहा भेद भाव हो समाजवाद की भावना ही नष्ट हो जाती है। राष्ट्र की अखण्डता के लिए शक्तिशाली निर्माण के लिए आरक्षण के स्थान पर वरीयता का सिद्धान्त अपनाना चाहिए। ऐसा विधान होना चाहिए जिसमें योग्यता मे कोई कमी न हो परन्तु वरीयता उनको प्राप्त हो जिनके परिवार का कोई सदस्य राजकीय कर्मचारी न हो। पिछडे क्षेत्र के आधार पर तथा निर्धन असहाय के आधार पर उनके लिए पढाई की सुविधाए प्रदान की जाए आयु सीमा मे यथोचित छूट विशेषतया सैनिको व अन्य सुरक्षा बलो मे कार्यरत तथा अवकाशप्राप्त व्यक्तियो के परिवारो को प्राप्त होनी चाहिए। यही एक उपाय हो सकता है।

राष्टवाद की भावना जाग्रत करने का आपस मे मेज जोल का और देश मे साक्षरता बढाने का प्रत्येक परिवार की आर्थिक अवस्था सुधारने का प्रयत्न हो। मात्र ईसाइयो मे पिछडो के आरक्षण का विरोध कल मुसलमानो के लिए आरक्षण का विरोध आदि आदि कुर्सी की दौड में स्वार्थी राजनेताओ के हथकण्डो का विरोध निश्चय ही स्थियी फलदायक नहीं होगा। अत आर्यसमाज ने यदि इस विषय (आरक्षण) को गम्भीरता से लिया है तो आरक्षण को मूलत समाप्त करने कराने के लिए सघर्ष करना चाहिए। के०डी०/७८ ए, अशोक विहार, फेस १ नई दिल्ली-५२

आर्यसमाज माडल टाउन लुधियाना मे वेद प्रचार

आर्य समाज माडल टाउन लुधियाना मे २७ से २९ सितम्बर ९६ तक वेदप्रचार के आकर्षक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आचार्य राम प्रसाद जी विद्यालकार भू०पू०उपकुलपति गुरुकुल कागडी विश्व विद्यालय हरिद्वार ने प्रतिदिन प्रात तथा साय को अपने ओजस्वी विचारो से जनता जर्नादन को लाभावित किया। प्रतिदिन प्रात काल को यज्ञ भजन तथा प्रवचन भी हुए। ♣

...द्या केन्द्र की स्थापना

आपको यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि हिमालय की पावन गोद मे उद्गीथ आर्ष विद्या केन्द्र की स्थापना की गई है। इस केन्द्र मे वर्णोचारण शिक्षा से लेकर सस्कृत व्याकरण के अध्यापन की उचित व्यवस्था है। इस केन्द्र मे शास्त्रो के अध्यापन के साथ ब्रह्मचर्य ध्यान योग एव राष्टभक्ति पर भी विशेष बल दिया जायेगा। अत आर्ष शैली से अध्ययन करने के इच्छुक छात्र प्रवेश के लिए प्रार्थना पत्र दे सकते है। विशेष आश्रम मे समय समय पर ध्यानशिविर व आर्यवीर शिविर भी लगते रहते हैं।

विद्यार्थी की पात्रता

१ आयु १६ वर्ष से ऊपर होनी चाहिए।
२ योग्यता न्यून से न्यून १०+२ उत्तीर्ण। विश्वविद्यालय के स्नातको को वरीयता दी जायेगी।
३ स्वास्थ्य विद्यार्थी निरोग एव समस्त कार्यो को करने मे समर्थ हो।
४ मेधावी एव समर्पित विद्यार्थियो की व्यवस्था सर्वथा नि शुल्क होगी

पता उद्गीथ साधना स्थली पजीकृत धमार्थन्यास (हिमालय) ग्राम डेहर राजगढ सिरमौर पिन १६३१०१ दूरभाष ०१७९९ ३०९१

सस्थापक
आचार्य श्री आर्यनरेश
वैदिक प्रवक्ता ♣

द्विमासीय वेदप्रचार का आयोजन

चम्पारण जिला आर्य सभा ने वैदिक ज्ञान को जन-जन तक पहुचाने के अपने सतत कार्यक्रम के अन्तर्गत दो माह तक लगातार वेद प्रचार कार्यक्रम को चम्पारण के ग्राम ग्राम में चलाने की योजना बनाई है जिसका शुभारम्भ ०८ ०८ ९६ को रतनमाला (सरिसवा) ग्राम में हुआ।

इसके अतिरिक्त अन्य ग्रामों में भी प्रचार की योजना शीघ्र घोषित की जाने वाली है। दो माह तक चलने वाले इस वैदिक अभियान में प० सदानन्द शास्त्री गुरुकुल महाविद्यालय बैरगनिया प० दयानन्द सत्यार्थी भजनोपदेशक बि०रा०आ०प्र० पटना प० रामचन्द्र क्रान्तिकारी नेपाल प० ध्रुवजी आय जिला प्रचारक आदि विद्वानों का सक्रिय सहयोग प्राप्त हो रहा है।

करुणा सागर मासिक पत्रिका का भव्य दिवाली अंक

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आप सर्वमहानुभावो के सहयोग से करुणा सागर (मासिक) पत्रिका अब अपने दूसरे वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। अब अक्टूबर तथा नवम्बर मास का सयुक्ताक भव्य दिवाली अक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। अत आपसे अनुरोध है कि आप अपनी दुकानों कम्पनियों तथा व्यावसायिक प्रतिष्ठानो के विज्ञापन देकर सहयोग करने की कृपा करे। हमें पूर्ण विश्वास है कि हमेशा की तरह इस बार भी आपका पूर्ण सहयोग हमे प्राप्त होगा।

विज्ञापन की दरे

एक रग में पूरा पृष्ठ	२,००० रुपये
एक रग में आधा पृष्ठ	१००० रुपये
एक रग में चौथाई पृष्ठ	५०० रुपये
सादा पृष्ठ	१००० रुपये
आधा पृष्ठ	५०० रुपये
चौथाई पृष्ठ	२५० रुपये

अशोक कुमार आर्य
सम्पादक
कार्यालय ६१३/५ विन्दापुर नई दिल्ली ५९

ईसाई युवती ने वैदिक धर्म अपनाया

कानपुर आर्य समाज मन्दिर गोविन्द नगर मे केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने एक २४ वर्षीय ईसाई युवती को उसकी इच्छानुसार वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) की दीक्षा देकर यज्ञपवीत धारण कराया। उसका नाम शैनी जास से बदल कर शालिनी पिलई रखा। यह स्थानीय नर्सिंग होम मे नर्स का कार्य करती है। शुद्धि सस्कार के पश्चात श्री देवीदास आर्य ने शालिनी का विवाह ब्राह्मण युवक प्रकाश एम०के०पिलई के साथ वैदिक रीति से कराया। शालिनी व प्रकाश दोनो केरल निवासी है और कानपुर मे कार्यरत हैं। ♣

शोक समाचार

अन्त्येष्टि सस्कार व शातियज्ञ सम्पन्न

श्री शिव कुमार आर्य के पिता स्व० श्री सीता साहजी का देहावसान हो गया जिसका अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीतिनुसार उच्चस्वर मत्रोच्चारण के साथ प० युगल किशोर आर्य (सस्कार शास्त्री) के द्वारा किया गया।

दिनाक ८ ८ ९६ को शान्ति एव वृहद यज्ञ प० शत्रुघ्न आर्य के द्वारा वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ सम्पन्न किया गया तथा दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए परमात्मा से कामना की गयी प्रीतिभोज श्रद्धा पूर्वक रखा गया जिसमें अनेक आर्य सदस्य व ग्रामीण सदस्यों का प्रीति भोज सराहनीय रहा।

मत्री डॉ० राजेन्द्र कुमार आर्य समाज
वेद आश्रम अगहरा ♣

आर्य समाज, पाली जनपद-हरदोई (उ०प्र०) का निर्वाचन

दि० १२-८ ९६ ई० को आर्य समाज पाली जनपद हरदोई की समिति का निर्वाचन श्री सुरेन्द्र कुमार वाजपेयी प्रशासक आर्य समाज पाली हरदोई की अध्यक्षता मे विधिवत सम्पन्न हुआ जिसमे वर्ष १९९६ ९७ ई० हेतु निम्नलिखित कार्य समिति का गठन सर्वसम्मति स किया गया सगठन मे निम्न लिखित पदाधिकारी निर्वाचित घोषित किये गये। जिला आर्योप प्रतिनिधि सभा हरदोई के उपमत्री श्री सत्यवीर प्रकाश आर्य एडवोकेट ने इस निर्वाचन को सत्यापित किया है

समिति	१	श्री सुरेन्द्र कुमार बाजपेयी	(प्रधान)
	१	श्री चन्द्र प्रकाश मिश्र	(वरिष्ठ उपप्रधान)
	१	श्री रामदेव बाजपेयी	(उपप्रधान)
	१	श्री राधे श्याम जोशी	(मत्री)
	१	श्री धर्मेन्द्र कुमार	(वरिष्ठ उपमत्री)
	१	श्री सुधीर कुमार बाजपेयी	(उपमत्री)
	१	श्री वेद प्रकाश आर्य	(कोषाध्यक्ष)
	१	श्री हृदय नारायण शुक्ल	(निरीक्षक)

सुरेन्द्र कुमार बाजपेयी
प्रशासक
आर्य समाज पाली (हरदोई) (उ०प्र०)

क साप्ताहिक 6-10-96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/96
without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 3/4-10-1996

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज खैरथल जिला अलवर का वार्षिकोत्सव दिनाक १४ १५ सितम्बर ६६ को बडी धूमधाम से मनाया गया।

इस उत्सव मे दोनो दिन बृहद यज्ञ किया गया। श्री भरतलाल शास्त्री हाँसी (हरियाणा) ने यज्ञ पर प्रभावशाली व्याख्यान दिये।

इस अवसर पर स्त्री शिक्षा पाखड खडन राष्ट्र रक्षा तथा मद्य निषेध सम्मेलन किये गये।

उत्तरी भारत के प्रसिद्ध कवि एव भजन उपदेशक प० नन्दलाल निर्भय बहीन जिला फरीदाबाद श्री मगल देव भजनोपदेशक जुरैहडा (भरतपुर) श्री चितोपाध्याय शास्त्री सोहना (गुडगावा) श्री राजकुमार शास्त्री पथरवा (महेन्द्रगढ) आचार्य सत्य प्रिय जी तिजारा (अलवर) महाशय धर्मपाल आर्य घहरौड (अलबर) ने अपने ओजस्वी भजन एव व्याख्यानो से जनता को धर्म लाभ पहुचाया। स्थानीय जनता ने इस कार्यक्रम को सराहा है।

किशोरी लाल आर्य, मत्री
आर्य समाज खैरचन्द

आर्य समाज मंदिर अशोक नगर नई दिल्ली का ४१वा वार्षिकोत्सव २७ ९-९६ से २९-९-९६ तक स्वामी मोक्षानन्द जी मथुरा के तत्वावधान मे समारोह पूर्वक मनाया गया। २९-९-९६ को समापन अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध आर्य नेताओं तथा विद्वानो ने पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

— समस्त धर्म प्रेमी महानुभावो को अत्यन्त हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज (परमानन्द बस्ती) के तत्वावधान मे २२ अक्टूबर से २७ अक्टूबर तक वार्षिकोत्सव का बृहद आयोजन किया जा रहा है। इसमे भाग लेने के लिए आर्य जगत् के वीतराग सन्यासी स्वामी प्रकाण्ड विद्वान् श्रीयुत् विश्वमित्र शास्त्री हिसार एव आर्य जगत् के ख्यात भजनोपदेशक प० बृजपालजी शर्मा कर्मठ रेडियो सिगर, कम्हेडा (उ०प्र०) पधार रहे हैं।

आपसे प्रार्थना है कि तन-मन-धन से अपना बहुमूल्य योगदान कर कृतार्थ करे तथा कार्यक्रम को सफल बनाये।

- आर्य समाज वसन्त विहार नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव दिनाक १०-१०-९६ से १३-१०-९६ तक मनाया जाएगा। महात्मा आर्य भिक्षुजी द्वारा वेदकथा तथा ओम प्रकाश जी वर्मा द्वारा भजन होगे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ० वाचस्पति उपाध्याय होगे।

डॉ० मगल सैन
मत्री

यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन

श्रावणी पर्व के अवसर पर यजुर्वेद परायण यज्ञ का आयोजन श्री कमल किशोर कमल के द्वारा सार्वजनिक रूप मे सम्पन्न हुआ। वेद पाठ एव प्रवचन ब्रह्मचारिणी सविता (कन्या गुरुकुल हाथरस) एव ब्र० वेद प्रकाश (गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ) साथ ही भजनोपदेश 'कमल' जी के द्वारा सम्पन्न हुआ।

इस पुनीत कार्य स प्रभावित होकर कई लडके एव लडकियो ने मास मछली खाना छोड दिया एव सिरखिण्डी आर्य समाज के साप्ताहिक यज्ञ मे सम्मिलित होने लगे।

मनोहर प्र० शास्त्री
आर्य समाज सिरखिण्डी
लक्खीसराय बिहार

धार्मिक क्रान्ति

धार्मिक क्रान्ति का चुर्तथ १०१ कुण्डीय महायज्ञ एव धार्मिक जाग्रति सम्मेलन ६ से ८ अक्टूबर ९६ तक लीला का बाग रजबपुर मुरादाबाद मे आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात ७ बजे से १० बजे तक यज्ञ भजन तथा आध्यात्मिक सन्देश २ बजे से रात्रि ११ बजे तक भजन प्रवचन तथा व्याख्यान आदि के कार्यक्रम रखे गये हैं। सपरिवार पधार कर धर्म लाभ उठाये।

डॉ० भवानी लाल भारतीय की हालैण्ड यात्रा

यद्यपि मुझे गत अप्रैल मे ही आर्य प्रतिनिधि सभा नीदरलैण्ड के प्रधान डा० महेन्द्रस्वरूप के निमत्रण पर होलैण्ड के लिए प्रस्थान करना था किन्तु वीजा मिलने मे देर होने के कारण यह यात्रा अब २१ सितम्बर से आरम्भ होगी। लगभग ३ मास तक हालैण्ड तथा अन्य समीपवर्ती यूरोपीय देशो मे वैदिक धर्मप्रचार हेतु मेरा कार्यक्रम उक्त सभा ने निश्चित किया है, इस अवधि मे प्राप्त पत्रो के उत्तर मैं स्वदेश लौटकर ही दे पाऊगा सूचनार्थ निवेदन है।

डॉ० भवानीलाल भारतीय

ध्यान योग शिविर

योगधाम आर्य नगर ज्वालापुर हरिद्वार मे स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे २७-१०-९६ से ३-११-९६ तक ध्यान योग शिविर का अयोजन किया जा रहाहै। इस शिविर मे आसन प्राणायाम्, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान समाधि, अष्टागयोग का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा। तथा यम-नियम आदि का पालन भी कराया जायेगा। शिविरार्थी शारीरिक निर्बलता तथा मानसिक अशान्ति से छुटकारा पाने के लिए विविध यौगिक उपायो से लाभ प्राप्त करके आत्म दर्शन का मार्ग प्रशस्त करें। शिविर में यथा समय अन्य विद्वानों के प्रवचन तथा भक्ति सगीत होंगे। २९ अक्टूबर को साधिका सम्मेलन तथा ३० अक्टूबर को 'योग से रोगनिवारण" विषय पर सगोष्ठी होगी। अत सभी से अनुरोध है कि शिविर में भाग लेकर लाभान्वित हो।

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-2 से प्रकाशित

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् — विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाओ

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

दूरभाष ३२७४७७१, ३२६०९८५ आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये वार्षिक शुल्क ५० रुपए एक प्रति १ रुपया

वर्ष ३५ अक ३५ दयानन्दाब्द १७२ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ सम्वत् २०५३ आश्वि० कृ० १ १३ अक्टूबर १९९६

जम्मू कश्मीर में अब फारुखशाही का अनुभव लीजिए

इस समय फारुख अब्दुल्ला कहते है कि काश्मीर में चुनावों के परिणाम स्वरूप वहा प्रजातत्र पुनर्जीवित हो गया है और इस जीत ने यह साबित कर दिया है कि उनकी पार्टी अर्थात "नेशनल कान्फ्रेंस", की पूर्व सरकारों शेख अब्दुल्ला के राज्यकाल में तथा उनके राज्य काल में जो जनहित के कार्य किये गये थे उन सब कार्यो का ही यह प्रतिफल है।

वर्तमान दौर मे फारुख साहब काश्मीर वासियो के हित में क्या-क्या करना है उसका जिकर करते है कि

'सबसे पहले काश्मीर में जो हिंसा आज भी जारी है उसे रोकना है।"

"कश्मीर को अभ्युदय पथ पर ले चलने, पुनर्वास आदि की व्यवस्था करना, विकास कार्यो के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण और एक अच्छे प्रशासन को देने, तथा पूर्ण स्वायत्त काश्मीर को दिलाने की बात करते है "

यह सही है कि हम काश्मीर के लिए पूर्ण स्वायत्तता चाहते है-लेकिन इस पूर्ण स्वायत्तता के स्वरूप का जिकर करते हुए फारुख अब्दुल्ला कहते हैं कि पहले ही काश्मीर की स्वायत्तता की जो कल्पना की गई है वह जारी रहेगी और प्रान्तीय स्वायत्तता लद्दाख और जम्मू को भी मिलेगी। प्रशासन द्विस्तरीय रहेगा।

काश्मीर में सदरे रियासत की व्यवस्था पर बोलते हुए फारुख साहब कहते हैं कि-

"हम इस पर विचार करेगें, इस सम्बन्ध में केन्द्र से बातचीत करने के लिए एक समिति बनाई जायेगी"-

कब तक बातचीत केन्द्र से चलती रहेगी हम सिर्फ प्रतीक्षा ही कर सकते हैं।

फारुख साहब काश्मीर के उस हिस्से को जो पाक के अधीनस्थ है उसे वैसा ही रहने देना चाहते है ?

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने अफगानिस्तान की ताजा घटनाओ की ओर इशारा करते हुए कहा है कि काश्मीर का भविष्य पाकिस्तान और पाकिस्तान के सम्बन्ध मे अमेरिकी रीति के आधार पर निर्भर रहेगा तालिबान सेना की काबुल पर विजय इस बात की द्योतक है। इससे देश वासियों को सतर्क रहने की आवश्यकता है।

कोरिया में मृत्युदंड का राजनीतिक संदेश

जब भारत सहित अनेक देशो मे उच्चस्तरीय राजनीतिक भ्रष्टाचार अपने शिखर पर हो अपराधी राजनेता चैन की बसी बजा रहे हो धन बटोरने मे माहिर सुखराम विदेशो की हवा खाने मे व्यस्त हो और हवाला की गिरफ्त में पूर्व मत्री एव राज्यपाल कानून को धता बताकर सपन्न जीवन की मौज ले रहे हो उस समय दक्षिण कोरिया के दो पूर्व राष्ट्रपतियो को राजद्रोह और भ्रष्टाचार के लिए दडित किया जाना एक नई और अनोखी बात है। दक्षिण कोरिया की निचली अदालत द्वारा अपराधो मे एक को मृत्युदड देने दूसरे को साढे बाईस वर्ष का सश्रम कारावास की सजा सुनाने तथा इन अपराधों मे शामिल उनके अन्य सहयोगियों को समुचित रूप से दडित करने का फैसला दुनिया के उन तमाम सवेदनशील लोगो को राहत एव सात्वना प्रदान करता है जो सरकारी तथा गैर सरकारी स्तर के भ्रष्टाचार से अपने को त्रस्त एव हताश महसूस करते हैं। उदार अर्थव्यवस्था वाले धनी सपन्न देशो मे सेना के जनरलो द्वारा सत्ता के अपहरण गोली और बदूक के बल पर लोकतात्रिक आवाज को कुचलने का दुषचक्र तथा गलत तरीकों से धन बटोरने की लालसा के विरुद्ध यह अदालती निर्णय वास्तव मे उन तमाम देशो के सत्ताधारियो एव राजनेताओ के लिए चेतावनी है जो रातोरात दौलतमद बनने का सपना देखते हैं। साथ ही दडात्मक फैसला यह भी सदेश देता है कि भले देर से सही लेकिन ऊचे से ऊचे अपराधी कभी न कभी कानून की गिरफ्त मे आते ही हैं। चीन जापान ताइवान और कोरिया जैसे विकसित एव सपन्न देशा मे राजनीतिक भ्रष्टाचार की शिकायते बढ रही है वही पर दक्षिण एशियाइ देशो भारत पाकिस्तान और बग्लादेश जैसे विकासशील देशों मे सत्ता अपहरण और भ्रष्टाचार मे लिप्त होने की घटनाए कम नहीं है।

कैसा राजनीतिक सदेश ?

विश्व के तमाम अफ्रीकी एव एशियाई देशो के लिए कोरियाई मृत्युदड का राजनीतिक सदेश दिया हुआ है जहा पर सेना के जनरलो द्वारा सत्ता हडपने और क्रूरतापूर्वक शासन चलाने की आये दिन घटनाए होती रहती हैं। नवोदित बगलादेश के राष्ट्रपति शेख मुजीबुर्रहमान की सैनिक अधिकारियो द्वारा हत्या पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमत्री जुल्फिकार अली भुट्टो की अदालती हत्या और जिया उल हक का सत्ता पर कब्जा करना तथा बगलादेश के जनरल इरशाद के सैनिक समर्थको द्वारा राष्ट्रपति जियाउर रहमान की हत्या करके उनका सत्तासीन होना और अदालती दड से बच निकलना ऐसी घटनाए है जिनको कोरियाई फैसले से सबक मिल सकता है। भारत भी इस कोरियाई फैसले से यह सीख ले सकता है कि कैसे राष्ट्र द्रोह और भ्रष्टाचार के मामलो को नौ महीने की अदालती प्रक्रिया से गुजारा जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट और सी०बी०आई० की सक्रिय पहल के बाद भी हवाला काड के आरोपियो के खिलाफ कोई खास प्रगति नहीं हो सकी है और भ्रष्टाचार के आरोपियो को दडित किये जाने के उदाहरण भी न के बराबर हैं। इसका अर्थ यह नही है कि भारतीय प्रशासन भ्रष्टाचार से अछूता है।

सम्पादक- डा.सच्चिदानन्द शास्त्री

सर्व हितकारी—सन्देश

सृष्टि का उपादान कारण-प्रकृति

सतोगुण रजोगुण तमोगुण नामक प्रकृति से ईश्वर ससार की रचना करता है। यह शाश्वत अविनाशी साकार तथा जड है। और वेदानुयायी दार्शनिको के मतानुसार दृश्य-अदृश्य जगत इसकी विकृति का परिणाम है।

ईश्वर की ईक्षणशक्ति से साम्य प्रकृति मे विकार उत्पन्न होता है। तब क्रमश महतत्त्व (बुद्धि)•अहकार•पञ्च सूक्ष्म भूत (रूप रस गन्ध स्पर्श शब्द नामक पञ्च तन्मात्राए)•पञ्च स्थूल भूत (आकाश वायु, अग्नि जल पृथ्वी)•पञ्च ज्ञानेन्द्रिया (आख नाक कान रसना त्वचा)•पञ्चकर्मेन्द्रिया (वाणी हाथ पाव मल मूत्र त्यागने के स्थान) एव मन की उत्पत्ति होती है।

जीवात्माओ के लिए प्रकृति जहा बन्धन का कारण है वहा यह कर्म करने कर्मफल भोगने और बन्धन से मुक्त होने का साधन भी है। इसके सानिध्य से ही जीवात्माओ को सासारिक सुख दु ख की अनुभूति होती है। इसका आकर्षण अत्यन्त प्रबल हाता है। इसके प्रलोभन मे फसकर अज्ञानी मनुष्य ईश्वर से विमुख हो जाते है।

प्रलय के पश्चात से सृष्टि उत्पन्न होने तक प्रकृति साम्य अवस्था अर्थात अपने कारण मे विद्यमान रहती है। इससे रचित सभी पदार्थ अनित्य हैं।

वैदिक मिशनरी कमलेशकुमार अग्निहोत्री
आर्य समाज मन्दिर देवलाली बाजार
कुबेरनगर
अहमदाबाद (गुजरात) ♣

आर्यप्रतिनिधि सभा बंगाल द्वारा

दलित ईसाई आरक्षण विधेयक का व्यापक विरोध

आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल की एक बैठक वरिष्ठ उपप्रधान श्री मोहनलाल अग्रवाल की अध्यक्षता मे की गई। सभा मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान माननीय प० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव के नेतृत्व में दलित ईसाई आरक्षण विधेयक के विरोध में चलाए जा रहे आदोलन का समर्थन किया गया बिल के विरोध मे हस्ताक्षर अभियान को गति देने का निश्चय किया गया। सभामत्री श्री आनद कुमार आर्य श्री खुशहाल चन्द आर्य श्री जगदीश आर्य श्री जयराम मास्टर श्री ईश्वर शरण आर्य और सिद्धार्थ गुप्त ने सभा के प्रचार की गतिविधि को बढाने पर जोर दिया। धर्म के नाम पर लाये जाने वाले इस बिल से देश की अखडता को होने वाले खतरे से सावधान होने की चेतावनी दी गई।

आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के महामत्री आनन्द कुमार आर्य ने बताया कि दलित ईसाई आरक्षण के विरोध में राज्य स्तर पर स्थानीय आर्य समाजो के द्वारा जागृति अभियान चलाया जा रहा है। कलकत्ता की दीवारो पर ६००० बडे पोस्टर तथा विद्यालयों और सार्वजनिक स्थानों पर २००० छोटे पोस्टर लगाये गये हैं। राष्ट्रपति जी को एक विशेष पत्र भेजा गया है जिसकी प्रतिया वितरित की गयी हैं। इसके अतिरिक्त एक लाख हस्ताक्षर कराने की योजना पर कार्य चल रहा है। सभा प्रधान प० वन्देमातरम जी को लगभग १०००० हस्ताक्षर सौंप दिये गये हैं।

१४ १५ दिसम्बर को एक राज्य स्तरीय विशाल सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है जिसमे दलित ईसाई आरक्षण के विरोध मे सार्वजनिक चर्चा की जायेगी तथा जन साधारण को इसके दुष्परिणामो से अवगत कराया जायेगा। इस सम्मेलन मे पहुचने हेतु सावदेशिक सभा के प्रधान प० वन्देमातरम रामचन्द्र राव की स्वीकृति प्राप्त हो गयी है। ♣

मेजर डॉ० अश्विनी की जयन्ती

पहली अक्टूबर १९५८ को जन्मे मेजर डॉ० अश्विनी कण्व वी०स०एम० का जन्म दिवस प्रतिवर्ष की भाति अश्विनी भवन ए–१/३६० पश्चिम बिहार मे बडे भावभीने वातावरण म मनाया गया।

डा० उषा शास्त्री जी ने ओ३म के गुणगान द्वारा यज्ञ सम्पन्न कराया। अपनी मधुर स्वर लहरी द्वारा डॉ० उषा जी ने डॉ० अश्विनी के जीवन से सम्बन्धित एक गीत गाकर सभा को मत्र मुग्ध कर दिया। गीत लिखने मे जितना परिश्रम बहिन उषा जी ने किया उस से उन की देशभक्ति एव भावुकता का प्रदर्शन होता है। उन्होने सुझाव दिया कि डा० अश्विनी मे इन्द्र के सभी सद्गुणो का समावेश था अत उनका जन्मदिवस इन्द्र–दिवस के रूप मे मनाया जाना चाहिये।

इस अवसर पर वेद विदुषी कवियित्री समाज सेविका राजनीतिज्ञा श्रीमती शकुन्तला आर्या ने प्रतिवर्ष की भाति वेद मत्रो द्वारा अमर शहीद डॉ० अश्विनी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये। उन्होने ईश्वर के तीन गुणो की विशेष व्याख्या भी की ईश्वर सर्वशक्तिमान है न्यायकारी है तथा सर्वव्यापक है। श्रीमती आर्या ने शहीद माता के धैर्य की प्रशसा करते हुए सभा को ज्ञान पुष्पो से लाद दिया। श्रीमती कृष्णा खन्ना प्रेम छाबडा जी तथा यश रल्ली जी ने भी मधुर गीत गाये। इस अवसर पर समाज एव पश्चिम बिहार की प्रमुख महिलाये उपस्थित थी। श्रीमती आशा माता जी का उक्त शहीद के साथ पूर्णमाशी के यज्ञ के सपर्क का भी वर्णन किया गया। अन्त मे मत्री गुलाटी जी तथा मत्रिणी सुलक्षणा गुप्ता ने धन्यवाद किया।

नीति कण्व
पीतमपुरा डी०ए०वी० स्कूल ♣

अण्डे से दिल का दौरा

मुर्गी के प्रत्येक अण्डे मे 215 से 240 मिली ग्राम कोलैस्ट्राल पाया जाता है। जो कि हार्ट अटैक का प्रमुख कारण है। अत आपसे निवेदन है कि पहली बार दिल का दौरा पड्ते ही अपने डाक्टर से अण्डा छोडने पर विचार विमर्श करे। परन्तु यदि आप कुछ समझदार और पढे लिखे व्यक्ति है तो दौरा पडने के पूर्व तथा आज ही अण्डा छोडने का विचार बना लें कहीं ऐसा न हो कि दिल का पहला दौरा ही जान लेवा सिद्ध हो जाये। ♣

वीर गाथा

बहुत सुनी गाथाये हमने
भारत के रणवीरो की।
नहीं सुनी पर अश्विनी जैसे
गाथा वीर जवानो की।।

भारत मा के भूतल से उदय हुआ इस अकुर का
दिव्यलोक मे तारा बनकर गुम्फित फूलो सा चमका।

कितनो ने उसे शीश चढाया कितनो ने काधे पर रखा।
भ्राता भगिनी ने मिलकर के अश्रुभरित पलको पर रखा
स्नेही पिता का आत्मरूप वह विश्वजगत का बन चमका।
दिव्यलोक मे तारा बनकर

ओट में होकर चन्द्र ने भी जब देखा मुख मण्डल उसका
भ्रमिताप से दिव्य प्रभायुत मलिन हुआ मुख मण्डल उसका
आश्वस्त हुआ जब देखा उसने तारा था भूमण्डल का
दिव्यलोक मे तारा बनकर

कण्व के आश्रम से बस निकला इन्द्रलोक के वैभव सा
मेघदूत वह बनकर आया अमृत बरसा जल धर सा
मा की प्यास मिटी तन मन की तरल हृदय था तात का चमका,
दिव्यलोक मे तारा बनकर

भाति–भाति के खेल खिलाये वन उपवन को हर्षाया
जनजीवन में रस भर भरकर विश्व जगत को हुलसाया
मृदुभाषी और त्यागी तपस्वी हृदय कमल सा बन चमका
दिव्यलोक में तारा बनकर

धरती मा ने स्नेहासेता से उस कलि का को विकसाया
मधुरपराग से सींच-सींच कर कोना-कोना सरसाया (महकाया)
टिडडीदल ने आकर घेरा अभिमन्यु सा वह चमका
दिव्यलोक मे तारा बनकर

खून से थी लथपथ काया छिपकर था बन्दूक चलाया
धरती को स्वरक्त समर्पित कर मा गौरव और बढाया
ऐसा वीर था अश्विनी जग में दीपक कुल का बन चमका
दिव्यलोक मे तारा बनकर

प्रात उषा ने जब देखा उसको चिरनिद्रा मे सोया
अक में भरकर स्नेह किया और रक्तकरों से सहलाया,
भारत मा का वैभव था यह वीर बहादुर बन चमका
दिव्यलोक मे तारा बनकर

आचार्या डॉ० उषा शर्मा शास्त्री
कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर ♣

महामना विरजानन्द

—आचार्य विष्णुमित्र आर्य

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी महाराज के गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी का जन्म पञ्जाब प्रान्त के जालन्धर जनपद मे वर्तमान गगापुर नामक ग्राम में श्री नारायण दत्त जी के घर हुआ। परमात्मा की लीला अपार है कि जिसे समाज सुधार के महावृक्ष के बीज का वपन करना है जो क्रान्ति का प्रथम सक्रामयिता होगा जिसे राष्ट्र की सर्वविध स्वतन्त्रता का मार्ग परिष्कृत करना है इस दिव्यात्मा को पाच वर्ष की अल्पायु में बाह्यचक्षुओ से हीन कर दिया। लगभग पाच वर्ष की अवस्था मे शीतला रोग.से पीडित होने पर नेत्र ज्योति सदा के लिए चली गयी। नेत्रो की बहुमूल्यता तथा महत्ता के कारण नेत्रो को प्राण कहा जाता है। नेत्रो के चले जाने पर मानो जीवन का सर्वस्व चला जाता है किन्तु कभी-कभी विपत्तिया भी बडी तीव्रता से आया करती हैं नयनहीन बालक का सबसे बडा आश्रय माता-पिता होते हैं किन्तु आ !!! विधि ने उससे यह अवलम्ब भी सहसा छीन लिया। अब बडे भ्राता व भाभी का ही सहारा शेष था परन्तु उनके तिरस्कारपूर्ण व्यवहार से विवश बारह वर्ष के नेत्रहीन विरजानन्द जी गृहत्याग करते हैं।

गृहत्याग करके यातायात की सुविधाओ से रहित पग-पग पर डाकुओ और चोरो से युक्त मार्ग मे त्रिविध दु ख बाधाओ का आलिङ्गन करते हुए तीन वर्ष पश्चात् ऋषीकेश पहुचे। आज का ऋषीकेश आधुनिक समस्त सुख-सुविधाओ से सम्पन्न है किन्तु तब उस अरण्यस्थली मे तपस्यानिरत महात्मा और हिसक सिह व्याघ्र आदि ही निवास किया करते थे। ये भी कन्दमूल से उदरपूर्ति करते हुए गायत्री साधना मे लग गये। विरजानन्द जी जन्म से ही तीव्रबुद्धि के धनी थे गायत्री जप के अनुष्ठान से प्रभुकृपा हुयी और भी प्रतिभान्वित होकर बुद्धि वैभव से प्रज्ञाचक्षु कहलाये जाने लगे। कुछ समय पश्चात् प्रज्ञाचक्षु ने एक दिन सोये-सोये सुना कि विरजानन्द ! तुम्हारा यहा जो कुछ होना था हो चुका। अब तुम यहा से चले जाओ। इन्होने अन्तरात्मा के सन्देश-परमात्मा की प्रेरणा को सुना और हरिद्वार कनरवल पहुचे। वहा दण्डी स्वामी पूर्णानन्द जी से सन्यास दीक्षा लेकर विद्याअध्ययन करने लगे। कुछ काल पश्चात् कनरवल से प्रस्थान करके वाराणसी रहकर अध्ययन अध्यापन करते रहे। वाराणसी से गया कलकत्ता इत्यादि स्थलो पर कुछ-कुछ समय रहकर एटा जनपद से गङ्गातीरस्थित सोरों नगर पहुचे। सोरो से अलवर नरेश महाराज विनयसिह अनुनय विनय करके स्वामी जी को अलवर ले गये। स्वामी जी ने अलवर नरेश से कहा कि "हम आपके साथ चलेगे जब आप नियमित रूप से हमसे पढना स्वीकार करे" और कहा कि "जिस दिन भी आप न पढेंगे हम अलवर छोड देंगे।" महाराज विनयसिह नियमित रूप से स्वामी जी से पढते रहे किन्तु एक दिन यह राजछात्र अनुपस्थित हो गया। सम्भवत रागरग के व्यासग मे उलझकर गुरुचरणो मे उपस्थित होना स्मरण न रहा। स्वामी जी भी अपनी प्रतिज्ञानुसार अलवर से प्रस्थान करके पुन सोरों होते हुए अब मथुरा पहुचते हैं।

दण्डी स्वामी विरजानन्द जी जहा जहा रहे अध्यापन भी करते रहे। मथुरा में भी पाठशाला की स्थापना की गयी। पाठशाला का व्ययभार अलवर नरेश भरतपुर के राजा तथा जयपुराधिपति वहन करते थे। एक बार जब स्वामी जी ने अष्टाध्यायी के पाठ का श्रवण किया तो आर्षग्रन्थो मे श्रद्धा गहरी हो गयी। आर्षग्रन्थो के प्रति स्वामी जी की आस्था का परिचय उन्हीं का रचित एक पद्य स्वय कराता है—

अष्टाध्यायी महाभाष्ये द्वे व्याकरणपुस्तके।
अतोऽन्यत्पुस्तक यन्तु तत्सर्वं धूर्तचेष्टितम्।।

अर्थात पाणिनि प्रणीत अष्टाध्यायी तथा उस पर महर्षि पतञ्जलि रचित महाभाष्य आर्षपुस्तके हैं अन्य कौमुदी इत्यादि अनार्ष पुस्तके धूर्तों की रचनाये हैं।

दण्डी जी ने स्वातन्त्र्यसग्राम के बीजवपनरूप पुनीतकर्म में भी अपना अमूल्य योगदान किया। महाराजा रामसिह आदि राजाओ को भी भाति—भाति प्रकार से देशभक्ति का पाठ पढाकर विविध उपाय भी समझाये। स्वामी जी को अपने लिये कोई अभिलाषा नहीं थी वे देश की स्वाधीनता और आर्ष ग्रन्थों ही का पठन पाठन सर्वत्र देखना चाहते थे। इस अभिलाषा पूर्ति के लिए विद्या बुद्धि आदि सब अपेक्षित सामग्री उनके पास थी किन्तु नेत्रो के अभाव के कारण असमर्थ हो रहे थे। बडे लोगो की कामनाये भी बडी होती हैं। ससारहित की अपनी शुभकामना की पूर्ति के लिए किसी सहारे की आवश्यकता थी। सच्चे भक्त परमात्मा को जिस—जिस कामना के साथ पुकारते हैं वह पूर्ण हो ही जाती है। उनकी पाठशाला मे एक दिन एक अद्वितीय ब्रह्मचारी आया जिसे प्राप्त करके इस अन्धे महामानव ने एक दिन कहा था "अन्धे को लाठी मिल गयी।"

गुजरात प्रान्त के टकारा ग्राम मे उत्पन्न विद्याभिलाषी दयानन्द स्वामी विरजानन्द जी महाराज का द्वार खटखटाते हैं। तब भीतर से प्रश्न हुआ कौन हो ? दयानन्द ने विनयभाव से कहा यही जानने के लिए आपकी शरण मे आया हू। द्वार अब भी न खुला प्रत्युत प्रश्न हुआ—क्या पढे हो ? तब दयानन्द ने पठित ग्रन्थो को बता दिया। उन ग्रन्थो को सुनकर आर्ष ग्रन्थो के प्रहरी गुरु विरजानन्द कहते हैं कि तुमने जो कुछ पढा है वह अनार्ष होने से त्याज्य है अत जो पढा है उसे भुला दो और उन ग्रन्थो को भी यमुना मे डाल आओ। अकिञ्चन विद्यार्थी ने अपनी पुस्तके यमुना मे बहा दीं ऐसा करना विद्या के तीव्र अभिलाषी विलक्षण आत्मा का ही कार्य है। तथा पुस्तको को यमुना मे बहाने के साथ-साथ पढे हुए को भी भुलाकर निस्सन्देह अपने असाधारण होने का परिचय दिया क्योकि ऐसा कर पाना योगियो के अतिरिक्त और कौन कर सकता है ? और गुरु विरजानन्द जी अपने शिष्य के पारखी थे तभी तो उन्होने पहले पढे हुए को भूलने का असाधारण आदेश दिया। दण्डी जी लोकोत्तर महामानव का शिष्यरूप में सान्निध्य पाकर मन ही मन प्रसन्न हो विद्यादान मे तत्पर थे।

एक दिवस नित्य नियमानुसार दयानन्द जी मथुरा से दूर एकान्त मे ध्यानावस्थित बैठे थे। ध्यानावस्था से उठने ही वाले थे कि यमुना से स्नान करके लौट रही एक देवी ने भक्ति भाव से अपना सिर दयानन्द के चरणो पर रख दिया। दयानन्द ने विनम्रता से देवी को परे हटने को कहा और स्वय सभी वस्त्रो सहित यमुना मे स्नान किया तथा वहीं निर्जन स्थान पर तीन दिन निराहार रहकर व्यतीत किये। दूसरी ओर गुरुवर दण्डी जी दयानन्द की अकारण अनुपस्थिति से व्यग्र हो गये। उनका मन चिरअभिलाषित अपने प्रिय शिष्य के प्रति नाना क्लिष्ट कल्पनाओ से आक्रान्त हो गया। चतुर्थ दिवस दयानन्द जब गुरु के चरणो मे अभिवादन करके उपस्थित हुए तब सहसा उपस्थित शिष्य के शरीर को स्पर्श करके पूछते हैं—दयानन्द ! तुम इतने दिन कहा रहे ? कृशाङ्ग प्रतीत हो रहे हो ? गुरुवर की इस जिज्ञासा के उत्तर मे अखण्डब्रह्मचर्यव्रती दयानन्द अथ से इति पर्यन्त सम्पूर्ण वृत्तान्त सुना देते हैं। इस वृत्तान्त को सुनकर जो वृद्ध अभी बहुत व्याकुल था वही अत्यन्त हर्षित होकर शिष्य को गले लगाकर सहसा कह देता है "अन्धे को लाठी मिल गयी।"

दण्डी जी के आश्रम मे दयानन्द के समावर्तन सस्कार का अवसर आ जाता है। सामान्यत दण्डी जी कोई दक्षिणा लिये बिना ही शिष्यो को आशीर्वाद देकर समावर्तित कर देते थे। विरजानन्द जी लौंगो का सेवन अधिक किया करते थे अत दयानन्द दक्षिणास्वरूप लौंगो को ही गुरु चरणो मे अर्पित करते है। गुरु जी ने पूछा दयानन्द क्या लाये हो ? गुरु की इस अपूर्व जिज्ञासा को सुनकर अन्य शिष्य अपनी दक्षिणा की अल्पता के कारण घबरा गये और सोचने लगे कि दक्षिणारूप में एक कण भी न स्वीकार करने वाले गुरु जी आज अकिञ्चन सन्यासी से दक्षिणा की जिज्ञासा क्यो कर रहे हैं ? किन्तु दयानन्द जी बिना किसी सङ्कोच के धीर भाव से कहते है कि कुछ लौंग लाया हू। तब विरजानन्द जी कहते हैं कि क्या हमारे घोर परिश्रम का यही पारिश्रमिक है ? गुरु जी के इस विलक्षण परिवर्तित भाव से सभी छात्र घबरा गये किन्तु दयानन्द शान्त और विनम्र होकर निवेदन करते है कि मैं अकिञ्चन सन्यासी भिक्षा करके ये लौंग लाया हू मेरे पास अन्य क्या है ? जो आपको समर्पित करू। तब स्नेहसिक्त विरजानन्द कहते हैं कि मैं तुमसे वही वस्तु चाहता हू जो तुम्हारे पास है। यह सुनकर आदर्श शिष्य महागुरु के समक्ष नतमस्तक होकर कहता है कि मेरा सर्वस्व आपको अर्पित है। विरजानन्द ने दयान्द को उठाकर कहा—वत्स दयानन्द ! ससार मे नाना मतमतान्तरो की अविद्या से वैदिक धर्म का लोप हो गया है। तुम जाओ वेद और आर्षग्रन्थो का पुन प्रचार करके ससार का उद्धार करो यही गुरुदक्षिणा चाहता हू। इस प्रकार विरजानन्द का दक्षिणा चाहना तथा दयानन्द द्वारा अखिन्न मन होकर दक्षिणा देना अपूर्व है। दयानन्द जब जाने लगे तब भी वे अपनी समस्त आशाओ के केन्द्र प्रिय शिष्य को सावधान करते हैं हे दयानन्द सदा स्मरण रखना "ऋषिप्रणीत ग्रन्थो मे ईश्वर और वेद की निन्दा नहीं मिलती।"

वेद और ईश्वर के परम भक्त समाज सुधारक स्वामी विरजानन्द जी यावज्जीवन आर्ष वाङमय के लिये समर्पित रहे। आर्ष ग्रन्थो के प्रहरी जीवनमुक्त स्वामी जी आश्विन कृष्णा त्रयोदशी सम्वत १९२५ विक्रमी को अपना भैतिक शरीर त्यागकर पञ्चत्व को प्राप्त हो गये। मृत्यु का समाचार जानकर दयानन्द के मुख से नि सृत यह स्वभावोक्ति कि "आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया उनकी सर्वोच्च महत्ता की परिचायिका है।

इत्यलम

आदर्श नगर नजीबाबाद (बिजनौर) ◆

दलित ईसाई के नाम पर आरक्षण असंवैधानिक है।

—आनन्द कुमार आर्य

१२५ वष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देश की सर्वागीण अवस्था पर दृष्टि डाली तो देश गुलामी मे जकडा हुआ था सहस्रो वर्षो से हमारी सस्कृति–धर्म पर कुठाराघात हो रहा था। सदियो से मुस्लिम और ईसाई सम्प्रदाय की राज्य व्यवस्था ने देश मे मत मतान्तरो का जाल बिछा दिया था और हम अपन बुद्धि आत्म सम्मान को खो चुके थे ऐसी अवस्था से द्रवित होकर सन १८७५ ई० मे महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की और सम्पूर्ण जगत को मार्ग दिखलाया कि हमारी सस्कृति शिक्षा धर्म राज्यव्यवस्था का श्रोत वेद है जो सृष्टि के उत्पन्न होने क काल से है इसलिये हे मनुष्यो वेद की ओर (Back to Vedas) लौटो। महर्षि दयानन्द ने वेद का वह स्वरूप उपस्थित किया जिसमे जगत की उत्पत्ति के साथ प्राणि मात्र के लिये प्रत्येक आवश्यकताओ की पूर्ति का साधन वेद मे भरा पडा है। वेद ने गुण कर्म स्वभाव के अनुसार ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र जैसी वण व्यवस्था का विधान किया है जिसके प्रतिपालन से सबको अपनी योग्यतानुसार उपलब्धी का अवसर प्राप्त होता है। वर्तमान युग मे हम और हमारी राजनैतिक व्यवस्था उस नित्य पवित्र स्वरूप को भूल कर स्वार्थवश मनुष्य को मनुष्य से लडाने की प्रवृत्ति आपस मे जाति धर्म के नाम पर विभाजित करने की कूटनीति न देश का रसातल म पहुचा दिया है जब कि वह पूर्ण वैदिक व्यवस्था किसी न किसी रूप म आज भी सर्वत्र लागू है। सरकारी नौकरियो मे भी योग्यतानुसार प्रथम द्वितीय तृतीय तथा चतुर्थ श्रेणी है जो परोक्ष रूप मे वैदिक वर्ण व्यवस्था ही तो है।

वर्ण व्यवस्था का प्रतिपादन ऋग्वेद के इस मत्र से होता है जिसमे शासनाध्यक्ष के नाम वेद का आदेश है।

आ सयत भिन्द्र ण स्वस्ति शुत्रतूर्याय बृहतीमधाम।
यया दासान्यार्याणि वृत्राकरो वज्रिन्सुतुका नाहुषाणि।।
ऋ० ६। २२। १०।।

भावार्थ–हे राजन ! आप सत्य विद्या के दान और उपदेश से शूद्र के कुल मे उत्पन्न हुओ को भी द्विज (ब्राह्मण और क्षत्रिय) करिये और सब प्रकार के ऐश्वर्य का प्राप्त कराये तथा शत्रुओ का (अर्थात जो इस बात का विरोध करे) निराकरण करके सुख की वृद्धि कीजिये।

वेद की इस अमृतमई धरोहर मार्ग दर्शन को भूलकर शासनाध्यक्ष एव राजनैतिक दल अपने कर्तव्य बोध से च्युत होकर धर्म निरपेक्षता की आड मे अल्पसख्यको को तरह तरह के प्रलोभन देकर तुष्टिकरण की नीति से अबोध जनता जनार्दन को भ्रमित कर रहे हैं। वर्तमान सयुक्त मोर्चा सरकार विभिन्न विचार वाली पार्टियो का गठजोड है जिसे जनता दल अपने चुनाव घोषणा पत्र के अनुसार दलित ईसाइयो को आरक्षण प्रदान कराने निमित्त प्रभावित कर रहा है जबकि ईसाई अथवा मुसलमान वर्ण व्यवस्था (जाति व्यवस्था) मे विश्वास ही नहीं रखते उनमे भी वर्ण भेद उत्पन्न करके दलित ईसाई के नाम पर एक नई जाति बनाकर राजनैतिक स्वार्थ के लिए आरक्षण और उसके अतर्गत अतिरिक्त सुविधाए करने की युक्ति असवैधानिक है।

अत माननीय राष्ट्रपतिजी से विनम्र निवेदन है कि भारतीय सस्कृति की मूल धारा के अनुरूप गुण कर्म स्वभाव के अनुसार वैदिक मान्यतानुसार वह अवसर प्रदान करने की व्यवस्था करे जिससे दलित पिछडी जाति जैसे सामाजिक अभिशाप के समाप्त होने का मार्ग प्रशस्त हो सके।

अल्पसख्यको को सुरक्षा प्रदान करना उनके सर्वतोन्मुखी विकास का साधन उपलब्ध कराना राज्य का मुख्य कर्त्तव्य है परन्तु बहुसख्यको की कीमत पर नहीं। सरकार की दुरनीति स तरह तरह की सुविधाओ एव प्रलोभनो से भिन्न भिन्न सम्प्रदाय एव मतमतान्तरो को बढावा मिला है। जिसके परिणाम स्वरूप अल्पसख्यको की जनसख्या निरतर विस्मयकारी गति से बढ रही है।

आय समाज की अन्तर्राष्ट्रीय सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इन राजनैतिक दलो के भारत मैं निवास करने वाले अल्पसख्यको के प्रति इस दुराग्रह को देखकर चकित और चिन्तित है विशेष रूप से जब कि इन राजनैतिक दलो की गलत नीतियो के कारण राष्ट्र का विखण्डन होना स्वाभाविक है ५० वर्ष पूर्व भी हम मजहब के नाम पर विभाजित हो चुके है और उसका घातक परिणाम रोज भुगत रहे है।

सयुक्त मोर्चा सरकार का हिन्दू दलितो के समान ईसाई दलितो को आरक्षण देने से सबन्धित बिल लोकसभा मे लाने का निश्चय राष्ट्र के लिए दुर्भाग्य पूर्ण है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के गत साधारण अधिवेशन मे उत्तर प्रदेश बिहार बगाल दिल्ली हरियाणा राजस्थान जम्मू काश्मीर मध्यप्रदेश गुजरात आसाम आन्ध्र प्रदेश कर्नाटक तथा तमिलनाडु आदि स्थानो से पधारे आर्य नेताओ ने मोर्चा द्वारा लाई जाने वाली ईसाई दलित बिल का सर्वसम्मति से विरोध किया तथा इसके विरुद्ध हस्ताक्षर अभियान को गति देने के निश्चय के साथ आवश्यकतानुसार आन्दोलन करने का निर्णय लिया गया जिसकी रूपरेखा तैयार कर उसे चलाने का अधिकार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान माननीय प० वन्देमातरम रामचन्द्र राव को दिया गया। राष्ट्रीय स्तर की हिन्दू सस्थाये प्रधानजी को पहले ही अपने पूर्ण समर्थन का आश्वासन दे चुकी हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रस्ताव के आधार पर सयुक्त मोर्चा सरकार को निम्नकारणो से दलित ईसाईयो को हिन्दू दलितो के समान आरक्षण का बिल ससद मे प्रस्तुत करने का विचार त्याग देना चाहिये।

(१) यह बिल देश के नागरिको को गुटो मे विभाजित करेगा और आपस मे भेदभाव पैदा होगे।
(२) यह बिल भारतीय सविधान को अनुच्छेद ५१ (अ) (ड) भारत के नागरिको मे आपसी सद्भाव तथा भाई चारे को बढाने के आग्रह को नष्ट कर विघटन तथा द्वेष भावना पैदा करेगा।
(३) यह बिल ईसाई समुदाय को भी दलित तथा गैर दलित गुटो मे विभाजित करेगा।
(४) ईसाई वर्ग पहले धार्मिक अल्पसख्यक के नाम पर समस्त लाभ प्राप्त कर रहा है। अब ईसाईयो को दलित वर्ग के नाम पर अतिरिक्त सहायता दिये जाने की योजना निश्चय ही भारतीय सविधान के द्वारा भारत को एक पथ–निरपेक्ष चरित्र देन का विरोध होगा।
(५) भारतीय सविधान धर्मान्तरण को मान्यता नहीं देता इसके बावजूद विदेशो से हजारो की सख्या मे ईसाइ मिशनरीज के लोग हमारे देश मे प्रवेश करते हैं और वे अब छल कपट का शिकार हिन्दू दलित वर्ग को अपने लुभावने प्रलोभनो के माध्यम से धर्मान्तरण की गति–विधिया बढायेगे।
(६) यह बिल हमारी मातृभूमि के पुन एक और विघटन का भी साधन बनेगी। ईसाई आज भारत के तीन राज्यो–मिजोरम नागालैड तथा मेघालय मे बहुमत मे है तथा उनका प्रभाव क्षेत्र अन्य पडोसी राज्यो पर भी बढता जा रहा है जिससे स्वतन्त्र राज्य की माग का मार्ग प्रशस्त होगा।

हमारा स्पष्ट निष्कर्ष है – धर्म निरपेक्षता की दिशा मे नहीं अपितु राष्ट्र के विखण्डन की दिशा मे भारत के टुकडे टुकडे करने की दिशा मे ये सुनियोजित कार्यवाही की जा रही है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निश्चयानुसार हम पश्चिम बगाल मे हस्ताक्षर अभियान के द्वारा देश की सयुक्त मोर्चा सरकार से आग्रह करते है कि वे राष्ट्र हित मे इस बिल को प्रस्तुत ही न करे। यदि देश पर ऐसी विपत्ति को आने से नहीं रोका जायेगा तो उस स्थिति मे आय समाज मूक दर्शक बनकर नहीं रह पायेगा और मात्र शिरोमणि सभा के सकेत एव आदेश पर आर्य समाज उक्त बिल का विरोध अपनी सपूर्ण शक्ति से करने के लिए कटिबद्ध है। आशा है राष्ट्रपतिजी दलित इसाई जैसे असवैधानिक बिल को निरस्त करके भारत के राष्ट्रभक्तो के सम्मान का आदर करेगे। ◆

मनु, अम्बेडकर और जाति व्यवस्था

डा० कृष्ण बल्लभ पालीवाल

मनु की कर्मणा वर्ण व्यवस्था मनुष्य की अपनी प्रकृति के अनुसार जीविका चयन श्रम विभाजन एव विधि-विधान है। जिसका कालान्तर मे धीरे धीरे विकृतिकरण हुआ है। यह कब क्यों और कैसे हुआ कहना तो मुश्किल है मगर आज हिन्दू समाज में जो विकृत जन्मना जाति व्यवस्था प्रचलित है। उसका प्रमाणिक हिन्दू धर्म शास्त्रो वेदो एव वेदानुकूल ग्रथो मे कहीं समर्थन नहीं किया गया है। मगर उसको मनु के नाम के साथ जोडकर मनु और हिन्दू धर्म की निन्दा करने का एक व्यापक राजनैतिक षडयत्र चलाया जा रहा है।

मनु विरोध की प्रक्रिया मे डा० अम्बेडकर एव वर्तमान में काशीराम सबसे चर्चित एव अग्रणी हैं। जन्मना-जाति व्यवस्था व उससे जुडी जातिभेद छुआछूत जात पात की खाई से जो आक्रोश डा० अम्बेडकर के मन मे पैदा हुआ वह सर्वथा उचित था। निसदेह जन्मना जाति व्यवस्था अमानवीय अनुचित और समाज विघटनकारी है। इसीलिए महावीर स्वामी और महात्मा बुद्ध से लेकर अनेको सन्तो और राष्ट्रभक्तो ने इसे मिटाने का भरसक प्रयास किया। मगर डा० अम्बेडकर ने जाति भेद मिटाने का जो राजनीति से प्रेरित नकारात्मक और समाज विघटनकारी आन्दोलन छेडा उसकी जड मे मनु को जोडना सर्वथा अनुचित होगा क्योकि पहले तो डा० अम्बेडकर की सस्कृत एव वैदिक वाडमय और हिन्दू धर्म शास्त्रो पर पकड न थी और उनके समस्त अध्ययन और लेखन का आधार हिन्दू धर्म शास्त्रो पर यूरोपिय मिशनरियो द्वारा अग्रेजी मे लिखित वह साहित्य था जो भारतीय सस्कृति के विकृतिकरण के उद्देश्य से ही तैयार किया गया था। दूसरे वे मनुस्मृति एव अन्य हिन्दू धर्म शास्त्रो मे बाहरी मिलावट की प्रक्रिया जो पिछले पन्द्रह सौ वर्षो से चली आ रही है के कारण मूल और प्रक्षिप्त श्लोको मे भेद न कर सके या करना नहीं चाहते थे। हालाकि मनुस्मृति में मिलावट की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया गया था।

डा० अम्बेडकर की दृष्टि में मनु

निसदेह डा० अम्बेडकर ने न्यूयार्क में ६ मई १९१६ को 'भारत मे जाति प्रथा' और १९३६ मे लाहौर जात पात तोडक मडल के लिए 'जाति उन्मूलन' पर लिखे लेखको मे गम्भीरता से विचार किया है। उनके मनु तथा जाति—व्यवस्था सम्बन्धी मुख्य विचार इस प्रकार हैं –

(१) एक बात मैं आप लोगों को बताना चाहता हू कि मनु ने 'जाति विधान का निर्माण नहीं किया और न वह ऐसा कर सकता था। जाति प्रथा मनु से पूर्व विद्यमान थी। वह तो उसका पोषक था। इसलिए उसने इसे एक दर्शन का रूप दिया। जाति प्रथा बाबा साहब डा० अम्बेडकर सम्पूर्ण बाडमय खड। पृ०—२६

(२) जाति का आधार भूत सिद्धान्त वर्ण के आधार भूत सिद्धान्त के मूल रूप से भिन्न है। न केवल मूल रूप से भिन्न है बल्कि मूल रूप से परस्पर विरोधी है। पहला सिद्धान्त गुण पर आधारित है। वर्ण व्यवस्था की स्थापना के लिए पहले जाति प्रथा को समाप्त करना होगा। *(जाति प्रथा उन्मूलन, सम्पूर्ण वाडमय खड पृष्ठ—८१)*

(३) सामाजिक और वैयक्तिक कार्य कुशलता के लिए आवश्यक है कि किसी व्यक्ति की क्षमता को इस बिन्दु तक विकास किया जाए कि वह अपनी जीविका का चुनाव स्वय कर सके जाति प्रथा मे इसका उल्लघन होता है। (जाति प्रथा उन्मूलन पृ० ६६ वही)

(४) वेद मे वर्ण की धारणा का साराश यह है कि व्यक्ति वह पेशा अपनाये जो उसकी स्वाभाविक योग्यताके लिए उपयुक्त हो। (जाति प्रथा उन्मूलन पृ० ११६ वही)

(५) मैं मानता हू कि स्वामी दयानन्द व कुछ अन्य लोगों ने वर्ण के वैदिक सिद्धान्त की जो व्याख्या की है वह बुद्धिमत्तापूर्ण हैं और धृणास्पद नहीं है। मैं ये व्याख्या नहीं मानता कि जन्म किसी व्यक्ति का समाज मे स्थान निश्चित करने का निर्धारक तत्व है। वह केवल योग्यता को मान्यता देती है। *(जाति प्रथा उन्मूलन पृ० ११६ वही)*

(६) कदाचित मनु जाति के निर्माण के लिए जिम्मेदार न हो परन्तु मनु ने वर्ण की पवित्रता का उपदेश किया है वर्ण जाति की जननी है और इस अर्थ मे मनु जाति व्यवस्था का लेखक न भी हो परन्तु उसका पूर्वज होने का उस पर निश्चित ही आरोप लगाया जा सकता है। *(हिन्दुत्व का दर्शन सम्पूर्ण वाडमय खड—६ पृ० ४३)*

(७) यह निर्विवाद है कि वेदो मे चातुर्वर्ण्य के सिद्धान्त की रचना की है जिसे पुरुष सूक्त के नाम से जाना जाता है। *(हिन्दुत्व का दर्शन सम्पूर्ण वाडमय ६ पृ० १२२)*

मनु और जाति व्यवस्था – अत डा० अम्बेडकर मानते हैं कि (१) वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति वेदो से हुई है। (२) व्यक्ति अपनी स्वाभाविक योग्यतानुसार अपना पेशा अपनाये (३) मनु वर्तमान जन्मना जाति व्यवस्था का निर्माता नहीं है। (४) वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था के विपरीत है और (५) मनु ने वर्ण की पवित्रता पर बल दिया है। अब समझने की बात यह है कि जब वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति वेदो से है तो मनु वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति के लिए उत्तरदायी नहीं है। उन्होंने ने तो उस व्यवस्था को पवित्रतम बनाये रखने पर बल दिया जो कि कोई अपराध नहीं है और जब मनु वर्तमान जन्मना जाति व्यवस्था के निर्माता नहीं है तो उसके लिए मनु को दोषी ठहराना कहा तक उचित है ? यह अनुचित ही नहीं अन्याय पूर्ण भी है। इस प्रकार मनु वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था दोनो के निर्माता होने के आरोप से मुक्त हो जाते हैं।

अब रहा मनु का जाति व्यवस्था के पूर्वज होने का आरोप। डा० साहब स्वय जातिवाद के कट्टर विरोधी थे। जो कि उनकी अध्यक्षता में सविधान सभा द्वारा रचित भारत के सविधान से सुस्पष्ट है। मगर उनके बाद के सासदों ने सविधान में अब तक ८० सशोधन किये है तथा अनुसूचित जातियो एव पिछडी जातियों को सरकारी नौकरियो तथा शिक्षा सस्थाओ मे जाति आधारित आरक्षण दिया जिसके वे प्रारम्भ से ही विरोधी थे। क्या आज सैंतालिस वर्ष के बाद जातिवाद की आधी जाति आधारित आरक्षण और उससे जुडी अनेको धार्मिक सामाजिक एव राजनैतिक समस्याओ के लिए डा० अम्बेडकर को उत्तरदायी ठहराया जा सकता है जिनसे उनका कोई सम्बन्ध नहीं है ? क्या हम उनके धवल चरित्र और राष्ट्रीय निष्ठा पर जाति द्वेष और जाति आधारित सामाजिक विघटन के कलक को उनके माथे पर थोप सकते हैं नहीं ? यदि आज के जाति आधारित आरक्षण का स्वरूप आगे चल कर और भी अधिक वीभत्स विघटनकारी द्वेषपूर्ण और निकृष्ट हो जाये तो क्या उसके लिए भी डा० अम्बेडकर और उनकी सविधान सभा को दोषी ठहराया जायेगा ? क्योकि उन्होने तो आज के जातिगत राजनीति से प्रेरित व्यवस्था को मान्यता नहीं दी थी। यह तो राजनैतिक विकृतिकरण है। भले ही इसे डा० अम्बेडकर के बाद के सासदो ने दलगत राजनीति के कारण किया हो। इसी प्रकार वर्तमान जन्मना जाति व्यवस्था मनु की कर्मणा वर्ण व्यवस्था से विरोधी व्यवस्था है जो कि हिन्दू धर्म की महानतम विकृति है।

साथ ही जब डा० अम्बेडकर मानते हैं कि अकेला मनु न तो जाति व्यवस्था को बना सकता है और न लागू कर सकता था *(मनु का विरोध क्यो सु० कुमार पृ०—२०)* तो फिर हिन्दू समाज मे कालान्तर मे हुई इस विकृतिकरण के लिए भला मनु उत्तरदायी कैसे हो सकते हैं ? वे तो कर्मणा वर्ण व्यवस्था को सख्ती से पालन करने करवाने के पक्षधर थे जिसे अम्बेडकर ने भी माना है। डा० अम्बेडकर ने कर्मणा वर्ण व्यवस्था को उचित भी ठहराया है। भले ही उन्होने उसकी व्यवहारिकता पर प्रश्न चिन्ह लगाया हो।

मनु विरोध का आधार – डा० अम्बेडकर के 'हिन्दुत्व दर्शन' और 'मनुस्मृति के तुलनात्मक गम्भीर अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उनका मनु विरोध मुख्यत मनु स्मृति के वर्तमान सस्करणो मे मिलावटी श्लोको के कारण हैं प्रो० सुरेन्द्र कुमार ने १९८१ मे सात प्रामाणिक मापदण्डो के आधार पर इन मिलावटी श्लोको को निकालकर विशुद्ध मनुस्मृति प्रकाशित की है। डा० अम्बेडकर ने अपने 'हिन्दू दर्शन' मे मनुस्मृति के जिन ११२ श्लोको को उधृत किया है उनमे से प्रो० कुमार के मापदण्डो के अनुसार ७१ यानि लगभग ६४ प्रतिशत श्लोक मिलावटी हैं और शेष ४१ श्लोको का भाष्य भी हिन्दू धर्म शास्त्रो की परम्परा से न केवल भिन्न है बल्कि विपरीत भी है। ये मिलावटी श्लोक मनु के वचन न होने के कारण मूल मनु स्मृति एव हिन्दू धर्म का अग नही हैं। यदि उपरोक्त श्लोको को हिन्दुत्व दर्शन से निकाल दिया जाये और शेष ४१ श्लोको का निष्पक्ष दृष्टि से पुनर्मूल्याकन किया जाये तो हमे मनु के यथार्थ को समझने मे काफी सहायता मिलेगी। वस्तुत डा० अम्बेडकर मनु के विषय मे पूर्वाग्रहो से ग्रस्त थे। उन्हीं के शब्दो मे 'उन पर मनु का भूत सवार था और उनमे इतनी शक्ति नहीं थी कि वे इसे उतार सके। *(मनु विराधे क्यो ? सु० कुमार पृ० १३)* जब सच्चाई यह है तो किसी तर्क प्रमाण या व्याख्या का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। परन्तु इतना अवश्य है कि मनु की कर्मणा वर्ण व्यवस्था का मूल उद्देश्य प्रत्येक मानव मे प्रसुप्त मानवीय

शेष पृष्ठ ८ पर

मानव के लिए परोपकार ही मानवता है

धर्म सिंह शास्त्री, डबल एम०ए०

मानव के लिए ईश्वर कहता है कि दिव्य अस्त्र प्राप्त करो, दिव्य अस्त्र कोई मारक अथवा हिंसक अस्त्र नहीं होते बल्कि दिव्य अस्त्र हैं। प्रेम, शान्ति, अहिंसा, सद्भावना, सहयोग एवं परोपकार। ईश्वर यह भी सचेत कर रहा है कि अधर्म द्वारा विनाश और धर्म द्वारा स्थापना का कार्य समान्तार रूप से चल रहे हैं। अब धर्म की स्थापना कहा और कैसे हो रही है, यह सत्य की पहचान तो उसे ही सभव बनेगी जिसमें धर्म प्राप्ति की इच्छा होगी। तुम चिन्ता न करो कि मानव का, भारत देश का क्या होगा ? यदि अर्धम रहेगा तब तो विनाश होगा, यदि धर्म रहेगा तब यह सारी दुनियां स्वर्ग बनेगी। बाकी अधर्म मार्ग पर जो बहुत आगे बढ चुके हैं जिनका वापिस लौटना अब सभव नहीं है, वे विनाश-लीला रचायेंगे। फिर इन्होंने जो अधर्म लीला की है, उसका फल दूसरे थोडे ही भोगेंगे। स्पष्टत अधर्म मार्ग पर चलना तो विनाश चक्र को आमंत्रण करना है।

यह न समझो कि अधर्म जो कुछ मैं कर रहा हू, विश्व की एक मांग पूरी होती जा रही है। जब संसार में अधर्म या पाप ही नहीं होगा तो पाप/अधर्म और धर्म/पुण्य की परिभाषा कैसी ? परन्तु वेदव्यास जी ने इस ग्रन्थि को सूक्ष्म शब्दों में बहुत पहले ही सुलझा दिया था जैसे :–

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य बचनद्वयम।
परोपकार: पुण्याय: पापाय परपीडनम्।।

वेदव्यास जी ने अठारह पुराणो की रचना की थी, परन्तु उन सबका सार उन्होंने केवल दो शब्दों में ही कह दिया किया पुण्य के लिए परोपकार और पाप के लिए परपीडन अर्थात परहित साधन पुण्य है और दूसरों को कष्ट देना महापाप है। तुलसीदास जी ने भी धर्म और अधर्म की व्याख्या करते हुए एक महान विश्व धर्म की स्थापना की थी, उन्होंने लिखा है –

परहित सरिस धर्म नहि भाई।
पर पीड़ा नहिं अधमाई।।

अर्थात परोपकार के समान कोई दूसरा धर्म नहीं है। आत्मिक सुख और जीवन की शान्ति के लिए परोपकार परम आवश्यक है और यही परम धर्म है। रहीम ने भी इस सत्य को स्वीकार इस प्रकार किया है :–

यों रहीम सब होत है, उपकारी के संग।
बांटन वारे के लगे, ज्यों मेंहदी को रंग।।

भर्तृहरि ने निम्नलिखित पंक्तियों में स्पष्ट कहा है कि :–

पिबन्ति नद्य: स्वयमेव नाम्भ:,
स्वयं न खादति फलानि वृक्षा:।
नादन्ति शस्यम् खलु वारिवाहा,
परोपकाराय सतां विभूतया:।।

अनन्त जल-राशि का भार वहन करती हुई अनेक नदियां अपने-अपने जीवन के प्रभात से सांयतक अनवरत रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान तक आजीवन प्रवाहित होती रहती हैं क्यों ? केवल दूसरों के कल्याण के लिए। फल देने वाले वृक्ष भी सोचते हैं कि सम्भवत: कभी वह दिन भी आयेगा जब थके मांदे मुसाफिरों को हम अपनी छाया प्रदान करके अपने मधुर फल देकर अपना जीवन सफल कर सकेंगे। मैथिलीशरण गुप्त ने एक स्थान पर ऐसा भी कहा है कि :–

निज हेतु बरसता नहीं व्योम मे पानी।
हम हो समष्टि के लिए व्यष्टि बलिदानी।।

भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि में मानव मात्र की कल्याण भावना निहित है। यहां जो कुछ भी कार्य होते हैं वे सदैव, "बहुजनहिताय" और "बहुजनसुखाय" की दृष्टि से ही होते हैं और यही सस्कृति भारतवर्ष की आदर्श सस्कृति रही है। संस्कृत की मूल भावना में *"बसुधैव कुटुम्बकम्"* के पवित्र उद्देश्य पर आधारित थी। इसीलिए भारतीय ऋषियों ने विश्व कल्याण की कामना करते हुए लिखा था –

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दु: खभाग्भवेत्।

अथवा

हे ईश सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी।
सब हों निरोग भगवन् धनधान्य के भण्डारी।।
सब भद्रभाव देखें सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया ना कोई होवे सृष्टि में प्राणधारी।।

अर्थात सब सुखी हों, सब निरोग हों, सबका कल्याण हो, किसी को भी दु:ख प्राप्त न हो। ऐसी पुनीत भावनाएं भारतवर्ष में सदैव प्रवाहित होती रही हैं। वास्तव में परोपकार के समान न कोई दूसरा धर्म है और न ही कोई पुण्य।

इन पक्तियों में हम कह सकते हैं कि *"आहारनिद्राभाय मैथुनमय, समान्यमेतत् पशुभिर्नवाणाम्"* मनुष्य में और पशु मे यदि कोई अन्तर है तो पशु परहित की भावना से शुन्य होता है, वह जानता ही नहीं कि किसी को खिलाना भी है। पशु के जितने भी कार्य होते हैं, वह अपने तक ही सीमित होते हैं। हम देखते हैं कि गौ के दो बछडे हैं परन्तु वे अपने भोजन में से एक दूसरे को नहीं खाने देते। यदि मनुष्य भी मनुष्य के साथ ऐसा व्यवहार करने लगे तो फिर मनुष्य और पशु में अन्तर ही क्या रहा। गुप्त जी ने कहा है कि :–

यही पशु प्रवृति है कि आप आप ही चरे।
मनुष्य है वही कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

मानव जीवन का उद्देश्य यह नहीं कि खाओ, पीयो और मस्त रहो–गोस्वामी जी लिखते हैं :–

एहि तनकर फल विषय न भाई।
सब छत छांडि भजिय रघुराई।।

अर्थात इस जीवन का केवल यही उद्देश्य नहीं है कि मनुष्य अपने को विषय वासनाओं में व्यस्त कर दे, अपितु निकटतम निष्कपट होकर भगवत स्मरण करे। भगवत भजन भी तभी सफल हो सकता है जब आप उस परमेश्वर की सन्तान की *"आत्मवत् सर्वभूतेषु य: पश्यन्ति पण्डित:"* का सिद्धान्त लेकर सहानुभूति सहयोग और संवेदना के साथ सेवा करेंगे। अत: परहित साधना ही मनुष्यता है, यही सबसे बड़ा ओम स्मरण है। किसी पाश्चात्य कवि ने भी लिखा है कि *"द बस्ट वे टू प्रे टु गौड इज टु लव हिज क्रियेशन"*। कुछ ऐसे भी होते हैं जिनका न कोई स्वार्थ है और न कोई लाभ फिर भी वे दूसरों के कार्य में विघ्नबाधाएं अवश्य डाल लेते हैं। भर्तृहरि कहते हैं कि वे कौन है – मैं तो उन्हें जानता पहचानता ही नहीं। *"येनिश्चन्ति निरर्थकं परहितं तेकेन जानीमहे"।*

वृत्रासुर राक्षस का विनाश महर्षि दधीचि की अस्थियों से विनिर्मित अस्त्र से ही संभव था। देवताओं ने इन्द्र की अध्यक्षता में दधीचि से प्रार्थना की और उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर ली। रन्तिदेव ने क्षुधातुर को द्वारस्थ देखकर अपने सामने से थाल उठाकर दे दिया :

परार्थ रन्ति देव ने दिया करस्थ थाल भी।
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थि जाल भी।।

राजा शिवि को देखिए, बाज के आक्रमण से भयभीत कपोत, त्राण प्राप्ति की इच्छा से उनकी गोद मे आ बैठा। बाज वहा भी आ पहुंचा और महाराज के सामने दो शर्तें रखी कि या तो आप मेरा शिकार लौटा दीजिए या फिर उसके बराबर मुझे अपना मास दे दीजिए। राजा शिवि ने तराजू से तौलकर कबूतर के बराबर अपने शरीर का मास दे दिया।

आज हर मानव को सकल्प लेने की आवश्यकता है कि मानव स्वार्थ भावना का परित्याग करके "बसुधैव कुटुम्बकम्" के सिद्धान्त पर चलता हुआ मानवता के कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहे और सदैव यश का भागी बने।

डब्ल्यू०पी० ६९ ए, पीतमपुरा,
दिल्ली–११००३४

शाकाहारी बिल्ली

राधेश्याम पाण्डेय 'दीन'

गीत वहा मत गाओ साथी, जहा हृदय हीनों की बस्ती।
कॉव-कॉव करने वाले स्वर, जिनको वेद-मंत्र से लगते।
भाषण के रासन परोसकर, भोली मानवता को ठगते।
श्रम के खून-पसीने पीकर, मिथ्या दिव्य दिखाते हस्ती।
गीत वहां मत गाओ साथी, जहॉं हृदयहीनों की बस्ती।।१।।
चूहे तो खा गयी हजारों, बिल्ली फिर भी शाकाहारी।
मौनी बनी ताक में बैठी, घूर रही है वसुधा सारी।
क्या विश्वास डुबा दे किस पल रे मल्लाह! तुम्हारी कश्ती।
गीत वहां मत गाओ साथी, जहॉं हृदयहीनों की बस्ती।।२।।
खाल सिंह की ओढ निरंकुश, गधे लगे हरियाली चरने।
जिसको चाबी दिया वही तो, अपनी लगा तिजोरी भरने।
पानी महगा हुआ इस तरह, मौत निगोड़ी फिर भी सस्ती।
गीत वहां मत गाओ साथी, जहॉं हृदयहीनों की बस्ती।।३।।
घोटालों की विकट बाढ़ में, ये समाजवादी हथकण्डे।
बेच रहे अस्मिता देश की, लेकर रंग-बिरंगे झण्डे।
अब लगता दिन दूर नहीं है, उतर जायेगी सारी मस्ती।
गीत वहां मत गाओ साथी, जहॉं हृदयहीनों की बस्ती।।४।।
कवि हो, कहने की आदत है, किन्तु कौन सुनने वाला है।
चोर-चोर मौसेरे भाई, सबके होंठों पर ताला है।
नई बात क्या पड़ी डकैती, प्रहरी जहॉं लगाते गश्ती।
गीत वहां मत गाओ साथी, जहॉं हृदयहीनों की बस्ती।।५।।
जिन मूल्यों के लिए पूर्वजों, ने खेली खूनों की होली।
मातृभूमि के अमर शहीदों, ने खायी सीने पर गोली।
'दीन' उसी तप, त्याग, समर्पण हेतु बरतनी होगी सख्ती।
गीत वहां मत गाओ साथी, जहॉं हृदयहीनों की बस्ती।।६।।

सम्पादक चन्द्रिका
प्रतापगढ़ (उ०प्र०)

पितरों की सेवा और वृद्धाश्रम

मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

सामान्य हिन्दू परिवारों मे आश्विन कृष्ण प्रतिपदा (२८ सितम्बर से १२ अक्टूबर ९९) अमावस्या तक श्राद्ध पक्ष मनाया जायेगा। यह पक्ष श्राद्ध तथा तर्पण के नाम से सर्वसाधारण में बहुप्रचलित शब्द है। वस्तुत पौराणिक मान्यता के अनुसार पूर्णिमा से अमावस्या तक की कालावधि में ही अपने दिवगत माता पिता अथवा अन्य किसी व्यक्ति का श्राद्ध कर उसकी पुनर्स्मृति की जाती है। इस सम्पूर्ण पक्ष में अपने दिवगत प्रियजन की जिस तिथि मे मृत्यु हुई होगी उसी तिथि मे उसका श्राद्ध तथा तर्पण किया जाता है। इसमे यह विशेषता होती है कि दिवगत की मृत्यु तिथि दिनाक तथा सवत् आदि को महत्व न देकर मात्र तिथि (भारतीय) को इसी पक्ष मे सबधित तिथि को श्राद्ध तर्पण किया जाता है और दिवगत का पुण्य स्मरण किया जाता है।

ससार के आदि ज्ञानपूर्ण ग्रथ वेदों में कही भी श्राद्ध तथा तर्पण का उल्लेख नहीं पाया जाता। हिन्दू समाज मे यह विशिष्ट परम्परा चार से छठी शताब्दी अर्थात् पौराणिक काल से प्रारम्भ हुई है। ऐतिहासिक दृष्टि से यही समय पुराणो का रचना काल माना जाता है। पौराणिक काल की यह एक ऐसी देन है जो पिछले कई हजारो वर्षों से प्रचलित हो रही है वैदिककालीन धर्मशास्त्रो मे मृतको को न तो पिण्डदान देने का उल्लेख और न तर्पण का। पौराणिक मतानुसार इस श्राद्ध पक्ष मे पूर्वजो के गुणो का नाम स्मरण एवम उनके सत्कार्यों सद्गुणो तथा आदर्शों का स्मरण कर उनकी कीर्ति–पताका ऊची उठाये रखकर जीवन मे निरन्तर आगे बढ़ने का सकल्प दिवस है।

वैदिक मान्यताओ के अनुसार पितर शब्द का सामान्य अर्थ जीवित माता पिता दादा-दादी नाना नानी परिवार मे अन्य वृद्ध पुरुष विद्वान पुरोहित कुल पुरोहित त्यागी सन्यासी होता है। परिवार के इन जीवित वृद्धो की सेवा-चाकरी देख रेख सेवा करना प्रत्येक सदस्य का कर्त्तव्य है। परिवार के लोग इन वृद्धो की सेवा अत्यन्त विनम्र भाव तथा श्रद्धा सहित करे। सम्पूर्ण श्रद्धा युक्त कार्यो को जो कि इन जीवित माता पिता पितामह पितामहों आदि के लिए निरन्तर सेवा करते रहना ही वास्तविक श्राद्ध है। अर्थात् श्रद्धा युक्त समस्त कार्यो को ही श्राद्ध कहते हैं। यह सेवा जीवित-पितरों के लिए ही सम्भव है। दिवगत पूर्वजों के गुण-स्मरण कर उनका अनुकरण ही सच्चा श्राद्ध है। मृतको के प्रति यह सभी कार्य सम्भावित नहीं है। जैसे पिंडदानादि।

इसी प्रकार तर्पण कार्य श्रद्धा से और भी महत्वपूर्ण है। केवल जीवितो के प्रति श्रद्धा रखने से कर्त्तव्य की पूर्ति नहीं होती प्रत्येक स्त्री-पुरुष पर तीन ऋण माने गये हैं। यथा मातृ ऋण पितृ ऋण एव ऋषि ऋण। मा अपने गर्भ में शिशु को नौ माह तक धारण कर तथा सन्तानोत्पत्ति के समय असह्य प्रसव-वेदना सहन करती है। उसके पश्चात् वह ५ वर्ष तक सतत् अपना दुग्ध पान कराती हुई अपना वात्सल्य पूर्ण करती है। एक विद्वान कवि के शब्दों मे 'माता के पवित्र चरणो में ही स्वर्ग विद्यमान है। जिसने मा की सेवा कर उसका आशीर्वाद ले लिया। मानो उसने बड़ा भारी पुण्य कमा लिया। प्रत्येक सन्तान पर माता के अखूट भरण रहते हैं।

पिता का ऋण उतारने के लिए यौवनावस्था मे विवाह कर योग्य सन्तानोपत्ति करना ही श्रेष्ठ कार्य है। स्वयम् सुपुत्र सुपुत्री बनकर अपने माता पिता की सेवा और कीर्ति बनाये रखना उच्च कोटि का कार्य है।

इसी प्रकार ऋषि ऋण उतारने का यह तात्पर्य है कि माता पिता गुरु आचार्य तथा विद्वानो से हमने जो ज्ञान अर्जित किया है उसे समाज हितो में वितरित कर सामाजिक ऋण उतारना ही देव ऋण या ऋषि ऋण उतारना है।

यह कहा भी गया है कि वृद्धो विद्वानो तथा जनक जननी के आर्शीवाद प्राप्त करने से दीर्घायु यश धन और कीर्ति प्राप्त होती है। मनुष्य को समाज में रहकर इन चारो तत्वो की बहुत आवश्यकता होती है। इन्हे प्राप्त करने पर ही सच्चा श्राद्ध और तर्पण होता है। वृद्धो के प्रति श्रद्धा और सेवा (तृप्तिकरण) भाव रखना हमारी परम्परा है।

श्रद्धापूर्ण कृत्य जीवितो के प्रति सच्चा श्राद्ध है। इसके पश्चात तर्पण है। श्रद्धा और तृप्ति यह दोनो सापेक्ष शब्द है। वृद्धो के प्रति मात्र श्रद्धा रखना माने उनके प्रति आधा कर्त्तव्य निर्वाह करना है। तृप्ति अर्थात परिवार के वृद्ध जनो की श्रद्धा पर्वक उनकी अनिवार्य आवश्यकताए यथा स्वास्थ्यप्रद भोजन ऋतुओ के अनुसार भोजन स्वच्छ एव प्रकाश युक्त स्थान (कमरे) एव रूग्ण होने पर उत्तम से उत्तम औषधोपचार तथा उनके लिए ईश्वर स्तुति उपासना एवम स्वाध्याय के लिए उचित व्यवस्था रखना तर्पण है। इन्ही बातो से बृद्ध माता पिता परम सन्तुष्टि एवम परम तृप्ति अनुभव करते हैं। इसी से तृप्ति का नाम ही तर्पण है। इस प्रकार हमे सुसन्तान सिद्ध करने के लिए अपने माता पिता तथा वृद्धो की सतत श्राद्ध सहित तर्पण क्रिया उनके जीवित रहने तक करना चाहिए। यही महान कार्य हमारी वैदिक परम्परा और उच्च सस्कृति है। इतना सा ही यह पवित्र सकल्प है।

सम्प्रति उपभोक्ता सस्कृति के विकास के कारण आज हमारा भारतीय सयुक्त परिवार टूट कर एकल परिवार हो रहा है। उसमे माता पिता अब बोझ से लगने लगे हैं। यह कितने आश्चर्य की बात है कि जब सन्तान होती है तब परिवार में बड़ी खुशिया मनाई जाती हैं। पुत्र पुत्री का प्रत्येक वर्ष बड़ी धूमधाम से जन्म दिवस मनाया जाता है। प्रत्येक सस्कार बडे उत्साह से खूब रुपया पैसा खर्च कर किया जाता है। यहा तक कि लडके की मन-पसद लडकी से विवाह किया जाता है। किन्तु यह क्या विवाह होते ही विवाहित दम्पति अपने बूढ़े माता पिता को भार तुल्य मानने लगता है। यह भारतीय परिवार की सरचना का घोर पतन है कि बेचारे उन्हीं माता-पिता को वे ही सन्तानें उनके अन्तिम समय मे जब कि उनका खून ठडा पड़ने की ओर अग्रसर होने की ओर रहता है किसी अन्य बृद्ध-आश्रम मे भेज देते हैं। वे बेचारे माता पिता अपने दुर्भाग्य को कोसते हुए अनाथ सा जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य हो जाते हैं। जिन सन्तानों का लालन-पालन सवर्द्धन उन्होंने अपना पेट काट कर किया था उसी सन्तान ने उन्हे अनाथ बनाकर किसी सुदूर। वृद्ध आश्रम मे भेजकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मान ली यह कितनी भारी विडम्बना है।

श्राद्ध पक्ष मे पूर्णिमा से लेकर आश्विन कृष्ण की अमावस्या तक किसी न किसी दिन हिन्दू–परिवार में मृतको को पिण्डदान किया जाता है किंतु वर्तमान मे जीवित माता पिता तथा वृद्ध परिजनो की घोर उपेक्षा कर यह उपरोक्त क्रिया सम्पन्न करना कहा तक उचित है। इसे ही देखकर एक कवि ने ठीक ही कहा है –

जीवित मात पिता से दगम-दगा मर गये पहुचावें गगा।
जीवित मात-पिता को देय न कौरा मरने पर बनवायें चौरा

अर्थात जीवित माता पिता की उपेक्षा कर उनसे लडाई झगडा सम्पत्ति का बटवारा अलग हो जाना आदि एक ओर हैं। उनके मर जाने पर सामाजिक दिखावे के लिए उन्हे सद्गति का ढोग बताने के लिए उनके मृतक शरीर को गगा या किसी पवित्र नदी मे छोड देना कर्त्तव्य मान लिया गया है। अन्यथा उनके मरने पर उनकी हड्डियो जिन्हे श्रद्धावश फूल कहा जाता है। को नदियो मे प्रवाहित करने के लिए हजारो रुपये व्यय कर दिये जाते हैं। कुछ लोग माता पिता के मरने के बाद कुछ पवित्र स्थान बनाकर कर्त्तव्य पूर्ण करना समझते है। जिन जीवित माता पिता को अन्न वस्त्र और औषधि की व्यवस्था नहीं की उनके ही मरने के पश्चात। मृतक श्राद्ध पर हजारो रुपये खर्च कर लोगो को भोजन करा दिया जाता है। यह भारतीय समाज की विडम्बना ही है। इस प्रकार के कार्य समाज के अनेक बहु शिक्षित और विद्वान लोग भी करते देखे जा सकते हैं।

हम स्वतत्र राष्ट्र के नागरिक है। हमे अधविश्वासो कुरीतियो तथा रुढियो से भी स्वतत्र होना चाहिए। बहुत ही कष्टो से बनाई धन-सम्पदा का सदुपयोग करना चाहिए। अपने माता पिता या वृद्ध परिजन की सेवा श्रद्धा सहित कर तथा उनकी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर उनकी सन्तुष्टि के समस्त प्रावधान इक्ट्ठे कर उनके जीवित रहने तक प्रत्येक दिन श्राद्ध और तर्पण करना चाहिए। यही सच्चा श्राद्ध और तर्पण है।

अन्त मे सामाजिक कार्य कर्त्ताओ तथा सामाजिक सगठनों का भी यह कर्त्तव्य है कि वे इन कथित वृद्ध आश्रमो की स्थापना को बढावा न दे। वृद्ध आश्रम एक प्रकार से सन्तानो की उपेक्षा तथा माता पिता के निरादर केन्द्र है। यह कोई पुण्य कार्य नहीं है। इसके स्थान पर स्वेच्छिक सामाजिक सस्थाऐ अपने अपने सम्पर्क साधनो से परिवार मे वृद्धजनो की सेवा तथा जनक-जननी की सेवा करने का प्रचार करे।

इस श्राद्ध पर अभिभावकों के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि का यही सात्विक प्रयास है।

सुकिरण ३/१३ सुदामा नगर
इन्दौर–७ (म०प्र०)

प्रभु भक्ति का आनन्द कब आयेगा ?

देवराज आर्य मित्र

भक्ति भक्त शब्द की भाववाचक सज्ञा है। भक्त का अर्थ है जोडना मिलाना और इसका विपरीतार्थक शब्द है विभक्त जिसका अर्थ है भाग करना पृथक करना। अत भक्ति शब्द का अर्थ हुआ मिलन। आप किस से मिलना चाहते हैं अर्थात किस की भक्ति करना चहाते हैं ? कौन है आपका इष्ट देव या सच्चा साथी जो सदैव आपकी सहायता करता है और कभी धोखा नहीं देता जिस पर आपको पूरा भरोसा है। क्या आपके परिवार मे या रिश्तेदारों मे या कोई मित्र ऐसा है जो विपत्ति में हर समय नि स्वार्थ भाव से आपका साथ देने को तैयार हो। यदि आपको अपने किसी जीवन साथी पर गर्व है तो आप बडे सौभाग्यशाली हैं। मैंने अपने जीवन में जो अनुभव प्राप्त किया है उसके अनुसार प्यारे प्रभु के अतिरिक्त और कोई विश्वसनीय सहायक नहीं है। परमपिता परमात्मा के जितने उपकार हैं उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। उसका जितना धन्यवाद किया जावे थोडा है। उसकी भक्ति का रसानन्द वही प्राप्त कर सकता है जो उसका सच्चा भक्त होगा।

भक्ति के मार्ग पर चलने के लिए भक्ति के दो अगो का सशक्त होना आवश्यक है। पहला अग है ज्ञान रूपी चक्षु और दूसरा अग श्रद्धा रूपी पाव अर्थात् ज्ञान के बिना भक्ति अन्धी है और श्रद्धा के बिना पगु (लगडी) है। पौराणिक भक्तों में श्रद्धा तो है परन्तु अन्धी है। अन्धविश्वास के कारण भेड चाल चल रहे हैं भटक रहे हैं धक्के खा रहे हैं कहीं शान्ति प्राप्त नहीं हो रही है। आर्य समाजी भक्तों मे कुछ ज्ञान है तो वह लगडा है अर्थात श्रद्धा नहीं है। जब तक अन्धे और लगडे में एकता नहीं होगी तब तक मार्ग पर चलना कठिन है।

भक्ति करने के लिए पहले व्रत धारण करना होगा। व्रत किसे कहते हैं ? सारे दिन भूखे रहने का नाम व्रत नहीं है व्रत का अर्थ है वर लेना अर्थात प्रतिज्ञा करना। जैसे कोई व्यक्ति किसी कार्य के दुष्परिणाम स्वरूप यह धारले कि भविष्य मे अब मैं ऐसा दुष्कर्म कभी नहीं करुगा। ओ३म् विश्वानि देव का प्रार्थना मत्र प्रतिदिन रटते रहो कोई लाभ नहीं है। जैसे गुड गुड कहने से जीभ मीठी नहीं होती जब तक गुड को जीभ से चखा न जाये। ऐसे ही प्रार्थना करने का लाभ तब होगा जब मत्र के अनुसार कार्य करेगे।

अत प्यारे प्रभु की भक्ति का रसानन्द प्राप्त करने के लिए अपने को भक्ति के योग्य बनाना होगा अर्थात अपना आत्म निरीक्षण करके दुर्गुणो और दुर्व्यसनों को निकालना होगा और प्रभु भक्ति का प्रसाद ग्रहण करने के लिए मनरूपी पात्र को उज्ज्वल बनाने की आवश्यकता है। अमीचन्द अपनी समस्त बुराईयो को छोड कर जब सच्चा भक्त बन गया तब उसे जो आनन्द प्राप्त हुआ वह लिखता है –

तेरी कृपा से आनन्द पाया,
वह वाणी से जाये क्योकर बताया।

आओ हम भी इस आनन्द को प्राप्त करने के लिए जीवन को पवित्र बनायें।

आर्य समाज बल्लभगढ
जि० फरीदाबाद ◆

मुक्तक

नैतिकता के बन हिमायती कुछ ऐसे आयाम बनाओ।
नैतिकता में शक्ति महान है दुनिया को सिद्ध कर दिखलाओ।
नैतिकता को त्याग दिया तो शेष भला क्या रह पायेगा।
नैतिक बल की महाशक्ति से, देश का गौरव-मान बढाओ।

श्री सत्यनारायन भारद्वाज प्रभाकर ◆

शोक समाचार

आर्य समाज ब्यावर के पुरोहित एव भजनोपदेशक श्री अमरसिह जी वाचस्पति की पूज्या माताजी का २४ ६ ९९ को अकस्मात निधन हो गया है।

आर्य समाज ब्यावर की अन्तरग सभा एव सभी – आर्य सदस्य उनके प्रति शोक सवेदना प्रकट करते हुए श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं तथा प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि उस दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

मत्री बलवन्त आर्य ◆

निज संस्कृति

कवि नितिन सबरंगी पत्रकार

निज सस्कृति का पालन करना अब तो बहुत जरूरी है।
यहा सत ऋषियो का जीवन उन्नत रहा विचारो से
सत्कर्मो को अधिक मान्यता मिली महामनुहारो से।
इसी सस्कृति के दिनकर से जग ने भी किरणो मागी
यहा आदि कविता जन्मी जब कवि मन मे करुणा जागी।
बिना सस्कृति के ज्ञान और विद्या भी रहे अधूरी है
निज सस्कृति का पालन करना अब तो बहुत जरूरी है।।
यहा मधुरता ही भरती थी हर उपवन उमराई से
यहा प्यार की गध उठा करती थी हर पुरवाई से।
सरस बसन्ती पवन वीरता की उमग भर जाता है
यहा पर्व होली दिवाली का समता सिखलाता है।
जो सस्कृति का मान करे उसका सम्मान जरूरी है
निज सस्कृति का पालन करना अब तो बहुत जरूरी है।।
सस्कृति का पत्थर भी श्रद्धा से पावन बन जाता है
तप साहस पुरुषार्थ से गगा भी ले आता है।
सामूहिक सहकार उमडता था खेतों खलियानों से
यहा वीर गाथाए भरी रही अनगिनत बलिदानो से।
तूफानो मे साहस रखना हमको बहुत जरूरी है
निज सस्कृति का पालन करना अब तो बहुत जरूरी है।।

पी–३२९ पल्लवपुरम्–२
मेरठ ◆

मनु, अम्बेडकर और जाति व्यवस्था

पृष्ठ ५ का शेष

शक्तियो का विकास कर उसे अधोगति से उठाकर सर्वोच्च अवस्था ब्राह्मणत्व तक ले जाना है जैसा कि स्वामी विवेकानन्द ने भी बार बार कहा है।

इसके अलावा डा० अम्बेडकर कहते हैं कि 'यदि आप जाति प्रथा मे दरार डालना चाहते हैं तो इसके लिए आपको हर हालत मे वेदो और शास्त्रो मे डायनामाइट लगाना होगा। (जाति प्रथा उन्मूलन पृष्ठ ९९) एक तरफ ये मानते हैं कि वेदो मे जो वर्ण व्यवस्था है वह गुण कर्म आधारित होने से बुद्धिमत्तापूर्ण है। फिर वेदो मे डायनामाइट क्यो ? क्या यह परस्पर विरोधी कथन नहीं है ? साथ ही वे धर्मशास्त्रो को त्यागने की बात करते हैं परन्तु उन्होने हिन्दू धर्मशास्त्रो को त्यागकर बौद्ध शास्त्रो को प्रामाणिक माना। लेकिन बौद्ध होने पर भी उन्होंने बौद्ध धर्मशास्त्रो की अवज्ञा की क्योंकि महात्मा बुद्ध ने स्वय वेदों की प्रशसा की है और धर्म के विषय में वेदों की सराहना की है। जैसे – *विद्वा च वेदेहि समेच्च धम्मम्। न उच्चा वच गच्छति भूरि पत्रो* (सुत्तनिपात २९२) यानि महात्मा बुद्ध कहते हैं जो विद्वान वेदों से धर्म का ज्ञान प्राप्त करता है वह कभी विचलित नहीं होता है। इसी प्रकार पुन वेद को जानने वाला विद्वान् इस ससार मे जन्म और मृत्यु की आसक्ति का त्याग करके इच्छा तृष्णा तथा पाप से रहित होकर जन्म मृत्यु से छूट जाता है। *'सुत्तनिपात–१०९०*

फिर क्या करें ? – यदि हम मनु स्मृति के मिलावटी श्लोकों को अमान्य समझकर विशुद्ध मनुस्मृति को अपनाये और पूर्वाग्रहो से ग्रसित मनु विरोध के कुप्रचार को बन्द कर दे तो भले ही हम आज एक आदर्श वर्ण हीन और वर्ग हीन समाज की रचना न कर सके। परन्तु कम से कम जाति भेद की खाई को काफी हद तक पाट सकते हैं तथा जन्मना जाति जन्य जाति पात के घृणा द्वेष एव वैमनस्य के घाव को मलहम जरूर लगा सकते हैं तथा एक प्रभावी सामाजिक सोहार्द अवश्य पैदा कर सकते हैं क्योंकि मनु आज की जाति व्यवस्था का जनक नहीं है। उनकी वर्ण व्यवस्था का आज की अमानवीय अधार्मिक अप्रासगिक जन्मना जाति व्यवस्था से कोई सम्बन्ध नहीं है। वह हिन्दू धर्म का अग नहीं है। अच्छा हो हम निष्पक्ष भाव से मनु के यथार्थ को समझें और पारस्परिक समता ममता और मान्यता के आधार पर सौहार्दपूर्ण विकासवादी समाज की पुनर्रचना करें। ◆

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा टी०टी० नगर भोपाल के तत्वाधान मे इन्दौर में प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन दिनांक २३/२४/२५ नवम्बर १९९६ को आर्य समाज सयोगितागज इन्दौर के प्रागण में किया गया है जिसमें कि प्रथम दिन शोभा यात्रा भी निकलेगी और तीन दिन पचकुण्डी बृहत यज्ञ होगा। इसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध ख्याति प्राप्त विद्वान भाग ले रहे है। विशेष रूप से मेरठ (उ०प्र०) के भूतपूर्व इमाम मौलाना महबूब अली खा जो कि हाल ही मे वैदिक धर्म में प्रविष्ठ हुए हैं और वर्तमान में प० महेन्द्र पालजी आर्य के नाम से जाने जाते हैं की स्वीकृति प्राप्त हो गई है।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव एव महामत्री डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री आचार्य विशुद्धानन्दजी मिश्र बदायु (उ०प्र०) आचार्य वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय तुगलकाबाद विस्तार नई दिल्ली श्री देमराज जी आर्य वहेड़कला (गाजियाबाद उ०प्र०) श्री लक्ष्मणसिह जी बेमोल यमुनानगर (हरियाणा) एव प० सोमदेवजी शास्त्री मुम्बई उक्त जानकारी सभामत्री प० रामावतार शर्मा ने दी आपने बताया कि दिल्ली के मुख्य मत्री माननीय श्री साहेबसिह वर्मा सम्मेलन का उद्घाटन करेगे इसके अलावा मध्यप्रदेश के मुख्यमत्री माननीय श्री दिग्विजयसिह जी एव जम्मू काशमीर के भूतपूर्व राज्यपाल माननीय श्री जगमोहन जी एव भारतीय जनता पार्टी की प्रमुख प्रवक्ता श्रीमती सुषमा स्वराज के आने की प्रबल सम्भावना है। साथ ही मे श्री विमल वधावन जी न्याय प्रमुख एव वरिष्ठ अभिभाषक सर्वोच्च न्यायालय दिल्ली भी इन सभी कार्यक्रमो मे उपस्थित रहेगे। प्रात की सभी आर्य समाजो से अनुरोध है कि अधिक से अधिक सख्या मे आर्य जनो के साथ पहुचकर इस धार्मिक समागम का लाभ ले।

नरकटिया गंज आर्य वीरदल शिविर सम्पन्न

१८ से २२ सितम्बर ९६ तक नरकटिया गज प० चम्पारण बिहार मे स्थानीय शिविर सार्वदेशिक आर्य वीर दल के महामत्री ब्र० राजसिह आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ तथा प्रशिक्षण हरिसिह आर्य कार्यालय मत्री द्वारा दिया गया। इस शिविर मे १२५ आर्य वीरो ने प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा समापन अवसर पर आर्य वीरो न प्रतीज्ञा की कि हम अपने क्षेत्र मे आर्य वीर दल की शाखाओ को सुचारू रूप से चलाएगे इसी अवसर पर निम्नलिखित नियुक्ति महामत्री श्री ब्र० राजसिह जी द्वारा की गयी।

१ रामेश्वर प्रसाद आर्य (सचालक पश्चिमी चम्पारण बिहार क्षेत्र)

२ ईश्वरचन्द्र आर्य (मत्री पश्चिमी चम्पारण बिहार क्षेत्र)

एव स्थानीय नियुक्ति नरकटिया गज

१ आदेश कुमार आर्य (शाखा नायक आर्यवीर दल नरकटिया गंज)

२ राकेश कुमार आर्य (मत्री आर्यवीर दल नर कटिया गज)

३ सुबोध आर्य(कोषाध्यक्ष आर्यवीर दल नर कटिया गज)

सार्वदेशिक आर्यवीर दल के शिविर सम्पन्न

डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल बरेटा मण्डी जिला मानसा पजाब मे ८ सितम्बर से १५ सितम्बर तक शिविर आयोजित किया गया जिसमें ४५ आर्य वीरो एव १५ वीरागनाओ ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। तथा यहा पर दैनिक शाखा का शुभारम्भ भी किया गया। विद्यालय के स्टाफ एव प्रचार्या जी का सराहनीय सहयोग रहा।

आर्य समाज नरकटियागज बिहार पश्चिमी चम्पारण मे १८ से २२ सितम्बर तक शिविर आयोजित किया गया जिसमे १२५ आर्य वीरो ने प्रशिक्षण प्राप्त किया समाज के अधिकारियो का विशेष सहयोग सराहनीय रहा।

आर्य समाज फजलपुर मेरठ उ०प्र० मे २७ से २६ सितम्बर तक वार्षिकोत्सव के साथ स्थानीय शिविर मे १५ आर्य वीरो ने प्रशिक्षण प्राप्त किया

ये सभी शिविर हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुए। इस अवसर पर कइ आर्य वीरो ने आर्य वीरदल का कार्य पूर्ण समय करने की प्रतिज्ञा की जिनके उज्ज्वल भविष्य की सार्वदेशिक आर्य वीरदल कामना करता है। उक्त सभी शिविरो मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल के कायालय मत्री श्रीहरी सिह आर्य ने प्रशिक्षण प्रदान किया।

सार्वदेशिक आर्यवीर दल के दशहरा अवकाश पर शिविर

१ – ८ से १४ सितम्बर १९९६ तक डी०ए०वी० बरेटा मण्डी मानसा पजाब

२ – १७ जुलाई से २४ अगस्त तक प० राजगुरु छात्रावास महु (म०प्र०)

३ – १८ से २२ सितम्बर आर्य समाज नरकटिया गज प० चम्पारण (बिहार)

४ – १२ से २० अक्टूबर तक ठाकुमल कन्या विद्यालय बल्लभगढ (उ०प्र०)

५ – ५ व ६ अक्टूबर प्रान्तीय हरियाणा आर्य वीर दल महा सम्मेलन पानीपत (उ०प्र०)

६ – १४ से २१ अक्टूबर जनता इण्टर कालिज पलडी मेरठ (उ०प्र०)

७ – १८ से २७ अक्टूबर सरदार बल्लभ भाई पटेल जू० हाई० स्कूल जधेडा समसपुर सहारनपुर (उ०प्र०)

८ – १६ से २७ अक्टूबर गुरुकुल आश्रम आमसेना उडीसा

९ – २६ अक्टूबर से ७ नवम्बर तक कानपुर देहात (उ०प्र०)

१० – २० नवम्बर से २० दिसम्बर तक लातूर महाराष्ट्र

आर्य उप–प्रतिनिधि सभा जनपद गाजियाबाद का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

आर्य उप–प्रतिनिधि सभा जनपद गाजियाबाद के वार्षिक निर्वाचन मे सर्वसम्मति से श्री श्रद्धानन्द शर्मा प्रधान डा० जयवीर सिह मत्री तथा श्री माया प्रकाश कोषाध्यक्ष चुने गये। सभा ने इन तीनो को ही शेष पदाधिकारी एवम अतरग सभासदो को मनोनीत करने का अधिकर दिया। कल रविवार को गज आर्य समाज गाजियाबाद के सभागार गाजियाबाद मे निर्वाचन अत्यन्त सदभाव पूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ जिसमे गाजियाबाद जनपद के सभी आर्य समाजो के प्रति निधियो ने उत्साहपूर्वक बहुत बडी सख्या मे भाग लेकर अभूतपूर्व एकता का परिचय दिया।

इस सम्बन्ध मे उल्लेखनीय है कि तीन वर्ष पूर्व इस जनपदीय सगठन मे मतभेद के कारण जो दो सभाए बन गई थीं उनके एकीकरण के बाद यह पहला वार्षिक निर्वाचन था। बैठक क अन्त मे नवनिर्वाचित प्रधान श्री श्रद्धानन्द शर्मा ने सगठन को और अधिक व्यापक व सुदृढ बनाने की अपील करते हुए आये हुये सभी प्रतिनिधियो का धन्यवाद किया।

समर्पणानन्द जन्मशती समापन समारोह की तिथियों में परिवर्तन

२५ २६ २७ अक्टूबर १९९६ को स्वामी समर्पणानन्द जन्मशती समापन समारोह के आयोजन का निश्चय किया गया था किन्तु जिस लक्ष्य को ध्यान मे रखकर यह कार्य प्रारम्भ किया गया था उसकी पूर्ति के लिए पर्याप्त समय की अपेक्षा थी इस लिये इस तिथि को आगे बढाने का निश्चय किया गया और अब वह तिथि फाल्गुन कृष्ण ६ ७ ८ २०५३ वि०स० तदनुसार २८ फरवरी दिन शुक्र० तथा १ २ मार्च १९९७ दिन शनि०–रवि० को है। सभी आर्य सज्जन आयोजको की विवशता को समझ कर कार्य पूर्ति मे उत्साह पूर्वक लगेगे इसके साथ ही एक दुर्घटना घटी कि हमारे कर्मठ कार्यकर्त्ता कर्ममुनि वानप्रस्थी का दिल्ली जक्शन प्लेट फार्म न०–१३ पर प्रात काल ५ ४५ पर सध्या करते समय २६ ०६ १९९६ को किसी ने आश्रम के सभी विवरण सम्बन्धी कागज एव रसीदे तथा नकद ६००/ रुपये और एक १०००/ का चैक जो अमृतसर का था झोला सहित उठा लिया इससे श्री शताब्दी समारोह का कार्यक्रम प्रभावित हुआ है।

गुरुकुल विज्ञान आश्रम
पाली मारवाडा राजस्थान

५००० वर्षों से सोने वालो जागो

एक चौकीदार चिल्ला–चिल्लाकर कह रहा है जागो ! जागो !! जागो !!

तो सभी पूछते है कि भाई क्या बात है ? तब चौकीदार ने उन्हे **"सत्यार्थ प्रकाश"** पुस्तक देते हुए कहा कि इसे पढो !

आर्यसमाज आपको जगाने आया है। हिन्दू सस्कृति की रक्षा केवल आर्यसमाज ही कर सकता है इसलिए ५००० वर्षों से सोने वालो जागो !

उठो जागो और श्रेष्ठता को प्राप्त कर ज्ञान प्राप्त करो। सत्य असत्य को पहचानो और अपनी सस्कृति की रक्षा हेतु सगठित हो शक्तिशाली बनो तभी हम अपने देश की रक्षा कर सकेगे और तभी **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** चरितार्थ कर सकेगे।

आर्यो (हिन्दुओ) का अस्तित्व आज सकट मे फसा पडा है। दिन प्रतिदिन हम अपनी प्राचीन वैदिक सस्कृति को खो रहे हैं। हम सब आर्य (हिन्दु) मात्र एक हैं–यह देश (आर्यवर्त) हैं। हमारी मातृभाषाये भिन्न–भिन्न होते हुए भी हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी ही है।

आज आपको फिर अपने इस अस्त व्यस्त भारत को पुन स्वर्ग बनाने के लिए व्रत लेना होगा हम अपने देश की प्राचीन सस्कृति को फिर से उजागर करने की प्रतिज्ञा करते हैं।

"सत्यार्थ प्रकाश" पुस्तक सभी भाषाओ मे मिलता है। मगवाकर अवश्य पढे।

सब प्रकार से अपनी उन्नति करना चाहो तो आर्य समाज के सत्सगो मे अवश्य पधारे।

आर्य समाज जामनगर

आर्य गुरुकुल पुरस्कार

मुम्बई १५ सितम्बर (न०प्र०)। आर्य समाज द्वारा सचालित देश विदेशो मे एक सौ से अधिक गुरुकुल हैं जिनमे लगभग ६२ कन्या गुरुकुल हैं। इनमे भारतीय सस्कृति सस्कृत एव मानव चरित्र निर्माण की शिक्षा दी जाती है जिसमे अनेक विद्याओ व कलाओ का समावेश है। वेदो के मत्रो स जब गुरुकुल के विद्यार्थी यज्ञ करते हैं तो सुनने वालो का मन ईश्वर भक्ति से आल्हादित हो जाता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने नारियो को वेद पढने का अधिकार दिलाया। उन्होने कहाकि जब तक नारी शिक्षित नहीं होगी देश कभी भी उन्नति नहीं कर सकता क्योकि सतान को सस्कार देने वाली माता ही है 'माता निर्माता भवति।

आज स्थान स्थान पर गुरुकुल स्थापित होने चाहिए इसके लिए हमे प्रयत्नशील होना है। इसी उद्देश्य को लेकर आर्य महिला समाज माटुगा ने प्रथम बार आर्य गुरुकुल पुरस्कार प्रारभ किया है। इसका समारोह ८ सितम्बर रविवार को प्रात १० बजे सपन्न हुआ।

बहुत बडी सख्या मे गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। स्व० प्रज्ञादेवी पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी की १० कन्याओ ने जब वेद पाठ किया तो जनता आत्मविभोर हो उठी। ११ हजार की राशि को अगले वर्ष से २५ हजार बढा दिया गया और लगभग २० छात्रवृत्तिया ४०००/ रु० वर्ष की नागरिको ने प्रदान की। कन्याओ ने महिला सम्मेलन मे 'कन्याओ का उपनयन सस्कार प्रस्तुत किया। महिला समाज माटुगा की अध्यक्ष लज्जारानी गोयल ने कहा कि इस पुरस्कार की प्रेरणा मेरे मन मे डा० प्रज्ञादेवी के अकस्मात निधन से जाग्रत हुई। भारतीय सस्कृति आज विलुप्त होती जा रही है इसकी रक्षा की अत्यत आवश्यकता है।

हिन्दी को प्रोत्साहन दें

गुरुकुल आर्य नगर हिसार का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल आर्य नगर हिसार का ३३वा वार्षिकोत्सव १९ २० अक्टूबर १९९९ को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान नेता तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर धर्म लाभ उठाये।

प० राम स्वरूप शास्त्री
आचार्य

श्रीमती सुदर्शन महाजन राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित

सर्वप्रथम कुलाची हसराज विद्यालय अशोक विहार नई दिल्ली मे शिक्षिका के रूप मे कार्यरत रही। तत्पश्चात सन १९८२ मे झब्बनलाल डी०ए०वी० पब्लिक विद्यालय मे प्रधानाध्यापिका के पद पर आसीन हुयीं। श्रीमती सुदर्शन महाजन का प्रशासकीय जीवन सघर्षरत रहा। आज यह सफलता के उच्च शिखर की बुलन्दियो को छू रही है। इनकी कर्त्तव्यनिष्ठा सेवापरायणता कर्मण्यता व अदम्य साहस इन्हे इस मजिल तक पहुचाने मे सहयोगी रहे। इनकी प्रतिभा विद्यार्थियो के चहुमुखी विकास व उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करने मे सहायक है। इस विद्यालय के छात्रगण न केवल शिक्षा के क्षेत्र मे अपितु खेलकूद विज्ञान कला व सास्कृतिक कार्यक्रमो के क्षेत्र मे अग्रगण्य हैं। इन्हीं के सफल नेतृत्व मे विद्यार्थियो को शौर्य–पुरुस्कार से पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त प्रौढ-स्त्रियो व युवतियों को सिलाई कढाई की शिक्षा का प्रबन्ध भी इन्ही के द्वारा किया गया। इसी वर्ष महात्मा हसराज के जन्मदिवस पर 'महात्मा हसराज पुरस्कार' से पुरस्कृत किया गया। शिक्षक दिवस के अवसर पर दिल्ली प्रदेश के मुख्यमत्री श्री साहिब सिह वर्मा एव शिक्षा व स्वास्थ्य मत्री हर्षवर्धन की उपस्थिति मे सासद श्री मुरली मनोहर जोशी के करकमलों द्वारा इन्हे 'राज्य शिक्षक पुरस्कार' से अलकृत किया गया। ♣

आर्य समाज अग्रवाल मण्डी टटीरी मेरठ द्वारा दसवां निःशुल्क नेत्र ऑपरेशन शिविर का आयोजन

आर्य समाज अग्रवाल मण्डी टटीरी मेरठ द्वारा दसवा नि शुल्क नेत्र ऑपरेशन शिविर १०-१०-९६ से १६-१०-९६ तक सेन्ट स्टीफन अस्पताल तीस हजारी दिल्ली के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है। इस शिविर मे आखो के समस्त रोगों का इलाज तथा ऑपरेशन नि शुल्क किया जायेगा। डी०ए०वी०इन्टर कालेज अग्रवाल मण्डी टीटरी मे लगने वाले इस शिविर मे मरीजो को भोजन दूध फल दवाई तथा चश्मे नि शुल्क प्रदान किये जायेगे। १०-१०-९६ वृहस्पतिवार को प्रात १० बजे से ५ बजे तक मरीजो की भर्ती की जायेगी। ☆

आर्य समाज हरदोई का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज हरदोई का वार्षिकोत्सव १६ से २१ अक्टूबर तक भव्य सज्जा के साथ सम्पन्न होने जा रहा है। वैदिक विद्वानो के सारगर्भित विचार सुनन तथा धर्म लाभ उठाने हेतु उक्त तिथियो मे भारी सख्या मे उपस्थित होकर आयोजन को सफल बनाये। ☆

राष्ट्र भाषा हिन्दी यात्रा

हेमेन्द्र सिंह

फतहनगर २७ सितम्बर आर्य समाज फतहनगर के तत्वावधान में स्थानीय प्रताप चौराहे पर हिन्दी भाषा के समर्थन मे एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता स्थानीय नगरपालिका के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री मदनलाल अग्रवाल ने की।

सभा को मुख्य अतिथि अखिल भारतीय अग्रेजी हटाओ आन्दोलन के अध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद वैदिक एव विशिष्ठ अतिथि मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रान्तीय मत्री भी आनन्द मगल सिह "कुलश्रेष्ठ" एव जगदीश चन्द्र गोयल के अतिरिक्त अन्य स्थानीय वक्ताओ ने भी सम्बोधित किया।

सभा मे प्रसिद्ध क्रातिकारी कवि श्री शारदा शकर व्यास ने कविता एव सुश्री रजना गग तथा प्रियका राजा ने अपने गीतो के द्वारा श्रोतओ को भाव-विभोर कर दिया।

इसके पहले यात्रा दल के सदस्यो का स्वागत स्थानीय आर्य समाज के वयोवृद्ध सदस्य श्री लालचद मित्तल एव श्री मक्खन लाल मोर के द्वारा किया गया। कार्यक्रम का सचालन श्री मोहन प्रकाश सिह द्वारा किया गया। ☆

महात्मा नारायण स्वामी जयन्ती का भव्य आयोजन

प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी महात्मा नारायण स्वामी जयन्ती का आयोजन १४-१५ अक्टूबर १९९६ को आर्य समाज बरेली मे समारोह पूर्वक किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान नेता तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। डा० सत्य स्वरुप जी द्वारा सचालित इस आयोजन को भारी सख्या मे पधार कर सफल बनाये।

जैसा व्यवहार आप अपने लिए चाहते हैं वैसा व्यवहार आप भी दूसरों से करें।

स्व० श्री जयानन्द भारतीय की जयन्ती समारोह

आचलिक गढवाल आर्य समाज दिल्ली के तत्वावधान मे बृहस्पतिवार दिनाक १७ अक्टूबर १९९६ को अपराह्न २.३० बजे से गढवाल के क्रान्तिकारी समाज सुधारक परमदेशभक्त तेजस्वी निर्भीक दृढ-प्रतिज्ञ बहादुर स्वतत्रता सेनानी वैदिक धर्मावलम्बी ऋषिभक्त कर्मवीर जयानन्द भारतीय जी की ११६ वा जयन्ती समारोह आर्य समाज मन्दिर पश्चिमपुरी (जनता क्वाटर्स) दिल्ली मे मनाने का आयोजन किया गया है। क्षेत्रीय आर्य बन्धुओ से निवेदन है कि स्व० विभूति का श्रद्धान्जलि देने हेतु समारोह मे सपरिवार सम्मिलित होकर कृतार्थ करे।

– धर्म सिह शास्त्री महामत्री ☆

औचित्य

तृप्त धरा को कर न सके, वे-श्याम सुघन किस काम के हैं।
दीन हीनता हर न सके, वे-लाल-रतन किस काम के हैं।।
सत्य ज्योति ना जगा सके, नही भ्रान्ति भय भगा सके।
जो न सुपथ पर लगा सके, वे-विद्वद्जन किस काम के हैं।।
राही चैन नही पाये, पक्षी जहा नही जाये।
जो न किसी के मन भाये, वे-वन-उपवन किस काम के हैं।।
नैनो मे गर शर्म नही, जीवन मे सत्कर्म नही।
ज्ञात धर्म का मर्म नही, वे-व्रत बन्धन किस काम के हैं।।
तर्क तुला पर जो न तुले, साथ सत्य के जो न घुले।
ज्ञान नेत्र जिनसे न खुले, वे-मधुर वचन किस काम के हैं।।
जिनमें करुणा भाव नही, पर हित हेतु लगाव नही।
जिनके भरते घाव नही, वे-पावन मन किस काम के हैं।।
धुले ह्रदय के दाग नही, बुझे द्वेष की आग नही।
हो दुरितों का त्याग नही, वे-जप-सुमिरन किस काम के हैं।।
गर परिग्रह का पाप पले, मन विषयों की ओर चले।
जिन्हें कष्ट अपमान खले, वे-त्याग-तपन किस काम के हैं।।
मन पर व्यर्थ भार धरदे, हीन भावनाए भर दे।
जो "कमलेश" अहित करदे, वे-सत्य कथन किस काम के हैं।।

कमलेश कुमार आर्य अग्निहोत्री
कुबेरनगर, अहमदाबाद गुजरात ☆ ☆

शोक समाचार

हम यह सूचना देते हुए मर्मान्तक वेदना हो रही है कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी०ए०वी० प्रबन्धकर्त्री समिति के भूतपूर्व प्रधान स्व० श्री दरबारी लाल के दामाद एव डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल पुष्पान्जलि दिल्ली की प्राचार्या श्रीमती स्नेह वर्मा क पति श्री विनय वर्मा का २८ ९ १९९६ को दु खद निधन हो गया है।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी०ए०वी० प्रबन्धकर्त्री समिति क अधिकारी और सदस्य वतमान दुखद परिस्थिति मे शोक निमग्न हैं। अत ५ १० १९९६ को आर्य समाज मन्दिर मार्ग मे पजाब विश्वविद्यालय सीनेट के लिए निर्वाचित डी०ए०वी० के प्रत्याशिया का अभिनन्दन समारोह भी बडे दु ख के साथ स्थगित किया जा रहा है।

धर्मवीर पसरीचा प्रधान — **रामनाथ सहगल** मत्री
आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग
नई दिल्ली-११०००१ ☆

आर्य समाज पश्चिमपुरी में ११-कुण्डीय महायज्ञ सम्पन्न

नई दिल्ली २२ सितम्बर। आर्यसमाज पश्चिमपुरी (पाकेट ३) मे १६ सितम्बर से २२ सितम्बर ९६ तक वेदप्रचार सप्ताह तथा ११-कुण्डीय महायज्ञ का आयोजन किया गया। मुख्य समारोह रविवार २२ सितम्बर को सम्पन्न हुआ। तदुपरात सामाजिक चेतना सम्मेलन हुआ जिसमे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने आर्य समाज द्वारा सामाजिक चेतना सम्बन्धी किए गए कार्यों की जानकारी आर्य जनता को दी। उन्होने कहा कि जनता को गुरुडम से बचना चाहिए तथा अन्धविश्वासो से सचेत रहना चाहिए। इससे पूर्व नवनिर्वाचित ससद सदस्य श्री कृष्णलाल शर्मा तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामत्री श्री वेदव्रत शर्मा का आर्यसमाज तथा समीपस्थ समाजो से पधारे अधिकारियों ने माल्यार्पण से हार्दिक स्वागत किया ☆

पोस्टल ^ ट्रेशा॰ व डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 13-10-96 बिना टिकट भेजने का लाइसेस न० U(C) 93/96
R N No 626/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 10/11 10-1996

आर्य समाज ग्रीन पार्क दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज ग्रीनपार्क दिल्ली का वार्षिकोत्सव १३ अक्टूबर को ग्रीनपार्क आर्य समाज मे समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर ११ तथा १२ अक्टूबर को सायकाल ६ से ८ बजे तक यज्ञ भजन तथा उपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न होगा। मुख्य कार्यक्रम १३ अक्टूबर को सम्पन्न होगा। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव कार्यवाहक प्रधान श्री सोमनाथ मरवाह महामत्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री श्री सूर्यदेव श्री रामनाथ सहगल डा० धर्मपाल आचार्य रामकिशोर शास्त्री डा० महेश विद्यालकार सहित अनेको गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाये। ♣

आर्य समाज वसन्त विहार दिल्ली का २५वां वार्षिकोत्सव समारोह

१० अक्टूबर से १३ अक्टूबर तक

प्रति वर्ष की भाति इस वर्ष भी आर्य समाज वसन्त विहार का वार्षिकोत्सव बडी धूम धाम से मनाया जा रहा है। चतुर्वेद शतक यज्ञ वेदकथा सुन्दर भजन आदि कार्यक्रमो का आयोजन किया जा रहा है। आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान महात्मा आर्य भिक्षुजी विद्यावाचस्पति डी० लिट प्रधान आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर हरिद्वार के वेद प्रवचनो से लाभ उठाने हेतु आप इष्ट मित्रो तथा सपरिवार सादर आमत्रित हैं। दिनाक १३-१०-९६ को मुख्य अतिथि डॉ० वाचस्पति उपाध्याय उप कुलपति श्री लालबहादुर शास्त्री सस्कृत विश्व-विद्यालय नई दिल्ली होगे।

डॉ० धर्मवीर	महेन्द्र प्रताप नारग	डॉ० मगल सैन
प्रधान	कार्यकारी प्रधान	मत्री

क्रान्तिवीर श्याम कृष्णवर्मा की जयन्ती एवं महर्षि दयानन्द सेवाश्रम अस्पताल खोजवां का पांचवा स्थापना दिवस

स्वतन्त्रता सग्राम के शिल्पी ब्रिटेन में इण्डिया हाउस के सस्थापक क्रान्तिवीर श्यामकृष्ण वर्मा की जयन्ती एव महर्षि दयानन्द सेवाश्रम अस्पताल खोजवा का पाचवा स्थापना दिवस ४ अक्टूबर १९९६ को दोपहर २ बजे से माननीय श्री लक्खीराम गोयल की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन दानवीर माननीय श्री रामकुमार रुगटा जी ने किया तथा डा० भगवान दास अरोडा एव श्री राजेन्द्र गोयनका मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित थे। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा। ♣

आर्य समाज जामनगर द्वारा मुस्लिम युवती की शुद्धि एवम् विवाह संस्कार

आर्य समाज जामनगर (गुजरात) द्वारा दिनाक २३-९-९६ को कु० बिन्दु गफारभाई खत्री नामक मुस्लिम युवती का शुद्धि सस्कार करके उसे वैदिक धर्म की दीक्षा दी गई। एवम श्री चीमन लाल सोमचन्द दोढिया के साथ कु० बिन्दु का विवाह सस्कार पूर्ण वैदिक पद्धति से सम्पन्न हुआ।

प्रेषक
निमर्य भट्ट ♣

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-2 से प्रकाशित

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् — विश्व को आर्य बनाते चलें

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

दूरभाष ३२७४७७१, ३२६०९८५ | आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये | वार्षिक शुल्क ५० रुपए | एक प्रति १ रुपया

वर्ष ३५ अंक ३६ | दयानन्दाब्द १७२ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ | सम्वत् २०५३ | आश्वि० शु० ८ | २० अक्तूबर १९९६

आर्यसमाज ग्रीन पार्क और लाला रामगोपाल शालवाले

आज ग्रीन पार्क आर्य समाज के उत्सव का अन्तिम दिन था मुझे भी बुलाया गया था मैं गया भी पर वहा की गडबड द्वन्द्व मे मैं बिना कुछ बोले ही चुपचाप चला आया। मन मे एक कसक थी जिसे मैं वहा की जनता को बताना चाहता था पर वह मन मे ही रह गई।

वस्तुत आज जो भवन आर्य समाज का बना है उसके निर्माण मे आर्यजनो ने कितना परिश्रम तन मन धन से किया है। आज तक दीवान हाल का हाल सबसे बड़ा माना जाता रहा है परन्तु आर्यसमाज ग्रीन पार्क का हाल बहुत बडा है। इस भवन को बनाने मे कितना श्रम करना पडा है यह वहा के अधिकारी आर्यजन ही जानते हैं। मुझे तो इतना ही ज्ञात है कि एकत्रित की गई राशि के "सार्वदेशिक सभा" के नाम चैक आते थे और सभा द्वारा आयकर मुक्ति का प्रमाण पत्र देकर वह राशि वापिस दे दी जाती रही थी। खैर परिश्रम भवन निर्माण मे सराहनीय है। दिल्ली मे जो भी भवन आर्य समाज के बने हैं वह अच्छे और परिश्रम साध्य हैं।

मैं जो कहना चाहता था ? वह क्या —

आज जिस भूमि पर विशाल भवन बना है उसकी एक राम कहानी भी है—

स्वर्गीया प्रधान मत्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी के अध्यादेश का समय था वह नाटक मे सभी को एक चाबुक के इशारे पर सभी नेताओ को चलाती थीं। दिल्ली के बादशाह श्री जगमोहन जी उस समय दिल्ली के डिक्टेटर थे एक दिन पूरे दल बल को लेकर आर्यसमाज ग्रीन पार्क के भवन को धराशायी करा दिया। दिल्ली में कुछ भी होता था देखते रहो पर बोलो नहीं की नीति चल रही थी ऐसे मे आर्यसमाज भी मूक दर्शक बन कर मूक ही रहा।

आश्चर्यजनक घटना

रात्रि मे एक महिला ने सार्वदेशिक सभा मे फोन किया। फोन तत्कालीन ला० रामगोपाल जी शालवाले प्रधान सार्वदेशिक सभा ने सुना। लाला जी ने नाम पूछा उत्तर मे आशा नाम बताया साथ मे जाति गत नाम भी था। क्या बात है बताइये। महिला ने रोते रोते कहा कि हमारा आर्य समाज मन्दिर सरकार ने गिरा दिया है। यह कहकर वह पुन जोर जोर से रोने लगीं। श्री लाला जी को अब चैन कहा आकर बोले—

शास्त्री जी आओ चलो मेरे साथ घर से आये और मुझे साथ लिया और सीधे ग्रीन पार्क पहुच कर उस महिला के घर को तलाश किया। महिला ने भी हमारी आवाज सुनी और वह घर से बाहर आ गईं। महिला का बुरा हाल था रोने से दु खी श्री लाला जी ने धैर्य बधाया और उस भवन के मलवे को जाकर देखा। मैं लाला जी के साथ था उनका धैर्य व हिम्मत और सूझबूझ देखने लायक थी। उन्होने कहा कि —

मैं कल प्रात एक सौ ओ३म् के झण्डे भिजवाऊगा यहा पर लगा कर सब नर–नारी हवन करो। मैं कल सब देखूगा चिन्ता मत करो। यह कहकर वापस आ गये। प्रात झण्डे भेजे गये सभी आर्यो ने मिल कर यज्ञ किया।

कुछ सरदार लोग श्री लाला जी के पास आकर बोले आपका भी मन्दिर गिरा दिया गया अब आप क्या करोगे। लाला जी बोले अभी नही ६ ७ दिन के बाद बात करना।

परिस्थिति विचित्र थी अध्यादेश का समय देवी इन्दिरा गाधी का प्रकोप ?

श्री शालवाले जी ने श्री रामचन्द्र विकल के द्वारा प्रधान मत्री से मिलने का समय लिया। मिलने पर जो परस्पर वार्तालाप हुआ वह भी विचारणीय है। मन्दिर ध्वस्त होने की बात जब इन्दिरा जी को बताई तो मि धवन ने कहा कि वहा मन्दिर था ही नही। लाला जी ने कहा कि यह बात गलत है भवन के सब प्रमाण हैं। मि० धवन को अनुभूति हुई फिर बोले मन्दिर तो था पर वहा कोई कार्यकलाप नही होता था देवी इन्दिरा जी ने तुरन्त रिर्पोट प्राप्त की। जब यह ज्ञात हुआ कि मन्दिर था तो गिराया नहीं जाना चाहिये था। देवी जी ने अपनी भूल स्वीकार कर जगमोहन जी से मिलने को कहा लाला जी ने मिलने से मना कर दिया। अन्त मे श्रीमती गान्धी ने जगमोहन जी को कहा तो वह स्वय लाला जी से मिलने आये।

शेष पृष्ठ ११ पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्व० स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को उनकी द्वितीय पुण्य तिथि पर समस्त आर्य जगत की ओर से शत् शत नमन।

सम्पादक- डा.सच्चिदानन्द शास्त्री

सर्व हितकारी—सन्देश ईश्वरीय ज्ञान

वेद ही ईश्वरीयज्ञान है। यह आदि सृष्टि मे पवित्र अन्त करण वाले मनुष्यो को प्राप्त होता है। वेद सार्वकालिक सार्वभौम नित्य निर्भ्रान्त और स्वत प्रमाण है। सभी इतिहास विद् एव भाषा के विद्वान् यह स्वीकारते हैं कि ससार के पुस्तकालय का सर्वप्रथम ग्रन्थ वेद ही है।

वेद मानवमात्र के लिये उपयोगी है। वेद के द्वारा तिनके से लेकर परमेश्वर तक का यथार्थ ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

हम मनुष्यो को अपने लोक और परलोक की सिद्धि के लिये जितनी जानकारियाँ चाहिये वे सब वेद मे विद्यमान हैं।

ऋगवेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद ये एक ही वेद के चार भाग है। ऋषि वेद के प्रचारक थे वे वेद के रचयिता नहीं, क्यों कि वेद अपौरूषेय है।

कोई भी व्यक्ति अब तक वेद मे मिलावट नहीं कर सका और न कर सकेगा। इसलिये कि आदि सृष्टि से विद्वान इसे कण्ठस्थ करते आये हैं। इसके अतिरिक्त वेद का प्रत्येक मन्त्र निश्चित छन्द स्वर ऋषि और देवता से सुरक्षित है।

आर्य समाज वेद का प्रचार करके मानव समुदाय को सुख शान्ति और मोक्ष का मार्ग बताता है। सभी मनुष्यो को ऋषिशैली मे अनुवादित वेद का स्वाध्याय अवश्य करना चाहये। महर्षि दयानन्द ने वेद के पढने पढाने और सुनने सुनाने को परमधर्म माना है।

वैदिक मिशनरी कमलेशकुमार आर्य अग्निहोत्री
आर्यसमाज मन्दिर देवलाली बाजार कुबेरनगर—अहमदाबाद (गुजरात) ३८२६४०

कला हो, उसका परमात्मा स्वयं सहायक होता है और वह जीवन में न्याय प्रिय होता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

जीमखाना मैदान मेरठ में विशाल आर्य महासम्मेलन का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के तत्वावधान में जीमखाना मैदान मेरठ में दिनाक १ से ३ नवम्बर १६६६ तक विशाल आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया है। इस समारोह में चिकित्सा शिविर, योग शिविर, वृहद यज्ञ, विशाल शोभा यात्रा नशाबन्दी सम्मेलन, मातृशक्ति सम्मेलन एव राष्ट्रीय सम्मेलन सहित अनेकों अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर देश के अनेक सन्यासी विद्वान एव नेता पधार रहे है। कृपया अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर तन मन धन से सहयोग देकर सगठन शक्ति का परिचय दें।

प० इन्द्रराज सयोजक

दमा की निःशुल्क औषध वितरण

प्रति वर्षानुसार इस वर्ष भी शरद पौर्णिमा दि० २५ अक्टूबर शुक्रवार को दमा की निःशुल्क औषध का वितरण आर्य समाज लातूर व डगा चेरीटेबल ट्रस्ट के सहयोग से किया जायेगा। बाहर गाव के रुग्ण अपना पता लिखा लिफाफा (पोस्टेज टिकिट के साथ) निम्न पते पर भिजवाये तो उन्हे पोस्ट से दवा भेजी जायेगी। ***सम्पर्क स्थान***

१) मत्री, आर्य समाज लातूर ४१५३१२ महाराष्ट्र

२) डागा चेरीटेबल ट्रस्ट कपडा बाजार लातूर ४१३५१२ महाराष्ट्र

इस अवसर का अधिक से अधिक रूग्ण लाभ उठाये ऐसा आवाहन ओमप्रकाश पाराशर मत्री आर्य समाज लातूर द्वारा किया गया।

दिल्ली—हैदराबाद—दिल्ली

श्री वन्देमातरम् जी की निजी खर्च की यात्रायें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद को सुशोभित करने के बाद अक्टूबर १६६४ से आज तक पडित वन्देमातरम रामचन्द्र जी राव लगभग प्रति माह एक बार अपने निवास स्थान हैदराबाद जाते हैं। जहा से दक्षिण भारत मे आर्य समाज का प्रचार कार्य भी उनके द्वारा निर्देशित एव नियत्रित होता रहता है।

अधिकतर उनका यह दौरा हवाई जहाज द्वारा होता है जिसका व्यय वे निजी तौर पर वहन करते हैं। आज तक कभी भी उन्होने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा या किसी अन्य आर्य सस्था से दिल्ली से हैदराबाद जाने या आने का मार्ग व्यय नही लिया।

सार्वदेशिक सभा का प्रधान बनने से पूर्व भी श्री वन्देमातरम जी अधिकतर हवाई जहाज द्वारा निजी खर्च पर ही दिल्ली आते जाते थे क्योकि उन्हे चिकित्सको द्वारा अधिक लम्बी रेल यात्राये न करने का परामश दिया गया है।

शराब आत्मा का हनन करती है

पुस्तक समीक्षा

वैदिक विमर्श

पृ० १०५ मूल्य १५० रु०

लेखिका— श्रीमती डा० शशि प्रभा कुमार

रीडर—सस्कृत विभाग मैत्रेयी कालिज नई दिल्ली।

महर्षि दयानन्द सरस्वती से पूर्व के काल मे सास्कृतिक व शैक्षिक दृष्टि से मानव मे ऐसी हीन भावना भर दी थी जिसमे जीवन की उपयोगिता को नष्ट कर विधर्मियो द्वारा उत्पन्न मत और पथो की वैचारिक हीन भावना ने वेद भारतीय धर्म और सस्कृति से शून्य कर दिया था।

महर्षि दयानन्द एक ऐसे महामानव हुए जिनका वैदिक ज्ञान मानव मात्र के लिए जीवनदायी सन्देश वाहक बना।

इस वैचारिक क्रान्ति मे व्यक्ति परिवार समाज राष्ट्र एव विश्व के सभी वर्ग के लिये आदर्श उदबोधन मिलता है।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है उसकी इयत्ता उसकी सवशक्तिमत्तता उसके पूर्णत्व मे ही निहित है। उसी प्रेरणा पर इस पुस्तक मे सोलह निबन्धो को उधृत किया है। उनमें चार वैदिक शिक्षा पद्धति पर और चार नारी के वैदिक स्वरूप एव आज की अपेक्षित भूमिका पर निहित है।

डा० शशि प्रभा के निबन्ध प्रमुख चार भारतीय व्यक्तियो के योगदान तथा शेष चार वैदिक भव्य भावनाओ के वैदिक रहस्य को उदभाषित करते हैं।

सस्कृति का भव्य रूप — किसान जैस भूमि मे उत्खनन कर योग्य बनाता है वहीं रूप जीवन का है इसे परिष्कृत करना ही शिक्षा का उद्देश्य है शिक्षा से जीवन का निर्माण इससे परिवार व समाज राष्ट्र का निर्माण होता है।

मानवता की रक्षा माता निर्माता होती है इसी से स्वामी जी ने नारी की चैतन्यता पर विशेष ध्यान दिया है।

इसके अतिरिक्त अन्य लेख स्वामी श्रद्धानन्द का जीवनदर्शन जनकनन्दिनी सीता का उज्ज्वल स्वरूप आप्तपुरुष कृष्ण का भव्य रूप के दर्शन कराये हैं।

श्रद्धा का स्वरूप और उसका महत्व हृदय की उत्कृष्टतम अनुभूति है। अन्य शब्दो मे आस्था का नाम ही श्रद्धा है।

प्रार्थना का प्रकार में योग्यता क्षमता पर आश्रित प्रार्थना है। सबल से ही याचना की जाती है।

स्तुति के बाद ही प्रार्थना है प्रार्थी और जिससे प्रार्थना की जाये दोनो की समीपता ही उपासना है। यज्ञ विधान मे यज्ञ हमारी सस्कृति मे प्राणतत्व है। सक्षेप मे यज्ञ का गूढ दार्शनिक रहस्य है किन्तु अज्ञानतावश कर्म काण्ड को निभाना ही यज्ञ का अर्थ समझत है।

सगतिकरण से दान देने का भाव परस्पर आदान प्रदान मे ही समाजवाद साम्यवाद निहित है दान मे ही श्रद्धा की भावना है।

इस दृष्टि से यह निबन्ध पठनीय अनुकरणीय है। विदुषी डाक्टर शशिप्रभा के अनुशीलन का भाव पाठक वृन्द मे नयी चेतना का रूप तभी जागृत करेगा जब पाठक वृन्द पढकर इसे सराहेगा। लेखन की शैली विषय वस्तु प्रकरणवित लिखना विद्वान की यही महानता है।

आप पुस्तक का अध्ययन करे और इसकी गहराई को समझे तभी पुस्तक की उपयोगिता है।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री सम्पादक

पुण्य तिथि पर विशेष

एक कर्मठ व्यक्तित्व

स्व० स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

प्रो० उत्तम चन्द्र 'शरर'

स्वामी आनन्दबोध के जीवन को देखकर मुझे एक दार्शनिक का यह कथन याद आता है कि "वे लोग भाग्यशाली हैं जो अपने मिशन की पूर्ति के लिए अपने जीवन का अन्तिम श्वास भी दे सकते हैं।" जीवन मे व्यक्ति किसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए प्रयत्न करता है यदि वह लक्ष्य उच्च है तो जीवन का प्रयास एव जीवन सफल हो जाता है। स्वामी आनन्दबोध का यह सौभाग्य था कि उन्हे वेदो तथा ऋषि दयानन्द का स्वस्थ दृष्टिकोण जीवन का लक्ष्य बनाने के लिए जच गया। वे इसके अतिरिक्त सासारिक लक्ष्य भी बना सकते थे। मेरे जैसे कई साथी है जिन्हे अभी तक सासारिक प्रलोभन ही आकर्षित करते हैं। स्वामी आनन्दबोध पर ईश कृपा हो गई कि वे उपयुक्त वातावरण मे आर्यसमाज की सेवा मे जुट गये और वेद के कथनानुसार 'व्रतेन दीक्षामाप्नाति श्रद्धया सत्यम वाप्यते' वे उन्नति करते आर्यसमाज के सावभौम सगठन के मूर्धन्य नेता बन गए। यह उन के शुभकर्मो का परिणाम था कि वे अपने जीवनकाल में इस गौरवशाली उच्च पद पर आसीन हो पाए यद्यपि उच्च पद प्राप्ति ईर्ष्यालु व्यक्ति की ईर्ष्या का निशाना भी बना देता है तो भी इसे कौन नहीं चाहता ?

मैने कुछ समीप से स्वामीजी को देखा है उनका एक गुण तो विरोधी भी स्वीकार करते हैं कि वे आर्यसमाज के लिए समर्पित व्यक्तित्व थ। आर्यसमाज के सिद्धातो को वे सम्यकरूपेण समझते थे। समय आने पर विरोधियो से शास्त्रार्थ की क्षमता भी वे रखते थे सुझाव देने पर समाज हित के लिए वे नीति बदल भी लेते थे परन्तु उनके जीवन का लक्ष्य अर्जुन के समान चिडिया की आख की तरह आर्यसमाज तथा ऋषि दयान्द ही रहा और उनका सौभाग्य कि जीवन सघर्ष मे नाना प्रकार की परिस्थितियो का शिकार होते हुए भी वे अपने मार्ग से विचलित नहीं हुए। इस मार्ग मे उनकी सफलता ने उनके विरोधी उत्पन्न कर दिये थे– अच्छी सूरत भी क्या बुरी शै हैं–जिस ने डाली बुरी नजर डाली । और तो और स्वय आर्यो ने इतना विरोध किया कि यदि कोई साधारण व्यक्ति होता तो सभा को ही नहीं शायद समाज को छोड देने की सोच लेता। आखिर उन के कुछ लोग अपने भी तो थे ? स्वामी सत्यानन्द इस विरोध से भाग कर नया मत चला गए। रोज रोज की झक को कौन सह सकता है ? यह स्वामी आनन्दबोध का आत्म बल ही था जो इस विष को पीता रहा और कार्य करता रहा। घरेलू कलह और अपमान को समाज की प्रकृति को उन्होने सहर्ष स्वीकार किया और कार्य को फिर भी यथा शक्ति गति देते रहे।

स्वामी आनन्दबोध की एक विशेषता और भी थी जो वर्तमान के नेताओ मे कम पाई जाती है कि वे राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय चिन्तन से इस सगठन को अछूता नही रहने देते थे। समय पर वे स्वय चुनाव क्षेत्र मे आये और जब ऐसा नहीं हो पाया तो राष्ट्रीय नेता की दृष्टि से आर्यसमाज के महत्व को ओझल नहीं होने दिया। सरकार चाहे मोरारजी भाई की हो या इन्दिराजी की आनन्दबोध जी का जीवन लक्ष्य उन की दृष्टि म आर्यसमाज के सगठन को जचाना था। हमारे कुछ साथियो ने इस दृष्टिकोण के महत्व को आका परन्तु यह उस का ही परिणाम है कि आज हैदराबाद सत्याग्रह को सरकार द्वार राष्ट्रीय सत्याग्रह मान लिया गया है।

स्वामीजी ने अपने जीवन की साय काल मे सरकार से लाभ उठा कर गो सेवा सदन के महत्वपूर्ण कार्य को किया। सारा जीवन मुसलमान ईसाई और स्वय आर्यो के वार झेलते निकला गोरक्षा का यह सकारात्मक पग था किसी विरोध के लिये स्थान नही रखता था। गोरक्षा आन्दोलन मे वे सत्याग्रह भी कर पाये थे। गो सेवा सदन यह उनका काम आर्यो के साहस और कर्मठता की अपेक्षा रखता है वे तो कार्य का आरम्भ करके चले गए। यह भी उन का सौभाग्य था कि वे कार्य करते करते ही ससार से विदा हो गए उनका जीवन भी सघर्षमय रहा और उनकी मृत्यु भी समाज सेवा करते करते उन्हे हम से ले गई। इस प्रकार उनका जीवन भी धन्य और मृत्यु भी सौभाग्य। उनका जीवन एक खुली किताब है हम उनका विरोध करने की बजाय उन के सदगुणो को जीवन मे ला कर अपना जीवन सुन्दर बना सकते हैं। विशेष रूप से हर परिस्थिति मे आशावादी रह कर लक्ष्य की ओर पग बढाना सदा कमठता को अपनाना हम सीख ले तो हमारा जीवन ही नही आर्यसमाज का स्वरूप भी निखर सकता ह आखिर जाना तो सब ने ही ह।

जिन्दगी को सम्भाल कर रखिए,
जिन्दगी मौत की अमानत है।

२०/८ पानीपत (हरियाणा)

☆

नमन् तुम्हें शत बार

– राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचरपति

तुम थे ऋषिवर दयानन्द के निष्ठावान सजग अनुयायी।
तुमने अपनी धर्म साधना से नव जाग्रत ज्योति जगायी।
किया सतत सघर्ष राष्ट्र हित कभी न मानी तुमने हार।
नमन तुम्हे शत बार।

आर्य समाज बढा फिर आगे तुमने दिया नया नेतृत्व।
आगे बढे आर्य जन सारे देख तुम्हारा शुचि कर्तत्व।
साहस का फिर दिया तुम्हीं ने आर्य जनो को नव उपहार।
नमन तुम्हे शत बार।

आर्यों की सर्वोच्च सस्था के तुम बने कुशल नायक।
धर्म जाति के थे सहर्षित 'स्वामी आनन्दबोध उन्नायक।
नूतन पथ दिखलाया तुमने जिससे आयी नई बहार।
नमन तुम्हे शत बार।

मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर, (उ०प्र०)

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती—व्यक्तित्व एवं कृतित्व

सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (नई दिल्ली) के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती १८ अक्टूबर १६६४ की प्रात २ २० पर इहलोक से पारलौकिक जगत की ओर महा प्रयाण कर गए। इस दु खद निधन की सूचना पाकर समस्त आर्यजन स्तम्भित से रह गए। १७ अक्टूबर को पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता मे एक शिष्ट मण्डल ने श्री बलराम जाखड से गोरक्षा के विषय मे शक्तिपूर्वक वार्ता की थी। किसी भी समीपस्थ व्यक्ति को यह आभास न हो सका कि स्वामीजी प्रात अपनी दिवडग्मन की तैयारी मे सलग्न है। दीर्घायु की प्रार्थना करने वाले "पश्येम शरद शत जीवेम शरद शत श्रृणुयाम शरद शत प्रब्रवाम शरद शतम" पूज्य स्वामी जी वस्तुत अपने जीवन के अन्तिम क्षणो मे भी स्वस्थ मन से देखते सुनते बोलते हुए अदीन होकर ही स्वदेश रक्षा के कार्य मे व्यस्त रहे। मानव जीवन का इससे अधिक सौभाग्य क्या हो स्कता है जो सर्वदा धर्मरक्षा एव मातृभूमि के लिए ही समर्पित रहे। १८ अक्टूबर को मै वैदिक धर्म प्रचार हेतु अमरोहा आर्यसमाज मन्दिर के प्रात कालीन कार्यक्रम मे व्यस्त थी। सहसा पूज्य यतिवर आनन्दबोध जी के स्वर्गवास की सूचना दूरदर्शन आकाशवाणी तथा समाचार पत्रो द्वारा जानकर हार्दिक वेदना हुई। उसी समय अमरोहा आर्यसमाज मन्दिर मे सभी आर्यबन्धुओ आय महिलाओ ने उनके सदगुणो का व्यथित हृदय से वर्णन करते हुए श्रद्धाजलि अर्पित की।

स्वामी आनन्दबोध भूतपूर्व रामगोपाल शालवाल का जन्म जम्मू कशमीर के अनन्तनाग नामक शहर मे सन १६०७ मे हुआ था। उनका निवास स्थान तो अमृतसर मे ही था। १६२३ ई० मे वे देहली आये और आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की वेदोक्त स्त्य सनातन धर्म की सेवा मे तन मन धन से लग गए। उनकी आजीविका का कार्य शाल विक्रेता के रूप मे आरम्भ हुआ। कठोर परिश्रम से उन्हें इस व्यवसाय मे भी विशेष सफलता प्राप्त हुई। सभवत केवल व्यवसाय मात्र से "रामगोपाल शालवाले" इस प्रशस्ति—पत्र को नही पा सकते थे यदि महर्षि दयानन्द की अनन्य श्रद्धाभक्ति से प्रेरित होकर लोकोपकार मे अपने को समर्पित कर हुतात्मा न हो जाते। सामाजिक राजनीतिक धार्मिक आदि सभी प्रश्नो का समाधान करने के लिए वे सर्वथा तत्पर रहते थे। सन् १६३८ में हैदराबाद मे जब अत्याचारी निजाम ने हिन्दू मन्दिरों की स्वतन्त्रता का हनन किया तो श्री शालवाले ने हैदरावाद सत्याग्रह मे भाग लेकर उस मतान्ध निजाम को परास्त कर पुन मन्दिरो को पूर्ववत् अधिकार प्राप्त कराये। हमारा आन्दोलन पूर्णतया सफल हुआ। विशेषता यह थी कि मतमतान्तारो का भेद मिटाकर सभी बन्धुओ ने इसकी सफलता के लिए तन मन धन से पूर्ण सहयोग किया। इस कार्य के लिए सेठ जुगल किशोर बिडला ने २५००० की राशि प्रदान की।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात सन १६४७ मे भारत के दो भाग हो जाने पर (हिन्दुस्तान पाकिस्तान) पजाब से भागे हुए पचनदवासी शरणार्थियो की रक्षार्थ शिविरों का आयोजन कराने वाले श्रीयुत रामगोपाल शालवाले ने उन स्वदेश से विस्थापित पीडितो की अत्यन्त सहायता की।

इसी प्रकार दिल्ली मे भारत के गोरक्षा आन्दोलन का सचालन बडी तत्परता के साथ पौराणिक बन्धुओ का सहयोग प्राप्त सफलतापूर्वक किया। उन्होने सपष्ट किया कि गोरक्षा आन्दोलन सर्वकल्याणकारी होने के कारण पूर्णतया मत पन्थ सम्प्रदाय मजहब आदि के पक्षपात से कोसो दूर हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित गोकरुणानिधि के आधार पर विश्व की आर्थिक समस्या का समाधान सर्वदेवमयी गोमाता को ही सिद्ध किया। अत सभी प्रसिद्ध शकराचार्य जैसे सन्यासियो ने आमरण अनशन द्वारा इस आन्दोलन का समर्थन किया।

विश्व की सम्पर्क भाषा देववाणी आर्य भाषा हिन्दी आदि के प्रचार हेतु अनेक बार सम्मेलन किए। भारतीय सस्कृति की सुरक्षा समस्त प्रान्तीय भाषाओ की उन्नति से ही सम्भव है।

एक पौराणिक परिवार मे उत्पन्न हुए श्री शालवाले जी की बाल्यकालीन धटना ने उन्हे आर्यत्व की ओर प्रेरित किया। सर्वप्रथम सस्कृत भाषा के अध्ययन के लिए प० परशुराम जी का सानिध्य सौभाग्य से प्राप्त हुआ। उनके नियमानुसार आर्यसमाजी ही उनसे सस्कृत पढ सकता था। अत सहर्ष उनका आदेश पालन किया। अपने गुरुवर से आर्य विचारधारा की शिक्षा प्राप्त की। पौराणिको के साथ मे हुए ज्ञानी पिण्डीदास का शास्त्रार्थ भी उसी बाल्यावस्था मे सुना तथा अमृतसर मे होने वाले आनन्द प्रकाश जी द्वारा किये गये विशेष यज्ञ मे भी सम्मिलित होने का स्वर्णावसर पाकर रामगोपाल जी ने अपने को धन्य माना आर्यसमाज मे पूर्ण आस्थावान होने के यही आरम्भिक कारण थे जिसके कारण आमरण आर्य सस्कृति की सेवा म व्यस्त रहे

आर्य महिला समाज देहली की प्रमुख कार्यकर्त्री पूज्य स्वामीजी की सतत सहयोगिनी श्रीमती सत्यवती देवी से आपका २४ वर्ष की आयु मे शुभ विवाह सम्पन्न हुआ। अपने पति के साथ आजीवन आर्यसमाज का ही कार्य करती हुई महिलाओ का मार्गदर्शन करती रहीं। उनके पुत्र तथा पुत्रियो ने अपने माता पिता के ही आदर्शो पर चलने मे अपना सौभाग्य समझा। किशोरावस्था मे ही पुत्र प्राणनाथ तो अपना प्रिय परिवार छोडकर अज्ञातवास को कही चले गए। ज्येष्ठ पुत्र आज भी अपने पूज्य पिताजी के शाल—दुशालो का व्यवसाय समाल रहे हैं। ज्येष्ठ पुत्री श्रीमती सावित्री देवी का शुभ विवाह आर्य नेता श्री सूर्यदेव जी के साथ जातिबन्धन तोडकर गुण कर्म स्वभाव के सम्बन्ध से ही किया गया। सामाजिक विरोधों के बीच ऐसा अन्तर्जातीय विवाह श्री शालवाले जी का एक साहसपूर्ण कदम था।

हिन्दुत्व की रक्षार्थ अपनी युवावस्था से लेकर अन्तिम समय तक अनेक कार्य किये। देहली नगर मे किसी विरोधी ने एक शिवमन्दिर से शिव की मूर्ति को हटा दिया। मन्दिर के सभी सरक्षक भक्त भयभीत होने के कारण जो कार्य न कर सके वह युवक रामगोपालजी ने अन्य आर्य वीरो की सहायता से कर दिखाया। पुलिस ने इन्हे जेल मे भेज दिया। किन्तु अन्त मे सरकार को वहीं पर शिव मूर्ति स्थापित करनी पडी तथा सफलता का श्रेय शालवाले को ही प्राप्त हुआ।

आर्यसमाज दीवान हॉल मे कुछ हिन्दू युवक एक मुस्लिम महिला को ले आए। अमीदा नामक उस युवती को रोता हुआ देखकर उससे परिचय पूछा। उसने अपने को मुस्लिम लीग के कार्यालय मे पहुचाने की प्रार्थना की। श्री लालाजी उसे तागे मे बैठाकर स्वय ही मुस्लिम लीग के कार्यालय मे पहुचा आये। मुस्लिम कार्यालय के कार्यकर्त्ता अत्यन्त प्रसन्न हो उनके इस सहयोग का धन्यवाद देने लगे। लालाजी ने उत्तर दिया जिस दिन कोई मुस्लिम भाई किसी हिन्दू लडकी को सकुशल वापस घर पहुचाने आयेगा उसी दिन हिन्दू मुस्लिम एकता होगी। हमारे आपके हाथ सप्रेम तभी मिलाये जायेगे।

महात्मा गाधी की हत्या के प्रसग मे जब हिन्दू नेताओ को गिरफ्तार कर जेल मे डाला गया तो श्री शालवाले भी सन्देहवश पुलिस के हाथो पकडे गये मार्ग मे सावरकरजी भी पकड कर ले जाये जा रहे थे दोनो परस्पर मिले। २६ दिनो की जेल मे प्रतिदिन सन्ध्या हवन करते रहे। यज्ञ का प्रबन्ध न होने पर जेल मे ही अनशन किया। अन्ततोगत्वा पुलिस को उनके अनुकूल प्रबन्ध करना ही पडा। उनके जीवन म अनेक ऐसे अवसर आये जिसमे उन्हे जेल जाना पडा और वहा भी वे अपराधी कैदियो को धर्म शिक्षा देते रहे।

आश्रम व्यवस्था का पूरी तरह से परिपालन किया। सन्यास आश्रम ग्रहण करने के पश्चात उनके जीवन का प्रत्येक क्षण लोक सेवा क कार्यो म ही व्यतीत हुआ। भारतीय शिक्षा पद्धति मे आर्य[illegible] हाने के कारण सस्कृत महाविद्यालय गुरुकुल महिला शिक्षा व संस्थाओ की प्रगति मे सर्वदा प्रयत्नशील रहे।

भारत मे ही नही अपितु विदेशो मे भी जब आर्य सस्कृति या वैदिक साहित्य का विरोध किया गया तो आपने स्पष्ट विरोध किया। टर्की म जब भगवद्गीता और उपनिषदो का विरोध हुआ तो सरदार स्वर्ण सिह के माध्यम से टर्की के दूतावास मे स्थित अधिकारियो को गीता उपनिषदो के माहात्म्य से परिचित कराया। परिणामत टर्की प्रशासन ने उस प्रतिबन्ध को हटा दिया।

वस्तुत स्वामी आनन्दबोधजी सरस्वती निराले नेता वैदिक धर्म सस्कृति की रक्षार्थ सर्वथा समर्पित अबला दीन हीन अनाथ जनो के सरक्षक मानवता के पुज अनाचार-अज्ञान अविद्या के प्रबल विरोधी धर्म ध्वजा को हाथ मे लिये जीवन के अन्तिम क्षणो तक सशक्त सक्रिय रूप मे कार्यरत रहे। महर्षि दयानन्द की अनन्य भक्ति से जुडे हुए रामगोपाल शालवाले से स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तक स्वराष्ट्र सेवा करते रहे। जनता जनार्दन के समक्ष वे आर्यसमाज के लौह पुरुष के रूप मे सम्मानित रहे।

सच्चे ईश्वर भक्त रहे वे आर्य जगत के सरक्षक
सेवा करते गए राष्ट्र की स्वामीजी अन्तिम क्षण तक।
किसको यह सौभाग्य मिला धर्म बीज बोता जाये
धार्मिक सत्याग्रही देव आनन्दबोध फिर से आये।

सावित्री सदन १०
केला बाग बरेली (उ०प्र०)

१८ अक्टूबर पुण्य तिथि पर विशेष

सार्वदेशिक सभा के यशस्वी एवं तेजस्वी प्रधान

स्व० आनन्द बोध सरस्वती

—गौरी शंकर कौशल

पू० स्वामी जी एक कर्मयोगी थे। सन् ५३-५४ में मैं दिल्ली गया पं० उषर्बुध जी विदेश जा रहे थे दीवान हाल में विदाई समारोह था वहीं स्व० ओमप्रकाश जी त्यागी तथा लाला राम गोपाल जी से परिचय हुआ। मैं आर्यवीर दल के सम्पर्क में आया पू० त्यागी जी से अधिक निकटता आई लाला जी से परिचय हुआ। पर दूरी रही चूंकि मुझे सार्वदेशिक आर्य वीर दल का सहायक प्रधान संचालक बना दिया दिल्ली जाना आना अधिक होने लगा फिर मैं सार्वदेशिक सभा में प्रतिनिधि बन कर गया सार्व० का उपमंत्री बना लाला जी से निकट का सम्पर्क हुआ। परन्तु लाला जी के कड़क स्वभाव के कारण खुलकर उनके सामने नहीं बोल पाते थे। मेरे पुत्र सुरेन्द्र का एक पैर खराब हो गया था। मैं उसे दिल्ली लेकर पहुंचा उस समय दयानन्द भवन खरीदा ही था मैं दयानन्द भवन में उसे बिठा कर पू० त्यागी जी की प्रतीक्षा कर रहा था चिन्तित भी था इतने में लाला राम गोपाल जी आये उन्होंने देखा बोले क्या बात है मैंने निराश मन से सारी बात बताई तुरन्त यह कठोर स्वभाव का व्यक्ति मोम हो गया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान डा० दुख्खनराम से मिलाया था उस समय वह राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू के विशेष चिकित्सक थे राष्ट्रपति भवन से इलाज प्रारम्भ हुआ। तो यहां से मैंने लाला जी को निकट से देखा कि वाणी का कठोर व्यक्ति हृदय से कितना कोमल है मोम से भी अधिक। आठ दिन रहा ऐसा भास हुआ मानो मेरे परिवार का मुखिया हो या रोगी का पालक यह वह गुण था जो हजारों उपदेशों को फीका कर देता है। फिर तो निकटता बढ़ती ही गई। जब वह सार्व० सभा के महामत्री बने तब मैं ने उनकी कतृत्व, शक्ति, लगन, परिश्रम, कर्तव्य परायणता कृत संकल्प अहर्निश कठोर परिश्रम और वीर भावना, को देखा। कहीं आलस्य और निराशा का चिन्ह नहीं।

गौ-रक्षा आन्दोलन हिन्दी आन्दोलन में मैने [illegible]नको पं० नरेन्द्र जी (हैद्राबाद) तथा त्यागी जी को [illegible]त निकट से देखा पं० नरेन्द्र की कार्यक्षमता व्यूह [illegible]ना लालाजी की कर्तव्यनिष्ठा, त्यागी जी की संगठन [illegible] और प्रकाशवीर जी का आकर्षण जब एक साथ [illegible]शक्ति के रूप में जुड़ते थे तो देखते ही बनता था [illegible] दिन स्वप्न हो गये गौ-रक्षा आन्दोलन प्रारम्भ हुआ [illegible]चालन दीवान हाल से हो रहा था लगभग १५० के [illegible]ग्राही जिनमें साधू संत अधिक थे गोली के शिकार हो चुके थे मैं और स्व० प्रकाश सिंह जी शास्त्री साथ हम जब दरियागंज कोतवाली पहुंचे वहां लाश का ढेर था कोहराम मचा हुआ था रात्री में समस्त नेता गिरफ्तार कर लिये जावेगें और सत्याग्रह [illegible] हो जावेगा यह शंका थी दिल्ली में कर्फ्यू लग [illegible] था चारों ओर सन्नाटा था पं० त्यागी जी और लाला जी ने चर्चा की लालाजी एक बुर्का ओढ़ कर भूमिगत हो गये त्यागी जी आर्यसमाज दीवान हाल से गिरफ्तार कर लिये गये मुझे आदेश हुआ कि जब तक दूसरा प्रबध न हो सत्याग्रह का संचालन करो मैं अपनी क्षमता और योग्यतानुसार आज्ञा पालन में लग गया फिर श्री बालदिवाकर जी हंस आये उन्होंने भार सम्हाला। मैंने देखा कि लाला जी भूमिगत रहते हुए किस प्रकार पुलिस की आंखों में धूल झोकते हुए सत्याग्रह के संचालकों को दिशा निर्देशन दे रहे थे लाला जी का साहस [illegible]ण कौशल सूझबूझ और दिशा निर्देशन न मिलता तो सत्याग्रह इतना नहीं चल पाता श्री गुलजारी लाल नंदा अपने पद से त्तीफा दे बैठे थे सत्याग्रह पूर्व रूपेण उत्साह के साथ चल रहा था सरकार की हर चाल को श्री लाला जी की चाल मात दे रही थी परन्तु दुर्भाग्य एक उच्च स्तरीय बनी समिति ने सत्याग्रह विफल कर दिया हिन्दु जनता गो रक्षा की जीती लड़ाई हार गई।

वे साहस के धनी थे। राष्ट्रपति भवन में मस्जिद निर्माण का समाचार पंजाब कैसरी में छपा। कोई भी राष्ट्रपति भवन में मस्जिद निर्माण के पक्ष में नहीं था पर विरोध का साहस किसी में नहीं। लाला जी ने गृह मंत्री, और अन्य प्रभारी मंत्री प्रधानमंत्री को पत्र लिखे और स्मरण दिलाया कि तत्कालीन प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद जी को राष्ट्रपति भवन में कृष्ण जी की झांकी नहीं बनने दी थी अतः मस्जिद का प्रश्न ही संभव नहीं और मस्जिद रूकी। यह उनका साहस पूर्ण चतुराई का नमूना है।

दादा लेखराम से ओम मण्डली संगठन का गठन किया सिंध के राख्खर नगर में स्थापना हुई। साधू टी० वास्वानी ने इस के विरोध में जिन्हाद छेड़ा लेखराम की गिरफ्तारी हुई। दादा सिंध छोड़ कर भारत आ गये। संगठन का नाम बदल कर ब्रह्मकुमारी रखा, माउन्ट आबू में आश्रम बनाया महिलाओं ने इसका खुला विरोध किया लाला जी ने इस पाखण्ड के खिलाफ आवाज उठाई एक ट्रेक्ट निकाला जिसमें दादा लेखराम की गोद में लेटी युवतियां दिखाई।

ईसाई मिश्नरीज, बालयोगेश्वर, साईबाबा, राधा स्वामी हंसायत, प्रत्येक अवैदिक मतों का खुल कर ताकत से निर्भय होकर विरोध किया मीनाक्षीपुरम् में जहां समूचा ग्राम मुसलमान बना लिया गया था लाला जी त्यागी जी वन्देमातरम् जी पहुंचे तात्कालीन प्रधानमत्री श्रीमती गाधी से भेंट की मीनाक्षीपुरम् गये और सभी को वापिस लाये। उनके प्रधानत्व और मत्री काल में अनेक महत्वपूर्ण एव स्मरणीय कार्य हुए जिसमें एक सार्वदेशिक में प्रकाशन विभाग है जहां अनेक पुस्तकों का प्रकाशन हुआ वेद भाष्य, वैदिक सम्पत्ति, कुल्यात आर्य मुसाफिर संस्कार चन्द्रिका आदि अनेक दुर्लभ ग्रंथो का प्रकाशन प्रारम्भ कराया।

वे बडे हाजिर जवाब थे उन पर पं० रामचन्द्र जी देहलवी का प्रभाव था अन्तिम समय में पं० देहलवी जी को दीवान हाल में ही रख कर उनकी सेवा सुश्रषा की कभी कभी चर्चा और बहस में देहलवी जी की झलक दिखाई देती थी।

वानप्रस्थी और सन्यासी जीवन में वह पूर्णतः अर्निश आर्य समाज के मिशन में लग गये उनका अपना एक आदर्श था कभी भी सार्वदेशिक सभा से अपने किराये और भोजन आदि का व्यय नहीं डाला आन्दोलनात्मक स्वभाव होने से वह जनता से जुड़े रहते थे धार्मिक नेता के साथ-साथ वह राजनैतिक सूझबूझ के भी धनी थे। उन्होनें राजनैतिक क्षेत्र में आर्य समाज को सामने रखा स्वामी श्रद्धानंद के बाद श्री प्रकाशवीर जी श्री त्यागी जी और लालाजी अर्थात स्वामी आनंद बोध का एक ग्रुप था जिसके सामने राजनीति से ऊपर आर्य समाज रहा। आपने राजनेताओं से यदि सम्बन्ध भी जोड़ा तो सामने आर्य समाज का हित था। राजनेताओं से भेट की तो हिन्दू समाज और आर्य समाज तथा दलित वर्ग के लिए सम्बन्ध जोड़ा।

युवकों के प्रेरणा-स्रोतः उन्होने आर्य वीर दल के द्वारा युवकों को प्रोत्साहन किया आर्यवीर दल की स्थिर निधि को बढ़ाया जहां जहां शिविरों में बुलाया पहुंचे और युवकों को प्रेरणा दी यथा सभव प्रान्तों में वैतनिक शिक्षकों की नियुक्ति की तथा प्रतिनिधि सभाओं को आर्यवीर दल के लिए शिक्षक रखने की प्रेरणा दी इस वर्ष भी तपती धूप में जून ९४ में गुरुकुल होशंगाबाद पधारे और आर्य वीरों को प्रेरणा दी। स्वामी जी अपने भाषण में ऐसी घटनाओं का उल्लेख करते थे जो युवकों में जीवन और उत्साह फूंक देती थी ९३ में धानदला दयानंद सेवाश्रम संघ के उत्सव पर उन्होंने बतलाया कि श्री त्यागी जी ने एक बार घण्टों लाठी चलाकर लगभग १०० मुस्लिम गुण्डों को ठीक किया स्थिति यह बनी कि जब कुछ एक गुण्डे भाग गये तब लाठी उनकी मुट्ठी से छुड़ाना कठिन हो गया था ये सूजन हाथों में आ गई थी। और भी आर्यवीरों के कारनामों का उल्लेख किया।

वह एक जागरूक नेता थे। जन सम्पर्क जहा भी गये वहां किया-जून ९४ में भोपाल पधारे भोपाल में अखिल भारतीय बौद्ध सुसायटी ने ५० हजार दलितों को बौद्ध धर्म में दीक्षित करने की घोषणा की तथा इस आयोजन को सफल बनाने बर्मा, बिहार, लका, भारत के अनेक बौद्ध नेता भोपाल आ पहुचे भोपाल बी०एच०ई०एल० के एक विशाल मैदान में आयोजन की तैयारी प्रारम्भ हुई। किसी तरह स्वामी जी को पता चला उन्होने मुझे पत्र लिखा कि यह क्या हो रहा तुम क्या कर रहे हो कोई प्रयास करो और हिन्दुओं को बचाओ मैने भोपाल की समस्त आर्य समाजों की बैठक बुलाई आर्य समाजों के सहयोग से नगर के गणमान्य व्यक्तियों और हिन्दू सगठनों की बैठक बुलाई तथा रण नीति तय की। आर्य समाज तात्या टोपे नगर आर्य समाज दयानंद चौक मेल और व्यक्तिगत भाई माधुरीसरन जी अग्रवाल का बड़ा सहयोग मिला श्री रामेश्वर जी शर्मा जो अब पार्षद हैं सबने सहयोग किया हिन्दुओं में जागृति आई परिणाम यह हुआ कि बोद्धों का विशाल पण्डाल केवल पत्रकारों बाहर के बौद्धों एवं तमाशबीनों से भरा था केवल ८ व्यक्तियों ने दीक्षा ली जब पत्रकार नव दीक्षित बोद्धों से मिले तो उन्होंने कहा कि हमतो पुराने बोद्ध है आज फिर इन्होंने कहा तो दीक्षा ले ली इस आयोजन के बाद ३०.५.९४ पू० स्वामी जी ने पत्रकार वार्ता ली, भोपाल के नागरिकों की बैठक की काफी उत्साहवर्धक एवं सारगर्भित भाषण हुआ पू० स्वामी जी इस समय काफी दुर्बल दिख रहे थे परन्तु मनोबल इतना बड़ा हुआ था कि भोपाल विधायक विश्राम गृह की ८० सीढ़ी चल कर ऊपर पहुंचे और पत्रकार वार्ता ली श्री कर्मवीर के धर पर गये वहां नागरिकों की बैठक ली। मैंने एक प्रश्न किया स्वामी जी आप काफी दुर्बल हो गये आपके बाद सभा की बागडोर किसके हाथ में दी जावे खामोश हुए एक लम्बी सांस लेकर बोले कौशल चिन्ता तो मुझे भी है केवल एक ही व्यक्तित्व नजर आता है वह है वन्देमातरम् जिसको सैद्धान्तिक ज्ञान, सामाजिक, राजनैतिक, व्यवहारिक सूझ-बूझ है। चलते समय बोले अबकी अंतरंग में अवश्य आना।

१०-११ जुलाई ९४ को सार्वदेशिक सभा की अंतरंग की बैठक में उनके अंतिम दर्शन थे। परन्तु यह कल्पना भी नहीं थी कि स्वामी जी इतनी जल्दी संसार से विदा ले लेगें।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती आर्य समाज के उन दीवानों में थे जो आर्य समाज की ज्योति पर पंतगे की भांति कुर्बान हो गये। जहां भी हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान पर संकट आया सवामी आनन्द बोध मौजूद, चाहे काश्मीर के मंदिरों के टूटने का प्रश्न हो, मिनाक्षीपुरम और रायगढ़ म०प्र० में धर्म परिवर्तन, हिन्दी रक्षा, गौ रक्षा आन्दोलन का प्रश्न हो स्वामी जी अग्रिम पंक्ति में खडे हैं, उनको हिन्दुओं का रज सम दुख मेरू के समाज दिखाई देता था भोपाल में उन्होंने कहा था कि अब गांव गांव में गौ शाला खोल कर गौ रक्षण, गौ संवर्धन, गौ पालन का काम प्रारम्भ करना चाहिये।

उनको शत शत नमन

२३, पुलिस चौकी तलैया, भोपाल ☆

लोक और परलोक में मानव—कल्याण

—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

विश्व में अनेक धर्म प्रचलित हैं, परन्तु वे सब अधिकतर किन्हीं व्यक्तियों या पैगम्बरों से सम्बन्धित होने के कारण सम्प्रदाय या पंथ अधिक कहे जा सकते हैं, उन्हें सच्चा मानवीय धर्म कहना उचित नहीं होगा। वेद विश्व मानव के सबसे प्राचीनतम पुस्तकालय के सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं। वेदों में किसी सम्प्रदाय या पंथ के पैगम्बर या किसी भी व्यक्ति विशेष का उल्लेख नहीं है। वेदों में कहा गया है कि यह पृथ्वी हमारी माता और हम इस पृथ्वी माता के पुत्र हैं। (**माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।।**) वैदिक प्रार्थनाओं में किसी प्रदेश या राष्ट्र विशेष की समृद्धि के लिए प्रार्थना नहीं की गई प्रत्युत वहाँ प्रार्थना की गई है समुद्र, नदियों और जल से भरी-पूरी यह पृथ्वी हमें भरपूरफसल दे, अनाज दे, जिससे यह प्राणवान् ससार तृप्त हो, हमारी यह पृथ्वी माता प्राणीमात्र को अन्न-रस से परितृप्त करे। वहाँ कहा गया है

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं
कृष्टयः संबभूवुः।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत्
सा नो भूमिः पूर्व पेये दधातु।।

इतना ही नहीं, वेद मे कहा गया है कि अनेक धर्मों और भाषाओं वाले मनुष्यों को धारण करने वाली यह पृथ्वी अडिग धेनु गौ की न्याई नाना प्रकार की सम्पदा की अभिवृष्टि करे।

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं
नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां
ध्रुवेव धनुरनपाक्रुरन्ती।।

स्वभावत जिज्ञासा होती है कि वेदों का यह मानव धर्म क्या है ? वहाँ तो स्पष्ट कहा गया है—हे मानव ! तू मननशील हो (मनुर्भव)। वेदों में सच्चा क्रान्तदर्शी ऋषि वह है जो मानवों के लिए हितकारी है (ऋषि· स यो मनुर्हित.) वेदों में केवल सार्वजनिक कल्याण की बात नहीं कही गई है, वहाँ पांचजनों जन-जन के कल्याण, सम्पूर्ण समाज के अभ्युदय की आकांक्षा की गई है। ये विस्तीर्ण मार्ग मानवमात्र के लिए कल्याणकारी हों, मरुभूमियाँ मानव का कल्याण करें, जल से परिपूर्ण क्षेत्र मंगलकारी हों, घनी बस्तियाँ हमारा कल्याण करें। वहाँ कहा गया है—

स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु
स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु
स्वस्ति राये मरुतो दधातन।।

यह भूमि माता सबके लिए एक समान है, वह सबसे समता का व्यवहार करती है। पाँचों प्रकार की मानव श्रेणियाँ उसी पृथ्वी की सन्तान हैं। (तवेमे पृथिवि पंचमानवा.)। वहाँ प्रत्येक मानव से अपेक्षा की गई है कि हम सभी प्राणियों के साथ मित्रवत् आचरण करे। प्रत्येक व्यक्ति सकल्प करे कि मैं सभी प्राणियों को मित्र के रूप में देखूँगा। सभी प्राणी मुझे भी अपना मित्र समझें।

मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।।

वैदिक चिन्तन मे आकांक्षा की गई है कि भाई-भाई से वैर न करे, बहन-भाई आपस में शत्रुता न करें। सब भाई मिलकर उत्साह से कार्य करें, सबकी क्रियाशक्ति अच्छी रहे, सब लोग माधुर्यभरा सद्व्यवहार करें।

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया।।

वैदिक विचारधारा में आकांक्षा की गई है कि सभी मानव भलीप्रकार मिल-जुलकर रहें। सब लोक प्रेमपूर्वक आपस में बात करें। सबके मन एकता के विचार से ओत-प्रोत हों। सब प्रगतिशील ज्ञान के तत्व प्राप्त करें। विद्वान लोग जिस प्रकार सदा से ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त कर उपासना में तल्लीन रहे हैं, उसी प्रकार तुम भी ज्ञान और उपासना में निरंतर संलग्न रहो। सबके सकल्प एक सरीखे उच्च हों, सबके निश्चय एक जैसे हों, सबके भाव एक जैसे हों, सबके मन-मस्तिष्क में एक जैसी ऊँची भावना हो। सब लोग एक-दूसरे से सहयोग करते हुए भली प्रकार अपने कार्य पूर्ण करें। वेदों में सयुक्त प्रार्थना की गई है—

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

वैदिक मानव इच्छा करता था कि हमें सब ओर से कल्याण करने वाली भावनाएँ उपलब्ध हो, उनमें किसी प्रकार का छल-छिद्र या धोखा न हो, फलत हम अपने कानों से भला ही सुनें, अपनी आँखों से कल्याणकारी भला ही देखें, हमारा प्रत्येक अग स्थिर—मजबूत हो, हमारे पार्थिव शरीर सम्पूर्ण आयुपर्यन्त स्वस्थ, नीरोग एव सबल रहें।

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम
देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि
देवहितं यदायुः।।

वैदिक धर्म की सच्ची कसौटी यही रही है कि रागद्वेष रहित विद्वान सज्जन लोगों द्वारा किए सत्कर्म तथा हृदय और आत्मा जिन्हें सच्चा कर्त्तव्य माने वही सच्चा मनन के योग्य तथा आचरण के उपयुक्त धर्म कहा जा सकता है। सच्चा मानवधर्म वही है जिससे लौकिक कल्याण परोपकार आदि के माध्यम से अलौकिक पारमार्थिक सुख या मोक्ष मिल सकता है—**यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।**

वैदिक ऋषि सामान्य जीवन व्यवहार के प्रति भी उदासीन नहीं थे। उनकी आकांक्षा थी कि मानव समुचित ढग से अपना विकास करे। हमारे चारों ओर आनद का अनन्त कोष बिखरा पड़ा है, उसका अधिकतम सदुपयोग करें। हम सदा आनंदित रहें। हमारा आयुष्य कम से कम सौ वर्ष तक अवश्य रहे। हमारे मन स्वस्थ्य रहें, हमारी वाणियाँ सदा पवित्र रहें। हम सबके साथ मिल-जुल कर स्नेहपूर्ण जीवन व्यतीत करें। हमारे परिवारों का जीवन 'स्वस्ति' एवं 'शांति' से परिपूर्ण हो।

वेदों में जीवन का तत्व भरा पडा है, उसमें आत्मा-परमात्मा, प्रकृति, मुक्ति जीवन के सघर्ष का ही केवल उल्लेख नहीं है, उसमें कर्म-यज्ञ के साथ आनन्दपूर्ण जीवन बिताने का परामर्श दिया गया है तो वहाँ यह सब कुछ **'इदं न मम'** कहकर परोपकार से परिपूर्ण शिवसंकल्पों से भरा जीवन व्यतीत करने का परामर्श भी दिया गया है।

अभ्युदय, बी२२ गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली—११००४९

आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी द्वारा वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

वीरोखाल (पौड़ी गढ़वाल) दि० ५—९—९९। आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी द्वारा गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी रक्षा बन्धन के पावन पर्व से लेकर श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक वेद प्रचार कार्यक्रम चलाया गया। जिसमें इस वर्ष आर्य समाज सावली आदि पचपुरी द्वारा वेद प्रचारार्थ महान विद्वान प० श्री हीरालाल शास्त्री को आमंत्रित किया गया। उन्होंने आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी के कार्य कर्त्ताओं एव भजन मण्डली के साथ विकास क्षेत्र वीरोंखाल एव विकास क्षेत्रथलीसैज में देव दयानन्द के सन्देश को पहुंचाया। इनके द्वारा आर्य समाज चौपड़ा कोट, आर्य समाज ढौंडियालस्यू वंगार स्यूं एव आर्य समाज वीरौखाल मे भी कार्यक्रम एवं प्रवचन हुए। रा०इ० का स्यूसी, रा०इ० का वैनरौ तथा रा०इ० का फरसाडी में वेद प्रचार कार्यक्रम रखा गया जिसमें स्कूलों के छात्र—छात्राओं एवं अध्यापक वर्ग ने उनसे प्रवचन सुने। इसके अलावा ग्राम वंगार ग्रा स्यूसी, ग्राम पोखरी, ग्राम सिसई, ग्राम कुणजोत एवं ग्राम सिसई में यज्ञ एवं वेद प्रचार द्व देव दयानन्द का सन्देश घर-घर पहुचाया ग

अन्त में ५-९-९९ को आर्य समाज सा आदि पचपुरी के स्व० श्री शान्तिप्रकाश ति भवन स्यूसी में कृष्ण जन्माष्टमी के पाव पर्व पर एक विशाल जन सभा का आजन किया गया। जिसमें पं० हीरालाल शा जी द्वारा श्री कृष्ण के जीवन सम्बन्धित म को दूर किया गया। तथा श्री कृष्ण ो एक योगीराज एवं महापुरुष सिद्ध कि गया।

गंगाप्रसद 'सौम्य'

न्याय का उद्देश्य क्या है ?

-विवेक भूषण दर्शनाचार्य

भारतीय मनीषियों की परम्परा में महान् न्यायविद् दार्शनिक महर्षि गौतम जी न्याय का उद्देश्य केवल सासारिक झगडो को सुलझाने तक ही सीमित नहीं मानते थे। इसके साथ-साथ वे न्याय का उद्देश्य मोक्ष-(आवागमन से छुटकारा) भी मानते थे। परन्तु क्या आज का न्याय इन दोनो उद्देश्यों में से किसी मे भी सफल हो पा रहा है?

हमारे इस भारत देश मे प्राचीन काल से ही बडे-बडे ऋषि महर्षि, तपस्वी, विद्वान् आदि होते रहे हैं, जिन्होने मानव-मात्र के कल्याण के लिए विद्या धर्म और न्याय का सदेश देकर मनुष्य जाति व अन्य प्राणियों पर भी महान उपकार किया है। उसी श्रखला में न्याय के क्षेत्र में एक महान् ऋषि हुए हैं, जिनका नाम था -'महर्षि गौतम'। इन्होने वेदादि शास्त्रो का गम्भीर अध्ययन करके वेदो के आधार पर 'न्याय विद्या' को मानव मात्र के लिए प्रस्तुत किया। इस विद्या को इन्होने जिस शास्त्र मे बाधा, उसका नाम है -'न्यायदर्शन।' इन्होने इस न्यायदर्शन मे सूत्रों की रचना की। इन सूत्रो पर एक अन्य मनीषी ने सस्कृत भाषा मे बडा उत्तम भाष्य लिखा। इस भाष्यकार का नाम है - 'महर्षि वात्स्यायन।' इनका भाष्य न्यायदर्शन पर प्राचीन और प्रामाणिक माना जाता है तथा 'वात्स्यायन भाष्य' के नाम से प्रसिद्ध है। 'न्याय' की परिभाषा करते हुए महर्षि वात्स्यायन लिखते हैं - "प्रमाणैरर्थपरीक्षण न्याय" (न्यायभाष्य, सूत्र १।१।१) अर्थात् प्रमाणो से किसी पदार्थ का परीक्षण करके सत्य की खोज करना 'न्याय' है। परन्तु प्रश्न उपस्थित होता है कि इस न्याय का उद्देश्य क्या है ? विचार करने पर इस प्रश्न का उत्तर हमे मिलता है कि -न्याय का उद्देश्य सुख की प्राप्ति करना है। जो व्यक्ति समाज मे श्रेष्ठ कर्म करता है, उसे पुरस्कार और जो दुष्ट कर्म करता है, उसे दण्ड मिलना ही चाहिये, यही न्याय है।

इससे समाज मे सुख-शान्ति और व्यवस्था बनी रहती है। समाज के लोग सेवा परोपकार, दान आदि श्रेष्ठ कर्मों की ओर बढते हैं। दण्ड के भय से चोरी डकैती, हत्याओ आदि दुष्ट कर्मो से निवृत्त होते हैं। परिणाम स्वरूप समाज में अपराध कम होते हैं और लोग सुख से रहते हैं। परन्तु समाज मे कितना ही सुख हो, तब भी मानव पूर्णतया दु खो से छूट गया है, ऐसा प्रतीत नहीं होता। महान् न्यायविद् महर्षि गौतम जी का कहना है कि जीवन मे अनेक प्रकार के छोटे-बडे दु खों की प्राप्ति होते रहेने के कारण ससार में जन्म लेना ही दु ख स्वरूप है। आर्थात् ससार मे शरीरधारी कोई भी व्यक्ति पूर्ण सुखी नहीं है, उसके जीवन मे कोई दु ख आता ही रहता है। तो क्या यह जन्म-मरण और विविध दुखो का क्रम अनन्त काल तक चलता ही रहेगा या इससे छूटने का कोई उपाय भी है ? इस प्रश्न का उत्तर है कि - यदि मनुष्य जन्म-मरण के चक्र से छूटना चाहता है, तो उसे ससार के पदार्थों का ठीक-ठीक ज्ञान करना होगा। यही तत्त्वज्ञान ही मोक्ष का उपाय है। और इस तत्त्वज्ञान के माध्यम से मोक्ष प्राप्त कराना ही न्याय का उद्देश्य है। न्याय के इस उद्देश्य को (मोक्ष-प्राप्ति को) महर्षि गौतम जी ने अपने न्यायदर्शन मे इन शब्दों में व्यक्त किया है-

प्रमाणप्रमेयसशयप्रयोजनदृष्टान्तसिद्धान्तावयवतर्कनिर्णयवादजल्पवितण्डाहेत्वाभासछलजातिनिग्रहस्थानाना तत्त्वज्ञानान्नि श्रेयसाधिगम ।।

न्यायसूत्र -१।१।१

अर्थात् प्रमाण प्रमेय, सशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त अवयव तर्क, निर्णय वाद, जल्प, वितण्डा हेत्वाभास, छल, जाति और निग्रहस्थान, इन सोलह पदार्थों के तत्त्वज्ञान (यथार्थज्ञान) से मोक्ष की प्राप्ति होती है। परन्तु ससार में ठीक प्रकार से अपना कर्तव्य निभाये बिना मोक्ष की प्राप्ति भी नहीं हो सकती। इसीलिए इस सूत्र मे जो सोलह पदार्थ बताये गये हैं, उनको ठीक-ठीक समझ लेने और उसके अनुसार आचरण करने से हमारे दोनो प्रयोजन सिद्ध हो सकते हैं कि - हम ससार मे भी सुखपूर्वक जी सके और मोक्ष को भी प्राप्त कर सके। आइये इन सोलह पदार्थो को सक्षेप से समझने का प्रयत्न करे।

विविधबाधनायोगाद् दु खमेव जन्मोत्पत्ति ।।

न्यायसूत्र ४।१।५५

१ प्रमाण-जिस साधन से किसी पदार्थ का ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त किया जाये, उसे प्रमाण कहते हैं। जैसे-आख से देखकर जाना, कि सामने एक पुस्तक रखी है। यहा आख ज्ञान-प्राप्ति का साधन होने से प्रमाण है।

२ प्रमेय-प्रमाण से जिस पदार्थ का ज्ञान प्राप्त होता है, उस पदार्थ को प्रमेय कहते हैं। ऊपर के उदाहरण मे पुस्तक प्रमेय है।

३ सशय-किसी पदार्थ के सम्बन्ध मे निश्चयात्मक ज्ञान न होना सशय कहलाता है। जैसे-ईश्वर है या नहीं। बाजार मे वस्तु मिलेगी या नहीं। सशय के कारण व्यक्ति सत्य की खोज के लिए प्रयत्न करता है।

४ प्रयोजन-लक्ष्य या उद्देश्य को प्रयोजन कहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य या प्रयोजन है-मैं सदा सुखी रहू, दु खी कभी न होऊँ।

५ दृष्टान्त-उदाहरण को दृष्टान्त कहते हैं। किसी बात को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण दिया जाता है। जैसे-अमुक गायक की आवाज कोयल की तरह मीठी है। यहा कोयल दृष्टान्त है।

६ सिद्धान्त-अमुक वस्तु ऐसी है इस प्रकार से किसी वस्तु के बारे मे कहना सिद्धान्त कहलाता है। जैसे-ईश्वर के बारे मे कहना कि 'ईश्वर न्यायकारी है।' यह एक सिद्धान्त हुआ।

७ अवयव-परोक्ष पदार्थों की सिद्धि करने के लिए जो वाक्य समूह प्रस्तुत किया जाता है, उसके पाच भाग होते हैं। इन्हीं पाच भागोको अवयव कहा जाता है। वे पाच अवयव यह हैं-प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण उपनय और निगमन।

८ तर्क-किसी पदार्थ का सामान्य ज्ञान होने पर किसी कारण को देख कर उस पदार्थ के सत्य स्वरूप के सम्बन्ध मे जो ऊहा की जाती है उसे 'तर्क' कहते हैं। जैसे-आत्मा के सम्बन्ध मे ऐसी ऊहा करना कि-आत्मा शरीर के साथ ही नष्ट नहीं हो सकता वह तो नित्य होना चाहिये। क्योकि आत्मा (व्यक्ति) के ऐसे बहुत से कर्म देखे जाते हैं जिनका फल उसे इस जन्म में नहीं मिल पाता। यदि उन कर्मों का फल उसे अगले जन्म मे न मिले तो उसके कर्म व्यर्थ हो जाएगे और यह अन्याय होगा।

९ निर्णय-किसी विषय मे दो पक्ष लेकर प्रमाण और तर्क से विचार करके अन्त मे सत्य का निश्चय करना 'निर्णय' कहलाता है। जैसे-'ईश्वर है या नहीं।' इन दोनो पक्षो पर प्रमाण और तर्क से विचार करके अन्त मे निश्चय होना, कि -ईश्वर है यह निर्णय कहलायेगा।

१० वाद-प्रमाण और तर्क आदि की सहायता से सत्य की खोज के लिए जो ईमानदारी से शुद्ध बातचीत की जाती है, उसे 'वाद' कहते हैं।

११ जल्प-उक्त वाद मे जब छल, कपट आदि की मिलावट करके दूसरे पक्ष वाले व्यक्ति को जैसे-तैसे हराने का लक्ष्य बनाकर जो अशुद्ध बातचीत की जाती है, उसे 'जल्प' कहते हैं।

१२ वितण्डा-यह भी जल्प के समान ही अशुद्ध बातचीत है। जल्प मे जल्पी व्यक्ति अपने पक्ष की स्थापना कर देता है कि-'मैं ऐसा मानता हू। परन्तु वितण्डा मे वितण्डावादी व्यक्ति अपने पक्ष की स्थापना भी नहीं करता और केवल दूसरे पक्ष वाले व्यक्ति का खण्डन ही करता जाता है और उसे हराने का प्रयत्न करता है।

विशेष-जल्प और वितण्डा का प्रयोग दुष्ट प्रकृति (स्वभाव) वाले व्यक्ति किया करते हैं। उनकी दुष्टता को रोकने के लिए हमे यह ज्ञान तो होना ही चाहिये कि दूसरा व्यक्ति किस प्रकार से छल कपट आदि का प्रयोग करके हमे हानि पहुचाना चाहता है। इसलिये हानि से बचने के लिए जल्प वितण्डा आदि का सत्य स्वरूप जानना आवश्यक है। यही बात आगे आने वाले हेत्वाभास छल जाति और निग्रहस्थान के सम्बन्ध मे भी समझनी चाहिये। इसीलिये सूत्रकार महर्षि गौतम जी ने इन सबका स्वरूप ठीक-ठीक जानने का निर्देश किया है।

१३ हेत्वाभास-जो वाक्य वास्तव मे सत्य कारण तो न हो, परन्तु सत्यकारण बताया गया है, ऐसा आभास होता हो उसे हेत्वाभास कहते हैं। जैसे-'यह घोडा है, क्योकि इसके सींग हैं।' यह कारण ठीक न होने से हेत्वाभास है।

१४ छल - शब्दो के अर्थ अनेक होते हैं। इस परिस्थिति मे वक्ता ने जिस अर्थ मे शब्दो का प्रयोग किया था, उसे बदलकर (भिन्न अर्थ की कल्पना करके) वक्ता का खण्डन करना 'छल' कहलाता है। जैसे किसी ने कहा 'मैंने सारी मिठाई खा ली।' उसका तात्पर्य था कि -'रसोई मे जितनी मिठाई रखी थी वह सारी खा ली।' परन्तु छलवादी उसका खण्डन इस प्रकार से करता है-'पूरे देश में इतनी मिठाई है कि कोई भी एक व्यक्ति नहीं खा सकता तुम कैसे कहते हो कि -मैंने सारी मिठाई खा ली।'

१५ जाति-जब एक व्यक्ति अपना सत्य पक्ष प्रस्तुत कर चुका हो और दूसरा व्यक्ति समझ चुका हो कि मेरे पास इसका सही उत्तर अब कुछ नहीं है तब वह चालाकी से किसी समानता या भिन्नता का सहारा लेकर सत्य पक्ष वाले को धोखा देने का जो प्रयास करता है, उसे 'जाति कहते हैं। जैसे-सत्य पक्ष वाले का कथन 'ध्वनि नष्ट हो जाती है। क्योकि वह उत्पन्न होती है जैसे-कार। कार उत्पन्न होती है तथा नष्ट हो जाती है ऐसे ही ध्वनि भी है। इसलिये उत्पन्न होने के कारण ध्वनि नष्ट हो जाती है।' अब दूसरे पक्ष वाले का (जातिवादी का) कथन-'अपने कार का उदाहरण दिया। कार तो दीखती है परन्तु ध्वनि तो दीखती नहीं।

शेष पृष्ठ १० पर

क्या पाप क्षम्य है ?

वीरेन्द्र पाल त्यागी

प्राय समाज के अधिकाश सदस्यो मे यह भ्रान्त धारणा है कि मनुष्य द्वारा कृत पाप क्षम्य है अर्थात पाप करने वाले के पाप माफ हो जाते हैं या साधारण भाषा में कहे तो पाप धुल जाते हैं और पापो की सजा भोगने से पाप करने वाला छूट जाता है। कुछ धर्मावलम्बियो का विश्वास है कि परमात्मा के पुत्र के समक्ष पापों की स्वीकारोक्ति करने से या मानने से भगवान उनके पापो को क्षमा कर देगा। कुछ लोगो का विश्वास है कि एक पुस्तक विशेष पर इमान लाने से पापो से मुक्ति मिल जाती है। हिन्दू धर्म के मानने वालों मे अधिकाश लोगो का यह विश्वास है कि यदि विशेष नदी (गगा) मे स्नान करने से तीर्थाटन करने से या अपने आराध्य देव के समक्ष दो मिनट मस्तक झुकाने से पापो से छुटकारा मिल जाता है।

इस विषय पर विचार करने से पूर्व यह जानना अत्यन्त आवश्यक है कि पाप है क्या तथा अन्य अपराधो से यह किस प्रकार भिन्न है। कुछ अपराध पापो की श्रेणी मे नहीं आते जैसे यातायात के नियमों का उल्लघन पापो की श्रेणी में नहीं आता। पकडे जाने पर जुर्माना होता है और अपराध समाप्त हो जाता है। परन्तु चोरी करना पाप है। इसमें समाज के अन्य व्यक्ति के धन का बलात छीनना है। वास्तव मे पाप का सम्बन्ध हमारी आत्मा से है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे स्पष्ट शब्दो मे लिखा है कि जब मनुष्य कोई भी गलत कार्य करता है तो उसके मन मे भय लज्जा शका उत्पन्न होते हैं। यही उसको आत्मा द्वारा चेतावनी है कि वह कोई पाप करने जा रहा है। यदि वह उस अन्तरात्मा की आवाज को सुनता है और रूक जाता है तो वह पाप करने से बच जाता है। यदि वह अन्तरात्मा की आवाज को दबा देता है तो वह पाप मार्ग की ओर अग्रसर हो जाता है। यदि वह पकडा जाता है तो कानून द्वारा उसको उचित दण्ड मिलता है। यदि किसी कारणवश वह भागने से सफल हो जाता है तो वह कानून से तो बच सकता है परन्तु वह परमात्मा की कानून व्यवस्था से नहीं बच सकता और उसको उसके किए का फल अवश्य भोगना पड़ेगा।

हमारे शास्त्रो मे ये स्पष्ट रूप से लिखा है कि अवश्य भोक्तव्य कृत कर्म शुभाशुभम'। अर्थात शुभ और अशुभ कर्मों का फल मनुष्य को अवश्य भोगना पडेगा। शुभ कर्मों का फल मन में प्रसन्नता उत्साह प्रफुल्लता समाज मे सम्मान जीवन मे सन्तोष के रूप मे मिलता है। परमात्मा की न्याय व्यवस्था मे मनुष्य कर्म करने मे पूर्ण स्वतन्त्र है। कर्म करने से पूर्व उसको चेतावनी अवश्य मिलती है किन्तु कर्म करने के पश्चात वह परमात्मा की न्याय व्यवस्था से बन्धा हुआ है और कितना भी दान पुण्य भगवत भजन पाठ पूजा करने पर भी उसको उसके पाप कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ेगा।

यदि परमात्मा की अनुनय विनय करने से पाप क्षमा हो जाते हो तो ससार मे पापो की वृद्धि हो जायेगी और प्रत्येक व्यक्ति पाप करने मे प्रवृत्त होगा क्योंकि वह जानता है कि अन्त में उसको पापो से क्षमा मिल जायेगी। ससार में अनेक प्रकार के अत्याचार अनाचार व्यभिचार बढ जायेगे और साधू पुरुषो का जीवन दूभर हो जायेगा क्यों कि पापी लोग निर्भय होकर पाप करेंगे। आज के युग में दुष्ट लोगो की सख्या बढने का यही कारण है कि वे जानते हैं अपने प्रभाव के कारण वे सरकार की न्याय व्यवस्था से बच सकते हैं परन्तु वे यह नहीं जानते कि इस मानवी सरकार से भी ऊपर एक न्याय व्यवस्था है जिससे वे कदापि नहीं बच सकते। हमारे शास्त्रों मे स्पष्ट निर्देष है कि पापी लोग जो अपनी आत्मा का हनन करते हैं अन्धकार वाली योनियो में जन्म लेते हैं।

अत यह भ्रान्त धारणा अपने मन से निकाल देनी चाहिए कि पाप क्षम्य है। यह बात अवश्य है कि मनुष्य अपना भावी जीवन अवश्य सुधार सकता है। पापी मनुष्य यदि पापों से छुटकारा चाहता है तो वह इस बात का दृढ निश्चय करे कि जो घृणित जीवन उसने अब तक बिताया है उसकी पुनरावृति नहीं करेगा और आगे से अपना जीवन शुभ कर्मों मे लगायेगा। इस प्रकार के अनेक उदाहरण समाज मे मिलते हैं जहा पुण्यकर्म करने वाले अनेक व्यक्तियो ने अपने मनोबल के आधार पर अपना जीवन सुधार लिया जैसे महर्षि वाल्मीक स्वामी श्रृद्धानन्द भगत वर्मा चन्द इत्यादि।

जीवन सुधारने के लिए सत्सग का होना अत्यन्त आवश्यक है। रात्रि को सोने से पहले यदि मनुष्य अपनी दिनचर्या पर नजर डाले कि आज उसने कौन से पाप किये और कौन से पुण्य किये और निश्चय करे कि वह अगले दिन पापो या पुण्य कर्मों की पुनरावृत्ति नहीं होने देगा तो उसे जीवन मे अवश्य सुधार आएगा और वह पाप मय जीवन से मुक्ति पा जायेगा। यह मानव जीवन हमारे शुभ कर्मों का ही फल है तो क्यो ना हम और श्रेष्ठ कर्म करे देवत्व को प्राप्त हों।

उपप्रधान आर्य समाज दरियागज नई दिल्ली

वैदिक संस्कृति ही वास्तविक संस्कृति है।

डा० विनय कुमार सिन्हा

धर्मनिरपेक्ष हिन्दू बुद्धिजीवियों का एक ऐसा वर्ग है जो वास्तव में यह सोचता है कि हिन्दुओं में हिन्दुत्व की भावना के विकास में तथाकथित "अनेकता में एकता" तथा "सर्वधर्म समभाव" की सस्कृति को आच आएगी तो इससे हिन्दू समाज को स्थायी क्षति पहुचने का खतरा है।

ऐसे महानुभावों से अपनी विनम्र असहमति जताते हुये निवेदन है कि जिसे वे हमारी सस्कृति समझ बैठे हैं, यह हमारी सस्कृति नहीं वरन् इतिहास के विद्रूपीकरण कानतीजा मात्र है। जिस "अनेकता में एकता" तथा "सर्वधर्म समभाव" की बात की जाती है उसका न कभी कोई अस्तित्व रहा है, न ही भविष्य में ही स्थापित होने की सभावना है। विदेशी सस्कृतियों का आगमन हमारे उपर शासन करने के लिए हुआ था न कि किसी अनेकता में एकतापूर्ण समाज की स्थापना के लिए। सेमेटिक (वग्रख) विचारधाराओं पर आधारित सस्कृतियों (इस्लाम और ईसाइयत) न कभी समन्वयवादी रही है, न कभी बन सकती है। ये विस्तारवादी शक्तिया है जो भारतभूमि पर शासन कर चुकी है तथा पुन इस पर अपना आधिपत्य स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील हैं।

यदि हमारे पूर्वजों में से कुछेक के अनेकता में एकता तथा सर्वधर्म समभाव की सस्कृति की बातें की तो उन्हें हमें महज हताश मानसिकता से उत्पन्न विचार मानना चाहिए क्योंकि हजार वर्ष की त्रासदीपूर्ण राजनीतिक दासता का परिणाम होता है। मानसिक व बौद्धिक दासता की श्रखलाओं में बध जाता। इस दासता ने न केवल हमें एक विकृत सस्कृति दे डाली है, वरन् हमारे सोच को भी विकृत कर दिया। हम भूल गये हैं कि हजारो वर्ष पूर्व, वैदिक काल में भी हमारी सस्कृति थी आज की सस्कृति से नितान्त भिन्न थी। उस सस्कृति के अनुसार राष्ट्रीय एकता की अनिवार्य शर्त थी माता वसुंधरे (मैं इसे भारत भूमि कहना अधिक पसन्द करूगा) से हमारा निजत्व तथा निकटतम सानिध्य। सा भूमि सघता धृता मिट्टी के ढेर, धूलकण, पत्थर व चट्टान भी हमारे लिए पूजनीय है। भारत भूमि के पहाड इसकी नदिया, झरने, पेड-पौधे, फल-फूल, पशु-पक्षी सभी सेहमारा आत्मिक सम्बन्ध स्थापित है। यह कोई अस्थाई भाव नहीं है, इनसे हमारा जन्म जन्मान्तर का नाता बन चुका है।

अरब व यहूदी सस्कृति पर आधारित मजहब (ईसाइयत व इस्लाम) इस विचारधारा के पोषक नहीं है। इनके लिए भारत महज जमीन का टुकडा है जिस पर येन-केन-प्रकारेण उनका आधिपत्य होना वाछित है। इन लोगों से न हमारा कोई नाता बन पाया है, न कभी भी बन पायेगा और सत्य तो यह है कि ये हमारे अपनत्व के योग्य भी नहीं। ये बिल्कुल भिन्न प्रजाति के प्राणी है, इनसे हमारा नाता किसी भी परिस्थिति में जुड नहीं सकता। वेदों में इडा, सरस्वती और मही के रूप में मातृभूमि, मातृभाषा तथ मातृसस्कृति की तीन कल्याणकारी देवियों का स्थान प्रदान किया गया है -

इडा सरस्वती महो तिस्वो देवीर्मयोभव।

यह भूमि हमारी है, हमारी थी और हमारी ही रहेगी। राष्ट्र की सुरक्षा के लिए हर क्षण हमारी सावधानी अपेक्षित है। मानसिक निर्बलता अनेकानेक विपत्तियों को जन्म देती है। अत हमें वेद का यह मत्र याद रखना होगा

उदीराणा, उतासीना तिष्ठन्त प्रक्रमन्त पदम्या दक्षिण स्वाययामा व्यथिष्महि भुम्यासा (अथर्वेद-१२/१/२६)

अर्थात हमारी मातृभूमि किसी भी स्थिति में हमसे न तो तिरस्कृत हो और न ही व्यथित हो। मातृभूमि को डायन कहनेवाले पतित प्राणी भला इस भावना में अन्तर्निहित मर्म को क्या समझेंगे।

अत हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम अपनी गौरवशाली सस्कृति विरासत को स्मरण कर राष्ट्ररक्षार्थ हम सदा तत्पर रहें। हमारी सास्कृतिक महानता इसकी अनुमति नहीं देती कि हम निम्न सस्कृतियों के पोषक जानों से अपना नाता जोडते चलें। हमें अपने अन्दर स्फूर्त भावनाओं का सचार करना होगा। ताकि निम्न वैदिक मत्र अनुसार हम कह सके

अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्यास।

(अथर्ववेद-१२-१-५४)

अर्थात मातृभूमि की रक्षा के लिए विरोधी शक्तियों का पराभव करनेवाला स्वय मैं हू। मैं प्रशसनीय कीर्तिवाला हू तथा हर दिशा से आने वाली विपत्ति को नि शेष करने की क्षमता रखता हू।

एच-५६, हरमू हाउसिंग कोलोनी
राँची-८३४०१२

वेद विज्ञान और आर्यसमाज

श्रीकृष्णदास शाह

साधारण तथा विभिन्न धर्मों की धर्म पुस्तको मे या तो अध्यात्म अर्थात् ईश्वर व जीवों के सम्बन्ध या नैतिकता या फिर सृष्टि उत्पत्ति बाते ही होती हैं। किन्तु इन धर्म ग्रन्थो मे मनुष्यों को ससार के विभिन्न पदार्थों के अधिक से अधिक गुणो का अनुसधान भी करना चाहिये व विज्ञान की विभिन्न विद्याओ की उन्नति करना भी एक आवश्यक कर्त्तव्य है ऐसा उपदेश किसी भी धर्म ग्रन्थ मे नहीं मिलता। वेदो की ही यह विशेषता है कि उसमें अध्यात्म नैतिकता व सृष्टि की उत्पत्ति आदि के वर्णन तो आये ही हैं किन्तु इन सबके अतिरिक्त जो वेदो मे विशेषता है वह यह कि प्राय चारो वेदो मे ही अन्य बातो के अतिरिक्त सैकडो मत्रो मे परमेश्वर द्वारा रचित पानी वायु, अग्नि सूर्य पृथ्वी आदि विभिन्न पदार्थों के अधिक से अधिक गुणो व उपयोगो को निरन्तर अनुसधान करके उनसे अधिक से अधिक उपकार व लाभ लेते रहने के आदेश व उपदेश भी है।

विभिन्न वेदा मे किस प्रकार विभिन्न प्राकृतिक पदार्थों के सम्बन्ध मे निरन्तर अनुसधान करते रहने व उन्हे मनुष्यो के लिए अधिक से अधिक उपयोगी बनाने के आदेश व उपदेश हैं इनके कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते है

ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त १ मत्र दो के अनुसार विद्वानो व विद्यार्थियो आदि सबके लिए परमेश्वर नित्य स्तुति योग्य व भौतिक अग्नि नित्य खोजने योग्य है। अर्थात सबको भौतिक अग्नि के नित्य नये नये गुणो की खोज व अनुसधान करते रहना चाहिये। ऋग्वेद १६६ के अनुसार मनुष्यो को वायु के उत्तम गुणो के ज्ञान आदि के लिए प्रयत्न सदा करना चाहिए जिससे सब व्यवहार सिद्ध हो। ऋग्वेद १७१ मे ईश्वर उपदेश करता है कि वेद मत्रा क विचार से परमेश्वर सूर्य वायु आदि के गुणो को अच्छी प्रकार जानकर मनुष्यो को प्रयत्न से उनसे उपकार लेना चाहिए।

ऋग्वेद १ १२ ३ मे ईश्वर की आज्ञा है कि सबको अग्नि के गुर्णो की खोज करनी चाहिये। ऋग्वेद १ १४ ८ के अनुसार मनुष्यो को इस जगत् मे सब सयुक्त पदार्थों के एक तो गुणो को जानना चाहिये दूसरे उनसे कार्य की सिद्धि करनी चाहिए।

यजुर्वेद मे भी अनेक मत्रो मे ऐसे ही उपदेश हैं। उदाहरण के लिए यजुर्वेद के अध्याय २ के मत्र ३ के अनुसार ईश्वर ने जो सूर्य विद्युत व प्रत्यक्ष रूप से तीन प्रकार का अग्नि रचा है वह विद्वानो द्वारा यन्त्रो मे प्रयुक्त हुआ अनेक कार्यों को सिद्ध करने वाला होता है। मनुष्यो को उनके गुणो को यथावत जानकर उपयोग करना चाहिये। यजुर्वेद २/४ के अनुसार ससार मे जितने क्रियाओं से सिद्ध होने वाले पदार्थ हैं उनको परमेश्वर ही ने रचा है। मनुष्यो को उचित है कि उनके गुणो का ज्ञान करके उत्तम उत्तम क्रियाओं की अनुकूलता से उनसे अनेक उपकार ले यजुर्वेद २/१५ मे ईश्वर उपदश करता है कि सब मनुष्यो को विद्या व युक्तियो से अग्नि व जल के मेल से तथा वायु विद्युत् अग्नि की विद्या से दरिद्रता का नाश करना चाहिये यजुर्वेद ३/१३ के अनुसार जो मनुष्य ईश्वर की सृष्टि मे अग्नि और वायु के गुणों को जानकर कार्यो मे सयुक्त करता है वह राज्य व धन प्राप्त करता है अन्य नही। यजुर्वेद ३/१४ के अनुसार मनुष्यो को वायु के निमित्त अग्नि को यथावत् जानकर उसके उपयोग से सब कार्य सिद्ध करना चाहिये। यजुर्वेद ३/४० के अनुसार मनुष्यो को परमेश्वर की कृपा व अपने पुरुषार्थ से अग्नि विद्या का सम्पादन करके अनेक प्रकार के धन और बलो का विस्तर करना चाहिये। यजुर्वेद ३०/२० के अनुसार मनुष्यो को जगत के पदार्थों के गुणो का ज्ञान प्राप्त करके उपर्युक्त क्रियाओ से उनसे उपकार ग्रहण करके सुख प्राप्त करना चाहिये।

यजुर्वेद १३/४४ मे ईश्वर ने उपदेश दिया है। कि सब मनुष्यो को चाहिये कि जो यह पृथ्वी सूर्य मेघ आदि असख्य सुख देने वाले पदार्थ ईश्वर ने रचे है उनको गुण कर्म स्वभाव से जानकर सुख के लिए प्रयुक्त करें। यजुर्वेद २६/३४ के अनुसार मनुष्य को ईश्वर की सृष्टि म परमात्मा की रचनाओ की विशेषताओ को जानकर शिल्प विद्या मे प्रयोग करना चाहिये।

इसी प्रकार अथर्ववेद मे भी अनेक मत्रा मे मनुष्यो को प्रकृति के विभिन्न पदार्थों के गुण कर्म स्वभाव आदि को अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करके इनसे उपकार लेने का उपदेश दिया गया है। उदाहरणार्थ अथर्ववेद काड चार सूक्त २५ व २६ म मनुष्यो को उपदेश दिया गया है कि वे पुरुषार्थ से सूर्य वायु जल व पृथ्वी के अधिक से अधिक गुणो को जानकर उनके विज्ञान से उपकार लेकर ऋद्धि सिद्धि बल स्वास्थ्य बुद्धि प्रताप व धना को बढाकर आनन्द प्राप्त करे। अथर्ववेद काड ४ सूक्त ३६ के मत्र ६ व ७ मे मनुष्यो को उपदेश दिया गया है कि वे सूय व पृथ्वी के सम्बन्ध व चन्द्रमा के पुष्टिकारक गुणो को जानकर उनसे अन्न आदि पदार्थो को पुष्ट करे। अथर्ववेद काड ६ सूक्त ७३ के अनुसार मनुष्यो को अग्नि सूर्य व बिजली आदि के गुणो को जानकर उन्हे शिल्पकला व यत्रो मे प्रयुक्त कर दरिदता को दूर करना चाहिये।

इसी प्रकार सामवेद के मत्र ६६ के अनुसार मनुष्यो को योग्य है कि वे अग्नि के सम्बन्ध मे अपने ज्ञान को व इसके गुणो को अपनी बुद्धि से बढावे। सामवेद मत्र ६८ के अनुसार जिस प्रकार के मेघस्थ जल अपने मे से विविध प्रकार चमकने वाली बिजलियो को उत्पन्न करते है उसी प्रकार विद्वान लोग भी वेदवाक्यो आदि से अग्नि के गुणो को जानकर तदनुसार अग्नि से अनेक अस्त्रो को उत्पन्न करे। सामवेद मत्र ५२७ मे उपदेश है कि मनुष्यो को चाहिये कि वह अपनी बुद्धियो द्वारा अग्नि को प्रेरित करे जिससे हम धन ही धन कमा सके।

वेदो क उपरोक्त उदाहरणो से यह स्पष्ट है कि वेदों के अनुसार सृष्टि के विभिन्न पदार्थ क नए नए गुण प्रभाद व स्वभावो की खोज व अनुसधान निरन्तर करते रहना भी मनुष्य के लिए उतना ही आवश्यक है जितनी परमेश्वर की भक्ति व स्तुति प्रार्थना व उपासना करना है वास्तव मे परमेश्वर द्वारा रचे विभिन्न पदार्थो के नये नये गुणो आदि का ज्ञान प्राप्त करके उनसे अधिक से अधिक उपकार लेना भी उसकी कृतज्ञता प्रकट करने व उसकी स्तुति व उपासना का एक साधन है व यह भी सब मनुष्यो का एक आवश्यक कर्त्तव्य है।

वेदो मे सृष्टि के पदार्थों के नये नये गुणो का अनुसधान व अविष्कार पर बल दिये जाने को देखते हुए आशा तो यह थी कि हर आर्यसमाज मे सृष्टि के विभिन्न पदार्थों के नये नये गुणों आदि के अनुसधान के लिए एक वैज्ञानिक रसायन अनुसधान शाला होती जहा वेदो की उपरोक्त आज्ञाओ के पालन करने का प्रयत्न किया जाता किन्तु वास्तविकता यह है कि सृष्टि के पदार्थों के नये नये गुणो को जानने व इनके सम्बन्ध मे वैज्ञानिक अनुसधान करने का शायद ही किसी आर्यसमाज या आर्यसमाजी द्वारा कोई प्रयत्न किया जा रहा है। हम तो अधिक से अधिक किसी वैज्ञानिक सिद्धान्त को किसी वेदमत्र द्वारा प्रतिपादित बताकर ही अपने को कृतकृत्य समझ लेते हैं व इतने से ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मान लेते है। सारे विश्व मे जो वैज्ञानिक अनुसधान हो रहे हैं उनमे आर्य समाज का कोई भाग नहीं है उन्नति नही हुई जैसी की होनी चाहिये थी [illegible] सका एक बडा कारण सम्भवत हमारी वेदो की निरन्तर वैज्ञानिक अनुसधान करते रहने की आज्ञाओ के प्रति उदासीनता भी हो सकती [illegible] वेद म सब सत्य विद्याए [illegible] है किन्तु उसका विस्तार व विवरण [illegible] रूप निरन्तर खोज व अनुसधान [illegible] हम केवल वेदो [illegible] पढने पर ही आश्रित रहकर [illegible] उन्नति नही कर सकते इसके लिए निरन्तर ध्यान [illegible] अनुसधान की आवश्यकता है

अत आर्य समाज के मूर्धन्य नेताओ व वृद्ध विद्वानो से प्रार्थना है कि आर्य समाज के कार्यकलापो मे प्रयुक्त कमिया किस प्रकार दूर हो सकती है व आर्यसमाजी लोग वेदो की उपर्युक्त निरन्तर वैज्ञानिक अनुसधान करने सम्बन्धी आज्ञाओ का किस प्रकार पालन करे इस सम्बन्ध मे गम्भीर चिन्तन करके समाज का मार्ग दर्शन करे।

☆

वेद प्रचार योजना

दिनाक १५ नवम्बर से १५ दिसम्बर १९९९ तक पूरे जिले मे जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा आजमगढ की ओर से परम पिता परमात्मा की अमर वाणी वेद के प्रचार की योजना है।

इस कार्यक्रम मे परम पूज्य स्वामी केवलानन्द सरस्वती तथा प० नेम प्रकाश आर्य (धनुर्विद्या के मर्मज्ञ) तथा साथ मे श्री प्रमानन्द प्रेमी (रेडियो गायक) परमपूज्य स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती प० रघुनाथ मिश्र विद्यालकार (पूर्व प्राचार्य दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय आजमगढ) प० धुवमिश्र शास्त्री (प्रवक्ता डी०ए०वी०इण्टर कालेज आज०) ब्रह्मचारी नरेन्द्र आर्य (सचालक) आर्य वीर दल पूर्वी उत्तर प्रदेश डॉ० भोला राम यादव डा० राजेन्द्र प्रसाद आर्य राम मुनि वानप्रस्थ के व्याख्यान एव उपदेश तथा भजनोपदेश सुनने को मिलेगे।

इस निमित्त १३ व १४ अक्टूबर ९९ को पूरे जिले मे सम्पर्क का कार्यक्रम है साथ ही २० अक्टूबर को जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा आजमगढ के अतरग सभा की बैठक आर्य समाज मन्दिर आजगढ मे होगी।

आर्य समाज रिहाडी कालोनी में वेद सप्ताह

आर्य समाज रिहाडी कालोनी मे वेद सप्ताह मे सामवेद पारायण यज्ञ तथा श्रावणी महोत्सव २५ अगस्त से प्रथम सितम्बर तक बडे समारोह पूर्वक मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान पडित विद्याभान जी शास्त्री थे। मुख्य प्रवक्ता डाक्टर आर्चाय महावीर जी गुरुकुल कागडी के थे। और नरेन्द्र जी सगीताचार्य जी ने अपने मनोहर भजनो से सैकडो लोगो को प्रभावित किया। और बीच मे रक्षा बन्धन के दिन शोभा यात्रा निकाली गई। सारा कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहा और सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। और अन्त मे ऋषि लगर भी हुआ। ☆

द्वितीय पं० युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार समारोह

आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा रविवार दिनाक २७ अक्टूबर १९९९ को महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल कृष्णपुर फरूखाबाद (उ०प्र०) के सस्कृत व्याकरणाचार्य व कुलपति आचार्य चन्द्रदेव जी का उनके द्वारा निस्वार्थ भाव से की गयी सस्कृत भाषा के शिक्षण के सम्मानार्थ रुपये ११००१/– श्रीफल शाल हार व ट्राफी से सम्मान किया जायेगा।

गत वर्ष आर्य समाज सान्ताक्रुज के ५२ वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर यह पुरस्कार पुनर्वसु मित्तल आयुर्वेदिक कालेज के सस्कृत विभाग के लेक्चरर डा० सोमदेव शास्त्री द्वारा अपने पूजनीय गुरु स्व० प० युधिष्ठिर मीमासक जी की स्मृति मे प्रारम्भ किया गया था। यह पुरस्कार प्रति वर्ष आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा पाणिनी रचित अष्टाध्यायी के कम से कम दस वर्ष तक पठन पाठन के कार्य मे सेवारत उस विद्वान को दिया जायेगा। जिन्होने आर्ष विधि से गुरुकुलो के माध्यम से सस्कृत भाषा शिक्षण का कार्य किया हो।

आर्य समाज सान्ताक्रुज के ५३ वे स्थापना दिवस के अवसर पर दिनाक २५ से २७ अक्टूबर १९९९ तक त्रि दिवसीय यज्ञ का आयोजन किया गया है यज्ञ के ब्रह्मा एवम प्रवचनकर्त्ता आचार्य चन्द्रदेव जी हैं। ☆

न्याय का उद्देश्य क्या है ?

पृष्ठ ७ का शेष

इसलिये दीखने वाली कार नष्ट हो सकती है न दीखने वाली ध्वनि क्यो नष्ट हो क्योकि वह तो कार से भिन्न विशेषता वाली है । यहा जातिवाद ने चालाकी से कार तथा ध्वनि की एक भिन्नता का सहारा लेकर अनुचित रूप से खण्डन किया है। इसने सत्यवादी के हेतु 'उत्पन्न होने से' का कोई उत्तर नही दिया जो कि इसे देना चाहिये था।

१६ निग्रहस्थान इसका अर्थ है पराजय की अवस्था। और यह तब होती है जब व्यक्ति कुछ उल्टा उत्तर देवे अथवा बिल्कुल चुप रहे। जैसे किसी सत्य पक्ष वाले ने ऊपर के उदाहरण के अनुसार ध्वनि को नष्ट होने वाली सिद्ध कर दिया। तब दूसरे पक्ष वाला व्यक्ति बिल्कुल चुप रहे कुछ भी उत्तर न दे तो निग्रहस्थान कहलायेगा। अथवा इस प्रकार से गलत उत्तर दे कि 'कौन कहता है कि ध्वनि सदा रहती है मैं भी यही मानता हू कि ध्वनि नष्ट हो जाती है जैसा आप मानते हैं। यहा अपने पक्ष को ही छोड देने के कारण यह उत्तर गलत है इसलिये निग्रहस्थान कहलाता है।

इन सोलह पदार्थो के सत्य स्वरूप को जानकर हम मिथ्याज्ञान और बुरे कर्मो (पापो अपराधो) से बच सकते हैं। समाज मे प्रमाणो के आधार पर वास्तविक अपराधियो का खाज कर उन्हे दण्ड द कर न्याय की स्थापना कर सकते हैं। दण्ड कठोर ही होना चाहिये जिसको देख या जानकर अन्य लोग भी अपराध न करे जैसा कि अरब देशो मे होता है। कठोर दण्ड के बिना अपराधो को रोकना असभव है। परन्तु यह कठोर दण्ड प्रमाणो के द्वारा वास्तविक अपराधी को खोजकर ही दिया जाना चाहिये अन्यथा न्याय के स्थान पर अन्याय होगा। परिणामस्वरूप जनता मे विद्रोह होगा और शासन व्यवस्था ही भग हो जायेगी। अत दण्ड का प्रयोग बडी सावधानी से न्यायपूर्वक ही होना चाहिये। इन्हीं सोलह पदार्थो के यथार्थ ज्ञान से हम समाज मे न्याय सुख समृद्धि की स्थापना करते हुए मोक्ष की प्राप्ति भी कर सकेगे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि-भारतीय मनीषियो की परम्परा मे महान् न्यायविद् दार्शनिक महर्षि गौतम जी न्याय का उद्देश्य केवल सासारिक झगडो को सुलझाने तक ही सीमित नहीं मानते थे। इसके साथ साथ वे न्याय का उद्देश्य मोक्ष (आवागमन से छुटकारा) भी मानते थे। परन्तु क्या आज का न्याय इन दोनो उद्देश्यों मे से किसी मे भी सफल हो पा रहा है ? ☆

आर्योपप्रतिनिधि सभा बिजनौर के तत्वावधान में जनपदीय आर्य महासम्मेलन तथा कुरीति निवारण सप्ताह

आर्य उपप्रतिनिधि सभा बिजनौर के तत्वावधान मे २२ से २८ अक्टूबर ९९ तक कुरीति निवारण सप्ताह के अर्न्तगत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं। प्रतिदिन प्रात ७ बजे से ९ बजे तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न होगा। २७ से २८ अक्टूबर ९९ तक जनपदीय आर्य महासम्मेलन तथा २९ अक्टूबर को दोपहर १ बजे से नशा निवारण प्रदर्शन का आयोजन किया गया है। इस विशाल आयोजन को सफल बनाने के लिए तथा दुर्व्यसनो के विरुद्ध विरोध प्रकट करने के लिए तन मन धन से अपने सामाजिक दायित्व का पालन करे। ☆

प्रचारक चाहिये

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा को हरियाणा और राजस्थान आदि के लिये दो प्रचारको की आवश्यकता है जिनको शुद्धि कार्य मे रुचि हो आयु ५० वर्ष से कम हो जो हवन सन्ध्या आदि कराने में पूर्ण सक्षम हो। वेतन योग्यतानुसार। आवेदन पत्र ३१ अक्टूबर १९९९ तक निम्न पते पर भिजवायें

प्रधान भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष न० ३३६३७१८

सार्वदेशिक आर्यवीर दल सहारनपुर का चौदहवां प्रशिक्षण शिविर

सार्वदेशिक आर्यवीर दल सहारनपुर का चौदहवा प्रशिक्षण शिविर १८ से २७ अक्टूबर तक हायर सेकेन्डरी स्कूल सापला बेगमपुर मे सम्पन्न होने जा रहा है। राष्ट्र की उन्नति चरित्र निर्माण समाजिक आत्मिक और शारीरिक विकास हेतु इस प्रशिक्षण शिविर मे अवश्य भाग ले। इस शिविर मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान मनीशी तथा आर्य वीर दल के प्रशिक्षक प्रशिक्षण प्रदान करेगे। ☆

आर्यवीर दल मुम्बई के श्री शिववीर शास्त्री संचालक नियुक्त

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री शिववीर शास्त्री को आर्यवीर दल मुबई का सचालक नियुक्त किया गया है।

श्री शिववीर शास्त्री की लगातार आर्य समाज के कार्यो की निष्ठा को देखते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मत्री श्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने नियुक्ति का आदेश जारी किया।

श्री शिववीर शास्त्री को कहा गया है कि अविलम्ब कार्य समिति आर्य वीर दल मुबई की गठित कर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को सूचित करे। ☆

आर्य समाज, मेरठ शहर द्वारा आयोजित
नि:शुल्क दमा रोग चिकित्सा शिविर

आपको यह जानकर गर्व का अनुभव होगा कि रचनात्मक कार्यक्रमो को मूर्त–रूप देने की दृष्टि से आर्य समाज बुढाना गेट मेरठ शहर मे सोवार २८ अक्टूबर १९९९ को प्रात ९ बजे से एक नि शुल्क दमा चिकित्सा शिविर सुप्रसिद्ध चिकित्सक एव दमा रोग विशेषज्ञ डा० सी०एल० आय के निर्देशन मे लगया जा रहा है।

जिसमे दूरबीन द्वारा फेफडो की जाच की जायेगी।

रोगियो का रजिस्ट्रेशन सोमवार मगलवार एव बुधवार तदनुसार १४ १५ व १६ अक्टूबर १९९९ को प्रात ८ बजे से आर्य समाज मन्दिर थापर नगर मेरठ मे किया जायेगा।

प्रत्येक रोगी को छाती का एक्सरे एव ब्लड टैस्ट मूलचन्द शरबती देवी चैरिटेबिल आई हास्पिटल शर्मा स्मारक मेरठ (निकट बच्चा पार्क) पर कराना होगा जिसका कुल व्यय ८५/– रु० एक्सरे के समय रोगी को देना होगा जिसकी रसीद दिखाने पर शिविर वाले दिन जाच के उपरान्त उक्त राशि रोगी को वापिस कर दी जायेगी।

अधिक जानकारी के लिए निम्न से सम्पर्क करे।

निवेदक

मनोहर लाल सर्राफ	राधे लाल सर्राफ	इन्द्रराज	ओम प्रकाश
प्रधान	सयोजक शिविर	सयोजक सम्मेलन	मत्री

निर्वाचन आर्य समाज

आर्य समाज नासिक

प्रधान	श्री गुलशन कुमार जी चड्ढा
मत्री	श्री माधव के० देशपाण्डे
कोषाध्यक्ष	श्री इन्द्रजीत भाटिया

आर्य समाज वसव कल्याण

प्रधान	श्री गोकुलसिह जी चव्हान
मत्री	श्री माणिक राव लाड
कोषाध्यक्ष	श्री दिलीप महेन्द्रकर

आर्य समाज रजौली

प्रधान	डा० युद्धदव आर्य
मत्री	श्री रामप्यारे प्रसाद
कोषाध्यक्ष	श्री रामेश्वर प्रसाद

आर्य समाज मदसौर

प्रधान	श्री वरदी चन्द्र बसर
मत्री	श्री नरेन्द्र सिह तोमर
कोषाध्यक्ष	श्री रमेश चन्द पालीवाल

आर्य समाज बम्बई

प्रधान	श्री झाऊलाल शर्मा
मत्री	श्री राजेन्द्र नाथ पाण्डेय
कोषाध्यक्ष	श्री केशवलाल साग्या

आर्य समाज गोसपुरा न० १ ग्वालियार

प्रधान	श्री जे०पी०गुप्ता
मत्री	श्री दीपचन्द आय
कोषाध्यक्ष	श्री रामकुमार गोय

आर्यसमाज ग्रीन पार्क और लाला रामगोपाल शालवाले

प्रथम पृष्ठ का शेष

श्री जगमोहन जी ने क्षमा मागकर भेट की यह भी लम्बी कथा है।

श्री रामचन्द्र विकल श्री सोमनाथ मरवाह श्री मदन गोपाल खोसला अन्य कुछ सज्जन साथ थे। श्री जगमोहन जी ने अन्यत्र स्थान देने को कहा नक्शा भी बनवाकर पास करा दूगा। श्री लाला जी ने उसी स्थान को लेने और दुगनी जगह भी देने को कहा। अन्त मे ६ सौ गज भूमि के साथ १२ सौ गज भूमि देने का निश्चय हुआ और सार्वदेशिक सभा के नाम लिखा पढी की गई। पश्चात यह भूमि आर्य समाज ग्रीन पार्क को दे दी गयी।

यह घटना अब पुरानी हो गयी है। कहना यह है कि आर्य समाजी जन पजाब से लुट पिटकर यहा आया और हिम्मत जुटा कर इतना बडा भवन पुन खडा कर दिया जिस पर हम उत्सव मना रहे हैं परन्तु कइयो ने आशा युक्त कई लोगो ने निराशा जनक भाषण दिये कई वक्ता अपनी तारीफ के पुल हो बधने मे समय खराब कर रहे थे।

मैने मि० सूद से कहा कि उस महापुरुष को भी याद कर लो जिसके परिश्रम का यह परिणाम है। पर सबकी खिचडी अलग पक रही थी। मेरे पास वही प्रथम दिवस पर रोकर कथा सुनाने वाली महिला श्रीमती आशा जी मच पर आकर बोली आप उस दिन की घटना की चर्चा अवश्य करे जिस पर सघर्ष कर भूमि प्राप्त की और आज भवन बना कर समारोह मना रहे हैं।

कभी बुरा भी अच्छे के लिये ही होता है न भवन गिराया जाता और न इतना बडा भूभाग मिलता और न आर्यजन अपनी शक्ति का पुन प्रदर्शन करते।

साथियो आत्म विस्मृति के कगार पर मत खडे होओ जो विगत के घटना क्रमो को भुला देता है वह अहसान फरामोश माना गया है। आज के उत्सव मे उस महा मानव लाला रामगोपाल शालवाल स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का स्मरण कर स्वर्गीय आत्मा की सदगति की कामना करते।

अन्त मे समय भी नहीं था बार बार बोलने की चाह ने मुझे मच से पीछे चले जाने को विवश किया। आवाज लगती रही। डा० सच्चिदानन्द शास्त्री सभा मत्री अपने आशीर्वचन कहेगे–शास्त्री जी जा चुके थे।

आगे कार्यक्रम होने थे पर आज उस विगत कहानी को सुनाने वाला कोई नहीं था जो लाला रामगोपाल जी शालवाले के साथ बीती थी। ☆

वैदिक भाषण प्रतियोगिता

लुधियाना ३० सितम्बर वेद प्रचार मण्डल की ओर से आर्य गर्ल्स सीनियर सैकण्डरी स्कूल मे युवा वर्ग मे मानवीय गुणो को जाग्रत करने भारतीय सस्कृति स्वतन्त्रता आन्दोलन महापुरुषों के जीवन की जानकारी देने हेतु वैदिक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसका उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि श्री किरपा शकर सरोज आई०ए०एस० के अतिरिक्त मुख्य प्रशासक पूडा लुधियाना ने दीप प्रज्वलित करके किया। श्री सरोज ने अपने सम्बोधन मे कहा इन आयोजनों से युवा वर्ग मे आत्म विश्वास बढेगा और उनके चरित्र निर्माण मे सहायक होगे।

समारोह की अध्यक्षा श्रीमति कुलदीप कौर प्रिसीपल मास्टर तारा सिह मैमोरियल कालेज ने अपने सम्बोधन मे कहा परमात्मा एक पिता है इसलिए हम सब भाई बहन है। उन्होने कहा कि सद्भाव एव राष्ट्रीय एकता के लिए मण्डल जो कार्य कर रहा है वास्तव म सराहनीय है। प्रतियेगिता मे विजयी छात्रो को पुरस्कृत किया गया। ☆

नि:शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय आयोध्या फैजाबाद का वार्षिकोत्सव

श्री नि शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या फैजाबाद का ६६ वा वार्षिकोत्सव १८ से २० नवम्बर ६६ तक गुरुकुल भूमि मे सम्पन्न होने जा रहा है। इस अवसर पर नित्य प्रात ६ से ८ बजे तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ भजन एव उपदेश होगे। नवीन प्रविष्ट ब्रह्मचारियो का यज्ञोपवीत सस्कार आर्य वीर दल एव योग सम्मेलन सहित अनेको अन्य कार्यक्रम सम्पन्न होगे। अधिक से अधिक सख्या मे पहुच कर तन मन धन से सहयोग कर कार्यक्रम को सफल बनाये। ☆

आर्य समाज बरियारपुर (कॉदी) का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बरियारपुर (कादी) का २२वा वार्षिकोत्सव एव वेद प्रचार का विराट कायक्रम २६ तथा २७ अक्टूबर ६६ को समारोह पूर्वक सम्पन्न होने जा रहा है। इस अवसर पर प्रात विशेष यज्ञ एव उपदेश एव रात्रि ७ बजे से ४ बजे तक भजन एव उपदेश होगे। इसके अतिरिक्त अनेको अन्य कार्यक्रम भी रखे गये हैं। आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वानो तथा उपदेशको के विचार सुनने के लिए अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर लाभ उठाये। ☆

आर्यसमाज राणाप्रताप बाग दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज राणा प्रताप बाग दिल्ली का ३४वा वार्षिकोत्सव १३ से २० अक्टूबर ६६ तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात ६ बजे से ७ ४५ महायज्ञ का भव्य आयोजन किया ग १६ अक्टूबर तक प्रतिदिन रात्रि बजे तक भजन तथा प्रवचन क गया है। १६ १०-६६ को १२ महिला सम्मेलन होगा। मुख्य कायक्र को सम्पन्न होगा।

समारोह मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान भजनोपदेशक तथा नेता पधार रहे हैं। कार्यक्रम के उपरान्त ऋषि लगर का भी आयोजन किया गया है। ☆

महात्मा विद्याभिक्षु वानप्रस्थी का प्रथम पुण्य स्मृति दिवस

महात्मा विद्याभिक्षु वानप्रस्थी (महाशय विद्याराम आर्य) का प्रथम पुण्य स्मृति दिवस १६ से १७ अक्टूबर को विद्याराम ओम शरण दास मिल गान्धी मण्डी सिरसा गज मे आयोजित किया गया है। इस अवसर पर १६ अक्टूबर को प्रात ७ बज से यज्ञ भजन प्रवचन एव श्रद्धाजलि तथा साय ७ बजे से भजन तथा प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया है। दिनाक १७ अक्टूबर को भी रात्रि का कार्यक्रम होगा। कार्यक्रम मे उपस्थिति प्रार्थनीय है।

धर्म जागृति सम्मेलन एवं १०१ कुण्डीय महायज्ञ सम्पन्न

जनपद मुरादाबाद के कस्बे रजबपुर मे ६ ७ व ८ अक्टूबर ६६ को एक धार्मिक क्राति का आयोजन किया गया। इस अवसर पर शत कुडीय यज्ञ का कार्यक्रम बडी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य सम्मेलन राष्ट्र भृत सम्मेलन महिला सम्मेलनो का आयोजन किया गया।

सम्मेलन मे ८ अक्टूबर ६६ को सार्वदेशिक सभा के महामत्री डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री का अभिनन्दन किया गया। आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के कार्यकारी प्रधान रामस्वरूप सिह आर्य डा० विजयसिह आर्य सयोजक सम्मेलन स्वामी क्रातिवेश श्री योगेश्वर डा० योगेन्द्र मोहन शास्त्री मीरा बहिन शास्त्री हेमलता शास्त्री बीना चौधरी ने सम्मेलन मे मुख्य भूमिका निभायी। श्रद्धेय शास्त्री जी का करतल ध्वनि व जयकारो से महर्षि दयानन्द जी जय शास्त्री जी की जय और आर्य समाज के नारो से भव्य स्वागत किया गया। ☆

आर्य उपदेशक सम्मेलन सम्पन्न

स्थानीय आर्य समाज एव वैदिक शिक्षा सस्थान के सयुक्त तत्वावधान मे श्रीरामखत्री धर्मशाला के प्रागण मे आर्य उपदेशक सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन मे पूर्वी उ०प्र० के सोलह जनपदो के लगभग २५० प्रतिनिधियो एव आर्य उपदेशको ने भाग लिया। सम्मेलन मे विभिन्न चरणो मे आठ गोष्ठिया सम्पन्न हुई। इन गोष्ठियो मे वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे आर्यसमाज एव महर्षि दयानद के सिद्धान्तो की प्रासगिकता पर गहन विचार विमर्श हुआ। इस अवसर पर आर्यसमाज के अन्दोलन मे आये व्यवधान उनके कारण और निवारण पर आत्मविश्लेषण किया गया। वक्ताओं ने इन गोष्ठियो मे दिल खोलकर अपने विचार रखे और आत्म विवेचन किया।

इस सम्मेलन मे पाच प्रमुख उपदेशको सर्वश्री डा० डालचन्द्र वानप्रस्थी जबलपुर प० सत्यदेव शास्त्री काशी श्री जलेश्वर मुनिवानप्रस्थी—लखनऊ श्री आर्य मुनि जी वानप्रस्थी जौनपुर तथा श्री तेजनारायण गोरखपुर को लखनऊ पधारे डा० रामकृष्ण शास्त्री ने शाल देकर सम्मानित किया। डा० रामकृष्ण शास्त्री ने आहवान किया कि भारत की वर्तमान दुर्दशा के निवारण हेतु वेदों का पथ प्रशस्त करना ही सर्वाधिक समीचीन है। ☆

आर्यसमाज पूजला नयापुरा जोधपुर का वार्षिकोत्सव एवं विजयादशमी पर्व

आर्य समाज पूजला नयापुरा का वार्षिक उत्सव एव धर्म प्रचार कार्य १७ से २० अक्टूबर ६६ तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। समारोह मे महिला सम्मेलन युवक सम्मेलन गौरक्षा सम्मेलन एव शका समाधान के कार्यक्रम रखे गये हैं। २०-१०-६६ को विजयदशमी पर समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। ☆

आर्ष गुरुकुल आश्रम, सूखीढांग (पिथौरागढ) का शुभारम्भ

पिथौरागढ जनपद मे हिमालय पर टनकपुर से २३ किलोमीटर दूर सडक किनारे आर्ष गुरुकुल आश्रम' का शुभारम्भ कक्षा–६ मे प्रवेश के साथ १३ अक्टूबर १९९६ को है। अध्यापन हेतु एक व्याकरणाचार्य चाहिये। नियमावलि व प्रवेश हेतु मुख्याधिष्ठाता आचार्य रामदेव जी को पत्र लिखे। ☆

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली–2 से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

दूरभाष ३२७४७७१, ३२६०९८५ | आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये | वार्षिक शुल्क ५० रुपए | एक प्रति १ रुपया

वर्ष ३५ अक ३९ | दयानन्दाब्द १७२ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ | सम्वत् २०५३ | कार्ति०कृ० १४ | १० नवम्बर १९९६

श्री सोमनाथ मरवाह कार्यवाहक अध्यक्ष सार्वदेशिक सभा द्वारा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली की तदर्थ समिति का गठन

मरवाह जी का मूल आदेश निम्न प्रकार है

श्री बृजभूषण जी गक्खड

सप्रेम नमस्ते।

आपका पत्र दिनाक २२-१० ६६ जो कि आपने मेरे शो काज नोटिस के उत्तर मे सार्वदेशिक सभा के पते पर भेजा है वह दफ्तर से मेरे निवास स्थान पर भेजा गया।

आपके पत्र के अनुसार मेरा पत्र आपको २२-१०-६६ को सायकाल प्राप्त हुआ और आपका पत्र २२-१०-६६ से प्रतीत होता है कि आपने उसी समय उसका उत्तर भी टाइप करवा लिया। मेरे पत्र से आपका मन दु खी एव पीडित होना बडे आश्चर्य की बात है जबकि पत्र लिखने से पूर्व फोन पर आपसे बात करली थी और आपने कहा था कि (प्रति–निधियो) वोटर्स का बहुमत आपके साथ है और श्री रामनाथ जी सहगल भी आपके साथ हैं। फिर दोबारा चुनाव करवाने मे आपको दु खी होना चाहिए था बल्कि दुबारा चुनाव के लिए आपको कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए थी।

श्री ग्रोबर जी के अतिरिक्त आपके चुनाव के खिलाफ धाधली पैदा की गई उसी के कारण श्री चोपडा जी ने आपको या किसी और अधिकारी को चुने जाने की घोषणा नहीं की और जो आपने उनके आशीर्वाद के विषय में लिखा है उन्होंने इन्कार किया है। वह तो यह था कि आपने उनके गले मे जो हार डाला उसी हार को उन्होंने आपके गले मे डालकर वापिस कर दिया।

उन्होने कभी आपको आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का प्रधान निर्वाचित होना न माना है न घोषणा की है और न अपनी कुर्सी पर जिस पर वह प्रधान बैठे थे वह कभी खाली नहीं की। आपका चुनाव नियमानुसार नहीं हुआ और न ही आपके नाम का किसी ने अनुमोदन किया परन्तु – श्री एन०डी०ग्रोबर का नाम प्रधान पद के लिए प्रस्तुत किया गया उसका अनुमोदन एक से अधिक लोगो ने किया जबकि आपके नाम का सुझाव दिया गया तो वहा के लोगो मे जिनमे बहुत से वोटर भी नही थे उन्होने शोर मचाना शुरू कर दिया कि गक्खड जी प्रधान हो गये है और हार डालने शुरू कर दिये। यह सारी कार्यवाही श्री सहगल जी ने करवाई।

श्री चोपडा जी ने लिखित रूप से मुझे २५ १० ६६ को पत्र लिखा है उसमे आपको आशीर्वाद देने व प्रधान घोषित करने से इन्कार किया है।

आपने उन लोगो की शिकायतो की कापी मागी है परन्तु यह सब शिकायने अखबारो मे लिखी गई है और मैने १२ १४ प्रतिनिधियो से इस चुनाव के विषय मे पूछताछ की है जो कि श्री ग्रोवर जी ने लिखा है व अखवारो मे लिखा गया उसको सही बताया है और इसलिए मुझे विश्वास हो गया है कि यह चुनाव नियम विरुद्ध हुआ है और इसको निर्वाचन कहना भी चुनाव प्रक्रिया की हत्या करने के बराबर है।

इस विषय मे अगर और जानकारी इस चुनाव के विरुद्ध आपने लेनी हो जो कि मै महसूस करता हू कि आपको अखबारो मे लिखे जाने से मिल चुकी थी – फिर भी आपका ध्यान "अजीत समाचार" जालन्धर ३० मई १६६६ की तरफ दिलाना चाहता हू जिसका शीर्षक है "आर्य समिति के अध्यक्ष पद के चुनाव मे धाधली" का आरोप इसी तरह "आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के चुनाव मे धाधली" सम्पादक का नोट है फिर भी आपकी जानकारी के लिए इन अखबारों की फोटोकापी भेज रहा हू।

जो शिकायत वैदिक मोहन आश्रम हरिद्वार के विषय मे ११ १०-६६ को श्री प्रकाशवीर ने समस्त आर्यजन हरिद्वार की ओर से लिखी उसकी कापी भेजने की आवश्यकता नहीं बल्कि उसकी अलग से कार्यवाही की जायेगी।

श्री जी०पी०चोपडा के पत्र दिनाक २५ १० ६८ जो कि शो कास नोटिस के पश्चात मुझे मिली उसको भेजने की कोई आवश्यकता नही उसका जो आपके विषय मे लिखा गया भाग है वह इस प्रकार है–

" That I dıd not declare Mr Gakhar as elected, or any other office bearer as elected nor was there any occasıon when the chairs were ınter changed I had resprocated Mr Gakhar who garlanded me

That ın my address to the house I never announced any result, I never compared Mr Gakhar to Mahatma Hans Raȷ "

शेष पृष्ठ २ पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सम्पूर्ण आर्य जगत को दीपावली पर्व पर शुभ कामनायें

दीपावली महापर्व सम्पूर्ण आर्य जगत व राष्ट्रवासियो के लिए हर प्रकार से सुखद एव मगलमय सिद्ध हो। इसी दिन आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देश जाति व धर्म की रक्षा के लिए जीवन भर सघर्ष करते हुए अपना भौतिक शरीर त्यागा था। सब आर्य जनो व राष्ट्रवासियो का यह परम कर्त्तव्य है कि दीपावली के पर्व व ऋषि के निर्वाण दिवस पर राष्ट्र निर्माण व समाजोत्थान के कार्यो मे सलग्न होकर कार्य करने का सकल्प ले।

प० वन्देमातरम रामचन्द्र राव | डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादक- डा.सच्चिदानन्द शास्त्री

सर्व हितकारी सन्देश

जीवात्माओ का बन्धन और मोक्ष

समस्त जीवात्माए बन्धन और मोक्ष के चक्र मे अनादि काल से हैं और अनन्तकाल तक रहेगी। आर्य विद्वानो के विचार से मुक्ति एक विश्राम है। जिसका काल ३१ नील १० खरब और ४० अरब मानुष वर्ष है। अर्थात् इतने समय तक के लिए प्रकृतिपाश से मुक्त जीवात्माए ईश्वर के आनन्द मे निमग्न रहती है। तत्पश्चात पुन जन्म–मरण के बन्धन मे आ जाती है।

मानव तनधारी जीवात्माए ही मोक्ष को प्राप्त हो सकती हैं और वे मुक्ति से लौटकर वापिस मानव तन मे ही आती है। मुक्तात्माए मनुष्य की देह मे आकर यदि अपनी मुक्ति के लिये पुरुषार्थ करे तो पुन मोक्ष पद पा लेती है। अन्यथा विषयासक्त होने पर आवागमन के चक्र मे फस जाती है।

मुक्त जीवात्माए स्वतन्त्रता से स्वेच्छानुसार ब्रह्माण्ड मे विचरती हैं। मुक्तावस्था मे जीवात्माओ का अस्तिव सुरक्षित रहता है। ये ब्रह्म मे विलीन नहीं होती अपितु ब्रह्मानन्द की अनुभूति करती है।

शास्त्रकारो ने धर्मानुष्ठान विद्या की प्राप्ति सुसग सुसस्कारो परोपकार सत्यभाषण न्यायप्रियता योगाभ्यासादि को मुक्ति का साधन बताया है। और इनके विपरीत आचरण को बन्धन का कारण माना है।

वैदिक मिशनरी कमलेशकुमार आर्य अग्निहोत्री
आर्यसमाज मन्दिर देवलाली बाजार
कुबेरनगर अहमदाबाद (गुजरात)

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित
मेरठ में विशाल आर्य महासम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के तत्वावधान मे मेरठ नगर मे विशाल आर्य महासम्मेलन विभिन्न कार्यक्रमो के साथ सफलता पूर्वक सम्पन्न हो गया। आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानो उपदेशको तथा नेताओ ने भारी सख्या मे भाग लेकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया। इस अवसर पर विशाल शोभा यात्रा तथा विशेष यज्ञ का आयोजन भी किया गया था। इस कार्यक्रम की विस्तृत रिपोर्ट अगले अक मे प्रकाशित की जायेगी।

दीप वेदों का जलाएं

बढ रहा अज्ञान का है तिमिर धरती पर घनेरा।
दूर तक दिखता नहीं है ज्ञान का शुचितम सवेरा।।
आज ऋषियों के उठें सुत–तम धरा का सब भगाए।
दीप वेदों का जलाए।।

ज्ञान वेदों का तिरोहित हो, गया क्यो आज अक्षत।
ज्ञान का पथ क्यो हुआ है भूमि पर यो क्षत–विक्षत।
ऋषि दयानन्द की सजोई शक्ति से नव ज्योति लाए।
दीप वेदों का जलाए।।

तमी मिटे उर का हमारे ज्योति से हो पूर्ण अन्तस।
नष्ट हो जन जन ह्रदय का कालिमा से पूर्ण कल्मष।
त्याग की बलि दान की नव ज्योति धरती पर जगाए।
दीप वेदो का जलाए।।

हो पठन पाठन यहा पर श्रुति–ऋचाओ का सहर्षित।
शक्ति वे फिर से सजोए कण धरा पर जो प्रकम्पित।
ज्ञान–समृद्धि–न्याय–की, धारा धरा पर हम बहाए।
दीप वेदो का जलाए।।

हम बढे निर्भय स्वपथ पर वेद की आभा बिखेरो।
सैन्य जो तम की बढी है वेद के सम्बल से घेरे।
हम दयानन्द के सिपाही ध्वज विजय का लहलाहाए।
दीप वेदो का जलाए।।

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

श्री नारायण दास मेहरा का स्वर्गवास

श्री सोहन लाल मेहरा जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री नारायण दास मेहरा का मगलवार दिनाक २९ १० ९९ को अमृतसर मे देहावसान हो गया। इनकी आयु ५४ वर्ष ही थी। आपके परिवार मे एक पुत्र और एक पुत्री तथा धर्म पत्नी है। आप हसमुख स्वभाव तथा मिलनसार धार्मिक प्रवृत्ति के थे। श्री सोहनलाल मेहरा जी स्व० लाला रामगोपाल शालवाले जी के भान्जे है।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सदगति एव परिवारजनो को इस महान दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मत्री

पृष्ठ १ का शेष

मरवाह जी का मूल आदेश निम्न प्रकार है

मुझे दुख से लिखना पडता है कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के बहुत से अधिकारी और जो इसके वोटर बनाये जाते हैं उनमे से ऐसे व्यक्ति भी हैं जो मास खाने के अलावा शराब भी पीते हैं और चलन भी ठीक नहीं हैं और महात्मा हसराज को भूल गये हैं जो कि आर्य समाज की स्याही और कलम को जीवन दान देने के पश्चात अपने निजी काम के लिए इस्तेमाल नहीं करते थे। और आर्य समाज का एक आना बचाने के लिए जब उन्हे लाहौर से अमृतसर फिर अमृतसर से जालन्धर का टिकट खरीदा करते थे आज लाखो रुपये विदेशी यात्राओ मे बेरहमी से खर्च किये जाते है। अभी भी एक ग्रुप अमेरिका गया और मुझे एक कटिग पजाब केसरी की प्राप्त हुई जिसका शीर्षक है– आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के सराहनीय कार्य' (१४ अक्टूबर १९९९ आश्विन) और उस ग्रुप मे आप भी थे तथा – अश्विनी कुमार भी था तो क्या आप बतला सकते हैं कि आपने किसी अमेरिकन को आर्य समाजी बनाया। जबकि आप जानते हैं कि दक्षिण भारत मे दलितो को ईसाई बनाने मे करोडो रुपये बाहर के देशो से लाकर पादरी और मुल्ला काफी समय से लगे आ रहे हैं। शायद इसकी आपको कोई चिन्ता नही है।

मुझे तो यह भी पता चला है कि श्री अश्वनी कुमार और आप शराब का भी सेवन करते हैं।

आर्य समाज के विधान के अनुसार आप वोटर भी नहीं बन सकते। यह भी बडे आश्चर्य की बात है कि एक तरफ आप लिखते हैं कि २६ मई ९९ को चुनाव हुआ और अब इतने महीनो के पश्चात अब शो काज नोटिस दिया गया है। दूसरी तरफ पत्र के अन्तिम पैरे मे १९ १० ९९ को श्री ग्रोवर जी के विरुद्ध प्रस्ताव पास किया है। ऐसा मालूम होता है कि यह अन्तरग सभा का प्रस्ताव मेरी आपसे तथा श्री रामनाथ सहगल से फोन पर बातचीत करने के पश्चात बनाया गया है जिससे यह जाहिर किया गया है कि १९ १० ९९ को मीटिग हुई थी। क्या मैं पूछ सकता हू कि २६ मई ९९ या उसके शीघ्र बाद ऐसा प्रस्ताव क्यो नहीं पास किया गया या क्यो नही सोचा गया।

इन हालातो मे मुझे प्रादेशिक सभा के लिए तदर्थ समिति का गठन करना आवश्यक हा गया है। हालाकि आप बहुत अच्छे एडमिनिस्ट्रेटर हैं व श्री सहगल जी से मेरे ४० वर्ष से सम्बन्ध है। इसलिए जो अधिकार मुझे सार्वदेशिक सभा के विधान के अनुसार सम्बद्ध प्रान्तीय सभाओ के सम्बन्ध मे प्राप्त है उसके अनुसार मे २६ मई १९९९ के तथाकथित चुनाव को रद्द करता हू और नीचे लिखे ९ (नौ) व्यक्तियो की एक तदर्थ समिति गठित करता हू। यह तदर्थ समिति सही वोटर्स की लिस्ट बनायेगी और वह लिस्ट सार्वदेशिक सभा मे जाच के लिए भेजी जायेगी। यह तदर्थ समिति ६ (छे) मास के लिए बनाई गई है इसका कोरम ५ व्यक्तियो का होगा जो निर्णय लिया करेगे। जो सही वोटर्स की लिस्ट बनाई जायेगी उस पर तदर्थ समिति के सभी सदस्यो के हस्ताक्षर होगे। तथा बैंक खातों को आपरेट करने का अधिकार सिर्फ तदर्थ समिति के प्रधान व मत्री को ही होगा।

यह चुनाव ६ महीने के अन्दर सार्वदेशिक सभा के प्रधान अथवा उनके द्वारा नियुक्त पर्यवेक्षक की अध्यक्षता तथा उसकी देखरेख मे सम्पन्न होगा। आज से आपको तथा अन्य जो व्यक्ति बैंक खातो को आपरेट करते हैं उन पर आपका कोई अधिकार नहीं रहा है। तदर्थ समिति इसकी सूचना बैंको को दे देगी।

जो काम डी०ए०वी०स्कूल व कालेजो ने किया है कि हिन्दुओ का पैसा ईसाईयो के स्कूल व कालेजो मे जाया करता था वह रोक दिया गया है यह ठीक है परन्तु रुपया जहा पर आवश्यकता है वहा खर्च करने के बजाय अधिकारी विदेशी यात्राओ या अपने निजी स्वार्थ लाभ के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं।

जैसे कि कहावत है कि कोई व्यक्ति कानून से ऊचा नहीं है और इसलिए कोई व्यक्ति भी सभा के विधानो से ऊचा नहीं है। उसकी अवहेलना करने पर उनके खिलाफ विधान के अनुसार कार्यवाही करनी आवश्यक हो जाती है।

उपरोक्त लिखित कारणो की वजह से मुझे यह तदर्थ समिति बनानी पडी और सभा के प्रधान जी हैदराबाद मे हैं। तदर्थ समिति के ९ (नौ) सदस्यो के नाम निम्नलिखित है–

१ श्री जी०पी०चोपडा प्रधान डी०ए०वी० कालेज कमेटी (प्रधान तदर्थ समिति)
२ श्री मोहनलाल प्रिसपल डी०ए०वी० कालेज (मत्री तदर्थ समिति)
३ श्री ओ० पी० गोयल कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा
४ श्री मदनलाल खन्ना एडवोकेट इनकम टैक्स
५ श्री सत्यानन्द मुजाल हीरो साईकिल प्रा० लिमि० लुधियाना उपप्रधान सार्व० सभा
६ श्री शान्तीलाल सूरी
७ श्री एस०सी०नन्दा प्रिसपल डी०ए०वी० कालेज फरीदाबाद
८ श्री टी०आर० तुली भू०पू० चेयरमैन पजाब नेशनल बैंक
९ श्री सुरेन्द्र कुमार प्रधान आर्य समाज रेलवे रोड अम्बाला।

मैं आशा करता हू कि आप तदर्थ समिति को सहयोग देगे ताकि वोटर्स की लिस्ट जल्दी से जल्दी नियमानुसार तैयार हो जाये और प्रादेशिक सभा के चुनाव जितनी जल्दी सम्पन्न हो जावें तो यह सबके लिए विवाद का विषय समाप्त हो जायेगा। और जो व्यक्ति चुनाव मे चुने जावेगे वह सुचारु रूप से कार्य कर सकेंगे। यह तो आपको ज्ञात ही है कि श्री वन्देमातरम् जी प्रधान सार्वदेशिक सभा अभी तक हैदराबाद मे ही हैं और इसी कारण उनकी अनुपस्थिति मे मुझे विधान की धारा १४ के अधिकार अनुसार धारा १०(ग) के अन्तर्गत यह आर्डर देना पडा।

भवदीय
सोमनाथ मरवाह, कार्यकर्त्ता प्रधान
एव लीगल एडवाईजर सार्व० सभा

सत्य के पुंजारी-ऋषि दयानन्द

डॉ० महेश विद्यालकार,

ऋषि दयानन्द जी अपने युग की महान विभूति थे। उनके व्यक्तित्व मे तेजस्विता अखण्ड ब्रह्मचर्य अपूर्व कान्ति योगानुभूति चुम्बकीय प्रभाव आदि गुण थे। भीष्म पितामह के बाद उनसे बडा कोई ब्रह्मचारी नही हुआ। जगतगुरु शकराचार्य के पश्चात उनसे बडा कोई विद्वान नही हुआ। वे सत्य के पुजारी थे। सत्य के लिये ही जिये और सत्यके लिये ही उन्होने प्राणो की आहुति दी। उन्होने सत्य के लिए कभी समझौता नही किया। उन्हे सत्य से कोई डिगा नहीं सका। सत्य की रक्षा के लिए उन्हे सतरह बार जहर पीना पडा। वे जीवित शहीद थे। सत्य की यज्ञाग्नि मे उन्होने अपना सर्वस्व होम दिया था। गुरुडम और मूर्तिपूजा का खण्डन न करने के लिये उन्हे एकलिग की गद्दी व अपार धन ऐश्वर्य का प्रलोभन दिया गया। किन्तु निराला तप त्यागी अपने ध्येय से टस से मस नहीं हुआ। काशी के विद्वानो ने लालच दिया यदि आप मूर्तिपूजा व ब्राह्मणवाद के विरोध मे बोलना बन्द कर दे तो हम आपकी हाथी पर सवारी निकालकर आपको अवतार घोषित कर सकते हैं किन्तु सत्य के उद्धारक ऋषिवर अपने सकल्प से किचित विचलित नहीं हुए। सत्यासत्य के प्रकाश के लिये ही उन्होने सत्यार्थ प्रकाश की रचना की। ससार की आखो पर पडी अज्ञान अन्धकार असत्य पाप–पाखण्ड आदि की पट्टी का खोलकर सबको सत्य मार्ग दिखाया। उनका सकल्प था ऋत वदिष्यामि सत्य वदिष्यामि इस व्रत को उन्होने जीवन पर्यन्त निभाया। सच्चे शिव की खोज मे घर से निकल थे सत्य रूप शिव को उन्होने पाया उसको ससार को दिखाया।

वह पुण्यात्म ससार मे नई सत्य की रोशनी लेकर आया था। सत्य के प्रकाश के मार्ग मे जो पाखण्ड आडम्बर रूढिया अवतार पीर पैगम्बर मसीहा महन्त आदि आए उन्हे तर्क–प्रमाण व युक्ति से परास्त किया और सत्यमेवजयते के अमर वाक्य को जीवित रखा। वे सत्य के कथन मे कठोर थे। सत्य के आगे किसी से डरे नही। आर्य समाज के नियमो मे सत्य को पाच बार दुहराया है। उनकी दृष्टि मे सत्य सर्वोपरि था। वे ससार मे सत्य सनातन वैदिक धर्म को पुन प्रचारित एव प्रसारित करने आए थे। सत्य की रक्षा के लिये उन्होने ईटे पत्थर तथा गालिया खाई। वे इस भूली भटकी मानव जाति को सत्य पथ दिखाने के लिये ससार मे आए थे इसीलिये वे सदा सत्य के उदघोषक रहे। उनके जीवन व्यवहार और कथन मे सत्य ही निकलता था। बरेली के व्याख्यान मे कलेक्टर व कमिश्नर को डाटते हुए सबोधन मे कहा–लोग कहते हैं कि सत्य को प्रकट न करो कलेक्टर क्रोधित होगा कमिश्नर अप्रसन्न होगा गवर्नर पीडा देगा। अरे राजा क्यो न अप्रसन्न हो हम तो सत्य ही कहेगे ? ऐसी थी उस सत्यवादी ऋषि की निर्भीकता। एक बार सहारनपुर मे जैनियो ने कुपित होकर विज्ञापन निकाला – एक भक्त ऋषि के पास आए। बडे दुःखी मन से कहा – महाराज जैनमत वाले अपको जेल मे बन्द कराना चाहत हैं। स्वामी ने कहा – भाई ! सोने को जितना तपाया जाता है उतना ही कुन्दन होता है। विरोध की अग्नि मे सत्य और चमकता है। दयानन्द को यदि कोई तोपो के मुख के आगे रखकर भी पूछेगा कि सत्य क्या है तब भी उसके मुख से सत्य और वेद की स्तुति ही निकलेगी। वे सत के उपासक थ। जोधपुर जाते समय लोगो ने कहा – स्वामी जी आप जहा जा रहे हैं। वहा के लोग कठोर प्रकृति के ह। कहीं ऐसा न हो कि सत्योपदेश से चिढकर वे आपको हानि पहुचाए। प्रभु विश्वासी ऋषि ने कहा – यदि लोग हमारी उगलियो की बत्ती बनाकर जला दे तो कोई चिन्ता नही मे वहा जाकर अवश्य उपदेश दूगा। वह निडर सन्यासी सत्य के पालन के कारण जीवन भर अपमान विरोध और जहर पीता रहा। उन्हाने मृत्यु को हसते हसते वरण किया। वे कभी भी अन्याय असत्य व अधर्म की ओर नहीं झुके।

उनकी वाणी मे अदभुत शक्ति और प्रभाव था। जिसने भी उन्हे सुना ओर उनके सपक म आया वह प्रेरित होकर लौटा। न जाने कितनो को मुशीराम अमीचन्द और गुरुदत्तो का उन्होने नये जीवन दिये उनके तप पूत जीवन स निकली पवित्र वाणी लोगो के जीवन म चमत्कार का कार्य करती थी।

जोधपुर प्रवास म एक दिन ऋषिवर महाराज यशवन्त सिह क दरबार मे पहुचे। महाराजा ऋषि का बडा आदर सम्मान करते थ। उस समय महाराजा के पास नन्ही बाई वेश्या आई हुई थी। ऋषि के आगमन से महाराज घबरा गये। वेश्या की डोली को स्वय कन्धा लगाकर जल्दी से उठवा दिया किन्तु इस दृश्य को देखकर पवित्रात्मा ऋषि का अत्यन्त दुःख हुआ। उन्होने कहा – राजन ! राजा लोग सिह के समान समझे जाते हैं। स्थान स्थान पर भटकने वाली वेश्या कुतिया के समान हाती है। एक सिह को कुतिया का साथ अच्छा नही होता। इस कुव्यसन के कारण धर्म कर्म भ्रष्ट हो जाता है। मान मर्यादा को बट्टा लगता है इस कठोर सत्य से राजा का हृदय परिवर्तन हो गया। नन्ही बाई की राजदरबार से आवभगत उठ गई। उसे बडी गहरी ठेस पहुची। उसने षडयत्र रचा इस षडयत्र मे ऋषि के विरोधी भी सम्मलित हो गए। स्वामी जी के विश्वस्त पाचक को लालच देकर फोडा गया। पाचक ने रात्रि को दूध मे हलाहल घोलकर पिला दिया। सत्य का पुजारी सत्य पर शहीद हो गया। वह युग पुरुष शरीरिक कष्ट वेदना सहता हुआ घोर अन्धेरी अमावस्या की रात मे ससार को ज्ञान व प्रकाश की दीपावली देता हुआ सदा के लिये विदा हो गया। इसलिये दीवाली का पर्व ऋषि भक्तो और आर्य विचारधारा वालो के लिये विशेष सन्देश व प्रेरणा लेकर आता है। हर साल दिवाली आती है धूम धडाके खान पान मेले व श्रद्धाजलि तक सीमित रह जाती है। ऋषि की व्यथा कथा को कोई नहीं सुन पाता है।

ऋषि भक्तो ! आर्यो उठो जागो आखे खोलो ! सोचो हृदय की धडकनो पर हाथ रखकर अपने से पूछो दयानन्द और उनके मिशन अन्य समाज के लिय आप क्या कर रहे ह ? हम उस ऋषि के कार्य को कितना आगे बढा रह हे ? उसके प्रचार प्रसार क लिय कितना द रहे है। उस योगी की आत्मा जहा भी होगी हमसे पूछ रही होगी आर्यो मेने जो तुम्हे सत्य सनातन वैदिक धम की मशाल जो तुम्हारे हाथो मे दी थी उसे तुम समाज मन्दिर मे बने स्कूल दुकान बरातघर और औषधालय के कोने मे रखकर वेद की ज्योति जलती रहे। ओम का झण्डा ऊचा रहे बोल कर शान्ति पाठ कर रह हो ? मैंने जिन बातो का विरोध किया था। जिस पाखण्ड गुरुणडम अज्ञान आदि को दूर करने के लिए मै जीवन भर जहर पीता रहा। वही सब कुछ तुम जीवन घर और मन्दिरो मे कर रहे हो। जिस सहशिक्षा और अग्रेजियत की शिक्षा का मै विरोधी रहा वही सब कुछ तुम समाज मन्दिरो मे महापुरुषो के चित्रो के नीच कव्वालिया और लडके लडकियो के नाच करा रहे हो। मेरे नाम को व्यापार बनाकर धन बटोर कर मौज मस्ती ले रहे हो ? मैने तुम्हे जीवन जगत के लिये श्रेष्ठ सीधा सच्चा व सरल मार्ग दिखाया था। जो प्रभु का आदेश उपदेश और सन्देश वेदवाणी है। उसका तुम्हे आधार दिया था। उसके प्रचार वा प्रसार क कार्य छोडकर तुम भी भवनो दुकानो स्कूलो और एफडियो की लाइन म लग रहे हो। पद मान महत्व और सत्ता के लिये ऐसे लडने लगे हो जैसे परस्पर पशु लडते हे ? तुम्हारी इस चुनावी जग को देखकर श्रद्धालु भावनाशील और विचारो सिद्धान्तो को प्यार करने वाले लोग तुमसे अलग होते जा रहे है। जो मैने तुम्हे आर्य समाज के माध्यम से श्रेष्ठतम विचारो का चिन्तन दिया था। उसे तुमने इतना सकीर्ण सीमित बना दिया है कि अनुयायियो की दृष्टि से राष्ट्रीय स्तर पर कोई विशेष महत्व नही रखता है। समाज मन्दिरो को जलसे जलूस व लगरो तक सीमित करते जा रहे हो। समाज मन्दिरो की दशा वातावरण आदि को देख कर रोना आता है। क्या मेरे किये हुये कार्यो का यही प्रतिदान है ? यही स्मरण है ? यही श्रद्धाजलि है यदि यही है तो आर्यो ! मुझे माफ करो। मैने आर्य समाज को बनाकर बडी भूल की। मुझ य उम्मीद न थी जिस रूप मे आज समाज है और जिस दिशा मे जा रहा है।

ऋषि के निवाणोत्सव पर शान्त भाव से सच्चाई को समझ कर यदि कुछ हम जीवन और आर्य समाज के लिये सोच सके कुछ अपने को बदल सके कुछ दिशाबोध कर सके ऋषि के दर्द को समझ सके मिशन के लिये तप त्याग सेवा का भाव जगा सके तो ये पक्तिया लिखी सार्थक समझुगा। ☆

क्या श्री राम दीवाली को अयोध्या लौटे थे ?

कर्मवीर विवित्सु

भारत वर्ष आरम्भ से एक पर्वप्रिय देश रहा है। यहा पर सालभर एक के बाद एक पर्व आते है और भारतीय जनमानस को एकता भाई चारा तथा आनन्द के साथ उत्साह पूर्वक अपने कार्य मे सलग्न रहने की सत्प्रेरणा कर चले जाते हैं। व्याकरण के पृ पालनपूरणयों धातु से पर्व शब्द की सिद्धि होती है "जिसका अर्थ जनान आनन्देन पूरयति इति पर्व" अर्थात जो लोगो को आनन्द से भर दे वह पर्व है। भारत के चार मुख्य पर्वो मे ~~(श्रावणी-उपाकर्म-विजयादशमी-दीपमालिका-होलकोत्सव)~~ दीपमालिका का अपना एक अलग महत्व है। दीपावली का शब्द कर्णविवर मे प्रवेश करते ही हमे अनायास ही एक चमचमाता प्रकाश पुज दिखाई पडता है। मानसमुकुर मे स्वत प्रसन्नता का तरग बह जाता है। वास्तव मे यह प्रकाश का पर्व है जो हमे अधकार से प्रकाश की ओर अविद्या से विद्या की ओर असत्य से सत्य की ओर सतत चलने की प्रेरणा प्रदान करता है। यह पर्व आदिकाल मे नवशस्येष्टि के रूप मे पालन किया जाता था। कालान्तर म इस पर्व के दिन लोग नवशस्यागमन की खुशी मे रात को दीप प्रज्वलित करने लगे और शनै शनै इसका नाम दीपमालिका अर्थात दीपावली मे परिवर्तित हो गया। पहले गाव गाव मे इस अवसर पर नवान्न से प्रथम यज्ञ करते थे पश्चात खाना आरम्भ करत थे। भगवान कृष्ण गीता मे कहते है–

यज्ञशिष्टासिन सन्तो मुचयन्ते सर्व किल्विषै
भुन्जते ते त्वघ पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।।

अर्थात–जो व्यक्ति नवान्न को सर्व प्रथम यज्ञ मे आहुतियो द्वारा देवताओ को खिलाते हे उसके पश्चात स्वय खाते हैं वे सर्वविध पापो से विमुक्त हा ज'त है। वे व्यक्ति पाप ही केवल खात है जो अपने लिए ही पकाते हैं। कहन का अभिप्राय यह है कि नवान्न होने क पश्चात यह यज्ञ की प्रक्रिया पूर्वकाल से चली आ रही है। दो बार वर्ष मे फसल होने वाले हमारे देश मे यह नवशस्येष्टि का पर्व दीपावली एव होली मे दो बार मनाया जाता था। आज कल दीपावली के दिन केवल दीप जलाकर इसकी रस्म अदा की जाती है। यज्ञ की बात तो बहुत दूर इस पवित्र क्रिया के स्थान पर पटाखे आदि फोडकर और वायु मण्डल को दूषित किया जाता है। दीपावली के दिन द्युत क्रीडा करना भी शुभ माना जाता है जिसे कि वेद भगवान ने "अक्षैर्मा दिव्य" कहकर घोर निन्दनीय कर्म बतलाया है। इसका भयकर दुष्परिणाम महाभारत का महासग्राम जाज्वल्यमान उदाहरण है। इस तरह की तमाम अनैतिकताये इस पर्व के गौरव एव शालिनता को धुलितात करने के लिए पर्याप्त हैं। कुछ लोग दीपावली का सम्बन्ध श्री राम जी के लका विजय कर अयोध्या आगमन की खुशी मे अयोध्या वासियो द्वारा दीप जलाने को मनाते हैं जो कि यथार्थ के धरातल मे ठीक नही बैठता। जरा गौर करिये श्री रामचन्द्र जी ने विजयादशमी के दिन युद्ध यात्रा की थी वानरराज सुग्रीव आदि से मित्रता कर वानरो की सहायता से सेतुबन्ध बाध कर लका पर चढाई की और चैत्र कृष्ण चतुर्दशी के दिन रावण का वध किया अमावस्या के दिन उसकी अन्त्येष्टिकर विभीषण को राजा बनाया उसके पश्चात वहा से सीता सहित प्रस्थानकर चैत्रशुक्ल पचमी के दिन अयोध्या पहुचे। इसका अर्थ ग्रीष्म ऋतु हुआ और वह भी शुक्ल पक्ष की रात को अयोध्या वासियो द्वारा दीप जलाया जाना तर्क सगत नहीं लगता। अत्यन्त प्रसन्नता जाहिर करने के लिए उनका दीप जलाना हम मान भी ले तो इस बात को तो हम कदापि नहीं मान सकते कि इसी दिन से दीपावली का उपक्रम हुआ क्योकि यह कोई तुक नहीं है'।

आईये देखे अन्य पर्वो की अपेक्षा इस पर्व का अपना अलग महत्व क्यो है ? इस पर्व के साथ हमारे अनेक महापुरुषो के जीवन का अटूट सम्बन्ध है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वय एक प्रकाशस्तम्भ बनकर अज्ञान अन्धकार मे पडे देशवासियो को प्रकाश के राह पर ला खडा किया और दीपावली की रात को लोग जब मिट्टी के दिये जला रहे थ उस समय वह धर्म और सस्कृति का महादीपक सदा के लिए बुझ गया। जैनियो के चौबीसवे तीर्थकर महावीर स्वामी जी भी इसी दीपावली की रात को स्वर्ग सिधार थे। परमहस स्वामी रामतीर्थ जी का भी इसी दिन देहावसान हुआ था। इस प्रकार इस पर्व का बहुत ही महत्व है।

इस अवसर पर हम दीप जलाते है क्या कभी हमने इन दीपो से शिक्षा ग्रहण किया है ? प्रत्येक दीपक स्वय जलकर दूसरो को प्रकाश देता है। हमारे युगजन्मा महापुरुषो ने भी यही किया। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम से लेकर ऋषि दयानन्द तक जितने भी महात्मा हुए हैं वे सभी अपने आपको तप त्याग की भटठी मे जलाकर दूसरो को प्रकाश देते आये है। स्वय जलकर ओरो को प्रकाश देना यह दीपावली का अमर सन्देश है जो कि प्रत्येक नर नारी को आत्मसात करना चाहिए। तभी इस पर्व की सार्थकता है।

अग्निहोत्री स्मारक
३१ यू०बी०जवाहर नगर दिल्ली–७

पांचवा वार्षिकोत्सव रामनगर अम्बाला कैंट में

वैदिक प्रचार मण्डल–२६ रामनगर अम्बाला कैंट का पाचवा वार्षिकोत्सव बडे ही उत्साहपूर्वक दिनाक १५ ११ ६६ से १७ ११ ६६ तक अयोजित किया जा रहा है। जिसमे स्व० प्रज्ञा देवी की प्रमुख शिष्या ब्रह्मचारिणी प्रियम्वदा (व्याकरणाचार्य) उ०प्र० डा० प्रतिभा पुरधि डा० वेद प्रिय आर्य (कलकत्ता) एम०ए०सस्कृत डा० विक्रम विवेकी स्वामी माधवानन्द जी प० दाऊदयाल एव श्री रूवेल सिह आर्य (भजनोपदेशक) तथा डा० कमला वर्मा स्वास्थ्य एव स्थानीय निकाय मत्री हरियाणा सरकार को भी आमत्रित किया गया हे।

वेद मित्र हापुड वाले, प्रधान

युग नायक–महर्षि दयानन्द सरस्वती

युग नायक ऋषि दयानन्द को नर नारी सब याद करो।
परोपकारी बनो साथियो जीवन मत बर्बाद करो।।
जब वेद सभ्यता सस्कृति को भूल गए थे नर–नारी।
अज्ञान अविद्या के चक्कर म आई थी दुनिया सारी।।
सत्य अहिसा सदाचार की हसी उडाई जाती थी।
निर्बल निर्धन थे दुखी बहुत दानव सेना बौराती थी।।
वह समय भयकर याद करो लेकिन मत अधिक विसाद करो।
परोपकारी बनो साथियो जीवन मत बर्बाद करो।।
ऋषि दयानन्द ने दुनिया को तब वैदिक पथ दर्शाया था।
पाखण्ड–दुर्ग सब ढाए थे 'सत्यार्थ प्रकाश बनाया था।
जन्म जाति के बन्धन तोडे कर्म प्रधान बताया था।
शुद्ध जन्म से कर्मो से द्विज दुनिया को समझाया था।
उपदेश था योगी का सच्चा सुख भोगोमत प्रमाद करो।
परोपकारी बनो साथियो जीवन मत बर्बाद करो।।
दीवाली के दिन गुरु देव ने जग से नाता जोडा था।
उस जगत नियन्ता जगदीश्वर से पक्का नाता जोडा था।।
स्वामी जी ने तो जगन्नाथ सा पापी गले लगाया था।
धन दिया कहा था दूर चला जा घातक सुना बचाया था।।
वे दयानन्द थे दयावान तुम भी मत व्यर्थ फिशाद करो।
परोपकारी बनो साथियो जीवन मत बर्बाद करो।।
मत–मतान्तर बढे जगत मे भ्रमित है अब नर नारी।
उस जगत पिता जगदीश्वर को है भूल गई दुनिया सारी।।
खाओ पीओ मौज उडाओ यों कहते हैं भ्रष्टाचारी।
उग्रवाद आतकवाद की पनप गई है बीमारी।।
अय आर्यो वीरो ! निद्रा त्यागो निर्भय हो सिहनाद करो।
परोपकारी बनो साथियो जीवन मत बर्बाद करो।।
बिना तुम्हारे उस ऋषिवर का कौन करेगा काम बताओ।
जिसके ह्रदय मे जग की पीडा है उसका नाम बताओ।।
उठो बढो साहस दिखलाओ पडित लेखराम बन जाओ।
स्वामी श्रद्धानन्द बनो तुम जग मे ओ३म ध्वजा फहराओ।।
नन्द लाल शुभ कर्म कमाओ जीवन मे आह्लाद करो।
परोपकारी बनो साथियो जीवन मत बर्बाद करो।।

पं० नन्द लाल 'निर्भय' भजनोपदेशक
आर्य सदन बहीन जनपद फरीदाबाद (हरियाणा)

मानव निर्माण की योजना

भगवान देव 'चेतन्य'

महर्षि दयानद सरस्वती जी का एक सूत्रीय कार्यक्रम है—कृण्वन्तो विश्वमार्यम अर्थात सारे ससार को आर्य बनाना। उनकी दृष्टि मे आर्य शब्द श्रेष्ठता का प्रतीक है। वे सारे ससार को श्रेष्ठ मानव बनाना चाहते थे। श्रेष्ठता ही वास्तव मे उन्नति की प्रतीक है। जो व्यक्ति श्रेष्ठ होगा वह निश्चित रूप से जीवन मे चतुर्दिक उन्नति करेगा। जहा श्रेष्ठ व्यक्तियो का समूह होगा वह परिवार समाज राष्ट्र या विश्व जीवन के वास्तविक लक्ष्यो को प्राप्त करेगा। बडे आश्चर्य की बात है कि व्यक्ति परिवार या राष्ट्र और समाज की उन्नति के लिए अनेक प्रकार की योजनाए बनाता है मगर मानव को सही मानव बनाने की ओर दृढता के साथ कोई प्रयास नहीं किया जाता है। यदि मानव को मानव बना दिया जाये तो समस्त समस्याओ का निराकरण स्वत ही हो जायेगा। कुछ लोगो द्वारा रोटी कपडा और मकान की प्रतिपूर्ति का नारा लगाया जाता है मगर मनुष्य को सुखी करने के लिए केवल मात्र ये ही उपलब्धिया पर्याप्त नहीं है। इन बाहरी उपलब्धियो से आज तक किसी को भी परम सुख प्राप्त करते हुए नहीं देखा गया है। ये बाहरी वस्तुए वास्तव मे सुख और शान्ति का आधार ही नहीं है। मनु महाराज कहते हैं —सुखस्य मूलम धर्म। अर्थात सुख का मूल धर्म है। जब तक व्यक्ति का जीवन कार्यरूप मे धार्मिक नहीं होगा तब तक वह सुखी हो ही नहीं सकता है। भौतिक दृष्टि से यदि कोई समाज या राष्ट्र सम्पन्न हो भी जाए तो उसका सही सही उपयोग तब तक नहीं हो सकता है जब तक उस राष्ट्र या समाज के लोग भीतर से विकसित न हो। यदि उनका मानसिक स्तर ऊचा नहीं है तो वे इन भौतिक पदार्थो का उपयोग भी एक दूसरे को हानि पहुचाने के लिए ही करेगे। कहते हैं कि एक बार किसी ने महान वैज्ञानिक आइस्टीन से पूछा कि आपने इतने अदभुत आविष्कार किए हैं मगर क्या इससे मानव जाति पूर्णतया सुखी हो सकेगी तो आईस्टीन ने उत्तर दिया कि मेरा यह दावा नहीं है कि इन उपलब्धियो से मानव सुखी ही होगा। यह तो उन व्यक्तियो के मानसिक विकास पर निर्भर करता है कि वे इन आविष्कारो को प्रयोग किस प्रकार से करते हैं। जब उनसे पूछा गया कि मानसिक स्तर को ऊचा उठाने के लिए आपके क्या प्रयास हैं तो उनका कथन था कि यह कार्य धार्मिक लोगो का है।

आईस्टीन की बात अक्षरश सत्य है। आज हमारे राष्ट्र ने भौतिक रूप मे बहुत उन्नति की है मगर मानसिक रूप मे विकसित न होने के कारण राष्ट्र के बडे बडे नेता और अधिकारी लाखो और करोडो के घोटालों मे सलिप्त हैं। सप्रदायवाद और क्षेत्रवाद तथा जातिवाद आदि की कुवृत्तियो के कारण राष्ट्र रसातल मे जा रहा है। राष्ट्र मे नैतिकता और राष्ट्रीयता की भावना यदि नहीं है तो इन भौतिक उपलब्धियो का कोई मतलब नहीं रह जाता है। यह राष्ट्र के लिए मर मिटने की भावना और नैतिकता का सृजन धर्म ही कर सकता है। व्यक्ति के भीतर छुपे काम क्रोध लोभ मोह और अहकार रूपी शत्रुओं का जब तक नाश नहीं होता है तब तक मानव अपने स्वार्थो से ऊपर उठकर कुछ सोच ही नही सकता है। उसके जो भी निर्णय होगे वे किसी न किसी प्रकार के पूर्वाग्रहो पर ही आधारित होगे। इन वासनाओ और पूर्वाग्रहो से मुक्ति तभी मिल सकती है जब मानव को श्रेष्ठ बनाने के सतत प्रयास किए जाए। सस्कारो के माध्यम से यही प्रयास किया जाता है कि व्यक्ति की सब प्रकार की मलिनताओ को दूर कर दिया जाए। सस्कार पहले से विद्यमान दुर्गुणो को हटाकर उनकी जगह सद्गुणो का आधान कर देने का नाम है। जब व्यक्ति के दुर्गुण दूर होगे तभी वह शारीरिक मानसिक और आत्मिक स्तर पर विकसित होकर पूर्ण मानव बन सकता है।

मानव निर्माण के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वैदिक काल से प्रचलित सोहल सस्कारो का प्रबल समर्थन किया है। उन्होने आर्यो के लिए इन सस्कारो की अनिवार्यता पर बल दिया है। सोलह सस्कारों के प्रचलन के लिए उन्होने 'सस्कार विधि' ग्रन्थ की भी रचना की है। सस्कार विधि मानव निर्माण की दिशा मे एक अदभुत ग्रन्थ है। सोलह सस्कारो मे से लगभग ग्यारह सस्कार तो बालक की सात आठ वर्ष की आयु तक ही हो जाते हैं। भारतीय और पाश्चात्य विद्वानो का विचार है कि प्रथम के सात आठ वर्षो मे बच्चे मे जो भी सस्कार डाल दिए जाते हैं जीवन के शेष वर्षो मे उन्ही सस्कारो का विकास होता है। बालक के तीन सस्कार तो उसकी गर्भावस्था मे ही कर दिए जाते है। गर्भावस्था मे भी बच्चे के मन पर सस्कारो का प्रभाव पडता है इसके उदाहरण हमे इतिहास मे मिलते हैं। अभिमन्यु ने चक्रव्यूह का भेदन गर्भावस्था मे ही सीख लिया था। परम विदुषी मदालसा ने गर्भ मे ही अपने बच्चो पर सस्कार डालकर आठ को ब्रह्मज्ञानी और नवे को राजा बनाया था। नेपोलियन गीट और प्रिस बिस्माकै आदि को भी गर्भ मे ही वे सस्कार मिल गए थे जिनका विकास बाद के शेष जीवन मे हुआ।

जन्म से पूर्व के तीन सस्कार हैं—गर्भाधान पुसवन और सीमन्तोनयन। इन तीनो सस्कारो का अपना विशेष महत्व है। आजकल विवाह के बाद हनीमून आदि के लिए नव दम्पति विभिन्न स्थानो मे जाकर पूर्णतया भोग मे डूब जाते है और उनका गर्भाधान भी उसी काल मे हो जाता है। इसीलिए सन्तान का निर्माण भली प्रकार से नहीं हो पा रहा है। हमारे ऋषि मुनियो ने तो गर्भाधान को भी एक पवित्र कार्य मानकर धार्मिक स्वरूप प्रदान किया था। आज यह तो सभी रोना रोते हुए देखे गए हैं कि आजकल सन्तान अच्छी नहीं हो रही है मगर इस बात की ओर कोई ध्यान नहीं देता है कि हम उन्हे अच्छा बनाने का कितना प्रयास करते हैं। कहते हैं कि श्री कृष्ण महाराज जी का जब रुक्मणी जी के साथ विवाह हुआ तो उन्होने बारह वर्ष तक ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करने के बाद गर्भाधान सस्कार किया था। गर्भाधान सस्कार वास्तव मे दिव्य आत्माओ के लिए जन्म लेने हेतु एक तरह से भूमि तैयार करने जैसा है। इसीलिए इसे पवित्रता के साथ जोडा गया है। मा बाप की वैचारिक श्रेष्ठता की पृष्ठभूमि ही सुसन्तान पैदा करने का उपाय है। वैदिक रीति के साथ गर्भाधान करने का सिलसिला यदि चल पडे तो सन्तान स्वभाविक रूप से श्रेष्ठ ही पैदा होगी क्योकि गर्भाधान के समय की मन स्थिति बालक के भविष्य का निर्माण करने मे अपनी अहम भूमिका निभाती है। दूसरा सस्कार है पुसवन गर्भस्थ बालक के शरीर का दूसरे तीसरे महीने मे निर्माण होना आरभ हो जाता है। इन्ही महीनो मे यह सस्कार करने का विधान सस्कार विधि मे किया गया है। इस सस्कार का उद्देश्य गर्भस्थ सन्तान मे निरोगता स्वरूपता सुन्दरता एव तेजस्विता आदि का आधान करना है। इसी प्रकार के भावो से युक्त मत्रो की आहुतिया पति पत्नी से दिलवाई जाती हैं। मा बाप वीर और तेजस्वी सन्तान की कामना करते हैं आ वीराजायता पुत्रस्ते दशमास्य । माता के गर्भ मे स्थित बालक अपने पैदा होने तक सुरक्षित रहे इस प्रकार की कामना भी की जाती है। सीमन्तानयन सस्कार का भी अपना विशेष महत्व है। सीमन्त शब्द का अर्थ है मस्तिष्क और उन्नयन शब्द का अर्थ है विकास। अर्थात यह सस्कार सन्तान के मानसिक विकास का द्योतक है। यह सस्कार चौथे महीने मे किया जाता है। इससे यह बात भी स्पष्ट होती है कि गर्भस्थ बालक के मस्तिष्क का निर्माण चौथे महीने से आरभ हो जाता है। पुसवन सस्कार शारीरिक विकास हेतु और सीमन्तानयन सस्कार सन्तान के मानसिक विकास के लिए है। इन दोनो सस्कारो का यही आशय है कि सन्तान का शारीरिक और मानसिक विकास भली प्रकार से हो।

बालक के जन्म के बाद के सस्कारो मे पहला सस्कार है जातकर्म सस्कार। जातकर्म सस्कार के समय बहुत सी महत्वपूर्ण प्रक्रियाए की जाती हैं और वे बहुत सार्थक हैं। महर्षि दयानन्द जी ने सस्कार विधि मे उन सबका उल्लेख किया है। बच्चे का मुख नाक आदि साफ करना नाडी छेदन स्नान कान के पास पत्थर बजाना सिर पर घी मे डुबेया पाया रखना सोने की शलाका से घी और मधु के साथ आम लिखना और बालक के कानो मे 'त्व वेदाऽसि' कहना। इन सब प्रक्रियाओ का अपना विशेष महत्व है और बच्चे के भावी जीवन पर इसका प्रभाव पडता है इस सस्कार के माध्यम से बालक मे आध्यात्मिकता का बीज बोया जाता है। इन सब प्रक्रियाओ का बालक पर रचनात्मक प्रभाव पडता है और उसके शारीरिक मानसिक एव आध्यात्मिक विकास को बल मिलता है। इसके बाद बच्चे का कोई सार्थक सा नाम रखा जाता है और मा बाप को उसके पालन पोषण हेतु बराबर का उत्तरदायित्व सौपा जाता है। इस सस्कार को नामकरण सस्कार कहते है। यह सस्कार बालक के जन्म के ग्यारहवे या एक सौ एकवे दिन होता है। चार महीने पूरे होने ही बालक को प्रथम बार घर से बाहर निकाला जाता है। इस सस्कार को निष्क्रमण सस्कार कहते है। छठे महीने बालक को प्रथम बार अन्न खिलाया जाता है

शेष पृष्ठ ६ पर

११६वीं के जयती के उपलक्ष्य में

उत्तराखण्ड की एक महान आर्य विभूतिः

कर्मवीर जयानंद भारतीय

देव दयानद सरस्वती और महात्मा गाधी के मिशन के क्रातिकारी जहादुर सिपाही भारतीय राष्ट्रीय आदोलन के ज्वाजल्यमान नक्षत्र महान स्वतन्त्रता सेनानी एक परमेश्वर भक्त वैदित मूर्ति धर्म सस्कृति समाज सुधारक आदि महनीय गुणो का अद्भुत वीरवर स्व० श्री जयानद भारतीय का जन्म १ कार्तिक सम्वत १६३८ तदनुसार १७ अक्टूबर १८८१ को गाव–अरकडाई (सावली पौडी गढवाल उ०प्र०) मे हुआ। महर्षि दयानद सरस्वती की आर्य पताका उत्तराखण्ड मे पहुचाने मे भारतीय जी का ही महत्वपूर्ण सफल योगदान रहा अन्यथा उत्तराखण्ड मे हिन्दू समाज मे भयकर अमिट कोढ अपनी मजबूत जडे बना चुका था। हिन्दू हिन्दू भाई आपस मे ही जाति पाति छुआ छूत घृणा द्वेष अपने ही भाई अपने धर्म पर पाठ पूजा मदिर विद्यालय सार्वजनिक स्थल जलाशय आदि सब बद थे वेद विद्या यज्ञ हवन जनेऊ शुद्धि आदि तो पिछडो आदि को ज्ञान ही न था। सृष्टि विरुद्ध धर्म विरुद्ध चहु ओर से मानव अधिकारो का खुलम खुला उल्लघन हो रहा था। हिन्दू समाज मिथ्या आडम्बरो के चगुल मे बुरी तरह अस्त व्यस्त था जिसकी निशानी अभी भी मौजूद है। ऋषि पताका की जयघोश करत हुए भारतीय जी ने भूखे प्यासे लात घूसे खाकर असीम विघ्न बाधाओ को झेलते हुये उनके मिशन को स्थानीय क्षेत्रो मे प्रबल शक्ति का सचार कर सफलता की चोटियो तक पहुचाय'। परिणामस्वरूप जिन्हे स्थानीय हिन्दू जनता पिछडा मानती थी उनका शोषण करती थी वे ही लोग भारतीय जी की कुर्बानी से सच्चे मनुवादी बनकर आर्य समाज का धुआधार प्रचार प्रसार करते आ रहे हैं। उनका बच्चा बच्चा ऋषि दयानद वेद और आर्य समाज की जयघोष जिन्दाबाद को बुलन्दी दे रहे हैं। समाज सुधार का व्रत ले चुके हैं गुरुकुल की शिक्षा आर्य समाजो की स्थापना करके अवैदिक हिन्दुओ की शुद्धि एव उनको वैदिक स्वर पढा सुना रहे हैं। वैदिक सस्कार से पुरोहित कार्य आम बात सी लगती है। यह भारतीय जी के ही कुर्बानी की चलते चलते करवृक्ष है जिन्हे अब काटने से भी नहीं काटा जा सकता जो यह महसूस होता है कि आर्य समाज ने पूर्ण सफलता प्राप्त कर ली है।

भारतीय जी ने १६२० मे आर्य मुसाफिर के रूप मे सामाजिक जीवन मे प्रवेश किया। १६२६ मे काग्रेस मे शामिल होकर राजनीति मे कूदे ओर अग्रेजो के सिरदद बन गये कारण अग्रेजो ने उनपर कडी स कडी नजर रखी। स्वराज्य के खातिर ६ बार जेल यातनाये सहनी पडी। प्रथम बार १६३० मे सरकारी स्कूल भवन (जैहरीखाल) गढवाल पर तिरगा फहराने एव छात्रो को भडकाने पर ३ मास की जेल दूसरी बार १६३२ को दुगड्डा गढवाल मे धारा १४४ का उल्लघन करने पर ६ मा' की जेल तीसरी बार पौडी मे तिरगा फहराने पर एक साल की सजा चौथी बार १६४० मे गाधी जी के व्यक्ति सत्याग्रह पर पाच माह की पाचवी बार १६४२ के आदोलन पर नजरबद और छटी बार अग्रेजो ने इनपर राजद्रोह का मुकदमा चलाकर १६४३ मे दो साल की सजा देकर जेल भेज दिया। इसमे पौडी वाला काण्ड इनके जीवन का एक ऐतिहासिक काण्ड है। १६३२ मे अग्रेजो का भारी दमनकारी चक्र चल रहा था। गाधी जी आदि नेता जेलो मे बद थे ऐसा अवसर समझकर गढवाल अमन सभा ने उ०प्र० के अग्रेज गवर्नर सर मालकम हेली को पौडी बुलाकर उसका स्वागत कर अपनी राजभक्ति दिखानी चाही। उसी समय भारतीय जी जेल से छूटे थे उनकी तीव्र इच्छा थी कि चाहे प्राण भले चले जाये किन्तु किसी भी तरह समारोह को विफल करना ही होगा। वे गोपनीय ढग से तिरगा लेकर पौडी पहुचे और समारोह मे जैसे ही अभिनदन पत्र गवर्नर को दिया गया भारतीय जी ने मच पर बडी मुस्तैदी से वहा पर स्वराज्य का तिरगा फहराते हुये कह दिया गो बैक मालकम हेली काग्रेस जिन्दाबाद अमन सभा मुर्दाबाद महात्मा गाधी की जय भारत माता की जय की जयघोष से सभा मे भगदड मचा दी। गढमाता का ऐसा वीर सपूत ने गढवाल की मर्यादा को ऊची चोटी पर ला खडा किया। उत्तराखण्ड के इतिहास मे अपनी कर्म श्रृखला से उन्होने एक नवीन अध्याय की रचनी की। स्थानीय क्षेत्र मे हो रहे सामाजिक अत्याचारो के खिलाफ जी जान से सघर्ष करते रहे और तत्कालीन चोटी के नेताओ –महात्मा गाधी प० नेहरू गोविन्द वल्लव पत आदि का ध्यान इस क्षेत्र की ओर दिलाया और न्यायालयो के दरवाजे भी खिटखिटाकर समाज को न्याय दिलवाया।

दलितोद्धार अस्पृश्यता शोषण आदि कुरीतियो की निडर कौम के बादशाह ने सफलतापूर्वक भण्डाफोड कर अधकार को प्रकाश म परिवर्तित किया। मुरझी जाति को वेद का अमृत घूट पिलाकर मिथ्या पाखण्ड अत्याचार एव शोषण को हिलाकर रख दिया और देश और समाज मे अपने त्याग बलिदान से सजग क्राति जागृति दी। भारतीय जी महर्षि दयानद सरस्वती के वे वीर क्रातिकारी सैनिक थे जिनकी गिनती प्रमुख सफल सैनिको मे की जाती है किन्तु खेद है कि क्षेत्रीय जनता आर्य जाति राष्ट्रीय नेता आज इस महान विभूति का बलिदान भूलते ही जा रहे हैं। नगा नाच आदि साधारण कार्यो पर सर्वोच्च रत्नो की भरमार है किन्तु महान कार्यो के महान हस्तियो की सम्मान की रक्षा की उन्हें परवाह नहीं। हमारा आगे कोई भविष्य नहीं जब तक हम अपने महान पूर्वजो के कर्तव्यो पर अमल नहीं करेगे। ६ सितम्बर १६५२ मे भारतीय जी चिरनिद्रा मे सो गये। इस राष्ट्र के निर्माण मे उनकी कौमी जोश हिम्मत और कुर्बानी सफल योगदान सदा अविस्मरणीय रहेगा। उनकी मधुर समृति को चिरस्थायी रखने के लिए उनके पग चिन्हो पर चलकर उनके कार्यो को जीवित रखकर उन्हे उन्नति देना होगा जिनके लिये वे जीवनपर्यन्त सघर्ष करते रहे यही भावभीनी श्रद्धाजलि होगी।

गोपालआर्य उपमत्री आचलिक गढवाल
आर्य समाज दिल्ली

☆

वेद प्रचार यात्रा पटियाला में

पटियाला मे १२ अक्टूबर को ११ ३० बजे वेद प्रचार यात्रा के पहुचने पर सारी धार्मिक सस्थाओ के गणमान्य व्यक्तियो ने पुष्प मालाओ के द्वारा सन्यासियो और विद्वानो का भव्य स्वागत किया। यह यात्रा शहर क मुख्य बाजारो से होती हुई आर्य स्कूल मे समाप्त हुई १२ १३ अक्टूबर को उन सन्यासियो तथा वेद के विद्वानो के प्रवचन हुये तथा आर्य समाज द्वारा ५,१०० इक्वाजा सौ रुपये की थैली भेट की गई।

मत्री
ईश्वर दास

☆

शिक्षा की दृष्टि से यम–नियम का महत्व

डा० गणेश शंकर अध्यक्ष

शिक्षा का जीवन से गहरा सम्बन्ध है। जीवन का आधार शिक्षा ही है। किसी व्यक्ति के जीवन मे जैसी शिक्षा होती है वैसा ही उसके जीवन का निर्माण होता है। धार्मिक शिक्षा से धार्मिक जीवन का और भौतिक शिक्षा से भौतिक जीवन का निर्माण होता है। अत सदैव श्रेष्ठ शिक्षा को जीवन में उत्तम माना गया है। भारत वर्ष धर्म सस्कृति अध्यात्म और शिक्षा के क्षेत्र मे प्राचीन काल से ही अग्रण्य रहा है। यहा की आध्यात्मिक शिक्षा ने विश्व को समानता स्वतन्त्रता तथा भ्रातृत्व का दर्शन प्रदान कर 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना का प्रचार प्रसार किया है। यह विडम्बना ही है कि आज भारत मे धार्मिक आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा का प्राय लोप होता जा रहा है महर्षि मनु, वाल्मीकि व्यास शकर रामानुज निम्बार्क वल्लभ तुलसी और सूरदास आदि प्राचीन विद्वानो एव सत महात्माओ से लेकर स्वामी विवेकानन्द टैगोर अरविन्द और गाधी जी आदि सभी विचारकों ने शिक्षा को परिभाषित करते हुये कहा कि इसके द्वारा बालक का न केवल शारीरिक मानसिक बौद्धिक और सामाजिक विकास होता है वरन आध्यात्मिक धार्मिक और नैतिक विकास भी होता है। वस्तुत ऐसा होने पर ही सर्वागीण विकास की प्रक्रिया पूर्ण होती है। अत आज शिक्षा प्रणाली को इस प्रकार तैयार करने की आवश्यकता है जिससे विद्यार्थियो का वास्तविक समग्र विकास हो सके। इस दृष्टि से शिक्षा के क्षेत्र मे योग की समाहित वित्तता की महत्वपूर्ण भूमिका है।

महर्षि पतन्जलि–प्रणीत योग दर्शन साधको भक्तो और उपासको के लिये परम उपयोगी शास्त्र है। इसमें अन्य दर्शनों की भाति खण्डन-मण्डन न करके सरलता पूर्वक सयमित जीवन पद्धति पर प्रकाश डाला गया है। इसीलिए आज के युग में न केवल आध्यात्मिक अथवा धार्मिक क्षेत्र मे योग के महत्व को स्वीकार किया गया है वरन शिक्षा के क्षेत्र मे भी इसका महत्व दिन प्रतिदिन बढता जा रहा है। यो वा शिवतमो रस० इत्यादि मत्रो मे जल को समस्त सुखो का दाता और अतिशय कल्याणमय घोषित किया है। 'मधुवाता ऋतायते 'मधु क्षरन्ति सिन्धव' इत्यादि मत्रो मे प्रकृति के विधि पदार्थो को मिलाकर बनने वाले पर्यावरण के महत्व और उसके प्रति अपनी सजगता को प्रकट किया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वैदिक ऋषियो ने पर्यावरण के सभी अगो का साक्षात्कार किया था उनके गुण धर्म को उसकी महत्ता को समझा और पहचाना था। उन अगो मे विकार क्यो और कैसे आ सकता है इसे भली प्रकार समझकर पर्यावरण प्रदुषण से सर्वतो भावेन मुक्त बने रहने के लिए पृथ्वी जल आदि को माता के रूप मे द्यौ और सूर्य आदि को पिता के रूप में मानकर उनके प्रति आदर भाव रखकर उनकी शुद्धता को अक्षुण्ण बनाये रखने का सकल्प लिया था। इतना ही नहीं उन्होंने पर्यावरण की गुणवत्ता बढाने के भी उपाय खोजे थे उनके लिए वे सतत प्रयत्नशील थे। इसीलिए उनकी यह मान्यता 'मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम मित्रस्याह चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे कार्यान्वित होती रही है और यतो यत समीहसे ततो नो अभयं कुरु। श न कुरु प्रजाभ्यो अभय न पशुभ्य अभय न करत्यन्तारेक्षमभय द्यावापृथिवी उभे इ मे। अभय पश्चादभय पुरस्तादुत्तरादधरादभय नो अस्तु।। अभय मित्रादभयममित्रादभय ज्ञा तादभय परोक्षत। अभय नक्तसमय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु।। इत्यादि मन्त्रो मे अभिव्यक्त सर्वतोभावेन अभय की भावना पूर्ण होती रही है।

कहने का तात्पर्य यह है कि पर्यावरण के प्रति सजगता उसमें गुणात्मक आधान करते रहने का सकल्प निरन्तर स्मरण रखना अत्यन्त आवश्यक है और उसके लिए आवश्यक है शिक्षा के सभी स्तरो मे पर्यावरण के प्रति सजग बनाये रखने का सकल्प। यद्यपि समाधि पाद साधन पाद विभूतिपाद तथा कैवल्य पाद नाम से चार पादो मे विभक्त पातन्जल योग दर्शन में समग्र जीवन पद्धति का चिन्तन हुआ है तथापि साधनपाद मे प्रतिपादि अष्टाग योग मे इस शास्त्र का सम्पूर्ण सार–सर्वस्य निहित है समस्त योग साधना इसी अष्टाग योग पर आधारित है। आत्म साक्षात्कार सम्पूर्ण योग साधना का चरम फल है। उचित शिक्षा द्वारा इसी आत्म साक्षात्कार को प्राप्त करके मानव कृतकृत्य हो जाता है। आज की शिक्षा प्रणाली मे इनकी उपादेयता को स्वीकार करते हुये योग को शिक्षा के विभिन्न स्तरो के पाठयक्रमो मे सम्मिलित करने की आवश्यकता है किन्तु योगाभ्यास मे केवल विभिन्न प्रकार के आसनो का अभ्यास करना ही आज प्रचलित होने के कारण इसका पूर्ण रहस्य अज्ञात ही बना रहता है और योग केवल ऐसा शारीरिक व्यायाम मात्र बनकर रह गया है जिसका उद्देश्य या तो शरीर को स्वस्थ रखना अथवा अनेक प्रकार के रोगों से मुक्ति प्राप्त करना है किन्तु वस्तु स्थिति यह नहीं है। यह तो योग का गौण उद्देश्य है। योग का मुख्य उद्देश्य है कैवल्य की प्राप्ति। विद्यार्थी तथा अध्यापक के लिए योग की उपादेयता इतनी अधिक है कि इसके अभाव मे आज की शिक्षा मे नैतिक मूल्यो का निरन्तर ह्रास हो रहा है। अत शिक्षा के क्षेत्र मे योग की आवश्यकता को देखते हुए उसके आठ अगो मे से यम नियमो के महत्व को यहा सक्षेप मे बताया गया है।

अष्टाग योग के पीछे यही विचारधारा प्रतीत होती है कि व्यक्ति का मन कितने ही सामाजिक एव व्यक्तिगत कारणो से अशुद्ध अशान्त एव बहुमुखी होता रहता है। इसलिए कुछ सामाजिक तथा व्यक्तिगत नियमो की स्थापना और उनका पालन आवश्यक समझा गया जिसके अभ्यास से मन शात शुद्ध स्थिर और एकाग्र हो कर सुख का अनुभव कर सके। इसके अलावा ऐसे अभ्यास भी सम्मिलित किये गये जिनसे पूर्व अर्जित अशुद्धियो तनावो आदि को भी समाप्त किया जा सके। इस प्रकार अष्टाग योग की इस विधि का आधार मनोवैज्ञानिक कहा जा सकता है।

अष्टाग योग के आठ अगों के नाम क्रमश निम्नलिखित हैं –

(१) यम (२) नियम (३) आसन (४) प्राणायाम (५) प्रत्याहार (६) धारणा (७) ध्यान (८) समाधि। इनमे से प्रथम ५ को बहिरग योग और अन्तिम तीन अगो को अन्तरग योग भी कहा गया है। प्रस्तुत लेख मे प्रथम दो अगो यम और नियम पर विस्तृत विचार करेगे।

यम – मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। आपसी सम्बन्धो के कारण व्यक्ति एक दूसरे से प्रभावित होता है। यह प्रभाव बुरा भी हो सकता है और अच्छा भी। सभी लोग सुखी और चैन से रह सके इसलिए सामाजिक नियम बने। मन को योग की साधना मे लगाने के लिए इन नियमो को और भी अनिवार्य समझा गया। इसलिए इन्हीं नियमों को आधार मानकर योग के पहले अग को या की सज्ञा दी गई। अष्टाग योग मे यमो की सख्या पाच दी गयी है जो निम्नलिखित है –

(१)**अहिंसा**– अहिंस का अर्थ है कि मन मे किसी के लिए कोई बुरी भावना न लायें मुह से किसी को बुरे शब्द न कहे तथा कोई ऐसा काम भी न करे जिससे किसी अन्य को दुख पहुचे। यदि मन वाणी या कर्म से किसी को बुरा किया जायेगा तो सभव है वह भी जवाबी कार्यवाही करे और ऐसा होने से दोनो पक्षो के मन अशुद्ध एव अशान्त होगे और ऐसी बातो से योग की साधना असभव हो जायेगी।

जानवरो को अच्छा भोजन देकर दूध आदि प्राप्त करना डाक्टरो का आपरेशन करके रोगी को ठीक करना अध्यापक का छात्र को उसके सुधार के लिए ताडना हिसा नहीं अपितु अहिसा ही है। क्योकि ऐसे हर एक कर्म के पीछे भलाई की भावना है।

अहिसा का पालन करने से मन शान्त व सुखी रहता है इच्छा शक्ति बढती है आध्यात्मिक बल मिलता है और योग मार्ग मे शीघ्र सफलता मिलती है।

(२)**सत्य** – किसी बात को जैसा सुना हो देखा हो या ज्ञान हुआ हो वैसा ही कहना सत्य कहलाता है। पर ऐसी सच्ची बात जैसे अन्धे को अन्धा कहना भी ठीक नहीं है क्योकि ऐसा कहने से दूसरे के मन को दुख पहुचता है। इसलिए सत्य' प्रिय ही होना चाहिये अप्रिय नहीं। इसी तरह दूसरे की जान बचाने के लिए असत्य बोलना भी ठीक है। सत्य मे प्रियता और मधुरता होनी ही चाहिये। कथनी की भावना अच्छी होनी चाहिये।

सच बोलने से निर्भयता सहनशीलता आदि गुण आते हैं। मन शान्त और आसानी से एकाग्र होने लगता है।

(३)**अस्तेय** – अस्तेय का अर्थ है चोरी न करना। किसी दूसरे की वस्तु, उसकी आज्ञा के बिना प्रयोग न करे। किसी से कोई बात न छिपावे किसी दूसरे के अधिकारो को न छीने अपने से छोटे गैर गरीबो को न सताना, रिश्वत न लेना मिलावट न करना कम न तोलना सभी अस्तेय मे आते हैं। इसके विपरीत करने से समाज मे उथल पुथल और बेचैनी फैलती है जिससे योग की साधना कठिन होती जाती है।

शेष पृष्ठ १० पर

वैदिक राजनीति के मूल तत्त्व

श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

राजनीति मानव की अनवार्य आवश्यकता है। यद्यपि आदि सृष्टि मे कुछ काल तक मानव बिना राजनीति के रहता रहा है किन्तु वह सर्वदा इसी प्रकार नहीं रह सकता। इसका कारण यह है कि भानव मे विचार शक्ति है और विचार शक्ति का मनुष्य सदैव उपयोग करेगा तथा प्रत्येक व्यक्ति ही सदुपयोग करेगा न्यूनातिन्यून यह तो नहीं कहा जा सकता।

विचार शक्ति का सभी के द्वारा सदैव ही सदुपयोग सम्भव नहीं। इसका भी एक कारण है और वह यह कि यह ससार लुभावना है। मनुष्य इसकी चमक दमक मे बहक कर अनुचित कार्य कर बैठता है। ऐसे अनुचित–जिनसे दूसरो के अधिकारे का हनन होता है तथा मानव समाज मे बुराईयो को प्रोत्साहन मिलता है। इस प्रकार की बातो की रोकथाम तथा निराकरण के लिये दण्ड व्यवस्था का होना अनिवार्य है और उसके सचालन के लिये शासन सत्ता की भी अनिवार्य आवश्यकता है।

वेद है ईश्वरीय ज्ञान–उसमे राजनीति न हो यह कैसे सम्भव हो सकता है ? आधुनिक युग प्रवर्त्तक वेदोद्धारक महर्षि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने वेद अनुसन्धान के परिणाम स्वरूप घोषणा की वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है जो मानव समाज की अनिवार्य आवश्यकता है उसके सत्य विद्या होने मे क्या सन्देह ? जब राजनीति सत्य विद्याओ मे से एक है तो उसे वेद मे होना ही चाहिये। यह आकाक्षा वेद भक्त के हृदय मे जाग्रत हुये बिना नहीं रह सकती। इसी आकाक्षा की पूर्ति के लिये यह लघु लेख है। यदि जिज्ञासु जनोकी आकाक्षा पूर्ति मे यह पक्तिया सहयोगी हो सके तो अहोभाग्य। वेद का एक मन्त्र है–

यत्र ब्रह्म च क्षत्र च सम्यञ्चौ चरत सह।
त लोक पुण्य प्रज्ञेष यत्र देवा सहाग्निना।।

यजुर्वेद २०/ २५

अर्थात जहा ब्रह्म अध्यात्म और क्षेत्र राजनीति साथ साथ रहते हैं तथा जिस देश के विद्वान तेजपूर्वक रहते हैं वही देश पुण्य लोक पवित्र देश है उसी देश मे पवित्रता सत्यम ईमानदारी का निवास होता है।

इस मन्त्र मे राजनीति का सपष्ट निर्देश है। क्षत्र का अर्थ है क्षत विक्षत होते हुये सताये हुये और दु खिजनो की रक्षा और यह तब तक सम्भव नही जब तक शासन सत्ता की स्थापना न कर ली जाये। वास्तविकता यह है कि जब ब्रह्मज्ञानी की कोई न सुनता हो जब ब्रह्मज्ञानी का विद्वान के उपदेश का प्रभाव न होता हो तब क्षेत्र विद्या दण्ड विधान शासन सत्ता कार्य करती है। जहा जिन क्षेत्रो मे विद्वान सफल न हो वहा क्षेत्र विद्या सफलता प्राप्त करती है। जिन लोगो पर विद्वानो का प्रभाव न हो जो विद्वज्जन के उपदेशो से न माने–उन्हे शासन सत्ता मनाये। उद्देश्य है सुव्यवस्था शक्ति और उसके दो सूत्र हैं ज्ञान और भय उपदेश और दण्ड ब्रह्म और क्षेत्र। किसी देश को सुव्यवस्थित सुखद और शान्ति मय बनाने के लिये ब्राह्मणों ब्रह्म ज्ञानियो विद्वानो उपदेष्टाओ के साथ साथ क्षत्रियो शासको की भी आवश्यकता है।

वेद मे शासको क गुणो का विवेचन भी किया गया है। वेद शब्द का अर्थ है ज्ञान। ज्ञान ग्रन्थ जो क्षेत्र विद्या की आवश्यकता का विधान करता है यह कैसे हो सकता है कि वह क्षेत्र अर्थात शासन–व्यवस्था–सचालक के गुणे की चर्चा न करे ? *अथर्ववेद १/ २/ १ मे कहा है –*

स्वस्तिदा विशा पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी।
वृषेन्द्र पुर एवु न सोमपा अभयकर ।।

मन्त्र मे कहा गया है कि प्रजाओ का शासक स्वस्ति अर्थात कल्याण का देने वाला दुष्टो डाकुओ तथा आक्रमणकारियो वृत्त अर्थात घेरा डालने वाले वृत्रो का हनन करने वाला तथा –वि' विद्रोहियो राष्ट्र द्रोही तत्त्वो को 'मृध मसल डालने वाला और वशी वश मे करके रखने वाला होना चाहिये। वह 'सोमपा शान्ति पालक शान्ति का रक्षक हो तथा अभयकर भयकर न हो अर्थात प्रजा–प्रिय हो। वृषेन्द्र (वृष इन्द्र) महा बलवान और वीर पुर एतु आगे चले–जनता का प्रजाओ का सम्मानीय हो उनसे सम्मान प्राप्त करे। प्रजाओ के पीछे पीछे उनकी इच्छा पर चलने वाला नहीं अपितु प्रजाओ का सम्मानीय हो उनसे सम्मान प्राप्त करे। प्रजाओ के पीछे पीछे उनकी इच्छा पर चलने वाला नही अपितु प्रजाओ को अपने पीछे अपनी इच्छा से चलाने की योग्यताओ से युक्त होना चाहिये। कब प्रजाओ को कल्याण सुख समृद्धि दे सकेगा ? कब प्रजाओ के आगे चलने का अधिकारी होगा ? इस विषय मे भी वेद ने स्पष्ट निर्देश किया है। यजुर्वेद के अध्याय १५ का १३वा मत्र है–

भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुम्दि सचसे शिवामि ।
दिवि मूर्धान दधिषे स्वर्षा जिह्वामग्ने चकृषे हव्यावहम।।

इस मत्र मे अग्ने सम्बोधन का प्रयोग ह। अग्नि शब्द–जिसका सम्बोधन मे रूप अग्ने बनता है का अर्थ है आगे चलने वाला आगे ले चलने वाला उपर्युक्त मत्र मे विशापति प्रजापालक तथा प्रजाओ के स्वामी अर्थात शासक राज्याधिकारी को कहा गया है कि आगे चलने वाले ! तू जब कल्याणकारी नीतियो से युक्त होगा और जब अपने मस्तिष्क बुद्धि को ज्ञान से भरपूर करके राष्ट्र जनता प्रजाओ के योग्य जीवनोपयोगी सामग्री प्रदान करने की योग्यता से युक्त होगा तब समाज देश राष्ट्र को सगठित सुव्यवस्थित और सुरक्षित रख सकेगा ओर तभी ससार यज्ञ का नेता कहलाने का अधिकारी होगा।

प्रिय पाठक विचार करे कि वेद ने नेतृत्व के गुणो तथा शासक के कर्त्तवय कर्मो को उपर्युक्त दौना मत्रो मे कितना सुन्दर विवेचन प्रस्तुत किया है। एक अन्य स्थल पर तो वेद ने शासक के लिए अतीव स्पष्ट शब्दो मे निर्देश और चेतावनी दोनो साथ साथ दिये हैं। वह स्थल अथर्व वेद ३। ४। २ में निम्न प्रकार है।

त्वा विशो वृणता राज्याय
त्वामिमा प्रदिश पञ्चदेवी

कहा गया है कि इमा पञ्च प्रदिश देवी विश यह पाचो दिशाओ की देवी दिव्यगुण युक्ता बुद्धिमान प्रजाये त्वा राज्याय वृणताम् तुझको राज्य के लिये राज्य व्यवस्था शासन व्यवस्था बनाये रखने और सचालन करने के लये वरण करती चयन करती चुनती हैं। किसी दिशा विशेष और क्षेत्र विशेष की नहीं और न केवल चारो दिशाओ की ही–अपितु मध्य क्षेत्र की भी।

किसी क्षेत्र अथवा दिशा विशेष के साथ तेरे द्वारा पक्षपात नहीं होना चाहिये। प्रत्येक दिशा और प्रत्येक क्षेत्र की प्रजाओ को तेरे द्वारा स्वस्ति कल्याण सुख समृद्धि प्राप्त करने का अधिकार है। वेद के इस स्थल का उद्देश्य जहा शासक के कर्त्तव्य का निर्देश है साथ ही उसे सावधान कर देना भी है। कारण स्पष्ट है कि जब शासको द्वारा किसी क्षेत्र और वर्ग विशेष का पक्षपात होता है तो प्रजा मे असन्तोष जन्मल ता है जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्र मे विद्रोह होते है।

वेद के बल शासक के गुणो तथा कर्त्तव्यो का वर्णन करके तथा उसे चेतावनिया देकर ही समाप्त नहीं कर देता। वेद मे तो राज्य सचालन और शासन व्यवस्था विषयक सम्पूर्ण विज्ञानो का वर्णन है। पशु पालन और कृषि विज्ञान के मूल सूत्र भी वेद मे वर्णित हैं। व्यापार और शिक्षा के तत्व भी हैं और भवन निर्माण कला की चर्चा भी है। वेद (इडा) भाषा (सरस्वती) सस्कृति (मही) भूमि इन तीनो की ही चर्चा करता है जिनके बिना राष्ट्र का अर्थ ही कुछ नहीं।

उक्त परिच्छेद मे चर्चित सभी विषयो का शासन तत्र से क्योकि घनिष्ठ और अटूट सम्बन्ध है अत यह सभी राजनीति के तत्व है किन्तु स्थानाभाव के कारण इस लघु लेख मे इन सब का विवेचन विषय प्रतिपादन मे समुचित होते हुये भी असभव है। एतदर्थमेव उपर्युक्त कतिपय मूल तत्त्वो के साथ साथ राष्ट्र रक्षण के परमोपयोगी तत्त्व सेना विषयक भी एक मत्र अथर्ववेद ५। २१। १२ को यहा प्रस्तुत करते हैं और तदुपरान्त इस लेख को समाप्त कर देते है। मत्र है–

एता देवसेना सूर्य केतव सचेतस ।
अमित्रान्नो जयन्तु स्वाहा।।

'एता देव सेना यह दिव्य सेनाये जिनका सूर्य केतव सूर्यध्वज सूर्य–अकित–ध्वज है। सचेतस सतर्क सावधान रहे। 'न अमित्रान' हमारे शत्रुओ को जयन्तु जीते जीतती रहे स्वाहा हमारी यही (सु आह आ) सुन्दर उत्तम माग है।

इस मत्र मे विजयशीला सेनाओ का तो वर्णन किया ही है उन्हे देव सेना भी बताया है देव सेना का अर्थ है दिव्यताओ दिव्य शस्त्रास्त्रो से सुसज्जित सेनाये। दिव्य शस्त्रास्त्र की आज की वर्तमान विज्ञान की भाषा मे अणु अस्त्र अण्वस्त्र कहते हैं गुणो की दृष्टि से भी वह देव सेनाये ही होनी चाहिये। जो सेनाये दिव्यताओ गुणो से युक्त होगी वही विजय प्राप्त कर सकेगी। जो दुर्गुणो दुर्व्यसनो मे फसी होगी वह विजय का वरण नही कर सकतीं अपितु सदैव पराजय का ही मुख देखेगी। साथ ही मत्र मे निर्देश है कि वह सतर्क रहे। असतर्कता असावधानी मे रहकर राष्ट्र रक्षण सभव नही फिर चाहे सेनाये कितनी भी दिव्य गुणो और दिव्यास्त्रों से युक्त क्यों न हो ? अत सेनाओ को सतर्क सचेत रहना चाहिये।

अन्य निर्देशो के साथ साथ एक निर्देश इस मत्र मे ध्वज विषयक भी है। बताया गया है कि ध्वज सूर्य चिन्ह से अकित हो। तेज का प्रतीक प्रकाश का प्रतीक है। दिव्य सेनाओ के तेज का शक्ति का प्रयोग प्रकाश ज्ञानपूर्वक होना चाहिये। कितना सुन्दर प्रतीक वेद ने सेनाओ के लिये सैन्य-ध्वज के लिये स्वीकार किया है ? अद्भुत महद अद्भुत वेद से ऐसी ही आशा की जा सकती थी। अलमति विस्तरेण किमधिकलेखेन ?

वैदिक सस्थान नजीबाबाद बिजनौर (उ०प्र०)

☆

तकलीफ देह हो सकता है हर्निया

भारी वस्तु उठाने से उत्पन्न हर्निया मे जाघो और पेट के बीच छोटी गुठली सा निकल आता है। इस रोग से हलक (इसोफेगस) भी क्षतिग्रस्त हो सकता है, जिससे निगलना भी कष्टकर हो जाता है। छाती के पास उत्पन्न हर्निया में गुठली नहीं दिखती है पर छाती की स्तनास्थि के पीछे कुछ कुछ जलन के साथ दर्द की अनुभूति होती है।

हर्निया एक साधारण बीमारी है लेकिन थोडी–सी उपेक्षा से भी यह घातक हो सकती है। यह धीरे धीरे जकडने वाली बीमारी है। इसका आनुवाशिक होना अभी तक सिद्ध नहीं हो पाया है। यह रोग सामान्यत भारी बोझ उठाने से होता है किन्तु इसके और भी कई कारण हैं। हर्निया को आम बोलचाल की भाषा मे 'नाल पडना' या आत उतरना कहा जाता है।

हर्निया हमेशा कष्टकर हो यह जरूरी नहीं है। और इसका छोटा या बडा होना भी खतरनाक हो कोई जरूरी नहीं। क्योंकि कभी-कभी उरूसधि पर उत्पन्न छोटा-सा हर्निया भी कष्टकर हो सकता है। हर्निया तब असहय पीडा को पैदा करता है जब झिल्ली से बनी थैली के मुह पर दबाव पडने से रक्त सचार प्रभावित होता है। समय रहते हर्निया का इलाज न कराने से यह घातक ग्रैगीन मे भी बदल सकता है।

हर्निया के कई प्रकार हैं। स्ट्रैंगुलेटेड हर्निया सबसे खतरनाक हर्निया है। इससे मरीज की मृत्यु भी हो सकती है। उरूसधि के हर्निया मे उरूसधि सबसे अधिक प्रभावित होती है। यह रोग सर्वाधिक उरूसधि अर्थात जाघ ओर पेट के निचले भाग पर अधिक होता है। इसिसनल हर्निया हमेशा ऑपरेशन वाले हिस्से अथवा उस स्थान पर होता है जहा की पेशिया शीघ्र ठीक न हो। अम्बिलीकल हर्निया नाभि के निकट होता है जबकि एपिगैस्ट्रिक हर्निया नाभि के ऊपर होता है। हायटस हर्निया छाती से नीचे उत्पन्न होता है।

कभी कभी हर्निया प्रत्यक्ष मासपिण्ड के रूप मे भी पैदा होता है जिसे बाहर से देखा जा सकता है। हर्निया का एक अति सामान्य प्रकार भी है जो पुरुषो व स्त्रियो मे समान रूप मे देखा जाता है।

हर्निया का विकास मुख्यत उदर आवरण के कमजोर पडने से होता है। जब अड ग्रथिया अडकोष की तरफ बढती हैं तो उदर आवरण पर उसका खिचाव आता है जिससे उदर आवरण कमजोर पड जाता है और ये उरू मूल की ओर बढने लगती है जिससे हर्निया को जन्म लेने मे मदद मिलती है। हर्निया का भारी वस्तु उठाने के दौरान नाल उतर जाना भी एक कारण है लेकिन जन्मजात कमजोरी भी हर्निया मे मददगार है। स्त्रियो मे हर्निया का कारण उर प्रचारी (डायाप्राम) अर्थात उदर को वक्ष स्थल से अलगाने वाली पेशी की कमजोरी भी है। यह गर्भावस्था के दौरान उदर के आत दबाव से उत्पन्न होता है।

भारी वस्तु उठाने से उत्पन्न हर्निया मे जाघो और पेट के बीच छोटी गुठली सा निकल आता है। इस रोग से हलक (इसोफेगस) भी क्षतिग्रस्त हो सकता है जिससे निगलना भी कष्टकर हो जाता हैं छाती के पास उत्पन्न हर्निया मे गुठली नहीं दिखती है पर छाती की स्तनास्थि के पीछे कुछ-कुछ जलन के साथ दर्द की अनुभूति होती है। इस रोग के ग्रैगीन मे बदल जाने से उल्टियो मलविरोध पेट मे दर्द कब्ज होने लगते हैं। ये हर्निया के लक्षण हैं।

हर्निया के मरीजो को मोटापे पर नियत्रण रखना चाहिये। जाघो क ऊपर के हर्निया से बचने के लिए खास किस्म की चमडे की पेटियो या बेल्ट का उपयोग किया जा सकता है जो बाजार मे उपलब्ध हो सकती है। बिस्तर पर जाने से एकदम पहल पानी न पिये। वजनदार वस्तुओ को उठाने से बचिये अथवा दो तीन जने मिलकर उठाये। हर्निया से छुटकारा पाने के लिए छोटा ऑपरेशन कराये जा सकते हैं। हर्निया के लक्षण दिखे तो तत्काल डाक्टर से सम्पर्क करे।

सतोष कुमार सारग

☆

मानव निर्माण की योजना

पृष्ठ का ५ शेष

इस सस्कार को अन्न प्राशन सस्कार कहते है। एक वर्ष पूरा होने पर या तीसरे वर्ष बच्चे के बालो के मुण्डन किए जाते है। इस संस्कार को चूडाकर्म सस्कार कहते है और तीसरे अथवा पाचवे वर्ष कर्णवेध सस्कार किया जाता है। इन सब सस्कारो का अपना अपना महत्व है। चार महीने स पहले बच्चे को बाहर की हवा से बचाना चाहिए। छठे महीने से पहले उसे अन्न नही खिलाना चाहिये क्योकि उस समय तक उसम अन्न पचाने की शक्ति नही होती है चूडाकर्म द्वारा बच्चे के मलिन बालो को उतार दिया जाता है जिससे नए बाल आने मे सहायता मिलती है। इसक साथ-साथ सिर भारी रहने से भी बच्चे की रक्षा होती है और सिर की खुजली एव दाद आदि से उसकी रक्षा होती है। कर्णवेध से हर्निया आदि रोगो से बालक की रक्षा होती है और आभूषण आदि डालने के लिए भी कानो को बेधा जाता है।

बच्चो के निर्माण के लिए उन्हे गुरुकुल मे प्रवेश दिलाया जाता था। यह एक ऐसी परम्परा थी जिससे बालक का चर्तुदिक विकास होता था तथा यह भी सुनिश्चित हो जाता था कि वह किस वर्ण के योग्य है। अमीर गरीब सभी के बच्चो को शिक्षा के समान अवसर दिए जाते थे। ब्राह्मण के बालक को आठवे वर्ष क्षत्रिय के बालक को ग्यारहे वेश्य के बारहवें वर्ष यज्ञोपवीत दिया जाता था। यज्ञोपवीत एक ऐसा पवित्र चिन्ह होता है जिसके धारण कराने पर बच्चे को ऋषिऋण पितृऋण और देवऋण से उऋण होने की प्रेरणा दी जाती थी। इस सस्कार को ही उपनयन सस्कार कहते है। इस सस्कार वाले दिन या उससे अगले दिन उस बालक का 'वेदारभ सस्कार करके गुरुकुल मे प्रवेश दिलाया जाता था। गुरुकुल के वातावरण मे बालक का शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक विकास होता था और 'समावर्तन सस्कार के समय उस गुरुकुल से विदा किया जाता था। गुरुकुल से विदाई देती बार आचार्य उसे सत्य बोलने धर्म प [illegible] तथा स्वाध्याय करने एव उस स्वध्याय को आग पचार प्रसारित करने की शिक्षा दे [illegible]।

सस्कारो के इस क्रम मे [illegible] सस्कार तेहरवा सस्कार है। गुरुकुल से समस्त ज्ञान विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करके वह गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करता था। विवाह सस्कार की समस्त प्रक्रियाए गृहस्थ को स्वर्ग बनाने से सम्बन्धित हैं। गृहस्थ मे भी व्यक्ति को आध्यात्मिक जीवन पर चलकर अपनी सन्तान को उत्तम बनाना चाहिए। गहस्थ के दायित्वो से निवृत होकर तथा पुत्र का भी पुत्र हो जाने पर उसे समाज और राष्ट्र आदि के कल्याण के लिए घर से निकल जाना चाहिए। गृहस्थ मे रहकर व्यक्ति सब प्रकार की एषणाओ मे डूबकर इस अनुभव से निकल जाता है कि इन एषणाओ का कहीं अन्त नहीं है इसलिए वह परमार्थ की ओर अपने जीवन को चलाने के लिए पचास वर्ष की आयु, मे गृहत्याग कर परोपकार के कार्यो में स्वय को लगा लेता था। इसी सस्कार को 'वानप्रस्थ सस्कार कहते हैं। वानप्रस्थी होने के बाद परोपकार आदि के कार्यो को करता हुआ जब व्यक्ति पूर्णरूप से निष्काम भावना से परिपूर्ण हो जाए तो वह मन वचन कम से ईश्वर के प्रति समर्पित होकर मोक्ष की कामना लेकर सन्यासी बन जाता है। यही सन्यास सस्कार है। व्यक्ति का अन्तिम और सोलहवा सस्कार है– अन्त्येष्टि सस्कार। यह सस्कार व्यक्ति के मरने पर होता है। इस सस्कार के बाद शरीर के लिए और कोई सस्कार नही रहता है। मरने के बाद व्यक्ति के शव को जलाना चाहिए जिससे पाचभुत पाच भूतो मे विलीन हो जाय। ये सोलह सस्कार व्यक्ति के जीवन के लिए अनिवार्य बताय गए हैं। वस्तव मे सोलहवे सस्कार स पूर्व के सस्कारो के माध्यम से व्यक्ति के चरम विकास का मार्ग प्रशस्त किया गया हे ओर हमारे ऋषियो की यह अदभुत देन है। इन सस्कारो को कार्यान्वित करने का प्रचलन यदि दृढता पूर्वक हो जाए तो मानव जीवन के लक्ष्य को व्यक्ति प्राप्त कर सकता है।

२१५/एस–३ सुन्दरनगर
मण्डी (हिप्र) १७४ ४०२

☆

पृष्ठ ७ का शेष

शिक्षा की दृष्टि से यम–नियम का महत्व

अस्तेय के पालन के लिए हमे अपनी इच्छाये कम करनी चाहिये दान करे ईमानदारी बरतें तथा स्वार्थी न बनकर परोपकारी बने।

(४) **ब्रह्मचर्य** – भारतीय सस्कृति मे सामाजिक मान्यता के अनुसार विवाह करना और सतानोत्पति पवित्र काम माना गया है। दूसरो की बहन बेटी को अपनी बहन बेटी समझा जाता है। आजन्म शादी न करना अथवा केवल अपनी पत्नी से ही सम्भोग सम्बन्ध रखना ब्रह्मचर्य कहलाता है। सामाजिक नियमों के अनुसार चलने से समाज मे लडाई झगडे और कत्ल तक हो जाते हैं जिससे सामजिक बैचेनी फैलती है और योग साधना का वातावरण नहीं बनता।

इसके अतिरिक्त ब्रह्मचर्य के पालन से मन शुद्ध और एकाग्र रहता है शरीर भी स्वस्थ ओर दीर्घायु बनता है जिससे योग साधना मे सहायता मिलती है।

(५) ब्रह्मचर्य पालन के लिए भडकीले कपडे न पहनना मसालेदार भोजन न करना अश्लील पुस्तके न पढना सिनेमा आदि न देखना नित्य व्यायाम करना तथा अच्छी सगत मे बैठना। इन सब बातो से दृष्टिकोण और भावना अच्छी बनती है जिससे योग साधना मे मदद मिलती है और सफलता भी।

(६) **अपरिग्रह** – आवश्यकता से अधिक सासारिक वस्तु का सग्रह न करने और उनका भोग न करने को अपरिग्रह कहा गया है। आवश्यकता से अधिक सग्रह करने से बाजार मे इन चीजो की कमी हो जाने से समाज मे बेचैनी फैलती है क्योकि दाम बढ जाते हैं। जमा करने से लोभ बढता है कम होने पर दुख होता है। रख रखाव की चिता भी लगी रहती है।

अपरिग्रह के पालन से डर नहीं रहता है। सतोष की भावना पनपती है चोरी करने की इच्छा नहीं होती निराशा नहीं आती। सादा जीवन बिताने से मन शुद्ध व सुखी रहता है। वैरागय और परोपकार की भावना भी पैदा होती हैं

नियम – यमो का पालन करने से बाहरी वातावरण से योग साधना में कोई बाधा नहीं होती पर सभव है मन भीतर ही बेचैन रहने लगे और व्यक्ति स्वय ही इसका उत्तरदायी हो इसीलिए अपनी निजी बेचैनी के कारणो को दूर करने के लिए योगा मे कुछ नियमो पर पालन के जोर दिया गया है। इन्हे व्यक्तिगत स्वस्थव्रत की सज्ञा दी जा सकती है। पतजलि द्वारा यमो की तरह नियमो की सख्या भी पाच दी गई है। ये निम्नलिखित हैं।

(१) **शौच** – मन और शरीर की शुद्धि को शौच कहते हैं। नित्य स्नान करने साफ कपडे पहनने तथा शुद्ध भोजन करने से शारीरिक शुद्धि होती है। इन सबके न करने से मन पर बुरा प्रभाव पडता है। इसके विपरीत किसी से घृणा द्वेष क्रोध इच्छा तथा भय न होने से मन भी शुद्ध रहता है। शरीर और मन शुद्ध रहने से योग साधना मे सफलता शीघ्र मिलने लगती है। मन और शरीर की शुद्धि व्यक्ति की स्वय की जिम्मेदारी है जिसके निभाने से योग के पथ मे उत्तरोत्तर उन्नति होती है।

(२) **सतोष** – अपनी सामर्थ्य के अनुसार काम करने पर जो उपलब्धि हो उससे ही सतोष करना चाहिये। अपने यत्नो से ज्यादा इच्छा न करना ही सतोष है। सतोष को सब सुखो का मूल कहा गया है। भाग्य पर निर्भर करना या आलस्यवश काम न करना सतोष नहीं कहलाता। इसलिए दृढ इच्छा से परिश्रम करके आगे बढते रहना चाहिये इससे कोई रोक टोक नहीं है। सतोष का पालन करने से शुद्ध और शात मन सुख का अनुभव करता है।

(३) **तप** – शरीर इन्द्रियों और मन पर काबू रखने को तप कहते हैं। भूख प्यास गर्मी सर्दी के सहन करने को शारीरिक तप और मान अपमान सुख दुख हार जीत को सहने की शक्ति को मानसिक तप कहते हैं। इसके पालन से मन और तन बलवान बनते हैं जिससे योग मार्ग पर चलना आसान हो जाता है।

(४) **स्वाध्याय** – नित्य प्रति गीता रामायण गुरुग्रन्थ साहब आदि का पाठ करना स्वाध्याय कहलाता है। उनमे बताये गये सद्मार्गो का ज्ञान होता है। अच्छे विचार बने रहते हैं तथा उन उसूलो पर चलने की प्रेरणा मिलती है। व्यवहार मे अच्छा परिवर्तन आ जाता हैं मन मे पवित्र विचारों के रहने से सुख और शाति मिलती है तथा मन शान्त शुद्ध एव एकाग्र आसानी से हो जाता है जो योग साधना के लिए अनिवार्य है।

(५) **ईश्वर प्रणिधान** –परमात्मा मे श्रद्धा और विश्वास तथा नित्य प्रति पाठ पूजा करना ईश्वर प्रणिधान कहलाता है ऐसा करने से अपने मे विश्वास की धारणा पैदा होती है बुरे कर्मो से मन हटने लगता है अच्छे कामों को करने में उत्साह जाग्रत होता है और सबके प्रति अच्छी भावना रहने के कारण मन शान्त एव शुद्ध बना रहता है।

अहिंसा सत्य असत्य ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह – ये पाच यम हैं। इन पाचो यमो की आज की शिक्षा मे महती आवश्यकताहै। आज छात्रों के जीवन मे जो अव्यवस्था कुण्ठा हिसा अनुशासनहीनता उपेक्षा निराशा असयम अशान्ति और छल कपट आदि दुर्गुण बढते जा रहे हैं। उसके मूल मे योग के इस प्रथम अग 'यम को छात्रो द्वारा अपने आचरण मे न लाना ही है। आज की शिक्षा मे छात्रो को सयमी बनाने का प्रयास न होने से ही युवको मे धर्म सस्कृति और अध्यात्म से हटने की प्रवृत्ति बलवती होती जा रही है आज शिक्षा में प्रत्येक स्तर पर पाठयक्रम मे इन पाचो यमो को छात्रो तथा अध्यापको के जीवन मे धारण कराने का प्रावधान होना चाहिये समुचित दिशा मे व्यवहार परिवर्तन करने का शिक्षा का कार्य तभी पूर्ण होगा जब छात्र और अध्यापक दोनो ही अहिंसक सत्यवादी ब्रह्मचर्य–व्रत का पालन करने वाले तथा अपरिग्रही होगे। इसी प्रकार छात्रों का आहार विहार और विचार दूषित होना आज की शिक्षा का अभिशाप बन गया है अत शौच पालन की ओर छात्रो को प्रेरित करने की बडी आवश्यकता है। आज की शिक्षा भी छात्रो और अध्यापको तथा समाज में असतोष को बढा रही है। छात्रो मे व्याप्त असतोष की अभिव्यक्ति समय समय पर अनेक प्रकार के आन्दोलन के रूप मे होती रहती है ऐसी परिस्थिति मे छात्रो द्वारा सतोष नियम का पालन करने से शिक्षा जगत् में व्याप्त अशान्ति के शासन में सहायता मिल सकती है तप स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान का मानव–जीवन मे विशेष रूप से छात्रो के लिए अत्यधिक महत्व है क्योंकि इनसे अच्छे मानव का निर्माण हो सकता है आज की शिक्षा का भी उद्देश्य है–अच्छे मानव का निर्माण। छात्रों को ऊचा उठने के लिए कठोर परिश्रमी अध्ययनशील और ईश्वर भक्त बनने की प्रेरणा इन तीनो साधनों से लेनी चाहिये।

इस प्रकार यम और नियमों के नित्यप्रति पालन से आज की शिक्षा मे नैतिक मूल्यों में उत्थान तो होगा ही साथ ही छात्र एव छात्राओं और अध्यापक वर्ग के लिए अपने जीवन में आगे बढने मे सफलता मिलेगी जितना पालन करेंगे उतनी ही सफलता और सुख मिलेगा।

योग विभाग,
डा० हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय
सागर (म०प्र०) ☆

गुणों का आगार नींबू

नींबू भोजन पचाने मे बडा ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अत भोजन मे नींबू को प्रथम स्थान मिलना चाहिए। प्रत्येक ऋतुओ मे पाये जाने वाले फलो मे नींबू सबसे अधिक उपयोगी व सस्ता है नींबू मे कीटाणु नाशक शक्ति अत्यधिक मात्रा मे पाया जाता है जो अन्य फलो मे नहीं पाया जाता। इसमे बिटामिन ए० और सी० तथा साईट्रिक एसिड पाये जाते हैं बिटामिन सी० की बहुतायत नींबू की विशेषता है जो खून शुद्ध करता है। इन्द्रियो तथा दातो को पुष्ट करता है। भूख बढाता है। आखो की ज्योति में वृद्धि करता है। और शरीर को सक्रामक रोगो से बचाता है।

अमृतोपम गुण—नीबू बहुत खट्टा पर रुचिकारक दीपन पाचन हल्का श्रमहारकतथा वात पित्त कफ उदररोग कृमि व अरुचि नाशक और शूल मे हितकारी है। यह नवीन ज्वर मन्दाग्नि मुह से पानी गिरना हैजा प्लेग आदि भयकर बिमारियो मे भी बडा लाभदायक सिद्ध हुआ है। यह श्वास कास प्रतिश्याय कठरोग मुखरोग आमबात गुल्म सालास्राव नाशक है। इसकी उपयोगिता के सम्बन्ध मे ग्रामीण क्षेत्रो मे एक कहावत है।

खाय कागजी नींबू को जो, तुलसी बिरवा रोपै।
वैद्य पसारी करम को झखे, घर मे मौत न झाकें।।

अर्थात नित्य प्रतिदिन कागजी नीबू के रस को सेवन करने तथा घर मे तुलसी का पौधा लगाने से बीमारियो का आक्रमण नही होता जिसस वैद्य डाक्टरो की आवश्यकता नहीं हाती और मृत्यु सख्या घट जाती है।

रसायनिक विश्लेषण—नीबू मे ४६% पानी १५% प्रोटीन १०°० वसा ०६% खनिज पदार्थ १३% रेशा कार्बोहाइड्रेट ००% कैलशियम और ००२% फास्फोरस होता है। इसकी प्रति आधी छटाक मात्रा मे १६ मि०ग्राम कैलारी होती है।

बाजारो मे विभिन्न प्रकार के नींबू मिलते हैं जमीरी बिजौरा कागजी आदि कागजी नीबू ही गुणो मे सर्वश्रेष्ठ है इसका छिलता पतला तथा दबाने स दब जाता है अन्य नीबुओ से कोमलता इसमे अधिक है। इसमे जीवन शक्ति अधिक मात्रा होती हैं

विविध उपयोग—नींबू का रस चीनी काली मिर्च मिलाकर इसकी सिकजी (सरवत) बनाया जाता है। अचार मुरब्बा आदि का भी निर्माण होता है' दाल साग सब्जी चटनी मे भी इसका रस डलकर स्वादिष्ट बनाया जा सकता है।

औषधि रूप में प्रयोग

१ नींबू की शिकजी (शरवत) पीने से पित्त व मन तृषा (प्यास) और दाह मे लाभ होता है।

२ मस्तिष्क और शिर पर नींबू का रस मलने पर पागलपन का जोश शन्त होता है।

३ अपच या अजीर्ण होने पर नींबू का रस अदरख और सेन्धानमक भोजन पहले खाना चाहिए। ऐसा करने से अजीर्ण नष्ट होकर अग्नि दीप्त होती है तथा वायु कफ मल वद्धता एव आमवात का नाश होता है।

४ नींबू के रस २ चम्मच चीनी मिलाकर पीने से पित्त से उत्पन्न ज्वर शीघ्र शान्त होता है।

५ नींबू के दो फाक कर ले एक मे कालीमिर्च तथा दूसरे फाक मे सेन्धानमक भर कर गर्म कर ले इन्हें गर्म गर्म चूसने से वर्षा व आश्विन (कुवार) के महीने में आने वाला आर्तज्वर जिसमें खट्टे-खट्टे वमन आते हैं वह छूट जाता है।

६ नींबू के बीजो की मिगी ६ ग्राम ८ ग्राम सेन्धानमक मिलाकर फकी लेने से बीछू का विष उतर जायेगा इसी से हाडा वर्रे का विष समाप्त होता है।

७ नींबू का रस ५ तोला चीनी या मिश्री ३ तोला गर्म जल मे मिलाकर सुबह शाम एक सप्ताह तक सेवन करने से लीवर दोष सूजन आदि दोष दूर होता है।

८ कागजी नींबू का रस और चुकन्दर के पत्ते का रस मिलाकर लगाने से दाद खाज फुन्सी आदि चर्म रोग आराम हो जाता है।

६ नींबू के छिलका को रगडने से जीभ के छाले व मसूढे पक जाने मे आराम आ जाता है साथ ही साथ नींबू का रस भी सेवन किया जाये तो शीघ्र लाभ होगा।

१० नीबू के रस २ तोला अजवाइन भुनी का चूर्ण १ तोला सेन्धानमक कालानमक एक एक ग्राम मिलाकर सेवन करने से यकृत प्लीहा पेट की तिल्ली पेट दर्द आमशूल परिणामशूल अरुचि आदि पेट के रोग शान्त हो जाते है।

११ नीबू क रस मे करौदा का रस पीस कर लेप करने से खुजली फोडा फुन्सी दिनाय वर्षाती उगलिया की सडन काछ लगना दो चार दिनो मे आराम होगा।

१२ इन्फलुएल्जा के कीटाणुओ को नश्ट करने के लिए नीबू मे अदमुत शक्ति हे। नीबू की चाय बनाकर सेवा न करने प्रतिश्याय इन्फ्लुएन्जा के विषाक्तता शीघ्र नष्ट होती है।

१३ अतिसार (डिसेन्ट्री) के लिए नीबू के एक चम्मच रस म सरसो भर अफीम मिलाकर देने म शीघ्र आराम होगा। तथा नींबू के मिश्री मिले शरवत पिलाने से रक्त स्राव शीघ्र बन्द हो जाता है।

१४ कामला रोग मे नीबू का रस नेत्र म आजन (लगाने) से फायदा होगा और नीबू का रस चिरायता के काढे मे मिलाकर पीने स मौसमी बुखार दो चार दिनो मे आराम आ जायेगा। बमन (उल्टी) रोकने के लिए नींबू का रस पानी मे मिलाकर पीने से वमन रुक जायेगा।

१५ हैजे के दिनो मे दो नींबू का रस भोजन के साथ नित्य प्रति लेने से हैजा होने का भय नही रहता।

१६ हिस्ट्रीया तथा हृदय के अधिक धडकन से पिडित व्यक्ति २ तोला नींबू का रस दिन मे २ ३ बर ले तो उपरोक्त रोग शान्त हो जाते हैं।

१७ रात को सोते समय १ नींबू का रस सुषुम गर्म जल मे मिलाकर आधी गिलास पीये इसी प्रकार सुबह भी खाली पेट पिय तो पेट का भारी पन गैस बनना कोष्ट बद्धता साधारण रेचन होकर ठीक हो जायेगा।

१८ अजीर्ण उदर शूल मे नीबू का रस ३ ग्राम चूने का पानी १० ग्राम मधु १२ ग्राम तीनो को मिलाकर २० २० बूद का सेवन करना चाहिऐ उपरोक्त दोनो रोगो के लिए बहुत उपयोगी है।

सावधानी—नींबू का रस अत्याधिक लाभ के लिए खाली पेट सेवन करना चाहिए। तभी पूर्ण लाभ उठा पायेगे अन्यथा लाभ तो कभी भी लेने मे है। कुछ कम बेसी।

सौन्दर्यवर्धक नींबू

१ नीबूका रस छाछ मे मिलाकर नहाने से शरीर के दाग जैसे माता (चेचक) का दाग भी ठीक हो जाता है। नीबू काट कर चेहने पर मलने से मुहासे फुन्सिया कीले ठीक हो जाती है। चेहरे पर निखार व चमक आ जाती है।

२ दो चार तोला गुलाबजल म नीबू का दो तोला रस मिलाकर उसमे थोडी सी कस्तूरी थोडी ग्लिसीरीन मिला दे नहाने के पूर्व १ घण्टा मुह व हाथो पर चुपड ले नहाते समय गर्म जल मुह हाथ धोकर फिर ठण्डे पानी को मुह पर छीटा दे फिर खुदरे तौलिये से त्वचा को रगडे त्वचा (चमडा) कोमल हो जायगी साबुन का प्रयोग न करे।

३ नीबू का रस तुलसी के पत्त का रस करौंदी के पत्ते रस बराबर मिलाकर धूप मे रख दे गाडा होने पर मुह पर मल यह मुहासे काले दागो आदि का दूर कर मुख को कान्तीमान बना देता है।

४ चेहरे की झुरियो को मिटाने के लिए नीबू का रस और शहद (मधु) मिलाकर चहरे पर लगाय और नियम पूवक जैतून क तेल को चेहरे पर मालिस करे इसस चेहरे की झुरिया आदि दर होकर निखार आयेगा।

५ नींबू के रस मे १ चम्मच मेथी के दाने १५ २० वैर (वईरी) के पत्ते खूब बारीक पीस कर नहावे पहले शिर मे लगावे और कुछ देर बाद स्नान कर ले इससे बाल घुघराले हो जायेगे। इसी प्रकार नीबू का फल अपार गुणा से सम्पन्न है। ☆

जीवित माता पिता की सेवा ही श्राद्ध है

कानपुर आर्य समाज गोविन्द नगर हाल मे आयाजित एक समारोह की अध्यक्षता करते हुये समाज व केन्द्रीय आर्य सभा क प्रधान श्री देवीदास आर्य ने कहा कि जीवित माता पिता की श्रद्धा के साथ सेवा करना ही सच्चा श्राद्ध है। मृतको पितरो की श्राद्ध अवैदिक है।

श्री आर्य ने आगे कहा कि माता पिता अपने जीवन के अनुभवो के द्वारा सन्तानो का मार्गदर्शन करते है उनकी आने वाली विपत्तियो से सजग करते हुये रक्षा करते है। अत जीवित माता पिता ही सच्चे पितर है।

आज माता पिता और वृद्धो को अपनी सन्तानो से उचित सम्मान नही मिल रहा है। यह स्थिति बडी ही खतरनाक है। हमारा देश ही नही पूरा ससार इस समस्या से पीडित है। यदि हम जीवित माता पिता की सेवा न कर सके तो फिर भला मरने के बाद उनकी श्राद्ध करने से क्या लाभ। आज ४ ५ सन्ताने मिलकर भी अपने बूढे मा बाप का ठीक से भरण पोषण नही करते हैं। वैदिक धर्म के अनुसार प्रतिदिन हमे माता पिता की श्रद्धा के साथ सेवा करनी चाहिये।

समारोह मे प्रमुख रूप से सर्वश्री देवीदास आर्य जाति भूषण बाल गोविन्द आर्य शुभ कुमार वोहरा स्वामी प्रज्ञा नन्द सरस्वती प० जगन्नाथ शास्त्री मदन लाल चावला राम लाल सेवक श्रीमती चन्द्र कान्ता गेरा कैलाश मागा वीरा चोपडा आदि ने श्राद्ध पर विचार प्रस्तुत किये। सभा का सचालन मत्री श्री बाल गोविन्द आर्य ने किया।

बाल गोविन्द आर्य मत्री

☆

आर्य समाज अमरोहा का ६५वां वार्षिकोत्सव

दिनाक ३ ४ व ५ नवम्बर १६६६ रविवार सोमवार व मगलवार

।। निमन्त्रण पत्र।।

मान्यवर

आपको यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि परम पिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा व आप सभी के उदार सहयोग व सद्भावो से आपकी प्रिय सस्था आर्य समाज का ६५वा वार्षिकोत्सव उपरोक्त तिथियो मे अधोलिखित कार्यक्रमानुसार समारोह पूर्वक सम्पन्न होने जा रहा है।

इस भव्य आयोजन मे इष्ट मित्रो व परिवार सहित आपकी गौरवपूर्ण उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है। कृपया पधार कर शोभा बढाये व धर्मलाभ उठाये।

।। आमन्त्रित विद्वत्जन।।

१ तपोनिष्ठ सन्यासी परमपूज्य स्वामी बृह्मानन्द जी 'वेदभिक्षु' चन्दौसी
२ ओजस्वी विचारक प्रो० राम प्रसाद जी वेदालकार पूर्व कुलपति गुरुकुल कागडी वि०वि० हरिद्वार
३ वैदिक मनीषी डा० धर्मपाल जी कुलपति गुरुकुल कागडी वि०वि० हरिद्वार
४ वेदज्ञ चिन्तक डा० सत्य प्रिय जी शास्त्री जागृति विहार मेरठ
५ व ६ परम श्रदेया विदुषी डा० सुमेधा जी प्रचायार्या एवम आचार्या सुकामा जी
७ श्रीमद् दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय शिखापुरम (चोटपुरा) रजबपुर मुरादाबाद (उ०प्र०)
८ सुमधुर भजनोपदेशक प० सत्यदेव जी मेरठ
६ कन्या गुरुकुल महाविद्यालय शिखापुरम (चोटीपुरा) की वेदपाठी बृह्मचारिणिया एवम अन्य विद्वत्यजन।

प्रेमविहारी आर्य मत्री

खूबसूरती लाने के लिये वेद और शास्त्रों को पढ़े

(२५ प्रतिशत छूट)

बुद्धि के विकास हेतु आवश्यकता है वैदिक ग्रन्थो का पठन और पाठन तव—शुरूआत होगी—मानव—विवेक का सौन्दर्य

आइये आर्यसमाज का उत्कृष्ट वैदिक साहित्य पढे

सामाजिक—धार्मिक—राजनैतिक—चेतना प्राप्ति हेतु हर—घर मे वेद का प्रकाश हो।

साहित्य प्राप्ति का स्थान—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा—३/५ रामलीला मैदान नई दिल्ली—२
फोन न ३२७४७७१
डा सच्चिदानन्द शास्त्री
मत्री सभा

वर की आवश्यकता

सुन्दर स्वस्थ २३वर्षीय एम०ए० प्रथम वर्ष उत्तीर्ण गृहकार्य मे दक्ष कश्यप गोत्रीय कन्या के लिए स्वर्णकार आर्यवर चाहिए।

श्रीकृष्ण आर्य
प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र
सुल्तानपुर पट्टी वाया—काशीपुर
जिला—ऊधमसिह नगर (उ०प्र०)

हम भारत के सच्चे बच्चे

हम भारत के सच्चे बच्चे सभी शेर कहलाते हैं।
भूले भटके पथिक को हम सही मार्ग बतलाते हैं।
भारत मे हम जन्म लिये हैं भारत प्राणों से प्यारा।
मातृभूमि स्वर्ग से बढकर हैं सारा जगत है मेरा।
मेरी सस्कृति बतलाती है सारी दुनिया मेरा परिवार।
आपस मे हम भाई भाई सारा जग मेरा घर द्वार।
कहीं चले जायें हम जग में सब अपना कहलाते हैं।
प्यार से सब बातें करते हैं सब अपना कहलाते हैं।
है सारा ससार मेरा घर सारे जग को अपना समझो।
कोई नहीं मेरे लिए पराया सारे जग को अपना समझो।
भारत के ऋषि मुनियों ने सबको अपना समझे थे।
ससार के सभी मानव को उन्होंने सत्यपथ बतलाये थे।
हम भारत के रहने वाले भारत के गीत गाते हैं
जो हम को अपना समझता हम उसको गले लगाते हैं।
भारत मे हम जन्म लिये है इसकी रक्षा हमें है करना।
मा के ऊपर जो अगुली उठाये उसको माफ कभी न करना।

डा० रवीन्द्र कुमार शास्त्री

शाखा कार्यालय-६३, गली राजा केदार नाथ,
चावडी बाजार, दिल्ली-६, फोनः- २६१८७१३

समाज सुधारक-महर्षि दयानन्द सरस्वती-उनके उपकार जिनसे उऋण नहीं हो सकते।

धर्म सिह शास्त्री, डबल एम०ए०

भारतवर्ष के राजनैतिक और धार्मिक उत्थान मे भारत के प्रदेश गुजरात ने भी सदैव अपना सहयोग दिया है। वैसे तो वीर जननी उत्तर प्रदेश की पुण्यभूमि है परन्तु गुजरात भी कम नहीं। महात्मा गाधी सरदार पटेल जेसे दोनो ही महापुरुष गुजरात मे उत्पन्न हुए थे परन्तु ये राजनैतिक गुथियो को सुलझाने वाले थे। धार्मिक क्षेत्र मे इनमे से किसी ने भी तथा अन्यो ने भी कोई स्तुल्य कार्य नही किया। देश की राजनैतिक चेतना के साथ साथ सास्कृतिक या धार्मिक भावनाओ एव हिन्दी के उत्थान मे अपना बलिष्ठ कधा लगाने वालो मे महर्षि दयानन्द जी का नाम विशेष स्मरणीय है। वह समाज सुधारक एव आर्य सस्कृतिक के रक्षक थे। आज से पूर्व महापुरुषो ने अपने प्राणसय से आर्य सस्कृति की रक्षा की और उसके उत्थानो मे महत्वपूर्ण योगदान दिया। महर्षि दयानन्द जी ने जनता को अनुधोग आलस्य अकर्मण्यता के स्थान पर उद्योग परिश्रम ओर कर्मण्यता का पाठ पढाया। धार्मिक कृत्यो म प्राचीन विचारधारा के स्थान पर तथा आडम्बरपूर्ण अर्चना के स्थान पर नवीन मानसिक पूजा को महत्व दिया। रूढिवाद की पुरातन छिन्न छिन्न श्रृखलाओ को नष्ट करके जनता को धर्म के मूलतत्वो मे समझाया। जाति वैमनस्य अस्पृश्ता और भेदभाव को दूर किया। दुखी हिन्दू जनता ईसाई मुस्लिम धर्म मे परिवर्तित होती जा रही थी हिन्दू जाति का एक बहुत बडा भाग धर्म परिवर्तन कर भी चुका था। महर्षि दयानन्द न जातिवाद और वैषस्य की विषाक्त विचारधाराओ को समाज मे से जड से उखाड फैंक देने का सबल प्रयत्न किया। उन्होने हिन्दू धर्म मे प्रर्याप्त सशोधन उपस्थित किये। ईसाई मिशनरियो से टक्कर ली। इन सभी बातो के अतिरिक्त देश की स्वतत्रता के महान उदबोधको मे भी दयानन्द जी का प्रमुख स्थान रहा।

महर्षि दयानन्द जी का प्रादुर्भाव सन १८२४ मे गुजरात के टकारा नामक गाव मे हुआ था। कोई कोई उन्हे दयाल भी कह देते थे। इनके पिता का नाम कर्षन जी था वे गाव क बडे जमीदार थे। परिवार सुसम्पन्न था। सनातन धर्म की पद्धति के अनुसार बालक मूलशकर का पाच वष की अवस्था मे यज्ञोपवित सस्कार तथा विद्यारम्भ सस्कार कराया गया सस्कृत की शिक्षा से आपके अध्ययन का श्रीगणेश हुआ। प्रारभ मे अमरकोष और लघु कौमुदी आदि सस्कृत के ग्रथ याद कराये गये। यजुर्वेद की कुछ ऋचाये भी कन्ठस्थ कराई गई। प्रारभ से ही व्युत्पन्न बृद्धि होने के कारण थोडे से ही समय मे इन्होने सस्कृत का ज्ञान प्राप्त कर लिया।

महर्षि दयानन्द जी के पिता प्राचीन विचार धाराओ के पोषक थे। वे शैव थे परिवार मे शिवजी की उपासना होती थी। बालक मूलशकर की आयु लगभग १३ वर्ष की थी। शिवरात्रि का महापर्व आया। शेव सम्प्रदाय वालो के लिए यह दिन विशेष महत्व का होता है। पारिवारिक प्रथा के अनुसार इन्होने भी सारे दिनभर व्रत रखा ओर रात्रि को रात्रिजागरण रखा। शिवरात्रि के निकट बैठे–बैठे जप करते रहे जैसे परिवार के अन्य व्यक्ति कर रहे थे। अर्धरात्रि के समय इन्होने देखा कि एक चूहा आया ओर शिवलिग पर आकर बैठ गया। वह कभी चढता कभी उतरता कभी रखे हुए भोग को खाता। वह विचित्र विस्मय मे पड गये। सोचने लगे कि शिव तो अनन्त शक्तिशाली हैं सारे विश्व का सृजन और सहार करते है क्या वे इस चूहे से अपनी रक्षा नहीं कर सकते है ? उसी दिन से उन्हे मूर्तिपूजा के प्रति अनास्था हो गयी। हृदय मे विचार–विद्रोह होने लगा। बात तो साधारण थी परन्तु तत्कालीन परिस्थितियो को दृष्टि मे रखकर देखने से प्रतीत होता है कि इसका बडा महत्व था क्यो कि जनता मे अन्धविश्वास और अन्धभक्ति थी। उनकी युगो युगो के विचारधारा के विरुद्ध एक शब्द भी कहना कठिन था साधारण मनुष्य के वश की बात नही थी।

इस घटना के दो वर्ष के बाद इनकी बहिन की मृत्यु हो गयी। बहिन की मृत्यु ने इनके हृदय मे ससार के प्रति अरूचि उत्पन्न कर दी। इनकी सृष्टि के सामने सदैव ससार की अस्थिरता नश्वरता और क्षणभगुरता नृत्य करन लगी। अपने तर्को के आधार पर ससार की प्रिय लगने वाली माया विष प्रतीत होने लगी। अपने पुत्र मे ससार के प्रति बढती हुई घृणा का दखकर पिता चिन्तित हो उठे और उन्हे विवाह मे बाधने का निश्चित तिथि तय कर ली। एक दिन घर म मगलगीत हो रहे थे बाजे बज रहे थे सभी लाग मूलशकर के विवाह की खुशी मना रहे थे। आप रात्रि को घर से निकल भागे। पैदल चलते चलते आप अहमदाबाद आए फिर कुछ दिन बडौदा रहे नर्मदा के किनारे अनक विद्वान साधु सन्यासियो की सत्सगति मे रहते हुए आप ज्ञानार्जन मे व्यस्त हो गए। उन्हे अधिकाश सन्यासी पाखण्डी और ढौगी मिले। सन १८६० मे वह मथुरा पहुचे। वहा स्वामी विरजानन्द जी के साथ उनकी भेट हुई। स्वामी जी नेत्रो स दृष्टिविहीन थे फिर भी इन्हे वेद व्याकरण ज्ञान और वैराग्य की शिक्षा देने लगे। स्वामी विरजानन्द का भी देश मे फैले हुए पाखण्डो के कारण कष्ट होता था। दयानन्द की शिक्षा दीक्षा समाप्त हाने के पश्चात उन्होन आज्ञा दी कि तुम देश मे वैदिक धम का प्रचार करो जनता के हृदय पटल मे अन्धकार को दूर करके वेदो की मयादा की रक्षा करो।

गुरु की आज्ञानुसार वे वैदिक धर्म क प्रचार मे लग गए। उस समय उनके पास न बाहुबल था और न धन बल न सस्था थी न सभा केवल बुद्धिबल ही था उन दिना हरिद्वार म कुभ का मेला हो रहा था। वहा जाकर उन्होन पाखण्ड खण्डिनी पताका लगाकर जनता को धम के गूढ रहस्यो को बताया। कुभ मे यद्यपि उन्हे विशेष सफलता नही मिली परन्तु धीरे धीरे उनक अनुयाइयो की सख्या बढती गयी दयानन्द जी का शास्त्रो का अच्छा ज्ञान था। व लागा से शास्त्रार्थ कराते थे। उन दिना देश मे शास्त्रार्था का प्रचलन था दो विभिन्न सिद्धान्ता क मानन वाले विद्वान आपस मे शास्त्रार्थ करते थे जो विजयी होता था जनता उसकी बात मान लेती थी। दयानन्द अनेक शास्त्रार्थ मे विजयी हुए काशी विद्वानो का गढ था स्वामी दयानन्द जी क वहा पर भी कई शास्त्रार्थ हुए। दयानन्द जी की धूम सारे देश मे फैल गयी। वह समय सामाजिक चेतना का समय था और राजराम मोहन राय सती प्रथा क विरुद्ध तथा विधवा विवाह के पक्ष मे आन्दालन कर रह थे। दूसरी ओर भारते दु हरिश्चन्द्र स्त्री शिक्षा के लिए प्रयत्नशील थे। स्वामी दयानन्द समाज की सर्वागीण उन्नति के लिए प्रयत्नशील थे। एक ओर उन्होने अन्धविश्वास पाखण्ड और मूर्तिपूजा का विरोध किया दूसरी ओर छुआछूत और बाल विवाह को दूर करने के लिए और स्त्री शिक्षा एव विधवा विवाह को प्रोत्साहन देने के लिए आन्दोलन किए। सन १८७५ मे उन्होने बम्बई मे आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज के सिद्धान्तो का देश मे तेजी से प्रचार और प्रसार होने लगा देश के प्राय सभी बडे बडे नगरो मे आर्य समाज मन्दिरो मे स्थापना हो गयी। आर्य समाज ने सर्व प्रथम स्त्रियो की अशिक्षा दूर करने की आवाज उठाई। स्वामी दयानन्द जी ने स्वय गुजराती होते हुए अपने सिद्धान्तो का प्रचार हिन्दी भाषा मे किया। इससे हिन्दी की वृद्धि हुई पजाब जैसे उर्दू भाषी प्रान्त था हिन्दी म रूचि लेने लगा। हिन्दी भाषा इसके लिए सदैव दयानन्द जी की ऋणी रहेगी।

भारतीय लोग अपना स्वाभिमान खोते जा रहे थे। विदेशी सभ्यता सस्कृति और शिक्षा प्राप्त करने मे अपने को गौरवशाली समझते थे तथा अपनी भारतीय प्राचीन सस्कृति को क्षुद्र। दयानन्द जी ने वेदो ओर सस्कृत साहित्य क अध्ययन पर बल दिया। अपन पूर्वजो के प्रति महान श्रद्धा और निष्ठा जागृत की। ईसाई पादरी अपने मत का प्रचार करने मे सलग्न थे उन्हे शासन बल मिला हुआ था। दयानन्द जी ने उनके बढते हुए प्रभावो का रोका उन्हे मुहताड उत्तर दिया। शास्त्रार्थो मे पराजित किया और वेदिक धर्म की महानता सिद्ध कर दी। इसी का विस्तृत विश्लषण उनके ग्रथ सत्याथ प्रकाश मे है। दयानन्द जी के अथक प्रयासो से जनता विधर्मियो के बहकाने से बच गई। उनके धर्म प्रचार की यह विशेषता थी कि पढे लिखे विद्वान लोग उनसे प्रभावित हुए। उन्होने विद्वानो से टक्करे ली। बुद्धि की कसौटी पर उनके विचार खरे उतरे उनसे पूव भी अनेक धम प्रचारक और अनक समाज सुधारक हुए। उन्होने पहले जनता के अशिक्षित हृदय को स्पश किया इसके पश्चात वे आगे बढे। परन्तु ऋषि जी के आर्य समाज को पहले शिक्षितो ने अपनाया फिर अशिक्षितो ने। कहन का तात्पय यह है कि स्वामी जी के आर्य समाज और उन सिद्धान्तो का आधार बुद्धिजीवी था। उन बातो को तक और व्यापार की कसौटी पर कसकर दख लिया गया था। शिक्षा प्रसार म भी स्वामी जी ने अपना अमूल्य योगदान दिया। स्वामी जी स्वतत्रता का मूल्य समझते थ उन्होन सत्यार्थ प्रकाश म लिखा है कि अपना बुरे से बुरा शासन भी अच्छा और पराया अच्छे से अच्छा शासन भी बुरा है। सामाजिक नैतिक और धर्मिक उत्थान के पश्चात व राजनीतिक क्षत्र मे सुधार करना चाहते थे उनकी इच्छा थी कि पहले देशी रियासतो के सभी राजाओ को सगठित किया जाए तब कोई आगे ठोस कदम उठाया जाए। यह पवित्र कार्य उन्होने प्रारभ किया परन्तु विधाता की इच्छा और ही थी इन्हे ससार छोडकर जाना पडा।

एक बार स्वामी जी को जोधपुर नरेश महाराजा जसतन्त सिह का निमत्रण प्राप्त हुआ स्वामी जी गए बडी श्रद्धा से उनका स्वागत किया गया। दूसरे दिन नगर की जनता के समक्ष आपका भाषण हुआ। महाराजा कई बार स्वामी जी के दर्शनो के लिए आए एक दिन राजा ने स्वामी जी को राजमहल म आमत्रित किया राजा के पास वेश्या बेठी थी। स्वामी जी को यह देखकर अत्यन्त खद हुआ उन्होने कहा राजन क्षत्रिय वीर कुमार को यह शोभा नही दता वेश्या जगह जगह पर भटकने वाली कुतिया होती है। इसी प्रकार क अन्य तिरस्कार पूर्ण शब्द वैश्या की उपस्थिति मे ही राजा से कहे। वैश्या को बहुत बुरा लगा। उसके हृदय मे प्रतिशोध की अग्नि भडक उठी तथा अपना रास्ता साफ करने के लिए उसने रसोइया से मिलकर भोजन म विष मिलवा दिया सारे शरीर मे विष फेल गया बहुत उपचार किए परन्तु स्वामी जी स्वस्थ नही हुए। कुछ रोगो ने स्थायी रूप से अपनी जड जमा ली। महाराजा जसवन्तसिह उन्हे आबू पर्वत भी ले गए। बडे बड डाक्टरो को दिखाया गया पर कोई लाभ नही हुआ। महाराजा बहुत खिन्न हुए परन्तु स्वामी जी ने उन्हे लौटा दिया।

अन्त मे दीपावली के दिन आपने शिष्या का बुलाकर कहा कि आज मेरा ससार से प्रस्थान का दिन है तुम लोग अपने अपने कत्तव्यो पर रहना ससार मे सयोग और वियोग का होना स्वाभविक ही है। इतना कहकर वेद मत्रो का पाठन करते हुए स्वामी जी ने अपना नाशवान शरीर छोड दिया। हम पर स्वामी जी के इतने उपकार हैं कि उनसे उऋण नही हो सकते महर्षि दयानन्द का जीवन कितना पुनीत उज्वल ओर गम्भीर था क्या कोई इसकी थाह पा सकता है।

ज्योतिषांज्योतिपर्व "दिवाली"

प्राचार्या डा० आराधना आर्य

उत्सवप्रियता मनुष्य की मूल प्रवृत्ति है। उत्सव पर्व या त्योहार आल्हाद उत्साह प्रसन्नता उमग आर अनुकूलता लेकर आया करते है। कृषि प्रधान भारत देश क अधिकाश पर्व ऋतुत्सव होते है विशेष रूप से दीपावली व होली महत्वपूर्ण ऋतूत्सव है। दीपावली को शारदीय नवसस्येष्टि पर्व भी कहते है। इस पर्व पर पारिवारिक यज्ञ होते है नवान्न खील बताशो की आहुति दी जाती है। गो सवर्धन का व्रत लिया जाता है और इससे पूर्व वर्षा ऋतु से उत्पन्न प्रदूषण को दूर करने के लिये घरो की लिपाई पुताई होती है जिससे रोगाणु नष्ट हो जाते हैं। खरीफ की फसल तैयार होने पर यह पर्व मनाया जाता है।

दीपावली को ज्योतिपर्व भी कहते है। ज्योति का अर्थ प्रकाश दीप्ति ज्ञान तथा माक्ष हैं। ज्योति की सप्राप्ति मानव का ध्येय रहा है। ज्योति असत से सत की ओर ले जाती है मत्यु को अमरता मे परिणत कराती है। ज्योति अज्ञान तिमिर को नष्ट करक ज्ञान का प्रकाश फैलाती है। इस प्रकार ज्योति हमारे लिए परम कल्याणकारी है। **"असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्युर्माऽमृतगमय'** की पावन प्रार्थना करके हम अपने जीवन को परमज्योति से जोडने का प्रयत्न करते है। अत ज्योति हमारा प्रेय श्रेय और ध्येय है। ज्योति पर्व दीपावली इसी सदेश को लेकर प्रतिवर्ष मनाई जाती है। दीपक मे तरल तेल होता है बत्ती होती है और उसकी लौ घटाटोप अधकार का नष्ट करके प्रकाश फेलाती है। दीपक हम सदेश देता है कि तिल तिल गलकर जलकर समाज को प्रकाश दो आल्हाद दो और अज्ञान तिमिर को दूर करके समाज को सर्वतोभावेन भद्रतो प्रदान करो। बिना त्याग किये समाज का कल्याण करना असभव है। यह पर्व हमे त्याग की भावना क सदेश देता है।

दीपावली पर गोवर्धन की पूजा की जाती है जो एक विकृत परम्परा है जबकि गोवर्धन का तात्पर्य गोवश की वृद्धि करना और उनका पोषण कराना है। यदि इस पर्व की एतद्विषयक सार्थकता को समझ कर हम गोवश के सवर्धन करने मे जुट जाये तो गोहत्या के जघन्य पाप से अपने समाज को तथा गोहत्या की समर्थक सरकार को बचा सकते हैं आज गोवश की निरीह और मूक वेदना शाप बनकर तथाकथित गोभाक्तो के सर्वनाश का कारण बन रही है। लाखो गायो का प्रतिदिन सहार देखकर भी गोवर्धन की पूजा करने वालो को लज्जा नहीं आती है और वे गोबर के देवी देवता बनाकर उनपर मेवा मिष्ठान चढाने की मूर्खता से बाज नहीं आते हैं हिन्दू जाति के दुर्भाग्य का इससे दुखद लक्षण और क्या हो सकता है ? अत गोवर्धन की भावना का विकृत रूप मिटाने की आवश्यकता है।

दीपावलि पर अन्य विकृतियो का प्रदर्शन भी इस पर्व की पवित्रता को कलकित करता है जिनमे जुआ खेलकर धनार्जन करने की दूषित मानसिकता प्रमुख है। धन का महत्व यद्यपि हमारे सामाजिक जीवन मे सर्वोपरि है और वैदिक ऋषियो ने धन और सम्पत्तियो का स्वामी बनने की प्रार्थना भी **"स्याम पतयो रयीणाम्"** मत्र द्वारा की है किन्तु धनार्जन के लिये **"कुर्वन्नेवेह कर्माणि'** का सदश भी दिया है और अर्जित धन का त्याग पूर्ण उपभोग करने की बाध्यता भी प्रतिपादित की है। **'तेन त्यक्तेन भुजीथा"** मत्राश इसका उदाहरण है। जुआ खलना एक दुर्व्यसन है जो मनुष्य का सर्वनाश करके छोडता है अत इस पर्व पर इस दुर्व्यसन के प्रचलन को रोकना चाहिये।

दीपावलि अथवा ज्योति पर्व यज्ञ पूर्वक मनाने का प्रावधान है। यज्ञ की साम्प्रतिक प्रासगिकता और उसकी उपयोगिता के विषय मे विश्वमानवो का अभिमत हमारे अभिमत के समान ही है वे भी यज्ञ को पर्यावरण सुधार का अचूक साधन मानते हैं। यज्ञ की महमा सर्वविदित है। खेद इस बात का है हमारे पर्वो पर इसकी अनिवार्यता समाप्त होती जा रही है। यज्ञ हमे सात्विक आहार का भी सदेश देता है। मान लीजिये शरीर एक हवन कुड हे इसमे जठराग्नि प्रज्जवलित हो रही है जिसमे स्वास्थ्यवर्धक मीठे कदमूल फल घृत दूध शहद आदि व्यजनो की आहुति दी जाती है तभी मन और बुद्धि शुद्ध और सात्विक बनते है यदि इस जठाराग्नि मे हम मास मदिरा तथा अडो आदि की आहुति देते है तो मन और बुद्धि का तमोगुणी बनना स्वाभाविक है आज यही तमोगुण विश्वमानवो के लिये भयावह विनाश का कारण बनता जा रहा है। कारण स्पष्ट है कि हमारा खान पान दूषित ओर तामसी हो गया हे। दीपावली आदि पर्वो पर यज्ञ का आयोजन होना आवश्यक है क्योकि इसके माध्यम से हमे जीवन सुधार सम्बन्धी उपदेश भी सुनने को मिलते हैं। यज्ञ की प्रक्रिया भी वैदिक और आडम्बर हीन होनी चाहिये।

दीपावलि को ज्योति पर्व इसलिये भी कहना ठीक है कि ज्योति हमे ज्ञानार्जन करके अज्ञान के अन्धकार को नष्ट करने का सदेश देती है। कहा भी है **"ऋतेज्ञानान्न मुक्ति "** अर्थात ज्ञान के बिना मोक्ष सभव नही। गीता मे भी ज्ञान को सर्वोपरि जीवन मूल्य माना गया है। ज्ञान किल्विषो को हरने वाला बताया गया है। अत हमारे सभी पर्व एक प्रकार से ज्ञान पर्व हैं क्योकि इनमें यज्ञों की अनिवार्यता है। यज्ञ का सगतिकरण पक्ष ज्ञानोद्बोधक है ज्योति भक्तो और योगियो का साध्य है। ज्योति परमब्रह्म का प्रकाश है जिसे पाने के लिये योग साधना की जाती है। ज्योति पर्व उसी परम ज्योति से तदाकार बनने का सदेश भी देता है। इससे इस पर्व की महनीयता स्वयमेव स्पष्ट हो जाती है।

दीपावलि के दिन एक दीप से सैकडो दीप प्रज्ज्वलित किये जाते हैं। हजारो दीपो को जलाकर वह दीपक हमे यह उपदेश देता है कि **"सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझो"** तथा **"जियो और जीने दो।"** सगठन और परोपकार का यह सदेश दीपावलि पर्व द्वारा हमे प्राप्त होता है। हमे चाहिये कि हम अन्तर्मुखी बनकर इन सदेशो की उपयोगिता को समझे और उन्हें अपने जीवन का अग बनाये।

पर्वो की अक्षुण्णता ओर पवित्रता बनाये रखने मे मातृशक्ति की विशेष भूमिका रही है। अज्ञान और भावुकता ने इन पर्वो मे विकृतियो को जन्म दे दिया है अत आवश्यकता है मातृशक्ति को शिक्षित बनाने की तथा उन्हे वेदादि सत्यशास्त्रो के मर्म से परिचित कराने की। पठित शिक्षित और विदुषी मातायें ही व्यक्ति और स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकती हे। जैसा कि कहा गया है कि ज्योति का लक्ष्यार्थ ज्ञान भी है। अत इस ज्योति पर्व को ज्ञान पर्व के रूप मे मनाना चाहिये तथा इस पर्व पर विशेष सत्सगो तथा साक्षरता अभियानो का शुभारभ करना चाहिये जिससे समाज मे व्याप्त अधकार अशिक्षा अधविश्वासो ओर धर्म के नाम पर पनप रहे आडम्बरो को समाप्त किया जा सके। तभी हमारा ज्योतिपर्व मनाना सार्थक हो सकेगा।

'रामपुरा हाउस रामगज अजमेर

मुक्तक

पञ्च तत्वो से बना यह अष्ट चक्रो का किला है
नौ बने है द्वार घर दस इन्द्रियो को भी मिला है
पिण्ड भी एक है बडी अक्षर पुरुष की राजधानी
हो रहे स्थान्तरित आवागमन का सिलसिला है।

देह की नगरी बडी है शब्द का है शोर इसमे।
इङ्गिला की पिङ्गिला से बध रही है डोर इसमे।
साधना का रथ उतारो सुशुम्णा के राजपथ पर
गुप्त है जिज्ञान की गोदावरी का घोल इसमे।

सत्यव्रत सिह चौहान सिद्धान्त शास्त्री
पुडरी–मैनपुरी (उ०प्र०)

ऋषि दयानन्द का प्रताप

बाबूराम शर्मा विभाकर

*ऋषि दयानन्द का प्रताप है
जिसने सत पथ दिखा दिया।
पाखण्डो की पोल खोल कर
ऋषि ने रस्ता बता दिया।
वैदिक धर्म हमारा प्यारा
उसके गुर को सिखा दिया।
सस्कृति और सभ्यता दोनो
के अर्थो को सुझा दिया।
भूतकाल कितना स्वर्णिम था
यह हम सबको दिखा दिया।
निविड अविद्या का अधियारा
सत विद्या से हटा दिया।
दे हमे सत्यार्थ प्रकाश को
सारा कुहरा छटा दिया।
तर्कों की शैली पर सुन्दर
जीवन सबका गढा दिया।
अभिमानी दुरहठी हुए जो
उन सबको ही झुका दिया।
त्रिविध शक्तियो को अपना कर
प्रखर रूप को जता दिया।
ईश्वर-जीव-प्रकृति क्या होते,
त्रैतवाद को मढा दिया।*

लो०मा०तिलक जनता इण्टर कॉलिज मोरटा, गाजियाबाद

आर्य समाज
एवं
राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर

स्वाभिमान का उदय,

सत्यार्थ-प्रकाश के एकादश समुल्लास मे स्वामी दयानन्द ने ब्रह्म समाज और प्रार्थना समाज के विषय मे निम्नलिखित बाते लिखी हैं –

"जो कुछ ब्रह्म समाज और प्रार्थना समाजियो ने ईसाई मत मे मिलने से थोडे मनुष्यो को बचाये और कुछ-कुछ पाषाणादि मूर्ति-पूजा को हटाया अन्य जालग्रन्थो के फन्दो से भी बचाये इत्यादि अच्छी बाते है। परन्तु, इन लोगो मे स्वदेश-भक्ति बहुत न्यून है। ईसाईयो के आचरण बहुत-से लिये हैं। खान-पान विवाहादि के नियम भी बदल दिये हैं। अपने देश की प्रशसा और पूर्वजो की बडाई करनी तो दूर उसके बदले पेट भर निन्दा करते है। व्याख्यानो मे ईसाई आदि अग्रेजो की प्रशसा भर पेट करते हैं। ब्रह्मादि महर्षियो का नाम भी नही लेते। प्रत्युत ऐसा कहते हैं कि बिना अग्रेजो के सृष्टि मे आज पर्यन्त कोई विद्वान नही हुआ। आर्यावर्ती लोग सदा से मूर्ख चले आये हैं। वेदादिको की प्रतिष्ठा तो दूर रही परन्तु निन्दा करने से भी पृथक नहीं रहते ब्रह्म समाज के उद्देश्य की पुस्तक मे साधुओ की सख्या मे ईसा मूसा मुहम्मद नानक और चैतन्य लिखे है। किसी ऋषि महर्षि का नाम भी नही लिखा।

केशवचन्द्र और रानाडे की तुलना मे दयानन्द वैसे ही दिखते है जैसे गाखले की तुलना मे तिलक। जैसे राजनीति के क्षेत्र मे हमारी राष्ट्रीयता का सामरिक तेज पहले पहल तिलक मे प्रत्यक्ष हुआ वैसे ही सस्कृति के क्षेत्र मे भारत का आत्माभिमान स्वामी दयानन्द मे निखरा। ब्रह्म समाज और प्रार्थना समाज के नेता और अपने धर्म और समाज मे सुधार तो ला रहे थे किन्तु उन्हे बराबर यह खेद सदा रहा था कि हम जो कुछ कर रहे है वह विदेश की नकल है। अपनी हीनता और विदेशियो की श्रेष्ठता के ज्ञान से उनकी आत्मा कहीं-न-कही दबी हुई थी। अतएव कार्य तो प्राय उनके भी वैसे ही रहे जैसे स्वामी दयानन्द के किन्तु, आत्महीनता के भाव से अवगत रहने के कारण वे दर्प से नहीं बोल सके। वह दर्प स्वामी दयानन्द मे चमका रूढियो और गतानुगतिकता मे फसकर अपना विनाश करने के कारण उन्होने अपने भारतवासियो की कडी निन्दा की और उनसे कहा कि तुम्हारा धर्म पौराणिक सस्कारो की धूल मे छिप गया है। इन सस्कारो की गन्दी परतो को तोड फेको। तुम्हारा धर्म सच्चा वैदिक धर्म है जिस पर आरूढ होने से तुम फिर से विश्व-विजयी हो सकते हो। किन्तु इससे भी कडी फटकार उन्होने ईसाइयो पर और मुसलमानो पर भेजी जो दिन–दहाडे हिन्दुत्व की निन्दा करते फिरते थे। ईसाई और मुस्लिम पुराणो में घुसकर उन्होंने इन धर्मो में भी वैसे ही दोष दिखला दिये जिनके कारण ईसाई और मुसलमान हिन्दुत्व की निन्दा करते थे। इससे दो बाते निकली। एक तो यह कि अपनी निन्दा सुन कर घबरायी हुई हिन्दू-जनता को यह जानकर कुछ सन्तोष हुआ कि पौराणिकता के मामले मे ईसाइयत और इस्लाम भी हिन्दुत्व से अच्छे नही हैं। दूसरी यह कि हिन्दुओ का ध्यान अपने धर्म के मूलरूप की ओर आकृष्ट हुआ एव वे अपनी प्राचीन परम्परा के लिए गौरव का अनुभव करने लगे।

आक्रामकता की ओर

राममोहन और रानाडे ने हिन्दुत्व के पहले मोर्चे पर लडाई लडी थी जो रक्षा या बचाव का मोर्चा था। स्वामी दयानन्द ने आक्रामकता का थोडा-बहुत श्रीगणेश कर दिया क्योकि वास्तविक रक्षा का उपाय तो आक्रमण की ही नीति है। सत्यार्थ प्रकाश मे जहा हिन्दुत्व के वैदिक रूप का गहन आख्यान है वहा उसमे ईयाइयत और इस्लाम की आलोचना पर भी अलग अलग दो समुल्लास हैं। अब तक हिन्दुत्व की निन्दा करने वाले लोग निश्चिन्त थे कि हिन्दू अपना सुधार भले करता हो किन्तु बदले मे हमारी निन्दा करने का उसे साहस नही होगा। किन्तु इस मेधावी एव योद्धा सन्यासी ने उनकी आशा पर पानी फेर दिया। यही नहीं प्रत्युत जो बात राममोहन केशवचन्द्र और रानाडे के ध्यान मे नही आयी थी उस बात को लेकर स्वामी दयानन्द के शिष्य आगे बढे और उन्होने घोषणा की कि धर्मच्युत हिन्दू प्रत्येक अवस्था मे अपने धर्म मे वापस आ सकता है एव अहिन्दू भी यदि चाहे तो हिन्दू–धर्म मे प्रवेश पा सकते हैं। यह केवल सुधार की वाणी नही थी जाग्रत हिन्दुत्व का समर–नाद था और सत्य ही रणारूढ हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए वैसा और कोई नही हुआ।

इतिहास का क्रम कुछ ऐसा बना कि स्वामी दयानन्द की गिनती महाराणा प्रताप शिवाजी और गुरु गोविन्द की श्रेणी मे की जाने लगी। किन्तु स्वामी दयानन्द मुसलमानो के विरोधी नही थे। स्वामीजी का जब स्वर्गवास हुआ तब सुप्रसिद्ध मुस्लिम नेता सर सैयद अहमद खा ने जो सवेदना और शोक प्रकट किया उससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि मुस्लिम जनता के बीच भी स्वामी जी का यथेष्ट आदर था। स्वामी जी के बाद आर्य समाज और मुस्लिम–सम्प्रदाय के बीच का सम्बन्ध अच्छा नही रहा यह सत्यहै किन्तु स्वामीजी के जीवन काल मे ऐसी बात नही थी।

सच पूछिए तो स्वामी जी केवल इसलाम के ही आलोचक नही थे वे ईसाइयत और हिन्दुत्व के भी अत्यन्त कडे आलाचक हुए है। "सत्यार्थ प्रकाश" के त्रयोदश समुल्लास मे ईसाई मत की आलोचना है और चतुर्दश समुल्लास मे इस्लाम की। किन्तु ग्यारहवे व बारवे समुल्लास मे तो केवल हिन्दुत्व के ही विभिन्न अगो की बखिया उखेडी गयी है और कबीर दादू और नानक बुद्ध तथा चार्वाक एव जैनो और हिन्दुओ के अनेक पूज्य पौराणिक देवताओ मे से एक भी बेदाग नही छूटा है।

☆क्रमशः☆

दिवाली या दिवाला

'प्रणव' शास्त्री एम०ए० महोपदेशक

भारत का जन मन गण अतिचिन्तित अघटित होने वाला है।
इसे दिवाली पर्व कहे या इसको कहे दिवाला है।। १।।
एक समय था हर धर मे वेदभानु का उजियाला
अन्धकार का नाम नही था प्रकाश ही यशवाला
सत्यदेव का शासन था सवत्र धर्म का रखवाला
अब तो धर्मधुरी को देते सबही देश निकाला है।। २।।
पहिले उसने महावीर जी शकर को ही खा डाला
रामतीर्थ ऋषि दयानन्द को पिला दिया विष का प्याला
यो प्रकाश का किया निरन्तर इस पापिन ने मुख काला
रूठ गया यो धर्म सहोदर सचमुच शान्ति उजाला है।। ३।।
धर्म कर्म का मर्मन होवे खुली कबड्डी खेले सब
और न हो प्रति बन्ध किसी का कुछ भी किससे लेले सब
बने विधायक सासद पहिले बन्दूको से खेले सब
रहे जेल मे हिस्ट्री शीटर कातिल भी दल वाला है।।४।।
लाख हजारो की क्या बाते बात करोडो मे होती
अरब खरब भी हज्म किये अब सच्चाई सुख से सोती
पशुओ का चारा भी चर लो हस न चुगते मोती
उलट जामने ने ही डाला प्रिय प्रकाश पर ताला है।।५।।
चले घुटाले औषधियो के रक्षण या आरक्षण मे
लेन-देन मे गृहवितरण मे निजीपक्ष के पोषण मे
कही यूरिया पैराशूटी प्रकट रिर्पोट की क्षण मे
यहा काण्ड पर ब्राण्ड देखलो विश्वप्रसिद्ध हवाला है।।६।।
क्यो भटको सुख-रामराव या उमरावो की टोली मे
तन्त्र कला की अटिया बटिया धरो सुरक्षित झोली मे
आकर्षण है मित्र बहुत ही माला मस्त करोली मे
है तिहाड एकान्त योग को जोकि किरण ने पाला है।। ७।।

शास्त्री सदन रामनगर (कटरा)
आगरा–६ (उ०प्र०)

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 10 11 96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/96
R N No 626/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 7/8 11 1996

वार्षिकोत्सव सम्पन्न
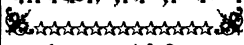
आर्य समाज हरसौली जिला अलवर (राजस्थान) का वार्षिक उत्सव दिनाक २६ २७ अक्तूबर को बडी धूमधाम से मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता श्री ग्यासी राम आर्य ने की तथा मच का सचालन श्री किशोरी लाल आर्य ने किया। इस उत्सव मे दोनो दिन यज्ञ किया गया। जिसमे तीन युवको ने शराब छोडने का प्रण किया।

इस उत्सव मे स्त्री शिक्षा राष्ट्र रक्षा मद्य निषेध पाखण्ड खण्डन आदि सम्मेलन किये गये।

श्री हरि सिह आर्य ग्राम किन–करोडी (अलवर) ब्रह्मचारी औंकार आर्य (महेन्द्र गढ) तथा प्रसिद्ध कवि भजनोपदेशक प० नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक ग्राम वहीन (फरीदाबाद) ने श्रोताओ को अपने विचारो से धर्म लाभ पहुचाया। इस कार्यक्रम की क्षेत्रीय जनता प्रशसा कर रही है।

सत्येन्द्र आर्य बी०डी०ओ०
मत्री आर्य समाज
हरसौली (अलवर)

आर्यसमाज हमीरपुर का वार्षिक उत्सव ११ अक्तूबर १९९६ से १३ अक्तूबर १९९६ तक बडी धूमधाम से मनाया गया। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता नगरपालिका परिषद हमीरपुर के प्रधान श्री प्रीतम प्यारा ने की तथा समापन समारोह की अध्यक्षता पूज्यपाद स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती ने की। एक विशाल शोभा यात्रा हमीरपुर नगर मे निकाली गई जिसमे शराब सिगरेट बीडी के कुप्रभावों की तरफ जन सामान्य का ध्यान आकर्षित किया गया तथा महर्षि दयानन्द एवम दूसरे महापुरुषो का गुणगान किया गया व सामाजिक कुरीतिया मिटाने का आहवान किया। स्वामी मोक्षानन्द ने कहा कि मनुष्यो को निश्चित रूप से अपने कर्मो का फल भोगना पडेगा अत मनुष्य को ऐसे कर्म करने चाहिए जिनका भोग सिर्फ मानव जन्म मे ही भोगा जा सकता हो तभी उसे पुन मनुष्य जन्म मिल सकता है तथा प्राणी जिस अग–वस्तु का अभाव दूसरो के लिए करता है वही अभाव उसे कालान्तर मे स्वय भोगना पडता है।

मत्री आर्य समाज
हमीरपुर

निर्वाचन आर्य समाज

आर्यसमाज अकोला

प्रधान	डा० श्रीमती मजूलता जी मदनसुरे
मत्री	डा० हुकुमसिह जन्हेरी
कोषाध्यक्ष	श्री बसत काले

आर्यसमाज बिजनौर

प्रधान	श्री हरपालसिह आर्य
मत्री	श्रीकुन्दनसिह आर्य
कोषाध्यक्ष	श्री धीर प्रकाश आर्य

आर्य समाज सुन्दर कालोनी मण्डी

प्रधान	श्री कृष्णचन्द्र आर्य
मत्री	श्री रामफलसिह आर्य
कोषाध्यक्ष	श्री सूरजमणि

आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रखण्ड दतागज (बदायू)

प्रधान	श्री हरीशकर आर्य
मत्री	श्री रिषीपालसिह आर्य
कोषाध्यक्ष	श्री कृष्णलाल आर्य

जैसा व्यवहार आप अपने लिए चाहते हैं वैसा व्यवहार आप भी दूसरों से करें।

सूचना

सार्वदेशिक के समस्त ग्राहकों एवं एजेन्टों को सूचित किया जाता है कि सार्वदेशिक का 3 नवम्बर का अक डाक तार विभाग की हडताल के कारण नहीं भेजा जा सका। अत 10 नवम्बर का अक सयुक्ताक के रूप मे प्रकाशित किया गया है। असुविधा के लिए खेद है

सम्पादक

सार्वदेशिक प्रैस कर्मचारी श्री पं० रास बिहारी दिवंगत

सार्वदेशिक प्रैस के वरिष्ठ कर्मचारी प० रास बिहारी का ३० अक्तूबर को हृदय गति रूक जाने से निधन हा गया। व ६४ वर्ष के थे। श्री रास बिहारी विगत ३५ वर्षो से प्रैस मे निष्ठापूर्वक कार्य करते रहे। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड गये हैं। उनका शुद्ध (दशम) ८ ११ ६६ को तथा तेरहवी एव ब्रह्मभोज ११ ११ ६६ को सम्पन्न होगी।

संस्कृत भाषा एवं भारतीय-संस्कृति का उद्धार कौन करेगा ?

सभी प्रबुद्ध भारतीय यह अनुभव करते हैं कि हमारे देश की वर्तमान शिक्षा प्रणाली हमारे देश के भावी नागरिको को भारतीय सस्कृति की शिक्षा से वचित रख रही है। इसका दुष्परिणाम हमें जीवन के सभी क्षेत्रो मे दिखाई दे रहा है। हम अपनी सास्कृतिक धरोहर को भूल कर आचारहीन होते जा रहे हैं जिसकी झलक हमे देश के राजनैतिक जीवन में फैले भ्रष्टाचार मे दिखाई देती है।

'सधान' एक स्वतत्र सस्था है जिसने शिक्षा के क्षेत्र मे व्याप्त इस गभीर कमी को पूरा करने का सकल्प किया है। यह अपने सीमित साधनो से नई पीढी के नागरिकों और उनके माता पिता एव शिक्षकों को भारतीय सस्कृति के मूल स्रोतो से परिचित कराने का प्रयास कर रही है। इस उद्देश्य से 'सधान' ने 'गीतासार' प्रकाशित किया हैं इसके श्लोकों का चयन गीता के प्रमुख विषयों के आधार पर किया गया है ताकि पाठक गीता की मुख्य बातो को समझ सके। गीतासार के दो सस्करण निकल चुके हैं जिनका सुधी पाठकों ने अभूतपूर्व स्वागत किया है। इसी प्रकार 'वेदसार' 'उपनिषद सार' 'दर्शनसार' आदि के कैप्स्यूल (सपुट) तैयार करने की योजना बनाई है। इसके अतिरिक्त अग्रेजी विद्यार्थी कोश भी लगभग तैयार है।

भारतीय सस्कृति की सबसे प्रमुख वाहिका सस्कृत भाषा है। स्वतत्रता के बाद से देश की शिक्षा–पद्धति मे सस्कृत की निरन्तर उपेक्षा हुई है। प्राय सभी भारतीय विशेषत आर्यसमाजी वेदो को अपनी सस्कृति का मूल आधार मानते हैं। आर्यसमाज के दस नियमो मे महर्षि ने वेदों का पढना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है कहा है और सभी आर्य सभासदों के लिए इस बात का विधान किया कि वे वेदों का अध्ययन करें। वेदो के अध्ययन के लिए सस्कृत का ज्ञान आवश्यक है। इस बात को ध्यान मे रखकर 'सधान' ने पत्राचार द्वारा सस्कृत अध्यापन का कार्यक्रम हाथ मे लिया। सस्कृत सिखाने के लिए पत्राचार–पाठयक्रम हिदी अग्रेजी और जापानी भाषाओ के माध्यम से चलाया जा रहा है। इसके पाठो का निर्माण इस बात को ध्यान मे रखकर किया गया है कि कोई भी व्यक्ति अध्यापक की सहायता के बिना ही घर बैठे सस्कृत सीख सकता है। सधान द्वारा छात्रो के मार्गदर्शन की भी व्यवस्था है। सस्कृत के अध्यन को लोकप्रिय बनाने के लिए पाठयक्रम का शुल्क हिदी माध्यम के लिए मात्र १००/– और अग्रेजी माध्यम के लिए २००/– रुपये है। यदि किसी आर्य समाज के माध्यम से पाँच या अधिक छात्र एक ही स्थान पर पाठ मगाएगे तो उनसे आधा शुल्क लिया जाएगा। दिल्ली की कुछ आर्य समाजो में पत्राचार–पाठयक्रम के विद्यार्थियों के लिए शनिवार या रविवार को शका समाधान सत्र भी आयोजित किया जाता है।

सभी आर्य सभासदों का यह नैतिक कर्त्तव्य है कि वे स्वय सस्कृत सीखे और अपने बच्चो को सस्कृत सीखने की प्रेरणा दे ताकि वे वेद मन्त्रों के अर्थो को समझ सके। सस्कृत से हम अपनी सस्कृति से जुडते हैं ये हमे सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है और हमे भ्रष्ट आचरण से दूर रखती है। क्या हम ऐसी आशा करें कि आर्य सभासद अपने इस दायित्व को समझेगे और सस्कृत भाषा के प्रचार और प्रसार में अपना योगदान देगे।

भारत भूषण (सयुक्त निदेशक)
सधान
जे–५६ साकेत
नई दिल्ली–१७
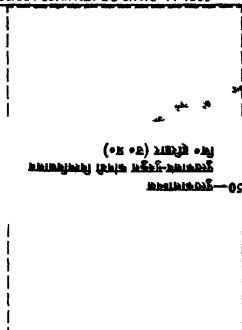
सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली–2 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् — विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाएँ

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

दूरभाष ३२७४७७१, ३२६०९८५ आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये वार्षिक शुल्क ५० रुपए एक प्रति १ रुपया

वर्ष ३५ अक ४० दयानन्दाब्द १७२ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ सम्वत् २०५३ कार्ति०शु० ७ १७ नवम्बर १९९६

उत्तर प्रदेशीय आर्यमहासम्मेलन मेरठ में सम्पन्न
वेद पारायण यज्ञ और विशाल शोभायात्रा

मेरठ-उत्तर प्रदेशीय आर्य महा सम्मेलन १-२-३, नवम्बर ९६ को मेरठ जनपद के जीमखाना मैदान मे धूम धाम से सम्पन्न हो गया।

सम्मेलनो मे - महिला सम्मेलन शाकाहार मद्यनिषेध, सरकृति रक्षा सम्मेलनो के आयोजन किये गये। प्रात सायम् श्री स्वामी विवेकानन्द सररवती के बह्मत्व एव बह्मचारियों के द्वारा वेद पारायण यज्ञ ३ नवम्बर को पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ।

श्री इन्द्रराज जी पूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का योगदान सराहनीय रहा। चौबीसों घन्टे एक स्थान पर बैठ कर आयोजन का सचालन कर रहे थे। शोभायात्रा शोभनीय थी स्थान-स्थान पर पत्र पुष्पों से स्वागत जनता ने किया। यज्ञ का आयोजन भव्य था। गुरुकुल प्रभात आश्रम के बह्मचारियो का मन्त्रोच्चारण सराहनीय था बह्मा के पद पर श्री रवामी विवेकानन्द जी सरस्वती शोभायमान थे।

उत्तर प्रदेशीय सभा की अतरग बैठक भी तीन नवम्बर को सम्पन्न हुई। मेरठ के आर्यजनों का प्रयास स्तुत्य था।

भोजन आवास का प्रबन्ध भी अच्छा था। समारोह के आयोजन से पूर्व आखों के आपरेशन व आखों के उपचार का शिविर भी सुयोग्य डाक्टरों द्वारा सफलता पूर्वक चलाया गया। समारोह का समापन जिलाधीश मेरठ के आशीर्वाद के साथ पूर्ण किया गया। आर्य नेता श्री बलराज मधोक के विचारों का [illegible] ने [illegible] किया।

सार्वदेशिक सभा के मत्री तथा उत्तर प्रदेश सभा के प्रधान डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने समायोजन मे सम्मिलित होकर आर्य समाज की उपयोगिता पर अपने विचार व्यक्त किये।

इस सम्मेलन के रवागताध्यक्ष श्री चौ० माधवसिह जी थे। सभी के प्रयत्नो का परिणाम रहा कि उत्तर प्रदेशीय आर्य सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सभी आर्यजन इस सफलता के लिये बधाई के पात्र है।

☆

संसद पर प्रदर्शन करने जा रहे गोरक्षा संगठन के कार्यकर्त्ता गिरफ्तार

७ नवम्बर १९६६ के गोरक्षा आन्दोलन के शहीदों की याद में विशाल प्रदर्शन

नई दिल्ली ७ नवम्बर। गो रक्षा आदोलन के दौरान मारे गये लोगो की याद मे इकट्ठे हुए बद्रीकाश्रम के शकराचार्य स्वामी माधवाश्रम और दडी स्वामियो को पुलिस ने आगे नहीं जाने दिया। उन्हें ससद भवन से पहले ही रोक लिया गया। प्रदर्शन करने वालो ने निषेधाज्ञा तोड़ने की कोशिश की तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

प्रदर्शन शुरु होने से पहले गो रक्षा आदोलन के दौरान मारे गए लोगो को श्रद्धाजलि दी गई। अब से तीस साल पहले ससद भवन के सामने बडी सख्या मे लोगो ने प्रदर्शन किया था। उन दिनो देश भर मे गो रक्षा आदोलन चल रहा था। गो हत्या रोकने के लिए जगह-जगह प्रदर्शन और धरने आदि चल रहे थे। ससद भवन के सामने प्रदर्शन कर रहे लोग अनियत्रित होने लगे तो पुलिस ने गोली चलाई और कई लोग मारे गए। उस घटना की याद मे हर साल इसी दिन लोग इकट्ठे होते हैं। आज शकराचार्य के अलावा ससद सदस्य गुमान मल लोढा बैकुठलाल शर्मा प्रेम विजय गोयल सार्वदेशिक सभा के महामत्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री दिल्ली सभा के प्रधान सूर्यदेव सनातम धर्म प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष मनोहरलाल कुमार, जय नारायण खडेलवाल और भारत गो सेवक समाज के अध्यक्ष प्रेमचद्र गुप्ता भी ससद चौक पर श्रद्धाजलि देने गए।

शकराचार्य स्वामी माधवाश्रम ने अपने उदवोधन मे माग की कि सरकार गो हत्या रोकने के लिए तुरत कानून बनाए। उन्होने गो रक्षा आदोलन को फिर से खडा करने पर जोर दिया। घोषणा की कि जल्दी ही धर्माचार्यो और धार्मिक सगठनो का एक सम्मेलन बुलाया जाएगा। श्रद्धाजलि सभा के बाद पुलिस ने प्रदर्शन करने वालो को छोड दिया। इससे पूर्व गिरफ्तार होने पर थाने मे गुरुकुल के ब्रह्मचारियो के ओम ध्वजो के साथ महर्षि दयानन्द के नारो से सारा आकाश गुजायमान कर दिया। सार्वदेशिक सभा के महामत्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने अत्यत प्रभावशाली भाषण से जनता को अत्यन्त प्रभावित किया। इस अवसर पर सभी नेताओ ने स्वामी आनन्द बोध सरस्वती को विशेष रूप मे यादि किया तथा कहा कि यदि आज वे होते तो इस आन्दोलन का स्वरूप ही कुछ और होता।

अखिल भारतीय हिदू महासभा और दूसरे कई सगठनो ने ससद चौक पर जमा हुए सन्यासियो और सामाजिक कार्यकर्ताओ की गिरफ्तारी की निदा की है। महासभा के उपाध्यक्ष डा० कैलाश चद्र ने कहा कि साधु सतो को गिरफ्तार कर कर सरकार लोगो की धार्मिक भावनाओ से खेल रही है। इस कार्रवाई से अनावश्यक उत्तेजना फैलेगी।

☆

सम्पादक- डा. सच्चिदानन्द शास्त्री

महर्षि दयानन्द क्या थे ?

आर्यसमाजी तो प्राय यह प्रश्न करते ही रहते है इसलिए नहीं कि उन्हे यह मालूम नहीं कि महर्षि दयानन्द क्या थे ? अपितु इसलिए कि वह इस पर गर्व भी करते है और आश्चर्य भी करते है कि जिस महापुरुष को वह अपना पूजनीय नेता समझते है वह कितने महान व्यक्ति थे। जब कभी महर्षि दयानन्द के विषय मे कोई चर्चा शुरू होती है तो आर्य समाजी बडे गर्व से कहते है कि वह समाज सुधारक थे। स्वतन्त्रता सग्राम के सेनानी थे। बहुत बड़े विद्वान थे वेदोद्धारक थे और इस प्रकार के उनके कई गुण हम जनता के सामने रखते है वास्तविक स्थिति तो यह है कि आधुनिक भारत मे पिछले लगभग १५० वर्षों मे कोई भी ऐसा नेता हमारे सामने नहीं आया जिसने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे सुधार करने का प्रयास किया हो। हम प्राय देखते है कि हमारे सामने वह नेता आते है जो राजनीति के क्षेत्र मे अपना विशेष योगदान देते है वह भी आते है जो धर्म प्रचार के लिए अपना जीवन दान देते है। वह भी आते है जो समाज सुधार के लिए अपना सर्वस्व दे देते है। ऐसा कोई उदाहरण हमे नहीं मिलता कि एक व्यक्ति ने धर्म राजनीति और समाज सुधार इन तीनो मे जनता का मार्ग प्रदर्शन करके अपने देश मे एक नए युग का प्रादुर्भाव करने का प्रयास किया हो। यह केवल महर्षि दयानन्द सरस्वती ही थे जिन्होने अपने देश का प्रत्येक दिशा मे नेतृत्व किया था। हम यह भी कह सकते है कि वह केवल अपने देश के ही युग प्रवर्तक न थे उन्होंने ससार को एक नई दिशा दिखाई थी। वेदो के विषय मे उन्होंने जो कुछ कहा था योरुप के कई विद्वानो ने भी उसकी प्रशसा की थी। इसी से हम अनुमान लगा सकते है कि महर्षि दयानन्द क्या थे ?

परन्तु मै आज उनके जीवन का एक और पक्ष आप समस्त पाठको के सामने रखना चाहता हू। महर्षि दयानन्द ने ग्रन्थ तो और भी कई लिखे है यदि हम उनके दो ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका को पढे तो उनकी विद्वता का कुछ अनुमान लग सकता है। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में उन्होने जो कुछ लिखा है उसकी सम्पुष्टि मे उन्होंने कई पुराने ऋषिमुनियो का भी उल्लेख किया है यह वही व्यक्ति कर सकता है जिसने उनके ग्रन्थो का स्वाध्याय किया हो। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में निम्न लिखित महा पुरुषोका उल्लेख है पातन्जलि पाणिनी जैमिनी कणाद गौतम वात्स्यायन कपिल व्यास, कात्यायन, याज्ञवल्क्य मैत्रेयी, गार्गी कश्यप और जनक। इनके सम्बन्ध मे क्या लिखा मैं वह पाठकों के सामने रखना नहीं चाहता यह तो उन विद्वानो का काम है जो सस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित हों और जो भली भान्ति यह समझ सकें कि महर्षि दयानन्द ने क्या लिखा है। मेरे लिए तो आश्चर्य का विषय केवल यह है कि ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में महर्षि ने जिन जिन महापुरुषों का उल्लेख किया है उन द्वारा लिखित ग्रन्थ उन्होंने अवश्य पढे होंगे। इसके बिना तो वह यह सब कुछ न लिख सकते थे और इसी से हम अनुमान लगा सकते हैं कि महर्षि दयानन्द क्या थे ? कितनी उनकी योग्यता थी कितनी उनकी विद्वता थी ? कितने वह दूरदर्शी थे ? इतिहास मे बहुत कम ऐसे व्यक्ति मिलेगे जिनमें वह सब गुण हो जो महर्षि दयानन्द में थे। उनके महान व्यक्तित्व का हम इससे भी अनुमान लगा सकते है कि बड़े बडे राजे महाराजे उनकी चरण वन्दना करना अपना सौभाग्य समझते थे।

दीपावली की रात को वह इस ससार से विदा हो गए। उनके साथ क्या व्यवहार किया गया उसमे जाने की आवश्यकता नहीं परन्तु उनकी मृत्यु भी उनके जीवन का एक और पक्ष हमारे सामने रखती है। यह साहस महर्षि दयानन्द में ही था कि एक महाराज को वह डाट सकते थे। कोई दूसरा व्यक्ति जोधपुर के महाराज को वह कुछ न कह सकता था जो महर्षि दयानन्द ने उसे कह दिया था और उसका परिणाम अन्त में उनके देहान्त के रूप में हमारे सामने आया।

कुछ भी हो वास्तविक स्थिति तो यह है कि महर्षि दयानन्द जैसा कोई दूसरा इतिहास मे हमारे सामने नहीं आया है कभी आएगा या नहीं यह कहना कठिन है। आज हम बडे गर्व से कह सकते है कि वह हमारे नेता थे और एक ऐसा अद्वितीय व्यक्तित्व रखते थे कि जिस पर हम गर्व कर सकते हैं और यह कह सकते है कि दयानन्द जैसा तो कोई हुआ ही नहीं और कभी फिर होगा तो उस समय के लोग समझेगे कि वह क्या है और उन्हे यह भी पता चल जाएगा कि दयानन्द क्या थे।

वीरेन्द्र ☆

"विश्व तुम्हारा करता वन्दन"

दिव्य वेद के सत्य ज्ञान का ऐसा नाद बजाया तुमने।
युग युग से जो सुप्त पडे थे, आकर उन्हें जगाया तुमने।।
दिनकर रजनीकर अम्बर पर, हे ऋषिवर जब तक चमकेंगे।
तब तक धरती पर महकेगा तेरा पावन मधुमय उपवन।।
विश्व तुम्हारा करता वन्दन।।

मानव मानव के मानस में, फूंकी तुमने नई चेतना।
ज्ञान ध्यान द्वारा हर ली है, पीडा, कुण्ठा, घुटन, वेदना।।
कल की अबला, अब सबला है, कितना सक्षम ज्ञान दिया है।
मुस्कानों में बदल दिया है, तुमने हर मानव का क्रन्दन।।
विश्व तुम्हारा करता वन्दन।।

उल्ट-पुल्ट कर पृष्ठ पृष्ठ इतिहास छान मारा है सारा।
यह पाया है नाम तुम्हारा, आलोकित है ज्यों ध्रुव तारा।।
मानवता का तुमसे बढकर कौन हितैषी हो सकता है।
चन्दन और अबीर बना डाला है तुमने भू का कण-कण।।
विश्व तुम्हारा करता वन्दन।।

नयन बने तुम प्रज्ञ-चक्षु के, वाणी दिव्य मूक साधक की।
धन्य हुई है सकल साधना, तुम से ही उस आराधक की।।
कोने-कोने में फहराई है, तुमने ही ओम् पताका।
विष पी पी कर किये जगत को सत्य शिव सुन्दर अर्पण।।
विश्व तुम्हारा करता वन्दन।।

महर्षि दयानन्द और उनका सन्देश

प्रो० चन्द्र प्रकाश आर्य

उन्नीसवीं शताब्दी मे इस देश मे अनेक समाज सुधारको तथा महान् व्यक्तियो ने जन्म लिया। राजा राममोहनराय केशवचन्द्र सेन रानाडे रामकृष्ण परमहस तथा स्व० विवेकानन्द आदि का नाम उनमे उल्लेखनीय है। महर्षि दयानन्द का नाम इनमे अगुणी है क्योकि दयानन्द ने पहली बार भारत तथा विश्व का ध्यान वेदो की ओर आकृष्ट किया। दयानन्द से पहले लोग वेदो को भूल चुके थे। वैदिक सस्कृति। भारतीय सस्कृति रामायण महाभारत गीता तथा पुराणो तक सीमित होकर रह गई थी। दयानन्द ने वेदो को भारतीय सस्कृति का आर्य सस्कृति का मूल स्रोत बताया। आज अधिकाश विद्वान इस बात को स्वीकार करते हैं।

दयानन्द ने बाल शिक्षा स्त्रीशिक्षा दवितोद्धार देशभक्ति स्वदेशी तथा स्वराज पर क्रान्तिकारी विचार प्रकट किए। उन्होंने ईश्वर धर्म मुक्ति विद्या अविद्या जगत तथा जीवात्मा आदि विषयो पर वैदिक मतानुसार नए विचार प्रकट किये। सत्यार्थ प्रकाश उनके क्रान्तिकारी एव मौलिक विचारो का दर्पण है। इस ग्रन्थ को उन्होने हिन्दी मे लिखा। इसमे उन्होने राजनीतिक सामाजिक धार्मिक सास्कृतिक आदि विषयो पर वेदमतानुसार अपने विचार प्रकट किए। इसके चौदह समुल्लासो मे लगभग सभी विषयो को समेट लिया गया है। इस ग्रन्थ का देश विदेश की अनेक भाषाओ मे अनुवार हो चुका है और इसके अनेक सैकडो सस्कारण प्रकाशित हो चुके है।

दयानन्द न सत्यार्थ प्रकाश के लिखा कि आर्य लोग बाहर से नहीं आए वे यही के निवासी थे। यहा भारत से ही वे बाहर गए थे। राष्ट्रीय सहारा' (३ १२ ६४) मे प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार आज इस मत को मानने वालो मे अमेरिका की अतरिक्ष सस्था नासा के सलाहकार डा० राजाराम डेविड फ्रावल हैरी हिक्स जेम्स शेफर और मार्क केनोयर के नाम प्रमुख हैं। भारतीय विद्वानो एव पुरातत्वक्ताओ मे एस०आर०राव एस०पी०गुप्त तथा श्री भगवान सिह आदि भी इस मत के समर्थक है। नवभारत टाइम्स (१७-७ ६४) नई दिल्ली मे प्रकाशित एक लेख का शीर्षक ही है—आर्यो का मूल देश भारत। इस मत को मानने वालो मे डा० सम्पूर्णानन्द का नाम सर्वोपरि है। जनसत्ता—चडीगढ (३० ४ ६२) मे प्रकाशित एक लेख के अनुसार डा० वराड पाडेय ने अपनी पुस्तक आर्यन इन्वेजन ए मिथ मे आर्यो द्वारा आक्रमण की बात को कपोलकल्पना बताते हुए आर्यों का मूल निवास स्थान भारत ही सिद्ध किया है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरणगुप्त ने भारतभारती में कहा है – ससार मे जो कुछ जहा फैला प्रकाश विकास है। इस देश की ही ज्योति का उसमे प्रधानाभास है। करते न उन्नतिपथ परिष्कृत आर्य जो पहले कहीं सन्देह है तो विश्व मे विज्ञान बढता या नहीं। महाकवि जयशकर प्रसाद ने लिखा है – किसी का हमने छीना नहीं प्रकृति का रहा पालना यही हमारी जन्मभूमि थी यही कहीं से हम आये थे नहीं वही रक्त है वही है देश वही साहस है वैसा ज्ञान वही है शान्ति वही है शक्ति वही हम दिव्य आर्य सतान।

दयानन्द ने आर्य समाज के दस नियमो में कहा कि वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। इसका विस्तृत विवेचन उन्होने अपने ग्रन्थ ऋग्वेदादि–भाष्य भूमिका मे किया है। उन्होने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के अन्त में 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' में लिखा कि वेद सूर्य के समान स्वतः प्रमाण है। उनका उद्देश्य किसी नवीन मत या सम्प्रदाय को चलाना नही था। सत्यार्थ प्रकाश मे 'स्वमन्तव्य प्रकाश मे उन्होने फिर लिखा है कि वेदादि सत्यशास्त्र और ब्रह्म से लेकर जैमिनी मुनि पर्यन्त माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं उनको मैं भी मानता हू।

दयानन्द ने वेदो की ओर लौटने का सन्देश दिया। आज सरिता जैसी पत्रिका भी वेदो मे क्या है ? विषय पर सामग्री छापती है भले ही हम उससे सहमत न हो। नवभारत टाइम्स के रविवारी अको मे पिछल कई लेखो मे भारत के मील पत्थर के अन्तर्गत वेदो की भी चर्चा की गई। इसके ८ १ ६५ के अक मे ऋग्वेद के सृष्टिसूक्त की चर्चा है तो इसी नभभारत टाइम्स (१५ १-६५) मे अर्थवेद की चर्चा की गई है। इस चर्चा से काफी मतभेद हो सकता है किन्तु इसमे अथर्ववेद के उस जादू टोने वाले स्वरूप का निषेध किया गया है जिसका प्रतिपादन पश्चिमी विद्वानो ने किया था। 'जनसत्ता चडीगढ (१५ १० ६२) मे हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक डा० रामविलास शर्मा की ऋग्वेद सम्बन्धी खोज मार्क्सवाद ऋग्वेद और हिदी समाज शीर्षक से प्रकाशित हुई हे। उनके अनुसार मार्क्स के डाइलेक्टिक्स यानि द्वन्द्वात्मकता की मूल अव–धारणाये ऋग्वेद मे मौजूद है। डा० शर्मा के अनुसार परस्पर परिवर्तन और गतिशीलता के बारे मे ससार मे शायद ही कोई पुस्तक हो जिसमे विश्व प्रपच इतना गतिशील हो जितना ऋग्वेद मे है। वे यहा तक मानते ह कि आधुनिक वैज्ञानिको मे आइन्स्टाइन ऋग्वेद की धारणाओ को कही कहीं दुहराते हैं। एक बहुत बडी उपलब्धि है कि उन्होने आकाश को एक तत्व माना हे।

दयानन्द ने तो ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका मे पहले ही प्रतिपादित कर दिया था कि वेदो मे विज्ञान विद्या है सृष्टि विद्या तार विद्या आदि अनक विषय है। इस सन्दर्भ मे ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के सृष्टिविद्या विषय पृथिव्यादिलो का भ्रमण विषय तारपिधाविपय आदि विषय भाग देखे जा सकते है। गाक्स के भारत सम्बन्धी लेख (१८५३ ई०) तक वेदो के बारे मे कोई गलत धारणाये नही थी मैक्समूलर के ऋग्वेद भाष्य के बाद इग्लैण्ड और यूरोप के बहुत से विद्वानो ने वेदो के बारे मे बहुत सी भ्रान्त धारणाओ को जन्म दिया।

इस बात को डा० रामविलास शर्मा अपनी ऋग्वेद सम्बन्धी उक्त शोध मे स्वीकार करते हैं। इसीलिए दयानन्द ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे मोक्षमूलर विषयक खडन विषय – शीर्षक से मैक्समूलर के वेदभाष्य का खडन किया है। दयानन्द ने उसी भाष्य भूमिका मे पचासवे विषय मे महीधर के भाष्य का भी खडन किया है परन्तु प्रमाण सहित दोनो भाष्यो का खडन किया है। 'राष्ट्रीय सहारा (नई दिल्ली १७ १२ ६४) मे छपे एक लेख यज्ञ भारतीय सस्कृति का केन्द्र बिन्दु मे महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य को प्रामाणिक मानकर यज्ञ की व्याख्या की गई है तथा यज्ञो मे पशुहिसा का निषेध किया गया है। इसी समाचार पत्र (१६ ११ ६४) मे प्रकाशित एक अन्य लेख मे नीतागुप्ता ने महीधर आदि के भाष्य का खडन करते हुए दयानन्द के वेदभाष्य का हवाला देकर प्राचीन कला–कौशल एव शिल्प का वर्णन किया है। दैनिक जागरण (८ सितम्बर ६६) मे वर्णव्यवस्था को त्यागने का समय लेख मे श्री नरेन्द्र मोहन ने वेद और दयानन्द का हवाला देकर शूद्रत्व और हिन्दुत्व की तर्कसगत व्याख्या की है तथा शूद्र और ब्राह्मण को एक मानते हुए ऋग्वेद का यह मत्र भी उद्धृत किया है

अज्येष्टासो अकनिष्ठास एते स भ्रातरो वावृधु सौभग।
युवा पिता स्वपा रूद्र एषा सुदुघा पृश्नि सुदिना मसदभ्य ।।

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य नइ सस्थाये तथा अन्य लोग भी इस दिशा मे काम कर रहे है। उनमे प्राच्य विद्या सस्थान–शिवशक्ति थाने महाराष्ट्र का नाम लिया जा सकता है। वहा ऋग्वेद को The Heritage of mankind नाम से ग्यारह खडो मे अग्रेजी मे अनुवाद हो रहा है। एक ६७ वर्षीया रूसी महिला तात्याना येलिजारेकोवा ऋग्वेद का रूसी भाषा मे अनुवाद करन मे लगी है। १६५६ मे ऋग्वेद के रूसी का अनुवाद का पहला खड छपा और उसकी चालीस हजार प्रतिया शीघ्र ही बिक गई। उसके बाद उसका दूसरा खड छपा। अब वे ऋग्वेद के रूसी अनुवाद का तीसरा अन्तिम खड प्रकाशित करने की तेयारी मे है। आज विद्वानो के निजी तथा सस्थाओ के प्रयास से चारो वेदो का अग्रेजी भाष्य उपलब्ध है। उनमे वेद प्रतिष्ठिान (आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग नई दिल्ली) आदि का नाम लिया जा सकता है।

आज हमने वेद पढना छोड दिया है। आर्य समाज से वैदिक विद्वानो तथा वेद विद्या विशषज्ञो की परम्परा कम होती जा रही है। आर्यजगत परोपकारी सावैदेशिक सर्वहितकारी आर्यमर्यादा वेदमार्ग ऋषिसिद्धान्तरक्षक आदि पत्रपत्रिकाओ म इस बात की चर्चा होती रहती है। आज आय समाज की सस्थाओ मे पदो एव अधिकारो की चर्चा अधिक हो रही है। वेद प्रचार एव वेदाध्ययन का मुख्य कार्य गौण होता जा रहा है। सार्वदेशिक सभा तथा अन्य अर्य प्रतिनिधि सभाओ तथा आर्यसमाजो को शीघ्र इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है सनातन धर्म की सस्थाये भी इस ओर लगभग उदासीन हें। देश के शकराचार्य भी इस ओर ध्यान दे सकते हैं। विश्व हिन्दू परिषद् भी इस सन्दर्भ मे बहुत कुछ कर सकती है। गीताप्रेस गोरखपुर को भी आगे आना चाहिए। अन्य सस्थाये तथा विद्वान भी इसमे सहयोग दे सकते है क्योकि वेद सबके लिए है वे सबके कल्याण की बात करते हैं तभी जाकर दयानन्द का वेदप्रचार सम्बन्धी स्वप्न साकार हो सकता है।

दयानन्द केवल वेद प्रचारक एव वेदोद्धारक नही थे वे सामाजिक राजनीतिक तथा आर्थिक न्याय के प्रबल पक्षधर थे। सत्यार्थ प्रकाश उनके विचारो का जीवन्त प्रमाण हे। यदि हम दयानन्द के सदेश को आगे पहुचाना चाहते हैं जन जन तक प्रसारित करना चाहते हैं तो नारी जाति का सम्मान करना होगा। दलितो तथा अवर्णो को सामाजिक न्याय दिलाना होगा। समाज मे धार्मिक अन्धविश्वासो तथा पाखण्डो का खडन करना होगा। आर्थिक विषमता मिटानी होगी। शिक्षा के लिए सबको समान अधिकार दिलाने होगे। दाउविधान को कठोर करना होगा। प्रशासन को स्वच्छ एव परदर्शी बनाना होगा। राष्ट्र भाषा आर्य भाषा हिन्दी को अपनाना होगा। अग्रेजी की मानसिकता छोडनी होगी। स्वदेशी स्वराज तथा स्वभाषा का सम्मान करना होगा।

अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
दयाबसिह कालेज करनाल

तमसो मा ज्योतिर्गमय

दीपावली ज्योति पर्व है, अधेरे से प्रकाश की ओर चलने का पवित्र सकल्प है, बुराईयो की कालिमा के चीर कर अच्छाइयों का अजास फैलाने का प्रतीक है, काल के भाल पर जीवन जोज जलाने का शाश्वत अनुष्ठान है, निर्धनता औद दरिद्रता के कोहरे को छांट कर श्री समृद्धि का वरण है और है निराशा व नाउम्मीदी के घटाटोप में आशा,चारो से ओर विश्वास की किरण। सचमुच, दीपावली की छटा अनूठी और निराली है। यों तो हर पर्व व्यक्ति और समाज को नई ऊर्जा से भरता है, लेकिन दीपावली की बात ही कुछ और है। इसके अंचल में तो हर ओर सल्मा–सितारे जडे हैं इसकी चमक-दमक के आगे सब फीके पड जाते है। होली और दिवाली भारत के दो ऐसे पर्व हैं जिनकी तुलना दुनिया के किसी भी महान उत्सव से की जा सकती है। अगर अंतराष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ पर्वो की कोई सूची बनाई जाए तो दिवाली और होली का नाम नि संदेह काफी ऊपर होगा। इसलिए अपने देश की इस अनमोल धरोहर को उसके सही परिप्रेक्ष्य में समझें और उसकी न सिर्फ रक्षा करे बल्कि उसमे नए सदर्भ नए अर्थ, नए मूल्य और नए लक्ष्य भी भरें।

सबसे पहले दीपावली के पौराणिक और ऐतिहासिक स्वरूप पर नजर डाले। कहते हैं भगवान राम ने अपने चौदह वर्ष के वनवास के दौरान विजयादशमी के दिन अन्याय और अनाचार के दानव रावण का वध किया। फिर लका विमीषण को सौंप कर वे अनुज लक्ष्मण और धर्मपत्नी सीता सहित अयोध्या को वापस लौटे। इस खुशी के मौके पर अयोध्यावासियों ने घर-घर दीप जलाकर अपने राजा राम का स्वागत किया। तभी से परपस चली आ रही है। अमावस की स्याह रात मे पूरे उत्साह और आवेग से धरती सितारों से सज जाती है। हर ओर चिराग ही चिराग, हर ओर रोशनी ही रोशनी, हर तरफ नूर ही नूर। ऐतिहासिक संदर्भ यही है कि दीपावली मनाने का औचित्य तभी है जब अन्याय, अनर्थ, दुराचार और दमन का प्रतिकार करते हुए उस पर विजय प्राप्त कर लें। राम ने वनवास लिया ही इसलिए था कि रावण का अत किया जा सके। इसलिए दीपावली हमें इस बात की याद दिलाती·चलती है कि अपने समय के रावण का हम पहले अत करें। आज के युग के रावण कौन हैं ? आज सबसे प्रबल राक्षसी प्रवृत्तिया क्या हैं ? राष्ट्रीय जीवन पर नजर डालें तो भ्रष्टाचार सबसे बड़ा दानव बन कर सामने आता है। बोफोर्स से लेकर हवाला काड तक, सेंट किट्स प्रकरण से लेकर सांसद रिश्वत कांड तक, पशुपालन–चारा घोटाले से लेकर यूरिया कांड तक, लक्खूभाई ठगी से लेकर दूरसचार घोटाले तक–हर तरफ 'स्कैम' हर ओर घोटालों और काडों की दुर्गंध। आज इस बात की जरूरत है कि आम जनता इस राक्षसी प्रवृत्ति के खिलाफ शखनाद करे और उसे जड-मूल से उखाड फेंके। यानि भ्रष्टाचार की कब्र पर जब हम सदाचार के दीप जलाएंगे तभी दीपावली सही मायनो मे राष्ट्रीय पर्व होगा। इसी तरह, सामाजिक स्तर पर गौर करें तो साम्प्रदायिकता दहेज–हत्या और बलात्कार घोर दानवी प्रवृत्ति के नमूने के रूप में नजर आते हैं। घर-घर मे दीप तभी जलेगा जब साम्प्रदायिकता की आग से घर बचे रहें। इस आग में जल कर हम अपने वतन को टुकडों में बांट चुके हैं। अब इस दानव को फिर से सिर न उठाने देने का संकल्प लें, तभी सामाजिक जीवन में सहयोग और भाई-चारे का दीप जलेगा। इसी तरह जिस दीप को जला कर हम ज्योति, अग्नि और रोशनी का नमन करते हैं, क्या उसकी आग में बहुओं को होम कर देना दीपावली का अपमान नहीं है ? इसकी कालिमा से अपने समाज को बचाए। फिर, बलात्कार तो और भी बडा दानव है। भगवान राम ने उस रावण का अंत किया जिसने पवित्रता की मूर्ति सीता का अपहरण कर लिया था और उसका सती धर्म भंग करना चाहता था आज हमारे समाज में सीताओं का अपहरण और बलात्कार करने वालों की तादाद बडी तेजी से बढ रही है। तो आइए इन रावणो के अत का भी हम सकल्प ले।

ऐतिहासिक रूप से दीपावली बिछुडे हुए अपनो से पुनर्मिलन का सुखद उच्छवास है। वनवास की अवधि पूरी हुई तो कैशल्या को राम मिले, सुमित्रा को लक्ष्मण मिले, विरहणी पत्नी उर्मिला को पति मिले, अयोध्यावासियों को राजा राम मिले और भरत को अपने आराध्य राम मिले। यह इस बात का प्रतीक है कि हम पूरी लगन और पूरे धैर्य से कर्तव्य पथ पर डटे रहे और उम्मीद की डोर पकडे रहें तो हर्षोल्लास का दीप जलाने का सुनहरा मौका आता ही है। आज के जीवन में विभिन्न कारणों से पति-पत्नी में विच्छेद, पिता-पुत्र में विच्छेद, भाई-भाई में विच्छेद, मा-बेटे में विच्छेद बढता ही जा रहा है। हजारों बच्चे, हजारों नर-नारी अपने घरों को छोडे जा रहे हैं, कहीं वनवास काट रहे हैं। पुनर्मिलन का यह पर्व दीपावली हमें इस बात के लिए प्रेरित करता है कि हम गले-शिकवों को भूल कर, दूर कर फिर से अपने नीड़ में लौट जाएं। अपनो के गले से लिपट जाएं। यह एक सामाजिक मुहिम होगी। कैकेई के स्वार्थ को अपनाकर अपनो को बिछुडने न दें, बल्कि बिछुडे हुए अपने राम का, अपनी सीता का, अपने लखन का स्वागत करें, जीवन-दीप में स्नेह का तेल भरते रहें।

अब देखें कि हम सब आज दीपावली किस तरह मनाते हैं। मोटे तौर पर यह रंग-बिरंगे बल्बों की लड़ियां सजा लेने, कानफाडू पटाखे छोड़ लेने, एक-दूसरे के घर मिठाइयों और उपहारों की खेप पहुंचा देने और जुआ खेल लेने का पर्व बन कर रह गया है। पारंपरिक रूप से दीपावली के साथ स्वच्छता, सफाई, सौम्यता और आस्था का जो भाव होता था, वह आज तिरोहित हो गया है। गावों में अब भी दीपावली का पारंपरिक स्वरूप काफी हद तक बरकरार है। विजयादशमी से लेकर दीपावली तक पूरे गांव की सफाई का अभियान सा चलना है। घर-घर, गली-गली गंदगी दूर करने की मुहिम चलती है। लक्ष्मी के स्वागत का पवित्र भाव होता है। आज शहरों में देखें तो हमें गंदगी के साम्राज्य के बीच कभी प्लेग का तां कभी मलेरिया का और कभी डेंगू के भूत मंडराते नजर आते हैं। बताइए जिस देश की राजधानी में पिछले एक महीने से सैकडों घरों में डेंगू का मृत्यु-नृत्य हुआ हो, वह शहर कैसी दीपावली मनाने का हकदार है। दीवाली तो पर्व ही इस बात का है कि अपने घर-नगर, वातावरण पर्यावरण को साफ-सुथरा रखे। तो दीपावली का यह महान संदेश है कि हम सफाई और स्वच्छता को एक राष्ट्रीय और सामाजिक अभियान बनाएं। इसी तरह देखेकि दीपावली किस तरह बल्बावली और पटाखावली में बदल गई है। दिवाली में पारपरिक रूप से घी और तेल के दीये जलाए जाते थे। गांवो मे· दिवाली अब भी यही ढंग प्रचलित है। तेल और घी के जलने से जो एक पवित्र खुशबू फैलती है उसमे आस्था और धार्मिकता के भाव सहज ही सहज ही प्रस्फुरित होते हैं। गांवो मे दिवाली में दीये की कतारों को देखें तो उसकी महीन रोशनी मे एक अलग ही रहस्यात्मक, आशावादी अनुभूति होती है। यह बात चकाचौध करने वाले बल्बों और नियोन लाइट में नहीं होती। फिर शहरो में एक रात में जिस तरह से लाखों करोडों रु० के पटाखे छोड़ दिए जाते हैं और जिनकी धमक से सारा शहर दहलता रहता है, वह एक विकृति से ज्यादा कुछ नहीं।

हर साल अग्नि-शमन कर्मचारी दिवाली की रात भर आग बुझाने और जान-माल बचाने मे लगे रहते हैं। कितने ही घर उस दिन जल जाते हैं कितने ही लोगों की जानें चली जाती हैं, कितने ही आंखों की ज्योति चली जाती है और कितने ही हृदय-रोगी मौत के मुंह मे चले जाते हैं आखिर दिवाली मनाने का यह तांडव स्वरूप क्यों हो गया है ? सरकार चाहे तो इस पटाखा उद्योग को काफी हद तक नियत्रित कर सकती है घातक और बमनुमा पटाखों को बनाने की इजाजत ही न मिले। ऐसे पटाखे बनाने और बेचने वालों पर पाबदी लगे और उल्लंघन करने वालों को सजा मिले। दीपावली में एक खास किस्म की सौम्यता और मधुरता होनी चाहिए। उसे इस तेज धूप-धड़ाके और शोर में डुबो देने से भला क्या लाभ ? इसी तरह, दीपावली के साथ जुआ अभिन्न रूप से जुड़ गया है जो कभी जुआ नहीं खेलता वह भी दिवाली की रात अपने हाथ आजमा लेता है। और कुछ लोगों के लिए तो दीपावली का मतलब ही सिर्फ जुआ है। दिवाली के कोई महीना भर पहले से ही कौडियों और ताश के पत्ते के जरिए नुक्कड़ो, घरों और क्लबों में जुए का दौर शुरू हो जाता है। एक अंध विश्वास है कि दिवाली की रात जुए में जो जीत गया, वह सालों भर मालोमाल रहेगा। जुए के खेल में कितने घर तबाह हो जाते हैं, इसका अंदाजा लगाना बड़ा मुश्किल है। इसी जुए का आधुनिक रूप विभिन्न व्यावसायिक लाटरियों के रूप में चले रहे हैं। यह सही है कि दिवाली श्री लक्ष्मी के स्वागत का पर्व भी है, लेकिन

आर्य समाज एवं राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर

गताक से आगे

वल्लभाचार्य और कबीर पर तो स्वामी जी इतना बरसे है कि उनकी आलोचना पढ कर सहनशील लोगो की भी धीरता छूट जाती है। किन्तु यह सब अवश्यम्भावी था। यूरोप के बुद्धिवाद ने भारतवर्ष को इस प्रकार झकझोर डाला था कि हिन्दुत्व के बुद्धि सम्मत रूप को आगे लाये बिना कोई भी सुधारक भारतीय सस्कृति की रक्षा नही कर सकता था। स्वामी जी ने बुद्धिवाद की कसोटी बनायी और उस हिन्दुत्व इस्लाम और इसाइयत पर निश्छल भाव से लागू कर दिया। परिणाम यह हुआ कि पोराणिक हिन्दुत्व तो इस कसोटी पर खड खड हो ही गया इस्लाम की भी सैकडो कमजोरिया लोगो के सामने आ गयी।

किसी का भी पक्षपात नहीं

चूकि ईसाइयत हिन्दुत्व पर आक्रमण कर रहे थे इसलिये हिन्दुत्व की आर से बोलने वाला प्रत्येक व्यक्ति ईयाइयत या इस्लाम अथवा दानो का द्रोही समझ लिया गया। किन्तु इस प्रसग से अलग हटने पर स्वामी दयानन्द विश्व मानवता के नेता दीखते हे। उनका उद्देश्य सभी मनुष्यो को उस दिशा मे ले जाना था जिसे व सत्य की दिशा समझते थ। उन्होने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका मे स्वय लिखा ह कि जो जो सब मता मे सत्य बाते हे व वे सा म अविरुद्ध हाने स उनका स्वीकार करके जा जा मत मतान्तरो मे मिथ्या बाते हें उन उन का खण्डन किया ह। इसमे यह भी अभिप्राय रखा ह कि जब मत मतान्तरा की गुप्त वा प्रकट बुरी बातो को प्रकाश कर विद्वान अविद्वान सब साध रण म ष्यो क सामन रखा ह जिससे सब स सब का वि ार हाकर परस्पर प्रमी हा व एक साथ मतरथ व। र ि म भायावत द्श म उत्प । आर बसता हू तथापि जसे इस दश के मत मता की झूठी बाता का पक्षपात न करक यथार्त य प्रकाश करता हू वेसे ही दूसर देशस्थ या मनोन्नति वाला क साथ भी वतता हू जसा स्वदश वाला क साथ हे मनुष्योन्नति के विषय मे बर्तता हू, वेसा विदशिया क साथ भी तथा सब सज्जनो के भी बर्तना याग्य है। क्योकि मे भी जो किसी एक का पक्षपाती होता ता जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति मडन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा हानि और बन्द करने मे तत्पर होते हे वेसे मै भी होता परन्तु ऐसी बाते मनुष्यपन से बाहर है। अन्यत्र चौदहवे समुल्लास के अन्त मे भी स्वामी जी ने कहा कि मेरा कोई नवीन कल्पना मत मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसे मानना मनवाना और जो असत्य हे उसे छोडना छुडवाना मुझको अभीष्ट है। यदि म पक्षपात करता तो आर्यावर्त्त के प्रचलित मतो म से किसी एक मत का आग्रही होता। किन्तु मैं आर्यावर्त्त व अन्य देशो मे जो अधर्म युक्त चाल चलन है उनका स्वीकार नही करता और जो धर्मयुक्त बाते हे उनका त्याग नहीं करता न करना चाहता हू क्योकि ऐसा करना मनुष्य धर्म के विरुद्ध है।

सुधार नहीं क्रान्ति

उन्नीसवी सदी के हिन्दू-नवोत्थान के इतिहास का पृष्ठ पृष्ठ बतलाता है कि जब यूरोपवाले भारतवर्ष मे आये तब यहा के धर्म और सस्कृति पर रूढि की पर्ते जमी हुई थी एव यूरोप के मुकाबले मे उठने के लिए यह आवश्यक हो गया था कि ये पर्ते एकदम उखाड फेकी जाए और हिन्दुत्व का वह रूप प्रकट किया जाए जो निर्मल और बुद्धिगम्य हो। स्वामी जी के मत से यह हिन्दुत्व वैदिक हिन्दुत्व ही हो सकता था। किन्तु यह हिन्दुत्व पौराणिक कल्पनाओ के नीचे दबा हुआ था। उस पर अनेक स्मृतियो की धूल जम गयी थी एव वेद के बाद के सहस्त्रो वर्षो म हिन्दुओ ने जो रूढिया और अन्धविश्वास अर्जित किये थे उनके ढूहो के नीचे यह धम दबा पडा था। राममोहन राय रानाडे केशवचन्द्र और तिलक स भिन्न स्वामी दयानन्द की विशेषता यह रही कि उन्होन धीरे धीरे पपडिया तोडने का काम न करके उन्हे एक ही चोट से साफ कर देन का निश्चय किया। परिवर्तन जब धीरे धीर आता हे तब सुधार कहलाता है। किन्तु वही जब तीव्र वेग से पहुच जाता हे तब उसे क्रान्ति कहते है। दयानन्द के अन्य समकालीन सुधारक मात्र थे किन्तु दयानन्द क्रान्ति के वेग से आये और उन्होने निश्छल भाव से यह घोषणा कर दी कि हिन्दू धर्म ग्रन्थो मे केवल वेद ही मान्य हैं अन्य शास्त्रो और पुराणो की बाते बुद्धि की कसौटी पर कसे बिना मानी नहीं जानी चाहिये। छह शास्त्रो और अठारह पुराणो को उन्होने एक ही झटके मे साफ कर दिया। वेदो मे मूर्तिपूजा अवतारवाद तीर्थो और अनेक पौराणिक अनुष्ठानो का समर्थन नही था अतएव स्वामी जी ने इन सारे कृत्यो और विश्वासो को गलत घोषित किया।

वेद को छोड कर कोई अन्य ग्रन्थ प्रमाण नहीं है इस सत्य के प्रचार करने के लिए स्वामी जी ने सारे देश का दोरा किया और जहा वहा वे गये प्राचीन परम्परा के पडित ओर विद्वान उनसे हार मानत गये। सस्कृत भाषा का उन्हे अगाध ज्ञान था। सस्कृत मे वे धारावाहिक रूप मे बोलते थे। साथ ही वे प्रचड तार्किक थे। उन्होने इसाई और मुस्लिम धर्म ग्रन्थो का भी भली भाति मन्थन किया था। अतएव अकेले ही उन्होने तीन तीन मोर्चो पर सघर्ष आरम्भ कर दिया। दो मोर्चे तो ईसाइयत और इस्लाम के थे किन्तु तीसरा मोचा सनातन धर्मी हिन्दुओ का था जिनसे जूझने मे स्वामी जी क अनेक अपमान कुत्सा कलक और कष्ट झेलने पडे उनके प्रचड शत्रु ईसाई और मुसलमान नहीं सनातनी हिन्दू ही निकले और कहते हैं कि अन्त मे इन्ही हिन्दुओ के षडयन्त्र से उनका प्राणान्त भी हुआ। दयानन्द ने बुद्धिवाद की जो मशाल जलायी थी उसका कोई जवाब नहीं था। वे जो कुछ कह रहे थे उसका उत्तर न तो मुसलमान दे सकते थे न ईसाई न पुराणो पर पलने वाले हिन्दू पडित ओर विद्वान हिन्दू नवोत्थान अब पूरे प्रकाश मे आ गया था ओर अनेक समझदार लोग मन ही मन यह अनुभव करन लग थ कि सच ही पोराणिक धर्म मे कोई सार नही है।

आर्य समाज की स्थापना

सन १८७२ ई० मे स्वामी जी कलकत्ते पधारे। वहा राष्ट्रकवि रविन्द्रनाथ टैगोर के पिता देवेन्द्रनाथ ठाकुर ओर कशवचन्द्र सेन ने उनका बडा सत्कार किया। ब्रह्मसमाजियो से उनका विचार विमर्श भी हुआ किन्तु ईसाईयत से प्रभावित ब्रह्म समाजी विद्वान पुनर्जन्म ओर वेद की प्रामाणिकता के विषय मे स्वामी जी स एकमत नही हो सके। कहते है कलकत्ते मे ही केशवचन्द्र सेन ने स्वामी जी को यह सलाह दी कि यदि आप सस्कृत छोड कर हिन्दी मे बोलना आरम्भ करे ता देश का असीम उपकार हो सकता है। स्वामी जी आप बाल ब्रह्मचारी हे सन्यासी है आपके उपदेशो को सुनने के लिये सामान्य नर नारी बालक बालिकाये भी आती हैं कृपया अपने परिधान मे वस्त्र धारण करे तो उत्तम होगा। एक और निवेदन करना चाहता हू, आप आर्य समाज के नियमो मे एक अक्षर भी बढा दे वेद भी ईश्वरी ज्ञान है दूरदर्शी देव दयानन्द ने सेन महोदय को कहा कि आपने एक अक्षर बढाने का सुझाव दिया है तो भी के स्थान पर ही अक्षर बढा सकता हू, यानि वेद ही ईश्वरी ज्ञान है। भी का तो तात्पर्य कुरान भी बाईबल भी पुराण भी ईश्वरीय ज्ञान हो सकता है। तभी तो स्वामी जी के व्याख्यानो की भाषा हिन्दी हो गयी और हिन्दी प्रातो मे उन्हे अगणित अनुयायी मिलने लगे। कलकत्ते से स्वामी जी बम्बई पधारे और वहीं १० अप्रैल सन् १८७५ ई० को उन्होन आर्य समाज की स्थापना की बम्बई मे उनके साथ प्राथना समाजवालो न भी विचार विमर्श किया। किन्तु यह समाज ता ब्रह्म समाज का ही बम्बई सस्करण था। अतएव स्वामी जी इस समाज के लोग भी एकमत नही हो सके

बम्बई से लौट कर स्वामी जी दिल्ली आये। वहा उन्होने सत्यानुसन्धान के लिए ईसाई मुसलमान और हिन्दू पडितो की एक सभा बुलायी। किन्तु दो दिन के विचार विमर्श के बाद भी लोग किसी निष्कर्ष पर नही आ सके। दिल्ली से स्वामी जी पजाब गये। पजाब मे उनके प्रति बहुत उत्साह जाग्रत हुआ और सारे प्रान्त मे आर्य समाज की शाखाए खुलने लगी। तभी से पजाब आर्य समाजियो का प्रधान गढ रहा हे।

थियोसोफी और स्वामी दयानन्द

जब थियोसोफिस्ट लोग भारत आये तब थोडे दिन उन लोगो ने भी आर्य समाज से मिल कर काम किया। किन्तु थियोसोफिस्ट की भी बहुत सी बाते स्वामी जी के सिद्धान्तो के विपरीत पडती थीं। अतएव वे लाग भी आर्य समाज से अलग हो गये। किन्तु अलग होने पर भी स्वामी जी पर थियोसोफिस्टो की भक्ति ज्यो की त्यो बनी रही। स्वामी जी के देहावसान के बाद भी मादाम ब्लेवास्की ने लिखा था कि जन समूह के उबलते हुए क्रोध के सामने कोई सगमर्म की मूर्ति भी स्वामी जी से अधिक अडिग नही हो सकती थी। एक बार हमने उन्हे काम करते देखा था उन्होने अपने सभी विश्वासी अनुयायियो को यह कह कर अलग हटा दिया कि तुम्हे हमारी रक्षा करने की कोई आवश्यकता नहीं हे। भीड के सामने व अकेले ही खडे हो गये। लोग उतावले हो रहे थे क्रुद्ध सिह के समान वे स्वामी जी पर टूट पडने को तयार थे किन्तु स्वामी जी की धीरता ज्यो की त्यो बनी रही

यह बिल्कुल सही बात है कि शकराचार्य के बाद स भारत मे से कोई भी व्यक्ति ऐसा नही हुआ जो स्वामी जी से बडा सस्कृज्ञ उनसे बडा दार्शनिक उनसे अधिक तेजस्वी वक्ता तथा कुरीतियो पर टूट पडने मे उनसे अधिक निर्भीक रहा हो। 'स्वामी जी की मृत्यु के बाद थियोसोफिस्ट अखबार ने उनकी प्रशसा करते हुए लिखा था कि 'उन्होने जर्जर हिन्दुत्व के गतिहीन ढूह पर भारी बम का प्रहार किया और अपने भाषणो से लोगो के ह्रदयो मे ऋषियो और वेदो के लिए अपरिमित उत्साह की आग जला दी। सारे भारतवर्ष मे उनके समान हिन्दी और सस्कृत का वक्ता दूसरा कोई और नही था।

आर्य समाज की विशेषता

कहा जाता है कि जैसे सिक्ख धर्म सनातन धर्म का अरबी अनुवाद है वैसे ही आर्य समाज भी इस्लाम की सस्कृत टीका है सिक्ख धर्म के विषय मे यह उक्ति कुछ दूर तक सही समझी जा सकती है किन्तु आर्य समाज के विषय मे यह कहा तक सत्य है यह बताना कठिन है। स्वामी जी ने ईश्वर जीव और प्रकृति तीनो को अनादि माना है किन्तु यह तो इस्लाम से अधिक भारतीय योग दर्शन का मत है। भिन्नता यह है कि स्वामी जी यह नही मानते कि भगवान पापियो के पाप को क्षमा करते हैं। बल्कि भगवान की कृपा के सहारे पाप करने की बात के लिए उन्होने इस्लाम और ईसाइयत की बार बार आलोचना की है। हा जिन बुराइयो के कारण हिन्दू धर्म का ह्रास हो रहा था तथा अन्य धर्मों के लोग जिन दुर्बलताओ का लाभ उठा कर हिन्दुओ को ईसाई बना रहे थे उन बुराइयो को स्वामी जी ने अवश्य दूर किया जिससे हिन्दुओ के सामाजिक सगठन मे वही दृढता आ गयी जो इस्लाम मे थी। स्वामी जी ने छुआछूत के विचार को अवैदिक बताया और उनके समाज ने सहस्त्रो अन्त्यजो को यज्ञोपवीत देकर उन्हे हिन्दुत्व के भीतर आदर का स्थान दिया आर्य समाज ने नारियो की मर्यादा मे वृद्धि की एव उनकी शिक्षा सस्कृति का प्रचार करते हुए विधवा विवाह का भी प्रचलन किया

शेष पृष्ठ ६ पर

सभी उत्सवों में संस्कृति का प्रकृति से तादात्म्य है

भारतीय सभ्यता एव सस्कृति का विकास नदिया क तटो पर हुआ इसलिए यदि भारतीय सस्कृति का प्राकृतिक सस्कृति कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। यही कारण है कि अनादि काल मे एकमात्र प्रकृति की ही पूजा होती थी। सूर्य चन्द्र नदी वनस्पतिया सभी प्राकृतिक सम्पदा मानी जाती थी। सभ्यता के प्रथम चरण मे मनुष्य के लिए पृथ्वी ही सब कुछ थी। पशु धन और अन्न धन यही सर्वस्व थे। तब लक्ष्मी भू देवी के रूप मे समादृत थी। जैसे जैसे सस्कृति का विकास होता गया प्राकृतिक सम्पदाओ के रूप भी बदलते गए।

प्रकृति ने हमारे देश को तीन प्रकार की ऋतुए प्रदान की –ग्रीष्म वषा और सर्दी। वर्षा ऋतु मे कही आना जाना सभव नही था क्योकि आवागमन के साधनो का विकास नहीं हुआ था। कीट पतगो का बाहुल्य हो जाता था इसलिए मानव समाज अपने परिवार के साथ ही समय व्यतीत करता था। वर्षा ऋतु एक प्रकार से सत्कर्म करने की प्रेरणा देती थी। लोग स्वाध्याय करते थे सत्सग मे भाग लेते थे यज्ञ करते थे।

वर्षा ऋतु की समाप्ति पर विजयदशमी का त्योहार यह सदेश लेकर आता था कि वर्षा समाप्ति पर है इसलिए कर्म क लिए तैयार हो जाओ। सभवत यही कारण है कि प्राचीन काल म विजयदशमी का एक नाम सीमोलघन था। आश्विन मास के समाप्त होते ही कार्तिक मास अनेक पर्वो और त्यौहारो की श्रृखला लेकर जनमानस मे अपूर्व उल्लास एव उत्साह का सचार करता है।

वर्षा ऋतु की समाप्ति पर विजयदशमी का त्यौहार यह सदेश लेकर आता था कि वर्षा समाप्ति पर है, इसलिए कर्म के लिए तैयार हो जाओ। सभवत यही कारण है कि प्राचीन काल मे विजयदशमी का एक नाम सीमोलघन था। आश्विन मास के समाप्त होते ही कार्तिक मास अनेक पर्वो और त्यौहारो की श्रृखला लेकर जनमानस मे अपूर्व उल्लास एव उत्साह का सचार करता है।

कार्तिक मास मे ही कर्क चतुर्थी यानी करवा चौथ महिलाओ का सौभाग्य पर्व आता है जो यह सन्देश देता है कि यदि परिवार को सुखी और समृद्धि युक्त रखना है तो दाम्पत्य जीवन मे सौमनस्य का वातावरण बनाए रखना आवश्यक है। प्राचीन काल का समाज पुरुष प्रधान था एकमात्र वही कमाता था और घर गृहस्थी का समूचा दायित्व उसी के कधे पर था इसलिए महिलाए अपने पतियो के स्वस्थ जीवन की कामना करती थीं और चन्द्रमा की कलाओ की तरह उन्हे दिन प्रतिदिन बढते देखना चाहती थी। करवा चौथ व्रत का यही उद्देश्य था।

करवा चौथ के बाद अहोई अष्टमी का पर्व सतान पक्ष का समर्पित था। पति के बाद महिलाओ के लिए सतान ही सर्वस्व है। वह अपने गृहस्थ जीवन के लिए सतान को हर प्रकार से स्वस्थ और प्रसन्न देखना चाहती हैं।

पर्व हा या कोई उत्सव दीपक का अपना विशेष स्थान है और दीपक भी माटी का ही हो। दीपक आर वाती का सबध भी अति घनिष्ठ है। फिर दीपक मे तेल का होना भी आवश्यक है। यदि तेल नहीं होगा और बाती जलेगी नहीं तो प्रकाश का होना सर्वथा असभव है। लक्ष्मी पूजन के लिए गगा जल युक्त घडा भी चाहिए और यज्ञ के लिए समिधा भी। यह सब इस बात के प्रमाण है कि भारतीय सस्कृति प्रकृति से अपना तादात्म्य स्थापित कर पुष्पित एव पल्लवित हुई है।

यह सब हुआ किन्तु यदि गणेश जी न हुए तो भी पूजन एकागी रहेगा। लक्ष्मी जी के साथ साथ कुबेर और गणेश जी का योगदान भी चाहिए। कुबेर देवताओ के कोषाध्यक्ष है तो गणेश जी लखाध्यक्ष। आज की भाषा मे कहा जाए तो एक खजाची है तो दूसरा एकाउटेट जनरल। दोनो ही वित्त विभाग के मुखिया हैं। यदि इन दोनो का तालमेल न हो तो लक्ष्मी को कोई भी हडप सकता है। वैसे भी लक्ष्मी का एक नाम चचला है। लक्ष्मी को एक स्थान पर रहना रुचिकर नहीं लगता। उनका आवागमन होता रहे तो परिवार समाज राष्ट्र ओर विश्व सभी का विकास होता रहेगा अवरुद्धता की स्थिति किसी भी दृष्टि से हितकर नही।

हमारे ऋषि–मुनियो ने इस बात की ओर भी स्पष्ट सकेत दिया है कि लक्ष्मी केवल दीप जलाने, नैवेद्य चढाने, पूजा करने या आरती उतारने से नही आती। वह याचना करने से भी प्रसन्न नही होती। याचक से वह कोसो दूर भागती है। उद्यमी व्यक्ति ही लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करते हैं शायद इसीलिए कहा गया है व्यापारे वसति लक्ष्मी अथवा 'उद्योगिनम पुरुषसिहमुपैति लक्ष्मी अर्थात् व्यापार, उद्योग–धधे मे ही लक्ष्मी का वास है।

हमारे ऋषि मुनियो ने इस बात की ओर भी स्पष्ट सकेत दिया है कि लक्ष्मी केवल दीप जलाने नैवेद्य चढाने पूजा करने या आरती उतारने से नही आती। वह याचना करने से भी प्रसन्न नहीं होती। याचक से वह कोसो दूर भागती है। उद्यमी व्यक्ति ही लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करते हैं शायद इसीलिए कहा गया है व्यापारे वसति लक्ष्मी अथवा 'उद्योगिनम पुरुषसिहमुपैति लक्ष्मी अर्थात व्यापार उद्योग धधे मे ही लक्ष्मी का वास है। जिस व्यक्ति मे व्यापार बुद्धि नहीं होती वह चाहे कितना ही योग्य विद्वान क्यों न हो लक्ष्मी उसके पास नहीं फटकती। अगर आती भी है तो शीघ्र ही उससे अपना पिड छुडा लेती है।

लक्ष्मी के एक मित्र और तीन शत्रु बताए गए हैं। धर्म लक्ष्मी का सहोदर भ्राता है। कहते हैं जहा धर्म का आदर नहीं होता वहा रहना लक्ष्मी को कदापि रुचिकर नहीं। धर्म का अर्थ यहा कर्त्तव्य भाव से है। यदि व्यक्ति लक्ष्मी को कैद करके रखना चाहता है तो लक्ष्मी के तीन शत्रु उसका साथ देते हैं या तो शासन की ओर से कर के रूप मे हडप लिया जाता है। यदि ऐसा न हुआ तो चोरो का समुदाय लक्ष्मी को कैद से मुक्त करा देता है और यदि ऐसा भी न हुआ तो अग्नि लक्ष्मी को कैदी बनाने वाले का घर ही साफ कर देती है।

लक्ष्मी को स्वच्छता बहुत प्रिय है। यही कारण है कि लक्ष्मी पूजन से पूर्व धनतेरस का पर्व समाज मे प्रचलित है। लोग अपने घरो को साफ सुथरा करते है जिससे कि लक्ष्मी उनका आतिथ्य स्वीकार करे। इसी दिन नए बर्तन खरीदने की परम्परा है। लोग नए परिधान भी इसी दिन खरीदते हैं। यह भी मान्यता है कि इसी दिन समुद्र मथन के समय भगवान धन्वतरि अमृत का कुभ लेकर प्रकट हुए थे। भगवान धन्वतरि देवताओ के वैद्य हैं आयुर्वेद के जनक हैं। यही कारण है कि देश का समूचा वैद्य समाज भगवान धन्वतरि का पूजन करता है।

हरिहरस्वरूप विनोद

दीपावली का सन्देश

आई है दीपावली, देने यह सन्देश।
झूठ कभी बोलो नहीं, बोलो सत्य हमेश।।

बोलो सत्य हमेश, बनो तुम सच्चे मानव।
मानव तन अनमोल, सार्थक करलो तुम अब।।

द्वेश, ईर्ष्या, बुरी भावना, दूर भगाओ।
परोपकारी बनो, प्रेम रसधार बहाओ।।

सत्य, सादगी, सदाचार जीवन में धारो।
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह दुश्मन है मारो।।

अहिंसावादी बनो, किसी को नहीं सताओ।
भला इसी में जीव मात्र पर दया दिखाओ।।

जैसे करता दीप, स्वय जल कर उजियारा।
सूरज बनकर हरो, जगत का तुम अधियारा।।

मानव होकर काम, नहीं जो जग के आता।
महा झूठ, वह भार, धरा पर है कहलाता।।

मानव वह है, काम जगत के जो आता है।
परोपकारी, मान सदा जग में पाता है।।

अबला, दीन, अनाथ, जनों को गले लगाओ।
'स्वामी' दयानन्द बन जाओ, 'धर्म निभाओ'।।

'वेदों का प्रचार करो, पाखण्ड मिटाओ'।
वीर, साहसी बनो, कष्ट में मत घबराओ।।

मन, वचन, अरु कर्म, एक करलो सब अपने।
राम, कृष्ण के पूर्ण करो, अब तो तुम सपने।।

प० नन्द लाल 'निर्भय' भजनोपदेशक
ग्राम व पो० बहीन जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

विजयादशमी पर्व सम्पन्न

आय समाज आर्य नगर अमारा के तत्वाव धान मे विजयादशमी का पावन पर्व बडी ही धूम धाम एव हष उल्लास के साथ आज २१ १० ९९ को सभी नागरिको द्वारा सामूहिक रूप से मनाया गया इस शुभ अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा प० रामसुफल शास्त्री हरियाणा तथा मुख्य यजमान हरिशकर आर्य विहोखर वाले थे। इस कार्यक्रम की सफलता मे आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष जी लालमन आर्य एव ब्रा० राजा कस आर्य का विशेष योगदान रहा।

पोषम लाल आर्य, मत्री
आर्य समाज आर्य नगर अमारा बादा (उ०प्र०)

इस्लामी घुसपैठियों से खतरे और समाधान

—प्रो० बलराज मधोक

विख्यात केरबियन लेखक वी०अेस०नाइपाल के अनुसार इस्लामवाद अरबउपनिवेशवाद के फेलाव और उस स्थायी बनाने का सफल माध्यम है। आधुनिक युग के यूरोपीय उपनिवेशवादियो की तरह अरब उपनिवेशवादियो ने भी अपने उपनिवेशों के लोगो को उनकी सास्कृतिक जडो से उखाड कर औपनिवेशिक शक्ति का मानसपुत्र बनाने का प्रयत्न किया। परन्तु उनमे एक बडा अन्तर है। ब्रिटिश फ्रेंच और डच उपनिवेशवाद के कारण उनके उपनिवेशों हिन्दुस्तान इडोचाइना और इडोनेशिया में प्रखर राष्ट्रवाद का उद्रेक हुआ जो उपनिवेशवाद के कारण बना। स्वतत्रता के बाद उनमे अपनी जडो को पहचानने और उन्हें सुरक्षित करने का भाव जगा। परन्तु जो देश अरब इस्लामी उपनिवेशवाद के पजे मे आये उनमे इस्लामवादियो ने इस्लामी सत्ता समाप्त होने के बाद भी अरबी इस्लामवाद की मानसिक दासता को न केवल बनाये रखा अपितु उसे और सुदृढ करने का भी प्रयत्न किया। भारत अथवा हिन्दुस्थान अरब इस्लामी उपनिवेशवाद के इस स्वरूप और प्रभाव का एक ज्वलत उदाहरण है।

७१२ ई० मे भारत का सिन्ध क्षेत्र पहले पहल अरब इस्लामी उपनिवशवाद की जकड मे आया। १०२० ई० म लाहोर पर महमूद गजनवी का अधिकार हा जाने के बाद सिन्ध बलाचिस्तान पश्चिमी पजाब ओर पख्तूनिस्तान जिन्ह अब सामूहिक रूप म पाकिरतान कहा जाता है अरब इस्लामी उपनिवशवाद की चपेट मे आ गया। ११९२ म दिल्ली पर माहम्मद गारी का अधिकार हो जाने के बाद अरब इस्माली प्रभाव भारत मे तेजी से फेला और कई शताब्दिया तक उत्तर भारत का बडा भाग और कुछ समय के लिए दक्षिण भारत का भी कुछ भाग इस्लामवादियो क अधिकार म रहा।

भारतीयो अथवा हिन्दुआ न अपने देश को इस इस्लामी सत्ता से मुक्त कराने के लिए [illegible] नत प्रयत्न किया और अठारहवीं शताब्दी म भारत का बडा भाग मुक्त भी हो गया परतु इसी बीच यहा यूरोपियन आ धमका और भारत ब्रिटिश उपनिवेशवाद की जकड मे आ गया। उसके बाद ब्रिटिश भारत मे स्वतत्रता आदोलन नए सिर से शुरू हुआ जिसकी परीणति १९४७ म भारत के खडित रूप मे स्वतत्र होन मे हुई। परन्तु यह स्वतत्रता अधूरी थी क्योकि भारत की प्राकृतिक सीमाओ के अतर्गत पश्चिम और पूर्व मे दो इस्लामी राज्य पाकिस्तान और बाग्लादेश के रूप म कायम हो गये। वहा पर अरब इस्लामी उपनिवेशवाद की जडे और गहरी हो गयी।

जब भारत मे भारतीय हिन्दू राष्ट्रवाद की लहर जोर से उठी और यहा ब्रिटिश उपनिवेशवाद की जडे हिलने लगीं तब इस्लामी उपनिवेशवाद के ध्वजवाहका को लगा कि भारत मे इस्लामवाद के दिन लद गये है और उनमे से कुछ भारत का छोडकर इस्लामी देशो मे हिजरत करने की बात सोचने लगे। उनकी मनोभावना को उर्दू क विख्यात कवि मौलाना अलताफ हुसैन हाली ने इन शब्दो मे व्यक्त किया था —

अलविदा ए हिन्दुस्तान, गुलस्तान बखजान
बहुत दिन रह चुके हम तुम्हारे विदेशी मेहमान।

अर्थात यह हिन्दुस्तान जो ऐसा उद्यान है जिसमे कभी शरद ऋतु आती ही नहीं हम तुम्हार विदेशी अतिथि जो बहुत दिन यहा रह चुके हे अब तुम से विदा लेते है।

परन्तु इस्लामवादियो मे उत्पन्न हुआ यह निराशा का भाव गाधीजी के साथ नेतृत्व म काग्रेस की गलत नीतियो और मुहमद अली शौकत अली और अबुल कलाम आजाद जैस मौलानाओ के इस पर बढते प्रभाव के कारण शीघ्र दूर हो गया। तब उन्होंने भारत से हिजरत करने के बजाय भारत के अतर्गत एक अलग इस्लामी राज्य बनाने की योजना बनायी जो १९४७ मे भारत के विभाजन और पाकिस्तान क निर्माण के रूप मे फलीभूत हुई।

भारत मे शताब्दियो तक राज करन क बावजूद इस्लामीवादी भारत के कुछ भागो को छोडकर इसका इस्लामीकरण नही कर पाए थे। कश्मीर घाटी पूर्वी बगाल और सिन्ध जैस जिन भागा के अधिकाश लोग इस्लाम के प्रभाव मे आ गये थ वहा भी भारतीय हिन्दू सस्कृति और रीति रिवाजो का ही चलन रहा। १९४१ की जनगणना क अनुसार सिन्ध सीमाप्रान्त (पख्तूनिस्तान) कश्मीर घाटी पश्चिमी पजाब ओर पूर्वी बगाल मे ही मुसलमानो का स्पष्ट बहुमत था।

भारत के अतगत अलग मुस्लिम राज्य बनाने की प्रेरणा कुछ अलगाववादी मुसलमानो को १९०४ म ब्रिटिश सरकार द्वारा बगाल के विभाजन म भी मिली। [illegible] पूर्वी बगाल और आसाम को [illegible] अलग मुस्लिम बहुल प्रदेश [illegible] गया था ताकि पश्चिमी बगाल और विशेष रूप म कलकत्ता मे केद्रित राष्ट्रवादी और क्रान्तिकारी आदोलन का प्रभाव क्षेत्र सीमित हो [illegible] सके और मुसलमानो को राष्ट्रीय [illegible] से अलग रखा जाए। उस समय हिन्दू [illegible] परन्तु उसकी जनसख्या पूर्वी बगाल की तुलना म [illegible]। [illegible] पहली बार [illegible] से पूर्वी बगाल क मुसलमाना का आसाम म [illegible] का क्रम शुरू हुआ।

१९३७ के चुनावो के बाद आसाम म श्री गोपीनाथ बरदालाइ के नेतृत्व म आसाम म भी काग्रस सरकार बनी थी। जब १९३९ मे दूसरा महायुद्ध शुरू होने पर काग्रेस शासित प्रदेशो के मत्रिमण्डलो ने त्यागपत्र दे दिय तब आसाम म भी मुस्लिम लीग की सरकार बना दी गयी। सादुल्ला आसाम का मुख्यमत्री बना। सादुल्ला मत्रीमण्डल न ब्रिटिश सरकार के सहयाग स आसाम को मुस्लिम बहुल प्रदेश बनान क उद्देश्य से वहा पर पूर्वी बगाल से आने वाले मुसलमानो को बसाने की योजना को आगे बढाया।

१९४६ म केबिनेट मिशन न भारत महासघ को तीन उपसघो मे बाटने की जो योजना पश की थी उसके अनुसार आसाम को बगाल के साथ नत्थी करन स वहा पर बगाल क मुसलमाना को बसाना आसान हा जाता। परन्तु केबिनट मिशन की योजना रद्द हा जान स आसाम बच गया।

१९४७ मे विभाजन क समय मुस्लिम लीग न आसाम को भी पाकिस्तान मे शामिल करन की माग की थी परन्तु यह मानी नही गयी क्योकि तब तक आसाम हिन्दू बहुल क्षेत्र के साथ जुडा हुआ था। मगर इसका सिलहट जिला जिसम मुस्लिम जनसख्या ५० प्रतिशत स कुछ अधिक थी पाकिस्तान को दे दिया गया। इस जिला का जो हिन्दू बहुल भाग भारत का दिया जाना था वह अभी तक नही दिया गया।

आसाम तो बच गया किन्तु त्रिपुरा के साथ लगने वाला बगाल का चिटगाव पहाडी क्षेत्र जिसकी जनसख्या मे ९० प्रतिशत से अधिक बौद्ध थे पाकिस्तान को दे दिया गया। सरदार पटेल ने इसका विरोध किया परन्तु प० नेहरू ने हथियार डाल दिये और चकमा लोगो को उनकी इच्छा के विरुद्ध पाकिस्तानी भेडियो के मुह मे डाल दिया गया।

पश्चिमी क्षेत्र मे भी ऐसा ही हुआ। थरपारकर सिन्ध का सबसे बडा जिला था। यह राजस्थान के जोधपुर क्षेत्र के साथ लगता था। वास्तव मे यह जोधपुर रियासत मे ही पडता था। जोधपुर के महाराज ने इस पट्टे पर अग्रेजो को दिया था। भारत छोडने स पूर्व यह जोधपुर रियासत को वापस मिलना चाहिए था। इसकी जनसख्या मे ८० प्रतिशत से अधिक हिन्दू थे। जिस आधार पर सिलहट को आसाम से काट कर पाकिस्तान को दिया गया था उसी आधार पर इस सिन्ध स काटकर भारत को देना चाहिए था। ऐसा हो गया होता तो यह भारत के अतर्गत छोटा सा सिन्ध प्रदेश बन सकता था और सिन्ध स आये हिन्दू विस्थापित इसमे बसाये जा सकते थे। परन्तु काग्रस [illegible] न इसकी माग भी [illegible]। इस कारण यह पाकिस्तान को मिल गया। तब से वहा क हिन्दुओ पर अत्याचार हो रहे है [illegible] उनकी सख्या ८[illegible] प्रतिशत स कम होकर १[illegible] प्रतिशत स भी कम रह गयी है। [illegible] बलात मुसलमान बना लिया गया है [illegible] अपने घरो से खदेड कर शरणार्थी क रूप म भारत म आने पर बाध्य कर दिया गया है।

लाहोर रावी नदी जो पजाब क उत्तर भाग मे पाकिस्तान ओर भारत क बीच सीमा बनाती है के पूर्वी तट पर बसा हुआ है और अमृतसर जिल्ला के साथ लगता है १९४७ मे यह हिन्दू बहुल था और इसकी ८५ प्रतिशत सम्पत्ति के मालिक हिन्दू सिख थ। रेडक्लिफ आयोग के दिये गये मार्गदर्शक सिद्धातो क अनुसार यह भारत को मिलना चाहिये था। रेडक्लिफ आयोग के सामने भारत का पक्ष न्यायमूर्ति मेहरचन्द महाजन जो बाद म भारत के उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश बने ने रखा था। वे आश्वस्त थे कि लाहोर भारत को मिलेगा परतु उन्हे डर था कि राजनतिक दबाव म आकर लार्ड माउटबटन के इशारे पर रेडक्लिफ लाहौर पाकिस्तान को दे सकता है। इसलिए श्री महाजन ने अपने पत्र के साथ एक विशेष दूत प० नेहरू के पास भेज कर उनस प्राथना की कि वे सतक रहे ओर माउटबेटन पर दबाव डाल कि लाहोर भारत का ही मिले। ऐसा करने के बजाय प० नेहरू ने श्री महाजन को कहलवा भेजा कि "कोई नगर पाकिस्तान को मिले या भारत को इससे क्या फर्क पडता है?" इससे स्पष्ट हो गया कि प० नेहरू को भारत के हिता की चिता नही थी।

क्रमशः
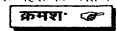
महर्षि दयानन्द और दीपावली

-पं० नन्दलाल "निर्भय" सिद्धांत शास्त्री

दीपावली क अथ हे दीपा की माला। यह त्योहार आयावर्त (भारत) का प्राचीनतम पर्व है। यह कार्तिक मास की अमावश को सारे देश मे हर वष बडी धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। प्राय यह कहा जाता है कि अयोध्या पति वेदिक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी लका के महावली राजा रावण को दशहरा के दिन युद्धक्षत्र मे हराकर करके दीपावली के दिन वापिस अयोध्या लोटे थे तथा अयोध्या निवासियो ने श्री राम के आगमन की खुशी मे घी के दीप जलाए थ तभी स यह त्यौहार-समस्त ससार मे मनाया जाता हे।

उपरोक्त कथन मे रत्ती भर भी सच्चाई नहीं है क्योकि रामायण मे साफ बताया गया है कि श्री रामचन्द्र ने रावण को चैत्र मास की चौदस को मारा था। श्री रामचन्द्र जी रावण के पुष्पक विमान मे बठ कर अयोध्या लोटे थे तो विचारणीय प्रश्न है कि क्या श्री राम विमान को पाच महीने के लम्बे समय तक आकाश मे ही घुमाते रहे थ। वैसे भी उन्हे शीघ्र अयोध्या लौटना था क्योकि भरत ने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि अगर श्री राम एक दिन भी दरी से आए तो मैं जल कर भस्म हो जाऊँगा। श्री राम का भारत से अगाध प्रम था यह बात सारा विश्व भली भाति जानता ह।

सच त यह हे कि दशहरा दीपावली रक्षा बन्धन होली ये भारत के प्राचीनतम पर्व ह त। ये आदि काल से आर्यावर्त्त मे धूमधाम स मनाए जाते हैं। इन पर्वो का अपना अपना अलग अलग महत्व है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हमारी खाई हुई वैदिक सभ्यता सस्कृति को हमे खाज कर दिया। अन्यथा आज कही भी कोई श्री राम श्री कृष्ण ऋषियो मुनियो का नाम लेने वाला नजर नही आता।

महर्षि दयानन्द ने ही सबसे पहले स्वराज्य की घोषणा की थी। सन १८५७ की क्रान्ति (सग्राम) की प्रेरणा स्रोत स्वामी दयानन्द ही थे। नाना साहब तात्या टोपे महारानी लक्ष्मी बाई राव तुलाराम वीर कुवर सिह आदि को महर्षि दयानन्द ने ही इक्टठा करके अग्रेजो के विरुद्ध लडाया था।

काग्रेस के गर्म दल के मुख्य नेता श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा नर्म दल के प्रधान नेता श्री गोपाल कृष्ण रानाडे वीर क्रान्ति कारियो के जनक अर्जुन सिह (भगत सिह के दादा) महर्षि दयानन्द के ही शिष्य थे जिन्होने अग्रेजो को नाकों चने चबा दिये थे।

अछूतोद्वार पाखड खडन स्त्री शिक्षा बाल विवाह का विरोध जन्म जातिवाद का खण्डन वैदिक धर्म का प्रचार स्वभाषा की प्रेरणा आदि सामाजिक एव राजनैतिक जागरण करना स्वामी जी का ही काम था।

काग्रेस का जन्म सन १८८५ ई० मे हुआ था जबकि महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना सन १८७५ ई मे ही कर दी थी। अग्रेज कहा करत थ कि जहा जहा आय समाज है वहा वहा क्रान्ति है। महात्मा गाधी को भारत का राष्ट्र पिता माना जाता है तो महर्षि दयानन्द सरस्वती को भारत का पितामह माना जाना चाहिए।

प्राय लोग यह कहते है कि जगन्नाथ ने नन्हीं जान वेश्या के बहकावे म आकर महर्षि दयानन्द सरस्वती को दूध मे मिला कर विष दिया था किन्तु इसमे रहस्य छिपा हुआ है वस्तुत बात कुछ और हे जिस पर विशेष ध्यान देने की जरूरत ह।

अग्रेज चाहते थे कि किसी भी प्रकार दयानन्द का जीवन समाप्त हो। उनको नन्ही जान ओर जगन्नाथ दाना साधन मिल गए। उन्होने अवसर का लाभ उठा कर नन्ही जान को बढावा देकर जगन्नाथ के द्वारा महर्षि को दूध मे काच पिलवा दिया। इसमे राजा यशवन्त सिह भी शामिल थे।

स्वामी जी न जगन्नाथ का कुछ धन देकर जोधपुर स भगा दिया। इस प्रकार अपना दयानन्द नाम सार्थक कर दिया।

काच उनके सार शरीर मे फल गया। उनके शरीर पर फफोले हो गए। दिन मे अस्सी बार तक दस्त होने लगे। डाक्टर भगवान दास के इलाज स उन्हे आराम होने लगा ता अग्रजो न उसका तबादला कर दिया तथा डाक्टर अली मर्दान खा न उन्हे दवाई की जगह जहर के इजेक्शन लगाये। यह सब पापी अग्रेजो के इशारे पर ही हुआ।

स्वामी जी फिर भी घबराए नही। वे लगभग एक महीने तक मृत्यु से जूझते रहे। अन्य कोई होता तो पाच मिनट मे ही मर जाता। यह ब्रह्मचर्य और योग का ही चमत्कार था।

दीपावली के दिन उन्होने स्नान किया तथा सध्या हवन के पश्चात हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो तूने अच्छी लीला की यह कह कर शरीर त्याग दिया। इस अदभुत दृष्य को देखकर गुरु दत्त जेसा नास्तिक युवक आस्तिक बन गया जिसने आर्य समाज का भारी प्रचार किया।

महर्षि दयानन्द जी महान धर्मात्मा वेदो के प्रकाण्ड पडित व त्यागी तपस्वी थे जिन्होने जीवन भर वेदो का प्रचार व पाखण्ड का खण्डन किया। वे ससार का हित चाहते थे। परापकार ही जिनका ध्येय था। ऐसा महान व्यक्ति योगीराज कृष्ण के पश्चात कोइ नहीं आया। वास्तव मे वे दया के सागर थे।

महर्षि के निर्वाण दिवस पर हम सभी को यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम ईमानदारी से अपना जीवन बिताएगे तथा सकल विश्व म वेदो का पावन सन्देश पहुचाएगे। इसी मे ससार की भलाई है। प्रभु हम आर्यो का बल बुद्धि साहस प्रदान कर।

ग्राम व पो बहीन जि० फरीदाबाद (हरियाणा)

प्रश्न और उत्तर

श्री राधेश्यान शर्मा प्रगल्भ

है कान सा गाव हे जहा प्यार ही प्यार हो
ह गली कौन सी हो न पीडा जहा ?
है कोन सी वाटिका हो जहा सुमन ही सुमन
जो झर ही नहीं वह सुमन ह कहा ?
गॉव परहित बसा प्यार ही प्यार है
त्याग ह वह गली है न पीडा जहा।
साधना वाटिका मे है सुमन ही सुमन
जो झरे ही नहीं है वह सुमन आत्मा।
है कौन सा है सदन हो जहा रुदन ही नहीं
है कौन सा खेल है जहा जीत ही जीत हो ?
कहीं एक भी आदमी मैने देखा नहीं
जिसके दुश्मन न हो मीत ही मीत हो ?
है अहिसा-सदन मे रुदन लापता
प्यार है खेल वह हार-भी जीत है।
एक दुश्मन 'अहम् का अगर जीत ले
तो यहाँ से वहाँ तक सभी मीत है।
है कौन सा देश मे जहा सूर्य ढलता नहीं
है कौन से देश मे रूप छलता नहीं ?
है जलन कौन सी जो कभी न खले
है कौन सा हृदय जो कि जलता नहीं ?
सत्य के देश मे सूर्य ढलता नही।
स्वास जाए छली रूप छलता नही।
याद है वह जलन जो कभी न खले
एक मॉं का हृदय है जो जलता नहीं।

ब्रह्मपुर में वेद-प्रचार उत्सव

आर्यसमाज वेद प्रचारिणी सभा ब्रह्मपुर की ओर से त्रीदिवसीय वेद पारायण यज्ञ तथा प्रवचन २८ ९ ९९ से ३०-९ ९९ तक सम्पन्न हुए। यज्ञ तथा प्रवचन में प्रत्येक बहु नर नारी योग दान दे कर यज्ञ एव वेद प्रवचन से अनुप्राणित हुए। इस कार्यक्रम मे प० डा० देवव्रत तथा उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के मत्री प० वीरेन्द्र पण्डा ने योग दे कर अपने विचार प्रकट किए। अनन्तर पत्रकार सम्मेलन मे आर्यसमाज के विचारो पर आलोचना की गई। कार्यक्रम मे ब्रह्मचारी सनातन श्री माची राम पाढी एव श्री प्रफुल्ल दास ने अपना योगदान दिया।

वीरेन्द्र कुमार पाण्डा
मला उत्कल आय्र प्रतिनिधि सभा

तमसो मा ज्योतिर्गमय

इसका यह कतई मतलब नहीं कि हम जुए जैसे शार्टकट से धन की कमाई करने का लोभ पाले। भारतीय सदर्भ मे देखे ता दीवाली का आगमन तब होता है जब खेतो मे खरीफ की फसल खडी हो जाती है धान की बालिया झूमने लगती हैं। इसी तरह दुकनदार और व्यवसायी नई फसल को देख पिछले साल के नफा—नुकसान का हिसाब करता है और नए साल के लिए खाता खोलता है। इसी आशय से लक्ष्मी—गणेश की पूजा कर शुभ लाभ की अर्चना की जाती है। इस सबके पीछे शुद्ध मेहनत की महक होती है और इसी की छटा दीपावली मे फूटती है। तो भला इस जुए के नशे मे हम क्यो डूबे ? बगैर परिश्रम के पसीना बहाए समृद्धि का कोई दीप जल नहीं सकता। तो दीपावली इस बात का सदेशवाहक बने कि हम धन दौलत के लिए शार्टकट अपनाने की भूल न करे।

दीपावली ज्योति का पर्व है। इसकी अनुपम छटा को तो वही निहार सकते हैं न जिनके पास आखो की ज्योति हो। लेकिन अपने देश मे लाखो लोग ऐसे हैं जो नेत्रहीन हैं। इनमे से अधिकाश के जीवन का अधियारा मिट सकता है यदि हम जीवनोपरान्त नेत्रदान करने का प्रतिज्ञा पत्र भर दे। यह एक महान ज्योति अनुष्ठान होगा। हमारे नेत्रदान से जिन आखो मे ज्योति जलेगी वे पवित्र दिवाली का जगमग चेहरा देख सकेगे सृष्टि के बहुरगी नजारे को देख सकेगे। तो क्यो न दीपावली को हम नेत्रदान कर महान यज्ञ बना ले। इस दिन हम प्रतिज्ञा पत्र भर कर एक नया दीप जलाए। यह तो हुई आखो की जोत। लेकिन जब तक शिक्षा और ज्ञान का दीप नहीं जलता तब तक सही मामले मे जीवन का अधेरा नहीं छटता। हमारे देश मे निरक्षर लोगो की विशाल आबादी है। उनमे हम अक्षरदीप जलाए।

सचमुच दीपावली एक साधारण पर्व नहीं है। यह जीवन बाती को प्रज्ज्वलित करने का उत्सव है। एक यज्ञ है यह और इसके लिए समिधा जुटानी होगी। हर किसम के अधेरे से कुरीतियो और अन्याय से अज्ञान व अनर्थ से मुक्ति का पर्व है यह। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का महान अनुष्ठान।

प्रणय कुमार सुमन

पृष्ठ ५ का शेष

आर्य समाज एवं राष्ट्रकवि रामधारी सिह दिनकर

कन्या शिक्षा और ब्रह्मचर्य का आर्य समाज ने इतना अधिक प्रचार किया कि हिन्दी प्रान्तो मे साहित्य के भीतर एक प्रकार की पवित्रतावादी भावना भर गयी और हिन्दी के कवि कामिनी पारी की कल्पना मात्र से घबराने लगें। पुरुष शिक्षित और स्वस्थ हो नारिया शिक्षिता और सबला हो लोग सस्कृत पढे और हवन करे कोई भी हिन्दू मूर्ति—पूजा का नाम न ले न पुरोहितो देवताओ और पेडो के फेर मे पडे ये उपदेश उन सभी प्रान्तो मे कोई पचास साल तक गूजते रहे जहा आर्य समाज का थोडा बहुत भी प्रचार था।

यह विस्मय की बात है कि स्वामीजी ने सहिताओं को प्रमाण माना किन्तु, उपनिषदो पर वही श्रद्धा नहीं दिखायी। वेद से उनका अभिप्राय केवल चार वेद (विद्या—धर्म—युक्त ईश्वरप्रणीत सहिता मत्र—भाग) और चारो वेदो के ब्राह्मण छह अग छह उपाग चार उपवेद और ११२७ वेदो की शाखा से है। इसी प्रकार युग—युग से पूजित गीता को उन्होने कोई महत्व नहीं दिया और कृष्ण राम आदि को तो परम पुरुष माना ही नहीं। वर्णाश्रम का आधार उन्होने गुण—कर्म को माना। उन्होने 'देव' का अर्थ विद्वान असुर का अविद्वान 'राक्षस' का पापी और 'पिशाच' का अनाचारी माना। पुरुषार्थ को उन्होंने प्रारब्ध से बडा बताया तथा सुख भोग को स्वर्ग तथा दु ख भोग को नरक कहा। यह हिन्दू धर्म की बुद्धिवादी टीका थी यह विज्ञान की कसौटी पर चढे हुए हिन्दुत्व का निखार था।

आर्यवाद का एक दुष्परिणाम

उन्नीसवीं सदी के नवोत्थान से एक और बात निकली जिसका कुफल देश को आज भी भोगना पड रहा है। जब इस्लाम और ईसाइमत से हिन्दुत्व सघर्ष कर रहा था उस समय नेताओं सुधारको और पण्डितों ने हिन्दुत्व की ओर से जो कुछ प्रमाण दिये सस्कृत से लेकर दिये और यह ठीक भी था क्योकि सारे देश मे फैले हुए हिन्दुत्व की भाषा सस्कृत थी। पीछे यूरोपीय इतिहासकार भारत के अतीत का इतिहास तैयार करने लगे उसमें भी मूल उद्धरण सस्कृत से ही आये। किन्तु, स्वामी दयानन्द ने तो सस्कृत की सभी सामग्रियो को छोड कर केवल वेदों को पकडा और उनके सभी अनुयायी भी वेदो की दुहाई देने लगें। परिणाम इसका यह हुआ कि वेद और आर्य भारत में ये दोनों सर्व प्रमुख हो सके और इतिहासवालो मे भी यह धारणा चल पडी कि भारत की सारी सस्कृति और सभ्यता वेदवालों अर्थात आर्यों की रचना है। भारत में जो अनेक जातियों का समन्वय हुआ था उसकी ओर उस समय किसी ने देखा भी नहीं। हिन्दू केवल उत्तर भारत में ही नहीं बसते थे और न यही कहने का कोई आधार था कि हिन्दुत्व की रचना मे दक्षिण भारत का कोई योगदान नहीं है। फिर भी स्वामी जी ने आर्यावर्त की जो सीमा बाधी है वह विन्ध्याचल पर समाप्त हो जाती है। आर्य आर्य कहने वेद वेद चिल्लाने तथा द्राविड भाषाओ में सन्निहित हिन्दुत्व के उपकरणो से अनभिज्ञ रहने का ही यह परिणाम है कि आज दक्षिण भारत मे आर्य—विरोधी आन्दोलन उठ खडा हुआ है। हिन्दू सारे भारत मे बसते हैं तथा उनकी नसो मे आर्य के साथ द्राविड रक्त भी प्रवाहित है। हिन्दुत्व के उपकरण केवल सस्कृत मे ही नहीं प्रत्युत सस्कृत के ही समान प्राचीन भाषा तमिल मे भी उपलब्ध हैं और दोनों भाषाओ मे निहित उपकरणो को एकत्र किये बिना हिन्दुत्व का पूरा चित्र नहीं बनाया जा सकता। इस सत्य पर यदि उत्तर के हिन्दू ध्यान देते तो दक्षिण के भाईयो को वह कदम उठाना नही पडता जिसे वे आज उपेक्षा और क्षोभ से विचलित होकर उठा रहे हैं।

हिन्दुत्व की वीर भुजा

यह दोष चाहे जितना बडा हो किन्तु, आर्य समाज हिन्दुत्व की खडगधर बाह साबित हुआ स्वामी जी के समय से लेकर अभी हाल तक इस समाज ने सारे हिन्दी—प्रान्त को अपने प्रचार से औंट डाला। आर्य समाज के प्रभाव मे आकर बहुत से हिन्दुओ ने मूर्ति पूजा छोड दी बहुतों ने अपने घर के देवी देवताओं की प्रतिमाओ को तोड कर बाहर फेक दिया बहुतो ने श्राद्ध की पद्धिति बन्द कर दी और बहुतो ने पुरोहितो को अपने यहा से विदा कर दिया। जो विधिवत् आर्य समाजी नही बने शास्त्रो और पुराणो मे उनका भी विश्वास हिल गया और वे भी मन ही मन शका करने लगे कि राम और कृष्णा ईश्वर हैं या नहीं और पाषाणो की पूजा से मनुष्य को कोई लाभ हो सकता है या नहीं। आर्य समाजियो ने जगह जगह अपने उद्देश्यानुकूल विद्यालय स्थापित किये जिनमे सस्कृत की विशेष रूप से पढाई होती है और जहा के स्नातक स्वामी दयानन्द के उद्देश्यो के मूर्तिमान रूप बन कर बाहर आते हैं। इन विद्यार्थियों में कन्या ओर युवक ब्रह्मचर्य वास भी करते हैं।

आगे चलकर आर्य समाज ने शुद्धि और सगठन का भी प्रचार किया। सन १९२१ ई० मे मोपला (मालाबार) मुसलमानो ने भयानक विद्रोह किया और उन्होंने पडौस के हिन्दुओ को जबर्दस्ती मुसलमान बना लिया। आर्य समाज ने इस विपत्ति के समय सकट के सामने छाती खोली और कोई ढाई हजार भ्रष्ट परिवारो को फिर से हिन्दू बना लिया। इसी काण्ड के बाद आर्य समाजियों ने राजस्थान के मलकाना—राजपूतों की शुद्धि आरम्भ की जिससे मुस्लिम सम्प्रदाय मे क्षोभ उत्पन्न हुआ और लोग कहने लगे कि आर्य समाजी मुसलमानो से शत्रुता कर रहे हैं। किन्तु शत्रुता की इसमे कोई बात नही है। जब अन्य धर्मवालो को यह अधिकार है कि वे चाहे जितने हिन्दुओ को क्रिस्तान या मुसलमान बना सकते हैं तब धर्म—भ्रष्ट हिन्दुओ को फिर से हिन्दू बना लेने मे ऐसा क्या अन्याय है ? किन्तु, आर्य समाजियो के इस साहस से मुसलमान बहुत घबराये एव भारतीय एकता का सकट कुछ पीछे की ओर घुडक गया।

आर्य समाजियों ने अपने साहस का दूसरा परिचय सन १९३७ ई० मे दिया जब हैदराबाद की निजाम सरकार ने यह फरमान जारी किया था कि हैदराबाद राज्य मे आर्य समाज का प्रचार नहीं होने दिया जायेगा। इस आज्ञा के विरुद्ध आर्य समाजियो ने सत्याग्रह का शस्त्र निकाला और एक-एक करके कोई बारह हजार आर्य समाजी सत्याग्रही जेल चले गये।

ईसाइयत और इस्लाम के आक्रमणो से हिन्दुत्व की रक्षा करने मे जितनी मुसीबते आर्य समाज ने झेली हैं उतनी किसी और सस्था ने नहीं। सच पूछिए तो उत्तर भारत मे हिन्दुओ को जगा कर उन्हे प्रगतिशील करने का सारा श्रेय आर्य समाज को ही है। पडित चमूपति ने सत्य ही कहा है कि आर्य समाज के जन्म के समय हिन्दू कोरा फुसफुसिया जीव था। उसके मेरुदड की हड्डी थी ही नहीं। चाहे कोई उसे गाली दे उसकी हसी उडाये उसके देवताओ की भर्त्सना करे या उसके धर्म पर कीचड उछाले जिसे यह सदियो से मानता आ रहा है फिर भी इन सारे अपमानो के सामने वह दात निपोर कर रह जाता था। लोगो को यह उचित शका हो सकती थी कि यह आदमी भी है या नहीं इसे आवेश भी चढता है या नहीं अथवा यह गुस्से मे आकर प्रतिपक्षी की ओर घूर भी सकता है या नहीं। किन्तु, आर्य समाज के उदय के बाद अविचल उदासीनता की यह मनोवृत्ति विदा हो गयी। हिन्दुओं का धर्म एकबार फिर जगमगा उठा है। आज का हिन्दू अपने धर्म की निन्दा सुनकर चुप नहीं रह सकता। जरूरत हुई तो धर्म रक्षार्थ वह अपने प्राण भी दे सकता है।

वर्तमान मे विश्व हिन्दू परिषद के माध्यम से भारतीय सस्कृति व गो हत्या बन्दी गो सवर्द्धन कार्यार्थ जन जागरण द्वारा भारतीय जनता को जागृत करने का कार्य राष्ट्रव्यापी स्तर पर किया जा रहा है यह अनुकरणीय है।

सकलनकर्ता
स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती
अध्यक्ष समर्पण शोध संस्थान
४ ४२ सेक्टर ५ राजेन्द्र नगर
पोस्ट साहिबाबाद (उ०प्र०

पुस्तक-समीक्षा

राष्ट्रीयता (हिन्दुत्व) की हुंकार : ग्यारहवीं लोक सभा

लेखक विराज
प्रकाशक सूर्य भारती प्रकाशन नई सडक दिल्ली ६
पृष्ठ १२०
मूल्य ४० रुपये

प्रस्तुत पुस्तक मे ग्यारहवीं लोकसभा के चुनाव से पहले देश की राजनीतिक स्थिति राजनीतिक नेताओ की उखाड पछाड चुनावो के समय निर्वाचन आयोग की भूमिका चुनावो के परिणाम भा०ज०पा० सरकार के गठन अविश्वास प्रस्ताव के बाद सरकार के पतन और सयुक्त मोर्चा सरकार के गठन पर सक्षेप मे प्रकाश डाला गया है। लेखक ने यह विचार प्रकट किया है कि इस चुनाव के बाद जो नई लोकसभा बनी उसमे भा०ज०पा० सबसे बडी पार्टी थी और यह राष्ट्रीय तत्वो की विजय की भूमिका थी। विजय पूरी नहीं हो पाई परन्तु भविष्य के लिए निश्चित विजय की सूचना अवश्य मिल गई। छद्म–निरपेक्ष दलो के जी–तोड प्रयत्न के बाद भी राष्ट्रीय (जिसे लेखक ने हिन्दुत्व का समानार्थक माना है) शक्ति सबसे बडे दल के रूप मे उभरी यह बडी बात थी। राजनीति मे यह एक बडा मोड था।

पुस्तक के एक अध्याय मे राष्ट्रीय और अराष्ट्रीय तत्वो का विवेचन है जिससे बहुतो को मतभेद हो सकता है। एक अध्याय मे धर्म–निरपेक्षता की मीमासा है। एक मे काग्रेस शासन मे हुए बडे घोटालो का वर्णन है। एक अध्याय मे प्रमुख नेताओ पर सक्षिप्त टिप्पणिया हैं।

पुस्तक सक्षिप्त सटीक रोचक और ज्ञानवर्धक है। हिन्दुत्व प्रेमियो को विशेष रूप से रुचिकर लगेगी।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ☆

ईशादि नौ उपनिषद

(काव्यानुवाद) *मूल्य* १०० रुपया *पृष्ठ* १९६
काव्यानुवादिका डा० मृदुला कीर्ति
प्रकाशक दि कोआप टाइम्स डी०६४ साकेत नई दिल्ली–१७

डा० मृदुला जी का यह कथन कि उपनिषदो के चिन्तन से वह अमृत नि सृत है जिसके उच्चारण मात्र के आर्षरस मे तन मन आप्लावित हो जाता है।

उपनिषदो के प्रति–भारतीय मनीषियो का सहज आकर्षण देखा गया हैअत श्रुति के मूल में कर्मत्याग लक्षण। विशुद्ध ज्ञानात्मिका सन्यास निष्ठा ही प्रधान बनी हुई है। उपनिषद् जैसा विविध विविध विद्या भण्डारात्मक मौलिक साहित्य अपनी मौलिकता से प्रमाणित हो चुका है।

परन्तु काल क्रमेण कुछ काल्पनिक "कलिसन्तरणोपनिषद व अल्लोपनिषद् आदि की भाति उपनिषद शास्त्र पाठ पारायण मात्र ही रह गया है। उपनिषद् साहित्य को काल्पनिकी साख्यानिष्ठा के व्यामोहन से विस्मृत करा देने वाली महती भ्रान्ति के निराकरण हेतु यह आवश्यक है कि इस मत्र ब्राह्मणात्मक वेद शास्त्र के महत्त्वपूर्ण उपनिषद भाग पर आर्ष प्रज्ञा का ध्यान दिलाया जाये। आर्य समाज अन्य विद्वानो ने समय समय पर उपनिषदो की विषद् व्याख्याये जन–सामान्य हेतु की हैं उससे जन–सामान्य की बौद्धि चेतना प्रबुद्ध हुई हैं

डा० मृदुला कीर्ति उसी परम्परा का निर्वहण कर सारगर्भित एव सुस्पष्ट हिन्दी पद्यानुवाद प्रस्तुत कर प्रत्येक उपनिषद का सरस एव सरल उपनिषद जिज्ञासु व्यक्ति के लिये अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होगा। काव्य शैली स्वाभाविक है।

छन्दोवद्ध कार्य भाषा सौष्ठव काव्य मे अच्छा उदाहरण प्रस्तुत है। यथा इहचदेवेदीथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदि महती विनष्टि ।। का भाव प्रदर्शन अर्थ गाम्भीर्य पठनीय है। दुर्लभ दु साध्य है मनुज जीवन वेद वर्णित सत्य है। इसी जन्म मे ब्रह्मलीन हो अमर होने का तथ्य है।

यह काव्य सरचना पढकर प्रबुद्ध वर्ग आध्यात्मिक अभिरुचि रखने वाले इस पुस्तक का स्वागत करेगे। उपनिषद प्रेमियो की सुविधा के लिये ही हिन्दी के पद्यो मे रचना की है। गद्य से हटकर पद्यमय रचना अपने मे अद्भुत है।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

शोक समाचार

महात्मा विद्या भिक्षु की पुण्य-तिथि

सिरसा गज १७ १०-९६। आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला–मैनपुरी व फिरोजाबाद उ०प्र० के वर्षो तक निर्विरोध रूप से चुने जाते रहे–प्रधान तथा आगरा मण्डल के सवात्मना समर्पित वरिष्ठ आर्य नेता महात्मा विद्याभिक्षु जी वानप्रस्थ पूर्व नाम–महाशय विद्या राम जी आर्य की प्रथम वर्षी तथा द्वितीय पुण्य–तिथि दि० १६ व १७-१०-९६ को उनके स्थानीय प्रतिष्ठान–विद्याराम ओ३म शरण दाल मिल्स मे समारोह पूर्वक आयोजित की गई जिसमें उनके परिजनों सम्बन्धियो के अनन्तर आगरा मण्डल के अनेक आर्य विद्वानो व नेताओ तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के मुख्यानिरीक्षक एव व० उप मत्री कुध्रुव पाल सिह जी अटल आदि ने भाग लिया और उन्हे सत्य निष्ठ स्थिर प्रज्ञ वीतराग तपस्वी याज्ञिक महामना और निष्काम समाज सेवी आदि सज्ञाओं से सम्बोधित करते हुए भाव-भीनी श्रद्धान्जलिया दीं। महात्मा जी की पुण्य स्मृति मे उनके एक मात्र सुपुत्र श्री ओ३म शरण जी के द्वारा समारोह के दोनो दिनो मे आर्य–मान्यताए नामक पुस्तक का सप्रीति वितरण तथा आर्योचित प्रीति भोज तथा सम्बल का आयोजन भी रहा

सत्य मधुर वाणी होनी चाहिए

धर्म सिंह शास्त्री, डबल एम०ए०

सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। वेद सत्य विद्याओ का पुस्तक है वेद का पढना-पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।' सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। सब कार्य धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए आदि आदि आर्य समाज के नियमो मे सबको सकल्प लेकर इन नियमो का पालन करना होता है। *ऋग्वेद १०/ १९२/ २* मे कहा है –

ओ३म् सगच्छध्व सवदध्व सवोमनासि जानताम्।
देवाभाग यथा पूर्वे सजानाना उपासते।।

अर्थात मिलजुलकर चलो मिलजुलकर सभाषण करो जैसे तुम्हारे पूर्वज विद्वान मिलजुल कर विचार करते हुए सदाचरण करते आए हैं।

किन्तु इसका पालन कोई कर रहा है ? हा बहुत कम लोग ही इसका पालन कर रहे हैं। हिन्दू आर्य जाति में अन्धविश्वास एव रूढिवादिता का बोलबाला अब भी विद्यमान है जिसका सम्बन्ध असत्य वाणी एव सत्य वाणी से है। उदाहरण इस प्रकार दे रहा हू –

कागा काको धन हरे कोयल काकू देत।
तुलसी मीठे वचन से जग अपनो करि लेत।।

क्या बेचारा कौवा किसी का कुछ लेता है ? यदि नही तो फिर लोग उसे आराम से अपने घरों की छतो पर मुडेरो पर क्यो नही बैठने देते ? घृणा यहा तक बढ गई है कि उसके दर्शन को भी अपशकुन समझा जाने लगा है। किसी शुभ कार्य पर जाने के लिए लोग पहले बाहर देखते हैं कि बाहर कौआ तो नहीं बैठा है ? आखिर यह अन्धविश्वास और रूढिवादिता कब तक रहेगी ?

इसके विपरीत कोयल समाज को क्या देती है ? समाज उसकी वाणी को प्रिय और दर्शनों को प्रिय क्यो समझता है। सोने के पिजडो मे बन्द होकर कोयल राज दरबार की शोभा बढा सकती है तो क्या कौवा को पिजडे मे बन्द करके किसी झोपडी मे चार चाद लगाने का अधिकार नही ? यह व्यवहार व विभेद प्राणी के गुण और अवगुणो पर ही आधारित है। मधुर वाणी से पशु पक्षी भी प्रिय बन सकते हैं। **'प्रिय ब्रूयात'** मधुर भाषण से मनुष्यों के समाज मे आदर होता है। तुलसीदास ने लिखा है –

वशीकरण एक मत्र है, तज दे वचन कठोर।
तुलसी मीठे वचन से सुख उपजत चहु ओर।।

अहकारी व्यक्ति कभी मधुर भाषी नहीं हो सकता। दूसरे के हृदय को दुखी करने में वह अपना जीव बहलाव समझता है – कहा गया है कि–

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपौ शीतल होय।।

मधुर भाषी सदैव ध्यान रखता है कि –

मेल प्रीति सब सौ भली, बैर न हित मित गोत।
रहिमन या ही जनम में बहुरि न सगत होत।।

मृदुभाषी समाज मे मानव समाज के कल्याण के लिए सद्भावना और सह–अस्तित्व का सचार करता है और तभी वह समाज मे सहयोग दे सकता है। कटुभाषी के लिए तुलसीदास ने यह दवा बताई है –

खीरा को मुख काटि के मलिए लोन मिलाय।
तुलसी कडुवे मुखन की चहिए यही सजाय।

जिस प्रकार खीरा नाम का फल मुख से कडुवा होता है और उसकी कडवाहट दूर करने के लिए उसका मुख काटकर नमक से रगडा जाता है उसी प्रकार कडुवे मुख वाला मनुष्य तभी मधुरभाषी बन सकता है जब उसकी मुख की रगडाई हो सके। कबीर ने लिखा है –

मधुर वचन है औषधि कटुक वचन है तीर।
श्रवण द्वार से सचरै सालै सकल शरीर।।

सील वन्त सबसे बडा सर्व रतन की खानि।
तीन लोक की सम्पदा, रही शील में आनि।।

सत्य बात के लिए देखिए गुप्त जी ने लिखा है

जहा ज्ञान है कर्म है भक्ति है भरी कर्म में ईश्वरीय शक्ति है।
जहा भक्ति में मुक्ति का धाम है, जहा मृत्यु के बाद भी नाम है।
जहा साधना क्षेत्र ससार है मनुष्यत्व ही मुक्ति का द्वार है।।

सस्कृत के विद्वानो ने भी लिखा है –

गुणो भूषयते रूप गुणो भूषयते कुलम्।
गुणो भूषयते विद्या, गुणो भूषयते धनम्।।

आदर्श गुण से मनुष्य के रूप की कुल की विद्या की और मानव धन की शोभा होती है। हमारे समाज मे असत्य भाषण सबसे बडी समस्या कह सकते हैं इसी लिए इस दोहे मे कहा है –

साच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय साच है, ताके हृदय आप।।

झूठ बोलने से कभी भी विजय नहीं होती है सत्य बोलने से सिद्धिया और साधना प्राप्त होती है इसीलिए कहा भी गया है –

सत्यमेव जयते नानृतम अथवा सत्येन रक्ष्यते धर्म। सदैव सत्य की ही विजय होती है असत्य की नही और सत्य से ही धर्म की रक्षा की जा सकती है। असत्य से हृदय सदैव अशान्त ही बना रहता है उसको कभी भी सुख नही मिल सकता। **अशान्तस्य कुत सुखम्** ?' आज भी इस कडी को पढकर और विचार कर हम अपने पूर्वजो पर गर्व अनुभव करते हैं जैसे –

चन्द्र टरै सूरज टरै, टरै जगत व्यवहार।
पै दृढ व्रत हरिश्चन्द्र को टरै न सत्य विचार।।

और यह भी

रघुकुल रीति सदा चली आई। प्राण जाय पर वचन न जाई।।

हम सब मानव प्राणियो का पुनीत कर्त्तव्य हो जाता है कि अपने जीवन मे सत्य को ग्रहण करे और असत्य को छोडने मे तत्पर रहे। सत्य भाषण करे असत्य वार्ता न करे। सदैव सत्य पथ पर चले। सत्य बातो से हमे जीवन की सभी समृद्धिया सुलभ हो सकती है। इस समाज का कल्याण करने वाले बन सकते हैं। शैक्सपीयर ने कितनी बडी कहावत लिखी है कि 'जबतक जीवित रहो तबतक सत्य बोलो और ईश्वर से डरो। सत्य मार्ग से मनुष्य सन्मार्ग पर रहता है वह पथ भ्रष्ट और चरित्र भ्रष्ट नही होता उसके जीवन मे अशान्ति और असन्तोष नही होता।

महामत्री
आचलिक गढवाल आर्य समाज दिल्ली
डब्ल्यु पी० ६६ ए मौर्य इन्क्लेव
पीतमपुरा दिल्ली–११००३४

शोक समाचार

श्री वा०रघुनन्दन स्वरूप दिवंगत

पुरानी पीढी के कर्मठ क्रियाशील आर्यनेता श्री वा० रघुनन्दन स्वरूप जी एडवोकेट का लम्बी बीमारी के बाद देहावसान हो गया। उत्तर प्रदेशीय सभा के प्रधान भी रहे और मेरे प्रचार विभाग के अधिष्ठाता भी रहे।

मिलनसार सरल स्वभाव विनम्र रहकर सारा जीवन आर्य समाज की सेवा मे बिताया। आपकी सह धर्मिणी स्व० श्रीमती शकुन्तला गोयल भी कमठ महिला कार्यकर्त्री थीं जिन्होने वर्षों पूर्व आपका साथ छोडकर स्वर्गवासी हो गई थी। वा० रघुनन्दन स्वरूप जी का जीवन अब एकाकी था। भाई भतीजो के साथ अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे।

आर्य समाज सदर के प्राण थे। आर्य समाज मे एक बच्चो का विद्यालय भी चला रहे थे उसके भी आप प्रमुख अधिकारी थे। उनके विद्यालय मे मेरठ जनपद ने एक निष्ठावान कार्यकर्त्ता अपने से खो दिया। पुरानी पीढी मे वह अपने व्यक्तित्व के विचित्र स्वभाव वाले आर्य नेता थे। उनके अवसान से जनपद मेरठ ही नहीं प्रदेश का आर्य समाज शून्यता को प्राप्त हो गया।

उनकी आत्मा को सदगति मिले और पारिवारिक जनों के वियोग जन्य दुख मे हम सभी भी उनके दुख मे सहभागी हैं।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

एक और भी चले गये

श्री ओम प्रकाश मित्तल भी स्वर्गवासी हो गये

मेरठ जनपद का प्रतिष्ठित आर्य परिवार श्री रामचन्द्र मित्तल बस स्टैन्ड के सामने स्थित हैं उन्हीं के परिवार मे श्री ओम प्रकाश जी मित्तल सुयोग्य सुपुत्र थे। हसमुख स्वभाव मिलन सार व्यक्ति थे। उनके देहावसान से आर्य समाज सदर ही नहीं अपितु मेरठ जनपद से एक अच्छे व्यक्ति के चले जाने से आर्य समाज मे अभाव अखरेगा।

भवन के सामने के मैदान मे स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती के आगमन पर स्व० वा० कालीचरण जी आर्य स्व० वा० जयदेव सिह जी एडवोकेट वा श्यामलाल जी वा रघुनन्दन स्वरूप सभी आर्य नेताओं का जमघट हो जाता था। पूरे आर्य समाज की राजनीति व समाज की गतिविधियों का लेखा जोखा उस परिवार मे बैठकर लिया जाता था। आज अभाव खलेगा।

मुझे अपने जीवन काल मे इस परिवार से बडी ही आत्मीयता थी मेरी ही नहीं सभी आगन्तुक जन उस घर मे सम्मान पाते थे।

आर्य महासम्मेलन मे श्री ओम जी भ्राता श्री शम्भो जी एडवाकेट दिखाई तो दिये परन्तु वार्तालाप न हो सका। और इस दुखद वियोगजन्य घटना पर अपनी शोक सम्वेदना तक न दे सका।

श्री ओम जी आप तो गये हम सब भी जायेगे परन्तु आपके सदव्यवहार शालीन स्वभाव की प्राप्ति से सदा ही वञ्चित रहेगे। आपकी आत्मा को सदगति मिले और समूचे परिवार को इस दुख मे मैं भी अपने को सम्मिलित करके सम्वेदना प्रकट करता हू।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

हा हन्त हन्त

भाई शिवाकान्त जी उपाध्याय

आप भी चले गये ?

अकस्मात प्रात १० बजे प्रिय वाचस्पति ने फोन पर दुखद समाचार सुनाया। मुझे वह चाचाजी से सम्बोधित करते हैं। बोले– चाचाजी श्री शिवाकान्त चाचाजी भी हम सभी को छोडकर स्वर्गवासी हो गये। इस समाचार से मैं हतप्रद रह गया। अभी कल ही उनके पुत्र के विवाह का निमन्त्रण पत्र मिला था अरे यह क्या हो गया।

क्षणभगुर जीवन की कलिका – बैठे बैठे अल्प समय मे प्राण पखेरू उड गये। हसता खिलता चेहरा मुर्झा गया। दोपहर के बाद सुदर काया श्मशान घाट पर आग की लपटो मे मन्त्रोच्चारण के साथ राख हो गयी। सारी योजनाये धूलधूसरित होकर स्वप्नवत बन गई। जो व्यक्ति दूसरो के लिये उपदेशक था आज उसी के लिए शोक सम्वेदनाओ का सन्देश वाहक बन गया। हा–हन्त–हन्त ! नलिनी गज उज्जहाट।

सोचे विचारे सारे कार्य धरे के धरे ही रहे गये। तुमतो गये हम सब को भी चले जाना है। पर कुछ कहकर तो जाते अब भाई उमाकान्त उपाध्याय आपके पीछे क्या सलाह देगे। ठीक है मृत्यु अवश्यम्भावी है आप चिर निद्रा में चले गये आप को सदगति मिले और हम सभी आत्मीय जन आपके परिवार के साथ दुख के भागीदार बने।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

पास्टल राजस्ट्रेशन व डा० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 17 11-96 बिना टिकट भजन का लाइसेंस न० U(C) 93/96
R N No 626/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 14/15-11 1996

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली का ७४वा वार्षिकोत्सव सोमवार १८ नवम्बर ९६से रविवार २४ नवम्बर ९६ तक समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। वार्षिकोत्सव मे वेदकथा तथा ब्रह्मा के लिए आचार्य मदन मोहन जी विद्यासागर हैदराबाद वाले तथा भजनोपदेश के लिए श्री सोहन लाल जी पथिक पलवल वाले को आमन्त्रित किया गया है। अत दिल्ली/नई दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो से प्रार्थना है कि अपने सत्सग स्थगित करके तथा उपरोक्त तिथियो मे अपनी आर्यसमाजो मे अन्य कोई कार्यक्रम आयोजित न करके आर्यसमाज हनुमान रोड के वार्षिकोत्सव मे सम्मिलित होकर एकता का परिचय दे।

गुरुकुल शुक्रताल का ३२वा वार्षिकोत्सव २२ से २५ नवम्बर तक अपूर्व धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। महोत्सव में श्री स्वामी कल्याण देव जी पद्म जी स्वामी चन्द्र देव स्वामी दीक्षानन्द प्रो० सत्य देव जी वर्मा प० हरवश लाल जी शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब प० सुन्दर लाला शास्त्री सतीश सुमन सुभाष राही सहदेव जी बेधडक हवा सिह तूफान सत्य वीर सिह जी ए०डी०एम० आदि अनेक उच्चकोटि के सन्त विद्वान नेता पधार रहे है।

महोत्सव मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ भगवत मुनि जी की अध्यक्षता मे होगा। ब्रह्मचारी शिवराज शास्त्री के द्वारा शक्ति प्रदर्शन होगा जिसमे सरिया मोडना कच पीसना कार रोकना जजीर तोडना आदि शामिल हैं। योगासन और ध्यान समाधि का प्रशिक्षण दिया जायेगा।

निवेदक
स्वामी आनन्द वेश
सचालक गुरुकुल शुक्रताल

आर्यवीर भारतीय जयन्ती समारोह

आर्य समाज सावली आदि पचपुरी गढवाल सहायक समिति दिल्ली के तत्वावधान मे विगत वर्षों की भाति इस वर्ष १७ अक्तूबर १९९६ क एच० ५७० लक्ष्मीबाई नगर नई दिल्ली मे साय बजे से आर्यवीर स्वतन्त्रता सेनानी समाज सुधारक स्व० जयानन्द भारतीय जी की ११६ जयन्ती समारोह विशेष अतिथि श्री सूर्यदेव बानप्रस्थ जी की अध्यक्षता मे बडी श्रद्धा के साथ मनाया गया। सभी उपस्थित ऋषिभक्तो ने स्व० आर्य विभूति के कार्यकलापो का स्मरण करते हुए उन्हे अपनी ओर से भावभीनी श्रद्धान्जली अर्पित की उन्होने अपने जीवन का सर्वस्व कार्य ऋषि दयानन्द जी के द्वारा बताये वेद मार्ग पर कमर कसकर चलने का प्रण किया तथा आर्य समाज की यथाशक्ति सेवा मे जुट गए सीधी साधी जनता का मार्ग दर्शन करते हुए उन कन्दराओ मे अनेको कष्ट सहते हुए वेद प्रचार प्रसार मे जीवन प्रयन्त चलते रहे। उन्हीं प्रयासो का फल आज हमारे सम्मुख प्रेरणा का श्रोत बनकर खडा है।

इसके पश्चात स्वामी श्री सूर्यदेव वानप्रस्थ जी ने यज्ञ का सचालन करते हुए सभी आर्य ऋषियो को वेदों मे वर्णित कुछ मूल मत्रो का सविस्तार वर्णन करते हुए सभी को आर्य जगत मे आगे बढने की प्रचार प्रसार करने की प्रेरणा देते हुए स्व० विभूति को श्रद्धान्जली अर्पित की अन्त में शान्ति पाठ के पश्चात् समारोह वैदिक ध्वनि के साथ शान्त वातावरण मे सम्पन्न हुआ।

वेद प्रकाश मत्री
आ०स०सहा०समिति दिल्ली

रानी बाग, सन्त नगर चौक पर स्वामी विरजानन्द महात्मा हंसराज मार्ग का नामकरण समारोह

समस्त आर्य जनता को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि दिनाक ... ११-९६ को प्रात ८ ३० बजे रानी बाग सन्त नगर चौक पर स्वामी विरजानन्द मार्ग तथा महात्मा हसराज मार्ग का नामकरण समारोह आयोजित किया जा रहा है। समारोह का उद्घाटन दिल्ली के मुख्यमत्री श्री सहिब सिह बर्मा करेंगे। आर्य जनो से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक सख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनावे।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, मत्री

डा० निरूपण जी विद्यालंकार की धर्मपत्नि अस्वस्थ

घटना क्रमो मे कष्टो का अम्बार कब आ जाये पता नहीं अकस्मात सुनने को मिला कि डा० निरूपण जी की सहधर्मिणी श्री सहसा काफी अस्वस्थ हो गई। समाचार सुनते ही मैं स्वय और श्री डा० अवनीन्द्र कुमार विद्यालकार मेरठ उन्हे देखने चले गये। उनकी अचेतन अवस्था को देखकर भगवान व डाक्टर के रहम-करम पर उन्हे छोडकर हम वापस दिल्ली आ गये।

प्रभू से प्रार्थना है कि उन्हें शीघ्र स्वास्थ्य लाभ दें और वह उपाधि नर्सिंग होम से हसते मुस्कराते वापस घर की शोभा बढाये।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

उत्कल प्रान्त में श्रीवत्स पण्डा स्वामी दयानन्द जी के प्रथम वार्तावह

उत्कल आर्य प्रतिनिध सभा तथा श्री वत्स गोरक्षाश्रम ट्रस्ट के तत्वावधान में महान सस्कारक श्री वत्स पण्डा जी का १२६ तम जयन्ती समारोह प्रति- निधि सभा कार्यालय तथा जन्म स्थान गोरक्षाश्रम मे पालन किया गया। सभा कर्यालय में प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष आर्यकुमार ज्ञानेन्द्र जी के पौरोहित्य मे अनुष्ठित श्रद्धाजलि सभा में उत्कल राज्य के सूचना एव लोक सम्पर्क मत्री श्रीयुत नेत्रानन्द मलिक ने मुख्य अतिथि के रूप में अपना योगदान दिया तथा उन्होने कहा कि श्रीवत्स पण्डा उडीसा मे वेद गगा प्रवाहित करने हेतु भागीरथी प्रयत्न किया। श्री पण्डा जी ने सामाजिक सस्कार के कार्य को जिस प्रयत्न एव लगन से आज इस स्थिति में पहुचाया है उसे और भी अग्रसर करने का दायित्व आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं का है ताकि सस्कार के कार्य यथा स्थान को प्राप्त कर सके। इस अवसर पर विशिष्ट सामाजिक कार्यकर्ता श्री सतोष साहू जी ने भी अपनी श्रद्धाजलि श्री पाण्डा जी को अर्पित की। आर्य समाज भुवनेश्वर के सभापति अध्यापक श्री कैलाश आचार्य जी सरकारी नौकरी पर रहते हुए भी उन्होने सामाजिक उत्थान के कार्य जैसे दलित उद्धार जन्ममत जाती प्रथा उन्मूलन विधवा विवाह प्रचलन आदि कार्य किया जो अत्यन्त ही अनुकरणीय है। अध्यक्ष आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र जी ने श्री पण्डा जी का सत्यार्थ-प्रकाश सस्कार विधि का उडिया भाषा में अनुवाद कर, उत्कल वासियों को वेद ज्ञान प्रदान किया।

अन्य एक समारोह सस्कारक पण्डा जी के जन्मस्थान तनरडा में सम्पन्न हुआ। उडीसा के कर्मयोगी पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी के प्रत्यक्ष तत्वावधान में ब्रह्मचारी सनातन जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। अनन्तर अनुष्ठित श्रद्धाजली सभा में श्री रघुनाथ नायक जी अध्यक्षता की। सभा में मुख्यातिथि के रूप में प्रमुख विद्वान डा० देवव्रत तथा मुख्य वक्ता के रूप मे उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के मत्री प० वीरेन्द्र पाण्डा ने स्वकीय श्रद्धाजली अर्पित की। सभा में श्री वाल्मीकि पटनायक नर्मदा पटनायक एव सुश्री सुषमा मिश्र आदि गण मान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

वीरेन्द्र कुमार पण्डा, मत्री
उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-2 से प्रकाशित

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् — विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाएँ

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

दूरभाष ३२७४७७१, ३२६०९८५ आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये वार्षिक शुल्क ५० रुपए एक प्रति १ रुपया

वर्ष ३५ अंक ४१ दयानन्दाब्द १७२ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ सम्वत् २०५३ कार्ति०शु० १४ २४ नवम्बर १९९६

गुरुविरजानन्द के आदेश से वैदिक रवि का प्रकाश तथा स्वतन्त्रता की क्रान्ति का उद्घोष मथुरा से

अगला वर्ष क्रान्तिवर्ष के रूप में मनाया जाये मथुरा में आर्यों का निश्चय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रेरणा पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने मथुरा जनपद के आर्यो की एक सभा वेद मन्दिर गुरुकुल मे दिनाक १७ ११-९६ को मध्याह्न मे की गई। जिसमे जिले के आर्यो ने अपने विचार व्यक्त किये।

विचारो के प्रवाह मे स्वतन्त्रता प्राप्ति मे आर्य समाज का प्रमुख स्थान था। इसको काग्रेस के इतिहासकार पट्टाभि सीता रमैय्या ने काग्रेस के इतिहास मे स्पष्ट लिखा है कि –

८० प्रतिशत आर्य समाजियो का स्वतन्त्रता प्राप्ति मे योगदान था। आज स्वतन्त्रता प्राप्ति के ५० वर्ष होने जा रहे हैं। भारत सरकार ने इस वर्ष का स्वर्ण जयन्ती के रूप मे मनाने का निश्चय किया है।

आर्यो विचार करो–जिस मथुरा की कुटी से गुरु विरजानन्द की आवाज ने दयानन्द रूपी ज्वाला को पैदा कर वैदिक शखनाद किया औ स्वतन्त्रता प्राप्ति का नारा दिया जिस आजाद की मीनार पर बैठकर आज इस सुख की सा ले रहे हैं कि अगला वर्ष आर्यसमाज अपने नेतृत म राष्ट्रको चेतना दे कि इन ५० वर्षो मे हमने क्य पाया क्या खोया–इस स्वर्णिम वर्ष को आर्यसमाज देशव्यापी आन्दोलन लेकर स्वतन्त्रता का रसास्वाद कराये। ☆

उत्तरप्रदेशीय आर्य महासम्मेलन का समापन

नशाखोरी के खिलाफ विशाल रैली का आयोजन

मेरठ ३ नवम्बर। मद्य निषेध के प्रति समाज को जागृत करने के उद्देश्य से आज आर्यसमाज की ओर से शहर मे एक बडी रैली निकाली गई। इसी के साथ ही तीन दिवसीय आर्य महासम्मेलन का समापन हो गया। समापन सत्र मे स्वामी विवेकानद ने भारतीय सस्कृति की रक्षा करने पर बल दिया।

जीमखाना मैदान मे आर्य महासम्मेलन एक नवम्बर से प्रारभ हुआ था। इसमे छह सत्र हुए। आज प्रात विश्वभृत यज्ञ स्वामी विवेकानद सरस्वती के ब्रह्मत्व में गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियो ने आरम कराया। कन्या गुरुकुल हाथरस के विद्यार्थियों ने सामूहिक मत्रोच्चार किया। यह यज्ञ भी तीन दिवसीय था। इसकी आज पूर्णाहुति हुई।

इस अवसर पर गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) के आचार्य स्वामी विवेकानद सरस्वती ने कहा कि भूलोक के जीवो के भोजन रक्षण और सवर्द्धन की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए यदि ऐसा नहीं हुआ तो वेद की मान्यताओ के विपरीत आचरण होगा।

यज्ञ समाप्ति के बाद जीमखाना मैदान से मद्य निषेध रैली निकाली गई। सभी आर्यजन अपने हाथ मे मद्य निषेध सम्बन्धी नामपट्ट लिए हुए थे। आर्यसमाज से सम्बद्ध १२ विद्यालयो के छात्र-छात्राओं ने रैली मे बढ-चढकर भाग लेकर नशाबदी के विरुद्ध जन जागरण किया। आर्यसमाज से जुडी ३२ सस्थाओ ने नशाबदी के विरुद्ध नामपटिका थामी। रैली मे जनपद के ३१ गावो की सस्थाओ ने भी भाग लिया।

रैली के आगे गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारी थे। यह रैली बच्चा पार्क खूनी पूल बेगम पुल आबूलेन स्वराज्य पथ सदर दाल मडी थापर नगर पटेल नगर खैर नगर होती हुई वापस जीमखाना मैदान मे पहुचकर सपन्न हुई। रैली मे शामिल आर्यजनो ने पूरे रास्ते शराबखोरी तथा नशाखोरी के खिलाफ जन जागृति से ओत प्रोत नारे लगाए। रैली के सयोजक पूर्व सभासद के० देवदत्त आर्य थे। रैली का नेतृत्व स्वामी विवेकानन्द आर्यमहासम्मेलन के सयोजक पडित इद्रराज केन्द्रीय आर्य समिति मेरठ के मत्री स्वराज्य चद आर्य उप प्रतिनिधि सभा के जिला मत्री नगेद्र सिह आर्य ने किया। रैली के समापन पर पडित इद्रराज और नगेद्र सिह ने सभी का आभार व्यक्त किया। अपराहन मे आर्यसमाज की प्रातीय इकाई की बैठक पडित इद्रराज की अध्यक्षता में हुई। इसमे आगामी कार्यक्रमो पर विचार विमर्श हुआ।

ऋषि निर्वाणोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

नई दिल्ली १० नवम्बर आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की पुण्य तिथि आज दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वाव धान मे 'ऋषिनिर्वाणोत्सव के रूप मे दिल्ली के रामलीला मैदान मे समारोह पूर्वक मनाई गई।

समारोह की अध्यक्षता आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने की। उन्होने अपने अध्यक्षीय भाषण मे मानव मात्र को ऋषि दयानन्द के सन्देश से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। महाशय जी ने धर्म अर्थ और काम के सही अर्थ को समझकर उस पर आचरण करने के लिए आर्य जनता को प्रेरित किया।

इस अवसर पर डा० निरुपण विद्यालकार को आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से प० केदारनाथ दीक्षित वैदिक सम्मान से पुरस्कृत किया गया।

समारोह मे हरियाणा के पूर्व मत्री डा० रामप्रकाश ने मुख्य वक्ता के रूप मे बोलते हुए कहा कि आज आर्यसमाज के कन्धो पर राष्ट्रीय चरित्र मे वैदिक सस्कृति को बचाने का गुरुतर दायित्व है।

राष्ट्रकवि डॉ० सारस्वत मोहन मनीषी ने अपनी काव्यमयी शैली मे आर्य जनो को अपने कर्त्तव्य को समझने की प्रेरणा की। इस अवसर पर डॉ० रामप्रकाश ने सत्य का प्रकाश स्वामी दयानन्द नामक पुस्तक का विमोचन भी किया।

मुख्य समारोह प्रात यज्ञ के उपरान्त ध्वजारोहण के साथ प्रारम्भ हुआ। समारोह का सयोजन आर्य केन्द्रीय सभा के महामत्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने किया। ☆

सम्पादक- डा.सच्चिदानन्द शास्त्री

"दीपावली पर डा० निरुपण जी सम्मानित"

डा० निरूपण विद्यालकार गुरुकुल विश्वविद्यालय कागडी हरिद्वार के पुराने स्नातको मे उनका सुयोग्य स्थान है गम्भीर चिन्तक विचारक है एम०ए० पी०एच०डी० करने के पश्चात आप मेरठ कालिज मे सस्कृत विभागाध्यक्ष होकर कार्यमुक्ति होने तक सफल प्रोफेसर रहे। मृदुल शान्त स्वभाव वाले डाक्टर साहब को पी०एच०डी करने पर उत्तर प्रदेश सरकार ने आपको सम्मानित किया था।

आर्यसमाज के क्षेत्र मे आपका विशेष स्थान है। सकट काल मे आप अडिग रहने वाले धैर्यवान व्यक्तित्व के व्यक्ति हैं।

दिल्ली राज्य की केन्द्रीय आर्यसमाज ने आपको स्व० प० केदारनाथ दीक्षित वैदिक सम्मान से पुरस्कृत किया है।

दीपावली का वह पावन दिन जिस दिन एक महापुरुष का निर्वाण दिवस था उस एक दीप के बुझने पर लाख लाख दीप जले थे उनमे यह एक दीप डा० निरूपण विद्यालकार के रूप मे प्रकाशित हुआ। ऐसे प्रतिभावान व्यक्ति को रोशन करके उनके जीवन मे और चार चाद लगा दिये।

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती पूर्वनाम प० लक्ष्मी दत्त दीक्षित इस पुरस्कार अभियान के सौभाग्यशाली विद्वान आर्य सन्यासी हैं जिनकी प्रेरणा से प्रतिवर्ष एक विद्वान को यह पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है।

इस अनुकरणीय कार्य से सभी व्यक्तियो को प्रेरणा लेनी चाहिये।

डा० निरूपण विद्यालकार को इस सम्मान प्राप्ति के लिये हम सबकी शुभकामनायें है।

केन्द्रीय सभा के प्रधान म० धर्मपाल जी तथा डा० शिवकुमार शास्त्री भी बधाई के पात्र हैं जिन्होंने योग्य व्यक्ति का चयन कर उन्हे सम्मानित किया।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ☆

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी में ६, ७,८ दिसम्बर को रजत जयन्ती समारोह

आर्य जगत के लिये यह समाचार सुखदायी होगा कि आगामी ६ ७ ८ दिसम्बर पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी में 'रजत–जयन्ती कार्यक्रम आयोजित है।

जिसमे प्रथम दिवस विद्यालय की सस्थापिका स्व० पूज्या आचार्या डा० प्रज्ञा देवी जी की प्रथम पुण्यतिथि पर प्रकाशित श्रद्धाञ्जलि स्मारिका का प्रत्यर्पण भावाञ्जलि निवेदन प्रमुख कार्यक्रम है।

द्वितीय तृतीय दिवस चतुर्वेदयज्ञीय पूर्णाहुति रजत जयन्ती पर आधारित रूपक कन्याओ के विशेष भाषण भजन-वेदपाठ आदि कार्यक्रम तथा समागत विद्वानो के उपदेश आगन्तुक श्रद्धालुओ के श्रद्धासुमन अर्पित होगे।

इस अवसर पर नवनिर्मित 'परिचय प्रदा शाला एव 'स्वधा द्वार' का उदघाटन एव आर्य जगत के प्रख्यात विद्वान स्मृतिशेष प० रामनारायण शास्त्री पर तैयार बृहद् स्मृतिग्रन्थ का विमोचन भी होगा। समस्त आर्य नर नारी इस ज्ञानवर्धक सत्सग से लाभ उठाये।

निवेदिका
मेधा देवी आचार्य
पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी ☆

विश्व सुन्दरी प्रतियोगिता के खिलाफ आर्यसमाज का धरना

इलाहाबाद ३० अक्टूबर। आर्यसमाज आन्दोलन मुख्यालय कृष्ण नगर के आह्वान पर इलाहाबाद नगर तथा आस पडोस के आर्यसमाज से जुडे समाज कर्मियो ने इस महीने बगलौर मे आयोजित होने वाली विश्व सुन्दरी प्रतियोगिता के खिलाफ जिलाधिकारी कार्यालय पर धरना तथा उपवास कार्यक्रम रखा। सवेरे ६ बजे से शुरु हुआ धरना शाम ५ बजे तक चला। समाप्ति पर राष्ट्रपति को सबोधित एक ज्ञापन भी जिला धिकारी को सौंपा गया।

विश्व सुन्दरी प्रतियोगिता के विरोध मे ज्ञापन मे कहा गया है कि भारतवर्ष सृष्टि काल से ही अपनी सस्कृति सभ्यता गौरव मर्यादा मूल्यो व मानवीयता के लिये विश्व विख्यात रहा है। २१वीं सदी की दहलीज पर खडे होकर हम जहा प्रगति का दम भरते आगे बढने की सोच रहे हैं। वहीं पर विदेशियो की कुटिल चाल मुक्त बाजार के कारण अपनी सास्कृतिक परम्पराओ मूल्यो मर्यादाओ व नारी के प्रति सम्मान भी भूलते जा रहे हैं जिससे देश व समाज विदेशीकरण के पथ पर उलझता जा रहा है। नतीजन समाज अनेक विकृतियो का शिकार बनता जा रहा है। इन विकृतियो को उत्पन्न करने व बढाने मे बहुराष्ट्रीय कम्पनियो द्वारा आयोजित विश्व सुन्दरी प्रतियोगिताए भी खासी भूमिका निभा रही है। ज्ञापन मे राष्ट्रपति से अपील की गयी है कि वे अपने अधिकारो का इस्तेमाल करते हुए बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के षडयन्त्र के रूप मे भारतीय सस्कृति को विनष्ट करने के लिए आयोजित की जा रही इस विश्व सुन्दरी प्रतियोगिता को रद्द करायें।

ज्ञापन सौंपने से पूर्व आयोजित सभा मे आर्यसमाज के कई विद्वानो ने विश्व सुन्दरी प्रतियोगिता के खिलाफ विभिन्न सामाजिक और सास्कृतिक पक्षो पर अपने विचार व्यक्ति किये। कार्यक्रम के दौरान आर्यबीर दल के प्रशिक्षक परमानन्द प्रेमी के निर्देशन ने कई क्रान्तिकारी गीत व भजन प्रस्तुत किये गये धरने के कार्यक्रम में शामिल होने वाले तथा अपने विचार प्रकट व्यक्त करने वाले विभिन्न आर्यसमाजो के प्रमुख लोगो मे प्रेम देव आर्य श्याम किशोर आर्य जागेश्वर प्रसाद आर्य मदन मोहन दिव्य प्रदीप आर्य जगदीश नारायण ज्ञानेन्द्र कुमार छोटे लाल आचार्य अशर्फी लाल शास्त्री श्रीमती माधुरी आर्या श्रीमती सावित्री आर्या कु० सरोजनी श्रीमती बिनीता आर्या श्रीमती सतोष श्रीमती फूला देवी आदि शामिल थे। विश्व विद्यालय के पूर्व मत्री प्रभाकर भट्ट सहित कई छात्र नेता भी धरना स्थल पर मौजूद रहे। इसके अलावा स्वेदशी सवाद सेवा के सम्पादक सन्त समीर भी शामिल हुये। कार्यक्रम के आयोजन की जिम्मेदारी कृष्ण नगर आर्यसमाज के सन्तोष कुमार तथा अखिलेश आर्येन्दु ने सभाली।

प्रवक्ता
राम लाल सिह ☆

विजय पर्व मनाया गया

प्रभु-भक्त परिषद मुजफ्फरपुर के तत्त्वावधान में श्री चतुर्भुज राम मेमोरियल ट्रस्ट मुजफ्फरपुर के प्रागण में आर्यसमाज एव प्रभु-भक्त परिषद मुजफ्फरपुर के अध्यक्ष श्री पन्नालाल आर्य की अध्यक्षता मे विजयदशमी के शुभअवसर पर विजय पर्व मनाया गया। सभा को सबोधित करते हुए श्री पन्नालाल आर्य अध्यक्ष (आर्यसमाज एव प्रभु-भक्त परिषद) ने कहा कि जब देश मे आसुरी शक्ति बढ़ने लगती है तो जनता में आक्रोश होता है और आसुरी शक्ति के विनाश के लिए जनता मे जागृति आती है और प्रभु की कृपा से एक से एक शक्तिशाली महापुरुष का प्रादुर्भाव होता है जो आसुरी शक्ति को नष्ट कर पुन शान्ति स्थापित कर जन कल्याण करता है। जब भी इस प्रकार की परिस्थिति हुई तो राम, कृष्ण, महात्मा बुद्ध, शकराचार्य और महर्षि दयानन्द आये और जनमानस को सच्चा मार्ग दिखाये। आज भी भारत में आसुरी शक्ति चरम सीमा पर है। इस विषम परिस्थिति मे जनमानस से अनुरोध है, सभी सगठित होकर जातीयता धार्मिक उन्माद को समाप्त कर आसुरी शक्ति को आगे बढ़ने से रोकें तथा उसका विनाश कर देश में शान्ति स्थापित करने मे योगदान करें, तभी देश का कल्याण होगा तथा मानव मानव में प्रेम व सौहार्द बढ़ेगा।

वेदों में विविध विज्ञान

-डॉ० जगदीश प्रसाद

सन् १८७५ मे आर्यसमाज की स्थापना के समय महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के जो दस नियम बनाए थे उनमे तीसरे नियम का पहला भाग है—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। विज्ञान भी सत्य विद्या के अन्तर्गत आता है। अत वेद में विज्ञान होना चाहिए। मुख्य विषय पर आने से पूर्व विज्ञान शब्द पर विचार करना अप्रासंगिक न होगा।

'विज्ञान' शब्द के अर्थ पर समाज मे बहुत मतभेद हैं। श्रीमद्भगवद्गीता (७/२) के ज्ञान तेऽह सविज्ञानमिद वक्ष्याम्यशेषत वचन का अर्थ करते हुए आद्य शकराचार्य स्वानुभवसयुक्तम कहकर अपने अनुभवयुक्त ज्ञान को विज्ञान कहते हैं। अमरकोष (प्रथम काण्ड धीवर्ग) के मोक्ष धीर्ज्ञानमन्यत्र विज्ञान शिल्पशास्त्रयो मे शिल्प और मोक्षातिरिक्त शास्त्र को विज्ञान कहा गया है। आधुनिक विद्वान अग्रेजी भाषा के 'साइन्स शब्द के अनुवाद के रूप मे विज्ञान' शब्द का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार क्या 'विज्ञान शब्द के अनेक अर्थ हैं ? अथवा विज्ञान की कोई ऐसी परिभाषा है जो सब अर्थों मे समान रूप से विद्यमान रहती है ?

इस विषय मे एक विद्वान–विद्यावाचस्पति प० मधुसूदन ओझा के अनुसार–"दृष्टि के सामने आनेवाले विभिन्न पदार्थो मे समान रूप से मूलत वर्तमान रहने वाले किसी एक तत्त्व का अनुभव ज्ञान कहलाता है। और मूल मे एक स्थायी नित्य तत्त्व मानकर उसकी ही अनन्त पदार्थो के रूप मे परिणति का वर्णन विज्ञान कहलाता है। इस प्रकार विज्ञान शब्द के आरम्भ मे वि उपसर्ग का अर्थ विशिष्ट करे चाहे विविध या विभिन्न – कोई असुविधा नहीं पड़ती है। आधुनिक भौतिक विज्ञान की परिभाषा मे कहा गया है कि Science is an organised knowledge अर्थात – सुव्यवस्थित ज्ञान का नाम विज्ञान' है।

वेदो मे केवल भौतिक विज्ञान के मूल का ही वर्णन नहीं है इनमे सृष्टि विज्ञान वृष्टिविज्ञान आत्मविज्ञान ब्रह्मविज्ञान प्राणविज्ञान सामाजविज्ञान राजविज्ञान आयुर्विज्ञान शस्त्रास्त्रविज्ञान ध्वनि विज्ञान भेषज विज्ञान तथा सोमविज्ञान अनेक विज्ञानो का समावेश है। इनमे से केवल एक – प्राणविज्ञान के विषय मे यहा कुछ वर्णन प्रस्तुत है।

अथर्ववेद (काण्ड ११ अनुवाक २ सूक्त ४ मन्त्र १ से २६ पर्यन्त) में 'प्राण विज्ञान' का सुन्दर वर्णन है। सभी छब्बीस मन्त्रो का विस्तृत अर्थ न देते हुए उनका केवल सक्षिप्त निष्कर्ष निम्नाकित है –

वेद की वर्णन करने की अपनी शैली है। उसी के अनुसार उपर्युक्त छब्बीस मन्त्रों मे वेद के ऋषि ने सृष्टि के कण कण में प्राण के दर्शन किए हैं। इस समस्त ब्रह्माण्ड को प्राण के भीतर प्रतिष्ठित हुआ बताया है। आकाश वायु आदि समस्त महाभूत व सूक्ष्मभूत भूत-भविष्यत् आदि काल प्राण में ही प्रतिष्ठित हैं। संसार के जीव धारियो के पालन पोषण मे प्रमुख भूमिका वर्षा की है जो अन्न वनस्पतियो को उत्पन्न करती है। ये अन्न वनस्पतिया ही जीवधारियों का आहार तथा औषधि बनती हैं जिनसे उनकी वृद्धि होती है। विविध प्रकार के जीवधारियो के लिए विविध वनस्पतियो की आवश्यकता है। वर्षा और वनस्पतियो की विविधता तथा उत्पत्ति के मूल मे प्राण ही कार्य कर रहा है वही उनकी वृद्धि तथा सुगन्धियो का कारण है। जीवधारियो मे आने जाने उठने बैठने श्वास प्रश्वास आदि की क्रियाए प्राण के द्वारा ही सचालित होती हैं। उसी से उनके शरीर पुष्ट होते हैं और रोगी होने पर वे प्राणवर्द्धक औषधियोके सेवन से आरोग्यता प्राप्त करते है। प्राण और अपान को सुव्यवस्थित रखने के लिए मानव अन्न और फलो का प्रयोग करते है। अन्न स्थूल शरीर का निर्माण करता है और फल मल निष्कासन क्रियाओ मे सहायक होकर शरीर को शुद्ध करते हैं।

जीवधारियो की उत्पत्ति का मूल भी प्राण ही है। प्राण और अपान की क्रिया द्वारा जीव गर्भ मे पूर्णता को प्राप्त करके बाहर आ जाता है और वृद्धि एव पुष्टि को प्राप्त होता हुआ विविध क्रिया कलापो मे सलग्न हो जाता है। मानव का उत्थान पतन भी प्राण द्वारा ही होता है। प्राण के सदुपयोग से उत्थान ओर आनन्द की प्राप्ति होती है जबकि दुरुपयोग से दु ख और मृत्यु। जगत द्रष्टव्य विविधताओ का सृजन भी प्राण द्वारा ही होता है वही मानवो को मार्गदर्शक शक्ति प्रदान करके प्रेरणा और आनन्द का स्रोत बनता है। जो बुद्धिमान धैर्यशाली विद्वान आलस्य रहित होकर प्राण का सदुपयोग करके उसे अपने शरीर मे ठहराने का अभ्यास कर लेते हैं वे दीर्घायु वाले हो जाते हैं। अत विद्वानों के लिए श्रेयस्कर है कि वे सदैव प्राण को अपने शरीर मे पुष्ट करने का प्रयास तथा अभ्यास करते रहे और उनको अपने से पृथक न होने दे। जैसे शरीर मे जल रक्त आदि के रूप मे गति करता हुआ क्रियाशील रहता है उसी प्रकार प्राण भी गति करता है। प्राण की गति को सुव्यवस्थित करने के लिए नित्य प्राणायाम करना चाहिए।

प्राण समस्त जीवधारियो को अपनी छत्रछाया मे उसी प्रकार रखता है जैसे पिता पुत्र को। वह प्राणियो तथा ब्रह्माण्ड की सब दिशाओ मे व्याप्त रहकर सृष्टि का सुव्यवस्थित सचालन कर रहा है। उसका एक भाग ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति तथा सचालन मे सलग्न है जो समष्टि प्राण है द्वितीय भाग जीवधारियो के शरीरो मे कार्यरत है जो व्यष्टि प्राण है। वही विचार और अनुसन्धान का विषय है।

प्राणविज्ञान पर विचार करते हुए ऋषि देखता है कि प्राण सदैव सम्पूर्णता मे रहता है और निश्चित नियमो के अनुसार कार्य करता है। यदि इसका कोई भी अग टूट जाए या नियम भग हो जाए तो यह समस्त ब्रह्माण्ड छिन्न भिन्न हो जाएगा और उसम होने वाली समस्त क्रियाए रात्रि दिवस ऋतु परिवर्तन तथा ग्रहो की नियमित गति आदि सब नष्ट हा जाएगी। प्राण अनन्त व शाश्वत है वह कभी समाप्त नहीं होता। वह भौतिक दिव्य पदार्थो मे व्याप्त रहता है तथा वृद्धि और गति को प्राप्त करता रहता है। सृष्टि मे उसका अन्त कभी नहीं होता। प्राण का स्थूल रूप ऊर्जा है जो कभी नष्ट नही होती है। भौतिक विज्ञान का ऊर्जा सरक्षण का नियम (Law of conservation of energy) या ऊष्मागतिकी (Thermody namics) का प्रथम नियम इसकी पुष्टि करता है।

वैज्ञानिक प्राणविज्ञान द्वारा प्राणवर्द्धक औषधियो का निर्माण करे। जो वैज्ञानिक इस विज्ञान का सदुपयोग करता है वह ससार मे धन धान्य और प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। जो मानव उस वैज्ञानिक की वार्ता का श्रवण करके अनुसरण करते हैं वे भी उसी प्रकार धन-धान्य की सम्पन्नता को प्राप्त करके लाभान्वित होते है।

हे प्राण ! तेरी महिमा स्तुत्य है। हमे अपनी अनन्त शक्ति द्वारा आरोग्यता प्रदानकर जिससे हम इस स्थूल शरीर का सदुपयोग करते हुए धर्म अर्थ काम मोक्ष की सिद्धि को प्राप्त कर मानव योनि को सार्थक कर सके।

सेवानिवृत्त अध्यापक
११५ कृष्णपुरी मेरठ २५००० ☆

आर्यसमाज बाहरी रिंगरोड विकासपुरी में

[illegible] प्रतियोगिता

स्व० श्री भारत भूषण 'सरोज' की समृति में २४ नवम्बर १९९६ रविवार दोपहर ३ बजे **"समाज सुधारक देव दयानन्द"** विषय पर भाषण प्रतियोगिता होगी। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ० श्री निवास शर्मा होंगे। मुख्य अतिथि श्रीमती चित्रा नाकरा तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री जगदीश आर्य श्री राजतिलक नैय्यर आदि प्रसिद्ध समाजसेवी एव विद्वद्गण पधार रहे हैं।

इस प्रतियोगिता में २० विद्यालयों के छात्र भाग ले रहे हैं।

प्रथम पुरस्कार	११००/रु०
द्वितीय पुरस्कार	८००/रु०
तृतीय पुरस्कार	५००/रु० का।

है। इस कार्यक्रम में हजारों लोगों की पहुचने की सभावना है।

भवदीय
रमेश चन्द्र शर्मा
मत्री
आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड
विकासपुरी

तुझमें कैसा भय ?

भूदेव साहित्याचार्य

जैसी मुहिम आप अपने प्रतिद्वन्दी को दबाने और भगाने के लिए करते हैं उसे देखकर क्या कहे कि आप बहुत बहादुर है ? आप कायर हैं। डरपोक है आप। आप मे जूझने की ताकत नहीं है। आपका दहाडना चीखना चिल्लाना प्रतिद्वन्दी को भय दिखाना यह सब तमाशा है। आप बहुत ही कमजोर हैं। यह दहाडना चीखना चिल्लाना आदि आपके अन्दर का भय हैं। चिल्लाते चीखते आप इसलिए हैं कि दूसरे लोग आपको बहादुर समझे। हमलावर किसी पर इसलिए होते हैं कि दूसरे आपको बहादुर समझे। दूसरे कुछ समझे न समझे परन्तु याद रखना आप अपश्य समझ रहे है कि आप कितने हारे हुए हैं कितनी थकान ने आपको चूर चूर किया हुआ है। इसलिए यदि थोडी हिम्मत आप मे कुछ शेष बची हो तो सम्भालिये अपने आपको। जिस पर आप हमलावर होना चाहते हैं हो सकता है आप उसे किसी प्रकार की क्षति पहुचा दे परन्तु आपकी यह दौड आपमे अन्तरगत कोई परिवर्तन नहीं लाने वाली आप स्वय अपने हाथो अपना विनाश करने चले हैं। दुर्योधन हक दबा रहा था और अपने आपको सही सिद्ध करने के लिए और चिल्ला भी रहा था। पाडव उसे कीडी मकोडे से बढकर कुछ भी नहीं दीख रहे थे। मूर्खता कर बैठा। बहुत लोगो ने समझाया पागल मत बन दुर्योधन। यह पागलपन तेरे लिए बडा घातक सिद्ध होगा। परन्तु मूर्खता सिर पर सवार होकर मुखर हो गई। कीडे मकोडे दीखने वाले पाण्डवो ने ही उसका मलियामट कर दिया।

न कर पाते मलियामेट पाण्डव तो क्या हुआ दुर्योधन के अन्दर उसका मलियामेट करने वाले विषाणु जैसे कपट भेद बुद्धि तेरे मेरे के उदमाव करने वाली पार्टीबाजी झूठ और यश तथा भोग की लिप्सा ऐसे थे कि पाण्डव हाथ ही नही हिलाते तब भी वह अपने अन्दर व्याप्त विषाणुओ द्वारा फैलाये विष से अन्दर ही अन्दर पैर पीटकर मर जाता। कृष्ण लडने के पक्ष मे नहीं थे भीष्म विदुर धृतराष्ट्र गान्धारी नहीं थे। पाण्डव पक्ष मे भीम और अर्जुन की मान्यता चाहे जैसी भी रही हो किन्तु कुल मिलाकर पाण्डव भी नही लडना चाहते थे। उसका पक्ष अपनी ओर से युद्ध की घोषणा को उनकी अपनी ही हार मानता था। आपने जगल मे शेर रहता है उसे देखा होगा। अनेकश बडा चौकन्ना और भयभीत रहता है शेर। शेर से कोई पूछे कि तुझे कैसा भय ? तू तो जगल का राजा है। तूने हाथी जैसे विशालकाय और भारी भरकम प्राणी के मजबूत मस्तक मे पजे गडाकर उसका खून पीया। फिर इतना बहादुर होते हुए सारे जगल का राजा होते हुए भी तुझमे भय कैसा ? वास्तविकता तो यह है कि शेर को बाहर का कोई भय नहीं है। शेर अन्दर से कमजोर है। कमजोर ? उसने दूसरो का हक छीना है दूसरो की स्वतन्त्रता को छीना है दूसरो का जीवन छीना है। जो किसी भी नाम पर दूसरो की अस्मिता दूसरे के पारिश्रमिक दूसरो के अधिकार को चुराता है या उस पर तथाकथित बहादुरी से डाका डालता है उसे कमजोर के अतिरिक्त आप क्या कहेगे ? किसी ने कोई चोर या डाकू भी कभी बहादुर देखा है ? हमने सुना है डाकू मुगला के बारे में। लोग कहते हैं कि बडा बहादुर था। बडा तीसमार खा था। परन्तु क्या खाक तीस मार खा था। पडित गणपति शर्मा तो कोरे पडित थे। न पहलवान थे कि कुश्ती के ही दाव पेच जानते होते न सिपाही ही थे कि निशानेबाज होते न धनाढय थे न राजनेता और न कोई राजनैतिक सस्था के अथवा सरकार के बडे अधिकारी। पडित गणपति जी सिर्फ पण्डित थे। परन्तु मुगला था कि एक साधारण से पण्डित के सामने ही चारो खाने चित्त हो गया। अगुलिमाल डाकू का भी तो यही हाल था। बडा बहादुर बना फिरता था। सोचता था कि तुझे देखते ही बडे बडो के छक्के छूट जाते हैं। फिर बुद्ध क्या ? परन्तु जब बुद्ध को सामने पाया तो न जाने कहा दौड गई सब बहादुरी। इसी प्रकार वाल्मीकि के सन्दर्भ मे लोगो ने एक किवदन्ती बना छोडी है। वाल्मीकि रत्ना डाकू का सभला सस्करण है। रत्ना डाकू जो सभी को डराता था लूटता था एक दिन फस गया साधुओ के लपेटे मे। लपेटने चला था साधुओ को परन्तु लपेट लिया साधुओ ने रत्ना ! सोच जरा ! जो कर रहा है। तुझे इसके भय से कौन मुक्ति दिलायेगा। कौन मुक्ति दिलाता ? रत्ना अपने अन्दर से ही जब कमजोर था तो ? रत्ना देखता का देखता रह गया। रत्ना की चीखो चिल्लाहट कुछ काम न आई। खल साधु स्वभयात विमृश्यते। खल जो होता है जितना चाहे साधु बनने का स्वाग भरे परन्तु जो उसके अन्दर अपने भीतर का ही भय भरा होता है वह ऐसा होता है कि उसे रगडता रहता है रगडता ही रहता है। वह चैन से दो पल बैठ नहीं सकता। अन्दर की आग से जो तूफान उठता है। बाहर आग से उठने वाले तूफान से कही बहुत अधिक भयानक होता है।

हमने इन पक्तियो को प्रतिद्वन्दी को भगाने या दबाने की बात से शुरू किया है। प्रतिद्वन्दी को भगाने या दबाने का अर्थ क्या कि आप अपने मार्ग पर विचार नहीं करना चाहते। यदि कोई आप को सत्परामर्श देता है तो उसे घटियामाल सिद्ध करना चाहते हैं। परन्तु यह तो आपके कमजोर मन की एक लहर है। लहर मृगमरीचिका। मृगमरीचिका से किसी की कभी प्यास नहीं बुझती। प्यास बुझाने के लिए यथार्थ जल चाहिए। पुन हम किसी और की प्यास की बात नहीं कर रहे। हम तो प्यास से बेहाल आपके चेहरे को देख रहे हैं। कितनी मायूस है आपकी रगत। कितनी खिची हुई है आपके चेहरे की नसे। कितना पीलापन है आपके चेहरे पर। हर पल डर। हर पल बेचारगी। हर पल बेचैनी। हर पल अन्दर से कचोटती पीडा। हर पल विकलता। हर पल पीपल के पत्ते की भाति चचल। आप जैसे स्वास लेना चाहते हैं ले नहीं पाते।

इसलिए हम आपको सत्परामर्श देते हैं। विचार कीजिये यही स्थिति आपकी कुछ दिन और बनी रही तो सोचिये कि आपका क्या बनेगा ? यह दुनिया तो ऐसे ही रहनी है। इसका कुछ नहीं बिगडना। यहा बडे बडे राजा महाराजा हुए सबने अपनी तूती बजाई। ऐसा लगता था सारी धरती जब यह जायेगे तो अपने पल्लू में बाध ले जायेगे। परन्तु नैकेनापि सम गता वसुमती धरती आज भी वही है। किसी के साथ कहीं भी नहीं गई। हा जिनसे लगता था कि ये सारी धरती लपेट ले जायेगे वे उल्टे जब गये तो धरती ने शुकून मनाया भारी शुकून मनाया जैसे कह रही हो कि भला हुआ एक कम्बख्त तो कम हुआ। मेरा बजन कम हुआ। आपका कल्याण इसमे है कि जो बहादुरी आप जता रहे हैं उस मूर्खता को आप यही बन्द कर दे।

महोपदेशक

आर्यसमाज आनद विहार दिल्ली ९२ ☆

स्वयं सहायक होता है और वह जीवन में न्याय प्रिय होता है।
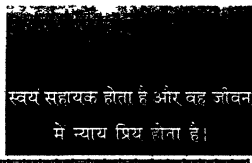
मन रे ! बन उस फूल समान

धर्मवीर शास्त्री

मन रे ! बन उस फूल समान

परहित की परिमल से जिसके आप्लावित मन प्राण।

काटो भरी शाख पर भी ता' हमन इसको खिलते देखा
धूल-धूप मे भी पुलकित ज्यो हमने इसको हिलते देखा।
सब कुछ सहकर भी यह करता है सौरभ का दान।

मनहर मृदुल पखुरियो वाला भीतर मधु का कोष लिये है
अपने लिये नहीं कुछ इसका मन मे यह सन्तोष किये है
करने देता है मधुकर को मन भर कर मधु पान।

देखो तो सुन्दर लगता है सूघो तो सुखकर लगता है
करने लगता काम सुहाने प्रात जबसे यह जगता है
बिखरा देता आस पास मे यह कोमल मुस्कान।

देवो के चरणो मे इसको भक्ति भाव से करते अर्पण
सारा जीवन ही इसका है अहो ! अन्य के लिये समर्पण
सब कुछ देकर भी न इसे कुछ होता है अभिमान।

मिट्टी मे मिलता मिलना भी मिट्टी को सुरभित कर जाता
उपवन का क्रदान अरे! यह किसकिस काम न जाने आता
कौन गिना सकता है इसके दुनिया पर अहसान।

राग द्वेष से भरा इधर तू वातावरण बिगाड़ता करता
तजता नही दुरिच्छा मानव तेरे कारण मरता मरता
सीख फूल से कर कुछ ऐसा हो प्रसन्न भगवान।

दमन इन्द्रियो का होने दे विषय बीज नव मत बोने दे
ईश भक्ति में लगा स्वय को और समय अब मत खोने दे
क्या है ठीक गलत क्या इसकी कर अब तो पहचान।

प्रभु का नाम याद रख प्रतिपल सुन उनके ही पग की आहट
एक दिवस आयेगे प्रियतम मन-मन्दिर के खोले रख पट
धीरज रख कर एक एक कर चढता चल सोपान।

कर सहाय सासो को अब रे ! अन्तर्यामी से जुड़ने दे
लगा दौड मत बाहर खुद के भीतर को भी तो मुड़ने दे
पता नही गीतो की पगले ! किस पल टूटे तान।

बी १/५१ पश्चिम विहार नई दिल्ली

जल चिकित्सा विज्ञान : यजुर्वेद की दृष्टि से

डॉ० दुर्गाप्रसाद मिश्र

यद्यपि हमारी प्राचीन चिकित्सा पद्धति आज की तरह विकसित नहीं थी फिर भी सर्वसुलभ और सस्ते रोगनिवारक उपाय अवश्य थे। आज विज्ञान चिकित्सा के क्षेत्र में नये नये कीर्तिमान बना रहा है पर भयावह बीमारिया भी अपना विकराल और नया रूप लेती जा रही है क्योकि हमारा प्राकृतिक तत्वो से सामजस्य समाप्त होता जा रहा है। वैदिक काल मे चिकित्सा के लिए एक तरफ जल वायु अग्नि सूर्य आदि का उपयोग था और दूसरी तरफ औषधि एव वनस्पति का। यह वस्तुत प्राकृतिक चिकित्सा थी।

सभी सहिताओ मे जल के विभिन्न गुणो का उल्लेख मिलता है। उदक के वैदिक लगभग १०० नाम निघण्टु मे आए हैं जिन पर विचार करने से जलचिकित्सा विषयक वैदिक दृष्टि का पता लगता है। पुरीष पुरिष शरीर रूपी नगरी मे श शान्ति देने वाला जलाष आरामदायक क्षत्र–क्षत व्रण फोडा फुन्सी आदि से बचाने वाला जल। जल शान्ति देने वाला है। जल पीकर मनुष्य शान्ति पाता है इसी कारण इसे मीठा कहा गया है।

यजुर्वेद मे जल के अनेक प्रकार उल्लिखित हैं। अद्भ्य– सामान्य जल वार्भ्य–रोगनिवारक जल उदकाय–सूर्य किरणो मे ऊपर जाने वाला जल तिष्ठन्तीभ्य–स्थित जल स्रवन्तीभ्य–झरने का जल स्पन्दमानाभ्य–प्रवाहित जल कूपाभ्य–कूपजल सूद्याभ्य–वर्षा से गीला करने वाला जल धार्याभ्य–धारण करने योग्य जल अर्णवाय समुद्र जल सरिराय वायुस्थ जल।

जल से मन मे स्थित पाप द्रोह भाव अपशब्द और मिथ्याचरण समाप्त होता है। वेद जल को सर्वश्रेष्ठ माता कहता है। उत्तम शिक्षा से शिवित जल सुखदायक होते हैं। जल पीने के बाद बल बढाने वाला पेट मे कष्ट न देने वाला है वह क्षयरोग को दूर करने वाला अपचित अन्न से उत्पन्न पाप प्रवृत्ति को दूर करने वाला सरलता या सत्य को बढाने वाला मरणभय दूर करने वाला दिव्य शक्ति युक्त हमें सुस्वादु लगे। ये जल के चिकित्सात्मक गुण हैं।

जल मे आरोग्यवर्धक रोगनिवारकतत्त्व रस का भी उल्लेख मिलता है। जल मानव के लिए वरदान है। जल से शरीर मे स्वच्छता आती है शरीर शुद्धता से आत्मा की प्रगति होती है। जो मनुष्य यज्ञादि से जलादि पदार्थो को शुद्ध करके सेवन करते हैं उन पर सुखरूप अमृत की वर्षा निरन्तर होती है।

जैसे पतिव्रता स्त्रिया सब ओर से सबको सुखी करती हैं वैसे ही जलादि पदार्थ भी सबको सुखकारी होते हैं। अत जल को मित्रो के समान हितकारी माना गया है।

पृथ्वी और जल में उत्पन्न औषधि तीन वर्ष बाद जब ठीक-ठाक पक जाए तभी उनको ग्रहण कर वैद्यक शास्त्र के अनुकूल विधान से सेवन करें। सेवन की गई यह औषधि शरीर के १०७ मर्म स्थानो पर व्यापक होकर प्रभावकारी होती हैं।

यजुर्वेद में यह उल्लेख है कि किस औषधि के लिए कौन सा दिव्य मधु जल होना चाहिए जिससे उसके गुणों की वृद्धि हो। सोम रूप से सम्पन्न औषधियों को यज्ञ में हवि रूप से प्रयुक्त करके उससे उत्पन्न मेघों के जलों से सिंचन करने का वर्णन है। जल को भेषज गुण वाला बताया गया है इसमे जीवनीय एव अरोग्य तत्त्व हैं जिससे हमे निरन्तर प्राण जीवन बल अरोग्यता रोगनिवारक शक्ति एव सुख प्राप्त होता है। खाने के बाद जी सिचन आवश्यक है अत जैसा जल होगा वैसी ही औषधि उत्पन्न होगी। सोम को औषधियो का राजा कहा गया है तथा वरुण को चिकित्सको का स्वामी। वरुण को ही जलो का स्वामी कहा गया है।

प्राकृतिक चिकित्सा मे जलोपचार की कई विधिया हैं। जैसे ठडे पानी की पट्टी गर्म पानी की पट्टी वाष्पस्नान कटिस्नान पादस्नान आदि से पित्त ज्वर कफ विषप्रभाव लू लगना पेट दर्द नाक से खून निकलना चक्कर आने पर चर्मविकार सिर दर्द सिर का भारीपन खासी हड्डी के विकार का दर्द आदि मे लाभ होता है। जल चिकित्सा का एक वैज्ञानिक आधार है–दर्शनात्मक होना। पञ्चभौतिक शरीर चेतन तत्त्व के कारण सक्रिय रहता है। शरीर मे रस रक्त मास मद अस्थि मज्जा शुक्र सात धातुए हैं। रस आधार तत्त्व है जो पानी का गुण है। शरीर मे दो तत्त्व हैं अग्नि जल। शरीर की उष्णता उमग चपलता स्थिरता अग्नि का कार्य है शान्ति समाधान पुष्टि जल का कार्य है। पानी का शरीर मे विशिष्ट कार्य है वह मल धोता है और देह की नमी का आवश्यक सन्तुलन रखता है।

शरीर मे रोग प्राय बाहर से नहीं आते। अप्राकृतिक जीवन से ही शरीर मे विकार पैदा होते है। जब प्रकृति उसे निकालने का प्रयास करती है तो उसे ही हम रोग कहते हैं। अप्राकृतिक विकार शरीर मे नही पच सकते अत रोग निवारणार्थ हमे प्राकृतिक तत्त्वो का ही सहारा लेना चाहिऐ जिनसे ही हमारा शरीर बना है। जल चिकित्सा से रोग का समूल विनाश होता है।

जल की चार अवस्थाओ का विवेचन वैदिक सहिताओ मे है–अम्भ मरीचि भर आप। अम्भ द्युलोक से भी ऊर्ध्व प्रदेश मह जन लोको मे व्याप्त है। मरीचि अन्तरिक्ष मे भर पृथ्वी के उत्पादन मे आप पृथ्वी पर प्रवाहित होने वाला या खोदने पर निकलने वाला जल है। अम्भ ही पञ्चीकृत होकर अन्य तत्त्वो के मिश्रण से स्थूल जल बनता है। मुनियो ने जल को दिव्य और भौम (पृथ्वी) दो प्रकार का माना है। दिव्य जल भी धाराज धारा रूप मे गिरा त्रिदोश नाशक बलदायक पाचक मूर्च्छा ग्लानि आलस्य नाशक है। करका जल पत्थर के टुकडे (ओला) अमृततुल्य भारी स्थिर शीतल पित्तनाशक कफ वातकारक है। तौषार नदी समुद्र की अग्नि से उत्पन्न धुआ रहित प्राणियो को हानिकारक वृक्षहितकारक शीतल वातकारक कण्ठरोग अग्नि प्रमेह गलगण्ड रोगनाशक है। हैम जल पर्वत शिखर से बर्फ का पिघला पानी शीतल पित्तनाशक वातवर्धक है। भौमजल मधुर शीतल हल्का रुचि कारक त्रिदोषनाशक होता है। नदियो का जल-वातकारक हल्का कफ पित्त नाशक है। नदियो के वेग पर गुण आधारित है। औदभिद् जल पित्तनाशक शीतल तृप्तिकारक बलदायक कुछ वातकारक है। नैर्झर जल झरने का पानी रुचिकारक कफनाशक हल्का अग्निदीपक मधुर वात पित्त नाशक होता है। कूपजल मीठा हितकारक त्रिदोषनाकश है पर खारा है तो त्रिदोषकारक होगा। वृष्टि जल प्रथम दिन का अपथ्य पर तीन दिन बाद अमृततुल्य होता है। हेमन्त तथा शिशिर ऋतु मे सरोवर का जल हितकारी है वसन्त ग्रीष्म मे कुए का झरने का नदी का जल वर्जित है। क्योकि सिवैले पत्ते गिरने से पानी दूषित हो जाता है। वर्षा मे औदभिद कूपजल शरद मे नदी जल पीना चाहिए। जल थोडा थोडा बार बार पीना लाभकारी है न अधिक न कम। मूर्च्छा पित्त गरमी दाह विष रक्तविकार परिश्रम भ्रम मे शीतल जल वर्जित है। शीतल जल दोपहर मे गरम करके शीतल किया जल एक पहर मे उष्ण पानी आधे पहर मे पच जाते हैं

इस प्रकार स्पष्ट है कि जलचिकित्सा विज्ञान आज भी हमारे लिए उपयोगी है। हमे इस जीवनदायक तत्त्व का सही उपयोग करना चाहिये और प्रकृति के साथ तारतम्य मिलाकर जीवन जीने का प्रयत्न करने पर ही प्राणी सुखी रह सकते हैं। वैदिक विज्ञान हमे प्रकृति से लडना नहीं अपितु सामजस्य का निर्देश करता है। प्राकृतिक सन्तुलन ही हमारे लिए सर्वाधिक कल्याणकारी है।

सस्कृत विभाग
मेरठ कॉलिज मेरठ (उ०प्र०) ☆

आर्य बन जाइए

मानवों के लिए वेद वरदान है
विश्व बन्धुत्व हित प्रभु का अनुदान है
वेद पथ त्याग करके कुपथ पर चले
भूल है व्यक्ति की और अज्ञान है।।

जब से शासन विदेशी वतन पर हुआ
आक्रमण पहला वैदिक वतन पर हुआ
सभ्यता सस्कृति नष्ट होती गई
कब्जा पाखण्डियों का धरम पर हुआ।।

मत मतान्तर बढे प्रभु के औतार भी
मूर्ति पूजा सहित व्रत व त्योहार भी
ग्रन्थ कल्पित बने कामना पूर्ति के
बाद मरने के पितरों का सत्कार भी।।

सर्वव्यापक प्रभू को तिरस्कृत किया
अनगिनत देवी देवों को कल्पित किया
तब दयानन्द ने वेद की ज्योति से
सत्य का मार्ग हम सबका ज्योतित किया।।

अब तो सद्धर्म सन्मार्ग अपनाइए
छोड़ पाखण्ड को आर्य बन जाइए
ओ३म् ध्वज ही धरती पर लहरायेगा
मात्र सैनिक महर्षि के बन जाइए।।

सन्तोष कुमार 'सन्तोष'
मुसाफिर खाना
सुल्तान पुर (उ०प्र०)

भोक्ता आत्मा का स्वरूप

– डा० नरेश कुमार शास्त्री

इस ससार मे दो प्रकार की सत्ताओ का प्रतिक्षण अनुभव करते है। वे सत्ताए है – जड और चेतन। भारतीय दर्शन मे इन्हे ही क्रमश प्रकृति और पुरुष पद से अभिहित किया गया है। पुरुष को पुन दो प्रकार का माना गया है–'परमपुरुष' और पुरुष। दोनो ही चेतन स्वरूप हैं दोनो की पृथक पृथक सत्ता है। परमपुरुष को ही परमात्मा कहते हैं और पुरुष शब्द से आत्मा का ग्रहण होता है।

परमात्मा जन्म मरण के चक्र से सर्वथा मुक्त तथा इस समग्र ब्रह्माण्ड का कर्त्ता धर्त्ता है। ये सभी अणु परमाणु उसी से ओत प्रोत तथा गतिशील हैं। जो सर्वव्यापक हैं सब प्राणियो को उनके कर्मानुसार फल प्रदान करता है तथा फल भोगने के लिए उपयुक्त मनुष्यादि योनियो मे भेज कर शरीर धारण करवाता है परन्तु स्वय कभी शरीर धारण नहीं करता। इस परमपुरुष या परमात्मा को ही पुरुषोत्तम भी कहा जाता है जो मनुष्यादि पुरुषो से सर्वथा भिन्न तथा सर्वश्रेष्ठ है–

उत्तम पुरुषस्त्वन्य परमात्मेति उदाहृत ।

(गीता १५ १७)

इसी परमात्मा का प्रकाश योगिजन अपने हृदयो मे योगसाधना से अनुभव किया करते हैं–

स्वाध्याय योगसम्पत्या परमात्मा प्रकाशते।

(योगदर्शन १ २८ व्यास भाष्य)

यह परमात्मा भोक्ता आत्मा के कर्मो का द्रष्टा मात्र होता है स्वय भोक्ता नहीं होता। यह अनादि नित्य तथा स्वयम्भू है। दूसरा है–आत्मा। इसी की अवस्था–विशेष मे जीव या 'जीवात्मा' सज्ञा होती है। मुख्यत यह जीवात्मा ही सूक्ष्म शरीरी भोक्ता आत्मा है। यह 'जीवात्मा' पुन अवस्था विशेष मे स्थूलशरीरी भोक्ता आत्मा कहलाता है। पाश्चात्य विद्वान जिसे 'ईगो' या 'मैं' पद से व्यवहृत करते हैं वह आत्मा' का अतिस्थूल अवस्थान्तर यह स्थूल शरीरी भोक्ता आत्मा ही है। इस प्रकार इस दूसरे चेतन स्वरूप आत्मा की तीन अवस्थाए होती हैं–

१ आत्मा।
२ जीवात्मा या सूक्ष्म शरीरी भोक्ता आत्मा।
३ स्थूल शरीरी भोक्ता आत्मा या मैं।

स्थूल शरीरी भोक्ता आत्मा के स्वरूप को समझने के लिए पूर्व की दोनो अवस्थाओ को जानना भी आवश्यक है। अत क्रमश इनके स्वरूप पर विचार किया जाता है–

१ **आत्मा**– आत्मा शब्द से तात्पर्य आत्मा के उस स्वरूप से है जो सूक्ष्म शरीर से आवेष्टित नहीं है। देह धारियो के शरीर के दो भेद हैं–

(क) कारण शरीर या सूक्ष्म शरीर तथा
(ख) स्थूल शरीर।

सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर का आधार है अथवा कहना चाहिए कि सूक्ष्म शरीर बीज है और स्थूल शरीर उस बीज से बना वृक्ष। जैसा बीज होगा वैसा ही वृक्ष होगा। यह सूक्ष्म शरीर एक कोशिकीय प्राणी अमीबा से लेकर बहुकोशिकीय मनुष्यादि पर्यन्त सब जीवो का ऊपरी सतह पर एक समान होता है। वैसे ही जैसे कि बहुत सी वनस्पतियो के बीज देखने मे एक समान लगते हैं परन्तु वे बीज जब पौधे का रूप धारण करते हैं तो पता चलता है कि ये बीज वस्तुत भिन्न थे। इतना ही नहीं एक ही जाति के बीजो से तैयार पौधो मे भी जो अन्तर आकार प्रकार गुणवत्ता आदि की दृष्टि से पाये जाते हैं उनका कारण भी उन एक जातीय बीजो की सूक्ष्मतया भेद ही होता है। इसी प्रकार सब देहधारियो के सूक्ष्म शरीर भी उनमे आत्मा तत्त्व की समानता के कारण एक समान होते हैं सूक्ष्म शरीर सघटक की दृष्टि से भी समान होते हैं परन्तु 'सस्कार की दृष्टि से सभी सूक्ष्म शरीर परस्पर भिन्न होते हैं और यही कारण है कि एक जातीय मनुष्यो के स्थूल शरीरो मे ही आकार प्रकार गुण आदि की दृष्टि से आश्चर्यजनक भिन्नता पाई जाती है। सूक्ष्म शरीरो मे सासारिक दृष्टि से पाई जाने वाली भिन्नता के कारण ही आत्मा उन सस्कारो के अनुरूप विभिन्न योनियो के स्थूल शरीर धारण करता है। यह सूक्ष्म शरीर ही एक देह से दूसरे देह मे जाने के लिए कार्य करता है।

मुक्तावास्था से पूर्व तक यह सूक्ष्म शरीर आत्मा का वहन करता है इसलिए सूक्ष्म शरीर को ही अतिवाहक शरीर भी कहा गया है। इस प्रकार सूक्ष्म शरीर से अनावेष्टित होना ही आत्मा का शुद्ध स्वरूप है। आत्मा का यह स्वरूप केवल मुक्तावस्था या जब प्रकृति अपने कारण रूप मे उपस्थित होती है उस प्रलयकाल मे ही पाया जाता है अन्य सभी काल मे यह आत्मा या तो सूक्ष्म शरीर से आवेष्टित होता है या सूक्ष्म और स्थूल दोनो शरीरो से।

२ **जीवात्मा**– जीव शब्द जीव बलप्राण धारणयो धातु से निष्पन्न होता है। जिसका अर्थ होता है = प्राण धारण करने वाला = प्राणी। प्राण धारण करना अन्त करण तथा वाह्यकरण समस्त कारणो की साधारण वृत्ति है। वृत्ति का अर्थ है व्यापार। करण इन्द्रियो को कहते है।

ये इन्द्रिया सूक्ष्म शरीर मे बनी रहती है सूक्ष्म शरीर के घटक मे भी इन्द्रिया विद्यमान रहती हैं। यह सूक्ष्म शरीर आत्मा का एक ऐसा आवेष्टन है जो उस समय तक आत्मा को आबद्ध रखता है जब तक कि यह मुक्त अवस्था को प्राप्त न हो जाए। अत अन्वयब्यतिरेक नियम से यह सिद्ध हो जाता है कि बुद्धि आदि करणो से विशिष्ट = आवेष्टित आत्मा की जीव या 'जीवात्मा' सज्ञा होती है।

जब तक यह आत्मा जन्म मरण के चक्र से बधा रहता है तब तक सूक्ष्म शरीर से भी बन्धा रहता है। अत सूक्ष्म शरीर से बधा होने के कारण ही मुक्तावस्था से पूर्व के काल तक आत्मा की सज्ञा 'जीव या 'जीवात्मा' होती है। यही 'जीवात्मा' का स्वरूप है। यह जीवात्मा ही सूक्ष्म शरीर भोक्ता आत्मा है जो स्थूल शरीरी भोक्ता आत्मा' के विवेचन से स्पष्ट हो जाएगा।

३ **स्थूल शरीरी भोक्ता आत्मा** – आत्मा का अधिष्ठान है सूक्ष्म शरीर और उसका आश्रय है स्थूल शरीर। सूक्ष्म शरीर का आश्रय स्थूल शरीर होने से ही स्थूल शरीर के लिए देह पद का व्यवहार होता है। यह स्थूल शरीर ही जीवात्मा का भोगायतन है–'भोगायतन शरीरम'। यही इसका वाहन है–रथ है। इसी रथ पर सवार होकर यह जीवात्मा 'प्रकृति' के नाना फलो को भोगता है। भोक्ता आत्मा की परिभाषा करते हुए कठोपनिषद के ऋषि ने स्पष्ट रूप से कहा है–

आत्मेन्द्रियमनोयुक्त भोक्तेत्याहुर्मनीषिण ।

(कठ० १ ३ ४)

पाच ज्ञानेन्द्रिया पाच कर्मेन्द्रिय तथा अन्त करण से युक्त अर्थात देहधारी आत्मा को ही 'भोक्ता आत्मा' कहा जाता है। भोक्ता आत्मा' का यह लक्षण सूक्ष्म शरीरी 'जीवात्मा' पर भी पूर्णतया घटित होता है तथा स्थूल शरीरी जीवात्मा पर भी। अत आत्मा की ये दोनो दशाए ही भोक्ता हैं।

यद्यपि आत्मा मुक्तावस्था मे अपने शुद्ध स्वरूप मे रहता हुआ ब्रह्मानन्द को भोगता है इस दृष्टि से मुक्तावस्था वाला आत्मा भी भोक्ता ठहरता है परन्तु ब्रह्मानन्द रूपी भोग अलौकिक भोग होने से इसका भोक्ता होते हुए भी भोक्ता नहीं कहलाता। परमात्मा स्वय आनन्द स्वरूप है– आनन्द भोगता है परन्तु आनन्द का भोग प्रकृतिजन्य भोग न होने से इसके भोक्ता को भोक्ता नहीं कहा जाता। प्रकृतिजन्य भोगों का भोग तो सदैव सूक्ष्म शरीरी आत्मा = जीवात्मा मनुष्यादि योनियो मे स्थूल शरीर को अधिष्ठान बनाकर ही किया करता है। इस प्रकार भोक्ता आत्मा के सूक्ष्म शरीरावेष्टित तथा स्थूल शरीरावेष्टित ये ही दो स्वरूप हैं। ☆

कर्म क्षेत्र में जब ऋषि उतरे, छा रहा विधर्मी शासन।
कहा मनुस्मृति सविधान का आर्यो का हो शासन।।

कालजयी सत्यार्थ का प्रकाश रच नीर-क्षीर का ज्ञान दिया।
सस्कार विधि की सरचना कर आदर्शो को मान दिया।।
दश नियमो से निर्देशन कर धर्म-कर्म का बोध दिया।
शास्त्रार्थो के दिव्य अस्त्र से पथाई भ्रम दूर किया।।

सत्य-सनातन धर्म व्यवस्था जगती पर फैलाई।
ओइम ध्वजा ले अखिल विश्व में, वैदिक क्रान्ति जगाई।।
अज्ञान अविद्या-अधकार में, ज्ञान-भानु बन कर तुम प्रकटे।
स्वतत्रता घोषक स्वराज्य के मत्र प्रदाता तुम प्रकटे।।

दयानन्द विद्वान भास्कर! अतुलित यह प्रतिदान तुम्हारा
वेद ज्ञान के ज्योतिस्तम्भ! सुस्तोषित सुकर्म तुम्हारा।।

इस्लामी घुसपैठियों से खतरे और समाधान

पृष्ठ ६ से आगे

—प्रो० बलराज मधोक

यदि लाहोर भारत को मिल गया होता तो यह पूर्वी पजाब से आनेवाले बहुत से विस्थापित हिन्दू लाहौर मे बस जाते। यदिऐसा हो जाता तो बाद मे भारतीय पजाब अनेक सकटो और समस्याओ से बच जाता।

भारत का विभाजन कराके भारत की नैसर्गिक सीमाओ के अतगर्त पाकिस्तान बना लेने के लिए मुस्लिम लीग और इसके साथ जुडे हुए मुसलमानो को कोई विशेष प्रयत्न नहीं करना पडा। अधिकाश मुसलमानो को यह विश्वास नहीं था कि उन्हे इतना बडा स्वतत्र इस्लामी राज्य इतनी आसानी से मिल जायेगा। इसलिए पाकिस्तान मिल जाने पर उनके होसले बहुत बुलन्द हो गये और सारे पाकिस्तान मे नारे लगने लगे।

हस के लिया पाकिस्तान लड के लेगे हिन्दुस्तान।

पाकिस्तान के नेताओ को विश्वास था कि जो हिन्दू बिना लडे देश के इतने बडे भाग को उनके हवाले कर सकते है वे खडित हिन्दुस्तान की रक्षा भी नहीं कर सकेगे। इसीलिए पाकिस्तान ने अक्टूबर १६४७ मे ही जम्मू काश्मीर राज्य को हडपने के लिए युद्ध छेड दिया। पाकिस्तान के नेताओ का अनुमान ठीक निकला। प० नेहरू ने पाकिस्तान को सबक सिखाने के बजाय पहले कश्मीर का मामला सयुक्त राष्ट्र सघ मे ले जाकर उसका आतराष्ट्रीयकरण कर दिया और बाद मे जब भारतीय सेनाए सभी मोर्चों पर आगे बढ रही थी १ जनवरी १६४६ को युद्ध विराम की घोषणा करके जम्मू काश्मीर राज्य का एक तिहाई भाग पाकिस्तान की झोली मे डाल दिया। इस प्रकार पाकिस्तान दुबारा भारत पर थोपा गया पहला युद्ध उसके पक्ष मे गया। उत्तम सैनिक शक्ति होने के बावजूद राजनैतिक नेताओ की गलत नीति के कारण भारत की इस पहली पराजय ने पाकिस्तान के शासको और जनता को लगा कि वास्तव मे ही वे लड कर भी भारत को हस्तगत कर सकते हैं।

१६६२ मे भारत पर चीनी आक्रमण और भारतीय सेनाओ की दुर्गति ने पाकिस्तान को भारत के प्रति आक्रान्त रूख बनाये रखने के लिए और प्रोत्साहन दिया। १६६४ मे भारत के कच्छ क्षेत्र पर अकस्मात हमला करके पाकिस्तान कच्छ का भी एक बडा भाग अपने अधिकार मे लाने मे सफल हो गया। तब तक पाकिस्तान की सैनिक शक्ति मे अमरीका से पेर्टन टेक मिलने के कारण काफी वृद्धि हो चुकी थी पाकिस्तान के तत्कालीन तानाशाह जनरल अयूब को विश्वास था कि उसके टेंक दिल्ली तक पहुच सकते हैं। इसवी १६६५ का युद्ध पाकिस्तान के इस बधे हुए आत्मविश्वास का परिणाम था। सौभाग्य से उस समय भारत के प्रधानमत्री लालबहादुर शास्त्री थे। वे कच्छ मे अपने हाथ जला चुके थे और उस अनुभव से उचित सबक सीख चुके थे इसलिए उन्होने पाकिस्तान के लाहोर स्यालकोट क्षेत्र पर प्रत्याक्रमण करके पाकिस्तान को कश्मीर क्षेत्र मे छम्ब हाजीपरी और कारगील की पहाडिये से पीछे हटने पर बाध्य कर दिया। उस युद्ध मे भारत का पलडा भारी था परन्तु अमरीका के दबाव पर युद्ध बन्दी और तत्पश्चात ताशकद सम्मेलन मे रूसी दबाव के कारण हाजीपीर और कारगील की पहाडियो पाकिस्तान को वापस करने के लिए भारत को बाध्य होना पडा।

ताशकद सम्मेलन के अनुभव से श्री शास्त्री समझ गये कि भारत की सोवियत रूस पर पूर्ण निर्भरता उसके हित मे नहीं। इसलिए उन्होने भारत की विदेशी नीति पर पुन विचार करने का मन बना लिया। यही उनकी ताशकद मे ही अकाल और रहस्यमयी मृत्यु का कारण बना।

१६७१ का युद्ध भी पाकिस्तान ने ही शुरु किया परन्तु भारत की सशस्त्र सेनाओ ने इस युद्ध मे प्रभावी विजय प्राप्त की। पाकिस्तान के नब्बे हजार से अधिक सैनिको को भारतीय सेना के सामने आत्म समर्पण करना पडा तथा लाहोर स्यालकोट सेक्टर मे भारत ने पाकिस्तान के पाच हजार वर्ग मील महत्त्वपूर्ण क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। परन्तु इस शानदार सैनिक विजय का हश्र भी वही हुआ जो १६४७ और १६६४ के युद्धो का हुआ था। शिमला मे कूटनीतिक मेज पर प्रधान मत्री इन्दिरा गाधी ने भारत की सैनिक विजय को फिर पराजय मे बदल दिया।

१६४७ १६६४ १६७१ के युद्धो के अनुभव से पाकिस्तान के शासक और अभिभावक समझ गये कि वे भारत को युद्ध मे परास्त नहीं कर सकते। इसलिए उन्होने भारत के प्रति एक नयी रणनीति बनाने का फैसला किया। इसी बीच खनिज तेज की कीमतो मे १५ २० गुणा वृद्धि होने के कारण कुछ इस्लामी देशो विशेष रूप मे सऊदी अरब और लीबिया के पास अथाह धन इकटठा होने लगा। इस्लामी देशो मे सयुक्त राष्ट्र सघ मे अपना एक अलग गुट भी बना लिया। इसके कारण उनका राजनैतिक और कूटनीतिक प्रभाव बढने लगा। साथ ही उन्होने तेल से प्राप्त धन से आधुनिक अस्त्र शस्त्र खरीदने शुरू किये और इस्लामी अणुबम बनाने का भी फैसला किया। इसके साथ ही उन्होने भारत जैसे गैर इस्लामी देशो के इस्लामीकरण की योजना बनायी। इस हेतु उन्होने पाकिस्तान को सहायता देने और भारत मे मुसलमानो की जनसख्या बढाने के लिए उन्होने तीन उपाय अपनाए।

पहला उपाय मुसलमानो की जनसख्या बढाने के लिए मजहबी कर्त्तव्य के रूप मे अधिक बच्चे पैदा करने की प्रेरणा देना। सभी मस्जिदो मे मुल्ला मौलवी इस पर बल देने लगे। बहुविवाह की छूट ने उनका काम आसान कर दिया। परिवार नियोजन का बहिष्कार किया। फलस्वरूप मुसलमानो की जनसख्या मे तेजी से वृद्धि होने लगी। यह एक कटु वास्तविकता है कि भारत के अधिकाश मुसलमान परिवारो मे किसी प्रकार का परिवार नियोजन नही होता और बच्चो की सख्या अधिक होती है। कुछ परिवारो ने तो पचास तक बच्चे पैदा करने का रिकार्ड बनाया है।

दूसरा उपाय तेल से प्राप्त धन को गरीब और पिछडे हिन्दू परिवारो को मुसलमान बनाना है। तबलीग यानी काफिरो को मुसलमान बनाने का काम योजनाबद्ध ढग से चलाया जा रहा है। देश भर मे इस्लामी मदरसो का जाल फैला दिया गया है और वहा से पढकर निकले युवको को अच्छे वेतन पर इस काम मे लगा दिया जाता है। नैतिक मूल्यो का ह्रास भी इस काम मे इस्लामवादियो का सहायक सिद्ध हो रहा है। क्योकि मुसलमान एक साथ चार पत्निया रख सकते हैं इसलिए अनेक मनचले पैसे वाले हिन्दू युवक दूसरी पत्नी के लालच मे मुसलमान बन रह हैं। तमिलनाडु मे मीनाक्षीपुरम मे दलित हिदुओ के सामूहिक रूप मे मुसलमान बनने से सारे देश का ध्यान इस अभियान की ओर आकर्षित हुआ और इस पर कुछ रोक लगी परन्तु विदेशी धन के बल पर निर्धन और दलित हिन्दुओ को मुसलमान बनाने का काम अभी चल रहा है।

तीसरा उपाय जो इन दोनो उपायो की अपेक्षा प्रभावी सिद्ध हुआ है पाकिस्तान और बाग्लादेश से मुसलमानो की भारत मे योजनाबद्ध घुसपैठ है। इस काम मे तीन बाते विशेष रूप मे सहायक सिद्ध हुई है। १६७०-७१ मे पूर्वी पाकिस्तान से पाकिस्तानी सेना के आतक से लगभग एक करोड लोग भारत मे आने पर विवश हुए हैं। उनमे ६० प्रतिशत हिन्दू थे परन्तु कुछ मुसलमान भी आये थे। बाग्लादेश के स्वतत्र राष्ट्र बनने के बाद इनमे से कुछ वापस नहीं गये। भारत मे मुसलमानो को जो विशेष अधिकार दिये गये हैं और यहा अर्थिक प्रगति के बेहतर अवसरो के कारण वे भारत मे ही टिक गये।

बाग्लादेश बनने के बाद बाग्लादेश और भारत मे आने जाने की सुविधाए बढ गयीं और रूकावटे खत्म हो गयीं। इस कारण बाग्लादेश से मुसलमानो का भारत मे आना आसान हो गया।

शेख मुजीब की हत्या के बाद बाग्लादेश मे पाकिस्तान का प्रभाव फिर बढने लगा। इसकी आर्थिक दृष्टि से अरब देशो पर निर्भरता भी बढ गयी। इस कारण योजनाबद्ध ढग से भारत मे मुस्लिम जनसख्या बढाने के उद्देश्य से बाग्लादेश मुसलमानो को भारत मे घुसपैठ करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाने लगा।

पाकिस्तान से भारत आने और भारत से पाकिस्तान जाने मे बहुत ही रुकावटे थीं परन्तु जब १६७७ मे नई दिल्ली मे जनता पार्टी की सरकार बनी और अटल बिहारी वाजपेयी विदेशमत्री बने तब स्थिति बदल गयी। अटल बिहारी वाजपेयी यह सिद्ध करने के लिए कि वे मुसलमानो और पाकिस्तान का अपने राजनैतिक गुरु जवाहर लाल नेहरू से भी अधिक हित चितक हैं पाकिस्तान से आने और वहा जाने के सम्बन्ध मे १६४७ से चले आ रहे वीजा सम्बन्धी नियम बदल दिये। फलस्वरूप पाकिस्तान से लाखो लोग भारत मे आने लगे। उनमे से बहुत से भारत मे ही टिक गये। भारत सरकार द्वारा लोकसभा मे एक प्रश्न के उत्तर मे दिये गये आकडो के अनुसार लाखो पाकिस्तानी ऐसे थे जो भारत आकर वापस नहीं गये। उनमे कितने पाकिस्तान के गुप्तचर थे और कितने प्रशिक्षित कमाडो थे यह कहना कठिन है। परन्तु यह तथ्य है कि इसके बाद भारत मे रह गये मुसमलानो का रूख फिर आक्रान्ता होने लगा और साम्प्रदायिक दगे अधिक होने लगे।

क्रमशः

मृत्यु से दुःख नहीं सुख

– ब्र० उदयकुमार

सबसे पहले यह जानना आवश्यक है कि मृत्यु है क्या ? भिन्न भिन्न सम्प्रदायो मे भिन्न भिन्न विचारधाराए प्रचलित हैं। परन्तु जीवन और मृत्यु का वास्तविक रूप यह है कि अनेक नाडी और नसो से बने हुए शरीर और आत्मा के सयोग का नाम जीवन है तथा आत्मा जब शरीर से पृथक हो जाती है तो उसी का नाम मृत्यु है। यहा यह विचारणीय है कि यदि मृत्यु नहीं होती तो यह जगत कैसा होता ? अनादि काल से ही मानव मृत्यु से भयभीत रहा है। मानव की नाना इच्छाए होती है परन्तु समस्त इच्छाओ मे उसकी प्रबल इच्छा रहती है जीने की इच्छा। कोई व्यक्ति कुष्ठादि रोगो से पीडित है यदि उसे जीवन मुक्ति या मृत्यु की बात करो तो इस कष्टप्रद जीवन से मुक्ति नहीं पाना चाहता अपितु वह भी सौ वर्ष जीने की इच्छा करता है यदि मृत्यु न होती तो ससार का यह सौन्दर्य भी न होता जो इतिहास के पन्नो पर स्वर्ण अक्षरो से वर्णित है।

प्राणियो की मृत्यु हो जाने पर शेष परिवार को दु ख क्यो होता है ? इसका कारण यह नहीं कि मरा हुआ प्राणी उन्हे प्रिय था बल्कि वास्तविक कारण तो यह है कि मरे हुए प्राणियो के साथ शेष परिवारो के स्वार्थ जुडे हुए होते है। जिसे पुत्र का शोक है वह केवल इसलिए की उसने पुत्र को बुढापे का आधार समझ रखा था पुत्र क्या मरा उसका आधार समाप्त हो गया। जिसे माता पिता का शोक है वह भी अपने ही स्वार्थ के लिए है कि अब उसका पालन पोषण कौन करेगा ? जिस स्त्री का शोक है वह भी केवल अपने स्वार्थ के लिए कि जो सुख स्त्री से मिला करता था वह अब नही मिलेगा। अत उपर्युक्त बातो से स्पष्ट हो जाता है कि जिसे मृत्यु का शोक कहते है वह शोक असल मे बन्धु बान्धवो के लिए नहीं किन्तु अपने स्वार्थ के बीच जो दीवार खडी हो जाती है उससे है।

महर्षि याज्ञवल्क्य ने अपनी पत्नी मैत्रेयी को यह उपदेश कितने सुन्दर शब्दो मे कहा है – हे मैत्रेयि ! निश्चय ही पति की कामना के लिए पत्नी को पति प्रिय नहीं होता किन्तु अपनी कामना के लिए उसे पति प्रिय होता है।

निश्चय ही भार्या की कामना के लिए पति को भार्या प्रिय नहीं होती किन्तु अपनी कामना के लिए भार्या प्रिय होती है। निश्चय ही पुत्रो की कामना के लिए माता पिता को पुत्र प्रिय नहीं होते किन्तु अपनी कामन के लिए पुत्र प्रिय होते हैं। यदि मनुष्य इस बात को अच्छी तरह से जान ले कि वह अपने सम्बन्धियो मित्रो स्त्री पुत्रादि के साथ जो उससे कामना स्वार्थादि जुडे हुए हैं उन्हे पृथक कर लेवे तो उस समय भी मनुष्य को किसी की मृत्यु का दु ख नहीं हो सकता। दु ख तो स्वार्थ और हानि से हुआ करता है। इस मरणशील ससार मे प्रतिदिन हजारो व्यक्ति मरते है और जन्म लेते हैं लेकिन उनके मरने मे हमे न कोई शोक होता है और जन्म लेने पर न कोई हर्ष। इसका कारण क्या है ? इसका कारण यही है कि उनके साथ हमारा कोई स्वार्थ नहीं है। निष्कर्ष यह है कि मृत्यु से दु ख का कारण केवल स्वार्थ ही है।

यदि मानव ससार को प्रत्येक वस्तु को ईश्वर प्रदत्त समझकर प्रयोग करें तो उस वस्तु के नष्ट हो जाने पर मनुष्य को किसी तरह का शोक नहीं होता। इसका मुख्य कारण यह है कि मनुष्य की भावना यह होती है कि वह वस्तु उसकी नहीं किन्तु ईश्वर की है और केवल प्रयोग के लिए उसे मिली है। उदाहरण के रूप मे जैसे – देवदत्त की एक पुस्तक है और उससे पढने के लिए यज्ञदत्त ने ली है। यह पुस्तक उसे अच्छी लगती है ओर उसका जी नहीं चाहता कि पुस्तक वापस कर दे। परन्तु पुस्तक के स्वामी देवदत्त को उसकी आवश्यकता पडी और देवदत्त ने यज्ञदत्त से पुस्तक मागी। अब यहा विचारणीय है कि यज्ञदत्त के पुस्तक न देने पर देवदत्त उसे हठात छीन लेगा और इसका परिणाम यह होगा कि यज्ञदत्त को दु खित होना पडेगा। यदि यज्ञदत्त इस पुस्तक को अपनी न समझ कर दूसरो की समझकर प्रयोग करता और मागने पर प्रसन्नता से लौटा देता तो उसे कोई शोक नहीं होता। इस तरह मनुष्य को ससार की प्रत्येक वस्तु को ईश्वर प्रदत्त समझकर प्रयोग करना चाहिए और ईश्वर के मागने पर प्रसन्नता से लौटा देना चाहिए। यदि प्रयोक्ता स्वार्थ सम्बन्ध जोडकर कि यह धन मेरा है उन्हे न देना चाहे तो पुस्तक स्वामी के सदृश इन वस्तुओ को ईश्वर हठात छीन लेगा और यज्ञदत्त के समान प्रयोक्ता को दु ख का शिकार होना पडेगा।

सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो मृत्यु दु खप्रद नही सुखप्रद है। जीवन और मृत्यु को दिन और रात के सदृश कहा जाता है। दिन काम और रात्रि आराम के लिए है। मनुष्य के दिन मे काम करने से उसके बाह्य करण और अन्त करण थक जाते हैं और काम करने मे असमर्थ हो जाते हैं। इस प्रकार शक्ति का ह्रास होने पर रात्रि मे वह आराम करता है। इस अवस्था मे उसकी इन्द्रिया काम करना बन्द कर देती हैं। काम न करने से शक्ति का ह्रास होना बन्द हो जाता है और शक्ति पुन एकत्रित हो जाती है। मनुष्य पुन प्रात काल कार्य करने मे समर्थ हो जाता है। इसी प्रकार जीवन और मृत्युरूपी दिन रात भी काम और आराम के लिए ही है। मनुष्य जीवनरूपी दिन मे काम करते करते थक जाता है ओर वृद्धावस्था जीवनरूपी दिन का अन्तिम प्रहर होता है। इसके बाद मृत्युरूपी रात्रि आती है। इस मृत्युरूपी रात्रि मे आराम पाकर मनुष्य जीवनरूपी दिन के प्रात काल रूपी बाल्यावस्था मे नई शक्ति और नए सामर्थ्य के साथ उत्पन्न होता है। इस प्रकार उपर्युक्त उदाहरणो से स्पष्ट हो जाता है कि मृत्यु दु ख देने के लिए नहीं अपितु आराम और सुख देने के लिए आती है। इसीलिए तो कठोपनिषद मे नचिकेता से यमराज कहते हैं –

हन्ता चेन्मन्यते हन्तु हतश्चेन्मनयते हतम।
उभौ तौ न विजानीतो नाय हन्ति न हन्यते।।

१/ २/६१//

अर्थात मारने वाला यदि यह समझता है कि मैं इस आत्मा को मार दूगा और यदि मारे जाने वाला मरा हुआ समझता है तो वे दोनों नहीं जानते कि यह आत्मा न मरता है और न मारा जाता है। भगवान श्रीकृष्ण ने तो गीता में अर्जुन को उपदेश देते हुए बहुत स्पष्ट और सुन्दर शब्दों मे कहा है–

वासासि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि सयाति नवानि देही।।

अर्थात –जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्रो को धारण करता है वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरो को त्यागकर नये शरीरो को प्राप्त कर लेता है।

पाणिनि महाविद्यालय
बहालगढ ☆

दीपमालिके हो शुभ तुम को

दीपमालिके हो शुभ तुम को, दीपमालिके हो शुभ तुम को।
लडडू फोडो पेडे तोडो चूर तो दे दो हम को।।
दीपमालिके ।।१।।

महलो ! नित तुम जश्न मनाओ
क्रीम पाउडर हुस्न बनाओ
सूट बूट से सजो सजाओ
कुत्तो को मखमल पहनाओ
पर चिथडे फेकना न भूलो कभी तो देखो इनको।।
दीपमालिके ।।२।।

मौज व मस्ती औशहनाई
हलवा रबडी दूध मलाई
रखना अब सभाल के भाई।
झोपडियो की बारी आई
वितरण करना भूल गये तो खैर न होगी कल को।।
दीपमालिके ।।३।।

खूब चलाओ नाच गान को
हसोऔखेलो सुनो तान को
झोपडिया छोडती प्रान को
कभी तो खोलो बधिर कान को
'मरता क्या न करता' अब वे सह न सकेंगी गम को।।
दीपमालिके ।।४।।

तुम ने उनको बहुत सताया
खूब रुलाया खूब जलाया
पोषण कभी न उन्हे दिलाया
शोषण से ही सदा छकाया
झोपडियो की सैन्य चटा दे कहीं धूल न तुम को।।
दीपमालिके ।।५।।

झोपडियो का नित का रोदन
सह न सकेगा अब अवरोधन
चलते है शोधन पर शोधन
कागज पर नित नए प्रलोभन
मुई खाल की सास से निश्चित गगन मिलेगा तल को।।
दीपमालिके ।।६।।

अब न बचेगा तव काला धन
निराकरण है समुचित वितरन
सार्थक होगा तब जन गन मन
जब होयेगा श्रम का अकन
जितना शीघ्र करोगे निर्णय चैन मिलेगा तुमको।।
दीपमालिके ।।७।।

हूर नूर और इन्द्र की परिया
सुरा सुन्दरी और रग रलिया
खूब जलाओ दीपावलिया
बल्ब रगीले दिए दिवलियो
पर मुड दीप तुम्हारे देखे झोपडियो के तम को।।
दीपमालिके ।।८।।

नव युग का है आज तकाजा
होना है होशियार लिहाजा
ऊच नीच का उठे जनाजा
कान खोल कर सुन लो राजा
असमानता मिलेगी अब तो, हाथ जोड कर सम को।।
दीपमालिके ।।६।।

दीपमालिके हो शुभ तुम को, दीपमालिके हो शुभ तुम को।।

आदर्श त्रैतवाद

पृष्ठ १९०
मूल्य ३५ रु०
लेखक श्री राजसिंह भल्ला
ए–१/२, शक्ति नगर, विस्तार दिल्ली ५२
प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली २

महर्षि दयानन्द सरस्वती त्रैतवाद सिद्धान्त के प्रबल पोषक हैं। हम सभी को यह तीन सत्ताये स्पष्ट दिखाई देगी।

जड वृक्ष अल्पज्ञ भोक्ता जीव और सर्वज्ञ अध्यक्ष ब्रह्म। ये परस्पर सयुक्त हैं। कोई जीव न ईश्वर से अलग है और न प्रकृति से कोई प्रकृति ईश्वर से अलग अथवा ऐसी है जो जीव का भोग न हो। और न ईश्वर प्रकृति और जीवो से पृथक हैं। जीव और ईश्वर का गुण कर्म और स्वभाव कैसा है इसका उत्तर देते हुए महर्षि कहते है दोनो चेतन स्वरूप हैं स्वभाव दोनो का पवित्र अविनाशी धार्मिकता आदि है। परन्तु परमेश्वर के सृष्टि की उत्पत्ति स्थिति प्रलय सबको नियम मे रखना जीवो को पाप पुण्य का फल देना आदि धर्मयुक्त कर्म हैं। और जीव के सन्तानोत्पत्ति उनका पालन आदि अच्छे बुरे कर्म हैं ईश्वर के नित्य ज्ञान आनन्द अनन्त बल आदि गुण हैं। जीव के लक्षणो को दर्शन के अनुसार महर्षि लिखते हैं।

इच्छा द्वेष प्रयत्नादि (१ १-१०) न्याय द० मे जीवात्माओ के गुण परमात्मा के गुणो से भिन्न है इन्हीं से आत्मा की प्रतीति करनी क्यो कि वह स्थूल नहीं है। दृश्य अर्थात जड जगत उसी जीव के भोग के लिये है अर्थात जिस जगत रूप वृक्ष का मन्त्र मे उल्लेख है वह जीव के लिये है ईश्वर के लिये नहीं।

आर्यसमाज का त्रैतवाद ईश्वर जीव प्रकृति यह तीनो अनादि हैं यह बुद्धि जीवी को समझ मे आ जाये तो जड जगत अल्पज्ञ जीव और सर्वज्ञ ईश्वर के परस्पर सम्बन्ध को समझकर हम बहुत से निरर्थक कार्यो से बच सकते हैं। प्राय अच्छे दार्शनिको की बुद्धि चकरा जाती है कि अमुक क्रिया जीव के कार्य क्षेत्र की है या ब्रह्म की। जहा भोग स्पष्ट है वहा जीव की सत्ता स्पष्ट दिखती है। जहा भोग मे बाधा है वहा भोक्ता की असमर्थता भी उसकी सत्ता की सीमा की सूचक है।

जगत की किसी धटना को ले हमे यह तीन सत्ताये साफ साफ दिखाई देगी। जड वृक्ष अल्पज्ञ भोक्ता जीव और सर्वज्ञ अध्यक्ष ब्रह्म। ये परस्पर सयुक्त है।

महर्षि का प्रतिपादित त्रैतवाद जिसे हम नाना वादो से सर्वथा भिन्न त्रैतवाद प्रस्तुत पुस्तक मे आपकी विद्वत्ता और स्वाध्याय की प्रवृत्ति को उजागर करती हे।

आदर्श त्रैतवाद जो आर्यसमाज का विभिन्न मतवादियो से सर्वथा भिन्न दृष्टिकोण देकर आदर्श सिद्ध किया है। पुस्तक को सप्रमाण सटीक लिखकर प्रस्तुत विषयको आर्यजनो के समक्ष रखकर मौलिक पक्ष का प्रतिपादन किया है।

विद्वान लेखक का ऋषि के दर्शन पक्ष जो अपने म विशिष्ट हे विज्ञजन पढे और लेखक को दिशा बोध दे जिससे भूलो को भविष्य मे सुधारा जा सके।

पुन सार्वदेशिक सभा भी धन्यवाद की पात्र है जिसने इस अद्भुत सिद्धान्त पक्ष के ग्रन्थ का प्रकाशन किया।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सपादक

क्या तीन सत्ताये वास्तव मे एक नहीं तीन है दर्शन शास्त्र का यह एक जटिल प्रश्न है।

द्वैतवाद अद्वैतवाद विशिष्ट द्वैतवाद भेदाभेद वाद आदि अनेक वाद हैं परन्तु इन तीन मे से दो को एक भाग मे केसे परिणित किया जाये यह कठिन प्रश्न है। जीव और ब्रह्म मे साधर्म्य होते हुए भी वैधर्म्य का निराकरण असम्भव है। दु ख अज्ञान दो ऐसे धर्म है जिनका ईश्वर पर अध्यारोप कर ही नहीं सकते। अल्पज्ञता तथा जडत्व भोक्तृव और भोग्य पदार्थ ये दोनो ब्रह्म मे नही पाये जाते हे।

मुस्लिम परिवार ने हिन्दू धर्म अपनाया

कानपुर आर्य समाज मन्दिर गोविन्द नगर मे समाज व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदस आर्य ने ६ सदस्यो के एक मुस्लिम परिवार को उनकी इच्छानुसार शुद्धि सस्कार करके हिन्दू धर्म की दीक्षा दी। उसमे दादी से लेकर दो पुत्रो एक बहू व दो पौत्रिया तीन पीढिया शामिल है।

श्री आर्य ने इनके नाम क्रमश सुमित्रा देवी बच्ची लाल राजकुमार श्रीमती गीता कु० लक्ष्मी व नीलू रखे तथा उनके प्रमाण पत्र एव धार्मिक पुस्तके भेट की।

शुद्धि समारोह मे सुमित्रा देवी ने बताया कि वह हिन्दू परिवार मे उत्पन्न हुई थी। युवा अवस्था मे गल्ती करके एक मुस्लिम युवक से विवाह कर लिया जिससे यह परिवार बना। आज श्री दवीदस आर्य की सहायता से अपनी भूल का सुधार कर रही हू। मै कायस्थ परिवार की थी अब मै पुन वही श्रीवास्तव बन रही हू। मुझे इस पर अति प्रसन्नता है

समारोह के अन्त मे उनके हाथ स प्रसाद वितरण करवाया गया।

मत्री
आर्य समाज गोविन्द नगर कानुपर

महाविद्यालय की छात्राएं शराबबन्दी के लिये आन्दोलन करें।

ललित किशोर चतुर्वेदी

राजस्थान के उच्च शिक्षा मत्री ललित किशोर चतुर्वेदी ने वैदिक कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय की छात्राओ को प्ररणा दी है कि राजस्थान की समस्त कन्या महाविद्यालया की छात्राओ को सगठित कर राजस्थान म पूर्ण शराबबन्दी की मुहिम चलाये। वैदिक कन्या महाविद्यालय की छात्राओ द्वारा कालेज के पास शराब की दुकार पर धरना देने पर छात्राओ को बधाई देते हुए कहा है कि यदि छात्राये कटिवद्ध हो जाये तो शराबबन्दी के आन्दोलन की आधी को कोई नही रोक सकता। उन्होने आन्ध्र और हरियाणा का उदाहरण देते हुए कहा है कि नारी जाति के सगठित होने पर ही इन प्रान्तो मे शराबबन्दी सभव हो सकी।

वैदिक कन्या महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर के समापन समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप मे अपने विचार प्रकट करते हुए चतुर्वेदी ने कहा कि शराब के कारण सर्वाधिक पीडित वर्ग नारी है और नारियो को विद्रोह का बिगुल बजाना होगा तभी शराबबन्दी हो सकेगी। शराबबन्दी राष्ट्रीय सेवा योजना का अग नही है फिर भी छात्राओ ने शराबबन्दी को योजना का अग बनाकर अत्यन्त प्रसनीय काय किया है और भविष्य मे शराबबन्दी को राष्ट्रीय सेवा योजना का अभिन्न अग बनाना चाहिये।

वैदिक कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय एव राजस्थान शराबबन्दी आन्दोलन के अध्यक्ष श्री सत्यव्रत सामवेदी ने कहा कि भारत वर्ष के पतन का कारण शराब है शराब से ही देश का नैतिक पतन हुआ है। शिविर की छात्राओ ने तिलक नगर जागृत बस्ती मे जाकर मजदूरो के परिवारो से सम्पर्क किया और पता चला कि यह जागृत बस्ती नहीं ही अपितु यह एक सोई हुई बस्ती है। बस्ती की महिलाओ एवम बच्यो ने बताया कि मजदूर लोग अपने अपने पाच साल के बच्चो को भी दो दो पाउच की शराब पिलाते है और हमारे मना करने पर हमारे साथ मारपीट करते है। इन महिलाओ ने यह कहा कि ऐसी जिन्दगी से मरना अच्छा है इससे रोज रोज की खटपट भी बन्द होगी। महिलाए इस स्तर तक दु खी थीं कि उन्होने अपने शराबी पतियो का मरना ही अच्छा समझा। इन कच्ची बस्ती की महिलाओ और छात्रओ द्वारा चलाये जा रहे शबराबन्दी के मुहिम की सराहना की और ईश्वर से प्रार्थना की कि इन छात्राओ की मुहिम सफल हो। इन महिलाओ ने शिविर की छात्राओ को यह भी आश्वासन दिया कि शराबबन्दी आन्दोलन मे आपके साथ है और जब भी सघर्ष के लिए आवाहन करेगे हम कधे से कधा मिलाकर साथ देग।

डा० उषा जैन
कार्यक्रम अधिकारी

विश्व सुन्दरी प्रतियोगिता कर अश्लीलता को बढ़ावा

बगलौर मे आगामी नवम्बर माह मे होने वाली प्रतियोगिता नही होनी चाहिए क्योकि भारत मे इस तरह की प्रतियोगिताओ का होना नाजायज है। अब तक चाहे यानि इसके पूर्व जितनी भी प्रतियोगिताए हो चुकीं उसे तो समाप्त नहीं किया जा सकता। लेकिन अब इस भूल को हमे सुधारना ही पडेगा। इसलिए कि इस प्रतियोगिता से अश्लीलता को अवश्य ही बढावा मिलेगा।

शनैः शनैः ऐसा समय आ जाएगा जब भारत बाजार बन जाएगा एव नगापन ही फैशन हो जाएगा। भारतीय नारी जिसकी कि ग्रन्थो मे पूजा की गई है एव जिसे श्रद्धा माना गया है। आज उसी की देह का सरेआम सबके सामने प्रदर्शन किया जाता रहा है एव किया जाएगा। इस प्रतियोगिता का अवश्य ही विरोध किया जाना चाहिए। प्रधानमत्री एच०डी०देवेगौडा ने भी इस प्रतियोगिता के आयोजन की हामी भर ली है। उन्होने एसा करके भारी भूल की है। एक समय ऐसा आ जाएगा जिस समय नारी का कोई महत्व नही रह जाएगा। नारी सीता सावित्री दुर्गा इत्यादि की रूप मानी जाती है। लेकिन ऐसी प्रतियोगिताए होती रहेगी तो नारी कलकित हो जाएगी एव नारिया इन रूपो मे फिर कदापि नही देखी जा सकगी। हमारी भारतीय सस्कृति एव सभ्यता का लाप हो जाएगा। इसलिए मेरा देशवासिया से अनुरोध है कि इस प्रतियोगिता का विरोध कर।

प्रवीण आर्या खजुरिया (उ०प्र०) ☆

तमिलनाडु में हिन्दी के पक्ष में हवा बदली

यह बात सारे देश में प्रसिद्ध है कि तमिलनाडु की सरकारे हिन्दी विरोधी रही है और वहा सरकारी स्तर पर हिन्दी का कोई काम नही होने दिया जाता लेकिन अब इस स्थिति मे परिवर्तन के लक्षण दिखाई देने लगे हैं।

१२ अगस्त को मद्रास के सिन्दूरी होटल के प्रागण मे नगर से प्रकाशित हिन्दी साप्ताहिक साउथ चक्र ने अपनी प्रथम वर्षगाठ मनायी। इस समारोह की अध्यक्षता भारत सरकार के श्रममत्री थिरु एम० अरुणाचलम ने की और पाडिचेरी की उप राज्यपाल डा० राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी ने मुख्य अतिथि के रूप मे इस समारोह में भाग लिया। तमिलनाडु सरकार के तमिल भाषा एव सस्कृत-मत्री थिरू श्री एम० तमिलकुडी मगन ने भी समारोह मे अपने विचार व्यक्त किये।

मद्रास से प्राप्त एक प्रेस रिपोर्ट के अनुसार सभा के दौरान भाषा प्रेमियो एव साहित्यकारो को सम्बोधित करते हुए श्रममत्री थिरु अरुणाचलम ने शुद्ध पत्रकारिता पर जोर दिया तथा हिन्दी को राष्ट्र की एक जरूरत के रूप मे बताया तो दूसरी ओर थिरु एम० तमिलकुडी मगन ने यह स्पष्ट किया कि उनकी हिन्दी भाषा के विरोध जैसी कोई विचारधारा नही है बल्कि राष्ट्रभाषा के साथ क्षेत्रीय भाषाओ के विकास पर जोर देने की जरुरत को बताया तथा हिन्दी को आवश्यकतानुसार सीखने की जरूरत पर जोर दिया।

उपर्युक्त हिदी समारोह की रिपोर्ट तमिल दैनिक 'दिनमणि' मे विस्तार से छपी है। तमिलनाडु मे हिन्दी परीक्षार्थियो की बढती हुई सख्या इस बात का प्रमाण है कि वहा हिन्दी सीखने की प्रवृत्ति बढती जा रही है। १६८६ मे सारे दक्षिण मे एक लाख २५ हजार पीरक्षार्थी हिदी परीक्षाओ मे शामिल हुए थे जबकि आज सिर्फ तमिलनाडु मे ३ लाख से अधिक परीक्षार्थी विभिन्न हिदी परीक्षाओ मे बैठ रहे है। १६६० मे १८ ५०० पजीकृत हिदी अध्यापक थे जबकि आज उनकी सख्या बढकर ३० ००० हो गयी है। अकेले मद्रास मे ५ ००० हिदी अध्यापक हैं। मद्रास महानगर मे इस समय हिदी माध्यम के १८ स्कूल हैं हिदी माध्यम का एक बी०एड० कालेज है एक स्नातकोत्तर हिदी महाविद्यालय है। एक हिदी कम्प्यूटर केन्द्र है।

एक उल्लेखनीय बात है कि हिदी परीक्षाओ मे तमिल भाषा के भी प्रश्न पत्र होते है। अत हिदी सीखने वालो को अनिवार्यत तमिल पढना जरूरी हे।

(दक्षिण समाचार-२५ ६ ६६)
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद
नई दिल्ली २३ द्वारा प्रचारित
जगन्नाथ

जोधपुर में वेद प्रचार की धूम

आय समाज पूजला नयापुरा जोधपुर (राजस्थान) का वार्षिक उत्सव दिनाक २७ अक्तूबर ६६ से २० अक्तूबर ६६ तक धूमधाम व भारी हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान श्री जगदीश सिह आर्य न की।

इस अवसर पर प्रात काल चारो दिन वृहद यज्ञ का पावन आयाजन किया गया। सैकडा व्यक्तियो ने यज्ञ मे श्रद्धा पूर्वक भाग लेकर विद्वाना के विचारो का सुना।

इस अवसर पर स्त्री शिक्षा महर्षि दयानन्द की ससार को देन पाखण्ड खण्डन राष्ट्र रक्षा युवक जागृति गो रक्षा आदि सम्मेलन किये गये। दिनाक २० अक्तूबर ६६ को विजयदशमी पर्व श्री अचल सिह भाटी की अध्यक्षता मे मनाया गया। इन सम्मेलनो मे भारी सख्या मे श्रोतागण उपस्थित रहे।

इस वार्षिकोत्सव मे आर्य जगत के ख्याति प्राप्त कवि एव भजनोपदेशक प० नन्दलाल जी निभय सिद्धाताचार्य ग्राम बहिन जिला फरीदाबाद (हरियाणा) श्री चित्र उपाध्याय जी शास्त्री सोहना (हरियाणा) तथा महान विद्वान श्री अर्जुन देव आर्य न अपने विचारो से स्थानीय जनता को वेद ज्ञान स लाभान्वित किया।

इस कायक्रम की समस्त क्षेत्र मे प्रशसा की जा रही है व यु्का मे नया उत्साह दिखाई दे रहा है।

महेन्द्र सिह आर्य मत्री
आर्य समाज पूजला नयापुरा ☆

सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा दशहरावकाश पर आयोजित शिविर श्रंखला सम्पन्न

दशहरा अवकाश के समय विभिन्न प्रान्तो मे शिविर आयोजित किये गए जो पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुए जिनका विवरण क्रमश इस प्रकार से है।

(१) ठाकुराम कन्या विद्यालय बल्लभ गढ हरयाणा मे १२ से २० अक्टूबर तक शिविर आयोजित किया गया जिसमे १२५ आर्यवीरागनाओ ने शारीरिक एव बौद्धिक प्रशिक्षण प्राप्त किया शिविर सोत्साह सम्पन्न हुआ।

(२) ५ व ६ अक्टूबर को हरयाणा आर्य वीर दल द्वारा आर्य वीर दल का प्रान्तीय सम्मेलन आयोजित पानीपत नगर मे किया गया जिसमे हरयाणा एव दिल्ली के लगभग (३०००) तीन हजार आर्य वीरो ने गणवेश में भाग लिया ५ अक्टूबर को नगर के मुख्य मार्गो पर भव्य शोभा यात्रा निकाली गयी जिसमे आर्य वीरो का व्यायाम प्रदर्शन एव पक्तिबद्ध अनुशासित पद सचलन मुख्य आकर्षण रहा इसी अवसर पर आर्यवीर सम्मेलन राष्ट्र रक्षा एव शराब बन्दी सम्मेलन आयोजित किये गये। जिसमे देश की ज्वलन्त समस्याओ पर विद्वानो ने अपने विचार व्यक्त किये। तथा सभी ने कहाकि जिस प्रकार हरयाणा मे आर्यवीर दल का कार्य सचालन श्री उमेश शर्मा एव मत्री श्री वेद प्रकाश जी के नेतृत्व मे उत्तोत्तर बढ रहा है। इसी प्रकार से सभी प्रान्तो मे कार्य आगे बढाने का सकल्प सभी अधिकारियो ने किया।

(३) १४ से २१ अक्टूबर तक जनता इण्टर कालिज पलडी मेरठ (उ०प्र०) मे आर्यवीर दल शिविर आयोजित किया गया जिसमे १२५ आर्यवीरो ने बौद्धिक एव शारीरिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

(४) सरदार बल्लभ भाई पटेल जूनियर हाई स्कूल जछेडा सहारनपुर (उ०प्र०) मे १८ से २७ अक्टूबर तक आर्यवीर दल का शिविर आयोजित किया गया जिसमे लगभग १७५ आर्य वीरो ने बौद्धिक एव शारीरिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। २७ अक्टूबर को समापन मे आर्यवीरो का आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन रहा जिसकी सभी दर्शको ने भूरी भूरी प्रशसा की।

(५) आर्यवीर दल उडीसा द्वारा प्रान्तीय स्तर का शिविर १६ से २७ अक्टूबर तक गुरुकुल आश्रम आमसैना उडीसा मे आयोजित डा० देवव्रत आचार्य प्रधान सचालक जी की अध्यक्षता मे किया गया। जिसमे २५० आर्यवीरो नें भाग लेकर बौद्धिक एव शारीरिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का उद्घाटन सुपरिटैण्डैण्ट आफ पुलिस नवापारा (उडीसा) द्वारा किया गया। २७ अक्टूबर को दीक्षान्त समारोह डा० देवव्रत आचार्य जी की अध्यक्षता मे हुआ जिसमे लगभग ४० आर्य वीरो ने दैनिक शाखा सचालन की दीक्षा प्राप्त कर सकल्प किया कि हम प्रति दिन जहा रहेगे वहा शाखा अवश्य लगायेगे। एव २५ आर्यवीरो ने आजीवन कार्य करने का सकल्प किया। शिविर मे उडीसा के लगभग दस जिलो के आर्य वीरो ने भाग लिया।

शिविर का समापन श्री राजू भाई ढोलकिया पूर्व चेयरमैन खरियार रोड की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभी विद्वानो ने देश की बिगडती दशा चारित्रिक पतन एव अन्य ज्वलन्त समस्याओ पर अपने विचार व्यक्त किये।

ऋषि निर्वाणोत्सव के अवसर पर डॉ० सरोज दीक्षा द्वारा लिखित पुस्तक सत्य का प्रकाश स्वामी दयानन्द का विमोचन करते हुए डा० राम प्रकाश।

तथा अन्त मे आर्यवीरो का आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन हुआ। सभी आये हुए अतिथियो का ब्र० कुञ्जदेव मनीषी सचालक आर्य वीर दल उडीसा द्वारा किया गया। तथा स्वामी व्रतानन्द जी ने सभी का धन्यवाद किया। और ध्वजावतरण के पश्चात प्रधान सञ्चालक डा० देवव्रत आचार्य ने शिविर समाप्ति की घोषणा की।

(६) कानपुर देहात मे दो स्थानो पर २६ अक्टूबर से ७ नवम्बर तक शिविर आयोजित किये गये।

१ इण्टर कालिज तोनापुर कानपुर उ०प्र० शिविर मे ७० आर्य वीरो ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

२ इण्टर कालिज जेभा कानपुर शिविर मे ८० आर्य वीरो ने भाग लिया जो सहोत्साह सम्पन्न हुआ।

हरिसिह आर्य कार्यालय मत्री
सार्वदेशिक आर्य वीरदल
नई दिल्ली

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 24 11 96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/96
R N No 626/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 21/22 - 11-1996

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गतवर्ष की भाति इस वर्ष भी दिनाक १६ १७ १८ १६ नवम्बर दिन–शनिवार रविवार सोमवार मगलवार को **आर्यसमाज सुलतानपुर का भव्य वार्षिक उत्सव** रामलीला मैदान सुलतानपुर मे आयोजित किया गया है। जिसमे अभयानन्द सरस्वती (लखनऊ) स्वामी विश्वमित्रानन्द सरस्वती (रायबरेली) आचार्य प० सूर्यबली पाण्डेय (जौनपुर) डा० ज्वलत कुमार शास्त्री (अमेठी) कुबर महिपाल सिह (बलिया) ब्रह्मचारी कडकदेव आर्य (मण्डली सहित बुलन्दशहर) तथा श्री समरजीत सिह (सुलतानपुर) आदि उच्च कोटि के विद्वानो का भजन व प्रवचन होगा। ☆

महाराजपुर – **आर्यसमाज महाराजपुर** के प्रधान श्री दीनदयाल जी आर्य एव महर्षि दयानन्द उ०मा०विद्यालय के अध्यक्ष श्री दयाराम जी आर्य के मार्ग दर्शन में महर्षि दयानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय महाराजपुर जिला छतरपुर का वार्षिकोत्सव (सास्कृतिक कार्यक्रम) माननीय डॉ० श्री ए०के०मिश्रा उप सचालक शिक्षा जिला छतरपुर के मुख्य आतिथ्य एव श्री राम सेवक जी चौरसिया की अध्यक्षता मे दिनाक २६ १० ६६ दिन शनिवार को रात्रि ८ ०० बजे से सम्पन्न हुआ।

उक्त अवसर पर छात्र/छात्राओ ने अपने सास्कृतिक कार्यक्रम मे दीपदान एकाकी नाटक एव लोकगीत एकल नृत्य तथा प्रहसन आदि प्रस्तुत किये जिसकी माननीय मुख्य अतिथि एव आगुन्तक महानुभावो ने भूरि भूरि प्रशसा की। ☆

ब्रह्मकुटी ब्रजघाट पर वेदप्रचार का आयोजन

धर्मप्रेमी बहिनो और भाईयो को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि विश्ववेद परिवार की ओर से प्रसिद्ध कार्तिक मेले के सुअवसर पर पवित्र गगातट पर द्वादशी से पूर्णमासी तदनुसार २२ से २५ नवम्बर तक पचकुण्डी गायत्री महायज्ञ के साथ ही सन्त महात्माओ के वैदिक प्रवचन भी सुनने को मिलेगे। ठहरने की सुन्दर नि शुल्क व्यवस्था होगी परन्तु रात्रि के लिए साधारण कबल आदि अपने साथ लाये।

निवेदक
वेदोपदेशक ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति ☆

भाजपा पर अंग्रेजी-नौकरशाही का दबाव

२५ अक्तूबर १६६६ को दल बदल निरोधक विधेय पेश हुआ। सरकार के ε मारकर छिपे बैठे अग्रेज दबदबा यहा तक बढ गया ε अधिनियम का उन्होने खुले आम उल्लघन किया और बिना हिन्दी अनुवाद के ही विधेयक मुख्य मत्री जी को थमा दिया और उन्होने भी उसे ज्यो का त्यो पेश कर दिया। लोकप्रिय कही जाने वाली भा०ज०पा० सरकार की अक्षमता का इससे स्पष्टतर प्रदर्शन और पार्टी की विगडती छवि का इससे बुरा सकेत क्या होगा ?

भारतीय सस्कृति और भारतीयता का दम भरने वाली भाजपा का कथित हिन्दी प्रेम उजागर हो गया।

एक सदस्य ने गलती बताई तो अग्रेजी–भक्त अफसरशाही का आतक सिर चढकर बोला और मुख्य मत्री जी ने उस सदस्य पर ही अग्रेजी मे सशोधन-प्रस्ताव देने का आरोप लगाकर उन उददण्ड अफसरो की मानो पीठ ही थपथपा दी। ☆

म० दयानन्द-स्मृति-दिवस

दि० १० ११-६६ को आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला मैनपुरी उ०प्र० के प्रधान म०महावीर जी वानप्रस्थ (आर्यसमाज डालपुर) की अध्यक्षता मे महर्षि दयानन्द सरस्वती का ११४वा स्मृति दिवस आर्यसमाज मन्दिर मैनपुरी मे बडे ही उत्साह के साथ मनाया गया। इस आयोजन मे म० दयानन्द जी महाराज को वेदो का उद्धारक स्वतन्त्रता का प्रथम मन्त्रदाता महानतम समाज सुधारक गुरुकुल शिक्षा का सूत्रधार नव जागरण का पुरोधा समग्र क्रान्ति का उद्घोषक तथा गौ रक्षा व स्त्री सूद्रो की शिक्षा का प्रबल पक्षधर आदि बताते हुए उन्हे भावभीनी श्रद्धाञ्जलिया दी गई। आयोजन का सचालन आर्यसमाज के मत्री प० कुलदीप शास्त्री ने किया।

ध्रुवपाल सिह 'अटल' प्रधान
आर्यसमाज मैनपुरी ☆

वैदिक ज्ञान मेला

महिला आर्यसमाज उन्नाव के तत्वावधान में गत वर्षो की भाति इस वर्ष भी कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर दिनाक २४ नवम्बर से २७ नवम्बर १६६६ तक आर्यसमाज उन्नाव के प्रागण मे बडी धूमधाम से मनाया जा रहा है जिसमे आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान व विदुषी तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। प्रात साय यज्ञ सन्ध्यावन्दन भजन उपदेश आदि कार्यक्रम हैं। विशेष कार्यक्रम उप प्रतिनिधि सभा का कार्यकर्त्ता सम्मेलन गोरक्षा सम्मेलन आर्य बाल सम्मेलन तथा महिला सम्मेलन प्रतिदिन क्रमश साय २ बजे से ४ बजे तक रखे गये हैं।

मत्री, महिला आर्य समाज उन्नाव ☆

लुधियाना में वैदिक समूहगान प्रतियोगिता का सफल आयोजन

लुधियाना ५ नवम्बर वेद प्रचार मण्डल लुधियाना की ओर से स्थानीय आर्यकालेज मे वैदिक समूहगान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन पजाब नैशनल बैंक के सहायक महाप्रबन्धक श्री वी०के०सूद ने किया और समारोह की अध्यक्षता आर्य कालेज के प्रि०वी०के० मेहता ने की। मण्डल की ओर से श्री सुभाष सिगला श्री कमल किशोर कन्नोजिया श्री विपिन गुप्ता प्रो० विनय सोफत श्री सुखमिन्दर सिह डॉ० एफ०सी०शुक्ला ने पुष्प मालाओ द्वारा श्री वी०के०सूद एव श्री वी०के०मेहता का स्वागत किया।

वेद प्रचार मण्डल द्वारा आरम्भ किए गए भारतीय सस्कृति प्रचार अभियान मे विभिन्न शिक्षण सस्थाओ द्वारा दिए गए सहयोग के लिए प्रि० राम रत्न शर्मा प्रि० एम० आर० मेहता प्रि० रणधीर शर्मा प्रि० के०के०रुद्रा प्रि० सुनील पिल्ले को मुख्य अतिथि स० रमिन्दर सिह रजिस्ट्रार पजाब कृषि विद्यालय ने सम्मानित किया। इस समारोह मे पजाब यूथ काग्रेस के महासचिव श्री सीताराम शकर सगठन सचिव श्री अशोक सूद एव सुश्री सुवर्षा कालडा श्री अश्वनी बहल डा० एस०बी०बोगिया श्री मतवाल चन्द्र आर्य एव अन्य गणमान्य व्यक्तियो ने भाग लिया।

समारोह अध्यक्ष श्री वी०के०मेहता ने कहा कि भारतीय सस्कृति प्राचीनतम सस्कृति है और आज युवक वर्ग को सस्कारित करने और उनके सर्वागीण विकास के लिए ऐसे आयोजनों की आवश्यकता है। उन्होने कहा कि इस आयोजन से कालेज का वातावरण पवित्र हुआ है। मण्डल के प्रधान आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री ने अतिथियो को मण्डल की ओर से धन्यवाद किया। ☆

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली–2 से प्रकाशित

ऋग्वेद   ओ३म्   यजुर्वेद

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् — विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाएँ

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

अथर्ववेद

दूरभाष ३२७४७७१ ३२६०९८५ | आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये | वार्षिक शुल्क ५० रुपए | एक प्रति १ रुपया

वर्ष ३५ अक ४२ | दयानन्दाब्द १७२ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ | सम्वत् २०५३ | मा०शी०कृ० ६ | १ दिसम्बर १९९६

आन्ध्र प्रदेश में भयंकर प्राकृतिक प्रकोप
सार्वदेशिक सभा द्वारा सेवा कार्य प्रारम्भ
वस्त्र-धन दान की अपील

कुछ समय पूर्व आन्ध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्रो मे भयकर तूफान रूपी प्राकृतिक प्रकोप से लाखो व्यक्ति प्रभावित हुए है। केवल मात्र दो घटे चली इस विनाश लीला ने हजारो जानो के अतिरिक्त करोडो रुपये की सम्पत्ति का विनाश कर दिया। सरकारी तथा गैर सरकारी और यहा तक कि अन्तर्राष्ट्रीय सहायता के बावजूद भी नुकसान की पूरी भरपायी करना तो दूर स्थिति को सामान्य बनाना भी सम्भव नहीं हो पा रहा है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव के निर्देश पर आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री क्रान्ति कुमार कोरटकर मत्री श्री कृष्णराव तथा आर्य नेता श्री नरहरि राव ने प्रभावित क्षेत्रो का दौरा करके सभा प्रधान को अपनी रिपोर्ट सौप दी है।

सार्वदेशिक सभा की तरफ से एक शिविर स्थापित कर दिया गया है जिसमे तमिलनाडु और आन्ध्रप्रदेश के आर्य समाजी कार्यकर्त्ताओ को नियुक्त किया गया है तथा कार्य सचालन के लिए एक समिति गठित की गयी है।

सार्वदेशिक सभा के मत्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने देश-विदेश की राष्ट्र वादी जनता से इस विपदा के समय अपने राष्ट्रवासियो की सहायता हेतु अधिक से अधिक धन एव वस्त्र दान देने की अपील की है। दान सामिग्री सार्वदेशिक सभा कार्यालय ३/५ दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली-२ के पते पर भेजी जा सकती है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर से मुक्त है। जिसके लिये दानदाता आयकर मुक्ति प्रमाण पत्र सभा कार्यालय से प्राप्त कर सकते है।

आवश्यक सूचना

अन्तरंग सभा की बैठक

सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा का अन्तरग सभा का बैठक दिनाक ८ १२ ९६ को प्रात ११ वजे से आयसमाज दावान हाल मे होगा। सभा अन्तरग सदस्य समय पर पधारने की कृपा करे। आवास एव भोजन की व्यवस्था आर्यसमाज दावान हाल में रहेगी।

डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री, मत्री

गुरु विरजानंद, हंसराज और बिस्मिल से प्रेरणा लें
— साहिब सिंह वर्मा

आयसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द के गुरु स्वामी विरजानद सरस्वती सुप्रसिद्ध शिक्षाविद महात्मा हसराज महान क्रातिकारी प० राम प्रसाद बिस्मिल ने मानवता का जीवन जीने का सही रास्ता दिखाया। देशवासी इनके उच्चादर्शो को जीवन मे अपनाये ये सदविचार श्री साहिब सिह वर्मा (मुख्यमत्री) ने इन महापुरुषो के नाम से सडको का नामकरण करते हुए रानी बाग मे आयोजित विशाल सभा म कहे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प० रामचन्द्र राव वन्देमातरम ने कहा जिस समय देश पराधीन व अविद्या पाखण्डो से ग्रस्त था गुरु विरजानद जी ने वेदो का पवित्र मार्ग दिखलाया महात्मा हसराज ने शिक्षा जगत व प० रामप्रसाद 'बिस्मिल' ने अग्रजो के विरुद्ध क्राति का शखनाद किया।

इस अवसर पर विधायक श्री गोरी शकर भारद्वाज श्री राजकमार शर्मा श्री चमनलाल महेन्द्र श्री दुर्गेश आर्य श्री चन्द्र मोहन आर्य के नेतृत्व मे रानी बाग के मुख्य बाजारो मे मुख्यमत्री श्री साहिब सिह वमा का जगह जगह स्वागत हुआ व शोभायात्रा निकाली गई

कार्यक्रम का शुभारम्भ राष्ट्रीय गीत (वन्देमातरम) व सास्कृतिक कार्यक्रम दरबारी लाल डी ए०वी० माडल स्कूल पीतम पुरा के विद्यार्थियो द्वारा हुआ। आयसमाज के सचिव श्री दुर्गेश आय ने मुख्यमत्री व अतिथिया का आर्य महापुरषो के सुन्दर चित्र (स्मृति चिह्न) के रूप मे भेट किये।

(सम्पादक- डा.सच्चिदानन्द शास्त्री)

जहां जंगलों में हुआ था संस्कृति का अद्‌भुत प्रसार

डॉ० सूर्यकान्त बाली

भारत के बारे मे हमारी समझ तब तक अधूरी रहन वाली है जब हम इस देश मे विकसित वन सस्कृति क बार मे अपना परिचय नही पा लते। जो लोग भारत की पुरानी काया मे बारे मे थोडी सी भी जानकारी रखत है उन्होने यहा के वनो के बारे मे थाडी या बहुत जानकारी जरूर हासिल कर रखी होगी। मसलन जिन्हे रामायण के बारे मे पता है (और इस देश मे ऐसा कौन है जिसे रामकथा का पता न हो) वे दण्डकारण्य नामक अरण्य अर्थात वन से परिचित न हो यह सभव ही नही है। महाभारत की कथा बहुत बडी है और उसमे जाने कितनी ही उपकथाए भरी पडी हैं। पर महाभारत कथा से परिचित अधिकाश पाठको को पता होगा कि आज दिल्ली का पुराना किला है यानी जो इन्द्रप्रस्थ है वहा कभी खाण्डववन था जिसे कृष्ण की मदद से जलाकर पाण्डवो ने इन्द्रप्रस्थ नाम से एक नया शहर ही बसा दिया था और इसी शहर मे वह महल था जहा राजसूय यज्ञ देखने आए दुर्योधन का पाव फिसला था जिसे गिरते देख द्रोपदी हस पडी थी। जिसे न दण्डकारण्य का पता है न खाण्डव का और न ही नैमिषारण्य का उस हिन्दुस्तानी को भी इतना तो पता ही है कि इस देश मे कभी तपोवनो का जाल बिछा हुआ था और तपोवन नाम से ही जाहिर है कि तपस्या करने के ये स्थान वनो मे ही हुआ करते थे।

तो क्या होते थे तपोवन ? क्या होता था वहा ? नाम से तो ऐसा लगता है कि वन के किसी हिस्से मे तपोवन एक जगह होती होगी जहा ऋषि मुनि बैठकर तपस्या करते होगे। सुबह नहा धोकर जो समाधि मे बेठत होगे तो बस रात होने पर ही उठते होगे। ऐसा नही है। अगर आप तपोवनो के बारे मे ऐसा मान बैठे हो तो कृपया इस भ्राति से बाहर आ जाइए। आप बिना किसी उलझन के इस भ्राति से बाहर आ जाए और तपोवनो के बार मे सही राय कायम कर सके इसके लिए आपको कुछ उदाहरण दिए दते है जो लागा को प्राय पता है। हस्तिनापुर (तब प्रतिष्ठान) क एक पुरुवशी सम्राट दुष्यन्त का जिस शकुन्तला नामक ऋषिकन्या स पहल प्रेम हुआ था और फिर विवाह भी हा गया था वह शकुन्तला यानी विश्वामित्र–मेनका की सन्तान वह शकुन्तला कण्व ऋषि के तपोवन मे रहती थी। राम ने भार्या सीता को उसकी गर्भिणी अवस्था मे ही राजमहल से निकाल दिया था तो उस महारानी को वाल्मीकि मुनि के आश्रम यानी तपोवन में ही सहारा मिला था जहा उसे लवकुश नामक दो पुत्र पैदा हुए और उन्हे अस्त्र शस्त्र की तप की अत्याधुनिक शिक्षा भी वही तपोवन मे मिली। जिन याज्ञवल्क्य को राजा जनक की ब्रह्मसभा मे सोना मढी सीगो वाली हजार गउए मिली थीं वे महान याज्ञवल्क्य अपनी दो पत्नियों–कात्यायनी और मैत्रेयी समेत तपोवन मे ही रहा करते थे और उनकी गउए भी वही पर थीं। राम को वनवास के समय अत्रिमुनि के तपोवन मे जाने का सुअवसर मिला था वे अत्रिमुनि दण्डकारण्य के एक तपोवन मे ही रहा करते थे जहा उनकी पत्नी अनसूया ने सीता को सोने के गहनो से लाद दिया था। कृष्ण और बलराम जिन सादीपनि मुनि के पास शिक्षा ग्रहण करने गए थे वे सादीपनि मुनि तपोवन मे ही रहा करते थे। आप मे से कइयो ने अपने स्कूली जीवन मे एक कहानी पढी होगी। कहानी धौम्य ऋषि की है जिनके तपोवन मे आरुणि पढा करते थे। आरुणि ने ही एक रात मूसलाधार बारिश के पानी को आश्रम मे प्रवेश करने से रोकने के लिए खुद को रात भर मेढ पर लिटाए रखा और आरुणि के इस कठिन कर्म से प्रभावित होकर आचार्य धौम्य ने उनका नाम रख दिया था उद्दालक आरुणि यानी उद्धारक आरुणि।

आप पढते पढते थक जाएगे बेशक हम ऐसे उदाहरण बताते नहीं थकेंगे। यानी उदाहरण असख्य हैं। पर क्या इतने उदाहरणो भर से ही पुराने जमाने के तपोवन की तस्वीर साफ नहीं हो जाती ? यकीनन हो जाती है और तस्वीर यह बनती है इन तपोवनो मे बाकायदा पारिवारिक जीवन था। न रहा तो कैसे महान विचारक याज्ञवल्क्य अपनी दो पत्नियो के साथ ऐसे तपोवन मे रहत होते ? तस्वीर यह भी बनती है कि तपोवनो मे ये परिवार सामान्य सासारिक जीवन बिताया करते थे अन्यथा कैसे कण्व के तपोवन मे जाकर महाराज दुष्यन्त ऋषि कन्या शकुन्तला से प्रेम और गन्धर्व विवाह कर पाते ? तपोवन पर्याप्त समृद्ध थे न होते तो कैसे याज्ञवल्क्य अपनी सैकडो गउओ को वहा रख पाते और कैसे अत्रि–पत्नी अनसूया सीता को सोने के गहनो का अद्‌भुत उपहार दे पाती ? तपावनो मे विद्यार्थियो को शिक्षा प्रदान की जाती थी इसक बारे मे तो शायद ही किसी को शक हो पर वहा विराट साहित्य की भी रचना हुई इसका प्रमाण चाहिए तो वेद पढ सकते है आरण्यक साहित्य पढ लीजिए तमाम उपनिषदे पढ जाइए।

[illegible]

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली सरकार के शहरी विकास विभाग ने गत माह जारी एक पत्र के द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव तथा राष्ट्रीय राजधानी भ्रष्टाचार विरोधी समिति के अध्यक्ष जी मुकेश सैनी को सरकार के उस निर्णय से अवगत कराया है जिससे सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान स्व० स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नाम पर किसी एक सडक का नामकरण किया जाना है। यह निर्णय दिल्ली सरकार की एक बैठक मे किया गया है जिसकी अध्यक्षता दिल्ली के मुख्य मत्री ने की। सरकार ने उक्त दोनो महानुभावो को किसी ऐसी सडक का प्रस्ताव भेजने के लिए कहा है जिसका अब तक कोई नाम न रखा गया हो। ☆

यानी जैसे आज शहरों मे आपको बस्तिया मिलती हैं वैसी ही बस्तिया पुराने जमाने मे रही थी। फर्क बस इतना ही था कि शहरो मे शोर था तपोवनो मे शात वातावरण था। शहरो मे व्यस्तता और उससे पैदा होने वाले तनाव थे तपोवनो मे जीवन मे सक्रियता बेशक थी पर मारामारी नहीं थी। शहरो मे जीवन विलासितापूर्ण था तपोवनो मे सादगी थी तामझाम नही था और गहमागहमी नहीं थी। अन्यथा तपोवनो मे बाकायदा सामाजिक जीवन था एक अलग तरह का सामाजिक जीवन जहा लोग परिवार समेत रहते थे परिवार बढते रहते थे और तपोवन आत्मनिर्भर थे। अगर जीवन का एक रूप शहरी था एक रूप ग्रामीण था तो एक रूप तपोवन का था। तपोवनो मे मानव समाज की तमाम शारीरिक व मानसिक समस्याए थीं तपोवन वासी जिनके समाधान अपनी जीवन शैली के हिसाब से तलाशते रहा करते थे।

इसलिए अगर निष्कर्ष यह निकल रहा हो कि भारत नामक देश मे जगलो मे भी सस्कृति ओर सभ्यता का प्रसार कर लिया गया था तो इस निष्कर्ष को हम अद्‌भुत बेशक मान पर उससे चौंकने की इसलिए जरूरत नहीं क्योकि यह एक सच्चाई थी। हा एक प्रश्न जरूर उठता है कि क्यो किया गया इस तरह वन सस्कृति का विकास ? अरण्यो मे समाज को बसाने के पीछे क्या कारण थे ? जगलो मे जीवन का मगल पैदा करने के पीछे क्या उद्देश्य रहे होगे ? इसका जवाब तो अभी तलाशते ही हैं पर इससे पहले हम एक बात फिर से दोहराना चाहते हैं जिसे हम पहले भी दो एक बार कह चुके हैं। वह यह कि पश्चिम मे जिस जगल को असभ्यता की निशानी माना जाता है और जिस जगल के कानून को बर्बरता का पर्यायवाची माना जाता है वहीं जगल हमारे देश मे सस्कृति के अद्‌भुत केन्द्र रहे हैं और वहा के बनाए कानूनो से हमारे देश का समाज प्रेरणा प्राप्त करता रहा है जवाब तलाशने से पहले हल्के से यह भी बता देने मे कोई हर्ज नहीं कि जिन लोगो ने जगलो मे जाकर पूर्ण सुसस्कृत और विकसित समाज बसाने की सोची होगी वे न केवल प्रकृति और पर्यावरण के साथ अनुराग के स्तर पर जुडे होगे। बल्कि हिंसक जगली जानवरो के प्रति भी उनका मन आत्मीयता से भरा होगा। प्रकृति और पर्यावरण के प्रति स्वाभाविक स्नेह से खिचे और जगली जानवरो के प्रति निडर आत्मीयता से भरे जो लोग जगलो में तपोवन बनाकर रहते होगे वे वाकई कोई बडा उद्देश्य ही पूरा कर रहे होगे। सवाल है क्या था वह उद्देश्य ? क्या थे वे लक्ष्य जिन्होने इस देश मे अरण्य सस्कृति को तपोवन को इतनी ऊचाई तक पहुचा दिया ?

जाहिर है कि जगलो को जीवन के मगल से भर देने का एक ही उद्देश्य था कि देश के ज्ञान और विज्ञान की प्रवाहिका नाडियो को लगातार स्पन्दित रखा जाए। शिक्षा अगर किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास की मूलभूत जरूरत है तो उस जरूरत को पूरा करने वालो का जीवन साधनापूर्ण होना ही चाहिए। शहरो का जीवन कैसा सुविधा सम्पन्न और विलासितापूर्ण था इसका पता लगाना हो तो आप कृपया वात्स्यायन का कामशास्त्र पढ जाइए। उसका नागरिक शहर के विलासमय और आरामपसन्द जीवन का मुखर प्रतीक है। ऐसे नागरको (नागरिको नहीं नागरको) की विलासमय भीड मे शिक्षा के उद्देश्य वैसे ही खो जाते है। जैसे हम उन्हे आज नष्ट होता हुआ देख रहे हैं। शिक्षा को उसके उद्देश्यो से जोडे रखने के लिए अगर कुछ लोगो को वन मे जाकर नए और अलग किस्म के समाज के विकास का विचार आया हो तो उसमे हैरानी क्या है ? इसीलिए शायद ही पुराने भारत का कोई ऐसा वन हो जिसमे तपोवनो की कभी कमी रही हो और शायद ही कोई तपोवन ऐसा रहा हो जिसमे कोई विद्याकुल न हो। इन विद्याकुलो मे छात्र एव छात्राए सामाजिक रुतबे और तबके को भूलकर एक साथ ज्ञान और विज्ञान की विभिन्न शाखाओ का अध्ययन कर सदियो की साधना के परिणामस्वरूप वह समाज बना सके जिसे हम भारत कहते है।

जगलो मे हिसक पशुओ और मनोरम पर्यावरण के बीच जब तक सस्कृति प्रसार करने वाला जीवन सहज रूप से उपलब्ध था तब तक समाज को कोई ऐसा प्रावधान करने की जरूरत नहीं लगी कि मनुष्य के लिए वनवास आवश्यक बना दिया जाए। जो चीज हमे सहज उपलब्ध होती है उसे पाने क लिए हम कोई प्रावधान नही करते। प्रावधान उसी का करते हैं जो हमे स्वाभाविक रूप से उपलब्ध न हो। इसलिए जब आगे चलकर यह नियम बना दिया गया कि हम मनुष्य को ब्रह्मचर्य और गृहस्थ जीवन बिताने के बाद वानप्रस्थी हो जाना चाहिए अर्थात वन मे प्रस्थान कर जाना चाहिए तो जाहिर है कि तब तक सस्कृति का अद्‌भुत प्रसार करने वाले इस अरण्य जीवन का पुराना वैभव खत्म हो चुका था। तब लोग सिर्फ आश्रम व्यवस्था की खानापूर्ति के लिए ही वन की ओर प्रस्थान कर लेने के इरादे जताया करते होगे। ईसा से दो सौ साल पहले केरल मे पैदा हुए सस्कृत के महान नाटककार भास ने अपने कुछ नाटको मे ऐसे तपोवनो का वर्णन किया और वर्णन शैली से लगता है कि तब तक तपोवनो की सिर्फ याद ही बाकी बची थी। वैसा ही कुछ वर्णन कालिदास ने अपने विश्व प्रसिद्ध नाटक अभिज्ञान शाकुन्तल मे किया है जो भास से कुछ सदी बाद उज्जयिनी मे हुए। अन्यथा पुराने भारत मे वन–जीवन का अपना ही विशिष्ट स्थान हमारे समाज मे रहा था। क्रमश कृषिभूमि का फैलाव होने से जगल कम होते गए तो अरण्य जीवन का ह्रास स्वाभाविक रूप से हो गया। पर कभी देश मे अरण्य जीवन समाज की महत्त्वपूर्ण धारा थी इसका प्रमाण वे चारो वेद हैं और वह उपनिषद साहित्य है जो तपोवन मे ही मुख्य रूप से लिखा गया। कितना फर्क पड गया है। आज जगलो को बचाने के लिए कानून बन रहे हैं क्योकि जगल ढूढे नहीं मिलते और इन्ही जगलो मे हमने अद्‌भुत सास्कृतिक जीवन का विकास कभी किया था। उन्हें शिक्षा ज्ञान और विज्ञान का केन्द्र कभी बनाया था।

पीतमपुरा दिल्ली ☆

समय का मूल्य पहचानो ? एक घटना

समय समय पर बडे–बुद्धिमान जनो से उपदेश मे सुनते रहते हैं कि समय को पहचानो और समय को हाथ से मत जाने दो। पर ऐसा हो नहीं पाता तभी मनुष्य पछताता है।

आज मेरे साथ भी यह घटना घट गई। समय को न जानने से पछतावा ही हाथ लगा। कहते हैं कि नैपोलियन पाच मिनट की देरी से लडाई का मैदान हार गया था। मेरे जीवन की यह घटना दस मिनट की देरी से इन्दौर सम्मेलन मे भागीदार बनने के लिए हवाई अड्डे पर देरी से जाने पर प्रतीक्षा सूची वालो को सीट दे दी गई। चार साढे चार बजे पहुच कर पौने पाच बजे काउन्टर पर गया टिकट दिया उत्तर मिला आप देर से आये हैं प्रतीक्षा सूची वालो को स्थान दे दिया गया है।

अब मैं क्या करू केवल परेशानी ही सामने थी। मैं बडे अफसरो से मिला उन्होने कहा आप को समय पर आना चाहिये था अब हम कुछ नहीं कर सकते हैं। हा – या तो आप पैसा वापस ले ले या आगे की तारीख मे स्थान आरक्षित करा ले। २४ नवम्बर को ३० न० प्रतीक्षा सूची मे स्थान था तब जाने से कुछ लाभ नहीं। अन्ततोगत्वा टिकट वापस करके सार्वदेशिक सभा ८ बजे रात वापस आ गया। अब आप विचारे कि आर्यजन इन्दौर हवाई अड्डे पर जो लेने गये होगे ? उन पर परेशानी और व्यर्थ के विचारो के अतिरिक्त क्या बीती होगी। खैर आज वह तथ्य याद आ रहा है।

डाल का चूका बन्दर और समय का चूका इन्सान पछतावे के अलवाव कही का भी नहीं रहता हैं

मुझे स्मरण है कि स्व० श्रद्धेय आचार्य नरदेव शास्त्री गाडी पर दो घण्टे पूर्व ही पहुच जाते थे जो उनसे मिलते वह कहते कि आचार्य जी इतने समय पूर्व क्यो आ गये हैं वह कहते थे गाडी हमारी प्रतीक्षा नही करेगी अत हमे ही प्रतीक्षा मे पूर्व ही पहुचना चाहिये।

विद्यार्थी जीवन इस बात का प्रत्यक्ष उदाहरण है जो छात्र आज का पाठ या कार्य कल पर छोड देगा वह उसके लिए बोझा ही बनेगा जो छात्र प्रतिदिन का कार्य नियमित करेगा वह समय के मूल्य का सही मूल्याकन कर सकेगा। जीवन मे समय की असावधानी कितनी हानि पहुचायेगा जिस पर बीतेगी वहीं जान सकता है।

काल करे सो आज कर आज करे सो अब का पाठ भी पढते है – फिर भी समय के मूल्य को नही जान पाते हैं।

मैं अनुभव करता हू कि ५० वर्षो के अनुभव से आज का अनुभव विलक्षण है समय की हानि धन की बरबादी कार्यक्रम के बिलगाव व्यर्थ के सोचने की प्रवृति ही समस्या बन सकी हे। हानि तो हो गई परन्तु –

भविष्य मे ऐसा न हो आज की धटना से सही शिक्षा ले ली जाये तो सही दिशा बोध होगा। मैं इन्दौर के अयोजको से क्षमा चाहते हुए कार्यक्रम की सफलता की कामना करता हू।

दुःख मुझे क्यों ?

मै लगभग छ मास से फोडे फुन्सियो से अस्वस्थ चल रहा हू फिर भी कार्यक्रमो की भाग दौड बन्द नहीं है आज भी टाग के फोडे अभी ठीक नहीं हुए और गर्दन पर तीन फोडे निकल आये है जिनका उपचार डा० इन्दुप्रकाश ढल्ला के द्वारा किया जा रहा है।

जो देखते हैं वह कहते है स्वास्थ्य पहले है उसे देखो कार्यक्रम तो चलते ही रहेगे। मुझे इतने कष्ट होते हुए तथा दौडने पर भी सफलता स दूर ही रहा और इन्दौर कार्यक्रम मे सम्मिलित न हो सका। ट्रेन मे भी स्थान आरक्षित न करा सका तो सम्मेलन और मुझ मे दूरी रहनी ही है।

समय की कीमत न पहचानने से क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं समझदारी इसी मे हैं कि समय को न समझने की भूल भविष्य मे न हो सके।

डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री

गुणाः पूजा स्थानम्

नैतिक सौन्दर्य का तात्पर्य केवल जिसे हम शील का द्वितीय रूप मान सकते हैं वह नारी का आन्तरिक गुण है जब हम अपनी लडकियों को सौन्दर्य प्रतियोगिताओ मे सहर्ष भेजते हैं जहा पाश्चात्य सभ्यता का नग्न नाच होता है तब हमे नैतिकता की आशा कम ही रखनी चाहिये।

नैतिक सौन्दर्य के साथ ज्ञान सौन्दर्य का अर्थ केवल सौन्दर्य का जानना मात्र नहीं परन्तु इसमे अच्छाई व बुराई का परिचय भी मिलना चाहिये। युवा पीढी की बालिका बाह्य चकाचौंध भले बुरे का विवेक खो देगी तो ज्ञान का सौन्दर्य लुप्त हो जायेगा।

नारी कोई प्रदर्शन की वस्तु नही है सौन्दर्य प्रतियोगिता मे पुरस्कार प्राप्त करने पर हम भले ही प्रसन्न होते है परन्तु उन कोमल मति बालाओ की आन्तरिक प्रतिभाओ का हनन भी करते हैं। उनकी यह आभा लज्जा शील की चिरस्थायी निधि है जिसे हम उनसे दूर कर रहे होते हैं। यह प्रवृत्ति हमारी समाज की पुत्रिया के भविष्य निर्माण के लिये स्वस्थ परम्परा को तोडकर हम ऐसे वृक्ष आरोपित कर रहे हैं जिनके फल देखने मे तो सुन्दर व मोहक हैं वरन अन्दर से विषाक्त हैं। हमे निर्माण ऐसे युग का करना है जिससे भारतीयता मे रहकर अपने व्यक्तित्व का निर्माण करे वाह्य सौन्दर्य के साथ साथ आन्तरिक सौन्दर्य का स्थापन करे और आत्म निर्भर बने।

सिनेमा की ऐक्ट्रैस रेखाजी को स्पर्धा मे नग्नता नहीं दिखाई देती रेखाजी आपने इसी स्पर्धा में दिल्ली का एक घर ही बरबाद कर दिया।

भारतीय नारी के सम्मान और सस्कृति के विखण्डन का हवाला देकर जो जनमानस इस प्रतियोगिता का विरोध कर रहे है रेखाजी का मानना है वह मानस सिनेमा के हिसा अश्लीलता पर हल्ला क्यो नही मचा रहे है।

जनमानस को पता होना चाहिये कि सर्व प्रथम सौन्दर्य प्रतियोगिता का विरोध आर्यसमाज के लोगो ने आजादी के पूर्व दशक मे किया था। सरकार ने उन्हे पकड कर गिरफ्तार किया था उसका परिणाम आज सामने है सभ्य समाज इस नग्नता का घोर विरोध कर रहा है।

रेखा जी आपको अमिताभ बच्चन का कार्य बुरा नहीं लग रहा है आप तो उससे बधी हुई है भला हो जया बच्चन का जिसने तुम्हे घर बरबाद करने में घर मे नहीं घुसने दिया। रेखा जी तुम्हे अमिताभ के कार्य बुरे क्यो लगेगे।

भारतीय वाडमय मे जिस सौन्दर्य की चर्चा महाकवि कालीदास से लेकर विभिन्न प्रकार के कवियो ने की है वह श्रगार साहित्य का आलेखन है। श्रगार साहित्य के आयुर्वेद प्रकरण को यहा नही मिलाया जा सकता है। ज्ञानवर्धक वेद का अग आयुर्वेद है प्रतिभा का विकास ज्ञानवर्धन है जिसे हम प्रतिभा कहते हैं उसके तीन गुणो की चर्चा करनी है जिसके तीन गुण है

(१) शारीरिक सौन्दर्य (२) नैतिक सौन्दर्य (३) ज्ञान सौन्दर्य

सौन्दर्य प्रर्दशन नैसर्गिक है परन्तु उसका अर्यादित रूप लज्जा जनक है। भारतीय समाज को सम्मन रूप मे इस गम्भीर समस्या का अवलोकन करना चाहिये।

भद्दी सौन्दर्य प्रतियोगिता का प्रदर्शन उस बुर्जुआ समाज की देन है जो अपने भयावह रूप मे विस्तार पाता जा रहा है। सदगृहस्थ नारी के रूप वो ले ता क्या बाजार मे बैठी वैश्या के विकृत रूप पर कैसे सामन्जस्य पैदा किया जा सकेगा।

राजा जनक की सभा मे पण्डितो की सभा जुडी थी उसमे अष्टावक्र भी गये थे उन्हे देखकर पण्डित समाज हसा था उस काय मे अष्टावक्र ज्यादा हसे – पण्डित समाज ने अपना अपमान माना। जनक ने अष्टावक से हसने का कारण जाना। अष्टावक्र ने कहा महाराज यह सभा पण्डितो की है यह मुझे देखकर हसी इसलिय कि मै आठ जगह से टेढा हू यदि यह विज्ञ पडित है तो मेरी विद्वत्ता व गुणो पर प्रसन्न होते पर मै देख रहा हू कि अस्या सभया सर्वे चर्मकारा सन्ति पण्डित नहीं बल्कि चमारो। हड्डी चमडे के परखने वाले चर्मकारो की सभा है। राजा जनक व पण्डित जन शर्मिदा हुए।

जिस मातृशक्ति का स्वरूप हम विकृत करने जा रहे है वह हमारी मातृशक्ति है जो अबला व सबला भी है जो पुरुष जगत का सचालन करती है स्मरण हो एक बार विदेश मे श्रीमती इन्दिरा जी को नाचने के लिये कहा गया उन्होने नाचने से मना कर दिया कि हमारे देश के लोग असन्तुष्ट होगे अत मै नृत्य मे भाग नहीं लूगी।

जीवन की सौन्दर्य प्रतियोगिता वाह्य न होकर अन्तर के निर्माण मे हैं। इसी से भारतीय जनमानस पाश्चात्य विकृत सस्कृति का घेर विरोध कर रही है अमिताभ ने गौरव का काम नहीं किया।

डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री

शाकाहार श्रेष्ठ है मांसाहार से

रमेश कुमार पाण्डेय

प्रकृति ने मनुष्य के भोजन के लिये फल शाक सब्जियो की रचना तो की ही है तथापि उसकी सहायता के लिए पशु पक्षियो की भी रचना की। ईश्वर ने मनुष्य की शारीरिक सरचना का सृजन ही शाकाहार के अनुकूल किया है। उसके आहारनाल मे मात्र शाक सब्जी फल अनाज आदि ही सरलता से पचते हैं उसके शरीर की सरचना जिस प्रकार हुई है उसके अनुसार तो मासाहार पूर्ण प्रतिकूल है। मनुष्य की आदि प्रकृति ही शाकाहार है। लोगो की यह धारणा नितान्त गलत है कि मासाहार स्वास्थ्य के लिए लाभदायक और शक्तिवर्धक है। वस्तुत सच्चाई तो यह है कि मनुष्य के शरीर मे होने वाली अनेक बीमारिया मासाहार से ही उत्पन्न होती हैं।

विश्व मे ऐसे अनेक उदाहरण है जिनसे यह बात प्रमाणित होती है कि शाकाहार से ही विशिष्ट शक्ति और तदुरुस्ती की प्राप्ति होती है। पश्चिमी आयरलैंड के लोगो का मूल भोजन जौ छाछ फल और शाक है तथा वे अत्यन्त ही तन्दुरुस्त पाये जाते हैं। स्काटलैंड के लोगो का स्वस्थ शरीर एव ताकत विश्वविख्यात है। वे अपने आहार मे प्राय जौ की रोटी का ही प्रयोग करते हैं। फ्रास के निवासी प्राय फलाहारी होते हैं वे चेस्टनट नामक फल खाया करते हैं। इटलीवासी मक्के एव फल के प्रेमी होते है। खाद्यान्न के रूप मे वे प्राय मेकरोनी नामक अनाज का उपयोग करते है। भारतवर्ष अपनी मानसिक और शारीरिक समर्थता की दृष्टि से विश्व विजेता रहा है। इतिहास भी इस बात का गवाह है कि यहा के निवासी मूलत शाकाहारी ही थे। आज भी यहा की अधिसख्य जनता फल शाक सब्जियो तथा अनाज पर ही निर्भर हैं और मासाहारियो की तुलना मे स्वास्थ्य एव दीर्घ जीवन का आनन्द उठा रही है। दुख की बात है कि शहरी सभ्यता के नाम पर अब भारतवर्ष मे मासाहार का प्रचलन बढ रहा है जो सचमुच चिता की बात है।

प्रकृति ने पशु पक्षियो का सृजन मनुष्य की सहायता के लिए किया है न कि उसकी निर्मम हत्या के लिए। वे पशु पक्षी जो एक ओर प्राकृतिक सतुलन बनाए रखने मे सहायक होते हैं तो दूसरी ओर मनुष्य की किचित मात्र भी दया पाकर मनुष्यो से भी अधिक स्वामिभक्ति तथा वफादारी का परिचय प्रस्तुत करते हैं। बावजूद इसके भी आज मनुष्य पशु पक्षियो की निरतर हत्या कर रहा है केवल अपने स्वार्थ के लिए केवल अपनी जिह्वा के स्वाद के लिए। आज मनुष्य स्वय का नैतिक पतन इतना कर चुका है कि उसके अदर के समस्त मनावोचित गुण समाप्त होते जा रहे हैं लोगो के मन मे केवल एक भ्राति मात्र है कि मासाहार शाकाहार से अधिक पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्धक है। आधुनिक शोधकर्ताओ वैज्ञानिको और चिकित्सको के अन्वेषणो से साफ स्पष्ट होता है कि शाकाहारी भोजन से न केवल उच्च कोटि की प्रोटीन और विटामिन तथा आवश्यक पोषक तत्त्व प्राप्त होते हैं अपितु मन भी पवित्र तथा साफ रहता है। डा० राबर्ट मैकेरियन के शब्दो मे मनुष्य को जीवित रहने के लिए अल्प एव सात्विक भोजन की आवश्यकता है। विटामिन कैल्सियम फास्फोरस से युक्त शाकाहारी भोजन से ही मनुष्य अधिक स्वस्थ व प्रसन्न रह सकता है।" उनके अनुसार मासाहार करने वाले शायद यह भूल जाते हैं कि मास का केवल साठ प्रतिशत भाग ही पोषक होता है शेष चालीस प्रतिशत भाग मे ऐसा विकृत पदार्थ रहता है जो नस नाडियो और रक्त मे घुला रहता है जिसे पृथक कर पाना सभव ही नहीं है। वह भी पौष्टिक समझकर उदरस्थ कर लिया जाता है।

सारणी से यह स्पष्ट होता है कि १०० ग्राम दालो मे जिनका मूल्य करीब १ रुपये से ३ रुपये तक है उनमे ३५० कैलोरी होती है जबकि १०० ग्राम अडे मे १७३ कैलोरी मछली मे ६१ कैलोरी मास मे १६४ कैलोरी गोमास मे ११४ कैलोरी होती है जिनका मूल्य करीब पाच रुपये से नौ रुपये प्रति १०० ग्राम होता है। अतएव यह तो स्पष्ट ही है कि मासाहारी खाद्य पदार्थों की अपेक्षा दालो एव अनाजो से बहुत कम खर्च मे प्रोटीन एव ऊर्जा प्राप्त होती है।

सर्वाधिक शक्तिशाली परिश्रम तथा अधिक सहनशीलता वाले पशु जो लगातार कई दिन तक काम कर सकते है जैसे हाथी घोडा ऊट बैल आदि पशु शाकाहारी ही हैं। इग्लैंड मे परीक्षण करके देखा गया है कि स्वाभाविक मासाहारी शिकारी कुत्तो को भी जब शाकाहार मे रखा गया तो उनकी सहनशक्ति एव क्षमता मे वृद्धि हुई। वास्तव मे मासाहार ही मनुष्य के शरीर मे पाये जाने वाले रोगो का जन्मदाता है। मासाहार से होने वाले प्रमुख रोगो मे हृदयरोग उच्च रक्तचाप कैसर गुर्दे की बीमारी आतो का सडना आदि प्रमुख हैं। देखा गया है कि मासाहारी व्यक्ति शाकाहारी की तुलना मे काम करते समय जल्दी हाफ जाता है। वर्तमान समय मे यूरोपीय देशो मे शाकाहार बहुत तेजी से फैल रहा है। इग्लैड और जर्मनी मे खासकर विशेष रूप से इसके क्षेत्र मे विस्तार हो रहा है। ज्यादातर पश्चिमी देशो मे मासाहारी अपना भोजन सतुलित करने के लिए अधिक मात्रा मे दूध का उपयोग करते हैं।

मासाहार के विषय मे भगवान महावीर ने कहा था कि – "यह एक नरकगामी प्रवत्ति है इसमे इसका उपयोग तथा इसके व्यवसाय करने वाले दोनो ही पाप के अधिकारी बनते हैं।" मासाहार का मनुष्य पर बहुत ही दुष्प्रभाव पडता है। इसकी पुष्टि करते हुए अब आधुनिक वैज्ञानिक भी कहते है कि ईर्ष्या द्वेष क्रोध चिडचिडापन व हिंसक प्रवृत्ति के उत्तरोत्तर वृद्धि का एक प्रमुख कारण मासाहार है। इससे मनुष्य के अन्दर क्रूरता का अहकार का विकास होता है जिससे वह अत्यन्त निकृष्ट कार्य करने पर भी उतारू हो जाता है। गहराई से सोचा जाय तो वास्तव मे शाकाहार ही मानव के अनुकूल है। शाकाहार के बल पर ही मनुष्य पुरुषार्थ को प्राप्त करता है। शाकाहार से ही उसमे मौलिक गुणो का विकास होता है। इस सदर्भ मे एक घटना याद आती है –

महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती उन दिनो लदन प्रवास पर थे। उनके प्रवचन सभाओं मे वहा के प्रसिद्ध समाचार पत्र 'डेली टेलीग्राफ' के सपादक भी आते थे। स्वामी जी के स्वस्थ शरीर से आकर्षित होकर एक दिन उन्होंने स्वामी जी से पूछा – स्वामी जी आपकी आयु कितनी है ?

स्वामी जी ने पलटकर पूछ लिया – आपके विचार से कितनी होनी चाहिए ?

सम्पादक ने कहा – अधिक से अधिक पैंसठ वर्ष।

स्वामी जी ने कहा – मेरे बडे बेटे की उम्र इस समय ६१ वर्ष है और मेरी आयु पचासी वर्ष सपादक ने कहा – आश्चर्य है।

आप क्या भोजन करते हैं ? कौन सी ब्राण्डी कौन सा मास खाते हैं ? स्वामीजी ने कहा – मास मदिरा तो मेरे माता-पिता और दादा दादी भी नहीं खाते थे मैं तो इससे बहुत दूर हू क्योकि मेरा पेट कब्रिस्तान नहीं है। हा ! भोजन मे मैं दाल सब्जी एव रोटी जरूर लेता हू, स्वस्थ शरीर का राज शाकाहार है।

जार्ज बर्नार्ड शा की एक कविता का भाव कुछ इस तरह है। उन मासाहारियो के लिए – "हर मास खाने वाले वे चलती फिरती कब्रें हैं जिनमे वध किए हुए जानवरो की लाशे दफन की गयी हैं जिन्हे हमने अपने मुह के स्वाद के चाव के लिये मारा है।"

मासाहार के सेवन से पैदा होने वाली बीमारियों को देखते हए डा० एडवर्ड सौंदर्स ने कहा कि– "आने वाली दुनिया मासाहार के नाम मात्र शाकाहार के लिए बाध्य होना पडेगा।"

अन्त मे मैं कहूगा कि हम आप और समस्त मानव समाज उस राह का अनुसरण करे जो यह सिद्धान्त कहता है–

'मा हिसयात् सर्वभूतानि'

आइये ! हम सकल्प ले कि मासाहार का बिल्कुल त्याग करे।

पचोर (चम्बा), बिलासपुर ४७५६६०

जीवन भर शुभ कर्म कमाओ

प० नन्दलाल निर्भय, भजनोपदेशक

मित्रो मेरी बात पर भी देना कुछ ध्यान।
धन बल पाकर के कभी मत करना अभिमान।।

मत करना अभिमान दम्भ है नाश निशानी।
जीवन मे सुख कभी नही पाते अभिमानी।।

बनो विनम्र सुशील जगत में सुख पाओगे।
मानव जग मे श्रेष्ठ अरे माने जाओगे।।

मानव तन अनमोल बडी मुश्किल है पाया।
ऋषियो ने भी जिसे बडा दुर्लभ बतलाया।।

जितना भी हो सके सभी शुभ कर्म कमाओ।
दुखिया दीन अनाथ जनों को गले लगाओ।।

वेदो के अनुकूल बनाओ अपना जीवन।
परोपकारी बनो कहाओ जग मे सज्जन।।

मानव वह है काम दूसरो के जो आता।
भले जनो के गीत सदा यह जग है गाता।।

राम कृष्ण की तरह अमर तुम हो जाओगे।
जाओगे तुम जहा वहीं इज्जत पाओगे।।

जीवन कर लो सफल जगत की पीर हरो तुम।
देव दयानन्द बनो वेद प्रचार करो तुम।।

ग्राम पोस्ट बहीन जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

क्या सम्राट विक्रम का स्वर्ण युग कम्प्यूटर युग था....?

सुखदेव व्यास

उज्जयिनी के विक्रमादित्य भारत सम्राट जनश्रुतियो लोकथाओ के नायक विक्रमादित्य का शासन भारतीय इतिहास मे स्वर्णयुग कहलाता है विक्रम का राज्य अरब देशो से भी आगे फैला हुआ था। यह इतिहास बताता है इतने विस्तृत राज्य का प्रबन्ध करना अत्यन्त ही कठिन कार्य था क्योकि हम स्वय देखते हैं कि – आज का कलेक्टर एक जिले को भी अच्छी तरह नही सभाल सकता है लेकिन विक्रम के राज्य मे प्रजा सुखी थी विक्रम अत्यन्त बुद्धिमान पराक्रमी राजा था उसने कभी किसी देश को गुलाम नहीं बनाया। उसके युग को भारत का स्वर्णयुग कहा जाता है स्वर्ण युग से तात्पर्य है कि – ऐसा युग जिसमे विद्या ज्ञान विज्ञान आध्यात्म स्वस्थ समाज धन धान्य से पूरित राज्य हो इतनी सुन्दर राज्य व्यवस्था महाभारत के पूर्व थी उसक बाद विक्रम का युग ही भारतीय इतिहास मे सर्वश्रेष्ठ था।

विक्रम के दरबार मे साहित्य कला और विज्ञान के सर्वश्रेष्ठ नायक नवरत्न थे ऐसे विख्यात सुव्यवस्थित राज्य को भारतवासी ओर उज्जैन के लोग आज भी नही भूले हैं क्योकि विक्रम की राजधानी उज्जयिनी थी।

लाक कथआ में उसकी न्याय व्यवस्थाओ की अनेक कहानिया जुडी है उसक राज्य की व्यवस्था ने अपराधी बच नहीं सकता था उस दण्ड अवश्य मिलता था। महाराज विक्रमादित्य स्वय सिहासन पर बैठकर न्याय किया करत थ। वह सिहासन अद्भुत था जिसमे ३२ बोलती हुई पुतलिया लगी थीं। जो न्याय करती थी और विक्रमादित्य के द्वारा किये गये शोर्यपूर्ण कार्य और उसक न्याय की कहानिया सुनाया करती थीं प्रश्न यह उठता है कि विक्रम इस सिहासन पर बैठकर सुक्ष्म से सुक्ष्म बात कैस जान सकता था। उस पर बैठते ही वह न्यायविद बन जाया करता था और दूध का दूध और पानी का पानी न्याय कर देता था और उस सिहासन पर लगी प्रत्येक पुतली बोलती थी। भारत मे ऐसी पुतलियो के उदाहरण मिलते हैं वाल्मीकि रामायण के लका काण्ड के सर्ग ८० मे बताया है कि रावण ने एक ऐसी सीता बनाई थी जो राम को नाम लेकर रोती थी। इन बातो से यह सिद्ध करना सरल हो जाता है कि भारतीय लोग प्राचीन काल मे कम्प्यूटर विद्या को जानते थे और विक्रम का सिहासन भी एक सुपर कम्प्यूटर था जो न्याय करते समय प्रत्येक पुतली की मेमोरी मे दर्ज हो जाता था जो समय आने पर कथाओ के रूप मे न्याय को सिद्ध करती थी जैसे आज वकील लोग करते है। विक्रम के सिहासन की कथा आज केवल मनोरजन की साधन बन गयी लेकिन उसमे उपयोग किये गये कम्प्यूटर के सिद्धान्तो को जनता भूल गयी। जिसे समझने की अत्यन्त आवश्यकता है भारतवासी पदार्थ विज्ञान से अच्छी तरह परिचित थे और प्रत्येक सूक्ष्म रहस्य को समझते थे। सिहासन ३२ सी के बारे मे यह कहा जाता है कि उस पर वही बैठता था जिसका हृदय निर्मल होता हो क्योंकि आज भी कहा जाता है कि – कम्प्यूटर पर अगर शुद्ध हृदयवाला बैठे तो अनेक उपलब्धिया प्राप्त कर सकता है और उसका सचालन जानकार ही कर सकता है यहा तक की सुपर कम्प्यूटर को चलाने के लिये बहुत ही वैज्ञानिक व्यक्ति की आवश्यकता पडती है वैसा ही विक्रम के विषय मे कह सकत हैं कि – विक्रम का सिहासन सुपर कम्प्यूटर होगा जिसे वह स्वय या उसके समकक्ष व्यक्ति ही सचालित कर सकता हो।

यह भी कहा जाता है कि – विक्रमादित्य अपने राज्य की दस हजार कोस तक की बाते जानता था यह सब वह कैसे जानता था इसस यही सिद्ध होता है कि उसके समाचार प्राप्त करने की क्षमता अत्यन्त प्रबल थी और यह सब कम्प्यूटर से ही सभव हो सकता है। आज अमेरिका सारे ससार की बाते ध्यान मे रखता है और एक महा शक्ति बना हुआ हे उसी प्रकार उज्जैन का सम्राट विक्रम विश्व की गतिविधिया जानता था इसीलिये वह उस युग की महाशक्ति था। शुक्राचार्य ने अपनी शुक्रनीति क अध्याय। श्लोक ३६७ मे लिखा है **अयुत क्रोशजा वार्त्ता हरदेक दिनेन वै** अथात राजा एक दिन म दस हजार कास तक की बाते प्रतिदिन जान यह सब कम्प्यूटर विद्या स ही जाना सकता है। सम्राट विक्रम क युग के लोग कम्प्यूटर विद्या को जानत थे हो सकता उन दिनो मे सुपर कम्प्यूटर का सिहासन ३२ सी के नाम से ही जाना जाता हो जो ससार की समस्त प्रकार की विद्याओ को सिद्ध कर उसका समाधान करती हो और उस समय हो सकता हे कि कम्प्यूटर जनसामान्य मे प्रचारित हो। आयसमाज क प्रवर्तक महर्षि दयानद सरस्वती द्वारा ऋग्वदादि भाष्य भूमिका म वेद मत्रो के आधार पर अनेक वैज्ञानिक मत्र वेदो से सकलित किये है लेकिन आज हम पुन अपन सस्कृत साहित्य के पुनरावलाकन की आवश्यकता है। आर हमे अग्रजी के बजाय सस्कृत पठन पाठन पर अधिक जोर देना चाहिये।

इन उदाहरणो से यही सिद्ध होता है कि आज स ढाइ हजार वर्ष पूर्व तक भारतवासी विज्ञान की इन सूक्ष्मतर बातो को जानता था और इसी कारण यह दश विश्व मे सोने की चिडिया के नाम से विख्यात था। विज्ञान की इन उपलब्धियो से लगता है उस समय भारतवासियो को भी विलासित मे डूबो दिया होगा जिसका प्रायश्चित वे आज कर रहे है। इस युग मे अमेरिका जिस प्रकार विश्व की समृद्धि का अपहरण कर रहा है और अनेक विद्याओ को गुप्त रखे हुए है जिस प्रकार उसने क्रायोजनिक विद्या को छिपा कर भारत को न देने की कसम खाई लेकिन भारतीय वैज्ञानिको ने अपनी मेहनत से वह विद्या भी प्राप्त कर ली है लेकिन यह सत्य भी है कि विज्ञान और प्रकृति के सूक्ष्म रहस्य विलासिता आधिक फैलाता है जो आज विश्व मे दिख रहा है यह जहर यूरोप और अमेरिका मे तो फैल चुका है और अब भारत की ओर पुन आ रहा है इस लिये मानवीय हितो के लिये विज्ञान और आध्यात्म विद्या को समन्वित होकर चलना पडगा अन्यथा विश्व को पुन भारत की स्थिति मे आना पडेगा जिसमे उसने एक हजार साल की गुलामी भी इसी विलासिता से प्राप्त की थी।

अनन्त टकणालय दौलत गज
उज्जैन (म० प्र०) ☆

मुजफ्फरपुर आर्यसमाज मे
शोक सभा

२७ अक्टूबर। मुजफ्फरपुर आर्यसमाज मे आज एक शोक सभा श्री हरिहर साहु की अध्यक्षता मे आयोजित की गई जिसमे मुजफ्फरपुर आर्यसमाज के कर्मठ सदस्य एव सरक्षक तथा समर्पित समाज सेवी प्रसिद्ध चिकित्सक प० सत्य नारायण शर्मा के निधन पर शोक सभा हुई। इस अवसर पर डा० सुरेन्द्र नाथ दीक्षित ने उनक आदर्श व्यक्तित्व और त्यागमय चरित्र पर प्रकाश डाला। मुजफ्फरपुर आयसमाज क मत्री श्री इन्द्र दव साह जी न अपन भाषण म कहा कि वेद्यजी के निधन स मुजफ्फरपुर आयसमाज की अपूर्णिय क्षति हुइ है। हम उनक गुणा का अनुसरण कर क ही आयसमाज की सच्ची सवा और श्रद्धाजली अर्पित कर सकते हैं।

इन्द्रदेव साह

श्री दरबारी लाल जी की पुण्य स्मृति मे
यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

इटावा। स्थानीय ग्राम उदयपुरा म दिनाङ्क १५ स १७ अक्तूबर क मध्य यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसके ब्रह्म आचाय राजदेव शर्मा प्राचाय आर्ष गुरुकुल ऐरवा कटरा थे। वेद पाठ गुरुकुल के ब्रह्मचारिया ने किया। इस अवसर पर आचाय राजदव के प्रवचन एव प० कुशराम आर्य के भजनोपदेश भी हुए।

चि० आयुष के मुण्डन सस्कार के उपलक्ष्य में
ऋग्वेद पूर्वार्ध पारायण महायज्ञ सम्पन्न

मेनपुरी। स्थानीय खरफरी गाव मे ठाकुर महावीर सिह के प्रपौत्र श्री यतीन्द्र सिह चौहान के पौत्र एव श्री सुबोध सिह के पुत्र के मुण्डन के उपलक्ष्य मे ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसके ब्रह्म आचार्य राजदेव शर्मा प्राचार्य आर्ष गुरुकुल एरवा कटरा थे इस अवसर पर आचार्य जी के निरन्तर २० अक्तूबर से २८ अक्तूबर तक प्रवचन होत रहे। ब्रह्मचारियो क सुमधुर वेद पाठ की सर्वत्र सराहना की गई इस कार्यक्रम मे नित्य सैकडा लोग भाग लेते थ तथा बडी श्रद्धा के साथ यज्ञ मे आहुतिया देते थे।

आचार्य जी ने पूर्णाहुति के अवसर पर मुण्डन सस्कार की वैज्ञानिक व्याख्या कर लोगो का आहान किया कि वे अपनी सन्तानो के सस्कार वैदिक रीति से कराये।

श्री ध्रुवपाल सिह जी भटल एव श्री ज्ञान प्रकाश जी शास्त्री ने भी चि आयुष को अपना शुभाशीष प्रदान किया।

"गौ – रक्षा का मानवीय पक्ष भी"

खुशहाल चन्द्र आर्य

विश्व के अनेक विद्वानो व विचारको ने गऊ के दो पक्षो को विशेष रूप से उपस्थित किया है जिसमे धार्मिक ओर आर्थिक पक्ष है। धार्मिक पक्ष के विद्वानो ने '**गावो विश्वस्य मातर**' कहकर गाय को विश्व की माता यानी मानव मात्र की माता कहा है। सच्च भी है। बच्चे के लिए गऊ का दूध माता के दूध के समान लाभदायक व उपयोगी होता है। माता तो एक या दो साल ही बच्चे को दूध पिलाती है परन्तु गाय तो मनुष्य को जीवन पर्यन्त दूध पिलाती है इसलिए उसको माता का दर्जा देना उचित ही है। हमारे ऋषि मुनियों ने इसके शरीर मे ३२ करोड देवी देवताओ का वास बताया है अर्थात गाय के रोम-रोम मे कल्याण की भावना व्याप्त है। यज्ञ जैसे पवित्र व परोपकारी कार्य के लिएि गाय का घी ही सर्वोत्तम माना गया है। पुराणो मे तो यहा तक लिखा है कि मृत्यु के बाद मनुष्य को वैतरणी नदी से गऊ ही पार करवाती है और उसके लिए स्वर्ग का रास्ता प्रशस्त करती है। इसी लिए किसी की मृत्यु के बाद उसके सुपुत्र ब्राह्मण को गऊ दान देते हैं। वैदिक सिद्धान्तो से यह बात कपोल कल्पित ही मालूम होती है लेकिन इससे गाय की महत्ता तो प्रकट होती ही है।

इसका दूसरा पक्ष आर्थिक पक्ष है जिसको आज के वैज्ञानिक तथा पश्चिमी विद्वान भी मानते हैं। गाय का दूध गोबर व मूत्र मानव मात्र के लिए बहुत उपयोगी व लाभकारी होता है। आयुर्वेद मे तो **गावो अमृतस्य नाभि**" गाय के दूध को अमृत (जीवन देने वाला) बताया है इसके दूध से बने घी मक्खन दही छाछ तथा इनसे बनी मिठाइया मनुष्य के लिए बहुत पौष्टिक तथा रोगनाशक होती है। इसके गोबर व मूत्र से बनी खाद यूरिया से बनी खाद से कहीं उत्तम मानी जाती है क्योकि यूरिया से बनी खाद जमीन की उर्वरा शक्ति को शनै शने कमजोर करती जाती है लेकिन गाय के गोबर व मूत्र से बनी खाद जमीन की उर्वरा शक्ति को बढाती है। आज के वैज्ञानिक तो गोबर प्लान्ट से गैस तैयार करते हैं जो अनेक घरेलू कामा के प्रयोग मे आती है और गैस से बिजली का काम भी लिया जाता है। वैज्ञानिको ने तो यहा तक भी खोज निकाला है कि गाय की चमडी मे ऐसा कोई आकर्षण होता है जिससे वह सूर्य की किरणो के गुणो को खींच लेती है और वह गुण गाय के दूध मे प्रवेश हो जाते हैं इसीलिए गाय का दूध अन्य पशुओ के दूध से ज्यादा लाभकारी तेजस्वी और आलस्य विनाशक होता है। गऊ के गोबर और मूत्र से अनेक प्रकार की दवाईया बनती हैं जो मनुष्य के रोग निर्वाण करने के काम आती हैं। इसके बछडे व बैल हल जोतने व माल ढोने के काम आते हैं और तो और गाय मरने के बाद भी अपनी हड्डी चमडी तथा मास से मनुष्य मात्र की सेवा करती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि गाय परिवार की एक सदस्य है। जिस प्रकार सदस्य परिवार के प्रति समर्पित रहता है उसी प्रकार गाय भी परिवार के लिए समर्पित रहती है पूरी उम्र किसी न किसी प्रकार से सेवा ही करती है। इसलिए परिवार वालो का भी फर्ज है कि वे गाय की मृत्यु पर्यन्त सेवा करे जिस प्रकार वे अपनी माता पिता की सेवा करते हैं। इसका तीसरा पक्ष नैतिक व मानवीय पक्ष भी है जिस पर प्रत्येक मानव को विचार करना चाहिए।

मानव एक मननशील तथा अहिंसक प्राणी है ईश्वर ने अन्य प्राणियो की अपेक्षा मनुष्य को विवेक के लिए बुद्धि विशेष रूप से प्रदान की है। जिससे वह अच्छे बुरे का विचार कर सके। मनुष्य की मनुष्यता इसी मे है कि वह दूसरे के दुख व सुख को अपने दुख सुख के समान समझे और किसी के किये उपकार को न भूले और उसके बदले उसका उपकार करने की ही सोचे न कि उसका विनाश करने की। सभी सम्प्रदायों मतो व धर्मो मे मनुष्य के लिए कृत्यज्ञता सबसे बडा गुण तथा कृतघ्नता सबसे बडा दोष बताया है। मनुष्य तो क्या कुत्ता भी कृत्यज्ञता व कृतघ्नता को समझता है। हम देखते हैं कि मारने वाले की तरफ कुत्ता गुर्राता है और रोटी का टुकडा देने वाले के प्रति पूछ हिलाकर प्रेम प्रदर्शित करता है लेकिन आज का मानव तो इतना पतित हो गया है कि वह मतृ खा कर अमृत के समान दूध देने वाली गाय को अपने स्वार्थ व क्षणिक स्वाद के लिए उस निर्दोष व मूक प्राणी को काट कर खाता है। यह कृतघ्नता व अमानवता नहीं तो क्या है ? इस मानवीय पक्ष को यदि किसी ने छुवा है तो महर्षि दयानन्द सरस्वती और राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त ने छुआ है उन्हीं के शब्दों में –

महर्षि दयानन्द सरस्वती अपनी लिखी गो करुणा निधि पुस्तक की भूमिका मे लिखते हैं–क्या ऐसा कोई भी मनुष्य है जिसके गले को काटे या रक्षा करे वह दुख और सुख का अनुभव न करे ? जब सब को लाभ और सुख से प्रसन्नता है तो बिना अपराध किसी प्राणी का प्राण वियोग करके अपना पोषण करना यह मनुष्य केलिए निन्दनीय कर्म क्यो न होवे ? सर्वशक्तिमान जगदीश्वर इस सृष्टि मे मनुष्यो की आत्माओ मे अपनी दया और न्याय को प्रकाशित करे जिससे यह सब दया और न्याययुक्त होकर सर्वदा सर्वोपकारक काम करे। कृपा पात्र गाय आदि पशुओ का विनाश न करे।

मैथिलीशरण गुप्त की गाय सम्बन्धी प्रसिद्ध कविता है जो सर्व विदित है।

दातो तले तृण दबा कर, है दीन गाय कह रही,
हम है पशु, तुम हो मनुज, पर योग्य क्या तुमको यही
हमने तुम्हे मा की तरह, दूध पीने को दिया,
देकर कसाई को हमे, तुमने हमारा वध किया।
क्या वश हमारा है भला, हम दीन है बलहीन है,
मारो या पालो कुछ करो तुम, हम सदैव अधीन है।
प्रभु के यहा से भी कदाचित, आज हम असहाय है,
इससे अधिक अब क्या कहे, हा ! हम तुम्हारी गाय हैं।

१८० महात्मा गांधी रोड दो तल्ला कलकत्ता-७ ☆

स्वदेशी, संस्कृति और स्वभाषा

विश्वंभर प्रसाद 'गुप्त-बन्धु'

स्वदेशी आन्दोलन मे भाग लेने वाली पुरानी पीढी के कुछ लोग अभी होगे। उन्हे याद होगा कि स्वदेशी खद्दर अपनाकर लोगो ने जगह जगह विदेश वस्त्रो की होलिया जलाई थीं। उसी के फलस्वरूप मैनचेस्टर और लकाशायर की मिलो की आग ठण्डी पडने लगी थी फिरगी ताज काप उठा था और भारत मे अग्रेजो के पैर लडखडाने लगे थे। वह स्वावलम्बन का पाठ था – शोषण का प्रतिवाद था – विदेशी मिलो के प्रतिस्थापन हेतु भारतीय बुनकरो पर किए गए अत्याचार का प्रतिकार था। अग्रेजो को भगाने के लिए वह जरूरी था। आगे चलकर वही आजादी की मजिल का पहिला सार्थक कदम बना।

स्वदेशी आन्दोलन की सफलता का इसकी लोकप्रियता का रहस्य क्या था इस पर ध्यान दे तो स्पष्ट होगा कि वह इस देश की प्राचीन सस्कृति का ही एक सुमधुर पल था। वैदिक सस्कृति जो भारत के जन जन के हृदय मे बसी है तत्वत धर्म प्रधान है मनुष्य को सब की समानता पारस्परिक सद्भावना और मैत्री का पाठ पढाती है। वह छीना झपटी नही वरन आपस में मिल-बाटकर उपयोग करना सिखाती है और शोषण का भीषण प्रतिरोध करने की शक्ति देती है। इसी लिए स्वदेशी की आवाज कानो मे पडी कि जन-जन के हृदय मे पैठ गई।

अब सोचिए कि भारतीय सस्कृति की वह पवित्र धारा वैदिक युग से अब तक निरन्तर प्रवाहित कैसे होती आई। साहित्य सस्कृति का वाहन कहलाता है और यह किसी भाषा मे ही व्यक्त होता है। वैदिक सस्कृति का अजस्र प्रवाह भारतीय भाषाओ के माध्यम से ही कालजयी बना। यह इतिहास के काले पृष्ठो मे अकित है कि डगमगाते फिरगी ताज को धराशायी होने से रोकने के लिए इस कालजयी सस्कृति को ही नष्ट करने के जोरदार प्रयास किए गए। भारतीय भाषाओ के स्थान पर अग्रेजी की शिक्षा देकर मेकाले ने सस्कृति के वाहन साहित्य के भ्रष्ट अग्रेज अनुवाद भारतीयो के दिमाग मे ठूसने की पक्की व्यवस्था की। अग्रेजी जिसे मेकाले के ही समकालीन विरोधी हागसन ने "सस्कृति अपहारक भाषा" कहा था शासन के प्रोत्साहन से भारत मे फूलते फलते हुए न केवल लोकप्रिय होने लगी वरन प्रतिष्ठा का प्रतीक भी बन गई।

अग्रेजो क जान के बाद भी दुर्भाग्य से अग्रेजी की सनक बनी रही और दिनो-दिन बढती गई। फलस्वरूप अपसस्कृति की बाढ आ गई जिसमे स्वदेशी का फल भी गिर कर बह गया। अपनी भूल पर ही कुठाराघात हुआ देख सस्कृति कराहने लगी। भारतीय सस्कृति के वाहन साहित्य की अभिव्यक्ति की माध्यम भारतीय भाषाए ही वह मूल हैं जिन पर गडे हुए अग्रेजी कुठार को उखाड फेंकना है। शेष पृष्ठ ८ पर

इस्लामी घुसपैठियों से खतरे और समाधान

गतांक से आगे

— प्रो० बलराज मधोक

इससे पहले भी पाकिस्तान भारत के सीमावर्ती क्षेत्र में स्थानीय मुसलमानों की सहायता से अपने मुस्लिम नागरिक बसा रहा था। अब यह प्रक्रिया तेज हो गयी। पाकिस्तान और बाग्लादेश से हिन्दुओ और बौद्धो का शरणार्थियो के रूप मे आना तो १६४७ से ही शुरू हो चुका था। अब घुसपैठियो के रूप मे मुसलमान भी बडी सख्या मे आने लगे। बाग्लादेश से इनके आने की गति १६७०-७१ के बाद और पाकिस्तान से १६७७ के बाद अधिक तेज हो गयी।

राष्ट्रीय स्तर पर इस घुसपैठ की ओर ध्यान पहले पहल १६७१ मे उस समय गया जब आसाम मे नयी मतदाता सूचियो मे बाग्लादेश के साथ लगने वाले क्षेत्र मे पडने वाले बहुतसे विधानसभा के चुनाव हलको मे मुसलमान दुगुनी से भी अधिक सख्या मे निकले। इससे आसाम मे बावेला मच गया। क्षेत्रीय और राष्ट्रीय समाचारपत्रो ने इस बात को प्रमुखता से छापा।

इस समाचार को पढकर मैंने तत्कालीन प्रधान मत्री चौधरी चरणसिह को एक पत्र लिखा जिसमे मैंने इन क्षेत्रो की मतदाता सूचियो को नये सिरे से बनाने और बाग्लादेश से आये घुसपैठियो के नाम उनमे से निकालने की बात कही और साथ ही सुझाव दिया कि जब तक सशोधित मतदाता सूचिया तैयार न हो तब तक आसाम मे चुनावो को स्थगित रखा जाये।

चौधरी चरणसिह प्रखर राष्ट्रवादी व्यक्ति थ। उन्होने शीघ्र मेरे सुझावो को स्वीकार कर लिया और आसाम मे चुनाव स्थगित करा दिये।

चौधरी चरणसिह की सरकार के पतन और १६८० मे श्रीमती इदिरा गाधी के पुनः सत्ता मे आ जाने के बाद दलगत स्वार्थो और मुस्लिम वोट बैक क लिए मुस्लिम तुष्टीकरण को राष्ट्रहित पर वरीयता दी जाने लगी। परन्तु असम गणपरिषद ने घुसपैठियो के नाम मतदाता सूचियो से निकालने के लिए अपना दबाव बनाये रखा और आसाम मे असम गणपरिषद की सरकार भी बन गयी।

घुसपैठियो के सम्बन्ध मे राष्ट्रीय नीति बनाने और मतदाता सूचियो मे सशोधन करने की जिम्मेदारी भारत सरकार और केंद्रीय चुनाव आयोग की है। असम सरकार केवल दबाव ही डाल सकती थी।

दिसम्बर १६८४ के चुनावो के बाद नये प्रधान मत्री राजीव गाधी ने असम गणपरिषद के नेताओ के साथ एक समझौता किया जिसमे बाग्लादेश से मुसलमानो के घुसपैठ को रोकने और मतदाता सूचियो मे सशोधन करने की बात स्पष्ट रूप मे मानी गयी। परन्तु इस समझौते पर अमल नहीं हुआ। राजीव गाधी भी शीघ्र ही मुस्लिम तुष्टिकरण के चक्कर मे पड गये और घुसपैठ रोकने के लिए कोई प्रभावी कदम नहीं उठाए गये। साथ ही पश्चिमी बगाल की कम्युनिस्ट सरकार और बिहार की काग्रेस सरकार ने बाग्लादेश से आने वाले घुसपैठियों को अपना-अपना मुस्लिम वोट बैंक बढाने के लिए प्रश्रय देना शुरू कर दिया। इस कारण घुसपैठिये और उनके इस्लामवादी अभिभावक आश्वस्त हो गये और वे पश्चिमी बगाल और बिहार से आगे बढकर दिल्ली मुम्बई आदि प्रमुख नगरो मे भी बडी सख्या मे बसने लगे। काग्रेस तथा अन्य राजनैतिक दलो मे घुसपैठियो की इस बाढ को रोकने के बजाये उन्हे अपना अपना सुरक्षित वोट बैक बनाने के लिए उनको बसाने और उनके लिए राशन कार्ड बनवाने के लए उनमे होडसी लग गयी। फल स्वरूप बग्ला देश से आने वाले घुसपैठियो की बाढ सी आ गई। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण १६६१ की जनगणना मे सामने आया। भारत मे मुसलमान की जनसख्या १६८० के मुकाबले मे डयोढी हो गयी। वे सात करोड छप्पन लाख से बढकर लगभग बारह करोड हो गयीं।

पाकिस्तान से भी घुसपैठियो के आमने की गति इस काल मे तेज हुई परन्तु सख्या की दृष्टि से उनका अनुपात बाग्लादेश से आनेवाले घुसपैठियो से बहुत कम था।

अधिकृत जानकारी के अनुसार १६६४ के अत तक बाग्लादेश से दो करोड स अधिक और पाकिस्तान स लगभग पचास लाख मुस्लिम घुसपैठिय भारत मे आ चुके है। बाग्लादेशी घुसपैठियो का जमाव मुख्यत आसाम पश्चिमी बगाल बिहार के बाग्लादेश से लगने वाला किशनगज पूर्णिया विभाग और त्रिपुरा मे है। मुबई दिल्ली ओर देश के अन्य बडे नगरो मे भी व बडी सख्या मे बस चुके हैं। दिल्ली म उनकी सख्या चार लाख क लगभग हो गयी है। उनकी बडी बडी बस्तिया दिल्ली के विभिन्न भागो विशेषरूप म यमुना पार के पूर्वी दिल्ली क्षेत्र मे कायम हो गयी है। दक्षिण दिल्ली के कालकाजी कैलाश लाजपतनगर आदि पोश बस्तियो मे भी वे बडी सख्या मे बस गये है। फलस्वरूप दिल्ली मे मुसलमानो की जनसख्या ४% से बढकर लगभग ७% हो गयी है। अब पुरानी दिल्ली मे कई और मुस्लिम बहुल क्षेत्र बन गये है।

मुबई मे भी बाग्लादेश और पाकिस्तानी घुसपैठियो के कारण मुसलमानो की जनसख्या मे अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। कई क्षेत्रो मे मुस्लिम मतदाताओ की सख्या लगभग दुगुनी हो गयी। है। पाकिस्तानी घुसपैठिये भी इन महानगरो मे बडी सुख्या मे आ चुके है परन्तु उनका ध्यान मुख्य रूप मे गुजरात और राजस्थान के सीमावर्ती क्षेत्रो पर केद्रित है। गुजरात और राजस्थान के अनेक सीमावर्ती गावो मे उनकी जनसख्या बहुत तेजी से बढी है।

सोवियत रूस द्वारा अफगानिस्तान से अपनी सेनाए वापस बुला लेने के बाद बहुत से अफगान अरब और सूडानी मुजाहिद भी जो १६७१ तक रूस के विरुद्ध जिहाद मे भाग लेते थे वे अब भारत मे पाकिस्तान के सहयाग से घुसपैठ कर रहे हैं। पाकिस्तान का सैनिक गुप्तचर विभाग आई० एस० आई० इन्हे प्रशिक्षित करने शास्त्री और गोलाबारूद देने और जम्मू कश्मीर मे घुसाने मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। जैसे घुसपैठियो का जाल अब जम्मू-काश्मीर के अतिरिक्त पजाब उत्तर प्रदेश और बिहार तथा अन्य कई प्रदेशो और नगरो विशेष रूप मे दिल्ली और मुम्बई मे भी फैल चुका है। फलस्वरूप इस समय भारत मे तीन प्रकार के इस्लामवादी घुसपैठिये बाग्लादेशी पाकिस्तानी तथा अफगान अरब आदि योजनाबद्ध ढग से अपने पाव जमा रहे हैं। इनकी सख्या दो करोड से अधिक हो चुकी है और उसमे लगातार बढोतरी हो रही है। इन विदेशी घुसपैठिया के कारण भारत के लिए अनेक प्रकार की राजनैतिक सुरक्षा सम्बन्धी और आर्थिक समस्याए पैदा हो रही है और देश की एकता शान्ति और सुरक्षा के लिए नये खतरे खडे हो गये हैं। वे हैं

१ राजनैतिक

घुसपैठियो के कारण भारत की जनसख्या सम्बन्धी स्वरूप तेजी से बदल रहा हे और अनेक राजनैतिक समस्याए और चुनौतिया सामने आ रही हैं। भारत के पाकिस्तान और बाग्लादेश के साथ लगने वाले अनेक जिलो मे मुसल्मान का बहुमत हो गया है। वहा काश्मीर घाटी की तरह अलगाववादी गतिविधिया शुरू हो गयी है और वहा से हिदुओ को खदेडने और उनका पूर्ण इस्लामीकरण करन की प्रक्रिया शुरू हो गयी है

जनसख्या बढने के कारण मुस्लिम वोट बैंक का महत्त्व बढता जा रहा है और मुसलमानो के सामूहिक मत प्राप्त करने के लिए राजनैतिक दलो मे साम्प्रदायिकता और तुष्टीकरण की होडसी लग गयी ह। इससे भारत को पाकिस्तान की तरह इस्लामी देश बनाने के आदोलन को भी बल मिल रहा है। नयी मुस्लिम सोच की एक झलक सय्यद शहाबुद्दीन द्वारा मुसलमान बुद्धिजीवियो की एक गुप्त बैठक मे दिये गये एक भषण स मिलती है। एक हिन्दू युवक के हाथ किसी प्रकार उस बैठक का निमत्रण पत्र लग गया। उसन मुस्लिम नाम से उस बैठक मे भाग लिया और उस भाषण की रिपोर्ट दी। उसके अनुसार शहाबुद्दीन ने कहा कि मुसलमान ने कइ सौ वर्षो तक भारत पर राज किया है गत ४० वर्षो के अनुभव न सिद्ध कर दिया कि हिन्दू राज नहीं कर सकत भारत पर राज मुसलमानो को ही करना है परन्तु अब परिस्थितिया बदल चुकी है तलवार का स्थान वोट ने ले लिया है। इसलिए मुसलमानो को अपनी आबादी बढानी चाहिए और सब पार्टियो मे घुसकर उन्हे अदर से प्रभावित करना चाहिए ताकि वे कोई ऐसी नीति न अपनाए जो मुस्लिम हितो के अनुकूल न हो साथ ही उन्हे चुनाव हलका अनुसार ऐसी रणनीति अपनानी चाहिए कि कोई ऐसा प्रत्याशी और दल जो मुसलमानो के अनुकूल न हो जीत न सके।

क्योकि भारत के सविधान ने अल्पसख्यका विशेष रूप मे मुसलमानो को विशेष अधिकर " रखे हैं। उनका लाभ इन घुसपैठियो को भी मिल रहा है। फलस्वरूप मुस्लिम समस्या जिसको हल करने के लिए राष्ट्रवादी भारत ने १६४७ मे मातृभूमि के विभाजन की भीषण कीमत दी थी अधिक भयानक रूप मे फिर खडी हो गयी है।

काश्मीर समस्या भी मुस्लिम समस्या का अग है। सितबर १६६४ मे मोरक्को के कार्साब्लोका नगर मे हुए इस्लामी देशो के सम्मेलन ने बोस्निया की तरह काश्मीर को भी इस्लामी एजेडा मे शामिल कर लिया गया है।

क्रमश

ओ३म् आत्मा का भोजन सत्संग

ब्र० सुरेश, वैदिक प्रवक्ता

आपने अधिकतर लोगो को यह कहते सुनते सुना होगा कि पहले आत्मा फिर परमात्मा। यह कथन जितना सत्य है इतना ही गलत इसका अर्थ लोग किया करते हैं। इसका सीधा सा अर्थ पहले अपने स्वरूप को समझो फिर परमात्मा के स्वरूप को जाना। अपने को जाने बिना अर्थात आत्मज्ञान के बिना परमात्म ज्ञान असम्भव है। इस वास्तविक अथ को जानकर लाग इसका अर्थ करते है – पहले अपना पेट भर ले फिर ईश्वर विचार का समय निकालेगे। अब इस चक्कर मे पडकर उनका सारा जीवन नमक तेल लकडी जुटाने मे बीत जाता है न उनका पेट भर पाता है और न सध्या उपासना सत्सग ही कर पाते हैं। अत मे यही कहना शेष रह जाता है आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास। ऐसा क्यो होता है? आओ हम सब मिलकर इसका पता लगावे।

इसका एक ही कारण है शरीर और आत्मा का विवेक न कर पाना। अज्ञानता से शरीर को ही आत्मा मान लिया जाता है। इसीलिए जब लोगो से भजन करने को कहा जाए तो दो विचार सामने आते हैं। प्रथम वो लोग हैं जो भजन करने लग जाते हैं परन्तु कर्म करना छोड देते है। ये लोग समाज व राष्ट्र के ऊपर बोझ हो जाते है दूसरे लोग हे वो इन अकर्मण्य पाखण्डी वैरागियो की दुर्दशा देखकर कह उठते है। भूखे भजन न होय गोपाला यह ले अपनी कण्ठी माला। ये दोनो परिणाम अन्धविश्वास व अन्धश्रद्धा से सामने आते हैं। इन दोनो विचारको के विचार मे कहा त्रुटि हुई आओ फिर हम सब मिलकर विचारे।

मानव अनेक जन्म जन्मान्तरो से भूखा चला आ रहा है। और यह भूख दो प्रकार की है। प्रथम शारीरिक भूख दूसरी आत्मा की भूख। प्रथम शारीरिक भूख है जिसके लिए स्थूल अग दाल चावल रोटी तरकारी फल फूल इत्यादि। जिसमे पीने के लिए पानी पहनने के लिए वस्त्र रहने के लिए मकान इत्यादि बातो का समावेश हो जाता है। इतनी चीजे मिलने पर शरीर जो कि मरण धर्मा है। अनित्य है **"शरीर ब्याधि म दिरम्,"** सुख दु ख शीतो ष्णादि का अनुभव करने वाला है। ठीक इसके विपरीत सूक्ष्म तत्व आत्मा है। जो अजर अमर अविनाशी नित्य सत और चित है वह भी भूखी है इस ओर कम लोगो का ध्यान जाता है। आत्मा भूखी हे सत्सग की। आज आत्मा की दुर्दशा का ही कारण है कि राष्ट्र मे जातिवाद सम्प्रदायवाद वर्गवाद का सघर्ष छिडा हुआ है। व्यभिचार आतक घोटाला प्रदूषण अन्याय अत्याचार सब आत्मा के भूखी होने का प्रमाण है। अत हम सभी को चाहिए कि जहा एक ओर हम रोटी कपडा और मकान से शरीरिक भूख समाप्त कर रह हैं वहीं हम सत्सग द्वारा कुछ ही क्षण के लिए आत्मा को भी भोजन दे। सत्सग द्वारा आत्मा की उन्नति होती है जितनी आत्माओ की उन्नति होगी उतना ही समाज राष्ट्र विश्व सुख शाति आनद का प्राप्त करेगा। आत्मा की उन्नति का प्रभाव केवल मानव समाज पर ही नहीं प्राणी वर्ग (पशु पक्षी इत्यादि) पर भी पडता है। आत्म ज्ञानी कबीर कहते है।

जीव ना मारो बापुरो, सबके एकै प्राण।
हत्या कबहून टरि हो कोटिन सुनो पुराण।।

ऐसी कोमल भावना शरीर को खिलाकर भीम बना देने से वा भोग विलासिता मे डूबे रहने से नही होती है। उसका एक मात्र कारण है सत्सग। विभिन्न शास्त्रो महापुरुषो विद्वानो दार्शनिको ने सत्सग की महिमा का वर्णन मुक्त कण्ठ से किया है। सत तुलसी दास जी कहते हैं –

बडे भाग पाइव सत्सगा।
बिनु प्रयास हो वहि भव गगा।
मज्जन फल पेखिअ ततकाला।
काक होय पिक बकहु मराला।।

एक क्षण के लिए लकिनी नाम की राक्षसी जो कि मास भक्षी मय पायी आदि अवगुणो की खान थी भक्त हनुमान के सत्सग को पाकर बोल उठी।
तात सवर्ग अपवर्ग सुख, धरिऊ तुला एक अग तूल न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सत्सग।।

कविवर दीन ने तो अपनी कतिपय पक्तियो मे सत्सग की महिमा कहत हुए मानो गागर मे सागर भर दिया। आप स्वय पढे।

ज्ञान बढे गुणवान की सगत, ध्यान बढे तपसी सग कीन्हे।
मोह बढे परिवार की सगत लोभ बढे धन मे चित दीन्हे।
क्रोध बढे नर मूढ की सगत काम बढे तिरिया सग कीन्हे।।
बुद्धि विवेक विचार बढे, कवि दीन सो सज्जन सगत कीन्हे।

इतना ही नहीं महात्मा कबीर ने सत्सग के प्रभाव मे आकर समृद्धि एश्वर्य मुक्त वातावरण को भी त्यागने का भाव लेकर कहा है–

राम बुलावा भेजिया दिया कबीरा रोय।
जो सुख साधू सग मे सो वैकुण्ठ न होय।।

सत्यवक्ता महर्षि दयानन्द ने एक वैश्यागामी मयपायी दानव से कहा–अमीचन्द! तुम हो तो हीरे मगर कीचड मे पडे हो। बस वह दानव से मानव बन गया और गलियो मे गाने लगा–
आज हम सब मिल के गायें, उस प्रभु के धन्यवाद।
जिनका यश नित्य गाते, सत जन हैं निर्विवाद।।

उपरोक्त महापुरुषो का नाम देने का प्रयोजन यह है कि इन महात्माओ ने सत्सग करके उसका अनुभव हमे दिया है। शब्द के ज्ञान से अनुभव का ज्ञान बडा होता है। अब एक झलक शास्त्र म देखे। शास्त्रकार ने सत्सग का मार्मिक वणन किस प्रकार किया है।

'जाड्य धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्य,
मानोगति दिशति पापमपाकरोति।
चेत प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्ति
सत्सगति कथय कि न करोति पुसाम।।"

अर्थात सत्सगति पुरुषो के लिए क्या क्या नहीं करती? बुद्धि की जडता को हरती है। वाणी को सत्य से सींचती है। दिशाओ मे मान बढाती है। चित्त को प्रसन्न रखती है। दिशाओ मे कीर्ति फैलाती है। इस प्रकार महापुरुषो के अनुभवो उपदेशामृतो से शास्त्र ने सत्सग की यानि आत्मा की भूख को मिटाने का स्पष्ट निर्देश दिया है। कठोपनिषद् खण्ड २ श्लोक ५ मे कहा है–

इह चेद वेदीथ सत्यमस्ति, न
चेदिहावेदीन्महती विनष्टि।
भूतेषू भूतेषु विचित्य धीरा
प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति।।

अर्थात इस मनुष्य शरीर ने परमात्मा को जान लिया तब तो बहुत कुशल है यदि न जान पाया तो महान विनाश है। यही सोचकर बुद्धिमान पुरुष प्राणि मात्र ब्रह्म को समझकर इस लोक से प्रयाण करके अमर हो जाते हैं। वेद भी कहता है। **ओ क्रतो स्मर कृतस्मर।।** *यजुर्वे अ० ४० मन्त्र १७।।*

प्रिय पाठक गण हमे आशा है आप आत्मा का भोजन सत्सग को अवश्य करेगे। हमारी सरकार भी इस ओर ध्यान देती तो भारत वर्ष पुन विश्वगुरु के पद को प्राप्त हो सकता है। महात्मा गाधी ने कहा था धर्म के बिना राजनीति अपग है लोकसभा व विधान सभा में धार्मिक पहले जाते तो देश मे अखण्डता एकता चन्द क्षणो मे आ जाती क्योकि धर्म जोडता है तोडता नहीं तथा खर पतवार को उखाड फेकता है। राजा अश्वघोष राजा जनक राजा हरिश्चन्द्र राजा राम योगेश्वर कृष्ण ये सभी प्रत्येक दिन राजकाज मे कदम रखने से पूर्व सध्या सत्सग स्वाध्याय से आत्मा की भूख मिटा कर तृप्त होते थे तब प्रजा को तृप्त करते क्या ही अच्छा होता हमारी सरकार देश के सिनेमा उद्योग को समाप्त करके सिनेमा घर को सत्सग भवन घोषित करती। इन सिनेमा घरो मे एक दिन मे ३ विद्वानो के उपदेश ३ ३ घटे के कराकर भारतीय सस्कृति सभ्यता को जागृत करती। इससे धन और यश दोनो प्राप्त होते। शरीर और आत्मा दोनो की भूख शात होती।

धन दारा सुत लक्ष्मी पापी के भी होय।
साधू सगति प्रभू भजन, बन्दे विरले होय।।

प्रभु भक्ती आश्रम देवपुरी
अजगैवा जगल बस्ती उ०प्र०

स्वदेशी, संस्कृति और स्वभाषा

पृष्ठ ६ का शेष

कृपया ध्यान दे–साहित्य की अभिव्यक्ति भाषाओ के माध्यम स ही होती है अग्रेजी के माध्यम से नहीं। अग्रेजी सस्कृति अपहारक है जिसका मेकाले द्वारा घोषित उद्दश्य ही था कि रग रूप से तो नही आचार विचार से भारतीय अवश्य अग्रेज बन जाए यानी भारत फिर भारत ही न रहने पाए वह शाही ताज के नीचे पलते फिरगी पेट मे हजम हो जाए। यह बीती सदियो का दुर्भाग्यपूर्ण ऐतिहासिक तथ्य है कि पवित्र वैदिक सहिताए जो सत्य ज्ञान से परिपूर्ण आदि साहित्य है अग्रेजी मे भ्रष्ट और गलत सलत अनुवाद के रूप मे ही सारे ससार में बिखेरी गई हैं।

आज समस्या अग्रजो की नहीं अग्रेजी को भगाने की है भारतीयता को अपसस्कृति की बाढ मे डूबने से बचाने की है। महात्मा गाधी के स्वदेशी प्रचार की सफलता का कारण यही था कि तब देश मे अग्रेजी की सनक नही पैदा हुई थी। स्वदेशी के वर्तमान प्रचारको को भली भाति समझ लेना चाहिए कि बिना अग्रेजी हटाए स्वदेशी की बात लोगो के दिलो दिमाग तक पहुच नही सकती। यह दलील कि स्वदेशी का भाषा से क्या लेना देना सर्वथा थोथी है भ्रामक है और जड छोड पत्ते सींचने की व्यर्थता ही सार्थक करती है। इसलिए हमारा कर्त्तव्य है कि हम जडों को ही सींचे भारतीय भाषाओ को ही प्रतिष्ठित करे और जड काटने वाली अग्रेजी को अविलम्ब उखाड फैंके। फिर तो सस्कृति का वृक्ष भी लहलहा उठेगा और स्वेदसी के मीठे फल भी स्वत लगने लगेंगे।

बी १५४, लोक विहार,
पीतमपुरा, दिल्ली-११००३४

अनुपम कहानियां

सच का फल - उपनिषद् कथायें

पृष्ठ ४०
मूल्य ८ रु०
सकलन इन्दिरा गुप्ता

उपनिषदो से चयन किये गये कथानक रोचक ढग से प्रस्तुत हैं। सच का फल" सत्य काम जावाला का प्रेरक प्रसग बटवारा मे कात्यायनी मैत्रैयी से याज्ञवल्क्य से बटवारा क्या है ? लौटा बेटा में नचिकेतो पाख्यान सुन्दर बना है। जनश्रुति रेक्व गाडीवान प्रसग छान्दोग्य से औपमन्य व सत्य यज्ञ–पाच पुत्र थे जो उद्दालक ऋषि से अश्वापति आख्यान रोचक हैं। साथ ही "कौन बडा" इन्द्रिया तथा प्राण अपनी श्रेष्ठता का बखान द–का महत्त्व दया दान दयान् का रहस्य इस प्रकार पन्द्रह कथानक उपनिषदो से लेकर सुन्दर सग्रह प्रकाशित कर आवाल वृद्धो के लिए शिक्षा प्रद बनाया है। सकलन जनता के समक्ष है – पढे – शिक्षाप्रद तो है ही ।

प्रकाशक बधाई के पात्र हैं।

– डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री

"आनन्द के स्रोत" नैतिक जागरण

पृष्ठ ३२
मूल्य १० रु०
लेखक श्यामचन्द्र कपूर
सस्कार प्रकाशन
नई सडक दिल्ली

नैतिक जीवन की पद्धति कैसी हो यह ही बताना मानवता दिव्यता आदि मे एक ही भाव प्रवाहित है। मानव मन मे सद्विचार जगे और मानव के सोते भावो को जगाये यही लक्ष्य है नैतिक जागरण का।

आनन्द का श्रोत वहे अनुग्रह के पद्य पढे तो सुभद्रा कुमारी के भाव चरणो मे अर्पित है यह मन चाहो तो स्वीकार करो मनो मे श्रद्धा देती है कि माता पिता की सेवा मे श्रवण कुमार की सेवा से तृप्ति। मनुष्यता क्या है दु ख मे दुखी समानता निन्दा से दूर समय का उपयोग सादा जीवन आत्म विश्वास के भाव जागरण के तत्व हैं।

एकाग्रता की कथा द्रोण ने चिडिया की आख पर दृष्टिपात ही लक्ष्य है 'ईश्वर एक है अब्राहम का उदाहरण दिया पर हमारी ऋषि परमात्मा ही ईश्वर प्रदत्त है। ईश्वरीय सत्ता का सन्देश ही नैतिकता का सच्चा पाठ है। यही मानवता है। यह पाठ की राशि माला जब हमारे मनो मे उतरेगी तो यह उपहार सर्वोत्तम मानी जायेगी।

डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री

"जीने का सही ढंग" – प्रेरक कथाये

पृष्ठ ३२
मूल्य ८ रु०
लेखक डॉ० मनोहर लाल

कथानक की दृष्टि से पचतन्त्र की भाति कहानियो का आकलन कर शिक्षाप्रद बनाया है। बोधगम्य सरल कथाये नैतिक शिक्षा की सीढी होती हैं जिसे जीवन मे ऊपर चढने की सीढी कहत हैं।

अन्धा और लगडा कथानक से हर किसी का भला सोचो ज्ञान कर्म का प्रतीक है। गुरुशिष्य राजा रक सन्त असन्त पशु पक्षी फूल की सुगन्ध भिखारी की भीख से पाया प्रभु बडा दाता है उसी से मागो ऐसे रोचक प्रसग प्रस्तुत कर जीने की कला का सुन्दर आकलन किया है। इनसे पाठक सनुष्ट होगें तभी प्रकाशक का मनोबल भी बढेगा।

डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री

नैतिक जागरण का द्वितीय पुष्प

सच्चा–सुख

पृष्ठ ३०
मूल्य १० रु०
लेखक श्यामचन्द्र कपूर
सस्कार प्रकाशन नई सडक दिल्ली

सच्चा सुख" नैतिक जागरण का दूसरा पुष्प है गुलदस्ते मे यदि प्रथम पुष्प आनन्द का स्रोत है तो यह सच्चा सुख आनन्द से ही प्राप्त है विश्व मानव बने। छल कपट द्वेष विरोध दूर करके सरस जीवन जीने की कला ही सच्चा सुख है परस्पर प्रेम ऊच नीच भाव से दूर रहे। सत्य धर्म निर्भीकता विवेक सयम विनम्र भाव आदि गुण प्राप्त करके स्वय सुखी हो और दूसरो को भी सुखी बनावे। अनैतिकता भ्रष्टाचार को बढावा न देकर नैतिक शिक्षा से हमे जीवन मे नयी रोशनी दे सकते हैं इस वाटिका मे खिले फूल

चरित्र बल प्रतिभाशाली क्षमावान की परख शिष्टाचार सत्यवद हसो खूब तब ही सच्चा सुख मिलेगा।

आनन्द श्रोत वह रहा पर तू उदास है
अचरज है जल मे रह के भी मछली को प्यास है

शेष चार पुस्तके आगामी अक में पढ़ें।

– डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री

अग्रेजी माध्यम के स्कूलो पर रोक

तिरुवनन्तपुरम केरल हिन्दी प्रचार सभा मे हाल ही मे राज्यस्तरीय हिन्दी सप्ताह समापन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन करते हुए शिक्षा मत्री श्री पी० जे० जोसफ ने कहा कि यूरोप मे अग्रेजी का स्थान अब धीरे धीरे जर्मन भाषा ले रही है। शिक्षा मत्री ने कहा कि प्राइमरी स्तर के विषय मातृभाषा मे ही पढाये जाने चाहिए। केरल सरकार अब कोई नए अग्रेजी माध्यम प्राइमरी स्कूल प्रारम्भ करने की अनुमति नहीं देगी।

राष्ट्रभाषा नवम्बर १६६६

शाहपुरा में सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज शाहपुरा के सान्निध्य मे श्री रामकृष्ण जी छाता के गृह पर दिनाक २८ १० ६६ से दिनाक १-११ ६६ तक पच दिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ वेद विद्वान प० वेद प्रिय जी शास्त्री सीताबाडी (बारा) के आचार्यत्व मे प्रात ८ से ११ बजे तक सुसम्पन्न हुआ। मुख्य यजमान श्री रामकृष्ण जी दाता सपत्नीक ही थे और उनके साथ उनके पारिवारिक जन (पुत्र व बधुए) भी यज्ञ मे बैठे। यज्ञोपरान्त प्रतदिन पडित जी का वेदोपदेश होता रहा। इसमे पडौसीजन आर्यसभासद गण धर्म प्रेमी जन एव पारिवारिक जन सम्मलित हुए। यज्ञ वेदी व मण्डप को सुन्दर रूप मैं सजाया गया। दिनाक १-११-६६ को पूर्णाहुति का कार्यक्रम विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा। इसका कारण इसके साथ जुडा सम्मान समारोह था। यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् पडित जी का प्रभावशाली प्रवचन हुआ। मुख्य यजमान को आशीर्वाद देते हुए परमपिता परमात्मा से उनके परिवार की मगलकामना की। सम्मान समारोह की अध्यक्षता श्रीमान लक्ष्मीदत्त जी काटिया (स्वतन्त्रता सैनानी) ने की। विशेष अतिथि के रूप मे श्रीमान राजकिशोर जी मोदी अध्यक्ष जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा भीलवाडा तथा रामकृष्ण जी के पूज्य गुरुवर सच्चे मार्गदर्शक व हितैषी श्री बशीधर जी वैष्णव (धाकडखेडी)भी पधारे।

हीरालाल आर्य
उपमत्री

दक्षिण में अंग्रेजी विरोध

तमिलनाडु की जनता मे पहली बार यह तीव्र बोध जगा है कि तमिल भाषा के अस्तित्व की रक्षा के लिए अग्रेजी को हटाना जरूरी है। अब तक तमिलनाडु की जनता को वहा के राजनेताओ ने यह कहकर बरगलाया है कि तमिल भाषा के विकास मे सबसे बडी बाधा हिदी है और हिदी को काटने के लिए अग्रेजी को बनाए रखना जरूरी है। मलयालम कन्नड और तेलुगु भाषाओ के विद्वानो ने अपनी भाषाओ के विकास मे अग्रेजी के वर्चस्व को बाधक तत्व के रूप मे काफी समय पहले देख लिया था और उन्होने अपनी भाषाओ को मजबूत करने के लिए जो आदोलन चलाए उनमे हिन्दी का विरोध नहीं अग्रेजी का विरोध मुख्य था।

कर्नाटक मे शिक्षा और प्रशासन मे अग्रेजी को विस्थापित कर कन्नड को लाने का जबर्दस्त आदोलन लम्बे समय से चलता रहा है। यही स्थिति आध्र प्रदेश मे है। अहिन्दी भाषियो पर हिंदी थोपे जाने के भय को अब अधिकतर अग्रेजी की वकालत करनेवाले ही भुना रहे है। आम जनता समझती है कि लडाई हिंदी बनाम भारतीय भाषाओ की नहीं अग्रेजी बनाम भारतीय भाषाओ की है।

जगन्नाथ

इन्द्रदेव आर्य का अपहरण

आर्य जगत को सूचित किया जाता है कि प० नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक ग्राम बहीन जिला फरीदाबाद (हरियाणा) के पुत्र श्री इन्द्रदेव आर्य आयु १८ वर्ष का ग्राम (बहीन) से दिनाक २४ १० ६६ को अपहरण कर लिया गया है।

विवरणानुसार श्री इन्द्रदेव आर्य लगभग एक बजे जगल में ट्यूबवैल पर कपडे साफ करने जा रहे थे। उसके बाद वे घर नही लौटे चार वर्ष पूर्व प० नन्दलाल निर्भय के भी अपहरण करने का प्रयास किया गया था।

इन्द्रदेव का गोल चेहरा रग भूरा कद लगभग ५ फुट ४ इच है। उसकी सूचना देने वाले को इनाम दिया जाएगा

ब्रह्मदेव आर्य
ग्राम बहीन
जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

सुख का मार्ग

ससार मे कौन सा ऐसा प्राणी है जो सुख नहीं चाहता ? चाहे वह पशु है पक्षी है या इन्सान है। छोटी सी चींटी से लेकर हाथी तक सभी सुख की ओर भागते हैं। इनमे मनुष्य अधिक बुद्धिमान होने के कारण रात दिन सुख सामग्री जुटाने में लगा हुआ है।

सुख कई प्रकार के होते हैं। हमारे पूर्वजो का कहना है। कि सब से पहला सुख है 'निरोगी काया दूसरा सुख है घर मे माया इत्यादि। यह सभी भौतिक सुख हैं जो क्षण भगुर है। इन सब से ऊपर एक और सुख है जिसे अध्यात्मिक सुख कहते हैं जो शाश्वत है अर्थात सदैव बना रहता है बशर्ते इसे एक बार प्राप्त कर लो। इसके प्राप्त हो जाने पर अन्य सुख आप ही आप सुलभ हो जाते हैं।

यह शाश्वत सुख कैसे मिलेगा ? इसको प्राप्त करना आसान भी है और मुश्किल भी है। आसान तो इसलिए है कि इसे प्राप्त करने के लिए कहीं भाग दौड नहीं करनी पडती कोई पैसा खर्च नहीं करना पडता कोई विशेष परिश्रम भी नहीं करना पडता। कठिन इसलिये है कि मन और इन्द्रियो को सयम मे रख कर नियन्त्रण करना पडता है।

यह मन बडा चचल है। सम्भालते–सम्भालते फिसल जाता है जरासी देर मे ही बेईमान हो जाता है। इन्द्रयो को भडकाता है। जीभ से कहता है गुलाब जामुन खायेगी दही भल्ले बडे स्वादिष्ट हैं। इसी प्रकार आख कान नाक को विषय वासना मे फसाने के लिए उकसाता है। मनुष्य मन के वशीभूत होकर इतने खोटे कर्म कर देता है जिन्हे बताने मे भी लज्जा आती है। आप प्रतिदिन समाचार पत्रो मे बलात्कार के केस पढते हैं। मनुष्य अपने आचरण से इतना गिर गया है कि पशु भी ऐसा नहीं करता। इसका कारण है तामसिक भोजन मनुष्य ने अपना शाकाहारी भोजन छोडकर मीट मछली अण्डे इत्यादि पाश्विक भोजन खाना आरम्भ कर दिया है। जैसा भोजन खायेगा वैसे ही मन मे विचार उत्पन्न होगे और मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही बनने की चेष्टा करता है। विचार ही मनुष्य को उठाते हैं और गिराते हैं।

आज मानवता समाप्त होती जा रही है। चारो ओर दानवता का बोलबाला है। यही कारण है कि समय पर वर्षा नही होती जब होती है तो विनाश करती है और भी अनेक प्रकार की प्राकृतिक विपदाए सताती है।

सत्यार्थ प्रकाश मे स्वामी दयानन्द जी ने लिखा है कि मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु फल भोगने मे परतन्त्र है अर्थात ईश्वराधीन है। परमपिता परमात्मा का न्याय चक्र चल रहा है। जैसे कोई कर्म करेगा उसके अनुसार ही फल भोगना पडेगा। यह अटल नियम है।

वेद का सन्देश है मनुर्भव अर्थात मनुष्य बन। सुख से रहने के लिये खोटे कर्म छोडकर श्रेष्ठ कर्म करने चाहिये। यह भी एक प्राकृतिक नियम है यदि आप सुखी रहना चाहते हो तो दूसरो को भी सुखी देखना पसन्द करो अर्थात किसी से ईर्ष्या द्वेष मत करो। जितना हो सके दीन दुखी की सेवा करो।

विद्वानो का कथन है 'मनुष्य पुरुषार्थ से शिव बन जाता है और प्रमाद से शव हो जाता है। आलस्य को त्याग कर प्रात काल सूर्य उदय होने से एक घन्टा पूर्व उठ जाओ। ईश्वर को याद करो। मुझे एक भजन की निम्न पक्तिया याद आ रही हैं –

भगवान भजन करने के लिये जो प्रात काल उठ जाता है।
आनन्द की वर्षा होती है दुनिया मे वह सुख पाता है।।

यही सुख का मार्ग है इस पर कुछ दिन चल करके देखो। मेरा अनुभव है आपकी सभी समस्याए हल होती चली जायेगी और जीवन मे आनन्द आने लगेगा।

देवराज आर्यमित्र
आर्यसमाज
बल्लभगढ जि० फरीदाबाद

ऋषि निर्वाण दिवस समारोह पूर्वक सम्पन्न

वीरोखाल (पौडी गढवाल) दि० १० ११ ६६ आज आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी द्वारा स्यूजी नगर मे ऋषि निर्वाण दिवस समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

सर्व प्रथम वृहद् यज्ञ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमे यज्ञमानो ने भाग लिया तथा श्रद्धा पूर्वक यज्ञ कार्य को सम्पन्न किया।

तत्पश्चात यज्ञ प्रार्थना सदबुद्धि की प्रार्थना की गई और यज्ञमानो को आर्शीवाद दिया गया।

वृहद यज्ञ कार्यक्रम के पश्चात आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी के अध्यक्ष श्री हेमोराज की अध्यक्षता मे एक सभा का आयोजन किया गया। जिसमें निम्न वक्ताओ ने अपने विचार व्यक्त किये –

सभा का शुभारम्भ भजनोपदेशक श्री वच्चीराम जी आर्य के भजन देश को स्वामी दयानन्द मिल गये से किया गया। – (१) श्री काजूराम पथिक (२) श्री वासुदेव विमल पूर्व मत्री (३) श्री बालसिह अध्यापक (४) श्री चन्द्रमणी पूर्व प्रधान आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी (५) श्री भगतराम आर्य उपप्रधान आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी (६) श्री मणीलाल आर्य प्रचार मत्री आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी ने अपने विचार व्यक्त किये।

उपरोक्त समस्त वक्ताओ द्वारा ऋषि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा गया कि हमे उनके बताये मार्ग पर चलना है।

मच सचालन आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी के मत्री गगाप्रसाद सौम्य द्वारा किया गया। उन्होने ऋषि दयानन्द को युगपुरुष कहा तथा समस्त आर्य सभासदो को ऋषि के बताये मार्ग पर चलने हेतु निवेदन किया। साथ ही सभा को सम्पन्न करने वाले सभी व्यक्तियो का धन्यवाद किया।

अन्त मे अध्यक्षीय भाषण मे अध्यक्ष महोदय ने ऋषि के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे प्रेरणा के श्रोत है हमे उनके जीवन से प्रेरणा लेनी है। शान्तिपाठ के साथ सभा का विर्सजन हुआ।

गगाप्रसाद 'सौम्य'

मुस्लिम परिवार ने हिन्दू धर्म अपनाया

कानपुर आर्यसमाज गोविन्द नगर मे समाज व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदस आर्य ने ६ सदस्यो के एक मुस्लिम परिवार को उनकी इच्छानुसार शुद्धि सस्कार करके हिन्दू धर्म की दीक्षा दी। उससे दादी से लेकर दो पुत्रो एक बहू व दो पौत्रियो तीन पीढिया शामिल हैं।

श्री आर्य ने इनके नाम क्रमश सुमित्रा देवी बच्ची लाल राजकुमार श्रीमती गीता कु० लक्ष्मी व नीलू रखे तथा उनको प्रमाण पत्र एव धार्मिक पुस्तके भेंट की।

शुद्धि समारोह में श्रीमती सुमित्रा देवी ने बताया कि वह हिन्दू परिवार मे उत्पन्न हुई थी। युवा अवस्था मे गल्ती करके एक मुस्लिम युवक से विवाह कर लिया जिससे यह परिवार बना। आज श्री देवीदास आर्य की सहायता से अपनी भूल का सुधार कर रही हू। मैं कायस्थ परिवार की थी अब मैं पुन वही श्रीवास्तव बन रही हू। मुझे इस पर अति प्रसन्नता है।

समारोह के अन्त मे उनके हाथ से प्रसाद वितरण करवाया गया।

बाल गोविन्द आर्य मत्री
आर्यसमाज गोविन्द नगर, कानपुर ☆

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज सुदामा नगर इन्दौर

प्रधान	प्रो० ओ३म् प्रकाश आर्य
मत्री	प्रो० भवरसिह आर्य
कोषाध्यक्ष	श्री रामशरण भल्ला
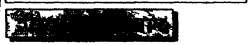
श्री प्रेमचन्द हाथी होलैण्ड मे दिवगत

३० अक्टूबर १६६६ को स्वर्गवास हुए ४६ वर्ष के आयु मे आप एक सच्चे आदर्श आर्य परिवार के थे शनीवार २ नवम्बर को अन्त्येष्टि क्रिया श्री डा० भवानी लाल भारतीय जी द्वारा सम्पन्न हुई १२ नवम्बर शनीवार के दिन। दिवगत प्रेमचन्द हाथी जी प० आर० किशुनदयाल जी के भतीजे थे। आप को कर्मानुसार सद्गति मिले।

श्री प० रुद्रदत्त किशुनदयाल की मृत्यु

आप किशुनदयाल के छोटा भाई थे जो एक वर्ष से बीमार थे और २ नवम्बर के रात्री ६ बजे इनकी मृत्यु हो गई। वे ६५ वर्ष की उमर के थे। श्री रुद्रदत्त ३० वर्ष से होलैण्ड मे थे। आप एक अच्छा भजनो के कलाकर थे आपने दो एल० पी० रेकार्ड १५ साल पूर्व बनाए। आप नाटक भी खेलते रहे होलैण्ड में आप वैदिक कर्मकाण्ड भी कराते रहे और अच्छा आर्य प्रचारक भी थे। १० वर्ष पहले आपने डच भाषा मे महाभारत ग्रथ को लिखा जो होलैण्ड और सूरीनाम के लोग पढे हैं। मृत्यु से एक सप्ताह पहले आपने बाल–शिक्षा नामक पुस्तक लिखी। हॉस्पीटल में जो डच या हिन्दी भाषा में अनेक चित्रों के साथ लिखा बाद मे प्रकाशित होगी। होलैण्ड के सभी आर्यसमाजों तथा परोपकारिणी सभा के तरफ से शोक सम्वेदना एव प्रचार मण्डल ने साथ दिया। इनका अन्त्येष्टि क्रिया में प० अवधबिहारी जी तथा भारत से उसी दिन होलैण्ड मे उतरे श्री प० धर्मेन्द्र शास्त्री जी आर्य ने ७ नवम्बर को अन्त्येष्टि क्रिया को सम्पन्न कराया तथा ग्रह परिशुद्धि भी हुई। मेरे भतीजे प्रेमचन्द हाथी और छोटे भाई श्री रुद्रदत्त जी की जीवन की कथा लम्बी है क्या कहे सुनकर जीवन एक पहेली बन गयी। आज वो हमारे बीच नहीं है श्रद्धा सुमन क्या दू तुम दोजो आर्य आदर्श थे जीने की कला भी सीखनी हो तो तुम से सीखे। आप को सदगति मिले और सभी परिजनो के दु ख का साथी हू, तुम गये बारी बारी हम भी आयेगे ही।

इस वियोग दु ख मे साथ देने वाले धन्यवाद के पात्र हैं।

पण्डित आर० किशुनदयाल (नीदरलैण्ड)

ईसाई युवती ने वैदिक धर्म को अपनाया

आर्य समाज मदिर भोजूबीर मे दिनाक १६ ११-६६ को ईसाई युवती सुश्री शीलामा पुत्री श्री एम०ओ० थोमस निवासी एरनाकुलम केरल ने वैदिक धर्म की दीक्षा लिया। यह कार्यक्रम डा० माधुरी रानी जी के आचार्यत्व मे सम्पादित हुआ। आचार्या जी ने नवदीक्षित युवती को वैदिक धर्म के प्रमुख सिद्धान्तो से अवगत कराया। दीक्षा के पश्चात युवती का नया नाम 'शीला आर्या' रखा गया।

तत्पश्चात सुश्री शीला आर्या का शुभ विवाह श्री पवन कुमार पुत्र श्री घमण्डी प्रसाद निवासी चिरईगाव के साथ सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर विशेष रूप से जिला सभा के मत्री श्री प्रमोद आर्य क्षेत्र के प्रतिष्ठित अस्थि विशेषज्ञ डा० आर० जे० सिह स्थानीय समाज के पदाधिकारी फ्रासीसी नागरिक सर्वसुश्री स्टेफोनिक मार्स्यू, एरिएना पेजयट इरिस कोबेल्ट तथा वर वधु के अभिभावकगण श्रीमती आर० जार्ज श्रीमती अर्चना दास ने वर वधु को शुभाशिर्वाद एव बधाई दिया।

रविप्रकाश मत्री ☆

ईसाई युवती की शुद्धि एवम् विवाह संस्कार

गुजरात के राजकोट नगर के आर्यसमाज कोठारिया मे १४ १० ६६ के दिन ईसाई युवती रेखा बहिन पकज भाई मेनन की शुद्धि सस्कार करके आर्य वैदिक धर्म मे परिवर्तित करके उसका लग्न सस्कार दीपक कुमार नापीलाल सानिया नामक हिन्दु युवक के साथ पूर्ण वैदिक पद्धति से सम्पन्न हुआ। ☆

वाराणसी के श्री नानक राम जी नहीं रहे

आर्यसमाज छावनी भोजूवीर के मुख्य स्तम्भ एव प्रधान श्री नानक राम जी आर्य जिज्ञासु का दि० २८ १०-६६ को ६० वर्ष की अवस्था मे स्वर्गवास हो गया। आप जिला सभा के भूतपूर्व प्रधान डी० ए० वी० कालेज वाराणसी की कार्यकारिणी के सदस्य एव क्षेत्र के प्रतिष्ठित एव सम्भ्रान्त नागरिक थे। आर्यसमाज भोजूवीर की प्रगति मे आप का सर्वाधिक योगदान रहा है। आप के निधन से आर्य समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

आर्यसमाज मन्दिर भोजूवीर मे दि० ३ ११-६६ को एक शोकसभा मे आप के द्वारा किये गये सेवाओ का स्मरण किया गया। अन्त मे परमपिता परमात्मा से दिवगत आत्मा की सद्गति एव शोक सतप्त परिवार व परिजनो के धैर्य हेतु प्रार्थना किया गया। विशेष सूचना दि० १८ से २० नवम्बर तक होने वाला उत्सव उसके कारण स्थगित कर दिया गया।

प्रमोद आर्य मत्री ☆

धर्मरक्षार्थ वेद प्रचार तथा धनुर्विद्या का प्रदर्शन

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा आजमगढ द्वारा पूरे जिले मे वेद प्रचार तथा धनुर्विद्या का प्रदर्शन दिनाक २१ नवम्बर से १५ दिसम्बर १६६६ तक रखा गया है इस अवसर पर परमपूज्य स्वामी केवलानन्द जी सरस्वती तथा पडित नेमप्रकाश आर्य (आधुनिक अर्जुन) लखनऊ पधार रहे हैं।

कार्यक्रम २१ नवम्बर को आर्यसमाज आजमगढ के क्षेत्र सिधारी मे २२ व २३ नवम्बर आर्यसमाज अतरौलिया मे २४ से २८ नवम्बर तक जिले से बाहर २६ व ३० नवम्बर आर्यसमाज मुबारकपुर १ व २ दिसम्बर आर्यसमाज मेहनगर ३ व ४ दिसम्बर आर्यसमाज लालगज ५ व ६ दिसम्बर आर्य समाज देवगाव ७ व ८ दिसम्बर आर्यसमाज ठेकमा ६ व १० दिसम्बर आर्यसमाज निजामाबाद ११ दिसम्बर आर्यसमाज पुष्पनगर १२ व १३ दिसम्बर आर्यसमाज फूलपुर १४ व १५ दिसम्बर आर्यसमाज रानी की सराय मे वेद प्रचार का कार्यक्रम रखा गया है।

अत जिले की सभी आर्यसमाजो से तथा धर्म प्रेमी जनता से अपील है कि उक्त सभी कार्यक्रम मे भाग लेकर धर्म लाभ उठावे। कार्यक्रम प्रात यज्ञ भजन उपदेश दोपहर नये क्षेत्रो मे वेद प्रचार साय भजन उपदेश तथा धुनर्विद्या का प्रदर्शन होगा। कार्यक्रम के सयोजक स्वामी आत्मानन्द जी है।

राजीव कुमार आर्य उपमत्री
जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा आजमगढ ☆

बाबू श्री अमर नाथ सिह नहीं रहे

श्री अमरनाथ सिह जी के स्वर्गवास का समाचार सुनकर हम सभी अत्यन्त दु खी हैं। परिवार की इस दु ख की घडी मे हमलोग सम्मिलित है। आपके दिवगत हो जाने से आर्यसमाज ने एक निष्ठावान तथा वृद्ध आर्य को खो दिया। आर्यसमाज क प्रति निष्ठा की भावना इनके परिवार मे पूरी तरह विद्यमान है।

स्व० बाबू जी के जीवन मे स्वाध्याय का विशेष महत्व रहा है। आप प्राय आर्यसमाज की वर्तमान दशा के प्रति चिन्ता व्यक्त किया करते थे। आर्यसमाज की दशा महर्षि दयानन्द के बताये चिन्हो से भटक न जाये इसके बारे मे आप मिलने जुलने वालो से एव आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ को बराबर अगाह किया करते थे। उनका कहना था कि आर्यसमाज एक बौद्धिक सस्था है इसलिए वे स्वाध्याय के प्रति भी प्रेरित किया करते थे।

जिला सभा की बैठक दिनाक १२ ११-६६को आर्यसमाज आनन्द बाग दुर्गाकुण्ड मे श्री शकर लाल पोद्दार की अध्यक्षता मे अन्तरग सभा की बैठक हुई जिसमे स्व० बाबू जी के स्वर्गवास पर गहरा शोक प्रकट किया गया तथा उनके व्यक्तित्व की चर्चा की गयी।

अन्त मे दिवगत आत्मा को शान्ति एव सदगति प्राप्त हो जाने तथा शोक सतप्त परिवार के धैर्य हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना किया गया।

प्रमोद आर्य मत्री ☆

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 1 12 96 बिना टिकट भेजने का लाइसेस न० U(C) 93/96
R N No 626/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No. U(C)93/96 Post in NDPSO on 28/29 11 1996

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बोडिया कमालपुर जिला रिवाडी (हरियाण) का वार्षिकोत्सव तिथि ६ १० नवम्बर १६६६ को बडी धूमधाम एव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

शनिवार रविवार दोनो दिन देव यज्ञ (हवन) किया गया जिसमे एक नवयुवक ने धूम्रपान न करने का व्रत लिया।

इस अवसर पर पाखण्ड खण्डन स्त्री शिक्षा महर्षि का मानवता पर उपकार राष्ट्ररक्षा गऊ रक्षा हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाओ सम्मेलनो का आयोजन किया गया। जिनकी अध्यक्षता श्री हीरा लाल आर्य प्रधान आर्य समाज बोडिया कमालपुर ने की। श्री भागीरथ आर्य का भारी योगदान रहा।

इस उत्सव मे आर्य जगत के प्रसिद्ध कवि प० नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक ग्राम बहीन जिला फरीदाबाद (हरियाणा) श्री धर्मपाल आर्य जगमल हड्डी जिला अलवर (राजस्थान) श्री रण धीर सगीतकार नूरगढ (रिवाडी) ने अपने विचारो से श्रोताओ को उपकृत किया। स्थानीय जनता ने उपदेशको की भारी सराहना की।

रामसिह आर्य मत्री ☆

विशाल शोभायात्रा तथा श्रद्धाञ्जलि सभा

२३ दिसम्बर १६६६ सोमवार को शुद्धि आन्दोलन के प्रवर्तक गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार सस्थापक वीर क्रान्तिकारी स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के ७०वें बलिदान दिवस पर विशाल शोभायात्रा तथा श्रद्धाजलि सभा का आयोजन होगा।

विभिन्न धार्मिक सामाजिक तथा शैक्षि[illegible] प्रतिष्ठाना के अतिरिक्त मूधर्न्य आर्य नेता विद्वान प० रामचन्द्र वन्देमातरम जस्टिस महावीर[illegible] श्री सूर्यदेव प० हरवशलाल शर्मा महाशय धर्मपा[illegible] जी प० प्रकाशवीर विद्यालकार डा० सच्चिदानन्द शास्त्री श्री राममेहर आदि कार्यक्रमो मे उपस्थित रह कर मार्ग दर्शन करेगे।

कुलपति डा० धर्मपाल सहायक मुख्याधिष्ठाता महेन्द्रकुमार कुलसचिव डा० श्याम नारायण व्यवसावाध्यक्ष डा० राजकुमार रावत तथा मुख्या ध्यापक डा० दीनानाथ ने कार्यक्रमो मे भाग लेने की अपील की है।

महेन्द्र कुमार
सहायक मुख्याधिष्ठाता ☆

लाला लाजपतराय का बलिदान दिवस मनाया

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार (गु[illegible] बाजार) लुधियाना मे महान स्वतन्त्रता स[illegible] पजाब केसरी लाला लाजपतराय का ब[illegible] दिवस श्री मतवाल चन्द आर्य की अध्यक्ष[illegible] मनाया गया। समारोह का आरम्भ यज्ञ के[illegible] हुआ जिसकी अग्नि श्री जितेन्द्र कुमार था[illegible] प्रज्वलित की और प० सुरेन्द्र कुमार शास्त्री [illegible] यज्ञ सम्पन्न कराया। समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री रोशन लाल आर्य प्रधान आर्य युवक सभा पजाब ने कहा कि लाला लाजपत राय ने आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के देश को स्वतन्त्र कराने के आह्वान का अनुसरण करते हुए अपने प्राणो की आहुति दे दी।

अखिल भारतीय स्वतन्त्रता सेनानी दल कि स्वतन्त्रता सेनानीयों में लाला जी का नाम अग्रणी है। उन्होने देश के आजाद होने की भविष्यवाणी अपने जीवन काल मे ही कर दी थी जो सत्य साबित हुई।

आर्यसमाज सागरपुर नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आपको जानकर अति प्रसन्नता होगी कि ईश्वर की असीम कृपा और आप सभी के सहयोग से आर्यसमाज सागरपुर अपना ११वा वार्षिकोत्सव २६ ३० नवम्बर व १ दिसम्बर १६६६ को धूम धाम के साथ मना रहा है। इस पावन अवसर पर त्यागमूर्ति सन्यासी महात्मा वैदिक विद्वान विदूषी व उच्चकोटि के आर्य भजनोपदेशक एव राजनेता पहुँच रहे हैं। मुख्य अतिथि के रूप म श्री साहब सिह वर्मा (मुख्यमत्री दिल्ली सरकार) श्री विनोद कुमार शर्मा श्री कृष्ण लाल शमा श्री पवन कुमार शर्मा श्री कर्ण सिह तवर समारोह मे पधार रहे हैं। अत आप सभी धर्मप्रेमी सज्जनो से अनुरोध [illegible] इस पवित्र कार्यक्रम मे सपरिवार व ईष्ट मित्रो सहित पधार कर धर्मलाभ उठावे। तथा समाज मे फैली कुरीतियो के उन्मूलन वैदिक सस्कृतिक के प्रचार प्रसार एव ऋषियो की भूमि पर महर्षि दयानन्द सरस्वती श्री राम व श्री कृष्ण जी के आदेशो के प्रसार मे अपना सहयोग देने की कृपा करे।

प्रतिदिन प्रात ७ ३० से १० ०० बजे तक विशेष यज्ञ तथा प्रवचन तथा दोपहर एव साय को भी प्रवचन एव भजनोपदेश होगे। ☆

महर्षि दयानन्द ने वेदों की ओर चलने की प्रेरणा दी

दयानन्द निर्वाण दिवस पर समारोह

कानपुर आर्य कन्या इण्टर कालेज गोविन्द नगर के तत्वावधान मे दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह कालेज के सस्थापक व प्रबन्धक श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता में मनाया गया।

समारोह के प्रारम्भ मे चार हजार से अधिक छात्राओ ने वेद मन्त्रो का उच्चारण कर तथा विभिन्न गीत सगीत और भाषणो से महर्षि को श्रद्धाजलि भेट की।

तत्पश्चात श्री देवीदास आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द की दीवाली के दिन सन १८८३ ई० मे निर्वाण हुआ था। उन्होने वेदो की ओर चलो की प्रेरणा दी और जीवन पर्यन्त धर्म व स्वतन्त्रता प्राप्ति क लिये आन्दोलन करते रहे।

श्री आर्य ने बताया कि ससार के लोग वेदो को भूल गये थे तब दयानन्द ने जर्मनी से वेद मगाकर दक्षिण भारत के उन पण्डितो जिन्होने केवल वेद कण्ठस्थ कर रखे थे की सहायता से वेदो को प्रमाणित किया था। उन्होन ससार को बताया कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है उसमे ज्ञान विज्ञान आदि की सभी विद्याये हैं उनको अपनाना चाहिये।

समारोह मे श्री आर्य के अतिरिक्त सर्व श्री बाल गोविन्द आर्य श्रीमती सरोज अवस्थी श्रीमती चाद चावला आदि ने भी महर्षि दयानन्द के जीवन पर आधारित प्रेरणा दायक व्याख्यान दिये। सचालन श्रीमती राजजीत पाल ने की। ☆

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली–2 से प्रकाशित

दूरभाष ३२७४७७१, ३२६०९८५ आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये वार्षिक शुल्क ५० रुपए एक प्रति १ रुपया
वर्ष ३५ अंक ४४ दयानन्दाब्द १७२ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ सम्वत् २०५३ मा०शी०शु० ५ १५ दिसम्बर १९९६

स्वतन्त्रता की ५०वीं वर्षगांठ का शुभारम्भ २१-२२ दिसम्बर को मथुरा से

विशाल शोभा यात्रा एवं स्वतन्त्रता ज्योति मथुरा से दिल्ली की ओर

नई दिल्ली ८ दिसम्बर। भारतीय स्वतंत्रता की यात्रा १९९७ मे ५० वर्ष पूरे कर लेगी। इस वर्ष को भारतीय स्वतंत्रता की स्वर्ण जयती समारोह के रूप मे मनाया जायेगा। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अतरग बैठक मे यह निर्णय लिया गया कि आगामी वर्ष को क्राति वर्ष के रूप मे मनाने की शुरूआत मथुरा मे एक भव्य समारोह के रूप मे की जाये। यह समारोह २१ २२ दिसम्बर ९६ (शनिवार रविवार) को मनाने का निश्चय किया गया है।

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वतंत्रता के प्रथम उद्घोषक थे। १८५७ मे स्वामी दयानन्द जी ने स्वतंत्रता सेनानियों को एक सूत्र मे पिरोने का जो कार्य गुप्त रूप से किया था वह एक ऐतिहासिक तथ्य होने के वावजूद भी वर्तमान पीढी को भली भाति अवगत नहीं कराया गया। १८७३ मे महर्षि दयानन्द ने स्वराज्य शब्द का उद्घोष सत्यार्थ प्रकाश मे सर्वप्रथम किया। महर्षि दयानन्द का कहना था कि **"कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है"**। १८७५ मे आर्यसमाज की स्थापना के बाद समूचा भारत इस तथ्य से भली भाति अवगत था कि आर्यसमाज देशभक्तों और प्राचीन सस्कृति के प्रेमियों की एक टोली है। उसी आर्यसमाज ने अंग्रेजो के विरुद्ध जब जगह-जगह मोर्चा लेना शुरू किया तो उसके बाद १८८५ में अंग्रेजो की पहल पर एक अंग्रेज ए०ओ०ह्यूम के द्वारा कांग्रेस की स्थापना की गई। जिससे लोगो का ध्यान आर्यसमाज रूपी देशभक्ति आदोलन से विमुख किया जा सके। परन्तु कालचक्र ने कुछ ऐसी करवट ली कि असख्य आर्यसमाजी नेताओं द्वारा काग्रेस में शामिल होकर काग्रेस को भी स्वतंत्रता प्राप्ति के मार्ग पर लाने के लिए वाध्य किया गया। इन्हीं आर्यसमाजी काग्रेस सदस्यो के द्वारा स्वतंत्रता की लड़ाई को गति मिली। काग्रेस के इतिहासकार स्वय इस बात को स्वीकार करते हैं कि काग्रेस के स्वतंत्रता आदोलन मे जितने भी लोग जेलो मे गये उनमे ८० प्रतिशत आर्यसमाजी थे।

स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद आज हमारा भारत देश ५० वर्ष की यात्रा पूरी कर चुका है। इस यात्रा ने स्वतंत्रता सेनानियों के कितने सपनो को साकार किया गया ? महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जिस स्वतंत्र भारत की कल्पना करते हुए स्वराज्य का आह्वान किया था क्या आज का भारत उस कल्पना में खरा उतरता है ? यह एक विचारणीय विषय है। इन्हीं विचारो और प्रेरणा को पुन भारत की जनता तक पहुचाने के उद्देश्य से आर्यसमाज द्वारा आगामी वर्ष को क्रान्ति वर्ष के रूप मे मनाने का आह्वान किया गया है।

अतरग बैठक मे अपने अध्यक्षीय समापन भाषण के दौरान सभा प्रधान श्री वन्देमातरम् जी ने कहा कि क्रान्ति वर्ष के दौरान भारत की जनता मे यह पूर्ण रूपेण प्रचारित किया जाना चाहिए कि स्वतंत्रता सेनानियो के सपनो का भारत क्या था। श्री वन्देमातरम ने कहा कि आज की राजनीतिक परिस्थितिया देश की एकता और अखण्डता के लिए बहुत घातक सिद्ध होगी क्योंकि आज प्रत्येक प्रान्त के नेता एक बार फिर स्वायत्तता की माग करने लगे हैं। उत्तर में कश्मीर या पजाब पूर्व मे आसाम नागालैण्ड मेघालय तथा मिजोरम और दक्षिण में तमिलनाडु और आन्ध्र प्रदेश जैसे समस्त प्रान्तो से स्वायत्तता की आवाजे सुनने को मिल रही हैं। आन्ध्र प्रदेश का मुख्य मंत्री तो स्वतंत्रता के ५० वर्ष बाद भी पुन उन्हीं बातो को दोहराने लगा है जिनके आधार पर हैदराबाद का तत्कालीन निजाम मीर उस्मान अली खा अपना राज्य चलाना चाहता था और उन्हीं बातो के विरुद्ध आर्यसमाज ने उसके विरुद्ध मोर्चा लिया था।

श्री वन्देमातरम् जी ने कहा कि यदि ऐसी आवाजो को न दबाया गया तो देश का विभाजन किसी भी कीमत पर टाला नहीं जा सकेगा। उन्होने कहा कि भारत की एकता को सबसे बडा खतरा आज भारतीय सविधान से है। आर्यसमाज राजनीति मे भाग ले या न ले परन्तु यह अत्यन्त आवश्यक है कि आर्यसमाज को एक ताकतवर सामाजिक शक्ति के रूप मे अपने सगठन में ऐसी चेतना लानी पडेगी जिसस विघटनकारी तत्वो को कुचला जा सके।

इन भावनाओ के साथ अतरग बैठक के पश्चात सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे २१-२२ दिसम्बर के समारोह का कार्यक्रम निश्चित किया गया। मथुरा से मेजर धर्मेन्द्र सक्सेना श्री कृष्ण गोपाल जी श्री (डॉ०) अरोडा जी आदि सहित कई आर्य नेता एव सन्यासी पधारे थे। २१ दिसम्बर को प्रात ८.०० बजे महायज्ञ के साथ स्वतन्त्रता की स्वर्ण जयन्ती का शुभारम्भ होगा। उसी दिन दोपहर १२ बजे से एक विशाल शोभायात्रा मथुरा शहर के विभिन्न क्षेत्रो से होती हुई वेद मन्दिर पर पहुचेगी। सायकालीन सत्र मे 'स्वतन्त्रता का प्रथम उद्घोष तथा २२ दिसम्बर को प्रातः १० बजे 'स्वतन्त्रता के ५० वर्ष' नामक सम्मेलनो का आयोजन किया गया है।

२२ दिसम्बर को महायज्ञ की 'स्वाधीनता ज्योति अर्थात यज्ञ रूप अग्नि तथा विचारात्मक अग्नि मथुरा से छाता, कोसी होडल महर्षि दयानन्द स्मारक केन्द्र वनचारी पलवल बल्लभगढ तथा फरीदाबाद होती हुई दिल्ली पहुचेगी।

मथुरा पहुचने वाले आर्य महानुभाव सार्वदेशिक सभा को केवल मात्र एक पोस्टकार्ड द्वारा पूर्व सूचना अवश्य दे जिससे सुविधापूर्वक व्यवस्था बनाई रखी जा सके। शीतकालीन मौसम को ध्यान में रखते हुए आगन्तुक आर्यजन शीतकालीन वस्त्रो आदि का यथा सम्भव प्रबन्ध स्वय सुनिश्चित करे।

डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री
मत्री ☆

सम्पादक- डा.सच्चिदानन्द शास्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में

विशाल शोभा यात्रा एवं सार्वजनिक सभा

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य मे २५ दिसम्बर को प्रात १० बजे श्रद्धानन्द बलिदान भवन से विशेष यज्ञ के उपरान्त एक विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया है। यह शोभा यात्रा विभिन्न मार्गो से होते हुए लाल किला मैदान मे विशाल सार्वजनिक सभा में परिणत हो जायेगी। समस्त आर्यसमाजो के अधिकारियों से निवेदन है कि अपनी अपनी समाज से बस टैम्पू आदि बैनर तथा ओ३म् ध्वजों से सुसज्जित कर भारी सख्या मे शोभा यात्रा मे सम्मिलित होकर सगठन का परिचय दे।

डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री
मत्री सभा

हमारा तन मन धन किस के लिए ?
भारत माता के लिए

उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की बैठक

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा की एक अन्तरग बैठक २१ दिसम्बर १६६६ शनिवार को प्रात १० बजे वेद मन्दिर मसानी चौक मथुरा मे बुलाई गयी है। समस्त सदस्यों से निवेदन है कि वे निर्धारित समय से पूर्व मथुरा पहुच कर इस बैठक मे भाग ले।

बैठक के बाद समस्त सदस्य स्वतन्त्रता की पचासवीं वर्षगाठ पर आयोजित विशाल शोभायात्रा तथा अन्य कार्यक्रमों मे शामिल होगें।

डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

खालिस्तान की लडाई अभी खत्म नहीं हुई

अमृतसर। हाल के वर्षों मे पहली बार सोमवार २५ नवम्बर के दिन गुरु नानकदेव के जन्म दिवस पर खालिस्तान के खुले समर्थन का मौका दिया। उस दिन ३००० से अधिक भारतीय सिख यात्री देश के ऐतिहासिक गुरुद्वारों की यात्रा कर रहे थे। उस दिन ननकाना साहिब गुरुद्वारा के मच पर कब्जा कर खालिस्तान के समर्थको ने घोषित किया कि अपने लक्ष्य को प्राप्त करने – खालिस्तान हासिल करने की लडाई अभी खत्म नही हुई है। खालिस्तान के समर्थको ने जत्थे के लोगों मे परमजीत सिह पजवार बधावा सिह लखबीर सिह रोडे और गजेन्द्र सिह प्रस्तावित खालिस्तान के मानचित्र के साथ वितरित किया। ☆

गो हत्या से देश की भयंकर हानि हो रही है, घी दूध के अभाव मे देश की सन्तान दुर्बल हो रही है, गाय का सर्वस्व मानव परोपकार के लिए है इसलिए हे, मानव-गाय को बचाओ।

ओ३म्

आर्य पर्वों की सूची

सन् १६६७ तदनुसार २०५३-५४

क्र०स०	नाम पर्व	चन्द्र तिथि	सम्वत्	अग्रेजी तिथि	दिवस
१	मकर सक्रान्ति / पोगल	पौष सुदी ६	२०५३	१४ १-६७	मगलवार
२	वसन्त पचमी	माघ सुदी-४	२०५३	११-२-६७	मगलवार
३	सीताष्टमी	फाल्गुन वदी-८	२०५३	२-३ ६७	रविवार
४	ऋषि पर्व – महर्षि दयानन्द जन्म दिवस	फाल्गुन वदी-१०	२०५३	४ ३ ६७	मगलवार
५	ऋषि पर्व – शिवरात्रि (महर्षि दयानन्द बोध दिवस)	फाल्गुन वदी-१३	२०५३	७-३-६७	शुक्रवार
६	लेखराम तृतीया	फाल्गुन सुदी ३	२०५३	११-३ ६७	मगलवार
७	नवसस्येष्टि (होली)	फाल्गुन सुदी १४	२०५३	२३ ३ ६७	रविवार
८	आर्यसमाज स्थापना दिवस (नव सम्वत्सर / चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/उगाडी/गुडी पडवा/चेती चाद)	चैत्र सुदी-१	२०५४	८ ४ ६७	मगलवार
६	रामनवमी	चैत्र सुदी-६	२०५४	१६ ४ ६७	बुधवार
१०	हरितृतीया	श्रावण सुदी ३	२०५४	६ ८ ६७	बुधवार
११	श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बन्धन)	श्रावण सुदी-१५	२०५४	१८-८ ६७	सोमवार
१२	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्र वदी-८	२०५४	२५-८ ६७	सोमवार
१३	विजया दशमी	आश्विन सुदी १०	२०५४	११-१०-६७	शनिवार
१४	गुरुवर स्वामी विरजानन्द सरस्वती दिवस	आश्विन सुदी-१२	२०५४	१३ १०-६७	सोमवार
१५	महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली)	कार्तिक वदी १४	२०५४	३०-१०-६७	गुरुवार
१६	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष वदी १०	२०५४	२३-१२-६७	मगलवार

विशेष टिप्पणी – आर्यसमाजे इन पर्वों को उत्साहपूर्वक मनाए।
देशी तिथियो मे घटबढ होने से पर्व तिथि मे परिवर्तन हो सकता है।

डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्रि
महामन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

वैदिक शिक्षा में वसु, रुद्र और आदित्य

वैदिक वाङ्मय में वसु, रुद्र तथा आदित्य उल्लेख बार बार होता है। वैदिक शिक्षा प्रणाली मे तीन ही मान्य श्रेणिया थीं। प्रथम 'वसु जो जन्म से २४वें वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य एव विद्या को प्राप्त करके गुरुकुल से घर लौटते थे। द्वितीय 'रुद्र' जो ४४वे वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य एव विद्या को प्राप्त कर लेते थे। तृतीय आदित्य' सज्ञक ब्रह्मचारी जो पूर्ण ब्रह्मचर्य एव सम्पूर्ण वेदविद्या को प्राप्त करके ही घर लौटते थे। सम्प्रति उसका आधुनिक रूप पूर्वस्नातक स्नातक एव स्नातकोत्तर रूप में द्योतित है किन्तु इनमे ब्रह्मचर्य एव वेदविद्या का सर्वथा अभाव है। आर्यसमाज द्वारा सचालित गुरुकुल एव कॉलेजो मे भी इसका कुछ भी स्वरूप नहीं। मनु ने शिक्षा का आरम्भ इस प्रकार किया था।

उपनीय गुरु शिष्य शिक्षयेच्छौचमादित।
आचारमग्निकार्यं च सन्ध्योपासन मेव च।।

(१) प्रथम गुरु अपने शिष्य का उपनयन करे।

(२) द्वितीय अधिदैवतविधि एव अध्यात्मविधि से उस शिष्य को सभी प्रकार के शौच का उपदेश करे।

(३) तृतीय आचार अर्थात आचरण सहिता की शिक्षा करे।

(४) चतुर्थ उस शिष्य को कल्पविधि से याज्ञिक कर्मकाण्ड का सामान्य ज्ञान दे।

(५) पञ्चम पुन उसे योगविधि का सामान्य ज्ञान देकर सन्ध्या की विधि सिखाये।

वसु रुद्र और आदित्यों का शिक्षाकाल १ स लेकर ४८वे वर्ष तक का था। इनमे भी तीन प्रकार के स्नातक होते थे। प्रथम वे जो केवल विद्या को समाप्त कर लेते थे किन्तु ब्रह्मचर्य व्रत मे अधूरे रहते थे। उनको विद्या स्नातक कहा जाता था। द्वितीय वे जो पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर लेता था किन्तु विद्या की समाप्ति अपने नियम काल मे न कर सकने के कारण उन्हे केवल व्रत स्नातक कहा जाता था। तृतीय वे जो ब्रह्मचर्य व्रत को भी पूर्ण कर लेते थे और नियत काल तक विद्या की भी समाप्ति कर लेते थे उन्हे 'विद्याव्रतस्नातक कहा जाता था। इस प्रकार वसुओं मे तीन रुद्रो में तीन तथा आदित्यो मे भी तीन प्रकार के स्नातक होते थे। यह आवश्यक नहीं कि भिन्न-भिन्न पारिवारिक-परिवेश मे उत्पन्न विद्यार्थियो की मानसिकता उनके सस्कार तथा चरित्र एक समान ही हो अतएव वसु, रुद्र और आदित्यो मे भी तीन-तीन स्नातक भेद स्वत ही घोषित थे यास्क ने भी अपने निरुक्त शास्त्र मे कुछ इसी प्रकार ध्वनित किया है –

(क) सृष्टि के आदि में साक्षात्कृतधर्मी ऋषियो का कुल उत्पन्न हुआ था

(ख) उन्होंने असाक्षात्कृतधर्मी अन्य जनों को उपदेश द्वारा मन्त्रगत ज्ञान विज्ञान प्रदान किये थे।

(ग) जब मन्त्र विज्ञान को भी समझने मे लोग असमर्थ हुए तो उनके लिए निघण्टु, निरुक्त आदि अनेक वैदिक ग्रन्थ लिखे गये।

इससे विदित होता है कि मनुष्य की बौद्धिक क्षमता सभी गुणो मे एक समान न थी। अतएव गुरुकुल आदि खोले गये और उसमें ब्रह्मचर्य एव विद्या को प्राप्त करने वाले तीन प्रकार के स्नातक प्रतिष्ठित हुए।

भिक्षु दिवस्पुत्र भारती (वानप्रस्थ)

पितरों में वसु, रुद्र तथा आदित्यों की गणना

स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज ने अपने ग्रन्थ पञ्चमहायज्ञ विधि के पितृयज्ञ प्रकरण में १२ प्रकार के पितरो का उल्लेख किया है। उसी मे उन्होंने मनुस्मृति के वचन को उद्धृत किया है–

वसून् वदन्ति वै पितृन् रुद्रांश्चैव पितामहान्।
आदित्यान् प्रपितामहान् श्रुतिरेषा सनातनी।।

अर्थात 'वसुओ को पिता समझो रुद्रो को पितामह तथा आदित्यो को प्रपितामह समझो यह सनातनी श्रुति है। ऋक० यजु० साम० तथा अथर्व० में भी तीनो का बार बार उल्लेख होता है। मनु ने इसे और स्पष्ट रूप मे कहा है–

अज्ञो भवति वै बाल पिता भवति मन्त्रद।
अज्ञ हि बालमित्याहु पितेत्येव तु मन्त्रदम।।

अर्थात अज्ञानता का मारा पुरुष बालक ही होता है जो मन्त्र विचार का देने वाला है वह बालक भी पिता होता है। जन्म देने मात्र से कोई पुत्र का पिता नहीं होता अपितु वसु, रुद्र और आदित्य की सज्ञा से धोतित पुरुष ही पिता पितामह एव प्रपितामह हो सकता है। यह वैदिक युग की शिक्षा प्रणाली का उज्ज्वल स्वरूप था। मनु ने इस विषय मे एक उदाहरण दिया है–

पितृनध्यापयामास शिशुराङ्गिरस कवि।
पुत्रका इति होवाय ज्ञानेन परिगृह्य तान्।।

अर्थात विद्या से सुभूषित बालक ने अपने अज्ञानी पितरो का पुत्र कहकर पुकारा एव ज्ञान के माध्यम से वे सभी पितर उस शिशु के वशीभूत हुए थे। इससे विदित होता है कि पितर ज्ञानी और अज्ञानी दोनो प्रकार के हो सकते हैं।

वैदिक युग मे पितरो का स्वरूप विमर्श

इस स्वरूप विमर्श के विषय मे पञ्च०महा० के पितृयज्ञ प्रकरण मे ऋषि ने कुछ पितरों का प्रतिपादन किया है–

(१) जो शान्त्यादिगुण सहित ईश्वरसाक्षात्कार एव सोमयाग मे निपुण हैं उन्हे 'सोमसद् पितर कहते हैं।

(२) जो ईश्वरीय विज्ञान को अपने अन्त करण मे प्रत्यक्ष करने वाला है एव भौतिक अग्नि और उनकी शक्तियो को जानकर भू यान जलयान तथा व्योमयान के विषय मे यन्त्रादि का निर्माण करने वाला है उसे अग्निष्वात्त पितर कहते हैं।

(३) जो योगविषय मे शमदमादि उत्तम गुणो से युक्त समाधिमान् है उसे बर्हिषद् पितर कहते हैं।

(४) जो सोमविद्या के ज्ञाता तथा याज्ञिक 'इष और 'ऊर्ज से निष्पन्न उत्तम ओषधिरस के पीने और पिलाने वाले हैं उनको सोमपा पितर कहते हैं।

(५) जो विज्ञानसम्मत छवि के महायजन से शोधित वृष्टि जलादि के भोक्ता हैं तथा अन्य जनो को भी भोक्ता बनाते हैं उन्हे 'हविर्भुज पितर कहते हैं।

(६) आज्य कहते हैं स्निग्ध घृत और विज्ञान का जो दोनो से विज्ञान का प्रचार एव प्रसार करते हैं उन्हे आज्यपा पितर कहते हैं।

(७) जो ईश्वरविद्या के उपदेशक तथा उसके ग्राहक बनकर अपना समय व्यतीत करते हैं एव ईश्वरप्राप्ति मे जिसका सुखमय काल बीत रहा हो उसे 'सुकालिन् पितर कहते हैं।

(८) जो सब प्रकार के पक्षपात को छोडकर केवल सत्य और न्याय व्यवस्था मे तत्पर हो उसे यमराज पितर कहते हैं।

(९) पिता वसु सज्ञक पितामह रुद्र सज्ञक एव प्रपितामह आदित्य सज्ञक पितर हैं।

(१०) विद्यास्वभाव वाली विदुषी माता पितामही (दादी) प्रपितामही (परदादी) ये तीनो भी पूजनीया पितर हैं।

(११) जो अपने गोत्र वाले समीपवर्ति जाति के पुरुष हैं वे भी सत्करणीय पितर हैं।

(१२) जो पूर्णविद्या के पढाने वाले गुरु आचार्यादि एव श्वसुरादि जन हैं तथा उनकी स्त्रिया भी पितर हैं।

जो 'सवाध्यायप्रवचनाभ्या मा प्रमद' इसे जीवन का परम ध्येय बना लेते थे वे बसुगण भी उत्तरोत्तर यथासमय 'रुद्र एव आदित्य' की सज्ञा से विभूषित हो जाते थे। वैदिक शिक्षा प्रणाली अनबरत विद्याभ्यास से व्यक्ति की आत्मा को सुसस्कृत तथा सभ्य समाज मे उसे प्रतिष्ठित करती थी। वेदो मे वसु, रुद्र एव आदित्य के अनेक प्रकरण पठनीय हैं। मनु ने एक कटु निर्देश दिया है

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वय।।

अतएव द्विजो का वेदाध्ययन और उसके अभ्यास से दूर रहना कदापि सम्भव न था क्योकि तब उन्हे शूद्रत्व का सामना करना पडता था।

वेदाभ्यास ही विवाह की अर्हता

मनु के युग मे कोई द्विज विवाह तब कर सकता था जब उसने विधिपूर्वक चार तीन दो अथवा एक वेद को पढा हो। वही किसी से कन्या की अभ्यर्थना कर सकता था। जो वेदविहीन होते थे वे किसी भी प्रकार से द्विज नहीं हो सकते थे। वस्तुत वसु, रुद्र आदित्य की अन्वर्य सज्ञा से युक्त पुरुष ही वैदिक युग मे द्विज कहे जाते थे। विवाह की अर्हता के लिए मनु का यह निर्देश था।

वेदानधीत्य वेदौ वा वेद वापि यथाक्रमम्।
अविप्लुतब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममाविशेत्।।

अर्थात चार तीन दो अथवा एक वेद का यथावत अध्ययन करके तथा जिनका ब्रह्मचर्यव्रत खण्डित न हुआ हो वही गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करे। अतएव ब्रह्मचर्य तथा वेदाभ्यास ये दोनो विवाह के लिए प्रमाण पत्र थे।

(क) २४वे वर्ष तक 'वसु सज्ञक प्रमाण पत्र।
(ख) ४४वे वर्ष तक 'रुद्र' सज्ञक प्रमाण पत्र।
(ग) ४८वें वर्ष तक आदित्य सज्ञक प्रमाण पत्र।

अर्थात ४८वे वर्ष तक उत्तम ४४वे वर्ष तक मध्यम तथा २४वे वर्ष तक सामान्य प्रमाण पत्र ऐसा ही द्योतित होता है। इन्हीं मे 'व्रतस्नातक' 'विद्यास्नातक' तथा 'विद्याव्रतस्नातक' सब आ जाते हैं। वैदिक समाज इन्हीं तीनो के बल पराक्रम विद्या और ब्रह्मचर्य से सभ्य सुसस्कृत और देदीप्यपान था। आधुनिक ससार मे इन सबका सर्वथा अभाव है। इस समय की शिक्षा पद्धति से अनाचार दुराचार अशान्ति उपद्रव असभ्यता अभद्रता आदि का बोलबाला है। कॉलेजो एद

शेष पृष्ठ पर [illegible]

राष्ट्रीय अभिवादन नमस्ते

पतराम त्यागी

भारत राष्ट्र मे अभिवादन की परम्परा उतनी ही प्राचीन है जितना प्राचीन यह राष्ट्र और इसकी सास्कृतिक सभ्यता तथा भौगोलिक अस्मिता। प्राचीन काल से ही इस राष्ट्र की यह परम्परा रही है कि जब यहा के लोग परस्पर एक दूसरे को मिलते हैं तो नमस्ते द्वारा आपस में अभिवादन करते हैं।

आजकल तो अभिवादन के लिए बहुत सारे आदर सूचक शब्दो और क्रियाओ का प्रयोग भारतभर मे प्रचलित है जैसे राम राम जी जय राम जी की जय सीता राम जय राधेश्याम नमो नारायण जय गुरुदेव जय गुरुजी की जय श्री राम सत्य श्री अकाल जय वाहिगुरु दडवत दडवत प्रणाम प्रणाम चरन लागे चरन पडे पाये लागे पैरो पडे पैर हाथ लागे गुड मोरनिंग गुड नून गुड आफटर नून गुड इवनिंग गुड नाईट अस्लाम अस्लामवालेकुल वालेकुम वालेकुम–अस्लाम सलाम आदाब बन्दगी सुप्रभात शुभ दिवस शुभरात्री आदि आदि। ये सभी अभिवादन श्रेष्ठ और आदरणीय हैं तथा भारतीय समाज के विभिन्न समुदायो वर्गो पथो और सम्प्रदायो मे बडे ही आदर श्रद्धा और सम्मान से अभिवादन सूचक शब्दो के रूप मे प्रयोग किये जाते हैं। इन सब अभिवादन सूचको के साथ साथ नमस्ते भी समान रूप से देशभर के इन समुदायो में प्रयोग किया जाता है।

'नमस्ते' दो शब्दो से मिलकर बना है नम + ते = नमस्ते अर्थात मैं आपको नमन करता हू, आपका आदर करता हू, आपका मान्य करता हू। आज कल देखा गया है कि कुछ लोग सिर तक हाथ उठा कर नमस्ते शब्द का उच्चारण करते हैं अथवा सिर हिलाकर नमस्ते करते हैं या केवल हाथ हिलाकर नमस्ते करते हैं जोकि नितान्त गलत है। नमस्ते करने का अपना एक ढग है तौर तरीका है एक अनुशासन है। इस अनुशासन का पालन किये बिना नमस्ते का कोई औचित्य अथवा महत्व नहीं है। नमस्ते करने का सर्वोत्तम तरीका है दोनो हाथो को जोड कर हृदय के पास लगा कर फिर सिर को झुका कर 'नमस्ते का उच्चारण करने से नमस्ते की क्रिया पूरी होती है।' इस प्रकार हाथ हृदय और मस्तक (सिर) तीनों के द्वारा श्रद्धाभाव से अपने सामने वाले को आदर सम्मान से नमन किया जाता है उसका सत्कार किया जाता है मान्य किया जाता है। नमन सत्कार मान्य किसी को किसी भी समय किया जा सकता है। नमन करने से मनुष्य के अहकार आदि दोषो का निवारण हो जाता है तथा सत्कार आदि से मनुष्यो मे एकात्मता आती है। नमस्ते से परस्पर समर्पण की भावना जागृत होती है उनके हृदयों मे श्रद्धा स्नेह और आत्मीयता की अपरिमित धारा प्रवाहित होने लगती है और वे एक दूसरे से गद्‌गद् होकर मिलते हैं।

एक बार अमेरिका के शिकागो शहर मे विश्व धर्मसम्मेलन के अवसर पर ससार के सभी धर्माचार्यों ने अपने अपने ढग से अभिवादन किया। परन्तु जब भारतीय मनीषी आचार्य श्री पन्डित अयोध्या प्रसाद जी ने नमस्ते शब्द द्वारा सभी का अभिवादन किया तो चारो ओर से Best of all Best of all (बैस्ट आफ आल बैस्ट आफ आल) अर्थात अति उत्तम अति उत्तम की ध्वनि गूज उठी। उसी समय एक अग्रेज सज्जन ने पडित जी से बडे ही विनम्र भाव से कहा "Please explain in English about Nameste कृपया 'नमस्ते' के बारे मे अग्रेजी मे समझाइये। तब पडित जी ने नमस्ते की व्याख्या इस प्रकार से की "With all the knowledge of My mind, with all the strength of my arms, with all the love of my heart, I bow to the Soul unto you" अर्थात मेरे मस्तिष्क मे जितना ज्ञान है मेरे हाथो मे जितनी शक्ति है मेरे हृदय मे जितना प्रेम है उन सब के साथ मैं आपकी आत्मा के प्रति नमन करता हू। इस व्याख्या के पश्चात् वहा पर नमस्ते अभिवादन बहुत प्रजल्ति हुआ और सम्मलन मे परस्पर 'नमस्ते' द्वारा अभिवादन होने लगा।

प्राचीन ग्रन्थो को देखने से ज्ञात होता है कि नमस्ते शब्द वेदो ब्राह्मणो आरण्यको उपनिषदों स्मृतियो से लेकर रामायण महाभारत गीता और पुराणो मे स्थान स्थान पर प्रयोग हुआ है। इन सब के पश्चात अधुनिक लेखको कवियो मनीषियों तथा साहित्यकारों ने भी अपनी रचनाओ मे बहुलता से किया है और कर रहे हैं। वेदो मे परमात्मा को नमो ब्रह्मणे नमस्ते कह कर नमन किया गया है। जगत के रचयिता और आश्रयदाता परमात्मा को एक अन्य श्लोक में "नमस्ते सतेते जगत्कारणाय नमस्ते चिते सर्वलोकाय श्रयाय" कहकर परमात्मा को नमन किया गया है। तैतिरीयोपनिषद के १२वे अनुवाक मे नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। अर्थात ब्रह्म को नमस्ते हो। हे सर्वाधार ईश्वर आपको नमस्ते हो। प्रश्नोपनिषद की समाप्ति पर जब पिप्पलाद ऋषि द्वारा ऋषियो को छ के छ प्रश्नों का उत्तर दे दिया गया तो अन्त मे प्रश्नकर्त्ता ऋषियों ने महर्षि पिप्पलाद को 'नम परम ऋषिभ्य नम परम ऋषिभ्य' कहते हुए आदर और सम्मान के साथ नमस्ते करते हुए कृतज्ञता प्रकट की है। मनु स्मृति मे नमस्ते अभिवादन से मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होती है और युवाओ का अभ्युत्थान प्रारम्भ हो जाता है। मनुस्मृति के श्लोक २। ११६ १२० १२१ का अर्थ करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा है 'जो सदा नम्र सुशील विद्वान और वृद्ध पुरुषो को अभिवादन करने का जिसका स्वभाव है उसकी आयु विद्या बल और कीर्ति ये चार सदा ही बढते हैं।

रामायण के सुन्दरकाण्ड मे माता सीता अशोक वन मे श्री रामचन्द्र जी महाराज का स्मरण करती हुई उन्हें मन ही मन नमस्ते करती हुई कहती हैं –

प्रियान्न सम्भवेद् दु खम प्रियान्धिक भयम्
ताभ्या हिये वियुज्यन्ते नमस्तेषा महात्मनाम।।

(सुन्दरकाण्ड सर्ग १७ श्लोक १७)

अर्थात जिनको अपने प्रिय जनो के छूटने से दु ख नहीं होता और अप्रिय के मिलने से भय नही होता उन महात्माओ को मेरा नमस्ते। रामायण मे आदि कवि महर्षि वाल्मीकि जी ने नमस्ते का प्रयोग स्थान स्थान पर किया है। महाभारत के द्रोणपर्व मे जब अर्जुन पुत्र वीर अभिमन्यु आचार्य द्रोण के द्वारा रचित चक्रव्यूह का भेदन के लिए रणक्षेत्र को जाता है तो वह माता कुन्ती सुभद्रा युधिष्ठिर तथा भीम आदि को नमस्ते करता हुआ आर्शीवाद प्राप्त करता है। महाभारत मे भी महर्षि वेद व्यास जी द्वारा स्थान-स्थान पर नमस्ते का प्रयोग किया गया है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण मे उन महात्माओं का शुभ आचरण बताया है जिनका स्वभाव सदा नमस्कार करने का है।

सतत कीर्तयन्तो मा यतन्तश्च दृढव्रता ।
नमस्यन्तश्च मा भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते।।

(गीता अध्याय ९ श्लोक-१४)

अर्थात जो महात्मा मेरे गुणों का कीर्तन करते हुए उनका अनुकरण करके लोक कल्याण के लिए दृढ सकल्प होकर मुझे 'नमस्ते' करते हुए नित्य उत्तम जीवन यापन मे लगे हैं वे इन शुभ आचरणो से मेरी उपासना करते हैं। इसके साथ साथ गीता के ११वें अध्याय के श्लोक सख्या ३१ ३५, ३६ ३९ और ४० मे भगवान के विराट रूप के दर्शन से भयभीत हो कर महाराजा अर्जुन उन्हे बारम्बार नमस्ते करते हैं। महर्षि वेदव्यास (द्वैपायन कृष्ण) ने गीता मे भी स्थान स्थान पर नमस्ते का प्रयोग किया है।

प्राचीन ग्रन्थो के अतिरिक्त आधुनिक साहित्यकारो कवियो लेखको तथा मनीषियो की रचनाओ मे भी नमस्ते का प्रयोग प्रचुर मात्रा मे मिलता है। उदाहरणतया हिन्दी के महान कवि श्री श्याम नारायण पाण्डेय के जय हनुमान मे नमस्ते का हनुमान जी द्वारा कितना सुन्दर प्रयोग किया गया है।

झुके बडे बूढो के सम्मुख
पच देव को कर जोडा।
पिता वायु को नमस्कार कर
लका का अन्तर जोडा।।

प्राचीन साहित्य से लेकर आधुनिक रचनाओ मे आज भी नमस्ते का प्रयोग लगातार हो रहा है। 'नमस्ते जहा परमात्मा के अभिवादन के लिए प्रयोग मे आता है वहीं साधारण जनसमुदाय के लिए भी प्रयोग होता रहा है। नमस्ते बाल युवा वृद्ध स्त्री पुरुष आदि सभी के लिए अभिवादन का उपयुक्त शब्द है। जब कोई बच्चा आदर सम्मान और श्रद्धाभाव से अपने माता पिता को नमस्ते करता है तो वे भी प्रत्युत्तर में आशीर्वादात्मक भाव से नमस्ते का उच्चारण करते हैं और मन ही मन प्रसन्न भी होते हैं।

अत साराश रूप में कहा जा सकता है कि नमस्ते एक ऐसा अभिवादन है जिसका सम्बन्ध पूरे राष्ट्र से है। राष्ट्र के प्रत्येक वर्ग और समूह मे इसका प्रयोग आदरपूर्वक सदा से होता रहा है। राष्ट्रपति भवन से लेकर देशभर मे फैले हुए सभी सरकारी गैर सरकारी कार्यालयो विद्यालयों महाविद्यालयो विश्वविद्यालयो अस्पतालो सरकारी गैरसरकारी फैक्ट्रियो आकाशवाणी दूरदर्शन गलियो बाजारो ग्रामो कस्बो रेलवे-स्टेशनों बस स्टैन्डों आदि सार्वजनिक अथवा गैरसार्वजनिक सभी स्थलो पर जाने अनजाने मे भारत के करोडो करोड व्यक्तियो द्वारा बडी श्रद्धा स्नेह से प्रयोग मे लाया जा रहा है। यह राष्ट्र का प्राचीनतम अभिवादन होते हुए भी नवीनतम है। इस प्राचीनतम अभिवादन में हमारे विशाल राष्ट्र की राष्ट्रीयता प्राचीन सस्कृति सभ्यता और महान अस्मिता के दर्शन होते हैं। अत यह राष्ट्रीय अभिवादन राष्ट्र की धरोहर है।

मत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ☆

आर्यसमाज मंदिरों में गुरुकुल - एक नए युग का शुभारम्भ

डॉ० मुमुक्षु आर्य (हृदय रोग विशेषज्ञ)

१३ **क्रान्तिकारियों का निर्माण** आर्ष गुरुकुल नौएडा के ब्रह्मचारियो मे राष्ट्र की भावना कूट-कूट कर भरने का प्रयास किया जाता है हम आशा करते हैं हमारे ब्रह्मचारी राम प्रसाद विस्मिल, चन्द्रशेखर भगतसिह आदि नवयुवको की तरह काले अग्रेजो से मुक्ति दिलाने मे अपनी जान तक लडा देगे। प्रत्येक आर्यसमाज मे ऐसे ही नवयुवको के निर्माण का प्रयास किया जाए तो वैदिक धर्म की पुन स्थापना मे महत्वपूर्ण योगदान मिल सकता है। अधिकारियो व सदस्यो के अपने बच्चो से यह सब आशा रखना तो शायद उचित नहीं होगा। स्थानीय गुरुकुल के ब्रह्मचारी आर्यसमाज की युवा शक्ति का प्रतीक सिद्ध होगी और हो रही है।

१४ **प्राथमिक, चिकित्सा केन्द्र का संचालन** भी गुरुकुल के ब्रह्मचारियो एव स्थानीय वैद्य अथवा डाक्टर की सहायता से किया जा रहा है। जिससे गुरुकुल के ब्रह्मचारी एव आस-पास के लोगो को लाभ पहुचता है प्रारम्भिक चिकित्सा की शिक्षा भी विद्यार्थियो को दी जा रही है। योग्य वैद्य से आर्युवेद की शिक्षा भी देने का प्रयास किया जा रहा है।

१५ **भजनोपदेशक :** प्रचार हेतु योग्य भजनीको का निर्माण भी सगीत शिक्षको द्वारा किया जा सकता है। प्रत्येक शनिवार बाल सभा मे भजन-प्रवचन एव मच सचालन का अभ्यास करवाया जाता है।

१६ **चन्दा संग्रह** आर्यसमाज सदस्यो के चन्दा सग्रह मे भी ब्रह्मचारी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

१७ **वानप्रस्थी एव संन्यासियों का सदुपयोग** वानप्रस्थी भी गुरुकुलो मे जाकर सहयोग कर सकते हैं और उनकी योग्यता व अनुभव का सदुपयोग किया जा सकता है।

१८ **अतिथि सत्कार** आर्य विद्वानो एव सन्यासियो के अतिथ्य की समस्या समाजो मे प्राय बनी रहती है। गुरुकुल होने से अतिथि यज्ञ बडी श्रद्धा से सम्पन्न होने लगता है।

१९. **नियमित साधना केन्द्र** अध्यापको मे एक योगाचार्य रखकर एव सुन्दर ध्यान कक्ष का निर्माण कर सदस्य, अधिकारी, आम जनता एव ब्रह्मचारी प्रतिदिन ध्यान कर अभ्यास कर सकते हैं। इससे आर्यसमाज के प्रचार में बहुत सहायता मिलती है।

२०. **समिधा-सामग्री-हवनकुण्ड** सन्ध्या-हवन की पुस्तको की बिक्री की सुविधा भी नियमित हो जाती हे। इन वस्तुओं की प्राप्ति मे प्राय कठिनाई का सामना करना पडता है।

खर्च व्यवस्था:

१ मासिक सहयोगी सदस्य प्रतिदिन के ४-५ रुपये के हिसाब से १००-१५० रुपये के मासिक सहयोगी सदस्य बनना व बनाना कोई कठिन कार्य नहीं है। हमारे यहा २-३ हजार मासिक कमाने वाले भी सदस्य बने हुए हैं। इस राशि का सग्रह भी गुरुकुल के ब्रह्मचारी पढाई समय के पश्चात् सुगमता से कर सकते हैं। सम्पन्न सदस्य, नागरिक, उद्योगपति तो ५०० से १००० रुपये मासिक के सहयोगी सदस्य बन सकते हैं।

२ प्रचार वाहन, सस्कारो एव समाचार पत्रो द्वारा प्रचार से जन सम्पर्क बढाया जा सकता है। बहुत से सज्जन लोग गुरुकुलो को आटा दाल चावल आदि देने मे प्रसन्नता महसूस करते हैं।

३ अन्न सग्रह ग्रीष्म अवकाश मे प्रतिवर्ष अन्न सग्रह किया जाता है जिससे वर्ष भर का अन्न कई बार सग्रहीत हो जाता है।

४ कुछ महानुभाव समय-समय पर एक समय के भोजन का प्रबन्ध करते रहते हैं जिससे खर्च में कमी आ जाती है। समाज के समस्त सदस्य भी इस प्रकार का योगदान कर सकते हैं।

५ कुछ महानुभाव गुरुकुल के ब्रह्मचारियो को छात्रवृत्ति भी निश्चित कर देते हैं।

६ कुछ महानुभाव किसी एक ब्रह्मचारी का पूरा खर्च उठाने को तत्पर होते हैं।

७ विभिन्न सस्कारो से दक्षिणा जो एक ही पुरोहित को जाती थी अब सस्था को जाती है क्योकि आचार्य लोग एक निश्चित दक्षिणा लेते हैं और यह कार्य शास्त्री कक्षा के विद्यार्थी भी करवा लेते हैं। कई बार सस्कारो से अच्छी आय हो जाती है।

८ स्थानीय योग्य सदस्य अथवा सेवानिवृत सदस्य नियमित रूप से अध्यापन कार्य मे सहयोग कर खर्च मे कमी कर सकते हैं।

९ पजीकृत एव कर मुक्त प्रमाण पत्र प्राप्त करने पर गुरुकुल को अच्छा दान प्राप्त हो सकता है।

१० सम्पन्न विद्यार्थियो से प्रतिमास २५०-३०० रुपये भोजन व दूध के लिए जा सकते हैं।

अन्यान्य :

१ मान्यता महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार अथवा बनारस विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त कर निश्चित परीक्षाए दिलाई जा सकती है।

२ शिक्षा के स्तर को ऊचा उठाने के लिए आचार्यो के साथ नियमित बैठके और नियमित परीक्षाए सहायक सिद्ध होती है। गुरुकुल मे कम्प्यूटर शिक्षा के प्रबन्ध हेतु प्रयास किये जा सकते हैं।

३ समस्त आर्यसमाजो के अधिकारियो से विनम्र अनुरोध है कि अपनी-अपनी आर्यसमाजो मे गुरुकुल खोलकर इस योजना का विस्तार करने मे सहयोग करे एव इस सर्वोत्तम एव प्राचीन शिक्षा प्रणाली को नकारने की अपेक्षा इसको सफल बनाने एव इसकी कमियो को दूर करने मे तन-मन-धन से सहयोग करें। नि सन्देह आर्यसमाज सस्थाए अपने परिसर में गुरुकुलो का जितनी अच्छी तरह सचालन कर सकती हैं उतनी अच्छी तरह शायद कोई और न कर सके क्योकि सस्था की एक सामूहिक शक्ति होती है और समय-समय पर आने वाली प्रत्येक कठिनाई का मिलकर हल कर सकते हैं। स्मरण रहे वर्तमान युग मे जो गुरुकुलो मे त्रुटिया दिखाई देती है उनका मुख्य कारण हमारा ही असहयोग अश्रद्धा दुष्प्रचार और उपेक्षा है। गुरुकुलो व डी०ए०वी सस्थाओ मे कमियो को दूर करना अधिकारियो का परम कर्त्तव्य है।

सघर्षशील व्यक्ति कभी बाधाओ से नहीं घबराते। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि हमारे इस कार्य मे सहाई होवे। आशा है ऋषि भक्त आर्य महानुभाव इस योजना के महत्व को आत्मसात् कर इस पर कार्य करना प्रारम्भ करेगे। कहीं-कहीं अधिकारियो ने इस प्रकार के प्रयास प्रारम्भ भी कर दिए हैं। भूतपूर्व इमाम एव आर्य प्रचारक डॉ० महेन्द्र पाल आर्य जी ने इस योजना से प्रेरणा पाकर बगाल मे आर्यसमाज निर्माण हेतु मिली भूमि पर आर्ष गुरुकुल प्रारम्भ कर दिया है। आओ सब मिलकर एक नये युग का शुभारम्भ करे।

अध्यक्ष आर्यसमाज नोएडा/आर्ष गुरुकुलनौएडा
जी-६, सैक्टर १२ नौएडा-२०१ ३०१ ☆

भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी नई दिल्ली के द्वारा श्री भारतभूषण सरोज की स्मृति मे 'समाज सुधारक देवदयानन्द' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता मे २५ विद्यालय के छात्र-छात्राए उपस्थित थी। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ० श्री निवास शर्मा थे मुख्यअतिथि के रूप मे श्री जगदीश आर्य प्रधान-वेद प्रचार मण्डल श्रीमती लक्ष्मीदेवी डॉ० प्रभातकुमार प्रवक्ता हसराज कालेज डॉ० हरमित्र लम्ब प्रवक्ता राजधानी कालेज सगीतज्ञ श्री शिवराम जी आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

स्व० भारत भूषण 'सरोज' की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी के करकमलों से १०० रुपये का प्रथम पुरस्कार सर्वोदय विद्यालय उत्तमनगर के छात्र श्री सदीप पावा ने प्राप्त किया। ८०० रुपय का द्वितीय पुरस्कार (डी०पी०वी० विकासपुरी) की छात्रा कु० कनुप्रिया ने जीता। ५०० रुपये का तृतीय पुरस्कार (डी०पी०वी विकासपुरी) तथा ३००रुपये का सात्वना पुरस्कार कु० सोनिया गुप्ता को दिया गया।

समस्त प्रतियोगियो को ५० रुपये का वैदिक साहित्य डॉ० पुष्पा वर्मा के सौजन्य से वितरित किया गया। कार्यक्रम का सफल सचालन सयोजन आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने किया। अन्त में समाज के प्रधान श्री कुलभूषण कुमार ने समस्त लोगो का आभार प्रकट किया।

मंत्री
रमेशचन्द्र शर्मा ☆

हिन्दुस्तानीयत के विरुद्ध साधनों की गांधीवाद पवित्रता का दुष्प्रभाव

हरिजन सोमनाथ त्यागी

गाधीवाद का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है – मेरी कुटिया की खिडकियो से हर प्रकार के विचारो का समीर सदा प्रवाहित होता रहे लेकिन ऐसे समीर के किसी झोके से मेरे पैर ही उखड जाये यह मुझे मजूर नहीं । यहा ध्यातव्य है कि अपनी वैचारिक मौलिकता के प्रति गाधी जी यदि इतने ही पूर्वाग्रही थे कि उसकी स्थिरता किसी झोके से बह नहीं जाए तब इस देश के सास्कृतिक सीने पर दुनिया भर के सास्कृतिक अपसास्कृतिक विचारो से मूग दलवाते रहने की भी क्या तुक है ?

विचारो का आदान प्रदान वा आयात निर्यात करते रहने की आवश्यकता तो वास्तव में आधुनिक उपभोक्तावादी पाश्चात्य विकासवाद को ही है। 'सर्वे भवन्तु सुखिन वाले आदि वैदिक हिन्दुत्व की स्थानीय पर्यावरणवादिता को न तो किसी अन्यतम विकासवादिता की अपरिहार्यता है न ही किसी अन्यतम परदेसी विचारवादिता की अपरिहार्यता है जो बाहरी वस्तुओ वा परदेसी विचारो के आदान प्रदान को इतना महत्वपूर्ण माना जाये कि स्थानीयता को मिश्रित व्यवस्था ही बना दिया जाये। आधुनिक 'पर्यावरण बचाओ कार्यक्रम वास्तव मे एक तथ्यपूर्ण वैज्ञानिक आवश्यकता है और वस्तुओ के आयात निर्यात से इस पर्यावरण का स्थानीय सन्तुलन प्रदूषित हो जाता है।

विचारो का आदान प्रदान करना एव शिक्षित करना समानार्थी नहीं है। सतोष का अर्थ भी अकर्मण्यता नहीं है। क्योकि औद्योगिक बल विहीन स्थानीय पर्यावरण की स्वाबलम्बी अर्थव्यवस्था मे मानवश्रम की ही अकूत आवश्यकता है। सतोषीजन को नहीं अपितु असतोषीजन को ही वस्तुत गवार जगली असभ्य एव दरिद्र कहा जाता है। प्रचलित औद्योगिक सभ्यता के वर्तमान चरमोत्कर्ष मे भी आखिरकार कहीं न कहीं हमे सन्तोषलाभ की ही मर्यादा पर अपना जीवन यापन करना पडता है।

'हिन्द स्वराज्य' नामक पुस्तक मे बीजरूप से वर्णित सिगर महोदय की पत्नि के मानसिक उबाऊपन के निवारणार्थ वस्त्र सिलाई मशीन की मानवीय आवश्यकता के भौतिक सुख की अपरिहार्यता पर साधन अथवा उद्देश्य रूप मे निर्भर गाधीवाद भी वस्तुत पाश्चात्य प्रकार के ही उपभोक्तावादी सुख पर निर्भर करता रहता है। लेकिन इस औद्योगिक उपभोक्तावाद का आदर्श प्रारूप है – 'ससार के सकल १००% उत्पादो का प्रतिव्यक्ति औसतन १५०% उपभोग जो कि अपने समग्रता मे निश्चय ही एक सतत असम्भवता है।

वस्तुत उपभोक्तावादी पाश्चात्य सस्कृति के हमारे आदर्श हैं वे आधुनिक औद्योगिकृत देश जहा ससार की सकल जनसख्या का मात्र ४० प्रतिशत भाग ही बसता है लेकिन जहा ससार के सकल उत्पादा का ६० प्रतिशत भाग चट कर 'लिया जात' है। ऐस मे ससार की शेष ६० प्रतिशत जनसख्या को ससार के सकल उत्पादो के मात्र ४० प्रतिशत अश पर ही जा कर सन्तोष करना पडता है। कहा जा सकता है कि पाश्चात्य भौतिक उपभोक्तावादी औद्योगिक विकास के नाम पर विश्व की ६० प्रतिशत जनता को तो सदा ही अविकसित वा अर्द्धविकसित अर्थात् शोषित ही रहना है। ऐसे में सिगर महोदय की हस्तचालित वस्त्र सिलाई मशीन की उपभोक्तावादी मानवीयता पर निर्भर हमारा गाधीवाद भी अन्तत 'सर्वे भवन्तु सुखिन की आदि वैदिक व्यवस्था से बहुत दूर जा खडा होता है।

मनुष्य केन्द्रित विश्वक श्रेष्ठता के आस्थाजनित आदर्श वाले इस आधुनिक सेमेटिक पाश्चात्य पूजीवाद के जिस उपभोक्तावादी दुष्चरित्र के कारण हाल ही में साम्यवादी सोवियत अर्थव्यवस्था ढह गई है कदाचित उसी भौतिक सुखवादी मानवीय नैतिकता के कारण गाधी जी की अतिमानवीय व्यक्तिपरक सामाजिक ट्रस्टीशिप अर्थ व्यवस्था भी एक मानव द्वारा दूसरे मानव के भौतिक सुखदायक शोषण से मुक्ति से आगे नहीं झाक सकी। एक लगोटी मात्र ही से जीवन-यापन कर लेने का गाधीसकल्प वस्तुत प्रकृतिवादिता प्रेरित कम था लेकिन उपभोक्तावादी समाज के एक पूजीहीन महिला सदस्य को उसका उपभोक्ता-सुखवादी अधिकार दिलाने की नैतिकता से प्रधानत प्रेरित था।

वास्तव में व्यक्तिपमरक स्वार्थो को अत्यन्त' त्याग कर लोक कल्याणार्थ यदि कभी हिंसा भी करना अपरिहार्य हो जाये तो उस कार्य के 'निष्काम' कर्ता को हिसा का दोष नहीं लगता है। 'यस्य नाहकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते हत्वापि स इमाल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते' (गीता १८/१७)। स्वतन्त्रता प्राप्ति के अवसर पर कश्मीर पर पाकिस्तानी आक्रमण के हिसात्मक सशस्त्र प्रतिरोध की सहमति मे महात्मा गाधी जी के ध्यान मे कदाचित गीता ज्ञान की यही व्यवहारिकता निहित थी। लेकिन यहा साधन की गाधीवादी शुचिता गौण लेकिन उद्देश्य की शुचिता प्रधान है।

ऐसे मे लोक वा राष्ट्र को क्षीण कर रहे वर्तमान अपसास्कृतिक प्रदूषण को नष्ट कर देने के सात्विक उद्देश्य हेतु कतिपय हिसा परिग्रह स्तेय की व्यक्तिगत व्यक्तिपरक स्वार्थरहित घटनाओ पर गाधीवादियो की इतनी वामपथी चिल्लपौं क्यो ?

कोट बाजार

अमरोहा उ० प्र० –२४४ २२१ ☆

पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी की
रजत जयन्ति पर

सन्यासिनी डा० प्रज्ञा को श्रद्धांजलि

हे प्रज्ञे ! तेरे चरणों में कुलवासी वन्दन करते हैं।
इस महापर्व के अवसर पर अभिनन्दन तेरा करते हैं।।

हे डा० प्रज्ञादेवी तूने इस कुल को जन्म दिया।
इस जिज्ञासु की शिष्या ने कैसा सुन्दर सत्कर्म किया।।

ब्रह्मचर्य का व्रत लेकर तूने सन्यासी धर्म लिया।
ऋषि ऋण का भार उतारन को कैसा अद्भुत आदर्श लिया।।

तेरे समान न हे प्रज्ञे ! कोई दिखलाई देती हैं।
तेरी उपमा तो तू ही है मेधा देवी यह कहती हैं।।

यह बहिन सूर्याजी सूरजवत निज प्रकाश फैलाती हैं।
अन्य सभी सहयोगी बन प्रज्ञा आदेश निभाती हैं।।

भगवान् हमें ऐसा वर दो प्रज्ञासम बनें आर्यायें।
हे प्रभुवर ! इस प्रज्ञा की पूरी हो जायें आशायें।।

ब्रह्मप्रकाश करें सब मिलकर यह श्रद्धांजलि देती हैं।
इस कुल की सभी बालिकायें आशीष तुम्हारी लेती हैं।

भगवान् तुम्हारे चरणों में कर बद्ध प्रार्थना करती हैं।
हम सबको तुम प्रज्ञा देना यह विनय पुन. हम करती हैं।।

ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति
शास्त्री सदन पश्चिम आजादनगर दिल्ली-११० ०५१

भारत को एकता के सूत्र में पिरोने वाले—सरदार वल्लभभाई पटेल

शिवकुमार

ब्रिटिश काल मे भारत की समस्या थी स्वतत्रता प्राप्त करने की जिसके लिए अनेक आदोलन चले इस दौरान अनेक नेता उभरे। आजादी मिलने के बाद सबसे बडी समस्या आई कि देश में ५८४ के लगभग जो देसी रियासते थीं वो अब स्वतत्र हो गई थीं इनका भविष्य क्या होगा यदि ये रियासते स्वतत्र रहती तो उससे देश की अखण्डता पर आच आने का डर था। अग्रेजों के काल मे ये रियासतें एक तरह से अग्रेजी राज्य के अधीन थे। इस समस्या का समाधान किया सरदार पटेल ने जो कि उस समय सरदार पटेल उपप्रधानमत्री के साथ साथ गृहमत्री भी थे इन रियासतो मे एक दो रियासते ऐसी भी थी जो देश के लिए सिरदर्द बनी हुई थी। इनमें से हैदराबाद की रियासत को पाकिस्तान के माध्यम से हथियार आदि प्राप्त हो रहे थे। सिडनीस्कोट नामक एक विदेशी विमान चालक पाकिस्तान से हथियार आदि बार बार हैदराबाद पहुचा रहा था। इसी प्रकार वर्तमान गुजरात मे एक रियासत थी जूनागढ। वहा का प्रशासन भी परेशानिया खडा कर रहा था। इन दोनो रियासतो को सबक सिखाया सरदार पटेल ने। इस प्रकार भारत को एकता के सूत्र के रूप मे पिरोने का काम सरदार पटेल ने किया।

कुछ लेखक सरदार पटेल की तुलना बिसमार्क से करते है और इन्हे भारत का बिस्मार्क कहते हैं। (बिस्मार्क ने पिछली शताब्दी के उत्तरार्ध मे वर्तमान जर्मनी मे फैली ४० के लगभग छोटी बडी रियासतो को मिलाकर एक जर्मनी बनाया था।) हालाकि तुलना की दृष्टि से सरदार पटेल का काम विस्मार्क की अपेक्षा कुछ कठिन था। जो भी हो सरदार पटेल ने वो काम कर दिखाया जिसकी कल्पना करना असम्भव था। पटेल का स्वास्थ्य इन दिनो गिरता जा रहा था किन्तु फिर भी वो अपने कार्य मे लगे रहे। उन्हे एक ही धुन सवार थी – भारत मे रियासतों के विलय की। काम कठिन था किन्तु यदि निश्चिय दृढ हो तो कठिन काम ही आसान हो जाता है। इन्होने उडीसा की २८ और मध्यप्रदेश की १८ रियासतो को एक दिन मे भी भारत मे शामिल कराया था। जिन रियासतो ने विलय मे आनाकानी की या कुछ कठिनाइया पैदा की उन्हे अलग तरीके से पाठ पढाया गया। जैसा ऊपर कहा गया है हैदराबाद जूनागढ रियासते भारत मे विलय से कतरा रहीं थी वहा दूसरे रास्ते अपनाए गए। हैदराबाद मे पुलिस कार्यवाही की गई। इतना ही नहीं सरदार पटेल ने रियासतो के भारत मे विलय के लिए रियासतो की भूरि भूरि प्रशसा भी की थी।

गुजरात के कर्मसद नामक स्थान ३१ अक्तूबर १८७५ को जन्मे वल्लभभाई झावेर भाई पटेल ने भारत मे शिक्षा प्राप्ति के बाद वकालत की शिक्षा इग्लैंड में प्राप्त की। भारत मे वापस आने पर इनकी वकालत बहुत चमकी। किन्तु उस समय वे भारत के स्वतत्रता आदोलन मे कूद पडे यहा यह बताना आवश्यक है कि इनके बडे भाई विटठल भाई पटेल भी एक प्रमुख स्वतत्रता सेनानी थे और ब्रिटिश काल मे (१९२३) केन्द्रीय विधान सभा के अध्यक्ष बनने वाले पहले भारतीय थे। इन दोनो भाइयो के बीच समझौता यह हुआ था कि बडा भाई स्वतत्रता आदोलन मे भाग लेगा जबकि छोटा भाई परिवार की देखभाल करेगा। लेकिन देशभक्ति की भावना जो सरदार पटेल के दिल मे हिलोरे ले रही थी। अत वो भी स्वतत्रता सग्राम मे कूद पडे।

स्वतत्रता सग्राम मे सरदार पटेल ने सबसे पहले १९१६ मे कदम रखा उस समय वो गुजरात सभा के सचिव चुने गये। दूसरे वर्ष अर्थात १९१७ मे वे अहमदाबाद म्युनिसिपल कमेटी के सदस्य बने। उसके बाद इतिहास प्रसिद्ध खेडा सत्याग्रह और अहमदाबाद के मजदूरो और मिल मालिको के सघर्ष मे भाग लिया। १९१९ मे गाधी ने रौलट बिल के विरुद्ध जो अभियान चलाया सरदार ने गाधी जी को अपना नेता मान इस आदोलन मे पूरी तरह से भाग लिया। असहयोग आदोलन के दौरान तो इन्होने बहुत अधिक कार्य किया। गाधीजी के प्रत्येक कार्यक्रम चरखा अछूत उद्धार आदि मे इनको सफलता दिखाई देती थी। सरदार पटेल और उनके भाई पहले यूरोप की शैली के वस्त्र पहनते थे किन्तु बाद मे उन्होने खद्दर पहनना आरम्भ कर दिया और विदेशी वस्त्रो की दुकानो पर धरना भी दिया।

सरदार पटेल के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण सघर्ष था बारडोली का आदोलन। इस आदोलन से पहले वे केवल वल्लभभाई पटेल के नाम से ही जाने जाते थे। बारडोली के आदोलन मे इन्होने किसानो को एक ऐसा नेतृत्व प्रदान किया जिसमे सरकार को अपनी हठधर्मी छोडकर आदोलन–कारियो की बात माननी पडी। घटना १९२८ की है गुजरात के बारडोली नामक स्थान मे सरकार ने किसानो पर टैक्स बहुत अधिक बढा दिया। इसके विरुद्ध आदोलन छेडा गया इसका नेतृत्व सरदार पटेल को सौंपा गया। इस आदोलन के दौरान किसानो को अवरणीय सकटो का सामना करना पडा। किन्तु फिर भी विजय इनकी हुई। यहीं से इन्हे 'सरदार' का खिताब मिला जो इनके नाम का भाग बन गया। पटेल १९३१ मे कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। भारत छोडो आदोलन के दौरान इन्हे गिरफ्तार करके अहमद नगर किले मे रखा गया। जेल से छूटे १९४५ मे। इधर १९४६ मे अतरिम सरकार बनी तब उसमे गृह विभाग सौंपा गया। प्रशासन पर इनकी धाक जम चुकी थी। यहा यह बताना आवश्यक है कि कुछ आई सी एस अधिकारी यह समझते थे कि वे सरदार पटेल के साथ काम नही कर सकेगे। किन्तु काम करने के समय उन्होने पाया कि सरदार पटेल के साथ काम करना कोई समस्या नहीं है। वे इनको पूर्ण विश्वास मे लेकर काम करते थे।

स्वतत्रता सग्राम के इस सेनानी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए जवाहर लाला नेहरू ने ठीक ही लिखा था–

स्वतत्रता–युद्ध की हमारी सेनाओ के इस महान सेनापति के रूप मे उनको हममे से अनेक व्यक्ति सभवत सदा स्मरण करते रहेगे। वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होने सकट काल मे तथा विजयवेला मे सदा ही ठोस और उचित परामर्श दिया। वे एक ऐसे मित्र सहयोगी तथा साथी थे जिनके ऊपर निर्विवाद रूप से शक्ति की ऐसी मीनार के रूप मे भरोसा किया जा सकता था जिसने हमारे सकट के दिनो मे हमारी द्विविधा मे पडे हुए हृदय को पुन शक्ति प्रदान की। वह ऐसे शक्ति स्तभ थे जिससे दुर्बल हृदय भी मजबूत हो जाते थे।

लौह पुरुष तथा भारतीय एकता के प्रतीक भारत का बिस्मार्क कहलाने वाले सरदार पटेल ७५ वर्ष की आयु मे १५ दिसम्बर १९५० मे मुबई मे पचतत्व मे लीन हो गए। ☆

माताएं बच्चों को वैदिक शिक्षा से भी संस्कारित करें

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्कूल आनन्द बाग दुर्गाकुण्ड मे आर्यसमाज जिला सभा के तत्वाधान मे आयोजित काशी शास्त्रार्थ स्मृति दिवस समारोह के दूसरे दिन महिला सम्मेलन के अवसर पर वैदिक वाडमय की विदुषि श्रीमती सरस्वती देवी ने कहा कि माताए स्वय वैदिक धर्म के जानने के लिए आर्ष ग्रन्थो का अध्ययन करे तथा उस शिक्षा से बच्चो पर सस्कार डालने का प्रयत्न करे क्योकि इस शिक्षा की कोई सरकारी व्यवस्था नहीं है यदि है तो वह ढोंग अन्धविश्वास तथा सच्चाई से बहुत दूर हैं। उन्होने अपने व्याख्यान विभिन्न बिन्दुओ पर बोलते हुए कहा कि अपनी बेटियो का विवाह उन्हे पूर्ण योग्य स्वावलम्बी तथा सुसस्कार के आभूषण से युक्त वर के करे।

सम्मेलन मे क्षेत्रीय मद्यनिषध एव समाजोत्थान अधिकारी श्री शिवप्रसाद गुप्त ने शराब के विरोध मे महिलाओ को सक्रिय होने का आह्वान किया।

इस अवसर पर विश्व सुन्दरी प्रतियोगिता तथा इसे दूरदर्शन पर दिखाये जाने पर सरकार की घोर भर्त्सना की। सम्मेलन की अध्यक्षता श्रीमती उर्मिला देवी तथा सचालन श्रीमती सुषमा गोगलानी जी ने किया। समारोह के दोनो दिन यज्ञ तथा प्रभात फेरी का भी सफल आयोजन रहा।

प्रमोद आर्य मत्री
आर्यप्रतिनिधि सभा

स्वतंत्रता का पाचवां दशक : क्या खोया–क्या पाया

गतांक से आगे

डॉ० शीलम वेंकटेश्वरराव

विश्व मे दिन पे दिन देश की साख गिरती जा रही है। किसी भी देश की साख उसकी दो शक्तियो पर आधारित होती है – सैनिक शक्ति और आर्थिक शक्ति। दुर्भाग्य से इन दोनो ही शक्तियो मे भारत पिछडा हुआ है। फलत विश्व मे हमारा सच्चा मित्र या समर्थक देश नहीं रह गया है। जिनीवा में अभी हाल मे आयोजित विश्व परमाणु परीक्षण निषेध सधि सम्मेलन मे भारत के प्रस्ताव का केवल भूटान को छोड़कर किसी ने भी समर्थन नही किया। सयुक्त राष्ट्र सघ सुरक्षा परिषद की अस्थायी सदस्यता के प्रस्ताव के पक्ष मे १४० के मुकाबिले में भारत को केवल ४० देशो का समर्थन मिल सका। फलस्वरूप जापान की विजय और भारत की पराजय हो गयी। अतएव देश की विदेशी नीति की समीक्षा करने की अब आवश्यकता हो गयी है।

आज भारत राजनीतिक दृष्टि से तो स्वतत्र हो गया परन्तु आर्थिक और भाषा की दृष्टि से आज भी पराधीन है। यह दुख का विषय है कि शासन की भाषा स्वदेशी नहीं एक विदेशी भाषा है। दिन पे दिन अग्रेजी का दबदबा बढता ही जा रहा है। वास्तव में अग्रेजी सपन्न पूजीपतियो की भाषा है जब कि राष्ट्रभाषा हिन्दी आम जनता की भाषा। दूसरी ओर दिन पे दिन विदेशी कर्ज का बोझ देश पर बढता ही जा रहा है। कर्जदार देशो मे भारत सभवत चौथा या पाचवा देश है। एक स्वतत्र देश के लिए यह लज्जा की बात है।

नयी आर्थिक उदारीकरण की नीति और बहुराष्ट्रीय कपनीयो के आगमन से भारत आज विश्व का बाजार बन गया है। एक ओर देशी उद्योग धन्धो पर दुष्प्रभाव पड रहा है तो दूसरी ओर देश की स्वदेशी भावना और स्वसस्कृति पर विदेशी सस्कृति हावी होती जा रही है। आजादी से दो सौ वर्षो पूर्व एक विदेशी ईस्ट इडिया कपनी के भारतगमन से जो दुष्परिणाम हुए उनसे देश भुक्त भोगी है पता नहीं क्यो बहुराष्ट्रीय कपनियो का आह्वान किया जा रहा है। तस्करी माफिया देशद्रोही शक्तियो और सीमा प्रान्तो मे आतकवादी शक्तिया अपना सिर उठा रही हैं और देश की अखण्डता और एकता को चुनौतिया दी जा रही हैं। सर्वत्र हिसा का ताण्डव नृत्य हो रहा है। बुद्ध के देश मे हिसा का बढना यह चिन्ता का विषय है। सीमा प्रदेशो मे स्वायत्ता की माग प्रबल होती जा रही है।

ऐसा तो नहीं कहा जा सकता है कि देश का विकास नहीं हुआ है। विकास तो हुआ है पर उसके फल के बटवारे मे भेद भाव हुआ है। ६० प्रतिशत की झोली खाली कर १० प्रतिशत की झोली भरी गयी है। देश का एक रूप औद्योगिक विकास का है पर साथ ही उसका दूसरा रूप पिछडापन उतना ही उजागर है। समाज मे असमानता बढी है। एक ओर अमीरी आकाश को छूने लगी है तो दूसरी ओर गरीबी जमीन के खड्डे मे धस गई है। भारतीय सविधान का जो महत्वपूर्ण सिद्धान्त एव लक्ष्य है–समाजवादी समाज की रचना उस लक्ष्य से देश भटक गया है।

बेरोजगारी की समस्या दिन पे दिन विषम होती जा रही है। भ्रष्टाचार के कारण महगाई बढती जा रही है। जिससे आम आदमी त्रस्त है। आधे से अधिक जनता निरक्षर है। आज भी मानव विकास रिपोर्ट ६६ के अनुसार ६२ प्रतिशत जनता सामर्थ्य रेखा से नीचे है 'गरीबी हटाओ आदोलन का लक्ष्य मात्र नेताओ की गरीबी हटाना हो गया है। देश मे उच्च शिक्षा बेची और खरीदी जा रही है। शिक्षा सस्थाए मात्र व्यापारिक केन्द्र बन गई हैं।

उपलब्धिया

अब तक कृष्ण पक्ष पर विचार किया गया। शुक्लपक्ष पर भी विचार करना समीचीन होगा। आलोच्य काल मे अनेक उपलब्धिया प्राप्त हुई हैं जैसे छ सौ से अधिक राज्यो का भारत सघ मे विलय भारतीय सविधान का निर्माण लोकतत्रात्मक शासन की स्थापना पचवर्षीय योजनाओ के द्वारा देश का बहुमुखी विकास जम्मू कश्मीर निजाम राज्य गोवा पाण्डिचेरि सिक्किम राज्यो का भारत सघ मे विलय पाकिस्तान से तीन बार सन १६४८ १६६५ और १६७१ के युद्धो मे विजय बगला देश को स्वतत्र करवाना अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्ति के प्रयास आदि।

देश की सब से बडी उपलब्धि यही है कि ५० वर्षो के अन्तराल मे अनेक राजनीतिक उथल पुथलों के बावजूद लोकतत्र पूरी तरह स्थिर रहा है जिसकी प्रशसा विश्व समुदाय मुक्त कट से करता है। देश के वर्तमान राष्ट्रपति डा० शकरदयाल जी शर्मा का लोकतत्र मे अटूट विश्वास है। विश्व उन्हे गाधीयुग का सच्चा प्रतिनिधि और डॉ० राजेन्द्र प्रसाद और डॉ० सर्वेपल्ली राधाकृष्णन की परम्परा का उज्जवल रत्न मानता है और उनके स्थितप्रज्ञ व्यक्तित्व और भारतीय लोकतत्र की भूरि भूरि प्रशसा करता है। यह भारत के लिए बडे गौरव की बात है।

लोकतत्र के मुख्य रूप से चार स्तम्भ माने गए हैं – (१) न्यायपालिका (२) विधायिका (३) कार्यपालिका और (४) पत्रकारिता। न्यायपालिका लोकतत्र की सर्वोच्च स्वायत्त सस्था है जो आम नागरिक के हितो की रक्षा करती है। सम्प्रति विधायिका और कार्यपालिका निष्क्रिय सी हो गई है और जब कि न्यायपालिका और पत्रकारिता अत्यन्त जागरूक और सक्रिय है। सच पूछा जाए तो आज देश मे यदि किसी का शासन चल रहा है तो मात्र न्यायपालिका का। वास्तव मे न्यायपालिका सविधान की व्याख्या के साथ साथ उसकी रक्षा करती और हर नागरिक की स्वतत्रता अधिकारो एव गौरव गरिमा की रक्षा भी करती है। हमारे राष्ट्रपति डॉ० शकरदयाल शर्मा भारतीय न्यायपालिका को 'मानवाधिकार आयोग' मानते हैं – 'सच तो यह है कि भारत का उच्चतम न्यायालय एक प्रकार से देश का मानवाधिकार आयोग ही है। इसने ऐसी प्रणाली भी विकसित कर ली है जिसके अतर्गत देश का आम नागरिक सिर्फ एक चिटठी लिखकर भी अपने अधिकारो पर सुनवाई करा सकता है। भारत मे सविधान सर्वोच्च है जब कि ब्रिटेन मे ससद सर्वोच्च है। भारत के सविधान के तहत उच्चतम न्यायालय सविधान की व्याख्या करता है। यही नहीं ससद द्वारा पारित कोई भी कानून सविधान की भावना के विपरीत पाए जाने पर उसे रद्द करने तक का अधिकार भी उच्चतम न्यायालय को है।

देश मे हरित क्रान्ति खाद्यान्न उत्पादन दूध व वाहन उत्पादन कपडा उत्पादन उद्योगों में आत्मनिर्भरता प्राप्त हुई है। निस्सन्देह भौतिक सुख साधनो की अभिवृद्धि हुई है। नगरो मे लोगो के जीवन स्तर मे भी वृद्धि हुई है। निर्यात की शक्ति भी बढी है।

यह उल्लेखनीय है कि अन्तरिक्ष मे उपग्रहो के सम्प्रेषण मे अभूतपूर्व सफलता मिली है। परमाणु उत्पादन क्षमता में आत्मनिर्भता प्राप्त हुई। भारत के प्रख्यात परमाणु वैज्ञानिक डॉ० राजा रामन्ना के अनुसार भारत के पास शत्रुओ से मुकाबिला करने के लिए पर्याप्त परमाणु क्षमता है। उसे और परमाणु परीक्षणो की आवश्यकता नहीं है।

पोखरन मे सन १६७४ मे किए गए शान्तिपूर्ण परमाणु परीक्षण मे अहम भूमिका निभाने वाले डॉ० राजारामन्ना का कथन है– देश की परमाणु क्षमता प्रदर्शित करने के लिए प्लूटोनियम बम का एक विस्फोट पर्याप्त है। कभी भी परमाणु हथियार बनाना चाहे तो हम एक निश्चित अविधि मे ऐसा कर सकते हैं लेकिन हमारी नीति अपने विकल्प खुले रखने की है।

अन्त मे निष्कर्ष के रूप मे यह कहा जा सकता है कि देश की जो भी उपलब्धिया रही हैं वे प्राय प्रथम चार दशको की हैं। राष्ट्रीय घोटाले तो पाचवे दशक की देन है। आजादी के इन पाच दशको मे आम आदमी हर क्षेत्र मे और हर मोड पर उपेक्षित उत्पीडित अपने अधिकारो से वचित और शोषित रहा है। आजादी का फल उसे नहीं मिल सका है।

ईसा पूर्व चौथी शताब्दी मे यूनान देश के सत्य के पुजारी सुकरात का परम शिष्य विश्वविख्यात दार्शनिक प्लूटो ने अपने 'गणतत्र' नाम ग्रथ मे शासन का सूत्र उच्च स्तर के सतो महात्माओ सन्यासियो व दार्शनिको के हाथों मे सौंपने की सिफारिश की थी और उसी प्रकार भारतीय राजनीति के जन्मदाता आचार्य चाणक्य ने अपने प्रसिद्ध ग्रथ चाणक्य सूत्र के प्रथम सूत्र में शासको को निर्देश दिया है – आप लोग राज्य को राष्ट्र की पवित्र धरोहर मानकर इस कार्य को राष्ट्रसेवा का तपोवन बनाकर रखे और एक आदर्श 'रामराज्य' की सस्थापना करे। इन विद्वानों के विचारों के प्रकाश मे नेताओ के राष्ट्रीय घोटालो के कटु अनुभवो के बाद क्या हम आगामी दशको मे शासक वर्ग में क्रान्ति की आशा कर सकते हैं ? यदि क्रान्ति हो तो स्वतत्रता की स्वर्ण जयन्ती मनाने की सार्थकता सिद्ध हो सकेगी। वास्तव मे आत्म मन्थन का नवनीत होगा–देश मे गाधीजी का स्वप्न 'रामराज्य' की स्थापना।

५ ८ १०४ शीलभवन
नामपल्ली स्टेशन मार्ग
हैदराबाद–५०० ००१

आर्यसमाज और कालेज की भव्य शोभायात्रा

बालिकाओं ने शराब और लाटरी छोडो — परिवार जोडो के नारे लगाये

कानपुर। आर्यसमाज गोविन्द नगर स्त्री आर्यसमाज एवम् आर्य कन्या इण्टर कालेज के ४६वे सयुक्त वार्षिक महोत्सव का प्रारम्भ भव्य शोभायात्रा निकाल करके किया। शोभायात्रा मे हजारो बालिकाओ ने शराब लाटरी तथा दहेज के विरोध मे नारेलगाते हुए लोगों से अपील की कि बुराईयो को छोडकर परिवारो को जोडे।

गोविन्द नगर आर्यसमाज मन्दिर से बैण्ड-बाजे तथा विभिन्न भजन मडलियो के साथ शोभायात्रा निकाली गयी। यह जलूस गोविन्द नगर के विभिन्न बाजारो से घूमता हुआ आर्य इण्टर कालेज के प्रागण में समाप्त हो गया। शोभायात्रा मे बालिकाओ के साथ भारी सख्या में आर्यसमाज के स्त्री पुरुष भी चल रहे थे।

शोभा यात्रा का नेतृत्व आर्यसमाज के प्रधान तथा कालेज के सस्थापक/प्रबन्धक श्री देवीदास आर्य ने किया। शोभायात्रा मे प्रमुख रूप से श्री देवीदास आर्य के अतिरिक्त प० लक्ष्मण कुमार शास्त्री सतराम सिह सेगर श्याम प्रकाश शास्त्री बालगोविन्द आर्य श्रीमती वीनस शर्मा (प्रधानाचार्या) कैलाश मोगा दर्शना कपूर लालाग्रोवर चन्द्रकान्ता कौशिल्या आर्या आदि थीं।

बालगोविन्द आर्य मत्री
आर्यसमाज गोविन्द नगर कानपुर ☆

शिविर सम्पन्न

आर्यवीरदल जनपद सहारनपुर का शिविर दिनाक १८ १०-६६ से २६ १०-६६ तक पब्लिक हायर सेकेन्ड्री स्कूल सापला बेगमपुर मे लगा जिसमे १४१ आर्यवीरो ने भाग लिया। जनपद सहारनपुर से १३० जनपद मु० नगर से ५ जनपद हरिद्वार से ५ हरियाणा प्रात से आर्यवीर ने भाग लिया शिक्षक श्री राजेशार्य श्री महीपाल श्री प्रियव्रत शास्त्री श्री अर्जुनसिंह ने आर्यवीरो को प्रशिक्षण दिया। बौद्धिक प्रशिक्षण श्री धर्मपाल जी श्री विश्वम्भर देव शास्त्री अधिष्ठाता श्री राजाराम शास्त्री के द्वारा दिया गया। शिविराध्यक्ष श्री सतीश कुमार सचालक श्री विरेन्द्र शास्त्री रहे। शिविर प्रभारी की जनेश्वर प्रसाद मत्री आर्यवीर दल जनपद सहारनपुर रहे। शिविर का समापन २७ १० ६६ को प्रात १० बजे श्री सुरेन्द्र सिह आर्य सचालक आर्यवीर दल जनपद हरिद्वार के द्वारा हुआ। आर्यवीरो ने व्यायाम आसन दण्ड बैठक जुडो कराटे लाठी आदि का प्रदर्शन किया शिविर पूर्णतया सफल रहा। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सेठ पालसिह व खालापार आर्यसमाज के प्रधान दी०वी०गौतम का विशेश सहयोग रहा।

जनेश्वर प्रसाद मत्री ☆

मुस्लिम युवती ने बच्चों सहित वैदिक धर्म अपनाया

कानपुर आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर मे समाज व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने एक २१ वर्षीय शिक्षित मुस्लिम युवती को उसके दो बच्चो सहित वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) की दीक्षा दी। उसका नाम शगुफ्ता से बदलकर वर्षा देवी रखा।

वर्षा देवी ने एक शिक्षित हिन्दू युवक श्री शेखर जायसवाल के साथ विवाह कर लिया। उनका स्वागत करने वालों मे अन्य लोगो के साथ गत सप्ताह हिन्दू धर्म अपनाने वाला मुस्लिम परिवार भी था।

बालगोविन्द आर्य मत्री ☆

पत्रकार साहित्यसेवी प० क्षितीश जी की स्मृति मे चार प्रतियोगिताए

पत्रकार प० क्षितीश जी की चौथी पुण्यतिथि के अवसर पर १३ १४ १५ दिसम्बर को श्रीमद् दयानन्द वेद विद्यालय मे स्वास्थ्य के लिए औषधि का चयन 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे वैदिक कामनाए' 'निष्काम कर्म और मानव उन्नति' विषयो मे एक विषय पर एक हजार शब्दो के निबन्ध लेखन यजुर्वेद के १० २० ३० या ४०वे अध्याय मे वेद स्मरण प्रतियोगिता अष्टाध्यायी स्मरण निघण्टु, धातुपाठ लिगानुशासन विषयो पर मौखिक और लिखित शास्त्र स्मरण प्रतियोगिता 'शिक्षा केवल आजीविका के लिए नहीं जीवन मूल्यो के लिए भी' 'आर्थिक उदारीकरण या दिवालियेपन की नीव' 'स्वतन्त्रता सेनानियो का स्वप्न' एव 'आज का भारत' विषयो मे से एक विषय पर हिन्दी भाषण प्रतियोगिता और 'नारीणा समुचित स्थान बहिरथवा गृहे' या 'राजनीतौ दण्डस्य विशेषावश्यकता' विषयो मे एक पर सस्कृत भाषण प्रतियोगिता होगी निबन्ध भाषण प्रतियोगिता के लिए ७०० ५००/ और ३००/— के तीन शास्त्रस्मरण के लिए १०००/ ८००/— और ६००/ के तीन तथा वेदस्मरण प्रतियोगिता के लिए उनकी स्मृति के आधार पर क्षमता के अनुसार विविध पुरस्कार दिए जाएगे। १५ दिसम्बर को शाम ४ बजे पुरस्कार वितरित किए जाएगे। ☆

वैदिक शिक्षा में वसु, रुद्र और आदित्य

पृष्ठ ३ का शेष

विश्वविद्यालयों के पर्यावरण में तैजी से प्रदूषण बढ रहे हैं जिससे भावी कर्णधारो का घोर चारित्रिक पतन दृष्टिगोचर होता है। दूरदर्शन तथा फिल्मी पत्र पत्रिकाओ के कारण चरित्र की परिभाषा विलुप्त है। जिस चरित्र के लिए मनु ने कभी कहा था —

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्व स्व चरित्र शिक्षरेन् पृथिव्या सर्वमानवाः।।

अर्थात 'भूमण्डल के सभी मानव इस आर्यावर्त्त राष्ट्र मे आकर चारित्रिक शिक्षा को ग्रहण करे। क्या यह वही चारित्रिक पूजी वाला राष्ट्र है ?

विवाह मडप के चारो ओर वसु, रुद्र तथा आदित्यगण

मधुपर्क विधि मैं वर महोदय के लिए यह निर्देश है कि वह प्रथम वसु, रुद्र एव आदित्यो को मधुपर्क भक्षणार्थ दे तदनन्तर स्वय भक्षण करे यथा —

(क) **वसवस्त्वा गायत्रेण छन्दसा भक्षयन्तु**
— वसुगण गायत्री छन्द से इस मधुपर्क का भक्षण करें

(ख) **रुद्रास्त्वा त्रैष्टुभेन छन्दसा भक्षयन्तु**
— रुद्रगण त्रिष्टुप छन्द से इस मधुपर्क का भक्षण करे

(ग) **आदित्यास्त्वा जागतेन छन्दसा भक्षयन्तु**
— आदित्यगण जगती छन्द से इस मधुपर्क का भक्षण करे

(घ) **विश्वे त्वा देवा आनुष्टुभेन छन्दसा भक्षयन्तु।**
— विद्वद्गण अनुष्टुप छन्द से इस मधुपर्क का भक्षण करे। इस विधि से द्योतित होता है कि मण्डप की पूर्व दिशा मे वसु दक्षिण मे रुद्र पश्चिम मे आदित्य तथा उत्तम दिशा मे विश्वेदेवा (विभिन्न विषयो के अनेक विद्वान्) अपने अपने आसन पर विराजमान होते थे। आज इनमे से कोई भी उपलब्ध न होने से चतुर्दिक मधुपर्क के छींटे दे दिये जाते हैं। हमारे सस्कारो का कितना विघटन हुआ है इसी एक विधि निर्देश से सब जाना जा सकता है। हिन्दू समाज मे आज का विवाह सस्कार मनोरजन तथा उपहास का विषय बन चुका है। प्राय लोग बीडी सिगरेट और मद्यपान से ग्रस्त होकर अनाप शनाप बकते रहते हैं। वैदिक सस्कारो की गरिमा नष्टप्राय ही है क्योकि वैदिक शिक्षा प्रणाली एव सस्कारो की प्रकृति उत्सन्न है। फलस्वरूप युवक-युवतियो मे स्वेच्छाचारिता इन्द्रियदोष तथा अविद्या आदि ने अपना साकार रूप धारण कर लिया है।

आधुनिक शिक्षा की सबसे बडी देन

सम्प्रति माता पिता दादी दादा के साथ पुत्र पौत्रो के सम्बन्ध टूट चुके है। एक ऐसी रिक्तता आ गई है जिसे आज Generation Gap कहते हैं। जिनसे आयु विद्या यश और बल की उपलब्धि थी वही लोग पीडितावस्था मे यथार्थ को भाग रहे है। पुत्र और पिता के सवाद मे कहीं भी Understanding दृष्टिगोचर नही होती। यदि धनाढ्य परिवार है तो नौकर चाकर ही माता पिता की सेवा करते है। यदि निर्धन परिवार है तो वृद्धजन अत्यन्त पीडित रहते हैं। पारिवारिक एकता के समस्त बन्धन टूट चुके हैं। पिता मरता है तो पुत्र लन्दन वाशिगटन मे कहीं होता है। उसके अभाव मे सब कुछ करना पडता है। अन्यथा शव को ठिकाना कैसे मिलेगा।

यह ससार परिवर्तनशील है ऐसा ही सब कहते हैं। किन्तु आत्मतत्त्व कभी परिवर्तन से प्रभावित नही होता। पृथिवी अन्तरिक्ष और द्युस्थानीय देवता आज भी वही हैं जो वैदिक युग मे थे। पञ्चसूक्ष्मभूत प्राण एव पञ्चस्थूलभूत प्राण भी वही है जो सृष्टि के आदि मे थे। यदि इनमे कुछ परिवर्तन होगा तो यह भू मण्डल मानवो तथा अन्य प्राणियों से शून्य हो जायेगा। अतएव परिवर्तन के लिए सृष्टि के तत्त्वभाव मे भी परिवर्तन अपेक्षित है। तब तक ऐसा नहीं होता तब तक केवल वैदिक शिक्षा प्रणाली एव सस्कारो मे परिवर्तन से मानव जाति का विकास श्रेष्ठतम विकास की कोई सम्भावना नही।

एक्स १० पश्चिमी पटेल नगर
नई दिल्ली ११० ०८ ☆

महाकवि कालिदास जयन्ती सम्पन्न

कच्चाहारी आश्रम पिथौरागढ मे कार्तिक शुक्ल एकादशी (२१ नवम्बर १९९९) को महाकवि कालिदास जयन्ती यज्ञ प० द्वारिका प्रसाद उप्रेती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। स्वामी गुरु [illegible] कच्चाहारी ने उक्त अवसर पर सस्कृत भाषा (देवभाषा) को वैदिक सस्कृति का [illegible] एकता व मानवतावाद हेतु गुरुक [illegible] पर बल दिया। ज्ञातव्य है कि [illegible] सस्कृत अग्रेजी आवश्यक विषय है ☆

शोक समाचार

श्री रामकुमार गुप्त दिवंगत

आर्यसमाज मीरानपुर कटरा (शाहजहापुर) के मत्री श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य के पूज्य पिता श्री रामकुमार गुप्त दिनाक १८-११-६६ को प्रात ६.४५ पर आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्त्येष्टि कर्म वैदिक रीत्यानुसार किया गया एव दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए ३ दिन तक यज्ञ किया गया। तथा गुरुकुल आर्ष महाविद्यालय रुद्रपुर (शाहजहापुर) के आचार्य श्री लाल देव जी के पौरोहित्य मे दिनाक २६-११-६६ को प्रेताहार आदि शुद्धि सम्पन्न हुई।

स्थानीय आर्यसमाज के सत्सग भवन मे एक शोकसभा सम्पन्न हुई जिसकी अध्यक्षता श्री सत्य प्रकाश आर्य ने की। सभा मे उपप्रधान श्री जगदीश प्रसाद जी ने उनके कार्यो की चर्चा की कि ६६ वर्ष की आयु मे यमालय गमन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि श्री गुप्त कर्मठ एव शात तथा धैर्यवान व्यक्ति थे।

गुप्त जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए शोकाञ्जलि अर्पित की गयी। अन्त मे दो मिनट का मौन धारण कर ईश्वर से दिवगत आत्मा की सद्गति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

ओमप्रकाश आर्य, -उप-मंत्री
आर्यसमाज मीरानपुर कटरा
शाहजहापुर (उ०प्र०) ☆

श्री मांगीलाल ठाकुर दिवंगत

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग (हाथीखाना) राजकोट के महामत्री श्री मागीलाल रतिलाल ठाकुर का दिनाक २-११-६६ के दिन उनके निवास स्थान पर उनका देहावसान हो गया। उनकी आयु-५७ वर्ष थी। आप मुफलीतेल के थोक के व्यापारी थे।

तकरीबन ३५ वर्ष से वे आर्यसमाज के अग्रणी कार्यकर्ता थे। उन्होने हाथीखाना राजकोट आर्यसमाज को तन मन, धनसे अति सुदर सेवा प्रदान की। आर्यसमाज भवन को नीव से लेकर दो मजला भव्य बनवाने मे उनका मुख्य यश है। उनके निधन से राजकोट हाथीखाना आर्यसमाज को बडी खोट हुई। उनकी कमी आने वाले सालों तक रहेगी।

दिनाक ३-११-६६ को रविवार को उनके निवास स्थान पर उनकी इच्छा अनुसार वायु शुद्धि यज्ञ और शाति यज्ञ रखा था। शातियज्ञ में प्रो० दयाल आर्य और टकारा आर्यसमाज के मत्री हसमुख भाई परमार और आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग (हाथीखाना) के प्रधान श्री परमभाई चौहाण ने भाव भरी श्रद्धाजली प्रदान कर परिवार जनो को आश्वासन दिया।

मत्री
आर्यसमाज, दयानन्द मार्ग राजकोट ☆

घीसू लाल (प्रजापत) दिवंगत

स्वामी ऋतमानन्द गुरुकुल विज्ञान आश्रम पाली (मारवाड) राज० के न्यासी व कोषाध्यक्ष नगर आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता महादानी समाज सेवक श्रीमान् घीसू लाल (प्रजापत) का दिनाक ६-११-६६ साय शनिवार आठ बजे हृदय गति रूक जाने से देहावसान हो गया यह दोनों सस्थाओ के लिए अपूर्णीय क्षति हुई है। परमपिता परमात्मा इनकी आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करे।

आचार्य कुलदीप ☆
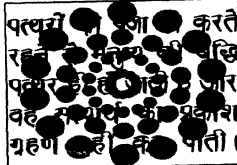
आर्य समाज निर्वाचन

आर्यसमाज आदर्शनगर अजमेर

प्रधान	डॉ० ज्ञानेन्द्र शर्मा
मंत्री	श्री सुबोध शिवहरे
कोषाध्यक्ष	श्री ओमदत्त शर्मा

आर्यसमाज खेडा अफगान

प्रधान	श्री आदित्य प्रकाश गुप्त
मंत्री	श्री कुवरपाल सिह
कोषाध्यक्ष	श्री सतपाल जी

आर्यसमाज रायसिंह नगर

प्रधान	प० धर्मचन्द्र पाठक
मंत्री	श्री जगदीश राय सिहल
कोषाध्यक्ष	श्री श्यामलाल अग्रवाल

आर्यसमाज सिविल लाइन्स, वैदिक आश्रम अलीगढ

प्रधान	श्री शिवस्वरूप शर्मा
मंत्री	श्री रामविलास गुप्त वेदार्थी
कोषाध्यक्ष	श्री ओम प्रकाश गुप्त

आर्यसमाज निरना

प्रधान	श्री माड्डा रेड्डी लचनगार
मंत्री	श्री ज्ञान रेड्डी
कोषाध्यक्ष	श्री अशोक पचाल

आर्यसमाज लखीमपुर

प्रधान	श्री कृष्ण शुक्ल
मंत्री	श्री रणवीर सिह आर्य
कोषाध्यक्ष	श्री ओम प्रकाश वैश्य

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बकेवर का वार्षिकोत्सव दिनाक १ से ३ नवम्बर तक धूमधाम और उल्लासपूर्वक मनाया गया। इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम में कई मूर्धन्य विद्वानों ने भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद) के विद्वान कुलपति आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री कानपुर की कु० सुश्री निष्ठा एव मथुरा के श्री तोरण सिह व इटावा के प्रेम सिह आर्य ने अपने अपने महोपदेशो प्रवचनो भजनोपदेशों एव भजनों से श्रोताओं को तीन दिन प्रेरणा प्रदान की और मत्रमुग्ध किया। एक दिन पूर्व शोभा यात्रा निकाली गयी।

प्रत्येक दिन यज्ञ प्रवचन भजन आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए। आर्यसमाज द्वारा सचालित प० श्रीराम आर्य कन्या जू० हा० स्कूल की छात्राओ की भजन व श्लोक प्रतियोगिताए आयोजित कर उन्हें कुलपति व सुश्री निष्ठा जी द्वारा सस्था की ओर से पुरस्कृत किया गया। १ नवम्बर को श्रीमती बहन तुअरि के घर पर भी यज्ञायोजन हुआ जिसमें छात्राओ अध्यापिकाओं सहित हजारो नागरिको ने भाग लिया।

समस्त नगर क्षेत्र प्रवचना व भजनो की प्रेरक तथा मनोमुग्धकारी स्वर लहरियों से तीन दिन तक अनुमत्रित रहा।

आर्य समाज बकेवर
बकेवर (इटावा)

शोक समाचार

पं० मनुदेव 'अभय' को मातृशोक

इन्दौर। आर्यसमाज के समर्पित वरिष्ठ कार्यकर्ता तथा आर्य लेखक परिषद के आजीवन सदस्य प० मनुदेव अभय' की पूज्य माताजी श्रीमती राम प्यारी बाई शुक्ला (पति स्व० प० राजाराम शुक्ल) का कार्तिक पूर्णिमा सोमवार दि० २४ ११-६६ को निधन हो गया। उनकी अन्त्येष्टि वैदिक विधि से श्री गणपति वर्मा पूर्व प्रधान आर्य समाज मल्हारगज इन्दौर ने सम्पन्न कराई। सस्कार के पश्चात स्थानीय सम्भ्रान्त नागरिको पत्रकारों तथा राजनीतिक नेताओ ने दिवगत आत्मा की सद्गति हेतु प्रार्थना तथा श्रद्धाजलि अर्पित की।

पं० गजानन्द आर्य को भगिनी शोक

आर्यसमाज सोनी फकिया सुरत के पुरोहित उपदेशक महाविद्यालय टकारा के स्नातक प० गजानन्द आर्य की ज्येष्ठ भगिनी श्रीमती सुशीला देवी का लम्बी बीमारी के पश्चत केवल ३० वर्ष की आयु मे दिनाक १६ ११ ६६ को देहान्त हो गया। प्रभु दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे एवम् स्वर्गस्थ के सम्पूर्ण परिवार को इस महान दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
विशाल शोभायात्रा

२५ दिसम्बर ६६ बुधवार प्रात १० बजे श्रद्धानन्द बलिदान भवन से प्रारम्भ होकर लालकिला मैदान मे सार्वजनिक सभा के रूप मे परिणत हो जाएगी। आप सपरिवार एव इष्ट मित्रो सहित हजारो की सख्या मे पधारने की कृपा करे।

निवेदक

महाशय धर्मपाल — *प्रधान*
डॉ० शिवकुमार शास्त्री — *महामन्त्री*

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य

आदर्श वैदिक विवाह सम्पन्न

रामगज अजमेर निवासी आर्योपदेशक प्रो० बुद्धि प्रकाश आर्य के सुपुत्र चि० द्विजेन्द्र आर्य का शुभ विवाह वैशालीनगर अजमेर निवासी श्रीमती डा० सरोज माथुर की सुपुत्री सौ० अनुपमा के साथ वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। वैवाहिक आदर्शों का निर्वहन करते हुए रुद्रपुर (उ०प्र०) के आचार्य डा० विश्व मित्र शास्त्री ने अत्यन्त प्रभावशाली ढग से विवाह सम्पन्न कराया। इस अवसर पर प्रतापगढ (उ०प्र०) के प्रख्यात वैदिक विद्वान डॉ० स्वामीनाथ आचार्य भी उपस्थित थे।

बुद्धि प्रकाश आर्य

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ में वेद प्रचार

आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ के तत्वावधान मे २२ से २६ दिसम्बर तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है। इस अवसर पर योग सम्मेलन ध्यान योग शिविर विश्व शान्ति महायज्ञ योग द्वारा रोग उपचार अखण्ड गायत्री अनुष्ठान तथा वैदिक वृद्धाश्रम मे वृद्धो का प्रवेश समारोह आदि अनेको कार्यक्रम रखे गये हैं। समारोह मे आर्य जगत के विशिष्ट विद्वान भजनोपदेशक आदि पधार रहे है। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर कार्यक्रम के सफल बनाये।

भूल सुधार

सार्वदेशिक साप्ताहिक २४ नवम्बर ६६ के अक मे ग्यारहवे पृष्ठ पर छपे चित्र के नीचे की भाषा मे पुस्तक का नाम गलत छप गया है। पुस्तक के नाम को आर्य समाज एक चिन्तन इस प्रकार पढे। असुविधा के लिए खेद है।

सम्पादक

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 15-12-96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/96
R N No 626/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Pr... NDPSO on 12/13-12-1996

स्वतन्त्रता की ५०वीं वर्षगाँठ पर

विशाल यज्ञ

एवं

शोभायात्रा

वेद मन्दिर, मसानी चौक, मथुरा

२१–२२ दिसम्बर १९९६

स्वतन्त्रता ज्योति मथुरा से दिल्ली की ओर

गुरु विरजानन्द धाम मथुरा से छाता, कोसी, होडल, महर्षि दयानन्द स्मारक केन्द्र वनचारी, पलवल, बल्लभगढ़ तथा फरीदाबाद होती हुई।

२५ दिसम्बर १९९६ को

श्रद्धानन्द बलिदान यात्रा

दिल्ली में सम्मिलित होगी

देश भर की प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं द्वारा यह स्वतन्त्रता ज्योति समस्त प्रदेशों में जाकर जन-जागरण का कार्य करेगी।

वन्देमातरम् रामचन्द्रराव	डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री	सूर्यदेव
प्रधान	मन्त्री	कार्यक्रम संयोजक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

३/५ दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली

फोन ३२७४७७१, ३२६०९८५

मथुरा के विभिन्न सामाजिक धार्मिक संगठनों के प्रतिनिधियों की स्वागत समिति

सार्वदेशिक प्रकाशन दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली–2 से प्रकाशित

ओ३म्

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

दूरभाष ३२७४७७१ ३२६०९८५ | आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये | वार्षिक शुल्क ५० रुपए एक प्रति १ रुपया

वर्ष ३५ अक ४५ | दयानन्दाब्द १७२ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७ | सम्वत् २०५३ | मा०शी०शु० १३ २२ दिसम्बर १९९६

स्वतन्त्रता की ५०वीं वर्षगांठ

क्रान्ति-वर्ष

जब तक यह पत्र आप तक पहुचेगा तब–तक **क्रान्ति वर्ष का शुभारम्भ** गुरु विरजानन्द जी की कर्मस्थली तथा युग पुरुष महर्षि दयानन्द जी की शिक्षा स्थली मथुरा से हो चुका होगा। देश की वर्तमान परिस्थितियो को देखते हुए महर्षि दयानन्द के अनुयायी एकाग्र मन से इस बात पर विचार करे कि महर्षि दयानन्द ने किन भावनाओ और सकल्पों को लेकर अपने जीवन का एक-एक क्षण राष्ट्र सेवा को समर्पित किया था। देश प्रेम तथा स्वराज्य महर्षि दयानन्द का प्रथम एव अतिम लक्ष्य था। आइए विचार करे क्या उस श्रेणी का देश प्रेम हमारे समाज मे आज विद्यमान है ? क्या हमारा देश आज स्वराज्य की परिभाषा पर खरा उतरता है ? क्या वास्तव मे आज देश के नागरिको की भावनाओ एव इच्छाओ का आदर हमारे शासक कर पा रहे है ? क्या आर्यसमाज के महान योद्धाओं ने इस प्रकार के स्वराज्य के लिए बलिदान दिये थे ? यदि नहीं तो **आइए एक बार फिर आर्यसमाज की उसी ताकत और सगठन शक्ति का प्रदर्शन करते हुए राष्ट्र के लिए वास्तविक स्वराज्य की प्रेरणा का प्रचार करने के लिए पुन वही सकल्प ले जो किसी समय महर्षि दयानन्द जी ने गुरु विरजानन्द जी के समक्ष लिया था।** ☆

सभा प्रधान श्री वन्देमातरम् जी अस्वस्थ

सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान प० वन्देमातरम रामचन्द्र राव के अचानक अस्वस्थ हो जाने के कारण उन्हे दिल्ली के श्यामलाल नर्सिंग होम मे उपचार हेतु दाखिल कराया गया है जहा अनुभवी एव योग्य डाक्टरो द्वारा उनके स्वास्थ्य की विस्तृत जाच की जा रही है। गत १५ दिसम्बर रात्रि को श्री वन्देमातरम जी को छाती मे दद हुआ था। राजधानी मे अत्यधिक शीत ऋतु के कारण उनका स्वास्थ्य बिगडा। उनके पूर्णत स्वस्थ हो जाने तक आगामी माह के समस्त कार्यक्रमो को रद्द कर दिया गया है। प्रत्येक कार्यक्रम क आयोजको को श्री वन्देमातरम जी का लिखित सदेश भेजा जा रहा है। ☆

सरकारी समिति के सदस्य का राष्ट्रवादी प्रश्न

स्वतन्त्रता के सच्चे उत्तराधिकारी कहां हैं ?

भारत की आजादी की ५०वीं वर्षगाठ मनाने के लिए बनी समिति मे शामिल होने से इन्कार करके विख्यात पत्रकार निखिल चक्रवर्ती ने वस्तुत एक महत्त्वपूर्ण और सामयिक सवाल उठाया है। नशाखोर जुआरी और चोर डाकू भी जिस देश मे पूजा के थाल को या पूजा की वेदिका को अपवित्र नहीं होने देता। वहा अगर कोई जबरन पवित्र स्थान पर अपात्र को बिठा दे तो कोई भी उस पूजा में शामिल नही होगा। भारत का स्वाधीनता आदोलन वास्तव मे त्याग तपस्या और बलिदान का इतिहास है जब भारत की जनता ने अपनी पवित्र नैतिक शक्ति का शानदार प्रदर्शन किया था और साम्राज्यवाद की जडे हिला दी थीं। तब पहली बार विश्व को यह मानना पडा कि मनुष्य की आध्यात्मिक शक्ति वहशी बर्बरता क्रूरता और दमन पर विजय प्राप्त कर सकती है। साम्राज्यवादी ताकतो के समर्थको को तब लगा था कि किसी प्रकार की चाटुकारित स्वार्थपरता और जालसाजी तप पूत जन आदोलन के समाने नहीं टिक सकती। गए बरसों मे उसी स्वाधीनता आदोलन की मूल भावनाओ उपलब्धियो को लगातार नेस्तानाबूद किया गया और पिछले ५० वर्षों मे नेताओं ने लगातार अपनी नैतिक शक्ति को खो कर भौतिक ससाधन सदिग्ध तरह से इकट्ठे किए हैं। आज के बिगडते माहौल मे आजादी की ५०वीं वर्षगाठ मनाने का निश्चय एक स्वागतयोग्य कदम होता तब जबकि उस समिति मे ऐसे लोगो को शामिल किया जाता जो उस युग के सच्चे उत्तराधिकारी हैं। भ्रष्टाचार के प्रतीक लोगो को समिति में बिठाने का कदम तो वर्षगाठ मनाने की भावना के ठीक विपरीत होगा। निखिल चक्रवर्ती का कहना बिल्कुल सही है कि उक्त समिति मे उन लोगो को शामिल करना चाहिए था जो किसी न किसी रूप मे स्वाधीनता आदोलन से जुडे थे। आज वैसे लोग किसी हालत मे हो और किसी भी पार्टी मे हो उन्हे समिति मे शामिल किया जाना ही चाहिए था। इसके अलावा उन मत्रियो या अन्य लोगो को उक्त समिति मे शामिल नही किया जाना चाहिए था जिन पर भ्रष्टाचार के आरोप हैं। ऐसा होने पर आजादी की वर्षगाठ से सम्बन्धित कार्यक्रमो को भी लोग सरकारी पाखड समझेगे। आज भी स्वाधीनता आदोलन की भावनाओ को याद करके जनचेतना जगाने का काम किया जा सकता है। आज भी भगत सिह और चन्द्रशेखर आजाद से लेकर नरमपथी गाधीवाद नेता तक सभी घोर अधकार मे आशा की किरण के रूप मे राष्ट्र के आगे लाए जा सकते है। यह सही है कि आज जिन लोगो पर भ्रष्टाचार के आरोप है उन्हे तब तक दोषी नही कहा जा सकता जब तक अदालत दोषी न करार दे फिर भी जब तक फैसला नही होता तब तक वे सदिग्धता की परिधि मे तो है ही

स्वाधीनता की वर्षगाठ मनाने सबधी समिति मे भ्रष्टाचार के आरोपियो को शामिल करने का अर्थ है उन लोगो को महिमामडित करना। जिसे देश के ज्यादा लोग स्वीकार नहीं करेगे अत वरिष्ठ पत्रकार चक्रवर्ती ने उचित समय पर यह बात उठायी है। ☆

विश्व की समस्त आर्यसमाजों की सूची

विश्व की समस्त आर्य समाजों तथा आर्य प्रतिनिधि सभाओं को सूचित किया जाता है कि १९७५ में प्रकाशित आर्यसमाजों की सूची को शीघ्र ही पुन प्रकाशित किया जाना है। गत २२ वर्षो में जितनी भी नई आर्यसमाजें हुई हो वे अपना-अपना पूरा पता तथा दूरभाष नम्बर सभा कार्यालय को तत्काल सूचित कर दें। पुरानी आर्यसमाजों से निवेदन है कि अपना-अपना टेलीफोन नम्बर इस नई डाइरेक्टरी में छपने हेतु भेज दे। नई डाइरेक्टरी कम्प्यूटर पर प्रकाशित होगी परन्तु आर्यसमाजों से किसी प्रकार का प्रकाशन शुल्क नहीं लिया जा रहा है। अत आज ही अपनी आर्य समाज का पता तथा दूरभाष नम्बर सभा को भेज दें। यदि आपकी जानकारी में किसी अन्य आर्यसमाज का पूरा पता एव दूरभाष नम्बर हो तो उसे भी निम्न पते पर हमें सूचित करने का कष्ट करें।

'आर्यसमाजों की सूची'
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५ दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली २

फोन ३२७ ४७७१
३२६ ०९८५

डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मत्री

सम्पादक- डा॰सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्यसमाज ही सच्चा तीर्थ है

— गोपाल आर्य

आदरणीय पाठको देव दयानद की शक्ति आदर्शा/करिश्मो से आप भली भाति परिचित हो किन्तु मुझ दोहरान एव पुन याद दिलाने की आदत सी बनी हुई है सो जब दव दयानद की हृदय की ज्वाला झूठे तीर्थो सन्यासियो को देख तथा गगा और नर्मदा आदि से शात न हुई तब उन्होन सत्य की खोज मे पूज्य गुरु दण्डी स्वामी विरजानद जी के द्वार खटखटाने का मार्ग ज्ञात हुआ। हृदय की ज्वाला शान्त करने के लिए वे गुरु चरणा मे बैठकर सच्चे शिव एव सत्य विद्या ध्ययन की इच्छा प्रकट की। स्वामी विरजानद ने दयानद स्वामी से पूछा क्या कुछ व्याकरण पढा हे ? दयानद जी उत्तर देते हैं सारस्वत पढा है। स्वामी विरजानद जी ने दयानद जी को आदेश दिया कि पहले सब अनार्ष ग्रन्थो को यमुना मे प्रवाहित कर दो तब ही सत्य आष ग्रन्थो के पढन के अधिकारी बन सकते हो। शिष्य इस कठिन परीक्षा मे उतीर्ण हो जाते है। स्वामी दयानद जी की इच्छा भी हृदय की ज्वाला सत्य असत्य को पहचानने तथा पाखण्ड/अन्धविश्वास की धज्जिया उखाडने के लिए आतुर थी। स्वामी विरजानद ने दयानद जी को वेदो/आष ग्रन्थो का तथा सच्चे शिव का दर्शन जमकर कराया। जिसका परिणाम आज हम आर्यसमाज एव वेदो की ओर से दिशा निर्देश कर रहे है। मेरा आशय यह भी है कि क्या आज आर्यसमाजे/आर्य जाति इस सत्य असत्य की पहचान को चार चाद लगा बैठी है ? गली गली/चबूतरे एव घर की दिवारे सब पाखण्ड के जाल मे बुरी तरह फसे हुये हैं। हरिद्वार बद्रीनाथ केदारनाथ गगोत्री काशी मथुरा और वैष्णोदेवी आदि क्या वैदिक धर्म एव ऋषि समाज मे ये तीर्थ है ? तो स्पष्ट एव प्रमाण भी सुनाई/दिखाई देते है कि ये तो तीर्थ नही बल्कि ठगो/पाखण्डियो की ऊची दुकाने जमकर वेद विरुद्ध एव ऋषि समाज विरुद्ध कार्य करती आ रही हैं। अविद्या अधर्म अवगुणो का क्षणभर भी त्याग नही होता। अविद्या अधम एव झगडा फसाद फैलाने मे इनकी मूल देन है। रमणीय दार्शनिक एव पयटन स्थल जरूर है। महर्षि तीर्थ किसको कहते है 'जिस से दुखसागर से पार उतरे कि जो सत्यभाषण विद्या सत्सग यमादि योगाभ्यास पुरुषार्थ विद्यादानादि शुभकर्म है उसी का तीर्थ समझता हू, इतर जलस्थलादि को नहीं क्योकि जना यैस्तरन्ति तानि तीर्थानि' मनुष्य जिन करके दुखो से तरे उनका नाम तीर्थ है।

मुक्ति के साधन मे भी ऋषि ने स्पष्ट लिखा है कि ईश्वरोपासना अर्थात योगाभ्यास धर्मानुष्ठान ब्रह्मचर्य से विद्या प्राप्ति आप्त विद्वानो का सग सत्यविद्या सुविचार और पुरुषार्थ आदि। अध्ययन काल समाप्त हुआ तो स्वामी दयानद जी गुरु दक्षिणा मे कुछ लौंग लेकर गुरु के चरणो मे उपस्थित होते हुए बोले गुरुवर मेरे पास देने के लिए कुछ नहीं है आको लौंग बहुत पसद है इसलिये आध सेर कही से मागकर लाया हू। गुरु विरजानद बोले 'दयानद लौंग तो बाजार मे भी मिल जायेगी मैं तुझसे वही चीज चाहता हू जो तेरे पास है और तेरे सिवाय किसी के पास नहीं है। दयानद ने विनम्रतापूर्वक कहा गुरुवर आप आदेश कीजिए मेरे पास ऐसी कोई वस्तु नही है जो मै आपकी भेट न कर सकू। दण्डी स्वामी ने कहा दयानद। मन तेरे हृदय म एक ज्वाला के दर्शन किए और उस ज्वाला को अपनी ओर से दिशा देने का प्रयत्न किया है। वह है ज्ञान की ज्वाला सत्यान्वषण की ज्वाला सत्य धर्म की ज्वाला से अवेदिक मतमान्तरो के अधकार का मिटाओ और वेदिक धर्म को फैलाओ देश का उपकार करो ओर मानव जाति का उद्धार करो वत्स दयानद। बस यही गुरु दक्षिणा मै तुझसे चाहता हू। अन्य किसी सासारिक वस्तु की मुझे इच्छा नही। दयानद गुरु की इस आज्ञा को मानकर वेदो के दिव्य अस्त्र शस्त्र से सुसम्पन्न होकर जन कल्याण के लिए कर्मक्षेत्र मे उतरे और सारा जीवन मानव कल्याण वेद प्रचार पाखण्ड खण्डन और एक मत की अग्नि सुलगाने मे लगाकर उसी पर शहीद हो गए। सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है। समस्त आर्य वीरो आर्यसमाजो को पुन याद दिलाते हुए आशा रखता हू कि उठो आर्य वीरो आलस्य/गहरी निद्रा का त्यागकर ऋषि की गरिमा को गम्भीरता से पहचानो और उनकी गरिमा को यथावत बनाये रखने के लिए उनके ही आदर्शों का ही पालन करना/करवाना हमारा परम धर्म है तभी ऋषि सपनों को साकार किया जा सकता है यही हमारा तीर्थ है। जल आदि स्थल तराने वाले नहीं किन्तु डुबाकर मारने वाले हैं।

सैनिक ऋषि दयानद पाखण्ड खण्डनी पताका
भिडकोट पौडी गढवाल (उ०प्र०) ☆

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के

साधारण वार्षिक अधिवेशन की सूचना

अधिवेशन १४ जनवरी १९९९ को लखनऊ में

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वार्षिक साधारण अधिवेशन की बैठक आगामी १४ जनवरी १९९७ (मगलवार) को प्रात १० बजे से आर्यसमाज मदिर गणेशगज लखनऊ मे होगी। समस्त प्रतिनिधियो से निवदन है कि समय पर उपस्थित होकर बैठक मे अवश्य भाग लें।

नोट *प्रतिनिधि फार्म २१ दिसम्बर को मथुरा मे आयोजित होने वाली अन्तरग बठक मे सभी सदस्यो का दे दिये जायेग सभी सदस्य प्रतिनिधि फार्म प्राप्त करके १४ जनवरी से पूर्व भरकर आर्यसमाज गणेशगज के पते पर भिजवाने की व्यवस्था करे। अथवा जिनके पास फार्म उपलब्ध हो वह भरकर शीघ्र भेज।*

भवदीय
डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा प्रधान

स्वामी आनन्दबोध के नाम

पर सडक मार्ग का नामकरण

पाठको को विदित होगा कि सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी के नाम पर दिल्ली के किसी प्रमुख मार्ग का नामकरण किए जाने का प्रस्ताव दिल्ली सरकार के पास विचाराधीन है। इस सदर्भ मे राष्ट्रीय राजधानी भ्रष्टाचार विरोधी समिति के अध्यक्ष श्री मुकेश सैनी ने विकास मार्ग का नाम स्वामी आन्नदबोध जी के नाम पर रखे जाने का प्रस्ताव सरकार को भेजा था। दिल्ली के मुख्यमत्री श्री साहिब सिह ने अपने पत्र द्वारा उन्हे सूचित किया है कि उनका यह सुझाव उपयुक्त कार्यवाही हेतु सम्बन्धित विभाग को भिजवा दिया है। वैसे सिद्धात रूप मे सरकार ये प्रस्ताव पहले ही स्वीकार कर चुकी है कि किसी एक मार्ग का नाम स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी के नाम पर किया जायेगा। ☆

न्यायमूर्ति श्री महावीर सिंह जी अस्वस्थ

सार्वदेशिक न्यायसभा के अध्यक्ष तथा उच्च न्यायालय के सेवा निवृत्त न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री महावीर सिह जी गत माह गभीर रूप स अस्वस्थ रह। लम्बी अवधि क बुखार की जाच क [illegible] न बताया ह कि उनक खून म [illegible] प्रभ[illegible]। इस [illegible] क लिय [illegible] बम्बई ले जाया गया। श्री महावीर सिह जी के स्वास्थ्य मे अब धीरे धीरे सुधार हो रहा है यहा तक कि कैसर प्रभाव के भी शून्य होने की पूर्ण सम्भावना है क्योकि अब केसर का इलाज भी सम्भव हो गया हे। अब कसर प्राणघातक रोगो की सूची म नही माना जाता।

श्री महावीर सि[illegible] जी के अस्वस्थता का समाचार मिलते ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव न्यायसभा के सयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट दिल्ली सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव मत्री श्री वेदव्रत शमा तथा गुरुकुल के कुलपति डा० धर्मपाल उनका हाल मालुम करने के लिए उनक नोएडा स्थित निवास पर पहुच तथा शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की। ☆

बुद्ध, महावीर, गौतम, शंकर - महर्षि दयानन्द और म० गान्धी के देश में आचार हीनता क्यों ?

मनुष्य कार्य करने में स्वतन्त्र है, अच्छे या बुरे जैसे चाहे करे

महाभारत काल के समय से ही हमारा पतन हो चुका था। ईश्वर और धर्म के नाम पर हिसा ने अच्छाइयो पर आधिपत्य कर लिया था उस समय म० बुद्ध म० गौतम फिर शकर और काफी समय के बाद महर्षि दयानन्द म० गान्धी ने धर्म कर्म पर प्रभावी हिंसा का घोर खण्डन कर **'अहिंसा परमो धर्म'** का नारा देकर सस्कार ही न जाति को सस्कारवान बनाने का पाठ पढाया था। ऐसे महापुरुषो के सत्य सिद्धान्त आज भी कहीं कहीं पर देखने सुनने को मिलते हैं। अभी कुछ समय पहले की बात है—

दृश्य है राजतरगिणी का लेखक कल्हण के देश कशमीर जहा की विद्वत्ता पाण्डित्य का विश्व मे एक अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है आज उस देश के अन्य इन्सानो की क्या बात कहे – हा कशमीर का ब्राह्मण भी मासाहारी बन चुका है। समय का फेर ही तो है।

कशमीरी पडित की वरयात्रा देश की राजनीति के जाने माने नेता श्री प० माखन लाल फोतेदार के सुपुत्र का शुभ मुहूर्त्त पाणि ग्रहण सस्कार का।

मुझे भी उनके यहा सम्मिलित होने का सुअवसर मिला। बारात दिल्ली से गुडगावा जनपद मे जानी थी। मै चौ०लक्ष्मीचन्द के साथ गुडगावा पहुचा। धीरे धीरे छोटे बडे स्त्री पुरुषो नेताओ का आगमन शुरू हुआ। द्वाराचार के बाद जब भोजन पर गये तो तरह तरह के व्यञ्जनो को देखकर सोचा कि कशमीरियो के भोजन मे सभी कुछ होगा। मैं एक तरफ हटकर खडा था श्री फोतेदार जी मुझे कुछ न खाते देख समझ गय कि मैं भोजन क्यो नही कर रहा हू। मेरे पास आये और बोले शास्त्री जी आप भोजन कीजिए – सभी भोजन शुद्ध सात्विक है। विवाह जैसे पवित्र समय मे हिसा का क्या काम।

उनके पवित्र विवाह बेला पर अहिसा का साम्राज्य मै ने रुचिकर भोजन किया। मैंने क्या न जाने कितने महानुभावो ने अहिंसा आचरण पर फोतेदार जी को बधाई दी। मैं इतने से सन्तुष्ट नही हुआ –

तृतीय दिवस दिल्ली मे श्री फोतेदार जी ने विवाह के उपलक्ष्य मे प्रीतिभोज दिया। मैं चौ० लक्ष्मीचन्द्र के साथ प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम सहित प्रीतिभोज मे भी सम्मिलित हुए। हजारो की भीड मैंने सोचा गुडगाव मे भोजन सात्विक था पर यहा का भोजन मिला जुला होगा।

इतने मे श्री गुलाव नवी आजाद भी आ गये और बोले कशमीरियो का भोजन है। यहा तो सब प्रकार का खान पान होगा। परन्तु महान आश्चर्य देखकर हुआ कि घर पर भी शुद्ध सात्विक आहार पेय पदार्थ दिये जा रहे थे।

मैंने मन मे सोचा कि फोतेदार जी आप महान हैं – इस पावन बेला पर जिसमे पुत्रवधू ने अपने सोलहो श्रगार से घर सजाया हो और यह कल्पना की हो कि इस घर को अपने वैभव से भरपूर करने आई हू ऐसे समय ये जीव की हिसा मेरे लिये अभिशाप न बने अहिसा का पावन सन्देश वरदान बनकर मेरे जीवन को सुखी एव समृद्धि शाली बनाये।

स्वर्ग से देवता भी ऐसे समय मे अपना आशीर्वाद बिखेर रहे होगे वह भी आशीर्वाद मे – **"क्रीडन्तौ पुत्रै र्न पृभि मेदियानौ स्वे गृहे"** आप चक्रवाकीव दम्पती चकवा चकवी की भाति घर आगन मे क्रीडा करें प० माखन लाल जी फोतेदार आपने अपन को उदाहरण रूप मे प्रस्तुत किया। हमारा भी पूरे परिवार को शुभाशीर्वाद –

उदाहरण बनने का प्रयास करो ?

कभी चर्चा जब चलती है तो सहसा यह वाक्य सुनने को मिलता है कि पहले आर्यसमाज का व्यक्ति अदालत मे कुछ कहता था तो उदाहरण माना जाता था कि आर्यसमाजी झूठ नहीं बोलता है उसके कथन को सत्य मानकर ही निर्णय कर दिये जाते थे।

सहारनपुर की अदालत मे इलाहाबाद के अच्छे वकील आये थे जज ने उनसे पूछा था क्या आप ला० राम गोपाल शालवाले को जानते हो यदि हा तो बोलो वह कैसे व्यक्ति है वकील साहब ने बडे निर्लेप भाव से कहा – कि वह एक सच्चे और ईमानदार व्यक्ति हैं। जज ने पूछा क्या आप उन्हे जानते हो। उन्होने कहा – मैने सुना है देखा नही है वह जो कहते हैं वह मनसा वाचा कर्मणा सत्य पर आधारित होता है। जज साहब ने कहा कि देखो यह है ला० रामगोपाल शालवाले। वकील सहाब तुरन्त उनके पैरो मे हाथ लगा नतमस्तक हुए। और आज भी ऐसे व्यक्ति है जिन्हे ईमानदार मानकर उदाहरण रूप मे प्रस्तुत किया जा सकता है।

उदाहरण बनने मे बडी साधना और साहस को बटरोना पडता है – मैने यह विषय क्यो प्रस्तुत किया है अभी अभी कुछ दिन हुए दो चार विवाहो मे जाने का अवसर मिला दोनो अवसरो मे जमीन आसमान का अन्तर था। समय समय पर ऐसे अनाचार के दृश्य देखने को अवश्य मिल जाते हैं तब मस्तक शर्म के मारे झुक जाता है।

जिन समारोहो की बात करने जा रहा हू वह बडे भले व्यक्ति चोके है – पडित जी विवाह वैदिक रीति से किया जायेगा। बडी अच्छी बात है परन्तु जब व्यवहार मे देखा तो सस्कार तो गौण हैं पडित जी समय थोडा है जल्दी निपटाइये जिस बात का महत्त्व था वह गौण हो गया। सस्कार समय पर नहीं – क्यो ? आने वाले बिना भोजन किये चले जायेगे भोजन स्वागत का महत्त्व है –

लोगो का आगमन भारी स्वागत का आयोजन चलिये आप लोग भोजन कीजिये। भोजन भी दो प्रकार का है – शाकाहारी लोगो के लिए अलग शुद्ध शाकाहारी है। मासाहारियो के लिए उनकी रुचि अनुसार – बकरे का गोश्त तथा मुर्गे मछली आदि बनाया गया है शराब का दौर अलग चल रहा है।

हमने पूछा – यह क्या हो रहा है बोले क्या करे सभी तरह के व्यक्ति आयेगे उनके लिए वैसा ही व्यञ्जन बनाया है सभी का सत्कार करना है। पूजा पाठ धर्म कर्म सस्कार सभी को एक किनारे रखकर अहिसा की घोर तिलाञ्जलि दी जा रही है आप जो चीज नहीं खाते हो फिर उस हिसा का जामा पहनकर जीवो की हत्या कर विशेष भोजन के नाम पर हिसा का जामा पहनाकर सुस्वादु भोजन परोसा जा रहा है। ऐसे उदाहरण बडे बडे महान आत्माओ के द्वारा किए जाते हैं। बडप्पन इसी का नाम है कि जिसमे धर्म के रूप म अहिसा सत्य प्रेम की बलि दी जा रही है फिर हम कहते हैं हम बडे धर्मात्मा है हिन्दुत्व की रक्षा का दायित्व ओढे हुए हैं – सस्कारवान जाति सस्कार हीन बनती जा रही है।

गिरने की भी कोई सीमा है और उच्चादर्श बनने हेतु म० बुद्ध म० गौतम आचार्य शकर महर्षि दयानन्द म० गाधी बन कर सत्य सिद्धान्तो की रक्षा भी कर सकते हैं इसीलिये कहा है कि उदाहरण बनने का प्रयास करो –

डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्वेदना और दान

गत नवम्बर मास के प्रारम्भ मे भारत आन्ध्र प्रदेश प्रान्त मे भारी तूफान आया बाढ आई इन दो प्रकोपो से बहुत हानि जान और माल दोनो की हुई।

सम्वेदना के रूप मे मारीशस के राष्ट्रपति महामहिम माननीय श्री कसाम उत्तिम जी ने और प्रधान मन्त्री माननीय डाक्टर एव वैरिस्टर नवीचन्द्र रामगुलाम जी ने भारत के प्रधानमन्त्री माननीय श्री देवगौडा जी को सम्वेदना के सन्देश भेजे और प्र० मन्त्री जी ने ५० हजार अमेरिकी डालर की रकम भेजी है।

मारीशस के प्रथम प्रधानमन्त्री स्व० डाक्टर शिवसागर रामगुलाम जी का और वर्तमान प्रधानमन्त्री डाक्टर तथा वैरिस्टर नवीनचन्द्र रामगुलाम जी दोनो ने भारत की औपचारिक यात्राये की और भारतीय नेताओ से तथा जनता से भी पिता और पुत्र का गहरा सम्बन्ध रहा है और है।

सन १९५५ ई० मे भारत नई दिल्ली सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से स्वामी ध्रुवानन्द जी प्रचारार्थ यहा पधारे थे तो मारीशस के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री स्व० डाक्टर रामगुलाम जी का उन के साथ गहरा सम्बन्ध रहा वे स्वामी जी को हमेशा अपने निवास स्थान पर भोजन पर बुलाया करते थे। मौके पर काफी सत्सग होते थे।

***प० धर्मवीर घूरा** शास्त्री एम०बी०ई०*
अध्यक्ष मोरिशिस हिन्दी लेखक सघ उपाध्यक्ष भारत मोरिशिस मैत्री सघ।

आज के जीवन-जगत् को आर्यसमाज की आवश्यकता

– डॉ० महेश विद्यालकार

आर्यसमाज की मौलिक विशेषता है सभी क्षेत्रो मे वैचारिक क्रान्ति और वैज्ञानिक व व्यावहारिक चिन्तन। जीवन और जगत की सबसे बडी सम्पदा विचार है। विचारो से ही मानव उठता और गिरता है। विचारो से ही मानव देवता और राक्षस बनता है। आज का भौतिक जीवन जगत परम सत्ता परमेश्वर पर अनास्था अश्रद्धा एव प्रश्नचिह्न लगा रहा है। नवशिक्षित नव पीढी मे नास्तिकता बडी तेजी और गहराई से फैलती जा रही है। जिसके परिणाम सामने आ रहे है–अशान्ति असन्तोष कोलाहल अनुशासन हीनता अपराध प्रवृत्ति मारकाट आदि के रूप मे। आर्यसमाज का चिन्तन इस सन्दर्भ मे जीवन और जगत का आस्तिकता का अमर सन्देश दे सकता है। वैदिक विचारधारा मे एकेश्वरवाद का सीधा सच्चा सरल उपाय बताया गया है। जैसा कि वेद उपदेश देता है–

ईशावास्यमिद सर्व यतकिच जगत्या जगत।

इस सारे जगत मे परमात्मा सवत्र अन्दर बाहर ओतप्रोत है। उसी को साक्षी मानकर ससार का भोग करो। तभी अपने उद्देश्य तक पहुचा जा सकता है। आज लोग परमात्मा का रूप स्वरूप बिगाडते जा रहे है। ससार मे परमात्मा के बारे मे बडी भ्रान्तिया फैली हुई है। न जाने कितने पथ पैगम्बर भगवान पैदा हो रहे है। हर कोई अपनी मुट्ठी मे परमेश्वर को बताता है। किन्तु ऋषि दयानन्द ने जो परमेश्वर का स्वरूप चिन्तन उपासना प्रार्थना आदि की दृष्टि दी वह आज के ससार को सत्य धर्म तक पहुचा सकती है। आस्तिक बनकर ही मनुष्य मानवता के गुणो को धारण करता है। तभी सभी दोषो और बुराईयो से बचा जा सकता है। आज अधिकाश हमारा जीवन जगत का प्रत्येक क्षेत्र यूरोपीय विचारधारा से गहराई से प्रभावित हो रहा है। खान पान रहन सहन घर परिवार बोलचाल रिश्तेदार सम्बन्ध साज सज्जा सभी मे आधुनिकता का रोग तेजी से फैल रहा है। महानगरो का जीवन तो और भी अनेक प्रकार की विकृतियो से विकृत हो रहा है। सभी मे भोगो के साधन एकत्र करने और भोगने की होड लगी हुई। सभी और और के चक्कर मे पागल दौड मे भागे जा रहे हैं। भोग विलास और वासना की पूर्ति के नित्य नए साधनो का आविष्कार हो रहा है। फिर भी आज का मानव अतृप्त असन्तुष्ट और भूखा हो रहा है। ऐसे वातावरण मे आर्यसमाज का चिन्तन जीवन जगत को वैचारिक प्रेरणा देकर सन्मार्ग दिखा सकता है। जब तक मन को आत्मा और परमात्मा की ओर नहीं मोडोगे तब तक अन्तहीन भोगो की आग तुम्हे चैन नहीं लेने देगी। जितना भोगते जाओगे उतने होते जाओगे। शास्त्र कब से पुकार पुकारकर कह रहे है

न जातु काम कामनामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाऽऽभिवर्धते।।

विषयो के भोग की इच्छा विषयो के भोग से कभी शान्त नही हो सकती है किन्तु और भी बढती जाती है–जैसे आग मे घी डालने से आग और बढती है। जब तक ज्ञान विवेक वैराग्य और अभ्यास से मन को सयमित न किया जायेगा तब तक न बुझने वाली भोगो की आग मे जीवन जगत जलता रहेगा। वैदिक चिन्तन के पास महत्वपूर्ण जीवन दृष्टि है। जो दृष्टि आज के तनावभरे अशान्त बेचैन अतृप्त मानव जीवन को सुखी शान्त आनन्दमय बना सकती है। हमारे ऋषि मुनियो और पूर्वजो ने जीवन-जगत को गहराई से देखा भोगा व अनुभव किया। तब उन्होने सारपूर्ण निष्कर्ष दिए। जीवन मे अतिभोगवादी दृष्टि खतरनाक है। जीवन मे अति त्याग भी हानिकारक है। दोनो का समन्वय करके मध्यममार्ग अपना लो जीवन सुखी हो जायेगा। ऋषि दयानन्द ने ससार को सन्देश दिया भागो नहीं जागो। शास्त्र कहते है विचारो से ही जीवन जगत स्वर्ग बन जाता है। विचारो से ही इसे नरक भी बनाया जा सकता है। आज हमारे विचारो मे बडी तेजी से प्रदूषण फैल रहा है जो बडा घातक बनेगा। चारो ओर पतन के बाजार गर्म है। गन्दे दृश्य गन्दे शब्द गन्दे भाव देखने सुनने पड रहे हैं। यह तो तेजी से दिखावटी बनावटी कामवसाना भरी कल्चर पनप रही है यह हमारी सस्कृति मूल्यो आस्थाओ परम्पराओ व आदर्शो को गहरा धक्का दे रही है।

ऐसे विषाक्त वातावरण को आर्य चिन्तन कुछ ठोस जीवन मूल्य दे सकता है। मनुर्भव की आदर्श मूलक जीवन दृष्टि समूचे ससार को मानवता का पाठ पढा सकती है। वैदिक चिन्तन ने प्रत्येक क्षेत्र मे बडी गहराइ और व्यापकता से सोचा है ऊपरी सोच व्यावहारिक तर्कसगत सृष्टिक्रम अनुकूल एव वैज्ञानिक है। इसीलिए आज की दौड मे कोई चिन्तन दौड सकता है तो वह है वैदिक विचारधारा का चिन्तन। कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जिसमे हमारे पास देने को न हो। किन्तु यह तभी सभव होगा जब हम स्वय सुधरेंगे तो जग सुधरेगा का भाव क्रियात्मक जीवन मे लायेगे।

भारतीय सस्कृति त्याग प्रधान रही है। त्याग से ही अमृतत्व प्राप्त होता है। रामायण मे आदि से अन्त तक त्याग प्रेम और कर्त्तव्य की भावना मिलती है। महाभारत मे आदि से अन्त तक अधिकार अहकार और एकाकी भोगने की प्रबल लिप्सा है। परिणाम हमारे सामने हैं। भाव हमारा जीवन जगत व्यक्ति परिवार समाज राष्ट्र सगठन सस्थाए सभी मे अतर्द्वन्द्व विद्रोह झगड कलह व टूटन भरती जा रही है। क्योकि मूल मे भूल हो रही है। सभी एकाकी और अधिक देर तक सब जगह पद सुविधा तथा अधिकार को भोगना चाहते हैं। झगडो की जड यह है। चाहे परिवार हो या सगठन मन्दिर हो या गुरुद्वारा। छोडने का भाव कहीं नही है। आर्यसमाज के चिन्तन मे त्याग की महत्ता बहुत ऊची रही है। यदि अतीत के उदाहरण रखे जाए तो श्रद्धा भक्ति व सम्मान से सिर नत हो जाता है। यदि वर्तमान की स्थिति का चित्रण करे तो शर्म से सिर झुक भी जाता है। यह सब देखकर बडी पीडा होती है। शायद यह पक्तिया हमारे हालात का वास्तविक चित्रण दे रही है–

जमाना बडे शौक से सुन रहा था।
हमीं सो गए दासता कहते कहते।।

सत्य यह है कि आचरण न करने के कारण कथनी करनी मे अन्तर होने के कारण क्रियात्मक जीवन न होने कारण हम बुरे हो सकते हैं। किन्तु हमारे मन्तव्य सिद्धान्त जीवन मूल्य स्वर्णिम हैं। वे आज भी इस वातावरण को नवजीवन चेतना दे सकते हैं।

हमारे सभी शास्त्र धर्मग्रन्थ तथा महापुरुषो के जीवन के व्यावहारिक पक्ष से भरे पडे है। निर्माण सदैव त्याग से ही होता है। मा त्याग करती है तो सन्तान का पालन पोषण व निर्माण हो जाता है। सन्यासी त्याग करता है तो सारा ससार उसके चरणो मे झुक जाता है। राजा त्याग करता है तो प्रजा उसकी भक्त बन जाती है। आज के इस वातावरण मे त्याग सेवा प्रेम की गहरी आवश्यकता है। जिस परिवार मे एक दूसरे के लिए त्याग भावना है परस्पर प्रेम भाव है वह परिवार सच्चे अर्थ मे स्वर्ग कहलायेगा। आज मन्दिरो मे भी पद लिप्सा अधिकर व अहकार की लडाई होने लगी है। झगडो से बचने के लिए शान्ति के लिए व्यक्ति मन्दिर मे आता है। यदि मन्दिरो मे भी झगडे मिले तो कहा जायेगा ? वहा तो त्याग व सेवाभाव से जाकर ही कुछ मिल सकता है।

भारतीय चिन्तन मे खान पान रहन सहन पर बडी बारीकी व गहराई से सोचा गया है। इस बारे मे इतने दूर तक यूरोप नहीं सोच सका है। यहा के ऋषि मुनियो ने यही निष्कर्ष निकाला है कि भोजन व रहन सहन ही हमारे स्वस्थ मन और स्वस्थ विचारो का कारण है। जैसा भोजन होगा वैसा मन तथा विचार बनेगे। जैसे विचार होगे वैसा ही आचरण होगा। आज के जीवन जगत का खान पान बहुत ही दूषित विकृत तामसिक तथा मन बुद्धि इन्द्रियो को विकृत करने वाला हो रहा है। इसीलिए रोगियो की लम्बी लाइने बढती जा रही हैं। हास्पिटल छोटे पडते जा रहे है। प्रकृति ने मनुष्य को रोगी नही बनाया अपितु प्रकृति तो स्वास्थ्य बाट रही है। हमारी सस्कृति होम प्रधान रही है होटलप्रधान नही। खाने के साथ कपडो के बारे मे श्रगार भावना बढ रही है। जहा श्रगार होगा वहा वासना जरूर भडकेगी। यह प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। आर्यसमाज का चिन्तन खान पान के बारे मे बडा स्पष्ट है। हमारे चिन्तन का मूल आधार ही खान पान है। शुद्ध सात्विक शाकाहारी भोजन ही मनुष्य का असली भोजन है। ऐसा भोजन जो जीवन जगत को रोगमुक्त सरलता धार्मिकता व आस्तिकता दे सकता है। इसके प्रचार की बडी आवश्यकता है।

सार रूप मे कहा जा सकता है कि जीवन जगत की इस अन्धी दौड मे आर्यसमाज का वैचरिक चिन्तन प्रकाश स्तम्भ का कार्य कर सकता है। इस घायल कराहती अतृप्त मानवता के लिए वैदिक चिन्तन मरहम का कार्य कर सकता है। वैदिक विचारधारा आबाल वृद्ध सभी मे अपने विचारो की सजीवनी से नव चेतना का जीवन सचारित कर सकती है। आय चिन्तन जीवन जगत के सभी क्षेत्रो मे मार्गदर्शन बन सकता है। अन्त मे आर्यो से –

प्रशस्त पुण्य पथ है बढे चलो बढे चलो।।

☆

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

१८५६—१९२६

जगदीश शरण आर्य

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज एक विद्वान निर्भय सत्यवक्ता वीर सन्त व सच्चे नेता थे। आप का जीवन बहुत ही उतार चढावपूर्ण और तपस्या युक्त योग साधना से पूरित रहा है। अप अपने हृदय मे अथाह शान्ति और दृढ आत्मबल धारण किए हुए परोपकार देशोद्धार दलितोद्धार एव जाति उद्धार की पवित्र भावना से प्रेरित होकर मानव मात्र के कल्याण का उपदेश करते रहे और सम्पूर्ण जीवन भर मृत्यु के वरण की घडी तक भी 'शका समाधान न छोडा। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की तरह आपके हृदय मे भी वर्तमान की हिन्दु अथवा आर्य जाति के पराभव पराधीनता व विघटन की दशा पर एक तीव्र हूक उठती थी। उनका वैर या द्वेष किसी से नहीं था परन्तु सत्य का रोक पाना उनके लिए कठिन था। उनका त्याग दृढ कार्यनिष्ठा क्रान्त दृष्टि और उनका गम्भीर अथाह स्वाध्याय विज्ञानयुक्त आध्यात्म सौष्ठव तेजोमय निश्छल जीवन वीतराग परमहस गति प्राप्त विशाल व्यक्तित्व हमको आर्यजाति के प्रति कर्त्तव्यो के निर्वहन के लिए आमन्त्रित और उत्प्रेरित करता रहेगा।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद आज हिन्दु जाति जिन विषम परिस्थितियो मे अन्य धर्मावलम्बियो की धर्मान्धता पूर्ण क्रूरता व कुटिल गहरी चाल का शिकार बन रही है। इसे प्रत्येक विवेकी योग्य नागरिक जानता है। इस समय हमे श्रद्धानन्द से बलिदानी ज्ञानी व कर्मयोगी दृढ निश्चयी महापुरुष के पथ प्रदर्शन की आवश्यकता है था उनके जीवन चरित्र को मनन पूर्वक अध्ययन कर आत्मसात कर उसके अनुसार ही व्यवहार करने की अति आवश्यकता है। बहुसख्यक होना हमारे लिए अभिशाप बन गया है। चारों ओर हमें बहुसख्यक के नाम पर कसा व कोसा जा रहा है। हर सभव कुटिल प्रयत्न इसे अल्प सख्या मे परिवर्तित करने का योजनाबद्ध रूप मे चल रहा है। सन १९९१ की जनगणना के आधार पर सन १९८१ के बाद हिन्दुओ की जनसख्या २२७८ मुसलमानो की सख्या ३२७६ एव ईसाइयो की सख्या २३४ बढी है। यदि अब भी हम न चेते और हिन्दु सामाजिक राजनैतिक व धार्मिक सस्थाए हिन्दुओ की लगातार गिरती जनसख्या के प्रति लापरवाह रही तो हिन्दुओ का बहुसख्या मे होना केवल इतिहास की ही बात रह जायेगी। क्योंकि प्रजातन्त्र में तो केवल लोग ही गिने जाते हैं।

किसी कवि ने कहा है —

जम्हूरियत एक तर्जे हकूमत है जिसमें —
बन्दों को गिना करते हैं, तौला नहीं करते।

आर्यसमाज का प्रबुद्ध वर्ग तीव्रता से इसको अनुभव कर रहा है।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज (आज से सत्तर वर्ष पूर्व) २३ दिसम्बर १९२६ ई० को दिल्ली मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भवन मे अब्दुल रशीद नामक धर्मान्ध के क्रूर निर्दयी हाथों द्वारा गोली वर्षा से आहत होकर अपना बलिदान दे गए। वह तो अमर पद पा गए परन्तु जिस राष्ट्र व जाति के लिए उन्होने यह बलि दी थी वह अभी भी चेतना शून्य जान पड रही हैं। केवल राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्ति पर ही सन्तोष करके शान्त है। कोई भी बलिदान व्यर्थ नहीं जाता है। आर्यसमाज सदा से एक बलि वेदि रहा है। उसकी नींव उसके प्रवर्तक योगीश्वर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने अपने बलिदान पर ईश्वरेच्छा से रखी थी ओर मृत्यु समय आत्म उत्सर्ग करते हुए अन्तिम वाक्य कहा था कि 'हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो तूने अच्छी लीला की।

आज तक इस आर्यसमाज रूपी प्रकाश पुज यज्ञाग्नि की हवि चढती रही है और हवि प्राप्त कर उतनी ही तीव्रता से यह दिव्य ज्ञानाग्नि समस्त ससार को प्रकाशित कर रही है। स्वामी श्रद्धानन्द जी प० लेख राम आर्य मुसाफिर जी एव अन्यान्य महान विभूतियो ने अपने आत्म उत्सर्ग की अग्नि से इसको लगातार जारी रखा है। जिस उद्देश्य समाज सस्था के पार्श्व मे जितनी नि स्वार्थ परोपकार हिताय समर्पण त्याग व बलिदान की भावना होगी वह उतनी ही शीघ्रता से व्यापक रूप से उत्तरोत्तर प्रभावशाली बनी रहेगी। जिस प्रकार यज्ञाग्नि मे आहूत हवि सामग्री कई गुणा होकर व्यापक रूप धारण कर लेती है एव दूरस्थ देश प्रदेश के वायु मण्डल एव जीवो को प्रभावित करती है इसी प्रकार वे बलिदानी उत्सर्गिक आत्माए हमारे अन्तरतम तक को झकझोरती रहती हैं। इन्हीं के प्रभाव से आर्यसमाज पूर्व से जातीय अथवा राजनैतिक रूप से सचेष्ट रहकर मार्ग दर्शन करता रहा है और भविष्य मे भी करता रहेगा। समुन्नत भौतिक विज्ञान के इस तर्कपूर्ण वर्तमान समय मे भी आर्यसमाज ने इसी बलिदान की यज्ञाग्नि की प्रखर व तीव्र ज्वालाओ के प्रकाश मे वैदिक धर्म के शाश्वत सिद्धान्तो को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करके देशीय व दूरस्थ विदेशीय मानव को एकमात्र सत्य सनातन अपौरुषेय ब्रह्म वाणी वेदोपदेश को श्रवण कर चिन्तन मनन करने का शुभ अवसर प्रदान किया है।

आज हमको पुन अपने पुरातन ईशावा—स्योपनिषद के आदर्श उपदेशानुसार ईशावास्यम इद सर्वम यत किंचित जगत्या जगत। तेन त्यक्तेन भुजीथा मागृध कस्यस्वित धनम।। त्याग पूर्वक ससार को भोगने की आवश्यकता है। एक समान विचारधारा वाले सगठित समाज की आवश्यकता है। जाति भेद वर्ण भेद और वर्ग भेद को भुला कर इस समाज मे विलय हो जाना है। इसकी सुरक्षा के लिए विशेष दूरदर्शिता पूर्ण सतर्कता बरतनी है। अप्राप्त की प्राप्ति प्राप्ति की रक्षा फिर इसका सवर्धन करना आवश्यक है और अति आवश्यक है उसकी रक्षा करना। जब इसकी सुरक्षा न की जाय तो सारा पुरुषार्थ ही व्यर्थ चला जाता है। जैसा कि कई शताब्दियो का अनुभव हमारे सामने हैं। अपने दुर्ग की प्राचीन प्राचीरो की मरम्मत हमसे न हो सकी और विदेशियो ने उस दुर्बलता का समय के अनुसार अपनी राज सत्ता के नशे मे मदमस्त होकर अनुचित लाभ उठाया हमारी जातीय दीवारो मे सेंध मारी करके हमारे भाइयो को लूट लिया और इन्हे मालेगनीमत समझा और आज तक भी उस पर कब्जा जमा बैठे हैं इसी की सुरक्षा की भावना से अभिप्रेरित हो कर इन महा मानवो को अपना सर्वस्व बलिदान करना पडा। शुद्धि आन्दोलन जो कि १९२३ मे आगरा से आरम्भ हुआ था इसका एक कारण बना। दूसरा कारण उस समय की विदेशी ब्रिटिश सरकार की गुप्त मन्त्रणा भी हो सकती है क्योकि वैदिक धर्म के उत्थान का दूसरा पक्ष स्वराष्ट्रवाद था जो कि उसे बिल्कुल ही पसन्द न था और यह विचार व भावना उसके विशाल साम्राज्य की छिन्न भिन्न करती थी।

आर्यसमाज का दर्शन दूसरो द्वारा प्रदत्त आर्शीवाद पर निर्भर नहीं है और न ही रहस्यवाद अतिवाद मूर्त्तिवाद ज्योतिषफल या अन्ध अविवेकी विश्वास वाद पर निर्भर है। यह केवल पुरुषार्थ मे और ज्ञानपूर्वक कर्म मे विश्वास करता हुआ ईश्वर से स्वसार्मथ्य की कामना करता है। ऋग्वेद की वाणी इन्द्र इत सोमपा एक द सतपा विश्वाय। अन्तर्देवान मत्यश्चि।। मे कर्मयोगी का महत्व दर्शाते हुए उपदेशित किया गया है कि विश्व को वशीभूत करने वाला कर्मयोगी ही परमात्मा व ससार सम्बन्धी ज्ञान उपलब्ध करता है।

अत पुरुष को चाहिए कि वह कर्मयोगी बने वस्तुत देवो व मनुष्यो के बीच कर्मयोगी ही इस विविध विश्व के ऐश्वर्य के भोगता हुआ अपने यश व नाम को सूर्य के समकक्ष स्थापित कर जाता है। हमारा सनातन इतिहास ऐसे महापुरुषो के चरित्र से आलोकित है। अभ्युदय के इच्छुको को ऐसे कर्मयोगी हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के चरित्र का मनन व अनुकरण आवश्यक है और सबसे अधिक आवश्यक है उससे प्रेरणा लेकर पुरुषार्थ करना। इसी के साथ मैं पूर्ण रूप से श्रद्धानवत हो अपने भावरूपी सुमन उस आदर्श व्यक्तित्व को समर्पित करता हू।

आर्यनिवास सम्भल—२४४३०२ ☆

।। उत्तिष्ठत जाग्रत।। उठो-जागो, और आगे बढ़ो !

प्रो० रामप्रसाद वेदालकार आचार्य एव उपकुलपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार का सम्पूर्ण वैदिक साहित्य मानव जाति को कल्याण पथ मे सदैव आगे बढने की प्रेरणा देता आ रहा है। उपनिषदो मे आत्मा के विस्तार अथवा आत्मोन्नयन के विविध उपाय प्रतिपादित किये गये हैं। जीवन के उत्थान के लिए मानव को सर्वप्रथम अपने हृदय मे सकल्पाग्नि प्रज्वलित करनी चाहिए। दृढ निश्चय करके व्यक्ति जब तक उठ खडा नहीं होता है तब तक निर्माण के द्वार बन्द ही रहते हैं। महर्षि दयानन्द स्वामी श्रद्धानन्द जगदगुरु शकराचार्य गौतम बुद्ध आदि महापुरुषो के जीवन इस सत्य के साक्षी हैं कि इनके पवित्र हृदयो में जैसे ही विचारो का मन्थन प्रारम्भ हुआ ये उठकर सत्य की खोज मे निकल पडे और जीवन के चरमोद्देश्य को प्राप्त करके ही रहे। इसीलिए कठोपनिषद का ऋषि कहता है –

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।

वाजश्रवा के पुत्र वाजश्रवस ने सर्वमेध यज्ञ मे अपना सर्वस्व दान कर दिया। अपने इकलौते पुत्र के बार बार आग्रह करने पर कि पिताजी ! आप मुझे किस को दोगे ? पिताने कुपित होकर कह दिया – **मृत्यवे त्वा ददामीति** – मैं तुम्हे मृत्यु को दूगा आज्ञाकारी पुत्र पिता के कथन को यथार्थ मानकर विवस्वान् के पुत्र यमाचार्य के द्वार पर पहुच कर अलख जगाने लगा। यमाचार्य के वहा पर उपस्थित न होने के कारण तीन दिन आहार न करते हुए नचिकेता प्रतीक्षा करता रहा। यमाचार्य ने ब्रह्मज्ञान के पिपासु ब्रह्मचारी को तीन वर प्रदान किये। सासारिक प्रलोभन उस पवित्रता को ब्रह्मज्ञान की पिपासा से विचलित न कर पाये। दो वर प्राप्त कर लेने पर तृतीय वर मे केवल अमृतत्व उपदेश के लिए ही वह अडा रहा। वह जरा भी दोलायमान नहीं हुआ। हारकर और सब प्रकार से ब्रह्मचारी के दृढ सकल्प की परीक्षा कर यमाचार्य ने उस बालक को जो अमरत्व का परामात्मा की प्राप्ति का उपदेश दिया आध्यात्मिक साहित्य गगन में सदैव स्वर्णाक्षरो में अकित रहेगा।

यमाचार्य कहते हैं –

नायमात्मा प्रवचने लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन।
यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूस्वाम्।।

कठोपनिषद् १.२.२३

यह आत्मा अर्थात् परमात्मा न तो प्रवचन से मिलता है न मेधा बुद्धि से और न ही बहुत कुछ पढने सुनने से मिलता है। जिसको यह वर लेता है उसको पाता है। उसके सम्मुख पर ब्रह्म परमात्मा अपने स्वरूप को खोलकर रख देता है।

जो दुराचार से विरत नहीं है अशान्त हैं असमाधिस्थ अर्थात असयत चित्त है वह उसे प्राप्त नहीं कर सकता। तृष्णा के वशीभूत हुआ अशान्त मनोवृत्ति वाला मानव केवल बुद्धि बल से उसको प्राप्त नहीं कर सकता–

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहित।
नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात्।।

कठो – १.२.२४

यमाचार्य आगे कहते हैं – हे नचिकेता ! तू आत्मा के रथी और शरीर को रथ समझ बुद्धि को सारथि तथा मन को लगाम समझ। इन्द्रियों को अश्व एव रुप-रस गन्ध आदि विषयों को इन्द्रिय अश्वो के निमित्त विचरने के मार्ग कहते हैं। आत्मा इन्द्रिय और मन से युक्त जीव भोक्ता है ऐसा मनीषि जन कहते हैं –

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु। बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।। इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान्। आत्मेन्द्रिय मनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिण ।।

कठो १.३.४५

उपनिषत्कार ने यमाचार्य के माध्यम से आत्मविद्या का हृदयाद्त्यादी उपदेश देते हुए न केवल नचिकेता को अपितु ससार के उन सभी मानवो को उद्बोधन किया है जो उस प्राणप्रिय प्रभु को साक्षात्कार कर जीवन सफल बनाना चाहते हैं।

यमाचार्य कहते हैं – उस आत्मा को जानने के लिए हे मनुष्यो उठो ! जागो ! और वरणीय श्रेष्ठ महापुरुषो को प्राप्त कर उनसे इस विषय मे ज्ञान प्राप्त करो – अर्थात् उनकी शरण मे जाकर उस परम पिता परमेश्वर का बोध प्राप्त करो। क्योकि छुरे की तीक्ष्ण धारा के समान कविजन–ज्ञानीजन उस तत्वज्ञान के पथ को दुर्गम बतलाते हैं –

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।।

१ ३ १४

यमाचार्य नचिकेता को समझाते हुए कहते हैं कि – हे नचिकेता जिन्होने निष्काम भार से तीन बार नचिकेतन अग्नि का सेवन किया है – माता पिता और आचार्य का सान्निध्य – प्राप्त किया है और उनकी कृपा से वेदो का ज्ञान प्राप्त कर निष्काम भाव से अपना जीवन यज्ञ चलाया है और जिन्होने पञ्चाग्नियो को – ब्रह्मयज्ञ देवयज्ञ पितृयज्ञ अतिथियज्ञ और बलिवैश्वदेवयज्ञ को प्रज्वलित किया है वे श्रद्धालु आस्तिक जाने जाते हैं कि ससार के रसो का पान करने वाला जीव अल्पज्ञ है छाया है और परमात्मा धूप है – सर्वज्ञ है – सूर्य के समान पूर्ण प्रकाश है। यह अग्नि याज्ञिको का हेतु है भवसागर को पार कराने की तरणि है। जो आस्तिक ससार सागर से पार होना चाहते हैं उन्हे चाहिए कि इस नचिकेतअग्नि मे अपने मे अवशिष्ट सस्कारो को दग्ध कर दे।

परमात्मा ने मनुष्य को शरीर रूपी सुन्दर रथ प्रदान किया है बुद्धि को उसमें सारथि बनाया मन को लगाम बनाकर बुद्धि रूपी सारथि के हाथो मे उसे सौंप दिया इन्द्रियो को अश्व बनाकर उस रथ मे जोड दिया। शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध इन विषयो को मार्ग बनाया जिनपर ये इन्द्रिय रूपी अश्व चलते हैं। यह सब कुछ बनाकर जीवात्मा को उस रथ का स्वामी बना दिया। यह सब कुछ बनाकर अर्थव वेद के शब्दो में वह ब्रह्म बोला उठा – **अरोह इम अमृत सुख रथम्**

अथर्व – ८ ६

हे जीवात्मा ! तू इस सुख और अमृत दोनो देने वाले रथ पर चढ जा। तू इस 'ख इन्द्रियो को इतना अच्छा बना कि तुझे ससार मे सदा सुख ही मिले और इस शरीर मे बैठ कर ऐसी साधना कर कि तुझे अमृत मोक्ष का आनद भी मिले। परमात्मा ने यह शरीर रूपी ऐसा रथ दिया है जो अभ्युदय और नि श्रेयस दोनों को प्राप्त कर सकता है। जो ज्ञान वान हैं और सदा पवित्र रहता है सदैव शुभ कर्मों मे ही लगा रहता है। वह इस रथ पर आरूढ हो कर मन रूपी लगाम को दृढता से पकड कर विज्ञान – विवेक रूपी सार्थी के द्वारा रथ चलात हुआ परमपिता के परमधाम ही मोक्ष को प्राप्त करके पूण रूप से तृप्त हो जाता है यही जीवन यात्रा का अतिम पडाव है। इस पथ पर चले बिना जीवन का कल्याण हो ही नहीं सकता।

हे मनुष्यो उठो जागो ! सावधान हो जाओ ! और वर्णनीय उत्तम महापुरुषों की शरण मे जाकर उनसे इस विषय मे ज्ञान प्राप्त करो। यह जीवन बहुत छोटा है। इसे विषय विकारो भोग विलासो मे नष्ट मत करो। यह मत सोचो कि युवावस्था बीत जाने पर तुम अपने जीवन का कल्याण कर सकोगे। युवावस्था मे ही महान कार्य किया जा सकता है इसलिए जागो तो जवानी मे ही जागो उठो ता जवानी मे ही उठो ! जब सारी इन्द्रिया शक्तिहीन हो जायेगी तब न उठ सकोगे न चल सकोगे।

वेदो मे बार बार उठने जागने और चलने की बात कही गई है – **यो जागार तमृच कामयन्ते चरैवेति चरैवेति।** आदि अमृत वाक्य मानव को यही प्रेरणा देते हैं जो जाग कर उठ कर चलना प्रारम्भ कर देता है और सदा अपने लक्ष्य की ओर ही दृष्टि रखता है। ससार के समस्त वैभव उसको प्राप्त होते हैं और वह इस ससार से विदा होता है तो परमात्मा का मोक्ष रूपी परम ऐश्वर्य भी वह पा लेता है।

उप कुलपति – गुरुकुल कागडी
विश्वविद्यालय हरिद्वार

☆

सूचना

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ
द्वारा
म० प्र० के ग्रामीण क्षेत्रों में,
गायत्री महायज्ञ

सर्व साधारण की सूचनार्थ निवेदन है कि अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के निर्देशन में १७-१२-९६ से २९-१२-९६ तक गायत्री महायज्ञ का आयोजन झाबुआ जनपद की तहसील थान्दला के ग्रामीण क्षेत्रों में किया जाना निश्चित हुआ है। इसकी पूर्णाहुति २९-१२-९६ को थान्दला आश्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी की अध्यक्षता में होगी।

देवव्रत मेहता, महामंत्री
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ,
दिल्ली

२८ दिसम्बर स्मृति दिवस पर विशेष

महान देशभक्त पं० मदन मोहन मालवीय

– चमन लाल क्षत्रिय

मालवीय जी को हिन्दू होने व अपने को हिन्दू कहलाने मे गौरव अनुभव होता था।

मिश्रित राष्ट्रीयता की टक्कर मे मालवीय जी ने सर्वप्रथम हिन्दू हिन्दी हिन्दुस्तान का नारा देश मे गुजाया। जो हिन्दुस्तानी की सभ्यता संस्कृति व इसके पर्वों पर आस्था रखते हो जिनके तीर्थ स्थान हिन्दुस्तान के बाहर नहीं आर्यवर्त – भारत यानि हिन्दुस्तान मे हो उन्हे मालवीय जी हिन्दू यानि (सच्चे व सुच्चे) राष्ट्रीय मानते थे। मालवीय जी जहा कई बार कांग्रेस के अध्यक्ष बने वहा वह हिन्दू महासभा के भी अनेक बार राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे। शेरे हिन्दुस्तान लाला लाजपत राय के साथ मिलकर उन्होंने हिन्दू सभा की स्थापना की। मुसलमानों को उन्हीं के पूर्वजो के हिन्दू धर्म मे लाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी के शुद्धि आन्दोलन का खूब उन्होने खुलकर व डटकर प्रचार प्रसार किया।

हिन्दू जाति बलशाली हो की पावन भावनाओ की पूर्ति हेतु मालवीय जी ने हिन्दू युवको की सस्था महावीर दल की स्थापना की।

पजाब की राजधानी लाहौर मे भाई परमानन्द जी द्वारा बनवाई गई हिन्दू व्यायामशाला का मालवीय जी ने स्वय अखाडा खोद कर उदघाटन किया था ताकि हिन्दू युवक कुश्ती के दाव पेचो मे दक्ष होकर अपने धर्म की रक्षा करने मे प्रवीण हो जाए। इस व्यायाम शाला मे एक ओर हिन्दू राज्य के सस्थापक वीर शिवाजी दूसरी ओर बाबर के पोते अकबर की नींद चौपट किए रखने वाले हिन्दू पति राणा प्रताप मध्य मे महान हिन्दू योद्धा बन्दावीर वैरागी की प्रतिमाए थीं।

कुश्ती मे जीतने वाले पहलवान को सेर बादाम और परास्त होने वाले पहलवान को प्रोत्साहित करने हेतु आधा सेर बादाम दिए जाने की परिपाटी चलवाई। देश के सभी मदिरो मे अखाडे खुलवाये।

दमाइयो से टक्कर लेने वाले युवको की जमानते देने और उनके केस फ्री लडने की प्रवृत्ति हिन्दू वकीलो तथा व्यापारियो मे जागृत कर दी।

१६२४ मे कोहाट और बन्नू मे जब सारी हिन्दू आबादी निकाली गई तब मालवीय जी तडप उठे। सारे देश मे तीव्र हिन्दू लहर जागृत कर दी। मालवीय जी के कारण ही कोहाट और बन्नू मे हिन्दू पुन वहा बसाए गए।

मालवीय जी का जन्म एक कथा वाचक के यहा हुआ। निर्धनता पर वह रोए नहीं। अपने चरित्र बल से उन्हाने खूब यश कीर्ति अर्जित की। एक रियासत के महाराजा के यहा सम्पादन कार्य आरम्भ किया। शर्त थी कि शराब के नशे के समय वह सम्पादकीय लेख हेतु इन्हें बुलाएगे नहीं।

कुछ वर्षों बाद शराब के नशे मे महाराजा ने सम्पादकीय लेख हेतु मालवीय जी को बुला भेजा। जाते ही उन्होने त्याग पत्र दे दिया। अब क्या करोगे। ऐसी सम्मानित नौकरी नहीं मिल पाएगी उनसे कहा गया।

ईश्वर के महान आस्थावन सकल्प के धनी मालवीय जी ने कहा – हिम्मत हारिये न – राम विसारिए न।

१६२६ मे स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या की गई। मालवीय जी ने हिन्दू सगठन व शुद्धि लहर का नेतृत्व अपने जुम्मे ले लिया।

रोल्ट एक्ट के समय उन्होने केन्द्रीय असेम्बली मे एमनेस्टी बिल के विरुद्ध जो लगातार पाच घटे तक भाषण दिया वह अविस्मरणीय है। उस केन्द्रीय असेम्बली मे शहीदे आजम राज गुरु भगत सिह व सुखदेव ने बम फेककर बहरी सरकार के कान खोलने का प्रेरक प्रयास किया था। पकडे जाने पर इन वीरो ने अपने पक्ष मे गवाही के लिए मालवीय जी का नाम दिया था। सरकार ने स्वीकार किया। १६४३ मे नवाखली पूर्वी बगाल मे हिन्दुओ की हो रही हत्याओ से दुखी होकर सिसकते सिसकते उनका प्राणान्त हो गया। ☆

"कृण्वन्तो - विश्वमार्यम्"

– कृष्णाऔतार

इन्द्र वर्धन्तो अप् तुर कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अप घ्नन्तो अ राव्ण। ऋ० ६–६३–५

अर्थ – (इन्द्र वर्धन्त) आत्मा को बढाते हुए दिव्य गुणो से अलकृत करते हुए (अप-तुर) तत्परता से कार्य करते हुए (अ-राव्ण अप घ्नन्तो) कृपणताओ को दूर भगाते हुए (विश्वम् आर्यम् कृण्वन्त) सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाते हुए सर्वत्र विचरे।

वेद मन्त्र मे प्रयुक्त 'आर्य' शब्द आचार परक है जाति अथवा सम्प्रदायपरक नहीं हैं। वेदानुसार कार्य करने वालो को आर्य कहते हैं। जो वेदाचार विहीन हैं वे सब अनार्य हैं। ससार के समस्त मानवों की जाति तो एक ही – 'मनुष्य जाति' है। आचार की दृष्टि से दो जातिया हैं – 'आर्य' तथा 'अनार्य'। इसी प्रकार सारे ससार की दो ही सस्कृतिया हैं – आर्य (वैदिक) सस्कृति तथा अनार्य (अवैदिक) सस्कृति। तीसरी कोई सस्कृति नहीं है।

वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है। वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद की शिक्षा के अनुसार जो कार्य करते हैं – वे आर्य हैं। जिनके आचार विचार व्यवहार सुन्दर एव श्रेष्ठ हैं तथा जिनका आहार सात्विक एव नेक कमाई का है वे सब आर्य हैं।

अध्यात्म साधना द्वारा आत्मा का उत्थान करना ही आत्मा का वर्धन है। आत्मोत्थान योग जीवन पद्धति से होता है।

विश्व के आर्यकरण के लिए आत्मोत्थान के पश्चात् मिशनरी भावना से तत्परता और सन्नद्धता के साथ कर्म करते हुए तथा कृपणताओं (अदानताओं) को दूर भगाते हुए हमे आगे बढना है।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' – कितना सुन्दर घोष है। हम इस भूमण्डल के समस्त मानवो को आर्य बनायें। पर केवल घोषो तथा भावनाओ से ही विश्व कभी भी आर्य नहीं बन सकेगा।

दूसरो को आर्य बनाने से पूर्व हमे स्वय आर्य बनना होगा तथा अपने परिवारो – पुत्र/पुत्रियो को आर्य बनाना होगा।

इस सम्बन्ध मे वेदमाता निम्न मन्त्र द्वारा हमारा मार्गदर्शन कर रही है – ओ३म ! मिमीहि श्लोकमास्ये पर्जन्य इव ततन।

गाय गायत्र मुक्थ्यम्।। ऋ० १-३८ १४

हे विद्वान मनुष्यों ! तुम (श्लोकम्) वेदवाणी को (आस्ये) अपने मुख में (मिमीहि) भर लो अपनी वाणी को वेदयुक्त कर लो फिर उस वेदवाणी को (पर्जन्य इव) मेघ/बादल के समान (ततन) हुए वेद ज्ञान को सर्वत्र फैला दो (गायत्रम्) प्राणो की रक्षा करने वाले (उक्थ्यम्) वेदमन्त्रो को (गाय) स्वय गान करो और दूसरो को गवाओ। पढाओ।

उपर्युक्त मन्त्र में प्रभु का आदेश है कि स्वय अपनी वाणी को वेदयुक्त करके बादल के समान सर्वत्र घूमते हुए वेदज्ञान को सर्वत्र फैला दो। बादल सर्वप्रथम समुद्र के निकटवर्ती तटो पर ही सर्वाधिक वर्षा करते हैं अत आर्यो ! सर्वप्रथम अपने ही पुत्र/पुत्रियो शिष्य/शिष्याओ को वेद पढाना व सुनाना चाहिए।

प्राय देखा जाता है कि आर्य विद्वान्/आचार्य ही अपने बच्चों को न तो वेद सुनाते हैं और न पढाते हैं। परिणाम स्वरूप दीपक तले ही अधेरा रहता है।

विश्व को आर्य बनाने के लिए मातृशक्ति का विशेष दायित्व वेदमाता ने 'स्त्री हि ब्रह्मबभूविथ' कहकर बतलाया है। स्त्री गृह समाज राष्ट्र एव विश्व यज्ञ की ब्रह्म है। यथा ब्रह्म तथा रचना। यदि ब्रह्म अबोध अज्ञानी व सस्कारहीन है तो उसकी रचना भी त्रुटिपूर्ण होगी।

महर्षि दयानन्द ने मानव को दिव्यमानव (आर्य) बनाने के लिए जन्म के पूर्व से लेकर मृत्यु पर्यन्त १६ वैदिक सस्कारो का विधान किया है। इन्हीं सस्कारो के द्वारा महारानी मदालसा ने अपने तीन बेटो को ऋषि एव चौथे को राजा बना दिया। माता निर्माता भवति। प्रत्येक युवक/युवति को सस्कार चन्द्रिका पुस्तक अवश्य पढनी चाहिए तभी वे उत्तम/श्रेष्ठ सन्तति का निर्माण कर सकेगे और विश्व का आर्यकरण हो सकेगा।

वेद ज्ञान से रहित पौराणिक पडितजन जो उदर पोषण में ही लगे हुए हैं – कहते है स्त्रियो शूद्रो व अनार्यों को वेद पढने व सुनने का अधिकार नहीं है।

परन्तु परमेश्वर ने तो निम्न वेद मन्त्र मे मानवमात्र को वेद पढने व सुनने का अधिकार दिया है।

यथेमा वाच कल्याणीमा – वदानि जनेभ्य। ब्रह्म-राजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवाना दक्षिणायै दातुर इह भूयासम अय मे काम सम ऋध्यताम उप मादो नमतु।
य० २६–२

कृण्वन्तो विश्वमार्यम – के यज्ञानुष्ठान के लिए वैदिक विद्वानो को अपने जीवनो की और धनवानो को अपने धन की उदार आहुति देनी होगी तथा लाखो ब्रह्मचारियो। ब्रह्मचारिणियो वानप्रस्थो एव सन्यासियो को तैयार करना होगा जो अतिशय सुशील उच्च चरित्र सम्पन्न विद्वान कार्यकुशल नीतिनिपुण अनुशासित समान पद्धति से समर्पित भावना से कार्य करनेवाने हो। तभी विश्व क आर्यकरण होकर हमारा यह घोष सार्थक हो सकेगा।

बढापुर (बिजनौर) ☆

प्रजातन्त्र, अपराध और दण्ड व्यवस्था आज के परिप्रेक्ष्य में

हीरा लाल आर्य

प्रजातान्त्रिक व्यवस्था ससार की सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्था है। भारत एक विशाल प्रजातान्त्रिक देश है। भारतीय सविधान के अनुसार २६ जनवरी १९५० से भारत मे पूर्ण रूप से गणतन्त्रात्मक अथवा प्रजातान्त्रिक शासन व्यवस्था लागू की गई है। जनता के निर्वाचित प्रतिनिधि ही शासन की बागडोर सम्भालते हैं या यो कह सकते हैं कि यह शासन जनता का जनता के द्वारा जनता के लिये शासन है। इसके घटक आम नागरिक ससद या कार्यपालिका के निर्वाचित सदस्य हैं जिनके अपने अधिकार व कर्त्तव्य हैं। शासन सचालन मे राज्य कर्मचारियो की भी विशेष भूमिका है इसमे कोई सन्देह नहीं है। चुनाव प्रक्रिया मे राजनैतिक दलो का विशेष महत्व होता है। भारत मे राजनैतिक दृष्टि से बहुदल व्यवस्था को अपनाया गया है। निर्वाचित सबसे बडा दल ही सरकार बनाता है तथा शासन चलाता है। साम्प्रदायिक सदभाव हेतु धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्त को स्वीकार किया गया है। न्यायालय भी एक स्वतन्त्र इकाई के रूप मे कायरत है। जनतान्त्रिक व्यवस्था को अपनाने के पीछे सविधान की मनसा यह रही है कि देश मे एक ऐसा कल्याणकारी राज्य की स्थापना हो जिसको राम राज्य की सज्ञा दे सकते हैं। समानता व न्याय के आधार पर जाति धर्म वर्ग वश भाषा आदि के भेदभाव के बिना प्रत्येक मनुष्य को सुखी व सम्पन्न बनाना है तथा देश की एकता व अखण्डता की रक्षा करना है।

आज हम अर्द्ध शताब्दी के नजदीक पहुच गए हैं हमारे देश मे हमारे जनतन्त्र की तस्वीर हमारे सम्मुख है। क्या हम देश मे एक कल्याण राज्य स्थापित कर पाये हैं ? क्या हम राम राज्य की ओर अग्रसर हो रहे हैं ? क्या अमीर से लेकर गरीब तक को सही न्याय मिल रहा है ? क्या साम्प्रदायिक विद्वेष घृणा या नफरत का भाव नहीं है ? क्या जातीयता का वर्चस्व समाप्त हो गया है ? क्या हमारे देश के शासनाधिकारी जनप्रतिनिधि राजनेता अधिकारी कर्मचारी धर्मगुरु वफादारी किसान मजदूर और सामान्य नागरिक सभी सच्चाई ईमानदारी से अपने कर्त्तव्य का निष्ठा पूर्वक पालन कर रहे हैं ? क्या हमने स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्रहित को सर्वोपरि महत्व दिया है ? क्या हम भारतीय सस्कृति की रक्षा कर पाये हैं ? क्या हमारा राष्ट्रीय–चरित्र उज्ज्वल व अनुकणीय है ? क्या राजनैतिक दलो का अपना उच्च आदर्श है ? क्या चुनाव प्रक्रिया न्याय सगत है ? क्या दल-बदल नियम पूर्ण सार्थक है ? इन सब प्रश्नो का एक ही उत्तर है – नहीं।

आज हमारे सम्मुख जनतन्त्र की सफलता के प्रति एक प्रश्न चिन्ह खडा है। यह सर्वोकृष्ट शासन व्यवस्था होते हुए भी असफल क्यो है ? यह एक गभीर प्रश्न है जिसके बारे मे सोचना हम देशवासियो का परम कर्त्तव्य है। इसकी जिम्मेदारी देश के प्रत्येक नागरिक की है विशेष रूप से शासन करने वाले राजनेता अधिकारी व कर्मचारी की तो है ही। जब शासन कर्त्ता ही भ्रष्ट व बेईमान हो जाते है तो फिर शासन कैसे सुचारू रूप से चल सकता है ? जहा ईश्वर या धर्म या शासन का भय नहीं रहता वहा उच्छृङ्खलता स्वच्छन्दता व तानाशाही की प्रवृत्ति पैदा हो जाती है। सब स्वार्थान्ध होकर मनमानी पर उतर आते हैं जिसका परिणाम होता है अराजकता अशान्ति व असुरक्षा। आज हमारे देश की कुछ ऐसी ही स्थिति बन गई है।

आज सम्पूर्ण राष्ट्र मे दिन दुने रात चौगुने अपराध बढ रहे हैं। विभिन्न प्रकार के अपराधो का एक जाल सा बिछ गया है। उदाहरण के लिये आर्थिक सामाजिक धार्मिक या साम्प्रादयिक राजनैतिक चारित्रिक या नैतिक अपराध आदि आदि। न्यायालयो मे मुकदमो का अम्बार लगा हुआ है। ये टुकडे मे इतने खर्चिले होते हैं कि सामान्य गरीब व्यक्ति तो न्यायालय के दरवाजे तक पहुच ही नहीं सकता। साथ ही ये मुकदमे मे इतने लम्बे चलते हैं कि कई बार निर्णय होने से पूर्व ही वादी इस ससार से चल बसता है। आर्थिक दृष्टि से सक्षम व्यक्ति की भी इसके व्ययभार से कमर टूट जाती है। फिर न्यायालय द्वारा भी उसे सही न्याय मिल जाय इसमे भी सन्देह हैं क्योकि हमारे कानून भी अपूर्ण लचीले व अस्पष्ट होते है वकीलो की जिरह या बहस पर भी निर्भर करते हैं कभी कभी सही सबूत या प्रमाण भी नहीं मिल पाते। कई बार गभीर अपराधी भी बच जाता है और निरपराध व्यक्ति जेल के शिकजे मे फस जाता है। इस तरह न्यायियक प्रक्रिया धीमी दीर्घकालीन अपूर्ण व खर्चिली होने से अपराधों की सख्या कम न होकर निरन्तर बढती ही रहती है।

यदि हमे जनतन्त्र की रक्षा करनी है उसे समय पर सही सच्चा न्याय प्राप्त करना है व अपराधो को पूर्ण रूप से समाप्त करना है तो हमे न्याय व्यवस्था को कठोर व दुरस्त बनाना होगा। कानून सबके के लिये समान है इसकी जगह अपराध की प्रवृत्ति के अनुसार व्यक्ति के बौद्धिक स्तर पद स्तर व सामाजिक स्तर के अनुसार दण्ड भी भिन्न-भिन्न होना चाहिये। वर्तमान कानूनो को पूर्ण स्पष्ट व कठोर बनाना नितान्त आवश्यक है। यदि इनमे परिवर्तन परिवर्द्धन व सशोधन भी करना पडे तो हमारी राष्ट्रीय सरकार को ऐसा करना बिल्कुल उचित है।

महर्षि मनु ही पहले व्यक्ति हैं जिन्होने ससार को एक व्यवस्थित नियमबद्ध नैतिक एव आदर्श मानवीय जीवन जीने की पद्धति सिखाई हैं। वे मानवो के आदि पुरुष आदि धर्म शास्त्रकार आदि विधि प्रणेता आदि विधिदत्ता (लॉ गिवट) आदि समाज और राजनीति व्यवस्थापक और आदि राजऋषि रहे हैं। महर्षि मनु का रचित ग्रन्थ 'मनुस्मृति न केवल धर्मशास्त्र ही है

अपितु एक प्राचीन विधि शास्त्र या न्याय शास्त्र भी है। मैक्समूलन मेकडानल कीथ थामस आदि पाश्चात्य लेखको ने मनुस्मृति को धर्मशास्त्री के साथ साथ एक लॉ बुक भी माना है और उसके विधानो को सार्वजनीन तथा सबके लिये कल्याणकारी बताया है। भारतीय सुप्रीम कोर्ट के तत्कालीन जज सर विलियम जोन्स ने तो भारतीय विवादो के निर्णय मे मनुस्मृति की अपरिहार्यता को देखकर सस्कृत सीखी और मनुस्मृति को पढकर उसका सम्पादन भी किया।

मनु की दण्ड व्यवस्था के मापदण्ड हैं – गुण दोष और आधारभूत तत्व हैं – बौद्धिक स्तर सामाजिक सतर पद व अपराध का प्रस्ताव। मनु की दण्ड व्यवस्था पूर्ण मनोवैज्ञानिक न्यायपूर्ण व्यावहारिक और प्रभावी है। वर्तमान देश की दण्ड व्यवस्था की तुलना मे मनु की दण्ड व्यवस्था श्रेष्ठतर है।

यदि मनु वर्णो में गुण कर्म योग्यता के आधार पर उच्च वर्णो को अधिक सम्मान और सामाजिक स्तर प्रदार करते हैं तो अपराध करने पर उतना ही अधिक दण्ड भी देते हैं। इस मनु की यथायोग्य दण्डव्यवस्था मे शूद्र को सबसे कम दण्ड है और ब्राह्मण को सबसे अधिक राजा को उससे भी अधिक। मनुस्मृति के परिप्रेक्ष्य मे यह जानना भी आवश्यक है कि वैदिक काल मे वर्ण व्यवस्था जन्माधारित जाति सूचक न होकर गुण कर्म व योग्यता के आधार पर गठित थी। राजा भी वशानुगत न होकर जनता का योग्यतम विद्वान धर्मात्मा वीर प्रतापी और प्रजापालक श्रेष्ठ पुरुष ही होता था।

अब मनुस्मृति के कुछ श्लोकों के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं जो दण्ड व्यवस्था से सम्बन्धित है –

(१) अष्टापाद्य तु शूद्रस्य स्तेये भवति किल्विषम।
षोड शैव तु वैश्यस्य द्वात्रिंशत क्षत्रियस्य च।।

(२) ब्राह्मणस्य चतु षष्टि पूर्ण वाऽपि शत भवेत।
द्विगुणा वा चतुषष्टि तद्दोषगुणा विद्धि स

अर्थ – किसी चोरी आदि के अपराध मे शूद्र को चोरी से आठ गुणा दण्ड दिया जाता है तो वैश्य को सोलह गुणा क्षत्रिय को बत्तीस गुणा ब्राह्मण को चौसठ गुणा या सौ गुणा अथवा एक सौ अट्ठाइसें गुणा दण्ड होना चाहिए अर्थात जिसका जितना ज्ञान और जितनी प्रतिष्ठा अधिक हो उस अपराध मे उतना ही अधिक दण्ड होना चाहिए।

(३) कार्षापण भवेद्दण्ड्यो यत्रान्य प्राकृतो जन।
तत्रराजा भवेद्दण्ड्य सहस्त्र मिति धारण।।

अर्थ – जिस अपराध मे साधारण मनुष्य को जैसा दण्ड हो उसी अपराध मे राजा को सहस्त्र गुणा दण्ड होना चाहिए। मत्री या दीवान को आठ सौ गुणा न्यून को सात सौ गुणा इसके भी न्यून को छ सौ गुणा। इस प्रकार छोटे से छोटे कृत्य अर्थात चपरासी को आठ गुणा दण्ड से कम न होना चाहिए क्योकि प्रजापुरुषों के राजपुरुषो को अधिक-दण्ड न होवे तो राजपुरुष प्रजापुरुषो का नाश कर देगी।

(४) अदण्ड्यान्दण्डयन् राजा दण्ड्यांश्चैवाप्य दण्डयन्।
अयशो महदाप्नोति नरक चैव गच्छति।।

अर्थ – जो राजा दण्डनीयो को न दण्ड और अदण्डनीयों को दण्ड देता है अर्थात दण्ड देने योग्य को छोड देता और जिसको दण्ड न देना चाहिए उसको दण्ड देता है वह जीता हुआ बडी निन्दा को और मरे पीछे बडे दु ख को प्राप्त होता है इसलिए जो अपराध करे उसको सदा दण्ड देवे और अनपराधी को दण्ड कभी न देवे।

(५) पिता चार्य्य सुहृन्माता भार्या पुत्र पुरोहित।
ना दण्ड्योनाम राज्ञोऽस्ति य स्वधर्मे न तिष्ठति।।

अर्थ – चाहे पिता आचार्य मित्र स्त्री पुत्र

पंच कुण्डीय महायज्ञ एवं विशाल शोभायात्रा

इन्दौर। मध्यभारतीय आर्य महासम्मेलन एव पच कुण्डीय महायज्ञ २३ २४ एव २५ नवम्बर १९९९ को आर्यसमाज सयोगिता गज इन्दौर के प्रागण मे सानद सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

सम्मेलन मे वेद सम्मेलन महिला सम्मेलन युवक सम्मेलन आर्य सम्मेलनो का आयोजन किया गया। तीन दिन तक चलने वाले पच कुण्डीय महायज्ञ के ब्रह्मा वेदवेदागो के मर्मज्ञ विद्वान आचार्य श्री विशुद्धानन्द जी बदायु थे। २३ नवम्बर को विशाल शोभायात्रा निकाली गई। जिसमे बडी सख्या मे दयानन्द सेवाआश्रम थादला के आदिवासी छात्र छात्राये आर्य विद्यालयो के छात्र छात्राओ आर्य वीर दलो अखाडे एव बडी सख्या मे प्रान्त भर से पधारे आर्यजनो ने भाग लिया। सम्मेलन का उद्घाटन म०प्र० के उपमुख्य मत्री माननीय सुभाष जी यादव ने २३ नवम्बर को प्रात १० ०० बजे किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपाध्यक्ष स्वामी सत्यानद जी परिव्राजक ने की। सम्मेलन के अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान आचार्य श्री विशुद्धानद जी पडित श्री वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय पडित महेन्द्र पाल आर्य एव भजनोपदेशक श्री वेगराज जी आर्य एव श्री लक्ष्मणसिह बेमोल पधारे जिनके विद्वतापूर्ण उपदेश एव भजनों को आर्यजन मत्र मुग्ध होकर तीन दिन तक सुनते रहे। बाहर से पधारने वाले व्यक्तियो की भोजन एव आवास की व्यवस्था प्रान्तीय सभा की ओर से नि शुल्क की गई थी।☆

धरना सभा का आयोजन

पटना गाधी मैदान जे० पी० प्रतिमा स्थल पर बिहार के प्रमुख आर्य [illegible] गो हत्या अश्लीलता नशाखोरी एव ईसाइ [illegible] आरक्षण के विरोध मे बिहार के विभिन्न [illegible] जा के सन्यासियो विद्वानो एव आर्य सभासदो की धरना सभा अयोजित हुई। जिसमे विभिन्न समाजसेवियो राजनेताओ तथा धर्म गुरुओ ने अपने विचार व्यक्त किय।

प्रमुख समाजसेवी एव उत्तर बिहार आय सभा के प्रधान पन्ना लाल आर्य राजनेता एव पूर्व विदेश मत्री श्री श्याम नन्दन मिश्र तथा काशी विद्यापीठ के सन्यासी वेदान्त जी महाराज ने गोरक्षा को आर्य सस्कृति से जुडे हुए पक्ष पर प्रकाश डाला तथा कहा कि महर्षि दयानन्द न भी गो करुणानिधि मे गो रक्षा के महत्व को दर्शाया है।☆

याद करले घडी बे घडी

रुद्रनाथ सिह

प्यारे प्रभु की है महिमा बडी याद करले घडी बे घडी।
किसी को है पता यह नहीं टूटे कब जिदगी की लडी।।
कर्म अच्छे किये इसलिये मानव जीवन तुम्हे हे मिला।
करदो उसकी कृपा को सफल मुक्ति का चल पडे सिलसिला।।
धर्म शास्त्रो की गह ले कडी।।
दीन दुखियो को तू मत सता उनकी सेवा मे जीवन बिता।
धर्मधारा बहाता तू चल एक क्षण भी न खाली बिता।।
ओ३म नाम की लगादे झडी।
जवानी जो तुमको मिली जल्द ही मे वो ढल जायेगी।
इन्द्रियो का तो कहना ही क्या उनकी हस्ती ही चुक जायेगी।।
तेरा होगी सहारा छडी।।
खाली आये थे खाली चले छूट सब कुछ यहीं जायेगा।
रुद्र नेकी वदी रह गयी धर्म ही तेरे सग जायेगा।।
अन्त की है विलक्षण घडी।।

प्रधान आर्यसमाज कप्तान गज बस्ती (उ०प्र०)

चिन्ता है आजादी के ५० वर्षो मे हिन्दी पूरे देश की भाषा नहीं बनी

आजादी की स्वर्ण जयन्ती पर यह दायित्व पूरा करने के लिए राष्ट्रपति का आह्वान

नई दिल्ली। राष्ट्रपति भवन मे हिन्दीसेवी सम्मान पुरस्कार देते हुए ५ दिसम्बर के दिन राष्ट्रपति डा० शकरदयाल ने आजादी के पचास वर्षो मे भी हिन्दी के पूरे देश की भाषा नही बन पाने पर चिन्ता अभिव्यक्त की। उन्होने कहा अब समय आ गया है जब हमे भाषा का प्रश्न केवल सस्कृति के प्रश्न क रूप मे नही अपितु राष्ट्रीय पुनर्निमाण एव राष्ट्रीय विकास के प्रश्न से भी जोड कर देखना होगा राष्ट्रपति ने कहा अगल वर्ष आजादी की स्वर्णजयन्ती के अवसर पर हमे भाषा सम्बन्धी अपना यह दायित्व पूरा करना चाहिए। यह दायित्व पूरा करने के लिए जरूरी है कि हिन्दी भाषा का अधिक से अधिक उपयोग किया जाए।☆

स्वाधीनता के लिए आहुति देने वाले ८० प्रतिशत आर्य थे

'करो या मरो' का सकल्प पूरा करे आर्य नेताओ के उद्बोधन

नई दिल्ली। आर्यसमाज (अनारकली) नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर अपने उदबोधन मे डा० धर्मेन्द्र शास्त्री ने कहा कृण्वन्तो विश्वमार्यम ऋषि का सकल्प था जिसे पूर्ण करने का दायित्व हम सब आर्यो पर है। देश की स्वतन्त्रता के लिए आत्माहुति देने वाले तथा अन्यान्य स्वतत्रता सेनानियो मे ८० प्रतिशत बलिदानी एव सेनानी महर्षि दयानन्द की स्वराज्य कल्पना से ओत प्रोत थे

आर्ष विदुषी डा० उषा शास्त्री ने अपन भाषण मे सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। आर्यसमाज क इस नियम की व्याख्या करते हुए सत्य विद्या पर विस्तार से प्रकाश डाला।

श्री तिलकराज गुप्ता ने जीवन की सुगन्धि महक महक का सस्वर गान किया।

उत्तरी बिहार मे डी०ए०वी० सस्थाओ के निदेशक डा० वाचस्पति कुलवन्त ने कार्य वा साधयेयम शरीर वा पातयेयम का स्मरण करते हुए करो या मरो का सकल्प दोहराया।☆

प्रजातन्त्र, अपराध और दण्ड व्यवस्था आज के परिप्रेक्ष्य मे

पृष्ठ का ८ शेष

ओर पुरोहित क्यो न हो जो स्वधर्म मे स्थिर नहीं रहता वह राजा का अदण्डय नही होता अर्थात जब राजा न्यायासन पर बैठ न्याय करे तब किसी का पक्षपात न करे किन्तु यथोचित दण्ड देवे।

ऐसे अनेको श्लोक मनुस्मृति मे हैं जो उस वैदिक काल की सामाजिक व्यवस्था धर्मनीति और राजनीति को प्रकाशित करते हैं।

इतिहास गवाह है ससार मे वैदिक ज्ञान और आर्य सस्कृति का मुख्य केन्द्र यह आर्यवर्त्त देश (भारत) रहा है। इसी आधार पर आर्यवर्त को जगदगुरु कहा जाता है। यही से दुनिया के देशो मे वैदिक ज्ञान एव वैदिक सस्कृति का प्रसारण हुआ है।

सृष्टि के आरम्भ से लेकर पाच हजार वर्षो से पूर्व समय पर्यन्त आर्यो का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात भूगोल मे सर्वोपरि एक मात्र राज्य था। अन्य देशो मे पाण्डलिक अर्थात छोटे छोटे राजा रहते थे। उस समय वैदिक धर्म का ही प्रचलन था। आज जैसा मत मतान्तरो अथवा सम्प्रदायो द्वारा परिपुष्ट धर्म उस समय नहीं था। महाभारत के साथ ही वैदिक सस्कृति का ह्रास आरम्भ हुआ जो आज तक चला आ रहा है। यही कारण है कि देश मे अशान्ति असुरक्षा विघटन अधर्माचरण गुलामी साम्प्रदायिक सकीर्णाता व द्वेष भावना अन्याय हिसा छल कपट और राष्ट्रीयचरित्र की कमी आदि बुराइया पनपन लगी है।

सार यह है कि शासन की जनतान्त्रिक पद्धति अपने आप मे बुरी नही है। यह श्रेष्ठतम है इसमे कोई सन्देह नहीं है किन्तु देशवासियो को इसके प्रति निष्ठा व विश्वास होना चाहिये। साथ ही हमे निजी स्वार्थो से ऊपर उठकर राष्ट्र हित को सर्वोपरि महत्व दना चाहिये। शासन से सम्बन्धित सभी व्यक्तियो को न्यायप्रिय सत्यनिष्ठा ईमानदार सेवाभावी व देशप्रेमी होना नितान्त आवश्यक है। राजनैतिक दल अपने अपने सिद्धान्तो पर अटल रहे तो तदनुकूल ही उनका आचरण होना चाहिये। दल बदल के कानून को कठोर स्पष्ट व सार्थक बनाना चाहिये। मनुस्मृति के अनुसार आज की परिस्थति मे दण्ड व्यवस्था भी कठोर ही होनी चाहिये तभी सार्थक परिणाम आ सकता है। कई लोग मनु का विरोध करते हैं किन्तु मुख्य कारण मनुस्मृति मे प्रक्षिप्त श्लोक के जुडने तथा वर्ण व्यवस्था को सही रूप मे न समझने के कारण है।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, हरिद्वार-२४६४०५ (उ०प्र०)

भवन पुनरुद्धार योजना (तृतीय चरण)

आदरणीय दानी महानुभाव सस्था हितैषी एव धर्मप्रेमी सज्जनो !
सादर नमस्ते।

यह तो आपको विदित ही है कि गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर पूर्वापेक्ष आपके सतत सहयोग से सिचित होता हुआ शतायु हो रहा है। इस अवस्था मे प्रौढता और परिपक्वता का समावेश सहज ही है। अत सस्था पूर्णरूपेण प्रगति पथ पर अग्रसर होते हुए विकासोन्मुख है। इस सबका श्रेय आप जैसे दानी महानुभावो एव सस्था हितैषियो को ही है।

सस्था के भवन जीर्णोद्धार योजना – तीसरे वर्ष मे तृतीय चरण की अपील आपकी सेवा मे प्रेषित करते हुए आपसे निवेदन किया जा रहा है कि विगत दो चरणो मे सगृहीत दान राशि से हमने सस्था को भूमि का सरक्षण आश्रम की दीवार का निर्माण एव टूटे–फूटे फर्शों का निर्माण करा दिया है। उक्त दोनो अपीलो मे सस्था को दानादि से उतना पैसा नही मिल सका है जितनी आवश्यकता थी किन्तु जो भी मिला उससे जिनका भी जीर्णोद्धार हो सका हो गया। अब इस तीसरे वर्ष मे तृतीय चरण की अपील के माध्यम से आपका ध्यान सस्था की जीर्ण होती हुई छतो की ओर दिलाया जा रहा है। तदर्थ मरम्मत मे लगभग २ लाख रुपये व्यय होने हैं अत मुक्त हस्त से दान देकर अपने शिक्षा प्रेम को प्रकट करते हुए भारतीय सस्कृति के महान सस्थान को जो होनहार एव निर्धन स्तर के बालको को वेदामृत पिलाकर भारतीयता को अक्षुण्ण रखने हेतु तैयार कर रहा है।

अपील के प्रथम और द्वितीय चरणो मे जिन महानुभावो ने उदारता से अपनी दानराशि भेजकर हमे अनुगृहीत किया है और इस पवित्र कार्य मे योगदान दिया है हम उनके आभारी हैं। प्रभु उनको एव उनके परिवार को सुख–समृद्धि से पूर्ण करे।

अत आप अपनी पवित्र आय से श्रद्धा प्रेम एव इच्छानुसार इस सस्था हेतु भूमि भवन निर्माण कराकर तथा सहायता राशि/ड्राफ्ट स्वय नकद "गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर को भेजकर यश एव पुण्य के भागी बने। आप द्वारा इस सस्था को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

निवेदक

कृष्णदत्त शर्मा	**डॉ० रामकरण शर्मा**	**डॉ० प्यारे लाल**
प्रधान सभा	*कुलाधिपति*	*मत्री सभा*
डॉ० यशवन्त सिह	**डॉ० गौरीशकर आचार्य**	**डॉ० हरिगोपाल शास्त्री**
मुख्याधिष्ठाता	*कुलपति*	*प्राचार्य*

शांति यज्ञ सम्पन्न

आर्यवीर दल के कर्मठ कार्यकर्त्ता ब्रह्मचारी इन्द्रदेव आर्य सुपुत्र प० नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक ग्राम बहीन जिला फरीदाबाद हरयाणा के दिवगत होने पर दिनाक ३० ११ ६६ को शान्ति यज्ञ श्रीमानस चन्द्र आर्य पुरोहित फिरोजपुर झिरका ने सम्पन्न कराया। तदोपरान्त श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमे हजारो व्यक्ति उपस्थित थे।

सर्व श्री हेठराम आर्य मानपुर श्री रामचन्द्र बेधडक असावटा श्री चतर सिह आर्य गुडगावा चौ० सोहन लाल रावत क्रान्ति कारी श्री मूलचन्द्र मगला पूर्व विधायक चौ० गयालाला पूर्व विधायक होडल श्री सुशील कुमार शर्मा प्रधान जिला ब्राह्मण सभा फरीदाबाद श्री आनन्द कुमार शर्मा विधायक बल्लभगढ अदि महानुभावो ने ब्रह्मचारी इन्द्रदेव आर्य को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

श्री नन्दलाल निर्भय ने आर्यत्व का परिचय देते हुए १५१ रुपये वेद प्रचार मण्डल मेवात ५१ रुपये आर्यसमाज बहीन ५१ रुपये सनातन धर्म सभा बहीन ५१ रुपये आर्यसमाज मानपुर ५१ रुपये वैदिक सेवा समिति मेवात तथा एक मन आटा धर्मशहीद कान्हा गऊशाला बहीन को सात्विक दान दिया।

तुलसी राम आर्य
प्रधान आर्यसमाज बहीन
जिला फरीदाबाद (हरियाणा) ☆

पुरोहित की आवश्यकता है

आर्यसमाज बी०एन०पूर्वी दिल्ली ५२ को सुयोग्य पुरोहित की शीघ्र आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार आवास की सुन्दर व्यवस्था शीघ्र स्वय सम्पर्क करें या पत्र व्यवहार करें।

परमानन्द नागर, प्रधान
आर्यसमाज शालीमार बाग
आर्यसमाज मन्दिर बी०एन०पूर्व
शालीमार बाग दिल्ली ५२

महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थ

१	सस्कार विधि (हिन्दी)	३० ००
२	सत्यार्थ प्रकाश (हिन्दी)	२० ००
३	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	२५ ००
४	गोकरुणानिधि	१ ५०
५	आर्याविमिनय	२० ००
६	सत्यार्थ प्रकाश (सस्कृत)	५० ००
७	सत्यार्थ प्रकाश (बडा हिन्दी)	१५० ००
८	सत्यार्थ प्रकाश (उर्दू)	२५ ००
६	सत्यार्थ प्रकाश (फ्रेन्च)	३० ००
१०	सत्यार्थ प्रकाश (कन्नड)	१०० ००

नोट दो सौ रुपये का साहित्य लेने पर २० प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा।

प्राप्ति स्थान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन 3/5 रामलीला मैदान
दिल्ली 2 दूरभाष 3274771 3260985

एक नम्र निवेदन –
टंकारा में 'आर्यसमाज मार्ग' एवम् 'दयानन्द डाकघर' ?

देश के विभिन्न शहरो मे सडकों के व डाकघरो के नाम ऋषि दयानन्द अथवा आयसमाज स सम्बन्धित रक्खे गए हैं परन्तु विडम्बना है कि ऋषि की जन्म तथा बोध भूमि टकारा मे किसी भी मार्ग का नाम ऋषि से सम्बद्ध नहीं है।

अत ऋषि दयानन्द की गरिमा को मद्देनजर रखते हुए टकारा मे ऋषि के जन्म गृह का मार्ग जिसका नाम वर्तमान मे देरी नाका रोड है उसका नाम परिवर्तन करके आर्यसमाज मार्ग रक्खा जाना चाहिए तथा टकारा उप डाक घर (जो ऋषि के स्मारक मे ही स्थित है) का नाम दयानन्द उप डाकघर रक्खा जाना अत्यावश्यक है।

इस कारण मेरी समस्त ऋषि भक्तो से विनम्र प्रार्थना है कि वे उक्त दयानन्द मार्ग' के विषय मे अपने निवेदन पत्र ग्राम पचायत टकारा को तथा दयानन्द डाकघर के विषय मे अपने निवेदन पत्र मुख्य डाकतार विभाग राजकोट का भिजवाए तथा दोनो पत्रो की प्रतिलिपिया प्रधानमन्त्री भारत सरकार मुख्यमन्त्री गुजरात एवम डाक तार मत्रालय भारत सरकार को भजने की कृपा कर। ऋषि दयानन्द की जन्म भूमि व बोध स्थलि टकारा को विश्वदर्शनीय बनाने की श्रखला मे यह महत्वपूर्ण कदम होगा।

अरुण शास्त्री पुरोहित
आयसमाज जामनगर (गुजरात) ☆

डॉ० भवानी लाल भारतीय द्वारा विदेश प्रचार

आर्य जगत क प्रसिद्ध विद्वान डा० भवानीलाल भारतीय इन दिना ३ महीने की विदेश यात्रा पर हालैण्ड म है भौर हालेण्ड क विभिन्न स्थानो पर भारतीय जी के लगभग २५ से अधिक व्याख्यान हो चुके है। उनकी इस विदेश यात्रा से वैदिक सस्कृति का अच्छा प्रचार हो रहा हे ओर हालैण्ड की जनता उनके भाषणा स लाभान्वित हो रही है। भारतीय जी के प्रचार कार्य मे नीदरलैण्ड के अर्य नेता डा० महेन्द्र स्वरुप जी का पूण सहयोग प्राप्त हो रहा है। ☆

आज देश को आर्यसमाज की आवश्यकता है

आयसमाज बक्सर के तत्वावधान मे गत २६ नवम्बर को जिला मुख्यालय बक्सर स्थित आयसमाज मन्दिर परिसर मे आज क सन्दभ मे आर्यसमाज शीर्षक विषय पर सगोष्ठी सोत्साह आयोजित की गयी जिसकी अध्यक्षता जिले के वरिष्ठ अधिवक्ता एव प्रतिष्ठित पत्रकार श्री रामेश्वर प्रसाद वमा न की।

निर्धारित विषय पर आयोजित सगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए जमानिया (उत्तर प्रदेश) से आमत्रित विशिष्ट अतिथि श्री रामाधार प्रसाद न कहा कि आज स एक सौ इक्कीस वष पूर्व महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आयसमाज की जितनी आवश्यकता समझी थी उससे कही अधिक आज सामाजिक शारीरिक आध्यात्मिक एव शैक्षणिक परिवेश मे देश को आर्यसमाज की जरूरत है। उन्हाने स्वामी दयानन्द के आयसमाज से सबधित मौलिक विचारो सन्देशो की विशद व्याख्या की।

ओमनाथ आर्य प्रचार मत्री
बक्सर ☆

पूज्य आचार्य लक्ष्मणानन्द जी की पुण्य स्मृति मे
शान्ति यज्ञ सम्पन्न

आर्यजगत के मूधन्य सन्यासी वेदो के प्रकाण्ड विद्वान आरेया आर्यसमाज की महान विभूति आचाय स्वामी लक्ष्मणानन्द जी वदवागीश का स्वर्गवास दिनाक ३ १२ ६६ दिन मगलवार को प्रात ८ ३० बजे आयसमाज मन्दिर आरेया मे हो गया है।

पूज्य स्वामीजी की आत्मा की शान्ति हेतु बृहद शान्ति यज्ञ का आयोजन आयसमाज मन्दिर मे दि० १५ १२ ६६ दिन रविवार को प्रात १० ०० बजे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेको गणमान्य व्यक्तियो ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित कर श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

प्रमोदकुमार आर्य मत्री

स्वामी शिवमुनि पुरस्कार १६६६ नामांकन

आर्यसमाज के प्रचार प्रसार मे सलग्न स्वर्गीय स्वामी शिवमुनि परिव्राजक की स्मृति म हमारे उक्तट्रस्ट ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तो क प्रचार प्रसार अथवा वेदिक धर्म क प्रचार मे सलग्न विद्वानो /सन्यासियो व पुस्तक रचयिताओ का सम्मानित करने की योजना बनाई। वर्ष १६६६ हेतु २००१ रु० के नगद पुरस्कार हेतु नामाकन आमत्रित हें। जीवन परिचय एव अन्य सभी विवरण १५ जनवरी तक **डॉ० अरुण आर्य प्रबन्धक वेदप्रचार निधि ३ ज्ञान योग अपार्टमेन्ट ४२ सी प्रतापगज बडोदरा ३६०००२ (गुजरात)** को भजने का कष्ट कर। ☆

वार्षिकोत्सव

प्रतिवषानुसार इस वर्ष भी आर्यसमाज बी०एच०ई०एल पिपलानी अपना ३४वा वार्षिकोत्सव दिनाक २२ दिस० ६६ से २५ दिस० ६६ तक पिपलानी स्थित आर्यसमाज मदिर मे बडे धूम धाम से मनाने जा रहा है। इस सुअवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान वक्ता तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। कार्यक्रम प्रतिदिन प्रात ८ ०० से ६ ०० बजे तक यज्ञ ६ ०० से ११ ०० बजे तक भजनोपदेश एव वेद प्रवचन होगे। सायकाल ६ ३० बजे से ८ ३० बजे तक भजनोपदेशक एव प्रवचन होगे।

दिनाक २३ दिस० ६६ को सायकाल श्रद्धानद बलिदान दिवस का कार्यक्रम एव २५ दिस० ६६ को प्रातकाल का कार्यक्रम एव प्रीतिभोज का कार्यक्रम रखा गया है।

इस अवसर पर डी०ए०वी विद्यालय पिपलानी के छात्रो के कार्यक्रम भी होग। सभी धर्म प्रमी धर्म प्राण सज्जनो स निवेदन हे कि इस शुभअवसर पर कार्यक्रमो म सपरिवार एव इष्ट मित्रो सहित पधारकर वर्त्पदश का लभ उठाव

रिन्द्र कुमार आर्य मत्री ☆

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी० एल० 11049/96 सार्वदेशिक साप्ताहिक 22 12 96 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/96
R N No 626/27 Licensed to Post without Pre Payment Licence No U(C)93/96 Post in NDPSO on 19/20 12 1996

स्वतन्त्रता की ५०वीं ... विशाल यज्ञ

एवं

शोभायात्रा

वेद मन्दिर, मसानी चौक, मथुरा

२१–२२ दिसम्बर १९९६

स्वतन्त्रता ज्योति मथुरा से दिल्ली की ओर

गुरु विरजानन्द धाम मथुरा से छाता, कोसी, होडल, महर्षि दयानन्द स्मारक केन्द्र वनचारी, पलवल, बल्लभगढ तथा फरीदाबाद होती हुई।

२५ दिसम्बर १९९६ को

श्रद्धानन्द बलिदान यात्रा

दिल्ली में सम्मिलित होगी

देश भर की प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं द्वारा यह स्वतन्त्रता ज्योति समस्त प्रदेशों में जाकर जन-जागरण का कार्य करेगी।

वन्देमातरम् रामचन्द्रराव	डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री	सूर्यदेव
प्रधान	मन्त्री	कार्यक्रम संयोजक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

३/५ दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली

फोन ३२७४७७१, ३२६०९८५

मथुरा के विभिन्न सामाजिक धार्मिक संगठनो के प्रतिनिधियो की स्वागत समिति

र शिक प्रकाशन दरियागज नइ दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा. सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली–2 से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३४ अंक ४८] दयानन्दाब्द १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६ माघ कृ० ८ सं० २०५२ १४ जनवरी १९९६

राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा उत्पन्न करने वाली घटनाओं पर सरकार श्वेत-पत्र जारी करे

सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों की मांग

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ से जारी एक विज्ञप्ति में आज कहा गया कि राष्ट्रीय सुरक्षा और अखण्डता को खतरा उत्पन्न करने वाली घटनाओं पर सरकार श्वेत-पत्र जारी करे। विज्ञप्ति में कहा गया है कि उग्रवाद, हिंसा, बम विस्फोट, घुसपैठ और पुरुलिया में हथियार गिराये जाने जैसी घटनाओं ने राव सरकार की न केवल कमजोरी एवं अक्षमता का परिचय दिया है बल्कि यह भी संकेत मिला है कि सरकार निहित स्वार्थों की पूर्ति हेतु देश को अन्धेरे में रखना चाहती है और अपनी जिम्मेदारियों से बचने के लिये भ्रम की स्थिति पैदा कर रही है।

सार्वदेशिक सभा जो कि एक राष्ट्रवादी संस्था है के अधिकारियों ने कहा है कि इन घटनाओं की सबसे गम्भीर परिस्थिति तो यह है कि राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने की बजाय सरकार ने अपनी कुशलता का परिचय उच्च स्तर पर भ्रष्टाचार को प्रश्रय देने और हर स्तर पर उन ताकतों के साथ समझौता करने में दिया है जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा बना हुआ है। विज्ञप्ति में सरकार को सुझाव दिया गया कि इन घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोकने के लिये कड़े कदम उठाये जायें अन्यथा इसके बहुत गम्भीर परिणाम सरकार को भुगतने पड़ सकते हैं।

इमामों को सरकारी खजाने से वेतन दिये जाने का राष्ट्रव्यापी विरोध होगा।

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा है कि सरकार द्वारा इमामो को वेतन देने की प्रथा यदि प्रारम्भ की गयी तो इससे भारतीय संविधान का पंथ निरपेक्ष स्वरूप बिगड़ जायेगा तथा एक नयी भ्रष्ट व्यवस्था शुरू हो जायेगी। आज यदि इमामों को वेतन दिया गया तो भविष्य में मन्दिरों के पुरोहित पुजारी गुरुद्वारो के ग्रन्थी तथा गिरजाघरो के पादरी इत्यादि भी सरकारी खजाने से वेतन की मांग उठाने लगेंगें।

यदि सरकार ने इस प्रस्ताव को रद्द न किया तो आर्य समाज इस का देशव्यापी विरोध करेगा। इस प्रस्ताव का विरोध सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, सहित कई अन्य राष्ट्रवादी संगठनो ने भी किया है।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सदा की भांति इस वर्ष भी

विद्वानों का सम्मान

विद्वानो का सदा सम्मान होना ही चाहिए और सदा से होता भी आया है। सार्वदेशिक सभा ने १९७५ मे आर्य समाज स्थापना दिवस पर विद्वानो का सम्मान प्रारम्भ किया था तब से लेकर--एक आर्यों की सम्मान परम्परा ही चल चुकी है। प्रतिवर्ष बम्बई आर्य समाज की ओर से दो-चार विद्वानो का विशेष सम्मान किया जाता है।

इस वर्ष कुछ विद्वानो व कुछ परिव्राजको का स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस २५ दिस के अवसर पर लालकिले के प्रागण मे प्रशस्तिपत्र देकर सम्मान किया गया है। सम्मान थोडा हो या बहुत, सम्मान मे पान का बीडा भी महत्व रखता है। इस सम्मान योजना मे--

चार-परिव्राजक और चार वैदिक विद्वानो का चयन किया गया।

परिव्राजको में--

(१) सर्वश्री त्यागमूर्त्ति स्वामी विवेकानन्द जी महाराज प्रभात आश्रम भोला झाल, मेरठ।
(२) स्वामी तत्वबोधानन्द जी सरस्वती त्याग की मूर्ति है, अयोध्यावासी।
(३) स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती, उडीसा।
(४) स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती, आर्य समाज हापुड।

वैदिक विद्वान्--

(१) डा० रामनाथ जी वेदालकार, गीताश्रम ज्वालापुर हरिद्वार।
(२) डा० कपिलदेव द्विवेदी ज्ञानपुर वाराणसी।
(३) आचार्य धर्मवीर शास्त्री साहित्याचार्य दिल्ली।
(४) सुश्री प्रज्ञादेवी जी विदुषी, वाराणसी।

इन महान विद्वरो से पधारने की प्रार्थना की इनमे पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती तथा आचार्यवर प० रामनाथ वेदालकार ने अपने को सम्मान से पृथक रखकर ही सन्तोष रखा। शेष विद्वानो की शृ खला मे सबका हृदय से अभिनन्दन किया गया।

(१) स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने मान-सम्मान स परे होकर वैराग्य धारण किया। परन्तु अपने आशीर्वचनो से सभा को पुरस्कृत किया।

(२) आचार्य प्रवर प० रामनाथ जी वेदालकार भी साधु स्वभाव के व्यक्ति हैं और ऐसे सम्मानो से अपने को दूर ही रखते हैं। मैं उनकी विद्वत्ता गुण ग्रहण मे प्रीति स्नेहल स्वभाव सबल चित्त उदारमना व्यक्ति हैं उन्होने भी शुभकामनायें देकर सन्तोष प्रकट किया।

वैदिक विद्वानों का सम्मान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की परम्परानुसार वैदिक विद्वानो का सदा ही पत्र-पुष्प से सम्मान किया जाता रहा है इस वर्ष इस कोटि मे प्रथम विद्वान स्वतन्त्रता सेनानी ज्ञानपुर वाराणसी निवासी--

डा० कपिलदेव द्विवेदी

डा० कपिलदेव द्विवेदी का नाम प्रमुख था। श्री आचार्य जी गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार के स्नातक वाराणसेय सस्कृत विश्वविद्यालय के आचार्य इलाहाबाद वि० वि० से डाक्टर (पी एच डी) वेदो के अद्वितीय विद्वान सस्कृत साहित्य व व्याकरण के साथ अग्रेजी भाषा के विद्वान् हैं। वेदो के सीरियल क्रमश आप जो समाज को दे रहे हैं वह आपकी विलक्षण प्रतिभा की देन है। आप गवर्नमेन्ट कालिज से कार्य मुक्त होकर साहित्य सृजन मे लगे हुए हैं।

विदेशो मे प्रचार कार्य के लिए यदा कदा बाहर भी जाते रहते हैं।

ऐसे विद्वान का इस वर्ष सार्वदेशिक सभा ने सम्मान कर प्रशस्ति पत्र शाल देकर सम्मानित किया। द्विवेदी जी को यजु० साम० सस्वर कण्ठस्थ है इसी से आप द्विवेदी सज्ञा से सुशोभित हैं।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के शुभावसर पर हजारो आर्यों ने करतल ध्वनि व वैदिक धर्म के जयकारे के साथ सम्मानित किया।

आचार्य श्री धर्मवीर शास्त्री एम. ए. साहित्याचार्य

द्वितीय विद्वान् आचार्य धर्मवीर शास्त्री भी गुरुकुल महा विद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार के स्नातक हैं। दर्शन साहित्य के अद्भुत विद्वान् हैं। हिन्दी साहित्य एव सस्कृत साहित्य मे बहुत से काव्य ग्रन्थो को तैयार किया है।

स्नातक होने के पश्चात आपने जसपुर नैनीताल में अध्यापन किया फिर दिल्ली मे पठन पाठन किया। विद्यालय से कार्य मुक्त होकर आप डी० ए० वी० सस्थान की ओर से उपदेशक विद्यालय मे नये उपदेशकों को महर्षि दयानन्द प्रणीत पद्धति का विशेष अध्ययन कराने में रुचि ले रहे हैं।

दार्शनिक विद्वान् आचार्य धर्मवीर शास्त्री को सम्मानित कर सार्वदेशिक सभा अपने को धन्य समझती है।

आपकी योग्यता यह है कि बचपन से हिन्दी व सस्कृत साहित्य मे बहुत रुचि के साथ शास्त्रो का अध्ययन गुरुमुख से न कर स्वय पढ व पढाकर परीक्षा उत्तीर्ण की है।

सार्वदेशिक सभा इस सम्मान परम्परा का निर्वहन सदा ही करती रहेगी।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान एवं सुप्रीमकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सोमनाथ मरवाह द्वारा दिया गया–

श्वेतपत्र का उत्तर (८)

मैंने श्वेत पत्र के उत्तर मे सुमेधानन्द, शेरसिंह, स्वामी ओमानन्द व धर्मानन्द के विषय मे थोडा सा पीछे लिखा है और ख्याल था कि इसके पढ़ने के बाद शायद वह सीधे रास्ते पर आ जायेंगे। परन्तु कहावत है कि कुत्ते की पूछ सदैव टेढी ही रहेगी चाहे कुछ भी कर लो सीधी नहीं हो सकती।

इसमे कोई सन्देह नही कि प्रो० शेरसिंह ने शुरू मे आर्य समाज के लिए सरकार मे मन्त्री पद से त्यागपत्र देकर हिन्दी आन्दोलन मे गिरफ्तारी दी थी। परन्तु उसके पश्चात जब इन लोगो को ख्याल हुआ कि हरियाणा अलग प्रान्त बन सकता है तो फिर यह आर्य समाज को भूल गए। मैं उस अखबार की तलाश मे हू जिसमे मैंने खुद पढा है कि इन लोगो ने लिखा है कि सन्त फतेहसिंह स्वामी दयानन्द से भी बडा था और श्री जगदेव सिद्धान्ती ने यहा तक कहा दिया था कि यदि कोई पजाबी शरणार्थी हरियाणा मे आकर रहने की कोशिश करेगा तो उसका सिर गन्ने के खेतो मे फिकवा दिया जावेगा। बहरहाल यह पुरानी बातें है और इनको भूल जावें तो इसमे आर्य समाज का ही भला होगा।

इसी तरह मुझे यह कहने मे कोई सकोच नही कि स्वामी विद्यानन्द भी एक विद्वान व्यक्ति है परन्तु उनकी सारी आयु इसी हरियाणा ग्रुप के साथ व्यतीत हुई क्योकि वह पानीपत कालेज के प्रिंसिपल थे और यही कारण है कि सन्यासी होते हुए भी उन्हे झूठ बोलन मे कोई स कोच नही है। अब अदालत ने उन्हें ३ अप्रैल १९९६ को बयान देने के लिए आदेश दिया है, और मैं ब्यावर आर्य समाज के तमाम रिकार्ड एकत्र करके उपरोक्त तारीख पर प्रस्तुत करूगा। खासकर वह रिकार्ड उसका उत्तर बतावेंगे जिसे विद्यानन्द ने अपनी दरख्वास्त मे लिखा है। जब वह ब्यावर आर्य समाज के सदस्य बने, उन्होने वर्ष मे अपनी कितनी उपस्थिति वहा पर अकित की और कितना चन्दा दिया है। परन्तु मुझे सन्देह है कि वह कोई न कोई बहाना बनाकर उस तारीख को हाजिर नही होगा।

इन सब व्यक्तियो के विषय मे विस्तार से लिखने से पूर्व मैं चाहू गा कि जो व्यक्ति मेरे इस उत्तर को पढ रहे हैं उनको जानकारी होनी चाहिए कि पिछले समय मे आर्य समाज ने क्यो इतनी तरक्की की। इसके उत्तर मे यहा पर कुछ स्पष्टीकरण देना आवश्यक समझता हू कि आर्य समाज का एक उपदेशक रेल मे अपने बच्चो के साथ यात्रा कर रहा था जिसमे एक बच्चा उस समय ३ वर्ष से कम आयु का था। उन दिनो जो बच्चा ३ वर्ष से कम आयु का होता था उसका टिकट नही लगता था परन्तु सफर के दौरान मे वह बच्चा ३ वर्ष की आयु पूरी कर गया। और जब एक दिन ऊपर हो गया तो उस उपदेशक ने रेलवे के टिकट कलेक्टर को बुलाकर उस बच्चे का आधा टिकट बनाया और कहा कि अब यह बच्चा ३ वर्ष की आयु पूरी कर चुका हैं इसलिए कानून के हिसाब से इसका भी अब सफर मे टिकट होना चाहिए।

इसी तरह हमारे एक सेशन जज थे उनके चपरासी की लडकी की शादी थी उन दिनो आज की तरह शामियाने, कुर्सिया आदि नही हुआ करती थी। बल्कि मोहल्ले के लोग ही बारात को खाना परोसने तथा उनके ठहरने आदि का प्रबन्ध किया करते थे। उस चपरासी के आमन्त्रण पर सेशन जज भी उसकी लडकी की शादी मे शामिल हुए और दूसरो की तरह बरातियो को खाना परोसने का काम करते रहे, किसी एक व्यक्ति ने जज साहब का कहा कि आपको अपनी पोजीशन के मुताबिक ऐसा नही करना चाहिए उस व्यक्ति की बात का जो जवाब जज साहब ने दिया वह स्वर्णाक्षरो मे लिखे जाने योग्य है। उन्होने कहा कि कोर्ट मे मैं सेशन जज हू और यह मेरा चपरासी है पर यहा पर मै भी आर्य समाजी और यह भी आर्य समाजी है, और आर्य समाज मे ऊच-नीच अमीर गरीब होने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता सभी एक जैसे हैं।

इसी प्रकार मुझ स्व० जस्टिस हरिकिशन मलिक की याद आती है जो कि दिल्ली की तीस हजारी अदालत मे किसी समय मे जज थे और हरियाणा के रहने वाले थे और जाट थे। परन्तु नौकरी की वजह से उनका निवासस्थान दिल्ली मे था और वह सोनगज आर्यसमाज मल्कागज के इलाके मे रहते थे इसी आर्यसमाज का मैं पहले सदस्य था और उन दिनो मैं भी मल्कागज मे ही रहता था। आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव के सिलसिले मे मैं चन्दा इकट्ठा करने के लिए राणाप्रताप बाग मे एक व्यक्ति के पास गया, और जिस व्यक्ति के पास गया वह मेरा क्लाईट भी था और प जाब का रहने वाला एक सिख जाट था तथा वह हर वर्ष एक अच्छी राशि दान स्वरूप आर्य समाज को दिया करता था। मैंन उससे पूछा कि मैंने सुना है कि आपने एक नया तीन मजिला मकान बनवाया है या खरीदा है। इस बातचीत के दौरान उसने बताया कि जो मकान उसने बनाया है उसके करीब एक जजसाहब का भी मकान है जो अभी बन रहा है, और वह जज भी अजीब किस्म का है जो सुबह मजदूरो की तरह काम करता हैं और फिर कपडे बदलकर कचहरी चला जाता है और शाम को आकर फिर वही काम करता है। उसकी इस बात का सुनकर मैं उस व्यक्ति के साथ जज साहब के उस मकान के पास पहुचा जो बन रहा था वहा जाकर देखा कि वह जज स्वय मजदूरो की तरह सरिया मोड रहा हैं तथा अन्य काम कर रहा है। तब मैंने उसका नाम लकर कहा कि जस्टिस हरिकिशनसिंह मलिक आप यह पागलपन का कार्य क्यो कर रहे है, आपके पास बहुत पैसा है फिर यह ५ ७ रुपये की मजदूरी का कार्य आप क्यो कर रहे हैं, हमारे इस प्रश्न का उसने जो जवाब दिया वह भी स्वर्णाक्षरो मे लिखे जाने योग्य है। उसने कहा कि यह ५ मजिला मकान मैंन अपने पिताजी के नाम स एक ट्रस्ट के रूप मे बनाया है और रुपया तो हर व्यक्ति लगा सकता है परन्तु अपना खून पसीना हर व्यक्ति नही लगा सकता। उसने अपने हाथो को हमे दिखाया जिसमे सरिया काटने और मोडने के निशान पडे हुए थे। जस्टिस साहब ने यह भी कहा कि यह मकान बोलेगा कि एक योग्य पिता के योग्य पुत्र ने रुपया ही नही अपितु अपना खून पसीना भी पिता की यादगार में लगाया है। तो मैं यहा पर यह कहना चाहता हू कि वह थे असली आर्य समाजी व्यक्ति। आज तो आर्य समाज को बदनाम करन वाले बहुत सारे नकली आर्य समाजी बने फिरते हैं जो जरा से अपने स्वार्थ के लिए सभी जगह सिवाय झूठ बोलने के सगठन के हित की बात सोचते भी नही है।

(क्रमश)

सार्वदेशिक सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष

बाबू सोमनाथ मरवाह एडवोकेट स्वास्थ्य लाभ कर अस्पताल से घर वापस

पिछले दस दिनो से बाबू सोमनाथ मरवाह अस्वस्थ चल रहे थे जिस कारण उन्हें ग्रेटर कैलाश नर्सिंग होम मे प्रविष्ट कराया गया था और किसी को मिलने के लिए डाक्टरो ने समय नही दिया। अब वह स्वस्थ होकर घर आ गये हैं। डाक्टरो ने अभी ३१ जनवरी तक उन्हें पूर्ण विश्राम की सलाह दी है। और घर पर उनकी औषधि नियमित रूप से चल रही है। हम सबकी परमात्मा से प्रार्थना है कि बाबू जी शीघ्र ही पूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करें, जिससे वे पूर्व की भाति आर्य समाज के कार्य में पुनः लग सकें।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सम्पादक एव सभा मन्त्री

आर्य समाज की दिवंगत विभूतियां (कुछ संस्मरण)

—स्व० रघुनाथ प्रसाद पाठक

स्वर्गीय श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक अप्रैल १९२५ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा में आये थे और मृत्यु पर्यन्त उसकी सेवा करते रहे। १६ जुलाई १९८५ को उनका निधन हुआ।

सार्वदेशिक सभा के नियमित कार्य के अतिरिक्त वे अपने लेखन कार्य के लिए भी समय निकाल लेते थे। उन्होंने लगभग १५-१६ छोटी-बड़ी पुस्तकें लिखी थीं, जिन्हें स्वयं सार्वदेशिक सभा ने प्रकाशित किया।

उनके निधन के पश्चात् हमें उनके निवास स्थान से कुछ पाण्डु लिपियां प्राप्त हुईं जिनमें उन्होंने कतिपय तत्कालीन आर्य नेताओं के संस्मरण लिपि बद्ध किए थे, जिनके सम्पर्क में आने का उन्हें अवसर मिला था। उनके यह संस्मरण हम 'सार्वदेशिक' में प्रकाशित कर रहें हैं। —सम्पादक

महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज

श्री स्वामी जी महाराज का जन्म माघ शुक्ला ५ (वसंत पंचमी) सम्वत् १९२२ को संयुक्त प्रान्तांर्गत अलीगढ़ जिले में, जहां उनके पिता सर्विस में थे, हुआ था उनके पूर्वजों का निवास स्थान शृंगारपुर (जौनपुर) है।

श्री स्वामीजी की प्रारम्भिक शिक्षा अरबी और फारसी के एक मकतब में प्रारम्भ हुई थी। फारसी और अरबी के साथ-साथ उन्हें अंग्रेजी की भी शिक्षा दी गयी। परन्तु यह शिक्षा नियमित रूप से जारी न रही। सन् १८८९ में इनके पिताजी के आकस्मिक देहांत के कारण इस शिक्षा की भी इतिश्री हो गयी।

२३ वर्ष की आयु में इनका विवाह हुआ। इनके दो पुत्र पैदा हुए परन्तु दोनों ही जीवित न रह सके। द्वितीय पुत्र के प्रसव के समय कुछ असावधानी के कारण इनकी पत्नी का देहांत हो गया, और ६ मास के पश्चात् पुत्र का भी।

इस हानि से सन् १९११ में, जब ये ४३ वर्ष के ही थे इनके पारिवारिक जीवन की समाप्ति हो गयी।

श्री स्वामी जी जब अलीगढ़ में एक अंग्रेजी स्कूल में पढ़ते थे तब उन्हें स्वामी दयानन्द जी के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, परन्तु किसी विशेष कारणवश ये स्वामी दयानन्द जी का व्याख्यान सुनने से वंचित रह गये।

इन्होंने सन् १९१२ तक मुरादाबाद में सरकारी सर्विस की। इनका समस्त सर्विस काल परिश्रम शीलता और ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध रहा। इनकी सामाजिक सेवायें, सर्विस लगने के कुछ समय बाद ही मुरादाबाद में प्रारम्भ हो गयी थीं, और जब तक इनके पारिवारिक जीवन की समाप्ति हुई आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त तक ये सेवायें विस्तृत हो चुकी थी।

इसी बीच में गुरुकुल फर्रुखाबाद से वृन्दावन लाया गया। वृन्दावन मे उसके लिये स्थान बनवाने तथा उसका प्रबन्ध करने के लिए, आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रार्थना पर ये छुट्टी लेकर, वृन्दावन आ गये और वहां कार्य आरम्भ कराया। इस कार्य के लिए बीच में दो बार छुट्टी बढ़ानी पड़ी और अन्त मे गुरुकुल के प्रबन्ध के लिये कोई उपयुक्त व्यक्ति न मिलने पर आर्य प्रतिनिधि सभा के विशेष अनुरोध पर इन्हे स्थायी रूप से वहीं रहना पड़ गया।

श्री स्वामी जी का सामाजिक जीवन मुरादाबाद में आर्य समाज के दस नियमों और 'सत्यार्थ प्रकाश' के स्वाध्याय के साथ आरम्भ हुआ था। लगभग एक वर्ष तक इन्होने उन नियमो पर आचरण करके जब यह देख लिया कि वे आज भी उन पर चल सकेंगे तो इन्होंने आर्य समाज में अपना नाम लिखा लिया।

अपने समय में आर्यसमाज में श्री स्वामी जी एक हस्ती थे जिन पर भरोसा किया जा सकता था। स्वामी जी का जीवन आर्य समाज के लिये गौरव की वस्तु रही। उनके अनेक ग्रन्थ आज आर्य समाज में ऋषि ग्रन्थों को छोड़कर सबसे अधिक लोकप्रिय हैं। उनके रचनात्मक कार्यों में से निम्न कार्य विशेष उल्लेखनीय हैं।

पर्वतांचलों में कार्य

नैनीताल, अल्मोड़ा, गढ़वाल आदि के पर्वतांचलों में सुधार, प्रचार और सेवा का स्वामी जी ने जो कार्य किया वह विपुल और प्रशंसनीय रहा। "उन्होंने इस क्षेत्र को अपने जप, तप, स्वाध्याय, ईश्वर चिन्तन और योगाभ्यास के लिए चुनकर तीर्थ स्थल बना दिया। बच्चों को शिक्षा दी, नायक जाति का सुधार किया, विद्यार्थियों को सहायता दी; रोगियों की चिकित्सा की, भूखों को अन्न वस्त्र दिये और संतप्त हृदयों को सांत्वना दी।" ये उद्‌गार वे जो सन् १९४५ मे उन्हें दिए गये एक मान-पत्र में प्रकट किये गये थे।

मथुरा शताब्दी

श्री मद्दयानन्द जन्म शताब्दी मथुरा के सुप्रबन्ध से प्रभावित होकर; जिसमें लगभग ४ लाख नर-नारी एकत्र हुए थे, और कोई भी अप्रिय घटना घटित न हुई थी, आर्य जनता ने स्वामी जी को मन ही मन अपना भावी नेता स्वीकार किया था। अवश्य शहर मे चौबों और विद्यार्थियों में कुछ झगड़ा हो गया था, जिसे स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने घटना स्थल पर जाकर तुरन्त शांत कर दिया था।

उस झगड़े के बाद एक दिन मथुरा के जिलाधीश और सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस स्वामी जी के पास गये और दबे शब्दो मे शिकायत सी की, कि यदि प्रबन्ध अच्छा होता तो यह झगड़ा न होता। स्वामी जी ने उनसे सहमत होते हुए कह दिया कि "झगड़ा वहां हुआ जहां पुलिस का प्रबन्ध था। इसीलिए यदि पुलिस का प्रबन्ध अच्छा होता, तो निश्चय ही झगड़ा न होता। हम तो केवल उतने ही प्रबन्ध के उत्तर दाता हैं जो हमारे नगर में हमारी ओर से हमारे स्वयं-सेवक कर रहे हैं।" इस पर वे मुस्कराकर चले गये।

मेला समाप्त हो जाने पर स्वामी जी महाराज को एक मास पर्यन्त सामान की व्यवस्था करने कराने में लगा था। इस बीच में एक दिन बाबू सुनहरी लाल, डिप्टी कलक्टर मथुरा, स्वामी जी के पास आये और बातचीत के दौरान कहा—

"आपने हमारे जिले के मैजिस्ट्रेट को निराश कर दिया।" स्वामी जी ने पूछा कैसी निराशा? तो उन्होंने बताया कि "जिलाधीश ने यह समझकर कि लाखो आदमी मेले मे जमा होने वाले हैं झगड़े, किस्से, वारदातें बहुत होंगी, इसलिए ४ डिप्टी कलेक्टरो को उनके निपटारे के लिए नियत किया था। परन्तु हुआ यह कि कैम्प मे तो नाम मात्र का भी कोई झगड़ा नहीं हुआ। शहर में एक झगड़ा हुआ था सो उसे भी आपने और स्वामी श्रद्धानन्द जी ने नहीं चलने दिया।" इस पर स्वामी जी ने हंसकर उत्तर दिया, "यह तो बहुत अच्छा हुआ, आप लोगो को फुर्सत रही और आप अच्छी तरह मेला देख सके। अन्यथा आपको सारा समय मुकदमों के फैसले मे ही लगाना पड़ता।"

उल्लेखनीय है कि यू. पी. के गवर्नर ने एक विशेष पत्र लिखकर मेले के प्रबन्ध मे प्रशासन द्वारा सहयोग देने की पेशकश की थी जिसे स्वामी जी ने यह लिखकर कि "आर्य स्वयं-सेवक स्वयं सुप्रबन्ध का दायित्व उठायेंगे, और प्रत्येक आर्य नर-नारी उसमें सहयोग देगा," इस पेशकश को धन्यवाद पूर्वक अस्वीकार कर दिया था।

इस मेले में जितने आर्य नर-नारी शरीक हुए थे उन्हें राम-राज्य के स्वर्णिम काल की झांकियां देखने को मिली थीं, और वे इसकी अमिट छाप लेकर अपने घरो को लौटे थे। (क्रमशः)

पाठक्रमादर्थक्रमो बलीयान् एक विवेचन

आचार्य डा० सत्यव्रत राजेश

मीमांसा दर्शन का एक ज्ञापक है–पाठक्रमादर्थक्रमो बलीयान्--अर्थात पाठक्रम से अर्थक्रम अधिक बलवान है। विद्वान संस्कारविधि में इस ज्ञापक को घटाकर उसमें कुछ परिवर्तन की सम्मति देते हैं। वे अग्निप्रदीपन-मन्त्र के अन्त में–विश्वे देवा यजमानश्च सीदत लिखा पाते हैं जिसका अर्थ है 'सब देव और यजमान बैठें। शतपथ मे विद्वानो को देव कहा गया है 'विद्वांऽसो-हि देवाः। अतः उपर्युक्त वाक्य का अर्थ हुआ कि सब विद्वान और यजमान बैठें। बैठेंगे तब, जब खड़े हों। बैठा हुआ तो बैठा ही है, उसे बैठने के लिए कहना ही व्यर्थ है। इस स्थल पर पूर्व ज्ञापक को ध्यान में रखते हुए वे खड़े खड़े ही अग्न्याधान कराते हैं तथा स्वयं भी खड़े रहते है। इस मन्त्र से खड़े ही अग्न्याधान कराकर वे और यजमान बैठते है। इसी प्रकार–

यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिच यद्वा न्यूनमिहाकरम्०

इस मन्त्र का अर्थ है कि इस कर्म मे जो अधिक या न्यून मैंने किया है स्विष्ट कृत अग्नि, जो कि सर्वप्रायश्चित्ताहुतियो का पूर्ण करने वाला है, इसे जाने तथा प्राप्त करे आदि। इस अर्थ को देखकर वे इसका विधान कर्म के अन्त मे करते है। वे या तो इस मन्त्र से अन्त मे आहुति दिलवाते है अथवा जहा यह लिखा है वहा तथा दूसरी बार अन्त मे, इस प्रकार दो बार आहुति दिलाते हैं। कई लोगो ने तो यज्ञ की पुस्तक मे परिवर्तन करके इसे लिख ही अन्त मे दिया है। यह सब उन्होंने "पाठक्रमादर्थक्रमो बलीयान्" ज्ञापक को आधार बनाकर ही किया है।

मेरी दृष्टि मे ये दोनो ही युक्त नही है। क्योंकि 'अर्थक्रम' में जो अर्थ पद है उसे उन्होने शब्द का अर्थ, जिसे उर्दू मे मायने तथा अंग्रेजी में मीनिंग कहते है, समझा है। किन्तु यह ठीक नही है। इसका अर्थ प्रयोजन है। "किमर्थमागतोऽसि" ? वाक्य में अर्थ पद का अर्थ प्रयोजन ही है। कठोपनिषद मे आचार्य यम कहते हैं–

'हीयतेऽर्थाद्य उ प्रेयोवृणीते' वह व्यक्ति अर्थ से हीन हो जाता है जो प्रेय को चुनता है। यहा अर्थ का अर्थ न पद का अर्थ है और न धन अपितु प्रयोजन ही है। यहा बताया जा रहा है कि वह व्यक्ति मानव जन्म के प्रयोजन, धर्म अर्थ काम तथा मोक्ष स च्युत हो जाता है जो श्रेयस् को त्याग कर केवल प्रेयस् को चुन लेता है अपने जीवन का लक्ष्य बना लेता है। पारस्कर गृह्यसूत्र मे यज्ञवेदि पर यज्ञोपयोगी वस्तुओ के प्रसग मे कुछ वस्तुओ का निर्देश करके लिखा है–अर्थवन्तिसाद्य--अर्थ वाली वस्तुए रख कर। यहा भी अर्थ पद प्रयोजन वाची ही है। सूत्र का भाव है कि यज्ञ के लिए जिन जिन वस्तुओ का प्रयोजन है उन यज्ञोपयोगी वस्तुओ को यज्ञवेदि पर रख कर।

इस प्रकार हम देखते है कि अर्थो पद अन्य अर्थो के अतिरिक्त प्रयोजन अर्थ में भी प्रयुक्त होता है। 'पाठक्रमादर्थक्रमो बलीयान्' "वाक्य मे भी यह प्रयोजन के अर्थ मे आया है। यहां वाक्य का अर्थ है कि पाठक्रम से प्रयोजनक्रम अधिक महत्वशाली होता है। संस्कारविधि मे ही कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जाते है–

(१) संस्कारविधि मे महर्षि दयानन्द जी ने यज्ञ के आरम्भ में ईश्वर स्तुति, प्रार्थनोपासना, स्वस्तिवाचन, शान्तिप्रकरण के पश्चात यज्ञदेश, यज्ञ-शाला, यज्ञकुण्ड का परिमाण, यज्ञसमिधा, होम के चार प्रकार के द्रव्य, स्थालीपाक तथा यज्ञपात्रों का उल्लेख किया है। ऐसा ही उल्लेख उन्होंने संस्कारविधि के पुंसवन संस्कार मे भी किया है जबकि प्रयोजनानुसार ये सब पहले होने चाहिए। क्योंकि ईश्वर स्तुति आदि का पाठ संस्कार में यज्ञ करने से पूर्व किया जाता है। यज्ञ में यज्ञदेश, यज्ञशाला आदि उपर्युक्त सब वस्तुएं पहले होनी चाहिएं। उनके अभाव में यज्ञ सम्भव ही नहीं है। अतः यहां पाठक्रम से प्रयोजन क्रम को प्राथमिकता देकर यज्ञ से पूर्व यज्ञदेश, यज्ञशाला 'यज्ञकुण्ड, यज्ञसमिधा, सामग्री, भात तथा यज्ञपात्रों की अपेक्षा है।

(२) सीमन्तोन्नयन संस्कार में आघारावाज्यभागाहुति तथा व्याहृति आहुतियों के बाद चावल तिल तथा मूंग की खिचड़ी बनाने का उल्लेख है। जबकि खिचड़ी पहले ही बनाकर रख ली जाती है। यहां भी पाठक्रम से प्रयोजन को वरीयता दी जाती है।

(३) चूड़ाकर्म संस्कार में यज्ञ कुण्ड के चारों ओर जल छिड़कने के पश्चात अग्न्याधान, समिदाधान का उल्लेख है। जबकि सामान्य प्रकरण में महर्षि जी ने इन दोनों का जल-सेचन से पूर्व विधान किया है यहां भी यह ज्ञापक प्रवृत्त होताहै। ऐसे हीसंस्कारविधिमे अन्यत्र भी देखा जा सकता है।

इसे देख कर महामानव महर्षि दयानन्द जी की त्रुटि न समझ बैठें। सब जानते हैं घर के बड़े लोग बालक को प्रातः उठकर शौच,दन्तधावन,स्नान सन्ध्या आदि को क्रम से करना बताते हैं। यदि वे कभी उस कुमार से कहें कि सन्ध्या आदि से निवृत होकर मेरे पास आना तो यह उनकी भूल नहीं अपितु वही भाव है कि शौचादि क्रम से सब कार्यों को निबटा कर मेरे पास आएं। कर्मकाण्ड में यदि ऐसे प्रसंग न आते तो उपर्युक्त ज्ञापक ही क्यो बनता ? अतः क्रम भेद देने पर भी प्रयोजन को मुख्यता देना ही महर्षि जी का तात्पर्य था। हां, सामान्यविधि मे यदि विवाहसंस्कार आदि में, अग्न आयूंषि० आदि से पूर्व त्वन्नो० आदि से आहुति देने का विधान है तो वहां वैसा ही करना युक्त है। क्योंकि उन्होने पहले स्पष्ट कर दिया है जहां विधि करनी होगी वहां उसका विधान कर दिया जाएगा।

इस विवेचना के पश्चात् हम प्रकृत विषय पर आते हैं। ओं उद्बुध्य स्वाग्ने० मन्त्र के समय यजमान सहित खड़ होने वाले विद्वानो से निवेदन है कि वे कभी संस्कारविधि को भी देखने का कष्ट करें। वहां महर्षि जी ने सामान्य प्रकरण में ऋत्विजों के लक्षण लिखकर उनकी संज्ञा तथा उनका यज्ञ पर किधर स्थान है, यह निर्देश करके लिखा है "और यजमान का आसन पश्चिम में और वह पूर्वाभिमुख अथवा दक्षिण में आसन पर बैठ के उत्तराभिमुख रहें। और इन ऋत्विजो को सत्कार पूर्वक आसन पर बैठाना और वे प्रसन्नता पूर्वक आसन पर बैठें।' यहां महर्षि जी ने यजमान के बैठने, ऋत्विजो को बैठाने तथा उनके बैठने का स्पष्ट उल्लेख किया है। इसके पश्चात यज्ञ मे कही भी यजमान या ऋत्विजो के खड़ होने का उल्लेख नहीं किया है। फिर आप महर्षि दयानन्द जी द्वारा अननुमोदित कार्य क्यों करते हो ? क्या महर्षि दयानन्द जी इस मन्त्र का अर्थ नहीं जानते थे ? यदि खड़ा होना अभीष्ट होता तो वे उसका निर्देश अवश्य करते। उन्होंने खड़े होने का निर्देश नहीं किया अतः खड़े होकर अग्न्याधान करना तथा बाद तक खड़ा रहना अदयानन्दनीय है, उ नही करना चाहिऐ तथा बैठे ही बैठे अग्न्याधान करना चाहिए। उन विद्वानो से एक निवेदन है कि–विश्वे देवा यजमानश्च सीदत-वाक्य में उन्हें 'सीदत' तो दिखलाई पड़ा, जिसे देखकर वे ऋत्विक् तथा यजमान को खड़ा करते है किन्तु शतकुण्डी यज्ञो पर ४०० यजमान बनाते समय 'यजमानः' मे एक वचन का प्रयोग न जाने क्यो उनकी आंखो से ओझल हो गया।

एक अन्य बात की ओर भी मैं अपने पूज्य विद्वानो का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। वह यह कि कात्यायन श्रौतसूत्र में यज्ञ के दो प्रकार बतलाए है–यजति तथा जुहोति। यजति की परिभाषा में वे लिखते हैं :

उपविष्टहोमा स्वाहाकारप्रदाना, याज्यानुवाक्यावन्तो यजतयः

जिसमें बैठ कर यज्ञ किया जाए, स्वाहा बोल आहुति दी जाए तथा यज्ञ के प्रारम्भ और अन्त की क्रियाएं की जाएं वह यजति है। तथा तिष्ठ-होमा वषट्कार प्रदाना जुहोतय –जिनमें खड़े होकर हवन किया जाए तथा "वौषट्" बोलकर आहुति दी जाए वह जुहोति है।

(क्रमशः)

दयानन्द नगरी, ज्वालापुर, हरिद्वार

यज्ञों द्वारा पर्यावरण की रक्षा

—धर्मवीर—

ऋग्वेद में परम पिता परमात्मा सब मानवों को आदेश देते हैं कि आकाश, जल, वायु, सूर्य और धरती देव हैं इनकी पूजा तथा अर्चना करो। आगे आदेश दिया है कि इन देवों की रक्षा करो और इनका दुहन करो तभी संसार के सभी प्राणी सुरक्षित, जीवित और स्वस्थ रह कर चिरायु वाले होंगे। प्रभु के इस आदेश के पालन की आज जितनी आवश्यकता है शायद कभी महसूस की गई हो। वर्तमान युग में मानव तथा कुल प्राणीमात्र की जीवन लीला तथा सत्ता घोर संकट में है। आज विचारकों तथा वैज्ञानिको के बड़े बड़े सम्मेलनों में चेतावनी पर चेतावनी दी जा रही है कि ऐ दुनिया वालो! धरती माता को बचाओ, पिता सूर्य की सुध लो! जीवन तथा सत्ता की नींव स्वच्छ एव शुद्ध पर्यावरण है और यह आधार जिसा बुरी तरह ध्वस्त हो रही है। आज शुद्ध की बात नहीं होती बल्कि शुद्ध जल तथा स्वच्छ वायु के लिए सभी तरस रहे है। भारत की गंगा, यमुना, कृष्णा कावेरी, गोदावरी में स्नान करना तथा आत्मिक रोगों को गले सहेड़ना है। पैट्रोल, तेल, गैस, कोयले तथा दूसरे ईंधनों के अनियन्त्रित प्रयोग से वायु, स्वच्छ जल तथा सूर्य का प्रकाश न खुले आम प्राप्य है और न राशन कार्डों पर!

अब संसार में परमाणु बमों मे कोई भयभीत नहीं है। सभी जगह अशुद्ध, पर्यावरण के कारण शारीरिक, आध्यात्मिक, मानसिक रोगों परेशानियो तथा चिन्ताओ से सभी प्राणी त्राहि-त्राहि पुकार रहे हैं, सैंकड़ों प्रकार के जीव घुटन और प्रतिकूल वायु मण्डल से धरती से लुप्त हो गए हैं। शुद्ध पर्यावरण की पुनः स्थापना के उपायो की खोज हो रही है, और सब तरफ यह तथ्य स्वीकार्य और सर्वमान्य सिद्ध हो रहा है कि पर्यावरण की रक्षा हवन यज्ञों अर्थात अग्निहोत्र के प्रसार व प्रचार से ही संभव है। जनसंख्या के विस्फोट के कारण वनो, पेड़ों, वनस्पतियों तथा फूलो का अभाव भयंकर गति से बढ़ रहा है।

अग्नि मे डाला पदार्थ नष्ट नहीं होता, अग्नि हर स्थुल पदार्थ को सूक्ष्म रूप मे परिवर्तित कर उसकी सुगन्धि को दूर-दूर तक वायुमडल में फैला देता है।

अग्नि के सम्पर्क से ही सामग्री में गुग्गल, जायफल जावित्री मुन्नका घी, गिलोय आदि सब सुगन्धित तथा पौष्टिक पदार्थ लाखों परमाणुओ मे टूट टूट कर सारे वायुमण्डल मे व्याप्त हो जाते हैं। मनु जी महाराज ने कहा है—

अग्नोहुत हविः सम्यक् आदित्य उपतिष्ठति।

अर्थात आग मे डाला गया हवि सूक्ष्म होकर सूर्य तक फैल जाता है। मूलत अग्निहोत्र की अग्नि के दो काम है शुद्ध करना तथा वस्तु पदार्थ के निज के गुण को फैला देना। अग्निहोत्र मे ढाक, आम, बेरी, पीपल आदि की सुसमिधायें अर्थात छिलके सहित सूखी, मिट्टी व कीट पतगो से रहित लकडी जलानी चाहिए। इनमें कार्बन गैस कम होती है, और तेज गर्म तड़ तड करता घी डालना चाहिए। फ्रांसीसी वैज्ञानिक 'त्रिले' के अनुसार आम की लकडी मे फार्मिक आल्डी हाइड नामक गैस विषाक्त कीटाणुओं को नष्ट करती है तथा वायु को शुद्ध करती है। शक्कर, गुड़, छुहारा, किशमिश, गुलाब के फूल, सूखे मेवे, खोया, सुपारी, जौ, तिल, चावल, हींग आदि पदार्थों की सामग्री से बहुत दूर दूर तक वायु में अशुद्धता समाप्त होती है, रोग फैलाने वाले कीटाणु नष्ट होते हैं, और शुद्ध सुगन्धित वायु बादलों में प्रवेश करती है, उनसे बरसने वाला जल हमारे पेड़ों, पौधों वनस्पतियों के सात्विक तथा पौष्टिक तत्वों को बढ़ाता है: हवन यज्ञों से वर्षा नियमित तथा नियन्त्रित होती हैं, और वनों का प्रसार होता है। वायु तथा पर्यावरण को स्वच्छ व शुद्ध करने का वैज्ञानिक उपाय अग्नि होत्र दूसरे सब उपायों से, अधिक, सफल, सरल तथा सस्ता है। उदाहरणतया एक छटांक घी, एक व्यक्ति को कोई विशेष बल या बुद्धि प्रदान नहीं कर सकता परन्तु अग्निहोत्र से उत्पन्न इसके लाखो सूक्ष्म परमाणु वायुमंडल को शुद्धता प्रदान करके सैंकडो व्यक्तियो को लाभान्वित करते है।

आज के युग मे मशीनो के अन्धाधुंध प्रसार से तथा इनमें अत्याधिक तेल जैसे ईंधनों, धूम्रपान व सिगरेटो के प्रयोग से तथा इनके धुंए तथा राख से वातावरण में शीतलता, साम्यकता तथा सात्विकता सब समाप्त हो रहे हैं और सूर्य पितामह की तीन लाख किलोमीटर प्रति सैकेण्ड की गति से आ रही किरणों के वेग तथा ऊष्णता को नियमित करने वाले ओजोन में छेद हो रहे हैं। प्राणीमात्र की रक्षा तथा सत्ता को भयकर संकट उत्पन्न हो गया है और अब यह निर्विवाद सिद्ध है कि अग्निहोत्र में घी तथा औषधियों की आहुतियो के धुएं से ही ओजोन में पड़े छेदों को पूर्ण किया जा सकता है। अब जितनी मात्रा में सात्विक पौष्टिक पदार्थ अग्निहोत्र में होम करने से सृष्टि बच पाएगी अन्यथा कोई उपाय नहीं है।

केवल इसी एक उपाय से ही वायुमंडल में शुद्धता स्वच्छता सात्विकता तथा निर्मलता का प्रसार होगा और फिर लोगों के मन में भी ये गुण प्रस्फुटित व प्रफुल्लित होंगे। शारीरिक मानसिक, आध्यात्मिक, रोगों पर नियन्त्रण का मार्ग प्रशस्त होगा तथा मानव जाति को चिन्ताओ तथा तनाव से छुटकारा पाने का सामर्थ्य प्राप्त होगा। अग्निहोत्र की पवित्र आहुतियों से ही वीर्य शक्ति, कर्मशक्ति, विचार-शक्ति, रूप-सौन्दर्य और दीर्घायु प्राप्त होंगे और फिर—

भावनाएं मिट जाएंगी मन से पाप अत्याचार की,
कामनाएं पूर्ण होंगी, यज्ञ से नर नार की।

अग्निहोत्र से जहां वायु प्रदूषण दूर, होगा, वहां जल में प्रदूषण भी दूर करने में सुगमता होगी और फिर मन्त्रोच्चारण से ध्वनि प्रदूषण पर नियन्त्रण होगा। संसार के कल्याण का एक बड़ा उपाय यह भी है कि सभी मानव भद्रं शृणुयाम् अर्थात भद्र भद्र ही सुनें। भद्र सुनना तब संभव है जब सब ओर भद्र वचन बोले जायें और यह कार्य वेद मन्त्रों के अर्थ सहित उच्चारण से ही सम्भव है अर्थात अग्निहोत्र तथा यज्ञ विज्ञान द्वारा ही सब प्रकार के प्रदूषण को दूर करके पर्यावरण की रक्षा संभव है।

१०२ जे० पी० कालोनी, संगरूर-१४८००१ (पंजाब)

अंग्रेजी हमारी श्रेष्ठता का मानक नहीं

—गिरिराज किशोर

इन्टर नेशनल लिटरेचर वर्ड की रपट पढी थी। उसमें मृदुला गर्ग और खुशवंतसिंह भारत के साहित्य प्रतिनिधि के रूप मे जर्मनी के एरलांगन नगर गये थे। डा० इन्दु प्रकाश की इस रिपोर्ट को पढ़कर मुझे एकाएक बेचैनी होने लगी। डा० इन्दु प्रकाश की यह रिपोर्ट पढ़ने के बाद उनके ही द्वारा पूछे गये इस प्रश्न का मेरे पास क्या किसी के पास भी कोई जवाब न होगा कि 'हमारे दो व्यक्ति भी अंतरर्राष्ट्रीय मचों तक मे कुछ समझदारी नहीं दिखा पाये ? इसका जवाब तो वे ही लोग बेहतर दे सकते है जो वहा पर थे। लेकिन जो विवरण पढ़ने को मिला उसमे यह लगता है कि उनका यह सवाल वाजिब हैं। इस रपट से यह लगता है कि भाषा के प्रति अभद्रता और अवमानना की शुरुआत खुशवत सिंह ने की। भाषा चाहे कोई भी हो उसके प्रति अभद्रता उस समाज की अवमानना है। खुशवंत सिंह उन अभिजात्य लोगों में हैं जो दूसरों का असम्मान करने में आनन्द लेते हैं। और जब उनकी बात का कोई जवाब देने लगता है तो वे अपनी आयु और समयबद्धता का सहारा लेकर घर जाने की बात करने लगते है। खुशवंत सिंह लेखक है, भाषाविद् नही हैं। जब वे हिन्दी को दरिद्र भाषा कहते हैं तो उन्हें यह सोचकर कहना चाहिए कि वे भाषा के बारे मे बात कर रहे हैं साहित्य के बारे मे नही। साहित्य आपको पसन्द हो सकता है। भाषा मे तो आपको जीना मरना है। खुशवत सिंह भले ही अंग्रेजी मे रहते हो पर उनका मरना-जीना किसी और भाषा मे है। चाहे पजाबी हो, या हिन्दी या उर्दू।

दरअसल अनेक अंग्रेजी के लेखक हिन्दी के भाषागत विस्तार से परेशान हैं। उनके मन में विचित्र प्रकार की ईर्ष्या है वे समझते हैं कि अंग्रेजी में हम लिखते है इसलिए हमारी श्रेष्ठता को हर भाषा के द्वारा स्वीकार किया जाए। एक तरह से किया भी जाता है। क्योंकि अभिजात्य वर्ग या इलीट आज किसी भी भारतीय भाषा का सम्मान करने से इंकार करता है, उसमें जीने से नही। वह चाहता है कि जो भी संवाद वह करे या जो उससे संवाद किया जाए। (मौखिक या लिखित रूप में) अंग्रेजी मे ही हो। जो लोग अपनी रचनायें उस अभिजात्य वर्ग तक पहुचाना चाहते हैं उनकी भी इच्छा यही होती है कि उनकी रचनायें अंग्रेजी मे अनूदित हो। परन्तु हर भाषा चाहे वह अंग्रेजी हो या भारतीय अपनी रचनाओ को हिन्दी मे अनूदित देखना चाहता है। हिन्दी कितनी भी दरिद्र क्यो न हो, खुशवंतसिंह का चुटकुलेनुमा स्तम्भ जितना हिन्दी मे अनूदित होकर छपता है और उसका किराया उन्हें मिलता है शायद उतना अंग्रेजी मे नहीं छपता। एक खुद्दार और श्रेष्ठ भाषा से जुड़े लेखक को अपने लेखन की खसूसियत और शाइस्तगी बनाये रखने के लिए इस तरह की दरिद्र भाषाओ मे अनूदित होने से परहेज करना चाहिए। लेकिन शायद खुशवत सिंह इसके विरोध में तर्क दें कि मैं हिन्दी वालों की खुशामद करने नहीं जाता। इसमें कोई शक नहीं कि वे खुशामद करने नही जाते। यह हिन्दी वालों की हिमाकत है कि वे उन्हें इस तरह के गैरवाजिब व्यवहार के बावजूद छापते हैं परन्तु उनका स्तम्भ सिंडीकेटेड है। जहा तक मुझे मालूम है सिंडिकेट भी वे स्वय करते है। स्वाभाविक है हिन्दी समाचार पत्रो को उनका आफिस ही भेजता होगा। वैसे अगर वे केवल उसे व्यवहार के रूप में लेते हैं तो बात अलग है। अगर भाषा की गरिमा का भी प्रश्न उससे जुड़ा हो तो इस बात को यही छोड़ देना उचित होगा। यह भी कहना गलत होगा कि हिन्दी कई बार उनके फोहश मजाको को भी संवारकर संस्कार दे देती है।

जहा तक हिन्दी की दरिद्रता का प्रश्न है अगर वे कहते हैं तो मान लेना चाहिए। इसमें हमारा क्या जाता है। भाषा का भी कुछ नहीं जाता। अगर काने के कोसे लोग अन्धे होने लगें तो दुनिया में दो आखो वाले बचें ही नहीं। वैसे तो यह देश भी दरिद्र ही है। वे जैसे दिल्ली से ऊबकर पहाड़ों पर चले जाते हैं पता नहीं हिन्दुस्तान से ऊबकर स्विटजरलैंड आदि किसी ऐसे देश में क्यों नहीं बस जाते, जहा 'फ्लशटायलेट' का इस्तेमाल करना हर आदमी जानता है। हो सकता है कभी हमारे और खुशवंतसिंह के बुजुर्ग जब किसी छोटे-मोटे गाव से शहर में आकर बसे होगे तो उनके सामने भी झाड़ी और पेडों आदि के पास जगह तलाश करने की समस्या रही होगी। उन्होने भी धीरे-धीरे सीखा होगा। पहले तो अभिजात्य लोग किताब आदि पाने के लिए अंग्रेजी की सेवा में रहकर इस तरह की सुविधाओ का उपयोग करने की प्रैक्टिस किया करते थे। भले ही उनकी संतान बाद में तीस मार खा बन जाये।

यह कुंठा क्या वाकई हिन्दी के विरुद्ध है या अंग्रेजी वाला भारतीय वर्ग ही इस कुंठा का शिकार है ? जो मूल अंग्रेजी के लेखक है उनकी नजर में इन दो जबान वालों का सम्मान नहीं के बराबर है। वहा वे बिरादरी बाहर है, जैसे एंग्लोइण्डियन भले ही अपने को अंग्रेज समझते हो परन्तु अंग्रेजों मजलिस में उनकी कोई जगह नहीं थी। भारतीय भाषायें दरिद्र है या समृद्ध, उसमें लिखने वाले लेखकों को अंग्रेजी लेखकों की तरह किसी विदेशी लेखक वर्ग की कृपा की जरूरत नही है। जहा तक उनका यह तर्क है कि हिन्दी में 'रैट' और 'माउस' के लिए अलग-अलग दो शब्द भी नही। क्या अंग्रेजी में पानी के लिए हिन्दी की तरह पर्याप्त पर्याय हैं ? 'सूरज' के लिए है ? धरती के लिए है ? 'वाटर', 'सन' अर्थ से सारा काम चलाते है क्या भाषा इस तरह के चुटकलो से समृद्ध और दरिद्र होती है ? खुशवत सिंह जी को अंग्रेजी और अंग्रेजीयत से लगाव है इसमें किसी को क्या एतराज हो सकता है ? अगर खुशवतसिंह या उन जैसे लोग शराब से आबदस्त लेने लगें तो पानी से आबदस्त लेने वाले स्वाभाविक है उनके लिए उपेक्षणीय हो जायेंगे। परन्तु शराब से आबदस्त लेना क्या समृद्धि का मानक बन सकता है ?

भारत जैसे देश मे दो प्रतिशत अंग्रेजी जानने या बोलने वाले भले ही फिलहाल देश का शासन चला रहे हो परन्तु वे लोगों के आदर्श नहीं बन सकते। जिन्ना कितने ही अंग्रेजियत के साथ जिये या मरे, परन्तु मुसलमानो के जीवन का उस तरह मानक नही बन सके जैसे गाधी हिन्दू और मुसलमानो के लिए आदर्श पुरुष बन गये थे। आप किसी भाषा को गाली दे सकते है, अपमानित भी कर सकते है, परन्तु यह जान लें किसी भी भाषा का कभी अपमान नहीं होता बल्कि अपमान करने वाले की संस्कृति और जहनियत का पता चलता है क्योंकि भाषा हजारों साल की परम्परा की देन होती है। आप भाषा को अपमानित करके उस परम्परा का अपमान करते है। गनीमत है कि आप तानाशाह नही। वरना जैसे आप जमीन पर फराखत करने वाले को परमाणु बम से उड़वा देने के लिए बजिद है, क्या इन दरिद्र भाषा वालो को छोड देते ? दरअसल जो व्यक्ति किसी भी भाषा को प्रेम करता है वह कभी किसी दूसरी भाषा की अवमानना नहीं करता। अगर रैट' और 'माउस' जैसे शब्द किसी भाषा मे हो जाय तो क्या वह भाषा किसी अन्य संस्कारों के समृद्ध कहलायेगी ? क्या 'मूस' और 'चूहे' या 'मूषक' जसे भिन्न ध्वन्यात्मकता वाले शब्दो से खुशवत सिंह जी परिचित हैं ? या अंग्रेजी में 'मूस' और 'चूहे' की सी ध्वन्यात्मकता 'रैट' और 'माउस' मे है ?

पंजाब मे गावों मे चलते हलो और उसकी टिटकारी ध्वनि होगी, बगला भाषा से स्कर्ट पहने डिस्कों करती हुई युवती की तस्वीर शायद नजर न आये, चाबी का गुच्छा आचल से बाधे केश राशि बिखराये प्रभाती गाती स्त्री दिखायी पड सकती है, मलयालम अल्पना बनाती किसी महिला की तस्वीर प्रस्तुत करेगी, तमिल के द्वारा डाबे पीते लुंगी पहने श्यामवर्णी लोग सामने आयेंगे, ये सब असभ्य भाषायें होगी। क्योकि इन सबके पास भी 'फ्लश-टायलेट' नही होंगे। जिस लहूलुहान पजाब की बात अंग्रेजी के स्वनाम धन्य लेखक करते है उनकी कराहट अंग्रेजी में उतनी साकार नही होगी जितनी उनके अपने स्वर में होगी। अंग्रेजी वाले मैकाले की जारज संतान होने की इस अहमन्यता को त्याग कब दूसरे भाषाओ का सम्मान करना सीखे जिनमे उनकी कराह और हसी फूटती है तो शायद उनकी अंग्रेजो में भी कुछ कसक आ जायें।

॥ ओ३म् ॥

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला राजकोट—३६३६५० फोन (०२८२२) ८७७५६

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

मान्यवर,

सादर नमस्ते !

इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव १६, १७, १८ फरवरी १९९६ तदनुसार शुक्रवार, शनिवार, रविवार को ऋषि जन्मस्थली टंकारा में भव्य समारोह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर एक सप्ताह तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा, जिसके ब्रह्मा आचार्य विद्यादेव जी होंगे। इसके अतिरिक्त देश-विदेश से पधारे हुए आर्य विद्वान ऋषि के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। जिसमे आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार उपकुलपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार, महात्मा आर्य भिक्षु, श्री धर्मवीर खन्ना प्रधान आर्य समाज जामनगर एवं प्रबन्धक आर्य कन्या महाविद्यालय, जामनगर, डा० धर्मदेव विद्यार्थी, टोहाना, श्रीमती शिवराजवती आर्य बम्बई, श्रीमती स्नेहलता हांडा, इन्दौर आदि प्रमुख हैं। कन्या गुरुकुल पोरबन्दर तथा जामनगर की कन्यायें, आर्य वीर दल धांगध्रा तथा अन्य संस्थाओं के युवक सम्मिलित होंगे। इस वर्ष का मुख्य आकर्षण युवा भजनोपदेशक श्री विजय भूषण आर्य का भक्ति संगीत होगा।

इस समय टंकारा मे (१) अन्तर्राष्ट्रीय उपदेश महाविद्यालय (इनमे ४ वर्ष का सिद्धान्ताचार्य कोर्स एवं गुरुकुल ज्वालापुर से सम्बन्धित ५ वर्षीय विद्याभास्कर कोर्स आचार्य विद्यादेव शास्त्री के प्राचार्यत्व में सुचारु रूप से चल रहे हैं। अब तक लगभग २०० स्नातक इस विद्यालय से उपाधि प्राप्त कर देश-विदेश की भिन्न-भिन्न आर्य समाजों में पुरोहित एवं डी० ए० वी० संस्थाओं मे धर्म शिक्षक के रूप मे कार्यरत है)। (२) गौशाला (३) अतिथि गृह (४) वेद प्रचार से कार्य सुचारु रूप से चल रहे है। इसके अतिरिक्त ऋषि जन्म गृह के मुख्य भाग को अपने अधिकार मे लेकर विश्वदर्शनीय बनाना सबसे अग्रणी कार्य है। पिछले वर्ष हमने बहुत बड़ा भाग अपने अधिकार मे ले लिया था जिसका पुनर्निर्माण करना है। ट्रस्ट के अधिकारी जनता के सहयोग से कार्य को पूरा करते आ रहे हैं। इस कार्य को पूरा करने के लिये हर वर्ष कम से कम दस लाख रुपये की आवश्यकता होती है। ट्रस्ट द्वारा सचालित गौशाला मे ३५ से अधिक गायें हैं। इनका दूध पूर्णतया विद्यार्थियों के निजी प्रयोग के लिये ही है और गौशाला पिछले कई वर्षों मे घाटे पर चल रही है।

ऋषि मेले पर देश-विदेश से हजारों ऋषि भक्त पधारते है, उनके आवास एवं भोजन की व्यवस्था निःशुल्क ट्रस्ट की ओर मे की जाती है। दानी महानुभावों मे प्रार्थना है कि ऋषि लगर हेतु कोई भी खाद्य सामग्री देना चाहें, वे ऋषि बोधोत्सव से पूर्व आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर देने की कृपा करें। आप सभी से प्रार्थना है कि ऋषि बोधोत्सव पर आप अपने इष्ट-मित्रों सहित टंकारा पधारिए (बाहर से आने वाले ऋतु अनुकूल विस्तर लावें) और ट्रस्ट के सारे कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिये अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनिए। यह दान राशि आप नकद/क्रास चैक/ड्राफ्ट तथा मनी-आडर द्वारा **"महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा" के नाम दिल्ली कार्यालय आर्यसमाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भिजवाने की कृपा करें।**

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपनी आर्य समाज, अपनी शिक्षण सस्था तथा अन्य सम्बन्धित संस्थाओं की ओर से अधिकाधिक राशि भेजकर ऋषि ऋण से उऋण होकर पुण्य के भागी बने।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक :

ओंकारनाथ	ज्ञानप्रकाश चोपड़ा	शान्तिप्रकाश बहल	रामनाथ सहगल
मैनेजिंग ट्रस्टी	प्रधान	कार्यकारी प्रधान	मन्त्री

उपकार्यालय : आर्यसमाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

दूरभाष : ३४३७१८, ३१२११०, ३१००५९

पुस्तक समीक्षा

मधुर प्रकाशन के नये रूप और रंग

उपदेशामृत

(वर्धमानन्द ग्रन्थ संग्रह तृतीय प्रसून)

पृष्ठ : ११३, मूल्य : १५ रुपए

वीतराग स्वामी वर्धमानन्द सरस्वती

मधुर प्रकाशन, आर्य समाज सीताराम बाजार, दिल्ली-६

ऐसा कौन आर्य या आर्य समाजी होगा, जो इस वीतराग, सन्यासी की तर्कना शक्ति से परिचित न हो। ऐसा तार्किक शिरोमणि जिसके एक-एक उपदेश के अमृत का पान कर मुमुक्षु न बना हों मधुर प्रकाशन ने नई बोतल में पुराने अमृत रस को न भरा हो।

गुरुकुल उसकी निःशुल्क शिक्षा, उस शिक्षा से बालक, धर्म से कुस्तर शिक्षक न बन गया हो अधर्म का उतार धर्म का चढ़ाव न हुआ हो। जड़-बुद्धि भी तांबे से सोना न बना हो। ऐसा रोगग्रस्त, कर्मकाण्ड की विशेष पद्धति से न परिचित हुआ हो। तभी तो जान सका विचित्र ब्रह्मचारी के क्रिया कलापों को।

आइये इस उपदेशामृत का पान करें, और आत्मकल्याण के भावों को भर सके। वर्धमानन्द के दर्शन का लाभ पाठको को मधुरता का पान "मधुरेण समापयेत" से करा सके।

(२)

भर्तृहरि शतकम्

पृष्ठ–२००, मूल्य : २५ रुपए

मधुर प्रकाशन का नयी नीति परक श्रृंखला में

नीति शतक फिर वैराग्य शतक, इससे श्रृंगार शतक, तक तीन सीढ़ियों पर चढ़कर भर्तृहरि की इस श्रृंखला को पढ़ व समझकर एक सीढ़ी में सौ डण्डे, प्रत्येक का मिश्रण तीन सौ डण्डों पर चढ़कर ऊपर की मंजिल पर पहुंचकर "भर्तृहरि" को समझा जा सकता है।

व्याख्याकार विद्वान पं० राजपाल शास्त्री स्वयं नीति निपुण विज्ञ व्यक्ति हैं। साथ ही ऐसा कौन भारतीय जन होगा जो भर्तृहरि से सम्बन्धित रस सिद्ध कवि एवं कुशल प्रकाशक को न जान पाया हों। विद्याविलासी व ईश्वरभक्त भर्तृहरि ने राजनीति से वैराग्य तक के गीत मधुरता से गाये हैं। पुस्तक मूल्यवान है मूल्य कम-छपाई कागज सुन्दर है पुस्तक पढ़ें पर लेखक की सफल मत देखना भावों की गम्भीरता ही विद्वान शास्त्री जी की कुशलता का मापदण्ड है।

(३)

मधुर भजन पुष्पांजलि

प्रथम व द्वितीय भाग

सम्पादक विद्वान प० हरिदेव जी एम. ए. विद्यावाचस्पति

पृष्ठ प्रथम भाग १२५, द्वितीय भाग पृष्ठ १६८

मूल्य १८ रुपए, मूल्य २० रुपये

आर्य समाज के प्रचार व प्रसार में इन भजनों का व्यापक प्रभाव रहा है। ईश्वर भक्ति में तेरे दर को छोड़कर किस दर जाऊं मैं, गा-गा कर जीवन मस्ती में झूम उठा। यह भी कब हुआ इसके लिए वैदिक संस्कारो का जीवन में व्यापक प्रभाव। इन संस्कारो के महत्व को दर्शाया वैदिक धर्म आर्य समाज की गौरवमयी गाथा से ऋषि दयानन्द के सपनों का जीवन में–बनो आर्य खुद जहां को "सत्यार्थ प्रकाश" की शैली में ढाल दिया हो।

मधुर भजन पुष्पांजलि, सुन्दर सुगन्धि फैलाये।
जीवन में सद्गुण-भक्ति में मस्ती, हर नर-नारी लाभ उठाये॥

चिरकाल से देशज, क्षेत्रज वातावरण में निर्मित गीतों का संकलन कर श्री प० हरिदेव जी ने एक अभाव की पूर्ति की है।

पुस्तक घर-घर भेज की शोभा बढ़ायें, आगन्तुक देखें, पढ़ें और मन मयूर गाकर मस्ती में झूम उठे। यही दोनों भावों की विशेषता है। घर की शोभा भी अच्छे संगीतों से है।

पढ़िये और इन गीतों को आबाल वृद्ध तक आकण्ठ गवाइये।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सम्पादक

विद्या एवं अविद्या–स्वामी दयानन्द की दृष्टि में ?

—प्रो० तीर्थराज शास्त्री

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती १९वीं शताब्दी के मूर्धन्य वैदिक विद्वान, समाज सुधारक, देशोद्धारक, आदर्श संन्यासी तथा सर्वतोमुखी प्रतिभा सम्पन्न थे।

अपनी कृति 'सत्यार्थप्रकाश' के नवम समुल्लास मे विद्या एवं अविद्या का उन्होंने तात्त्विक एवं मार्मिक विश्लेषण किया है। उनका कथन है कि जो मनुष्य विद्या तथा अविद्या के स्वरूप को साथ ही साथ जानता है वह अविद्या अर्थात् कर्मोपासना द्वारा मृत्यु को तर कर विद्या अर्थात् यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है तथा आवागमन के दुःखों से रहित हो जाता है।

योगदर्शन साधनपाद में अविद्या का विश्लेषण करते हुए इस सूत्र का उल्लेख किया गया है, जो इस प्रकार है—

"अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या।"

(यो.२/५)

अर्थात् अनित्य संसार एवं देहादि से नित्यता का ज्ञान, अशुचित अर्थात् मलात्मक शरीर एवं मिथ्याभाषण आदि अपवित्र पदार्थों में पवित्र बुद्धि, उत्पन्न विषयासक्ति रूपी दुःख में सुखात्मक बुद्धि तथा अनात्मा में आत्म-बुद्धि करना अविद्या है। इसके विपरीत अनित्य में अनित्य, नित्य में नित्य, अपवित्र में अपवित्र पवित्र में पवित्र, दुःख में दुःख, सुख में सुख, अनात्मा में अनात्मा एवं आत्मा में आत्मा का ज्ञान होना विद्या है।

महर्षि का कथन है कि जिससे पदार्थों का यथार्थ स्वरूप ज्ञान हो वह विद्या तथा जिससे तत्त्व स्वरूप का यथार्थ ज्ञान न हो तथा अन्य में अन्य बुद्धि हो वह अविद्या कहलाता है।

इसके अतिरिक्त आर्य समाज के आठवें नियम में भी अविद्या एवं विद्या का उल्लेख इस प्रकार किया गया है।

"अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करना चाहिए।"

इसी सन्दर्भ में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी कहा करते थे कि गौरांग महाप्रभु अंग्रेज चला जाएगा तो अभाव देश से सर्वथा निरस्त हो जाएगा। ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र इन चारों वर्गों में से वैश्य वर्ग का कार्य अभाव एव असमृद्धि को दूर करना है। योगेश्वर श्रीकृष्ण का कथन है कि अन्याय को समाज से दूर करो अन्याय नहीं रहेगा, परन्तु महर्षि दयानन्द अन्याय का मूल अविद्या को मानते थे तथा उनका उद्‌घोष था अविद्या का नाश तथा स्थिर करने के लिए विद्या की वृद्धि अत्यन्तावश्यक है। वस्तुतः अविद्या के नाश से अन्याय का नाश एवं अन्याय के नाश से अभाव का नाश सम्भव है।

अतः वर्तमान समाज में अविद्या का नाश एवं विद्या की वृद्धि जितनी होती जाएगी, आधुनिक मानव उतना ही शनैः शनैः अमृतत्व की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहेगा। जहां तक जीवात्मा के बद्ध तथा मुक्त होने का सम्बन्ध है, उसके विषय में इतना लिखना ही पर्याप्त होगा कि पवित्र कर्म पवित्रोपासना एवं पवित्र ज्ञान से ही मोक्ष होता है तथा अपवित्र मिथ्या भाषणादि कर्म एवं मिथ्याज्ञान द्वारा जीव का बंधन होता है। परिणाम-स्वरूप धर्मयुक्त सत्यभाषणादि कर्म करना तथा मिथ्याभाषणादि अधर्म को छोड़ देना ही मुक्ति का साधन है। अन्ततोगत्वा सर्वान्तर्यामी परमात्म देव से करबद्ध प्रार्थना है कि हम महर्षि द्वारा प्रतिपादित वैदिक मार्ग पर चल कर तथा वेदादि सच्छास्त्रों का स्वाध्याय करते हुए अविद्यान्धकार का नाश तथा विद्यादि की श्रीवृद्धि करने में ही अपनी सार्थकता समझें।

मालवीय नगर, दिल्ली

महिला सम्मेलन

प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा आयोजित महिला सम्मेलन गुरुकुल गौतम नगर के वार्षिकोत्सव के सुअवसर पर धूमधाम से मनाया गया जिसमे भारी संख्या मे बहनो ने भाग लिया। संयोजिका थी श्रीमती प्रकाश आर्या। कार्यक्रम का प्रारम्भ कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर की ब्रह्मचारिणियो के सस्वर वेदपाठ से हुआ। श्रीमती उषा शास्त्री ने कहा कि गुरुकुल प्रणाली हमारी प्राचीन गौरवमयी संस्कृति है। यही से राम-कृष्ण आदि ने शिक्षा प्राप्त कर राष्ट्र का निर्माण किया। श्रीमती शकुन्तला आर्या ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि वैदिक संस्कृति ही सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है, उन्होने राष्ट्र की सुरक्षा पर बल दिया।

श्रीमती शकुन्तला दीक्षित ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि, गुरुकुल व्यक्ति का निर्माण करते थे। उन्हें शास्त्रज्ञ के साथ राष्ट्र का सशक्त नागरिक बनाते थे। सर्वश्रीमती सुशीला जी आनन्द शान्ति जी मलिक कृष्णा जी रहेजा, कृष्णा जी वढेरा, सुशीला जी सूद तथा कृष्णा जी रसवन्त आदि ने गुरुकुल केलिये मगल कामनायें करते हुए ब्रह्मचारिणियो को आशीर्वाद दिया। उपस्थित बहनो ने आठ हजार रुपए एकत्रित करके गुरुकुल को दान दिया। गुरुकुल के समस्त अधिकारियो का धन्यवाद किया गया।

वार्षिकोत्सव

मकर और संक्रान्ति के पर्व पर गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव माघ कृष्णा ७ सं० २०५२—माघ कृष्णा ८ सं० २०५२ तदनुसार १३–१४ जनवरी १९९६ शनिवार, रविवार को सम्पन्न होगा।

शनिवार, १३ जनवरी १९९६ प्रातः ११ बजे से शोध संगोष्ठी; विषय—वैदिक वाङ्मय मे शिक्षा का स्वरूप और प्रशिक्षण विधि। रविवार, १४ जनवरी १९९६ को वार्षिकोत्सव नव ब्रह्मचारियो का उपनयन संस्कार तत्पश्चात् भजनोपदेश एवं धनुषबाण प्रतियोगिता।

बाहर से बडे-बडे विद्वान पधार रहे हैं। कृपया अधिक से अधिक संख्या मे पधार कर धर्मलाभ उठायें।

मनोहर लाल सर्राफ	स्वामी विवेकानन्द	प० इन्द्राज
प्रधान	आचार्य	मन्त्री

गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) भोलाझाल मेरठ।

आर्यसमाज छाता का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

दिनाक १७-१२-९५ को होने वाले आर्यसमाज छाता के वार्षिक चुनाव मे निम्न पदाधिकारी मनोनीत किए गए।

श्री लालचन्द आर्य प्रधान, श्री चन्द्रप्रकाश (साहित्य रत्न) मन्त्री श्री श्यामसुन्दर शर्मा कोषाध्यक्ष, श्री अशोककुमार राही पुस्तकालय प्रभारी श्री देवेन्द्र कुमार गुप्ता निरीक्षक चुने गए।

नेत्र यज्ञ

अमर शहीद लाला लाजपत राय जी की पुण्य जयन्ति के अवसर पर लाजपत पब्लिक स्कूल मे पजाबी समाज एव रोटरी क्लब जमशेदपुर द्वारा नि शुल्क नेत्र यज्ञ (आखो का मुफ्त इलाज) का आयोजन किया गया है।

इस कैम्प मे सुप्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञ डा० बी०बी० सिंह एव अन्य डाक्टर अपने सहयोगी दल के साथ नि शुल्क सेवा देने के लिए लाजपत पब्लिक स्कूल के सभागार मे पधार रहे हैं।

आखो की भयकर बीमारिया जैसे मोतिया बिन्द, फुला परवाल, फल्ली, काला मोतिया, ग्लूकोमा इत्यादि रोगियो की मुफ्त शल्य चिकित्सा (आपरेशन) होगा।

सर्वसाधारण से निवेदन है कि इस स्वर्ण अवसर का लाभ उठावें। नगर व ग्रामीणो के हित को ध्यान मे रखकर लाजपत पब्लिक स्कूल, साकची मे इस नेत्र शिविर का आयोजन किया गया है।

नि शुल्क नेत्र शिविर-२७ जनवरी १९९६ से ३ फरवरी १९९६ तक रहेगा। नेत्रपरीक्षण—सिर्फ २७ जनवरी १९९६ शनिवार प्रात ९०० बजे ही होगा। नेत्र ज्योतित क्रिया—२८ फरवरी १९९६ रविवार प्रात ११ ०० बजे से आरम्भ।

स्थान लाजपत पब्लिक स्कूल न्यू कालीमाटी रोड—साकची नजदीक (हावडा ब्रिज) जमशेदपुर।

आवश्यक सूचना

आर्य जगत को सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज रघुबरपुरा न० २ गली न० ५ गाधीनगर दिल्ली-३१ मे प० अशोक कुमार आचार्य आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार स्वतन्त्र रूप मे करने के लिए रघुबरपुरा न० २ मे पहुच चुके है। अशोक कुमार जी आचार्य गायक सगीतकार भजनोपदेशक एव वैदिक प्रवक्ता है।

आप सभी से प्रार्थना है कि आर्यसमाज के उत्सवो पर बुलाने के लिए सम्पर्क करें।

विश्वदेव शास्त्री, प्रधान

आर्यसमाज रघुबरपुरा न २ गली न० ५ गान्धीनगर दिल्ली ३१

माघ मेला वेद प्रचार शिविर इलाहाबाद

आर्य उप प्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान मे इस वर्ष माघ मेला वेद प्रचार शिविर १४ जनवरी से २५ जनवरी १९९६ तक बाध के नीचे काली सडक पर दायी पट्टी पर लगा हुआ है। इस अवसर पर आर्य सन्यासी, भजनोपदेशको आदि को भोजन व आवास की सुविधा रहेगी।

उत्सव समाचार

आर्य समाज चौक का वार्षिकोत्सव १ फरवरी से ४ फरवरी १९९६ तक आर्य कन्या इण्टर कालेज मे मनाया जायेगा।

शोक समाचार

हरिद्वार, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के वेद विभाग के प्रवक्ता डा० सत्यदेव निगमालकार की माता श्रीमती ईशदेवी धर्मपत्नी श्री धर्मवीर आर्य निवासी आर्य नगला, कनखाडा का लम्बी बीमारी के बाद ११ दिसम्बर १९९५ को निधन हो गया। वे ७२ वर्ष की थी। श्रीमती ईश देवी अपने पीछे एक पुत्र और दो पुत्रिया छोड गयी हैं।

दिवगत आत्मा की शाति के लिए २१ दिसम्बर को उनके निवास ज्वालापुर मे शाति यज्ञ का आयोजन किया गया। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति डा० रामनाथ वेदालकार, प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री डा० महावीर शास्त्री स्वामी योगानन्द, डा० मनुदेव बन्धु, डा० सोमदेव शताशु डा० प्रेमचन्द्र ने इस अवसर पर अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

प्रधान आ स ज्वालापुर

आर्य समाज देहरादून में शुद्धिया

२२ वर्षीय मुस्लिम युवक श्री ताहिर खान ने आत्म प्रेरणा से वैदिक धर्म स्वीकार कर लिया। दि० ३१ दिसम्बर को आर्य समाज मन्दिर धामावाला देहरादून मे प० वेदप्रकाश जी ने उसका शुद्धि-सस्कार कराया और उसे तरुण कुमार नाम दिया गया।

इसी वर्ष में २५ वर्षीया ईसाई युवती कुमारी एमलि ने भी इसी आर्य समाज मन्दिर मे वैदिक धर्म अपनाया था। शुद्धि के पश्चात उसका नाम अलका रखा।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी०एल० ११०२४/९६ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१४-१-९६) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी) ९३/९६
R N. 626/27 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93/96 Post in N.D P.S.O.on 11,12-1-1996

वैदिक विद्वानों का सम्मान

(पृष्ठ २ का शेष)

सुश्री प्रज्ञादेवी जी, वाराणसी

(मरणोपरान्त सम्मान)

वाराणसी संस्कृत के विद्वानो का केन्द्र स्थान है। महर्षि दयानन्द सरस्वती का शास्त्रार्थ स्थल और विद्वानो मे अपनी प्रतिभा प्रकट करने के पश्चात वाराणसी केन्द्र सदा ही आर्य समाज के वैदिक विद्वानो से पूरित रहा है।

डा० मगलदेव शास्त्री, प० देवदत्त शर्मोपाध्याय प० हरिदत्त जी शास्त्री आचार्य विश्वश्रवा व्यास के पश्चात प्रसिद्ध वैदिक विद्वान प० ब्रह्मदत्त जी के पाणिनीय महाविद्यालय ने अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया। श्री जिज्ञासु जी के मरणोपरान्त इस पाणिनीय महाविद्यालय का सचालन विदुषी महिला सुश्री प्रज्ञादेवी जी द्वारा किया जा रहा था।

आप महाभाष्य की पडिता वैदिक प्रवक्ता थी और वाराणसी से सम्पूर्ण भारत मे वैदिक धर्म प्रचारार्थ इधर उधर जाती रहती थी उनके सम्मान की योजना उनके जीवन काल मे ही निश्चय हो चुकी थी। परन्तु प्रभु की महिमा अपरम्पार है यह कार्य उनके जीवन काल मे पूर्ण न हो सका था अत विद्वत्मण्डल की परिधि मे आपका नाम भी प्रमुख था आपको स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर सम्मान दिया गया।

परिव्राजक गणों में—

स्वामी तत्वबोधानन्द जी सरस्वती, अयोध्या गुरुकुल के सस्थापक पूज्यपाद त्यागमूर्ति स्वामी त्यागानन्द जी महाराज के सुयोग्य सुपुत्र तथा अयोध्या गुरुकुल के स्नातक सस्कृत साहित्य के मर्मज्ञ हैं प्रौढ अवस्था के उतरते ही सन्यास दीक्षा लेकर वसुमित्र आचार्य से तत्वबोधानन्द बन गए। स्वभाव से सरल विद्वान् परिव्राजक व्यक्ति है उनका सम्मान प्रशस्ति पत्र देकर किया गया।

स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती, उड़ीसा

पूर्वी भारत के छोर पर उडीसा मे बसे स्वामी ब्रह्मानन्द जी गुरुकुल स्थापित कर पुण्य के भागी बनें। गुरुकुल आमसेना भी आपने ही स्थापित किया था गरीब अ चल मे बू द-बू द धन एकत्रित कर स्वामी दयानन्द और वैदिक धर्म का सन्देश सुनाने मे स्वामी जी एक अनुपम व्यक्ति हैं। ऐसे स्वामी तपस्वी के नाम को भी सम्मान की पक्ति मे स्थान दिया गया।

पूज्यपाद स्वामी मुनीश्वरानन्द जी महाराज

आप जीवन मे परिश्रमी व स्वाध्यायशील व्यक्ति रहे है। पुराणों के मर्मज्ञ एव दार्शनिक विद्वान है। उत्तर प्रदेश के पश्चिमाचल मे सादा जीवन उच्चविचार को देने का सदा बीडा उठाया है। स्वभाव से सरल हसमुख प्रसन्नचित्त वृद्धावस्था की ओर बढते हुए भी विचारो से प्रौढता लिए हुए है। आपने सारा जीवन ऋषि मिशन मे लगाया है।

आज कुछ आखो से शिथिल है। सभा ने ऐसे त्यागमूर्ति का सम्मान-पत्र पुष्प देकर किया है।

सभा इसी प्रकार भविष्य मे भी अपने विद्वानो का सम्मान करती रहेगी।

सामवेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज नारायण विहार नई दिल्ली के तत्वावधान मे सामवेद पारायण यज्ञ एव वीर हकीकतराय बलिदान दिवस दि० १४ जनवरी १९९६ से २१ जनवरी ९६ तक सम्पन्न होगा।

आपसे प्रार्थना है कि आप कार्यक्रमानुसार परिवार एव इष्ट मित्रों सहित पधार कर धर्म लाभ उठाए। इस अवसर पर आचार्य श्याम देव शास्त्री के पौरोहित्य में प्रतिदिन विशेष यज्ञ तथा भाषण प्रतियोगिता आदि के कार्यक्रम सम्पन्न होगे।

मदर टैरेसा ने हिन्दू समाज के खिलाफ हल्ला बोला है

भारत की सैकुलर बिरादरी तथा तथाकथित बुद्धिजीवी मदर टैरेसा को साक्षात् ईश्वर का अवतार मानते हैं। भारत सरकार ने भी न जाने कितने पुरस्कारों से उन्हें सम्मानित कर रखा है। शान्ति के लिए उन्हें नोबुल पुरस्कार भी दिया जा चुका है। हालांकि खुद उनके समाज के लोगो ने भी मदर टैरेसा की पोल खोलनी शुरू कर दी है, मगर सैकुलर बिरादरी तथा सेकुलर भारत सरकार उन्हें सर आखो पर बिठाये रहती हैं। इसी मदर टैरेसा ने अब हिन्दू समाज को तोडने का अभियान शुरू कर दिया है बल्कि १८ नवम्बर को दिल्ली मे दलित ईसाईयो को सरकारी नौकरियो मे आरक्षण देने की माग करते हुए क्रमिक भूख हडताल तथा धरने पर बैठी है। दलित ईसाईयो को आरक्षण के लिये भारत का ईसाई समुदाय काफी समय से आन्दोलन कर रहा है। २१ नवम्बर को इस माग को लेकर सभी ईसाई स्कूल कालिज बन्द रखे गये।

ईसाईयो की इस मांग के पीछे क्या षडयन्त्र है, इसकी असलियत जानना भी जरूरी है। आजादी के समय भारतीय सविधान मे हिन्दू समाज के दलित व पिछडे वर्ग के लिए नौकरियो मे आरक्षण की व्यवस्था की थी, इसलिये कि हिन्दू समाज मे ऊच नीच, छुआ-छूत का भाव समाप्त होकर सामाजिक समरसता आ सके। ईसाई पादरी तथा नर्नें हिन्दू समाज के इसी वर्ग को ईसाई बनाने मे लगे हुए हैं। दलितो को ईसाई बनाते समय भी कहा जाता है कि ईसाईयो मे कोई भेद-भाव, छुआ-छूत का कोई भेद भाव नहीं हैं, इसलिये बन जाओ।

तब ईसाईयों को आरक्षण क्यों ?

आरक्षण हिन्दू समाज की गैर-बराबरी दूर करने के लिए हैं। ईसाईयो मे जब कोई भेद-भाव नही है तो आरक्षण किस लिये ? सभी ईसाई बराबर हैं तो दलित ईसाई कहा से आये ?

क्योंकि ईसाई बनते ही आरक्षण की सुविधा बन्द हो जाती है। इसलिये दलितो का ईसाईकरण भी बहुत कम हो पा रहा है। यह धर्मान्तरण तेजी से हो सके, दलितो को बडी सख्या मे ईसाई बनाया जा सके, इसलिए दलित ईसाईयो को आरक्षण की माग की जा रही है। मदर टैरेसा ईसाई पादरियो के साम-दाम-दण्ड द्वारा [illegible] को ईसाई बनाने का समर्थन पहले भी करती है। अब दलित ईसाईयों के आरक्षण के लिए भूख-हडताल कर हिन्दू समाज के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी है।

यह करुणा, यह ममता, यह दया भाव किस प्रकार का है जो केवल एक समाज के ही लोगो के प्रति प्रकट होता है, सिर्फ ईसा को मानने वालों के प्रति ही प्रदर्शित होता है। हिन्दू समाज ने तो सदा प्राणी मात्र के सुख की कामना की है इसलिये किसी को धर्म परिवर्तन के लिए नहीं उकसाया। न लोभ-लालच भय दिया है। भारतीय सस्कृति का तो यह अमर सूत्र है।

सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया.।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दु:ख भाग्भवेत्।

(पाथेय-कण पत्र से साभार)
स्वामी देवव्रतानन्द "जिज्ञासु"
गुरुकुल प्रभात आश्रम, पो०-भोलाझाल, मेरठ

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य४०) एक प्रति१) रुपया
वर्ष ३४ अंक ४६]   दयानन्दाब्द १७१   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६   माघ शु० १   सं० २०५२ २१ जनवरी १९९६

भाषा और संस्कृति की रक्षा में ही आपकी रक्षा

निकट भविष्य में १९४७ जैसे नजारे की पुनरावृत्ति होने की सम्भावना

देहरादून १४ जनवरी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने आर्य राष्ट्रीय मंच द्वारा यहा आयोजित सम्मेलन में मुख्य अतिथि पद से जनता को सम्बोधित करते हुये कहा कि इस्लाम और ईसाइयत की संस्कृति आज हमारे देश के ही संविधान की कमियो का फायदा उठाते हुये आर्य राष्ट्र की जडो को हिला रही है। श्री वन्देमातरम् ने कहा कि स्वतन्त्रता के बाद से अब तक हिन्दी सहित समस्त भारतीय भाषाओ को ऐसी अवस्था मे लाकर खड़ा कर दिया है कि वे किसी प्रकार से भारत के निवासियो का प्रतिनिधित्व करती हुई प्रतीत नही होती। आज सारे राष्ट्र मे ही नही अपितु विश्वभर मे भारत सरकार का व्यवहार अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त किसी भाषा मे होता हुआ नही देखा गया। भारत सरकार ने संविधान मे हिन्दी को स्पष्टत राष्ट्रीय सम्पर्क भाषा का दर्जा दिये जाने के बावजूद कभी भी वास्तव मे हिन्दी को उस स्तर तक पहुचने का सौभाग्य नही दिया। देशवासियो का अब तक यह भी स्पष्ट नही किया गया कि अंग्रेजी पर विशेष कृपा करने का क्या कारण है।

श्री वन्देमातरम् ने कहा कि भाषा को अपने अधिकृत स्थान से वंचित करने के बाद भारत की अब तक की सरकारो द्वारा जहा एक तरफ अमेरिका इंग्लैण्ड जैसे यूरोप के देशो की ईसाई संस्कृति तथा दूसरी तरफ अरबो देशों की इस्लामी संस्कृति के लिये भारत में विशेष प्रोत्साहन हेतु ढुलमुल रवैया अपनाया है जिसके कारण आज भारत में वैदिक संस्कृति स्थान-स्थान पर अपमानित हो रही है। पिछले कुछ वर्षों मे इलैक्ट्रानिक प्रचार माध्यमों द्वारा वैदिक संस्कृति को अपमानित करने की घटनाओ मे वृद्धि हो रही है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने कहा कि भाषा और धर्म के बाद राष्ट्र की तीसरी पहचान मातृभूमि को भी खण्डित करने का षड्यन्त्र अब स्पष्टतः सामने आने लगा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का निर्वाचन सम्पन्न

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री सर्वसम्मत प्रधान निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ का ११०वां वार्षिक निर्वाचन, वर्ष-१९९६ दिनांक १४ १ ९६, रविवार को आर्य समाज मन्दिर गणेशगंज लखनऊ मे विधिवत और शान्ति पूर्वक सम्पन्न हो गया। जिसमे डा० सच्चिदानन्द शास्त्री सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित हुए तथा कार्य कारिणी बनाने का अधिकार भी उन्ही को सौंपा गया।

अन्तरंग सभा के पदाधिकारियो तथा अन्तरंग-सभासदो की सूची निम्न प्रकार है— (शेष पृष्ठ २ पर)

कश्मीर मे चुनावों से पहले प्रधानमन्त्री द्वारा वहा के मुसलमानो को सन्तुष्ट करने के आवरण मे जिस पैकेज की घोषणा की गई है जिसमे १९५२ वाली स्थिति बहाल करने की बात की गई है जिसमे मुख्यमन्त्री और राज्यपाल पदो के नाम बदल कर सदरे-रियासत आदि रखने की बात कही गई है, जम्मू कश्मीर मे अलग

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का निर्वाचन सम्पन्न

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री सर्वसम्मत प्रधान निर्वाचित

(पृष्ठ १ का शेष)

पदाधिकारियो तथा अन्तरग-सभासदो की सूची निम्न प्रकार है —

क्र०	नाम पदाधिकारी	पद	पता
१	डा० सच्चिदानन्द शास्त्री	प्रधान	आ स सुरसा हरदोई
२	श्रीमती सन्तोष कुमारी कपूर	उप प्रधाना	आ स मिर्जापुर
३	श्रीमती आशा रानी राय	उप प्रधाना	आ स आजयतनगर कानपुर
४	ठा० हरगोपाल सिंह	उप-प्रधान	आर्यसमाज फीगज आगरा
५	श्री अरविन्द कुमार	उप प्रधान	आ० स० बुढाना मेरठ
६	श्री जितेन्द्र कुमार	उप प्रधान	आ० स० अलाजी
७	श्री मनमोहन तिवारी	मन्त्री	६ पुराना गनेशगञ्ज लखनऊ
८	डा० विनय प्रताप	उप-मन्त्री	आ स बख्शीपुर गोरखपुर
९	श्री ध्रुवपाल सिंह अटल	उप मन्त्री	आ०स० मैनपुरी
१०	श्री नागेन्द्र सिंह	उप-मन्त्री	आ० स० मेरठ
११	श्री विक्रम सिंह	उप-मन्त्री	आ स सम्भल मुरादाबाद
१२	श्री राजाराम शास्त्री	उप मन्त्री	आ स मियानगी सहारनपुर
१३	श्री जयनारायण अरुण	कोषाध्यक्ष	आ० स० बिजनौर
१४	श्री दल सिंगार	स०कोषाध्यक्ष	५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
१५	श्री पूरनसिंह एडवोकेट	आय-व्यय निरीक्षक	आर्य समाज बिजनौर
१६	श्री देवपाल आर्य	पुस्तकाध्यक्ष	आ स मीरापुर मु० नगर
१७	श्रीमती जयन्ती मिश्रा,	स० पुस्तकाध्यक्ष	आ स कालपी जालौन

नोट—उपरोक्त सभी महानुभावो का व्यवसाय—समाज सेवा है।

प्रतिष्ठित सदस्यगण

क्र०	नाम	पता
१८	श्री स्वामी विवेकानन्द	गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ
१९	श्री प० इन्द्र राज	१२४५ गौहरी पुरा मेरठ
२०	श्री चौ० लक्ष्मी चन्द्र	आ० स० दीवान हाल दिल्ली

अन्तरंग सदस्य

क्र०	नाम	पता
२१	श्री किरन पाल सिंह	आर्य समाज खतौला मु० नगर
२२	श्री वीरेन्द्र पाल शर्मा	सुनार गली बुलन्दशहर।
२३	श्री जसवन्त सिंह	आय समाज रामपुर सहारनपुर
२५	श्री बसन्त सिंह	आयसमाज बहादराबाद हरिद्वार
२६	श्री विनोद कुमार	आय समाज भसा मरठ
२७	श्री मदन सेन	आय समाज जीतपुर मेरठ
२८	श्री देवेन्द्र शास्त्री	मथुरा
२९	श्री श्रीकृष्ण	आय समाजा जलाली अलीगढ
३०	श्री राजेन्द्र पाल सिंह	आय समाज आलमपुर, अलीगढ
३१	श्री महिपाल शास्त्री	आय समाज अमापुर ऐटा
३२	श्री महावीर वानप्रस्थी	आय समाज डालूपुर मनपुरी
३३	श्री नगेन्द्र सिंह आचार्य	नगर करह रोड सिरसागज फिराजाबाद
३४	श्री राधेश्याम	नई आबाद लश्करपुर आगरा
३५	श्री सुभाष चन्द्र	रेलवे राड उझानी वदायू
३६	श्री वीरेन्द्र कुमार	मीरानपुर क रा शाहजहापुर
३७	श्री जय प्रकाश	४ ३ सुभाष नगर बरेली
३८	श्री अशोक कुमार	आय समाज फतहपुर।
३९	श्री राधा मोहन	अग्रवाल फाउन्ड्री चौक इलाहाबाद
४०	श्री शिवनाथ	अमित बुक डिपो मुजफ्फरगज मिर्जापुर
४१	श्री सदर्शन सिंह	आय समाज महतवार बलिया
४२	श्री राम वृक्ष सिंह	आर्य समाज शाधारपुर गाजीपुर
४३	आचार्य रमाकात चतुर्वेदी	वाराणसी
४४	श्रीमती सरोज कुमारी	२८ लक्ष्मी मार्केट सीतापुर
४५	श्री रवी शर्मा (हरदोई)	बाबू मान्टेसरी स्कूल शास्त्री नगर लखनऊ
४६	श्री सुशील कुमार	आर्य समाज लखीमपुर खीरी
४७	श्री मुकेश बाजपेयी	मार्तण्ड कम्पनी उन्नाव
४८	श्री सेवाराम त्यागी	आर्य समाज गनेशगञ्ज लखनऊ
४९	श्री पवन कुमार	कमौलिया वार्ड पूर्वी पडरौना
५०	श्री विजय बहादुर सिंह	आर्य समाज बख्शीपुर गोरखपुर
५१	श्री राम शिरोमणि	आर्य समाज कालपी जालौन
५२	श्री श्रीपाल सिंह	आर्य समाज मऊ रानीपुर झांसी
५३	श्री बलराम गोविन्द	आर्य समाज राधाकृष्ण गोंडा
५४	श्री कमला कान्त	सुल्तानपुर
५५	श्री दलमरदन सिंह	बशीरगज बहराइच
५६	श्री देवव्रत अवस्थी	सिंडीकेट बैंक अमीनाबाद लखनऊ
५७	श्री शेष प्रकाश	गोसाई गज तेलिया मठ फैजाबाद
५८	श्री जयदत्त उप्रेती	आर्य समाज अल्मोडा
५९	श्री स्वामी गुरुकुलानन्द	आर्य समाज पिथौरागढ
६०	श्री नवीन जोशी	नैनीताल
६१	श्री श्रीकृष्ण	आय समाज काशीपुर ऊधम सिंह नगर
६२	श्री महावीर प्रसाद गैरोला एडवोकेट	टिहरी
६३	श्री आनन्द प्रकाश आय	कोटद्वार
६४	श्री अमन सिंह	आय समाज कोतवाली दहात बिजनौर
६५	श्री जयदत्त सिंह	रहमनपुरी रामपुर
६६	श्री वीरन्द्र नाथ	कागज वाने मडी चौक मुरादाबाद
६७	श्री नु द्र सि	आर० वी० एस० कालेज नागलसोती
६८	श्री के के० बसन	चौधियान म्यू चौराहा बिजनौर
६९	डा० ईश्वर चन्द्र गुप्त	विद्या मन्दिर मोहल्ला डिग्री कालेज कानपुर
७०	श्री हृष देव शास्त्री	डाकखाने वाली गली तिरवा फर्रुखाबाद
७१	श्री मोदराज सिंह	सिंह साइकिल स्टोर कानपुर देहात
७२	श्री प० शक्ति प्रकाश शास्त्री	परसउवा लखलौर इटावा
७३	श्री बाबू राम	मेहू नगर रानी की सराय आजमगढ
७४	श्री भारतेन्दु द्विवेदी द्वारा पण्डित कपिलदेव द्विवेदी, ज्ञानपुर वाराणसी	
७५	श्री विशम्भर दयाल गुप्ता,	प्रतापगढ
७६	श्री बेचन सिंह	बभनी, सोनभद्र

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश द्वारा

आर्य महासम्मेलन का निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के नवनिर्वाचित प्रधान डा० सच्चिदानन्द शास्त्री न शीघ्र ही आर्य महासम्मेलन करन का निर्णय किया है। उन्होंने उत्तरप्रदेश की समस्त आर्य समाजो से अपील की है कि सम्मेलन को सफल बनाने के लिये युद्ध स्तर पर कार्य करें तथा तन मन, धन से सहयोग करें। आर्य महासम्मेलन की तिथिया शीघ्र घोषित की जायेगी।

सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान एवं सुप्रीमकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सोमनाथ मरवाह द्वारा दिया गया—

श्वेतपत्र का उत्तर (९)

इसके साथ ही मैं चौधरी हीरासिंह का भी जिक्र करना चाहता हू। जब चौ० हीरासिंह दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान थे और एक्जेक्टिव कौंसलर भी थे तथा कांग्रेसी भी। परन्तु उस समय भी उनके लिए कांग्रेस से पहले आर्य समाज का काम था। एक समय की बात है जब चौ० हीरासिंह और सरदारी लाल वर्मा (जिनका अब स्वर्गवास हो चुका है), एमरजेंसी के दौरान हमारे साथ घर-घर चन्दा इकट्ठा करने आया करते थे। यह चन्दा आर्य समाज की शताब्दी जो सार्वदेशिक सभा की ओर से बम्बई मे मनाये जाने का निश्चय किया गया था उसके लिए इकट्ठा किया जा रहा था जिसको बाद मे किन्ही कारणो से दिल्ली मे मनाये जाने का निश्चय हुआ था और उस थोडे से समय में चौ० हीरासिंह जी ने दिन-रात इस काम मे लगाकर लोगो के ठहराने के लिए जगह का इन्तजाम कमेटी के कमिश्नर मिस्टर टम्टा जी के सहयोग से कराया और इतना लम्बा जलूस निकलवाया जितना कि इससे पहले कभी देखा भी नहीं था। इस अवसर पर श्रीमती इन्दिरा गाधी जो कि उन दिनो प्रधानमन्त्री थी, को बुलाया गया और इतनी हाजिरी हुई जिसका कोई अदाज नही लगाया जा सकता। फिर उसके पश्चात् सजय गाधी को भी नव-जवानो को प्रेरणा देने के लिए बुलाया गया। चौ० हीरासिंह ऐसे व्यक्ति हैं जिनको पक्का आर्य समाजी कहा जा सकता है जिनकी नजरो मे जाट और नान जाट का कोई भेद नहीं होता है। और यही बात जस्टिस हरिकिशनसिंह मलिक मे भी थी। परन्तु आज हरियाणा के कुछ लीडर जिनका जिक्र मैंने ऊपर पहले किया हुआ है वे जाट और नान-जाट का प्रचार करने मे अपना गौरव समझते हैं।

मैं चौ० हीरासिंह जी की बात कर रहा था जो नियमित रूप से आर्य समाज के कार्यो मे सलग्न रहे। एक बार वह नैरोबी जाने के लिए तैयार हुए, परन्तु किसी प्रकार से उनकी जेब से रुपये निकल गये। मैंने उनको कहा कि चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नही मैं टिकट अपने खर्च से दे दूगा और आपको नैरोबी अवश्य जाना है और मैं उनको नैरोबी ले गया।

वैसे मैं किसी सियासी पार्टी का सदस्य नही परन्तु मेरा बडा लडका अशोक कुमार जो कि वकील है उसके विचार कांग्रेस के हैं। परन्तु जब चौ० हीरासिंह की तरफ से इलेक्शन पटीशन मैंने दायर की और उसके लिए सुप्रीम कोर्ट तक जाना पडा तो मैंने उनसे फीस लेने से इन्कार किया। और कहा कि मैं उनकी तरफ से एक आर्य समाजी होने के नाते काम करूगा न कि कांग्रेसी के नाते। वास्तव मे जैसा उनका नाम है वैसा ही उनका काम भी है और वह हीरा (ज्वैल) कहलाने योग्य व्यक्ति हैं। परन्तु अब उनका स्वास्थ्य सही नही रहा और जब मुझे पता चला कि सार्वदेशिक सभा के विरोधियो ने उनको रामलीला मैदान मे बोलने के लिए आमन्त्रित किया है तब मैंने उनको अपने दफ्तर मे आने का कष्ट दिया। उन्हें यह शिकायत थी कि बजाय इसके कि उनको दिल्ली का प्रधान लिखा जाता सार्वदेशिक सभा मे उपप्रधान लिखा गया। यह एक मामूली बात थी जिसकी दुरूस्ती भी हो सकती थी। परन्तु यहा पर मै यह कहना चाहता हू कि जब झूठा प्रचार किया जाये तो चौ० हीरासिंह जैसे व्यक्ति पर भी असर पड जाता है।

अभी थोडे ही दिनो की बात है कि मेरे पास कुछ वकील आये और कहने लगे कि वह मेरे द्वारा एक कांग्रेस कडीडेट की तरफ से चुनाव याचिका करवाना चाहते हैं। मैंने उनसे डेढ लाख रुपये की फीस मागी जो उन्होंने मान ली। इस पर वह कुछ रियायत चाहते थे, मैंने उनको कहा कि मैंने पहले ही आपसे फीस के ५० हजार रुपए कम बताये हैं, तो उन्होंने कहा कि हम तो एक लाख रुपये फीस के देना चाहते हैं, और उन्होंने कहा कि आपने चौ० हीरासिंह को कि कांग्रेस के कडीडेट थे की इलेक्शन पटीशन बिना फीस के की है। तो मैंने उन्हें उत्तर दिया कि मैंने उनकी पटीशन बिना फीस के कांग्रेस कडीडेट होने के नाते नही बल्कि आर्य समाजी होने के नाते की है, और चौ० हीरासिंह पहले दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान भी रहे हैं और एक सच्चे आर्य समाजी भी हैं। अत उनके साथ फीस का फैसला नहीं हो सका।

इसके कुछ समय पश्चात् श्री राजेन्द्र गुप्ता जो दिल्ली विधान सभा में विधायक भी हैं मेरे पास आये और उन्होंने कहा कि मुझसे २ इलेक्शन पटीशन पेश करवाना चाहते हैं। तो मैंने उनसे पूछा कि दूसरा व्यक्ति कौन है जो आपके साथ पटीशन करना चाहता है तो उन्होंने कहा कि उनका नाम श्री मेवाराम आर्य है। मैंने उनके नाम के साथ आर्य सुनकर ही कहा कि मैं बगैर फीस के पेश हूगा। तो उन्होंने हैरान होकर पूछा कि इसका क्या कारण है, तो मैंने उत्तर दिया कि जिस व्यक्ति ने अपने नाम के आगे आर्य लिखा हो उससे मैं फीस नही ले सकता। परन्तु मैं उनको जानता नहीं इसीलिए कम से कम उनको एक बार मेरे दफ्तर मे ले आवें, और इस तरह वह मेरे दफ्तर मे आये और मैंने उनकी तरफ से रिटेन स्टेटमेंट बना दी। यहा तक ही नही बल्कि जिन व्यक्तियो को हैदराबाद सत्याग्रह मे हिस्सा लेने के लिए पैंशन न मिली थी उन व्यक्तियो की तरफ से बिना फीस रिट दायर करके दर्जनों लोगो को पैंशन मैंने दिलवाई है।

परन्तु इससे विपरीत काम करने वाला शेरसिंह है जो अपने नाम के साथ प्रो० लगाता है हालांकि वह कुछ समय के लिए एक कालेज मे रीडर रहा था जब मैं गुरुकुल कागडी का विजिटर था तो शेरसिंह को यह बात पसन्द न थी। जिस कारण मुझे हाईकोर्ट मे मुकदमा करना पडा और हाई कोर्ट के दो जजों ने लिखा कि यदि सोमनाथ मरवाह की योग्यता विजिटर बनने की नही है तो फिर राष्ट्रपति भी विजिटर नही बन सकता। उस मुकदमें मे जो झूठा जवाबदावा शेरसिंह ने दाखिल किया यदि मैं वह यहा पर लिख दू। तो पढने वाले भी उनमे नफरत करने लगेंगे और उनको आर्य समाजी नही कहेंगे।

मैंने शेरसिंह से कहा था कि आप अपने आपको आर्य समाजी कहते हो तो आपने रिटेन स्टेटमेंट मे इतना झूठ क्यो लिखा, तो जवाब मिला कि अदालतो मे झूठ बोलना ही पडता है। यही कारण है कि कोई व्यक्ति जो कि अपने आपको सन्यासी कहते हैं तथा कोई उपदेशक आज तक सुमेधानन्द एण्ड कम्पनी को यह कहने को तैयार नही हुआ कि वह जो चुनाव का प्रचार कर रहा है वह सब झूठा है। सुमेधानन्द को सन्यासी कहना ही सन्यास आश्रम पर धब्बा लगाना है। वह तो एक होशियार मुकदमेबाज है और झूठ बोलने तथा समाज के रुपये का दुरुपयोग करने तथा आर्य समाज के पैसे को खुद इस्तेमाल करने मे कोई सकोच नही करता। और यही कारण है कि हर मुकदमे मे उसको कोई कामयाबी आज तक नही हुई। और अब उसने एक नया मुकदमा ३३६०/रु० की कोर्ट फीस पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान और मन्त्री के खिलाफ इस वजह से किया है कि उस मुकदमे की सुनवाई रोहतक का एक जज सुन सके। परन्तु उनकी बदकिस्मती से वह जज जाट नही है बल्कि ब्राह्मण है और यह मुकदमा २० जुलाई ९५ के करीब दायर किया गया था और अब उसमें १९ जनवरी ९६ की तिथि है। अभी तक वह किसी अदालत से कोई इन्टर्म आर्डर अपने हाथ मे न ले सका, और न ही ले सकेगा ऐसी हमे आशा है। क्योंकि झूठ आखिर झूठ ही होता है। अब उसने एक नया मुकदमा जयपुर में सार्वदेशिक सभा के खिलाफ कर दिया है। [illegible] सभा मे आज से कई वर्ष पूर्व सर्वसम्मति से निश्चय किया हुआ है जिसमे उसके ग्रुप के साथी प्रो० शेरसिंह, ओमानन्द आदि भी थे। निश्चय हुआ था कि

(शेष पृष्ठ ४ पर)

श्वेतपत्र का उत्तर

(पृष्ठ ३ का शेष)

जो व्यक्ति सार्वदेशिक सभा के खिलाफ मुकदमें करेगा, उसे आर्यसमाज से निकाल दिया जायेगा। और सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी ने २७ अक्तूबर ९५ को अपने विशेष आदेश द्वारा उसको तथा उसके साथियों को आर्य समाज से निष्कासित करके राजस्थान सभा के कार्य सचालनार्थ तदर्थ समिति का गठन कर दिया है, और वह समिति राजस्थान सभा का कार्य कर रही है।

अब मैं थोडी सी बात शेरसिंह के विषय में भी यहा पर और लिखना उचित समझता हू। स्वामी श्रद्धानन्द के सुपुत्र श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की विधवा मेरे मल्कागज के मकान के करीब रहती थी, और श्री प्रकाशवीर शास्त्री के कारण मैं उस विधवा का कानूनी सलाहकार बन गया और वह कानूनी सलाह मुझसे पूछकर आगे कोई कार्य किया करती थी। दुर्भाग्य से उसकी मृत्यु हो गई। उस समय श्री रघुवीर सिंह शास्त्री गुरुकुल कागडी के वाईस चासलर थे, और शेरसिंह तो हमेशा ही गुरुकुल सीनेट और सिंडी केट वगैरह का सदस्य रहा है। यह उस समय की बात है जब इन्द्रवेश पटेल गुरुकुल कागडी का चासलर बन गया था। उस विधवा के मर जाने पर शेरसिंह वगैरह ने उस विधवा की जायदाद को हडप करने के लिए एक जाली वसीयत प० इन्द्रजी की विधवा की तरफ से बनाई और श्री सोमनाथ जो कि आजकल जायद राज्य सभा का सदस्य है और रघुवीर सिंह शास्त्री का सुपुत्र है। इन सब लोगो ने दिल्ली आकर उस जाली वसीयत के आधार पर उस विधवा की सारी जायदाद, नकदी, जेवर उठाकर अपने साथ ले गये, और आज तक पता नहीं चल सका कि उसका क्या बना ? और वह सम्पत्ति कहा गई ? परन्तु उन लोगों ने उस वसीयत में उस विधवा का मकान भी दर्ज किया हुआ था, जब उन्होंने मकान लेने की योजना बनाई तो मैंने कहा कि यह वसीयत जाली है, और यदि वह विधवा वसीयत बनाती तो हमसे पूछकर बनाती क्योंकि मैं उसके जीवनकाल मे काफी समय से उसका कानूनी सलाहकार था और यदि वह वसीयत करती तो हमसे पूछकर करती। मैंने और कहा कि यदि आप सब इस मकान को भी लेने की योजना बनाओगे तो अदालत में केस करके तुम सबको कैद कराना आवश्यक हो जायेगा। तो इस प्रकार मैंने उस मकान को इन लोगो से बचाया। यह मकान हसराज कालेज के सामने हैं, और इस समय श्री धर्मवीर के कब्जे मे है जो कि गुरुकुल कागडी का आचार्य भी रहा है।

प्रो० शेरसिंह के साथ मेरे तालुकात अच्छे थे। एक दफा वह मेरे पास चन्दा लेने आया और जितना उसनें मागा मैंने दे दिया। उसने कहा कि दूसरों से भी कुछ चन्दा दिला द। तो उस समय मैंने एक पत्र अपने एक मित्र के लिए लिखकर उन्हें दे दिया कि इन्हे ११००/ रु० चन्दा दे दिया जाये। जब मेरा पत्र लेकर शेरसिंह उस व्यक्ति के पास गया तो उस व्यक्ति ने ११००) रुपये के बजाय इनके आगे ११ हजार रु० रख दिये और कहा कि जितना लेना चाहो उठा लो, क्योंकि आप श्री मरवाह जी का पत्र लेकर आये हैं। परन्तु इन्होने ११००/ रु० ही उसमें से लिया।

आज तक मैंने इस ग्रुप से अपना कोई निजी कार्य नहीं करवाया। कुछ वर्ष पहले की बात है कि मेरे भतीजे के ससुराल में एक व्यक्ति जो कि फौज मे मेजर था और बम्बई में लगा हुआ था, तथा उसकी धर्मपत्नी वहां बम्बई में ही किसी स्कूल में पढाती थी। वह व्यक्ति मेरे पास आया और कहा कि प्रो० शेरसिंह आपके परिचित व्यक्ति हैं और इस समय केन्द्रीय स्टेट मिनिस्टर हैं, उन्ही को अधिकार है कि फौज मे यदि किसी व्यक्ति का ट्रासफर हो रहा है तो वह रोक सकते हैं। और आप उनसे कहकर मेरा ट्रासफर रुकवा देव तो मेरे और मेरे परिवार के लिए हितकर रहेगा। उसकी इस बात को सुनकर मैंने शेरसिंह से मिलने के लिए हा कर दी परन्तु मुझे यह नहीं पता था कि शेरसिंह ऊपर से तो अपने आपको आर्य समाजी कहता है परन्तु अन्दर से काला है। मैंने मिलने के लिए समय मांग लिया, उसके बावजूद भी हमें एक घण्टे तक रिसेप्शन पर प्रतीक्षा करनी पडी; उसके पश्चात जब मुझे बुलाया गया तब वह हमसे सामान्य श्रेणी के कमरे में ही मिला, जबकि विशेष और व्यक्तिगत लोगों से मिलने के लिए उसका अलग कमरा था। मैंने अपना यह अपमान सहन करते हुए शेरसिंह से कहा कि यह मेजर मेरा सम्बन्धी है इसका ट्रांसफर बम्बई से आप अपने प्रभाव से रुकवा देवें क्योंकि इसकी धर्मपत्नी किसी स्कूल मे बम्बई मे ही पढाती है। जब मेरी बात हो रही थी तब दिन के १ बजे थे, शेरसिंह ने मुझे वायदा किया कि वह ट्रासफर रोक देगा। और उसने मेरे आने के बाद ३.३० बजे उस व्यक्ति का ट्रासफर करने का आदेश दे दिया। इस पर मैंने हाई कोर्ट मे रिट कर दी, जिसके तहत वह मेजर १० वर्ष तक लगातार बम्बई में ही रहा और वह रिट अदालत द्वारा मजूर की गई। उसके पश्चात जब शेरसिंह हमे दीवान हाल मे मिला तो मैंने कहा कि तू अपना नाम शेरसिंह के बजाय गीदड सिंह रख ले। और यदि हिम्मत है तो हाई कोर्ट के आर्डर को रद्द करवा के दिखा दे। बस मैं पाठकों से यह कहना चाहता हू कि ऐसे व्यक्ति भी अपने आपको आर्य समाज का लीडर कहते फिरते हैं और जुर्म करने में उन्हे कोई हिचकिचाहट नहीं होती।

एक बात की ओर पाठको का ध्यान और आकर्षित करना आवश्यक समझता हू कि प्रो० शेरसिंह जब पहली बार गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय का चासलर बना तो इसकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रभात शोभा ने कहा कि गुरुकुल कागडी तो उसका मायका (यानी उसके बाप का घर) है। उस समय मेरा मुकदमा गुरुकुल कागडी के सम्बन्ध मे हाई कोर्ट मे चल रहा था। तब मैंने लिखा कि जिस आर्य समाजी की पत्नी गुरुकुल को अपना मायका समझे तो दामाद को तो वहा की सम्पत्ति लूटने का पूरा हक है। यहा तक ही नहीं जब शेरसिंह ने ५०-६० आदमियो के साथ सार्वदेशिक सभा कार्यालय पर डाका डालने जैसा कार्य १ जून ९५ को किया तो इस घटना में उनकी पत्नी एव उसका लडका भी उसके साथ था।

भारत के विभाजन से पहले जब मैं झगम में था जहा सारे जिले की आबादी मे हिन्दू के २ प्रतिशत ही थे और वह भी शहरो मे। गांवो मे तो कोई एक आध घर हिन्दू का हो बाकी सब मुसलमान रहते थे, और मेरे क्लाईट कम से कम १० प्रतिशत जाट थे। लेकिन मैंने कभी महसूस नहीं किया कि जाट और नान जाट मे कोई फर्क है। दिल्ली में आकर भी मैंने कई वर्षों तक जाट और नान जाट मे कोई फर्क न समझा। परन्तु हरियाणा के कुछ लीडरो के प्रचार से जाट और नान जाट की बात सुनी, जो कि स्वामी दयानन्द के आदेश और विचार के बिल्कुल खिलाफ है। क्योंकि हम जन्मजात मे किसी की जाति नही मानते। बल्कि काम से मानते हैं। एक ब्राह्मण जाट हो सकता है और एक जाट ब्राह्मण हो सकता है। मैंने यह भी महसूस किया है कि हरियाणा के कुछ लीडर झज्जर और हिसार को ही हरियाणा समझते हैं और हर जगह आर्य समाज की संस्थाओं पर कब्जा करना चाहते हैं ताकि वे उनका दुरुपयोग कर सकें। हिन्दी आन्दोलन के समय भी यह चर्चा हुई थी। और उसके पश्चात जब परोपकारिणी सभा ने अजमेर में शताब्दी मनाई और कालेज सेक्शन उनके साथ था तो इन लोगों ने पहले फैसले को (कि यह शताब्दी सार्वदेशिक सभा और परोपकारिणी सभा इकट्ठा मनावें) कैसिल कर दिया। मैंने तो इसी कारण से उस सम्मेलन का बायकाट किया था। पर उस समय भी जो दुरुपयोग पैसे का हरियाणा वालों ने किया उसकी चर्चा डी०ए०वी० कालेज वालो ने की और खासकर श्री रामनाथ सहगल ने। (क्रमश)

पाठक्रमादर्थक्रमो बलीयान् एक विवेचन (२)

आचार्य डा० सत्यव्रत राजेश

खड़े होकर अभ्याधान कराने वाले विद्वान् विचार करें कि वे यजसि या जुहोति में से कौन सी यज्ञ क्रिया करा रहे हैं। यदि वे स्वाहा बोलकर आहुति दिलाते हैं तो समस्त यज्ञक्रिया बैठ और बैठाकर करनी होगी और यदि वे खड़े होकर कोई क्रिया करा रहे हैं तो उन्हें "वौषट्' बोलकर आहुति दिलानी चाहिए। आहुति स्वाहा से दिलाए और अभ्याधान खड़े होकर कराए क्या यह युक्त है? क्या यह महर्षि दयानन्द जी द्वारा निर्धारित विधि का उल्लंघन नहीं है? क्या महर्षि जी द्वारा प्रदर्शित विधि से विपरीत कार्य करना कराना उचित है? यदि नहीं तो आप ऐसा क्यो करते हो?

वस्तुत कर्मकाण्ड के आचार्यों की प्राय यह प्रवृत्ति होती है कि उनकी प्रक्रिया का अनुमोदन तो मन्त्र का थोड़ा भाग करता है परन्तु वे मन्त्र पूरा ही " देते है। जिससे मन्त्र स्मरण हो जाए और उसकी रक्षा हो। उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि मन्त्र अग्नि को प्रज्वलित करने का है। अग्नि तू प्रदीप्त हो और फिर जागृत रह मुझे मत। प्रयोजन तो मन्त्र के इतने ही भाग से था किन्तु मन्त्र पूर्वोक्त कारण से पूरा बोल दिया गया। यदि ऐसा माना जाए कि जो मन्त्र पूरा बोला गया है उसके अर्थ का पूर्णतया अनुसरण किया जाए तो कई स्थानो पर कठिनाई आएगी। जैसे कि बालक के कर्णवेध के समय—भद्र कर्णेभि शृणुयाम देवा भद्र पश्येमाक्षभिर्यजत्रा मन्त्र बोला जाता है। इसमे कान तथा आख दोनो का उल्लेख है। तो क्या अर्थ का ध्यान रखने वाले विद्वान् कान के साथ ही आख भी बिंधवाएंगे? नही बिंधवाएंगे न? क्यो? क्योकि कान को बींधने का तो कर्णाभूषण पहनना तथा रोगनिवृत्ति प्रयोजन है किन्तु आख बींधने से लाभ के स्थान पर हानि होने की सम्भावना है। उससे व्यक्ति अन्धा हो सकता है। अत जितना प्रयोजन था मन्त्र का उतना ही भाग प्रयोग मे लाया गया तथा जिसका प्रयोजन नही था उसे छोड़ दिया गया। यही नियम—उद्बुध्यस्व० मन्त्र पर भी लागू होता है। उसका अग्निदीपन सम्बन्धी भाग प्रयोजन है सम्पूर्ण मन्त्र नही। अत उससे अग्नि को प्रदीप्त करना चाहिए तथा होना प्रयोजन न होने से उसे छोड़ देना चाहिए।

अब—यदस्य कर्मणो मन्त्र पर भी विचार कर लेना आवश्यक है। इस मन्त्र मे कहा गया है कि इस कर्म मे यहा जो अधिक या न्यून मैंने किया है स्विष्टकृद् अग्नि उसे जाने और मेरे सब यज्ञ का सुहुत करे। हुत द्रव्य को स्विष्टकृत अग्नि सुहुत करे। सब प्रायश्चित्ताहुति वाली कामनाओ को पूर्ण करने वाले वह अग्नि हमारी सब कामनाओ को पूर्ण करें।' यहा स्विष्टकृत अग्नि के लिए आहुति दी जाती है जो प्रायश्चित्ताहुति वाली कामनाओ को पूर्ण करने वाला है। यह भूल विशेष्य विशेषण का न समझने के कारण होती है। यहा विशेष्य है स्विष्टकृत अग्नि और उसका विशेषण है सवप्रायश्चित्ताहुति वाली कामनाओ का पूर्ण करने वाला इसे सवप्रायश्चित्ताहुति मानना या अन्त में देना क्या युक्त है इसे विद्वान स्वय विचारें।

इसके प्रारम्भ में जो अधिक वा न्यून कर लिया है यह अर्थ देख कर इसे अन्त मे देने की सम्मति देने वाले विद्वानो से निवेदन है कि क्या महर्षि जी इस अर्थ को नही जानते थे जो उन्होने इसका अन्त मे विधान नहीं किया। अन्य निवेदन है कि महर्षि दयानन्द जी का अवमूल्यन करने की उपेक्षा यदि इसे देहली-दीपक न्याय मान ले तो क्या हानि है। जैसे देहली पर रखा दीपक दोनों ओर की वस्तु दिखा देता है इसी प्रकार मध्य मे आया यह मन्त्र भी आगे पीछे दोनों के लिए प्रयुक्त हो सकता है। दूसरे निवेदन है कि महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास मे अप्राप्त के निषेध के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बतलाया है कि जैसा हो पुत्र तू चोरी कभी मत करना, कुएं में मत गिरना। दुष्टो का संग मत करना, विद्याहीन मत रहना इत्यादि अप्राप्त का भी निषेध है।' जब आज भी माता बच्चे को यह समझाती है कि देख कर सड़क पार करना, कहीं [illegible] जाए। क्या इसका यह अर्थ लगाया जाए कि बच्चा आज मे कुपथगामी बना था या अनुत्तीर्ण हो गया था तब उसको माता ने यह उपदेश दिया। ऐसे ही यहा अप्राप्त विधि से माना जा सकता है कि यज्ञ मे कुछ त्रुटि सम्भव है उसका यहा निर्देश कर दिया है। यदि यही आग्रह किया जाए कि इसको अन्त मे ही रखना चाहिए तो उनसे पूछा जा सकता है कि इसके बाद जो पूर्णाहुति की जाती है यदि उसमे कुछ न्यूनाधिक्य हो जाए तो उसका क्या होगा? 'पूर्णा दर्वि परापत ० तथा "पूर्णमद ०' आदि बोलकर जो अधिकता करते हो या 'वसो पवित्रमसि बोलते हो, क्या उसके प्रायश्चित्त के लिए फिर अन्त मे यदस्य कर्मणो बोलोगे? तीसरे वैदिक साहित्य मे अनेक स्थलो पर वेद के प्रयोग मिलते हैं। जैसे सत्यमेव जयते मे जयते पद वेद मे तो—व्यत्ययो बहुलम्—सूत्र से बन जाएगा किन्तु लौकिक संस्कृत मे 'जी जये' धातु परस्मैपदी होने से जयति' रूप बनेगा। ऐसे ही वैदिक साहित्य मे अनेक शब्द वेद के नियमों के अनुसार मिलते हैं। पाणिनि मुनि ने वेद के लिए एक सूत्र बनाया है—छन्दसि लुङ् लङ् लिट जिसका अर्थ है कि वेद मे लुङ् लङ तथा लिट् लकार तीनो कालो के बोधक हैं। एक मन्त्र में स दाधार पृथिवी द्यामुतेमाम—वाक्य आया है। इसमे 'दाधार क्रिया का अर्थ भूतकाल मानकर इसका अर्थ होगा कि उस परमात्मा ने पृथिवी और इस द्युलोक को धारण किया था। यह अर्थ मान लेने पर प्रश्न होगा कि क्या उसने पहले ही इन लोको को धारण किया था अब वह इन्हें नही सम्भाल रहा है या भविष्य मे नही सम्भालेगा? इसी के लिए पाणिनि मुनि ने यह सूत्र बनाया था तथा उस सूत्र के परिप्रेक्ष्य मे इस वेद वाक्य का अर्थ होगा कि उस परमात्मा ने पृथिवी और द्युलोक को धारण किया था, वही अब धारण कर रहा है तथा वही भविष्य मे धारण करेगा। इसी भांति आश्वलायन के भी इसी दृष्टिकोण को मान लिया जाए तो इसका अर्थ होगा कि इस कर्म मे मैंने जो अधिक वा न्यून 'कर लिया है कर रहा हू या आगे करू वा उसे उत्तम इष्टकर्ता ज्ञानस्वरूप भगवान पूर्ण कर दें तो यह मध्य मे आने पर भी अगले पिछले विधि विधानो से सम्बद्ध हो जाएगा।

जो लोग इसे प्रायश्चित्ताहुति मानते हैं मैं उनकी जानकारी के लिए यह भी बताना चाहूंगा कि मैंने पारस्करगृह्यसूत्र के प्रथम काण्ड का भाष्य किया है। वहा एक सूत्र है—सर्वप्रायश्चित्त च—जिसका अर्थ है कि इसके बाद सर्वप्रायश्चित्त की आहुति दे। इसका पूर्व भाष्यकारो ने अर्थ करते हुए सर्वप्रायश्चित्ताहुति का उल्लेख किया है उन्होने त्वनो अग्ने आदि आठ मन्त्रो मे से पाच मन्त्रो को सर्वप्रायश्चित्ताहुति बतलाया है यदस्य कर्मणो को नही।

यदि अर्थक्रम के अर्थ शब्द का अर्थ पद का अर्थ ही माना जाए, प्रयोजन नही तो उन विद्वानो के सामने यह समस्या आएगी कि—समिधाग्नि दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन हव्या जुहोतन॥

मन्त्र का अर्थ है कि समिधा से आग को जलाओ, घी से अतिथिवत् पूज्य अग्नि को प्रदीप्त करो और इसमे हवि की आहुति दो। क्या अभ्याधान के समय स्वय तथा यजमानो को खड़ा रखने वाले मान्य विद्वान् पूरा यज्ञ इसी मन्त्र से कराएंगे या इस मन्त्र को यज्ञविधि से निकालने की सम्मति देंगे? क्योकि महर्षि जी ने इस मन्त्र से कुछ भी करने का विधान नहीं किया है।

अत याज्ञिक लोग महर्षि दयानन्द जी के अनुसार बैठकर अभ्याधान करें यदस्य कर्मणो से यथास्थान, जहा महर्षि जी ने निर्देश किया है घृत या भात की आहुति दे, अन्त मे पूर्णाहुति पूर्णपूर्णमद या पूर्णादर्वि परापत मन्त्र न बोलें अपितु सर्व वै पूर्ण स्वाहा से पूर्णाहुति करे तथा न—वसो पवित्र मसि शतधार से शेष घृत छोड़ें। जैसा और जो महर्षि दयानन्द ने लिखा है वैसा और उतना ही यज्ञकर्म करें। अन्यथा हम सबकी भिन्न भिन्न विधि हो जाएगी और हम सब बिखर जाएंगे। हमारी एकता नष्ट हो जाएगी और अपने पीछे चलने के महर्षि के आदेश का उल्लंघन हो जाएगा।

दयानन्द नगरी, ज्वालापुर, हरिद्वार

आर्यसमाज की दिवंगत विभूतियां (कुछ संस्मरण) (२)

—स्व० रघुनाथ प्रसाद पाठक

टंकारा शताब्दी

सन १९२६ मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म-स्थान टकारा में जन्म शताब्दी मनाई गयी। और उसके बाद वहां आर्य समाज की स्थापना हुई जिसके मन्त्री महर्षि की बहिन के वशज पोपटलाल जी नियुक्त हुए थे।

पुराने वाले शिव मन्दिर पर टकारा निवासियों ने एक कपडे पर मोटे अक्षरो मे यह लिखकर टाग रखा था —

"स्वामी दयानन्द के पिता करसन जी तिवारी का बनवाया हुआ शिव मन्दिर"

स्वामी जी का बचपन का नाम मूलशकर नहीं अपितु 'मूलजी दयाराम' और उनके पिता का नाम अ बाशकर नहीं अपितु करसन जी तिवारी था।

ऋषि दयानन्द के बचपन का साथी और उनके साथ खेलने वाला एक व्यक्ति इब्राहिम पटेल था। उससे मिलकर स्वामी जी आदि सभी को बडी प्रसन्नता हुई। उसकी आयु उस समय (सन १९२६ मे) १०५ वर्ष की थी। वह ऋषि दयानन्द के सम्बन्ध मे अनेक मोटी मोटी बातें सुनाता रहा। उससे जिरह करने के ढग से उपस्थित पुरुषो मे से किसी एक ने कुछ प्रश्न किये, जिनके उत्तर उसने इस प्रकार दिए—

प्रश्न स्वामी जी तो छोटे कद के और काले रग के थे न ?

उत्तर नहीं, वे बडे लम्बे और गोरे र ग के थे।

प्रश्न बचपन मे स्वामी दयानन्द बडे सीधे सादे थे न ?

उत्तर नहीं, वे बडे नटखट थे।

इस उत्तर को सुनकर सब ह स पडे। कई पुरुषो ने तो बडे प्र`म और श्रद्धा से उसे कुछ दिया भी!

टकारा के महर्षि के घर की धुलि लेकर लोगो ने अपने मस्तक से लगायी और अपने को कृत्य कृत्य समझा। स्वामी जी (नारायण स्वामी जी) टकारा से अपने साथ कुछ धूलि लाए थे। और उसे अपने रामगढ (नैनीताल) के आश्रम मे रख दिया था।

ये सब बातें उस धूलि को देखकर उसका रहस्य जानने की इच्छा प्रकट करने पर उन्होने हमे बताई थी।

आर्य समाज छोड़ने की घोषणा

प्रथम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन दिल्ली मे मुख्य प्रस्ताव नगर कीर्तनो की रुकावटो को दूर करने और आवश्यकता होने पर सत्याग्रह करने का पारित हुआ था। इस प्रस्ताव मे ५० हजार रुपया एकत्र करने और १० हजार स्वयसेवको की भर्ती करने का भी निश्चय किया गया था। प्रस्ताव के प्रस्तावक स्वय नारायण स्वामी जी थे, जिसका अर्थ था इन दोनो की पूर्ति का दायित्व अपने ऊपर लेना या समझना। लगभग ३००० लोगो ने उसी समय अपने नाम नोट करा दिए थे।

यह कार्य बडी मन्दगति से चलता देखकर स्वामी जी को दुख और आश्चर्य हुआ। उन्होने गुरुकुल कागडी के अवसर पर (अप्रैल १९२८) हुए आर्य सम्मेलन मे घोषणा कर दी कि "यदि दो मास के भीतर यह सख्या पूरी न हुई तो मैं यह समझकर कि आर्य समाज में मेरे लिए स्थान नही है, आर्य समाज को छोड दू गा।' इस घोषणा को सुनकर लोगो को बडी चिन्ता हुई और श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी (आचार्य गुरुकुल भैंसवाल) श्री परमानन्द जी (आचार्य गुरुकुल झज्जर) और पडित रामचन्द्र जी, आर्य पुरोहित, आर्य समाज बावडी बाजार, दिल्ली ने अन्य बन्धुओं के साथ इस सख्या को पूर्ण करने का आश्वासन दिया और वे इस कार्य में जुट गए। फलत दो महीने की अवधि के पाच दिन पूर्व ही १०६०० आर्य वीरों की सूची स्वामी जी को भेंट कर दी गयी। रुपया भी लगभग तीस हजार एकत्र हो गया था, जिसकी स्वामी जी को विशेष चिन्ता नहीं थी। इस पर स्वामी जी ने एक प्रेस वक्तव्य द्वारा हर्ष प्रकट करते हुए आभार प्रकट किया था।

हैदराबाद कांड

हैदराबाद सत्याग्रह का निश्चय सार्वदेशिक सभा की अन्तर ग ने अपनी १ अक्टूबर की बैठक मे करके उसका सर्वाधिकार महात्मा नारायण स्वामी जी को सौपा था। सभा का निश्चय इस प्रकार था—

"हैदराबाद राज्य मे आर्य समाज के धार्मिक अधिकारो पर जो आघात हो रहे हैं, उनका ब्यौरा सुना गया। विचार के बाद सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि पुन अधिकारो की रक्षा हेतु महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज को पूर्ण अधिकार दिया जाय।"

उल्लेखनीय है कि जिस समय यह प्रस्ताव पास किया गया था उस समय स्वामी जी सार्वदेशिक सभा के प्रधान न थे। उन्होने स्वय १९३७ में इस पद का परित्याग किया था। सार्वदेशिक सभा के मार्च १९३८ में हुए वार्षिक अधिवेशन में श्री प० इन्द्र विद्यावाचस्पति ने, जो उप प्रधान चुने गए थे इस समस्या का समाधान करना अपने जिम्मे लिया था। परन्तु इस बीच मे यह समस्या अधिक उलझती गयी और हैदराबाद के आर्यों मे सभा की निष्क्रियता के कारण असन्तोष बढते बढते चरम सीमा पर पहुच चुका था। इस अन्तर ग मे प० इन्द्र जी उपस्थित भी नहीं हुए थे।

उम्र, शारीरिक अवस्था आदि दृष्टियो से स्वामी जी इस दायित्व को न लेने के लिए अपने को विवश अनुभव करते थे परन्तु अन्य कोई इस दायित्व को लेने के लिए तैयार न था। महाशय कृष्ण जी ने प्रेरणा करते हुए कहा था, 'चाहे इस काम मे मर जाने का भी भय हो तब भी यह कार्य उन्हें (स्वामी जी) लेना चाहिए ?" इस स्थिति मे विवश होकर स्वामी जी को यह कार्य अपने हाथ मे लेना पडा था। स्वामी जी को सन्तोष यही था कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का उन्हें पूरा सहयोग प्राप्त होना था, जो प्राप्त हुआ, और स्वामी जी अपने इस कार्य मे (सत्याग्रह) विजयी रहे।

सिंध सत्याग्रह

सिंध सत्याग्रह का निर्णय सार्वदेशिक सभा की अन्तर ग ने अपनी १ ११-४६ की बैठक मे किया था। और उसका भार भी स्वामी जी महाराज के क धो पर डाला गया। स्वामी जी इस सत्याग्रह के लिए अपने परखे हुए साथियो के साथ ३-१-४७ को कराची पहु चे थे।

कराची के लिए प्रस्थान करने से पूर्व हम उनसे भेंट करने श्री लाला नारायणदत्त जी की कोठी १३ बारहखम्भा रोड पर गए उस समय उनकी आयु ८२ वर्ष की थी। शारीरिक कमजोरी के साथ एक रोग भी लगा था। हमने जब सिंध सत्याग्रह के भीषण परीक्षण के परिपेक्ष्य मे उनके स्वास्थ्य पर चिंता प्रकट की तो उन्होने कहा, 'इस शरीर पर आर्य समाज का अधिकार है, मेरा नहीं यदि आर्य समाज के अस्तित्व की रक्षा के लिए सिंध में उसकी आहुति पड जाएगी तो मुझे खुशी होगी। तुम लोग चिन्ता मत करो।"

परमात्मा की कृपा से वे इस परीक्षण मे विजयी हुए जो उनके लम्बे जीवन के पटाक्षेप के समय लम्बी सुनहरी श्रृ खला की एक शानदार अन्तिम कडी थी।

वारांगना राजनीति के दीवाने ये राजनेतागण

प्रो० बुद्धिप्रकाश आर्य (परीक्षामन्त्री) रामगंज अजमेर

नृपनीति अर्थात राजनीति को चाणक्य ने वारांगना नीति की संज्ञा दी है। वारांगना (वेश्या) उसी व्यक्ति की होती है जो उसके लोभ की पुष्टि करता रहता है। आज की राजनीति ऐसी ही मनमोहिनी वारांगना है जिस पर देश के दमखम वाले नेता दीवाने हो रहे हैं जिसकी खातिर वे अपना सब कुछ दाव पर लगाने के लिए लालायित रहते हैं। आज की यह राजनीति पद, पैसा और प्रतिष्ठा (झूठी) मे सीमित होकर रह गई है। इनकी सतुष्टि के लिए आज का प्रत्येक स्वयभू नेता मनुष्यता, न्याय व निर्दोष जनता का गला घोटने में ही अपनी सफलता आकने लगा है। समाज और राष्ट्र बिखर जाये, नष्ट भ्रष्ट हो जाये, उसकी बला से।

इस राजनीति रूपी वारांगना के चार मुख होते हैं साम, दाम, दण्ड और भेद। इन्हीं चतु मुखी नीतियो के बल पर वह जनता को स्वर्ग की ऊचाईयों पर उछालती और नरक की भयावह खाई मे पटकती रहती है। जनता जनार्दन के अखाडे बाज नटक राजनीति रूपी वारांगना के चरण चुम्बन करके और उसकी लालसा भरी मनमोहिनी भृकुटि भगिमा से सम्मोहित होकर अपने तथा अपनी पीढियो के जीवनो को धन्य बनाने की ही मृग मरीचिका मे भटकते रहते हैं किन्तु जीवन की अमूल्य सम्पदा (मनुष्यता) उनके हाथ नही आ पाती है। यही है राजनीति और राजनेताओ की वेदना जन्य सुखद आख मिचौनी की कहानी।

यू तो "नीति" शब्द णीञ्-प्रापणे धातु से क्तिन प्रत्यय लगाकर बनता है। "नीयते अनेन जना इति नीति"। इस प्रकार नीति" का अर्थ आचरण, से जाना या दिशा देना होता है। इसी से नेता शब्द बनता है "नयति य स नेता" जो हमारे लिए गति दे दिशाबोध कराए। अत ये दोनो शब्द सत्यर्थक और प्रेरक अर्थ मे प्रयुक्त होते है जो सकारात्मकता तथा पवित्र लक्ष्योन्मुखता लिए हुए हैं किन्तु इनके इस पवित्र आशय को स्वार्थी अखाडे बाजो तथा राजनेताओ ने इतना विकृत कर डाला है कि ये अपने वास्तविक अर्थ को त्याग कर नकारात्मक अर्थों मे तात्पर्यार्थिक बन गए हैं। इस "राजनीति" शब्द मे रचमात्र भी सुगन्ध की अनुभूति नहीं रह गई है यदि सुगन्ध कहीं शेष है तो वह आर्ष ग्रन्थो के नीतिगत शब्दो मे ही अनुभव की जा सकती है जिसे धर्मनीति का भी पर्याय दिया गया है। आज धर्मनीति और राजनीति विपरीतात्मक अर्थ मे लिखे और सोचे जाने लगे हैं जो वस्तुत गलत है जहा तक वर्तमान राजनीति का प्रश्न है वह वस्तुत कूटनीति, छद्मनीति अथवा अवसरवादी नीति है। इसमें जितने भी नकारात्मक मूल्यों से सम्बन्धित वाद हैं, सभी अन्तर्भूत देखे जा सकते हैं जैसे जातिवाद क्षेत्रवाद, भाषावाद, आतकवाद, उग्रवाद, वोटबैक परिचयवाद, अवसरवाद, धर्मवाद, भाई बिरादरी वाद, सम्प्रदायवाद तथा मिथ्याजपवाद आदि। इसके अतिरिक्त राजनीति मे कुछ भयकर करण भी मौजूद हैं जिन्हें हम तुष्टीकरण, अपराधीकरण, बलात निर्बीकरण तथा न्यायातिक्रमण की संज्ञा दे सकते हैं जिनमे तानाशाही, नौकरशाही व गुण्डाशाही की भरपूर दुर्गन्ध भरी पड़ी हैं जबकि इनका सदुपयोग सामन्य व आपदकाल मे राष्ट्रहित की दृष्टि से किया जा सकता है किन्तु इनके उपयोग की विनाशकारी भूमिका राजनीति की वैध सन्तान बन चुकी है। राजनीति के ताने बाने मे प्रजातन्त्र, लोकतन्त्र या जनतन्त्र के ये दावे भी काफी खोखला बता रहे हैं जिनमें चमक दमक की मृग मरीचिका भटकन के सिवाय और कुछ नही है। वस्तुतः तन्त्रो के ये नादावे जनता जनार्दन के लिए ऐसे अभिशाप बन चुके हैं जिन्होंने सत्य, न्याय, त्याग बलिदान, राष्ट्रप्रेम, सद्धर्म तथा इन्सानियत की पवित्र आत्मा को क्षीण किया शून्य सा बना डाला है। शास्त्रो मे कहा है—

"कलि शयानो भवति" अर्थात कलियुग सुप्तावस्था है। वास्तव मे हम सो रहे हैं और हमारी निद्रा भी कुम्भकर्णी है जो हमें अत्याचारों, अनाचारों पक्षपात तथा भ्रष्टाचार आदि के कर्णभेदी, नगाडों के स्वरों से भी बेखबर बनाये हुई है। कुम्भकर्णी निद्रा मे सोई, देश की जनता. स्वप्नों में जी रही हैं, उसके प्राण काया के पिजड़े में छटपटा रहे हैं। ये सब राजनीति की ही कुमाया है।

मायावी राजनीति ने ऐसे निस्पन्द एव शव जैसी सहन शक्ति वाली भारतीय जनता को सर्वसहा बना डाला है कहा जाता है कि सर्वसहा का अर्थ पृथ्वी है किन्तु राजनीति ने उर्वरा इस भारत भूमि के रत्नो को बजर भूमि के समान व्यर्थता की संज्ञा से पाषाण सा बना डाला हैं। यदि कहीं स्पन्दन हैं प्राण हैं और जीवन के लक्षण हैं, वहा अधमाचरण, अधर्माचरण का नरक छाया है जहा न सुरक्षा है न निश्चिन्तता है और न सौहार्द व सदभावना के ही चिन्ह अवशिष्ट हैं।

राजनीति ने मेधावी प्राणी को चालाक, धूर्त, भ्रष्टाचारी व हिंसक बना डाला है। इस राजनीति की मूल्यान्धता मे तथाकथित धर्माचार्य, साधु, पीर, सत, औलिया ज्योतिषी, तान्त्रिक, पण्डा, पुरोहित तथा पडित आदि सभी वेद भ्रष्ट होकर पापाचार बढाने मे लगे हुए अपना धर्म व्यवसाय चला रहे हैं।

कहा गया है कि प्रजातन्त्र (डेमोक्रेसी) की परिभाषा इब्राहीम लिंकन ने "Democracy is the Government of the people, for the people and by the people' की है जो थोडी सी वर्तनी भेद के कारण भ्रष्ट होकर उल्टा अर्थ देने लगी है। इस परिभाषा का अर्थ आज के सदर्भ मे यह हो गया है—

Govt off the people, For the people and Buy the people' आज प्रजातन्त्र पद्धति मे यह भ्रष्ट परिभाषा ही चरितार्थ हो रही है। राजनीति इसी के इर्द-गिर्द घूम रही है। प्रजातन्त्र जनता के लिए परलोकतन्त्र बन चुका है। जीवित परलोकवासी भारतीय इसी स्वर्ग को नरक बनाकर फुटपाथो, झुग्गी झोपडियो, गन्दी बस्तियो मे तिरस्कृत श्वानो की भाति जीना पसन्द कर रहे हैं। क्षण-क्षण भर आहें भरकर पीडा को पी जाते हैं। अभावो को रो धोकर खा जाते हैं, मुसीबतो को ओढ बिछाकर सो जाते हैं। ये लोग राजनीति के आश्रित नेताओ के आश्वासनो के घूट पीकर मौतो के मर्सिया गाते रहते हैं। यही है माया मयी राजनीति की छद्मभरी सृष्टि।

राजनीति रूपी वारांगना के मोहक एव अनिवार्य ससाधन जैसे सविधान, ससद, समितिया, विधान सभाए, पचायतें. सघ तथा लोकमच आदि जनता की कटकाकीर्ण सेज के ऐसे रक्तपायी खटमल बन चुके हैं जिन्होने रक्त वीर्य को चूस चूस कर उसका ककाल मात्र शेष बना दिया है। सत्ता की कुर्सियो पर राजनीति के सेवक मीरासीवत् जमे हुए हैं जो स्वार्थों को सिद्ध करने और अपनी आगामी दस बीस पीढियो तक का बीमा, गारटी के साथ, करने मे सफल हो रहे हैं। भाड मे जाये जनता, भाड मे जाये समाज भाड मे जाये राष्ट्र की अखडता, सुरक्षा, प्रभुसत्ता और उसकी गरिमा। राजनीति उनकी चिरसगिनी बनी रहे जो उन्हे अधर्म, अनर्थ, काम तथा दाम की सिद्धि कराती रहे। शायद यही उनका कलियुगी पुरुषार्थ है।

आज की राजनीति के कुरूप ढाचे मे ढलकर रिश्वत सुविधा शुल्क बन गई है, कमीशन धर्म की कमाई, घोटाले लोकप्रियता के साधन, हिंसा युग धर्म, आतकवाद एव हत्याकाड पौरुष के प्रतीक, भ्रष्टाचार कुशलता का लक्षण तथा छलछद्म प्रशासनिक दक्षता बन कर रह गई है। जनता जनार्दन के भूखे उदर-मच पर इनका खुला ताडव नृत्य हो रहा है। विज्ञान का नवीनतम आविष्कार मानव बम तैयार हो गया है। जो घृणित राजनीति की शोधशाला का कमाल है। ऐसी राजनीति मे धर्म का प्रसग पागलो, मूर्खों व पिछडे हुओं की निशानी मानी जाती है। ईमानदारी कालातीत मस्तिष्को के लक्षण कही जाती है। राष्ट्र प्रेम, त्याग, तप, वैदिक संस्कृति की रक्षा आदि साम्प्रदायिकता के कीटाणु माने जाने लगे हैं। राष्ट्र के गद्दार देशभक्त बन गए है और राष्ट्र के रक्षक कट्टरपथी घोषित किए जा रहे हैं। वेद और वेदज्ञान के रक्षक-प्रचारक, इन राजनेताओ को फूटी आखों नहीं भाते हैं। ये भारीय बजरग दल पर यज्ञादि कर्मों को विध्वस करने का

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य वीर दल मध्यप्रदेश के बढ़ते कदम

राष्ट्रीय शिविर के उपरान्त मध्य प्रदेश आर्य वीर दल के अधिकारियों ने संकल्प किया उसके अनुसार अगस्त ९५ से दिसम्बर ९५ तक प्रदेश के हौशगाबाद एवं बैतूल जिलो मे अभी तक १६ शिविरो का आयोजन किया गया। इन शिविरो में १४४५ आर्य वीरों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण आर्य वीर दल म०प्र० के प्रधान व्यायाम शिक्षक ब्र० जनक राम आर्य, ब्र० कपिल देव आर्य ब्र० सोममित्रार्य ब्र० भगवान सिंह आर्य ब्र० रूपसिंह आर्य ने शारीरिक प्रशिक्षण आदि शिक्षको ने दिया।

तथा बौद्धिक प्रशिक्षण श्री जगदेव जी नैष्ठिक श्री डा० देवव्रत आचार्य श्री यज्ञेन्द्र आर्य जी श्री बाबू लाल जी आनन्द प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु श्री श्री रामकिशार कासरे श्री ब्र० ज्ञानन्द आर्य श्री रामकिशोर कासरे श्री राम अवतार सिंह आदि महानुभावो ने शिविरो शिबराथियो को आर्यसमाज के सिद्धांतो पर एव चरित्र निर्माण सन्ध्या यज्ञ स्वास्थ्य रक्षा अनुशासन आदि विषयो पर अपने विचार दिये। जिससे प्रेरणा लेकर होशगाबाद सभाग मे ३६ शाखाए खोली गयी जो विधिवत चल रही है। इन सभी शाखाओ में शाखा अधिकारियो की नियुक्तिया की गयी जो इन शाखाओ को सुचारु रूप से चलाते रहेगे।

इन सभी शिविरो को आयोजित करने मे विशेष योगदान श्री जगदेव जी नैष्ठिक का रहा वैसे म प्र प्रान्त के सभी अधिकारी पूर्ण निष्ठा एव उत्साह से कार्य कर रहे है। समूचे प्रान्त में आर्य वीर दल का कार्य श्री बाबू लाल जी आनन्द के नेतृत्व मे दिनो दिन प्रगति कर रहा है। इस प्रान्त के सभी अधिकारी धन्यवाद के पात्र हैं। जो नव युवको के निर्माण का कार्य पूर्ण निष्ठा से कर रहे है। जिसका परिणाम स्वरूप पूरे प्रान्त में आर्य वीर दल का जाल सा बिछ रहा है।

हरिसिंह आर्य (कार्यालय मन्त्री)
सार्वदेशिक आर्य वीर दल नई दिल्ली-२

वारांगना राजनीति के दिवाने

(पृष्ठ ७ का शेष)

मौका तलाशते रहते हैं। पवित्र मन्दिरो को ध्वस्त करने वालो को प्रशस्ति-पत्र और गुलामी के प्रतीक ढाचो को गिराने वाले राष्ट्र प्रेमियों को गालियां दी जाती हैं, उन्हें जेलों में ठूंसा जाता है। क्या इस पिशाचिनी राजनीति से देश को कभी मुक्ति मिलेगी ? क्या भारत माता यू ही अवचन की पीड़ा कल्पान्त तक ढोती रहेगी ? प्रजातन्त्र की यह प्रदूषित सर्पिणी राजनीति राष्ट्र का क्षयरोग बन गई है। चूल्हे से लेकर दिल्ली की कुर्सी तक देश के सभी लक्ष्मीपुत्र व सरस्वती पुत्र होड़ लगाकर राजनीति के आलिंगन पाश मे बन्धकर धन्यभाग हो जाना चाहते हैं। यहां तक कि जल, थल, आकाश ग्रह नक्षत्र भी विश्व की गन्दी राजनीति के प्रदूषण से अपनी नैसर्गिक पवित्रता खो बैठे हैं फिर भला हाड़ मांस का यह तुच्छ इन्सान इसके घातक प्रभाव से कैसे त्राण पा सकता है। राजनीति की इस दुर्गन्ध ने मानव को राक्षस तथा पिशाच बना डाला है जो श्वेतवस्त्र धारी दानव बनकर कारो कोठियो का मजा लूट रहे हैं। नेता अभिनेता प्रणेता सभी अपने पवित्र रूप से कोसो दूर जा गिरे हैं। भला ऐसी कुत्सित राजनीति का अन्धा व्यामोह प्रभु की इस चित्र विचित्र सृष्टि को महाप्रलय के विनाश-गर्त में झोंक देने से कैसे बचा सकती है ?

प्रभु ! रक्षा करे, हम सबको सद्बुद्धि दे।
धियो यो न प्रचोदयात्'

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा प्रचार कार्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे कार्यरत अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के कुछ कार्यकर्ता (श्रीमती प्रेमलता खन्ना मन्त्री, श्री वेदरत्न जी आर्य कोषाध्यक्ष, उनकी धर्म-पत्नी व श्रीमती ईश्वर रानी जी उपमन्त्री) १९-११-९५ से २९-११-९५ तक मध्य प्रदेश के झाबुआ जनपद के थादला क्षेत्र के कुछ ग्रामों रतलाम जनपद के कुडा व सर्वन ग्रामो तथा राजस्थान के कुशलगढ ग्राम में प्रचार कार्य तथा जन जागृति के अभियान पर गये। इन ग्रामो मे जगह-जगह जाकर लोगो मे साक्षरता लाने तथा रूढिवादी कुरीतियो को जड मे उखाड फेकने की प्रेरणा दी गई। लोगों मे आर्य समाज के प्रति आस्था को जमाने का भरसक प्रयत्न किया गया। जिसके आशावादी परिणाम रहे तथा कई ग्रामवासियों ने अपने-अपने गावो मे बाल-विद्यालय व आर्य समाज की स्थापना करने की इच्छा व्यक्त की। इस इच्छा पूर्ति के फलस्वरूप दो ग्रामों काजरी, डुगरी व सजली ग्रामो मे आर्य समाज की स्थापना भी की गई। सजली ग्राम म ही दो नवजात बालकों का नामकरण सस्कार भी किया गया। श्रीमति प्रेमलता जी ने एक बच्चे का नाम (कर्ण) रखा और दान की महत्ता पर बल दिया। फलस्वरूप बच्चे के पितामह ने आर्य समाज मन्दिर के लिए भूमि का दान किया तथा बहिन प्रेमलता जी ने भूमि पूजन करवा कर मन्दिर बनवाने का आग्रह किया। काजरी, डुगरी के आर्य समाज का उद्घाटन भी हुआ। इस गाव के बालको ने श्रीमती प्रेमलता जी के रानी बाग निवास स्थान पर ही रह कर अपना पठन कार्य पूरा किया है और अब आर्य समाज के काय मे जुट जाने का सकल्प लिया है। काजरी, डुगरी गाव मे एक आश्रम भी चल रहा है, जिसमें २० छात्र रहकर अपना पठन-पाठन करते हैं। यह दोनों ही विद्यार्थी इसी गाव के है।

गाव बलवन मे पिछले वर्ष एक बाल विद्यालय खोला गया था। इसका सचालन स्व०श्री पृथ्वीराजजी शास्त्रीके एक शिष्य अमरसिंह आर्य जिसने आर्य समाज के कार्य का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया है और अब भी ज्ञान अर्जित कर रहा है कर रहे है। इस विद्यालय मे ६५ विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। थादला आश्रम के मन्त्री श्री विजयसिंह ने बच्चो से गायत्री मन्त्र व गिनती आदि सुने। श्री अमरसिंह जी के प्रयास को सराहते हुए उनको २००) रुपये नकद व बच्चों को कपडे आदि दिये गये। आश्चर्य का विषय यह है कि यह ऐसा व्यक्ति है जो केवल तीसरी कक्षा तक पढा हुआ है।

राजस्थान के बासवाडानगर के महाविद्यालय की युवक परिषद् का अध्यक्ष सघ के ही आश्रम का विद्यार्थी निर्वाचित हुआ है। उसी के अनुग्रह पर एक शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। जिसमे लगभग २२०० विद्यार्थियो ने श्रीमती प्रेमलता जी के उद्बोधन को ध्यानपूर्वक सुना। श्रीमती प्रमलताजीने विद्यार्थियो से अपने पठन-पाठनके लक्ष्यको पूरा करनेका आग्रह किया तथा हडताल करने जैसी व अन्य बुराईयो से दूर रहने का परामर्श दिया। इस महाविद्यालय की युवक परिषद् के अध्यक्षके चुनाव की विशेषता यह थी कि ना तो नारेबाजी हुई और ना ही दीवारे काली-पीली की गईं। शपथ समारोह मे राजस्थान के शिक्षा मन्त्री व अन्य कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस सारे कार्यक्रम को सफल बनाने का श्रेय गुरुकुल आम सेना से शिक्षा प्राप्त ब्रह्मचारी श्री जीववर्धन (जो कि आश्रम का संचालन भी करते है) को जाता है। राजस्थान का कुशलगढ आश्रम भी इन्हीं की देख-रेख मे प्रगति पथ पर अग्रसर है। ब्रह्मचारी जीववर्धन जी पूर्ण १५ दिन के कार्यक्रम मे कार्यकर्ताओं के साथ रहे तथा तरियाखोकना व काता पर मोटर साईकिल चलवाना आदि के कार्यक्रम करके लोगो का मनोरजन भी करते रहे।

कुशलगढ व थादला आश्रमों मे ऋषि बाल मेलों का आयोजन भी किया गया। इनमे मुजफ्फरनगर वासियो से प्राप्त ५० बालिकाओ को यूनीफार्म दी गई तथा श्रीमती सुशीला खन्ना व श्रीमती प्रेमलता जी के सुपुत्र श्री विनोद खन्ना द्वारा दी गई दान राशियों से सभी बालवाडी व आश्रमो के बच्चो को नये कपडे बाटे गये। इस निमित्त ५०००)रु० की राशि श्रीमती सुशीला खन्ना ने २०००) रुपये श्री विनोद खन्ना जी ने तथा २०००) रुपये आनन्द परिवार (रानी बाग वालों) ने दान में दिये।

मध्य प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सेवाराम जी आर्य के अनुरोध पर शिष्ट मण्डल नागदा भी एक दिन के लिए गया। वहा पर महिलाओं में जागृति लाने के लिए आय समाज मन्दिर मे श्रीमती प्रेमलता जी द्वारा विचार व्यक्त किये गये। श्री सेवाराम जी के अनुरोध पर आगामी मास अप्रैल ९६ मे उस क्षेत्र मे एक शिविर लगाने का सुझाव मिला है। जिसके आयोजन का भरसक प्रयत्न किया जायेगा क्योंकि शिविरों के माध्यम से प्रचार का सन्देश जन-जन तक पहुचाया जा सकता है शिविरों मे आये बच्चे अपनी धार्मिक भावनाओ को जागृत करके विधर्मी कुचक्रो से बचकर अच्छा प्रचार कार्य करने मे उद्यत होते हैं।

अखिल भारतीय सेवाश्रम सघ अपने सीमित साधनो के अनुरूप प्रचार कार्यों मे कार्यरत है तथा जन साधरण से आर्थिक व जन सहयोग की अपेक्षा करता है।

श्रीमती ईश्वर रानी
उपमन्त्री, अ०भा०द०से०स०, दिल्ली

टंकारा यात्रा एवं भारत भ्रमण का प्रोग्राम
दिनांक १२-२-९६ से ५.३-९६ तक ट्रेन द्वारा

महर्षि दयानन्द के ऋषि बोध उत्सव पर टंकारा चलो

दर्शनीय स्थान

दिल्ली, बडौदा, राजकोट, द्वारका बेट, द्वारका, टंकारा, पोरबन्दर, बम्बई, बगलौर, मैसूर, कन्या कुमारी, रामेश्वरम्, मद्रास, वाराणसी, अयोध्या, फैजाबाद, इलाहाबाद वगैरह। आने जाने, बस, स्टीमर, सोने की गद्देवाली सीट, चाय, नाश्ता, भोजन, दैनिक सत्सग का सारा खर्च प्रति सवारी ७८००) (सात हजार आठ सौ रुपये है) प्रति सवारी २०००) जमा कराके सीट बुक करा सकते है बाकी पैसे ट्रेन चलने से १० दिन पहले देने होगे।

बाहिर से आने वाले आर्य समाज चनामण्डी एवम् आय समाज मन्दिर मार्ग अनारकली मे ठहर सकते हैं।

पूरी जानकारी के लिये सयोजक से सम्पर्क करें सीट बुक कराने के लिये।

१ शाम दास सचदेव
मकान न 2613 भगतसिंह गली न० १
चूनामण्डी पहाडगंज, नई दिल्ली-१
दूरभाष 7526128 घर 738504 PP

२ श्री मानवीय जी
आर्यसमाज मन्दिर
मन्दिर मार्ग
नई दिल्ली-१

३ बलदेव राज सचदेव दूरभाष 343718, 312110
DG-111-274, विकास पुरी, नई दिल्ली
दूरभाष 5612125

पुस्तक समीक्षा

आरोग्य-दर्पण

पृष्ठ १६८ मू० २५ रु०
ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
प्रकाशक-श्रीमती मन्दरानी राघव
दिलशाद गार्डन दिल्ली ९५

आयुर्वेद मतानुसार धर्म की साधना का मुख्य तत्व शरीरमारोग्ययुत्तमम् जीवन की सफलता मे काया का स्वस्थ रहना धर्म का मूल तत्व है।

श्री स्वामी जी महाराज आयुर्वेद के ज्ञाता हैं आरोग्य शास्त्र के मर्मज्ञ हैं। वेदो मे व चिकित्सा मे औषधि विज्ञान जैसे विषयो से सम्बन्धित अनेक सूक्त पाये जाते हैं।

कालान्तर में चरक सुश्रुत वाग्भट्टादि ऋषियो ने वैदिक सूक्तियो के आधार पर आयुर्वेद शास्त्र की रचना की तथा मानव हितार्थ स्वस्थवृत्त की व्यवस्था दी। इसी से कहा है कि-

शरीरमाद्य खलु धर्म साधनम् शरीर ही धर्म की साधना का प्रमुख साधन है। पूज्य स्वामी जी ने ऋग्वेद-अथर्व वेद के ५० मन्त्रों को उद्धृत कर-आरोग्य दर्पण नामक उपयोगी ग्रन्थ मे अचूक औषधियो का वर्णन किया है।

पाठक वृन्द इससे लाभान्वित होंगे और नाना रोगों से मुक्ति के लिए डाक्टर, वैद्यों के पास जाने से बचेंगे। साथ ही साधारण जनो को शरीर रक्षा व आरोग्य साधन के उपायो से अवगत करायेंगे।

स्वामी जी का कथन है यदि कोई नुस्खा कारगर न हो तो वैद्य से अवश्य परामर्श कर-क्योकि देश काल जलवायु परिवर्तन के कारण प्रतिकूल प्रभाव भी पड सकता है।

पुस्तक उपयोगी है सभी के लिए लाभदायक है विज्ञ जन लाभ उठायेंगे तभी आरोग्य दर्पण की उपयोगिता है

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

अखिल भारतीय संस्कृत युवा समारोह सम्पन्न

नई दिल्ली १० जनवरी। श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ मे अखिल भारतीय संस्कृत युवा समारोह सम्पन्न हुआ। युवा समारोह मे तिरुपति वाराणसी दरभगा पुरी कालडी दिल्ली-इन छः संस्कृत विश्वविद्यालयो और कुरुक्षेत्र रोहतक लखनऊ जयपुर दिल्ली एव काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्रो ने भाग लिया।

इस अवसर पर छात्रो की श्लोकोच्चारण एव भाषण प्रतियोगिताए सम्पन्न हुईं। डा० श्रीनिवास रथ की अध्यक्षता मे संस्कृत कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम का बसन्त मेला

महर्षि कण्व की तपोस्थली एव आर्य राष्ट्र भारतवर्ष के जन्मदाता महाराज भरत की जन्मस्थली गुरुकुल कण्वाश्रम कोटद्वार में बसन्त पचमी मेला दिनाक २६ २७ एव २८ जनवरी ९६ को बडी धूम धाम से मनाया जा रहा है। जिसमे राष्ट्ररक्षा सम्मेलन शिक्षा सम्मेलन योग सम्मेलन के साथ साथ ब्रह्मचारियो का आश्चर्यजनक व्यायाम प्रदर्शन यज्ञ भजन एव उपदेश के अनेक कार्यक्रम होंगे। अत अधिक से अधिक सख्या में पधार कर धर्मलाभ उठायें और पुण्य के भागी बनें

आर्य पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज मोती बाग (साउथ) नई दिल्ली २१ को एक सुयोग्य आर्य पुरोहित की आवश्यकता है। इच्छुक उम्मीदवार अपनी योग्यताओं का पूरा विवरण देते हुए मन्त्री आर्य समाज मोती बाग (साउथ) नई दिल्ली-११००२१ के पास दिनांक २८-१-९६ तक अपने आवेदन पत्र अवश्य भिजवा दे।

—उपमन्त्री

धर्मवीर हकीकतराय बलिदान दिवस

अखिल भारतीय हकीकतराय सेवा समिति की ओर से धर्मवीर हकीकत राय बलिदानोत्सव रविवार २८ १ १९९६ को आर्यसमाज मन्दिर, सरोजिनी नगर में बड़े उत्साह पूर्वक मनाया जायेगा।

शनिवार २७ १ ९६ को प्रात १० से १२ बजे तक स्कूल के बच्चो की प्रतियोगिता होगी जिसमें बच्चे धर्मवीर हकीकतराय की जीवनी से सम्बन्धित भाषण प्रस्तुत करेंगे। स्वर्गीय श्री रतनलाल जी सहदेव के परिवार की ओर से सभी बच्चो को स्मृति चिह्न और साहित्य भी भेंट किये जायेंगे।

रविवार २८ १ ९६ को प्रात ८ बजे से ९ बजे तक—यज्ञ ९ बजे से १० बजे तक—भजन, १० बजे से १२ बजे तक—रतन चन्द आर्य पब्लिक स्कूल के बच्चो द्वारा धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम होगा। १२ बजे से १-३० बजे तक—आर्य समाज सरोजिनी नगर का उत्सव, जिसमें अनेक विद्वान आर्य नेता पधार कर विचार रखेंगे।

१ ३० बजे—ऋषि लंगर होगा।

राजीव भाटिया
प्रचार मन्त्री

दिल्ली पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एल० ११०२४/९६ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२१-१-९६) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (सी) ९३/९६
R. N. 626/29 Licensed to post without prepayment Licence No U (C) 93/95 Post in N D P.S.O.on 18,19-1-1996

भाषा और संस्कृति की रक्षा

(पृष्ठ १ का शेष)

संविधान अलग ध्वज और इस प्रकार अलग पहचान खड़ी करने का जो षड्यन्त्र प्रधानमन्त्री ने किया है वह पूर्णतः अनाधिकार गैर कानूनी और असम्वैधानिक है। सरकार के ऐसे देशद्रोही कार्यों के विरुद्ध जनता को उग्र आन्दोलन चलाना चाहिये।

श्री वन्देमातरम् ने कहा कि एक तरफ भारत की राजधानी में सरकार द्वारा लगाई गई अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में "किल इण्डिया" अर्थात् भारत को समाप्त करो के नारे वाली प्रदर्शनी लगाई जाती है तो दूसरी तरफ उन्हीं दिनों में पश्चिम बंगाल के गांव में करोड़ों रुपये के अवैध हथियार भारत में गृहयुद्ध के माध्यम से भारत को समाप्त करने के उद्देश्य से गिराये जाते हैं।

ऐसी घटनाओं के बाद कानपुर में मुसलमानों द्वारा केन्द्रीय मन्त्रियों को मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रों में न घुसने की धमकी दी जाती है और इन धमकियों का अनुमोदन जामा मस्जिद का इमाम भी करता है फिर भी सरकार इनके नगण्य वोटों की खातिर इनका हुड़दंग बर्दाश्त करती जाती है। अगर जनता, सरकार की इस कार्य विधि को सहन करती गई तो शीघ्र ही भारत में १९४७ वाले नजारे की पुनरावृत्ति होना असम्भव नहीं है। इसलिये आर्य समाजियों को बिना समय गवाये सरकार के इन कार्य कलापों के विरुद्ध जोर-शोर से प्रचार अभियान चलाना चाहिये।

सभा को विनय विद्यालंकार प्रिंसिपल जगदेव, श्री चमनलाल रामपाल तथा डा० धर्मपाल ने भी सम्बोधित किया। इस सम्मेलन में देहरादून की लगभग सभी आर्य समाजों ने भाग लिया। स्थानीय उद्योगपति तथा प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता डा० वेदप्रकाश गुप्ता के नेतृत्व में प्रातःकाल रेलवे स्टेशन पर श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव का जोरदार स्वागत किया गया।

आर्य राष्ट्र ...... मनाया जाये

देहरादून १४ जनवरी। आर्य राष्ट्रीय मंच के संस्थापक नेता प्रिंसिपल जगदेव ने आर्य जनता को आह्वान किया है कि इस वर्ष से आर्य समाज स्थापना दिवस • मार्च को आर्य राष्ट्रीय निर्माण दिवस के रूप में मनाया जाये। इस दिन समस्त आर्य समाजें राष्ट्र के निर्माण हेतु अपने संकल्प व्यक्त करते हुये भाषा संस्कृति और देश पर चारों तरफ से हो रहे हमलों के विरुद्ध व्यापक जन प्रचार अभियान चलायें।

सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।